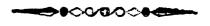
CONFINED TO LIBRARY

क्किकिक

वर्था९

এতদেশস্থ সমস্ত কোষাশেষশাস্ত্র সন্ধলিভাকারাদিবর্ণ ক্রমবিন্যস্ত শব্দ তল্লিক নানার্থ পর্য্যায় প্রমাণ প্রযোগ ধাতু তদন্তবন্ধাভিধেষ সহিত তত্তজ্ঞক প্রসমোপ্তিত বেদ বেদাক্ষ পুরাণেতিহাস সঙ্গীত শিল্প স্থাকারশাস্ত্র জ্যোতিস তন্ত্রাখ্যান কাব্যা-লন্ধার চ্ছন্দঃ প্রভৃতি নাম লক্ষণোদাহরণ জব্য-তথ্য রোগনিদানৌষধ স্মৃত্যুক্ত ব্যবস্থাদি সংযুক্ত সর্বদর্শন মতামুসারি সংস্কৃতাভিধানগ্রস্থঃ



ভত্ত

ষপ্তকাণ্ডঃ

রাজশ্রীরাধাকান্তবাহাদুরেণ বিরচিতঃ

১৭৭০ সপ্তত্যধিক সপ্তদশশত শকাব্দে কলিকাতাখ্যনগরে স্বীষষম্ভ্রে শ্রীপ্রাণক্লকনাগেণ মুডাঙ্কিতঃ

ন শকারঃ। দহ নহনীয়প্রথম उपः। शक्षेत्र चि॰ भाष्प्रिष সংস্যাচসের্ণ স্থানত তালু । ইতি ত্র গাকরে। শৃষ্ণ পুরুপণার্থা শকাব॰ পর্মেমানি মুর্বর্ণংর চিন্মিতে রক্তবর্ণ প্রভাকাবংশ্বয়ণ भद्रक्णनी । एक् वर्मभार ॰ पिरि मकाव् अभाविष्र्। চাজ ক্রের্মণ বর্ণণ পঞ্সালা · আক° প্রিযে। রুজঃ পঞ্বন্দা মুক্তণ ত্রিবিন্দু সহিতণ সদা **কিশক্তি** পহিত° বর্গ মাকাদি · ভর্ দংশুভং।ইতিকামবেরভূলুং। उल्लू अन्थकात्। यथा। छङ्काना ত্রিকা রেখা বাস দক্ষিণতঃক্রমাৎ বহ্নীক্র বিফবে দ্রামু তিম্ব জিক্তমত: मन्। ५ अम्बाग किस्ता मन নক্ষী দদা সমূতা 1 মাথা মখ্যগাতা গাতু বাসেরী সা পরা শৃতা। ইটি वर्ताकात् ज्ञः । ठंदा हका नि शया ন: নগদ্দ কাম্বাস্পী কামকাপা মহাম্তিঃ। সৌখানামা কুনারোংখি দ্রীকল্যে ব্যক্তন:। ব্রধ্ন: শ্বন শান্তা সূত্রণা বিশ্বলি

। भिनी। म्रा प्रता मश्रामको। मल मः; कूनकामिनी । स्ट १० मा विश्वकृष्ट् क्रियमार्क्य द्रभावः। বাদোরঃ পুণ্রীকাজা কান্তিঃক लाभ वाहरी । दे हि त्यानि विद्य ৩নাল ৭ পটলে বর্নাপ্রধানণ শ॰ ক্লী ব্ৰত হিটিদিকণ্ড শেষ:। प॰ को क्रापां । विकास ইতি শব্দরক্রাবনী। नः प्र निदः। राष्ट्र । रेडिनाइत আৰমী। শুন ই: দ্রি মাঝাধিতঃ গ্রেচিখারেডার य. धः। ते. येवधायक्ष्याक्रमः নকঃ। ব্দ্রণ ইতি ধরনী। মণ্ব:। প্রিপ্রভাবিতঃ।ই ভি দ্রিকা জুপার:। শ বর পুরী জল ইতামব:। শণ্ম । हि॰ সাস্কুত্যো: ইতিকবি কলাদ্দ: তালকানি: উশ দিকাশস্থা। য: শংসতি সতামিতি इलायूव:।अल्कार्यक्रारक्यान ম্মায়ত। হয়ে। ব্ৰন্থে। পৰ্যাতস বাদা পুনরজ্যেবেবেতি।নমেট্রিযা শুত পতি কিঞ্চিদী পিত দিতা দিত 对介

নৎসা শ্রী বাক্যণ বাঞ্চর ইন্তিমেদৌ শ্রমণসা ।ইতি শহরুক্তারলী। শণদিত: যি নিশ্কিংইতিহলামুমঃ हि॰ मिड १ १ कुड १ । शेडिम मधा छ अध्याभाषा विष्यतः। শ তথা পু জোন। হোন। ই তি म॰क्रिछमात्वानी पित्रिष्ठिः १ শংস্কৃত। প্রং ক্ষেতা। যি প্রভাবিতঃ 1 भे॰ भूवर्वका वाद्या संभ्रायमानिष्यः भण्भा १० भी धनविन। भमपूर्य স্বাহাতো: ক্লিস প্রত্যেন নিশারী শংস্থাঃ ফি হিংসাঃ সুতাঃ।শসমাতা: গণপ্রত্যেন নিশান:1 मक रेड वाम अ॰ इधाः। रेडिकिरि কলাদ্রমঃ।ত্রাসো ভ্রত্থ ধ্বাস্ম यातानः विभक्षालग्धानम ड महरू ध्रक्षकु भागो। भान वर्वा भ्रस्थावारे छि प्रश्निष्माला শ্বনীত্যর্থ: থেটি দুর্গাদাদঃ। नक। ११३ भएउते। देखि कविश्वन क्तरः १ अन्ति प्रिवामिभक्तक्रमा প্রাদি পক্ষে সাম্যা । য গু লক্ষ্ট নক্তদুই। দীন :।ইন্তিদুর্গাদসঃ। नक । नरेन्डे माओ रेटिक विकल्पाम्

শক্ মন্দ্রিত্যমক্য মন্থাজে यराज श्लायूव: १ हेन অশকীৎ অশাক্ষীৎ। শ্বাম্বিহাত ই ইহানে প্রকৃত্যতি। দক্তাতি भागिकाकान श्रापि दानिमा विद्यात्य । विद् ব-ষঃ কেষাঞ্চিদের্বো দ্বাবেব সক্ষমকৌ।তথ १शा मन्ग अविना ।वि वद्रः। वजः श्रविणाम ন পক্তি প্রত্যাখ্যাত । তত্ত্ব কৌ মুদ্যা °বা চম্পা भका मात्यनात्रिमाता मिल सिवंश १ हि तूर्गा শকঃ খু॰ গাটিভেদ:।ই रेहितमादिनी। एतम उप विश्वः। महन्मः भक े ४ विमालि वार्न रे छि व च्यावः । जञ्च मत्ना पि वरमकातमाकः भकात না শা পঞ্জিকা হা ৽ লিং মচ গান্তি বেদ: ক্লেদা ।বিপেষ:। করু যুগে ক

শ্রমন্তকার্মণ মুণ্ডামিহা বেদবান্তর্ মকারি । যথা । ততঃ শকান্ সমব নান্ কাশ্যোজান্ পার্ঘে স্থা 1 শহুবা ॰ শচামি নিং শেষান্ করু গ্রাপতা নৃপঃ ; তেহন্যমানারীর ने मग (दे न मारोजिमा। यमिन्छे॰ শরণ ৽ জম্ম: দূর্যাব ক্রাস্থ্রাহিত। विभिष्ठः सवसाभनान अभः य कार्ण जाराबः। मग्रवः वाव যামাম তে গোদরাভ্য°তদা। দশর স্তা॰ প্রতিক্তান্ত নিশম্য मूमहावल: । वर्षः ज्ञान् ज्या খন বেশানন্যা। মচকার হ। ক্রজান প্রকানাক্ত মুন্ত ঘামাস ल्ला अवनानाः भनेवः भवरं কাম্বোজানামাপাদিল । পার্দা সুজকেশা শু পরবান্ সম্মু शादिनः ११नः म्वाभाग वष्ट्रका वान् मवर्वाहाव धकाव ह । ३६० পত্মে সুর্গমন্তে. দ্বগরোপ গুলন मकरे: । युः श्री शनावेला शः। भाष्ट्री इंडिअझा । ब्र भर्कारं: अनः ।रेशमर् ः। अक्षः ७।रेहि শব वक्तावं ली। १दियुवकामूद

পকার বিশেষঃ । । ইসহশ্র পালপ কিনে उत्भग्भंगः। जातः। आहिः ॰ भावरीन; ४ भनार ९ वेडि रश्यक्ष : १५७०० । मकरे: भा किनी भारवा यान मुक्कन्यन थन । अनुभः भर्दान राजा पूर्विक नव इउ यः । ई जि ज त जः । । उति महर्कः । ३७ वाज निर्वतिः १ भक्ट्र ये च्रिकः । इडि एमहन् ः। नक हेनाभाकिषि। मकरोश् स्वीतिस्ती नक्षयः ন্থা: পঞ্চতারাম্যনকণ্ট্রাক্ত্বী শকলঃ ক্লী ইক।সম্ভণৰাগ-वर् । दर्कन । रेजियपनी শাক্ষণ ভর্মানি ইতি ভাষা । रेडि मकली मञ्जूपर्मनार। শকলঃ ৷ সুংক্লী একদেশ ঃ পত্ত। হথা হিত্ত। মুকল यत्तवा श्रुश्याली खा॰ प्रायः भारक । रेड) भव :। मकली र सु॰ मरमा देशमयः শকানকঃ পু॰। ধ্বিস্মাদিন,বাজঃ . रेषिकिश्वारे. 'नकार: । श्रः वाद्यः अन् पायाः

श्चियाः कुछ । यथा। यह मूर्थकियी मूक्ति जिथ्ये मण्युकः। माश्यमद्देश महिक दर्भानः भकात स्कूकः। माहिक दर्भानः भवात स्कूकः। मकादिः श्रुः विक्रमादिक त्राज्ञः मूर् देश्च यभी प्रमाधिभिद्धः यथा। माश्मिकः मकादिः क्यादिकमादिक रेक्षि। रेडिज अपेश्वः।

শক্ত্ৰণ কৌ শুভণ সি নিমিত্ত প্ৰয়ন रेडि हिन्दी नहा । रेडि मिलि मे। ফলদক্ষণ ।ইতাজ্যপানঃ।এথ छ । भक्तानि । की धना ए प्रवण छ दिलाकनार म्पर्वनार नमहिन्तर निर्देश भारतियाम् अभाउव १। मन्नाय म्विष्टन्यम। पि॰ श्रवाम जदम প্রবেশ-যো:। দ্ধ্যান্ত দুর্বাঞ্চত भूर्वकृष्टाः । मिकान्न । निकार्यकः हम्प नानि। आदर्भ मध्या भिष्य भीन मुस्मा लाताहना लाम्य लाम्ब्रेलिः भि र्वान दीना कलजप्र श्री हे कुष्या अना লঞ্চারনাযুগানি। তাসুন যানাসন रऋषान शुक्तारुभव गुजनास्तालि। শ্রমেন হসার সম্ভাবহি গলাগ वाराः कुम धामदानि । वृज्ञानि धामी कर क्षण जाम बिक्डको क्लोवश्यः भूवाण । दनम्भाव नुबनेभाण

মেৰত মাজন্য পাথতাৰ প্রদিষ্ট । মন্তেমুকান হৈত্ব কার্যে গভানা ত হ ेपर । २०। मि मृष्ट्रीर गनि कुर्वि पृष्टेः १ ণেন। স্থাদিলোকাদ বহানি গ্ৰহানি বামে ভবন্তি। পাশ্বার শ্রুঙ अथात्र मुत्र्यू मधे वमाय । वा फिन तक রুতা মিকাদি শশুণ वोदः। आमाग्र विक जनार्थी यपि वाज ९ त श्रुलन। श्रूलिंग माप्त्य रेमो यथा हुगरीः शि সঙ্গার ভাষা-ধন রন্ত্_{যু}ণ কাপনি তুষা স্থিকিছা: সাবস্ফর কৃষ্ণধান্য কেশা কুজ শৌষধানি দ্রত দেখ্র বদা। বিভি . जा ७° लवन॰ इन्४ ला १९ थल इक्टि वा कुछिलि॰सिमिन न श्वाप शन भानन उत्रः इष्टिशान शन স্ক্রান্তবাতা ধুপ ন্

প্রথান বিঘুং কথয়কু গাইঃ मार्जात युकात्व म्लिना न के ান্তঃ উট্রেস্থ্য প্রস্পার্থা ভিত্ত কালুপ্তা কর্থা সবর্ণ गञ्छ ः श्राम श्राह व्यथना य । पृष्टि भाव वापन भक्रीन মহার্থাদাসিঃ কথিতোদ্যমন্ত্র। গ্রপ্রে শেষ্ট্র শবঃ শবরু করে। न दीर्घा मथवा दराठि ॥ मधुस्रमा বর্জ মনাও নবাপা মন্তর্গলত ৫৩৩ প্রবিশতাক্সাণাত্রবেরদারী-পিন সোখানাভাষঃ কেন্ট্ৰ म्बानिकाश्चार्यक्र । देखिन लाए कि प्रभादन मैसूर्यन িয়ণ বাসরে। তোজন তর্তি ক্র বীপ্কিত্ততাস লাহিত্যমিদে হি मान्जः। होनि दमञ्बाक भाषीत বিচারিকা: শুভাব্হা:। এথ-নবাৰিত বিচাবঃ। মথাভিষাঞ্চ ष्ट्रियामञ्जावर श्रवानञावार र द्र- नदानाः रेनामा छक्य শ্বিলাৰ সৰ্বে॰ফলং মূল শোল নযোগ্রহীতি। নরোভিক্পঃদি उर रसमाला यह भन्ते মধুবাঞ্জলপন্ এব। প্রথা যো ষিদ্যপিপ্রযাণে প্র বেদকা লে

দকারাতি সিদিও। ব্মংবিকেশোহত मान भरता किन्ना क न ग्रान्य का पि ग्माः। यक्षम्ता भर्वती क्षकी मलाः चित्रास्य अज्ञावराग्छ । दी त्ना दिश् র্ফ।বিমুক্ত কেনা: ক্রমেলকন্ত; भेत रेमहें उन्हाः। मन्यामि मार्केत ने श्रुश्मकामा हः भारतः मनि তেকু ॥ পৃথীপতি র্কাঞ্চাণ হম্বযুক্তেন্ विशारुमारी भ्रक्षणः मुक्तभाः। नाया न्राम्मास्र्याधिकातः प्रजाय पृष्टे। শকুনাতমে । কৃষণসূরাঃ কৃষ্ণ दिलम्बाजाः कृष्णिः मुक्तः मुक्तः विशवयनी। मृष्टा मकाला यानि क्षरता नाती नहि श्रिष्ठिल प्राज বিভি । শ্বেলম্ব্র শ্বেভ বিলেপ नाणा मानाः। तिज्ञः सूर्त्त्रे वि धार्यन्ती। पृष्टे। शक्ये। यपि ली त्वर्ण नाती नरेतः भगष्ठपजिष्ट मिनिः । श्वान्त्रवः मुविस्त्र रामाः श्रुळ्णाविज्यहन्ति । র্ম । নিশাবযুক্ত ; কুতভাগুলা दा दिल : श्रेष्ठ्र यष्ट्रि मर्वित्रीं में अञ्चलगण्हां यशाहियान सी श्रुक्षार्धेश्या कलर्खः। मवर्भ ममीहिङ।मिन्नि ववन्था १७म्य नवश्रा अंवज्ञिल्यल । देखि

বসন্তর্জ শকুনে নবাফি তেক্ষিত मञ्ज्र । गाम्करिन स्टि भूवन स्टेश व वात्री हुना (क्ना छ कूछ भाना। मर्ब খিন ম্মাপ্তিনরেশ হান্তা দ্যুত্তমা কুচ্চি বিজয়ায প্লণ্দাণ। দিস্গৈবি वाया अहि हिन्नि जिनि एजी प्यः भ्वक्रायज्ञनाः। क् यामि 'छव माफा अयुग्जमा यार नार्थाः । १३ व्य न्हिनशी র্থনিং पर्शा द्वाका दिइशि = দ্যামূল ? रिनिदारं र्राशीर नाज्य जिये उन्हें ममल्ला वा द्राश्वाक कर श्राव अत्य भी ९॥ डेग्र॰ जलापन ন্ত্র প্রত্তরে দুরি বিলাপ ञ्चा सिर्वाजन्माल वर्गमार्ग . या ा व यबुद्धाल क्रिक्टिश्मिक हु हु जोना समिलन श्रिक्त (ज जर उप निवर्यनम् अञ् अपाण इपित्वर गणः । प्रेकिं विश्व कार्य विश्वार् हे जि यमस्राज भाकूल न्वाकित्व डे म दन्ति अक्वभः । व्क हर् याक हेक हि हिंच का तुलव जाम जारकाज मधुर कार्येञ्चल ला क्क भी हे जैक क प्लांक पार्टिया

কুন্তুট কলবিক ভারতীদাস ঐঞ্জেন কাক পিদীলা রূপ। नि মকুনানি ঘোটক র্থম্ঞ্রি শর লা মধিখ্যলাল মধে उक डेक्ट्रे क्राफ्युन्पती स्थिक भाषकार रानत मुग वताह হক্লাস নকুন হান্দিক. দিপী শিকা পদ্মীকুকুরে पिकाम शक्रमानिक वमल वा जमाकून प्रवेद्यानि॥ इसि मनक भंगान बहेल प गत्र मश्राभागि गङ्गानि उउछ एक अष्टेकानि ! শকুনঃ পু॰ পক্ষিমাএণ। পঞ্জি विश्व है। भेरी हे जिया है। हेि। मिन्ने। कर्णभणेनी অন্মাহাঃ কোন মন্থাবহঃপ্র্যাঃ ইতি ব্রীভাগবৃত্ত । স্প্রিস্থার্ড कत॰ घथा। वासभ्यत्रा २माविभ छि हरू : । रे नियम अवाजमाकून । विश्वलिएः তাপি বৰ্ণণ ভাগৰতে উজ্জীবৈত্ৰ नेगिरिकाशः। भी विल्यसः। <u> २३ देशमा १ पिश्च पश्रमार्थालय</u> र्ज्ञयभातः। स्वम्भी रेवि

भक्रकावली ग मक्न ज्ञा जी जिश्वी रे निका তি শেষ ঃ। মকুন জাতারি বি। मर्बिः अ॰ शकी हे ग्रम् राजीवनः मह को दव भाजून ; दवा परका म सर्दना अर्थ के व्यव १ रेडि भाषिनी। उरक्रमञानकतः . পর্জনধনহর্তা বঞ্চক ক্রুর क्टरे : क्र शृंच क्र वाला ग्रार ভষামিপক্ষঃ ক্রেভিন্ন প্রদা ৰাস কছিত্ত ং মরোধা নৰ চি शक्रानिजन्म मानवः मोद्दर्श रे कि रका की श्रदी भाग हिला शक्ती १ हे ति इस हन्यु :।. पुः मह श्र्यः। यथा। पुः महाथा नेदर गर्फी निर्माष्टि नीमना মতঃ। গাতা কলেস্ত্র পাপ্সার্থ वाली हालान प्रमार क्या द्रश्राचानदन क्षष्ठाशिन যোদ্দা । এফৌ কুদারা: কথাশ্চ न्थाक्त्रजी जीसकाः। पन्या कृष्टिः - सत्या जिल्हा भिर्देव अथा भदर्श শ্ৰন্থ বিক নাতু নি শ্ৰেচৰ প্ৰপ্ৰান্ত इतिस्था। ज्या श्राः यथा। त्यान काक क (भाजा क মৃপ্রো লুকৌ চবে পুতান্ ।

অবাপ শকুনিঃ পঞ্চ জগৃহ স্তান্ পুরা प्रताः । त्थन अगार् व मृद्धः कारु कीला ग्रीज्यान् । उन्तरे नियनि मठामि जग्राहा हिन्दावर । गृथुआ श्रुफी स्माथ कल्पान्यः श्रुयः यमः । এতেষা মেব চৈবেওগঃ ক্রাপা্পে भभाषाल । ज्यार त्यनाम त्या यथा ।निनीयत्व नित्रधाय । (। । -अव्यक्तियान भाजः व्यक्ति उम्। पार् सर्वि खंख्याः তদুল্লীড় নিবেশনতা নশস্ত বৰ্জ যে দেশহত কপো তাকান্ত মন্তক থা ম্খেন: কপোতো গুপ্রোবা কৌনিকা वाम्राहाहिजः। প্रविष्टे: कथ्युमुर्वे वम्बा॰ ज्या (वस्यामि ॥ भेष्क परि ठा जिल्मार भाषि क्या प्रिनाडमा श्रुष्त्रिषि हि क.भाजश हर्मन न अमम् रा । हेड मिक्छ्य भ्वाल र्वः मह्दर्भारम् विनामाश्चायः । दिक्राकिश्च । इया। दिस्य मना वामी। दिकाकुः शृथिरी शिविशाविशावया প্রশত ভাস্যান্তবৃক্তি ছেন্ত দেল পোধ্যোধ্যাষিপতি वेदि अश्रुप्य দ্রপ্রতাঃ। পক্রিপ্রসংখ্রী दक्षिना दामराईन :। रेडि दर्रि भ्राल्-मगवा भाष्यान नामाश्रायः॥

महानेष्ठभा की अक्षेतः भागीनाना उद्यक्षः कि ग्रहः। देविश्वा-

महूनी की आमानकी रेटि राज -मिर्ट किटने रेनिकाछ्र । अरु गुरुष्ठ : रोजि

१न अंगः म

की हे जिस्हा अपनी १ रेग मतः। की हे जिस्हा अपनी १ रेडि प्रादिनी १

শকুতলা শ্রী মেনকাপ্সরঃসু বিখামিত্রেণ জনিতা কন্সা माक्य भूमिना अविभालिन। দুঃ দন্তবাজেন। বিবাহিত। ।শখা: श्ला जवजः वाजध्यव्यो । अभा नाम कर्न । यथा निर्कत হুবনে ক্সাৎ শকুত্রে: পার-"ব্যঞ্জতা। শকুন্তলেতি নামা-भाः हामाभि वल्यमा। हे हि महा जात् क आ पि भवर्ष ॥ अभा विवतनः कालिएम ह्निजान भक्तिला नाधे, क स्थिया । भारत मुर्ग यस শকুন্তনাগ্ৰন্ত; খৃ ভৰত্ৰাজু: यथी प्लोकानि जनकः शबर्वाः

भूकताजाकः। शेव द्यष्टाः मक्तिः सः भाक्षमागः।रेश्मंतः जित्र পক্ষী ইতুলাদি কোষ:। শকুল: মৎস্থ।বলেষঃ। **%** मडेल. इं छि अशा ईक भ्राः। अन्यायनाः। प्रश्वयः जिक्कुः শাহিষ্কুণ। পি রামানিকুণ প্রকৃত্ব का रें है ता ज व ल ज ः । শকুল गतः श्रुः भातम् प्राः। ইটি শিকাণ্ডনেধ গ্র भकुताम्भी श्वी छकाङ्गी।कूछ की हेि जिसा हे जमरः॥ क शेर भाकः। काष्टाप्र रेनिज्या। रेनियामनी ॥ मा॰ भी। कि श्रुवालका । जल लिल्नली। करेकनः। र्रा विस्:। शलायना हिन ब्राज निर्वि । शक्ताउंकः। भ्रः गडकंमरम रेडि अम्ब ३। भेक्ताकरः व्र व्याप्तर्ग रेग्रम्यः।

भक्रमास्त्री भी भनपुर्वा १७

भक्ती औ मरम विल्पवः।

म्गाल रेडिनमा मराकुल

বাজ নিখণ্টঃ।

শক্র্রী

रेडि कि हिर । अशा आका ता ग्रमान्छ । मकूनी ता कि न राष्ट्रियो व्यायम्प त्र ज्ञाना । एउटी व्याक्ष ह मधूता व्यक्ति पाध कि विभाग । हेडि ता स्त्र क्षिण प्रश्रका छ त्व भक्ती हेडि ह व्याव ११०

सङ्ग्रह ही विष्टा हें अतः । मह्ग्रह कि श्रुष्मी वरमः। हें मबः । महार्गि विश्व विकासिन। ५ः।

মহৎকাবঃ ত্র মনত্যাসকা রক়্া শহংকরোণীতাথ শহৎপদাৎ হুগাতোঃ ধণ্

मान्यस्य विकाशः।

শক্ষাবণ কীমল দ্বৰণ তৎ শ ফায়ঃ ক্যাপন ও পায়ু: ৩ সদ ও ছু তিঃ ত অধোধশু ডি তিবলীকঃ ৭ বলী ৮ ই তি.

र्गस्यः।

भक्त्तः श्रः श्रः। इति वि

भकर ती : की ह्ना उप :।

निवादः। स्मिना। देव

मिनि। माह ममद् श्रिष्ट्

षहरूरः । यथा । - हर्याञ्र्या उथा मशा थ विश्वा का मुश्र विका , था तक्रीकुरान कुले ह श्र्वे প্রতিষ্ঠিত বিষ্ঠান প্রতিষ্ঠান - अगे बे देवव ज्या विजागी में गो मक्क्री माजिधूवर्राभारकी का अधुक्ता संघ । श्रुष्ट स्प्राप्ट श्रिक् ।: ही कृषि बीकृष्टिः। ।विकृष्टिः म॰कृष्टि महानि उर्थ किवा তিপংকৃতি :। ইত্যাখ্যা: দ্বার্থানা हिन्द्या॰ क्रा भः क्राः। उग्रंथ र्माक्त भाग मण्डर्मा भित्रिशि विषाः नामानि भुभाग्ह ध्या। (मा लाला भी भी इस नय विकस्या की জ্যে° বসম্রতিনক তত্ত জাজ লা भः।रा नन तम लघूरभः श्रोत्त প্ৰাজিতা |৩। নন্ত নল গিটি প্রহরণকালিকা। ৪। মধ্যে নো भागो यमिनाम् व रामछोयः षिः मशाहिपि त्नाला भि जो भी लो ज्वल (४९। । अत चिति यपित्ने छो मनियो भीय । रेडि फल्पा मसुरी। अञ्या मुतार्त्रवानि वायल्यांची। (म्।अग्रिम म्जः वि मिलि विलिखेः। प्रमर्थः।

उत्भर्यायः प्रदःश्वाः । श्रदः । श्रिष्ठाः । हेल्पि म्हाः । श्रिष्ठाः । हेल्पि महाः । श्रिष्ठाः । हेल्पि महाः । श्रिष्ठ हेल्जिमा । प्रथा श्रामाञ्च्यात ह्रामे । श्रामाः श्रुः ह्रामे महतः । क्लियं मङ्गाः श्रीणि वन्त्राह्मिन श्रियाः हेण्डिमितः । श्रामा विवृतः महिल्यास्यः । श्रामा विवृतः भक्षात्र प्रस्ताः । श्रामा विवृतः भक्षात्र प्रस्ताः । श्रामा विवृतः

मवः। सम्भ १० मर्॰ १२ हे जिभस्त्जात्ली ५ंगर्जः १० रेडि जिरे १ वृहः। कामुः। माङ् শवर्गना नामार्यः। रेडि नानार्थ अमन जबला। भो दी। रेडि प्राप्तनी। मध्यी रेडिमङमाला। विम्ङधायणा। এश विभिन्ति कामिक्टो नय मित्रानुभा ।মিনী। এষা পেতা পরা সৃষ্টি: म्वा-विकी शक्षमः विज्ञा । এधिय व्यक्त বজাস বৈষণনী পৃথিকী নিজৰ रूका जमान दोधी पिती धरी छिन। প্ৰমাত্ৰা যথা দেবো এক এব শিষা भिनः। भ्रायाजन वन्नाका छित् रेकव विशाजवर। हे विवशास्त्रिमिष्ठ माराञा मामाभाषः। यात्रिह। विन्दुः নিবানক স্তব বীজ পজাত্বক মুক্ত তথা ৰ্যোপ ভবে ক্লাদ স্কেঞা, পাতী क्रिम्क्यः। रेबि कियामातः।अ नांक्ट । इंच्हा किया क्या फ्रान लोनी वास्ती इ विकारी। विश्वासिकः । প্রভাক্ষর ভব পর ৽ ক্ষেত্রি রাষ্ট্রি इंडि लावक म॰हिंग। अध्येष उत्या यथा । हेन्त्रानी रेवक्षती ना डा शक्ति। इक्तवादिनी कोम्प्री नातामि॰ शैष्ट नातारी भरामाया जित्री जीत-तानिनी । आपशेष =

শক্তয়ঃ সবর্বা রম্মস্যঃপ্রয यू मिता । हेवि मुक्ता विकर्त बीक्ष्यन मया वान्युक्ष नीम >> २ अ अ शाय । न्रम भुअर्घा घथा। ज्य शास्त्रहा ष्टे माल माधा ह उछि भुवर्वकः रिक्थ नी थिय क्रमाधी : वोष्टी॰ गार्द्रस्वी॰ ज्या ॥ नातामि॰शिष्ण वावारी भी द्यानी॰ कार्डिकी "जथा मवर्य শান্তি শুরুপার্থত প্রধানাং সবর্থ मक्रीलाः । नव मुकीकः प्रश्तु चरि (पर्वा॰ ४५ शुजखर । रेडि বুঞ্চাবৈবন্তে প্রকৃতি খণ্ডে চঠা भागः। प्रक्रमिष्टिक्षेत्रस्य यथा । नीर्छ : नोतिः । कुष्टि राष्ट्री शहः महिकिया ট্যা।মেধা সহর্ষা শ্রনাগার ধনা নক্ষমীঃ সবসুকী প্রীতিবতাক্ষা প্রোক্তা কমেন শ্বন্কয়াজ যাদুর্সা প্রভা সত্যা হুলারারী বিলাদিনী।বিরুজাবিজয়াবিশ্বা विनमा सूनमा ऋषि शंकाकि इम মূদ্দি শ্রাদ্দিরভান্ত মুক্তি মজি क्रमा। दलामा क्राइनी किन्न

বসুলা বসুষা পরা। পরাপ্রাত্ত্রগা मुख्या मन्यायञ्चा यूना निमा। य भोवा विद्वा एकि शक्यः म वर्षकामपाः । । जाः विश्वमार्कः सू चिष्रभाः माध्यगनमाः । । विष्रुपामम मानाकः अकि जाउर वार्वः। प्रथण मक्ष्रभाग रहा। यथा भित्रा पत्री भगादिइडा भानमलैंडप्रस्रेरण. लामाकी वर्षमाकी ह पीर्धाशानाम भी। हैं जा। मधीर्ष भूभी लामूल्णों = দীর্ঘ জিহ্বাত অবচ কুলোদরা পরি त्यो हरणा विक्रम् थामि। अलिस्त्री ত্রতাক্তেয়া পশ্চা দুষ্পামুখী ভতঃ। म्बोसूगी ६व विकासूरणाः यत শক্তয়ঃ। মহাকারী সবস্থাতী সবর্থ मिनि ममविक (मोरीधनार) दि দাস্যান্যশ্রানি দ্রিক্তঃ প্রবংশকাল মন্তি ইত মতা ভুগানস্বাদ্যে সমূত।। पविनीनाभती ज्यः त्याप्ती णामि म ঞ্রী রূপিনী চিত্রনী পশ্চাংকাকা एय नि भूजना। भाष्यकृ काली यागित्नो मध्यिनी गार्डिनी ज থা 1 কাল বাহিন্দ দাব্দিন্যা ক পদিন্দি কর্যা। স্যাও মুমু त्याच्या (ववडी माधवी कडः ॥

मिलि वार्यनी स्थाका श्रम्का क्या वार्यनी यार्यनी स्थाका श्रम्का क्या विद्या वि

मानि विष्णाः मयवयायि । निम् कालानिका विष्णाः मयवयायि । निम् लिनी । निर्धाली हरू नानी हर्द्दाली नालि ग्राह्मना । या गिनी ला निनी , यं आ कामानी वाह्यकण्या । का नाहिना ह (प्रदासि शेथव निश्वका । विने । क्याः यद्धिम् विः क्या (म्

यानामिष्ट्रिन्। दिस्कानाश्वा माएज्यामा॰माप्शानिनी। वोष्ट्रा एजदनी एएविज्या स्त्रभमानिनी (यम्मा ष्ट्रार्स्था ध्याका। दिविश्री

कृत्रालिनी। वीवती। दिविशा स्थारती जीयव भागे कांद्राना। द्वास्थ का ती दिवा त्याउत जीयव लगाभिनी मु जा। वाक्र कन्या विवादमार्विक्था

ज्या का ठाइन । ज्या । वाड देवणा । इति वा जिना । वाड देवणा । वाड दे

শ্বতা। প্রের্বাজ্যান্তি সাধ্বর্যত হুঃ ষচ্চিশ্চ ন্ত্র্যতা । ইন্তির্বেতী

ত্রত্যেত্রপটলঃ। অসিচ পর্থণাণা রেন দেবে নি কুল এক্তি প্রসূত্রিবং महीकालानिनी विण्या दशकी नाभिगद्रना खाअनी स्परन्थी ह ज्या ला भानक न्यका भाना ক্রম্থ ক্মাচ ন্বক্মপ্রি প্রতাঃ।বিশেষ বৈদম্ভাযুতাঃ দর্বা হর কুনার্দ্রনাং। রূপ यो वन मण्यना भीन जोनाण भातिनी । शूजनीयाययवानन उठः । तिलि ड विरश्च व । हे विशे स्रमाव्छ (च) अहलः। उन्योतः न्नर्भ मया। भोकुः धुना महिनानि मनार् भर्कपकः। শার্জমুন্ডের যদাদেবি নিবোহণ সবর্বনামদঃ। শক্তিযুক্তা জল-ম অ॰ নমন্ত্র কেবল তরপেৎাসা वियो महि । जिंदा । विलिह्न ग नानि । बाववजाः रुक (पर् দিলোংভূ ৎদতাযাসহ তিখা কো हवर्मकानामा भिष्ठिरवैवानि প্ৰথােহ মহাদেবি কেবল ॰ শন্তিয়ে। প্রতিয়ামে। प्राविभ यपि। मिलिन जायक उरित मेन्राभिमानिममवाकि হথাভবেং।যদ্ধ দলগণ্ডুর্ম প্রজ

শকুলী জ্রী মৎস্যবিশেষঃ। মৃগাল্ ইতি ভাষা। মহাশঙ্গল
ইতি কেচিৎ।। অস্যা আকারো
শুণাশ্চ। শকুলী রোহিতাকারা
ভূমৌ প্রায় শ্চরত্যসৌ। শুৰীপাকে চ মধুরা ভেদিকা দোষকোপনা।। ইতি রাজবল্পভঃ।।
পুস্তকাস্তরে শকলী ইতি চ
পাঠঃ।।

শরুৎ ক্রী বিষ্ঠা। ইত্যমরঃ ।।
শরুৎকরিঃ পুণ ন্ত্রী বৎসঃ ।।
ইত্যমরঃ ॥ দন্ত্যাদি রিতি বিদ্যাবিনোদঃ ॥

শক্তংকারঃ ত্রি মলত্যাগকারকঃ
। শক্তংকরোতীত্যর্থে শক্তংশকাৎ ক্রধাতোঃ ষণ্ প্রত্যবেন
নিষ্পন্নঃ।।

শক্তদ্বারণ ক্লী মলদ্বারণ তেৎপর্য্যায়ঃ ৷ অপানণ ২ পায়ুঃ ৩
গুদুণ ৪ চ্যুতিঃ ৫ অধ্যোমর্ম্ম ৬
অবলীকঃ ৭ বলী ৮ ৷ ইতি হেমচক্রঃ ৷৷

শক্করঃ পু॰ বৃষঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। শক্করিঃ পু॰ বৃষঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ।।

नकती श्री इत्मार्छमः॥ नमी-र्छमः॥ तथना। ইতি मिनी

॥ সাচ সমবৃত্ত ষডিৢ॰শতিচ্ছন্দো **२** छर्ग **ठ**ठूमं **मञ्**नः । यथा । উক্থাত্যুক্থা তথা মধ্যা প্র-**ञिश्वामा मू**शृर्दिका। गायलुगिक-গনফুপ্চ বৃহতী পঙ্কি রের চ।। ত্রিফুপ্চ জগতী চৈব তথাকি জগতী মতা। শব্ধরী সাতিপূর্বা-স্যাদফ্যতাফী তথা মতা ।। ধৃতি শ্চাতিধৃতি শৈচব ক্বতিঃ প্রকৃতি বাক্লতিঃ ৷ বিক্লতিঃ সংক্রতি শ্চাপি তথা চৈবাতিসৎক্রতিঃ ৷৷ ইত্যা-খ্যাঃ সমবৃত্তানা ছদ্দা জনশঃ ক্রতাঃ। তত্র চতুর্দশাক্ষর পাদ সপ্তছন্দাণসি সন্তি। তেষাণ না-মানি গণাশ্চ যথা। যো গো গো নৌ মঃ শর নবভি রসম্বাধা ৷ ১ ৷ জ্ঞেফ বসম্ভতিলক ত ভ জা জ গৌ গঃ।২।ন ন র স লঘু গৈঃ স্বরৈ ব্লপরাজিতা। ৩। ন ন ভ ন ল গিতি প্রহরণকলিক। । ৪। মস্তো নো মো গৌ যদি গদিতা वामछीयः। ६। विः मश्र ছिनि লোলা মে্সা জৌ গৌ চরণে চেৎ। ৬। স্বরভিদি যদি নৌ তৌ চ নান্দীমুখীয় । १। ইতি ছন্দো-মঞ্জরী।। এতেষা মুদাহরণানি বা-হল্যভিষা নোক্তানি॥

শক্তঃ ত্রি শক্তিবিশিষ্টঃ। সমর্থঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। সহঃ ২ ক্ষমঃ
৩ প্রভুঃ ৪ উফুঃ ৫। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। প্রিয়য়দঃ। ইতি শক্ত শ্দ্রটীকাষাণ স্বামী।।

শক্তবঃ পুণভূমি ভূষ্টযবাদিচূর্ণ । ছাতৃ ইতি ভাষা। যথা। ধানা-ভূষ্টযবে ভূমি স্ত্রিষাণ পুণভূমি শক্তবঃ। কেচিত্ত্ব শক্তৃ রক্ত্রীতি বন্ধুরা ভূমনি দ্রিষাণ।। ইতি জটাধরঃ।। অস্য বিবরণণ শক্তু-শক্তে জষ্টব্যণ।।

শক্তিঃ স্ত্রী কাষজননসামথ্যং।
যথা। যা দেবী সর্বভূতেষু শক্রিকপেণ সংস্থিতা। ইতি দেবীমাহাত্মাস্য চীকাষাং নাগোক্রীভটঃ ৷৷ শক্যতে জেতু মন্যা।
। সা প্রভাবোৎসাহ নম্বজ ভেদান্ত্রিবিধা। তত্র প্রভুত্বে সাংধকত্বাৎ কোষ দণ্ডে৷ প্রভুশক্তিঃ
১। বিক্রমেণ স্বশক্ত্যা বিস্ফুরণ
মূৎসাহশক্তিঃ ২। সন্ধ্যাদীনাং
সামাদীনাঞ্চ যথাবস্থানং মন্ত্রশক্তিঃ ৩।৷ সামর্থ্যমাত্রং। তৎপর্যায়ঃ ৷ জবিণং ২ তরঃ ৩ সহঃ
৪বলং দেশির্য্যং ৬ স্থাম ৭ শুমং
৮ পরাক্রমঃ ৯ প্রাণঃ ১০। ইত্য-

মরঃ ।। শুম ১১ সহ° ১২ । ইতি শব্দরত্নাবলী।। উর্জ্জঃ ১৩। ইতি জটাধরঃ।। কাসূঃ। সা তু শর্বলা-নামাক্রণ। ইতি নানার্থে অমর-ভরতো ।। গৌরী । ইতি মে-पिनी ।। **लग्नीः । ই**তি শব্দমালা ।। 🟶 ।। ত্রিশক্তযো যথা। এয়া ত্রিশক্তি রুদ্দিষ্টা নয সিদ্ধান্ত গামিনী। এহা শ্বেতা পরা সৃষ্টিঃ माषिकी बन्नमः किछ। ।। এবৈব -রক্তা রজিদ বৈক্ষবী পরিকীর্ত্তি-তা। এ ষব ক্লকা তমসি রৌদ্রী দেবী প্রকীর্ত্তিত। ।। পরমাত্মা যথা দে:বা এক এব ত্রিধা স্থিতঃ । প্রযোজন বশাচ্ছক্তি রেকৈব ত্রিবিধাভবৎ।। ইতি বারাহে ত্রি-শক্তিমাহাত্ম্যনামাধ্যায়ঃ ৷৷ 🟶 💵 অপিচ ৷ বিশুঃ শিৰাত্মক স্তত্ৰ বী-জ॰ শক্ত্যাত্মক॰ স্মৃতং। তয়ে। র্যো-গে ভাবন্ধাদ স্তেভ্যো জাতা স্ত্রিশ-ক্তযঃ॥ইতি ক্রিষাসারঃ॥ অন্যচ্চ । ইচ্ছা ক্রিয়া তথা জ্ঞান গৌরী ৰান্ধী তু বৈক্বী। ত্ৰিধা শক্তিঃ স্থিতা যত্র তৎপরণ জ্যোতি রো-মিতি ।। ইতি গোরক্ষস হত।।। #।। অফশক্তযো যথা। ইন্দ্রাণী देवस्वी भाषा बन्नानी बन्नवा-

मिनी। को मात्री नात्रिनिश्ही ह বারাহী বিকটাক্রতিঃ।। মাহেশ্ব-রী মহামাষা ভৈরবী ভীরুৰূপি-ৰী। অষ্টে) চ শক্তয়ঃ সৰ্বা রথ-श्राः अययू मू न। ।। देकि बन्नदेव-वर्त्त बिक्रिकक्रमशर वानयूका नाम ১১৯ অध्यायः ॥ 🕸 ॥ नत्रा-ক্তযে। যথা। তত্র পদ্মে চাফদলে मरिश ह छिकिशृर्दक । दिंख-वीरक्षत बन्नानी॰ रहाजी॰ मारह-শ্বরীণ তথা ॥ নারসিণ্হীঞ বারা-হী মিন্দ্রাণীণ কার্ত্তিকীণ তথা। সর্বশক্তিস্বরূপাঞ্চ প্রধানা পর্ব-मक्ना ॥ नवम्की क मःभृका घटि प्रवाण्ट शृक्षस्य । इंडि বন্ধবৈৰ্ত্তে প্ৰকৃতিখণ্ডে ৬৯ জ-ধ্যায়ঃ ৷৷ 🟶 ৷৷ পঞ্চাশদ্বিফুশক্ত-বে। যথা। কীৰ্ত্তিঃ কান্তি স্তব্টি পুर्की धृष्टिः मास्तिः क्रिया परा। त्यथा महर्स। व्यक्ता मग्रह्मक्का ल-ষীঃ সরস্বতী ॥ প্রীতী রতা রমা প্রোক্তাঃ ক্রমেণ স্বরশক্তযঃ। জ-ষা দুৰ্গাপ্ৰভা সত্যা চণ্ডা বাণী বি-লাসিনী ৷৷ বিরজা বিজয়৷ বিখা विनमा मूनमा स्मृिङः। सक्तिः म-মৃদ্ধিঃ শুদ্ধি শ্চ ডক্তি মু ক্তি মডিঃ क्या १। त्रामा द्विपनी क्रिया

वमूना वमूधा भन्ना। भन्ना भन्नायना সূক্ষা সন্ধ্যা প্রক্রা প্রভা নিশা।। অমোধা বিদ্যুতা চেতি শক্তৰঃ সৰ্বকামদাঃ। এতাঃ প্রিয়তমাক্ষেযু नियक्षाः मित्राजाननाः ॥ विष्तुष्ता-ম সমানাঙ্গ্যঃ পঙ্কজাভয় বাহবঃ ।। ৠ।। পঞ্চাশক্তদেশক্তযো यथा । श्रुरामती मामित्रका भाषानी **जनगर्वतः। लालाकी वर्ज् लाकी চ দীর্ঘরোণা সমীরিতা।। সুদীর্ঘ-**মুখী গোমুখেটা দীর্ঘজিহ্ব। তথৈ--ব চ ৷ স্বংখ্যাদ ব্যব্ধকেন্সো চ ভথা विक्रञ्मूथाणि ॥ जानाम्थी छ-তো জ্ঞেয়া পশ্চাদুক্ষামুখী ততঃ। সুশ্রীমুখী চৈব বিদ্যামুখ্যেতাঃ মু-রশক্তযঃ।। মহাকালী সরস্বত্যৌ সর্বসিদ্ধি সমন্বিতে । গৌরী ত্রৈ-লোক্যবিদ্য। স্যান্মন্ত্রসিদ্ধি স্ততঃ পর্ন ।। আত্মশক্তি ভূ তমাতা ত-,থা লম্বোদরী স্মৃতা। জাবণী না-গরী ভূষঃ খেচরী চাপি মঞ্চরী।। • ৰূপিণী চিত্ৰিণী পশ্চাৎ কাকো-मर्याणि शृञ्ना । मााडजकाली यागित्नी गश्चिनी गश्चिनी छ-था।। कानताजिक ऋक्तिगा क-शर्मिनाशिं वक्त्या। क्या ह मूम्-খেশ্বর্যা রেবতী মাধ্বী ততঃ।।

বারুণী বার্ষবী প্রোক্তা পশ্চাত্র-কোরিদারিণী। ততশ্চ সহজা नची व्याणिनी बाययात्रिञा ॥ এতা ৰুজান্ধ পীঠস্থাঃ সিন্দুরাৰুণ বিগ্রহাঃ ৷ রক্তোৎপল কপালা-ভ্যা মলস্কৃত করায়ুজাঃ ॥ ইতি প্রপঞ্চারঃ ॥ 🛊 ॥ স্বশক্তযো **ষথা। শক্তযঃ পরমেশানি বিদ**ঞ্জাঃ সর্ব যোষিতঃ। নটী কাপালিকী (त्या मानिनी अक्रमानिनी।। **চাণ্ডালী চ अ**लाली চ त्रक्रकी ना-পিতাঙ্কনা। গোপিনী যোগিনী শুদ্ধাব্রাহ্মণী রাজকন্যকা।৷ কো-চাঙ্গনা চ দেবেশি তথৈব শঙ্গকা-রিণী। এতাঃ ষড়ি॰শতিঃ কন্যা দে-वाना यि मूर्वा ॥ टेमवङ्गा वराध-বামা চতথা মাণ্সাপহারিণী ! বৌ-্দ্ধা চজবনী দেবি তথা রসপসা-রিণী।বেশ্যা চতুর্বিধা প্রোক্তা দ্বি-विधा क्कूमालिनी। धीवती विविधा প্রোক্তা তথৈব গণিকাঙ্গনা।। কু-স্করারী দ্বিধা প্রোক্তা তথৈব গো-পিনী স্মৃতা। বাতবৈদ্যাঙ্গনা দে-বি জবনী দ্বিবিধা স্মৃতা ৷৷ বৌদ্ধ-কন্যা ত্রিধা দেবি তথা কোচাঙ্গনা প্ৰিবা। পূৰ্বোক্তাভিঃ সহৈকত্ৰ চ্-তুঃৰফীশ্চ শক্তৰঃ।। ইতি ব্লেবতী

তত্ত্বে ৩পটলঃ ॥ #॥ অপিচ । প-ঞ্চাচারেণ দেবেশি কুলশক্তি প্র-পূজ্যে । नषी काणानिकी वि-শ্যা রজকী নাপিতাঙ্গনা।। ব্রা-ন্ধণী শূত্রকন্যা চ তথা গোপাল কন্যকা। মালাকারস্য কন্যা চ নব কন্যাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ ৷৷ বিশেষ বৈদগ্ম্যযুতাঃ সৰ্বা এব কুলাঙ্গনাঃ । ৰূপ যৌবন সম্পন্ন। শীল সৌ-ভাগ্য শালিনী।। পূজনীয়া প্রয-ত্নেন ততঃ সিদ্ধি ভবেৎ ধ্রুব । ইতি গুপ্তসাধনত্ত্ত্বে ১ পটলঃ॥ 🟶 🛚 তস্যাঃ প্রশ॰সা যথা। শক্তি॰ বিনা মহেশানি সদাহ শবৰূপ-কঃ। শক্তিযুক্তো যদা দেবি শি-**ब्लाह**॰ गर्बकाममध्या मिक्कियुक्क• জপেমন্ত্রণ ন মন্ত্রণ কেবলণ জ-পেৎ । সাবিত্রী সহিতো ব্রহ্মা সিন্ধোভূমগনন্দিনি ৷৷ দ্বারব-**णा॰ क्रकलियः मिल्हा २**जू९ সত্যয়া সহ। তথা কোচবধু স ঙ্গাম্মন সিদ্ধি র্বরাননে। ঈশ্বরো-হ° মহাদেবি কেৰল॰ শক্তি ষো-গতঃ।। শক্তি যোগেন দেবেশি यि निक्षि नं जायल। उत्पव **পর্মেশানি মম বাক্য** वृथा ভ-ति ।। रामखः जनगणूर्यः भक्ति

বক্তেু সুরেশ্বরি। সিম্বুরূপণ মহে-শানি তজ্জল নাত্র সংশযঃ।। স্বীষেষ্টদেবী ভাবেন ভোজ্বে-ত্তাঞ্চ ষত্মতঃ। শক্তিশ্চ কথ্যতে प्ति नृन्त्र मूत्रमूलित ॥ ज्यान-শাব্দাদূর্দ্ধু যা পঞ্চবিংশতি বার্ষি-কী। অপ্রসূতা বিশেষেণ পঞ্চমে-পি ভবেৎ প্রিষে ।। সুন্দরী তুবি-শেষেণ প্রসূতা বাপ্রসূতিকা। অবশ্য পঞ্ম কুর্য্যাই শক্তি মাত্রে মহেশ্বরি ॥ ইতি শক্তিকা-গনসৰ্বস্বণ ৷৷ ৠ ৷৷ তস্যা উৎপত্তি মাহান্য্যাদি র্যথা। নারায়ণ উ-বাচ। সহ বৃদ্ধ্যা বৃদ্ধিনস্তো ন ব-ক্তু মুচিত সুরাঃ। সর্বে শক্ত্যা-লযা বিশ্বে শক্তিমন্তো হি জীবি-नः ॥ बक्षांनि ज्नशर्याखः मर्बः প্রাক্ততিক• জগৎ। সত্যং নিত্যং বিনা মাঞ্চ ময়া শক্তিঃপ্রকাশিতা ।। আবিভূতা চসা মত্তঃ সৃষ্টৌ-দেবী মদীছ্যা। তিরোহিতা চ সা শেষে সৃষ্টি সংহারণে মযি।। সৃষ্টিকত্ৰী চ প্ৰকৃতিঃ সৰ্বেষা জননী পরা। মম তুল্যা চ মুমাযা তেন নারাযণী স্মৃতা ৷৷ সুচিরঞ্চ তপ স্তপ্ত শস্তুনাধ্যায়তা চ মাণ ় তেন তল্মৈ মধা দত্তা তপসা॰

ফলৰূপিণী ৷৷ ব্ৰতঞ্চ লোক শি-কার্থ মস্যান স্বার্থ মেব চ। স্বয়ং বতানাণ তপসাণ ফলদাত্রী জগ-ল্রবে।। মার্যা মোহিতাঃ সর্বে কিমস্যা বাস্তব• বত•। সাধ্য ম-স্যা ব্ৰতফল° কল্পে কল্পে পুনঃ পুনঃ ॥ সুরেশ্বরা যদংশাশ্চ ত্রন্ধ বিষ্ণু মহেশ্বরাঃ। কলাঃ কলা॰-শৰূপা স্তে জীবিনশ্চ সুরাদষঃ॥ मृमा विना कुलालक घरे कर्जु॰ यथाक्यः। विना अर्थं अर्थकात कू थल कर्जू मक्रमः ॥ विना भ-ক্ত্যা তথাহঞ্চ স্বসৃষ্টিণ কর্ত্তু মক্ষ-मः। শক্তি প্রধান। সৃষ্টিশ্চ সর্ব দশ্ন সম্মতা।। অহ মাত্মা চ নি-লিপ্তো ২দৃশ্যঃ সাক্ষী চ দেহিনা• । দেহাঃ প্রাকৃতিকাঃ সর্বে ন-শ্বরাঃ পাঞ্চভৌতিকাঃ ৷৷ অহণ নিত্যশরীরী চ ভানু বিগ্রহ বি-গ্ৰহঃ। সৰ্বাধারা চ প্রকৃতিঃ সর্বা ত্বাহ জগৎসু চ ॥ অহ মাত্বা মনো ব্ৰহ্মা জ্ঞানৰূপো মহেশ্বরঃ । পঞ্চপ্রাণাঃ স্বয়ণ বিক্যু বু দ্ধিঃ প্র-ক্লতি রীশ্বরী।। শক্ত্যো নিদ্রাদয ৈশ্চতাঃ সৰ্বাশ্চ প্ৰক্ৰতেঃ কলাঃ। সাচ শৈলেন্দ্র কন্যেষণ ইতি বে-দনিৰাপিত ৷৷ ইতি ব্ৰন্ধবৈৰ্তে

शर्वनार्थर १ व्यशायः ॥ 🟶 ॥ व्य-পি চ। সা শক্তিঃ সৃষ্টিকালে চ পঞ্ধ। চেশ্বরেচ্ছ্যা। রাধা পদ্মা চ সাবিত্রী দুর্গ। দেবী সরস্বতী।। व्यवाधिष्ठाञ्छात्वी या क्रक्षमा পর-মাত্মনঃ। প্রাণাধিক প্রিয়তমা সা রাধা পরিকীর্ত্তিতা।। ঐশ্বর্যাধি-श्रीकृत्नवी गर्वभक्त कार्तिनी। श-त्रगानमक्षे । ज्ञा निष्ठीः अति-কীৰ্ত্তিভা। বিদ্যাধিষ্ঠাভূ দেবী যা ় পরমেশস্য দুর্লভা ।। বেদশাস্ত্র যোগমাতা সা সাবিত্রী প্রকীর্ত্তি-ত। 1 वृक्षािशश्रिश्राक्ति व। मर्बन-ক্তি স্বৰূপিণী ৷৷ সৰ্বজ্ঞানাত্মিকা मर्बा मा पूर्गा पूर्गनामिनी। ता-গাধিষ্ঠাতৃদেবী যা শাস্ত্রজ্ঞানপ্র-मा मना । क्रक्करको ख्वा या ह मा ह प्रती मद्रश्वी शक्षशामी স্বয়ণ দেবী মূলপ্রকৃতি রীশ্বরী॥ ততঃ সৃষ্টি ক্রমেণেব বহুধা কল-ষা চ সা। যোষিতঃ প্রকৃতে রণ-শাঃ পুমা॰সঃ পুরুষস্য চ। ইতি চ ব্রহ্মবৈবর্ত্তে গণেশখণ্ডে ৪০ অ-ধ্যায়ঃ ৷৷ ৠ৷ বন্ধাণীশক্ত্যুৎপত্তি র্ষপা। ততো ব্রহ্মাদযো দেবা ভ य॰ জগ্মঃ সবা সবাঃ। মদি স্যান্নি-জ্জিতো দেবঃ ক্ষয়ঃ সৰ্বদিবৌক-

সাণ ৷ ত্রতন্মিমন্তরে শক্র বিন্ধা চিন্তযতে ক্ৰিযাঃ। স্ত্ৰীৰূপধারিণী ভূত্বা সহাযত্ব° মহেশ্বরে ।। ক্ষি-প্রণ সরু স্বকার্য্যেত্বণ এবণ বিশ্বে-শ্বরে রণে। ততো দ্যোতিতবান পঝুঃ স্বশক্তি॰ কিরণোত্বলা॰॥ ব্রহ্মকুপধরাণ কিন্তু ললনাকার বিগ্রহা । হ সস্যন্দন মারুঢ়া चकीयायूधधातिनी । उद्ध्यंचडी মহোজেন দানবানাণ ভয়ংকরী ়। তস্যা ঘোরাণি কর্মাণি দৃষ্ট্র म विश्वयन् भिवः। का शूनः मु-ষ্টুঃ সুমেহা সদাতিপ্রতিপক্ষজিৎ ৷৷ ত্ৰস্যাঃ শক্তিণ দিতীযাঞ্চ সৃ-জামি অপরাজিতা । ইতি দে-বাপুরাণে রুরুবধে ব্রহ্মাণ্যুৎপ-ত্তিঃ।। 🟶 ।। নন্দাতীর্থে শক্তি মন্ত্র বিচার নিষেধাে যথা। যো-সাবনাদি মধ্যান্ত শিব শক্তি-মযঃ পরঃ। তদ্যৈব পরমানন্দা সর্ববিশ্বিষ নাশিনী ৷৷ তৎ প্র-ভাবেণ প্রাপ্নোতি তপো যজ্ঞা-দিক° ফল°। মন্ত্ৰাণা° দেবশক্তী-না॰ ন বিচারো বরাননে।। ইতি দেবীপুরাণে নন্দাঙ্গগুপ্রবেশঃ প্র-थमाधायः ॥ अ। श्रह्नाः । यथा । প্রধান প্রকৃতিঃ শক্তি।নিত্য।

শক্তিহে

চাবিক্বভি স্তথা। এতানি তস্যা নামানি পুরুষ যা সমাশ্রিতা।। ত্য্যা গুণানাহ। সত্ত্ব রজ স্তম স্ত্রীণি বিজ্ঞেষাঃ প্রকৃতে র্গুণাঃ। ইতি ভাব 🗣কাশঃ।। ৠ। শক্তি-বিষক পূষ্পাণি যথা। অথ পূষ্প প্রবক্ষ্যামি কর্মযোগে মহেশ্বরি। শৃণুষ পর্যা ভক্ত্যা যথোক্তণ ব্র-क्रां भूता।। क्यां क्रांवीरत एव ঙ্গসুম্ভেত্লসীদ্বয়ণ। জাত্যশো-কে কেতকীদ্বে সমারী চম্পা-কে। পল ।। সন্দ মন্দার প্রমা-গ পাটলা নাগ চম্পকণ ৷ আর-থধণ কর্ণিকারণ পাবন্তী নবমল্লি-কা।। সৌগন্ধিক সকে।রঙ প-লাশাশোক সৰ্জ্জকাঃ। সিন্ধুবা-র অপামার্গ বাপুলীকঞ্চ কাম-জ॰ ।। ব্যাঘুচেল॰ দমনক॰ মরু-বকঞ্চ ততঃপর । লবঙ্গ জল-ককূরি তগরঞ্চ ববা তথা।। শি-বপুষ্প ডোণপুষ্প কামরাজ সুকেতক॰। অন্যানি বনপুষ্পা-**ि जनक उनक**्षि है। गिति-জানি দেশজানি নানাপুপা-ণ্যতঃ পর॰। ইতি প্রপঞ্চসারঃ ।। শক্তিগ্রহঃ পুং শিবঃ ॥ কার্ত্তি-কে্যঃ। শক্তি॰ গৃহাতি ষঃ ই-

ত্যৰ্থে শক্তিশব্দ পূৰ্ৰক গ্ৰহ্ণা-তো রল প্রত্যযেন নিষ্পন্ন ইতি কেচিৎ ৷৷ শব্দশক্তিজ্ঞান ৷ यथा। जनार मकार ज्य-মর্থো ধোদ্ধব্য ইতীশ্বরেচ্ছা শ-ৰ্ক্তি রিতি তার্কিকাঃ। তজ্জ্ঞা-নম্ভ ব্যাকরণাদিভ্যঃ । অতএব শক্তিগ্রহুণ ব্যাকরণোপমানকো-যাপ্তবাক্যাদ্যবহারতশ্চ । বা-ক্যস্য শেষাদৃবৃতে ৰ্বদন্তি সা-মিধ্যতঃ সিদ্ধপদস্য বৃদ্ধাঃ ॥ रेि প্রাঞ্চ। ইতি দুর্গাদাসঃ ।। • শুক্তিগ্রাহকঃ পুং ব্যাকরণোপ-মানাদি ॥ শক্তিগ্ৰহীতা চ। শ-ক্তি॰ আহ্যতি গৃহ্লাতি চ ইত্য-র্থে ঞ্যস্তাঞ্যস্ত গ্রহ ধাতো র্ণক প্রত্যযেন নিষ্পন্নঃ ৷৷ শক্তিধরঃ পু॰ কার্ত্তিকেষঃ ৷ ইত্য-.মরঃ।। শক্তিধারকে তি ।। শক্তিপর্ণঃ পু॰ সপ্তপর্কঃ। ইতি জটাধরঃ ॥ শক্তিপাণিঃ পু॰ কার্ত্তিকেয়ঃ। ইতি হলাযুধঃ ॥ শক্তিভৃৎ পু॰ কার্ত্তিকেষঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। শক্তাস্ত্রধার-কে ত্রি !৷ শক্তিহেতিকঃ ত্রি শক্ত্যস্ত্রধারি

যোদ্ধা। তৎপর্য্যায়ঃ। শাক্তী-कः २। इंडामदः॥ लक्तायुध-ধরঃ ৩। ইতি শব্দরত্নাবলী।। পুণ ক্লী ভজ্জিতযবাদি-শক্তঃ চূর্ণ । ছাতু ইতি ভাষা। यथा। ধানা ভুফ্টযবে ভূমি স্ত্রিযাং পুং ভূমি শক্তবঃ। কেচিত্তু শক্তু র-স্ত্রীতি বন্ধুরা ভূমনি স্ত্রিযা ।। ইতি জটাধরঃ।। অস্য গুণাঃ। যবানা শক্তবো ৰক্ষা লেখনা বহ্নিবর্দ্ধনাঃ। বাতলাঃ কফরো-গন্না বাত বৰ্চোনুলোমনাঃ ॥ ধানা সংজ্ঞাস্ত তেতীব দুর্জরা লেখনাঃ স্মৃতাঃ। গুৰী পিণ্ডী-क्रुणाण्यं निष्नी रेमव विशर्या-যাৎ।। শক্তৃনা মাশু জীৰ্য্যেত मृদু शामवत्न हिका ॥ इं छि রা-জবলভঃ ।৷ ৠ ৷৷ অথ শক্তবঃ ।। ধান্যানি ভ্রাফু ভৃফানি ষন্ত্র পিষ্টানি শক্তবঃ। তত্র যব শ-ক্তবঃ। যবজাঃ শক্তবঃ শীতা मी**शन। नगतः गताः। करु शि**-ত্তহরা ৰক্ষা লেখনাশ্চ প্রকী-ৰ্ত্তিতাঃ।। তে পীতা বলদ। বৃষ্যা বৃংহণা ভেদনা স্তথা ৷ তর্পণা মধুরা রুচ্যাঃ পরিণামে বলাব-হাঃ ।। কফ পিত্ত শ্রম ক্ষুতৃড্

ত্রণ নেত্রামযাপহাঃ। প্রশস্তা घर्त्राता काला वासामार्ख भरी-तिगा ॥ 🗱 ॥ जय हनक यव শক্তবঃ। निस्तरिय म्हनरिक कृ रिके ক্তবং শর্করা সর্পি র্যুক্তা গ্রীমে-তিপূজিতাঃ।। 🗱 ।। অথ শালি শক্তবঃ। শক্তবঃ শালি সংভূতা विक्रिमा निघटना हिमाः । मधुता-গ্রাহিণো রুচ্যাঃ পথ্যাশ্চ বল শুক্রদাঃ।। ন ভুক্তা ন রদৈ শ্ছি-ত্বা ন নিশাযা॰ ন বা বহুন। ন জলান্তরিতান্ নিদঃ শক্তুনদ্যান্ন क्वान् ॥ शृथक्शानः भून-र्फान॰ माभिय॰ शयमा निर्णि। **म्डट्स्मिन मूर्यक्ष मक्ष मक्रू**यू বৰ্জ্জবৈৎ ৷৷ ইতি ভাবপ্ৰকাশঃ ।। 🗱।। জন্মতিথৌ তদ্ভক্ষণ ফল॰। জ্যোতিষে। শক্তৃন্ থাদতি যস্ত তস্য রিগবো নাশ প্রযাস্তি দ্রু-ব॰ ভুঙ্কে যস্তু নিরামিষণ স হি ভবেৎ জন্মান্তরে পণ্ডিতঃ। ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব ।। মেষ সংক্রাস্ত্যা• তদ্দান বিধি র্যথা। স্মৃতিঃ। মে-यादनो শক্তবে। দেয়া বারিপূর্ণা চ গর্গরী। মহার্ণবে। যো দৃদাতি रि भिषाति भक्तम्यगिषिकान्

। পিতৃন্দিশ্য বিপ্রেভ্যঃ সর্বপা
কৈঃ প্রমুচ্যতে ।। বিপ্রেভ্যঃ পাদুকে ছন্ত্রু পিতৃভ্যো বিষুবে শুভুণ । ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বং ।। # ।।
চাতুর্মাস্যব্রতে প্রাভঃস্নানস্য খৃত শক্তবো দক্ষিণা যথা । নারদীয়ণ । নিত্যস্নানে হবির্দ্দিদ্যাক্লিংস্নেহে ঘৃতশক্তবং । নিত্যস্নানে প্রাভঃস্নানে । ইতি মলমাসতত্ত্বং ।।

শক্তুকঃ পু॰ বিষভেদঃ । তস্য লক্ষণ স্বৰূপে যথা । যদ্গুস্থিঃ॥ শক্তুকেনৈব পূৰ্ণমধ্যঃ স শক্তু-কঃ । ইতি ভাবপ্ৰকাশঃ ।।

শব্জুফলা স্ত্রী শনীবৃক্ষঃ। ইত্য-মরঃ।।

শক্তৃकनी औ भगीवृक्षः। ইতি
শব্দরত্বাবলী।।

শক্তার্দ্ধঃ পু॰ শ্রমদারা সক্ষি
ললাট গ্রীবা সূৎপক্ষোদর্শ্মঃ দী
র্ঘনিশ্বাসশ্চ । যথা । সক্ষো ললাটে গ্রীবাষা• যদা ঘর্মঃ প্রবর্ত্ত । শক্তার্দ্ধণ তণ বিজানীযাদাযতোচ্ছাস মেব চ ॥ ইতি
রাজবল্লভঃ ।।

শক্তিঃ' পু॰ বশিষ্ঠমুনের্জ্যেষ্ঠ- শক্তঃ পু॰ ইন্দ্রঃ। ইত্যমরঃ।।
পুত্রঃ। ইতি পুরাণং।। স্বটজবৃক্ষঃ।। অজ্জুনবৃক্ষঃ।

শক্ষঃ ত্রি প্রিযম্বদঃ। ইত্যমর-টীকাষাণ ভরতঃ ৷৷ শक्रुः वि थियममः। ইতামরः॥ শক্মা^{ন্} পু• শক্তিঃ ৷ শকধাতো-রৌণাদিক মনিন্ প্রত্যযেন নি-পান্নঃ। ইতি সিদ্ধান্তকোমুদী।। **मकाः जि ममर्थनीयः॥ म**क्जा-व्ययः। वाघाः। यथा। भटकाा-ৰ্থো ২ভিধ্যা জ্ঞেষঃ লক্ষ্যো ল-ক্ষণষা মতঃ। ব্যক্ষ্যো ব্যঞ্জনষা **ब्बिय खिनुः भक्तमा वृद्धयः ॥** रेंग्रामहात्रभाखः ॥ जनाक । শক্যে সাদৃশ্যবৃদ্ধিন্ত ভবেদুপ-মিতো গুণঃ। ইতি ভাষাপরি-চ্ছেদঃ।। অপি চ। ঈশ্বর সঙ্কেতঃ শক্তি স্তথা অৰ্থবোধক পদ বাচকণ। যথা গোত্বাদি বিশিষ্ট ्वाधकः गवामिशमः छत्वारधा ২ৰ্থো গবাদি বাঁচ্যঃ সএৰ মু-খ্যাৰ্থ ইত্যুচ্যতে । ইতি শক্তি-वामः ॥

'শক্যতাবচ্ছেদকণ ত্রি শক্যাণশৈ ভাসমানধর্মঃ। যথা। এবঞ্চ তা-দৃশধর্মস্য শক্যতাবচ্ছেদকত্বণ দুর্বার মেব। ইতি শক্তিবাদঃ।। শক্রঃ পুণ ইন্দ্রঃ। ইত্যমরঃ।। স্টজবৃক্ষঃ। অজ্জুনবৃক্ষঃ।

ইতি মেদিনী।। জ্যেষ্ঠানক্ষ**্ত**। ষথা। শক্তো নিশ্বতি স্তোয়ণ विश्व विदिशी इदि र्यम् ईक्रगः। অজপাদোহিত্রয়ঃ পূষা চেতী-শ্বরা ভানাণ॥ ইতিজ্যোতিস্তত্ত্বণ ।। চতুৰ্দ্দেশস্ৰা যথা। বিশ্বভূক্ চ বিপশ্চিদ্যঃ সুবিভিঃ শিবি রেব চ। বিভূ র্মনোজব শৈচব তথে। জম্বী বডি স্তথা ৷৷ অদ্ভূতশ্চ ত-था माखि खथा प्लबहुद्धा वृषः। सञ्धामा निवःसामी छितः म-का मञ्जूषम् ॥ 🛊 ॥ जान्निम्न মাসাব্দেষু ইন্দ্রাণাণ নাশ সংখ্যা ষ্থা। ত্রান্ধে দিনে বৈ নশ্যক্তি **ठकुर्मम পूर्वम**द्गाः। শ्रहानि गा চন্ধারি বিংশত্যা সহিতানি চ 🖫 অব্দে পঞ্চসহস্যুণি চন্ত্রারিংশ-চ্ছতানি চ। ইত্যাদ্যে বহ্নিপুরা-त्व गवल्जनमाधायः॥ 🗱॥ ইন্দ্রত্ব প্রাপ্তি কারণ যথা। ইন্দ্র উবাচ। রমাকাস্ত ভবৎপ্রীতৈয রুত ক্রতুশত পুরা। তেন পু-ণ্যেন সম্প্রাপ্ত মধা পৌরন্দর পদ॰।। ইদানী॰ নৃতনঃ কোপি জাতে। দিবি পুরন্দরঃ। ন তেন ধর্মো রিহিতো ন তেন ক্রতবঃ ক্রতাঃ।। মম সিংহাসন॰ দিব্য॰

কথ মাক্রান্ত মচ্যুত। ইত্যেক বদত স্তদ্য শ্ৰুত্বা বাক্যু রমাপ-তিঃ ॥ উন্মীলিতস্মিতাক্ষো ২সা-वृषाठ. मधूतः वहः। औजगवान्-वाह। प्तवामत्या मन्याखा मम সেবাপরাষণাঃ। মদ্যাজনরতা লোকা মন্ডক্তি স্তুতি পাঠকাঃ॥ মমূর্ত্তিষু ক্রতধ্যানা মৎক্থা শ্রা-ব্ৰা ইহ। মৎপাদোদক নৈবেদ্য ভোজিনোম্বহ মেব যে।। মন্নাম কীর্ত্তনপরা মম স্মৃতি পরায়ণাঃ। মন্মন্ত্ৰজাপকা নিত্য মনন্যাশ্ৰয সম্পদঃ ৷৷ কিং বিধিত্বং কিমিন্দ্রত্বং দেবন্ধ মপর॰ কিমু। তেষা মল-ভা॰ যৎ কিঞ্চিৎ দুৰ্লভ॰ নাস্তি সংসূতী !! কি॰ দানৈ র**ন্নফলদৈঃ** কি॰ তপোভিঃ কিমশ্বরৈঃ । সে-ব্যমানেঃ ক্ষিতিতলে স মম প্রী-**जिमान् महा।। इक्त** छेवाह। छ-গবন্ কৰ্মণা কেন স স্বৎপ্ৰীতি-পরো ভবেৎ। তদ্বদস্ব মহাবাহো প্রপন্ধ ভয় ভঞ্জন ৷৷ শ্রীভগবানু-বাচ ৷ অনেকধা মন্তজন মম প্রীতিকরণ পরণ।৷ যদ্ভক্ত্যা তৎ-পদ॰ লেভে তৎ শৃণুম্ব পুরন্দর ৷৷ জপত্যকীদশাধ্যাবগীতানা লোক গঞ্চক । ত্যা ভক্ত্যা তু

সংপ্রাপ্তণ তব সামাজ্য মৃত্তমণ ৷৷ ইতি পাদ্মোত্তরখণ্ডে ৯৬ व्यथायः ॥ শক্ৰকীডাচলঃ পু॰ সুমেরূপর্বতঃ । ইতি হলাযুধঃ।। শক্রগোপঃ পু॰ ইন্দ্রগোপকীটঃ । ইতি জটাধরঃ।। শত্ৰজ্ঞ পু॰ কাকঃ। ইতি ত্ৰিকা-ওলৈষঃ ॥ ইন্দ্রজাতে ত্রি ॥ শত্ৰজাতঃ পু॰ কাকঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।। ইন্দ্রজাতে ত্রি॥ শক্রজিৎ পু॰ রাবণপুত্রঃ।ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ৷৷ ইন্দ্রজেতরি ত্রি अक्थनूर की हेस्प्रन्रा गडी ইতি রামধনুক ইতি চ ভাষা। रेठामतः ॥ रेजागू ४० मक्य मू কৌশিকাযুধ মিত্যপি। ঐরাব-ভ॰ রোহিত স্যাদবক্ত্রণ যদি ত-দ্ধনুঃ ।। ইতি শব্দরত্নাবলী ।। শক্ৰশ্বজঃ পু॰ ইন্দ্ৰধ্বজঃ। তদ্বি-বরণ যথা। নৃপৰাহন উবাচ । ভগবন্ শ্রোতু মিচ্ছামি তস্য উত্থাপন॰ যথা। ক্রিয়তে দিন ঋক্ষে চ ডব্য মন্ত্র বিধি° বদ ॥ অগন্ত্য উবাচ। বন্ধণা কথিত॰ শক্ত বৃহস্পতি সমীপতঃ। যথা তথা প্রবন্ধ্যামি বিধিণ কেতোঃ

সমুচ্ছযে ॥ বৃহস্পতি রুবাচ । শুভাহে ঋক্ষে করণে. মুহূর্চ্ছে **७७ मक्टल। रे**नवब्बः সূত্রধা-রশ্চ বন॰ গচ্ছেৎ সহাযবান্।। দেবী প্রতিষ্ঠা বিধিনা যাত্রাযাণ যা প্ৰচোদিতা। গদ্বা বৃক্ষণ শু-ভ॰ পুষ্পা ধবার্জুন প্রিয়ঙ্করণ ॥ উড়ুম্বরাজকর্ণঞ্চ পঞ্চৈতে শোভ-ना श्दाः। धजार्थ वर्जयष्य रात উদ্যানজান্ জ্মান্ ॥ क-ন্যা মধ্যে তু ষা ষষ্ঠীঃ করমানেন क्ब्राट्य । এकामम क्रा वरम 'নব পঞ্চ ক্রাপরা।। অরালতা• ক্রিমিচিতা॰ তথা পক্ষি নিকেত-না । বল্মীক পিতৃবনজা পুশু-ষ্ক কোটরান্তরাণ।। স্বব্ধাঞ্চ ঘট-সিক্তাঞ্চ তথা স্ত্রীনামগহিতা । বিদ্যুৎ বজুহতা ঞ্চৈব দগ্ধাঞ্চ প-রিবর্জযেৎ ৷৷ অলাভে **চন্দন**ণ আমু শাল শাকময় তথা। ক-র্ত্তব্য শক্র চিহ্নার্থে ন চান্য বৃক্ষজণ ক্রচিৎ ৷৷ শুভভূমিভবণ গ্রাহাণ শুভতোষণ শুভাবহণ ৷ ততঃ সংপূজ্যেদৃক্ষণ প্রাত্তাদে-দ্বাখোপি বা ।। নমো বৃক্ষপতে वृक्क ज्ञाम्क्रियां भाषितः। ध्रका-র্থ তত্ত্বতো নাথ অন্যথা উপ-

গম্যতা' ॥ রাত্রৌ দেখে। বলি স্ত-**क यूगव्रक उटेश्व ह।** वामवाना॰ মহাবৃক্ত ক্ষা চান্যত্ত গম্যতা।।। ধজার্থে দেবরাজস্য নক্ষান্তি স্তব অত্ত চ। পূজ্যিত্ব। ততে। বৃক্ষণ বলি ভূতায় দাপয়েৎ ।। প্রভা-তে ছেদথেম্বৃক্ত শুভস্তপ্রপাদি দ-र्न देनः। श्वकाश्वत्रश्वत्रश्व ममूज जत्रनः नेषी ॥ वृक्षात्रग्रान् अजान् कीत्रानाद्वादश्य (प्रवणानयः । (मर्दा विक उथा माधूनिक वक्त হয়ে রপি।। প্রতিমা পূজিতা স্ব-**প্লে কিপ্র**॰ সিদ্ধিফলপ্রদ। মৎ-मा भाष्म पिथ लाजः ऋधितः मृ ত রোদন ।৷ অগন্যাগনন দৃষ্ট্য আশু সিদ্ধিফলপ্রদ । ক্রমাণ **স্তিল॰ ঘন॰ ধান্য॰ শ**ত্ৰুনাশণ তথা শুভ ।। ফ্ল পুশ সিতা দূর। ऋदि लक्षा क्यावराः। मध्य गाव ख्या मिखनां ताका श्रेमाय-কাঃ ৷৷ গৌঃ সবৎসা নবসূতা मृखी भूख कमार्थमा। शक छक्त-রণ কূপে ব্যাধি মোক্ষকর চি-রাৎ।। এবং স্বপ্নান্ শুভান্ দৃফু। তথা ছিন্দেত পাদগ'। উদগ্ব খঃ প্রাগ্নুখো বা মধু বজ্রাকু পর্শুনা ।। পূর্বোতরে চ পতন• শক্তো

২শব্দো হব্রণঃ শুভঃ। অলগ্ন পাদ-পে চান্যে অন্যথাতু পরিত্যজেৎ ৷৷ অফাঙ্গুল তাজেৎ মূলে অগ্ৰে তম্ব জলে ক্ষিপেৎ। তথা তমা-नरमद्भ नकरहेन वृदेष द्वि ॥ ষুবানৈ বলসম্পন্নৈ নেষণ তৎ পু-त्रञः পत्रः। नीयमाना यमा यखी সমা বা চতুরসুকা॥ মাধত্তে রাজ্ঞঃ পুত্রু পুরেটিইত । আরভঙ্গে বলং ভিদ্যাদ্রাজ্যনা-শংক্ষয় তথা ৷৷ অর্থস্য অক্ষ ভ-ঙ্গেন শান্তি ন্তত্র তু.কারযেৎ। ই-ন্দ্ৰৰ্জক্ত মন্ত্ৰেণ জাতদেবসমাপি বা।। তথা নীম্বা শুভে লগ্নে পুর-স্তাদুপবেশ্বেৎ। দার শোভাণ পথ तथा। गृट्ट रुप्टि ह कात्ररा ९ ॥ यना পটহ নিনাদাশ্চ বেশ্যা শথ দিজাতযঃ। সংস্টল র্বেদ শব্দৈশ্চ তানেযা যত্ৰ উচ্ছেষেৎ।। তত্রস্থা ঞ্চিত্রকর্মাবনির্মিতে স্তা-ম্ব বেষ্টযেৎ । বটেন্ডু রণ্ডজ রো-মোখেঃ শুকৈঃ শুকৈ র্যথা ক্রমণ । নন্দোপনন্দ সংজ্ঞাশ্চ স্বমার্য্যঃ প্রথমাণশগাঃ ৷৷ দেব্যে জব বি-

জযাখ্যাঃ যোডশা॰শ ব্যবস্থিতাঃ

৷ অধিকে শত্ৰুজযিত্ৰী তথাৰ্থজা

टेमवटें मंखाः ॥ धक शतिमा-

পার্থণ সপরিধিঃ প্রথমণ পিটে । स्वाज्याण्य विश्वीनानि वर्षा। एक्शानि वृक्षिमान्।। तमना॰ वि-চিত্ৰ বৰ্ণাণ প্ৰথমাণ দদ্যাৎ স্বয-স্তুঃ। সুরক্তা॰ চতুরসূ।ঞ্.বিশ্বক-ৰ্মা দিতীৰতঃ ৷৷ অফাসায় স্বৰণ শক্তো नीनत्रका॰ প্রদাপয়েৎ। ক্লম্ভ° যমেন বৃত্তঞ্চ বরুণেন সহ-मिकः ॥ मञ्जिष्ठी जनमाकातः वामूरमरवा यमृत्रकः। नीव्यवर्शः ত দদ্যাৎ স্কন্দে৷ বহু বিচিত্ৰিত ॥ কৃত্তন্ত দহনো দদ্যাৎ সুবর্ণাভ• তথাক্টমণ। বৈদূর্য্য সদৃশ মিল্রো देशदिवयः मांश्रदयः वृद्धः ॥ ठळा-ক্ষাক্রতিম্ব সূর্য্যো বিশ্বেদেবাঃ প-श्वनिज्या अवस्या नियम ममूर नी न॰ नीत्ना ९ भना जा म॰ ॥ छ-ৰুণা শুক্তেণ ততে। বিশাল মূৰ্দ্ধ-**७। नारु। गृ**टिश विकिनानि वर्श-মাতৃভিঃ স্বানি ৰূপাণি।। যদ্যে-কেনৈব দত্তম্ব কেতে৷ স্তত্তস্য ভূ-ষণ । তদৈব ত বিজানীযাদ্য -बानि छ मूष्ट्र यथ ॥ अथम প্রবিশমানা ভূমি যক্তি হান্তি রা-ষ্টু॰। বালানা॰ তালশব্দেন দেশ বিঘাত সমাচক্টে ৷৷ নৃপবধকরা বিশীৰ্ণা শুভাবহা সৰ্বসাজ্ৰা চ।

শৰু সূৰ্য্য যম শক্ৰ সোম ধন্য वाकृटेकः ॥ वङ्गीन श्रवि मखान्छ হোতব্যাঃ দধি চাক্তাঃ। শুক্র স্বন্দ গুরু রুজ অঞ্চরাদি প্রগা-ठरय ।। इन्ना जू विधिवन्नक्तिन्।-লা॰ লক্ষেত বুদ্ধিমান্। সুতেজাঃ সুমনো দীপ্তঃ সংহতো রুচিরপ্র-ভঃ। রক্তাশোক সমাকারো রথ **जिती यनः ७७: ११ मध मृ**क्जि মেঘানা॰ নাদাঃ শস্তান্ত পাবকে । ততঃ স কদলীক্ষু দণ্ডান্ পতা-কানি সমুচ্ছবে।। অন্যাশ্চ বিশ বিধা শোভাঃ শক্ত কেতু সমুচ্ছ-य । धीर्षभाम जू वरिमा रि ক্লাযা॰ শোভনে খাংক ।। আশ্বি-নে বাথ শুক্লাযাণ প্রবনেনাথ উ-চ্ছবেৎ। পৌরজন লগ্ন বৃন্দেঃ প-টভেরী নিনাদিত ॥ বিতান ধজ শোভাত্য পতাকাভিঃ সমজ্জল । বিফ্বীশ শক্ত মন্ত্রেণ সিণ্ছরক্ষা ক্তেন চ ॥ দৃঢ মাতৃক রন্ধুস্থ শুভতোরণ মাঙ্গলণা অবিলয়ি-ত মুখান মভগ্ন পিটক সম ।। ন হুত বা সমুখাপ্য কেতু বাস-ৰজণ বিভো। উচ্ছিত রক্ষযেৎ প্রাজ্ঞঃ কাকোলূক কপোতযোঃ ॥ न नेमुर्थाशनः नन्त्रानुत्तामा

মপি পঞ্চিণা॰। যন্ত্ৰোদ্দেশেন ত॰ ক্র্য্যাৎ মুখণ কেতো র্যথাবিধি ॥ তথা সুসংস্থিত পূজা মুখ যন্ত্র সুষদ্রিত । রাত্রো জাগরণ क्रशामिक मञ्जानूकीर्त्तन ॥ शू-রোহিতঃ মদৈবজ্ঞঃ শুভ শান্তি-রতঃ সদা । ছত্রপাতো নৃপ॰ হ-ন্যাৎ পতাকা মহিষীবধণ ৷৷ পি-টকে যুবরাজস্য সচিব মনুকম্প-তে। রাষ্ট্রণ তোরণপাতেন ধজে অন্নক্ষয়ে ভবেৎ ৷৷ পতিতে শক্ৰ ৰূণ্ডে তু নৃপ মন্যা সমাদিশেৎ। ক্বমিজালক উত্থানে শলভাত্ত-করান্ত্রণ ।। সুসমে সংস্থিতে শা-স্তি নৃপিদ্য নশরদ্য চ। যাচো-ছিতস্তু তিষ্ঠস্তি তাবৎ পৌরাঃ স-দ। হুক্টাঃ॥কেতো র্রিরতা যজনে ভূঞীযাদ্বিপ্রকন্যাশ্চ ৷৷ পাতে তু **उदेशव क्र्याामूश्वादन शामृगी शृ** জা । রাত্রৌ শুভরুৎ পাতন[°] নো দৃষ্ট কাক কপোতেঃ ৷৷ যা-,তি নৃপণ সহরাষ্ট্রণ যদৈচব কার-যেৎ কেতৃ । নগরে বা পুরে খে: টে ফদ্যেষণ ন্দৰ্বতে পৌরাঃ॥পুরে নগরসা দ্বারে বৃষ সিণ্হ খগো-থিত । কেতু সমস্ত ঘোরাণা नाननः जयमः गर्द ॥ विवः श्र्वः

হরিঃ কেতৃ প্রাপ্তবান্ বৃষবাহনাৎ। তথা ব্রহ্মসুতেনৈব ব্রহ্মগঃ শক্র মাগতঃ ॥ তেন সোমস্য তদৃত্ত ততো দক্ষে সমাগতঃ
। তদঃ প্রভৃতি স্বস্থিত নৃপা অদ্যাপি উচ্ছ্যুণ ॥ এবং যঃ কারযেদ্রাজা কেতু বিজযকারকং।
তস্য পৃথী বলোপেতা সদ্বীপা
বশগা ভবেৎ ॥ ইত্যাদ্যে দেবীপুরাণে ইক্রপ্পজ লক্ষণং ২১
অধ্যায়ঃ ॥

জিনদানঃ পু॰ অজুনঃ। ইতি
জটাধরঃ॥ ইন্দ্রানদ্দকারকে ত্রি
শক্রপর্য্যায়ঃ পু॰ স্বটজবৃক্ষঃ।
ইতিরত্নমালা॥ ইন্দ্রবাচকশ্চ॥
শক্রপাদপঃ পু॰ দেবদারুবৃক্ষঃ।
ইত্যমরঃ॥ স্বটজবৃক্ষঃ। ইতি
রাজনির্যক্টঃ॥

শক্রপুষ্পিকা স্ত্রী অগ্নিশিখাবৃক্ষঃ
। ইতিরত্নমালা ॥

শক্রপুষ্পী ন্ত্রী অনিশিখাবৃক্ষঃ। • ইত্যমরঃ॥

শক্রভবন° ক্লী স্বর্গঃ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ॥

শক্তভিৎ পু॰ ইন্দ্রজিৎ। সচরা-বণপুত্রঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।। শক্রভূতবা স্ত্রী ইন্দ্রবারুণী। अक्रिमा

ইতি শব্দচন্দ্রিকা॥ শক্রমাতা স্ত্রী ভাগী । ইডি রাজনির্ধন্টঃ ॥ ইন্দ্রজননী চ ॥ শক্ৰমাতৃকা স্ত্ৰী শক্ৰধজাঙ্গযঞ্চি-विटमसः। यथा का निका भूतावः। সমার্যঃ পঞ্চর্ত্তব্যাঃ শক্রস্য নৃপসত্র। শালময্যস্ত তাঃ স-ৰ্ৰা স্তৃপরাঃ শক্তমাতৃকাঃ।৷ কে-তোঃ পাদ প্রমাণেন কার্য্যাঃ শ-ক্রসমারিকাঃ। মাতৃকার্দ্ধ প্রমা-ণা তু ষন্ত্ৰণ হস্তদ্বয়ণ তথা ৷৷ এবণ ৰুষা সমারীশ্চ মাতৃকা° কেতৃ মেব চ ৷ একাদশ্যাণ সিতে পক্ষে ষষ্ঠীন। মধিবাসন ।। ইতি তি-থ্যাদিতত্ত্ব॰ ॥ ক্রমূর্দ্ধ। স্ত্রী বন্মীকঃ। ইভি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ াক্রবলী স্ত্রী ইন্সবারুণী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ ক্রবাহনঃ পুণ মেযঃ। ইতি শব্দচন্দ্রকা ॥ क्वीक॰ क्वी रेख्ययः। रेछि রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ क्रगतामनं क्री रेखरगृः। रेखि र्लायुभः ॥ ক্লশাখী^ন পু॰ সটজবৃক্ষঃ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ॥

শক্তাশ

শক্রশালা স্ত্রী প্রতিশ্রষঃ। ইতি ভূরিপ্রধােগঃ।। পুস্তকান্তরে স-ত্রশালা ইতি পাঠশ্চ ।। ইন্দ্র-গৃহঞ্চ।।

শক্রশিরঃ পু॰ বল্মীকঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। ইন্দ্রমস্তকশ্চ।। শক্রসারথিঃ পু॰ মাতলিঃ। ইতি হলাযুধঃ।।

শক্রস্তঃ পু॰ বালিবানরঃ । ইতি হলাযুধঃ ॥ ইন্দ্রপুত্রমাত্রঞ্চ শক্রস্থা ত্রী পালকী । সন্দু-রুখোটী ইতি ভাষা । ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা ॥

শক্রসৃষ্টা স্ত্রী হরীতকী। ত্রিকাওশেষঃ।।

শক্রাখ্যঃ পু॰ 'পেচকঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ ইন্দ্রনামকে ত্রি শক্রাণী স্ত্রী সচী। ইতি শব্দ-মালা॥

শক্রাশন কী ভঙ্গা ভাঙ্ইতি
ভাষা ৷ অস্য গুণাঃ ৷ শক্রাশনন্ত
তীক্ষোক মোহক প্রকাশন

৷ বল মেধাগ্রিক শ্লেমাদোষহারি রসাযন ৷৷ ইতি রাজবল্লভঃ ৷৷ অন্য বিজয়া শব্দে
দক্ষব্য ৷৷ ইন্সভোজনঞ্চ ৷৷
শক্রাশনঃ পু প্রটজবৃক্ষঃ ৷

ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।
শক্রাহ্মঃ পুং ইন্দ্রমবঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।। ইন্দ্রমামকে তি ।।
শক্রিঃ পুং মেঘঃ।। বজুং॥ হস্তী
।। পর্বতঃ। ইতি সংক্ষিপ্তসারোলাদিবৃত্তিঃ।।

শক্তোখান ক্লী শক্তধজোৎ-সবঃ। অস্য বিধি লিখ্যতে। 🕮 🏽 ঔৰ্ব উবাচ। অথাতঃ শৃণু রাজে-ন্দ্ৰ শক্তোত্থান ধজোৎসব° 1 ষৎক্লত্বা নৃপতি ৰ্যাতি নো কদা-দ্বাদশ্যা॰ শ্রবণে সিতপক্ষকে। व्यात्राधरयम् भः ममाक् मर्विदया-পশান্তযে ॥ রাজোপরিচরো नाम बमूनामाणतु यः। नृश-স্তেনায মতুলো যজ্ঞঃ প্রাবর্ত্তি-তঃ পুরা।। প্রাবিট্কালে চ ন-ভসি দ্বাদশ্যা মসিতেতরে ৷ পু-রোহিতো বহুবিধৈ বাঁদ্যৈ স্তৃ-र्रिगः সমন্বিতঃ ॥ প্রথমণ শক্ত-क्ष्यर्थ वृक्त मामछा वर्कत्य । সাম্বৎসরো বার্দ্ধকিশ্চ ক্লতকৌ-তুক মঙ্গলঃ।। উদ্যানে দেবতা-গারে শ্বাশানে আর্গ মধ্যতঃ। যে জাতা স্তরব স্থাণ স্ত বর্জযে-দাসবধজে।। বহুবল্লীযুত শুক্ষণ

বহুকণ্টকসংযুত। স্বব্ধ বৃক্ষাদ-নীযুক্তণ লতাচ্ছন্নণ তৰুণ ত্যজেৎ ।। পক্ষি বাস সমাকীর্ণ কোটরৈ ৰ্বহুভি যুতে। প্ৰনানলবিধন্ত তৰু খত্নেন ৰৰ্জ্যেৎ ৷৷ নাৱী সংজ্ঞাশ্চ যে ৰৃক্ষা অতিহুস্বা অ-তিক্নশাঃ। তান্ সদা বৰ্জবেদ্ধী-রঃ সর্বদা শক্ত পূজনে।। অর্জু-নোপ্যশ্বকৰ্ণচ প্ৰিষকো ধব এব চ। ঔডুম্বরশ্চ পঞ্চৈতে কেম্বর্থে সত্তমাঃ স্মৃতাঃ ।। অন্যে চ দেব मार्वामगः भानामग खत्रव् खथा েপ্রশস্তাস্ত পরিগ্রাহ্য নাপ্রশ-স্তাঃ কদাচন ।। তঞ্চ বৃক্ষণ ততো রাত্রো স্পৃষ্ঠা মন্ত্র মিমণ পঠেৎ। ষানি বৃক্ষে ছু ভূতানি তেভ্যঃ স্বস্তি নমো ২স্ত বঃ ৷৷ উপহার**॰** পৃহীত্বেমণ ক্রিযতাণ বাসবধ্বজঃ। পার্থিব স্ত্রাণ বরষতে স্বস্তি তে **श्ख न**रागाखन ॥ ध्रकार्थ॰ रातन-রাজস্য পূজেষ প্রতিগৃহতা । ততোপরেক্লি ত॰ ছিত্বা মূল ম-ফীঙ্গুল পুনঃ।। জলেকিপেত্ত-দগ্রস্য ছিবৈষ্ব॰ চতুরঙ্গুল । ত-তো নীম্বা পুরদ্বারণ কেতুণ নির্ম্মা-ৰ তত্ৰ বৈ ॥ শুক্লাফীম্যা॰ ভাজ-পদে কেতু বেদী প্রবেশযেৎ।

দ্বাবি॰শদ্ধস্তমানস্ত অধমঃ কেতু ৰুচ্যতে ।। দাত্ৰিংশতু ততো জ্যা-যান্ দাচদারি শদেব চ। তভো **২ধিকঃ সমাখ্যাতো দ্বাপঞ্চাশত্ত-**থোত্তমঃ ॥ সমার্যাঃ পঞ্চকর্তব্যাঃ শক্রস্য নৃপসত্তম। শালময্যস্ত তাঃ সর্বা স্তুপরাঃ শক্তমাতৃকাঃ।। কেতোঃ পাদ প্রমাণেন কার্য্যাঃ শক্রন্থনারিকাঃ । মাতৃকার্দ্ধপ্র-সাণাজু যন্ত্ৰণ হস্তদ্বয়ণ তথা ৷৷ এব ক্সবা সমারীশ্চ মাতৃকাণ কেতু-মেব চ। একাদশ্যা॰ সিতে পক্ষে ্ষ্টি॰তা মধিবাসষেৎ॥ অধিবাস্য **্রতা যফি গন্ধদারাদি মন্ত্রকৈঃ** দাদশ্যাণ মণ্ডল কৃষ্বা বাসবং বস্তৃতাত্মকণ।। অচ্যুত পূজ্যিত্ব। বুশক্ত পশ্চাৎ প্রপূজ্যেৎ। শ-দ্য্য প্ৰতিমা[°] স্বৰ্যাৎ কানকী[°] ীরবীণতথা।। অন্য তৈজস ভূ-গ্ৰামা সৰ্বাভাবে তু মৃন্মযী । তা॰ াওলস্য মধ্যে তু পূজ্যিত্ব। বি-শ্যতঃ ॥ ততঃ শুভে মুহূর্ত্তে তু কতু মুখাপযেমৃপঃ। বজুহস্ত সু-ারিম্ন বহুনেত্র পুরন্দর ৷৷ ক্ষেমা-ি সৰ্বলোকানা পুজেষ প্ৰতি-্হতা ৷ এছেহি সৰ্বামর সিদ্ধ °বৈ রভিফুতো বজুধরামরেশ।।

ममूर्थिठ खु॰ खेवनामा नाम गृ-হাণ পূজা ভগবন্ধম স্তে ৷ এব मुखत्रवादेक प्रश्न क्षत्नापि-ভিঃ ৷৷ ইতি মন্ত্রেণ তন্ত্রেণ নানা देनदवना दवनदेनः । जाशूरेनः পायदेमः शादेन श्वंदेष शानाजि রেব চ ॥ ভক্ষ্যৈ র্ভোজ্যেশ্চ বিবি-ধৈঃ পূজ্যেৎ শ্রীবিবৃদ্ধষে। ঘটেষু দশদিক্পালান্ গ্রহা॰শ্চ পরিপূ-करय ।। সাधामीन् সকলान्म-বান্ মাতৃঃ সর্বা স্তুনুক্রমাৎ। ত-তঃ শুভে মুহূর্ত্তে তুজিনি বৰ্দ্ধকি' সংযুতঃ ॥ কেতো রূপান ভূমিস্ত যজ্ঞবেদ্যাশ্চ পশ্চিমে ৷ বিশ্ৰৈঃ পুরোহিতঃ সার্দ্ধ গচ্ছেদ্রাজা সুমঙ্গলৈঃ । রজ্জু ভিঃ পঞ্চভি ৰদ্ধাণ যন্ত্রন্নিষ্ট॰ সমাতৃক॰ । সমারীভি-শ্চ সংযুক্তণ দিক্পালানাঞ্চ পে-টকৈঃ।। পেটকৈঃ স্থানে পউকৈ রিতি চ পাঠঃ ৷৷ বৃহন্তি রতিকা-·বৈস্তৃশ্চ নানা জব্য সুপূরিতৈঃ। यथावटर्न यंशातमारमार्किटे र्व-স্ত্ৰবেফিতৈঃ।। যুক্তণতণ কিন্ধিনী कारेन वृश्म्य विशेष हा मरेतः । ভূষিত॰ বহুরত্নে**শ্চ মাল্যৈ ई**ছ-विदेश खशा ॥ वरु भूरेष्मः भूगरेका শ্চ ভূষিত রত্নমালযা। চিত্র-

মাল্যাম্বরধরৈ শ্চতুর্ভি রপি তো রণৈঃ ।। উত্থাপযেমহাকেতুং রা-জামাত্যৈঃ শনৈঃ শনৈঃ । তমু-ত্থাপ্য মহাকেতুং পূজিতং মণ্ড-

প্রতিমাণ তাণ নযে-মূল কেতোঃ শক্ত বিচিন্তযন্। যজেত্ত পূৰ্ৰবত্তত্ৰ শচীণ মাতলি বজু মৈরাবত তথা। গ্রহা শ্চা भाष मिकभानान् महाभा भन-দেবতাঃ ।। অপুপাদ্যৈঃ পূজ-ং যেতু বলিভিঃ পাষসাদিভিঃ।পূ-জিতানাঞ্চ দেবানাং শশ্বদ্ধোনং সমাচরেৎ ॥ হোমান্তে তু বলি দদ্যাৎ বাসবায় মহাত্মনে। তি লং ষৃতঃ চাক্ষতঞ্চ পুষ্পাণ দূৰ্বাণত-থৈব চ ।। এতৈস্ত জুহুষাদ্দেবান্ স্থৈঃ স্বৈ ম স্ত্রৈ নরোত্তমঃ। ততো হোমাবসানে তু ভোজযেদ্বপি ব্ৰাহ্মণান্ ।। এবং সংগৃজ্যেমিত্যং সপ্তরাত্রণ দিনে দিনে। ব্রাহ্মণৈঃ স হিতো রাজা বেদ বেদাঙ্গ পার: | গৈঃ।। সৰ্ধত্ৰ শক্ত পূজাসু যজেষু পরিকীর্ত্তিতঃ। ত্রাতার মিতি ম-खाय॰ वामवना क्षियः मना ॥.a-বং ফ্বনা দিবাভাগে শক্তোখাপ ন भानिछः। अवनकं यू डीयात्र हाम- ॥

भागाः भार्थिवः स्वयः ॥ अख्याति ভরণ্যাস্ত নিশি শক্রণ বিসর্জযেৎ । সুপ্তেষু সৰ্বলোকেষু যথা রাজা ন পশ্যতি ৷৷ যশাসামৃত্যু মাপো-তি রাজা দৃষ্টা বিসর্জন । শক্রস্য নৃপশাদূ ল তত্মানেকেত ত॰ নৃপঃ ॥ বিসর্জনস্য মন্তোষণ পুরাবি-দ্ভি রুদীরিতঃ। সার্দ্ধণ সুরাসুর-গালঃ পুরন্দর শতক্রতো।। উপ-হার গৃহীত্বেষ মহেন্দ্রধজ গম্য-তা॰। সূতকেতু সমূৎপন্নে বারে ভৌমস্য বা শনেঃ ৷৷ ভূমিকম্পা-'দিকোৎপাতে বাসবং ন বিসর্জ-ষেৎ। উৎপাতে সপ্তরাত্রম্ভ ত-থোপপ্লব দর্শনে।। ব্যতীত্য শনি ভৌমৌচ হ্যন্যৰ্ক্ষেপি বিসৰ্জ্জ ষেৎ । মৃতকে ত্বথ সংপ্রাপ্তে ব্যতীতে সূতকে পুনঃ ৷৷ যশ্মিন্ তশ্মিন্ দিনে চৈব সূতকান্তে বিসর্জবেৎ । তথা রক্ষেমৃপঃ কেতু॰ পতন্তি শঙ্গনা যথা ৷৷ ন কেতো নৃগশা-'मृ'ल यावमहि विमर्कन । **भटेनः** শনৈঃ পাতযেতু যথোখাপন মা-দিতঃ ॥ ক্বত তথান্যথা ভগ্নে কেতৌ মৃত্যু মবাপুষাৎ। বি-সৃষ্ট॰ শত্রুকেতু॰ ত॰ সালকার• **७**थ। निर्णि ॥ किर्लिम्टनन मस्त्रिष

স্বগান্ত্র শলিলে নৃপঃ। তিষ্ঠ কে-তো মহাভাগ যাবৎ সম্বৎসর জলে॥ভবাষ সৰ্ঘলোকানা ম-खतायविनानक । उत्थानरयखृ-য্যরবৈঃ সর্বলোকস্য বৈ পুরঃ॥ রছে৷ বিদর্জমেৎ কেতু বিশে-ষোয় প্রপূজনে। এব যঃ সরুতে পূজা॰ বাসবস্য মহাত্মনঃ ॥ স চির পৃথিবী ভুক্ত্বাবাসব লো-ক মাপুয়াৎ। ন তস্য রাজ্যে ন্দুর্ভিক্ষণ নেত্রযো নাপ্যধর্মক্রৎ ॥ श्रामाञ्ज मृज्य नीकात्म ज-নানাণ তত্ত্ব জায়তে। তত্ত্ব্যঃ ·কোপি নান্যোন্তি প্রিয়ঃ শক্ত স্য পার্থিব ॥ তস্য পূজা সর্বপূ-জা কেশবাদ্যাশ্চ তত্রগাঃ। স-कल कलूयशांति गांधि मूर्जिक নাশি সকল ভবনিবেশ সর্ব সৌভাগ্যকারি। সুরপতিগৃহ-গামীহার্চন॰ শব্রুকেতোঃ প্র-তিশরদ মনেকৈঃ পূজ্বেৎ শ্রী-বিবৃদ্ধ্যৈ ।। ইভি শ্রীকালিকাপু-तार्ष ৮৮ অधारः॥

াক্রোৎসবং পু॰ ইন্দ্রস্যাউৎসবং া তৎপর্য্যায়ঃ। ধ্বজোত্থান॰ ২। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।৷ অস্য বিব-ব্রণ•শক্রোপানশব্দে দ্রম্বরু৽॥

শক্লঃ পু॰ প্রিয়মদঃ। ইতি শক্ল-শব্দটীকাষাণ ভরতঃ।। শক্তরঃ পু॰ বৃষঃ।ইতি সিদ্ধান্ত-कोमूमग्रम्भामिवृक्तिः ॥ **भक्ती खी अनूनी। ই**छि मि-জান্তকৌ মুদ্যা মুণা দিবৃতিঃ ॥ ন-मीवित्मयः ॥ त्यथन।॥ इत्मा-ভেদঃ। ইতি মেদিনী ।। সতু চ-जूर्मगाकत्रशामवृद्धः । जटसमा বথা। অসম্বাধা ১ বসম্ভতিলক ২ সিংহোদ্ধতা ৩ অপরাজিতা ৪ শ্রহরণকলিকা ৫ বাসন্তী 🍑 लाला १ नासीमूथी ৮। देखि क्टमामक्षती ॥ **गर्का পু॰ হন্তী। ইতি সিদ্ধান্ত**-को यूमगायूना मिवृजिः ॥

শক্ষঃ পু॰ শকটাদিবাহকবৰভঃ
। যথা। কন্ধবাহস্ত শক্ষণ শৃঙ্গী
ংগা রক্ষধূর্তিলঃ ৷ ইতি হারাবলী ৷৷

শক্ষরঃ পুণ শিবং ৷ ইত্যমরং ৷৷
অস্য বৃৎপত্তি র্যথা ৷ সদা ধ্যানাক্ষ ভক্তানাণ প্রনণ ষ্মিরামষণ ৷ ভূতনাথত্ব মপ্যাম্মাত্তেনাহণশক্ষরঃ মৃতঃ ৷৷ ইতি স্কন্দপুরাণণ ৷৷ অস্য ভন্মান্থি ধারণ
কারণণ্যথা ৷ বিস্তৃত্য তান্ত্রক্ষ

विकृत्यास् वृत्रख्या इनः। ना-माय मगणान् मदीन् कामनानी-ন্তর বুৰৌ ॥ উগ্রতারা চচ্চে (मरी॰ ग्रेगा॰क खोड़ नकतः । II छि शात्रमञ्ज मकलान् देगान् ॥ কোকান্ গণা জভ• ৷৷ উগ্ৰতা-**्त अङ्गारमति प्रक्षान्यः** मात्रय ক্ষেত্ৰ ! ভতো গগাঃ কামৰূপা-ব্দেবী চাপ্যপরাজিতা ৷৷ লো-কানুৎসারযামাসুঃ পীঠ কর্ত্তুণ রহস্যক। উৎসার্য্যমানে লো-কে তু চতুৰ্বৰ্ণৈ দ্বিজাতিঙিঃ ।। সন্ধ্যাচল• গতো বিপ্ৰো বশি-ষ্ঠঃ স্বপিতো মুনিঃ। সোপ্যুগ্র-্ভারষা দেব্যা উৎসার্যিতু মী-শया ॥ गरेनः मह धृठः श्राह ∥ भागः अर्दन् मूलात्रगः। यन्त्री-**দহ• ধৃতে**। বানে দ্বযোৎসার্যি-্ভু মুনিঃ।। ভস্মাত্ত্বণ বাম্য ভা-বেন পূজ্যা ভব সমন্ত্রিকা। ভর্ত্-স্যন্তি শ্লেচ্ছবদ্দশ্মাদাণা স্তে ম-ব্দবুদ্ধয়ঃ ॥ ভবন্ধ শ্লেচ্ছা স্তব্মা-দৈ ভবত্যাঃ কামৰূপকে। মহা-দেবোপি ষম্মান্মাণ নিঃসার্যিত্ব मुमाजः ॥ जरशाधनः मूनिमाखः ম্লেচ্ছবদেপারগণ । তমাৎ শ্লে-চ্ছপ্রিষো ভূষাৎ শহর শ্চাস্থি

जनमृक् ॥ है जि कालिका नूता-(न कर्ष जायाचि ॥ का मकत-नीजा (मरी प्राप्त १ व्यक्तरम অফকা।। নিবাবভারবিশেবः যথা। তদ্তবান্লোকরকার্থ সুৎ-मामा निथिनान् यनान् । वर्षा-স্থাপয়তু শ্রোত জগদেবন সু-থ॰ ব্রজেৎ।। ইত্যুক্ত্যোপরতান্ **(मरान्**राठ शितिकाश्रियः । य-নোরখণ পূর্যিষ্যে মানুষ্য মব-वश्य वः ॥ पूछो हात्र विनामाय ধর্মসংস্থাপনায চ। ভাষ্য সর্বন্ ব্ৰহ্মসূত্ৰ তাৎপৰ্য্যাৰ্থ বিনিৰ্ণমণ।। মোহযন্ প্ৰকৃতি দৈতধান্ত ম-ধ্যাত্মভানুভিঃ। চতুর্ভিঃ সহিতঃ **गिरेषा भठवूरेत्र र्शतेवखुरेकः ॥** যতীক্রঃ শঙ্করো নাম্না ভবিষ্যা-মি মহীতলে। মদ্বত্তথা ভবস্তো-পি মানুষীণ তনু মাঞ্রিতাঃ ৷৷ তণ भाभनुमतियाखि मार्च जिमिव-বাসিনঃ। তদা মনোরথঃ পূর্ণো ভবতা স্যান্নসংশয়ঃ ৷৷ ইতি गांधवीय मः एकः भाकत्रक्रत्य > श्राः ॥ 🗱 ॥ गञ्जनकात्रक्वि । যথা। ক্ষেমঙ্করো ২রিফ্টতাতিঃ স্যান্মদ্রকর শঙ্করৌ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ ৷৷

ান্ধরপ্রিষঃ পু॰ তিত্তিরিপক্ষী।'
ইতি কেচিৎ।। শিববল্পতে ত্রি।।
গন্ধরাচার্য্যঃ পু॰ স্বনামখ্যাতাচার্য্যঃ। স তু অবৈতবাদী বেদাস্তভাষ্যকর্তা চ । যথা। শ্রী
শন্ধরাচার্য্য নরাবতারণ বিশ্বেশ্বরণ বিশ্বগুরুণ প্রণম্য। বেদাস্ত শাস্ত্র শ্রবণালসানাণ বোধাষ স্বর্বে কমপি প্রযন্ত্রণ।। ইতি মধ্সূদনসরস্বতীক্তত সিদ্ধান্তবিন্দুপ্রথমশ্লোকঃ।।

ক্ষেরাবাদঃ পু॰ কপূরভেদঃ।
ইতিরাজনির্ঘন্টঃ।। কৈলাশন্চ
করী স্ত্রী মঞ্জিপা। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। শনী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শক্ষরভার্যা। যথা।
শক্ষরী শন্তুপত্নী চ শিবা শতনিনাদিনী। শুভাশুভপ্রদা নিত্যা শতসূর্য্যসমপ্রভা।। ইতি
রুদ্রামলে অন্নপূর্ণাসহসুনামস্থোত্রণ।।

্কা স্ত্রী ত্রাসং।। বিতর্কঃ। ইতি॥ মেদিনী।।

ক্ষিতঃ ত্রি ভীতঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ।। বিতর্কিতঃ। ইতি শঙ্কা-শব্দার্থ দশনাৎ।। চোরকনাম-গস্কদ্রব্যে পুণ। ইতিরাজনির্যন্টঃ শঙ্কিতবর্ণকঃ পু॰ চৌরঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।৷

শক্ষু পু॰ স্থাণুঃ। মুডাগাছ ইতি ভाষা ॥ मध्मावित्मसः । मा-কোচ ইতি ভাষা ॥ শল্যাস্ত্রণ। শেল ইতি ভাষা। ইত্যমরভর-তৌ । সংখ্যাবিশেষঃ। স তু লীলাবতীমতে দশলক্ষকোটিঃ ।। কীলঃ। গোঁজ ইতি ভাষা।। क्रमः ॥ कलूषः । ইতি মেদিনী ।। পত্রশিরাজাল ।। মেটুঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। রাক্ষসঃ। ইতি **गक्**याना ॥ नशीनायगन्न जवा॰ । ইতি জটাধরঃ ॥ দীপ সূর্য্য-যোশ্ছাযা পরিমাণার্থ কাষ্টাদি নির্মিতঃ ক্রমেণ সূক্ষাগ্র দাদ-শাঙ্গল পরিমিতঃ কীলকঃ। य-থা। অকাঙ্গুলা তু সূচ্যগ্রা কা-ष्ठी घान्नून मृनिका। भन्नू मण्डा ভবেচ্চৈব তচ্ছাযা পরিকল্প-राष् ॥ भशाङ्गशैरेन तानिका यूटिक म्हायाद्र्यल र्रात्र । य-ট্পূরিত দিবাদ্ও লব্ধ দ্রা-मिक॰ ভবে< ।। পূর্বাক্ল চ্ছায-যাতীত পরাক্লছাযথৈষ্যক। मृटेनाक ताम वार्णं फिर्मा-क्रजाः ! ०। ३। ७। ৫। ৮। ३०।

३३। क्रां ८क्टियः। जावाण-দিবু মাদেষু চ্ছাষা মাধ্যাহ্নিকী-মতা ৷৷৷ অয়নাংশজ মাসান্তে वार्षा वार्षा विश्व । मः খ্যোক্তান্যদিনে ভাগহারে বৃ-দ্বীতরে তথা।। ইতি জ্যোতি-স্তব্ধ ।। তস্য নামান্তর নরঃ। যথা। অথ করণসূত্রণ। শক্ষুঃ প্র-দীপতল শঙ্কুতলান্তরম শ্ছাযা ভবেদ্বিনর দীপশিখোচ্চ্য ভক্তঃ । উদাহরণ । শঙ্কু প্রদীপান্তর-

ূ স্নিহস্মা দীপোছিতিঃ করত্রয়া চেৎ। শক্ষে স্তথা কা-ঙ্গুল সংমিতস্য তস্য প্রভা স্যাৎ কিয়তী বদাশু।। ন্যাসঃ। শঙ্কুঃ ১২ ভূঃ ৩ দীপঃ १ লব্বানি চ্ছা-याङ्गुलानि ३२ । ইতি लीलाव-ত্যা॰ ছাযাব্যবহা

তরীয় প্রথমকাণ্ডণ। দ্বাদশাঙ্গু-लिकः भक् **उ**ष्णुयस भयः स्रृठः । তক্ততুষণ ধনুঃ প্রোক্তণ ক্রো-শো ধনুঃ সহস্রিকঃ ॥ ইতি তি-থ্যাদিতত্ত্ব° 11

শঙ্কুকর্ণঃ পু॰ গর্দ্দভঃ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ॥

শঙ্কুচিঃ পু॰ শঙ্কুমৎস্যঃ। ইভি

শक्तद्वावनी ॥

শानवृकः। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শালবৃক্ষঃ। ইতি

त्रव्रभावा ॥ ত্রি ত্রাসদাযী। ইতি শঙ্কুরঃ र्घ्याज्यः ॥

শঙ্কুলা স্ত্রী উৎপলপল্রিকা। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃতিঃ।৷ পূগকর্ত্তনী। জাঁতী ইতি ভাষা। ইতি কেচিৎ ॥

শক্ষোচঃ পুশক্ষ্মৎস্যঃ।ইতি क्रिवास्त्रः ॥

শক्ষোচिঃ পু॰ মৎস্যবিশেষঃ 1 শাঁকোচ ইতি ভাষা। যথা। অথ শঙ্কুঃ শঙ্কচিঃ স্যাৎ শঙ্কো-চি শঙ্কুচীত্যপি। ইতি শব্দরত্না-वनी ॥

जूलপরিমাণ । যথা বিकृश्दर्मा- | শश्चः পু॰ क्ली সমুদ্রোভবজন্ত-বিশেষঃ। শাঁখ ইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। কয়ৢঃ ২। ইত্য-মরঃ ॥ কম্বোজঃ ৩ অব্জঃ ৪ জলজঃ ৫। ইতি শব্দরত্নাবলী ।। অর্ণোভবঃ ৬ পাবনধ্বনিঃ १ অন্তঃস্টিলঃ ৮ মহানাদঃ ১ শ্বেতঃ ১০ পূতঃ ১১ মুখরঃ ১২ मीर्यनामः ১৩ वष्टनामः ১৪ হরি-

ायः ১৫। जमा खनाः। कर्ने-ावः। भीठवः। भूषि नीर्या त-প্রদত্তণ গুলা শূল কফ শ্বাস ন্যদোষ নাশিত্বঞ্চ। ইতি রাজ-র্ঘন্টঃ।। অপিচ। কয়ু শুধ্বন-চাপি শুক্তি শয়ূক কর্কটাঃ। বা এবম্বিধা শ্চান্যে কোষ-ঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ ।। কোষস্থা ্রাঃ স্নিগ্ধাঃ পিত্ত বাতহরা নাঃ । বৃংহণা বহুবর্চস্কা বৃ-कि वनवर्क्षनाः ॥ ইতি ভাব-कांनाः ॥ जनाकः । माधान-बला भौछो कषायाविज्ल-। নী। ইতি রাজবল্লভঃ।। 🟶 ॥ **ন্যাৎপত্ত্যাদি যঁথা। অথ শ**ন্তু রঃ শূল জগ্রাহ দানব প্রতি গ্রীষ্ম মধ্যাত্র মার্ত্তঞ্জ শতক-। শূলঞ্ছ ভূমণং কৃত্ব। াত দানবোপরি। চকার ভ-নাত্তঞ্চ সরথকাবলীলাযা।। শব স্তেন শূলেন দানবদ্যাস্থি লক । প্রেমা চ প্রের্যামাস ণোদে চ সাদর ।৷ অস্থিভিঃ াচূডস্য শখজাতি ৰ্ভূব হ। মা প্ৰকারৰূপা চ শশ্বৎ পূতা াৰ্চনে।। প্ৰশস্ত শন্তাতোযঞ্চ বানাণ প্রীতিদণ পরণ। তীর্থ

তোয স্বৰূপঞ্চ পবিত্ৰণ শস্ত্ৰুনা বি-না ৷৷ শঙ্গশব্দো ভবেদ্যত্র তত্র লন্ধীশ্চ সুস্থিরা। স স্নাতঃ সর্ব-তীর্থেযু ষঃ স্নাতঃ শন্থবারিণা।। শঙ্খে হরে রধিষ্ঠান যতঃ শৃঙ্খ স্ততো হরিঃ ৷ তত্ত্রৈব সততং লক্ষ্মী पृ तीञ्ठ ममञ्रमः ।। खीनाकः भ-ষ্মধনিভিঃ শূদ্রাণাঞ্চ বিশেষতঃ। ভীতা রুষ্টা যাতি লক্ষীঃ স্থলম-ना९ खनाखनः ॥ इति बक्षरेत-বর্ত্তে প্রকৃতিখণ্ডে ১৮ অধ্যাষঃ ॥ 🕸 ॥ অথ শঙ্মাহাত্ম্য । ব-কোবাচ। শৃণু শন্ত্যস্য মাহাত্ম্যু॰ সর্বপাপহর শুভ । কপিলাকী-র মাদায শঙ্খে ক্রত্বা জনার্দ্দন ।।। यक्कायुक मश्तुमा साथिया न-ভেৎ ফল । প্যস্বিন্যাঃ শুভ ক্ষীর শত্থে ক্লন্তা তু নারদ।। যঃ সাপয়তি দেবেশ স গচ্ছেদ্বন্ধ-नः शर। किञ्जा शस्त्राप्तकः भ-·খ্যে যঃ স্নাপষ্ঠি মাধ্ব ।। নমো নারাযণেত্যুক্তা মুচ্যতে যোনি ' শঙ্কটাৰ। শঙ্খলগ্নন্ত যতোষ' ভূ-মিত॰ কেশবোপরি।। নিঃক্ষিপে-মূর্দ্ধি সতত গঙ্গা স্নানেন তস্য কি॰। ক্লৱা পাদোক॰ শঞ্জে বৈক্ষ-বাষ প্রয়চ্ছতি ৷৷ তিলমিশ্রণ তুল-

স্যা চ চাব্ৰায়ণ ফল॰ লভেৎ। নদী তডাগজ্ঞ বারি বাপী কূপ- .. <u> इ</u>र्मान्डवः ॥ शास्त्रयः ठन्ध्दव সৰ্ব॰ ক্লত॰ শঙ্খে হরিপ্রিয়।গৃহীত্বা বিষ্ণুপাদাৰু শড়ো ক্বন্ধা চ বৈক্ষবঃ ।। যো বহেৎ শিরসা নিত্যু॰ স মু-নে তাপসোত্তমঃ।ত্রৈলোক্যে যা-नि ठीर्थानि वामुरमवाब्बया मूरन ৷৷ শঙ্খণ তান্যধিতিষ্ঠন্তি তক্ষাৎ শঙ্খ॰ সদার্চ্চয়েৎ। ত্ব॰ পুরা সা-গরোৎপক্ষে৷ বিষ্ণুনা বিধৃতঃ ক-রে ৷৷ নমিতঃ সর্বদেবৈশ্চ পাঞ্চ-জন্য নমোস্ত তে। পুরতো বাসু-**प्रत**मा मथूष्य कन कक्टनः ॥ শঙ্খঃ সমর্চ্চিতো যেন তদ্য লক্ষ্মী र्न पूर्ला । पर्भारतनाथि मध्यमा किम् তमार्फित्नन ह ॥ विवयः যান্তি পাপানি হিমঃ সূর্য্যোদযে যথা। গর্ভা দেবারি নারীণাণ বি-नगास्त्रि महमुक्षा ॥ তব नार्तन পাতালে পাঞ্জন্য নমোস্ত তে। তীর্থোদক হরে মূর্দ্ধি ভ্রামযেৎ. শখ্য সংস্থিত ।। দদাতি মুক্তি" দেবেশঃ ক্ষীরসাগরজাপ্রিয়ঃ 11 যমদুতাশ্চ জন্মাও পিশাচোরগ রাক্ষদাঃ। দৃষ্ট্য শঞ্জোদক মূদ্ধি ভীতা যান্তি দিশো দশ ৷৷ নিত্যে

নৈমিত্তিকে কাম্যে স্নানার্চন বিলেপনে ৷ শঙ্খণ সমর্চ্চয়তি যঃ শ্বেতদীপে বদেদ্ধি সং ।। ইতি পান্মোত্তরখণ্ডে ১২৯ অধ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ जथ मिक्किनावर्ज्ञभञ्ज-মাহাত্ম্য°। দক্ষিণাবর্ত্রশঙ্খেন গন্বা প্রাক্ শ্রোতসং নদী । ক্লত্বাভিযেকণ বিধিবৎ ততঃ পা-পৈঃ প্রমুচ্যতে ॥ দক্ষিণাবর্ত্তশ-ত্ত্বেন তিলমিশ্রোদকেন তু। উ-দকে নাভিনাত্রে তু যঃ সর্য্যা-দভিষেচন॰।। প্রাক্ শ্রোতস্যা॰ তু রৈ নদ্যাণ নর স্তত্তাম্ভসাপ্লুতঃ । যাবজ্জীব ক্বত॰ পাপণ তৎক্ষ-ণাদেব নশ্যতি ॥ দক্ষিণাবর্ত্তশ-ঙ্মেন পাত্র শোধ ধরে স্থিত। উদক° যঃ প্রতীচ্ছেত শিরসা श्येगानमः ॥ তमा জন্মहरू०॰ পাপ॰ তৎক্ষণাদেব নশ্যতি। ন শখেন পিবেতোষণ ন হন্যা-শ্বংস্য শূকরে।। ইতি বারাহে প্রবোধনীমাহাল্যাধ্যায়ঃ॥ শधः पु॰ ननारोश्रि॥ ऋरतत्र-मा निधि बिटमयः॥ नथीनाम श-স্বজব্য । ইত্যমর মেদিনীকরৌ ।। কর্ণসমীপাস্থি। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ ॥ অফনাগনামকান্ত-

তিনাগবিশেষঃ ॥ হস্তিদস্ত-**াধ্য•। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥** শৈনিথৰ্ৰসংখ্যা । লক্ষকোটি-রতি যাবৎ। যথা। এক দশ-**াতঞ্বৈ সহসূ মযুত° তথা। ল-ন্ধ নিষুত চৈব কোটি রর্বুদ** यव ह ॥ वृन्मः थर्दा निथर्वन्ह াথ পদ্মে চ সাগরঃ। অন্ত্য াধ্যণ পরার্দ্ধঞ্চ দশবৃদ্ধ্যা যথা-দুম ।। ইতি ভরতধৃত ব্রহ্মাও-्त्रांविठन॰ ॥ 🗱 ॥ धर्माञ्च-ारगाजकमूनिवित्नवः। यथा। শ্বত্রি বিষ্ণু হারীত যাক্তবস্ক্যো-ानिक्राः। यगाश्रस्य मय-াঃ কাত্যায়ন বৃহস্পতী ॥ প-শির ব্যাস শখ্য লিখিতা দক্ষ গাতমৌ। শাতাতপো বশিষ্ঠ-🦻 ধর্মশাস্ত্র প্রযোজকাঃ।। ইতি ख्टिवकाः वहन शक्षा त्रवामा-শৈষঃ। যথা। ভক্ততুর্য্যণ গ-তূর্য্য রণতূর্য্য মহাস্বনঃ। সং-ামপটহঃ শথ্য স্তথা চাভ্য-जिथ्यः ॥ यशक्ताम् नृथाणी-ভীরুঃ কোলাহলোপি চ। দ্ধবাদ্যস্য পর্য্যায় শ্চান্যে ভে-ঃ শলাদযঃ।। ইতি শব্দরত্না-नी ॥

শখক ফ্লী বলষঃ। ইতি মেদিনী
শখকঃ পু ফ্লী কষুঃ।। শিরোরোগে পু । ইতি মেদিনী ।।
তস্য লক্ষণাদি যথা। শখকমাহ। পিত্রক্তানিলা দুষ্টাঃ শখদেশে বিমূর্চ্ছিতাঃ। তীব্রক্তপদাহ রাগ হিশোখ সর্বন্তি দারুণ ।। স শিরো বিষক্তেগামিরুধ্যাশু গল তথা। ত্রিরাত্রা-

ত॰ হস্তি শংখকো নাম নামতঃ ।। ত্রাহাজ্জীবতি ভৈষ-জ্যুণ প্রত্যাখ্যেম্য কার্মেৎ । পিত্ত রক্তানিলাঃ অত্র কফো পিত্ত রক্তানিলাঃ অত্র কফো পিত্তরক্তৈরিতি সুশ্রুত বচনাৎ । বিমূচ্ছিতাঃ প্রবৃদ্ধাঃ ত্রিরাত্রাৎ ত্রিরাত্রমধ্যে মার্ম্বতি । ইতি ভাবপ্রকাশঃ ।। অস্য চিকিৎসা শিরোরোগশব্দে দ্রম্ব্যা ।।

শঙ্কারঃ পু॰ বর্ণশঙ্করজাতিবিশেষঃ। শাখারি ইতি ভাষা।
স তু শুদ্রাগর্ত্তে বিশ্বকম্মেরিসজাতঃ। ইতি ব্রহ্মবৈবর্ত্তপুরাণণ
। তৎপর্যায়ঃ। শাঙ্খিকঃ ২
কায়জকঃ ৩। ইতি শক্রত্নাবলী॥শাশ্ববিকঃ ৪। ইতি জটাধরঃ।

শখ্চরী স্ত্রী ললাটিকা। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।

শশ্र हिन्दी विकासिक। इंडि स्व अपूर्व विकास

শঙ্গচূর্ণ ক্লী শঙ্গজাতচূর্ণ শোথেরচূণ ইতি ভাষা ৷ অস্য গুণাঃ ৷ শঙ্গচূর্ণ কটু ক্ষার মুম্বণ
ক্রিমিহর পর ৷ ইতি রাজবল্লভঃ ৷৷

শঙ্খজঃ পু• কপোতডিশ্ববদৃহ-ন্মুক্তা।ইতি কেচিৎঃ৷ শঙ্খজা-তবস্তুনি ত্রিঃ৷

শখ্জাবী পু॰ অমুবেতসঃ। ইতি ।।

শঙ্গপরা স্ত্রী হিলমোচিকা। ইতি রত্নমালা।।

শৃঙ্খন্নঃ পু॰ শৃঙ্খবাদকঃ। তৎ-পর্য্যায়ঃ। শাঙ্খিকঃ ২। ইতি জটাধরঃ।।

শঙ্খাঃ পু॰ শঙ্খবাদকঃ। ইতি
মুগ্ধবোধব্যাকরণং॥

শখনখঃ পু॰ ক্ষুদ্রশখঃ। জোকড়। ইতি ভাষা। ইত্যমরভরতৌ । নখীনামগন্ধদ্রব্য । ইতি
শক্ষরত্বাবলী । বৃহন্ধখী। যথা
। মহা॰ স্তুসৌ শশ্বনখঃ শখাখ্যো গন্ধসান্ধঃ। ইতি রত্নমালা

শঙ্বনথা জী শঙ্বনথী। যথা। দিধা শগ্ধনখাখ্যান্যা শুক্ত্যা-খ্যা বদরীচ্ছদঃ। ইতিরত্নমালা।। मध्यपूष्णी जी वृक्ववित्मसः। শधारनी देखि जानमनी देखि চভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। সুপুশী ২ শ্বাহ্বা ৩ ক্ষুমালিনী ৪ পীতপুষ্পী ৫ কমুপুষ্পী ৬ মেধ্যা ৭ মলবিনাশিনী ৮ কিরীটী ১ শঙ্গসমুমা ১০ ভূলগা ১১ শঙ্খ-यानिनी ३२। अमार्थभाः। हि-মত্ব'। তিক্তত্ব'। মেধা স্বরকারি-ত্ব°। গ্ৰহ ভূতাদিদোষ নাশিত্ব° ।বশীকরণ সিদ্ধিদাতৃত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্যন্টঃ।। অপি চ। শध्-পুষ্পী তু তীক্ষোকা মেধ্যা ক্রমি বিষাপহা। ইতি রাজবল্লভঃ।। অন্যচ্চ।শুগ্ধপুষ্পী তু শুগাহ্বা मझना। अमुमाशि ह। मध्रभूकी সরা মেধ্যা বৃষ্যা মানসরোগ-न्थ।। तमायनी क्वारयाका प्यृ-তি কাস্তি বলাগ্নিদা। দোষা-পস্মার ভূতাসূক্ সন্ঠ ক্রিমি বিষ-প্রণুৎ ॥ ইতি ভাবপ্রকাশঃ ॥ শश्रপ্रसः पू॰ हत्यमाहिङ्गः। यथा। লি**ক॰ শৃকঞ্চ** চিত্ৰঞ্চ শঙ্গপ্ৰস্থো বিধোরথ। ইতি শব্দমালা।

_{रि}जृष **পু॰ विक्**रा ইতি হেম-ज्यः ॥ ।মুখঃ পু॰ জম্ভীরঃ। ইতি হেম-जिः ॥ মূল॰ ক্লী মূলকণ। ইতি রাজ-त्रेर्घेन्छः ॥ াখ্যঃ পু॰ বৃহন্নখী। ইতি রত্ন-ाना ॥ াহ্বা স্ত্রী শৃগ্বপুশী।ইতি ाक्रिवर्षकः ॥ াকা স্ত্রী ভূণবিশেষঃ। চোর-ত্বলী ইতি ভাষা। যথা। শঞ্জি-্যা॰ শশ্বিকাচোরা। ইছি শব্দ-ব্ৰিক। ॥ । বী জী চোরপুশী। ইত্য-রঃ ।। শ্বেতপুদাগঃ । ইতি বি-াঃ।। শ্বেতবৃন্দা। ইতি মেদিনী ্শ্বেতচুক্রা। ইতি শব্দরত্না-नी ।। तूक्षमक्रिए । इंछि ্রকাণ্ডশেষঃ ॥ যবতিক্রা ্তি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। চতুর্বিধ-ীমধ্যে স্ত্ৰীবিশেষঃ ৷ তল্লক্ষণ था। नीर्घा मूनीर्घनयना वत्रम्-দরী যা কামোপভোগরসিকা ∮ণ**শীলযুক্তা রেখাত্র**য়েণ চ বি-্ষিত কণ্ঠদেশা সম্ভোগ কেলি-সিকা কিল শখিনী সা।। শ-

শক পদ্মিনী তুষ্টা চিত্রিণী র-মৃতে মৃগণ। বৃষভণ শঞ্জিনী তু-কী হস্তিনী রমতে হয় ।। পদ্মি-নী পদ্মপন্ধা চ মীনগন্ধা চ চি-ত্রিণী। শন্থিনী ক্ষারগন্ধা স্যাৎ মদগন্ধা চ হস্তিনী ॥ ইতি রতি-मक्षती।। मध्ययूका। यथा। म-গ্রিনী চাপিনী বাণ ভুশুণ্ডী প-রিঘাবুধা। ইতি দেবীমাহাত্ম্য া। উপদেবতাবিশেষঃ। শঞ্জিনী-वामगमार्थ मर्गना९॥ শঙ্খিনীফলঃ পু॰ শিরীষবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ শश्चिनीवामः पू॰ मार्थारेवृक्ध। ইতি শব্দচন্দ্রিকা ॥ শখী^ন পু॰ বিষ্ণুঃ ৷৷ সমুদ্রঃ ৷ ইতি त्मिनी ॥ भाष्ट्रिकः॥ শञ्ज्यि শিষ্টে ত্রি। ইতিশব্দরত্নাবলী॥ শচ ই গু গত্যা । ইতি কবিকল্প-ক্রমঃ।। ও শঞ্চতে। ইতি দুর্গা-मामः ॥ শচ ও বাচি।ইতি কবিকল্পদ্রুমঃ ॥ ঙ শচতে। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ শচিঃ স্ত্রী ইন্দ্রপদ্মী। ইত্যমর-টীক্রাযাণ ভরতঃ ॥ मही खी रेखनजी। उदनर्यायः । পুলোসজা ২ ইন্দ্রাণী ও।

ইত্যমরঃ।। শচিঃ ৪ সচী ৫ সচিঃ ৬। ইতি ভরতঃ ॥ গৃতক্রতাযী ৭ পৌলোমী ৮। ইতি জ্বটাধরঃ ॥ भारत्यी २ जगवारिनी ३० এন্দ্রী ১১ শতাবরী ১২। ইতি শব্দরত্নাবলী।। শতমূলী।। স্ত্রी-করণান্ডর॰। তত্তু বিষ্টিকরণ মি-তি কেচিৎ।। ইতি মেদিনী।। শচীপতিঃ পু• ইন্দ্রঃ। ইত্যমরঃ॥ শট ক ও শ্লাষে। ইতি কবিকল্প-দ্রমঃ।। ক ও শাট্যতে। ইতি मूर्गामामः ॥ गढ़ मारम ॥ भीरने ॥ गरने ॥ क़ि । ইতি কবিকল্পদ্রমঃ ।। मात्मा श्वमामः। मीर्नि र्ভिमः। শটতি লোকঃ অবসীদতি। বি-শৃণাতি। গচ্ছতি। রুজতি বা ইতার্থঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শটঃ ত্রি অম্লঃ। শটধাতে রচ্-প্রত্যবেন নিষ্পন্ধঃ। ইতি সিদ্ধা-স্তকৌসুদী ॥

শটা স্ত্রী সটা।জটা।ইত্যমর-विका ॥

गिंदिः जी गिंदि । इंटि म सत्र्ञा-वनी ॥

শ্চী স্ত্রী স্থনামখ্যাতৌষধিঃ। বনআদা ইতি ভধা। কচূর ইতি

रिकी ভाষा। তৎপর্যাयः। গদ্ধমূলী ২ ষড্গ্রন্থিকা ৩ কর্দ্ব तः 8 भना**गः ७ । ই**তামतः ॥ সটী ৬ ষটী ৭ গন্ধশটী ৮ কর্ৰুরঃ ৯ কর্চচুরঃ ১০। ইতি ভরতাদৰঃ ॥ मूगक्षा ১১ मिंहः ১२ मिंहः ১৩ गन्नमृल। ১৪ गरन्नालिः ১৫ गन्न-मृनकः ১७। ইতি শব্দরত্বাবলী ।। गन्नमणे २१ वधूः २৮ गन्न-मृल॰ ১৯। ইতি জটাধরঃ ॥ জी-মৃতমুল ১৬ কচ্ছোর ১৭ ছিম-জা ১৮। ইতি রত্নমালা।। হৈমী ১৯ বড্গ্সিঃ ২০ সুব্রতা ২১ গন্ধালী ২২ পলাশা ২৩ হিমা ২৪। ইতি গ্রন্থান্তর ।। যদুরু হা ২৫ অম্লনিশা ২৬ সুগন্ধমূলা ২৭ গন্ধালী ২৮ শটীকা ২৯ প-লাশিকা ৩০ সুভদ্রা ৩১ তৃণী ৩২ দূৰ্বা ৩৩ গন্ধা ৩৪ পৃথ্প-লাশিকা ৩৫ সৌম্যা ৩৬ হিমো-দ্ভবা ৩৭ গন্ধবধূঃ ৩৮। অস্যা গুণাঃ। তিক্তত্ব॰। অমুরসত্ব॰। वयुषः । উक्षषः । क्रिकातिषः । জ্বর কফাসু কণ্ডু ত্রণদোষ রক্তা-गयश्रं मकातिष् । ऋमाष्ट्रश्रः । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ অপিচ। অথ গ-ন্ধপলাশী সুগন্ধজব্য কাশীরে

401

প্রসিদ্ধণ। শটী পলাশী যড্গ্রন্থা সুত্রতা গন্ধমূলিকা ৷ গন্ধারিকা गन्नवशृ वंशृः शृथुशनामिका ॥ ভবেদান্ধপলাশী তুকষায় গ্ৰা-हिनी लघुः। তিক্তা তীক্ষা চ কটু-कानुकामामननानिनी।। लाय-কাস ত্রণ শ্বাস শূলাগ্নানগ্রহাপ-হা। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ টক ক্লী ঘৃতজলমিশ্রিতশালি-ষথা। শালিচূর্ণ ঘৃত ভোষণ মিশ্রিত শউক বদেৎ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ৷৷ ় ক ও প্লাঘে। ইতি ক দ্রুমঃ ।। ক ও শাঠষতে । ইতি नुर्गामामः ॥ বধ ক্লেশ কৈতবে। ইতি ক-विकन्नफ्रमः ॥ क्लामा मूर्थान् ভবঃ। কৈতব॰ মিত্ৰৰঞ্চন॰। শ-্তি খলঃ সাধু বঞ্চযতীত্যর্থঃ। हैि पूर्गामामः॥

ক আলস্যে ।। গত্যসংস্কৃত
ংক্তে। ইতি কবিকল্পদ্রুম্যঃ ।।
শোঠযতি বৃদ্ধঃ ক্রিযাসু মন্দঃ
গ্রাদিত্যর্থঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।
৭ক দুর্বাচি। ইতি কবিকল
শমঃ ।। শঠযতি নীচঃ লৎসিতং

বদতীত্যর্থঃ। রমানাথস্ত সম্য-शायत्। इंकि मचा गठेगकि जगा-খদতীত্যৰ্থ ইত্যাহ।সম্যস্তাৰণে ইতি জৌমরাঃ। সম্যগ্রাবে ই-ত্যেকে। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ क्री जगतः ॥ अकृमः॥ লোহণ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শर्ठः पुर स्थाष्ट्रपूक्षयः ॥ धृर्वः॥ ধুস্থুরঃ। ইতি মেদিনী।। অস্য লক্ষণ । প্রিষণ বক্তি পুরোন্যত্র বিপ্রিষণ সরুতে ভূশণ। ব্যক্তা: পরাধ চেফশ্চ শঠোয়ণ কথি-• তো বুধৈঃ।। ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৩ অংশে ১৮ অধ্যাযে২১ শ্লো-কটীকা ।। চতুৰ্বিধপত্যস্তৰ্গতপ-তিবিশেষঃ। তস্য লক্ষণ°। কা-মিনীবিষযকপটপটুঃ। যথা। মৌলৌ দাম বিধাষ ভাল ফল-কে ব্যালিখ্য পত্রাবলীণ কেয়্-तः जुक्रया निधाय क्रव्या र्वि-नामा गूकामुकः। विश्वामः मगू-পাৰ্জ্বন্ মৃগদৃশঃ কাঞ্চী নিবে-শচ্ছলামীবী গ্রন্থি মপাকরোতি মৃদুনা হস্তেন বামজ্ঞবঃ ।। ইতি **त्रममञ्जती**।।

শঠতা খ্রী শঠস্য ভাবঃ।তৎ-পর্য্যায়ঃ। মাষা ২ শাঠ্যং ৩ ঙ্গ-

সৃতিঃ ৪ নিক্কতিঃ ৫ । ইতি হেম-চন্দ্রঃ।। অন্যচ্চ । অন্ত্রিষাণ ক-পটো ব্যাজ উপধি র্দস্ত এব চ। কূটে কন্ধ ছল ছদ্ম মিষ কৈরব কৈতব॰ ॥ অথ শাঠ্যঞ্চ শঠতা সসৃতি নিক্কতিশ্চ সা। হি॰সাফ-লে চতুষ্ণ স্যাৎ শাঠ্য পর্য্যায ঈরিতঃ ।। পূর্বঃ কপট পর্য্যাযঃ ফলে বঞ্চন মাত্রকে। উভযো-রেক পর্য্যায় ইতি কেচিৎ প্রচ-ক্ষতে।। ইতি শব্দরত্নাবলী।। শঠায়া স্ত্রী অম্বন্ধা। ইতিরাজ-निर्घकिः॥ শড ইঙ সংঘরুজোঃ।ইতিকবি-कब्रफ्रमः ॥ ठालव्यानिः। रे শ-ণ্ড্যতে । ঙ শণ্ডতে । কাণ্ডো বীরণ রুজতীত্যর্থঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ শণ ম দানে। ইতি কবিকল্পদ্ৰমঃ ।। ম শণযতি। ইতি দুর্গাদাসঃ।। শণ ক্লী ক্ষুপবিশেষঃ। তৎ-

। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।
শণঃ পুণ স্বনামখ্যাতক্ষুপঃ। তৎ
পর্য্যায়ঃ। মাল্যপুষ্পঃ ২ বমনঃ
৩ কটুতিক্তকঃ ৪ নিশাবনঃ ৫
দীর্ঘশাখঃ ৬ স্বক্সারঃ ৭ দীর্ঘপদ্ধরঃ ৮। অস্য গুণাঃ। অমুস্থ

পর্যায়ঃ। ভঙ্গা ২ মাতুলানী ৩

1 ক্ষাযত্বং । মল গর্ত্তাসু পাতনত্বং । বাতকারিত্বং । পিত্ত ক্ষ
তীব্রাঙ্গমর্দনাশিত্বকং । ইতি
রাজনির্ঘন্টঃ ।।
শণ্যন্তিকা স্ত্রী শণপুষ্পী । ইতি
রাজনির্ঘন্টঃ ।।
শণপণী স্ত্রী অশনপণী । ইতি
শব্দরত্বাবলী ।।
শণপুষ্পিকা স্ত্রী ঘন্টারবা ৷ ঝনঝনিষা ইতি বনশোণ ইতি চ
ভাষা ৷ ইত্যমরভরতৌ ।।

শণপুষ্পী স্ত্ৰী ক্ষুপবিশেষঃ। শগছলী ইতি শণই ইতি বনশণই
ইতি চ ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ।
বৃহৎপুষ্পী ২ শণিকা ৩ শণষণ্টিকা ৪ পীতপুষ্পী ৫ স্থূলফলা
৬ লোমশা ৭ মাল্যপুষ্পিকা ৮
। অস্যাগুণাঃ। ক্ষুদ্ৰতিক্তত্বং।
বিমিকারিত্বং।রসনিযামকত্বঞ্চ।
ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শণসূত্রণ ক্লী পবিত্রক । ইত্যমরং ॥ দে শণসূত্রজালে । শণস্য সূত্রণ শণসূত্রণ । শণতি দদাতি সূত্রণ শণং । শণ শ্রমদানে
অন্ । শণং তালব্যশাদি মূর্দ্ধিন্যণান্তঃ ইতি বহবং । সনো
দন্ত্যসাদি দন্ত্যনান্ত ইতি কে-

চিৎ। তমতে ষন দঞ্ দানে ইতাস্য ৰূপণ। সণো দন্তাসাদি
মুর্দ্ধন্যণান্ত ইতাপরে। সণ কিণ
মণি কাকণ কোণ কাণা ইতি
মুর্দ্ধন্যণান্তে বিদ্যাভরণণ।। কাপাস মুপবীতং স্যাদ্বিপ্রস্যোর্দ্ধ
বৃতং ত্রিবৃৎ। সনসূত্রম্যং রাতো বৈশ্যস্যাবিক সৌত্রিক মিতি মনুবচনাৎ পবিত্রক মপি
তদ্চ্যতে।। আনাষ ইত্যাদি
চতুষ্কং জালে ইত্যেকে। আনায ইত্যাদি শ্লোকার্দ্ধং ক্লচিদ্দৃশ্যতে তৎ স্বাম্যাদ্যুপেক্ষিত মপি
অন্যৈ রাদৃত মিতি বিবৃতং। ইতি তট্তীকাষাং ভরতঃ।।
বিশ্বনিং প্রাণ্ড ব্রতঃ।।

শণালুকঃ পু॰ আরেবতবৃক্ষঃ। শোণালু ইতি ভাষা। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

শণিক। স্ত্রী শণপুষ্পী। ইতি রাজনির্ঘষ্টঃ।।

শণীর॰ ক্লী শোণমধ্যস্থপুলিন॰।। দর্দরীতট॰। ইতি মেদিনী।।

শঙ ক্লী পদাদিসমূহঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।।

শঙঃ পু॰ নপু॰সক॰।৷ গোপতিঃ । ইতি ভরতদ্বিৰূপকোষঃ।৷ শঙ্তা খ্ৰী **য**ঙ্জণ। শুঙ্গব্দাৎ ভাবে ত প্রত্যধস্যানন্তর আ-প্ প্রত্যধেন নিষ্ণারা ।। শণ্ডিলঃ পুং মুনিবিশেষঃ ৷ শ-ওশব্দাদৌণাদিক ইলচ্ প্রত্য-যেন নিষ্ণায়ঃ ৷ ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদী ৷৷

শণ্টঃ পুণ অন্তর্মইল্লিকঃ। অভ্যন্তরন্ত্রীরক্ষকোষণ। খোজা ইতি
ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। বর্ষবরঃ ২

া. তল্লকণ যথা। ষে স্বল্পসন্ত্রাঃ
প্রথমাঃ ক্লীবাশ্চ ন্ত্রীস্বভাবিনঃ
া জাত্যা ন দুষ্টাঃ কার্য্যেষু তে
বৈ বর্ষবরাঃ স্মৃতাঃ।। ইতি ।। ন
পুণসকণ। হিজ্ডে ইতি ভাষা।
ইত্যমরভরতৌ।। গোপতিঃ।
শাঁড ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী
।। বন্ধ্যপুরুষঃ। ইতি জ্টাবরঃ।।
উন্মত্তঃ। ইতি ধনপ্রয়ঃ।।

শতং ক্লী দশগুণিতদশস্থ্যা বি
একশও ইতি হিন্দী ভাষা তেৎপর্য্যায়ঃ বিদ্যাতিঃ ২ ব ইতি পুরাণণা তদাচকানি ব পুরুষাযুষঃ
১ শতভিষাতারা ২ পুরুষাযুষঃ
৩ রাবণাঙ্গুলিঃ ৪ পদ্মদলং ৫
ইন্দ্রযুজঃ ৬ অন্ধিযোজনং ৭ ব
ইতি কবিকন্সলতা বিশিষ্টঃ ব

ষথা। শাস্তিশতকামরুশতকাদিঃ। শতশব্দাৎ ক প্রত্যযেন
নিষ্পারঃ।৷ স্বার্থেকে শতকঞ্চ।।
শতকীর্ত্তিঃ পুণ ভাব্যর্হদিশেষঃ।
ইতি হেমচন্দ্রঃ।

শতঙ্গদঃ পু॰ করবীরঃ। ইতি ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷

শতঙ্গম্ভঃ পু॰ পৰ্বতবিশেষঃ। ইতি শাতঙ্গমশ্বদ টীকাযাণ ভরতঃ॥

শতকোটিঃ পু॰ বজু॰।ইত্যমরঃ । বৃন্দসংখ্যা।। লীলাবতীমতে অজ্ঞ সংখ্যা।।

শতক্রতৃঃ পু॰ ইন্দ্রঃ। ইতি ধন-জমকোষঃ।।

শতখণ্ড॰ ক্লী সুবর্ণ । যথা সৌ-মেরুক॰ মহাধাতুঃ শতখণ্ড॰ সৃদু-লক॰ । ইতি শব্দচন্দ্রিকা ।। শত-ভাগশ্চ ।।

শতগ্ৰন্থিঃ স্ত্ৰী দূৰ্বা।ইভি রাজ-নিৰ্ঘন্টঃ।।

শতমী স্ত্রী শস্ত্রভেদঃ ।। বৃশ্চিকালী ।। করঞ্জকঃ । ইতি মেদিনী ।। আদ্যস্য লক্ষণং । অযঃ
কণ্টক সংচ্ছমা শতমী মহতী
শিলা । ইতি বিক্রমরক্ষিতঃ ।।
দুর্গঞ্চ পরিখোপেতং চ্যাটালক
সংযুতং । শতমী যন্ত্রমুখ্যেশ্চ

শতশশ্চ সমাবৃত ।। গোপুর সকবাটঞ্চ তত্র স্যাৎ সুমনোহর । সপতাক গজাৰতো যেন রাজা বিশেৎ পুর ।। ইতি
মাৎস্যে রাজধর্মে দুর্গসম্পত্তিনাম ১৯১ অধ্যামঃ।। #।। গলরোগবিশেষঃ । অস্য নিদান
লক্ষণ চিকিৎসাঃ রোহিণীশব্দে
দ্রুইব্যাঃ।।

শতচ্চদঃ পুণ কান্তস্টপক্ষী।
কাট্ঠোকরা ইতি ভাষা। ইতি
ত্রিকাণ্ডশেষঃ। শতদলপদ্মঞ্চ।।
শততমঃ ত্রি শতস্য পূরণঃ। শতশব্দান্তমট্প্রত্যযেন নিষ্ণায়ঃ।।
শততারা স্ত্রী শতভিষানক্ষত্রণ।
ইতি কেচিৎ।।

শতদন্তিকা ক্লী নাগদন্তী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শতক্রঃ স্ত্রী নদীবিশেষঃ। শতলজ্ ইতি হিন্দী ভাষা। সা হিমালযাদুৎপন্না বিপাশাষাণ মিলিতা। তৎপর্য্যায়ঃ। শিতক্রঃ
২ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ শুতুদ্রিঃ ৩
শতদ্রঃ ৪ ৷ পুত্রশোক সম্ভপ্তো
বশিষ্ঠঃ কঠে শিলাণ বদ্ধা নদ্যা মস্যাণ প্রবিষ্ঠ স্ততো ভীত্যা ইয়ণ শতধা ক্রতা ইতি

भठकः। ইতি उद्वीकाशः खतः उः। अम्या जनश्वनाः। भठका र्विभागायुकः मिम्नूनम्याः। मू-भीठः लघु सामू मर्कामयमः। जनः निर्मालः मीशनः शाहनशः अमस्य वनः वृक्ति स्मश्यूयशः॥ ইতি রাজনির্ঘকः।।

শতধা স্ত্রী দূর্বা। ইতি শব্দ-চম্রিকা॥

শতধা ব্য শতপ্রকারণ যথা।
আন্তীক বচনণ শ্রুত্বা যঃ সর্পো
ন নিবর্ত্ততে । শতধা ভিদ্যতে
মূর্দ্ধি শিরীষস্য ফলণ যথা।
ইতি মহাভারতণ।

শতধামা^ন পু• বিষ্টা ইতি জটা-ধরঃ ৷৷

শতধার॰ ক্লী বজুং। ইতি ত্রিকা-গুশেষঃ।। শতধারাযুক্তে ত্রি । যথা। বসোঃ পবিত্রমসি শত-ধারণ বসোঃ পবিত্রমসি সহসু-ধারণ। বসোঃ পবিত্রেণ শতধা-রেণসুত্বা কামধুক্ষা। ইতি পশু-পতিপদ্ধতিঃ।।

শতধৃতিঃ পুণ ইন্দ্রঃ ৷৷ ব্রহ্মা ৷ ইতি
নেদিনী ৷৷ স্বর্গঃ ৷ ইতি বিশ্বঃ ৷৷
শতপত্রণ ক্লী পদ্মণ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷
শতপত্রঃ পুণ মযুরঃ ৷৷ সারসঃ ৷৷

দার্বাষাটপক্ষী। ইভি মেদিনী। রাজকীরঃ। নুরী ইভি ভাষা।। ইভি হেমচন্দ্র রাজনির্ঘটো ।। শতপত্রকঃ পুণ দার্বাঘাটপক্ষী। কাঠঠোকরা ইভি ভাষা। ইভ্যানরঃ।।

শতপত্রনিবাসঃ পু॰ ব্রহ্ম। ইতি
কবিকল্পতা।। পদ্মস্থে ত্রি ।।
শতপত্রী স্ত্রী পুষ্পবিশেষঃ। সেউতী ইতি ভাষা। পাটলবর্ণাসৌ গোলাব ইতি বদস্তি। তৎপর্যায়ঃ। সুমনাঃ ২ সুশীতা ও
শিববল্পতা ৪ সৌম্যগন্ধী ৫ শতদলা ৬ সুবৃক্তা ৭ শতপত্রিকা
৮। অস্যা গুণাঃ। হিমন্ত্রণ।
তিক্তন্ত্রণ । ক্ষায়ন্ত্রণ। স্থ্র মুখস্ফোট পিত্র দাহ নাশিন্ত্রণ। ক্রচ্যন্ত্রণ। সুরভিত্নঞ্ব। ইতি রাজনির্য্নিটঃ।।

শতপজ্রিকা স্ত্রী শতপজ্রী।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শতপথিকঃ ত্রি নানাপথগামী।।
নানামতাবলম্বী। যথা। শতষফোঃ ষিকন্পথঃ। ইত্যনেন শতশব্দোত্তর পথিন্ শব্দাৎ ষিকন্ প্রত্যাধেন নিষ্পন্নঃ। ইতি
সিদ্ধান্তকৌমুদী।।

শতপদচক্রণ ক্লী নামা নক্ত্র-खानार्थं ठकः। यथा। ठकः भ-তপদ॰ বক্ষ্যে ঋক্ষা॰শাক্ষর সম্ভ-वः। नामानिवर्गला एकवा स-ক্ষরাশ্যংশকা স্তথা 11 তির্য্যগূ-ৰ্দ্ধুগতা রেখা রুদ্র সংখ্যা লিখে-ছুধঃ। জাযতে কোন্ঠকানাঞ্চ শ্তৈক ১০০ নাত্র সংশ্যঃ ৷৷ অ ব ক হ ডা ঐশান্যা॰ ম টপ র তা হরিতি চাগ্নেখ্যাণ। ন য ভ জ था देन श्र जा। ग म म म न ना वाय-ব্যা গঞ্চ পঞ্চ ক্রমেনের বিং-শ্বর্ণান্ প্রযোজ্যেৎ। পঞ্সর স্মায়ে একৈক পঞ্ধা স্কু ॥ ज्वर्गामा द्वर्या ज्वयाः म-দ্মান্দরযুতা স্তথা। সজাতীযে-का माञ्चाय शक्ष्यत विनिर्वयः ॥ ঋদ্সতো রপ্যকারেণ শেন সস্য পরিগ্রহঃ। সর্য্যাৎ স পু ভু দু-গ্যক্ষারাণি

স য ও ছা ভবেৎ স্তন্তে রোজেথীশান গোচরে। পুষণঠা ভবেৎ স্তন্তে হস্তে চাগ্নেয় সংজ্ঞা কে ।। ভূ ধ ফ ঢা ভবেৎ স্তন্তে পূর্বাযাটে চ নৈখাতে। দু থ বা ডা ভবেৎ স্তন্তে বাযব্যে ভাজ ভিতরে। এবং স্তম্ভ চতৃষ্কঞ্চ জ্ঞা-

তব্য॰ স্বরবেদিভিঃ । ধিষ্ট্যানি ক্বত্তিকাদীনি প্রত্যেকণ চতুরক্ষ-রৈঃ ॥ সাভিজিস্ত্য॰শকা স্তত্র শতৈক দাদশাধিক । যদৃক্ষা শক কোষ্ঠস্থং ক্রুরঃ সৌম্যোপি বা গ্ৰহঃ ৷৷ তত্ৰস্থো বেধযেৎ স-गाक् श्रूरमा नामानिमाक्षतः । সৌন্যৈ বিদ্ধ শুভ জেয় মশু-ভ॰ পাপ খেচরৈঃ ৷৷ মিত্রৈ মি-শ্রফল তত্র নির্বেধেন শুভাশু-ভ°। যদাচ্য॰ সৰ্বতোভদ্ৰে গ্ৰ-হোপগ্ৰহ বেধতঃ ৷৷ শুভাশুভ ফল° সৰ্ব° তদিহাপি বিচিন্ত-যেৎ। পঞ্সরা অ ই উ এ ও-কারা স্তৈর্যোগে ধিষ্ট্যানি নক্ষ-ত্রাণি ৷ অত্র চত্র্ভি ব গৈ রেক नक्ष्व॰ यथा। ये हे छ । । ওব বি বু ৪। বে বে। ক কি ৫। ঙ্গ ড ছ ৬। কে কো হ হি ৭। হু হে হো ড ৮। ডি ডু ডে ডো २। मिन मूल १०। तम है हि है २२। ८ । दि। यि १२। भूष व र्र ১৩।পে পোর রি ১৪।রু রে রোত ১৫। তি তু তে তো ১৬। न नि नू तन ३११ ति। य यि यू ४४ । যে যোভ ভি ১৯। ভুধ ফ ঢ ২০।ভে ভো জ জি ২১। জু জে

क्ला था • । थि थ थ थ था २२।

ग गि छ ग २०। गा म मि छ

२८। म सा म मि २६। मूथ

स क २७। म मा न न हि २१।

नू हि हो। म ३। न नू न न न।

नू हि हो। म ३। न नू न न।

२। ॥ ३ युक्त जात्रयुक्त न

क्वियः। दुस्यन मीर्सा क्वियः।

निम्म कालिका के कि काल
निम्म हो। कालिका के कि काल-

भठभि खी वश्यमयुक्ककी है-বিশেষঃ। কাণবিছা ইতি কাণ-কোটারী ইতি চ ভাষা। তৎ-পৰ্য্যায়ঃ। কৰ্ণজলৌকাঃ ২। ত্যমরং ৷৷ কর্ণকাটা ৩ ভারুঃ ৪ শতপাদিকা ৫ কর্ণজলুকা ৬ । ইতিশব্দরত্নাবলী।। শতপাত্ ৭ শতপাদী ৮। ইতি জটাধরঃ॥ শতাবরী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শতপদ্ম ক্লী শ্বেতকমল । যথা। শতপদ্মণ মহাপদ্মণ পুঞ্জীকণ সিতাযুজ্ও। ইতি রত্নমালা।। শতপৰ্ব৷ পু॰ বংশঃ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ ইক্ষুভেদঃ। যথা। শতপৰ্বা ভবেৎ কিঞ্চিৎ কোশকার গুণান্বিতঃ। বিশেষাৎ কিঞ্চিদুফণ্চ সক্ষারঃ

প্ৰনাপহঃ।। ইতি ভাৰপ্ৰকাশঃ

শতপর্বা দ্রী দূর্বা । বচা । ভাগ্বপত্মী । ইতি মেদিনী ।।
কোজাগরপূর্ণিমা । ইতি শব্দরত্মাবলী ॥ কটুকা । ইতি রাজনির্ধন্টঃ ।।

শতপর্বিকা স্ত্রী দূর্বা। বচা । ইতি মেদিনী ।। যবঃ । ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শতপর্বেশঃ পু॰ শুক্রগ্রহঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

শতপাৎ) স্ত্রী কর্ণজলোকাঃ।ইতি শতপাদ্) জটাধরঃ ।। শতপাদিকা স্ত্রী কাকোলী।ইতি জটাধরঃ ।৷ কর্ণজলোকাঃ । ইতি শব্দরত্বাবলী ।।

শতপুষ্পঃ পু॰ ভারবিঃ। স তু কিরাতাজুনীযগ্রন্থকর্তা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

শতপুষ্পা স্ত্রী শাকবিশেষঃ ।

শলুকা ইতি খ্যাতা ৷ ইতি ভরতঃ ৷৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷ সিতচ্ছত্রা ২
অতিচ্ছত্রা ৩ মধুরা ৪ মিসিঃ ৫
অবাক্পুষ্পী ৬ কারবী ৭৷ ইত্যমরঃ ৷৷ শতাক্ষী ৮ শতপুষ্পিকা
৯ মধুরিকা ১০ শতাহ্বা ১১ ছত্রা
১২ মিশিঃ ১৩ মিশী ১৪ ৷ ইতি
শব্দরত্নাবলী ৷৷ মাধবী ১৫ যো-

₩ ال ال كا

ষা ১৬। ইতি জটাধরঃ।। অস্যা গুণাঃ। মধুরত্ব॰। বাত পিত্ত হ-রত্বণ। শুরুত্বঞ্চ। ইতি রাজবল্লভঃ ।।#।। কুপবিশেষঃ। মৌরী ইতি ভাষা ৷ তৎপৰ্য্যায়ঃ ৷ শতাহ্বা ২ মিসিঃ ৩ ঘোষা ৪ পোতিকা ৫ অহিচ্ছত্রা ৬ অবাক্পুস্পী ৭ মা-ধবী ৮ কারবী ১ শিকা ১০ সণ-ষাতপত্রিকা ১১ ছত্রা ১২ বজু-পুষ্পা ১৩ সুপুষ্পিকা ১৪ শত-প্রসূনা ১৫ বছলা ১৬ পুষ্পাস্থা ১৭ শতপদ্ৰিকা১৮ ৰনপুষ্পা১৯ ভূরিপুশা ২০ সুগন্ধা ২১ সূন্ধ-পত্রিকা ২২ মধুরিকা ২৩ অতি-চ্ছত্রা ২৪। অস্যা গুণাঃ। কটুত্ব । তিক্তত্ব॰। সিশ্বত্ব॰। শ্লেমাতি-সার স্বর নেত্রব নাশিস্থ । বস্তিকর্মণি প্রশস্যত্বঞ্চ ॥ 🟶 ॥ **७फन** ७११। উक्षत्र । मधूत्रत्र । গুলা শূল বাভ নাশিত্ব । দীপ-নত্ব । পথ্যত্ব । পিত্তহারিত্ব । क्रिकायकष्य । ইতি রাজনির্ঘ-•টঃ।। #।। অপিচ। শতাহ্বানি-ल माश्यम्ल जृष् इर्षिन। निनी । ইতি দ্রব্যগুণঃ।। অন্যক্ষ। শ্-তপুষ্পা কটুঃ স্নিগ্ধা তিক্তোক্ষা কফ বাতরুৎ। ৰুচ্যা বস্তিহিতা

শতভি নেত্র্যা বন্ধবিট্*ক্ষ*মি শুক্র**স**ৎ ।। সংগ্রাহী শীতলা তিক্তা দাহনুৎ বাতলা লযুঃ। ইতিভাবপ্রকাশঃ ॥ অন্যশ্বধুরিকাশকে ডফব্য॰॥ শতপুষ্পিকা স্ত্রী শতপুষ্পা। ইতি भक्तक्रावनी ॥ শতপ্রসূনা স্ত্রী শতপুসা।ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।৷ শতপ্রাসঃ পু॰ করবীরবৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ ॥ শতভিষক্ স্ত্ৰী শতভিষানক্ত্ৰণ! ইতি শব্দরত্নাবলী॥ শতভিষা স্ত্রী অশ্বিন্যাদিসপ্ত-বিশ্শতিনক্ষত্রান্তর্গতচতুর্বি শ্-নক্ষত্রণ। তৎপর্য্যায়ঃ। শতভি-यक् २। ইতি শব্দরত্বাবলী।। অস্যা আক্ততি র্মগুলাকার শত-

তারামধী। যথা। মণ্ডলাভ শত-

তারকান্সলৈ র্মধ্যভাজি নভসঃ

প্রচেতসি। বাণ শৈল ধরণী মি-

তাঃ কলাঃ শারদেন্দুমুখি তাবু-

রে र्ययुः ॥ দ॰ २। প॰ ৫৫। ইতি

কালিদাসক্ত রাত্রিলগ্নমাননি-

ৰূপণ ॥ অস্যা অধিষ্ঠাত্দে-

বতা বৰুণঃ ৷ যথা ৷ অশ্বি যম

দহন কমলজ শশি শূলভূদদি-

তি জীব ফণি পিতরঃ ৷ যোন্য-

র্বন দিনক্তবফূ পবন শক্রাগি মিত্রাঃ। শক্তো নিঋ ভি স্তো-यः विश्व वित्रिक्षी रुति र्वमू र्वक्र-ণঃ। অজ্ঞপাদো ২হিত্রগ্নঃ পূষা চেতীশ্বরা ভানাং।। সা তু অ-(थामूथी। यथा। व्यक्तिय विद्र ষন পিত্ৰ্য বিশাখযুক্ত পূৰ্বাত্ৰয় শতভিষা চ নবাপ্যভূনি। এতা-न्यादश्यभूर्थभानि निवानि नि-छा॰ विमार्गा जृमिथनत्नयू ह তৃষিতানি।। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্বণ ।। 🗱 ।। তত্ৰ জাত ফল॰। শীত ভীতি রতিসাহসী সদা নিষ্ঠু-রে। হি চতুরো নরো ভবেৎ । বৈরিণা মতিশযেন দারুণো বা-ৰুণোডু যদি যস্য সম্ভবে ॥ ইতি কোষ্ঠীপ্ৰদীপঃ ॥ 🗱 ॥ তত্ৰ জা-তস্য মিশ্রগুণাঃ। যথা। শতান-লাদিত্য বিশাখ মৈত্র শক্তোন্ড-বা মিশ্রগুণাঃ প্রদিষ্টাঃ। শিবা-জ হস্তাহিভবা জঘন্যাঃ শেষো-ন্তবাঃ সৎপুরুষা ভবন্তি ॥ 🛊 ॥ রবিবারাদে শতভিষাদিযোগে স্বরোৎপত্তি ফল যথ।। শিব-শতভিষ বাতো ষাম্য সর্প স্ত্রি-পূর্বাঃ শনি রবি সজ বারে ভূo यथी नवगा । देश शि मद्रग-

শতমূ

কোগে যো হি রোগোপযুক্তঃ পশুপতি সমদেহঃ সোপি মৃত্যুণ প্রয়াতি।। উত্তরে বিংশতি জ্ঞে -যা ঘৌ মাসো প্রবণে তথা। ধ-নিষ্ঠায়। মর্ক্তমাসণ বারুণেন দ-শাহকং।। ইতি জ্যোতিঃসারধৃ-ত কৌশিক বচনং।।

শতভীক্ষঃ স্ত্রী মলিকা। ইত্যমরঃ ৷৷ শতং বহবো বিষোগিনো ভীরবো ২স্যা ইতি শতভীকঃ ৷ শীতভীক্ষ রিতি চ পাঠঃ ৷
তদা গৈছিকত্বেন শীতাদ্বিভেতীতি শীতভীক্ষঃ। ইতি ভরতঃ৷৷
শতমথঃ পুং ইক্সঃ ৷ ইতি হলাবুধঃ ৷৷

শতমন্যঃ পু॰ ইন্দঃ। ইত্যমরঃ॥
শতমানঃ পু॰ ক্লী ৰূপ্যপল॰॥
আঢকঃ। ইত্যমরভরতো॥
শতমার্জঃ পু॰ অস্ত্রকারকঃ। ইতি
কেচিৎ॥

শতমূলা স্ত্রী দূর্বা।। বচা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শতমূলিকা স্ত্রী দ্রবস্তী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।

শতমূলী স্থ্ৰী স্বনামখ্যাতৌষধি-বিশেষঃ । তৎপৰ্য্যাষঃ । বহুসু-তা ২ অভীক্ণঃ ৩ ইন্দীবরী ৪

বরী ৫ ঋষ্যপ্রোক্তা ৬ ভীরুপ-ত্রী ৭ নারাষণী ৮ শতাবরী ১ অহেরঃ ১০। ইত্যমরঃ ৷৷ রঙ্গি-ণী ১১ শঢ়ী ১২ দ্বীপিশত্ৰুঃ ১৩ । ইতি জটাধরঃ।। ঋষ্যগতা ১৪ । ইতি শব্দরত্বাবলী ।। শতপদী ১৪ পীবরী ১৫ ধীবরী ১৬ বৃষ্যা **२१ मिरो। २৮ मीशिक। २२ म**त्र-কণ্টিকা ২০ সূক্ষপত্রা ২১ সুপত্রা ২২ বহুমূলা ২৩ শতাহ্বৰা ২৪ স্বাদুরসা ২৫ শতাহ্বা ২৬ লঘু-' পর্ণিকা ২৭ আত্মগুপ্তা ২৮ জটা ২৯ মূলা ৩০ শতবীৰ্য্যা ৩৯ মূ-হৌষধী ৩২ মধুরা ৩৩ শতমূ-লা ৩৪ কেশিকা ৩৫ শতপত্তি-কা ৩৬ বিশ্বস্থা ৩৭ বৈক্ষবী ৩৮ পাক্ষী ৩৯ বাসুদেবপ্রিযঙ্করী ৪০ দুর্মনা ৪১ তৈলবল্লী ৪২। অ-। मा। खनाः । वृषाषः । यथुत्रषः । হিমত্ব°। মেহ কফ বাত পিত্ত नामिष्रः। তিক্তप्रः। ८ अर्थप्रः। রসায়নত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।। অপি চ। শতাবরী বহুসূতা ভীরু রিন্দীবরী বরী ৷ নারাযণী শতপদী শতবীৰ্য্যা চ পীৰৱী ৷৷ মহাশতাবরী স্বন্যা শতমূল্যুদ্ধু-किका। महमुवीर्या (इंजूक

ঋষ্যপ্রোক্তা মহোদরী । শতা-বরী গুরুঃ শীতা তিক্তা স্বাদী রসাযনী। মেধাগ্নি পুষ্টিদা স্নি-ধ্বা নেত্র্যা গুল্মাতিসারজিৎ ।। শুক্র স্তন্যকরী বল্যা বাত পি-ভাসু শোধজিৎ । ইতি ভাব-প্রকাশঃ ।। ক্ষা । অন্যচ্চ । শ-তাবরী বাত পিত্ত মেহ স্কঠহরা সরা। ইতি রাজবল্লভঃ ।। হযষ্টিকঃ পুণ শতলতিকহারঃ

শতযফিকঃ পু॰ শতলতিকহারঃ
। তৎপর্য্যাষঃ। দেবচ্ছন্দঃ ২।
ইত্যুমরঃ।।

শতরুদ্রীয়ণ ত্রি শতংরুদ্রা দেবতা অস্য ৷ইতি সিদ্ধান্তকৌ সুদী
শতরূপা স্ত্রী বন্ধণঃ কন্যা পত্রী চ ৷ যথা ৷ এবস্তত্বাত্মকণ
রুদ্ধা জগদ্বেখা স্তৃজীজনৎ ৷
সাবিত্রীণ লোক সিদ্ধাণ
রুদ্ধা সমাস্থিতঃ ৷৷ ততঃ সংজপত
স্তুস্য ভিত্বা দেহ মকল্মষণ ৷ স্ত্রীরূপ মর্দ্ধ মকরোদর্দ্ধণ পুরুষ রুপ্রব্ ৷৷ শতরূপা চ সা খ্যাতা
সাবিত্রী চ নিগদ্যতে ৷ সরস্বত্য-

দৃষ্ট্বা তা॰ ব্যথিত স্তাৰৎ কাম-বাণাৰ্দিতো বিভুঃ। উপযেমে স

থ গাযত্রী ব্রহ্মাণী চ পরন্তপ ॥

বিশ্বাত্মা শতৰূপা মনিন্দিতা ।।

শতাব

ততঃ কালেন মহতা ততঃ পুত্রো হতবন্ধনুঃ । স্বায়স্তুব ইতি খ্যা-তঃ স বিরাডিতি নঃ শ্রুতং ।। ইতি মাৎস্যে ৩ অধ্যায়ঃ ।। শতলুস্পাঃ) পুং ভারবিঃ । ইতি শতলুস্পাকঃ) ত্রিকাণ্ডশেষ ভূরি-প্রযোগৌ ।। শতবীর্যা স্ত্রী শেতদূর্বা। ইত্য-

মরং। শতাবরী। কপিলদ্রাক।
। ইতি রাজনির্যক্টঃ।।

শতবেধী পু॰ অম্লবেতসঃ। ইত্য-মরঃ।।

শতসহসুণ ক্লী শতগুণিতসহসুণ।
লক্ষ মিতি মাবং। যথা হারীতঃ

া মণি বাসো গবাদীনাণ প্রতিগ্রহে সাবিত্র্যুফসহসুণ জপেৎ
পঞ্চ মধ্যমে দশোত্তমে দ্বাদশরাত্রণ প্রোব্রতণ শতসহসু মসৎপ্রতিগ্রহেদ্বিতি। ইতি শুদ্ধিতত্ত্বণ।

শতহুদা স্ত্রী বিদ্যুৎ।ইত্যমরঃ।।
বজুং । ইতি মেদিনী ।। দক্ষকন্যাবিশেষঃ। যথা। দদৌ চ
বাহুপুত্রায় দৌ তডিচ্চ শতহুদ।
। তষোঃ পুত্রাশ্চ বিদ্বাংস শ্চতস্ত্রো বিদ্যুতঃ শুভাঃ ।। ইতি
বিহুপুরাণে সর্গানুকীর্ত্তনে সতী

দেহত্যাগো নামাধ্যায়ঃ।।
শতাঙ্গঃ পুণ রথঃ। ইত্যমরঃ॥
তিনিসবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ
শতানকণ ক্লী শাশানণ। ইতি
ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

শতানন্দঃ পুণ মুনিভেদঃ। সত্ত্ব জনকরাজপুরোহিতঃ।। দেবকী নন্দনঃ। ইতি মেদিনী ।। ব্রহ্মা ।। গৌতমমুনিঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ ।। বিষ্ণুর্থঃ। ইতি ত্রিকাশুনেখঃ ।। শতানীকঃ পুণ বৃদ্ধঃ।। মুনিভেদঃ । সত্ব্যাসশিষ্যঃ।। রাজভেদঃ । সত্ত্র্পুর্গে চন্দ্রবণ দিতীযরাজঃ। তস্য পিতা জন-মেজষঃ পুত্রঃ সহস্থানীকঃ। ইতি মেদিনী।। সুদাসরাজপুত্রঃ । ইতি শ্রীভাগবতে ৯ স্কন্ধে ২২

অধ্যায়ঃ।। শতার° ক্লী বজু°। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষুঃ।।

শতারু কী । স্ব ভেদঃ। ইতি
শতারুষী ন্ত্রী । শব্দরত্বাবলী ।।
তুলা ৰূপমাহ রক্তণ শ্যাবণ সদাহার্ত্তি শতারুঃ স্যাদ্বহুরণ ।
ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।

শতাবরী স্ত্রী শতমূলী। ইত্য-মরঃ ॥ ইন্দ্রভার্যা। ইতি শব্দ-

শত্রু

রত্নাবলী।। শটী। ইতি মেদিনী শতাবর্ত্তঃ পু॰ বিষ্ণুঃ। ইতি হেম-চক্রঃ।।

শতাবত্তী^{শ্}পু॰ বিষ্ণুঃ। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ।।

শতাহ্বা স্ত্রী শতপুষ্পা। ইতি জটাধরঃ ॥ শতাবরী। ইতি রা-জনির্ঘণ্টঃ ॥

শতাক্ষী স্ত্রী রাত্রিঃ। শতপুষ্পা

1 ইতি শব্দরত্বাবলী । পার্বতী।

যথা। ভূষশ্চ শতবার্ষিক্যা ম
মাবৃষ্ট্যা মনস্ত্রসি। মুনিভিঃ সংস্তুতা ভূমো সম্ভবিষ্যাম্যয়োনিজা ।। ততঃ শতেন নেত্রাণাণ
নিরীক্ষিষ্যামি যমুনীন্। কীর্ত্তযিষ্যন্তি মনুজাঃ শতাক্ষী মিতি

মাণ ততঃ ।। ইতি মার্কপ্রেমপুরাপে দেবীমাহক্যো দেব্যা শ্চরিত
স্তুতি নামাধ্যাষঃ ।।

শতিকঃ ত্রি শতেন ক্রীতঃ।। শ-তস্য বিকারঃ।। শতসম্বন্ধী। ইতি সন্ধান্তকৌমুদী।।

শতেরঃ পু॰ শত্রুঃ।। হিংসা । ইত্যুণাদিকোষঃ।।

শত্যং ত্রি শতস্য বিকারঃ ৷৷ শ-তেন ক্রীতঃ ৷৷ ধনপতিসংযোগঃ ৷৷ শত মস্মৈ বৃদ্ধিঃ আয়ঃ লাভঃ শুক্ষ মুপদ। বা দীয়তে ইত্যর্থে শত্যঃ শতিকঃ। শত্যণ। শতিকণ । দক্ষিণাক্ষিম্পন্দনণ শত্সা নি-মিত্তমিত্যর্থঃ। ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদী।।

শত্রিঃ পু॰ হস্তী। ইতি সিদ্ধাস্ত-কৌমুদ্যা মুণাদিবৃত্তিঃ।।

শত্রুঃ পু॰ স্বদেশাদনন্তরো ২ব্য-বহিতৈকবিষযাভিনিবেশিরাজঃ । যথা। বিষযানন্তরো রাজা শত্রু মিত্র মতঃ পর মিতি॥ শাতকঃ। নিপাতকারীত্যর্থঃ। তৎপর্য্যা-ষঃ। রিপুঃ ২ বৈরিঃ ৩ সপত্নঃ ৪ অরিঃ ৫ দ্বিশঃ ৬ দ্বেষণঃ १ দু-क्र म ४ विषे २ विशवः ३० ज-হিতঃ ১১ অমিত্রঃ ১২ দস্যঃ ১৩ শাত্রবঃ ১৪ অভিষাতী ১৫ পরঃ ১৬ অরাতিঃ ১৭ প্রত্যথী ১৮ পরিপন্থী ১৯। ইতি চামর:॥ বৃষঃ ২০ প্রতিপক্ষঃ২১ । ইতি জটাধরঃ ৷৷ দ্বিষন্ ২২ ঘাতকঃ ২৩ দ্বেষী ২৪ বিদ্বিষঃ ২৫ হি॰-সকঃ ২৬ বিদ্বিট্ ২৭ অপ্রিষঃ ২৮ অভিঘাতিঃ ২৯ অহিতঃ ৩০ **मिर्श्न ७३। ইতি नयत्र**त्रा-বলী।। তস্য জ্বোপাষো যথা। মৎস্য উবাচ। সর্বেষা মপ্যুপা-

ষানা° দান° শ্রেষ্ঠতন° নত°। স্বদত্তেনেহ ভবতি দানেনে।ভয লোকজিৎ॥ ন সে। ২ন্ডি রাজন্ দানেন বশবোগো ন জাযতে। দানেন বশগা দেবা ভবন্তীহ স-मा गृनाः ॥ मान **म्यानश्र**ीविष्ठ প্রজাঃ সর্ব। নূপোত্তম। প্রিযো हि मानवान् त्वात्क मर्वतेगात्वा-গজাবতে ॥ দানবানচিরেশে তথা রাজা পরান্ জ্যেও। দান-বানেব শক্ষোতি সংহতান্ ভেদি-जु॰ भन्नान् ॥ यताभानुका गर्छी-রাঃ পুরুষাঃ সাগরোপমাঃ। ন গৃ-হুম্ভি তথাপ্যেতে জায়ন্তে পক্ষ-পাতিনঃ॥ অন্যত্রাপি ক্বত দান করোজ্যন্য**॰ তথা বশে। উপাযে**-ভ্যঃ প্রসংশস্তি দান• শ্রেপ্তত্বং জনাঃ ৷৷ দান শ্রেষকর শ্রেষ্ঠ দান॰ শ্রেষ্ঠকর॰ পর॰। দানবানে-ব লোকেষু পুত্ৰত্বে প্ৰিযতে সদ। ॥ ন কেবল° দানপরা জযন্তি ভূ-र्लाक प्रक॰ श्रुक्रशः मूरीताः। জযন্তি তে রাজ সুরেশ্রলোক 🖟 সুদুর্জহণ বদ্বিবৃধাধিবাস ॥ ইতি मां ५८ ता ३२५ ज्यायः ॥ 🛊॥ म ९-স্য উবাচ। ন শক্যা যে বশেকর্ত্তু মুপাৰত্ৰিতবেৰ ভূ। দঙ্কেন ভান্

বশান্ স্বৰ্য্যাৎ দণ্ডো হি বশক্কগৃ-ণাং ৷৷ সম্যক্ প্রণয়নং তস্য ভথা কাৰ্য্য॰ মহীফিভা। ধৰ্মশান্তানু-সারেণ সুসহাযেন ধীমতা ॥ তস্য সম্যক্প্ৰণ্যন তথা কাৰ্য্য মহী-ফিতা। বানপ্রস্থাণ্ড ধর্মজ্ঞান্ নির্মানান্ নিম্পরিগ্রহান্ ।। স্বলে-শে পরদেশে চ ধর্মশান্ত বিশার-**मान्। मभीका** अनुराक्षक मई॰. **मट्ड প্রতিষ্ঠিত** ।। আশ্রমী यদি বা বণী পূজ্যো বাথ গুরু মহান্। नाम तां । नाम तां । श्री पं अधरमं न जिन्ने ।। जनकान् न-'ওষেদ্রাজা দণ্ড্যাণ শৈচবাপ্যদণ্ড-यन्। ইহ রাজ্যপরিভূটা নরকং প্রতিপদ্যতে ৷৷ তত্মাজাজা বিনী-তেন ধর্মগান্তানুসারতঃ। দণ্ড-প্রণয়ন কার্য্য লোকানুগ্রহ কা-ম্যযা।। যত্র শ্যামো লোহিতা-কো দণ্ড শ্চরতি পাপহা। প্রজা ন্তত্র ন মুহুন্তি নেতা চেৎ সাধ্ পশ্যতি ।। বাল বৃদ্ধাতুর যতি দি-জ স্ত্ৰী বিক্লবাত্মতঃ। সৰ্বে বলিষ্ঠা ॥ দেব দৈত্যোরগগণাঃ সিদ্ধ ভূত পতজ্রিণঃ। উৎক্রমেষুঃ স্বমর্য্যা-मा॰ यमि मुख्य न পाত्रस्य ॥ এय

ব্ৰহ্মাভিশাপেষু সৰ্বপ্ৰহরণেষু চ। সর্ব বিক্রম কোপেষু ব্যবসাযে চ তিগ্ঠতি।। পূজান্তে দণ্ডিনো দেবা न পূজ্যস্তে স্বদ্ধিনঃ। न बन्नां १० বিধাতার॰ ন পূষার্য্যমনাবপি॥ য এতে মানবাঃ কেচিৎ প্রশাস্তাঃ সর্বকর্মসু। রুড মগ্রিঞ্চ শক্রঞ্চ সূ-ষ্যাচন্দ্রমসৌ তথা ।। বিষ্ণু দে-॥ वगना भाषान् मिष्नः भूक्य-ন্তি চ। দণ্ডঃ শান্তি প্ৰজাঃ সৰ্বা দণ্ড এবাভিরক্ষতি ।। দণ্ডঃ সুপ্তেষু জাগর্ত্তি দণ্ড॰ ধর্মাণ বিদু র্বুধাঃ। রাজদণ্ড ভয়াদেকে পাপাঃ পাপ॰ न क्र्बंट 11 यममध ভ्यादित्क পরম্পর ভ্যাদিশি। এবং হি সা-দ্বিকে লোকে সর্বণ দণ্ডে প্রতি-ষ্ঠিত॰ ॥ অন্ধে তমসি মজ্জেযু र्य-দি দণ্ড॰ ন পালযেৎ। তস্মাৎদ-**ে**ণা দম্বতি অদুঙ্যুণ দুগুষ্ত্যুগি া দমনাদ্বভনাকৈত্ব তম্মাৎ দণ্ড॰ विमृ र्बुशाः। मध्मा जीटे द्धिम-लाः नत्मरे जारा। भृजः नृन-ধরস্য যজ্ঞে। ভবস্য পুত্র• ধজি-नौপতिक दद्ग मिमृनाक ভराजु मुद्रः ॥ ইতি माৎमा ১৯৯ অ-शायः॥ मामराज्यो তउछ्य **जकंदिंगे ॥**

শতু प्रः পুং শ্রীরামস্য ভ্রাতা। তৎ পর্য্যায়ঃ। শত্রমর্দনঃ ২। ইতি भफतजावनी ॥ म जू मूमिजया হুতোচ্ছিষ্ট ভোজনাদসাবি । যথা। নিষ্ঠাণ গতে দত্রিম সভ্য-তোষে বিহিত্তিমে কর্মাণি রাজ-পত্ন্যঃ। প্রাশু র্হতোচ্ছিষ্ট মুদা-র বংশ্যা স্তিসুঃপ্রসোতুং চতুরঃ সূপুজান্ ৷৷ কৌশল্যযাসাবি সু-খেন রামঃ প্রাক্ কেক্ষীতে। ভরত স্ততো ২ভূৎ। প্রাসোফ শত্রুদ্ব মুদারচেষ্ট মেকা সুমি-बा मर नश्रापन ॥ रेठि ভটি কাব্যে ১ সর্গঃ ॥ শত্রুমজননী স্ত্রী সুমিত্রা। ইতি শব্দরত্মাবলী।। শত্রুজিৎ পু• রাজবিশেষঃ। তস্য পুত্রঃ ঋতধ্বজঃ। সএব জবলযা-थः। ইতি मार्कत्ख्यभूतानः॥ শত্ৰুঞ্জযঃ পুণ বিমলাজিঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। শত্তুজেতরি ত্রি।। ত্রি বৈরিতাগরুৎ। শত্ৰ স্তপঃ रेि मुक्षादाधवाकत्र १०।। শত্রমর্দনঃ পু॰ শত্রমঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শম্বরী স্ত্রী রাজিঃ। ইতি ত্রিকাপ্ত-८व्यसः ॥

শদ ৯ জ ঔ শাতে ৷ ইতি কবিকল্পদ্ধা ৷ ৯ শৎস্যতি ৷ শাতঃ পতন॰ পাতনঞ্চ ৷ শীযতে পত্রু
বৃক্ষাৎবাযুঃ ৷ শদো হপিম মিত্যবিষয়ে আত্মনেপদ॰ ৷ কেচিদিম॰ তুদাদৌ পঠিয়া তৎসামর্থ্যাৎ আত্মনেপদানিত্যন্ত্রে শীযতী শীযন্তীত্যুদাহরন্তি ৷ ইতি
দুর্গাদাসঃ ৷৷

দে ঔ গতৌ ৷ আঙ পূর্বোয় মিতি
কবিকল্পক্রমঃ ৷৷ তালব্যাদিঃ ৷
আশীয়তে ৷ ঔ আশাৎসীৎ ৷

শদঃ পু॰ কলমূলাদি। শদধাতো
রচ্ প্রত্যবেন নিষ্ণায়ঃ। ইতি
সিদ্ধান্তকোমুদী ॥
শদ্রিঃ পু॰ মেয়ঃ॥ জিফুঃ। ইতি
মেদিনী ॥ হস্তী । ইতুগাদি-কোষঃ॥
শদ্রিঃ স্ত্রী বিদ্যুৎ। ইতি হেম-চন্দ্রঃ॥ খণ্ডঃ। ইতি সিদ্ধাস্ত-কোমুদ্যামুণাদিবৃদ্তিঃ॥
শদ্রঃ ত্রি পতনকর্তা॥ গস্তা।
ইতি শদধাতো রু প্রত্যবেন
নিষ্পায়ঃ। ইতি ব্যাকরণণ॥

भनकाविनः पू॰ शक्रिश्रनी।

ইতি শব্দচন্দ্রিকা ॥ শনপণী স্ত্রী কটুকী। ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা॥

শনিঃ পু॰ রব্যাদিনবগ্রাহান্ত-র্গতসপ্তমগ্রহঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। সৌরিঃ ২ শনৈশ্চরঃ ৩। ইত্য-মরঃ।। নীলবাসাঃ ৪ মনদঃ ৫ ছাযাত্মজঃ ৬। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ।৷ পাতঙ্গিঃ ৭ ৷ গ্রহনাযকঃ ৮ ছাযাসুতঃ ৯ ভাস্করিঃ ১০ নী-नायतः ১১। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ আরঃ ১২ ক্রোডঃ ১৩ বক্রঃ ১৪ কোলঃ ১৫ সপ্তাপ্তঃ ১৬ পঙ্গঃ '১৭। ইভি জটাধরঃ ॥ কালঃ ১৮ সূর্য্যপুল্রঃ ১৯ অসিতঃ ২০। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ॥ অস্য হ্ব-ষ্ণবর্ণঃ। পশ্চিমদিঙ্ নপুণসকা-স্ত্যজ্জাতি তমোগুণ ক্যায়-রস মকর সম্ভরাশি নীলকান্ত-ষণি সৌরাষ্ট্রদেশানামধিপতি-রয় । কশ্যপমুনি সন্তানঃ। শ-**फर्वर्वः । সূ**र्यामूथः । ठञ्जन्न পরিমাণঃ। क्रकवर्ণवञ्जः। গৃধু-ৃস্গ্যপুত্রঃ

ভল্ল বাণ বরশূল ধনুর্ধারী। অ-স্যাধিদেবতা ষমঃ। প্রত্যধিদে-বতা প্রজাপতিঃ। ইতি গ্রহ্যা-

গতত্ত্ব বৃহক্ষাতকাদবঃ ॥ অপি ह। गनि विश्वाश शनिल वना বন্ধা। শূদ্রাঙ্গন। ধাতুসমঃ স্থির- ४३। কুরং প্রতীতী ত্বরো ২তি-বৃদ্ধে। থকরকিভীট্ দীর্ঘ সুনীল লোহণা ইতি নীলকণ্ঠীযভাজৰণ ।। 🗱 ।। অস্যোৎপত্তি র্যথা। মরী-চেঃ কশ্যাপো যজ্ঞে তস্মাজ্জজে বিভাবসুঃ। তদ্য ভার্যাভবৎ সংজ্ঞা পুত্রী দ্বষ্টুঃ প্রজাপতেঃ ॥ নাতিতেজোময়ণ ৰূপণ সোচুণ সাল
 বিবস্বতঃ ৷ মাযাম্যী
 তি ত শ্ছাযাণ সবর্ণাণ নির্ম্মমে স্বতঃ ।। সংজ্ঞোবাচ তত শ্ছাযাণ সবৰ্ণৈ শূণু মে বচঃ ৷৷ অহু যাস্যামি সদ-नः পिতृ सु॰ भून तक या। ভरन নিৰ্বিশক্ত

११ देश कायाः गृट द्वाणा मःखाः गाद लिजू तालयः। मनामात्नाः ११ जाः मःखाः मवर्गायाः छंवा त्रविः॥ मार्वानः জनयामाम मन् (अर्थः महीला । मत्निकतः वि-ठीयकः मूठः छाः ज्ञीविकाः॥ देशि लात्म वर्श्यर्थः अवगायः ॥ ॥ जमा कृतमृर्यः कात्रनः यथा। এত्रिम्नस्थितं छक प्रकृः १६ तन्ननः । আজ্ञाम महा-

यागी मूर्याथुलः मरेनम्हनः ॥ অত্যন্তানমূবদন ঈয়মালিত লো-চনঃ। দারিণ শূলহন্তঞ্চ বিশা-लाक गुवाह र ॥ गटनमहत छ-বাচ। শিবাজ্ঞয়া শিশু দ্রফুণ্ যামি শঙ্করকিঙ্কর । বিষ্ণু প্রসূখ (प्रवानाः मुनीन। मनुद्राध्यः ॥ বিশালাক্ষ উবাচ। আজ্ঞাবহো-ন দেবানা নাহ শঙ্কর কিন্ধরঃ। দার দাতু মশক্তোহ বিনা মন্মা-जू ताञ्चया।। मत्नी वर्षा अट्रभाष চক্ষুঃ কোণাজ্ঞয়। ততঃ। শনি র-ভ্যন্তর গন্ধা ননামান্যুকন্ধরঃ ৷৷ রত্নসিংহাসনস্থাঞ্চ পার্বতী • স-স্মিতা॰ মুদা। নত॰ সূর্য্যসূত॰ দৃ-ষ্ট্ৰ। দুৰ্গ। সংভাষ্য যত্নতঃ ॥ শুভা-भियः परिन जरम शृक्षे। जद अ-শল॰ শুভা। পাৰ্ৰত্যুবাচ । কথ-मानमुरकु खु॰ खाजू मिक्हामि সাম্পুত । কথ ন পশ্যসি মা मार्था वालकक अरम्बत ॥ भ-নি ৰুবাচ। সৰ্বে স্বকর্মণঃ স্বাধি ভুঞ্জতে বাঞ্ছিত ফল। শুভা-শুভ বা যৎকর্ম কোটিকলৈ র্ন লুগ্যতে ॥ ইতিহাস চাতিগে। প্য॰ শৃণু শঙ্করবল্লভে । অকথ্য॰ জननी नालाहाकाजनक कात्रण

য় আবালাৎ ক্লডভজোহণ ক্ল अक्षारिनकमानमः । जनमामू রতঃ শশ্বদ্বিষয়ে বিরতঃ মদা ॥ পিতা দদৌ বিবাহেন কন্যাণ চিত্ররথস্য চ। অতিতেজিখনী শশ্তপদ্যানুরতা সতী।। এক-দা সাধাতুস্নাতা সুবেশং স্বং বি-श्राय **ह । त्रञ्जानकात म**ंगूका मू-নিমানসমোহিনী 11 হরিপাদ° ধ্যায়মান সামা পশ্যেত্যুকাচ হ ৷ মৎসমীপণসমাগত্য সম্মিতান-ল লোচনা ৷৷ শৃশাপ মা মপশ্যস্ত-মৃতুনফা স্বকোগতঃ। বাহুজ্ঞান বিহীনঞ্ধ ধ্যানৈকতানমানসং।। ন দৃট্টাহ॰ স্বয়া যেন ন ক্বত মৃতু-तकन । घ्या म्केंब यत्यज् मृष সর্বণ বিনশ্যতি ॥ অহঞ্চ বিরতে ধ্যানে তা মতোষ পুরা সতী । শাপণ মোজুণ ন শক্তা সা পশ্চা-ত্তাপ॰ চকার হ।।তেন মাত র্ন প-শ্যামি কিঞ্ছিত্ত স্বচক্ষা। তঙঃ প্রভৃতি নমুগ্যাঃ প্রাণিহিণ্সা ভ-यानरुः ॥ ইতি जन्नदिवदर्खं भग-পতিখণ্ডে ১১ অধ্যায়ঃ ॥ 🕸 ॥ অস্য ভোগকালো যথা ৷ রবি ৰ্যাস - নিশানাখঃ স্বাদদিক্স-দ্ব । পক্তব ভূমিপুত্রো বূধো-

कौषम वामतान्।। वर्षत्मकः मू রাচার্য্য শ্চাফীবিংশদিনং ভৃগুঃ। শনিঃ সার্দ্ধদ্বয়ণ বর্ষণ স্বর্ভানুঃ সা-র্দ্ধবৎসর° ॥ ইতি জ্যোতিষতত্ত্ব° ।। ৠ।। তস্য জপ মন্ত্রে। যথা। প্রণব॰ বাগ্ডব॰ সাধা॰ শ্রীমুদ্ধৃত্য শনৈশ্চ-রণ। চতুর্থ্যন্ত মনুণ প্রোক্তণ রবি-मृत्ना निवाकता। ७ वे॰ शैं 🕮 শনৈশ্চরায়। ইতি রুডয়ামলে ॥ উৰ্দ্ধূপাণি স্তন্মন্ত্ৰ° জপেৎ। যথা। সূর্য্যার রাহু মন্দানা মূর্দ্ধপাণে জপৈছুধঃ। সোম কেন্বে। রধঃ-. পাণ্যো রন্যেষা শুদ্ধপাণিকঃ ॥ ইতি চ রুড়যামল ।। 🗱 ।। তস্য হোমমন্ত্রো যথা । ওঁ শন্মোদে-বী রভীষ্টযে শঙ্গো ভবন্ত বীতষে শণ্যো রভিসুবস্ত নঃ। যথা। শ-নৈশ্চরাযেতি পুনঃ শক্ষোদেবী-তি হোমধেৎ। ইত্যুদ্বাহতত্ত্বধৃত মৎস্যপুরাণ ।৷ 🟶 ৷৷ বারবিশেষঃ । তত্র বারবেলা যথা। ক্বত মুনি ষম শর মঙ্গল রাম্ত্র্ ভাস্করাদি যামার্দ্ধে। প্রভবতি হি বারবেলা ন শুভাশুভকবিক্রণার ॥ রু॥ তত্র কালবেলা ষ্থাক্তিনাদ্য বে-লা রবিতঃ শ্রাজি কালাঘলাগা-ঘূধযো গজেন্দু । দিনে নি গাখা-

মৃত্ বেদ নেত্র নগেষু রামা বিধু-मिखित्नो ह ।। **₩** ।। তত্র স্থলিক-বেল। यथा । यश्री रिकेक नितन-শাৎ ক্রমশ ইহ দিনে মন্ত্রিচণ্ডে-শ্বরোক্তঃ পূর্বে বারাদ্ধিযামঃ স্ব-লিক ইহ পরে৷ মধ্যম শ্চেতি কা-वः। 🗱। তिष्तत्र शृर्वितिः । यन ষেধো যথা। শুক্রাদিত্যদিনে ন বারুণদিশ'ন জ্ঞে স্বজে চোত্ত-রা । মন্দেন্দোশ্চ দিনে ন শক্ত্র-কঙ্গভং যাম্যাং গুরৌ ন ব্রজেৎ ॥ 🕸 ॥ তত্র প্রথম রজে।যোগে দোষো যথা। আদিত্যে বিধবা নারী সোমে চৈব পতিব্রতা। বেশ্যা মঙ্গলবারে চ বুধে সৌ-ভাগ্য মেব চ।। বৃহস্পতৌ পতিঃ শ্রীমান্ শুক্রে চাপত্য নেব চ ॥ শনৌ বন্ধ্যাণ বিজ্ঞানীয়াৎ প্রথ মে স্ত্রী রজস্বলা। ইতি জ্যোতি-স্তত্ত্ব ।। 🗱 ।। অথ নবানা । গ্রহা-ণা॰ দানানি। সূর্য্যে ধেনুঞ্চ তামু-🍄 গোধূম॰ রক্তচন্দন । চন্দ্রে চ-ন্দন শড়্মৌ চ বস্ত্রঞ্চ তিল তণ্ডুলা-न्।। ऋष्क वृषः अमाठत्या त्रकः বস্ত্রণ শুডেনিন বুধে কপূরি মূদ্রা-ঞ্চ হরিদ্বস্ত্র° হিরণ্যক°। পীতবস্ত্র-দ্বয° জীবে হরিদ্রা কনকানি চ।। 🏽

অশ্বঃ শুক্রে সিতোদেয়ঃ শুক্ল-ধান্যানি ষানি চ। শনৌ চস-তিলা দেযা ক্লফা গৌ লৌ হ মু-ত্তমণ।। রাহে চ মহিষী চ্ছাগৌ মাষাশ্চ তিল সর্যপাঃ। অজা মেষৌ চ দাতব্যৌ কেতৌ চাশ্ন-ঞ মিশ্রিত । স্বর্ণ গো বিপ্র পূ-জাভিঃ সর্বেষাণ শান্তি রুত্তমা ॥ ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব॰॥ 🕸 ॥ গ্রহাণা॰ বলযো যথা। গুডৌ-দন॰ পাযসঞ্চ হবিষ্য ক্ষীর ষ-िकि । मरिशामन इतिकृर्न गा॰म॰ ठिलाम त्यव ह ॥ मन्त्राष গ্রহক্রমাচ্চেদ দিক্তেভ্যা ভো-জন॰ বুধঃ। শক্তিতো বা যথালা-ভ॰ সৎক্বত্য বিধিপূৰ্বক॰॥ 🗱॥ গ্রহাণা॰ দক্ষিণা যথা । ধেনুঃ শঙ্খ স্তথানড়ান্ হেম বাসো হ-য তথা। কুকা গৌ রাযসং ছাগ এতা বৈ দক্ষিণাঃ ক্রমাৎ।। ইতি সংস্কারতত্ত্ব॰ ॥

শনিচক্রণ ক্লী নৃণাণ শুভাশুভ-জ্ঞানার্থণ শনিভোগ্যনক্ষত্রাদি সপ্তবিংশতি নক্ষত্রযুক্ত নরাকা-র চক্রণ । যথা । শনিচক্রণ নরা-কারণ লিখিদ্বা সৌরিভাদিতঃ । নান ঋক্ষণ ভবেদ্ধত্র ফলণ তত্র

শুভাশুভ ॥ এক মুখে দক্ষই-স্তে চত্বারি বঁট্ পদদ্বযে। হৃদি-পঞ্চ করে বামে চত্বারি মস্তকে-ত্ৰয় ৷৷ দ্বয় নেত্ৰদ্বয়ে গুহেছ দ্বয় তত্ৰ ন্যদেৰুধঃ। মুখে হানি र्জ-বো দক্ষে ভূমঃ পাদে গ্রিযো হৃদি॥ বামে ভী র্মস্তকে রাজ্য॰ - নেত্রে সৌখ্য শৃতি র্গুদে। তূ-र्याष्ठे बामत्म शत्क यमा विघ-করঃ শনিঃ।। তদা সৌখ্য বপু-স্থস্ত হৃৎ শীর্ষে নেত্র দক্ষযোঃ। তৃতীযৈকাদশে ষষ্ঠে যদা সৌ-খ্যকরঃ শনিঃ ৷৷ তদা বিষ্ণঃ শ-রীরস্থো শুহে বক্তেু ২ঙ্গ্রি বাম-যোঃ। ষস্য পীডাকরঃ শৌরি **स्थ्रमा हत्क कनस्रिमः॥ निर्धिष** ক্ষজবোৰ তৈলমধ্যে কিপে-ত্ততঃ । নিক্ষিপ্য ভূমিমধ্যস্থ রুষপুল্পৈঃ প্রপূজযেৎ।। তুষ্টি• ষাতি ন সন্দেহঃ পীড়াণ ত্যক্ত্রা শনৈশ্চরঃ। ইতি জ্যোভিস্তত্ত্বণ। শনিপ্রসূঃ স্ত্রী ছাবা। সূর্ব্যপত্নী। ইতি ভূরিপ্রযোগঃ॥ শনিপ্রিয° ক্লী নীলমণিঃ। ইতি কেচিৎ 11 শনিবারঃ পু॰ শনিভোগ্যসাবন-

षिन[°]। ততु উদম্বদাদমকালঃ

। যথা। সূতকাদি পরিচ্ছেদো এহভুক্তিশ্চ সাবনেন প্রকীর্ত্তি-তাঃ।। দিনাধিপস্য রব্যাদে র্ভো-গ্যু॰ দিন॰ বারৰূপ॰ সাবনগণ-त्नोकः। উদযাদোদযান্তানো ভৌ শসাবন বাসরাঃ। ইতি তি-থ্যাদিতত্ত্ব° ।।#।। শতভিষানক্ষ-<u>बयुक यथु क्रक्ख (या मन्गा॰ न-</u> নিবার যোগে মহাবারুণী স্যাৎ । यथा । ऋष्मश्रुतात्व । वाकृत्वन मगायुका मरशे क्रका बरमामनी ' গঙ্গায়া॰ যদি লভ্যেত সূৰ্য্যগ্ৰহ-শৈতেঃ সমা ।। শনিবার সমাযু-ক্তা সা মহাবারুণী স্মৃতা। ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব ॥ 🗱 ॥ তত্ৰ জাত ফল থখা। ক্লাঃ সুবেশঃ সল কীর্তিহীনো জ্বাযুতো মধ্যধ-নো ২ঙ্গহীনঃ। তমোগুণঃ ক্লে-শকরো নরাণা॰ মন্দস্য বারপ্র-ভবে। ২তিমক্ষঃ ॥ ইতি কোষ্ঠी-প্রদীপঃ ॥ 🗱 ॥ তত্ত্ব যাত্তা নি-ষেধে। যথা। সংত্যজেদিবসে যাত্রা॰ সূর্যারাকী ন্দু বক্রিণা॰ । ইতি জ্যোতিস্তত্ত্বণ।। বারবেলা-দি শনিশব্দে দ্রফব্য° ॥ শনৈঃ ব্য অজ্ঞত । ইত্যমুরঃ॥

যথা। শনৈ বিদ্যা শনৈঃ কন্থা শনৈঃ পর্বত মারুহেৎ। শনৈঃ কামঞ্চ ধর্মঞ্চ পঞ্চৈতানি শনৈঃ শনৈঃ।। ইতি গারুডে ১০৯ অধ্যায়ঃ।। শনৈশ্চরঃ। ইতি মেদিনী।।

গনৈশ্চরঃ পু॰ শনিঃ। ইত্যবরঃ
। অস্য স্তোত্রণ ষথা। নীলাঞ্জনচ্যপ্রখাণ রবিসূনুণ মহাগ্রহণ
। ছায়ায়া গর্ভসমূতণ বন্দে ভক্ত্যা শনৈশ্চরণ।। ব্যাসেনোক্ত
মিদণ স্তোত্রণ ষঃ পঠেৎ প্রয়তো
নরঃ। দিবা বা যদি বা রাত্রো
শান্তি স্তম্য ন সণশ্যঃ।। ইতি
ব্যাসভাষিত স্তোত্রণ।।

শপ্ ব্য স্বীকারঃ ৷ যথা ৷ শপ্ক-রোতি ৷ ইতি সিদ্ধান্তকৌ মুদী ৷৷
শপ ষ ঞ ঔ / কোশে ৷ ইতি ক-শপ ঔ ঞ / বিকল্প দ্রু মঃ ৷ দ্বোতালব্যাদী ৷ য ঞ শপ্যতি শপ্যতে ৷ ঔ শপ্তা ঔ অশাপ্সীৎ
৷ ঞ শপতি শপতে ৷ কোশ উক্রিবিশেষঃ ৷ নির্ভন্ন নিতি
চতুর্জঃ ৷ সহস্পো ২সৌ শপথানশপ্যৎ ৷ কোশো ভ্রাদি
পক্ষে গালিদান ৷ শপতে ৷ ক্রিঘেপি শপথাশী গত্যনুকারে ভি

নিষমাৎ শপথে আত্মনেপদং অন্যত্র পরশৈষ্ঠিদং ৷ রুক্ষায় শপতে গোপী ৷ প্রজেতি ত্বাং শশাপ সং ৷ ইতি রযৌ ৷ সখ্যঃ শপামি যদি কিঞ্চিদনুষ্মরামি ৷ ইতি বাচা শরীর স্পর্শ নাভাবাদিতি পাণিনীযাং ৷ কেচিত্তু শপথে নিত্য মাত্মনেপদং অন্যত্র বিভাষয় ইত্যাহং ৷ তেন প্রতিবাচ মদত্ত কেশবং শপমানায় ন চেদি ভূজ্তে ৷ ইতি মাহং ৷ ইতি দুর্গাদাসং ৷৷

শপঃ পু॰ শপথঃ। ইতি হেমচক্রঃ ।। নির্ভন্ন ন॰। গালিদান॰। ইতি শপধাত্বর্থ দর্শনাৎ।।
শপথঃ পু৽ অনৃত॰ বদন্ ঘোর॰
নরক॰ যাস্যামি ইত্যেব॰ কপ॰
মিথ্যানিরসন॰ ।। সত্যাবধারণ॰। ইতি সাঞ্ষঃ। বাচা শরীর স্পর্শন॰। ইতি গোষীচক্রঃ।
শপথো দিব্য॰। ইতি রমানাথঃ
। ইতি ভরতঃ।। তৎপর্য্যায়ঃ ।
শপন॰ ২। ইত্যমরঃ।। শপঃ ৩।
ইতি হেমচক্রঃ।। সত্য॰ ৪ সময়ঃ
৫ শাপঃ ৬ প্রত্যয়ঃ ৭ অভিষ্রঃ
৮। ইতি জটাধরঃ।। জনা চত্ত্স্পাদব্যবহারস্য ক্রিষাপাদাঙ্গণ।

स्था। जय मन्यः । यूक्तिशनाः वममामू भगरेथ त्त्रन मर्नराष्ट्र। वर्ष काल वलाराक मग्राम् मू-ক্লতাদিভিঃ॥ অর্থস্য বিবাদাস্পা-**ए** भारत विश्व के प्राप्त के प्र স্য চ বল॰ পুণ্যাপুণ্যত্ব। তদ-পেক্ষণ যথাস্যাদিত্যর্থঃ ৷ দূর্বা-করত্বস্য পুত্রাদিম্পর্শস্য চাত্রে দর্শনীয়ত্বাৎ। অত্র মথৈতৎ ক্বত ন বা ইতি প্রতিজ্ঞা মুচ্চার্য্যাগ্নৌ জলে বা হস্ত প্রক্ষিপেৎ। এত-ন্মিথ্যাত্ত্বে মম সূক্ষতং নশ্যেদিতি বা ক্রমাৎ। ন দ্বগ্নি পরীক্ষাণ জল পরীক্ষাণ বা স্বর্যাৎ ইত্যভিপ্রায-বৰ্ণন॰ যুক্তণ। তদ্যা মহাভিষোগ-বিষয়কত্বেন শপথ সমভিব্যাহা-রানর্হ্বাৎ। সুক্রতাদিভি রিত্যা-দিনা দূৰ্বা সত্যাভ্যুপগ্ৰহঃ। তথা ॥ চ বি**ক্টুঃ। সৰ্বেদেবাৰ্থজাতে**ষু॥ मृला॰ कनक॰ প্রকল্পযেৎ। তত্ত্র ক্ষলোনে শূত্র দূর্বাকর শাপ-यि । पिक्रकाला जिलका । ত্রিরুঞ্লোনে জলকর । চতুঃ-क्षरलात्न यर्गक्तः। शक्क्षः-লোনে সীতোদ্ধৃত মহীকরণ। সু-বর্ণার্কোনে কোষো দেযঃ। শূজ-স্য যথা সমযে বিহিতা ক্রিষা ত-

থা দ্বিগুণে ২র্থে রাজন্যস্য ত্রিগু-, ণে ২র্থে বৈশ্যস্য চতুর্গুণে ২থে ব্ৰাহ্মণস্যেতি । ক্লফলঃ কাঞ্চন রত্তি কা তমূল্যাদূনে, ক্রঞ্লোনে এব মন্যত্র। মনুঃ। সত্যেন শা-পरयिष्ध॰ ऋजिय॰ वाह्नायूरेभः । গো বীজ কাঞ্চনৈ ৰ্বেশ্য॰ শূদ্র• সর্বৈস্ত পাতকৈঃ।। পুত্র দারস্য বাপ্যেব॰ শিরা॰িস স্পর্শবেৎ পৃ-থক্। ব্ৰাহ্মণেন মধৈতৎ ক্বত ন ক্লতণ বেতিপ্ৰতিজ্ঞা মুচ্চাৰ্য্য সত্য-মিতি বক্তব্যে । তথৈব ক্ষত্রিযেণ বাহনাষুধ স্পুষ্টব্য । তথৈব বৈ-শ্যেন গো ৰীজ কাঞ্চনানা মন্য-তম॰ স্পুষ্টব্য॰। শূদ্ৰেণ তু পূৰ্বো-ক্ত॰ সৰ্ব মেব স্পুষ্টব্যে । তেষা॰ বৃথাক্কত স্পর্শানাণ পাতক হেতু-ত্বাৎ পাতকশব্দেন নির্দেশঃ। रुनायुरवारभाव । देमविक्यावि-ষয় মাহ নারদঃ। অরণ্যে নি-র্জনে রাত্রাবন্তর্বেশ্মনি সাহসে । न्यामाशश्रद्ध देव किया मख-বতি ক্রিয়া ।। বৃহস্পতিঃ । দেব-বান্ধণ পাদাণ্শ্চ পুত্রদার শিরাণ-সি চ। এতে তু শপথাঃ প্রোক্তা মনুনা স্বল্পকারণে ॥ সাহসেম্ব-ভিশাপে চ দিব্যানি তু বিশোধ

নে ৷ অত্ৰ শপধ দিব্যযোঃ পৃথক্ ত্ব প্রতীতেঃ শপথে ন দিব্যধ-র্মাঃ। কিম্ব বৈষে কর্ম্মণি তত্র শৌ-ठार्थं॰ न्नानाहमनामि कार्याः । मि-ব্যানি তু দিব্যতত্বে কথিতানি না-ত্র লিখিতানি। অত্রাভিযুক্তেন শপদঃ কর্ন্তব্য ইত্যুৎসর্গঃ। উত যেচ্ছ্যা অভিযোক্তাপি। ইত্যা-হ নারদঃ । অভিযোক্তা **শিরো**-বন্তী সহীত্রব **প্রকীর্ত্তিতঃ। ইচ্ছ**-যান্যতরঃ ক্র্যাদিতরো বর্ত্তযে-ভিরঃ । ইতরঃ শপথকত্ ভিন্নঃ। তথা কাজাষনঃ। আচতুর্দশ-কাদক্ষো যদ্য নো রাজ দৈবিকণ । ব্যস**ন**॰ জাযতে **যোর॰ স** ভেন্থঃ শগথে শুচিঃ।। ব্যসন মাপৎ। ষোর মতিপীডাকরণ। তথা চ কোষাধিকারে যস্য পশ্যেদিত্য-নুবৃত্তৌ বিকুঃ। রোগোগি জ্ঞাতি-মরণ রাজাতক মথাপি বা। ত ম শুদ্ধ বিজানীযাত্তথা শুদ্ধ বিপ-ৰ্য্যশাৎ ॥ কাত্যাখনঃ। তদ্যৈক-স্য ন সৰ্ৰস্য জনস্য যদি সম্ভবেৎ ৷ রোগো ২গি র্জাতিমরণ মৃণ দদ্যাৎ দমঞ্চ সং ৷৷ জ্বাতিসার বিক্ষোট গূঢাস্থি পরিগীডন°। নেত্রকৃগ্লব্রোগশ্চ তথোমাদঃ

প্রজাযতে ৷৷ শিরোরগ্রদভঙ্গশ্চ দৈবিকা ব্যাধযো নৃণাণ্য তস্যৈ-কস্যেতি ন তু দেশব্যাপকমর-वािनः। यनुः। न तृथा मन्यथः ज-र्याप अरमभार्थ नरता वृधः। বৃথা হি শপথ সর্বন্ প্রেত্য চেহ চ নশ্যতি॥ কামিনীযু বি-বাহেষু গবা॰ ভক্ষ্যে তথেন্ধনে । বান্ধণাভ্যুপপত্তো চ শপথে নাস্তি পাতকণ ৷৷ কামিনীম্বিতি রহসি কামিনী সন্তোষার্থণ বৃথা শপথঃ। এৰ বিবাহ সিদ্ধ্যর্থ• গোগ্ৰানাৰ্থ আবশ্যক হোনে-ন্ধনার্থণ আন্ধণরক্ষার্থ মন্দীরুত-सनारमो। यमः। तृथा जू मारायः ক্সন্বা কীটস্য বধ সংযুক্ত। অন্-তেন চ যুজ্যেত বধেন চ তথা নরঃ।। তস্মান্ন শপথ॰ জর্য্যান্নরে। মিথ্যা বধেন্সিত । কীটস্যেতি প্রাণিমাত্রোপলক্ষণণ । তত্বধপা-পেন বৃথাশপথকর্ত্তা যুজ্যত ই-তার্থঃ। ইতি ব্যবহারতত্ত্ব ॥ শপন॰ ক্লী শপথঃ। ইত্যমরঃ॥ গালিঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ শश्चः पू॰ जृगविरमयः। উলু ইতি ভাষা। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা॥ অ ভিশাপগ্রস্তে তি ॥

শক ক্লী গবাদীনাংখুরং ॥ বৃক্ষসূলং ইতি মেদিনী ॥
শক্রঃ পুং স্ত্রী মৎস্যবিশেষঃ ।
পুঁ দী ইতি ভাষা । ইত্যমরঃ ॥
শক্রাধিপঃ পুং ইল্লীশমৎস্যঃ ।
ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ তৎপর্যান্ধঃ । ইলিশঃ ২ বারিকপূরঃ ৩
গাঙ্গেষঃ ৪ জমতালঃ ৫ । ইতি
ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥

শব্দ ক শব্দরতী। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ।। ক শব্দরতি। সোপসর্গস্থাবিষ্ঠ্তৌ মতঃ। প্রশক্ষরতি গভীর মত্যর্থণ শিষ্যঃ
স্ফুটীকরোতীত্যর্থঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শব্দঃ পুণ শ্রোত্তগ্রাহ্নগুণগদার্থনিশেষঃ ৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷ নিনাদঃ ২ নিনদঃ ৩ ধ্বনিঃ ৪ ধ্বানঃ ৫রবঃ ৬ স্বনঃ ৭ স্বানঃ ৮ নির্ফোষঃ ৯ নির্ফাদঃ ১০ নাদঃ ১১ নিঃস্বানঃ ১২ নিঃস্বনঃ ১৩ আনরবঃ ১৪ আরাবঃ ১৫ সংরাবঃ ১৬ বিরাবঃ ১৭ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ আরবঃ ১৮ সংরবঃ ১৯ রাবঃ ২০ ৷ ইতি শব্দচন্দ্রিকা ৷৷ যোয়ঃ ২১ ৷ ইতি জটাধরঃ ৷৷ স চ ধ্বন্যাত্মকো বর্ণাত্মকশ্চ ৷ যথা ৷

क्षेत्र'रयागामिकना। वर्ग एउ কাদযো মতাঃ ৷ সূৰ্বঃ শব্দো ন-ভোবৃত্তিঃ শ্রোত্রোৎপন্নস্ত গৃহ-তে।। वीठी उत्रक्षना एयन उपूर-পত্তিস্ত কীৰ্ত্তিতা। কদশ্বগোলক-नारामू ९ পতिः कमा विगरि ॥ উৎপদঃ কো বিনষ্টঃ ক ইতি বুদ্ধে রনিত্যতা। সোষ ক ইতি বুদ্ধিস্ত সাজাত্য মবলম্বতে ৷৷ ত-দেবৌষধ মিত্যাদৌ সজাতীয়ে-পি দর্শনাৎ। ইতি ভাষাপরিচ্ছে-দঃ।। শব্দ॰ নিৰূপয়তি। শব্দে। ধ্ব-নিশ্চ বর্ণশ্চ মৃদঙ্গাদিভবো ধ্বনিঃ ' । সর্বঃ শব্দো নভোবৃত্তিঃ শ্রো-ত্রোৎপন্নস্ত গৃহতে ইতি ॥ ন-ভোবৃত্তি রাকাশসমবেতঃ। দূরস্থ শব্দস্যাগ্রহণাদাহ শ্রোত্রোৎপ-म रेंछि क्श्रेम (यागामिकना। व-ৰ্ণা স্তে কাদযো মতা ইতি। ননু मृतकानाबटक्टरमत्ना ५ भ-ব্দে শ্রোত্তে কথমুৎপত্তি রত আ-হ বীচীতরঙ্গন্যাবেন তদুৎপত্তি-স্তু কীৰ্ত্তিতা ইতি। আদ্য শব্দ-স্য বহিৰ্দশদিগবচ্ছিলো ২ন্যঃ শ-ক স্তেনৈৰ শব্দেন জন্যতে তে-ন চাপর স্তদ্যাপকঃ এবং ক্রমেণ শ্রোত্রোৎপন্নো গৃহতে ইতি।

कमश्रानकन्यायामू थिङ क-मार्চिया इंछ। जाना मसा९ দশদিকু দশশব। উৎপদ্যন্তে। ্তত শ্চান্যে দশ শব্দা উৎপদ্য-ন্তে ইতি ভাবঃ। অস্মিন্ কল্পে গৌরবাদুক্ত কস্যচিন্মতে ইতি। ননু শব্দস্য নিত্যত্বাদুৎপত্তিঃ ক-থ মত আহ উৎপন্নঃ কো বিন-ষ্টঃ ক ইতি বুদ্ধে রনিত্যতা ইতি। শব্দানা মুৎপাদ বিনাশ প্রত্যয-শালিম্বাদনিত্যম্ব মিত্যর্থঃ । ননু সএবাষণ ককার ইত্যাদি প্রত্যভি-ख्डानाष्ट्रकाना॰ निज्य व १ देश-ঞ্চোৎপাদ বিনাশ বুদ্ধি ভুমৰূপা চেভ্যত আহ সোষণ ক ইতি বুদ্ধি- ∥ স্ত সাজাত্য মবলশ্বতে। তদেবৌ-ষধ মিত্যাদৌ সজাতীযেতি দর্শ-নাৎ ইতি। তত্র প্রত্যভিজ্ঞানস্য তৎসজাতীযত্ব বিষয়া ননু তদ্য-ক্ত্যভেদো বিষয়ঃ উক্ত প্রতীতী-তি বিরোধাৎ। ইত্বঞ্চ দ্বযো রপি বুদ্ধ্যে। র্ন ভূমত্ব মিতি। ননু সজা-তীমত্ব সোষ মিতি প্রত্যভিক্তা-ষাণভাষতে ইতি পত্ত দৃষ্ট মিত্য-ত আহ তদেবেতি। যদৌষধণ ম-যা ক্বত তদেবান্যেনাপি ক্বত মি-ত্যাদি দর্শনাদিতি ভাবঃ। ইতি

मिका खगूका वली ॥ 🛊॥ मनविध-শব্দা যথা। ষড্জর্যত সগান্ধার মধ্যমঃ পঞ্চম স্তথা। অতঃ পরস্ত বিজ্ঞেযো নিষাদো ধৈবত স্তথা।। ইফ শ্চানিষ্ট শব্দশ্চ সংহতঃ প্র-বিভাগবান্। ইত্যাশ্বমেধিকপর্ব ॥ 🗱 ॥ मक्वित्मयाना॰ नामवि-শেষা যথা। শব্দো গুণানুরাগো-খঃ প্রণাদঃ সীৎক্তত নৃণাণ। প-र्मनः श्वमाङ भारम कर्मनः अकि-সম্ভবে ৷৷ ক্ষেডা তু সিণ্হনাদোথ ক্রন্দন॰ সুভটধনিঃ। কোলাহলঃ কলকল স্তমুলো ব্যা**ঙ্গলো** রবঃ।। यर्भता वज्र भर्गात जूरगाना इ শিঞ্জিতণ হেষা হেুষা তুরঙ্গাণাণ গজানা গর্জ বৃংহিতে।। বিক্ষা-রো ধনুষা হস্তা রস্তে গো র্জল-দস্য চ। স্তনিত গজিত গজিঃ স্থনিত॰ রসিতাদি চ ৷৷ কৃব্জিত॰ স্যাদ্বিহঙ্গানাণ তিরশ্চাণ রুত বা-শিতে। বৃকস্য রেষণণরেবা বুক্কনণ ভষণ শুনঃ॥ পীডিতানাম্ব কণি-ত মণিত রত্কৃজিত। প্রকাণঃ **अक्ष उद्या मर्मनमा जू खन्मनः ॥** ক্ষীজনম্ব কীচকানাং ভেৰ্ব্যা না-দস্ত টটুরঃ। তারো ২ত্যুকৈর্ধ-नि र्याटना गछीत्रा मधूतः कनः ॥

ককলী তু কলঃ সূত্ৰ একতালো | लयान्गः। काञ्च अनिविकातः স্যাৎ প্রতিশ্রুত্ব প্রতিধনিঃ ।। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। 🟶 🛭 অথৈকা-थानुत्लाम वित्लाम मम नकाः। নয়ন ১ নৰ্ত্তন ২ কনক ৩ কণ্টক ৪ মহিম ৫ কল ক ও কালিক। ৭ সরস ৮ সহাস ৯ মধ্যম ১০ স্য-দস্য ১১ নবেন ১২ তাবতা ১৩ তারতা ১৪ বিভবি ১৫ করক ১৬ ক্ষুক ১৭ কাঞ্চিকা ১৮ নন্দন ১৯ **म्बल २० म्बल २३ (योग्राट्याः** ২২ লগুল ২৩ নুততনু ২৪ হাব-বহা ২৫ পতদাতপ ২৬ বরভৈ-রব ২৭ কলপুলক ২৮ বরকৈরব ২৯ বরপৌরব ৩০ তরুণীরুত ৩১ त्रमरमामत ७२ नमरजमन ७७ দংগতীগদং ৩৪ লঙ্কাকস্কাল ৩৫ মাধববল্লববধমা ৩৬ নন্দনন্দন ৩৭ তদ্ধিত ৩৮ সমাস ৩৯ কা-রিকা ৪০ পাদপাঃ ৪১ জলজ ৪২ নানা ৪৩ মম ৪৪ ৷৷ 🟶 ৷৷ অ্থা-न्यार्थकानुत्वाम वित्वाम नकाः। व॰रम > रमरव २ रमथ ७ त्रवी ८ ভানো ৫ হণ্সা ৬ জীবা ৭ যামা ৮ विजू २ वर्ष ३० तम ३১ यम ३२ কংপ ১৩ রাধা ১৪ রাধ্যা ১৫

সূত্রামা ১৬ নন্দক ১৭ মালিকা ১৮ কালিনী '১৯ রাজতে ২০ ভারতী ২১ হাসিকা ২২ গগন ২৩ করকা ২৪ ভার্গব ২৫ কট-কং ২৬ দীনরকা ২৭ মহোরগা ২৮ বাতাপিনা ২৯ পিনাকিন। ७ मानिका ७३ यमत्राक ७२ হরিদৈবে ৩৩ সব্যাযাম৷ ৩৪ ভোবিকর্ত্তন ৩৫ নন্দনবন ৩৬ নলকুবর ৩৭ সহসানুত ৩৮ র-. সবিভবেন ৩৯ সাহমহমিক ৪০ নবতমসংমদ ৪১ মার ৫২ বঠ ৪৩ যুবা ৪৪ সদা ৪৫ বশি ৪৬ ম্বা ৪৭ লতা ৪৮ নুত ৪৯ লব ৫০ বিভা ৫১ ॥ 🕸 ॥ অথ সংস্কৃত প্রাক্তত সম পুণলিঙ্গ শকাঃ ৷ আহার ১ হার ২ বিহার ৩ সার ৪ সমর ৫ সম্ভোগ ৬ রোগ ৭ অ-<u>সুর ৮ সংহার ৯ অমর ১০ বার</u> ১১ বারণ ১২ গণ ১৩ টকার ১৪ ভার ১৫ আকর ১৬ লোল ১৭ উল্লোল ১৮ বিলাস ১৯ বাষস ২০ হর ২১ অহঙ্কার ২২ হীর ২৩ অঙ্কুর ২৪ নীহার ২৫ উরগ ২৬ রাগ ২৭ ভাল ২৮ তরল ২৯ গোবিন্দ ৩০ কন্দ ৩১ উদর ৩২ তরুণ ৩৩ তরণি ৩৪ দাস ৩৫

মোহ ৩৬ সন্দোহ ৩৭ মাস ৩৮ ▮ খুর ৩৯ খর ৪০ তর ৪১ মল ৪২ সঙ্গর ৪৩ আরম্ভ ৪৪ হাস ৪৫ কর ৪৬ করি ৪৭ কিরি ৪৮ কীর 8> काल **७** कल्लाल ७५ शीत ৫২ মল ৫৩ মলষ ৫৪ করীর ৫৫ বামদেব ৫৬ অসি ৫৭ বীর ৫৮ নর ৬৯ নরক ৬০ করক ৬১ দণ্ড ৬২ চণ্ডাল ৬৩ রঙ্গ ৬৪ দর ৬৫ সরল ৬৬ কলম্ব ৬৭ কম্বল ৬৮ আকার ৬৯ পঙ্ক ৭০ খল ৭১ व्हल १२ ज्रुक् १७ (पर् १८ म-ন্দেহ ৭৫ সঙ্গ ৭৬ পর ৭৭ স্বর ৭৮ তরঙ্গ ৭৯ চারু ৮০ সঞ্চার ৮১ ভঙ্গ ৮২ অরি ৮৩ হরি ৮৪ পরি-ণাহ ৮৫ কঠ ৮৬ সঠ ৮৭ অহি ৮৮ দাহ ৮৯ পরিসর ৯০ রবি ৯১ হাহা ৯২ মঞ্জু ৯৩ মঞ্জীর ৯৪ বাহ ৯৫ অচল ৯৬ ঙ্গল ১৭ সমার ১৮ সম্ভ ৯৯ সম্ভীর ১০০ मात्र ১०১ वित्रल ১०২ कवल ১०৩ জার ১০৪ কন্দর ১০৫ উদার ১০৬ পার ১০৭ জম্বীর ১০৮ কেসরি ১০৯ वतार ১১० मुत्राति ১১১ काल ১১২ কাকোল ১১৩ স্বস্তল ১১৪ চমূরু ১৯৫ বিরাম ১১৬ বাল ১১৭ আ-लाल ১১৮ वाष्ट्र ১১৯ রণ ১২०

সঙ্গর ১২১ চোল ১২২ ভার ১২৩ সংসার ১২৪ কেরল ১২৫ সমীরণ ১২৩ টক ১২৭ তাল ১২৮ আসার ১২৯ চামর ১৩০ স্বলীর ১৩১ তু-রঙ্গ ১৩২ সূর ১৩৩ কন্ধাল ১৩৪ কন্দল ১৩৫ করাল ১৩৬ বিকাস ১৩৭ পূর ১৩৮ হেরম্ব ১৩৯ ক্রমু ১৪० विश्व ১৪১ সিন্ধু ১৪২ বুধ ১৪৩ অনুবন্ধ ১৪৪ जन्म ১৪৫ रेन्द्र ১८७ मन्दर ১८१ मभीत ১८৮ সমূহ ১৪৯ গন্ধ ১৫০ ভীম ১৫১ অঙ্ক ১৫২ সঙ্কর ১৫৩ কিরীট ১৫৪ তমাল ১৫৫ গুঞ্জা ১৫৬ হিস্তাল ১৫৭ তোমর ১৫৮ মহীরুহ ১৫৯ বিশ্ব ১৬০ পুঞ্জ ১৬১ হিঞ্জীর ১৬২ পিণ্ড ১৬৩ বর ১৬৪ সম্বর ১৬৫ কোণ ১৬৬ কাণ ১৬৭ সংরম্ভ ১৬৮ সোম ১৬৯ পরিরম্ভ ১৭০ বিকার ১৭১ বাণ ১৭২ বসস্ত ১৭৩ আসব ১৭৪ বেসন্ত ১৭৫ বাস১৭৬ বাসব ১৭৭ বাসর ১৭৮ কাসার ১৭৯ সার ১৮০ সরস ১৮১ কিরণ ১৮২ অরুণ ১৮৩ বারণ ১৮৪॥�া অথ সংস্কৃত প্রাক্তত সম স্ত্রীলিঙ্গ শব্দাঃ। হেলা ১ খেলা ২ কলা ৩ মালা ৪ রসালা ৫ কাহলা ৬ ष्ठना १ कीना ४ नीना २ दना

30 वाला 33 लाला 32 फाला ৭৩ অলসা ১৪ মসী ১৫ ধরণী ১৬ ধারণী ১৭ গোণী ১৮ রোহিণী **३२ त्रमणी २० मणी २३ वीला २२** বাণী ২৩ বসা ২৪ বেণী ২৫ ২৬ গঙ্গা ২৭ তরঙ্গিণী ২৮ কন্দ-नी २२ नर्त्री ७ नाती ७३ রামা ৩২ ভেরী ৩৩ ব ৩৪ কালী ৩৫ করালী ৩৬ চা-মুগু ৩৭ চণ্ডা ৩৮ রণ্ডা ৩৯ जुना ६० गरी ८३ ॥ 🖝 ॥ जाय স•স্কৃত প্রাক্ত ক্লীবলিঙ্গ সম-শ्याः। जन ১ यन २ शन ७ মূঙ্গ ৪ বারি ৫ কীলাল ৬ কূল ৭ वन ৮ शनन २ मूकून ३ निक ১১ গম্ভীর ১২ তুল ১৩ সলিল ১৪ কমল ১৫ চীর ১৬ তুচ্ছ ১৭ রা-**জीव ১৮ नीत ১৯ रुल २० देख** उ ২১ স্বটার ২২ দারু ২৩ লাল ২৪ পটীর ২৫ কারণ ২৬ রোহণ ২৭ চেল ২৮ সহর ২৯ অম্বর ৩০ মন্দির ৩১ স্ট্রাল ৩২ মণ্ডল ৩৩ তামরস ৩৪ স্বওল ৩৫ অঙ্গদ ৩৬ পুর ৩৭ অরবিন্দ ৩৮ লোহ ৪৯ অঙ্গ ৪০ তডাগ ৪১ করণ ৪২ ঙ্গল ৪৩ তোরণ ৪৪ মরণ ৪৫ তৃষ ৪৬ অল° ৪৭ আগার ৪৮

ভাসুর ৪৯ 🗓 🏶 🗓 অথ সস্ভৃত প্রাক্তত সম ক্রিষাপদানি ৷ তণ ১ দেহি ২ গচ্ছ ৩ সংহর ৪ লব্ধ ৫ চোরয ৬ নারয় ৭ অবগচ্ছ ৮ অবলোক্য ৯ অবচিন্তয় ১০ খাদ ১১॥ । । । ज्य निताकी पूर्विक শব্দাঃ। নীহার ১ হার ২ হরিণ ৩ অঙ্ক ৪ হর ৫ অট্যাস ৬ देकवान १ काम ৮ तम २ नातम ১০ সি॰হ ১১ শুছা ১২ শেষ ১৩ অহি ১৪ হণ্দ ১৫ ঘনসার ১৬ र्शन ११ रेख १४ नाग १२ हि-জীর ২০ নির্মার ২১ শরদান ২২ চন্দ্রকান্ত ২৩ শৃকার ২৪ সা-গর ২৫ ভডাগ ২৬ জলাশয় ২৭ অগ ২৮ হ্র্যাক্ষ ২৯ ভক্ষক ৩০ নখ ৩১ ফত ৩২ দীক্ষিত ৩৩ অক্ষ ৩৪ নারাচ ৩৫ কাচ ৩৬ কট্ট্পা কীচক ৩৮ চঞ্চন্নীক ৩৯ চাণক্য ৪০ চারণ ৪১ গণ ৪২ ক্ষণ ৪৩ কাণ ৪৪ শোণ ৪৫ সংসার ৪৬ সারস ৪৭ রস ৪৮ অরি ৪৯ রসাল *ঁ৫০ সাল ৫১ কন্ধাল ৫২ কাল ৫৩* কলি ৫৪ শৈল ৫৫ খল ৫৬ অনল ৫৭ অর্ক ৫৮ কিঞ্জন্ক ৫১ কল্ক ৬০ কর ৬১ শঙ্কর ৬২ কীর ৬৩ ৬৪ লক্ষেশ ৬৫ কেশ ৬৬

গর ৬৭ কেশব ৬৮ দেশ ৬৯ लिশ १० जानम १३ नमन १२ ধনঞ্জয় ৭৩ খঞ্জরীট ৭৪ কীট ৭৫ অগ্নি ৭৬ কণ্টক ৭৭ কটাহ ৭৮ কটাক্ষ ৭৯ যক্ষ ৮০ দক্ষ ৮১ অঙ্গ ৮২ ষজ্ঞ ৮৩ জনক ৮৪ অঞ্চলি ৮৫ যন্ত্র ৮৬ যত্ন ৮৭ রত্নাকর ৮৮ অন্ধক ৮৯ ধরাধর ৯০ ধীর ৯১ শীর ৯২ নাসীর ৯৩ নারা-য়ণ ১৪ ক্লুম্ভ ৯৫ স্বয়ীকেশ ৯৬ ॥ 🗱 ॥ जय नित्त्राष्ट्रा खीनिक শকাঃ। গঙ্গা ১ গীতা ২ সতী ৩ সীতা ৪ সিদ্ধি ৫ সন্ধ্যা ৬ গুদা ৭ গ্ৰামা ৮ আশীঃ ৯ কাশী ১০ निশा ১১ नामा ১২ कांखि ১৩ শান্তি ১৪ দযা ১৫ রসা ১৬ আর্ত্র। ১৭ নিজা ১৮ হরিজা ১৯ দৃক্ ২০ দ্রাক্ষা ২১ লাক্ষা ২২ ধৃতি ২৩ ক্লতি ২৪ ছায়া ২৫ জায় 🕏 ২৬ क्था २१ काञ्चा २৮ भावी २२ রাত্রি ৩০ রতি ৩১ গতি ৩২ ক-ন্ধরা ৩৩ ধারণা ৩৪ ধারা ৩৫ তারা ৩৬ কারা ৩৭ জরা ৩৮ ধরা ৩৯ আজি ৪০ রাজি ৪১ রজনী ৪২ অর্ত্তি ৪৩ কীর্ত্তি ৪৪ কন্যা ৪৫ তটা ৪৬ নটা ৪৭ নারী 8b मात्री 8> मत्री co मानी c>

ঘটিকা ৫২ খটিকা ৫৩ জটা ৫৪ কক্ষা ৫৫ রক্ষা ৫৬ শিখা ৫৭ मःशा ८४ कालिको ८२ कलिका ৬০ কলা ৬১ কালী ৬২ করালী ৬৩ দুর্গা ৬৪ ॥ 🟶॥ অথ নিরো-ष्ठी क्वीविषय समाः । চরণ ১ করণ ২ চক্র ৩ ক্ষত্র ৪ নক্ষত্র ৫ তক্র ৬ রজত ৭ শত ৮ শরীর ৯ कीत २० भीत २२ जिक्त २२ जीतं ১७ ४न ১३ कनक ३७ निशान ১% धान २१ मन्नान २৮ मान २२ নলিন ২০ নগর ২১ গাত্র ২২ ছত্ৰ ২৩ নেত্ৰ ২৪ অস্থি ২৫ দাত্ৰ ২৬ আলিঙ্গন ২৭ স্থান ২৮ শিরঃ २२ চরিত্র ৩০ জল ৩১ স্থল ৩২ স্থাল ৩৩ কলত্র ৩৪ চিত্র ৩৫ কী-লাল ৩৬ জাল ৩৭ অলক ৩৮ ়নাল ৩৯ দৈন্য ৩০ লিঙ্গ ৪১ जक 8२ नाविग 8० हित्रग 88 টৈসন্য ৪৫ অঞ্চ ৪৬ অজিন ৪৭ যান ৪৮ অসুক্ ৪৯ কাঞ্চন ৫০ আনন ৫১ কানন ৫২ হাটক ৫৩ नाएक ७८ नाएँ। ७७ रेडन ७७ চেল ৫৭ রসাতল ৫৮ অদন ৫৯ সদন ৬০ জ্ঞান ৬১ নিদান ৬২ দধি ৬৩ চন্দন ৬৪ অক্ষর ৬৫ লক্ষণ ৬৩ লক্ষ ৬৭ শস্ত্র ৬৮

भाख ७२ मन १० रन १३ ॥ 🕸॥ व्यथ 'निद्राष्ट्रं किया श्रानि । আশান্তে ১ অস্তি ২ চকাস্তি ৩ নিন্দতি ৪ সৃজতি ৫ আশণসতি ৬ ক্রীডতি ৭ ধ্যাযতি ৮ অর্চচি ৯ যাচতে ১০ দ্যতি ১১ বহুতি ১২ আরাধতি ১৩ ত্রস্যতি ১৪ শেতে ১৫ গচ্ছতি ১৬ যচ্ছতি ১৭ ইচ্ছ-তি ১৮ নযতি ১৯ আয়তি ২০ হন্তি ২১ ঈহতে ২২ অশ্লাতি ২৩ নাতি ২৪ দ্বাতি ২৫ যাতি ২৬ জ্যতি ২৭ হসতি ২৮ ক-রোভি ২৯। ইতি কবিকর্মল-তাযা॰ ১ স্তবকে ২ সমূম॰ ॥ শব্দকারঃ ত্রি শব্দ করোতি যঃ। ষথা। সতা মরুক্ষরণ পক্ষী বৈর-কার॰ নরাশন॰। হয়॰ কলছ-কারো ২সৌ শব্দকারঃ পপাত थः। ইতি ভটৌ ৫ সর্গঃ।। শব্দগ্রহঃ পু॰ কর্ণঃ। ইত্যমরঃ॥ শবদ্য জ্ঞানঞ্যা শব্দনঃ ত্রি শব্দকর্ত্তা।তৎপর্য্যা-यः। त्रवनः २। इंज्यानः ॥ भक-যাত্রে क्री ॥ শব্দভেদী বুণ অজুনঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ পাষ্ঃ। ইতি কেচিৎ।। বাণবিশেষঃ। ইতি

রামাযণ ।।

শব্দবেধী পুণ অর্জুন: ।
ধনঞ্জয়ঃ । দশরথরাজঃ । যথা ।
লব্ধশব্দেন কৌশল্যে সমারেণ
ধনুমতা । সমারঃ শব্দবেধীতি
ময়া পাপ মিদ কত ।। ইতি বাল্মীকীষে রামাযণে ৬৩ অধ্যায়ঃ
।। শব্দবেধী ইত্যেব লব্ধকীর্ত্তিনেতি ষাবৎ । ইতি তট্টীকা ।।
শব্দাধিষ্ঠান ক্লী কর্ণঃ । ইতি
হেমচন্দ্রঃ ।।

७ ७ इत् य भारत । इति .কবিকল্পদ্রন্যঃ ॥ উ শমিদ্বা শা-ন্তু। ভ र শাম্যতি। ইর্ অশ্মৎ অশমীৎ। অস্মাৎ পুষাদিত্বা-মিত্য ও ইত্যন্যে। শমঃ শান্তী-ভাবঃ। শশাম বৃষ্ট্যাপি বিনা দবাগ্নি রিতি রযুঃ। শম ইতিপ-দুস্য ঞান্তস্যাপি সম্ভবে শান্তী করণেপ্যয মিতি ধাতুপ্রদীপঃ। বরেণ শমিতুণ লোকানলণ দগ্ধুণ হি তত্তপঃ। ইতি জমারসম্ভবঃ। বচো নিশম্যাধিপতি দিবৌক-সা মিত্যাদাবনেকার্থত্বাৎ শ্রু-দ্বেত্যৰ্থঃ। বা শম যম ইত্যত্ৰ বা-শব্দস্য ব্যবস্থাবাচিত্বাদস্য ঞৌ নিত্য॰ হুস্বঃ শময়তি। ইতি

দুর্গাদাসঃ ।।

শম ও ক ঞ আলোচে । ইতি

কবিকল্পদ্রমঃ ।। আলোচঃ প্র
বিধানণ । বা শম ষম ইত্যত্র বা

শব্দস্য ব্যবস্থাবাচিদ্বাৎ অস্য

স্বার্থে ক্রেটা হুসাভাবঃ । ও ক

শামযতে কার্য্যণ সুধীঃ। ঞ শামযতি শামযতে । নিশাময তদূৎপত্রিণ বিস্তরাদাদতো মম ।

তায মাল্পনেপদীত্যন্যে । ইতি
দুর্গাদাসঃ ।।

শনঃ পু॰ শান্তিঃ। ইত্যমরঃ।।

নোকঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।
পানিঃ। ইতি শয় শব্দ টীকাষাণ
রানাশ্রমঃ।। উপচারঃ। ইতি
রাজনির্ঘন্টঃ।। অন্তরিন্দ্রিমনি
গ্রহঃ। ইতি বেদার্স্তনারঃ।।
অন্তঃকরণসংঘ্যঃ। ইতি ভগব্দনীতাদশ্রমাধ্যায়স্য ৪ শ্লোক
টীকাষাণ শ্রীধরস্বামী।। বিক্রেণকর্মঃ। ইতি চত্তৈস্যব
৬ অধ্যায়স্য ৩ শ্লোকটীকাষাণ
শ্রীধরস্বামী।।

শমকঃ ত্রি শান্তিকারকঃ। ঞ্যন্ত-শমধাতোর্ণকপ্রকাষেন নিষ্পন্নঃ শমথঃ পু॰ শান্তিঃ। ইত্যমরঃ॥ মন্ত্রী। ইতি মেদিনী।

শ্মন ক্লী বজার্থপশুহনন ৷ ইত্যদরঃ।। শান্তিঃ। ইতি মে-मिनी ॥ हर्नगः। इंछि ध्रत्रिनः॥ হি॰সা। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। শ্যনঃ পু॰ যমঃ। ইত্যমরঃ।। মৃগভেদঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিক।।। क्लायः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ শমনস্বসাঁ ক্রী যমুনা। ইত্য-यतः ॥ শমনী স্ত্রী রাত্রিঃ। ইতিশমনী-यम भक्त मर्भना थ।। गमनीयमः पूर निमाष्ट्राः ता-ক্ষসঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ শমল শ্লী বিষ্ঠা। ইত্যমরঃ।। পাপ॰। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণা-দিবৃত্তিঃ 11 गमाछकः भू॰ कामरमदः। देखि ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ শনিঃ স্থী শিশ্ব। ইতি হেম-हिन्द्रः ॥ শমিতঃ ত্রি শাস্তঃ।ইত্যমরঃ॥ শনিরঃ পু॰ শনীবৃক্ষঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শনিরোহঃ পু• **लिवः । ই** ि ত্রিকাওশেষঃ।।

भगी खी वृक्षवित्भयः। भारे

ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। শক্তৃ-

ফলা ২ শিবা ৩। ইত্যমন্ত্রঃ ॥ শকুফলী ৪ 1 ইতি শব্দরত্না-বলী ৷৷ শাস্তা ৫ তৃকা ৬ কচরি-পুফলা १ কেশমথনী ৮ ঈশানী ৯ লক্ষীঃ ১০ তপনতন্যা ১১ ই-को ३२ छछकती ३० रुविर्गन्ना ১৪ মেধ্যা ১৫ দুরিতদমনী ১৬ শক্তুফলিকা ১৭ সমুদ্রা ১৮ ম-হ্বল্য। ১৯ সুরভিঃ ২০ পাপশম-নী২১ভদ্রা২২ শঙ্করী২৩ কে-শহন্ত্ৰী ২৪ শিবাফলা ২৬ সুপ-ত্রা ২৬ সুখদা ২৭ ৷ অস্যা গুণাঃ । ककष्। क्यायष्। त्रक्रिन-ত্তাতিসার নাশিস্বায়। তৎফল खगाः । खक्षः । यापूषः । का ক্ষত্ব॰। উক্তত্ব॰। কেশনাশিত্বঞ্চ 1 ইতি রাজনির্যন্টঃ॥ অপি চ। শমী শক্ত্ফলা তুলা কেশহন্ত্ৰী-ফল। শিব। । মঙ্গল্যা চ তথা লক্ষীঃ শমীরঃ স্বল্পিক। স্মৃত। ।। শনী তিক্তা কটুঃ শীতা ক্ষায়া রেচনী লযুঃ। কম্প কাস শ্রম শ্বাস স্ঠার্শঃ ক্রমিজিৎ স্মৃতা।। ইতি ভাবপ্ৰকাশঃ ৷৷ 🟶 ৷৷ শিশ্বা । ছিমডা ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ ।। বাগুজিঃ। ইতি মেদিনী।। শমী ত্রি শাস্তঃ। শুমো বিদ্যতে

रेगा रेजार्थ रेन् क्षेणारयन निम्भन्नः॥

শনীকঃ পু॰ মুনিবিশেষঃ। বথা।
জলাশ্য মচক্ষাণঃ প্রবিবেশ ত॰
মাশ্রমণ। দদর্শ মুনি মাসীনণ
শাস্ত॰ মীলিতলোচনণ।। ইতি
শ্রীভাগবতে ১ ক্ষন্তে ১৮ অধ্যান্
যঃ।। অস্যার্থঃ। অচক্ষাণঃ অপন
শ্যন্। ত॰ প্রানদ্ধ মাশ্রমণ ত॰
স্মিন্ মুনিণ শমীকণ। ইতি শ্রীন

শমীগর্ভঃ পু॰ ব্রাক্ষণঃ।। অগ্লিঃ। ়ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

শনীধান্য ক্লী নাষাদিং। ইত্যানরং।। তৎপর্য্যায়গুণাং। শনী-জাং শিষিজাং শিষাতরাং সূ-প্যাশ্চ বৈদলাং। বৈদলা মধু-রাকক্ষাং কষাষাং কটুপাকিনং ।। বাতলাং কফ পিত্তসাবন্ধমূত্র-মলা হিমাং। ঋতে মুদ্দা মসূরা-ভ্যা মন্যে স্বাগ্যানকারকাং।। মু-দ্দা মসূর্যো রাগ্যানকারিত্ব ম-ন্যদ্বৈদলাপেক্ষ্যা। ন তু সর্ব্থা । এত্যো রপি কিঞ্চিদাগ্যান কা-রিস্থ দর্শনাৎ। ইতি ভাবপ্রকা-শং।। ৠঃ। অপি চ ৷ শূক্ধান্যং শমীধান্যং সমাতীতং প্রশস্তে

৷ পরতো বাতক্রজক্ষণ প্রাযেণা-তিনব গুৰু ৷৷ যব গোধুম মা-ষাশ্চ তিলাশ্চাতিনবা হিতাঃ। পুরাণা বিরমা ৰক্ষা ন তথার্থ-করা মতাঃ ।। ইতি রাজবল্লভঃ ।। শমीপতা खी लब्जानू वृकः। ইতি জটাধরঃ ॥ শমীরঃ পু॰ অল্পাশমী। ইত্য-यत्रः ॥ শম্পা স্ত্রী বিদ্যুৎ। ইত্যমরঃ॥ শম্পাকঃ পু॰ আর্থধঃ। ইত্য-মরঃ ।। বিপাকঃ ।। যাবকঃ । ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ শম্পাতঃ পু॰ আরগ্ধঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শয় গতৌ। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ।। শয়তি। ইতি দুর্গাদাসঃ।। শয়ঃ পুণ বজুণ ৷৷ মুষলাগ্রস্থ-लार्य धनक । देखि त्रिमिनी ।। লোহকাঞ্চী। ইতি হেমচন্দ্রঃ ॥ অनुत्लामकर्षन । इंठि नयी-ক্ত শব্দ টীকাষাণ ভরতঃ ॥ দ-রিদ্রঃ। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণা-দিবৃত্তিঃ ।। ভাগ্যবতি ত্রি।ইতি রামাশ্রমঃ ॥ শযর की मनिन ।। बङ ।।

চিত্ৰণ।। বৌদ্ধবতবিশেষঃ। ইতি বিশ্ব হেমচন্দ্রে।। শশ্বরঃ পু॰ মৃগবিশেষঃ।। দৈত্য-বিশেষঃ। ইতি মেদিনী।। মৎ-माविरमयः ॥ टेमलविरमयः ॥ জিনভেদঃ। ইতি বিশ্বঃ।। যুদ্ধ• ।। শ্রেষ্ঠঃ। ইতি ধরণী।। চিত্রক-वृकः ॥ लाधुः॥ अर्जू नवृकः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ শম্বরাসুর-স্য বধোপাখ্যান শ্রীভাগবতে ১০ ক্ষন্ধে ৫৫ অধ্যায়ে দ্রফার্য়ণ ॥ শয়রকদঃ পু বারাহীকদঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। **শर्यत्रहम्मन** क्वी हम्मनिद्राम्यः। তৎপর্য্যায়ঃ। কৈরাত ২ বহল-গন্ধ ৩ বল্য ৪ গন্ধকাঞ্চ ৫ কৈরাতক ৬ শৈলগন্ধ । অস্য গুণাঃ। শীতলত্ব । তিক্ত-षः। উक्षयः। क्षियानिन अप-পিত্ত বিচ্ছোট পামাদি সন্ত ত্যা তাপ বিমোহ নাশিত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।। শম্বরসূদনঃ পু॰ কামদেবঃ। ইতি रलायू४३॥ শম্বরারিঃ পু॰ কামদেবঃ। ইত্য-यतः ॥ विख् । ইতি नानार्थतक्रमाना ।। । मसती खी वाथु भनी । हे उ

মেদিনী ৷৷ মায়া ৷ ইতি শব্দ त्रवावनी ॥

भवनः भू क्री कृला। भारथरः ।। সৎসরঃ। ইতি মেদিনী।।

শ্বাহত তি দিবারহুফক্তেত। **७**९ शर्यायः । षिश्वभाक्रणः २ দ্বিতীযাক্তত ৩ দ্বিহল্য ৪ দ্বি-সীত্য ৫। ইত্যমরঃ॥

ममूः १ पू॰ ममूकः। यथा। ममू-শयुकः र कः भयुका एखयः शृर्वः কাস্তম্ভ সর্বদা। ককারেণ বিনা শেষো দৃশ্যতে গ্রন্থবিস্তরে ॥ ইতি হড়চন্দ্রঃ। ইত্যমর্চীকা-ষা॰ ভরতঃ।।

শয়ুকঃ পু॰ শয়ূকঃ। ইতি শব্দ-त्रञ्जावनी ॥

শমূকঃ পুং স্ত্রী জলজম্ববিশেষঃ। শামুক্ ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যাযঃ । জলশুক্তিঃ ২। ইত্যমরঃ ॥ শমূক। ७ শমুকঃ ८ শমুকঃ ৫ শাষুকঃ ৬ শষুঃ १ শাষুকঃ ৮। ইতি শব্দরত্বাবলী।। জলডিয়ঃ ৯ দুশ্চরঃ ১০ পক্ষমপুকঃ ১১ । ইতি হারাবলী।।

শয়ূকঃ পু॰ গজন্বস্তান্তভাগঃ৷৷ যোকঃ ।। শূদ্রতাপসঃ । ইতি মেদিনী ৷৷ দৈত্যবিশেষঃ ৷৷ শ্-

धः। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। कूफ-শখঃ। ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শমূকা দ্রী জলগুক্তিঃ ৷ ইতি व्राक्रनिर्घकः ॥

শন্তলঃ পুণ গ্রামবিশেষঃ ৷ অ-ধুনা সম্বলমোরদাবাদ ইতি নামা খ্যাভঃ। তত্ৰ ষষ্টিতীৰ্থানি मिछ ककी ठाविजू र मश्मु॰ मभाः स्रामाि । स्था । শञ्जल বসত স্তস্য সহসু॰ পরিবৎসরাঃ । ব্যতীতা ভ্ৰাতৃ পুত্ৰ স্ব জ্ঞাতি . मयिति ७३ मर ॥ मखल् ७-শুভে শ্রেণী সভাপণক চম্বরেঃ । পতাকা ধজ চিত্রাদ্যৈ র্যথে-ন্দ্রস্যামরাবতী॥ যুত্রান্তে যফি-তীর্থানাণ সম্ভবঃ শম্ভলে ২ভ-বৎ। মৃত্যো মোক্ষা ক্ষিতৌ কল্কে রকন্ধস্য ক্ষ্যাশ্র্যায় 11 বনোপ্রন সন্তান নানা স্বসুম সঙ্গলৈঃ। শোভিত॰ শন্তলগ্ৰা-মং মন্যে মোক্ষোপমং ভূবি ৷৷ ম-হী নাশ্বাস্য ভগবান্নিজজন্ম ক্তোদ্যমঃ। শম্ভলগ্রাম বিপ্র-র্ষি মাবিবেশ পরাত্মকঃ ॥ সুম-ত্যাণ বিষ্ণুয়শসা গর্ভ মাধত্ত বৈক্ষব । দ্বাদশ্যা শুক্লপক্ষস্য মাধবে মাসি মাধবঃ ॥ জাতো

শস্তুপ্রি

দদৃশতুঃ পুত্রু পিতরৌ হাউমা-

নসৌ । ধাত্ৰী মাতা মহাষষ্ঠী

नाजीत्ष्ठ्वी जनामिका 11 ग-ष्ट्रामक क्लाम्याका गाविकी মার্জ্জনোদ্যতা।তৃদ্য বিষ্ণোর-নন্তস্য মাতৃকাদাৎ পষঃ সুধাণ ।। সুমতি छ॰ সুত॰ लक्का विकु॰ জিন্তুণ জগৎপ্রভুণ ৷ পূর্ণকাম। বিপ্রমুখ্যানাসূষাদাৎ গবাং শ-ত ৷৷ ত বালক নরাকার বিক্রুণ নত্বা মুনীশ্বরাঃ। কল্কিণ कक् विनानार्थ गाविज् ज विमू र्वू याः ॥ नामात्रर्दः खठ खना কন্ধি রিত্যভিবিশ্রুত । ইতি किन्द्रभूतात्व ३ व्यक्षायः ॥ শङ्गी खी क्रुंगी। इंज्यातः॥ শভুঃ পু॰ শিবঃ। ইত্যমরঃ॥ बक्षा ॥ वृक्षः। ইতি यिनिनी ॥ विक्ः। ইতি श्लायू ४३॥ मिकंः। ইতি শব্দরত্নাবলী। শ্বেতার্কঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। শন্তুতনযঃ পু॰ কার্ত্তিকেয়ঃ। ইতি. শব্দরত্বাবলী।। গণেশশ্চ।। শলুনন্দনঃ পু॰ গণেশঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ কার্ত্তিকেয়শ্চ।। শ যুপ্রিয়া স্ত্রী আমলকী। ইতি भका खिक। ॥ पूर्गा । ॥

শশন

াভ॰ ক্লী শ্বেতকমলণ। ইতি রাজনির্যন্টঃ।। শিবপ্রিযে ত্রি।। শম্য। স্ত্রী যুগকীলকঃ। ইত্য-মরঃ ।। দক্ষিণহস্ত গৃহীত তাল-বিশেষঃ। ইতি সঙ্গীতশাস্ত্রণ।। गमारकनः पू॰ ভुमिতकिश्वरंि প্রাপ্ত যাবৎভূপ্রদেশঃ। যথা। ভাুমবিদ্বা বহুগুণ যুক্তিঃ কিপ্তা ममाश्रूया । जुदः अरमभः या-বস্ত শম্যাপাতঃ স উচ্যতে ॥ ইতি মার্কণ্ডেষপুরাণে বিবি॰শ-চরিত নামাধ্যাযঃ॥ শ্যঃ পুণ্হস্তঃ। ইত্যমরঃ।। শ্যা। ।। সর্পঃ। ইতি মেদিনী ।। নিজা ।। পণঃ। ইতি বিশ্বঃ।। শযঙঃ ত্রি নিদ্রাশীলঃ। ইত্যু-ণাদিকোষঃ।। শযতঃ পু॰ নিদ্রালুঃ। ইতি স॰-ক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ 11 শ্যথঃ পু॰ অজগরঃ।। মৃত্যুঃ।। निजालुः । ইতি হেমচক্রঃ ।। ব-রাহঃ।। মৎস্যঃ। ইতি সংক্ষিপ্ত-সারোণাদিবৃত্তিঃ।। শयन॰ क्ली निष्ठा। भया। ইত্য-महः ॥ रेमथूनः । इंछ सिनिनी ॥ অथ मर्दाप्रभगनकानः ।

भूलखा উবাচ। यनावाणी म-

্মাষাতি ব্রজতে চোত্তরাযণ[়]। ভদা স্থপিতি দেবেশো ভোগি-ভোগে গ্রিয় পতিঃ ।। প্রতি-मूरश्च विख्ने छित्रान् एतव गञ्जर्ब শুহুকাঃ। দেবানা॰ মাতর শ্চা-পি প্রসুপ্তা "চাপ্যনুক্রমাৎ ॥ नातम উবাচ। कथयत्र मूतामी-ना॰ गर्यत विधि मूखम॰। मई ११।-नुक्रत्यरेशव भूत्रकृष्ठा कनार्मनः ॥ পুলস্ত্য উবাচ। মিথুনাভিগতে সূর্য্যে শুক্লপক্ষে তপোধন। এ-কাদশ্যাণ জগৎস্থামিশ্যনণ প-রিকল্পযেৎ ৷৷ শেষাহি ভোগপ-ৰ্য্যঙ্গ কৃত্ব। সংপূজ্য কেশব । क्रांभवीजकरिक्व मग्रक् मः-পূজ্য চ দিজান্।। অনুজ্ঞ। বা-ন্ধানেভ্যশ্চ দাদশ্যাণ প্রয়তঃ শু-চিঃ। লন্ধা পীতাম্বরধরণ স্বস্তি निर्जा॰ ननानत्य ।। ज्रापान-শ্যা॰ ততঃ কামঃ স্বপতে শ্যনে শুভে। কদয়ানা সুগন্ধানা স্থ-সুমৈঃ পরিকল্পিতে।। চতুর্দশ্যাণ ততো যক্ষাঃ স্বপত্তি সুখশীতলে । সুবর্ণপঙ্কজক্ততে সুখাস্তীর্ণো-পধানকে ৷৷ পৌৰ্নমাস্যা মুমা-নাথঃ স্বপতে চর্ম্ম সংস্তরে। বৈ-যাৰে চ জটাভার সমূল্যুখ্যা-

ন্যচর্মণা ৷৷ ততো দিবাকরো রাশি শপ্রধাতি চ কর্কটি ৷ ভতো ২মরাধাণ রজনী ভবতে দক্ষিণাখন ।। ব্ৰহ্মা প্ৰতিপদি **७था नीत्ना**९भनम् तन् । তল্পে স্থপিতি দেবানাণ দর্শযন মাৰ্গ মুক্তমণ।। বিশ্বকর্মা দিতীযা-যাণ তৃতীয়াযাণ গিরেঃ সূতা। বি-নাযক শ্চতুর্থ্যান্ত পঞ্ম্যা মপি धर्मता है।। यर्छा। ऋन्मन्छ अलि-তি সপ্তম্যা॰ ভগবানুবিঃ। কা-ত্যায়নী তথাফম্যাণ নবম্যাণ ক-মলালযা।। দশম্যা॰ ভুজগেন্দ্রা-শ্চ স্বপস্তি বাযুভোজনাঃ।একা-मगान क्यायाः माथा वक्रन् স্বপন্তি হি ॥ এষ ক্রমন্তে গদিতো निभाषाः भाषतः मूत्न । अशब्ध সু তেষু দেবেষু প্রাবৃট্কালঃ স-गायरयो।। ककाः मगः वलाकाः ভি রারোহন্তি নগোত্তমান্। বা-যসা শ্চাপি সুৰম্ভি নীডানি মু-নিপুঙ্গব ৷৷ বাষস্যশ্চ তপস্ত্যেতা ঋতৌ গর্ভতালসাঃ। যস্যা• তিখ্যাণ প্রস্বপিতি বিশ্বকর্মা প্র-জাগতিঃ।। দ্বিতীয়া সা শুভা পু-गा मूभूगा भयताि हिला । उ-স্যা[,] তিথাবর্চ্চ্য হ্রি[,] শ্রীবৎসা-

🕶 চতুভুজ ।। পর্যাক্ষর সম नमा गम भूमापिछ मूर्त । ততো দেবায শয়াযা॰ ফলানি প্রক্ষিপেৎ ক্রমাৎ 11 সুরভীণি निद्या ४ विद्धारिया मधु मृपनः ৷ যথা হি লক্ষ্যা ন বিষুজ্যসে স্ব ত্রিবিক্রমানস্ত জগন্ধিবাস ৷ তথা खुमृन्। भयन मरेमव बन्माक মেবেহ তব প্রসাদাৎ ॥ তদা স্ব-শূন্য তব দেব তল্প স্বয হিল-শ্ব্যা শয়নে সুরেশ। সত্যেন তে-নামিতবীৰ্য্য বিষ্ণে গাৰ্হস্থ্যৰা-গো মম চাস্ত দেব।। ইত্যুচ্চার্য্য প্রণম্যেশ প্রক্রাদ্য চ পুনঃ পুনঃ। নক্ত ভূঞ্জীত দেবর্ষে তৈলক্ষার বিবর্জিত ৷৷ দ্বিতীযেক্লি দ্বিজা-গ্র্যায ফল॰ দদ্যাদ্বিচক্ষণঃ। লক্ষ্মী-ধর প্রীযতা মে ইত্যুচ্চার্য্য নি-বেদযেৎ ৷৷ অনেন তু বিধানেন চাতুর্মাস্যত্রত চরেৎ। যাবদৃ-শ্চিকরাশিস্থঃ প্রতিভাতি দিবা-করঃ ॥ ততো বিবুধ্যন্তি সুরাঃ ক্রমশঃ ক্রমশো মুনে। নভস্যে-মাসি চ তথা যা স্যাৎ ক্লফাইমী শুভা।। যুক্তা মৃগশিরেণৈব সা তু কামাঊমী স্মৃতা। তস্যা॰ সর্বেষু লিঙ্গেষু তিথো স্বপিতি শঙ্করঃ॥

বসতে সমিধানে তু তত্ত্ৰ শূজী-ক্ষা সূতা। ইতি বামনে ১৬ **অ**शांगः ॥ **# ॥ অ**थ हतिगगना-**कि वावन्था। ভविषा नात्रनीयत्याः** । रेमजामाभारम स्रिशीश विष् র্বৈক্ষব্যমধ্যে পরিবর্ত্ততে চ । পৌষ্ণাবসানে চ সুরারিহন্তা প্র-বুধ্যতে মাসচতুষ্টযেন।। মৈত্র ম-नूत्राथा। देवक्याः अवना। (शोकः রেবতী।। ভবিষ্যে। নিশি স্বাপো দিবোত্থান সন্ধ্যাযাণ পরিবর্ত্তন• । অন্যত্র পাদযোগে তু দ্বাদশ্যা মেব কার্যেৎ ।৷ ইঅঞ্চ নক্ষত্র-যোগ প্রাপ্তো ফলাতিশযঃ। এত-দ্বিধান॰ বামনপুরাণে । একাদ-শ্যা॰ জগৎস্বামিশ্যন॰ পরিকল্প-যেৎ। শেষাহি ভোগপৰ্য্যঙ্ক° ক্ল-ত্বা সংপূজ্য কেশবং ৷৷ অনুজ্ঞাং বান্ধণেভ্যশ্চ দাদশ্যাণ প্রয়তঃ শুচিঃ। লব্ধু। পীতাম্বরধরণ দেবণ নিজা সমান্যেৎ। অনুজ্ঞা ল-कु। ইত্যন্বयः । একাদশীসমধে দিবা শ্যনীয়কল্পন রাত্রৌ দাদ-শীক্ষণে নিদ্রেতি। বিষ্ণুধর্ম্মোত্ত-त्त्र । **श्वाखीर्नगरन** कृषा श्रीन যেন্ডোগশাযিন । আষাত শুক্ল-দ্বাদশ্যা॰ বিষ্ণুলোকে মহীষতে ॥

স্বান্তীর্ণশ্বন শোভনান্তরণ্য্-क्छ॰ वर्षे कि । वता हभूतात औ ভগবানুবাচ। অন্যত্তু সংপ্রবন্দ্যা-मि कर्म मः जात्रस्माहनः । कपश স্বটজ শৈচব ধবকোর্জুনক স্তথা ।। এভি রভ্যর্চন পর্যাদিধি-দৃষ্টেন কৰ্মণা। ততঃ সংস্থাপন॰ ক্লত্ব। মম মন্ত্রবিধিঃ স্মৃতঃ।। নমো नातायवारयाञ्जा हैयः यख यूनी-রুষেৎ। পশ্যস্ত মেঘান্যপি মেঘ-শ্যামণ হ্যুপাগতণ সিচ্যমানাণ ম-হী মিমাণ। নিজাণ ভগৰান্ গৃহা-তু লোকনাথ বর্ষাস্বিমণ পশ্যতু रमघवृन्म॰ ॥ उद्योदेषय शरेगाय ह লোকনাথ মানা শ্চত্বারি বৈঙ্গণ্ঠ-স্য চ পশ্য নাথ। আষাত শুক্লছা-**দ**শ্যা॰ সর্বশাস্তি কর॰ শিব॰ । য এতেন বিধানেন ভূমি মে কর্ম্ম-কারযেৎ।। স পুমান্ ন প্রণশ্যেত্ত্ मः मादत्र यूर्ग यूर्ग । भयत्न क्रिक विधानां विक्थरार्मां छ-রীযনিযেধো খন্যত্র । ধবকঃ ক-পিখঃ। স•স্থাপন॰ সমাপন॰। ভূমি ইতি প্ৰথিব্যাঃ সম্বোধন । এব ॥ মুক্তেন মন্ত্রেণ ক্রব্ণং সুদ্বাপযেত্ত-তঃ। সুপ্তে দ্ববি জগন্ধাথ জগৎ मूश्र॰ ভবেদিদ॰ ॥ विवृत्त्व प्रि

বুধ্যেত জগৎসর্বণ চরাচরণ। ইতি मरखन भृज्रदय ॥ 🛊 ॥ श्रीरश्च ভাত্রপদে মাসি একাদশ্যাণ সি-তেহনি। কটদান॰ ভবেদ্বিষ্ণে। র্মহাপুজা প্রবর্ততে ।। কটদান॰ পার্শ্বপরিবর্ত্তঃ। কামৰূপীয়নি-বন্ধে। এবং সংপূজ্য বিধিবৎ ভা-जगु बालगीमित्न। यखिणात्नन দেবেশ পার্শ্বেন পরিবর্ত্তযেৎ।। বাসুদেব জগমাথ প্রাপ্তেষণ দা-দশী তব। পার্শ্বেন পরিবর্ত্তস্ব সু-**थ॰ यशिहि गांधव ॥ प्रि.** मूरश्च বিবুদ্ধে ত্বযি বুধ্যেত জগৎ সর্ব• চরাচরং ॥ ৠ। ত্রহ্মপুরাণে। একা-দশ্যাম্ব শুক্লাষাণ কার্ত্তিকে নাসি কেশব: । প্রসুপ্ত॰ বোধযেদ্রাত্রৌ শ্রদ্ধা ভক্তি সমন্বিতঃ।। রাত্রৌ প্রসুপ্ত মিত্যম্বযঃ।বোধনম্ভ দিবৈ-ব। ক্লন্তা বৈ মম কৰ্ম্মাণি দাদশ্যাণ মৎপরে। নরঃ। মটমব বোধনা-র্থায় ইম॰ মন্ত্র মুদীরয়েৎ।। মহে-ন্দ্র রুদ্রৈ রভিনূযমানো ভবানৃষি ৰ্বন্দিত বন্দনীযঃ। প্ৰাপ্তা তবেয়॰ কিল কৌমুদাখ্যা জাগৃষ জাগৃষ চ লোকনাথ ৷৷ মেঘা গতা নিৰ্মাল পূর্ণচন্দ্রঃ শারদ্যপুষ্পাণি চ লো-

কনাথ। অহ॰ দদানীতি চ পুণ্য-হেতো জাগৃষ জাগৃষ চ লোক-নাথ 11 এবং কর্মাণি স্বীরন্ দাদশ্যাণ যে যশস্বিনি ৷ মম ভক্তা নরশ্রেষ্ঠান্তে যান্তি পরমাণ গতিণ া। অত্র মন্ত্রদ্বয় পাঠানন্তর । উ-ত্তিষ্ঠোত্তিষ্ঠ গোবিন্দ ত্যজ নিদ্রাণ ব্দগৎপতে। ত্বয়া চোখীয়মানেন উখিত ভুবনত্রয়ণ ৷৷ ইতি সম্পু-দাযাগত স্তৃতীয়ঃ শ্লোক ইতি বাচস্পতিমিঞাঃ। শ্যনোখান `মন্ত্রাস্ত কল্পতরু প্রভৃতিগ্রন্থসংবা-দাল্লিখিতাঃ। তদেব দাদশ্যাণ একাদশ্যা বা রেবত্যস্তপাদ যো-গবশাদ্দিবোত্থান নক্ষত্র যোগা-ভাবে তুদ্বাদশ্যা মেব কারযেদি-তি গুরুচরণাঃ ৷৷ জীমূতরাহনস্ত ভবিষ্যে। আ ভা কা সিতপক্ষেযু মৈত্র প্রবণ রেবতী। আদি মধ্যা-বসানেষু প্রস্থাপাবর্ত্ত বোধন ।।। আ ভা কা সিতপক্ষেষু আষাঢ ভাদ্র কার্ত্তিক শুক্লপক্ষেষু ৷ এযা-क कामगा। आखी मूथाः कन्नः। ভবিষ্যপুরাণ ৷ নিশি স্বাপো দি-বোখান সন্ধ্যায়া পরিবর্ত্তন । অন্যত্ৰ পাদযোগে তু দ্বাদশ্যা নেব কারষেৎ ৷৷ বিফুধর্মো,ভরে

। বিষ্ণু দিবা ন স্বপিতি ন রাত্রৌ প্রতিবৃধ্যতে। দাদশ্যা মৃক্ষ সং-रियारिश शामरियारिश न कांत्रन ॥ অপ্ৰাপ্তে দাদশী মৃক্ষে উত্থান শ-যনে হরেঃ।পাদযোগেন কর্ত্তব্যে নাহোরাত্রণ বিচিন্তবেৎ ।। বচ-নান্তর । রেবত্যন্তো যদা রাত্রৌ দ্বাদশ্যা চ সমশ্বিতঃ। তদা বিবু-ধ্যতে বিষ্ণু র্দিনান্তে প্রাপ্য রেব-তী ।। দিনান্তে ত্রিধাবিভক্ত দি-ন তৃতীযভাগে দিবোখান মিত্য-নুরোধাৎ। অতএব। রাত্রৌ বি-বোধো বিনিহস্তি পৌরান্।। স্বা-পো দিবা রাফু পল नृভর্তুঃ। স-क्याषरय सम्रक्ना धतिनी ভবে-মরাণা মপি রোগ দুঃখ ।। ইতি শ্রুতিঃ। বরাহপুরাণে। দ্বাদশ্যা• সন্ধিসমযে নক্ষত্রাণা মসম্ভবে। আভাকা সিতপক্ষেষু শয়নাবৰ্ত্ত-नामिक ।। क्षा जित्तव गयनाति কালচতুষ্টয় । দ্বাদশ্যা নিশা-দৌ নক্ষত্রযোগঃ। তদভাবেপি নিশাদ্যনাদরেণ তিথ্যস্তরে পা-দযোগঃ। তস্যাপ্যভাবেপি স-স্ক্যাযা॰ নক্ষত্ৰমাত্ৰযোগঃ। তস্যা-প্যভাবে দ্বাদশ্যাণ সন্ধ্যায়া মি-তি। বিফুধর্মোত্তরে। কি॰ তদ্মৈ-

ত্রাদ্যপাদেন দশম্যণশেন যো দিবা। পৌষ্ণশেষেণ কি॰ তেন প্রতিপদ্যথ যে। নিশি ॥ ইতি দ-॥ শনী প্রতিপদো নিষেধাদেকাদ-শ্যাদি পৌৰ্ণমাস্যস্তানাণ তিথী-না মভ্যনুজ্ঞান॰॥ ৠ পদ্মপুরা-ণে সৰ্বদেব শ্যনাদিক মুক্ত যথা । প্রতিপদ্ধনদস্যোক্তা পবিত্রা-রোহণে তিথিঃ। শ্রিষা দেব্যা দ্বি-তীষা তু তিথীন। মুত্তমা স্মৃতা ॥ ॥ তৃতীয়া তু ভবান্যাশ্চ চতুথী তৎ-সূত্র্য চ। পঞ্মী সোমরাজ্য্য ষষ্ঠী প্রোক্তা গুহুস্য চু।। সপ্তমী ভাস্করস্যোক্তা দুর্গাযা শ্চাইমী স্তা। মাতৃণা॰ নবমী প্রোক্তা দশমী বাসুকে उथा।। একাদশী **अयी शास्त्र काम मी ठळ मा शिनः ।** চক্রপাণিন ইতি পণ ব্যবহার ই-ত্যস্মাৎ। ত্রযোদশী দ্বনঙ্গস্য শি-বস্যোক্তা চতুর্দশী॥ মম চৈব মু-নিশ্ৰেষ্ঠ পৌৰ্ণমাসী তিথিঃ স্মৃতা। যস্য যস্য তু দেবস্য যন্নক্ষত্রণ তি-থিশ্চ যা।। তদ্য দেবস্য তত্মি॰শ্চ শ্यनावर्जनामिकः। অज श्रिमः॥ यनामग्रायाणांनि विधाना ७९-সাহচর্য্যাদন্যেষা মপি তথা । জ্যোতিষেপি ৷ ব্ৰজ্ঞতি যদা মিথ-

নং বিহাষ কর্কণ রাজবিবজ্জিতাণ তিথি॰ সূর্য্যঃ। ভবতি তদ। নিষত॰ षित्रायाणः मूत्रभयनामितिथि र्षि-তীযে মাসি ৷৷ রাজ্ঞা চন্দ্রেণ বিব-ৰ্জ্জিতা॰ অমাবাস্যাণ। পূৰ্ব রুষ্ণপ-ক্ষে মিথুনে সংক্রান্তে ইতি শেষঃ । হরিনাথোপাধ্যাযাস্ত । যমঃ। ক্ষীরান্ধৌ শেষপর্য্যক্ষে আষাঢ্যাণ সম্বিশেদ্ধরিঃ। নিজাণ ত্যজ্জতি কার্ত্তিক্যাণ তয়ে স্তণ্ড পূজ্যেৎ স-দা ৷৷ ব্ৰহ্মহত্যা সমং পাপং ক্ষিপ্ৰ . মেব ব্যপোহতি। হিংদ্যাত্মকৈশ্চ কি॰ তস্য ষজ্ঞৈঃ কাৰ্য্যণ মহাত্মনঃ ।। প্রস্বাপে চ প্রবোধে চ পূজি-তো যেন কেশবঃ। আষাত শু-ক্লৈকাদশী মারভ্য পৌর্ণমাসী প-ৰ্য্যন্ত বিষ্ণো নিজা গ্ৰহণৰূপ শ-যন সমযঃ। অতএব একাদশ্যা॰ শযন মভিধায তদাদি দিনপঞ্চ-কে কর্ম্ম কথন প্রক্ষপুরাণে। ব-রাহপুরাণীযে তু। একাদশী কা-লীন মন্ত্রে নিদ্রাগ্রহণাভিধানণ ৷ যম স্মৃতো পৌৰ্নাস্যাণ শ্যনা-ভিধান । আষাটীপদস্যানুপাধে স্তত্তৈব প্রবৃত্তেঃ। এবঞ্চ বন্ধপুরা-ণে যদ্যপ্যেকাদশ্যা॰ প্রবোধন মুক্ত॰ তথাপি তদাদি দিন পঞ্চক

মেব প্রবোধ সমযঃ। তেন বরীছ-পুরাণে দাদশ্যা প্রবোধাভিধা-ন । যম স্মৃতৌ কার্ত্তিক্যাণ প্রবো-ধাভিধান সর্ব সমঞ্জস মিতি। এব মেব শ্রীদত্তোপাধ্যাযাঃ। ক-শ্বতরুম্ভ একাদশ্যা মেব শ্বনং প্ৰবোধশ্চ। যমস্মৃতাবাষাটী কা-र्खिकीशम य्यकामगी भरा जा-ষাদস্যেশ কার্ত্তিকস্যেয় মিতি ব্যুৎপত্যা ন তৎপ্রত্যযানুপপ-ত্তিঃ। অপবাদ বিষযকে ক্বচিদুৎ-সর্গ প্রবৃত্তে রিত্যাহ। শ্রীভগব-দ্বাক্যণ। মৎশযনে মদুত্থানে মৎ-পার্শপরিবর্তনে । ফল মূল জ-नाशती सिं भनाः समार्थस्य য় ফলাহারপদ মনশনপর । তে-ম সৰ্বথা অনশনপরত্বণ। ইত্যে-কাদশীত্ত্বণ ॥ 🗱 ॥ মর্ত্যা-না॰ শয়ন বিধি নিষেধৌ যথা। মূত উবাচ। উপাস্য পশ্চিমাণ সন্ধ্যা॰ হুদামী॰ স্তানুপাস্য চ। ভূত্যৈঃ পরিবৃতো ভূক্ত্বা নাতি-তৃপ্তো ২থ সংবিশেৎ ॥ শুচিণ দেশ বিবিক্তম্ব গোমযেন তুলে-পरिष । প্রাগুদক্ প্রবণে চৈব সংস্বপেত সদা বুধঃ ৷৷ প্রাক্শিরা-.ষ্চ স্বপেন্নিত্য তথা বৈ দক্ষিণা-

শিরাঃ। স্বপেদুদক্শিরা নৈব তথা প্রত্যক্শিরা ন চ। ন চান্তর্দ্ধান-হীনে তুন তির্য্যক্চ কদাচন।। শূন্যালযে খাশানে তু একবৃক্ষে ठजूष्णरथ । महारमवगृरह ठालि মাতৃবেশ্বনি ন স্বপেৎ ।৷ ন যক্ষ নাগায়তনে ক্ষলস্যায়তনে তথা । দর্ভেষু চ বিনা দীক্ষা ন স্বপেচ্চ কথঞ্চন ॥ ধান্য গেহে চ বিপ্রা-ণা॰ গুৰুণাঞ্চ তথোপরি। নাশু-को **शर्वकीर्ति** जू नाश्विष्ठ नीनिश्व खथा ॥ मिरन मस्त्रो न नशक নোত্তরাপর্মস্তকঃ। নাকাশে প-ৰ্বতে শূন্যে ন চ চৈত্যক্ৰমে তথা ॥ न जू बादा श्ख्रमाकीटर्ग नार्ज-পাদস্ত্বধাবিতঃ। পালাশে শয-নে নৈব বহুদাৰুক্কতে ন চ ৷৷ ন দ-শ্বে বিদ্যুতা চৈব বহ্নিপ্লুফে জলে তথা ৷ ন স্বপেৎ সন্ধ্যযো নিত্য• ন শিরস্যাসনে কটে ।। এবং স্ব-পন্ নরে৷ নিত্য॰ সুখস্যেহ পর্ন-ত্রভাক্। ব্যত্যবে চ ভবেদ্যঃ মৃতে। নরক মশ্বতে।। ইতি ব-হ্নিপুরাণে আহ্নিকতপোনামা-ধায়ঃ।। 🟶 ।। অপিচ। সতি সূর্য্যে শया। ह न পाতनीय। मृःर्या। परा পূৰ্ৰ মূত্তোলনীয়া। তথা চ স্মৃতিঃ

া ভাক্ষরাদৃষ্টশ্যানি নিত্যাগ্নি-मिननानि ह। मूर्गावःनाकि मी-পানি লক্ষ্যা বেশ্বানি ভাজনণ।। আসন বসন শ্যা জাযাপত্য কমণ্ডলুঃ। আত্মনঃ শুচি রেতানি न পরেষা॰ কদাচন।। न কদাচন ইত্যনুমতি বিনা অন্যথাতিখ্যা-नूषणखः। गामः। एको प्र-শে বিবিক্তে তু গোমফেনোপ-निश्वरक। आधनक्ष्वरन रिव मिंदि अल् अला तूथः ।। योजनाः **পূ**र्वज्ञ अरु भित्रङ्गारन निधाशरष् ৷ বৈদিকৈ গাৰুডে ম ব্ৰৈ রক্ষাণ ক্রন্থা স্বপেত্ততঃ ।। গর্গঃ। স্বগৃহে প্রাক্শিরাঃ শেতে আযুষ্যে দ কিণাশিরাঃ। প্রত্যক্শিরাঃ প্র-বাসে ত ন কদাচিদদক্শিরাঃ॥ মার্কণ্ডেযপুরাণে । প্রাক্শিরাঃ শयत्न विमार धन मायूम्ह मिन-ণে। পশ্চিমে প্রবলাণ চিন্তাণ হা-নি॰ মৃত্যু॰ তথোত্তরে ॥ তথা। ন-মক্ত্যাব্যয় বিজু সমাধিকঃ স্ব-পেत्रिणि। यार्क एखरः। भृनग्राभा-রে ঋণানে চ একবৃক্ষে চতুস্পথে । মহাদেবগৃহে চাপি শর্করা লো-कु शान्छ्यू॥ धाना भा विश्व प्त-বানা॰ গুৰুণাঞ্চ তথোপরি। ন

শুচিঃ স্বৰণ।। নার্ডবাসা ন নয়শ্চ নেতিরাপরমস্তকঃ। নাকাশে স-ৰশ্ন্যে চন চ চৈত্যজ্ঞমে তথা । ন স্বপেদিত্যর্থঃ।। ইত্যাহ্নিকা-চারতব ।। 🟶 ।। অন্যক্ষ। ভুজ্বা চ বিধিবন্মন্ত্রৈ র্ছিজে৷ ভুক্তাবশি-ষ্টকণ। সসুস্বদান্ধবজনঃ স্বপেৎ শুষপদো নিশি ৷৷ নোত্তরাভি-মৃখঃ স্বপাৎ পশ্চিমাভিমুখো ম ह। न हाकारण न नरभा वा नाख-চি নাসনে ক্ষচিৎ।। ন শীর্ণাযান্ত **पट्टाया॰ भू**नग्रागादत न टेठव शि। নাপি বত্ন্যা চ পালানে শ্যনে বাকদাচন।। ইতি কৌর্ম্মে উপ-রিভাগে ১৮ অধ্যায়ঃ।।ঞ্চ।। অপি চ। হ্রতপাদানিশৌচ শ্চ ভুক্তা সাৰ ততো গৃহী। গচ্ছেৎ শ্ব্যাণ সমন্ত্রাঞ্চ অথ বা দারুনির্মিতা ।।। শान्यवागः कषष्ठमा नीथ मन्तातः কস্য চ। কিংশুক্স্য ব্টস্যাথ তথা সশমযস্য চ।। আরোহণাৎ ভবেৎ পাপ• তস্মাত্তেষু ন চ স্ব-পেৎ।। প্ররোহ শয্যা॰ সূত্রে বা অপর্ণে পরমেশ্বরি ৷৷ ন শুক্রে না-পবিত্রে চ ন তৃণে ন চ ভূতলে ৷ তৃলিকাষাণ তথা বস্ত্ৰে শষ্যাভাবে

স্থপেদদা হী।। স্বপেন্ন পউবস্তে **ठ कनकी कम्रत्नम् ह। ই**ভি মৎস্যসূক্তে ৪৪ পটলঃ ।। 🟶 ॥ অপি চ। সূর্য্যেণাভ্যুদিতো যস্ত **ज्ञाकः मृर्याग यः स्र**भन् । ज-ন্যত্রাত্রভাবাচ্চ প্রাযশ্চিতী-যতে নরঃ।। ইতি বিষ্পুরাণে ৩ অংশে ১১ অধ্যায়ঃ।। স্বস্থিন্ সুপ্তে সূর্য্য উদেতি স সূর্য্যেণা-**ज्रामिकः । यित्रान् সুश्चि जन्छ**॰ যাতি স সূর্য্যেণ ত্যক্তঃ। সূর্য্যো-मयाखनभरायाः अभन् श्राय-শ্চিত্তীয়তে পাতকী ভবেদিত্য-ৰ্থঃ। ইতি তস্য দীকা চ ।। কিঞ্চ। শ্বাসানকৌ সমুত্তান স্তান্ দ্বি ১৬ পার্মেচ দক্ষিণে। তত স্ত-দ্বিগুণান্ ৩২ বামে পশ্চাৎ স্ব-नगर यथानू थः ॥ वामिनाया মনলো নাভে ৰূৰ্দ্ধোন্তি জন্তু-নাণ। তস্মাত্ত্বামপার্শে শ্যীত ভুক্তপ্রপাকার্থ ।। ইতি ভাব-প্রকাশঃ ॥

শ্যনীয় ক্লী শ্বা। ইত্যমরঃ।। শ্যনযোগ্যে ত্রি।।

শ্যনীযক ক্লী শ্যা। ইতি শব্দরত্নাবলী। শ্যানকঃ পু সর্পঃ। ইত্যুণাদি- कायः॥ इकनामः। ইতি হেম-চন্দ্রঃ॥

শযালুঃ ত্রি নিজালুঃ। ইত্যমরঃ॥ শযালুঃ পু॰ অজগরঃ॥ সকরঃ । ইতি হারাবলী॥

শ্যিতঃ ত্রি নিদ্রালুঃ। ইত্যমরঃ

11 বসন্তঙ্গসুমে পু॰। যথা। বসন্তঞ্গসুমঃ শেলুঃ শ্যিতো দ্বিজক্রৎসিতঃ। ইতি শব্দমালা ॥
শ্যনে ক্লী ॥

শবিতবান্ ত্রি নিজালুঃ। শীঙ ধাতোঃ ক্তবতু প্রত্যবেন নি-স্পন্ধঃ।।

শযুঃ পু॰ অজগরঃ।ইত্যমরঃ। শযুনঃ পু॰ অজগরঃ।ইত্যুণা-দিকোষঃ।।

শ্যা দ্রী গুক্ষন । ইতি মেদিনী

৷৷ শীযতে যত্র সা৷ তৎপর্যায়ঃ

শ্যনীয় ২ শ্যন ৩। ইত্যমরঃ

৷৷ তল্প ৪। ইতি জটাধরঃ ৷৷

শ্যনীয়ক ৫। ইতি শব্দরত্নাবলী ৷৷ তস্যা গুলাঃ ৷ সুখশয্যাসন সেব্য নিজা পুষ্টি ধৃতিপ্রদা শ্রমানিলহর শস্ত বিপরীত মতোন্যথা ৷৷ ভূশ্যানিল
পিত্তন্নী বৃংহণী শুক্রবর্দ্ধিনী ৷

পাটু৷ তু বাতলা প্রোক্তা পর্টো

ৰকোতিবাতলঃ।। ইতি রাজ-বল্লভঃ।। 🟶 ।। অপি চ । ত্রিদোষ শমনী খট্টা ভূলী বাত কফাপ-श् । ज्यागा व्रशी व्या कार्थ-পঞ্জী তু বাতলা ৷৷ অন্যৎ পুন-ব্লাহ।ভূশয্যা বাতলাতীবৰক্ষা शिखामु नामिनी । मूमयामय-ন হদ্য পৃষ্টি নিজা ধৃতিপ্রদ ॥ শ্রমানিলহর বৃষ্য বিপরী-ত্ত মতোন্যথা । ইতি ভাবপ্র-কাশঃ।। 🟶 ।। তদামন বিধান॰ ষ্থা। ক্তপাদাবশৌচশ্চ ভূ-জ্ঞ। সায় ততো গৃহী। গছেৎ শ্য্যা মস্ফুটিতা মেব দাৰুম্যীণ নৃপ।। নাবিশালা ন বৈ ভগা নাসমাণ মলিনাণন চান চ জম্ব-ন্ময়া মধিগচ্ছেদনাস্তৃতাং ॥ ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৩ অংশে 33 ञशायः ॥ क्षा ठमान क्ल॰ यथा। माञ्चवकाः। गृह भाना।-ভযোপানছত্র মাল্যানুলেপন । यानः वृक्षः প্রियः শ্य्যाः দত্বা-**ठाउ॰ मूथी जःत** ।। श्रिय॰ य-म्यमा रुमापि। প্রতিগ্রহ সম-র্থেন শ্ব্যা ন প্রত্যাখ্যেষা। यथा याख्ववकाः। जनाः नाकः প্রযো মৎস্যা গন্ধাঃ পুষ্পা দধি

কিভিঃ। মাণ্স শ্যাসনণ ধানাঃ প্রত্যাখ্যেষ ন বারি চ ৷৷ 🟶 ৷৷ মৃতোদ্দেশ্যক দত্ত শব্যা গ্রহণে **मिरिया यथा। बन्नभूतावः। म-**য্যালন্ধার বস্ত্রাদি প্রতিগৃহ্থ মৃ-তস্য চ। নরকাম নিবর্ত্তন্তে ধে-नु॰ जिनमयी॰ जथा।। 🗱 ।। मा ह ঔত্তানাঙ্গিরো দেবতাকা। যথা । ছত্র॰ রুঞ্চাজিন॰ শ্য্যা॰ রথ-মাসন মেব চ। উপানহৌ তথা ষানণ তথা যথ প্রাণবজ্জিত।। ঔত্তানাঙ্গিরস স্ত্রেতৎ প্রতিগ্র-হ্লীত মানবঃ। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব॰ ॥ 🗱 ॥ পুষ্পাভিষেকে শ্ব্যাপ-উক॰ যথা। সর্বরত্ন মল্কার॰ প-উ॰ কাৰ্য্য॰ দ্বিহস্তক॰। হস্ত বি-স্তার উচ্ছাযে দশাঙ্গুল্যঃ সুশো-ভন ৷ সানাখ্য সাদ্ধহন্তম্ব প্টে বৃত্তাসনাম্বিত ৷ শ্যাখ্য विश्वना टेमर्याक्तनूर्यानः मनी-ঠক ।। ইতি দেবীপুরাণে ত্রৈ-লোক্যাভ্যুদয়পানে পুষ্পাভি-' रिक नामाधायः॥ শর॰ क्री জল॰। ইতি মেদিনী॥ পু॰ वावः। ইত্যমরঃ॥ দধ্যগ্ৰভাগঃ। ইতি মেদিনী ।। দুগ্ধশর্ম্য নামান্তর ৷ সভালি-

कः ॥ मधिশরमा नामाखतः । मिथिनातः। मिथित्यरः। कर्णेत्रशः। ইতি রত্নমালাদয়ঃ ৷৷ তৃণবিশে-ষঃ। কাঁডা ইতি হিন্দীভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। ইযুঃ ২ কাণ্ডঃ ৩ বাণঃ ৪ মুঞ্জঃ ৫ তেজনঃ ৬ গু-स्रकः १। ইতি রত্নমালা ॥ উৎ-কটঃ ৮ শাষকঃ ১ ক্ষুরঃ ১০ ই-ক্ষুপ্রঃ ১১ কুরিকাপত্রঃ ১২ বি-শিখঃ ১৩। অস্য গুণাঃ। মধু-রত্বণ। সতিক্তত্বণ। কোকত্বণ। क्क अधि मनाशर्षः। वन বীর্য্যকারিত্ব॰। নিত্য॰ নিষেবি-ত ঞ্চেৎ কিঞ্চিদ্বাতকারিত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। অপি চ। ভদ্রমুঞ্জঃ শরো বাণস্তেজন শ্চ-কুবেষ্টনঃ। মুঞ্জো মুঞ্জাতকো-वानः चृलमर्जः मूरमधमः ॥ मूक्ष-ধযম্ব মধুর তুবর শিশির ত-থা। দাহ তৃষ্ণা বিসর্পাসু মূত্র वस्त्राक्तिताशिष्ट् ॥ मायवं-ষহর বৃষ্য মেখলাসূপযুজ্য-তে। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। উশী-রঃ।। মহাপিঞ্জীতরুঃ। ইতি চ त्राजनिर्यन्धः ॥ हि॰मा । ইতি भूशावर्थ मर्भनाव ॥ **अत्रज्ञ**ं क्री देशकवीन । इंडि

रहमहमः ॥ नवनीजः । ইতি

रक्षिः॥

শরজন্মা পু॰ কার্তিকেন্যः। ইত্য
মরঃ॥

শরটঃ পু॰ সসুস্তশাকঃ। ইতি

রক্ষমালা॥ রুকলাসঃ। ইত্য
মরটীকা॥

শরণ ক্লী গৃহ॰॥ রক্ষিতা। ইত্য
মরঃ॥ রক্ষণ॰॥ বধঃ। ইতি

মেদিনী॥ ঘাতকঃ। ইতি শব্দ
রক্ষাবলী॥

শরণা ক্রী প্রসারনী। ইতি শব্দ
রক্ষাবলী॥

শরণা ক্রী প্রসারনী। ইতি শব্দ
রক্ষাবলী॥

শরণা ক্রী প্রসারনী। ইতি শব্দ
রক্ষাবলী॥

শরণাগতঃ ত্রি শরণাপয়ঃ। তৎপর্যায়ঃ। শরণাপ্তিঃ ১ অভিপয়ঃ ২ শরণাথী ৩। ইতি ত্রিকাওপেষঃ ।। তদ্রক্ষণারক্ষণযোঃ
ফল দোষো যথা। শস্ত্রহীনঞ্চ
ভীতঞ্চ দীনঞ্চ শরণাগতং। যো
ন রক্ষতাধর্মিপ্ঠঃ কম্প্রীপাকে বসেদ্মুগণ ।। রাজসূয শতানাঞ্চ
রক্ষিতালভতে ফলণ। পরমৈশ্বর্যাযুক্তশ্চ ধর্মেণ স ভবেদিহ ।।
ইতি বন্ধবৈবর্ত্তেপ্রক্রতিখণ্ডেওও
অধ্যায়ঃ ।। # ।। অপি চ । শরগাগত রক্ষাণ যঃ প্রাণে রপি ধনৈ রপি। ক্রক্রতে মানবোজ্ঞানী

जग पूना निमानय ।। मर्नभान विनिम् क्ला बक्क क्लाम् से तिन । जायू का कर्क बर्फ त्याक रवागिना मिन पूर्वक ।। ইिल भारा कियारयागमारत गका-माहाजा नाम ४ ज्यागद ।। जनाक । क्लाकारम्याक्याबा-शिय खार्फ मत्रनागक । बक्क-हलामम लग भाग माह मनी-विनः ।। भारत्यम् निकृषि पृथी। महाभाविना मिन । भत्रनाग-वहावु न पृथी निकृषि क् हि॰ ।। ইिल विद्विभूतात माना-वहानि न्य नामाय्वयः ।।

শরণাথী ত্রি শরণাগতঃ। ইতি হেমচক্রঃ।

শরণার্পকঃ ত্রি শরণাপমঃ। ইতি ত্রিকাওশেযঃ।।

শরণিঃ স্থ্রী পঞ্চাঃ। ইত্যমরঃ।।
সরস্তানখেতি সরণিঃ নামীতি
অনিঃ ইদস্তাৎ পক্ষে ঈপি সরণী চ। সরণিঃ শ্রোণি বর্জনো
রিতি দন্ত্যাদৌ রভসঃ। শুস্থু গি
হিংসনে ইত্যস্মাৎ পূর্ববদনৌ
শরণি স্তালব্যাদিশ্চ। শুভং শুভে প্রদীপ্তে চ শরণিঃ পথি
চাবনাবিতি তালব্যাদাবজ্বঃ।

তট্রাকাখা ভরতঃ। পৃথী। ইত্যজয়ঃ।

শরণী স্ত্রী পড়াং।। প্রসারণী। ইতি শব্দরত্বাবলী।। জয়ন্তী। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

শরঞ্জ পুশ পক্ষী ।। কামুকঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী ।। ধূর্ত্তঃ ।। শরটঃ ।। ভূষণভেদঃ। ইতি মে-দিনী ।। চতুম্পাৎ। ইতি সংক্ষি-প্রসারোণাদিবৃত্তিঃ ।।

পরণাঃ ত্রি শরণীয় । শরিতবাং

1 যথা। ধ্যেষ সদা পরিভবদ্দ

মভীফদোহ তীর্থাম্পদ শিব

বিরিঞ্চিনুত শরণ্য । ভৃত্যার্তিহ প্রণতপাল ভবান্ধিপোত বদে মহাপুরুষ তে চরণারবিন্দ ।

11 ইতি শ্রীভাগবত ।।

শরণা স্ত্রী দুর্গা। যথা। বিষা
शিভয বোরেষু শরণা সরণা
দর্যতঃ। শরণা তেন দা দেবী পুরাণে পরিপঠ্যতে ।। ইতি দেবীপুরাণে দেবীনিরুক্তাধ্যাযঃ।।
শরণাঃ পুণ বারিদঃ।। বাতঃ।
ইতি বিশ্বঃ।। ভরণাঃ। ইতি
শব্দমালা।।

শর্থ দ্রী বৎসরঃ॥ ঋতুবিশেষঃ
। স চাশ্বিন কার্ত্তিক মাসদ্যাত্ম-

কঃ। ইত্যমরঃ।। তৎপর্যায়ঃ। শরদা ২ কালপ্রভাতঃ ৩ ৷ र्रेा भक्तवन्नावनी ॥ कान्य ভাত ৪। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ বর্ষাবসানঃ ৫ মেঘান্তঃ ৬ প্রা-বৃডত্যয়ঃ १। তত্র জলগুণাঃ 1 বর্ষাসু নাভস বারি সেবতো-দ্ভিদ মেব বা। সর্ব॰ শরদি হেন-স্তে তডাগ॰ সারসম্ভ বা ।। #।। তত্র গ্রাহ্থ বাযুর্যথা। বসস্তে দক্ষিণো বাতো ভবেৎ বর্ষাসু প-শ্চিমঃ। উত্তরঃ শারদে কালে পূর্বো হেমন্ত শৈশিরে ॥ ইতি त्राक्रिनर्षक्षः ॥ ॥ यशि ह। भी-রদঞ্চানভিষ্যন্দি লঘু তৎ পরি-কীৰ্ত্তিত । হৈসম্ভিকণ জলণ স্লি-ধা॰ বল্যা॰ বৃষ্যা॰ হিত॰ গুরু॥ ইতি রাজবলভঃ ৷৷ 🕸 ৷৷ বৈদ্যক্মতে ভাজাশ্বিনমান্যকঃ। কেচিত্র ঋতু ষট্ক প্রমাখ্যাত রবে রা-শিষু সংক্রমাৎ। গ্রীয়ো নেষ ৰূষৌ প্ৰোক্তঃ প্ৰাৰৃট্ মিথুন কর্কটো ॥ সি॰হ কন্যে স্মৃত। বর্যা তুলা বৃশ্চিকযোঃ শরৎ । ধনু র্ত্রাহে চ হেমন্তে। বসন্তঃ ঙ্গন্ধ মীনকো।। অন্যে তু। শি-শितः भूष्ममभएया जी त्या । वर्षा

भद्रिक्षियः । याचानि यामयुटेशः न्या भ जवः यह क्रमाममी ॥ छ-স্যা গুণাঃ ৷ শরদুষণ পিত্তকত্রী নৃণা॰ ষধ্যবলাবহা। ইতি ভাব-প্রকাশঃ ॥ 🐞 ॥ তত্ত্র জাত ফল॰ । नतः भत्र मण्डक नक्षज्या ভবেৎ সুকর্মা মনুজ স্তরস্বী। अिंहः मूनीला अनवान् मूमानी ধনান্বিতো রাজঙ্গল প্রপন্ধঃ।। ইতি কোষ্ঠীপ্রদীপঃ ॥ 🟶 ॥ তত্র বর্ণনীযানি যথা। চন্দ্রপটুতা। রবিপটুতা। জলগুন্ধতা। অগ-खाः। र॰मः। वृषः। मर्थः। मश्वः চ্ছদঃ। পদা শেতমেয়ঃ। ধান্য• 1 শিখিপক মদপাতঃ। ইতি ক-বিকল্পলতা ৷৷

শরৎকামী^ন পু॰ সক্কুরঃ। ইতি শব্দরত্রাবলী।।

শরৎপদ্মণ ক্লী সিতাম্ভোজণ । ইতিরাজনির্ঘন্টঃ !৷

শরৎপর্ব ক্রী কোজাগরপূর্ণিমা। যথা । কোজাগরঃ শরৎপর্ব শারদী দ্যুতপূর্ণিমা। ইতি জটা-ধরঃ ।।

শরৎপুষ্প ক্লী আহল্য । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।। সরদুদ্ভবঙ্গসূ-মঞ্চ ।। শরদ্ স্ত্রী শরৎ। ইত্যমরঃ।। শরদন্তঃ পু॰ হেমন্তঃ। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ।।

শরদা স্ত্রী বৎসরঃ।।শরদৃত্যু। ইতিশব্দরত্নাবলী।।

শরদিজে ত্রি শরৎকালজাত।

যথা। নদ্যঃ প্রাব্যজান্ত পী

নস কফ শ্বাসার্ত্তি কাশপ্রদাঃ
পথ্যা বাত কফাপহাঃ শরদিজা
হেমস্তজা বুদ্ধিদা। সস্তাপণ
শমযন্তি সংবিদ্যতে শৈশির্য্য
বাসস্তজা স্তৃষ্ণা দাহ বমি শ্রমার্ত্তি শমদা গ্রীম্মে যথা স্থণ
গুণাঃ। ইতি রাজনির্য্য কালীয়ে

শরদুদাশষ की শরৎকালীনসরোবর । যথা । শরদুদাশষে
সাধুজাত সৎসরসিজোদর শ্রীমুষা দৃশা। সূরতনাথ তে ২ শুল্ক
দাসিকা বরদ নিম্নতো নেহ কিং
বধঃ।। ইতি শ্রীভাগবতে ১০ ক্ষকো ৩১ অধ্যামঃ।। শরদুদাশযে শরৎকালীন সরসি। ইতি
শ্রীধরস্বামী।।

শারধিঃ পু॰ তুণঃ। ইতি ছেম-চন্দ্রঃ।

শরপুথা স্ত্রী নীলীবৃক্ষাক্তভি-বৃক্ষবিশেষঃ। শরফোকা ইতি হিন্দীভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। কাণ্ডপুথা ২ বাণপুথা ৩ ইষুপুখিকা ৪ শাষকপুথা ৫ ইষুপুখা ৬। তদ্যা গুণাঃ। কটুত্বং।
উষ্ণত্বং। ক্ষমি বাত রুজাপহত্বং
। শ্বেতাষা গুণাঢ্যত্বং। ইতি
রাজনির্ঘন্টঃ।। অপি চ। শরপুথো যক্কৎ প্লীহ গুলা ত্রণ
বিষাপহঃ। তিক্তঃ কষায়ঃ কাদাসু জ্বর শাসহরো লঘুঃ।।
ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। বাণস্যপক্ষে পুং।।

শরভঃ পু॰ মৃগেন্দ্রবিশেষঃ।
•ইত্যমরঃ॥ তৎপর্য্যায়ঃ। মহামৃগঃ ২ মহাক্ষমী ৩ মহামনাঃ
৪ অফপাদঃ ৫ মহাসিণ্হঃ ৬
মনস্বী ৭ পর্বতাশ্রয়ঃ ৮। ইতি
রাজনির্ঘন্টঃ ॥ অস্য লক্ষণ॰
যথা। অফপাদূর্দ্ধন্যন উর্দ্ধৃপাদচতুর্ফ্যঃ। সিণ্হণ হস্তুণ সমাযাতি শরভো বনগোচরঃ॥
ইতিমহাভারতণ॥ য়। করভঃ
॥ বানরবিশেষঃ। ইতি মেদিনী॥ উন্টুঃ। ইতি জটাধরঃ॥
শলভশ্চ॥

শরভূঃ পু॰ কার্ডিকেয়ঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। শ্রাডি

শর্ময়ণ ত্রি শর্নির্মিত । যথা। শরম্যবর্হিষা জশম্যবর্হি বাধ-বৎ। ইতি স্মৃতিঃ॥ শরমলঃ পু॰ পকিৰিশেষঃ। গো-मानिक् इंडि ভाষा । ইंडि भक-**চ**स्किक। ।। वान्यका ह ।। শরষুঃ স্ত্রী নদীবিশেষঃ। ইতি শর্যূঃ) দ্বিকপকোষঃ ॥ দস্ত্যসাদি-त्रयः भकः। ইতি বহুসন্মতঃ।। শ্রলঃ ত্রি বিগীতঃ।। স্বচ্ছস্দ-ষঃ।। বৃক্ষবিশেষে পুণ। ইতি সা-त्रश्वां जिथान ।। म्हां मानि त প্যয় মিতি বহুসমূতঃ ।। শরলক॰ क्री জল॰। ইতি শব্দ-চন্দ্রকা।। শরবনোদ্ভবः পু॰ কার্ত্তিকেयः। ইতি কেচিৎ ॥ শরবাণিঃ পু॰ শরমুখ• 11 পদাতিঃ ॥ শরজীবী। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ শরব্য• ক্লী লক্ষ্যণ। ইত্যমরঃ।। শরষাতঃ পু• বাণাযাতঃ। তৎ-পর্য্যায়: । প্রচলাকঃ ২। ইতি क्रिवेश्वः ॥ শরাটিঃ স্ত্রী শরালিপক্ষী। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শরাডিঃ ন্ত্রী শরালিপক্ষী। ইতি

श्करज्ञावनी ॥

শরারো'

শরাতিঃ স্ত্রী শরালিপক্ষী।ইত্যমরটীকাষা রামাশ্রমঃ ।।
শরাভ্যাসঃ পু॰ বাণশিক্ষা। তৎ
পর্য্যায়ঃ । উপাসন ২ । ইত্যমরঃ ।। বিকর্ষণ ৩ খুরলী ৪
শন্ত্রাভ্যাসঃ ৫ । ইতি শব্দর্দ্ধাবলী ।।

শরারিঃ পু॰ শরালিপক্ষী। তৎ-পৰ্য্যায়ঃ। স্বাটিঃ ২ আডিঃ ৩। ইত্যমরঃ।। আডী ৪ শরাডী ৫ আডিকা ৬ শরালী ৭ শরালিঃ ৮ শরাটিঃ ৯ শরালিকা ১০ । ইতি শব্দরত্নাবলী।। অস্য 📽-नाः। পरन्ति रुषः। त्रिक्षषः । मृक्षेमलष्र । वृषाष्र । वाष त्रकः-रत्रवः। हिमव्यः। ইতি রাজ-বল্লভঃ ।। অপি চ। হ॰স সারস কাচাক্ষ বক ক্রেঞ্চ শরারিকাঃ । नन्नीमुत्री नकामग्राः वलाका-দ্যাঃ প্লবাঃ স্মৃতাঃ ।। প্লবাঃ পি-তহরাঃ শ্বিদ্ধা মধুরা গুরবো হি-गाः। वाज्यसम्पर्थमा नहानि वन-শুক্রকরাঃ সরাঃ।। ইতি ভাব-প্রকাশঃ ॥

শরারুঃ ত্রি হিংসুঃ। ইত্যমরঃ॥ শরারোপঃ পুং ধনুঃ। ইতি জটা-ধরঃ॥ শরালিঃ শরালিকা শরালী

ন্ত্রী শরারিপক্ষী। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

শরাবঃ পু॰ ক্লী মৃৎপাত্রবিশেষঃ।
শরা ইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ
। বর্জমানকঃ ২। ইত্যমরঃ।।
মার্ত্তিকঃ ৩ সরাবঃ ৪ শালাজিরণ ৫ পার্থিব॰ ৬ মৃৎকা॰স্য॰ १।
ইতি শব্দরত্বাবলী ।। স্বডবদ্বয় পরিমাণ॰। ততু চতুষ্টিতোলকাত্মক৽। সের ইতি ভাষা।
তৎপর্যায়ঃ। মানিকা ২। ইতি
শব্দমালা বৈদ্যকপরিভাষা চ।।
শরাবতী স্ত্রী নদী বিশেষঃ। ইত্যমরঃ।।

শরাবার্দ্ধ ক্লী স্বডবপরিমাণ।
তত্ত্বাত্রিংশৎতোলকাত্মক ।
আধসের ইতি ভাষা। ইতি
বৈদ্যকপরিভাষা।।

শরাশ্রযঃ পু॰ তুণঃ। ইতি হেম-চন্দ্রঃ।

শরাসন ক্লী ধনু: । ইত্যমর: ।।
ারাস্য ক্লী ধনু: । যথা । চিচ্ছেদ তস্য তান্ বাণান্ শরাস্যঞ্চ মহামুনে । যুযুধাতেতিসংরক্ষো পরস্পর বধৈষিণো ।।
ইতি মার্কভ্রেযপুরাণে জৈমিনি

খঙ পুরাণ পরিপূর্ণ ।।
শরিমা পু প্রসবং। ইতি সিদ্ধাতকে মুদ্যা মুণাদিবৃত্তিং ।।
শরী স্ত্রী এরকাতৃণ । ইতি ভাবপ্রকাশং ।।

শরীর° क्री শীর্য্যতে রোগাদিন। य । ত । ज । क त्व तृ । २ গাত্রণ ও বপুঃ ৪ সংহ্নন ৫ वर्ग ७ विश्व १ का यः ৮ प्तरः ৯ মূর্জিঃ ১০ তনুঃ ১১ তনুঃ ১২। ইত্যমরঃ॥ ক্ষেত্রণ ১৩ পুরণ ১৪ ঘনঃ ১৫ অঙ্গ ১৬ পিও ১৭। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ভূতাত্মা ১৮ স্বৰ্গলোকেশঃ ১৯ স্কন্ধঃ ২০ প-ঞ্জরঃ২১ ঙ্গল•২২ বল•২৩ আ-ত্মা ২৪। ইতি জটাধরঃ ॥ কন্ধ• २७। ইতি শব্দরত্নাবলী।। ইন্দি-রাযতন॰ ২৬ ভূঃ ২৭ মূর্ত্তিমৎ ২৮ করণ ২৯ বের• ৩০ সঞ্চরঃ ७) वस्रः ७२ भूमान ७७। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। 🟶 ।। শরীরধর্মাণি যথা। শরীরে ভশ্মসান্ডূতে প্র-তিবিশ্বঃ স চাত্মনঃ। জীব স্ত-ত্রাস্তরীক্ষস্থ উবাচ বিনয়ণ বিভুণ ॥ জীব উবাচ। সদুক্তি ৰা কদু-ক্তি ৰ্বা কোপঃ সম্ভোষ এব চ। লোভো মোহশ্চ কামশ্চ কুৎ-

शिशामानिकक यथ ॥ दिना कानीक नागन मृन्यामृन्या म-मूख्य । मर्बः भत्नीत्रशर्माः नः कीवमा न ठाषानः ॥ मष् द्रक ন্তম ইতি শরীর জিগুণাত্মক । তচ্চ নানাপ্রকারঞ্চ প্রবোধ ক-থযামি তে ৷৷ কিঞ্চিৎ সন্বাতি-त्रिक्क किश्रिपार त्राज्याधिक । তমোতিরিক্ত কিঞ্চিচ ন সমণ अविज्ञात ॥ मञ्चालया ह भू-ক্তীচ্ছ। কর্মেচ্ছা চ রজোগুণাৎ । তমোগুণাজ্জীবহিণ্সা কোপো 🛭 ২হন্ধার এব চ ॥ কোপাৎ কদুক্তি ৰ্নিযত॰ কদুক্ত্যা শত্ৰুতা ভবেৎ'। ত্যা চাপ্রিয়তা সদ্যঃ শত্রুঃ কঃ কস্য ভূতলে ৷৷ কো বা প্ৰিযো ২প্রিয়ো বা কঃ কো মিত্রঃ কো রিপু ভূ বি। ইন্দ্রিযাণি চ জীবাদি সৰ্বত্ৰ শত্ৰ মিত্ৰযোঃ।। ইতি ব্ৰহ্ম-বৈবর্ত্তে শ্রীক্ষকজন্মখণ্ডে ২৪ আ-धायः ॥ 🕸 ॥ अथ खी भू॰नत्याः সর্বাঙ্গাণি পাদাগ্রাদি শিরঃ পর্য্য-স্তানি। প্রপদ ১ অজ্যিঃ ২ গুলুঃ ৩ গার্ষিঃ ৪ জঙ্ঘা ৫ জানু ৬ উরু ৭ বজ্ফণঃ ৮ কটিঃ ৯ ত্রিক ১০ নিতম্বঃ ১১ স্ফিক্ ১২ বস্তিঃ ১৩ উপস্থঃ ১৪ কম্বন্দরণ ১৫ জঘনণ

১৬ জঠর ১৭ নাভিঃ ১৮ विनः ১৯ खनः २० চ্**চ**ক॰ २১ জোড॰ ২২ রোম ২৩ কক্ষঃ ২৪ অংসঃ ২৫ বক্ষঃ ২৬ দোট ২৭ পার্খ্যঃ ২৮ প্রগতঃ ২৯ ঙ্গর্পরঃ ৩০ হস্তঃ ৩১ প্রকোষ্ঠঃ ৩২ মণিবদ্ধঃ ৩৩ অঙ্গুলিঃ ৩৪ অঙ্গুঞ্চঃ ৩৫ করভঃ ৩৬ নখঃ ৩৭ পর্ব ৩৮ চপেটকঃ ৩৯ কণ্ঠঃ ৪০ শিরোধিঃ ৪১ শাশ্রু ८२ मूथ[,] ८० ७४: ८६ हिंदूक[,] ६८ र्गुः ४७ मृकः ४१ जान् ६৮ রদः 8> किस्ता ए॰ नामा ७३ **कः ७**२ গঙ্বঃ ৫৩ লোচন ৫৪ অপাক্ ৫৫ তারা ৫৩কর্ণঃ ৫৭ ভালঃ ৫৮ : মস্তক ৫৯ কেশঃ ৬০। কবিকল্পলতা ৷৷ 🍪 ৷৷ পরমেশ্বর শরীরতো দেবানা মুৎপত্তি র্যথা । সর্বে: দেবাঃ সপিতরো ব্রহ্মাদ্য। শ্চাগুমধ্যগাঃ। বিক্ষোঃ সকা-শাদুৎগন্না ইতীয় বৈদিকী শ্রু-তিঃ।। অগ্নি স্তথাশ্বিনৌ গৌরী গজবক্ত্রো ভুজঙ্গমঃ। কার্ত্তিকেয স্তথাদিত্যে। মাতরো দুর্গযা সহ ।। দিশে। ধনপতি বিষ্ণু ধঁৰ্মো রু-দ্রঃ শশী তথা ৷ পিতর শেচতি সং-ভূতাঃ প্রাধান্যেন জগৎপতেঃ ।। হিরণ্যগর্ভস্য তনৌ সর্ব এব স-

মুক্তবাঃ। পৃথক্ পৃথক্ ততো গৰ্ৰু वर्गानाः नमख्यः ॥ अर् या-महान्। आवल्ड (प्रवमित्डी ক্ষুদ্ধ সাগর সমিভঃ ॥ তেষাণ বি-বদমানানা বিহ্ন রুখায পার্থি-ৰ। উবাচ মা॰ যজস্বেতি ধ্যাযধ মা মিতি ক্রবন্।। প্রাজাপত্য মি म॰ नृन॰ শরীর॰ मिना क्र**ভ**॰। বিনাশ মুপপদ্যেত যতো নাহণ महानर ।। এव मृङ्गा नति ত্যক্ত্ব। বহি ধিনিৰ্যযৌ । নিৰ্গতে-পি তত স্তব্দিং স্তচ্ছরীরং ন শী-র্যাতে ॥ ততে। থবিনো মূর্ত্তিম-স্তৌ প্রাণাপান শরীরগৌ। আ-বা॰ প্রধানা বিত্যেব মচতু র্যাজ্য-বত্তরো।। এব মুজ্বা শরীরণ তৌ বিহায ক্ষচিদাস্থিতৌ। তয়ে। রপি ক্ষয়ণ ক্ষনা ক্ষীণণ তৎ পুর মান্থিতঃ ॥ তত শ্চৈবাত্রবীক্ষোরী প্রাধা-ন্য মপি সংস্থিত । সাপ্যেব মুক্ত্বা ক্ষেত্রাতু নিশ্চক্রাম বহিঃ শুভা।। ত্যা বিনাপি তৎ ক্ষেত্ৰণ বাগূনণ ব্যবতিষ্ঠতি। ততো গণপতি ৰ্বা-ক্য মাকাশাখ্যো হব্ৰবীত্তদ। ॥ ন ময়া রহিত° কিঞ্চিচ্ছরীরস্থোপি 📗 দূরতঃ । কালান্তরেতোব মুক্তৃ। ॥

मानि निषुगा महनः॥ नृयन् ভূত স্তথাপ্যেতচ্ছরীর নাপ্যনী-নশৎ। বিনা সাংখ্যঞ্চ তত্ত্বেন ত-থাপি ন বিশীর্যতে॥ সুষিরৈ স্ত বিহীনম্ব দৃষ্ঠা ক্ষেত্রণ ব্যবস্থিত। শারীর ধাতবঃ সর্বে তে জ্রযু র্বা-ক্য মেব হি ॥ অস্মাভি র্ব্যতিরি-ক্তস্য ন শরীরস্য ধারণ । তবতী-ত্যেব মুক্ত্বা তে জহুঃ সৰ্বে শরী-রিণঃ ॥ তৈ ব্যপেত মপি কেত্রণ পুরুষেণ প্রপাল্যতে। তদ্দু । খ-ব্রবীৎ স্কন্যঃ সোহকারঃ প্রকী-র্ত্তিতঃ ।। মধা বিনা শরীরস্য স-ন্তৃতি রপি নেষ্যতে। এব মুক্ত্বা শরীরাত্ব সোব্যপেতঃ পৃথক্ স্থি-তঃ ৷৷ তেনাক্ষতেন তৎ কেব্ৰু विना मूक्जवमाञ्चिष्ट । ठम्बु ঙ্গণিতো ভানুঃ স আদিত্যঃ প্র-কীৰ্ত্তিতঃ ৷৷ ময়া বিনা কথণ ক্ষেত্ৰ মিন' কণ মপীষ্যতে। এব মুক্ত্বা-থ যাতঃ স তচ্ছরীর ন শীর্যতে ৷৷ ততঃ কামাদি রুখায গণো মা-. তৃকস জভেতঃ। न मया व्याजिति-জ্ঞস্য শরীরস্য ব্যবস্থিতিঃ। এব মুক্তা স যাতন্ত শরীর তন শী-ৰ্য্যতে ॥ ততো মাষাত্ৰবীৎ কো-পাৎ সাচ দুর্গা প্রকীর্ত্তিতা। ন ম-

ষাস্য বিনা ভূতি রিত্যুক্তান্তর্দধে 🛚 পুনঃ।। ততো দিশঃ সমুত্তস্থু ৰচ্-শৈচৰ ৰচো মহৎ। নাম্মাভী র-হিত কাষ ভবতীতি ন সংশযঃ৷৷ চত্ৰসু আগতাঃ কাণ্ঠা অপযাতাঃ ক্লাত্তদা। ততো ধনপতি ৰাষু র্মধ্যে তৎ পক্ত সম্ভবঃ ॥ শরীর-স্যেতি সোপ্যেব মুজ্বা মূদ্ধান-গো ২ভবৎ। ততো বিষ্ণো র্মনো ক্ৰয়াৎ নায় দেহে। ময়া বিনা ॥ কণ মপ্যুৎসহে স্থাতু মিত্যুজ্বান্ত-ৰ্দধে পুনঃ। ততো ধৰ্মো ২এবীৎ সৰ্ব মিদ° পালিতবানহ° ॥ ই-मानी ययुर्भातं कथरमञ्ज्जित-ষ্যতি। এব মুজুা গতে ধর্মে তচ্ছ-রীর ন শীর্যতে ।। ততে। ২ববী-মহাদেব অব্যক্তো ভূতনাযকঃ। মহৎসণজ্ঞো ময়া হীনণ শরীরণ নো ভবেদ্যধা।। এব মুক্ত্বা গতঃ শস্তু স্তচ্ছরীর ন শীর্যতে। তদ্-ফ্ট্রা পিতর শ্চোচু স্তমাত্রা যাবদ-শ্বভিঃ ।। প্রাণান্তরেভি রেতশ্চ শরীর শীর্যাতে ধ্রুব । এব মুক্তা তু ত দেহ তাজ্বান্তদ্ধান মাগ-তাঃ ৷৷ অগ্নিঃ প্রাণো অপানশ্চ আকাশঞ্চৈব ধাতবঃ। ক্ষেত্ৰ॰ ত-षद्रश्काद्या जानुः कामान्या

यया ॥ काश्री वायू विकृ धटमी শস্তু শৈচবেন্দ্রিযার্থকাঃ ৷ এতৈ শ্মৃ-ক্তম্ভ তৎক্ষেত্ৰণ মুক্তাবিব সূসণ-স্থিত ।। সোমেন পাল্যমানম্ভ পু-ৰুষেণেন্দু ৰূপিণা। এব॰ ব্যবস্থিতে সোমে বোডশাত্মন্যথাক্ষরে ॥ প্রাথত্তত্র গুণোপেত ক্ষেত্র মুখায যন্তবেৎ। প্রাগবস্থণ শরীরম্ব দৃষ্ট্রা সর্বজ্ঞপালিত । তাঃ ক্ষেত্রদেব-তাঃ সৰ্বা বৈলক্ষ্যণ ভাব মাঞ্ৰিতাঃ ।। ত মেব তুফুবুঃ সর্বা স্ত দেব। পরমেশ্বর । ইতি বারাহে মহা-তপোপাখ্যান নামাধ্যায়ঃ।। 🛊 🛚 ।। শরীরামণ যথা। শরীর মাপঃ সোমশ্চ বিবিধণ চান্ন মুচ্যতে। প্রাণো হুমি স্তথাদিত্য স্ত্রিভো-ক্তা একএব তু ।। ইতি গাৰুডে ২১৫ অধ্যায়ঃ ॥ 🛊 ॥ মানস কা-যিক ক্লেশসাধ্য ব্রতণ যথা। ধর-ণ্যুবাচ। কথ মারাধ্যসে দেব ভ-ক্তিমন্ডি র্ন রৈ বিভো। স্ত্রীভি র্বা সৰ্ব মেতম্মে শৃংস ত্বণ ভূতভাবন ॥ বারাহ উবাচ। ভাবসাধ্য স্তুহ• **प्रित न विरेख ने करिंग द्रश्रा मी-**ধ্য স্তথাপি ভূতানা॰ কাষক্লেশ॰ বদামি তে ৷৷ কর্মণা মনসা বাচা মচ্চিত্তো যে। নরে। ভবেৎ। তদ্য

ব্রতানি বক্ষ্যেহণ বিবিধানি নি-বোধ মে ।। অহিণ্দা সত্য মস্তে-যণ বক্ষচর্য্য মকক্ষতা । এতানি মানসান্যান্থ র্বতানি তু ধরাধ-রে ।। একভক্তণ তথা নক্ত মুপ-বাসাদিকঞ্চ যৎ । তৎ সর্বণ কা-যিকণ পুণসাণ ব্রতণ ভবতি না-ন্যথা ।। ইতি বারাহে সত্যত-পোপাখ্যান নামাধ্যায়ঃ।।

শরীরজঃ পুণ রোগঃ । কামদেবঃ

। পুত্রঃ । ইতি ধরণিঃ ।। দেহজাতে ত্রি । যথা । শরীরজৈঃ
কর্মদোধৈ হাতি স্থাবরতাণ নরঃ
। বাচিকৈঃ পক্ষি মৃগতাণ মানদৈ রম্ভাজাতিতাণ ।। ইতি প্রাষশ্চিত্ততত্ত্বণ ।।

শরীরসংস্কারঃ পুং দেহসংস্কার-কর্ম্ম। শরীরস্য শোভনং মার্জ-নঞ্চ।।

শরীরাবরণ ক্লী চর্মা। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ।। কাষবেষ্টনঞ্চ।।

শরীরী পুণ শরীরবিশিষ্টঃ। তৎ
পর্য্যায়ঃ। ভবোদ্ভবৌ চ প্রাণী
তু শরীরি জন্য জন্তবঃ। প্রাণভূচ্চেতনে। জন্মী চিত্তম্ব হৃদ্যথ
ননঃ। ইতি জটাধরঃ।৷ শরীরি লক্ষণণ যথা। গর্ভাশ্যগতণ

ख्य गार्डवः कीव मःख्रकः । প্রকৃতিঃ সবিকারা চ তৎ সর্বণ গর্ভস**ুক্তক**া৷ কালেন বিদ্ধি-তো গর্ভো যদ্যকোপান্ধ সংযুতঃ । ভবেত্তদা স মুনিভিঃ শরীরীতি নিগদ্যতে ॥ অঙ্গোপাঙ্গ সংযুতঃ ব্যক্তাঙ্গোপাসং ৷৷ তস্য স্বন্ধান্য-পাঙ্গানি জ্ঞাত্বা সূঞ্রত শাস্ত্রতঃ। মস্তকাদভিধীষত্তে শিষ্যাঃ শৃগুত ষত্নতঃ।। আদ্য মঙ্গণ শিরঃ প্রো-ক্ত• তদুপাঙ্গানি সম্ভলাঃ। তদ্যা-ख मंखनुष्र क नना है अयुगः उथा ৷ানেত্ৰদ্বৰ তথে রস্ত ৰ্বৰ্ত্তে দে-क्नीनित्क । मृश्विषय क्रक्राना-লো শ্বেতভাগো চ বর্গনি।। প-স্থাণ্যপাঙ্গে শঙ্খো চ কণো তচ্ছ-क्नुनीष्ठयः। शानिष्ठयः करशारनी চ নাসিকা চ প্রকীর্ত্তিতা ৷৷ ওষ্ঠা-थरतो ह मृक्रप्गो मूथ॰ जानू इन्-দ্বয়ণ। দন্তাশ্চ দন্তবেষ্টাশ্চ রস্ন-ন। চিবক গলঃ ।। দিতীয় মঙ্গ গ্ৰীবা তু যথা মূদ্ধা বিধাৰ্য্যতে। তৃতীয় বাহুযুগল তদুপাসান্য-থো ক্রবে ৮ তদ্যোপরি মতৌ ক্ষন্ধো প্রগঞ্জে ভবত স্তৃধঃ। ক-কোণিযুগ্মণ তদধঃ প্রকোষ্ঠযুগ-ল॰ তথা।। মণিবন্ধৌ তলে হস্তৌ

তযোশ্চাঙ্গুলযোদশ। নথাশ্চ দ-শ তে স্থাপ্যা দশচ্ছেদ্যাঃ প্রকী-র্ত্তিতাঃ ৷৷ চতুর্থ মঙ্গণ বক্ষস্ত তদু-পাদান্যথ ক্রবে । স্তনৌ পুণ্স স্তথা নাৰ্য্যা বিশেষ উভযো রয়ং १। योवनागमरन नार्याः शीवरती ভবত স্তনৌ । গর্ভবত্যাঃ প্রসূ-তাযা স্তাবেতৌ ক্ষীরপূরিতো ।। क्रमय॰ পুखतीत्कन ममृभं मान-ধোমুখণ। জাগ্ৰত স্তদ্বিকসতি স্ব-পতস্ত নিমীলতি ॥ আশ্য স্তত্তু 🛚 জীবস্য চেতনাস্থান মুত্তম[•]। অত স্তশ্মিণ স্তমো ব্যাপ্তে প্রাণি-নঃ প্রস্বপন্তি হি ৷৷ চেতনাস্থান মুত্তম মিতি অয মভিপ্রাযঃ ॥ চেতনানা মধিষ্ঠান মনো দেহ-শ্চ সেন্দ্রিযঃ। কেশ লোম নথা-প্রান্ত মল জব্যগুণে বিনা।। ই-ত্যুক্তবতা চরকেণ সকলং শরীরং চেতনা স্থান মুক্তণ তদপেক্ষয়া হৃদয° বিশেষত শেচতনাবস্থান নিতি।। কক্ষয়ে। ৰ্বক্সোঃ সন্ধী জত্রণী সমুদাহতে। কক্ষে উভে সমাখ্যাতে তযোঃ স্যাতাঞ্চ বং-ক্ষণী ৷৷ উদর• পঞ্চম• ভাগ• ষষ্ঠ• পাर्श्वचर गठः। मशृष्ठेवः मः शृ-ঠিয় সমস্ত পপ্তম স্মৃত ৷৷ 🟶 💵

উপাঙ্গানি চ কথ্যন্তে তানি জা-নীহি যত্নতঃ।। শোণিতাজ্জাযতে প্লীহ। বামতো হৃদযাদধঃ। রক্ত-বাহি শিরাণা সমূল খ্যাতো মহর্ষিভিঃ ৷৷ স্বদ্যাদ্বাসতোধশ্চ ফুপ্ফুসো রক্তফেণজঃ । অধো **দ**क्षिণত **क्**रांशि श्रमशास्त्रक्रः স্থিতিঃ ॥ ততু রঞ্জক পিত্তস্য স্থান॰ শোণিতজ॰ মতং। অধক্ষ দক্ষিণে ভাগে হদযাৎ ক্লোন ভি-ষ্ঠতি।। জলবাহি শিরা মূল তৃকা চ্ছাদনক্ষ্ত । ক্লোম ভিলকণ এতজু বাতরক্তজ । ভ ত্রাহ চ বৃদ্ধবাগ্ভটঃ। রক্তাদনিল না-युक्रां कालीयक ममूख्य देखि। মেদঃ শোণিতযোঃ সারাদুরুযো র্যুগলণ ভবেৎ।। তৌ তু পুর্ক্টিক-রৌ প্রোক্তৌ জঠরস্থদ্য মেদদঃ। উক্তাঃ সাদ্ধা স্ত্রযো ব্যামাঃ পুণ্সা **ग**ष्ठानि সृति ভिः ॥ অर्क्तवारमन হীনানি যোষিতোক্সাণি নির্দ্দি-শেৎ। উঞ্চুকশ্চ কটী চাপি ত্রিকণ বস্তিশ্চ বংক্ষণো ।৷ কণ্ডরাণাণ প্র-রোহঃ म्यारमणुं। वीर्या मृब-ষোঃ। স এব গর্ভস্যাধানণ সর্য্যা-দার্ভাশযে ব্রিযাঃ।। শঙ্কনাভ্যা-হুতি ৰ্যোনি স্ত্ৰ্যাবৰ্ত্ত। সা চ কী-

ৰ্ত্তিতা।তস্যাস্তৃতীষে ত্বাবর্ত্তেগ-র্ভশয্যা প্রতিষ্ঠিত। ।। বৃষণৌ ভ-বতঃ সারাৎ কফাস্গ্লাণ্স মেদ-সাণ। বীর্য্যবাহি শিরাধারৌ তৌ मठी পৌद्रगावरो ॥ धनमा মান সৰ্বস্য সৰ্ব স্যাচ্চত্রজু-नः। তত্র স্যু ईলয স্তিসুঃ শঞ্চ वर्त्तनि । अवाहिनी ভবেৎ পূৰ্বা সাৰ্দ্ধাঙ্গুলমিতা ম-ত।। উৎসঞ্জিনী তু তদধঃ সা শাৰ্দ্ধাঙ্গুল সন্মিতা।। তদ্যা অ-धः मद्दर्भी महात्मकाञ्चल म-मिठा। अक्षाभून अमान तूरि र्छन्यूथ भङ् ॥ भलाष्मर्गम् মার্গে যে পাযু র্দেহে বিনির্মিতঃ । পু॰मঃ প্রোথৌ স্মৃতৌ যৌ তু তৌ নিতম্বে চ যোষিতঃ।। ত-যোঃ সঙ্গন্দরে স্যাতা শক্থি-নী স্বন্ধ মন্ট্যণ। তদুপাঙ্গানি চ कारमा जानूनी शिखिका हरण।। জজ্বে দ্বে ঘূটিকে পাফী তলে **চ প্রপদে তথা। পাদাবঙ্গুলয** ন্তত্ত দশ তাসা নখা দশ ॥ ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥

শরঃ পু॰ ক্রোখঃ।। বজু॰। ইতি মেদিনী ।। বাণঃ । ইতি হেন-চন্দ্রঃ।। আযুধ॰। ইতি সিদ্ধাস্ত- কৌসুদ্যা মুণাদিবৃত্তিঃ।। শরেকঃ পু॰ আমুঃ।ইতি জটা-ধরঃ।। শর্করকঃ পু॰ মধুরজন্বীরঃ।ইতি

রাজনির্ঘন্টঃ ।। শর্করজা স্ত্রী সিতাখণ্ডঃ ৷ ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।।

শর্করা স্ত্রী খণ্ডবিক্ষতিঃ। চিনী ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ। নিতা ২। ইত্যমরঃ ॥ শুক্লোপলা ৩ শুক্লা ৪ সিভোপলা ৫। ইতি রত্নমালা।। মীনাঞ্চী ৬ শ্বেতা ় মৎস্যাণ্ডিক। ৮ অহিচ্ছত্র। ১ সুসিকতা ১০ গুডোন্ডবা ১১। অস্যা গুণাঃ। মধুরত্বং। শীতত্বং । পিত্ত দাহ এম রক্তদোষ ভা-ন্তি ক্লমিকোপ নাশিত্বঞ্চ। ইতি সাধারণ শর্করা গুণাঃ।। 🕸 ।। অথ শর্করাবিশেষ গুণাঃ । সি-শ্বা পুণ্ডুক শর্করা হিতকরী ক্ষী-ণে ক্ষয়ে ২রোচকে চক্ষুষ্যা ব-লবর্দ্ধনী সুমধুরা ৰূক্ষা চ বং-শেক্ষ্জা। বৃষ্যা তৃপ্তি বলপ্রদা শ্রমহরা শ্যামেক্ষুজা শীতলা নিঞ্চা কান্তিকরী রসাল জনি-তা রক্তেক্ষুজা পিত্তজিৎ ৷৷ ইত্তি পঞ্চেকুশর্করা গুণাঃ ॥ 🛊 ॥ সা-

বনালী হিমোৎপন্না হিমালী হি-মশর্করা। ক্ষুদ্রশর্করিকা ক্ষুদ্রা **७७**का जनविन्मुका ॥ हिमका শর্করা গৌল্যা সোক্তা তিক্তাতি-পিচ্ছিলা। বাতমী সারিকা রুচ্যা **मार शिखा**नु मायिनी ॥ रेजि যাবনালশর্করা গুণাঃ 11 🟶 11 শীতজান্যা কর্করজা মাধৰী ম-ধুশর্করা। মাক্ষিকা শর্করা প্রো-ক্তা সিতাখণ্ডশ্চ খণ্ডকঃ ৷৷ সিতা-थर शिकिमधूत किक्का कि किना-भूनः। अष्ठे वं वक्य शाम शिका পিতাসু দোষনু ।। যগাসশর্ক-त्र। बना। मुधारमामक स्मामकः । তবরাজঃ খণ্ডসারঃ খণ্ডজা খণ্ড-মোদকঃ ।। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। 🗱 ॥ অপি চ। মৎস্যণ্ডিকাঃ খ-ওসিতা গুণ শ্রেষ্ঠা যথোত্তর । বিমলাঃ শীতলাঃ স্নিন্ধা গুৰ্ব্যঃ चानू ठताः मताः ॥ व्या छ्या ক্ষত কীণ রক্তপিত্তানিলাপহাঃ। নৎস্যণ্ডী আহিণী বল্যা ক্ষায়া বাতজিলাুরঃ ৷৷ খণ্ডণ গুরু সরণ রুচ্য বাতর বল পৃষ্টিদ । সি-তোপলা সরা গুৰী বাতমী ন কফপ্রদা ॥ ইতি পথ্যাপথ্যবি-বেকঃ ।। ৠ ।। অন্যচ্চ । শর্করা

জ্ব শিক্তাসৃক্ মূচ্ছা ছর্দি তৃষা-পহ। তৃষ্ণাম স্তবরাজস্ত স্বর मारामु शिखनूष II निमका का-ণিত গুড থণ্ড মৎস্যণ্ডিকা সিতাঃ । নিৰ্শ্মলা লম্ববো জ্ঞেষাঃ সীত-বীর্ব্যা যথোত্তর ।৷ যথা যথৈষা বৈমদ্যু ভবেচ্ছৈত্যু তথা তথা । ইতি রাজবল্লভঃ ।। 🟶 ।। কিঞ্চ। খণ্ডস্ত সিকতাৰূপণ সুশ্বেতণ শ-র্করা সিতা। সিতা সুমধুরা রুচ্যা বাত পিত্তাসু দাইজিৎ।। মূর্চ্ছা ছর্দি স্বরান্ হস্তি সুসীতা শুক্র-কারিণী। #। ভবেন্মধুসিতা সী-তা রক্তপিত্তহরী লযুঃ। সিতো-পলা সরা লঘুী বাত পিতত্তরী হিমা ৷৷ 🟶 ৷৷ মধুজা শর্করা ৰক্ষা কফ পিত্তহরী গুরুঃ । ছর্দ্যতী-সার তৃড্ দাই রক্তক্ততুবরা হিমা ॥ यथा यटेथवा॰ टेनर्ऋनाउ॰ मध-রত্ব তথা তথা ৷ সেহ লাঘব শৈত্যানি রসত্বঞ্চ তথা তথা ॥ ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ 🗱॥ উপলা ।। কর্পরা॰শঃ ।। শর্করান্বিতদেশঃ া। রোগভেদঃ ।। শকল । ইতি মেদিনী॥ শর্করা রোগস্য নি-দান চিকিৎসাদি মূ ত্রিক্ছুশব্দে দ্রষ্টব্যঃ ॥

শर्कताठनः पुः मानार्थक्रिविय-भक्तामयाव्यवित्भयः । अगा বিবরণ পর্বতশব্দে দ্রফীব্য ।। শর্করাধেনুঃ স্ত্রী দানার্থশর্করা-निर्मिज्यधनुः । छिषि र्यथा । াহোতোবাচ। তৰৎস শৰ্ক-রাধেনু॰ শৃণু রাজন্ যথার্থতঃ। অনুলিপ্তে মহীপৃত্তে রুক্ষাজিন ঙ্গশোভরে ॥ ধেনু॰ শর্করযা রাজন্ রুষা ভারচতুঊষ• উ-ন্তুমা কথ্যতে সন্তি শচতুর্থাণ-শেন বৎসক। তদৰ্দ্ধ মধ্যম। প্রোক্তা কনিষ্ঠা ভারকেণ তু ॥ তদ্বৎ বৎসং প্ৰদৰীত চতুৰ্থাণ শেন তত্ত্তঃ। অথ সর্য্যাদফ- । শতৈ ৰাৰ্দ্যু॰ নৃপতিসত্তম ॥ স্ব শক্ত্যা কারষেদ্ধেনু যথাত্মান ন পীড়্যেৎ। সর্ব বীজানি সং-স্থাপ্য চতুর্দিকু সমন্ততঃ ॥ সৌবর্ণমুখ শৃঙ্গাণি মৌক্তিকা नयत्न ७४१। श्वरं ज् मूर्यः কাৰ্য্য জিহ্বা পিষ্টম্বী তথা।। কম্বল• পউসূত্রেণ কণ্ঠাভরণ ভূ-ষিত । ইক্পাদা রৌপ্যখুরা नवनीजगरखनी ।। প্रশস্ত পত্র শ্রবণাণ সিতচামর ভূষিতা। পঞ্রত্ন সমাযুক্তাণ বস্ত্রে রাচ্ছা-

मिठा॰ उथा ।। गन्नश्रूटेन्ग तन॰-ক্নত্য ব্ৰাহ্মণায় স্বটুম্বিনে। শ্ৰো-वियाय मित्रजाय माधुवृछाय धी-মতে ।। বেদ বেদাঙ্গ বিদুম্বে তা।-हिञादभ र्विटमयञः । अमुखीय প্রদাতব্যা ন তু সৎসরিণে নৃপ।। অষনে বিষুবে পুণ্যে ব্যতীপাতে मिक्टिय। अयू भूरगियू कोलियू यमृष्ट्या वा ममार्थरयः ॥ मर्था-ত্রস্ত দিজ দৃষ্ট্বা আগত শ্রোত্রি-यः गृद्ध । जामृशाय श्रमाञ्जा পুচ্চদেশে বিগৃহ চ।। পূৰ্বাভি-मूथ माञ्चाय जाश वा म छेम बाथः। গা• পূৰ্বাভিমুখী• ক্লন্বা বৎস মূ-ত্তরতো ন্যসেৎ ॥ দানকালে তৃ रि मञ्जा खान् शिवा ममर्भराष्ट्र। সংপূজ্য বিধিবদ্বিপ্রণ মুদ্রিকা ক-र्भजृषरेनः ॥ ऋर्भक्ता प्रक्रिगाः प्र-ত্বা বিত্তশাঠ্য বিবর্জিতঃ । হস্তে जू निक्का॰ पद्मा गम्भभूष्म जहन्म नाः ॥ (धन्ः সমর্পবেত্তস্য মুখঞ্ নঃবিলোকযেৎ। একাহ॰ শর্ক-রাহারো ত্রাহ্মণ স্ত্রিদিন বসেৎ ৷৷ সৰ্বপাপহরা ধেনুঃ সৰ্বকামপ্ৰ-लाविनी । मर्बकाय ममृक्षञ्च जा-ষতে নাত্ৰ সংশযঃ ৷৷ দীৰমানা প্রসংশন্তি তে যান্তি পরমাণগতি•

1 य रेम॰ मृन्याख्का नक्ट वाणि यानवः ॥ यूह्यद्रक गर्दणाः পেভাে বিফুলোক সাক্তি 1 देखि बाबाटर नर्जदारभनूना-राष्ट्रानाशायः॥ শক্রাপ্রভা জী জিনানা নরক িবিশেষঃ । যথা। রত্ন শর্করা বা-লুকা পদ ধূম তম প্রভা। মহা-তমপ্রভাবেত্যধ্যেধো নরক ভূ-মধঃ।। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। শর্করাবান্ ত্রি কর্পরা শবহলদে-শঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। শর্করা২ শর্ক-রিলঃ ৩ শার্করঃ ৪। ইত্যয়রঃ ॥ गर्कतामश्रमी खी रिनाशीश्रका-সপ্তমী। তত্ৰ ব্ৰতবিধি ৰ্যথা। अन्धत উবাচ । **শর্করাসপ্তমী**॰ ∥ বক্ষ্যে তদ্বৎ কল্মৰ নাশিনীং। আযু রারোগ্য মৈশ্বর্য্য যযান-ন্ত॰ প্ৰজাৰতে ॥ মাধবদ্য সি-তে পক্ষে সপ্তম্যাণ শুক্লপক্ষতঃ 1 প্রাতঃমাদ্বা তিলৈঃ শুক্লৈঃ শুক্ল मानागन्त्वशरेनः ॥ ऋषित्न श-म्र बाजिश्य अकुरबन मकर्निकः। তব্যৈ নমঃ সবিত্ত্রে তু গদ্ধপুষ্ণা निद्वप्रस्थ ॥ श्राश्रासमूमञ्जूष শর্করাপাত্র সংযুত্ত। শুক্লবস্ত্রৈ-রল'ফ্তা শুক্রমাল্যান্লেপনেঃ

গ সুবর্ণাশ্ব সমাযুক্তণ মন্ত্রেণানেন नुक्रतं । विश्वतंत्रमाया रामा ९ दिनवानीि भेठारक ॥ इत्यवाम्-ভ সর্বস্ব মতঃ কান্তিণ প্রসক্ত মে । পঞ্গব্য ততঃ পীত্বা স্বপেত্তৎ পার্শ্বতঃ ক্ষিতৌ ॥ সৌরসূক্তণ স্ম-রমান্তে পুরাণ এবণেন চ। অহো-ক্লাত্তে গশ্চাৎ অফম্যা ক্ল-**ত**निजिकः॥ ७९म**र्ब** दिम्दिमू-ষে ব্ৰাহ্মণায় নিবেদক্ষেৎ।ভোজ-বেচ্ছক্তিতো বিপ্রান্ শর্করা মৃত পাষসৈঃ।। ভূঞ্জীতাতৈল লবণ• यर मुगाय वाश्वाः। जातन वि-ধিনা সর্বণ মাসি মাসি সমাচরেৎ ।। मन्द्रभ्रताट्ख भ्यनः भर्कता কলসান্বিত । সর্বোপস্কর সংযু-ক্ত॰ তথৈকা॰ গা॰ প্যস্থিনী॰॥ গৃহঞ্চ শক্তিতো দদ্যাৎ সমস্তো-পক্ষরান্বিত । সহস্রেণাথ নিষ্কা-ণা॰ ক্লন্তা দদ্যাৎ শতেন বা ।। দ-শভি ৰাথ নিষ্কাণা তদৰ্ক্ষেনাথ শক্তিত্য সুবর্ণাশ্বঃ প্রদাতব্যঃ পূ-ৰ্ববন্মন্ত্ৰ বাচন ।। বিক্তশাঠ্য ন পবী ত পৰ্বন্দোষণ সমশ্বতে। অমৃত পিৰতো বক্তাৎ সূৰ্য্যস্যা-मृष्ठ विन्मवः ॥ नित्भषु र्य छमू-थानी भानि मूक्ताकवः सृठाः।

পর্করা পরম স্তস্মাদিক্সারো ২-ज्ञाशकः॥ देखे। तत्त्वाः भूगा भक्ता रुवा क्वारवाः। भक्ता-मक्षमी देवना बाज्यत्थय कल्यमा १। नईमृःत्याणममनीः भूख मख-তि वर्कनी । यह अर्याप्य शत्रया ভক্তা সপর বন্ধ গছতি ৷৷ কর মেক ব্দেৎসর্গে ততো যাতি भर्थ भार । देस मनवः भृत्या-তি यः ऋत्त्रचा शत्रिशठेडी र पि-ৰাকরস্য লোকে। মতি মপি চ দদাতি সোপি দৈবৈ রমর বধূ-জন মাল্যা চ পূজ্যঃ ।। ইতি মাৎস্যে ৭২ অধ্যায়ঃ।। শর্করিকঃ ত্রি কর্করাবান্। ইতি निकाउको मूमी ॥ শর্করিলঃ তি শর্করাবান্। ইভ্য-यतः ॥ শर्वती जी ছल्मावित्यकः ॥ नि ।। स्थला। इंडि इस्वि-খিত মেদিনী।। লেখনী। ইতি ধরণিঃ।। মুডাকিড মেদিনী হে-মচন্দ্রযোঃ রেফ শূন্য দ্বি ককার गधा भार्रः ॥ चमा विवत्न भ-ৰূরীশব্দে ডফব্য় ॥ শर्करतामक॰ क्री শर्कतायुङ्ख-

वः। हिनित्रभाना इंडि भत्रवद

ইতি চ ভাষা। ধ্যা। জলেন শীতলেনৈৰ যোলিতা ওত্ত শ-र्कता। धना व्यवक कर्ण त मन्नि-रिक्क नमिका ११ भर्केट्रामक नारमण्य अनिकः विष्याः मूर्य । শর্করোদক মাখ্যাত শুক্রলণ मिभित्र मन्न ॥ वनाः क्राः नघू স্বাদু বাছ পিত্তাসু নাশন। মৃ-क्टा इपि ज्या मार खत गास्त्रि করণ পরণ।। ইতিভাবপ্রকাশঃ॥ मकः पुः चनात्ना एमगः। मृध খাঁতো ৰ্যঞ্জ প্রত্যযেননিষ্ণন্নঃ॥ मक्षिक्ष १ वर्ष यायः। यथा। भ-আর্দ্রত জহাতি ইতি শর্দ্ধণ জহো মাষঃ। ইতি মুগ্ধবোধব্যা-कत्रव विकाशाः मूर्गीमामः ॥ শর্দ্ধন॰ ক্লী অধোবাষুঃ। বাত-কৰ্ম ইতি ভাষা। ইতি মনু টী-কাষা পল্লুকভটঃ ৷৷ শৰ্ব হিংসে ।। গতৌ। ইতি কবি-. কল্পড়মঃ।। শৰ্বতি। ইতি দুর্গা-मामः ॥ শর্ম কী সুখ । ইত্যমরঃ।। তদ্বতি ত্রি॥ শर्मा थ्रू बाक्स (मग्राशाधिति-लायः। यथा। नार्यप्रद्यां मिटक কাৰ্য্যণ শৰ্মা তৰ্পণ কৰ্মণি। শ-

দত্ত সক্ষৰ ।। শৰ্মানিতানেন গো-ब मश्य नामानि शिक्षा शति-ক্ষ্য মিভ্যেক্ৰাক্যভয়া শৰ্মা-ন্ত॰ নাম প্রতীষতে। তথাচ বি-ব্পুরাণ। ততক নাম প্রীত পিতৈব দশমেহনি। দেব পূর্ব॰ नद्राशः हि नर्मा वर्मानि मःयुरुः ।। দেবাৎ পূর্ব नরাখ্য নরনাম তচ্চ বিশিক্ত শৰ্মাযুক্ত। একচ্চ বিপ্রপর । শর্মা দেব শ্ট বিপ্রস্য বৰ্ম ত্ৰাতা চ ভূভুজঃ। ভূতি দ্-खन्ठ दिनामा मामः मूखमा क्।-त्रत्य ।। इंछि यमकानो । खाउ চকারেণ দেব শর্মাণোঃ সমুচ্চ-ষঃ। অত্রাপি শর্মাদ্যন্ততা মাহ-শাতাতপঃ ৷ শর্মান্ত বান্ধণস্য-স্যাৰশান্ত ক্ৰিষ্স্য চধনান্ত-ঞৈব বৈশ্যস্য দাসান্ত চান্ত্য-জন্মনঃ ॥ ইতি আদ্ধতত্ত্ব॰ ॥ বস্ত্রভেদঃ। ইতি শর্মারঃ পু• ধরণিঃ ॥

শর্মার। ত্রী দারুহরিজা। ইতি[।] ধরণিঃ।।

শর্যা স্ত্রী রাত্রিঃ। যথা। ত্রিষা-মা শর্বরী শর্যা ক্ষযণী ক্ষণদা ক্ষপা।ইতি ভরতধৃত বাচস্পতিঃ

मात्वा २ क्या कात्व ह निजुना । मात्राज्ञ भू देववयञ्चन भूकः । एव भक्य । भूका निज्ञा भूका ज्ञा भूक ज्ञा

শৰ্ব হিংসে। ইতি কবিকল্পজনঃ।
শৰ্বত। ইতি দুৰ্গাদাসঃ।
শৰ্বঃ পুং শিবঃ। ইতি হেনচন্দ্ৰঃ
।। ক্ষিতিমূৰ্ত্তি রয়ং। যথা। বিসংজনাৎ পূৰ্বং ভবিষ্য পুরাণোক্তঃ
সভাব সিদ্ধ প্রাচ্যেশান্যাদি
দিক্ষু বামাবর্ত্তেন পূজনং। যথা
। সর্বায ক্ষিতিমূর্ত্তযে নম ইত্যাদি তিথ্যাদিতত্ত্বং।। দন্ত্যসাদি রপ্যসং।। বিষ্ণুঃ। যথা শর্বঃ
সর্বঃ শিবঃ স্থাণু ভূতাদি নিধিরব্যয়ং। ইতি তস্যসহস্থনাম-

শৰ্বর॰ ক্লী তমঃ।। কন্দর্পঃ। ইতি
সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ।।
শর্বরী স্ত্রী রাত্রিঃ। ইত্যমরঃ।।
যোষিৎ। ইতি মেদিনী।। হরিজা। ইতি বিশ্বঃ।। সন্ধ্যা। ইতি
সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ।।

স্থোত্ৰ ॥

পর্বলা স্ত্রী তোমরাস্ত্রণ ইত্য-মরচীকাবা রাজমুক্ত ।। দন্ত্য-সাদি রপ্যয়ণ ।১

শ্রণী স্ত্রী পার্বতী।ইতি হেমচক্রঃ। দস্তাসাদি রূপ্যয়ণ শব্দঃ
শর্শরীকঃ পুণ হিণ্দুঃ। খলঃ।
ইত্যুণাদিকোষঃ।। অশ্বঃ।। মকলাভরণণা। অগ্রিঃ। ইতি-সণক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ।।

শল ও চলনে ।। স্তৃতৌ । ইতি কবিকল্পক্রমঃ ।। ও শলতে । চ-লনং কম্পঃ। স্তৃতি ব্লিহ্ন সংবরণং । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

শল জ গতो। ইতি কবিকল্প-জনঃ।। জ শালঃ শলঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শল ও ক শ্লাঘে। ইতি কবিকল্প-দ্রুগা ক ও শাল্যতে পণ্ডিত॰ ধীরঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।

শল বেগে। ইতি কবিকল্পদ্রুম্খ।। শলতি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শল° ক্লী শল্পকীলোন। সজাকুকাটা ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যাযঃ।শললী ২ শললং ৩। ইত্যমরঃ।।

শলঃ পুণ শললং॥ ভূঙ্গী॥ কে-ত্ৰভেদঃ॥ ত্ৰহ্মা। ইতি মেদিনী শব্দরত্বাবলো । প্রভাকে । ইতি ত্রিকাওশেষঃ । উফুঃ । ইতি হেমচন্দ্রঃ ৷

শলকঃ পুণ মকটিঃ। মাকড্সা ইতি ভাষা। ইতি জিকাওশেষঃ শলঙ্গঃ পুণ লোকপালঃ।। লবণ-বিশেষঃ। ইত্যুণাদিকোষঃ।। শলভঃ পুণ কীটবিশেষঃ। ফ-ডিণ ইতিপঙ্গপাল ইতি চ ভাষা । তৎপর্যাবঃ। পতঙ্কঃ ২। ইত্য-মরঃ।। পক্রাঙ্কঃ ৩ প্রবাঙ্কঃ ৪ i

নরঃ ৷৷ পত্তাঙ্কঃ ৩ পত্তাঙ্কঃ ৪ i ইতি শব্দরত্বাবলী ৷৷ স তু ঈভি বিশেষঃ ৷ যথা ৷ অতিবৃষ্টি রনা-বৃষ্টিঃ শলভা মূষিকাঃ খগাঃ ৷ প্রত্যাসন্নাশ্চ রাজানঃ যডেতেঃ ঈত্যঃ স্মৃতাঃ ৷৷ ইত্রি জ্যোতি-স্তিত্ব ৷৷

শनन॰ क्री भन॰। ইত্যমরং॥ শननी স্ত্রী भन॰। ইত্যমরঃ॥ শनী। ইতিরাজনির্ঘন্টঃ॥

শলাকা স্ত্রী শল্যণ। মদনবৃক্ষ।

। শারিকা। শল্লকী। ছত্রাদিকাপ্তী। শরঃ। ইতি মেদিনী।
আলেখ্যকূর্চিকা। ইতি হেমচন্দ্রঃ। অস্থি। ইতি শব্দচন্দ্রিকা
লাকাপরি ব্য শলাকাক্রীভাষাণ
পরাজ্যঃ। যথা। অক্ষ শলাকা

সখ্যাঃ পরিণা। দ্যুতব্যবহারে পরাজ্বে এবাব॰ সমাসঃ। অ-ক্ষে বিপরীত বৃত্ত। অক্ষপরি। এবং শলাকাপরি। একপরি। ইতি मिक्का उपने मूमी ॥ यशि ह ানম্বেকস্যাক্ষ্য্য শলাকাষা বা দ্যুতে ২ন্যধাপাতন মিত্যুর্থে অক্ষপরি শলাকাপরি ইত্যব্য-यीजादव श्वाशि खर्या तबाय গৰ্ভদেপি অব্যয় পূৰ্বস্বাভাবাৎ । ইতি শব্দশক্তিপ্রকাশিকা ॥ শলাকাপুরুষাঃ পু॰ বৌদ্ধানা॰ ত্রিষ্ঠিদৈবপুরুষাঃ। তত্র দাদশ চক্ৰবৰ্জিনঃ। চতুৰিশাতি জিনাঃ । নব বাসুদেবাঃ। নব বলদেবাঃ 🔩 েনৰ প্ৰতিবাদুদেবাশ্চ। যথা। যঃ সর্বনগুলস্যেশো রাজসূযঞ যে। ২যজৎ। চক্রবর্তী সার্ধ-ে ভৌম স্তে তু দ্বাদশ ভারতে।। আর্ষভি র্ভরত স্তত্ত সগরস্ত সু-মিত্রভূঃ। মঘবা বৈজ্যিরথাশ্ব-त्मन नृशनकनः ॥ मन १ जन রোথ শান্তি সম্ব রোজিনা অপি। শুভূমস্ত কার্ত্তবীর্য্যঃ প-• घः भट्या खदाषां कः ॥ इति एव-ণে। হরিসুতো জয়ে। বিজয় ন-न्ननः। बन्नमृन् बन्नान्छः मर्दि ए

স্বাস্ব শজাঃ ॥ প্রজাপতা ব্রি षिश्रष्टे। बन्नमख्यः 1 স্বয়ম্ভূ রুজতনয়ঃ সোমভূঃ পু-क़रवाखगः ॥ रेगिविः भूक्विनिः-रहाथ **यहां** मीतः मयूख्यः । স্যাৎ পুরুষ পুগুরীকৌ **দত্তো**-श्रीः मि॰श्ननमनः ॥ नाद्रायत्ना मामत्रिशः क्रकञ्ज तमूरम्तर्जृः। বাসুদেবা অমী ক্লফ নব শুক্লা वना खुभी।। घठतना विकरमा ভত্তঃ সূপ্রভশ্চ সুদর্শনঃ। আন-ন্দো নন্দনঃ পদ্মো রামো বিষ্ণু-দিষ স্থুমী॥ অশ্বগ্রীব স্তারকশ্চ মেরকো মধু রেব চ। নিশুন্ত বলি প্রক্লাদ লক্ষেশ মগধেশ্বরাঃ ।। জিনঃ সহ ত্রিষ্টিঃ স্যুঃ শ-লাকাপুরুষা অমী। ইতি হেম-ठिल ३ ॥

শলাটঃ পু॰ শকটগরিমাণ ।
যথা । তুলা পলশত তাসা
বিশ্বতা ভার আচিতঃ। শকটঃ
শাকটীনশ্চ শলাট স্তে দশাচিতঃ ।। ইতি হেমচক্রঃ ।।
শলাটুঃ ত্রি অপক্ষকল । ইত্যমরঃ ।।

শলাটুঃ পু॰ মূলবিশেষঃ । ই-ত্যুণাদিকোষঃ ।। বিলঃ । ইতি त्राक्षनिर्यन्ते ।। भनारमञ्जाबः प्रः उक्तुः। ইডि रूमनमः ॥

भनान् की मूर्शिक्ष करावित्यवः। इंडि निकां खटको मूमी ॥

भनान्कः जि भनान्ना क्रीठः वस्त । यथा । भनान्ता १ नाठः त्रमाः क्षेत्र माष्ट्र शत्क ठेक् । भनान्कः । भनान्की । भानाः नुकः । भानान्की । भनान् मूगः श्विजवावित्यसः । देठि निकास्यः कोमूमी ॥

भनी छी यम्रमनाकः। ७९পর্যায়ঃ। শলনী ২ খাবিৎ ৩।
অস্য মা॰সগুণাঃ। গুরুত্ব॰। সিশত্ব॰। শীতলত্ব॰। কফ পিত্ত
নাশিত্বঞ্ছ। ইতি রাজনির্বন্টঃ।।
শক্ত॰ ক্রী খণ্ড॰।। বন্ধলং। ইত্যমরঃ।। মৎস্যত্বক্। আঁসি ইতি
ভাষা। যথা। শক্ত স্থ্যাৎ বন্ধ-

ইতি ভরতধৃতকোষঃ।।
শক্ষলং ক্লী নৎস্যবক্ষকং।। বৃক্ষত্বক্ । শলধাতোঃ কলচ্ প্রত্যবেন নিষ্পায়ং। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী।।

লে খণ্ডে শক্ষম্ব মৎস্যবন্ধলে।

भक्की पू॰ मरमाः। ইতি भक्क

রত্নাবলী।। শক্ষী পু॰ মৎস্যঃ। ইতি হেম-চন্দ্রঃ।।

শন্ধদা ৄ স্ত্রী নেদা। ইতিরাণ শন্ধপর্থিকা জনির্ঘন্টঃ।। শন্ত ড কথনে। ইতি কবিকর-জনঃ। ড শন্তত। কথনণ প্র-সম্পা। ইতি দুর্গাদাসঃ।। শন্মলী স্ত্রী স্পান্মলিবৃক্ষঃ। যথা। শন্মলী স্ত্রী স্পান্মলিবৃক্ষঃ। যথা। শন্মলী স্ত্রী স্পান্মলিবৃক্ষঃ। যথা। লিশ্চ শান্মলী শন্মলী তথা। ইতি ভরতদিরূপকোষঃ।।

मताः की एक ।। हेवृः॥ एक ।

स्वाः। हेि प्रितः॥ पूरमहः॥

पूर्वाकाः। हेि विश्वः॥ पूरमहः॥

पूर्वाकाः। हेि विकाश्वरम्यः॥

श्रांकाः। हेि विकाश्वरम्यः॥

श्रांकाः। हिं विकाश्वरम्यः॥

श्रांकाः। हिं विकाश्वरम्यः॥

श्रांकाः। स्वाः। स्रथं मत्नाः स्वाः

विशः। स्वाः। स्वाः का स्वाः

श्रांकाः। स्वां श्रांकाः। स्वाः

श्रांकाः। स्वां श्रांकाः प्रमानाः।

श्रिं श्रिं श्रिं हिं देवविषः मत्यः

श्रां श्रिं श्रिं हिं हिं विविषः स्वाः।।

श्रिं श्रिं श्रिं हिं श्रिं हिं स्विः।।

श्रिं श्रिं श्रिं श्रिं हिं स्विः।।

श्रिं श्रिं स्वाः।

র্য্যো যত্নতো ২থ বা। ক্রমাৎ পুজাগগাদেব ফলানা ত্রান্ধ-ণাদিতঃ।। প্রণবো ধরণী ধারিণী করে। চ তদন ন্তরং। ন ভূত্যৈ নম ইত্যেষ মন্ত্রো বক্লিপ্রিয়াস্ত-कः ॥ रङ्गिथिया स्वारा । मरख-ণানেন কঠিনী মভিমন্ত্র্য বিভা-জ্বেৎ ৷ নবধা সদনক্ষেত্ৰণ তথা 🍴 পশ্চাদ্বিলেখযেৎ ৷৷ ব ক চ ত এ হাঃ শ গ যা নব চেৎ প্রশাক্ষ द्रापि कार्यस्य। आगामि कार्य नव्यक् वर्षा एक नेना माथाछि া৷ প্রমে বকারঃ পুরতো নরান্থি खवीजि भनाः मज्ञकथानायि । কৌণীশদভোরগহেতুমৃত্যুপ্র-कः ककात्रः थत्रमन्त्र यटभो ॥ यागा॰ ठकातः भ्रवगान्रि विश्व প্রভো বিনাশ প্রকরোতি শ-ेनाः । त्रक्तामिनि शास्त्रि गृङ्खि-তানা নহন্তব বক্তি সুনিশ্চি-छ॰ छः ॥ धः भागिमिमाञ्चि नि-শোৰ্ত্তবীতি মৃত্যু প্ৰবাসাদাৃহ 'মেক শল্য॰ । হো বাযুকোণে नत्रक्र मन्द्रि मात्रिका मिळ क्य क्रिष्ठि ।। धनंशिमि गकातः প্রাহ বিপ্রাস্থি বিত্ত ক্ষমক্রদথ প-কারো বক্তি ঋক্ষান্তি শস্তৌ। ত-

দিহ স্বলবিনাশ গোধনানাঞ্চ হানি বিতরতি গৃহনাথস্যাপি গুপ্তস্য দেবৈঃ ৷৷ যো মধ্যভাগে ভসিত কপাল কালায়ন চাই क्लक्याय। यञ्जाम्भानाधः না প্ৰমাণ সৰ্বত্ৰ তথ্য কথ্যা-भि भरना ॥ रेख द्रक्त जलन भारन भनाः मार्क करत करही। वङ्गाञ्चक ऋरवरत्रषु शूक्रस्य मधा বাতযোঃ॥ দেবীপুরাণ । পুরু-ষাধঃ স্থিত শল্য ন গৃহে দো-यमः ভবে९। প্রাসাদে দেখিদং শল্যুণ ভবেদ্যাবজ্জলান্তকণ ॥ গৃহারত্তেতিকণ্ডূতিঃ স্বান্যক্ষে য-मि जायरा । गला प्रभनरयं छ-ত্ৰ প্ৰাসাদে ভবনেপি বা ।। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব॰ ॥ 🕸 ॥ সপ্তশল্যা-নি যথা। নূপো ন হরি সেবকো वायधाना न क्रकार्शकः कवि न মুরজিৎ কবিঃ শ্রুতগুরু র্ন স-দ্বৈক্ষবঃ। শুণী ন ভগবৎপরে। রসিকধী ন ক্লফাশ্রয়ঃ স ন ব্রজ্ব জনাৰীগো জগতি সপ্তশল্যানি চ।। ইতি পাদ্মোত্তরখণ্ডে ১০০ व्यक्षायः ॥

শল্যঃ পু॰ মদনবৃষ্ণঃ।। শ্বাবিৎ । ইত্যমরঃ।। নৃপভেদঃ। স তু যুধিন্তিরমাতৃলঃ ।। সীনা ।। শলাকা। ইতি হেনচন্দ্রঃ ।। বিল্ববৃক্ষঃ ।। মৎ স্যভেদঃ । ইতি রাজনির্ঘণটঃ ।। য়ঃ ।। শল্যনিঃসরণৌষধং যথা। রুজ লাক্সলিকামূলং হিজ্জলস্য তথৈব চ।তেন
ত্রণ মুখং লিপ্তং শল্যে। নিঃসরতিরণাৎ ।। চিরকাল প্রবিষ্টোপি তেন মার্গেণ শক্ষর । ইতি
গারুডে ১৯৩ অধ্যাধঃ ।।

শল্যঃ পুণক্লী শস্ত্রবিশেষঃ। শেল ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। শৰুঃ ২ ৷ ইত্যমন্ত্রঃ ৷৷ দীর্ঘাযুধঃ ৩ শলঃ ৪ সম্ভঃ ৫ বিসান্ধুরঃ ৬ ৷ ইতি ত্রিকাপ্তশেষঃ ৷৷

भनाकः पू॰ भन्नतवृकः। ইতি । শব্দরত্বাবলী ।। শলকীজন্তঃ। ইতি রাজনির্ঘণীঃ।।

শল্যকণ্ঠঃ পু॰ শল্লকী। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।।

भन्यताम^{म्} क्षी भन्नी। इंडि ताजनिर्यन्धः॥

শল্যারিঃ পু॰ যুধিষ্ঠিররাজঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।

শল গত্যা । ইতি কবিকল্পক্রমঃ

। শলকী । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

সৌত্রধাতুর্য ।।

শল° क्षी प्रक्। ইতি শব্দর্জা-बन्धी।।

শলঃ পু॰ ভেকঃ। ইতি শব্দরত্না-বলী।৷

শল্লক॰ ক্লী স্বক্। ইতি শব্দরত্বা-বলী।।

শল্লকঃ পু॰ শোণবৃক্ষঃ। ইতি জটাধরঃ॥

শলকী ন্ত্ৰী পশুবিশেষঃ।শজারু ইতি बन्नভाষা। সাহিল ইভি হিন্দীভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। শ্বা-বিৎ ২ শলকা ৩ শল্যঃ ৪। ইতি জটাধরঃ ॥ ক্রকচপাদঃ ৫ ছে मातः ७। इंछि শব্দরত্বাবলী।। শল্যকঃ ৭ শল্যমৃগঃ ৮ বজুশ-बाः २ विलि**ग**यः 🎾 । अन्या माण्म खनाः। मलामामः खङ् মিশ্বং শীতলং কক্ষ পিত্তজিৎ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। ভাবপ্রকা-শোক্ত গুণাঃ বিলেশ্যশব্দে ড-खेरााः ॥ वृक्षवित्यसः । ७९-পৰ্য্যায়ঃ। গজভক্ষ্যা ২ সুবহা ৩ সুরভিঃ ৪ রসা ৫ মহেরণা ৬ अन्तूक़की १ इामिनी ৮। ইত্য-মরঃ।। গজভক্ষা > সুরভী ১০ गटरूक्रण ३३ गरात्रण ३२ हानि-नी ५० मिलकी ५८ महाकी ५८ ।

ইতি ভরতঃ ॥ সুরভীরসা ১৬ শিল্লকী ১৭। ইতি টীকাস্তরণ ॥ সিত্রকী ১৮ সিত্রভূমিকা ১৯। ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ অশ্বসূত্রী ২০স্প্তী ২১। ইতি জটাবরঃ ॥ শূলকীদ্রবঃ পুণ সিত্রকঃ। ইতি জটাবরঃ ॥

শল্বঃ পু॰ শাল্পদেশঃ। ইত্যুণাদি-কোষঃ।।

শব বিকারে ।। গতে । ইতি কবি-কল্পজনঃ ।। শবতি চিত্ত • কামঃ । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

गवः की जनः। ইতি মেদিনী।।
गवः प्रः की मृठमतीतः। তৎপর্যায়ঃ। জনপঃ ২। ইত্যমরঃ।।
ক্ষিতিবর্দ্ধনঃ ৩। ইতি শক্ষরত্বাবলী।। মৃতকং ৪। ইতি বরাহপুরাণং।। ৠ।। তদ্দাহবিধি র্যথা
। নন্ধ সংজ্ঞা সমৃদ্দিশ্য জ্ঞাত্বা
মৃত্যুবশং গতং মমৃদ্দিশ্য জ্ঞাত্বা
মৃত্যুবশং গতং মহাবনস্পতিং॥
মৃত্যুবশং গতং মহাবনস্পতিং।
মৃত্যুবশং গতং মহাবনস্পতিং।
মৃত্যুবশং গত্যুবা ব্যাবাহনং
মৃত্যু স্থাপনং তৃদ্যু কার্যেৎ।।

गरामीनि।

শিলোচ্চযাঃ। সরুকেত্রঞ্গ গঙ্গা চ ষমুনা চ সরিবরা ।। কৌশিকী চ পযোষ্ণী চ সৰ্বপাপ প্ৰণাশিনী । গণ্ডকী ভদ্রনামা চ সরযূ র্বল-मा उथा ।। **दनानि नव वा**ताहर তীর্থণ পিন্ডারকণ তথা। পৃথিব্যাণ যানি তীর্থানি চম্বারঃ সাগরা স্ত-থা।। সৰ্বাণি মনসা খ্যাত্বা স্নান মেৰম্ভ কারষেৎ।প্রাণাদ্যাতম্ভ ত॰ জ্ঞাত্বা চিতা॰ ফুত্বা বিধানতঃ ॥ তস্যা উপরি ত স্থাপ্য দক্ষিণা-ত্র॰ শির স্তথা। দেবাননি মুখান ধ্যাত্ব। গৃহ্ছ হস্তে হতাশন ।। প্র-জ্বাল্য বিধিবত্তত্ৰ মন্ত্ৰ মেতদুদীর-यर १ क्रव। मृपूषत कर्म जान-তা বাপ্যজনতা ॥ মৃত্যুকালবশ॰ প্রাপ্য নর পঞ্চত্ব মাগতঃ। ধর্মা-ধৰ্ম সমাযুক্তা লোভ মো**ছ স**-মাবৃতঃ॥ দহ এতস্য গাত্রাণি দে-বলোকাষ গচ্ছতু। এব মুজুৰ ততঃ শীঘুণ ক্বন্ব। চৈব প্রদক্ষিণ ।। ত্বলমান তদা বহিং শিরস্থানে প্রদাপয়েৎ। চাতুর্বর্ণেষু সংস্কার বেব॰ ভবতি পুত্ৰক॥ গাত্ৰাণি বা-সসী চৈব প্রখ্যাল্য বিনিবর্ত্তযেৎ । নৃতনাম ততোদ্দিশ্য দদ্যাৎ পি-

। খে ৰহীতলে ।। তদ। প্ৰভৃতি চা-শৌচ দৈবকৰ্ম ন কারবেৎ। ইতি বারাহে শ্রাদ্ধোৎপত্তি নামাধ্যা-यः॥ जनाद मारु भरक प्रकेवा॰ ॥ 🛊 ॥ छमा न्यान (मार्स) यथा। বারাহ উবাচ। স্পৃষ্টা তু মৃতক ভজে নর॰ পঞ্জ মাগতং। মম-শাস্ত্ৰ ৰহিঃ ক্ৰম্বা যঃ শ্বানাৰ প্ৰ-পদ্যতে ॥ পিতর স্তদ্য সুশ্রোণি আত্মান্ধ পিতামহাঃ। স্বাশানে জয়ুকা ভূত্বা ভক্ষযন্তঃ শবাণ স্ত-থা।। ততো হরে ৰ্বচঃ শ্রুত্বা কর্ম-কামা বসুশ্বরা। উবাচ মধুর বা-ক্য॰ সৰ্বলোক হিতাম বৈ ॥ ধর-পুৰাচ। তব নাথ প্ৰপন্ধানা॰ क-পাপ॰ বিদ্যুতে প্রভো। প্রাযক্চি-ত্তঞ্চ মে ব্রাহ্ যেন সূচ্যতি কিন্ত্রি-ষাৎ।। বারাহ উবাচ। শৃণু সুন্দ-রি তত্ত্বেন যমাণ ছণ পরিপৃচ্ছসি। ক্থবিষ্যামি তে হীদে শোভন পাপনাশন ।। একাহার দিনান্ সপ্ত ত্রিহারণ চাপ্যুপোষিতঃ। পঞ্চাব্য ততঃ পীত্বা শীদ্র মুক্ত্য-তি কিল্বিষাৎ।। শবে স্পৃষ্টে ২প-রাধস্য এষ তে কথিতো বিধিঃ ৷ সৰ্বথা বৰ্জনীয়ো বৈ সৰ্বভাগব-তেন তু ৷৷ য এতেন বিধানেন

थायनिष्ठः भगावत्त्रः। विमुक्तः সৰ্বপাপেড্যো অপবাধোন বিদ্যা-তে।। 🛊 ।। जिंग है। वदाई खेवाह । म्यृक्वे। जू मृष्ठकः प्रिति स्था प्रथ ক্লেত্রেযু ভিষ্ঠতি। শত বর্ষ সহ-সু। ণি গর্ভেষু পরিবর্ত্ততে ॥ দশ-वर्ष मश्त्राणि छलान देन्हव काय-তে। অন্ধঃ মপ্ত মহসু। গি মণ্ডুক-শ্চ শত॰ সমাঃ।। মক্ষিকা ত্রীণি वर्षानि विकिटेङकामन् नमाः । एग देव मुख होना। नि क्रकणात्मा-**ज्दर् मगाः। रङी वर्षभञ्देशव** খরো দাত্রিংশকো ভবেৎ ৷৷ মা-क्लाद्भा नव वर्षानि वानद्वा मन अश है। अव म हा ब्रह्मात्वन अभ कर्या भन्नायनः॥ आद्यां कि मूगर-ष्मूश्यः प्रिति अवः न मःभवः। छ-তো হরে র্মচঃ শ্রুত্বা দুংখেন পরি-পৃচ্ছতি ।। সর্ব সংসার মোকাষ প্রত্যুবাচ বসুদ্ধরা। কি সিদ ভা-यत्म (प्रव मानुषांगाः मूत्रांभाः ॥ বাক্যুণ ভীষণক ক্ষেব মন কর্ম প্র-ভেদক । আচারাচ্চ পরিভূষ্ট स्वतं कर्याणद्वायवः ॥ छद्रस्थि द्यन मूर्गानि आयुन्हिखः छपा तमः। শ্রুদা প্রা প্রতো বাক্য লোক-नार्था जनार्मनः॥ धर्म मःत्रकः

ণার্থায় প্রত্যুবাচ বসুন্ধরা । বা-রাহ উবাচ। স্পৃষ্ঠা তু মৃতক॰ ভূমে মম কর্মপরায়ণঃ ॥ একা-शतः ७७ खिछि । मिनानि मन-পঞ্চ। তত এবং বিধিং ক্লুত্বা পঞ্-গব্যু প্রাশ্যেৎ ম শুদ্ধভাব বিশুক্ষাত্মা কৰ্ম্মণা চ ন লিগ্যতে। এতত্তে কথিত দেবি পৃষ্টা মৃত-क स्मव ह ॥ मायदेश्व विवृक्षाथ यद्या शूर्व शृष्ट्र । य এर उन বিধানেন প্রাযশ্চিত্ত সমাচরেৎ ॥ অপরাধ বিনিমু ক্তো মম লো-ক॰ স গচ্ছতি। ইতি বারাহে মৃত-দর্শন স্পর্শন প্রায়শ্চিত নামা-शायः ॥ 🛊 ॥ भवानुगमनात्मी हः ৰপা। কৃৰ্মপুরাণ । প্রেতীভূত দ্বিজ বিপ্রো যোনুগচ্ছতি কাম-তঃ ৷ শ্বাদ্বা সচেল প্স্ফুনিরি ঘৃত প্রাশ্য বিশুদ্ধাতি।। একাহাৎ कविरय शिक्ष दिवंत्गा ह मा। षाट्न जू। भूट्य मिनवय (थी-ক্তম প্রাণাষামশত পুনঃ।। এতচ্চ ষ্তপ্রাশন শুদ্ধিহেতু সামি ষম **शतुः। न जू প্রায**িচত্তবন্তো-জনাভাবপর । তত্ত্ব তপস্থাত্ত-था। जनुः महार्थः। यखु योखः-বন্ধ্যবচন । ত্রান্ধণেনানুগস্তব্যো

ন তু শৃদ্রঃ কথঞ্চন। অনুগম্যাম্ভ সি নামা স্থামী কিং মৃতভুক্ খ-চিঃ॥ তৎ প্রমাদাদৃনুগমনে কথ-ঞ্নেত্যভিধানাৎ। অন্তদি ন তূ-*फ्*তোদকে।। **#**।। শূদ্ৰস্য ব্ৰান্ধণ भेव दहरन मिरिया यथा। मृज ৰান্ধণদেহাত্ৰত দৈবাৎ শূড়া ব-হিন্তি চেৎ। পদ প্রমাণ বর্ষঞ্চ তে-ষাঞ্চ নরকে স্থিতিঃ।। তত স্তেষা-ঞ্চ সাহাষ্য• করোতি হব্বিৰূপিণী া দদাতি মুক্তিণ তেভ্যোপি ক্রমেণ চ ৰুপাম্যী।। জন্ম পুণ্যবতা পো-হে কারবিদ্বা চ ভারতে । স্থান দদাতি বৈঙ্গপ্তে নিশ্চিত জন্মভি স্ত্রিভিঃ। ইতি ত্রন্ধবৈবর্ত্তে শ্রীক্ষঞ क्रम्यंथर ७ ८८ व्यक्तायः ॥ 🗱 ॥ শ्व দৃষ্ত গৃহ জলাশযাদীনা শুদ্ধি র্যথা। ব্রহ্মপুরাণ । যেষা মভক্ষ্য । मा॰मक्ष छष्ट्रतीरेत यूं उक्ष य । वाशी कृश उजारभयू जन मर्बेश **मूया** ।। जरूतीरेत म् जनतीरेतः । উত্তর বচনে স্বণপ গ্রহণাৎ। यथा। मञ्रनभः मकर्तमः তেভ্য স্তোয মপাস্য তৎ । প্রক্ষিপেৎ পঞ্চাব্যঞ্চ সমন্ত্ৰণ সৰ্বশুদ্ধি ক্লৎ ৷৷ অপাস্য স্বণপ তেভ্যো বহুতো-যেভ্য এব বা। শত॰ ষষ্ট্যথ বা

ত্রি॰শৎ তোঁষ সম্ভান্ সমুদ্ধরেৎ॥ বাপী মসোপানা। নিঃসোপানঃ কূপঃ। তডাগঃ পদ্মাকরঃ। শতা-দি জলান্নস্থাদ্যপেক্ষ্যা অত্যন্নস্য সর্বোদ্ধারণাভিধানাৎ। এবং ম-রণ সমযে গৃহান্ধিঃসার্য্যতে অ-नाथा गृहमा मूकेठा मा। १ यथा বৃহম্মনুঃ। শ্ব শূজ পতিতা শ্চাস্ত্য। মৃতা শ্চেদ্ধিজমন্দিরে। শৌচ° তত্ৰ প্ৰবন্ধ্যামি মনুনা ভাষিত যথা।। দশরাত্রাচ্ছনি প্রেতে মা-সাচ্ছদ্ৰে ভবেচ্ছ্চিঃ । দ্বাভ্যাম্ভ ॥ পতিতৈ গেহে অস্ত্যে মাসচতু-ক্টবাৎ।। অত্যন্ত্যে বৰ্জবেদোহ মিত্যেবং মনু রব্রবীৎ। দ্বাভ্যাং মাসাভ্যা॰ মাসসন্দ**্দ পাঠা**ৎ। অন্ত্যো শ্লেচ্ছঃ। অত্যস্ত্যঃ শ্বপা-কঃ। ইতি বাচস্পতিমিশ্রাঃ। যমঃ চ দিজস্য মরণে বেশা বিশুদ্ধাতি দিনত্রযাৎ। দিনৈকেন বহিভূ-মি রগ্নি প্রোক্ষণ লেপনৈঃ।। 🟶 ॥ যথোক্ত কালানম্ভর কর্ত্তব্য মাহ সম্বর্তঃ। গৃহশুদ্ধিণ প্রবক্ষ্যামি অ-স্তস্থ শবদূষিতে। প্রোৎসৃজ্য মৃ-ন্ময়ণ পাত্রণ সিদ্ধমন্নণ তথৈব চ।। গৃহাদপাস্য তৎ সর্বণ গোম্যে-त्नाभटनभटम् । (भागरयरना-

পলিপ্যাথ ছাগেনায়াপ্ৰেৰুধঃ ৷৷ ৰান্ধণৈ ৰ্যন্তপূতৈশ্চ হিরণ্য স্প-বারিভিঃ ৷ সর্ব মভ্যুক্ষযেদ্বেশ্য ত-তঃ শুদ্ধাত্যসংশ্যঃ ৷৷ অত্ৰ মন্ত্ৰা-नांतित्म गायवी। तिवनः। शकः-ধা বা চতুর্ধা বা ভূ রমেধ্যা বিশু-দ্ব্যতি। দুকী দ্বিধা ত্রিধা বাপি শু-कार्ड मिन्टिनकशा ।। महनः थ-নন॰ ভূমে রুপলেপন বাপনে। পর্য্যণ্য বর্ষণঞ্চাপি শৌচণ পঞ্চবি-ধ॰ স্মৃত॰ ॥ প্রসূতে গর্ভিণী যত্র সূ্ৰিতে ৰত্ৰ মানুষঃ। চণ্ডালৈ ৰ-বিত ষত্র ষত্র বিন্যস্যতে শবঃ। বিমূত্রোপহত যচ্চ স্বণপো যত্র দৃশ্যতে।। এব॰ কশালভূষিষ্ঠা ভূ-রমেধ্যাতিকথ্যতে। ক্রমি কীট প-मत्करेश मृ विञा यदा त्यमिनी ॥ এপাযা কৰ্ষ গৈঃ কিপ্তা বাস্তৈ ৰা দুষ্ঠতা॰ বজেৎ। নখ দন্ত তনুজ-ত্বক পাণ্শু রজো মলৈঃ।। ভত্ম পঙ্ক তৃণৈ ৰ্বাপি প্ৰচ্ছনা ম-लिना ভবে९। वाशनः मृषखद्रव পূরণ । উষিত বাসঃ। এপ্সা ঘ-नीं ज्ञामानि । ठञ्काति १-ঞ্চানা॰ মধ্যে যথাসম্ভব॰ গ্রহণ । অঙ্গিরাঃ। শৌচ॰ সহসুরোমা-ণা॰ বাষুগ্যকেন্দুরন্মিভিঃ। রেত-

স্পৃষ্ট শবস্পৃষ্ট মাবিক নৈব দুয়াতি ৷৷ সহসু রোমাণা কম্ব-লানাং। ইতি শুদ্ধিতত্ত্বং।। শবকাম্যঃ পু॰ সন্ধুরঃ।ইতিশ-सत्रशावनी ॥ नवशनः क्वी नववहनार्थथछ।। মডারখাট ইতি ভাষা। তৎ-পर्यग्रयः । कार्ष्ठमलः २ । ইতি হারাবলী।। খোটঃ ৩ খাটী ৪ খাটিকা ৫ শবর্থঃ ৬। ইতি नकत्रवावनी ॥ শবরঃ পু॰ ম্লেচ্ছজাতিবিশেষঃ। ইত্যমরঃ ৷৷ মযুরপুচ্ছপরিধানে ম্লেচ্ছঃ কিরাতঃ। পত্রপরিধানঃ শবরঃ। ইতি তট্টীকাষাণ ভরতঃ ।। পানীয় ॥ শিবঃ। ইতি মে-पिनौ ।। শाञ्जितित्मसः ॥ रुङः । ইত্যুণাদিকোষঃ॥ শ্বরথঃ পু॰ শ্ব্যান । ইতি শ্-यत्रवावनी ॥ শবরলোধুঃ পু॰ শ্বেতলোধুঃ। ইতি রত্নমালা।। শবরালযঃ পু॰ শবরগৃহণ তৎ পর্য্যায়ঃ। পঞ্জণঃ ২। ইত্যমরঃ॥ পরুণঃ ৩। ইতি শব্দরত্নাবলী।। শ্বরাবাসঃ ৪। ইতি হেমচন্দ্রঃ।

শ্বরাবাসঃ পু॰ শ্বরাল্যঃ। ইতি 🏻

ट्यह्यः॥ শবলঃ পুণ কৰ্বুরবর্ণঃ। তদ্বতি ত্রি । ইত্যমরঃ ॥ শবলা / স্ত্রী শবলবর্ণা গৌঃ। ইত্য-শবলী 🖣 মরভরতৌ ॥ শ্বসানঃ পু॰ পথিকঃ। ইতি निकाखरको भूमी ॥ रेविषक श-দোষণ। শ্বধাতো রৌণাদিক সানচ্ প্রত্যবেন নিম্পন্নঃ।। শশ প্রবনে। ইতি কবিকল্পড় মঃ ।। ननी ननि छनीः ननप्रिष्ठि কিরাত যমকাৎ। শশক্তি ভেকঃ প্লবনেন গচ্ছতীত্যর্থঃ । তৃফল **७** रेंंग्रब रर्ज्जन मरेंग्रव । দন্ত্যান্তোষ মণীত্যেকে। ইতি मूर्गामामः ॥ मानः भू॰ मृगवित्मयः। मानाऋ ইতি ধরগোশ ইতি চ ভাষা। ইত্যমরঃ।। অস্য মাণ্স গুণাঃ। স্বাদুত্ব । ক্যাযত্ব । মলবদ্ধকা-तिष्र । गीठलष्र । लघूष्र । ला-থাতীসার পিন্ত ব্লক্ত নাশনত্বণ। ৰক্ষত্বক । ইতি রাজবল্পভঃ।। অপি চ। শশমাণসং ত্রিদোষম্ব দীপন• শ্বাসকাসনুৎ। ইতি রা-জনির্ঘণ্টঃ॥ অন্যচ্চ। শশঃ শৃ-লী লোমকর্ণো বিলেশয়ং প্রকী-

ৰ্ত্তিতঃ। শশঃ শীতো লঘু ৰ্ত্ৰাহী ৰক্ষঃ স্বাদুঃ সদা হিতঃ ॥ বহি-ক্লৎ কফ পিত্তমো বাত সাধার-ণঃ স্মৃতঃ। স্বরাতীসার শোষাসু শ্বাসাম্য হরশ্চ সঃ ৷৷ ইতি ভাব-প্রকাশঃ।।ঞ্জা প্রাদ্ধে ২স্য মাণ-मना मान कल° यथा। इविसा-মেন বৈ মাসং পাষ্যেন চবৎ-সর । মাৎস্য হারিণকৌরভু भाक्ति क्लांग शार्ष रेजः॥ खेन রৌরব বারাহ শালৈ র্মাণ্টেম র্য-থাক্রমণ। মাসবৃদ্ধ্যাভিতৃপ্যস্তি मर्खित्नर् शिठामशः ॥ रेठि শ্রাদ্ধতত্ত্ব° । । # ।। বিক্ষবে এত-न्या॰ममा प्लयद्व॰ यथा । यार्ग॰ মাণ্সণ তথা চ ছাগণ শাশণ সম-নুযুজ্যতে। এতানি হি প্রিযাণি मुगः थरगाङ्गावि वमुन्नदत्त ॥ ইত্যেকাদশীতত্ত্ব॰ ৷৷ 🟶 ৷৷ চন্দ্ৰ-লাঞ্নঃ। ইতি ধরণিঃ।। বোলঃ ।। त्नार्षः ॥ मन्यावित्ययः । ইতি মেদিনী ॥ স তু চতুর্বিধ-পুরুষান্তর্গতপুরুষবিশেষঃ। ত-मा नक्ष यथा। मृमूराज्य मूनी-লঃ কোমলাকঃ সুকেশঃ সকল-গুণবিধানঃ সত্যবাদী শশোষ । ইতি রতিমঞ্জরী।।

শশকঃ পু॰ শশঃ। যথা। শশকঃ भलकी रगाश थन्त्री कृर्यम्छ श-খনঃ। ভক্ষ্যাঃ পঞ্চনখেৱেতে ন ভক্যা শ্চান্যজাত্যঃ ৷৷ ইতি স্মৃতিঃ ৷৷

ममधतः प्र हिन्दः ॥ कपू तः । ইত্যমরঃ ॥

শশপ্পুতক ক্লী নথাযাতঃ। ইতি गक्याला ॥

শশভূৎ পু: চক্রঃ। ইতি হেম-11

শশভূত্তঃ পুণ শিবঃ। যথা। ,আত্মান যোগনিজ্ঞাঞ্চ চিস্তবি-ष। मनविनी। पक्टिए व भन्नीत-স্য ভাগার্দ্ধ শশভূজুতঃ।। ইতি कालिकाभूतात्व ८८ व्यशायः ॥ শশলোম ক্লী শশকস্য রোম। তৎপর্যাयः। শশোর্ণ ২। ই-ত্যমরঃ ॥

भभविन्दुः भू॰ विक्रा ताक्वि-लियः। ইতি यिनिनी।। म जू চিত্ররথপুক্রঃ। ইতি পুরাণং॥ শশশিষিক। স্ত্রী জীবন্ডী।ইভি वाजनिर्घणः॥

भगरनी **खी अ**खर्रिनी। हेि ত্রিকাওশেষঃ॥ সাচ গঙ্গা বসু-नत्या र्यशालनः। अथूना ला-

আব ইতি নামা খ্যাতঃ ।।
শশাক্ষঃ পুং চন্দ্রঃ। ইতি হলাবুধঃ
।। কপূরঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।
শশাঙুলিঃ স্ত্রী কর্কটাভেদঃ।
তৎপর্য্যায়ঃ। বহুফলা ২ তণ্ডুলী
৩ কেত্রসম্ভবা ৪ ক্ষুদ্রামা ৫ লোমশফলা ৬ ধূমা ৭ বৃত্তফলা ৮।
অস্যা গুলাঃ। শশাগুলী তিক্ত
কটুশ্চ কোমলা কটুমবুক্তা মধুরা কফাপহা। পাকে তু সামা
মধরা বিদাহক্রৎ কফে তু শুকা
ক্রিক্ট দীপনী ।। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শশामः पु॰ শ্যেনপকী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শশাদনঃ পু• শ্যেনপক্ষী।ইত্য-মরঃ।

শশিকলা ত্রী পঞ্দশাক্ষরপাদक्रम्पादिশেষঃ। যথা। গুরু নিধন মনু লঘু রিহ শশিকলা।
মলষজ তিলক সমুদিত শশিকলা ব্রজযুবতি লসদলিক গগনগতা। সরসিজ নযন হৃদ্য'
সলিলনিধিং ব্যতনুত বিতত রভস পরিতরলং ২। ইতি ছম্দোমঞ্জরী।।
শশিকান্তঃ ক্লী সমুদং। ইতি,

শশিলে

রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷

শশিকান্তঃ পু• চন্দ্রকান্তমণিঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শশিদেবः পু॰ রস্তিদেবः। ইতি শব্দরত্নাবলী।।

गिमिश्रकः पृ॰ जलाउँ पूर्त ताकः।
यथा। उठः गिमिश्रका ताका
यूकामार्य पूल्यान्। मूगाञाया मिठि॰ तूथा तमा॰ প্রাদাৎ স
कল্কষে ॥ বিশাখরূপ ভূপাশ্চ
कृषिताश्रम्घ म॰ यूग॰। गयग्रकः।
वेठि कित्र पूर्ता तान्थ प्रमायग्रः॥
वेठि कित्र पूर्ता तान्थ ए अग्रायशः॥
वेठि कित्र पूर्ता तान्थ ए अग्रायशः॥
विभावा ।। यूका। वेठि ताकनिर्य नेऽ।। हम्म প্রভা यूक्त वि।।
गिमिश्र जी क्रिग्र वि।।
विभावा जी क्रिग्र वि।।
विभावा जी क्रिग्र वि।।
विभावा जी क्रिग्र वि।।

শশিভূষণঃ পু॰ শিবঃ। ইতি শ-শিশেখরশব্দ দর্শনাৎ।।

শশিলেখা স্ত্রী চম্রকলা ৷৷ গুড়চী ৷৷ বৃত্তভেদঃ ৷ ইতি মেদিনী
৷৷ তদৃত্তস্য লক্ষণাদি যথা ৷ মৌমো যৌ চেৎ ভবেতা সপ্তাফকৈ শচম্রলেখা ৷ বিচ্ছেদে তে
মুরারে পাণ্ডু প্রকাশা রুশাসী
মানচ্ছায়ণ দুকুলণ ন ভ্রাজতে

বিভূতী সা। রাধান্তোদস্য মধ্যে
লীনা যথা চন্দ্রলেখা কিঞ্চার্তা
দ্বাণ অরন্তী ধত্তে গ্রুবণ জীবযোগণ।। ইতি ছন্দোমঞ্জরী ।।
শশিবাটিকা স্ত্রী পুনর্ণবা। ইতি
রাজনির্ধন্টঃ।।

শশিশেখরঃ পু॰ শিবঃ। ইতি হলাযুধঃ ॥ বুদ্ধভেদঃ। তৎ-পর্য্যাযঃ। হেরয়ঃ ২ হেরুকঃ ৩ ঢক্রসম্বরঃ ৪ দেবঃ ৫ বজুকপা-লী ৬ নিশুম্ভী ৭ বজুটীকঃ ৮। ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥

শশী পুণ চন্দ্র: যথা হিমাণ্ড শচন্দ্রমা শচন্দ্র: শশী চন্দ্রো হি-মদ্যুতিঃ। ইতি ভরতগৃত শব্দা-র্ণবঃ।। অর্হন্ধুজাবিশেষঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

শশোর্ণ ক্লী শশস্য লোম। ইত্য-মরঃ ।।

শশ্বৎ ব্য পুনঃপুনঃ। ইত্যনরঃ॥

শয বধে। ইতি কবিকল্পদ্রুমঃ॥ শহতি। ইতি দুর্গালাসঃ॥

শঙ্কুলঃ পু॰ ডিজিঃ। ডরকরম্চা ইতি ভাষা। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

श्व कावा। श्व भक्ता सका सका ।।
भक्र्नी खी किन ब्लूज पायि शिक्ष क्यता थाः। श्वि भक्त सक्तिका ।। कर्न तक्षुः। श्वि भक्त तक्षावनी ।। নৎস্যভেনঃ। সৌরী ইতি হিশীভাষা। অন্যা গুনাঃ। শস্কুলী
গ্রাহিনী হল্যা মধুরা তুবরা ম্যৃতা। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।
শঙ্গা ক্রী বালতনং। ইতামবঃ।।

শব্দ ক্লী বালভূণ ইত্যমর ।।
প্রতিভাহানো পুণ ইতি মেদিনী
শস উ বধে। ইতি কবিকল্পদ্রনঃ
।। উ শসিদ্বা শস্ত্যা। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শস ই জ আশিষি ৷ আঙ পূৰ্ব-কো ২য়ণ ৷ ইতি কবিকল্পক্ৰমঃ ৷৷ ই আশংস্যতে ৷ জ আশংসতে ৷ আশী রিফার্থশংসনং ৷ ইচ্ছায়া মিত্যন্যে ৷ ইতি দুর্গাদাসঃ ৷৷

শসন° ক্লী ষজ্ঞার্থপশুহনন° ৷ ইতি শমনশব্দটীকাষা° রামা• শ্রমঃ ৷৷

শক্ষুলী ন্ত্ৰী পিষ্টকবিশেষঃ।
পুলিপিটা ইতি ভাষা। অস্যা
গুণাঃ। পৰ্পটা লয়বো ৰক্ষাঃ শফুল্যঃ কফ পিত্তলাঃ ঞ্ছা কাঞ্জিকুমুক্ততিলশীকুলী ত্যাজ্যা যথা
। মাণসৈ রিক্ষু বিকারাণশ্চ কাগ্রিটক স্তিলশাকুলীণ। মূলকণ
মাযস্পেন মধুনা চন

शायम शूल मक्ती क्रमंत्र मधा-व निगु लाश्ठिन्कनियामाल-श्रथ्यनाना छक्तत काम्छ छा द्राथवामः। खकामछ छपकः। क्रिवामिनाः शाप शापशानिः। हेि श्रायिक्छितित्वकः॥ भेख हे त लू स्रक्ष। हेि कित-क्रिक्रमः॥ हे मे छाटा न मधा शाटिशि नमा छेश्यद्वाजावाः लाशाजात हेपन्त्रका त्रप-मूकात्र एजपर्थः। लू मे छि। त तिपिकः। हेि पूर्शापामः॥ भेखः क्री कन्यानः। हेन्यमतः॥

শরীরণ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

া ইত্যমরঃ ।। প্রশস্তঃ । ইতি 🛚

শस्यः वि कन्यानयूकः॥ स्रठः

নেদিনী।।
শস্তক ক্লী অঙ্গুলিত্রাণ । যথা।
অঙ্গুলিত্র শস্তকঞ্চ তথা চাঙ্গুণ্ঠরক্ষক । ইতি শব্দরত্বাবলী।।
শস্তকেশক তি প্রশস্তকেশযুক্তঃ। ইতি শব্দরীত্বাবলী।।
শস্ত্র ক্লী লোহ ।। অস্ত্র । ইত্যমরঃ ।। শস্ত্রাইক্স বহুধা মুক্তে
রিত্যাদি দর্শনাৎ শস্ত্রাস্তবোঃ
কশ্চিন্ডেদমাহ। যেন করধৃতে
ন হন্যতে তৎ শস্ত্র খন্ধাদি।

বেন বিপ্তেন হন্যতে তদক্ত কা-স্বাদি। ইতি তটীকাৰাণ ভরতঃ।। তৎপর্য্যায়ঃ। অন্ত্রে শস্ত্র• প্রহরণ মুদ্যাতো হেতি রাযুধঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী ৷৷ একৈক মন্ত্রণ শ-खक पार्टेव मूं छ॰ मर्मुक्षा । हि-চ্ছেদ লীলযৈবেশো জগতা॰ ম-यूमृपनः ॥ ইতি विक्यूयूतात्व c অংশে ৩০ অধ্যায়ঃ ৷৷ অন্ত্ৰ• ম-স্ত্রাভিমন্ত্রিত । শস্ত্রণ তদিতরৎ । ইতিতট্টীকা॥#॥রাজ্ঞাণ অস্ত্রাচা-र्या। यञ्जयूरक भागियूरक অযুক্তে যুক্তধারিতে । অস্ত্রাচা-র্য্যে। নিরুদ্বেগঃ স্বশলশ্চ বিশি-यारा ॥ 🛊 ॥ जनगात्रनियुक्तमा লক্ষণ যথা। স্থাপনা জাতি তত্ত্ব-ল্কঃ সতত প্রতিজাগৃতা। রাজ্ঞঃ স্যাদাযুধাগারে দক্ষঃ কর্মসুচো-দ্যতঃ।। ইতি মাৎস্যে ১৮৯ অ-ধ্যায়ঃ।। 🟶 ॥ শস্ত্রচিকিৎসা যথা ৷ অথাতো ২ত্যোপহরণীয় মধ্যা-য॰ ব্যাখ্যাস্যামঃ। ত্রিবিধণ কর্মা । পূৰ্বকৰ্ম প্ৰধানকৰ্ম পশ্চাৎক-র্মোতি। তদ্যাধি॰ প্রত্যুপদেক্ষ্যা-মঃ। অস্মিন্ শাস্ত্রে শস্ত্রকর্ম্ম প্রা-ধান্যাৎ শস্ত্ৰকৰ্ম্মৈব তাবৎ পূৰ্ব मूপদেক্যান खৎসম্ভারাণ্শ্চ ।

ভচ্চ শন্ত্ৰকৰ্ম উবিধণা তামধা। ह्मा रख्मा लया त्या मार्गार्याः विश्वावाः नीवा विि ।। 🐠।। অতো ২ন্যতম কর্ম চি-কীৰ্ষতা বৈদ্যেন পূৰ্ৰ মেবোপক-ক্সবিতব্যানি । তাদ্যপা । যন্ত্ৰ শস্ত্ৰ কারাগ্নি শলাকা শৃক্ত তুম্ব জলৌ-কালাবূ জামবোষ্ঠ পিচুপ্লোত সূত্ৰ পক্ৰ পট মধু ঘৃত বসা পয় স্তৈল তৰ্পণ কাষাখা লেপন কন্ধ ব্যজন শীতোক্ষোদক কটাহাদীনি পরি কর্মিণশ্চ সিঞ্চাঃ স্থিরা বলবস্তঃ। ততঃ প্রশন্তেষু তিথি করণ মু হূর্ত্ত নক্ষত্রেযু দধ্যক্ষতান্ন পান রজৈ-রগিং বিপ্রান্ ভিষজ শ্চার্চযিত্বা क्रुंचरित स्थल यखिराहनः लघु ভুক্তবন্ত প্রাধ্মুথ মাতুর মুপবে-**ण्य यञ्जयिषा श्रेण्या यञ्जा दिवा** মর্মা শিরা স্বাযু সন্ধ্যান্তি ধমনীঃ পরিহরমনুলোম॰ শস্ত্র॰ নিদ-शामाश्यमर्भनाष मक्रामवाश्य-तिष्ठ यो ७ । भर् यि ह পাকেষু দ্বাঙ্গুল॰ ত্রাঙ্গুল॰ বা শস্ত্র পদ মুক্তে । তত্রাযতো বিশালঃ সমঃ সুবিভক্ত ইতি ত্রণ গুণাঃ। ভবত শ্চাত্র ৷৷ আষতশ্চ বিশাল-শ্চ সুবিভক্তো নিরাশ্রয়ঃ। প্রাপ্ত-

কাল হত শাসি ত্রণঃ কর্মণি শ স্যতে।। শৌৰ্য্য সাম্ভক্তিষা শন্ত্ৰ-তৈক্ষ্য মস্বেদ বেপথূ। অসন্মো-হশ্চ বৈদ্যস্য শস্ত্রকর্মণি শস্যতে ॥ একেন বা ত্রণেনাশুষ্যমাণে-নান্তরা বুদ্যাবেক্যাপরান্ বণা-ন্স্ব্যাৎ ॥ ভবস্তি চাত্র। যতো यতा গতি॰ विमानू भाषा यज যত্ৰ চ। তত্ৰ তত্ৰ ব্ৰণ স্বৰ্যাদ্যথা দোষো ন তিষ্ঠতি ৷৷ তত্ৰ জ্ৰ গণ্ড मध नना है। कि भूट है। है पर स्वत-ছেদ উক্তঃ।। চম্দ্রমণ্ডলবচ্ছেদান্ পাণি পাদেষু কারষেৎ। অর্ধ্ব-চন্দ্রাক্তীণ শ্চাপি গুদে মেট্রে চ বুদ্ধিমান্ ৷৷ অন্যথা তু সিরা স্নাযু চ্ছেদনাদতিমাত্রণ বেদনা চিরা দ্রুণসংরোহে৷ মাণসকন্দী র্ভাবশ্চেতি । মূতগর্ভোদরাশো ২শারী ভগন্দর মুখরোগেম্বভুক্ত বতঃ কৰ্ম স্বী ত। ততঃ শস্ত্ৰ মব-তার্য্য শীতাভি রন্ডি রাতুর মাশ্বা-স্য সমস্তাৎ পরিপীড্যাঙ্গুল্যা ব্র-ণ মভিমৃজ্য প্রক্ষাল্য ক্ষাবেণ क्षार्टितामक मामाय जिलकक মধু সর্পিঃ প্রগাঢ়া মৌষধযুক্তাণ বর্ত্তি॰ প্রণিদধ্যাৎ। ততঃ কল্কে-

नाष्ट्रामा नाष्ट्रिक्षा नाष्ट्रिक-ক্ষাণ নাতিঘনাণ কবলিকাণ দত্বা বস্ত্র পটেন বগ্নীয়াছেদনা রক্ষো-रिष्ठ धूरिंग धूर्राराजस्कारिष्ठक মন্ত্ৰৈ রক্ষা॰ স্বৰী ত। ততে। গুগ্ল-অগুরু সর্জুরস বচা গৌরসর্যপ-ष्ट्रेर्न न्वन निष्ठभजनगमिद्य ता-জাষুকৈ ধূ পৈ ধূ পথেৎ। আজ্য শেষেণ চাস্য প্রাণান্ সমালভেড । উদসম্ভাক্তাপোগৃহীদ্বা প্রোক-मन् तका कर्म कर्गा उपकारा ।। 🛊॥ ক্বত্যানা• প্রতিঘাতার্থ৽ তথা রক্ষোভয়স্য চ। রক্ষাকর্ম করি-ষ্যামি ব্রন্ধা তদনুমন্যতা ।। না-গাঃ পিশাচা গন্ধৰাঃ পিতরো য-**ক্ষ** রাক্ষসাঃ। অভিজ্রবন্তি যে যে ত্বাণ বন্ধাদ্যা মন্ত তান্ সদা ॥ পৃথিব্যা মন্তরীকে চ যে চরম্ভি निশाहबाः। फिक्क् वाखनिवामा-শ্চ পান্ত স্থাণ তে নমস্কৃতাঃ ।। পান্ত ত্বা॰ মুনযো ব্রাক্ষ্যা দিব্যা রাজর্ষৰ স্তথা।পর্বতা শৈচব ন-**मान्ह नर्बाः मर्दिश मागताः ॥** অগী রক্ষতু তে জিস্বাণ প্রাণান্ বাষু স্তথৈব চ। সোমো ব্যান ম-পান তে পর্যাণ্যঃ পরিরক্ষতু।। উদান বিদ্যুতঃ পান্ত সমান স্ত-

मित्रवर । दल मिट्या दिल्या विश्व कि मेनू में त्रि मिछि छवा ।। कामा एख भाग्न भ

क्षरवा ब्हरवो ॥ এठा फर्ट् विलिरिव ठव निजा हि फर्व ठाः। এठा
खुा॰ मठङ॰ পास मीर्घ मायू त्रवाभूहि ॥ यस्ति छ छभवान खका
यस्ति फर्वान्छ क्रवान यस्ति छ

छस मृर्यो ह यस्ति नात्रम शर्वछ ।
। यस्त्री ह यस्ति नात्रम शर्वछ ।
। यस्त्री ह क्रिय वायून्ह यस्ति फिन्
वाः मर्ह्साभाः। शिलाम्ह क्रवा
तका यस्त्रामुर्वक्रवा॰ छव ॥ मेठम
रस्त श्रमामास मा। छव भावत्रथः
। ইতি यादा । এতে र्वमान्नरेक
म दृदः क्रवा वार्षिविनान्नरेनः।
मरेपव॰ क्रवत्रक स्तृ॰ मीर्घ मायू तवाशू हि।। क्षा। छवः क्रवत्रक मावूत

गुज्या.

याशाक अद्भुजानातिक यापि-(न९ । তত खुठीत्व ११नि वि-मूटेठावः वज्ञीयावज्ञशत्येन । न-টেন জরমাণো ২পরেদ্যু মৌক-स्य । षिठीय मिवरम পরিমো-ক্ষণাদিঅথিতো ত্রণ শিচরাদুপা সংব্লোহতি তীব্ৰৰুজশ্চ ভবতি। অত উৰ্দ্ধুণ দোষ কাল বলাদীন-বেক্য ক্ষাযালেপন বন্ধাহারা-**ठातान् विषधा ९। न टेठनः पतः** মাণঃ সান্তর্দোষ রোপষেৎ স-খ্লেনাপ্যপচারেণাভ্যন্তর মুৎ-সঙ্গ' ক্লন্ত্ৰা ভূযো ২পি বিকরে।তি । ভবন্তি চাত্ৰ। তত্মাদান্ত ৰ্হি-শ্চৈব সুশুদ্ধ রোপষেদ্রণ । ব-टिणाजीर्व वायाम वावायामीन् विवर्जध्य ।। . र्घं काक्ष छय-ঞ্চাপি যাবদাস্থৈর্য্য সম্ভবাৎ। মা-मान् यह मश्च वा नूगाः विधिदत्रयः প্রশাসতে ॥ হেমন্তে শিশিরে চৈব বসস্তে চাপি মোক্ষয়েও। ত্র্যাহাৎ দ্ব্যহাচ্ছরদ্মীয়া বর্ষাস্বপি চ বুদ্ধিমান্।। অতিপাতিষু রো-গেষু নেচ্ছেদিধি মিম° ভিষক্ i প্রদীপ্তাগার বচ্ছীযু তত্ত্ব স্ব-ৰ্য্যাৎ প্ৰতিক্ৰিষা ।। যা বেদনা শস্ত্র নিপাত জাতা তীবাঃ শ্রী- 🏿 শস্ত্রমার্জঃ পু॰ শস্ত্রমার্জনকর্তা।

র॰ প্রদুনোতি জন্তোঃ। গৃতেন সা শান্তি মুপৈতি সিক্তা কো-কেন যঞ্চীমধুকাশ্বিতেন।। ইতি সূত্রতে ৫ অধ্যায়ঃ।। শব্धः पूर सम्मः। यथा। तिसिः ধন্ম স্তরবারিঃ শস্ত্রো ভদ্রাত্ম-জ্বক সং। ইতি ত্রিকাণ্ডদেষঃ।। শস্ত্রক॰ ক্লী লোহণ। ইত্যমরঃ॥ শস্ত্রকোশতরুঃ পু• মহাপিণ্ডী-তরুঃ। ইতি রাজনির্ধন্টঃ॥ শস্ত্রজীবী পু॰ শস্ত্রাজীবঃ। ইতি ट्याञ्चः ॥ শস্ত্রধারণজীবকঃ ত্রি শস্ত্রাজীবঃ । ইতি শব্দরত্নাবলী।। শস্ত্রপাণিঃ পু॰ শস্ত্রহস্তঃ। যথা। উন্ধাহস্তো খগ্নিদো জ্বেয়ঃ শ-স্ত্রপাণিশ্চ ঘাতকঃ। কেশাকে-শি গৃহীতশ্চ যুগপৎ পারদারি-कः ॥ ইতি ব্যবহারতত্ত্ব॰ ॥ অ-পি চ। অগ্নিদো গরদ শৈচব শ-স্ত্রপাণি র্ধনাপহঃ। ক্ষেত্র দারা-পহারী চ ষডেতে চাততাযিনঃ ॥ ইতি প্রাযশ্চিত্তবিবেকঃ॥ শস্ত্রভূৎ পু॰ শস্ত্রধারী। শস্ত্র• বিভতী তি কিপ্ প্রত্যেন নি-म्भाः ॥

সিকলগর ইতি ভাষা ৷ তৎ-পর্য্যাযঃ। অসিধাবকঃ ২। ই-ত্যমরঃ ।। অন্ত্রমার্জঃ ৩ অসি-थावः ८। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ শাণাজীবঃ ৫ ভুমাসক্তঃ ৬ । ইতি হেমচন্দ্রঃ ॥

শস্ত্রহতঃ ত্রি শস্ত্রাঘাতেন মৃতঃ। जगारमोगि यथा । वाषुः। ক্ষতেন মূ্যতে যস্ত তস্যাশোচ ভবেদ্বিধা। আসপ্তাহাৎ ত্রিরা-ত্র॰ স্যাৎ দশরাত্র মতঃ পরং ॥ শস্ত্রঘাতে ত্র্যাদূর্দ্ধু যদি ক-শ্চিৎ প্রমীয়তে। অশোচ প্রা-'ক্লত' তত্ৰ সৰ্ববৰ্ণেষু নিত্যশঃ।। অত্র শস্ত্রহাতপদ° ক্ষতেতর শ-ত্রঘাতপর পারিভাষিক শস্ত্র-যাত পর মপি। ষথা দেবীপুরা-ণে। পক্ষি মৎস্য মৃগৈ র্ষে তুদ ॰-ষ্ট্রি শৃঙ্গি নথৈ হঁতাঃ। পতনান-শন প্রাথৈ র্বজুাগ্নি বিষ বন্ধনৈঃ ।। মৃতা জলপ্রবেশেন তে বৈ শ-স্ত্রহতাঃ স্তাঃ। অন্যথা কতঃ ্বিনা পতনাদিভি বিলয় মৃতা-ना॰ मिन গ্রহণে অনধ্যবসাযঃ স্যাৎ। ন চ শাস্ত্রীয় ব্যবহারে ২ন্তরঙ্গদ্বেন পারিভাষিকস্যৈব যুক্তত্ব মিতি বাচ্য প্রাঞ্জে পা-

রিভাষিকাপারিভাষিক শত্র-ঘাত গ্ৰহণবদত্তাপি তথা যুক্ত-ত্বাৎ পারিভাষিকত্বাদেব ন প্র-করণ নিষমঃ।। 🛊 ॥ ক্রোধাৎ প্ৰাৰণ বিষণ বহ্নিং শস্ত্ৰ মুম্বন্ধনণ জল । গিরি বৃক্ষ প্রপাতঞ্চ যে প্ৰবৃত্তি নরাধমাঃ।। মহাপাতকি নো যে চ পতিতা স্তে প্রকীর্ত্তি-তাঃ। পতিতানা॰ ন দাহঃ স্যা-ষাস্ত্যেষ্টি নাস্থিসঞ্ধঃ।। নচা-শ্রুপাতঃ পিণ্ডো বা কার্য্যণ শ্রো-দ্বাদিক ক্ষচিৎ ৷৷ এতানি পতি-তানাঞ্চ ষঃ করোতি বিমোহিতঃ । তপ্তक्रष्ट् षरयरेनव छमा शक्ष र्न চानायो ॥ #॥ छिनछत्व म-ঃ। বিষ শস্ত্র শ্বাপদাহি তি-

ৰ্য্যক্ ব্ৰাহ্মণ যাতিনা । চতুৰ্দ-भाग किया कार्या जत्नासांस বিগৰ্হিত।।। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব ।। শস্ত্রহন্তঃ পু॰ শস্ত্র॰ হন্তে ষদ্যা সঃ । ইতি শস্ত্রপাণিশবদর্শনাৎ।। শস্ত্রাজীবঃ ত্রি অসিজীবী।তৎ-প্रयायः। कार्र्षभृष्ठः २ व्यायु-ধীয়ঃ ৩ আযুধিকঃ ৪। ইত্যমরঃ

॥ কাওপৃষ্টঃ ৬ শস্ত্রধারণজীব-कः १। ইতি শব্দরত্নাবলী॥

।। কাওস্পৃষ্টঃ ৫। ইতি ভট্টীকা

শন্ত্ৰাভ্যাসঃ পু
তৎপৰ্য্যায়ঃ । পুরলী ২ ।
ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ । পুরলী ২ ।
ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ ।।
শন্ত্ৰায়সং ক্লী লোহং । ইতি রাজনির্যাঃ
শন্ত্ৰী ক্লী কুরিকা। ইতি মেদিনী ।।
শন্ত্ৰী ত্ৰি শন্ত্ৰবিশিক্ষঃ । অন্ত্ৰধারী । শন্ত্ৰশব্দাদিন্ প্ৰত্যবে ন
নিপান্ধঃ ।।
শস্পং ক্লী বালত্ণং । ইত্যমর-

টীকাফাণ ভরতঃ।। প্রতিভাহা-

নিঃ। ইতি জটাধরঃ।। শস্যাণ ক্লী বৃক্ষাদিনিপায়ণ তেৎ-श्रयायः। कलः २। ইতামরः॥ বৃক্ষাণা॰ লতাদীনাঞ্চ ফল নি-ষ্পান্নত্ব মাগত আমুাদিক শ-স্য স্মাপদ্বাচ্য ইত্যন্ত্বয়ঃ। ফলতি নিষ্পাদ্যতে ফল ফল निष्णद्वी भगिषिशामन्। मिख ্স্বপিতি সম্যুগ যসলুর স্বপ্নে ক্ল-দ্ধে। রিতি যঃ সদ্য দিদস্ত্য । शाग्रंकविकथानूवन्न हैव नीत-সস্য মনোহরো দেশ ইতি ন-लप्तराखी एसवाद । खंश्मनः সীসক সস্য গ্রস্ত সান্ধা চ সাধ্য ইত্যুশ্ববিবেকাচ্চ। তা-नवामि मखाखक ठथा हि भ-

न्मू शिगा खटा। तिजामा ৰু বৃষ মৃজেতি ক্যপি ম**ৎ শস্য**ণ ७९ किया वाट्याभि कत्निभ मृ-শ্যতে। তালব্যা অপি দন্ত্যাশ্চ শস্য শুকর পাংশব ইত্যুমভেদঃ 1 ইতি তট্টীকাষা॰ ভরতঃ॥ 🟶 🛚 ।। **ट्या**के अथा । भूगा ক্ষেত্ৰগত প্ৰাহঃ সতুষ ধান্য মুচাতে। আম॰ বিতুষ মিত্যুক্ত॰ ষিন্ন মন মুদাহত । ইতি স্মৃতিঃ १। 🟶 ।। श्रीमा नमानि यथा । ত্ৰীহ্ষশ্চ যবা শৈচৰ গোধুমা म्हानव खिलाः । थियक्टवा शू-मात्रान्छ कात्रमृषाः महीनकाः॥ উদারাঃ দীর্ঘশালয়ঃ।। মাষা মু-का। यमूत्राम्छ निष्णावाः मन्नल-থকাঃ। আঢক্য শ্চণকা শৈচব শাণাঃ সপ্তদশ স্মৃতাঃ ॥ ইত্যো-তা ওষধীনাম্ভ আম্যাণাণ জাত-যো মুনে। #। গ্রাম্যারণ্য শস্যা-व्यामगात्रगा क्ठूप्रम् ॥ बीर्यक ষবা মাষা গোখুমা শ্চাণব স্তিলাঃ ৷ প্রিযঙ্গু সপ্তমা হেতে অফমা স্ত ঙ্গলপ্ৰকাঃ॥ শ্যামাকা স্তৃথ নীবা-রা জর্ত্তিলাঃ সগবেধকাঃ। তথা বেণুষবাঃ প্রোক্তা স্তথা মর্ক টকা

মুনে ॥ আম্যারণাঃ সৃতা ছেত। **७**यधाञ्च ठजूर्मभ । ইতি विक्**र्** রাণে ১ অংশে ৬ অধ্যাবঃ।। 🛊 ।। নবশস্য সম্ভোগ নক্ষত্রাণি যথ।। অনুরাধা মৃগশিরো রেবতী চো-জরাত্রয় । হস্তা চিত্রা মঘা পুষ্যা। শ্ৰবণা চ পুনৰ্বসুঃ ৷৷ রোহিণী নব-শস্যাদি নবজব্যাশনাদিষু। श्रं-শস্ত নবপীঠাদিসভোগণ এহবি-हात्र ॥ 🐞 ॥ नवनग्राभाका-**मि काटना यथा। শ**त्रवगखरयाः কেচিন্নবয়ক্ত প্রচক্ষতে ধান্যপা-क्वभाषत्मा भागारका वनिनः স্মৃতঃ।৷ ইত্যনেন শর্দসম্ভ বিহি-ত নবশস্যেক্টে: শ্যামাকৈ ত্রী হি-ভি শ্চৈব ষবৈ রুম্যোন্যকালতঃ ৷ প্ৰায়ুক্ত যুজ্যতে ২বশ্যং নত্ব-ত্রাগ্রমণাত্যমঃ।। ইতি কালান্তর দর্শনাৎ শ্রাদ্ধেপি তথা। আগ্র-ষণ নবশস্যেষ্টিঃ।। বৃশ্চিকে শুক্ল পক্ষে তু নবান্ধ শস্যতে বুধৈঃ ৷ অপরে ক্রিযমাণ হি ধনুষ্যেব রু-ত' ভবেৎ ৷৷ ধনুষি যৎ ক্বত' শ্ৰা-দ্ধ॰ মৃগনেত্রাসু রাত্তিষু। পিতর স্তন্ম গৃহস্তি নবানামিষকাঙ্গিণঃ য় অপরে রুক্তপকে। পৌষে চৈ-व्य इन्दर्शस्य नवायः नाष्ट्रवृ-

ধঃ। ভবেৎ জনান্তরে রোগী পিতৃণা॰ নোপতিষ্ঠতে ॥ यदानि 🛍 ত্রীহিপাকে চ কর্ত্তব্য • ষবপাকে চ পার্থিব। নতাবাদ্যৌ মহারা-জ বিনাশ্রাদ্ধ কথকন ৷৷ ইতি বিষ্ণুৰ্শোভরৰচনে আছে প্র-তি ত্ৰীহি যব পাক্ষো নিমিত্ত-ছু॰ প্রতীষতে। তথাপি নবোদ-কে নবান্দে চ ইতি শাতাতপ ব-हतन शूर्दां क वष्यू वहत्वयू ह নবামস্য শ্রুতে র্নবামত্বেনৈবো-ভষ সাধারণ নিমিত্ত লাঘবাৎ ৷ অভিলাপ ৰাক্যে নবানাগম নিমিত্ত মিতি নিযোজ্যে । ন তু যবান্নাগমাদি। বৃশ্চিকে শুক্ক-পক্ষে চ ইতি তু ধনুরাদি পর্য্যু-দত্তেতর গৌণকাল মধ্যে বৃশ্চি-ক্স্য প্রাশস্তা মাত্রার্থণ ন তু वाकाखतार्थ मिछि। ইछि मल-মাসতত্ত্ব ৷৷ অন্যৎ নবান্নশক্তে দ্রফব্য ।।

শস্যধ্যনী পুণ তুন্নবৃক্ষঃ ৷ ইতি
শব্দচন্দ্রিকা॥ শস্যনাশকে ত্রি॥
শস্যমঞ্জরী স্ত্রী অভিনবনির্গতধান্যাদিশীর্ষকণ ৷ শীষ ইতি
ভাষা।তৎপর্যায়ঃ ৷ কণিশং ২ ৷
ইত্যমরঃ ৷৷ কণিশং ৩ কণিষঃ ঃ ৷

ইতি তট্টীক।।।

শস্যশূক কী শস্যস্য ভীক্ষাগ্রণ। শুড়া ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাষ্ট। কিংশারুঃ ২। ইত্যমরঃ।।

भगामग्रदः प्रभावत्कः। हेजा-मतः॥

শস্যাৎ ত্রি শস্যভক্ষকঃ। শস্য অন্তি ইত্যর্থে কর্ত্তরি ক্লিপ্ প্র-ত্যবেন নিষ্পানঃ। ইতি মুগ্ধবো-ধব্যাকরণং।।

শস্যারুঃ পু॰ কুড্রশমীবৃক্ষঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শাণ্শপঃ পুণ শিণ্শপাষা বিকার
শ্চমসঃ। শিণ্শপাশকাদণ প্রত্য-যে ইকারস্য আঙাদেশেন নি-শুয়ঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী।। শাণ্শপাষনঃ পুণ মুনিবিশেষঃ। ইতি পুরাণং।।

শাকণ ক্লী পুণ পত্ৰপুষ্পাদি। সাগ

ইন্দীভাষা। শক্যতে ভোজুণ শাকণ ঘঞ প্ৰত্যয়ঃ। তৎপৰ্য্যায়ঃ। হরিতকণ ২ শিগুঃ ৩।
ইত্যমরঃ।। সিগুঃ ৪। ইতি তদ্বীকা।। হারিতকণ ৫। ইতি শব্যর্মাবলী।। অথ শাকবর্গঃ।
তত্র শাক নিৰূপণণ পত্রণ পুষ্পাণ
কলণ নালণ কন্দণ সংস্কেদজণ

তথা। শাক ষড্বিধ মুদ্দিষ্ট গুরু বিদ্যাৎ যথোত্তর ।। অর্থ শাকানা ওণাঃ। প্রায়ঃ শাকা-नि সর্বাণি বিষ্টম্ভীনি গুরুণি চ । ककानि वहवर्षाः भि भृकेवि-মারুতানি চ।। শাক্ ভিনত্তি বপু রক্ষি নিহম্ভি নেত্রণ বর্ণ বি-নাশ্যতি রক্ত মথাপি শুক্রণ। প্রজাক্ষ্যঞ্চ স্বরুতে পলিতঞ্চ নূনণ হস্তি স্মৃতিণ গতি মিতি প্র-বদন্তি তজ্জ্ঞাঃ।। শাকেষু সর্বে নিবসন্তি রোগাঃ সহেতবে দে-হ বিনাশনায। তস্মাঘূধঃ শাক বিবর্জনঞ্চ সর্য্যাত্তথামেষু সএ-ব দোষঃ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। অপি চ। সর্বশাক মচাক্ষ্য ম-জজ্বেষ মনৈথুন°। ঋতে পটো-ল বাস্তৃক কাকমাচী পুনর্গবাঃ ।।ইতি রাজবল্লভঃ ॥

শাকঃ পুণ কৃক্ষবিশেষঃ সেগোন্ ইতি ভাষা ৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷ শা-কবৃক্ষঃ ২ শাকাখ্যঃ ৩ খরপত্রঃ ৪ অজুনোপমঃ ৫ ৷ ইতি রত্ন-মালা ৷৷ ক্রকচপত্রঃ ৬ শরপত্রঃ ৭ অতিপত্রঃ ৮ অহীরুহঃ ১ শ্রে-

১০ স্থিরসারঃ ১১ গৃহ-দ্রুমঃ ১২ ৷ অস্য গুণাঃ ৷ সার-

কত্বণ। পিত্ত দাহ প্রানাপহত্বণ ।। ञमा वक्रन छनाः। क्क नानि-ष्र'। मध्तष्र'। ककष्र'। क्यांव-प्रकः । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।। 🟶 ॥ শক্তিঃ। ইতি মেদিনী।। শিরী-ষবৃক্ষঃ । ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ নৃগভেদঃ। ইতি বিশ্বঃ।। দী-পবিশেষঃ। তন্য বিবরণ যথা । সূত উবাচ। শাকদ্বীপস্য ব-कगामि यथाविष्ट निम्ठयः। क-থ্যমান নিবোধধ শাক্ষীপণ দিজোতনাঃ।। জমুদীপস্য বি-স্তারাদ্দিগুণ স্তদ্য বিস্তরঃ ৷ বি-স্তারাদ্দিগুণশ্চাপি পরিণাহঃ স-মন্ততঃ ॥ তেনাবৃতঃ সমুজোয় দ্বীপেন লবণোদধিঃ। তত্ত্ৰ পুণ্যা-জনপদা শ্চিরাচ্চ মূিযতে জনঃ॥ স্তুত এব চ দু ভিক্ষণ ক্ষমা তেজো-যুতেশ্বিহ। তত্ৰাপি পৰ্বতাঃ শুভূাঃ সপ্তৈব মণিভূষিতাঃ।। শাকদী-পাদি দ্বীপেষু সপ্ত সপ্ত নগা স্ত্রিষু ৷ ঋত্বাযতাঃ প্ৰতিদিশ নিবিষ্টা বর্ষ পর্বতাঃ ৷৷ রত্নাকরাডি নামা-নঃ শোভাবস্তো মহাচিতাঃ। স মাচিতাঃ প্রতিদিশ দ্বীপ বিস্তর-মানতঃ।। উভযত্তাবগাঢাশ্চ ল-বণ ক্ষীরসাগরৌ। শাকদ্বীপে তু

वकामि मक्षिकान् महाव्यान् ।। मिर्वि गन्नर्वयुष्टः अथरमा स्न-রু রুচ্যতে। প্রাগাযতঃ স সৌবর্ণ উদ্ধো নাম পৰ্ৰতঃ ৷৷ ভত্ৰ মেখা-স্তু বৃষ্ট্যর্থণ প্রভবস্তি চ যান্তি চ ৷ তস্যাপরেণ সুমহান্ জলধারো মহাগিরিঃ ॥ সৈব চন্দ্রঃ সমাখ্যা-তঃ সক্বে বিধি সমন্বিতঃ। তস্মা-নিত্য মুপাদত্তে বাসবঃ পরম• জলে ৷৷ নারদো নাম সৈবোক্তো দুর্গ শৈলে। মহাচিতঃ। ভত্রাচলে সমুৎপদৌ পূৰ্বণ নারদ পর্বতৌ।। তস্যাপরেণ সুমহান্ শ্যামো নাম মহাগিরিঃ। যত্র শ্যামত্ব মাপন্নাঃ প্ৰজাঃ পূৰ্ব মিমাঃ কিল ৷৷ সএব দুন্দুভি নাম শ্যামঃ পর্বতসত্তমঃ । শব্দ মৃত্যুঃ পুরা তন্মিন্ দুন্দু ভি স্তাডিতঃ সুরৈঃ॥ বজু ত্বালান্ত-রমযঃ শাল্মল শ্চান্তরালক্ত ৷ তস্যাপরেণ রজতো মহানম্ভো গিরিঃ স্মৃতঃ ।। সৈব সোমক ই-ত্যুক্তো দেবৈ র্যতামৃত পুরা । সম্ভৃতঞ্চ হৃতক্ষৈব মাতু রর্থে গরু-ত্মতা ৷৷ তস্যাপরে চাম্বিকেষঃ সু-মনা শৈচব স স্মৃতঃ। হিরণ্যাক্ষো বরাহেণ তঙ্মিন্ শৈলে নিসূদি-তঃ ৷৷ আশ্বিকেষাৎ পরে৷ রম্যঃ

.मद्वी यथि ममस्रिकः । विज्ञाक्त সমাখ্যাতঃ স্ফাটিকঃ স মহাগি-রিঃ॥ যস্মাদ্বিভাজতে নিত্য॰ বি ভ্ৰাজ স্তেন স স্মৃতঃ। সৈবেহ কে-শবেত্যুক্তো যতো বাযুঃ প্রবাষতি য় তেষা বৰ্ষাৰি বক্ষ্যামি পৰ্বতা-॥ না॰ দ্বিজোত্তমাঃ। শৃণুধ॰ নামত छानि यथायमनूशृर्वमः ॥ वि ना-মান্যেব বর্ষাণি যথৈব গিরম স্তথা ৷ উদযস্যোদষ বর্ষ জলধারেতি বিশ্রুত ৷৷ নামা সাস্ত ভয়মাম বৰ্ষণ তৎ প্ৰথমণ স্মৃতণ ৷৷ দ্বিতীষে জলধারস্য সুঙ্গমার মিতি স্মৃত । তদেব শৈশির নাম বর্ষণ সংপ-तिकीर्खि**ण ॥ दिवण्या जू** को-মার॰ তথৈব চ সুখোদয় । শ্যাম পৰ্বত বৰ্ষন্ত মণীচক মিতি স্মৃত ।।। আনন্দক মিতি প্রোক্তণ তদেব মুনিভিঃ শুভ । সোমকস্য শুভ বর্ষণ বিজ্ঞেষণ জসুমোত্তরণ ॥ ত-দেব শিব মিত্যুক্তণ বর্ষণ সোমক সংজ্ঞিত ৷ আম্বিকেযস্য মেদ্ৰা-কি॰ ক্ষেমকঞ্চৈৰ তৎ স্মৃতণ ৷৷ সে-তুপৰ্বতক্স্যাপি মহাক্ৰম মিতি ষ্মৃত । তদেৰ ধ্ৰুব মিত্যুক্ত বৰ্ষ বিভ্ৰাক্ত সংজ্ঞিত• ৷৷ দ্বীপস্য পরি-**गार्क रुव मीर्वव य्यव छ। जबू**-

দ্বীপেন সংখ্যাত স্তস্য মধ্যে বন-স্পতিঃ।। শাকো নাম মহাবৃক্ষ ন্তস্য প্রজা মহানুগাঃ। এতেষু **(मव गन्नर्वाः मिक्षान्त मर तात्रदेवः** ॥ বিহরস্তি রমস্তে চ দৃশ্যমানা-শ্চ তৈঃ সহ। তত্ত্র পুণ্যা জনপদা শ্চাতুৰ্ণ্য সমন্বিতাঃ ৷৷ তেষ নদ্য-স্তু বৈ সপ্ত প্রতিবর্ষে সমুদ্রগাঃ। দিনায় শৈচৰ তাঃ সৰ্বা গঙ্গাঃ স-গুবিধাঃ স্মৃতাঃ ।। প্রথমা সুন্সমা-রীতি গঙ্গা শিবজনা শুভা। অ-নুতপ্তা চ নামেষা নদী সংপরি-কীর্ত্তিতা ॥ সুঙ্গমারী তপঃসিদ্ধা দ্বিতীয়া নামতঃ সতী। নন্দা চ পাবনী চৈব তৃতীয়া পরিকীর্ত্তিতা ॥ শিবলোকা চতুথী স্যাৎ ত্রি-বিধা চ পুনঃ স্মৃত। ঈক্ষুণ্চ পঞ্-মী জ্ঞেষা তথৈব চ পুনঃ কৃসূ॥ ধেনুকা চ মৃতা চৈব ষষ্ঠী সংপরি-কীৰ্ত্তিতা। সুক্কতা চ গভস্তী চ সপ্তমী পরিকীর্ত্তিতা ।। এতাঃ স-প্ত মহাভাগাঃ প্রতিবর্ষণ শিবো-দকাঃ। পাবযন্তি জন॰ সর্ব॰ শা-কদ্বীপ নিবাসিন ।। অভিগচ্ছস্তি তা শ্চান্যা নদী র্নদ্যঃ সরাংসি চ । বহুদক পরিসাবা যতো বর্ষতি বাসবং ॥ আসাম্ভ নামধেষানি

পরিমাণ তথৈব চ। ন শক্য পরি-मः थााजूः भूगा खाः मतिपूर्वभाः ।। তাঃ পিবন্তি মহাহাঠী নদী র্জ নপদ। স্তু তে । যে তে শাস্তিত্যা প্রোক্তাঃ প্রমোদা শ্চেতি বৈ শি-বাঃ।। আনন্দাব্রুম্থা শৈংব কে-মকৈশ্চ ধ্রুবিঃ সহ। বর্ণাশ্রমাচা- ॥ রযুক্তা দেশা স্তে সপ্ত বিশ্রুতাঃ য় অরোগ। ৰলিন শ্চৈব সর্বে ম-রণবজ্জিতাঃ। অবসর্গিণী ন তে-ষক্তি তথৈবোৎসর্পিণী পুনঃ ॥ ন তত্ত্বান্তি যুগাবস্থা চতুর্যুগ ক্তা **ক্ষ**চিৎ। ত্রেতাযুগ সমঃ কাল স্ত-থা তত্ৰ প্ৰবৰ্ততে ॥ শাক্ষীপা-দিষু জ্ঞেয়ণ পঞ্চস্বেতেষু সর্বশঃ। দেশস্য তু বিচারেণ কালঃ স্বা-ভাবিকঃ স্মৃতঃ ।। ন তেযু শকরঃ কশ্চিম্বৰ্ণাশ্ৰমক্তঃ কচিৎ। ধৰ্ম-স্যাব্যভিচারেণ একান্ত সুখিতাঃ প্রজাঃ ৷৷ ন তেষু মাযা লোভো বা ঈর্ষাসূষা ভষণ তথা। বিপর্য্য-যো ন তেম্বস্তি তদ্ধৈ স্বাভাবিক স্মৃত ।। কালো ন চৈব তেম্বস্তি ন দণ্ডো ন চ দাণ্ডিকঃ। স্বধর্মেণ চধর্মজ্ঞা স্তে রক্ষন্তি পরস্পরণ।। ইতিমাৎস্যে ১০২ অধ্যায়ঃ ॥ৠ অপি চ। এব॰ পরন্তাৎ কীরো-

দাৎ পরিত উপবেশিতঃ শাক-দীপো দাত্ৰিংশলক্ষমোজনা**বা**-गः मनात्नन परियट्धारमन পরী-তঃ। যশ্মিন্ হি শাকো নাম মহী-ৰুহঃ স্বন্ধেত্র ব্যপদেশকঃ। যস্য হি মহাসুরভিগন্ধ স্তদ্দীপ মনুবা-যতি। তস্যাপি প্রৈয়ত্তত এবা-ধিপতি নামা মেধাতিথিঃ। সো-পি বিভজ্য সপ্তবর্ষাণি পুত্র না-মানি তেষু স্বাত্মজান্ পুরোজব মনোজব বেপমান ধুমানীক চি-ত্ৰরেফ বছৰূপ বিশ্বাধার সংজ্ঞা-নিধাপ্যাধিপতীন্ স্বয়ণ ভগবত্য-নস্ত আবেশিতমতি স্তপোবন• প্রবিবেশ। এতেষা॰ বর্ষমর্য্যাদা-शिवरया नमान्छ मख मरेखर १ ঈশান উরুশৃঙ্গো বলভদ্রঃ শত-কেশরঃ সহসুসোতা দেবপালো মহানস ইতি। অন্যা আফুদী উভয়স্পৃষ্টি রপরাজিতা গঞ্চপ-দী সহস্ঞাতি নিজধৃতি রিতি ৷ তদ্বৰ্ষ পুৰুষা ঋতত্ৰত সত্যত্ৰত দানৱতানুৱত নামানো ভগব-ন্ত॰ বাষ্যাত্মক॰ প্রাণাষাম বিধৃত রজ স্তমসঃ পরম সমাধিনা যজ-স্তে। ইতি শ্রীভাগবতে ৫ স্কন্ধে २० ज्यशायः ॥ 🟶 ॥ यूथिकित

, বিক্রমাদিত্য শালিবাহনাদি শ-ৰুনরপতীনা মতীতাবঃ। তস্য প্রমাণ দিনপঞ্জিকাযাণ ডক্টব্যণ শাকচুক্রিকা স্ত্রী চিঞ্চা। ইতি त्राজनिर्षकैः॥

भाकरे॰ वि भकरेरमाम॰॥ भकरे-বোঢা। ইতি মেদিনী।।

শাকটঃ পু॰ শ্লেমান্তকবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। যুগাদিবো-ঢা। তৎপর্য্যাযঃ। যুগ্যঃ ২ প্রা-সঙ্গাঃ ৩। ইত্যমরঃ।।

শাকটাখ্যঃ পু॰ ধববৃক্ষঃ। ইতি **त्रव्याना ॥**

শাকটায়নঃ পু অফশান্দিকা-ন্তর্গত শান্দিকরিশেষঃ। যথা। ইব্ৰ শক্তঃ কাশক্লৎসা পিশলী শাকটাযনঃ। পাণিন্যমর জৈ-নেক্রা জ্বস্ত্যকীদি শাব্দিকাঃ ॥ ইতি কবিকল্পক্রমঃ।।

শাকটিকঃ ত্রি শক্টগামী। শ-কটেন গচ্ছতীত্যর্থে ঠক্ প্রত্য-ষেন নিষ্পন্ধঃ। ইতি সিদ্ধান্ত-को भूमी ॥

শাক্টীনঃ পু॰ বি॰শতিত্লাপ- শাক্ষরীয় ক্লী আজ্মেরাখ্য-রিমাণণ। তৎপর্য্যায়ঃ। ভারঃ ২ আচিতঃ ৩ শক্টঃ ৪ শলাটঃ ৫ । ইভি হেমচন্দ্রঃ।।

শাকতরঃ পু॰ শাকবৃক্ষঃ। সাগৌ ন ইতি হিন্দীভাষা। ইতি শব্দ-याना ॥

শাকপত্রঃ পুং শিগুঃ। ইতি রাজ-निर्घकः ॥

भाकवादनयः शूः बन्नयसिः। ইতিশব্দরত্নাবলী।।

শাক্ষরী স্ত্রী দুর্গা। যথা। ত-তোহ মখিলং লোক মান্মদেহ সমুদ্ভবৈঃ । ভরিষ্যামি সুরাঃ मारिक तावृत्यः आवशात्ररेकः ॥ শাকম্বরীতি বিখ্যাতি তদা যা-় স্যাম্যহ॰ ভুবি। তত্ত্বৈব চ বর্ধি-यामि पूर्वमाथाः महामूतः ॥ ইতি মার্কণ্ডেযপুরাণে নারাযণী স্তুতিঃ।। অপি চ। ভূষঃ সুরা ন্তিষ্যযুগে নিরাশনামিরীক্য মারীচ গৃহে সমাশ্রিতা। লো-কান্ ভরিষ্যামি তনুজশাকৈ স্তদা ভবিষ্যামি শাক্ষরীতি॥ ইতি বামনে ৫৩ অধ্যাযঃ ॥ নগরবিশেষঃ। শাস্তরীতিখ্যাতঃ । ইতি কেচিৎ।।

(দশান্তর্গত শান্তরনগরীয জ্ব লাশ্যবিশেষোদ্ভব লবণা শা-স্তরি ইতি খ্যাত । ত্ৎপর্যায खना यथा। भाकखतीयः कथिजः गडाथाः द्वामकः जथा।
गडाथाः नयू वाज्य मजूकः
जिन्नि शिखनः।। जीकः वावायि
मूक्षका जियानि कर्षूभाकि ह।।
देखि जावश्रकाणः।।
भाकतात्राः भूः शानाकः। देखि
जाकनिर्वन्धः।।
भाकताजः भूः वाख्यः।
जाकनिर्वन्धः।।
भाकनः भूः भकत्वन श्राखन्धः।
जाकनिर्वन्धः।।
भाकनः भूः भकत्वन श्राखन्धः।
नाकनकः भिरीयर्जभाकना स्थ-

याक्ष्मकः) नवाविक्ष्माक्ष्मारखः याक्ष्मक्षा श्रकः । देखि श्रक्षात्रामयस्त्रा श्रकः । देखि श्रिक्षाख्यको मूमी ॥ भाक्षाकः वि भक्ष्ममयस्ती ।

गाकालकः जि नकलमश्वा।

गकल कर्ममाज्या मूशमःश्यानः।

गाकलिकः कार्मभिकः। खाज्या

मश्मीि वृद्धिकातः। गाकलः।

कार्मभः। ইতি मिक्काञ्यकोमूमी

गाकिवः भूः वार्डाजः। ইতি

किरोधतः॥

শাকবিল্বকঃ পু॰ বার্তাঙ্কঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

শাকবীরঃ পু॰ ৰাস্তৃকশাকঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ জীবশা-কঃ। ইতিরাজনির্যক্টঃ॥ শাকবৃক্ষঃ পু॰ তরুবিশেষঃ। সেগোন ইতি ভাষা। ইতি রক্ত্রমালা।। অস্য পর্য্যায় গুণো শাকশব্দে জন্তব্যো।।
শাকশাকনিং কী শাকক্ত্রেঃ।।
শাকশাকিনং ইতি হেসচন্তঃ।।
শাকশোকিনং পু॰ বাস্তৃকশাকং।
ইতি শব্দরত্বাবলী।।
শাকশ্রেণ্ঠা ত্রী জীবভী॥ ডোডীক্ষ্পঃ।। বার্ত্তাস্কঃ। ইতি রা-

জনির্ঘন্টঃ।। শাক। স্ত্রী হরীতকী। ইতি কে-চিৎ ।।

भाकाश्वः की शळशूमांकि। हेणमद्रः ॥ राक्षनर्यागाः शळशूमाकि भाकश्वः वाठाः । आिक्ना
कलम्लािक श्रदः । यमुकः । मृलशळ कदीताश्व कल काश्वादिक एकः । षक् शूम्भः कत्रकरेश्व भाकः मम्पिशः यम् छः ॥ छळ मृलः
मृलकारमः । शळः शर्दालारमः ।
कतीतः रंभाकृतािक । खश्वः यळारमः । कलः श्रद्याश्वारमः । काखः উৎशलािक । अश्विर्दा
रक्ष्र हेण्डि रक्ति । षक् माजुलूशारमः । शूम्भः रकाितमात्रा-

দেঃ। করকং ছত্রিকা। শক্যতে ভোক্ত্ সনেনেতি শাকং। শ্যতি সামর্থ্যং তনুকরোতি শোতনুক-রণে বাহল্যাৎ কঃ শাক মিত্য-ন্যে। ইতি তট্টীকাষাং ভরতঃ। শাকাষ্যঃ পুং শাকর্কঃ। ইতি রত্নমালা।। অস্য পর্যায় শুণো শাকশন্দে অন্তব্যো।। শাকাষণ ক্রী মরিচং। ইতি রাজ-নির্যণ্টঃ।।

শাকাম ক্লী বৃক্ষামণ। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ।।

শাকায়ভেদন ক্লী চুক্রণ।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শাকালাবুঃ স্ত্রী রাজালাবুঃ।ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

भाकिनी छी भाक्युकाञ्चिः। यथा। भक्षः भाकिनी गादा काल मण्णमनः वनः। अन्भः गर्वाका वाका पूर्जिक नव वृष्ठ-यः॥ भकदो धान्यापितश्नषा-दारभाभकीत्यः। भक्षः भूष्णः क-लः कमः नालः मः यपकः छथा । भाकः यिष्ध मूमिकः छक् वि-म्याद यरभाजतः॥ हेकि देवप्या-क भाक यागाद भाकिनी गृश-वार्षिका भाकामग्रह्तदनन । गा-

वा पूषापिन।। कालः मरमा। দ্যাহরণেন। অস্পন্দন স্বস্থানা-দত্যাগঃ ঋণাদিলাভেন। ব্যযা-धिका निवृखा ह। दन॰ कल शू-ষ্পাদ্যাহরণেন। অনুপণ বহুদক-रमनः नम्नान नान्कामगञ्जा ন। পর্বতো গৈরিক মূদাদ্যাহর-**৭েন। রাজা ভৈক্ষাদিনা। ইত্যা-**क्रिकछब्र॰॥ 🛊 ॥ मूर्गाया अनूष्ठती বিশেষঃ। যথা। ডাকিনী যোগি-নী চৈব থেচরী শাকিনী তথা। দিক্ষু পূজ্যা ইমা দেব্যঃ সুসিদ্ধ্যঃ कलमायिकाः॥ ইতি काजायनी-कबः ॥ बक्ता विकृष्ठ क्रजम्ठ नेश्व-রশ্চ সদাশিবঃ। ততঃ পরশিধো দেবি ষট্ শিবাঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ ॥ মূলাধারে তু ত্রন্ধাণ ডাকিনী সহিত ন্যদেৎ। সর্বত্র ত্র্যক্ষরী मूकु। वामि मास्र मितमूकः॥ স্বাধিষ্ঠানাখ্য চক্রে তু সবিষ্ণু রাকিণীণ তথা ৷ বাদিলান্তণ প্রবি-ন্যস্য নাভৌ তু মণিপূরকে ॥ ডাদি ফাস্তার্ণ সহিত রুদ্রঞ্চ লা-কিনী॰ তথা। অনাহতে কাদিঠা-স্ত॰ ঈশ্বর॰ কাকিনী॰ তথা ।। বি-শুদ্ধাখ্যে মহাচক্রে যোডশস্বর मःयूजः। मनानिवः नाकिनीञ्च

বিন্যদেৎ পূর্ববত্ততঃ ।। আজ্ঞা চক্রে তুদ্দেবেশি হ ক্ষ বর্ণ সমন্ধি-তং । পরং শিবং ব্রহ্মরূপং হাকি-নী সহিতং ন্যদেৎ ॥ ইতি তারা-ন্যাসভেদঃ। ইতি তন্ত্রসারঃ ।। শাস্ত্রণঃ ত্রি পরোত্তাপী। ইতি শব্দমালা।।।

শাঙ্গনঃ পু॰ পশুপক্যাদিকপ-শঙ্গনদারা মনুষ্যশুভাশুভনি-**कायक अल्डः । ज्यारमो क्रा**-কৌ ৷ শুভাশুভ জ্ঞান বিনির্ণ-যায হেতু নৃ গাং যঃ শঙ্গনঃ স উক্তঃ। গতিঃ স্বরালোকন ভাব চেষ্টা॰ সংকীর্ত্তযামে৷ দ্বিপদা-দিকানা 11 লোকো ২মুনা শা-ঙ্গন সংজ্ঞকেন জ্ঞানেন বিজ্ঞাত 🎚 मगलकार्याः । नाभाषकृत्भ भ-ভতি প্রসর্পন্ শাস্ত্রণ হি দিকা। দৃগতীন্ত্রিযেবু॥ ইতি বসস্তর।-্ব্ৰাজশাসনে ১ বৰ্গঃ॥ শান্দনিকঃ পুণ পক্ষিহন্তা।পা-কিষারা ইভি চিডিমার ইভি চ ভाষা। তৎপর্যায়ঃ। জীবান্ত-कः २१ हेळामदः ॥ भाकत्मशः प्र जूषुमशकी। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। শঙ্গনস স্বন্ধিনি ত্রি ॥

শাসস্তলেযঃ পু॰ ভরতরাজঃ। ইতি জটাধরঃ॥ শসস্তলাসম্ব-দ্বিনি ত্রি॥

শাঙ্গলিকঃ ত্রি শঙ্গলান্ হস্তি য়ঃ।
শঙ্গলশ্বনাৎ ঠক প্রত্যাযেন নিস্পান্ধঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী।।
শাক্তরঃ পুণ অনজ্বান্। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

শাক্তঃ ত্রি শক্তি দেবতা যস্য সঃ । শক্ত্যুপাসকঃ । অস্য প্রশংসা যথ। । স্বৰ্গে মৰ্ত্যে চ পাতালে নাস্তি শাক্তাৎ পরঃ প্রিয়ঃ। সৌরাণাণ গাণপত্যানাণ বৈক বানা॰ তথৈব চ ॥ তদন্তে চৈব শাক্তাঃ স্যুঃ ক্রমশঃ ক্রমশঃ श्रिय । भृगू पिति वज्ञाद्याद्य নাস্তি শাক্তাৎ পরো জনঃ া শাক্তোপি শঙ্করঃ সাক্ষাৎ পর ৰদ স্বপভাক্। আরাধিতা যেন কালী তারা ত্রিভূবনেশ্বরী ॥ याजनी टेव्य माजनी हिमा চ বগলামুখী। আরাধিতা ম-হেশানি স শিবো নাত্র সংশযঃ ।। অতিগোপ্য॰ মহেশানি শা-ক্তানা পরম পদ। যো জা-নাতি মহীমধ্যে স শিবে৷ নাত্র সংশ্यः ॥ বন্ধাদ্যচ্চিত পাদা-

জ্ঞ বো ভজেৎ সতত মুদা। म याठावितकात्वन मुक्ति म-ন্দির মেব হি ॥ পার্শ্বতীচরণ দ্বন্দু ভজনা কিন্ধরে। ভবেৎ । স্বৰ্গভোগশ্চ মোক্ষশ্চ শাক্তা-না॰ ন ভবেৎ কিমু ॥ শাক্তামা-ক্ষৈব নিন্দা॰ যে ঙ্গৰ্বস্তি হি ন-রাধমাঃ ৷ তেষা পলোহিতপান বৈ স্বস্থিতি ভৈরবীগণাঃ ৷৷ ভৈর-বা শৈচৰ ভৈরব্যঃ সদা হিংসস্তি পামরান্। শাক্তান্ হি॰সন্তি গ-র্জন্তি নিন্দন্তি বহুজন্নকাঃ ।। ছি-নত্তি তেষাণ দেবেশি শিরাণস হরবল্লভা। শাক্তান। মুত্তমো না-স্তি স্বর্গে মর্ত্যে রসাতলে ॥ শা-ক্তস্ত শঙ্করো, জ্রেয় স্ত্রিনেত্র শ্চ-ব্রুণেখরঃ। স্বয় গঙ্গাধরে। ভূত্বা विरुद्धि किंछिमध्या ॥ एमवी॰ প্রতি শিববাক্যে। মদ॰শা কৈচব যে ভূতা স্তে শৈবা নাত্ৰ সংশযঃ। স্থদ শা শৈচৰ শাক্তাশ্চ সত্যৎ বৈ গিরিনন্দিনি ॥ বছবর্ষ সহস্রাস্তে শৈবাঃ শক্তি পরাষণাঃ। শাক্তা বৈ শঙ্করা দেবি যস্য কস্য ঙ্গলো-ভবাঃ ৷৷ চাণ্ডালা ব্রাহ্মণাঃ শূড়া ক্ষত্রিয়া বৈশ্য সম্ভবাঃ। এতে শা-ক্তা জগদ্ধাত্রি ন মনুষ্যাঃ কদা-

हन ॥ शमाखि बान्षान् लाकि কেবল॰ কর্মা চক্ষুষা। ত্রাহ্মণৈঃ ষ্ণত্রিবৈ র্বৈশ্যৈঃ শূদ্রে রেব চ জা-তিভিঃ ॥ বামনার্গ প্রভাবেণ ক-ৰ্ত্তব্য° জপ পূজন°। যে শাক্তা ব্ৰাহ্মণা দেবি ফতিয়া ব্ৰাহ্মণাঃ স্তাঃ।। বৈশ্যাশ্চ ব্রান্ধণা দেবি সর্বে শূদ্রাশ্চ বান্ধণাঃ। বান্ধণাঃ শঙ্করা শ্চণ্ডি ত্রিনেত্রা শ্চন্দ্রশে-থরাঃ।। ইতি মুগুনালাতন্ত্রে ২। ৩।৪।৭।পটলাঃ।। ৠ। শাক্তা এব দ্বিজাঃসর্বে ন শৈবা ন চ বৈ-**শুবাঃ । উপাসন্তে** যতে। দেবী° গাযত্রীণ পরমাক্ষরীণ।। ইতি নি-ৰ্বাণতন্ত্ৰে ৩ গটলঃ।। শক্ত্যুপাস-নানন্তর মন্যোপাসন নিষেধাে যথা। অস্যাশ্চারাধন ক্রত্বা না-नामाज्ञाधन॰ চরে९। অনাमा স্মরণাদেবি যোগিনী শাপ মাল-ভেৎ ৷৷ ইতি গন্ধৰ্বতন্ত্ৰে ২ পটলঃ ॥ 🕸॥ তস্য আভ্যন্তর স্নান॰ य-থা। শাক্ত মাভ্যন্তর স্নান মুক্ত॰ গ্রীপঞ্চমী মতে। স্নান প্রকারে। দ্বিবিধো বাহ্যাভ্যস্তর ভেদ্তঃ ।। আন্তরং স্নান মভ্যন্তং রহস্য মপি সাদরাৎ। কথযামি ভয-**४टि** ठेडू र्वर्ग कलाश्वस्य ॥ म-

ষিত্রথ মনুশৃত্য চরণ ত্রথ মধ্যতঃ

1 সূবক্ষণ সচিদানন্দ প্রবাহণ
ভাবগোচরণ ।। বিমুক্তিসাধনণ
পুশাণ স্মরণাদেব ধোগিনাণ ।
তেন প্লাবিত মান্মানণ ভাবধেৎ
ভ্যশান্তথে ।। ইতি বিশ্বসারতত্ত্রে ২ পটলঃ ।। য় ।। তদ্য স্বশান্তিরে যথা । তর্জ্জন্যা রজতণ
ধার্য্যণ স্বর্ণণ ধার্য্য মনাম্যা । এষ
এব স্বশঃ শাক্তে ন দর্ভো বন
সম্ভবঃ ।। ইতি শ্যামারহস্যণ ।।
শাক্তীকঃ পুণ শক্তিধারকঃ । তৎপর্য্যায়ঃ । শক্তিহেতিকঃ ২ ।
ইত্যমরঃ ।।

শাক্ত্যঃ ত্রি শক্ত্যুপাসকঃ। ইতি শক্তিশব্দাৎ ফ্য প্রত্যবেন নি-ষ্পন্নঃ।।

শাক্যঃ পু॰ বুদ্ধঃ ৷ ইতি হলা-যুধঃ ৷৷

শাক্যমুনিঃ পুং শাক্যবংশাবতীর্ণবুদ্ধমুনিবিশেষঃ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷
অস্য সপ্তপর্য্যায়া গোতম শব্দে
দ্রুষ্টব্যাঃ ৷৷ পর্য্যাযান্তরং যথা ৷
খজিৎ ২ শ্বেতকেতুঃ ৩ ধর্মকেতঃ ৪ মহামুনিঃ ৫ পঞ্চজানঃ ৬
সর্বদশী ৭ মহাবোধিঃ ৮ মহাবলঃ ৯ বহুদ্দমঃ ১০ ত্রিমূর্ত্রিঃ ১১

১২ শকঃ ১৩। ইতি
শব্দরত্বাবলী ।। শাক্যবংশত্বাৎ
শাক্যঃ শাক্য শ্চাসে মুনি শ্চেতি শক্যমুনিঃ । তথাহি শাকো
বৃক্ষবিশেষঃ তত্র ভবা বিদ্যমান
নাঃ শাক্যাঃ । পিতুঃ শাপেম
কেচিদিক্ষাঙ্গবংশ্যা গৌতমবংশজ কপিলমুনে রাশ্রমে শাক্
বৃক্ষে রুতবাসাশ্চ শাক্যা উচ্যভেষা তদুক্তং । শাকবৃক্ষ প্রতিভেন্নং বাসং যন্মাৎ প্রচক্রিরে ।
তন্মাদিক্ষাঙ্গবংশ্যান্তে ভূবি শাক্যা ইতি শ্রুতাঃ ।। ইত্যমরটীকাষাং ভরতঃ ।।

শাক্যসিংহঃ পু॰ শাক্যমুনিঃ। ইত্যমরঃ।।

শাক্রী স্ত্রী দুর্গ। যথা। ইন্দ্রাণী
ইন্দ্রজননী শাক্রী শক্রপরাক্রমা। বজু। দুশকরা দেবী বজু।তেনোপগীযতে। ইতি দেবীপুরাণে দেবীনিরুক্তাধ্যায়ঃ।
শক্রপত্নী চ।।

শাথ ঋ ব্যাপ্তো। ইতি কবি-কল্পদ্রমঃ।। ঋ অশশাথৎ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শার্থঃ পু॰ কার্ত্তিকেষঃ। যথা। অবাপ চানিলাৎ পুল্র মগ্নিজু-

শাখানি

ল্য গুণ পুনং। অগ্নিপুল্রঃ স্বনা-রস্ত শরস্তমে ব্যজায়ত।। তস্য শাখো বিশাখন্চ নৈগমেয়ন্চ পৃষ্ঠজঃ। অপত্যা ক্রতিকানাঞ্চ কার্ত্তিকেয় স্ততঃ শৃতঃ।। ইতি নাৎস্যে হে অধ্যামঃ।। ছিল্ডিঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিক।।।

শাখা স্ত্রী বৃক্ষাঙ্গবিশেষ । ডাল ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায় । লতা ২ ৷ ইত্যমর ।। লক্ষা ৩ ৷ ইতি জটাধর ।। শিখা ৪ ৷ ইতি ভর-তধৃত মেদিনী ॥ পক্ষান্তর ॥ বাহুঃ ॥ বেদভাগঃ । ইতি মে-দিনী ॥ গ্রন্থভেদঃ । ইতি ধরণিঃ ॥ অন্তিকঃ । ইতি বিশ্বঃ ॥

শাখাকন্টঃ পুণ সুহীবৃক্ষঃ। ইতি

রাজনির্ঘন্তঃ ।।
শাখানগর ক্লী মূলনগরাদন্যৎপুরং।ইত্যমরঃ ।। মূলনগরে হসন্মিতস্য জনোঘদ্য স্থানায় মূলনগরস্য সমীপে হঙ্কে বা ষদন্যৎ পুরং নগরাস্তর ক্রিষতে
তৎশাখানগর মূলনগরস্য তরুস্থানীষ্ক্য শাখেব। অভিষ্যদি রমণমপ্যত্র। স্যাদভিষ্যদির
মণং শাখানগর মিত্যপি। ইতি
তিকাওশেষঃ ।। ইতি তট্টীকা-

যাণ ভরতঃ।। অপি চ। আরভ্য
মূলনগরাদপরণ নগরণ হি ষৎ
। তদভিষ্যন্দিরমণণ শাখানগর
মিত্যপি। ইতি শব্দরত্মাবলী ।।
শাখাপিত্তঃ পুণ পানিপাদাণসমূলদাহঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।
শাখাপুরণ ক্লী শাখানগরণ।
তৎপর্য্যায়ঃ। উপপুরণ ২। ইতি
হেমচন্দ্রঃ।।

শাখামা স্ত্রী বৃক্ষামা। রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শাখামৃগঃ পু॰ বানরঃ। ইত্য-মরঃ।।

শাখারত্তঃ পুণ স্বশাখাণসরিত্য-জ্য শাখান্তরাধ্যযনকর্ত্তা। তৎ-পর্য্যায়ঃ। অন্যশাখকঃ ২। ইতি হেমচক্রঃ ।।

শাখারথ্যা দ্রী ষোডশহস্তপ্রস্থ-পথঃ। যথা। ধনৃ ধি চৈব চদ্বারি শাখারথ্যাস্ত নির্মিতাঃ। ত্রিক-রা শ্চোপরথ্যাস্ত দ্বিকরাপ্যুপ-রক্ষকাঃ ।। ইতি দেবীপুরাণে গোপুরদ্বারলক্ষণ নামাধ্যায়ঃ।। শাখালঃ পু॰ বানীরবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘকঃ।। শাখাশিফা দ্রী বটাদীনা॰ শা-

শাখাশিকা স্ত্রী বটাদীনা॰শা-খাসম্বন্ধিশিকা।নামা ইতিখ্যা-

শাটিকা

তা। তরে। মূলাদারত্য অগ্রণ যাবৎ গতা লতা গুডুচ্যাদিঃ। ইতি ভরতঃ ।। তৎপর্যায়ঃ। অবরোহঃ ২। ইত্যমরঃ।। শাখী পুং বৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ।। বেদঃ।। তুরুদ্ধাখ্যজনঃ। ইতি মেদিনী ।। রাজতেদঃ। ইতি হেনচন্দ্রঃ।।

শাখোটঃ পু॰ বৃক্ষবিশেষঃ। শ্যা-ওড়া ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। পিশাচদ্রুঃ ২ পীতফলঃ ৩ কর্ক-শচ্ছদঃ ৪। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। ভূতবৃক্ষঃ ৫ সকটঃ ৬ অক্ষধরঃ ৭। ইতি ভূরিপ্রযোগঃ।। গবা-ক্ষী ৮ ঘূকাবাসঃ ৯ ৰক্ষপত্ৰঃ ১০ পীতঃ ১১ কৈশিক্যোজঃ ১২ ক্ষীরনাশনঃ ১৩। অস্য গুণাঃ। তিক্তত্বণ। উষণ্ডবণ। পিত্তকারি-ष॰। বাতহারিত্বঞ্চ। ইতি রাজ-निर्घणेः ॥ अभि ह। भारशिः পীতফলকো ভূতাবাস্ক খরচ্ছ-**मः । भा**र्थारो त्रक्रिकारमा বাতশ্লেয়াতিসারজিৎ 11 ইতি ভাবপ্রকাশঃ ৷৷

শাখ্যঃ ত্রি শাখাসয়ন্ধী। শাখা-শব্দাৎ ফ্য প্রত্যযেন নিষ্পন্ধঃ॥ শাঙ্করঃ ক্লী ছন্দোভেদঃ। ইতি মেদিনী । অস্য ৰূপান্তর । শাকর গার্তরঞ্চ ।
শাক্তর পুণ বলীবর্দ ঃ । ইতি
মেদিনী ।।
শাক্তরিঃ পুণ কার্তিকেয় ঃ গণেশঃ। ইতি মেদিনী ।।
শাক্ত্রী প্রাক্তিনে মানা ।
শাক্ত্রী প্রাক্তিনে ।
শাক্তি জ্বি শাক্তাতন নিশাস্থা ।
শাক্তির প্রত্যাবেন নিশাস্থা ।
শাক্তির প্রত্যাবেন নিশাস্থা ।
শাক্তির প্রত্যাবেন নিশাস্থা ।

শাৎ কপ্রতাবেন নিশার।
শাগ্রিকঃ পুণ জাতিবিশেষঃ।
শাগ্রিকঃ বিভাষা। তৎপর্যান
ষঃ। কাশ্বিকঃ ২। ইত্যমরঃ।।
শন্ধকারঃ ৩ কাশ্বজকঃ ৪। ইতি
শব্দরত্বাবলী ॥ শন্ধবাদকঃ।
তৎপর্যাসঃ। শন্ধশ্বাঃ ২। ইতি
জটাধরঃ।।
শাস্থা ত্রী গুঞ্জা। ইতি রক্তান

মালা।। শাটঃ পু॰ বস্ত্রভেদঃ। ইত্যমর-ভরতৌ।। যথা। দূরতঃ শোভ-লয়শাট পটাব্

তাবচ্চ শোভতে মূর্থো ধাবৎ কিঞ্চিন্ন ভাষতে। ইতি চাণক্য ।। শাটকঃ পু॰ ক্লী পটঃ।। নাটক-ভেদঃ। ইত্যমরভরতৌ।। শাটিকা স্ত্রী শটী। ইত্যমর- টীকাষাণভরতঃ।। গাটী পুণ স্ত্রী বস্ত্রভেদঃ। শাডী ইতি ভাষা। ইত্যনরঃ।। অস্যা নির্মাল্যস্থ নির্মাল্য শব্দে জ-ষ্টব্যণ।।

গাট্যায়ন ক্লী প্রকৃতকর্মাবৈগু-गुअनगर्भार्थरामः । यथा যতু প্রক্তকর্ম বৈগুণ্য প্রশম-नाय गाँगायन रहामाजिधान॰ ভবদেব ভট সম্মতং তন্ম প্রামা-ণিক তত্মাদপি মহাপ্রামাণিকৈ ভটনারায়ণ চরণৈ গোভিল-ভাষ্যে তদপ্রমাণীক্লতত্বাৎ। ছ-ন্দোগপরিশিষ্টেপি প্রাযশ্চিতা-র্থ প্রকার ত্রষ মাত্র মুক্ত। যথা । ষত্র ব্যাহ্নতিভি র্হোমঃ প্রা-ৰশ্চিত্তাত্মকো ভবেৎ । চত্যু ন্তত্র বিজ্ঞেষা স্ত্রীপাণিগ্রহণে যথা।। অগি বাজ্ঞাত মিত্যেষ। প্রাজাপত্যাপি বাহুতিঃ। হে।-তব্যা ত্রি র্বিকল্পোষণ প্রায়শ্চিত্ত বিধিঃ স্মৃতঃ।। ত্রি র্বিকন্স ইত্য-নেন কন্নান্তর নিষেধাৎ গো-ভিলীযকৰ্ম্মণি শাট্যায়ন হোমো ন যুক্তঃ। কিন্তু ব্যস্ত সমস্ত ম-হাব্যাহাতিভি শতস্ভিঃ প্রায-শ্চিত্ত হোমো যুক্তঃ। বিশারদ

প্রভৃতবাে প্যেব । শাট্যায়ন হোমস্য সমূলত্বেপি শাখ্যন্তরী-যত্ব ৷ ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ৷ ৷ শাট্যায়নঃ পুং মুনিবিশেষঃ ৷ ইতি পুরাণ ৷ ৷

শাঠ্য॰ ক্লী শঠত।। তৎপৰ্য্যায়ঃ। কপটঃ ২ ব্যাজঃ ৩ দম্ভঃ ৪ উপ-ধিঃ ৫ ছদ্ম ৬ কৈতব ৭ সস্তিঃ ৮ নিক্নতিঃ ১। ইত্যমরঃ।। নব অষথার্থব্যবহারে । শঠ বধে ক্লেশ কৈভবে তালব্যাদিঃ অল্ তস্য কর্ম শাঠ্য প্রাঃ। কপটাদি यहेक॰ इम्नि अमृज्यानि वयः চিত্তকৌটিল্যে ইত্যেকে। কপ-টাদি ষট্ক॰ বঞ্চন মাত্র ফল॰। প্ৰসৃত্যাদি ত্ৰিকম্ব হিংসাফল মি-তি ভেদঃ। ইতি সর্বানন্দো ম-ধুশ্চ। নবৈবৈকার্থ। ইতি বহ-বঃ । ইতি ভরতঃ ॥ অপি চ। অস্ত্রিষা॰ কপটে। ব্যাজ উপধি ৰ্দম্ভ এৰ চ। কৃট• কন্ধ• ছল• ছন্ম মিষ কৈরব কৈতবণ।। অথ শা-ঠ্যঞ্চ শঠতা সমৃতি নিক্কতিশ্চ म। हि॰माक्त्न ठजूक॰ मा। ६ শাঠ্য পর্য্যায় ঈরিতঃ 11 পূর্বঃ কপটপর্যায়ঃ কলে বঞ্চন মাত্র-কে। উভযো ব্লেক পর্য্যায ইতি কেচিৎ প্রচ**ফতে ॥ ইতি শব্দ**-রত্নাবলী ॥

শাড ঋ ঙ লাবে। ইতি কবিকলদ্রনঃ ।। ঋ অশশাডৎ । ঙ
শাডতে গুণিনং গুণী। অন্তন্ত্ তৃতীয় যুক্তাদি রয় মিতি কস্যচিদ্দুনঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।
শাড়লঃ পুং শাদ্বলঃ। ইতি কেচিৎ ।।

শাণ ক্লী শণনির্মিতবস্ত্রণ যথ।

া ক্ষোন শাণ বা ব্রাহ্মণস্য কাপান ক্ষত্রিয়স্য আবিক বৈশ্যাস্য । ক্ষুনা অতসী তস্যা ইদং
ক্ষোন তসরাদি। শাণ শণতন্ত্র
ভব তদুভয ব্রাহ্মণস্য । ইতি
সংস্কারতত্ত্বণ ।।

শাণঃ পুণ কষপটিকা। কষ্টিপাতর ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ।
নিকষঃ ২ কয়ঃ ৩। ইত্যমরঃ॥
শানঃ ৪ নিকসঃ ৫ কসঃ ৬।
ইতি ভরতঃ।। আকষঃ ৭। ইতি
শব্দরত্বাবলী ॥ মাষচতুষ্টয়ণ।
চারিমাষা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। নিক্ষঃ ২ টঙ্গঃ ৩।
ইতি বৈদ্যকপরিভাষা।। লৌহাদীনাণনিকষঃ। শানপাতর
ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী।।

করপত্র• ৷ করাৎ ইতি ভাষা ৷ ।৷

শাণাজীবঃ পু॰ অব্রমার্জকঃ । যথা । শাণাজীবঃ শস্ত্রমার্জো ভূমাসক্তো ২সিধাবকঃ । ইতি হেমচন্দ্রঃ ।৷

শাণিঃ পুণ পটবৃক্ষঃ। যথা।
পটে রাজশণঃ শাণি শ্চিমিঃ ক
ক্থটপত্রকঃ। ইতি শব্দমালা।।
শাণিতঃ ত্রি তীক্ষীক্ষতঃ। নিশিতঃ। ক্রতশাণঃ। শাণশব্দাদিত
প্রত্যে নিষ্পন্ধঃ।।

मानी खी मनमूबसयी परिका।
यथा। मानी आशानि वद्यानि
मसी आशा मही क्रहाः। मूफआशा ख्या वर्ग जिवशास्त्र कतो यूरा।। है जि विक्षू पूतारा ७
ज्ञानि। है जि ज्ञीका।। आवतनास्त्र । जासू है जि जासा। है जि
रानि ।। हिफ वद्यः। है जि द्यानी रानी हिफ वर्द्य। है जि द्याहसः।। हस्त्र हिमाता। है जि
मस्त क्रांवनी।।

শानीतः क्री त्माननमभगञ्ज्ठिः

া। দৰ্দরীনদীভটঃ। ইতি বিশ্বঃ ।। শাণ্ডিল্যঃ পু॰ বিশ্ববৃক্ষঃ। ইত্য-मतः ॥ वङ्किरछमः ॥ मूर्निवित्न-ষঃ। ইতি মেদিনী ॥ সতু গোত্ত-কারঃ ভক্তিসূত্রকারশ্চ। তৎ-সূত্রভাষ্যাদ্যস্লোকে। যথা । প্র-পদ্য পরমণ দেবং গ্রীষ্বপ্নেশ্বর সূরিণা। শাণ্ডিল্য শতসূত্রীয়ণ ভাষ্য মাভাষ্যতে ২ ধুনা ৷৷ শাত॰ ক্লী সুখ ।। তদ্বতি ত্রি । ইত্যমরঃ।। ফ্রশঃ। ইতি বিশ্বঃ।। শাতঃ ত্রি দুর্বলঃ।। নিশিতঃ। ইতি মেদিনী ॥ ধুস্তুরঃ। ইত্য-यदः ॥ শাতঙ্গম্ভ॰ ক্লী কাঞ্চনণ।। ধুস্তূরঃ । ইত্যমরঃ।। শাতসম্ভঃ পু॰ করবীরবৃক্ষঃ। ় ইতি মেদিনী।। শাতকোম্ভ ক্লী স্বর্ণণ ইতি ভ-রত দ্বিৰূপকোয়ঃ॥ गाजन क्वी कार्गाः । विनामनः। যথা। বসস্তে সর্বশস্যানাণ জা-যতে পত্ৰ শাতন[°]। মোদমানা-শ্চ তিষ্ঠন্তি যবাং কণিশ শালি-নঃ।। ইতি সারমঞ্জরী ।। শাতগত্তকঃ পু॰ চক্রপ্রকাশঃ। यथा। हिल्का को मूमी जा --

ন্দা প্ৰকাশো দ্যোত আতপঃ। অক্টা চন্দ্ৰিকাষাঞ্চ প্ৰকাশে শাতপত্ৰকঃ।। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা শাতভীরুঃ পু॰ মদনমালী। ম-লিকাভেদঃ। যথা। শাতভীরু র্ভদ্রবল্লী ভূমিমণ্ডো ২ফপাদি-का। रेकि त्रव्रमाना।। ।ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী॥ শাতলা স্ত্রী সাতলা। চর্ম্মকষা ইতি খ্যাতা। ইত্যমরটীকাষাণ ভরতঃ ৷৷ শাত্রব॰ ক্লী শত্রভাবঃ॥শত্রুস॰ रुिः। ইতি यिनिनी।। শাত্রবঃ পু॰ শত্রুঃ। ইত্যমরঃ।। শাদঃ পু॰ কর্দমঃ।। শম্পণ। ইত্য-यतः ॥ শাদহরিতঃ ত্রি শাদলঃ। ইত্য-মরঃ ॥ भाषनः वि नेवज्नदश्नातमः। ইত্যমরঃ।। শাদো নবতৃণ বি-দ্যতে ২ত্ত শাদ্বলঃ। শস্পবাচিন এব শাদশবাদলঃ স্যাৎ ন তু পঙ্কবাচিনো ২নভিধানাৎ ইতি ভট্টীকাষাণ ভরতঃ ॥ শান এ তেজে। ইতি কবিকল্প-ক্রমঃ।। শান স্তিক্ষীকরণ । এ

শীশাণসতি শীশাণসতে খন্ধ কর্মকারঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।। শানঃ পুং শাণঃ। ইত্যমরটীকা-যাণভরতঃ।।

শানপাদঃ পু॰ পারিপাত্রপর্বতঃ।।
চন্দনঘর্ষণপাষাণঃ। চন্দনপিতি
ইতি ভাষা। ইতি মহাভারতে
হরিব॰শঃ।।

শানী স্ত্রী ইন্দ্রবারুণী। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

শাস্তঃ ত্রি উপশম•প্রাপিতঃ। প্রাপ্তোপশমঃ। ইতি ভরতঃ।। তৎপর্য্যায়ঃ। শমিতঃ ২। ইত্য-মরঃ।। প্রাস্তঃ ৩ জিতেন্সিয়ঃ ৪ । ইতি হেমচন্দ্রঃ।। শমান্বিতঃ ৫ । ইতি মেদিনী।।

শান্তঃ পুণ অভিযুক্তঃ ৷ রসভেদঃ

া ইতি মেদিনী ৷৷ শান্তরসস্য
লক্ষণাদি যথা ৷ শান্তঃ শমঃ
স্থাবিভাব উক্তমপ্রকৃতি র্মতঃ ৷
স্পেন্দু সুন্দরক্ছায়ঃ শ্রীনারাষণ
দৈবতঃ ৷৷ অনিত্যন্তাদিনাশেষ
বস্তুনিঃসারতা তু যা ৷৷ পরমার্থ
স্থাপ্রম হরিক্ষেত্র তীর্থরম্য
বনাদ্যঃ ৷৷ মহাপুরুষ সঙ্গাদ্যা
ভ্রেয়াদ্দীপনক্পিনঃ ৷ রোমা-

ঞ্চাদ্যা শ্চানুভাবা স্তথা স্যূ ব্য-ভিচারিণ: 11 निर्दिष दर्य प्रात्र मिं ভূতদ্যাদ্যः। यथा। तथा। ন্ত শ্চরত স্তথ। ধৃতজরত্কস্থা न्वनाधरेगः मञामक मरकी-जूकक मनय॰ मृखेमा रेज न्भान-রৈঃ। নিধী জীক্তত চিৎসুধা র-সমুদা নিজাযমাণস্য মে নিংশ-ক্ষণ করটঃ কদা করপূটী ভিক্ষা• विन्िशेषां ।। भूकिञ्ज महाजा-त्रञारेने जरूरा ॥ नित्रश्कात ৰূপদ্বাৎ দ্যাবীরাদি রেষ নো। **म्यावीद्राटमे हि जीमृ** छ्वाह्न।-(म) अखत्र। मनयवज्ञामानुत्राभा-দে রস্তে চ বিদ্যাধর চক্রবর্তি দা-मारक पंग्नामहक्रादानगरमा ন দৃশ্যতে। শাস্তস্ত সৰ্বপ্ৰকারে-ণাহকার প্রশমৈক ৰূপদ্বাম ত-ত্রান্তর্ভাব মর্হতি। অতশ্চ নাগা-নন্দে শান্তরস প্রধানম্ব মুগান্ত• ॥ ननू न यख पूद्य न সूर्थ न চিন্তা ন দ্বেষ রাগৌ ন চ কাচি-দিছে। রসঃ স শান্তঃ কথিতো मूनीटेखः मर्दिषु ভाবেषु मम्ब-মাণঃ ॥ ইত্যেব॰ ৰূপস্য শাস্ত্ৰস্য মোক্ষাবস্থায়া মেবাতা স্বৰূপাপ-ত্তি লক্ষণাযাণ প্রাদ্ভাবাৎ। তত্ত

সঞ্চাৰ্য্যাদীনা মভাবাৎ কথ

রসত্ব মিত্যুচ্যতে যুক্ত বিযুক্ত দশাযা মবস্থিতো যঃ শমঃ সএব ষতঃ রসতা মেতি তদস্মিন্স-ঞ্চার্য্যাদেঃ স্থিতিশ্চ ন বিরুদ্ধা। ষ শ্চান্মিন্ সুখাভাবো ২প্যুক্ত ন্তদ্য বৈষ্ব্যিক সুখপরত্বাম বি-রোধঃ ॥ উক্ত॰ হি। यक काम-সুখ লোকে যচ্চ দিব্য মহা-সুখণ। তৃষ্ণাক্ষয় সুখস্যৈতে না-ৰ্হতঃ ষোডশী কলা ।। সৰ্বা-কার মহঙ্কার রহিতত্ব॰ ব্রজস্তি চেৎ। অত্ৰান্তৰ্তাব মহন্তি দ্যা वीतान्य छना ॥ जानियका ধর্মবীর দানবীর দেবতাবিষয়-রতি প্রভৃত্যং। তত্র দেবতা বি-ষষা রতি র্যথা। কদা বারাণস্যা निश् मूत्रधूनी त्राधिम वमन् व-সানঃ কৌপীন শিরসি নিদ্ধা-**नाञ्चल भूहे**। ज्ञास भीती-নাথ ত্রিপুরহর শস্তো ত্রিনম্বন প্রসীদেতি ক্রোশন্নিষ্ মিব নেয়ামি দিবসান্।। ইতি সা-হিত্যদর্পণে ৩ পরিচ্ছেদঃ॥ শান্ত ব্য বারণণ ইতিমেদিনী॥ শান্তনবঃ পু॰ শান্তনুরাজপুলঃ । ভীন্মঃ। ইতি ত্রিকাগুলেষঃ।।

শান্তন্ঃ পু॰ দাপরযুগদ্য চন্দ্র-ব॰শীযৈকবি॰শরাজঃ। সতু গ-ঙ্গাযাণ ভীষাণ জনফামাস। তস্য পিতা প্রতীপঃ। যথা। জযদেন স্তত্তনযো রাধিকোতো ২মূতা ষুভূৎ। তত শ্চাক্রোধন স্তম্মাৎ দেবাতিথি রমুষ্য চ।। ঋক্ষ স্তস্য দিলীপো ২ভূৎ প্রতীপ স্তস্য চাত্মজঃ। দেবাপিঃ শান্তনু স্ত-স্য বাহ্লীক ইতি চাত্মজাঃ ॥ য° য° করাভ্যা॰ স্পৃশতি জীৰ্ণ॰ যৌবন মেষ্যতি ৷ শান্তি মাপ্নো-তি চৈবাগ্ৰ্যাণ কৰ্ম্মণা তেন শা-खनूः ॥ वाङ्गीका भागमत्ला ২ভূৎ ভূরি ভূরিশ্রবা স্ততঃ। শলশ্চ শান্তনো রাসীৎ গঙ্গা-যাণ ভীম আত্মবান্।। ইতি শ্রীভাগবতে ৯ স্কন্ধে ২২ অধ্যা-**यः ॥ ७९** शर्यायः । महाजीयः ২। ইতি জটাধরঃ ॥ প্রাতীপঃ ৩ ৷ ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ৷৷ প্রতী-পঃ ৪ প্রতিপঃ ৫ । ইতি শব্দ-त्रञ्जावनी ॥ कर्क ही । देखि त्रञ्ज-याना ॥ শাস্তা দ্রী লোমপাদরাজকন্যা।

সাচ ঋষ্যশৃঙ্গভার্যা। ইতি রা-

মায়ণ ।। শ্মীভেদঃ। তৎপর্য্যা-

যঃ। শুভা ২ ভদ্রা ৩ অপরা-জিতা ৪ জয়। ৫ বিজয়া ৬ । অস্যা গুণাঃ শ্মীবৎ । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।

শান্তিঃ স্ত্রী কামক্রোধাদিপ্রশমঃ । চিত্তোপশমঃ। ইতি ভরতঃ॥ বিষযেভ্য ইন্দ্রিযোপরমঃ। ইতি চণ্ডীটীকাষাণ নাগোজীভটঃ ।। তৎপর্য্যায়ঃ। শম্থঃ ২ শ্মঃ ৩ । ইত্যমরঃ॥ প্রশমঃ ৪ উপশমঃ ৫প্রশান্তিঃ ৬। ইতি শব্দরত্না-वनी ॥ जृकाकयः १। इंजि दर-মচন্দ্রঃ ।। তল্লক্ষণ যথা। যৎকি-ঞ্চিত্তত্ত্ব সংপ্রাপ্য স্বন্ধ বা যদি বা বহু। যা তৃষ্টি জাযতে চিত্তে শান্তিঃ সা গদ্যতে বুধৈঃ ৷৷ ইতি अष्मभूतार्व कियारयागमारत १६ षशायः॥ #॥ ७७ । ३७ दि-মচন্দ্রঃ।। গোপীবিশেষঃ। যথা। রাধিকোবাচ। শান্ত্যা গোপ্যা যুত স্তৃঞ্চ দৃষ্টোহণ রাসমণ্ডলে। বসন্তপুষ্পাশ্যাশা মাল্যবান্ চন্দনোক্ষিতঃ।। রত্নপ্রদীপৈ র্যু-क्रम्ठ রত্ননির্মাণমন্দিরে। রত্ন-ভূষিতভূষাচ্যো রত্নভূষিত্যা স-হ ৷৷ তথা দত্তক তামূল ভূ-क्कवा॰ भूता विद्या। महा।

মচ্ছস্দমাত্রেণ তিরোধান ক্রতণ ত্বযা।। শান্তি র্দেহণ পরিত্যজ্য ভযাদীনা দ্ববি প্রভো। তত স্তদ্যাঃ শরীরঞ্চ গুণশ্রেষ্ঠ বভূব হ।। সংবিভঙ্গ্য দ্বযা দত্তং প্রেরা প্ররুদতা পুরা ৷ বিশ্বে বিষ্যিণে কিঞ্চিৎ সত্ত্বৰূপায় ব্ৰিফবে॥ শু-क्षमञ्चलभारेय महालदेका भूता বিভো। ত্বন্মস্ত্রোপাসকেভ্যশ্চ বৈক্ষবেভ্যশ্চ কিঞ্চন ৷৷ তপস্বি-ভ্যশ্চ ধর্মায ধর্মিষ্ঠেভ্যশ্চ কিঞ্চ-ন। ইতি ত্রন্ধবৈবর্ত্তে প্রকৃতিখণ্ডে ञ्यशायः ॥ ॥ मूर्गा । यथा । উৎপত্তি স্থিতি নাশেষু রজাদি ত্ৰিগুণা মতা। সৰ্বজ্ঞা সৰ্ববেকৃ স্বাচ্ছান্তিস্বাচ্ছান্তি রুচ্যতে ॥ ইতি দেবীপুরাণে দেবীনিক্নক্তা-शायः ॥ 🗰 ॥ शर्मावाता अहरती-श पूः यक्षा पिमू विटि छ दिका निके-(रुजुमूतिजिनवृज्धिः । यथा । य-থা শস্ত্রপ্রহারাণাণ কবচণ বিনি-বারক । তথা দৈবোপঘাতা-না॰ শান্তি র্ভবতি বারণ ।। বাল-গ্রহ ভূতগ্রহ নরাধিপ প্রবলতর শত্র দুঃসহরোগাভিভবাদ্ভত দুঃ-यक्ष अश्रामि निभिज्यके भी-স্তিকর্মাপি মলমাসে কর্ত্তব্য• ।

শুদ্ধকাল প্রতীক্ষাষা মসহত্বেনা-নন্য গতিকত্বাৎ। অতএবাত্মান॰ সতত গোপাষীত ইতি শ্রুতৌ সতত মিত্যুক্ত । ইতি মলমাস-॥ তত্ত্ব॰ ॥ 🗱 ॥ উপসর্গশান্তিগ।-था यथा। এया मिट्या महावीर्या স্ত্রৈলোক্যস্যেশ্বরো ২ভবৎ। শ-ত কতুনা মাহত্য সুশান্তি নাম নামতঃ ৷৷ তদ্যোপদর্গনাশাষ নামাক্ষরবিভূষিতা । অদ্যাপি মানবৈ গাথা গীষতে ২ত্ৰ মহীত-ला।। मनाञ्चि प्रतिहा नाञ्चः সুশান্তি॰ नः প্রযক্তি। সহিতঃ শিব সত্যাদ্যৈ স্তথৈব বশবর্ত্তি- 🏻 ভিঃ॥ ইতি মার্কণ্ডেমপুরাণে উ-ख्यमञ्ख्य ममाश्चाधायः ॥ 🛊 ॥ অথাজুতশান্তিঃ। তত্ত্ৰাজুতনি-ৰপণ । অদ্ভুতসাগৱে আধৰ্বণা-ন্তুতবচন । প্রকৃতি বিরুদ্ধ মন্তুত মাপদঃ প্ৰাক্ প্ৰবোধায় দেবাঃ সৃ-জন্তীতি। তেনাপজ্জানাষ ভূ-ম্যাদীনাণ পূৰ্বণ স্বভাব প্ৰচ্যবো দেব কতৃ কো ২ন্ডুত ইতি ৷ এবঞ্চ वूरधामयभ्रविश्वश्मीना गनि-তাগণিতত্বেন প্রক্নতানামপি য-দুৎপাতত্বণ তদ্ভাক্তণ। তৎকারণ-🕶 গৰ্গস্'হিত। বাৰ্হস্পত্যমোঃ।

অতিলোভাদসত্যাদ্বা নাস্তিক্যা-দাপ্যধর্মতঃ। নরাপচারান্ধি-যত মুপদর্গঃ প্রবর্ত্ততে ।। ততো ২পচারামিষত মপবর্জ্জন্তি দে-ব্তাঃ। তাঃ সৃজস্ত্যন্ত্তাণ স্তাণ स्व मिया नाजम जृमिकान् ॥ ठ-এব ত্রিবিধা লোকে উৎপাতা দেবনির্শ্মিতাঃ । বিচরস্তি বিনা-শায बरेभः मरबाधविष्ठ ह ॥ 🛊 ॥ তা॰শ্চ পর় ন দর্শযেদিত্যাহ বিষ্ণুঃ। নোৎপাত দর্শবেদিতি। তত্ৰ বেলা নক্ষত্ৰমণ্ডল নিৰূপণ ৷ यथा मीलिकाया । आग् विजि চতুর্তাগৈ দ্যু নিশো রম্ভুতেষু স র্বেষু। অনিলাগি শক্ত বরুণা ম-গুলগত্যঃ শুভাশুভৈশ্চ ॥ বেলা मक्षनः। जर्गामानि ठजूक ठळा जू-রগাদিত্যেষু বাষু র্ভবেৎ দেবে-জ্যাজ বিশাখ যাম্য বুগলে পিত্র্য দ্বে চানলঃ। বিশ্বাদি ত্রম ধাতৃ रेमक यूगलिशिका ज्वापुरनः সর্গোপান্ত্য শতান্ত্য মূলমুগলে-भारतव्याभीश्रदः ॥ शवन महत्नी নেকৌ ষোগ স্তযো রতি দোষ-দঃ। সুরগতি বরুণৌ শস্তৌ যোগ স্তধে। রতিশোভনঃ ॥ সবরুণ ম-রুমিশ্রঃ শক্ত স্তথামি সমাযুতঃ।

'ৰুলবিব্নহিতঃ সেন্দ্ৰো বাযু স্তথা-গ্নিযুতোমুপঃ 11 যমগুলেজুত জাত॰ শান্তি স্তদ্দেবতা**শ্র**যা । ভথা শান্তিদ্বয় কাৰ্য্য মণ্ডল-बयकास्त्रूटा ॥ 🛊 ॥ विक्थर्त्मा-ত্তরে। গ্রহর্ক বৈক্বত দিব্য আ-স্তরীক্ষণ নিবোধ মে। উদ্ধাপাতো দিশা॰ দাহঃ পরিবেশ স্তবৈথব চ ॥ গন্ধৰ্বনগরঞ্বৈ বৃষ্টিশ্চ বিক্নতা তথা। এব মাদীনি লোকেস্মিন্ স্থির ভব ভৌম ভূকম্প মপি ভূমিজণ। জলাশধানাণ বৈক্বত্যণ ভৌমণ তদপি কীর্ত্তিত ।। 🛊 ॥ ভৌম• চাল্পফল• জ্ঞেষ• চিরেণ পরিপচ্যতে। নাভস॰ মধ্যফলদ॰ মধ্যকাল ফলপ্রদে ।। দিব্য তীত্র-ফল জেষ শীঘুকারি তথৈব চ 1#1শীতোক্ষতা বিপর্য্যাসো ঋ-তূনা॰ রিপুজ॰ ভষ•॥ পুষ্পে ফ-লে চ বিহ্নতে রাজ্ঞো মৃত্যু তথা দিশেৎ। অকাল প্রভবা নার্য্যঃ কালাতীতাঃ প্রজা স্তথা।৷ বিক্ল-তাঃ প্রসবা কৈচব যুগ্মপ্রসবন **७था ॥ शैनाङ्गं অधिकाङ्गान्छ** कायरछ यपि वा बयः ॥ शेनवः পক্ষিণ শৈচব তথৈব চ সরীসৃপাঃ

। विनाम॰ छमा पिर्मा अलमा ह विनिर्मित्। श्री अपनार्य अकु-টারাবো হেমস্তে চাপি কোকি-লাঃ। অর্কোদযে ২র্কাভিমুখঃ শ্বা-রাবো নৃভষ দিশেৎ ॥ উলুকো বসতে যত্ৰ নিপতেছা তথা গৃহে। জ্ঞেযো গৃহপতে মৃত্যু র্ধননাশ স্তব্যৈব চ ৷৷ গৃধুঃ কঙ্কঃ কপোত-শ্চ উলুকঃ শ্যেন এব চ ৷ চিল্লশ্চ চর্মচিল্লশ্চ ভাসঃ পাওর এব চ।। গৃহে যস্য পতম্ভোতে গেহণ তস্য বিপদ্যতে। পক্ষামাসাত্তথা বর্ষা-गृजुः गाकाृश्राधिनः ॥ পङ्गाः পুত্রস্য বা মৃত্যু র্দ্রব্যঞ্চাপি বিন-শ্যতি। ব্ৰাহ্মণায গৃহ্• দদ্বা দদ্বা **ज्यूना भिव वा ॥ गृ**ङ्गीयाम्यिन রোচেত শান্তি ঞ্চেমাণ প্রযোজ-ষেৎ। ইমাণ বক্ষ্যমাণাণ। 🗱। মাণ-माञ्चीनि ममानाय भागानानापुर् वारमाः ॥ या मृगात्नाथ वा মধ্যে পুরস্য প্রবিশস্তি চেৎ। বি-কিরম্ভি গৃহাদৌ চ শ্মশান সা মহী ভবেৎ ॥ চৌরেণ হন্যতে লোকঃ পরচক্র সমাগমঃ। স॰-গ্রামশ্চ মহাঘোরো দুর্ভিক্ষণ মর-ক তথা।। অভুতানি প্রস্যস্তে তত্র দেশস্য বিজবং। অকালে

कल भूष्णानि प्रभविखवकात्रन ।। 🟶।। নৎস্যপুরাণে। অতিবৃষ্টি त्रनावृष्ठि पू जिंकापि जरु गठः। चन्छो जू मिनामृष्ट्वं वृष्टि दर्खरा ভযাষ চ।। নিরভুে বাথ রাত্রৌ বা শ্বেত যস্যোত্তরেণ তু । ইক্রা-ষুধ ততো দৃফ্বী উল্কাপাত ত-रेथव ह ॥ मिन्नाइ शतिरवरनो ह গন্ধর্বনগর তথা। পরচক্রভয় বিদ্যাদেশোপজৰ মেৰ চা৷ ভা-সো বনঙ্গৰুটঃ।। #।। কণস নিধন সূচনে হরিব শঃ। বক্র মঙ্গারক-শ্চক্রে চিত্রাযা ঘোর দর্শনঃ। চ-লত্যপৰ্ৰণি মহী গিরীণাণ শিখরা-ণি চ ৷৷ বাণোৎপাতে সএব ৷ দ-ক্ষিণাণ দিশ মাস্থাষ ধূমকেতুঃ স্থি তো ২ভবৎ। বক্ত মঙ্গারক শ্চক্রে রুত্তিকাসু ভযকরঃ।।ৠ। রুত্যচি-স্তামণৌ। ত্যক্তাশোচ বিবেক ত-ত্ত্ব বসুধা লোকাঃ ক্ষুধাপীডিতাঃ বিপ্রা বেদহতা স্তথা প্রচলিতা বহ্বাশিনে। দুখিতাঃ। ক্ষৌণী ম-ন্দফলা নৃপাশ্চ বিকলাঃ সংগ্রাম-যোরা মহী প্রেতাঘাত দুরস্ত পীডিততরা দেবেজ্য রাহ্বো র্যু-তৌ।। রক্তে শস্ত্রোদেয়াগো মা॰-माञ्चि वनामिछि मॅत्रकः । शाना

হিরণ্য ত্বক্ ফল জসুমাদ্যে বর্ষি-তে ভয়॰ বিদ্যাৎ।। অঙ্গার পাণ্শু বর্ষে বিনাশ মুপযাতি তন্নগর । উপল॰ বিনা জলধরে বিরুত। वा यका व्यानिता वृष्णा ॥ ছिज्र॰ বাপ্যতিবৃষ্ঠি শস্যানা নীতি সং-জনन॰। *। तृश्रको निकमशारम। বল্ল্যাঃ প্রপাতে চ ফল শরটস্য প্ররোহণে। শীর্ষে রাজপ্রিযো বাপ্তি ভালে চৈশ্বর্য্য মেব চ।। ক-र्नरमा जू येगावाश्वि त्रविरमा ईस्नु-দর্শন ৷ নাসিকাযাঞ্চ সৌগন্ধ্য • বক্তে নিষ্টান্ন ভোজনণ।। কণ্ঠে-চৈব শ্রেষো ২বাপ্তি ভূজিযো বিভবো ভবেৎ। ধমলাভো বা-**श्रम्** कत्रा र्थनवृक्षयः ॥ छ-নমূলে চ সৌভাগ্যু হৃদি সৌ-था विवर्कन । शृत्धे निजा भरी-लाजः পार्श्वरशा वंश्रुमर्भनः ॥ क-টিদ্ববে বস্ত্রলাভে। গুন্থে মৃত্যু স-মাগমঃ। জ্বজ্বে চার্থক্ষয়ে। নিত্য• গুদে রোগভষ॰ ভবেৎ ।। উর্বো-ख वार्नावाश्वि कान् कट्यर्थ-मःक्यः। वाम निक्रन्त्याः शात्त जुमन नियञ ज्यव ॥ वलाः প্ররোহণে চৈব পতনে শরটস্য চ । ব্যত্যাসাচ্চ ফলক্ষৈব তছদেব

প্রজাযতে ৷৷ বল্ল্যাঃ প্ররোহণ রাত্রো শরটস্য প্রপাতন । নিধ-নাৰ্থাষ্ ভবতি ব্যাধি পীড়া বিপ-র্য্যায়ে গা পতনানস্তরণ চৈবারো-হণ যদি জাষতে। পতনে ফল-মুৎক্লফ রোহণে ২ন্যৎ ফল ज्दर ॥ जाताश्नरकार्षाकृरस्कु অধোবক্তে চ পাতন । ভবে-দিফফলণ তস্য তৎ কালে জায-তে ধ্ৰুবণ ॥ ঋ॥ স্পৃষ্টিমাত্ৰে তযোঃ महाः मटहनः क्रन मावित्नः। পঞ্চাব্য প্রাশনঞ্চ স্বর্যাদর্কাব-লোকনং ৷৷ বল্লীৰূপং সুবৰ্ণস্য র-ক্তবস্ত্রেণ বেষ্টযেৎ। পূজ্বেদান্ধ भूमारिमा **खनः** अर्वञ्चरक ॥॥ পঞ্গব্য পঞ্রত্ন পঞ্চামৃত স-পল্লব । পঞ্বৃক্ষকষায়ঞ্চ নিক্ষি-প্যাবাহ্ষেত্ততঃ ৷৷ পূজ্যেকান্ধ भूभारिमा र्लाकभाना[•] खथा ध-হান্। মৃত্যুঞ্বেন মন্ত্রেণ সমি-ন্ডিঃ খদিরৈঃ শুভৈ: 11 তিলৈ র্ব্যাস্থৃতিভি র্হোম মফৌত্তর সহ-সুক । ৰলী গৃহগোধিকা। মৃত্যু-क्षयमञ्ज द्यायकमञ्जः ইতি विদ্যा-कतः॥ 🗱॥ भर्गमः हिन वर्ष्ट्रणः ত্যবোঃ। যে তেষু শান্তিণ সর্বস্তি ন তে যান্তি পরাভবং। যে তু ন

প্ৰতিদৰ্বন্তি ক্ৰিয়য়া প্ৰদ্বয়ান্ধি তাঃ ॥ দান্তিক্যাদা বিমোহাদ্ধ বিনশ্যন্ত্যেব তে ২চিরাৎ। 🛊 । অত্র নিমিত্তনিশ্চযবতো ২ধিকা-রো হন্যথা দোষ ইত্যাহ মৎ-স্যপুরাণ । ভিন্নমণ্ডল বেলাষা• যে ভবন্তান্তুতাঃ ক্বচিৎ । তত্র শান্তিদ্বয়ণ কাৰ্য্যণ নিমিত্তে সজি নান্যথা।। নির্নিমিত্তফ্বতা শাস্তি র্নিমিত্ত মুপপাদযেৎ। এতচ্চ তত্তদিশেষ বিহিত শাস্তি বিষ-ষ°। অন্যথা বেলা মণ্ডল সন্দে-হে শান্তি র্ন স্যাৎ।। #॥ অতএ-বোক্ত॰ ষোগি যাজ্ঞবক্ষ্যেন ৷ যত্ৰ ষত্র চ সংকীর্ণ মাত্মানং মন্যতে দিজঃ। তত্ৰ তত্ৰ তিলৈ ৰ্হোমো গাৰত্রা সমুদাহতঃ ৷৷ গাৰত্রা প্ৰষতঃ শুদ্ধঃ সৰ্বপাপেঃ প্ৰমুচ্য-তে। শান্তিকামশ্চ জুহুষাৎ গায-बी मक्रोटः छिन्।। रहकामक নৃপতে ঘৃঁতেন জুহুয়াৎ শুটিঃ 1 সাবিত্র্যা শান্তিহোমাণশ্চ স্ব-ৰ্ব্যাৎ প্ৰবৃদ্ধ নিত্যশঃ ।। প্ৰণব ব্যাহ্নতিভ্যাঞ্চ স্বাহাস্তো হোম-কৰ্মণি। প্ৰতিলোমা প্ৰযোক্তব্যা ফট্কারাস্তাভিচারিকে ॥ # ॥ गार्क एख यभू तान । निरुत्तम जन

শামান্য নৃপসামান্য মান্সনি। নক্ষত্র গ্রহ সামান্য নরে৷ ভুঙ্জে শুভাশুভ• ৷৷ পরস্পরাভিরক্ষা-চ গ্রহদোষেষু জায়তে। তথা। ভস্মাচ্ছান্তিপরঃ প্রাজ্ঞো লোক-বাদরত স্তথা। লোকবাদা॰ শ্চ শান্তীশ্চ গ্রহণীডাসু কারযেৎ॥ ভূদোহানুপবাসাংশ্চ শস্তু চৈ-णामिवन्मनः । अर्यापः <हामः তথা দান প্রাদ্ধ ক্রোধ বিব-ৰ্জ্জনণ। অজোহণ সৰ্বভূতেষ মৈ-ত্ৰী॰ সৰ্বস্তি পণ্ডিতাঃ । বৰ্জ্জবে-দুষতীণ বাচ মতিবাদাণ স্তথৈৰ চ ।। গ্ৰহপূজাঞ্চ স্বী ত সৰ্বপীডাসু-মানবঃ। এবং শাম্যস্ভ্যশেষাণি বোরাণি দিজসত্তম ৷৷ প্রয়তানা• মনুষ্যাণা গ্রহকোত্থান্যনেকশঃ 1 *। লোকবাদাশ্চ তত্ত্রৈবোক্তা যথা। আকাশাদেবতানাঞ্চদে-वामीनाक मिल्रा । श्व-ব্যাণ প্রতিলোকে চ লোকবাদা ইতি স্মৃতাঃ॥ তেচ সৰ্বভূত ডা-কিন্যাদ্যভিভব শাস্ত্যর্থ লৌ-किटकोषध मञ्जामसः । विषर्त्री মঙ্গলচণ্ডিকা গীতাদযঃ। চৈত্য বৃক্ষাদৌ ক্ষেত্রপাল সলদেবতা-পূজা চ।। 🟶 ।। তথা চাপস্তয়: 🛭 🛭

দ্রীভ্যো ২বরবর্বেভ্যো ধর্মশে-ষান্ প্রতীযাদিত্যেক ইতি। ধ-শ্মশেষান্ শ্রুতি স্মৃতি সদাচারে-यथिनिकान् ३७ नातायत्गाना-थायाः। ভূদোহশ্চ পাত্র॰ বিনা ভূমোগোন্তন নিশীত্য দুদোৎ-সর্গঃ। চৈত্যঃ পূজ্যত্বেন খ্যাতো আমপ্রধানবৃক্ষঃ। তথা চ বা-গোৎপাতে হরিব॰শঃ। অনেক-শাখ শৈচত্যশ্চ নিপপাত মহীত-লে। অচিতঃ সৰ্বকন্যাভি দান-বানাণ মহাত্মনাণ ৷৷ উষতীণ অক-ল্যাণী । অতিবাদশ্চ পূজ্যমতি-ক্রম্য ভাষণ ।।ৠ। মৎস্যপুরাণ । কাকস্যৈকরবশ্রাবঃ প্রভাতে मुःथमायकः। कारका रेमथूनका-সক্তঃ শ্বেতো বা যদি দৃশ্যতে।। উলূকো বসতে যত্ৰ নিপতেৎ বা তথা গৃহে। জ্ঞেযো গৃহপতে মৃ-कु र्यननाम खरेथन ह ॥ #॥ व-রাহসংহিতাযা । ক্রীডানরক্রো রতি মাণসলুকো ভীতো রুজার্তঃ পতিতো বিহস্কঃ। নাসৌ গৃহস্ক-স্য বিনাশহেতু দোষঃ সমুৎপা-দ্যত আহু রাষ্যাঃ।। গৃহে পকি বিকারেষু সর্য্যাচ্চামর তর্পণ । দেবাঃ কপোতা ইতি বা জপ্তব্য

সপ্তভি ৰ্দ্বি জৈঃ।। গাবশ্চ দেয়া বিবিধা দ্বিজানা সকাঞ্চনা বস্ত্র-যুগোত্তরীযাঃ। এবং ক্লতে পাপ-মুগৈতি শাস্তি মৃগৈ ৰ্ছি জৈ বাঁপি নিবেদিত যৎ 11 দিজৈঃ পকি-ভিঃ। অপিন। অন্যৈ রপি।। 🟶 🛭 ভুজবলভীমে। একে। বৃষ স্ত্রযো গাবঃ সপ্তাশ্বা নব দস্তিনঃ। সি°হ প্রসূতিকা শৈচব কথিতাঃ স্বানি-ষাতকাঃ॥ সি॰হপ্রসূতিকা গাবঃ॥ ।। 🗱। মৎসাপুরাণে। অঙ্গে দক্ষি-ণভাগে তু শস্তু বিস্ফুরণ ভবেৎ 1 जञ्चमञ्च॰ তथा वारम পৃষ্ঠमा क्षियमा है।। लाक्ष्रिनः शिवेकरिक्षव জ্ঞেয়ণ বিক্ষুজ্জিত তথা। বিপ-ৰ্য্যযেণ বিহিত॰ সৰ্ব॰ জ্ৰীণা॰ ফল॰ ७था ॥ जनिस्हेिटङ्गां भगत्य हि-জানাণ কার্য্যণ সূবর্ণেন চ তর্পণণ मा। मधः। मूः यक्षानिक म-र्मनारमी घृठ॰ हित्रगुक्ष ममामि-তি।। 🗱 ।। মাৎস্যে। নম স্তে সর্ব-लाकिंग नम एउ ज्ञनमन । কবে সৰাৰ্থ সিদ্ধ্যৰ্থ গৃহাণাৰ্ঘ্যণ নমোস্ত তে।। এবং শুক্রোদয়ে ঙ্গৰ্বন্ যাত্ৰাদিযু চ ভারত। স্বান্ কামানবাপ্নোতি বিক্তুলোকে ম-হীযতে।। নমস্তে ংঙ্গিরসাণ নাথ

বাকপতেথ বৃহস্পতে। ক্রুর পীডিতানা মমৃতাষ নমে। নমঃ। সংক্রান্তাবপি কৌন্তেয় যাত্রাস্ব-ज्ञानरययु ह । अर्बन् वृङ्ग्र्शरंजः পূজা॰ সৰ্বান্ কামান্ সমশুতে ॥ ३। देवस्वामृट्य कामः। अर्य-জ্ঞেঃ শস্তিকৈশ্চ কিশ্কিশাস্তি ন-রা ছিজ। মহাশান্তিকরঃ শ্রীমান্ তুলস্যা পূজিতো হরিঃ।। উৎ-পাতান্ দারুণান্ পুংসাং দুর্নিমি-ত্তাননেকশঃ। তুলস্যা পূজিতো ভক্ত্যা মহাশান্তিকরো হরিঃ ৷৷ অত্র বন্ধপুরাণীযো মন্তঃ। নম-ত্তে বহুৰূপায় বিফবে পরমান্ম-নে স্বাহেতি।। 🟶 ।। ছন্দোগপরি-শিষ্ট॰। অথাতো রজস্বলাভিগ-মনে গো ২শ্বভার্য্যাসূ গমনে ষ-মজজননে বিজাতীযজননে বা কাক কন্ধ গৃধু বক শ্যেন ভাস চিল্ল ৰূপোতানা° গৃহপ্ৰবেশে মা-ন্ৰস্যোপরি বিশ্রামণে এষা মেব ক্রিয়মাণে গৃহদ্বারারোইণে অ-ন্যেষ্ চাজুতেষু কল্পদৃষ্টেন বি-विना रेशि गूलनमाधाय आयन्हि-ত্তাজ্যাহতী জুহোতি অভূতায व्यादय साहा मामाय विकटत রুজায় বায়বে সূর্য্যায় মৃত্যুবে

বিশেভ্যো দেবেভ্যঃ স্বাহেতি श्रानीशाकावृजान्यमिष्ठि ॥ • ॥ কপোত বিশেষয়তি শৌনকঃ। রক্তপাদঃ কপোতাখ্যো অরণ্যৌ-काः शुक्छ्विः। म क्रिष्टालाः वि-শেक्नामा मगीनक बद्धालि ॥ অন্যেষু গৃহমধ্যে বা বন্মীকল্যো-कामानिषु। कन्नमृत्येन विधिना গৃহ্খোক্তেন প্রাযশ্চিত্তাজ্যাহতীঃ **जर्ड्डिंग्स्थिनम्नार्थाः मक्षा-**জ্যাহতীঃ অদ্ভুতাযাগ্নযে স্বাহা ই-ত্যাদি মষ্ট্রেঃ তৎস্থালীপাকেতি-কর্ত্তব্যত্ত্বা পাষসচরুভি রেতে-ভোদেবেভ্যোজুহুষাণা ছন্দোগ-পরিশিষ্ট । পশ্চাৎ ঘৃতপাযসে-ন বান্ধণান্ ভোজ্যিত্বা গোবরণ দত্বা শাস্তি র্ভবতীতি। গোবরণ গোভোষ্ঠ ৷ দক্ষিণা তা গা ক্রত্বা দোষশান্তি র্ভবতীতি। তথাচো-ক্ত । গৌ বিশিষ্টতমা লোকে বেদেশ্বপি নিগদ্যতে। ন ততে। श्नाषतः रायाख्यातमा वंत मु **हाट्य ॥ इत्नाग**शतिनिखे॰ । य-স্থেষা মন্যতম মাপন্নঃ প্রায়শ্চি-তত্ত ন স্ব্যাত্তন্য গৃহপতে ম্রণ সৰ্বস্বনাশো বা ভবতি তস্মাৎ প্রাযশ্চিত্তণ কর্ত্তব্যণ কর্মাপরর্মে

বামদেব্যগান শান্তি শান্তিরি-**তি। जनवर्श मगारश्ची। वामरम** ব্যগান শান্তিঃ কার্য্যা৷ আবৃত্তিঃ প্রকরণ সমাপ্ত্যর্থা। বাহস্পত্যে। শৰযন্ত্যাসপ্তাহাৎ কম্পাদিক্তণ নিমিত্ত মাশ্বেব। অতিবৰ্ষণোপ-ৰাস ত্ৰত দীক্ষা জপ্য হ্বনানি ।। 🟶।। বরাহঃ। যে চ ন দোষ জ-নযম্ভাৎপাতা স্তান্তুমভাবয়-তান্। ঋষিপুত্রক্তেঃ লোকৈ বি-मारापिङ मगारमारेकः ॥ ७था চ মৎস্যপুরাণ । ব্রজ্ঞাশনি মহী-কম্প সন্ধ্যা নিৰ্যাত নিশ্বনাঃ। পরিবেশ রজো ধূম রক্তার্কান্ত-गरमानयाः ॥ कप्तराज्या २थ तम মেহ মধু পুষ্প ফলোদামাঃ।গো-পক্ষি মদবৃদ্ধিশ্চ শিবায় মধু মাধ-বে ৷৷ঞ্চা তারোক্ষাপাত কলুষণ ক- ি शिनादर्ममू यखन । जनित्र जन-নং ছেনটে ধূম রেণুনিরাঙ্গল ।। রক্তপদারুণা সন্ধ্যা নভঃ ক্ষুরার্ণ-বোপমণ। সরিতাঞ্চাষ্ট্র সংশোষণ मृक्षे औरम **७७** वरम । 🛊 ॥ শক्তायूथ পরীবেশে বিদ্যুচ্ছ ছবি-রোহণ । কম্পোদ্বর্ত্তন বৈক্নত্য• রসন• দরণ ক্ষিতেঃ ৷৷ নদ্যুদপা-न गत्रमा॰ वृक्षेत्रका ज्वनक्षवाः।

পতনঞ্চাজিগেহানা বর্ষাসু ন खशावर ।। रहित रेम वर्षावर्गना-যা । ক্বচিৎ কন্দরহাসাঢ্য नि-লীক্ষাভরণ কচিৎ। ইতি দর্শ-ना९ वर्षामू निनीरक्नाकारमा न ভষাবহঃ ৷৷ 🟶 ৷৷ দিবাস্ত্রী ভূত গ-ন্ধৰ্ব বিদানাজ্ভদর্শন । গ্ৰহ ন-ক্ষত্র তারাণাণ দর্শনঞ্চ দিবায়রে ।। গীত বাদিত্র নির্ঘোষো বন প-ৰ্বত সানুষ্। শস্যবৃদ্ধী রসোৎপ-ত্তি রপাপাঃ শরদি স্মৃতাঃ॥ #॥ শীতানিল তুষারত্ব নর্দন মৃগ পক্ষিণা । রক্ষো यक्षां मि मङ्गा-नाः प्रमानः वागयान्यी ॥ पिटमा ধূমান্ধকারাশ্চ শলভা বন পর্ব-णः। উচ্চৈः সূর্য্যোদযান্তত্ব হে-মন্তে শোভনা মতাঃ।। 🏶 🛭 হিম-পাতানিলোৎপাত বিৰূপ:জুত দর্শন । দৃফ্বাঞ্চনাভ মাকাশ তারোক্ষাপাত পিঞ্চরণ ৷৷ চিত্রা গর্বোন্ডবাঃ জ্রীষু গোজাশ্ব মৃগ পক্ষিণাণ। পত্রাঙ্কুর লতানাঞ্চ বি-কারাঃ শিশিরে শুভাঃ ।। 🟶 ।। ঋতু স্বভাবজা হেতে দৃষ্টাঃ স্ব 📗 खो[ँ] छंजावशः । श्रावनाव চোৎপাতা দৃষ্টা স্তে ভূশদারু-ণাঃ।। #।। উন্মত্তানাঞ্চ যা গাখা

শিশূনা॰ চেফিতঞ্ব যৎ। ব্রিযো ষচ্চ প্ৰভাষম্ভে তত্ৰ নাস্তি ব্যতি-ক্রমঃ ৷৷ পূর্বঞ্রতি দেবেষু পশ্চা-দাচ্ছতি মানুষান্। নাদেশিতা বাগ্বদতি সত্যা হেষা সরস্বতী ॥ বৃহস্পতিঃ। জ্যোতির্জান ত-থোৎপাত মবিদিদ্বা তু যে নৃণাণ শ্রাবযন্ত্যর্থলোভেন বিনেষাস্তে-পি যত্নতঃ ৷৷ বিনেষা দণ্ডনীয়ঃ । ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ॥ 🟶 ॥ ভৌমদিব্যান্তরীক্ষোৎপাতশান্তি ৰ্মাৎস্যে ২০২ অধ্যাযাবধি ২১২ অধ্যাৰপৰ্য্যন্ত॰ ডাফব্যা । তথা (मरी पूर्वात्व महाज्यान यशाद म-ৰ্বদৈবকী সৰ্বোৎপাতশান্তিসমা-প্তাধ্যাষে চণ্ডীশব্দে চ দ্রফব্যা। তন্ত্ৰোক্তা শান্তিঃ ষট্কৰ্মশব্দে **फुक्**रो। ॥ 🗱 ।। অথ শান্তিক পৌষ্টিককর্মদিন । তত্র বারা রবি সোম বুধ বৃহস্পতি শুক্রাণাণ তত্র নক্ষত্রাণি উত্তরাষাঢ়া উত্তর-কল্পণী উত্তরভাত্রপৎ রোহি**ণী** চিত্রা অনুরাধা মৃগশিরঃ রেবতী পুষা অশ্বিনী হস্তা। তত্ত্ৰ চক্ৰঃ শোভনঃ। লগ্ন শোভন । ইঙ্কি জ্যোতিষতত্ত্ব ৷৷ पू॰ वृङाईिषटगरः॥ শান্তিঃ

জিনচক্রবর্তিবিশেষঃ। ইতি হে-

শাব্দবো

यहः ॥ দশगगग्रखतीरयः । যথা। ধর্মপুত্রস্য পুত্রাণ্স্ত দশ-यमा गताः मृत्। मूरक्व क्री-ত্তমৌজাশ্চ ভূমিশ্রেণ্যশ্চ বী-ৰ্য্যবান্।। শতানীকো নির্মি-ত্রো বৃষসেনো জ্যত্রথঃ। ভূরি-দ্যুন্ধঃ সুবর্চাশ্চ শান্তি রিন্দ্রঃ প্রতাপবান্।। আপো মূর্ত্তি ई-বিমা॰শ্চ স্বকৃতি শ্চাব্যম স্থপা। নাভাগো ২প্রতিম শ্রেব সৌর-ভা ঋষ্য স্তথা। প্রাণাখ্যাঃ শত-সংখ্যাশ্চ দেবভানাং গণা স্তথা । योनिশजु छ॰ श्रिक्त भगयो-ষাত্যিষ্যতি।। ইতি গারুডে ৮৭ ञधारः ॥ শান্তিকামঃ ত্রি শান্ত্যভিলাষী। यथा । श्रीकामः भाष्टिकात्मा বা গ্রহ্যজ্ঞ সমাচরেৎ। বৃষ্ট্যা-যুঃ পুষ্টিকামো বা তথৈবাভি-চরমপি।। ইতি সংস্কারতত্ত্ব ।। <u> भार्त्रिगृर॰ की भारतालयः।य-</u> জ্ঞান্তে শান্তিসম্ভজলেন স্নান-मागृरः। তৎপर्यायः। আথर्वनः ২। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ শান্তৃ॰ ক্লী সান্তৃ৽। ইত্যমর

गात्रमुमती ॥

শাস্তৃতিঃ স্ত্রী বান্ধণযটিকা । ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।। পুস্তকান্ত-রে শ্বামতি রিতি চ পাঠঃ।। শাপঃ পু॰ আক্রোশঃ।। দিব্যং। ইতি মেদিনী।। আদ্যস্য পর্য্যা-यः। जकत्रिः २। इठामतः॥ অজীবনিঃ ৩ অজননিঃ ৪ অ-বগ্ৰহঃ ৫ নিগ্ৰহঃ ৬। ইতি ভ-রতঃ ।। অভিসম্পাতঃ ৭ । ইতি গ্রন্থান্তর ।। শেষদ্যপর্য্যায়ঃ । শপন ২ শপথঃ ৩। ইত্যমরঃ য় মিথ্যানিরসন ৪। ইতি শব্দ-त्रञ्जावनी ॥ শাপটিকঃ পু॰ মযুরঃ। ইতি কেচিৎ 11 শাপান্তঃ পু॰ মুনিঃ। ইভি ত্রি-का अटल्यः ॥ भाकतिकः शृ यৎमाधातकः। ইতি কেচিৎ ॥ শाकः वि भक्तमभूषी। यथा। একঃ শান্দো ২পুরশ্চার্থঃ। ইতি দাযভাগঃ ॥ সরস্বত্যা॰ 🏻 শান্দী। ইতি কেচিৎ।। माक्दवाधः पूर् म्कार्थङ्गानः॥ न्यायमण्ड भर्मार्थकानजनाका-ন°। তস্য করণ পদজ্ঞান°। তস্য কারণ পদশক্তিজ্ঞান ৷

কদাচিৎ লক্ষণাজ্ঞানণা এবং আ কাঙ্কা যোগ্যতাসত্তি তাৎপর্য্য खानक। यथा। **अ**पखानस कत्न॰ ছার॰ তত্র পদার্থধীঃ। শাব্দবোধঃ॥ ফল তত্ত্র শক্তিধীঃ সহকারিণী য় ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ ॥ 🛊 ॥ শাব্দবোধ প্রকারণ দর্শযতি পদ জ্ঞানন্তি। ন তু জ্ঞাযমান॰ পদ• করণ• পদাভাবে ২পি মৌ-नि स्नाकारमी माकरवाधार । **अमार्थियो तिछि अम्बक्ता अमार्थ-**স্মরণ ব্যাপারঃ। অন্যথা পদ-জ্ঞানৰতঃ প্ৰত্যক্ষাদিনা পদাৰ্থো-পিস্থিতাবপি শাব্দধোধাপত্তেঃ । তত্রাপি বৃত্যা পদজন্যত্ব বো-ধ্য অন্যথা ঘটাদিখদাৎ সম-বাষসম্বন্ধেন আকাশস্মরণে জা-তে আকাশস্যাপি শান্দবোধা-পত্তেঃ। বৃত্তিঃ শক্তি লক্ষণান্য-তরসম্বন্ধঃ। অত্রৈব শক্তিজ্ঞান-স্য উপযোগঃ। পূর্ব॰ শক্তিগ্রহা-ভাবে পদজ্ঞানেপি তৎ সম্বন্ধে-ন স্মরণানুপপত্তেঃ। পদজ্জানস্য হি সম্বন্ধিজ্ঞান বিধ্যার্থ স্মারকত্বণ । 🟶। শক্তিশ্চ পদেন সহ পদা-र्थमा मद्यक्षः। जन्माष्ट्रकाम्य म-র্থো বোদ্ধব্য ইতীশ্বরেছ্।ৰূপা

আধুনিকে নান্নি শক্তি রস্তোব একাদশে ২হনি পিতা নাম স্বর্যা-দিতীশ্বরেচ্ছাষাঃ সম্বাৎ আধুনি-কে তু শক্ষেতে ন শক্তি রিতি স-म्भूमायः । नवाञ्च नेश्वत्रक्रा न শক্তিঃ কিন্তিচ্ছৈব তেনাধুনিক-শঙ্কেতেপি শক্তি রস্তীতি বদস্তি ।#। শক্তিগ্রহশ্চ ব্যাকরণাদিতঃ। তথাহি। শক্তিগ্রহণ ব্যাকরদোপ-মানকোষাপ্তবাক্যাদ্যবহারত*চ ৷ বাক্যস্য শেষাদ্বিবৃতে ৰ্বদন্তি সানিধ্যতঃ সিদ্ধপদস্য বৃদ্ধাঃ। ধাতু প্রকৃতি প্রত্যযাদীনাণ শক্তি-গ্রহো ব্যাকরণান্তবতি কচিত্রু স-তি বাধকে ত্যজ্যতেপি। যথা। বৈষাকরণৈ রাখ্যাতস্য কর্তুরি শক্তি রুচ্যতে। চৈত্রঃ পচতীত্যা-**(मे) कर्जा मह टे**ठजम्मारङमात्र्य স্তত্র গৌরবান্ন জন্যতে কিন্তু ক্রতৌ শক্তিগ্ৰহো লাঘবাৎ ৷ ক্নতি শৈচ-ত্রাদৌ প্রকারীভূষ ভাসতে। ন চ কর্ত্তু রনভিধানাকৈচত্রাদিপদা-नखतुः তৃতীया मामिणि वाहाः কতৃ সংখ্যানভিধানস্য তত্ৰ ত-खषा । मः था जिथान त्या गान्छ कर्मशामानवङ्गकः । अथगाख्य-দোপস্থাপ্যকর্মত্বাদীত্যস্য বিশে-

ষণত্ব তাৎপৰ্য্যাবিষযত্বমৰ্থঃ তেন চৈত্র ইব গচ্ছতীত্যাদৌ ন চৈত্রে म॰थात्रयः। यज कर्याटनो न वि-শেষণত্ব তাৎপর্য্যণ তদ্বারণাযপ্র-থমান্ডেতি। यदा ধাত্বর্থাতিরি-ক্তাবিশেষণত্ব প্রথমদলার্থঃ তে-ম চৈত্ৰ ইক গচ্ছতীত্যত্ৰ চৈত্ৰা-দে ৰ্বারণ স্তোকণ পচতীত্যাদৌ স্তোকাদে ৰারণাষ চ দ্বিতীয়দ-লং৷ তদ্য দিতীয়াস্তোপস্থাপ্য-ত্বাদ্বারণ । এবং ব্যাপারেপি ন শক্তি গৌরবাৎ। রখো গচ্ছতি ইত্যাদৌ তু স্বব্যাপারে আশ্রয-ত্বে বা লক্ষণা।জানাতি ইত্যাদৌ তু আশ্রুবন্ধে নশ্যতীত্যাদৌ প্র-তিযোগিত্বে নিৰ্চলক্ষণা । উ-পমানাদ্যথা শক্তিগ্ৰহ স্তথোক্ত l # ৷ এবং কোষাদপি শক্তিগ্ৰহঃ সতি বাধকে ক্ষচিত্ত্যজ্যতে যথা नीलामि शमाना॰ नीलक्शामो নীলাদি বিশিষ্টে চ শক্তিঃ কো-বে ব্যুৎপাদিতা তথাপি লাঘ-वा नीलामि मकिः नीलामि-विनिष्कं नक्ष्णि ॥ 🗱 ॥ এवः মাপ্তবাক্যাদিপ। যথা। কোকি-वः পिकशनवाठाः ইত্যাদিশ-काष्ट्रिकामि শক্তিগ্রহঃ ॥ 🕸 ॥

এবং ব্যবহারাদিপি যথা। প্রধাে-জক বৃদ্ধেন ঘটমানযেত্যুক্তণ তৎ শ্ৰুষা প্ৰযোজ্য বৃদ্ধেন ঘট আ-নীত স্তদবধাৰ্য্য পাৰ্শ্বস্থো বালো ঘটান্যনৰূপ কাৰ্য্য । ঘট মান্য ইতি শব্দপ্রযোজ্য॰ অবধারয়তি তত্ৰুচ ঘট মান্য গা মান্য ই-ত্যাদৌ আবাপোদ্বাপাভ্যা॰ ঘ-টাদিপদানা॰ কার্য্যাম্বিতঘটাদৌ শক্তি॰ গৃহাতি॥ 🕸 ॥ এব॰ বা-ক্যশেষাদপি শক্তিগ্ৰহঃ। যথা य-বম্য শ্চরু র্ভবতীত্যত্র যবপদস্য দীর্ঘশূকবিশিষ্টে আর্য্যাণাণ প্র-যোগঃ কঙ্গো চ স্লেচ্ছানাণ। তত্ৰ हि यथाना। अयथरय। सायरछ छन থৈতে মোদমানা ইবোত্তিগ্ঠস্তি ।। বসন্তে সর্বশস্যানাণ জাযতে পত্রশাতন ৷ মোদমানাশ্চ তিন্ঠ-স্তি যবাঃ কণিশশালিনঃ ॥ ইতি वाकारमधा९ मीर्घमृतक मिक ৰ্নিণী যতে কঙ্গে তু শক্তিভুমাৎ প্রযোগঃ ৷ নানা শক্তিকল্পনে रभोत्रवा९ । स्तिशमारमी जू वि-নিগমকাভাবান্নানা শক্তিকল্পন॰ ॥ 🗱 ॥ এব॰ বিবরণাদপি শক্তি-গ্রহঃ । বিবরণম্ব তৎসমানার্থপ-দান্তরেণ তদর্থকথন গ্রম্থা ঘটে।

২স্তি ইত্য**দ্য কল**সো **২স্তী**ত্য-त्न विवत्रशास्य छेशास्य कल्टम শক্তিগ্ৰহঃ। এবং পচতি ইত্যস্য পাক করে।তি ইত্যনেন বিবর-ণাদাখ্যাতস্য যত্নার্থকত্ব॰ কল্প্য-তে ৷৷ 🕸 ৷৷ এবং প্রসিদ্ধপদ সামি-ধ্যাদিপি শক্তিগ্ৰহঃ ৷ যথা ইহ সহকারতরৌ মধুরণ পিকো রৌ-তি ইত্যাদৌ পিকপদস্যশ ক্তিগ্র-হ ইতি ৷ তত্ৰ জাতাবেব শক্তি ৰ্ন তু ব্যক্তো ব্যভিচারাদানস্ত্যাচ্চ ।। 🕸 ।। শক্ত॰ পদস্ত ক্ষচিদেয়ীগিকণ ফচিদ্রত কচিদ্যোগরত কচি-দেব গিকৰাত । যত্ৰাব্যবাৰ্থ এব ব্যাতে তদেবাগিক যথা পাচ-क्रिंमिश्रमः । यज्ञावयवशक्तित-র্পেক্ষেণ সমুদাযশক্তিমাত্রেণ বৃ-ধ্যতে ভদ্রত যথা গোপদ ম-खभानिभन[•]। यु जू ज्ञवयव भ-ক্তি বিষযে সমুদাষ শক্তি রপ্যস্তি তদেবাগৰুত যথা পক্ষজাদিপ-দং। তথাহি পঙ্কজপদ মুব্যব শ-ক্ত্যা গঙ্গজনি কতৃ ৰূপ মৰ্থণ বো-ধ্যতি সমুদাযশক্ত্যা চ পদ্মবেন কপেণ পদ্ম বোধয়তি। ফ্র অব্যবার্থ ৰূঢ্যর্থযোঃ স্বাতন্ত্র্যেণ वाध उपयोगिककाण यवाछि-

শানিত্র
দাদিপদ । তত্র হি উর্দ্ধ ভেদন
কর্ত্তা তরু গুল্মাদি রপি বৃধ্যতে
। ইতি সিদ্ধান্তমুক্তাবলী ।।
শাব্দিকঃ পুং শব্দশাস্ত্রবেত্তা ।
বৈষাকরণঃ । আদিশাব্দিকা
যথা ৷ ইন্দ্র শ্চন্দঃ কাশরুৎসাপিশলী শাকটাযনঃ ! পাণিন্যমর জৈনেন্দ্রা জযন্ত্যফাদিশাবিকাঃ ৷৷ ইতি কবিকল্পদ্রুমঃ ৷৷
নব্যশাব্দিকা যথা ৷ ক্রমদীশ্বরঃ ৷ সর্ববর্মা ৷ পদ্মনাভ্যমিশ্রঃ ৷
বোপদেবঃ ৷ সৎস্র্বানন্দঃ ৷ ভরতমল্লিক প্রভৃত্যঃ ৷৷ শব্দকা-

দ্ধিনি ত্রি।।
শাম ক্লী সাম। ইত্যমরটীকাসারসুন্দরী।।

রকঃ । শব্দ॰ করোতীত্যর্থে

ঠঞ্ প্রত্যযেন নিষ্পন্ধঃ। ইতি

मिका खरको गुमी ॥ भक्तमश्र-

শামন ক্লী মারণ ।। শান্তিঃ। ইতিকেচিৎ।।

শামনঃ পু॰ শমনঃ। ইতি পু-রাণং।।

শामनी खी मिक्किशामिक्। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শানিত্রণ ক্লী বজ্ঞণা পশুবন্ধনণ । যজ্ঞপাত্রণ। ইতি কেচিৎ ৷৷ শামীল ক্লী ভন্ম। ইতি সিদ্ধা-ন্তকোমুদী।। শামীলী স্ত্ৰী মৃক্। ইতি সিদ্ধা-।।

শাষরী স্ত্রী শষরদৈত্যনির্দ্মিত-মাষা।ইন্দ্রজালাদিমাষা।ইত্য-মরভরতৌ।।

শাম্ববিকঃ পু• শাষ্মিকঃ। ইতি জটাধরঃ।।

শাষুকঃ পু॰ শমূকঃ। শামুক্ইতি ভাষা। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শাষূকঃ পু॰ শষূকঃ। ইত্যমর-॥ দীকাষা॰ ভরতঃ।।

শান্তব॰ ক্লী দেবদারু। ইতিরা-জনির্ঘন্টঃ।।

শান্তবঃ পু॰ কপূরঃ।। শিবমন্ত্রী
।। গুয়ুলুঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।
বিষভেদঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।
শন্তুপুত্রঃ।। শন্তুপুজকঃ।। শন্তুসম্বন্ধিনি ত্রি।।

শান্তবী স্ত্রী নীলদূর্বা। ইতি রাজনির্বনটঃ ।৷ দুর্গা। যথা। শান্তবী দেবমাতা চ চিন্তা রত্ন-প্রিয়া সদা। ইতি তন্ত্রসারে দু-র্গাশতনামস্ভোত্রণ।৷

শাষকঃ পু॰ বাণঃ। ইতি জটা-ধরঃ॥ খন্নঃ। ইত্যমর্টীকাষাণ সামী।। শার ত্ক দৌর্বল্যে।ইতিকবি-কল্পদ্রমঃ।। অশশার্থ ।ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শারণ ত্রি কর্বুরবর্ণঃ। ইত্যমরঃ।।
শারঃ পুণ বাষুঃ। ইত্যমরঃ।।
অক্ষোপকরণণ । ইতি মেদিনী
।। হিণ্সনণ।। কর্বুরবর্ণঃ।। স্থো
স্ত্রী। ইতি কেচিৎ।।

শারঙ্গঃ পু॰ চাতকঃ।। হরিণঃ।। হস্তী।। ভূঙ্গঃ।। মযূরঃ।। করুর-বর্ণবিশিষ্টে ত্রি। ইত্যমর্টীকা-যাণ মুক্টাদযঃ।।

শারঙ্গী ত্রী বাদ্যযন্ত্রবিশেষঃ । ইতি শব্দরত্বাবলী ॥

শারদ॰ ক্লী শ্বেতকমলণ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। সস্যাণ। ইতি ষে-দিনী শব্দরত্বাবল্যো ।।

শারদঃ পু॰ কাসঃ।। বঙ্গলঃ।।

হরিন্মুদাঃ। ইতি রাজনির্ঘনীঃ
।। বৎসরঃ। ইতি মেদিনী।।
পীতমুদাঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

কারদঃ তি শরজ্জাতঃ।। নৃতনঃ
।। অপ্রতিভঃ। ইতি মেদিনী।।
শালীনঃ। ইতি বিশ্বঃ।।
শারদা স্ত্রী সরস্বতী।

ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। দুর্গা।। বীণাবিশেষঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী ।।
ত্রান্ধী।। সারিবা। ইতি রাজনির্ঘণটঃ।। শারদাপদব্যুৎপত্তি
র্যথা। শরৎকালে পুরা যম্মাৎ
নবম্যাং বোধিতা সুরৈঃ। শারদা
সা সমাখ্যাতা পীঠে লোকে চ
নামতঃ।। ইতি তিখ্যাদিতত্ত্বং।।
শারদিকং ক্লী আদ্ধং। যথা।
আন্ধে শরদঃ ইত্যনেন ঠঞ্
প্রত্যযেন নিষ্পান্ধঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী।।

শারদিকঃ পুণ রোগঃ। বিভাষা রোগাতপযোঃ। ইতি ঠঞ প্র-ত্যথেন নিষ্পন্ন । ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমদী।।

भातमी खी তোষপিश्ननी ॥ त्वाकाপর্বঃ। ইতি মেদিনী ॥ কোজাগরপূর্ণিমা। ইতি শব্দরত্বাবলী
॥ শরৎকালীনে ত্রি। যথা।
স্কান্দ ভবিষ্যযোঃ। শারদী চডিকাপূজা ত্রিবিধা পরিগীযতে
। সান্বিকী রাজসী চৈব তামসী
চেতি তাং শৃণু॥ সান্বিকী জপ
যজ্ঞাদ্যৈ নৈবেদ্যৈশ্চ নিরামিবৈঃ। মাহাত্মাং ভগবত্যাশ্চ পুরাণাদিযু কীর্ত্তিতং॥ পাঠ স্তুস্য

জপঃ প্রাক্তঃ পঠেদেবীমনাঃ প্রিযে । রাজদী বলিদানেন নৈবেদ্যেঃ সামিথৈ স্তথা ॥ সুরা মাণসাদ্যুপহারে র্জপ যজ্ঞৈ র্বি-না তু যা । বিনা মক্ত্রৈ স্তামসী স্যাৎ কিরাতানাঞ্চ সম্মতা ॥ ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বণ ॥

শারদীযমহাপূজা স্ত্রী শরৎকা-नीनमूर्गामशाशृङ्ग। यथा। मा-রদীয়া মহাপূজা চতুঃকর্মময়ী শুভা। তা॰ তিথিত্রয় মাসাদ্য পৰ্য্যাৎ ভক্ত্যা বিধানতঃ।। ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব ।। 🟶 ।। অপি চ। হতে ঘোরে মহাবীরে সুরাসুর ভষক্ষরে।দেবী মুপাসকা দেবাঃ প্রভূতারাক্ষসা স্তথা।। সমেতাঃ সৰ্বদেবা স্তে দেবীণ ভক্ত্যা তু-তোষিরে। বলিঞ্চ দদ্যু ভূ তানা॰ মহিষাজামিষেণ চ ।। এব॰ ত-শ্মিন্ দিনে বৎস প্রেত ভূত স-मात्रल° । क्रञ्जान् मर्दाप्तर क পূজাশ্চ শাশ্বতী মঁহান্ ॥ জল-मार्छ श्वित्न गानि महियाति-নিবর্হিণী । দেবী সংপূজ্যিত্ব। তৃ অন্টনীয়র্জরাত্রিয় ।। যে ঘা-ত্যন্তি সদা ভক্ত্যা তে ভবস্তি মহাবলাঃ। বলিঞ্চ ষে প্রয়চ্ছন্তি

সৰ্বভূত বিনাশন ।। তেষান্ত তু-যাতে দেবী যাবৎ কলম্ব শাঙ্করণ । क्वीष्ठा विविदेध प्लिटिंग प्रिव-लारक मूमूर्वाङ ॥ यारकु बागू রাকাশং জলং বহ্নি শশিগ্রহাঃ। তাবচ্চ চণ্ডিকাপূজা ভবিষ্যতি मना जूरि ॥ श्रावृष्ट्रेकात्न वि-লেষেণ আশ্বিনে হুঊনীষু চ। यश्यादका नवगांश খ্যাতি॰ গমিয়াতি ॥ ইন্দ্র উবাচ ৷ আশ্বিনে ঘাতিতে ঘোরে ন-বনী এতিবৎসর ৷ শ্রোতুমি-চ্ছাম্যহণ তাত উপবাস ব্ৰতাদি-ক' ৷৷ নহাত্ৰত মহাপুণ্য শক্ষ-तारेला तन्छि**ण । कर्खवा पा**-॥ वताः जन्म (म वी छ जिममिति छः ।। कन्यामण्ट त्रदी भक्क एका মারভ্য নন্দিকা । অপাশী ত্বথ বৈকাশী নক্তাশী বাথ বাযুদঃ .. ।। প্রাতঃস্বাধী জিতদ্বন্দুঃ ত্রিকা-ল॰ শিবপূজকঃ। জপ হোম স-মাযুক্তঃ কন্যকা॰ ভোজ্ঞধেৎ স-॥ ना ॥ अथिगा॰ नवत्त्रश्नानि ना-রুজানি শুভানি চ। এবং বাচিত্ত-ভাবেন কার্যেৎ সুরুস্তুম ॥ ভিশান দেবী প্রকর্ত্তব্যা হৈমী বা রাজতী পি বা। মৃদ্বাক্ষী লবণো-

পেতা খদ্যে শূলেথ পূজ্যেৎ ॥ সর্বোগহার সম্পন্নো বস্ত্র রত্ন ফলাদিভিঃ। কার্যেদ্রথ দোলা-দীন্ পূজাঞ্ বলি দৈবকী ।। পু-ম্পাদি জোণ বিস্বানু জাভী পু-ন্নাগ চম্পাকৈঃ। বিচিত্রাণ কার-ষেৎ পূজাণ অফম্যা নুপবাসযেৎ ॥ দুর্গাগ্রতো জপেমান্ত্র মেকচি-खः मुভाविङः । তদর্জধামিনী-শেষে विজयादर्थ मृरशाखरैमः ॥ পঞ্চাব্দ॰ লক্ষণোপেত গন্ধ ধপ मुगर्किङ । विधिव कानि का-লীতি জপ্ত্বা খন্সেন ঘাতষেৎ ॥ তস্যোপ রুধির নাণ্স গৃহীদ্বা পূতনাদিষু । নৈর্খতায প্রদাত-ব্যা মহাকৌশিক মন্ত্রিতং ॥ ত-স্যাত্রতো নৃপঃ স্নাযাচ্ছত্রুণ ক্রন্থা তু পিষ্টজ । খন্দেন ঘাত্ৰিদ্বা जू ममा १ ऋन विभाशस्माः ॥ ততো দেবী॰ স্নাপষেৎ প্রাক্তঃ ক্ষীর সর্পি জ্ঞাদিভিঃ। সঙ্কুমা-গুরু কপূর চন্দনৈ শ্চারু ধূপ-रेकः ॥ रेह्गानि পুষ্প রত্নানি বা-সা'নি স্বাহ্তানি চ । নিবেদ্য' স্প্রভূতন্ত দেখা দেব্যাঃ সূতাবি-তৈঃ ॥ অশ্বদেধ মবাপ্ণোত ভ-क्तिगान् भूतगख्य । महानवगाः

শারিশৃ

পূজেফ সর্বকাম প্রদাষিকা।।
সর্বেষ্ সর্ববর্ণেষ্ তব ভক্ত্যা প্রকীর্ত্তিতা। ক্রত্বাপ্রোতি যশো
রাজ্যং পূলাফু র্ঘন সম্পদং॥
ইতি দেবীপুরাণে ২৯। ৩০ অধ্যাফাৎসঙ্গলিতংনতুসক্রমকং॥
শারিঃ পুং অক্ষোপকরণং। পাশকাদে র্বলং। গুটিকা। ইতি
মেদিনী।। তৎপর্য্যাফঃ। শারঃ
২ খেলনী ৩। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।
শারিঃ স্ত্রী শঙ্গনিকাভেদঃ।।
যুদ্ধার্থপজপর্য্যাণং।। ব্যবহারাস্তরং। ইতি মেদিনী।। কপটঃ।
ইতি ধরণিঃ।।

শারিকা স্ত্রী পক্ষিবিশেষঃ। মযনা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ।
পীতপাদ। ২ গোরাদী ৩ গোকিরাটিকা৪। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।
সারিকা ৫ শারী ৬ চিত্রলোচনা ৭ শারিঃ ৮। ইতি শব্দরত্নাবলী।। মদনশাক্ষিকা ৯ শলাকা
১০। ইতি জটাধরঃ।। ঘীণাদিবাদনং। তৎপর্য্যায়ঃ। কোণঃ ২
। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। শারিফল° ক্লী পু• শারিপট্রঃ। শারিখেলনাধারঃ। চক ইতি २। ইতামরং ॥ ফলকং ৩। ইতি
শব্দরত্বাবলী ॥ আকর্ষঃ ৪ শারিফলকঃ ৫ বিন্দৃতন্ত্রঃ ৬ অক্ষপীঠা १। ইতি জটাধরঃ ॥
শারিফলকঃ পুণ ক্রী শারিফলণ।
ইতি জটাধরঃ ॥

শারিবা দ্রী শ্যামলতা।তৎ-পর্য্যায়ঃ। গোপী ২ শ্যামা ৩ অনস্তা ৪ উৎপলশারিবা ৫। ইত্যমরঃ।। পঞ্চ শ্যামলতাযা॰। নাগজিহ্বাযা মিতি কেচিৎ ৷ গোপ্যাদিত্রষ শ্যামলতায়াণ অনস্তাদিদ্বয় অনন্তমূলে ইতি কেচিৎ। গুপূ রক্ষণে শোণা-**मिश्रामी**श् रगाना **ह**। स्नानी শ্যামা গোপপত্নী গোপা গো-পালিকাপি চেতি বাচস্পতিঃ। এক বা শারিবামূল সর্বত্রণ विल्पाधनः । देखि रेवमाकः । ইতি ভরতঃ।। অস্যা গুণাঃ । বাযু পিত্ত রক্ত ভৃষণ ছর্দি স্বর নাশিত্ব । ইতি রাজবল্লভঃ ।। मातिमृश्रमा जी भामकवित्मसः। যথা। চুঞ্রী তিন্তিজীদূযত প-क्यी गातिगृधन। । नयशीती চাৰ্যকাকে৷ নয়ঃ সাজভয়পল-

ৰ্জয়কোলাহলো ২পিচ। ইতি नमब्बावनी ॥ শারী স্ত্রী স্থা।ইতিকেচিৎ।। শারীর ক্রী বৃষঃ॥ শরীরজাতে ত্রি। ইতি মেদিনী॥ #॥ শারী-রদভে যথা। ধিনদণ্ডণ প্রথমণ ঙ্গর্যাৎ বাগদণ্ড তদনন্তর । তৃ-তীয় ধনদওঞ্চ বধদও মতঃ পর মিতি ৷৷ বুধদণ্ডোপি শারীরো ত্রাহ্মণ ব্যতিরিক্তানাণ। ইতি মি-তাক্ষরায়াণ ব্যবহারকাওণ ॥।।।। শারীর দুঃখ॰ যথা। আধ্যাত্মি-কো বৈ দিবিধঃ শারীরো মানস ম্ভথা । শারীরো বহুভি র্ভে দৈ ভিদ্যতে শ্রুষতাঞ্চ সঃ ৷৷ শিরো-রোগ প্রতিশ্যায় জ্বর শূল ভগ-न्दरेतः । खन्मार्नाः श्वर्ये श्वाम চ্ছৰ্দ্যাদিভি রনেকধা ।। তথা-ক্ষিরোগাতীসার স্বপ্তাসাময়সণ-জ্ঞকৈঃ। ভিদ্যতে দেহজ স্তাপো মানসং শ্রোতু মর্হসি ।। কাম ক্ৰোধ ভয দ্বেষ লোভ মোহ বিযাদজঃ। শোকাসূযাপমা-নেষ্যা নাৎস্য্যাদি ভয় স্তথা।। মানসোপি দ্বিজ্ঞেষ্ঠ ভাপো-**७**वि देनकथा। **२८**ज्ञान सामि-ভি ভে দৈ স্তাপো হাধ্যাদ্মিকঃ

यृष्ठः ॥ मृःथः मस्मुत्मा ভেদৈ র্ভিদ্যতে মুনিসত্তম। সুন্সমার-তনু ৰ্গভেঁ জন্ত ৰ্ভ্যলাবৃতে ॥ উল্ব সংবেষ্টিতো ভুগ্ন পৃষ্ঠ গ্রীবা-তিসংহতিঃ। অত্যন্ন কটু তী-क्कांक नवरेन मीजृरजाकरेनः ॥ অতিতাপিভি রত্যর্থ বর্দ্ধমানা-**जिरवित्रः । अभावताम्रक्षनारित्रो** নাঙ্গানাণ প্রভু রাত্মনঃ ॥ শক্ত-মূত্ৰ মহাপঞ্চশায়ী সৰ্বত্ৰ পীডি-তঃ। নিরুচ্ছাসঃ সচৈতন্যঃ স্মর-ন্ জন্মশতান্যথ।। আস্তে গর্ভে-তিদুঃখেন নিজকর্ম্ম নিবন্ধনঃ। জায়মানঃ পুরীষাসৃগ্যুত্র শুক্রা-বিলাননঃ ৷৷ প্রজীপত্যেন বাতে-न श्रीष्ठामानाष्ट्रिवन्ननः। अत्था-মুখো বৈ হ্রিষতে প্রবলঃ সৃতি-माक़रेटः ॥ क्लरेम निक्रुन्डि मा-পোতি জঠরামাতু রাত্রঃ। মৃ-চ্ছা নবাপ্য মহতী সংস্পৃক্টো-বাহবাযুনা ৷৷ বিজ্ঞান ভুণ্শ মা-প্লোতি জাতশ্চ মুনিসত্তম। ক-.ণ্টকৈ রিব তুমাঙ্গঃ ক্রকচৈ রিব দারিতঃ ৷৷ পূতিব্রণান্নিপতিতো ধরণ্যা জমিকো सथा। কভুষ-নেপি বাশক্তঃ পরিবর্ত্তে ২প্য-নীশ্বরং ॥ স্নান পানাদিকাহার

মগ্যাপ্রোতি পরেছ্যা। অশুচিঃ .मुखरत मूखः की हे म॰नामिडि স্তথা ।। ভক্ষ্যনাণোপি নৈবৈষাণ সমর্থে বিনিবারণে ৷ জম্মদুঃখা-ন্যনেকানি জন্মনো খনন্তরাণি চ ৷৷ বালভাবে যদাপ্নোতি আ-ধিভৌতাদিকানি চ। অজ্ঞান ত-মসাচ্চনো মূচান্তঃকরণো নরঃ॥ ন জানাতি স্বতঃ কোহণক বাগ-छ। किमाशकः। ইতি विकृपु-রাণে ৬ অংশে ৫ অধ্যায়ঃ ৷৷ 🕸 ৷৷ অথাতঃ শরীরসংখ্যা ব্যাকরণ শারীর॰ ব্যাখ্যাস্যামঃ । শুক্র শোণিত গর্ভাশুযস্থ মারপ্রকৃতি-বিকার সংমূচ্ছিত গর্ভ ইত্যুচ্য-তে। ভক্ত চেতনাৰস্থিত বাযুৰ্বি-ভজতি। তেজ এন॰ পচতি। আপ ক্লেদযন্তি। পৃথিবী সংহন্তি। আ-কাশণ বিবর্জয়তি । এবং বিবর্জি-

স যদ। হস্ত পাদ জিহ্ব। য়াণ
কর্ণ নিতয়াদিভি রঙ্গৈ রুপেত
স্তদা শরীর মিতি সংজ্ঞাং লভতে
। তচ্চ যড়ঙ্গং শাখা শ্চতসুে। মা
ধ্যং পঞ্চমং ষষ্ঠং শির ইতি ।। ৠ ।।
অতঃপরং প্রভ্যঙ্গানি কথ্যন্তে ।
নস্তকোদর পৃষ্ঠ নাভি ললাট
নাসা চিবুক বস্তি গ্রীবা ইত্যেতা

একৈকাঃ। কর্ণ নেত্র নাসা ध শুখাণ্স গণ্ড কক্ষ স্তন বৃষ্ণ পার্ম ক্ষিক্ জানু বাহূরু প্রভৃতয়ে। ৱে षि । वि॰শভি রঙ্গুলযঃ । সে 📧 🖰 সি চ বৃক্যমাণানি । এয় এ । । বিভাগ উক্তঃ ৷৷ 🛊 ৷৷ ভদ্য 🐎 : সংখ্যানং ৷ স্বচঃ কলা গাড়বে: লা দোষা বরুৎ প্রীহানে স্বি म উधुका इनय मधारा अद्योग বৃক্ষো সোতাংসি কণ্ডরা জালানি कृष्ठी द्रब्कदः रमवनाः मःयाजाः সীমন্তা অন্থীনি সন্ধয়ঃ ভাষবঃ (शिला) यर्याणि मित्रा धनरना। যোগবহানি স্রোতাংসি চ ॥ 🕸 ॥ ষচঃ সপ্ত। কলাঃ সন্ত। আশ্যাঃ সপ্ত । ধাতবঃ সপ্ত । সপ্ত শির্া-শতানি। পঞ্চ পেশীশতানি। নব স্নাযুশতানি। ত্রীণাঙ্গিতা-নি । দ্বে দশোত্তরে সন্ধিশতে । সপ্তোতর মর্মশত। চতুর্বি শ-তি ধ্নন্যঃ। ত্রযো দোষা ক্রবো মলাঃ। নব সোতা গনি ইতি সমা-সঃ ।। 🗱 ।। বিস্তারে। ২ত উর্ভু॰ । ম্বচো ২ভিহিতাঃ কলা ধাতবো ম-লা দোষা যক্ত্ৰ প্লীহানো ফুপ্ফ্ म উर्जुरका समय॰ वृद्धी छ ॥ 🗱 ।। আশ্যান্ত বাতাশ্যঃ পিত্তাশ

শ্লেয়াশয়ে রক্তাশ্য আমাশ্যঃ পকাশযো মূক্রাশযঃ স্ত্রীণাণ গর্ভা-गरया २ रुप ३ छि॥ #॥ मार्फाल-वागानाञ्चानि पूरमार खीना म-र्क्तवरायशैनानि। अवन नयन वन-ন ঘ্ৰাণ গুদ মেঢ়াণি নব স্থোতাণ সি নরাণাণ বহিমু খান্যেতান্যেব ন্ত্রীণা মপরাণি চ ত্রীণি ছে স্ত-नर्या तथ्खाजक्वरश्य ॥ 🛊 ॥ ষোডশ কণ্ডরাঃ। তাসা গভসুঃ পাদযো স্তাবত্যো হস্ত এীবা পৃ-প্তেষ্। তত্ত্ৰ হস্ত পাদ গতানা॰ কওরাণা॰ নখাঃ প্ররোহাঃ। বা হৃদয নিবন্ধিনীনা মধোভাগ-গতানা মেট্ৰ সোণি পৃষ্ঠ নিব-ন্ধিনীনা মধোভাগ গতানা॰ বি-ষ্ণ। মূৰ্জোৰ বক্ষো ২ক্ষ পিণ্ডা-मीनाक गा॰**मा**निता नायुष्टि जा-লানি প্রত্যেক চত্বারি চত্বারি । তানি মণিবন্ধ গুই সংশ্রিতানি পরস্পর নিবদ্ধানি পরস্পর সং-ন্নিষ্টানি পরস্পার গবাক্ষিতানি চেতি। যৈ গ্ৰাক্ষিত মিদ শ-

॥ # ॥ ষট্ কূচ্চা স্তে হস্ত পাদ গ্রীবা নেট্রেষু। হস্তবো দ্বো পাদষো দ্বো গ্রীবা নেট্রো রে-কৈকঃ । মহত্যো মাণ্স রজ্জব

শতসুঃ পৃষ্ঠবংশ মুভযতঃ পোণী নিবন্ধনার্থণ দ্বে বাহ্নে আভ্যন্ত-ति ह दि ॥ #॥ मशु (मत्नाः । শিরসি বিভক্তাঃ পঞ্চ জিহ্বা সে-ফসো রেকৈকা তাঃ পরিহর্ত্তব্যাঃ শস্ত্রেণ । 🟶 ।। চতুর্দশাস্থাণ সংখা-তাঃ। তেষা॰ ত্রষো গুরু জানু ব ্জ্পণেষু। এতেনেতর সক্থি বাহূ চ ব্যাখ্যাতে । ত্রিক শির্গো **द्राटेककः ॥ 🛊 ॥** छजूर्म टेनव भीय-স্তাঃ। তে চান্থি সংঘাতবদাণ-নীয়া মত স্তৈ ৰ্যুক্তা অস্থি সংঘা-তাঃ। যে হ্যক্তাঃ সংঘাতান্ত থ-बरोपटेगटक्यां ॥ 🗱 ॥ जीनि স্বষ্ঠান্যস্থি শতানি বেদবাদিনো ভাষন্তে। শল্যতন্ত্রে তু ত্রীণ্যেব শতানি ৷ তেষাণ সবিণশ মস্থিশ-ত শাথাসু। সপ্তদশোতর শ-ত ত্রোণি পার্শ্ব পৃষ্ঠোদরোরঃসু । গ্রীবাণ প্রত্যুদ্ধুণ ত্রিষ্টিঃ। এব মস্ত্রাণ ত্রীণি শতানি পূর্যান্তে। একৈকস্যান্ত পাদাঙ্গুল্যাণ ত্রীণি ত্রীণি তানি পঞ্চদশ। তল কৃষ্ঠ গুল্ণ সংশ্ৰিতানি দশ। পার্ষ্ণ্যা মে-কং। জ্ঞাযাং দে। জানুন্যেকং । এক মূরাবিতি। ত্রি॰শদেব মে-কন্মিন্ সক্প্নি ভবস্তি। এতেনে-

তর সক্থি বাহু চ ব্যাখ্যাতৌ। শ্রোণ্যাণ পঞ্চ তেষাণ গুদ ভগ নিতমেষু চত্বারি। ত্রিকসংশ্রেত মেক । পার্শে ষট্ত্রি শঙ্গেব মে-किन्यन् षिठीत्यत्भावः । ত্রি॰শৎ। অফাবুরসি। দ্বে অক্ষ ক সংজ্ঞে। গ্ৰীৰাষাণ নবকং। ক-ঠনাড্যা॰ চত্বারি। ছে হয়োঃ। দৃ-ন্তা দাত্রিশৎ। নাসাযাণ ত্রীণি । এক তালুনি। গণ্ড কর্ণ শদ্ধে-ষেকৈক । ষট্ শিরসি। এতানি পঞ্চবিধানি ভবস্তি । তাৰ্মথা । কপাল ৰুচক তৰুণ বলয নলক সংজ্ঞানি। তেষাং জানু নিতয়াং-স গগু তালু শম্ব শিরঃসু কপা-लानि। দশनाञ्च क्रिकानि। शुन কর্ণ গ্রীবান্ধি কোষেযু তরুণানি। भागि भाम भार्य भ्रष्ठामत्त्रात्रः मू বলষানি ৷ শেষাণি নলক সংজ্ঞা-নি ॥🛊॥ ভবস্তি চাত্র। অভ্যস্তর-গতৈঃ সারে র্যথা তিষ্ঠস্তি ভূরু-. হাঃ। অস্থিসারে স্তথা দেহা ধ্রি-যন্তে দেহিনা॰ ঞ্ৰব॰ ॥ ভঙ্গাঞ্চি-র বিনটেষু ত্ব্যাণসেষু শরীরি-**११° । अ**श्रीनि न विनगांखि मा-রাণ্যেতানি দেহিনা ।। মাণ্সা-ন্যত্র নিবদ্ধানি শিরাভিঃ স্নাযু-

ভি ख्रथा। चन्दीन्यानयमः कृषा ন শীৰ্যান্তে গতন্তি বা ॥ 🟶 ॥ সন্ধযম্ভ দ্বিবিধা শ্চেষ্টাবন্তঃ স্থি-রাশ্চ।। শাখাসু হয়েঃ কট্যাঞ্চ চেষ্টাবস্তস্ত সন্ধযঃ।শেষাস্ত স-ऋयः मर्स् विख्छ्या हि स्त्रिः। वृ-ধৈঃ ।। সংখ্যাতস্ত দশোত্তরে ছে-শতে। তেষা॰ শাখাস্বফইফি রে-কোনষষ্টিঃকোষ্ঠে।জীবাণ প্রত্যু-ৰ্দ্ধু॰ ত্ৰ্যশীতিঃ। একৈকস্যা॰ পা-দাঙ্গুল্যাণ ত্ৰয স্ত্ৰযো দাবঙ্গুঠে তে **ठ**ष्ट्रमंग । कान् श्रद्ध वक्करण्यः रैककः। এব॰ সপ্তদশৈকস্মিন্ স-ক্থ্বি ভবন্তি। এতেনেতর সক্থি वार् ह व्याथाएं। र वयः की কপালেষু। চতুর্বি॰শতিঃ পৃষ্ঠব॰-শে। তাবন্ত এব পার্শ্বযোঃ। উ-রস্যকৌ। তাব্৺এব গ্রীবাষা°। ब्रयः कर्छ। नाजीयू वृषय क्लाम निवकाष्ट्रणाम्य । पञ्ज शतियागा দস্তমূলেষু। একঃ কাকলকে না-मायाक । एवे वर्ष मखनाकी নেত্রাশ্রযৌ। গণ্ড কর্ণ শঙ্খেম্বে-देक्कः। एवो रन्मकी। षातूश-রিষ্টান্ডবোঃ শশ্বযোশ্চ। পঞ্চ-শিরঃ কপালেষু। একো মূর্দ্ধি ।।।।।। তএতে সন্ধবে। ২ইবিধাঃ।

কোরোদৃখল সাম্দা প্রতর তৃষ-সেবনী বাষসতুও মণ্ডল শগ্ধা-व्हाः । তেষা मकुलि मनिवक्ष - শুল্ল জানু কূর্পরেষু কোরাঃ সন্ধ-सः। कका वक्का मणदनमृष्य-লাঃ। অংসপীঠ গুদ ভগ নিত-(सयू मायूकााः। श्रीवा शृष्ठेवःम-যোঃ প্রতরাঃ। শিরঃ কটা কপা-লেষু তুমসেবনী। হবে। রুভয-**ত**ञ्ज वायमञ्जाः । क्रके समय নেত্ৰ ক্লোম নাডীযু মণ্ডলাঃ। শ্রোত্ত শৃস্বাটকেষু শধাবর্তাঃ। তেষাণ নামভি রেবাক্কভয়ঃ প্রা-বেণ ব্যাখ্যাতাঃ ।। অস্থান্ত সন্ধ-ষে। ছেতে কেবলাঃ পরিকীর্ত্তি-তাঃ। পেশী স্নাযু শিরাণাম্ভ সন্ধি-সংখ্যা ন বিদ্যতে ॥ 🕸 ॥ নব স্নাযু শতানি । তাসা শাধাসু ষট্ শ-তানি। দ্বে শতে ত্রি॰শচ্চ কোপ্তে । গ্রীবাণ প্রত্যূর্দ্ধণ সপ্ততিঃ। এ-देककमाञ्च शामाष्ट्रवााः यह नि-চিতা স্তা স্ত্রি॰শৎ । তাবত্য এব তল কুৰ্চ্চ গুম্বেষু। তাবত্য এব জ॰-যাযা । দশ জানুনি। চত্বারি শ-मृदतो। দশ বঙ্গদে। শত यशक्त-মেব মেকস্মিন্ সক্থ্বি ভবস্তি। এতেনেতর সক্থি বাহূ চ ব্যা-

খ্যাতৌ । ষষ্টিঃ কট্যা । অশী-তিঃ পৃষ্ঠে। পার্শ্বযোঃ ষটিঃ। উর-সি ত্রি॰শৎ। ষট্ত্রি॰শৎ গ্রীবাষা• । মূর্দ্ধি চজুন্ত্রি॰শৎ। এব॰ নব ন্না-ষুশতানি ব্যাখ্যাতানি ॥ 🟶 ॥ ভবন্তি চাত্র। স্নায়ু শ্চতুর্বিধা বি-দ্যাত্তাস্ত সৰ্বা নিবোধ মে। প্ৰতা-নবভ্যো বৃত্তাশ্চ পৃথ্যশ্চ শুষিরা স্তথা।। প্রতানবত্যঃ শাখাসু স-ৰ্বদন্ধিযু চাপ্যথ। বৃত্তান্ত কণ্ড-রাঃ সর্বা বিজ্ঞেষাঃ সশলৈ রিছ ।। আম পদ্ধাশযান্তেযু বস্তৌ চ শুষিরাঃ খলু । পার্শ্বোরসি তথা পृष्ठि পृथुलान्छ नित्रमंग्रथ ॥ त्नी ৰ্ষথা ফলকা স্তীৰ্ণা বন্ধনৈ ৰ্বহুভি র্যুতা। ভারক্ষমা ভবেদপ্সু নৃষুক্তা সুসমাহিতা ॥ এব মেব শরীরে **ए**न्यान् यावस्यः मक्षयः स्यृजाः । প্ৰাযুতি ৰ্বহৃতি ৰ্বদ্ধা স্তেন ভার-मर्। नद्राञ्धाः न श्र्शीन न वा (भर्मा) न भिन्ना न ह मन्नयः। ব্যাপাদিতা স্তথা হন্য র্যথা সাযুঃ শরীরিণ ।। यः সাযূः প্রবিজা-নাতি বাহা শূচাভ্যন্তরা স্তথা। म গৃঢ॰ मना मारुर्जु॰ मिराष्ट्र-কোতি দেহিনা ।। 🟶 ।। পঞ্ পেশীশতানি ভবস্তি। তাসাণ

চত্বারি শতানি শাখাসু। কোঠে । আবা প্রত্যুদ্ধ্রু স্ত্রি॰শৎ। একৈকস্যান্ত পাদাস্থ-न्ताः ठिमु जिमु जाः शक्षमः। मम क्षेत्रपा । भारमाभित्र कृष्ठ সন্নিবিকী স্তাবত্য এব। দশগুল্প তলযোঃ। গুল্ক জান্বস্তরে বি॰-শতিং। পঞ্চ জানুনি। বি॰শতি करतो। দশ वष्करन। শত মেব মেকস্মিন্ সক্থি ভবস্তি ৷ এতে নেতর সক্থি বাহু চ ব্যাখ্যাতে । छिनुः भारयो। वका स्मर्ह्य । 'সেবন্যা' চাপরা। ছে বৃষণযোঃ । দ্বিচোট পঞ্চ পঞ্চ। ছে বস্তি 📍 শিরসি। পঞ্চোদরে। নাভ্যা মে-का । भृष्ठीर्ष् मः निविकीः भक्ष **शक्ष नीर्याः। यहे शार्यरयाः। मन** বক্ষসি। অক্ষকাণসৌ প্রতি সম-खा॰ मथा। एवं कृतवामान्यरयाः । यह यह ६ शीरश पूरवयू। थी-वाया क्ष्रजुः। यस्की रसाः। একৈকা কাকলক গলখোঃ। দ্বে-ভালুনি। একা জিহ্বাযাণ। ওঠ-ৰো ছে। যোগাযা ছে। ছে নেত্ৰ-যোঃ। গগুযো শ্চতসুঃ। কর্ণষো র্দ্ধে। চতস্রে। ললাটে। একা শির-শীত্যেব মেতানি পঞ্চ পেশীশতা-

নি ॥॥। সিরা স্নাযুস্থি পর্বাণি স-স্বাষশ্চ শরীরিণাণ। পেশীভিঃ সণ বৃতান্যত্র বলবন্তি ভবন্ত্যতঃ।। স্ত্রীণাম্ব বি॰শতি রধিকা। দশ তা-সা ভনযে। রেকৈকস্মিন্। পঞ্ পঞ্চ ষৌবনে তাসা পরিবৃদ্ধিঃ। অপত্যপথে চত্যু স্তাসাণ প্রসৃ-তে ২ভান্তরতো দে মুখাঞিতে বাছে চ প্রবৃত্তে দে। গর্ভচ্ছিদ্র সংশ্রিতা স্থিসুঃ। শুক্রার্ত্তব প্রবে শিন্য স্তিসু এব। পিত্ত পঞ্চাশষ মধ্যে গৰ্ভাশযো যত্ৰ গৰ্ভ স্তিষ্ঠ-তি। তাসা বহল পেলব স্থূলাণু-शृथू वृद्ध इस नीर्य सित मृतू अक কর্কশভাবাঃ সন্ধ্যন্থি সিরামাযু প্রচ্ছাদকা যথা দেশ স্বভাবত-ত্রব ভবস্তি॥#॥ভবতি চাত্র। পু• সা• পেশ্যঃ পুরস্তাদ্যাঃ প্রো-ক্তা লক্ষণ মুক্ষজাঃ। স্ত্রীণা মাবৃত্য তিষ্ঠস্তি ফল সম্ভৰ্গত হি তাঃ।। মর্ম্ম সিরা ধমনী স্থোতসা মন্যত্র প্রবিভাগঃ ॥ 🟶 ॥ শখনাভ্যাক্ত-তি ৰ্যোনিঃ স্ত্ৰ্যাবৰ্ত্তা সা প্ৰকী-ৰ্ত্তিতা। তদ্যা স্তৃতীযে দ্বাবৰ্ত্তে গর্ভ শয্যা প্রতিষ্ঠিতা।। যথা রো-হিত মৎস্যস্য মুখণ ভবতি ৰূপ-তঃ ৷ তৎসংস্থানাণ তথাৰূপাণ

গর্ভশয্যা বিদুর্বুধাঃ ৷৷ আভুগো **২ভিনুখঃ শেতে গর্ভে। গর্ভাশ**যে স্ত্রিযাঃ। স যোনিং শিরসা যাতি স্বভাবাৎ প্রসব প্রতি ॥ স্বক্ পৰ্য্যন্তদ্য দেহদ্য যো ২য় মঞ্চ বিনিশ্চযঃ। শল্যজ্ঞানাদৃতে নৈষ বৰ্ণ্যতে ংঙ্গেষু কেষুচিৎ ॥ তত্মা-নিঃদংশয়ণ জ্ঞানণ হর্তা শল্যস্য বাঞ্তা। শোধযিত্বা মৃত্ত সম্য-क् जरुरियाङ्गविनिक्षयः ॥ अ-ত্যক্ষতো হি যদৃষ্ট॰ শাস্ত্ৰ দৃষ্টঞ্চ যদ্ভবেৎ। সমাসত স্তদুভয়ণ ভূ-যো জ্ঞানবিবৰ্দ্ধন ।। তক্ষাৎ স-মস্তগাত্র মবিষোপহত মদীর্ঘ. ব্যাধিপীডিত মবর্ষশতিক নিঃ-मृकोञ्ज **भूतीय** भूक्ष यवश्खा मानगायाः निवकः नक्षत्रः मूक वक्षन जम मनामीना मनाज्य নাবেষ্টিতাঙ্গ মপ্রকাশে দেশে কোথষেৎ। সম্যক্ প্রস্থতিঞ্চো-দ্বৃত্য ততো দেহ সগুরাত্রাদুশী-র বালবেণু বন্ধল কূচীনা মন্যত-মেন শনৈঃ শনৈ রবধর্ষয়ণ স্কুগা-দীন্ সৰ্বানেব বাহ্যাভ্যস্তরাঙ্গ প্র-ण्य विस्थान् यथाकान् वक-'বে ক্যসূষা।। শ্লোকৌ চাত্ৰ ভবতঃ। न अका मन्यूया अर्थू ॰ (तर मृच्छ-

মো বিভুঃ। দৃশ্যতে জ্ঞান চক্ষ্ভি স্তপশ্চক্ষুর্ভি রেব চ ॥ শরীরে टेठव भाट्य ह मृखीर्थः गाषिभा-রদঃ। দৃষ্ট শ্রুতাভ্যা॰ সন্দেহ ম-वात्रा शाहत्व कियाः ॥ 🛊 ॥ ষষ্ঠাধ্যাযঃ। অথাতঃ প্রত্যেক मर्म निर्पामः भारीतः व्याখ्या-স্যামঃ। সপ্তোত্তর মর্মশত। তানি মর্মাণি পঞ্চাত্মকানি। ত দ্বপা। মা॰সমর্মাণি। সিরামর্ম। नि । क्षायुमर्कानि । অञ्चिमर्कानि। সন্ধিমর্মাণি চেতি। ন খলু মাণ্স সিরা স্নাযুম্ভি সন্ধি ব্যতিরেকে-**भानग्रानि नर्म्यानि ভবস্তি यन्त्रा-**তত্ত্ৰৈকাদশ মোপলভ্যন্তে ॥ मा॰म मर्मानि। একচত্বারি॰শ শিরামর্মাণি। সপ্তবি॰শতিঃ স্নাযু মর্ম্মাণি। অফীবস্থিমর্মাণি। বি॰-শতিঃ সন্ধিমর্মাণি ৷ তদেতৎ সপ্তোতর भশশত। ॥ ॥। তেষা মেকাদশৈকস্মিন্ সক্থ্ৰি ভবস্তি ৷ এতে নেতর সক্থি বাস্থূ চ ব্যাখ্যাতৌ । উদরোরসো র্ছা-দশ। চতুৰ্দশ পৃষ্ঠে। গ্ৰীবাণ প্ৰ-ত্যুৰ্দ্ধণ সপ্তত্তিশৎ। তত্ত্ৰ সক্থি गर्मानि किञ्चलन समय कृर्क कृष्ठ-শিরো গুল্লেন্সবস্তি জায়াণাৰী

লোহিতাকাণি বিটপঞ্চেতি।এতে নেতর সক্থি ব্যাখ্যাত ॥ 🗱 ॥ উদরোরসোস্ত। গুদবস্তি নাভি হৃদয স্তনমূল স্তন রোহিতাপ-नाপानाপर्रेखी (ठि । পृष्ठे মর্মাণি তু কটীক তরুণ সসন্দর নিতম্ব পার্ম্ব সন্ধি বৃহত্যৎস ফল-কান্য॰সৌ চেতি॥ বাহু মর্ম্মণি তু ক্ষিপ্রতল হৃদয় কূর্চ্চ কূর্চ্চ শিরে৷ ं मनिवरक्षत्यविष्ठ कर्णतागुरि (न)-হিতাকাণি কক্ষধর ঞ্চেতি। এতে-নেতরে। বাহু ব্যাখ্যাতঃ । জত্ত্ব ৰ্দ্ধু॰ মন্মাণি । চতস্ৰে। ধমন্যো ২ফৌ মাতৃকাঃ। দ্বে ক্লকাটিকে। ष विश्रुतः । षो क्रिंग । षावशा-কৌ। দ্বাবাবত্তৌ। দ্বাবুৎকেপৌ । (हो मधादका उपनी। १४० সীমন্তাঃ। চত্বারি শৃঙ্গাটকান্যে-কো ২ধিপতি রিতি। তত্র তল क्षपरम्भ विश्व श्वेम खन द्राहि-তानि भाष्मभर्याणि। नील धमनी মাতৃকা শৃঙ্গাটকাপান্ধ স্থপনী ফণ স্তনমূলাপলাপাপস্তম্ভ হৃদ্ ষ নাভি পাৰ্শ্ব সন্ধি বৃহতী লো-হিতাকোৰ্ব্যঃ সিরামশ্বাণি।। আ-ণি বিটপ কক্ষধর কূর্চ্চ কূর্চ্চশি-রো বস্তি ক্ষিপ্রাণ্স বিধরে একে-

পাঃ স্নাযু মর্মাণি॥ কটীক ত-রুণ নিতশ্বাণ্স ফলক শন্থা স্তৃস্থি-মর্মাণি।। জানু স্বর্পর সীমন্তা-ধিপতি গুন্ম মণিবন্ধ সঙ্গন্দরাবর্ত্ত ক্লকাটিকা শ্চেতি সন্ধিমর্মাণি।। তান্যেতানি পঞ্চ বিকল্পানি মর্ম্মা-ণি ভবস্তি। তদ্মথা। সদ্যঃ প্রাণ-হরাণি। কালান্তরপ্রাণহরাণি। বিশল্যসানি । বৈকল্যকরাণি। রুজাকরাণীতি। তত্ত্র সদ্যঃপ্রাণ হরাণ্যেকোনবি॰শতিঃ। কালা-স্তরপ্রাণহরাণি ত্রযন্ত্রি॰শৎ। ত্রী-ণি বিশল্যমানি । চতুশ্চমারিণ-শবৈকল্যকরাণি। অক্টোরুজা-করাণীতি ।। 🟶 ।। ভবস্তি চাত্র । শৃঙ্গাটকান্যধিপতিঃ শঞ্চো কণ্ঠ শিরো গুদে। হৃদয় বস্তি নাভী চ মন্তি সদ্যো হতানি তু ॥ বক্ষো মর্মাণি সীমস্ত তলক্ষিপ্রেন্দ্র বস্ত-যঃ। কটীক তরুণে সন্ধী পার্শ্বজৌ বৃহতী চ যা।। নিতশ্বাবিতি চৈতা-নি কালান্তরহরাণি তু। উৎ-क्लि इंगनी टें विनवामानि নিৰ্দিশেৎ।। লোহিতাক্ষাণি জা-ন্বী কৃষ্ঠা বিটপ কূর্পরাঃ। সঙ্গ-म्मेदत्र कंकथरत विश्वदंत्र महाकारि-কে ৷৷ অংসাংস ফলকাপাসা

नीरल गरना करने ७थ। रेवकना করণান্যাহ্ রাবত্তে ছৌ তথৈ-व ह ॥ श्रः हो कि मिनवस्त्रो की ষে দে কূর্চ্চশিরা॰িদ চ। রুজা করাণি জানীযাদফা বেতানি বু कियान्।। किथानि विक्रमाळानि মন্তি কালান্তরেণ চ**েমর্মা**ণি নাম মাণ্স শিরা প্রাযুস্থি সন্ধি সন্নিপাতা স্তেষু স্বভাবত এব বি-শেষেণ প্রাণা স্তিষ্ঠস্তি। তত্মাম-শ্ব্যভিহতাস্তান্ ভাবানাপ-मारख।। তত্ত ममाः প্রাণহরাণ্যা-গেষান্যমি গুণেষাশুক্ষীণেষু ক্ষ-পयस्य । कालास्त्र व्यागह्रतानि **मोगाधियानाविख्यायाख्यीत्** ষু ক্রমেণ চ সোম গুণেষু কালা-স্তরেণ ক্ষপযন্তি। বিশল্য প্রাণ হরাণি বাযব্যানি শল্যমুখ নি-রুদ্ধো যাবদন্ত বাযু স্তিষ্ঠতি তা-বজ্জীবত্যুদ্ধৃতমাত্ত্রে তু শল্যে ম-শ্বস্নাশ্রিতো বাষু নিষ্কামতি তম্মাৎ সশল্যো জীবত্যুদ্ধৃত-শল্যে। মূ্যতে । বৈকল্যকরাণি ॥ সৌন্যানি সোমো হি স্থিরত্বাচ্ছৈ-ত্যাচ্চ প্রাণাবলম্বন॰ করোতি । রুজাকরাণাগ্নি বাযু গুণ ভূষিষ্ঠা-নি বিশেষতশ্চ তৌ ৰুজাকরৌ ৷

পাঞ্চভৌতিকীঞ্চ ৰুজামাহু রেকে । क्रिमार मां मामीना शका-না মপি সমস্তানা বিবৃদ্ধানাঞ্চ मयवायां मनाः आनश्तानि । এক হীনানা মন্পানাণ বা কালা-खत थां १ इता । विशेनानाः विभवा প्रावहतानि । विशेना-না বৈকল্যকরাণি। একস্মিমেব রুজাকরাণীতি। যতকৈচব মতো **২স্থি মর্মাম্বপ্যভিহতেমু শোণি**-তাগমন ভবতি ॥ 🛊 ॥ চতুর্বি-ধা যাস্ত শিরাঃ শরীরে প্রাযেণ তা মর্ম্মসু সমিবিষ্টাঃ। স্নাযুন্থি गा॰मानि ७८९४ मन्नीन् मस्रर्ग দেহ॰ প্রতিপালযন্তি ॥ ততঃ ক্ষ-তে মৰ্মাণি তাঃ প্ৰবৃদ্ধঃ সমস্ততো বাষু রভিস্তৃণোতি। বিবর্দ্ধমানস্ত স মাতরিশ্বা রুজঃ সুতীব্রাঃ প্রত-নোতি কাথে ॥ রুজাভিভূতস্ত পুনঃ শরীর প্রলীযতে নশ্যতি চাস্য সংজ্ঞা। অতো হি শল্যণ विनिश्ख भिष्ठ्न् भर्माणि यरज्ञन পরীক্ষ্য কর্ষেৎ ।। এতেন শেষ॰ ব্যাখ্যাত ৷৷ তত্ত্র সদ্যঃ প্রাণহর মন্তে বিদ্ধা কালান্তরেণ মার্যতি । কালান্তর প্রাণহর মন্তে বিদ্ধ• বৈকলা সাপাদ্যতি। বিশ্ল্য প্রা-

ণহর মন্তে বিদ্ধু কালান্তরেণ ক্লে-শ্যতি ৰুজাঞ্চ করোতি ৷ রুজা-কর মতীব্রবেদনণ ভবতি । তত্র সদ্যঃপ্রাণ্হরাণি সপ্তরাত্রাভ্যন্ত-রামারষস্তি ৷ কালাস্তরপ্রাণ-হ্রাণি পক্ষান্মাসাদ্বা ৷ তেয়পি তূ किथा । कना िना खमा त्रविख । বিশল্যপ্রাণহরাণি বৈকল্যকরা-ণি চ কদাচিদত্যভিহতানি মার-যন্তি ॥ 🟶 ॥ অত উদ্ধৃ॰ প্রত্যে-কশো নৰ্মস্থানান্যনুব্যাখ্যাস্যা-মঃ। তত্র পাদাঙ্গুপ্তাঙ্গুল্যো র্মধ্যে ক্ষিপ্রণ নাম মর্ম্ম তত্র বিদ্ধাস্যাক্ষে-পকেণ মরণ । মধ্যমাঙ্গুলী মনু-পূৰ্বেণ মধ্যে পাদ্ভলস্য তলস্থ-দ্য নাম তত্রাপি রুজাভি মর-ণং। ক্ষিপ্রস্যোপরিষ্টাদুভয়তঃ কূ-চ্চে। নাম তত্র পাদস্য ভূমণ বে-পনে ভবতঃ। গুল্ফ সন্ধে রধ উভ বতঃ কূৰ্চ্চশিরো নাম তত্র রুজা শোকৌ। পদ জঙ্ঘধোঃ সন্ধানে শুল্পো নাম তত্ৰ ৰুজ স্তুন্ধপাদতা খঞ্জতা বা। পার্ক্ষিণ প্রতি জজ্জা মধ্যে ইন্দ্ৰবস্তি নাম তত্ৰ শোণি-তক্ষযে মরণ । জ্বজ্যোর্বোঃ সন্ধা-নে জানু নাম তত্র খঞ্চতা। জা-নুন উদ্ধৃ মুভ্যত আঙ্গুল মাণি

ৰ্নান তত্ৰ শোফাভিবৃদ্ধিঃ স্তব্ধ-সক্থিতা চ ৷ উক্লমধ্যে উবী নাম তত্র শোণিতক্ষষাৎ সক্থিশেষঃ । উর্ব্যা উর্দ্ধ নধে। বঙ্ক্ষণ সম্বে বাৰুমূলে লোহিতাক্ষণ নাম তত্ৰ লোহিত ক্ষয়েণ পক্ষাঘাতঃ। ব-জ্ঞান বৃষণযো রম্ভরে বিটপণ নাম তত্র ষাণ্ড্য মল্প শুক্রতা বা ভবতি । এব মেতান্যেকাদশ সক্থি ম-র্মাণি ব্যাখ্যাতানি । এতেনেতর সক্থি বাহু চ ব্যাখ্যাতৌ ॥ বি-শেষতম্ভ যানি সক্থি গুল্প জানু বিটপানি তানি বাহৌ মণিবন্ধ কূপর কক্ষধরাণি। যথা বজ্জণ বৃ-ষণযো রস্তরে বিটপ মেব॰ বক্ষঃ কক্ষযো র্মধ্যে কক্ষধর তিস্মিন্ বিদ্ধে তএবোপদ্রবাঃ। কিশেষ-তস্ত মণিবন্ধে স্বপ্ততা। স্বর্পারাখ্যে ঙ্গণিঃ। কক্ষধরে কক্ষাঘাতঃ। এব মেতানি চতুশ্চত্বারিংশচ্ছাখাস মর্ম্মাণি ব্যাখ্যাতানি ।। 🟶 ।। অত-**উर्দ्व गूमदाविद्या श्रम्यश्रानानान्** ব্যাখ্যাস্যানঃ। তত্ত্ৰ বাত বৰ্চো নিরসন স্থূলান্ত্র প্রতিবদ্ধ ওদং নাম মর্ম্ম তত্ত্র সদ্যো মরণং। অ-গ্নাণ্স শোণিতো ২ভ্যন্তরভঃ ব্টাং মূত্রা**শযো বস্তি নাম**

তত্রাপি সন্ন্যোমরণ মশ্মরী ত্রণাদৃ-তে। তত্ৰাপু।ভযতো ভিন্নে ন জী-বত্যেকতো ভিমে মূত্রসুাবী বণী ভবতি ৷ স তু ষত্নেনোপক্রান্তো রোহতি। পঞ্চামাশ্যযো র্মধ্যে সিরা প্রভবা নাভি নাম তত্রাপি সদ্যূএব মরণ । স্তনযো র্মধ্য মধি-ষ্ঠাযোরগ্যানাশ্য দার সত্ত্ব রজ স্তমদা নধিষ্ঠান হদ্য নাম তত্ৰ সদ্য এব মরণ । স্ত নযো রধস্তাৎ श्रमञ्जूल मूख्यठ खनमृत्व नाम মর্ম্মনী তত্র কফপূর্ণ কোষ্ঠত্যা কাস শ্বাসাভ্যা॰ মি্যতে। স্তন চূচুকবে৷ ৰূৰ্দ্ব্ৰ মুভ্যতঃ স্তন রোহিতৌ নাম তত্র লোহিত পূৰ্ণ কোষ্ঠতয়া কাস শ্বাসাভ্যাঞ্চ ম্রিয়তে। অণ্সকূটযো রধস্তাৎপা-র্ষোপরিভাগযো রপলাপৌ না-ম তত্র রক্তেন পূযভাবে গতেন মরণ । উভষত্রোরসো নাড্যৌ বাতবহে অপস্তম্ভৌ নাম তত্ৰ বা-তপূৰ্ণকোষ্ঠত্যা কাসশ্বাসাভ্যাঞ্চ মরণ । এব মেতান্যুদরোরসো র্ছাদশ মর্মাণি ব্যাখ্যাতানি॥ #॥ অতউর্কু পৃষ্ঠ মর্মাণ্যনুব্যাখ্যা-স্যামঃ । তত্র পৃষ্ঠবংশ মুভ্যতঃ প্রতিশ্রোণী কাও মন্থীনি ক-

টীক তরুণে নাম মর্ম্মণী তত্ত্র শোণিত ক্ষয়াৎ পাণ্ডু বিবর্ণো হীনৰূপশ্চ মূিযতে। পাৰ্শ্ব জঘন বহিৰ্ভাগে পৃষ্ঠবংশ মুভয়তো না-**তিনিয়ে अञ्चल**दा नाम मर्मागी তত্র স্পর্শাক্তান মধ্যকায়ে চে-ফৌপযাতশ্চ। শ্রোণীকাণ্ডযো क्र १ या निया का मार्थ । जा श्री खत প্রতিবদ্ধৌ নিতম্বৌ নাম তত্রাধঃ-কাযশোষে। দৌৰ্বল্যাচ্চ মরণং। অধঃ পার্শান্তর প্রতিবদ্ধৌ জ-यन পार्श्व यथाया छिर्यागृक्ष् क्यनाथ भार्श्वनकी नाम লোহিতপূর্ণ কোষ্ঠত্যা মু্যতে। স্তন্মূলাদুভ্যতঃ পৃষ্ঠবংশস্য বৃ-হতী নাম তত্ত্ব শোণিতাতিপ্রবৃ-ত্তি নিমিত্তৈ রূপড়েবৈ ম্রি্বতে। পৃঠোপরি পৃষ্ঠবংশ মুভষত স্ত্রিক मश्रक्ष जःम कलदक नाम छ्व ৰাহ্বোঃ স্বাপঃ শোষো বা । বাহু মূৰ্দ্ধ গ্ৰীবা মধ্যে শেসপীঠ ক্ষন্ধ নি-বন্ধনা ক'সৌ নাম তত্ৰ স্তন্ধবা-হতা। এব মেতানি চতুর্দশ পৃষ্ঠ-মর্মাণি ব্যাখ্যাতানি ॥ 🟶 ॥ অত-জ্বগতানি ব্যাখ্যাস্যামঃ । তত্র কণ্ঠ নাডী মুভয়ত শত-त्या धमत्मा एव नीत्व एव ह

মন্যে ব্যত্যাসেন তত্ত্র মৃক্তা স্ব-রবৈক্বত মরসগ্রাহিতা চ। গ্রী-বাষা মুভযত শ্চতসুঃ সিরা মা-তৃকা স্তত্ত সদ্যো মরণ । শিরো গ্রীবযোঃ সন্ধানে ক্রকাটিকে না-ম তত্ৰ চলমূৰ্দ্ধতা। কৰ্ণ পৃষ্ঠতো-২ধঃ সংশ্রিতে বিধুরে নাম তত্র বাধিষ্য । ঘাণ মার্গ মুভ্যতঃ সোতো মার্গ প্রতিবদ্ধে অভ্যস্ত-রতঃ ফণে নাম তত্র গন্ধাজ্ঞানণ। জ্ৰ পুচ্ছান্তযো রধো ২ক্ষো ৰাহ্য-তো ২পান্সে নাম তত্রান্ধ্যণ দৃ-ফ্ট্যপঘাতো বা । জ্বো রুপরি নিম্বো রাবত্তে নাম তত্তান্ত্য দৃষ্ট্যপঘাতশ্চ। ব্রুবোঃ পুচ্ছান্ত-र्या क्र शति कर्न नना हैरया मर्रधा শঙ্খো নাম তত্র সদ্যো মরণ । শখ্যযো ৰূপরি কেশান্ত উৎক্ষে-পৌ নাম তত্র সশল্যো জীবতি পাকাৎ পতিতশল্যো বা নো-ষ্কৃত শল্যঃ। ব্ৰীবো মধ্যে স্থপনী নাম তত্ত্রোৎক্ষেপবৎ । পঞ্চ স: ন্ধয়ঃ সিরসি বিভক্তাঃ সীমস্তা নাম তত্তোমাদ ভ্য চিত্ত নাশৈ র্মরণ । ঘাণ শ্রোত্রাক্ষি জিহ্বা স-ন্তর্পণীনাও সিরাশাও মধ্যে সিরা স্মিপাতঃ শৃঙ্গাটকানি তঃনি চ-

ত্বারি মর্ম্মাণি তত্রাপি সদ্যোমরণ । মস্তকাভ্যন্তরোপরিষ্টাৎ সি-রাসন্ধি সন্মিপাতো রোমাবর্ত্তো **ংধিপতি স্তত্রাপি সদ্যোমরণ° ॥** এব মেতানি সপ্তত্তি শদূর্দ্ধ জত্বগ-তানি মর্ম্মাণি ব্যাখ্যাতানি ॥ 🕸 ॥ ভবস্তি চাত্ৰ। উৰ্ব্যঃ শিরাণসি বি-টপে চ সকক্ষপাৰ্শ্বে একৈক মঙ্গুল মিতা স্তন পূৰ্বমূল । বিদ্ধান্ত্ৰ দ্বয় মিত মণিবন্ধ গুল্প ত্রীণ্যেব জানু সপর সহ স্পরাভ্যা ।। হৃদ্বন্তি কূৰ্চ্চ গুদ নাভি বদন্তি মূ-क्षि ठवाति शक ठ गत्न मन यानि চ দ্বে। তানি স্বপাণিতল সঞ্চিত সংমিতানি শেষাণ্যবেহি পরিবি-স্তরতো ২ঙ্গুলাদ্ধিণ।। এতৎ প্রমা-ণ মভিবীক্ষ্য বদস্তি তজ্ঞাঃ শ-স্ত্রেণ কর্মকরণ পরিহৃত্য মর্মা। পাৰ্শ্বাভিঘাতিত মগীহ নিহস্তি মর্ম্ম তম্মাদ্ধি মর্ম্ম সদন পরিব-ৰ্জনীয়ণ 11 ছিলেযু পাণি চরণেষু সিরা নরাণা সক্ষোচমীযু রসৃ-গল্পমতে। নিরেতি । প্রাপ্যামিত ব্যসন মুগ্র মতো মনুষ্যাঃ সংছিন্ন শাখ তরুবনিধন । ন যান্তি।। কি-প্রেষ্ তত্র সতলেষ্ হতেষ্ রক্তণ গচ্ছত্যতীৰ পৰনশ্চ ৰুজ্ঞ করো-

তি । এব° বিনাশ মুপযান্তি হি তত্ৰ`বিদ্ধ। বৃক্ষা ইবাযুধ বিঘাত নিক্সসূলাঃ।। তস্মাত্তযো রভিহ-ত্যা তু পাণি পাদ ছেন্ডব্য মাশু মণিবন্ধন গুল্পদেশে। মর্ম্মাণি শ-न्याविषयार्क मूनार्त्रेख यन्माष्ठ মর্শ্যসু হতা ন ভবস্তি সদ্যঃ।। জী-বস্তি তত্র যদি বৈদ্য গুণেন কে-চিৎ তে প্ৰাপ্নুবস্তি বিকলত্ব মস°-শয॰ হি। সম্ভিন্ন জর্জ্জরিত কোণ্ঠ শিরঃ কপালা জীবস্তি শস্ত্র বিহ-रेजन्ठ मतीतरमरेमः ॥ ছिरंसन्ठ मक्थि जुज्ञशाम करेत त्रामरेय র্যেষাণন মর্ম্মপতিতা বিবিধাঃ প্র-হারাঃ। সোম মারুত তেজা॰সি রজঃ সত্ত্ব তমা॰সি চ। মর্মাসু প্রা-যশঃ পুংসাণ ভূতাত্মা চাবতিষ্ঠতে ।। মর্মাধভিহত। স্তমানজীবস্তি শরীরিণঃ । ইন্দ্রিয়ার্থেম্বসংপ্রা-প্তি মনে। বৃদ্ধি বিপর্য্যয়ঃ ॥ রুজ-শ্চ বিবিধা স্তীত্রা ভবন্ত্যাশুহ-রে হতে । হতে কালান্তরমে তু ধ্রুবো ধাতৃক্ষযো নৃগা॰ ॥ ততো ধাত ক্ষবাজ্জন্ত বেদনাভিশ্চ ন-শ্যতি। হতে বৈকল্য জননে কে-বল॰ বৈদ্য নৈপুণাৎ ।। শরীর॰ ক্রিয়য়। যুক্তণ বিকলম্ব মবাপ্ল-

বাৎ। বিশল্যদ্বেষ্ বিজ্ঞেষণ পূ-র্বোক্তণ পঞ্চকারণণ ৷৷ রুজাকরা-ণি মর্ম্মাণি ক্ষতানি বিবিধা রুজঃ। পৰস্তান্তে চ বৈকল্য॰ প্ৰবৈদ্য ব-শগো যদি।। ছেদ ভেদাভিঘাতে-ভ্যো দহনাদারণাদপি। উপঘা-ত বিজানীযামৰ্মণাম্বল্য লক্ষ-ণং ৷৷ মৰ্ম্মাভিঘাতশ্চ ন কশ্চিদস্তি ষো হল্পাত্যযো বাপি নিরত্যযো বা । প্রাযেণ মর্ম্মস্বভিতাডিতাস্ত বৈকল্য মৃচ্ছস্ত্যথ বা মিুষস্তে ॥ মর্মাণ্যধিষ্ঠাষ হি যে 'বিকারা মৃচ্ছন্তি কাষে বিবিধা নরাণা । প্রাযেণ তে রুচ্ছতমা ভবস্তি নর-मा यदेव त्रि माधामानाः ॥ 🗱 ॥ সপ্তনোধ্যাযঃ । অথাতঃ সিরা বর্ণন বিভক্তি নাম শারীরং ব্যা-খ্যাস্যামঃ। সপ্ত সিরাশতানি ভ-বস্তি ৷ যাভি রিদ° শরীর নারাম ইব জলহারিণীভিঃ কেদার ইব চ সল্যাভি রূপস্নিহ্নতে অনুগৃহ-তে চাঙ্গঞ্ন প্রসারণাদিভি বি-শেষ্যে। ক্রন্স পত্র সেবনীনা মিব চ তাসাং প্রতানা স্তাসাং নাভি মূল ততশ্চ প্রসরস্থার্দ্ধ মধ স্তি-ৰ্য্যক্ চ ।। 🟶 ।। ভবত*চাত্ৰ । যাব-ত্যস্ত সিরাঃ কাষে সম্ভবস্তি শ্-

ব্লীবিণা । নাভ্যা সৰ্বা নিবদ্ধা ন্ত। প্রতন্বন্তি সমস্ততঃ ॥ নাভি-স্থাঃ প্রাণিনাণ প্রাণাঃ প্রাণামা-ভি ব্যু পাশ্রিতা। সিরাভি রাবৃ-তা নাভি শ্চক্রনাভি রিবারকৈঃ ।। তানা॰ মূলসিরা শ্চত্বারি॰শৎ। তাসা॰ বাতবাহিন্যো দশ। পিত্ত-বাহিন্যোদশা কফবাহিন্যোদশ । দশ রক্তবহিন্যঃ। তাসাম্ভ বাত-বাহিনীনা বাতস্থান গতানা পঞ সপ্ততিশত ভবতি। তাবত্য এব পিত্তবাহিন্যঃ। পিত্তস্থানে কফ-বাহিন্যশ্চ। কফস্থানে রক্তবাহি-ন্যশ্চ। যক্তৎ প্লীক্লো রেব মেতা-নি সপ্ত সিরাশতানি। তত্র বাত-বাহিন্যঃ সিরা একস্মিন্ সক্থ্রি পঞ্বি॰শতিঃ। এতেনেতর সক্থি বাহূ চ ব্যাখ্যাতৌ । বিশেষতস্ত কোষ্ঠে চতুস্ত্রি॰শত্তাসাণ গুদমে-ঢ়াশ্ৰিতাঃ। শ্ৰোন্যা মফী। দে দ্বেপাৰ্শ্বযোঃ। ষট্ পৃষ্ঠে। তাবত্য এব চোদরে।দশ বক্ষসি।এক চত্বারি॰শব্দ্ধব্রুণ উর্দ্ধুণ। তাসাণ চ-তুর্দশ গ্রীবাযা। কর্ণযো শ্চতসুঃ । नव जिस्तायाः। यह नामिकायाः । অফৌ নেত্রযোঃ। এব মেতৎ পঞ্চনপ্তত্যধিকশত বাতবহানা

সিরাণাণ ব্যাখ্যাতণ। এব এব বি-ভাগঃ শেষাণামপি ৷৷ বিশেষত-স্তু পিত্তবাহিন্যো নেত্ৰযো দশ। কর্ণ ষোর্ঘে। এবং রক্তবহা কফব-হাশ্চ। এব মেতানি সপ্ত সিরাশ-তানি সবিভাগানি ব্যাখ্যাতানি ।।ঞ্ছা। ভবন্তি চাত্র। ক্রিয়াণ। মঞ্র-তীয়াত মনোহ॰ বুদ্ধি কর্ম্মণা॰ । করোত্যন্যান্ গুণাণ শ্চাপি স্বাঃ দিরাঃ পবন শ্চরন।। यদ। তু জ-পিতে। বাযুঃ স্বাঃ সিরাঃ প্রতিপ-দাতে। তদাস্য বিবিধারোগ। জা-যন্তে বাত সম্ভবাঃ ।। ভ্ৰাজিকু**তা** মন্মরুচি মগ্নিদীপ্তি মরোগতা । সংসর্গৎ স্বাঃ সিরাঃ পিত্তণ সর্য্যা-চ্চান্যান গুণানপি ॥ यहा প্রত্ন-পিত• পিত্ত॰ সেকতে স্ববহাঃ সি-রাঃ। তদাস্য বিবিধা রোগা জা-যন্তে পিত্ত সম্ভবাঃ ৷৷ ক্ষেহ মঙ্গে-यू मन्नीना॰ देख्रशं॰ वन यूमीर्न्जा॰ । করোত্যন্যান্ গুণা॰ শচাপি ব-লাসঃ স্বাঃ শিরা শ্চরন্।। যদা তু ঙ্গপিতঃ শ্লেমা স্বাঃ সিরাঃ প্রতি-পদ্যতে । তদাস্য বিবিধা রোগা জাযন্তে শ্লেম সম্ভবাঃ॥ ধাতৃণা॰ পূরণ বর্ণ স্পর্শজ্ঞান মসংশ্যুণ। স্বাঃ সিরাঃ সঞ্চরডক্ত॰ স্বর্যাচ্চা-

ন্যান্ গুণানপি॥ যদা তু স্পিত॰ রক্ত॰ সেবতে স্ববহাঃ সিরাঃ। ত-দাস্য বিবিধারোগা জাযন্তে রক্ত-সম্ভবাঃ॥ ন হি বাতণ সিরাঃ কা-শ্চিন্নপিত্ত॰ কেবল॰ তথা ৷ শ্লেমা-**৭**° বা বহস্ত্যেতা অতঃ সৰ্ববহাঃ স্মৃতাঃ ৷৷ প্রদুষ্টানা হি দোষাণা মুচ্ছিতানা প্রধাবতা । দ্রুব মু-মাৰ্গগমন মতঃ সৰ্ববহাঃ স্মৃতাঃ ॥ তত্রারুণা বাতবহাঃ পূর্য্যস্তে वायूना निताः । शिलामूकान्छ নীলাশ্চ শীতা গৌর্য্যঃ স্থিরাঃ কফাৎ ।। অসৃগ্রহাস্ত রোহিণ্যঃ সিরা নাত্যুক্ত শীতলাঃ।। 🟶 ॥ অত উদ্ধৃ প্রবক্ষ্যামি ন বিদ্ধে দ্যাঃ সিরা ভিষক্ ॥ বৈকল্য॰ ম-রণঞ্চাপি ব্যধাত্তাসাণ ধ্রুবণ ভ বেৎ। সিরাশতানি চত্বারি বি-माष्ट्राथाम् वृक्तिमान्॥ यहे वि॰-শচ্চ শত কোন্তে চতুঃষষ্টিশ্চ মূর্দ্ধনি। শাখাসু ষোডশ সিরাঃ কোষ্ঠে দাত্রি শদেব তু ৷৷ পঞ্চাশ-জ্জানুন শ্চোর্দ্ধ মবেধ্যাঃ পরিকী-র্ত্তিতাঃ। তত্র সিরাশত মেকৈক-ম্মিন্ সক্থি ভবতি তাসাণ জাল-ধরা ত্বেক। তিসু শ্চাভ্যস্তরাঃ। ত-ত্রোর্বোঃ সংজ্ঞে ছে লোহিতাক

সংজ্ঞা চৈকৈতা স্ত্রুবেধ্যাঃ। এতে-নেতর সক্থি বাহূ চ ব্যাখ্যাতা-বেব মশস্ত্র কুত্যাঃ ষোডশ শাখা-সু। দাত্রি॰শৎ শ্রোণ্যা॰ তাসা মফাবশস্ত্র ক্লত্যাঃ। ছে ছে বিটপ-বোঃ কটীক তরুণযোশ্চ। অফী-বন্টা বেকৈকস্মিন্ পার্শ্বে তাসা মেকৈকা মূর্দ্ধুগাণ পরিহরেৎ।পা-র্শ্ব সন্ধিগতে চ দ্বে। চতস্ত্রে। বি॰-শতিশ্চ পৃষ্ঠবংশ মুভ্যত স্তাসা मृर्ष्कृगामित्ना एव एव পরিহরেष्-হতী সিরে। তাবত্য এবোদরে তাসাণ মেঢ়্রোপরি রোমরাজী মূ-ভমতো দ্বে দ্বে পরিহরেৎ ৷ চ-ত্বারি॰শদ্বক্ষসি তাসা॰ চতুর্দশা-শস্ত্ৰকৃত্যা। স্বদযে দ্বে দ্বে দ্বে স্তন-মূলে। স্তনরোহিতাপলাপস্তম্বে-ষূভযতো ২কৌ। এবং দ্বাত্রিণ-শদশস্ত্র রুত্যাঃ পৃষ্ঠোদরোরঃসু-ভবস্তি। চতুঃষষ্টি শিরা শত॰ জ-ত্ৰুণ উৰ্দ্বুণ ভবতি। তত্ৰ ষট্পঞ্চাশ-চ্ছিরোধরাযাণ তাসা মফৌ চত-मुन्ठ मर्माम॰ छाः श्रतिश्ति । ए क्रकाणिकरणाः एव विधूतरणाः । এবং গ্রীবাষাং ষোডশাব্যধ্যাঃ। হন্বো ৰুভযতো ২ফাবফৌ তাসা-স্তু সন্ধিধমন্যৌ ছে ছে পরিহরেৎ

। ষট্ত্রি॰শঙ্জিহ্বাযাণ তাসা মধঃ যোডশাশক্রহত্যাঃ রসবহে দ্বে বাখহে চ ছে। দ্বি দ্বাদশ নাসা-যাণ তাসা মৌপনাসিক্য শ্চতসুঃ পরিহরেৎ। তাসা নেব চ তালু-ন্যেকা॰ মৃদাবদ্দেশে। অফীত্রি॰-শদুভয়ো নৈত্রযো স্তাসা মেকৈ-का यशाक्ररशाः शतिश्दत्र । कर्न-যো দশ তাসাং শব্দবাহিনীনা-মেকৈকা॰ পরিহরেৎ। নাসা নে ত্ৰগতাস্ত ললাটে ষষ্টি স্তাসাণকে-শাস্তানুগতা শতসুঃ। আবর্ত্ত-যো রেকৈকা স্থপন্যা শৈচক। প-রিহর্তব্যা। শখ্বযো র্দশ তাসাণ শখ্যসন্ধিগতা মেকৈকাণ পরি-হরে । দ্বাদশ মৃদ্ধি তাস। মুৎ-ক্ষেপষোর্দ্ধে গরিহরে । সীমস্তে-ম্বেকৈকা মেকা মধিপতাবিতি 1 এব মশহ্রত্যাঃ পৃঞ্চাশজ্জত্বণ উৰ্দ্ধ নিতি। ভবতি চাত্ৰ। ব্যাপ্ন-বস্ত্যভিতো দেহ° নাভিতঃ প্রসৃ-তাঃ সিরাঃ। প্রতানাঃ পদ্মিনী कन्मािषमािना॰ यथ। জল॰ ॥ ॥ अरुत्मा श्वागः। अथाठः সিরাব্যধবিধি শারীর ব্যাখ্যা-স্যানঃ। বাল স্থবির ৰাক্ষ ক্ষত ক্ষীণ ভীৰু পরিশ্রান্ত স্ত্রী মদ্যা-

ধকর্ষিত মত্ত বাস্ত বিরিক্তাঙ্গা-পিতানুবাসিত জাগরিত ক্লীব রু-শ গর্ভিণীনা° কাস শ্বাস শোষ প্রবৃদ্ধন্বরাক্ষেপক পক্ষাঘাতোপ-বাস পিপাসা মূচ্ছা প্রপীডিতা-নাঞ্চ সিরাণ ন বিধ্যেৎ। যাশ্চা-ব্যধ্যা ব্যধ্যাশ্চাদৃষ্ঠা দৃষ্ঠাশ্চাষ-ন্ত্ৰিত। যদ্ৰিতাশ্চানুখিতা ইতি ॥ শোনিতাবসেক সাধ্যাশ্চ বিকা-রাঃ প্রাগতিহিতা তেযু চাপক্ষের-ন্যেষু চানুক্তেন্ যথাজ্যাসং যথা ন্যায়ঞ্চ সিরা॰ বিধ্যেৎ। প্রতি-ষিক্কান। মপি চ বি:ষাপদৰ্গ আ-ত্যযিকেযু সিরাধ্যংন মপ্রতি-ষিকে । তত্র স্নিগ্ধ বিদ্য মাত্র । যথাদোষ প্রত্যনীক জবপ্রায-**ননণ ভুক্তবন্তণ ধবাগৃণ পীতবন্ত**ণ বা যথাকাল মুপস্থাপ্যাসীন॰ স্থিত বা প্রাণানবাধমানে। ः 🖫 পট চৰ্মান্তৰ্ক্ষল লতানা মন্য-তমেন যন্ত্রবিদ্বা নাতিগাচে না-তিশিথিল॰ শরীর প্রদেশ মাসা-দ্য যথে।ক্ত॰ শস্ত্র॰ গৃহীত্ব। দিরা॰ বিধ্যেৎ ৷৷ঞ্চা৷ দৈবাতি শীতে না-ত্যুক্তে ন প্রবাতে ন চাভ্রিতে। দিরাণাণব্যধনণ কার্য্য ময়োগে বা কলাচন।। ভত্ত ব্যধ্যসির পুরুষ

প্রত্যাদিত্যমুখ মরত্নিমাত্রোচ্ছি-তে উপবেশ্যাসনে সক্থ্যো রাঙ্গ-ঞ্চিত্যে নিবেশ্য ঙ্গর্সন্ধিদ্বয-'স্যোপরি হস্তাবস্তগূ ঢাঙ্গুষ্ঠ রুত-মুফীমন্যবোঃস্থাপষিত্বা যন্ত্রণশা-টক গ্রীবাম্ন্ট্যো রুপরি পরিক্ষি-প্যান্যেন পুরুষেণপশ্চাৎ স্থিতে-ন বামহন্তেনোত্তানেন শাটকা-ন্ত ৰ্ষণ আহ্যিত্বা ততো বৈদ্যো क्रियाक्षिणश्रदेखन मित्रां भाग-নাৰ্থণ নাত্যায়ভশিথিলণ যন্ত্ৰমা-বেক্টযত্যসূক্ সাবণার্থণ যন্ত্রণ পৃ-ষ্ঠমধ্যে চ পীডযেদিতি কর্ম্ম পূরু-स्थ तायुशूर्व मूथ साश्राह्य कि ভনাঙ্গগতানা মন্তমুখ বৰ্জ্জ্যা-ना मिताना वार्यन यखन विधिः েতত্র পাদব্যধ্যসিরস্য পানং স্ব-মে স্থানে সুস্থির স্থাপি বিদ্বান্য পাদ নীষ্ৎসঙ্কুচিত মৃক্তিঃ ফ্লন্বা ব্যধ্যপাদ জানুসন্ধে রংঃ শাট-কেনাবেষ্ট্য হস্তাভ্যাণ প্রপীড্য खनः वाधाधातमात्राभित हजू-রঙ্গুল প্লোতাদীনা মন্যতমেন বদ্ধা॰ পাদিনিরা॰ বিধ্যেৎ। অ-গ্রোপরিকীদ্ধস্তৌ গূঢাঙ্গুণ্ঠ ফ্লভ-मूकी मगुगामत्म ञ्रोপियन्ना मृ-रथाপविष्ठेमा পূर्ववायख॰ वक्षा इ-

স্তসিরাণ বিধ্যেৎ। গৃধুদী বি-শ্বাচ্যোঃ সঙ্গৃচিতজানু সর্পরঃ স্যাৎ। শ্রোণী পৃষ্ঠ ক্ষন্ধেষূলা-মিতপৃষ্ঠস্যাবাক্শিরস্কস্যোগবি-केमा विष्कृिकंठशृष्ठमा विरधार। উদরোরসোঃ প্রসারিতোরস্ক-স্যোম্মিতিশিরস্কস্য বিস্ফৃজ্জি-তদেহস্য বাহুভ্যা মবলম্বামান-দেহস্য পার্শ্ববোঃ। অবনামিত মেঢ়ুস্য মেঢ়ে । উন্নামিত বি-দফজিহ্বাগ্রস্যাধে। জিহ্বাযা । অতিব্যক্তাননস্য তালুনি দন্ত-মূলেষু চ। এবং যন্ত্রোপায়ান-ন্যা॰ চ সিরোখাপন হেতূন্ বু कारिका भनीतवर्भन गांधिक **८**भन ह विषया । भाष्म त्वयुव-কাশেষু যবমাত্রণ শক্ত্রণ নিদধ্যা-দতো ২ন্যেম্বর্জায়বমাত্রণ ত্রীহি-মাত্র॰ বা ত্রীছিনুখেন। অঙ্গু। मुशति क्रेगतिकया विरधानक्षयव মাত্রণ ॥ 🏶 ॥ তবস্তি চাত্র। ব্যভে বৰ্ষাস্ বিধ্যেত গ্ৰীম্মকালে তু শীতলে। হেমন্তকালে মধ্যাহ্নে শস্ত্রকালা ক্রমঃ স্মৃতাঃ ।। সমাক্ শস্ত্র নিপাতেন ধার্যা যা সূরেদ সৃক্। মুহূ ई॰ রূদ্ধা তিষ্ঠেচ্চ সুবি-काञाः विनिर्मित्न ॥ यथा ज-

সুম্ভ পুষ্পেভ্যঃ পূৰ্বণ সূবতি পীতি-का। তথা मित्राम् विकाम् पूर्छ মগ্রে প্রবর্ত্ততে ।। মূচ্ছিতস্যাতি-ভীতস্য শ্রাম্ভস্য তৃষিত্স্য চ ৷ न वरुष्ठि निता विका खथानूथि ত যন্ত্ৰিতাঃ ৷৷ ক্ষীপদ্য বহুদোষস্য মূর্চ্ছ্যা বিক্রন্তস্য চ । ভূষে। ২-পরাত্নে বিসাব্যা সাপরেদ্যু স্ত্র্য-হেপি বা ।। রক্ত॰ সশেষ দোষস্ত স্ব্যাদপি বিচক্ষণঃ। ন চাতিপ্র-मुख कर्यप्राटक्ष मण्ममदेन र्ज-॥ त्य ।। विनद्या वहदमायमा वय-क्रमा नदीतिनः। পর প্রমাণ মি চ্ছস্তি প্রস্থ শোণিত মোক্ষণে ॥ তত্র পাদদাহ পাদহর্যবেবান্ধ কটিপ্য বিসৰ্প বাতশোণিত বা-তকণ্টক বিচর্চ্চিকা পাদদারী প্র-ভৃতিষু ক্ষিপ্রমর্মণ উপরিফাদ্যু-**সুলে** ত্রীহিমুখেন সিরাণ বিধ্যেৎ । শ্লীপদে তচ্চিকিৎসিতে যথা ব-ক্যতে । ক্রোফুক শিরঃ খঞ্জ প-ঙ্গুল বাতবেদনাসু জঙ্গাযাণ গু-इস্যোপরি চতুরঙ্গুলে। অপচ্যা মিব্দ্রবন্তে রধস্তাৎ দ্ব্যঙ্গুলে। জা- 🎚 নুসন্ধে ৰূপৰ্য্যধে৷ ব৷ চতুরঙ্গুলে গৃধুস্যাণ। উরুমূল সংশ্রেতাম্ব গল গণ্ডে। এতে নেতর সক্থি বাহু চ

ব্যাখ্যাতৌ ॥ 🗱 ॥ বিশেষতস্ত বা মবাহো সর্পরসন্ধে রভ্যন্তরতো বাহুমধ্যে প্লীব্লি কনিষ্ঠিকানা-भिकरमा मरिशा वा। এব॰ मिकनवा-হৌ যক্তদালো ককোদরে চৈতা মেব চ কাশ স্থাসযো রপ্যাদিশ-স্তি । গৃধুস্যা মিব বিশ্বাচ্যা । শ্রোণিপ্রতি সমস্তাৎ দ্যঙ্গুলে প্রবাহিকাযাণ শূলিন্যাণ পরিক-র্ত্তিকোপদণ্শ শূকদোষ শুক্রব্যা-পৎসু মেট্রধ্যে। বৃষণযোঃ পা-র্ম্বে মূত্রবৃদ্ধ্যাণ। নাতে রধ শততুর-ঙ্গুলে সেবন্যা বামপার্শ্বে দকো-**मत्त्र । वामशार्य्य कका खनर्या** রন্তরে ২ন্তর্বিজধে পার্শপূলে চ ৷ বাহু শোষাববাহুকষো রপ্যে: কে বদস্ত্য শধে। রন্তরে। ত্রিক সন্ধি মধ্যগ্ৰতা॰ তৃতীয়কো অধ-ক্ষন্ধ সন্ধিগত। মন্যতর, পার্শ্বস<u>্</u> স্থিতাঞ্চতুর্থকে। হনুসন্ধি মধ্যগ-তা মপস্মারে। শধ্য কেশান্ত স-ন্ধিগতা মুরো ২পাঙ্গ ললাটেষু চোনাদে ২পন্মারে চ। জিহ্না-রোগেষধোজিহ্বাযাণ দন্তব্যাধি-यू छ। जाल्नि जालत्यायू । कर्न-যো রুপরি সমস্তাৎ কর্ণশূলে তজোগেষু চ। গন্ধাগ্রহণে নাসা-

রোগেষু চ নাসাত্রে তিনিরাকি পাক প্রভৃতিশ্বামযেযুপনাসিকে। লালাট্যা মপাক্ষ্যা ক্ষৈতা এব শি-রোরোগাধিমষ্ঠ প্রভৃতিষু রোগে-র্ম্বিতি।। 🟶 ।। অত উদ্ধৃ• দু ফব্যধ-न मन्त्राशामग्रामः । जक मूर्वि-ন্ধাতিবিদ্ধা সঞ্চিতা থিচিতা স্ব-টিতাপ্রসূতা অত্যুদীর্ণা অস্তে ২-ভিহতা পরিশুক্ষা কূণিতা বেপিতা অনুখিত বিদ্ধা শস্ত্ৰহতা তিৰ্যাধি-দ্ধা অবিদ্ধা অব্যাধ্যা বিক্ৰতা ধে-नुका भूनःभूनर्तिका निता नापुन्धि সন্ধি মর্মাসু চেতি বিংশতি দুর্থী-ব্যধাঃ। তত্ত্ব যা সুশ্ব শস্ত্ৰ বিদ্ধা ন ব্যক্ত মসৃক্ সুবতি রুজা শো-ফবতী চ সা দুৰিদ্ধা। প্ৰমাণাতি-রিক্ত বিদ্ধাষা মন্তঃ প্রবিশতি শোণিত শোণিতাতিপ্ৰবৃত্তি ৰা সাতিবিদ্ধা। স্বঞ্চিতাষা মপ্যেবং। কণিক্সপ্রমথিতা পৃপুলীভাব মা-পন্ন। পিচ্চিতা। অনাসাদিতা পু-নঃপুন রন্তধোশ্চ বহুশঃ শস্ত্রাভি-হতা স্টিতা। শীত ভ্য মূৰ্চ্ছাভি রপ্রবৃত্ত শোণিতা অপ্রসূতা। তী-ফা মহামুখশস্ত্রবিদ্ধা অত্যুদীর্ণা। व्यम्रतकम्।विगारखिवका व्यस्य ংভিহতা। ক্ষীণ শোণিতস্যানিল-

পূর্ণা পরিশুদ্ধা। চতুর্ভাগাবসা-দিতা কিঞ্চিৎপ্রবৃত্তশোণিতা কূ-ণিতা। দুঃস্থান বন্ধনাদ্বেপমান।-ষাঃ শোণিত সংমোহো ভবতি সা বেপিতা। অনুখিতবিদ্ধাযা মপ্যেব । ছিন্নাভিপ্রবৃত্তশোণিত। ক্রিযাসকরী শস্ত্রহতা। তির্যা-ক্প্রণিহিতশন্ত্রা কিঞ্চিচ্ছেষা তি-ৰ্য্যক্ৰিদ্ধা। বহুশঃক্ষতা হীনশস্ত্ৰ-প্রণিধানেনাবিদ্ধা। অশস্ত্রক্ত্যা অব্যাখ্যা । অনবস্থিতবিদ্ধা বি-দ্ৰুতা। প্ৰদেশস্য বহুশো ২ব্ৰুট-नामाद्वाञ्चाश मूक्यूकः त्नानि তসুাবা ধেনুকা। সৃন্ধশস্ত্র ব্যধনা-षश्रमा বিচ্ছিম। পুনঃপুন বিদ্ধা । न्नायृष्टि मित्रा मित्र गर्मामू विका বা রুজা॰ শোষ বৈকল্য মরণ বাপাদযতি ॥ 🟶 ॥ ভবস্তি চাত্র । দিরাসু শিক্ষিতো নাস্তি চলাছে-তাঃ স্বভাবতঃ । মৎস্যবৎপরিব-র্ত্তন্তে তত্মাদ্মত্নেন তাডষেৎ॥ অজানতা গৃহীতে তু শস্ত্রে কাষ-নিপাতিতে। ভবস্তি ব্যাপদশৈচ-তা বহুব শ্চাপ্যুপদ্ৰবাঃ ৷৷ সেহা-मि**जिः कियारयारेश में उथा** स्न-পনৈ রপি ৷ যাস্ত্যাশু ব্যাধ্যঃ শা-खि॰ यथा **मग्रक् मित्रावाधा** ॥

সিরাব্যধ শ্চিকিৎসার্দ্ধণ শল্যত-ন্ত্ৰে প্ৰকীৰ্ত্তিতঃ। যথা প্ৰণিহিতঃ " সম্যক্ বন্তিঃ কাষ্চিকিৎসিতে॥ তত্র মিষ্ণ ষিদ্য বাস্ত বিরিক্তাস্থা-পিতানুবাসিত সিরাবিদ্ধৈঃ পরি-र्ह्डगानि। त्काशायाम रेमपून দিবাস্থপ্ৰ বাখ্যাযাম যানোখানা-সন চণ্ক্ৰমণ শীতবাভাতপ বিশ্ল-का माग्राकीर्गानगंतन नाजामा-স মেকে মন্যন্তে ॥ 🛊 ॥ এতেষা॰ বিস্তর মুপরিফীদক্ষ্যামঃ । ভব-তশ্চাত্র । সিরা বিষাণ তুরৈস্ত कलोकािं शरेष खथा। जव-গাঢ় যথা পূর্ব: নিহরেজুফ শো-विछ ।। अवशारा कत्नीका भाष প্রচ্ছন্ন পিণ্ডিতে হিত'। সিরাম্ব-व्याशक ब्रस्क मुनानाव पि স্থিতে।। 🖶 ॥ নৰমোধ্যায়ঃ। ष्यथारा धमनी वागकत्रवः भानी-র ব্যাখ্যাস্যামঃ। চতুরি শতি ধ্মন্যো নাভিপ্ৰভবা অভিহিতাঃ া ভক্র কেচিদাহঃ দিরা ধম্নী স্রোতসা মবিভাগঃ সিরা বিকা-য়া এব খমন্যঃ স্বোতাণসি চেতি । তত্ত্ব ন সম্যক্। অন্যা এব হি ধমন্যঃ স্থোতা দি চ. দিরাভ্যঃ ক: ऋक्षिमानाष्ट्रामन महिष्या ९

क्षीरेवरमयामागमाफ क्ववन ब কর্মদ্বাৎ সৌশ্ব্যাচ্চ বিভক্ত কর্ম-**ৰা মপ্যবিভাগ ইব কৰ্ম্মসু ভবি** । তাসাম্ব নাভি প্রভবাণা ধম-नीना मृक्षुंगा मन मन हारशाना-मिना कटमु सिर्गग्गाः। छर्क গাঃ শব্দ স্পর্শ ৰূপ রুদ গন্ধ প্র-'শ্বাদোচ্ছাস জৃত্তিত ক্ষুদ্ধসিত ক-थिত क्रिकामीश्वित्मवानिखिदर-ন্ত্যঃ শরীর• ধারমন্তি। তান্ত হা-দয गভিপ্রপন্না স্ত্রিধা জায়তে তান্ত্রি॰শৎ i তাসাম্ব বাত পিত্ত কফ শোণিত রসান্দ্বে দ্বে বহত স্তা দশ শব্দ ৰূপ রস গন্ধান ফী-ভি গৃহীতে। দ্বাভ্যাণ ভাষতে চ ঘাভ্যা॰ ঘোষ করোতি দ্বাভ্যাণ স্বণিতি দ্বাভ্যা॰ প্রতিবুধ্যতে । ष ठायः वाश्ति। ष खनाः স্ত্রিয়া বহঁতঃ স্তেন সংশ্রিতে তে এব শুক্রু নর্ম্য স্তনাভ্যা মভি-বহতঃ। তা স্ত্রেতা স্ত্রি॰শৎ সবি-ভাগা ব্যাখ্যাতাঃ৷ এতাভি ৰাৰ্ক্তুণ নাভে রুদর পার্শ্ব পৃষ্ঠোরঃ ক্ষম ত্রীব। বাহবো ধার্য্যন্তে যাপ্যন্তে চ।। 🟶 ।। ভবতি চাত্র। উদ্ধৃ• গতা-স্ত সৰ্ব স্থি কৰ্মাণ্যেতানি সৰ্বশঃ।

অধোগনাস্ত্র বক্ষ্যামি কর্ম তাসাণ वशाययः ॥ व्यक्षांगमाञ्च वाज মৃত্র পুরীষ শুক্রার্ত্তবাদীন্যধো ব ছন্তি। তাম্ব পিত্তাশ্য মভিপ্রতি-পন্ন স্তত্ৰন্থ মেবান্ন পান রসং বি-পক্ষ মৌক্যাদ্বিবেচযন্ত্যো ২ভি-কহন্তাঃ শরীর তপ্যন্তাপ্যন্তি চোদ্ধৃগতানা ভির্যাগ্গতানা র-নেস্থানঞ্জিপুর্যন্তি মূত্র পুরীষ दिशालक विद्युप्रसामिक ্যান্তরে চ ত্রিধা জাব্যস্ত তা জ্রি-শৎ। তাসাম্ব বাত পিত্ত কফ শোণিত রসান্ ছে ছে বহতঃ তা मग (व जगराशिकातिकाविक তোষবহেৰে মূত্ৰবন্তি মভিপ্ৰপ-মে মূত্রবছে ষে শুক্রবহে ষে শুক্র প্রাদুর্ভাবাষ দে বিদর্গায় তে এব রক্ত মভিবহতো নারীণামার্ত্তব भःडद्धः। (इ रद्धा नित्रमत्नी कृता-स्र প্রতিরক্ষে। অফাবন্যা স্তির্য্য-श्गानाः धन्मीनाः त्यम मर्गयस्ति। তা স্ত্রেতা জ্রিশৎ সবিভাগা ব্যা-খ্যাতাঃ। এতাভি রধোনাভেঃ প कानय की मृज भूतीय छम विख মেতু সক্থীনি शार्यास्य याशास्य চ।। #।। ভবতি চাত্র। অধোগমা-ম্ভ দৰ্বন্তি কৰ্মাণ্যতানি সৰ্বশঃ।

তিৰ্য্যগ্গাঃ সংপ্ৰবক্ষ্যানি কৰ্মতা-সা॰ ষথাষথ• u তিৰ্য্যগ্নানাম্ভ চতসুণা॰ ধমনীনা মেকৈকা শত্ত-ধা সহসুধা চোত্তরোত্তর বিজ-জ্যন্তে তাস্ত্বসংখ্যেষা স্তাভি রিদণ শরীরণ গবাক্ষিত বিবদ্ধ মাতত-ষ্ণ। তাসা॰ মুখানি রোমকূপপ্র-তিবদ্ধানি থৈঃ স্বেদ মভিবহস্তি রসঞ্চাপি সম্ভর্পযন্তান্তর্বহিশ্চ তৈরেব চাভ্যঙ্গ পরিষ্কোবগাঁহা-लেशन वीर्याशुख्यः भन्नीत मिक পদ্যক্তে ছচি বিপক্ষানি। তৈরেব ম্পর্শ মসুখ বা গৃহাতি। তা স্ত্ৰেতা শ্চম্যে। ধনন্যঃ সর্বাঙ্গণ-তাঃ সবিভাগা ব্যাখ্যাতাঃ। ভর-ত শ্চত্ৰ ৷৷ যথা স্বভাৰতঃ স্বানি मृगालम् विरम् ह । धमनीनाः তথা স্বানি রসো বৈ রুপচীযতে ।। পঞ্চিভূতা স্তৃথ পঞ্জন্তঃ প-ঞ্চেন্দ্রিয়ণ পঞ্চসু ভাবসন্তি। পঞ্চে-ক্রিয়ণ পঞ্চসু ভাবযিত্বা পঞ্চত্র মা-য়ান্তি বিনাশকালে॥ 🕸 ॥ অত উদ্ধৃ স্যোতসাণ মূলবিদ্ধলকণ मुलातकगामः। जानि ज्ञानातमा **দক রস রক্ত না স মেদে। মূত্র** পুরীষ শুক্রার্তব বহানি যেম্বধি-কার একেষা॰ বছুনি। এতেষা•

বিশেষা বহবঃ। তত্র প্রাণবহে দে তरा मृ नः समयः तमवाशिगानः ধমন্যঃ। তত্র বিদ্ধাস্য ক্রোশন বিন্যন মোহন ভূমণ বেপনানি गत्र वा खंदि । अन्नदरह एव তথো मूं न मामानया श्वावाहि-ন্যশ্চ ধমন্য স্তত্ৰ বিদ্ধস্যায়ানং भूलामप्यस्यो इपिः शिशामामाः **মরণ বা । উদকবহে ছে তথে**। মূল তালু ক্লোম চ। তত্ৰ বিদ্ধস্য পিপাসা সদ্যো মরণঞ্ । রসবহে ष छरम। यू नः समयः तनवाहि-ন্যশ্চ ধমন্য স্তত্ৰ বিদ্ধান্য শোবঃ প্রাণবহ বিদ্ধবচ্চ মরণ তল্লিকা-নি চ। বক্তবহে দ্বে তবে। মূ ল॰ रक्ष भीशाती तकवाशिगान ধমন্য স্তত্ৰ বিদ্ধান্য শ্যাবাঙ্গতা স্বরো দাহঃ পাণ্ডুতা শোণিতাতি-গমন রক্তনেত্রতা চেতি। মাণ্স-बर्ट्स एक व्या मून अ রক্তবহাশ্চ ধমন্য স্তত্র বিদ্ধাস্য श्वयथू यी॰मत्नायः मित्राश्रद्धरा মরণ । মেদোবহে দ্বে ত্যোমূ ল' কটী বৃক্কো চ তত্ৰ বিদ্ধস্য স্বে-দাগমন প্লিশ্বাজতা তালুশোষঃ স্থূলশোকতা পিপাসা চ। মূত্র-बर्ट्स एक जिल्ला मू नि॰ विश्व मिं पुरिक

তত্র বিদ্ধাস্যানদ্ধ বস্থিত। মূত্র নি-রোধঃ স্তব্ধমেট্রতা চ । পুরীষ বহে দ্বে তবো মূলি পক্ষাশধো নাহো দুর্গদ্ধ-

তা এথিতাম্বতা চ। শুক্রবহে দ্বে ज्या मूनः स्टानी व्**यत्नी ह ज्व** বিদ্ধন্য ক্লীবতা চিরাৎ **প্রসেকে।** রক্ত শুক্রতা চ। আর্ত্তববহে দে তয়ে মূলি গৰ্ভাশ্যঃ আৰ্ত্তব্বা-হিন্যশ্চ ধৰ্মন্য স্তত্ৰ বিদ্ধাযাণ ৰ-क्षााष्ट्र देमशूनामहिक्ष मार्खव নাশশ্চ। সেবনী চ্ছেদাজজাপ্রা-দুর্ভাবঃ। বস্তি গুদ বিদ্ধ লক্ষ্য• প্রাণ্ডক্ত মিতি। সোতো বিদ্ধন্ত প্রত্যাখ্যাযোপচরেদুষ্ঠ শল্য-স্তু ক্ষত বিধানেনোপচরেৎ । সূ-লাৎ স্বাদন্তর দেহে প্রসৃতন্ততি-বাহি যৎ।স্থোত স্তদিতি বিজ্ঞেয• সিরা ধমনি বজ্জিত ।। 🛊 ।। দ-শমোধ্যায়ঃ। অথাতো গভিনী-ব্যাকরণ শারীর ব্যাখ্যাস্যামঃ । গর্ভিনী প্রথম দিবসাৎ প্রভৃতি নিত্যা প্রস্থা শুচালমৃতা শুক্ল-বসনা শান্তি মঙ্গল দেবতা ব্ৰাহ্ম-ণ গুরুপরা চ ভবেম্মলিন বিরুত हीनगावानि न न्मृरममूर्गम पूर्न-र्गनानि . शतिश्दत्रमूटच जनी या १५

কথাঃ শুদ্ধণ পর্যাবিতণ স্বথিতণ ক্লিন্ন॰ চান্ন॰ নোপভূঞ্জীত। বহি নিজ্মণ শূন্যাগার চৈত্য শাশান বৃক্ষাশ্রধান্ ক্রোধ ভষ শঙ্করাণ-শ্চ ভারানুচ্চৈর্ভাষ্যাদিক পরি-হরেদ্যানি চ গর্ভ ব্যাপাদষস্তি। ন চাভীক্ন তৈলাভ্যাক্ষোৎসাদ নাদীনি নিষেবেত। ন চাষাশ্যে-চ্ছরীর॰ পূর্ব্বোক্তানি চ পরিহরেৎ । শযনাশন মৃদান্তরণ নাত্যুক্ত में भाषायारिक में मार्था विष-ধ্যাৎ। হৃদ্য দ্ব মধুরপ্রায় ন্নি-শ্বং দীপনীয় সংস্কৃতঞ্চ ভোজনং ভোজ্বেৎ সামান্য মেতদাপ্রস-वार ॥ 🟶 ॥ वित्यबञ्ज गर्जिनी প্রথম দ্বিতীয় তৃতীয় মাসেষু মধুর শীত দ্রবপ্রায় মাহার মুপদেবেত । বিশেষতস্ত তৃতীযে যঞ্চিকৌদ-ন প্রসা ভোজ্যেক্ততুর্থে দিয়া পঞ্চে প্ৰদা ষষ্ঠে সূৰ্পিদা চে-ত্যেকে। চতুর্থে পয়ে। নবনীত म॰मृक माश्रातरमञ्जानन मा॰म সহিত হৃদ্যমন্ন ভোজ্যেৎ ৷ পঞ্চমে ক্ষীর সর্পিঃ সংসৃষ্ট । ষষ্ঠে श्वम कु। जिक्कमा मर्लिया माजा॰ भागरयासवागृ॰ वा । म**श्वरय मर्शिः** পৃথক্পণ্যাদি সিদ্ধা মেব মাপ্যা-

ষ্যতে গর্ভঃ। অফমে বদরোদকে-ন বলাতিবলা শৃতপুষ্প পলল পয়ে দধি মস্তু তৈল লবণ মদন-ফল মধ ঘৃত মিশ্রেণাস্থাপয়েৎ ৷ পুরাণপুরীষ শুদ্ধার্থ মনুলোম-নার্থঞ্চ বাফোঃ। ততঃ পয়ে। মধুর क्याय निष्क्तन टेंडलनानूवान-যেদনুলোমে হি বাষৌ সুখ প্র-সূযতে নিরুপদ্রবা চ ভবতি। অ-ত উদ্ধৃণ স্নিগ্ধাভি র্যবাগৃভি র্জাঙ্গ-লরদৈ শ্চোপক্রমেদাপ্রসবকা-লাদেব মুপক্রাস্তা স্নিগ্ধা বলবতী সুখ মনুপদ্রবা প্রসূযতে। নবমে মাসি সৃতিকাগার মেনাণ প্রবে-শষেৎ প্রশস্ততিখ্যাদৌ। তত্তা-রিষ্ট বান্ধণ ক্ষত্রিয় বৈশ্য শূদ্রা-ণা॰ শ্বেত রক্ত পীত কৃষ্ণেষু ভূমি প্রদেশেষু বিশ্ব ন্যগ্রোধ তিন্দুক ভল্লাতক নিৰ্মিত সৰ্বাগার য-থাসংখ্য তন্ময়পর্য্যক্ষ মুপলিপ্ত-ভিত্তি॰ সুবিভক্ত পরিচ্চ্দ• প্রা-়গদার মুদগদার দক্ষিণদার বাই-হস্তাযত ঞ্তুর্স্তবিস্তৃত রক্ষা मक्ल मन्भनः विरधयः ॥ 🛊 ॥ জাতে হি শিথিলে স্বক্ষৌ মুক্তে शनयवन्नात । मभूतन जनत नात्री एछमा मा जू अजारिनी।।

ভ্ৰোপন্থিত প্ৰদ্যাৰাঃ কটী পৃষ্ঠ• প্রতি সমস্তাদেরনা ভবত্যভীক্ষণ পুরীষপ্রবৃত্তি মূত্রণ প্রদিচ্যতে स्यानित्रुवाद स्त्रचा ह। अजन বিষ্যমাণা কৃত মলল স্বস্তিবাচ-নাণ সমার পরিবৃতাণ পুরাম ফ-লহস্তা॰ স্বভ্যক্তা মুকোদক প-রিবিক্তা মথৈনাণ সন্মৃতাণ যবাগু মাকণ্ঠাৎ পাৰ্যৰেৎ। ততঃ ক্তাে-পধানে মৃদু বিস্তীর্বে শয়নে স্থিতা याज्यमक्थी यूखाना यग्कनी-্যা॰ চত্ত্রু ব্রিষঃ পরিণতব্যসঃ প্রজনন সশলাঃ কর্ত্তিতনখাঃ প-तिष्ठदार् तिष्ठि ॥ **#** ॥ व्यथाना। বিশিখান্তর মনুলোম মনুমুখ ম-ভাজাৎ ব্রুয়াচ্চৈনা মেকা সু- 🛚 ভগে প্রবাহম্বেতি ন চাপ্রাপ্তাবী প্রবাহস্ব । বিশিখান্তর মপত্য-মাৰ্গ•। ততো বিমুক্তে গৰ্জনাডী-প্রবন্ধে সশূলেযু শ্রোণি বজ্জণ विक भितःम् अवाट्शाः भटेनः শনৈঃ। ততো গর্ভ নির্গমে প্র-গাঢ় ততো গর্ভে যোনিমুখ প্র-পন্নে গাততর মাবিশল্যভাবাৎ ।। 🚓।। অকাল প্রবাহনাৎ বধির मूक॰ वाखरम्॰ मूक्षाভिघाতिन॰ কাস শাস লোষোপকত সজ

विकरे॰ वा जनवि । তত্র প্রতি-लाय यनूटनामस्य । গভসঙ্গে তু বোনি॰ धृপযে ক্লফসর্গ নি-র্মোকেণ পিঞ্জীতকেন বা । বঙ্গী-যাজিরণ্যপুশীমূল॰ হস্ত পাদ-যোজারষে সুবর্চলা॰ বিশল্যা বা ।। ॥ ।। অথ জাতস্যোল্ব॰ মু-বিশোধ্য ঘু-

তাক্ত মৃদ্ধি পিচৃ দদ্যাত্ততো नाजिनाजी मकोजूल मायमा সূত্রেণ বন্ধা ছেদযেৎ তৎসূত্রে-करमगक्ष भगातमा जीवायाः म-गार्थद्वीराष्ट्र ॥ क्ष्मा व्यथ क्रमातः শীতাভি রন্ধি রাশ্বাস্য জাতক-ৰ্মাণি ক্লতে মধু সূৰ্পি রনন্তা ত্রাক্ষী রসেন সুবর্গচূর্ণ মঙ্গুল্যানামিক-या व्यवस्थल्या वनारेज्यना-ভাজা ক্ষীরবৃক্ষকষাযেণ সর্বগী-স্কোদকেন বা ৰূপ্য হেম প্ৰতপ্তে-ন বা বারিণা স্নাপয়েদেন কপি-পপত্ৰ কষাষেণ বা কোন্ডেন যথা कालः यथारमभः यथाति छतः । ধননীনাণ হাদিস্থানাণ বিবৃতত্বা-দ্নভর । চত্রাতাভিরাতাদা স্ত্ৰীণাণ স্তন্যণ প্ৰবৰ্ত্ততে ॥ তঙ্গাৎ প্রথমে ২ক্লি মধু সর্পি রনস্তামি-শ্রু মন্ত্রপুত ত্রিকাল পাষ্যেদ্ধি-

তীযে লন্ধণাসিদ্ধণ সর্পি স্তৃতীযে চ। ততঃ প্রাঙ্নিবারিতস্তন্য মধু-সর্পিঃ স্বপানিতল সন্মিত দ্বিকা-ল॰ পাষ্যেৎ ।। ঞ্চা। অথ সূতিকাণ বলাতৈলাভ্যক্তা॰ বাতহরৌষধ निःकारथरनाश्रहत्त्र मरमय रमा-साञ्च छमरः शिक्षनी शिक्षनीमृन হস্তিপিপ্পলী চিত্রক শৃঙ্গবের চব্য ষেৎ ৷ এবং দিরাত্রণ তিরাত্রণ বা স্ব্যাদাদুক্ত শোণিতাৎ। বিশু-দ্ধে ততে৷ বিদারি গন্ধাদি সিদ্ধাণ त्प्रहर्यवागृः कीत्रयवागृः या शा-যথেৎ ত্রিরাত্রণ। ততে। যব কোল ঙ্গলত্থ সিদ্ধেন জাঙ্গল রসেন শা-ल्गामनः ভाজरयद्यन मधिवन-স্থাবেক্ষ্য । অনেন বিধিন। অধ্য-জিমাস মুপসংস্কৃতা বিমুক্তাহা-রাচারা বিগত সূতিকাভিধানা স্যাৎ। পুন রার্ত্তবদর্শনাদিত্যে-কে।ধন্ব ভূমিজাতাণ সূতিকাণ ঘৃত তৈলযো রন্যতরস্য মাজ্রাণ পাষ-ষেৎ। পিপ্পল্যাদি ক্যাযানুপানা ন্মেহ নিত্যা চস্যান্ডিরাত্রণ পঞ্চরা-ত্র॰ বা বলবতী। অবলা॰ ষ্বাগৃঁ॰ পাষ্যেত্রিরাত্ত্রণ পঞ্চরাত্ত্রণ বা । অত উদ্ধৃণ স্নিধ্বেনাম সণসর্গোণা-

পচরেৎ। প্রায়শ শৈচনা প্রভূ-তেনোক্ষোদকেন পরিষিঞ্ছে । क्लाधायाम रेमथूनामीन् পরिश-রেৎ।।ৠ। ভবতশ্চাত্র। মিথ্যাচা-রাৎসূতিকাষা যো ব্যাধি রুপজা-যতে। স কৃচ্ছসাধ্যোৎসাধ্যো বা তবেদত্যয় তপৰাৎ ॥ তত্মাত্তা॰ **(मनकाटन) ह नाधि माट्यान** কর্মণা। পরীক্ষোপচরেদেব নে-ষমত্যয মাপুষাৎ ॥ 🛊 ॥ অথা- -পরাপতস্ত্যানাহাম্বানৌ সরুতে তস্মাৎ কণ্ঠমস্যাঃ কেশবেফিড-राष्ट्रवा। अमृत्क्र । करूकालावू ক্লত বেধন সর্যপ সর্পনির্মোকে ৰ্বা কটুতৈল বিমিশ্ৰৈ ৰ্যোনিমুখণ ষূপযেৎ। লাঙ্গলীমূলকক্ষেন বা-माः পानिभाष्ठन मानिएम्थ । मृक्ति वामा। मशवृककीत मन्-(यहरस्य । अर्थ नाञ्चनीमृनकन्त्रः বা মদ্য মূত্রযো রন্যতরেণ পায-বেৎ। শালিমূল কল্প বা পিঞ্ ্ল্যাদি॰ বা মদ্যেন সিদ্ধার্থক স্বষ্ঠ लाञ्जली मश्यक्षित मिट्यन সুরামণ্ডেন বাস্থাপথেৎ। এত রেব সিদ্ধেন সিদ্ধার্থকতৈলে-নোত্তর বস্তি॰ দদ্যাৎ। স্নিঞ্চেন व। कुञ्जनत्थन रुखनाशरदा ।

প্রজাতাযাশ্চ নার্য্যা বক্ষশরীরা-য। স্তীকৈ রবিশোধিত রক্ত বা-যুনা তদ্দেশগেনাতিসংরুদ্ধণ না-ভে রধঃ পার্শ্বযোর্বস্তৌ বা অস্থ্রি বা শিরসি বা এস্থি॰ করোতি। ততশ্চ নাভি বস্তুাদর পৃষ্ঠশূলানি ভবন্তি। সূচীভি রিব নিস্তুদ্যতে ভিদ্যতে দীৰ্য্যত ইব চ পক্ষাশয ৷ সমস্তাদায়ান মুদরে মূত্রসকশ্চ ভবতীতি মক্কল লক্ষণ । তত্ত বীরতর্বাদিসিদ্ধ জলমূষকাদি-প্রতীবাপ• পায়যেৎ । যবকার-**চূर्न॰ वा मर्शिषा मूर्थामरकन वा** ॥ व्यवन हुन् वा शिक्षनग्रामि कारथन शिक्षनगिषिष्टूर्न वा मुतामटखन व-ऋगां किया थ॰ वा शक्ष रकारें वना প্রতীবাপ পৃথক পর্ণ্যদি ক্বাথ বা ভদ্রদারু মরিচ সংসৃষ্ট পু-রাণগুড় বা ত্রিকটুক চতুর্জা-**७**क अञ्जबुङ, मिश्रः थारममञ्जू বা পিবেদরিফ মিতি ৷৷ 🟶 ৷৷ অথ বাল কৌম পরিবৃত কৌমব্ <u>স্ত্রাস্তৃতাযা॰ শয্যাযা॰ শায়ু যেৎ</u> 1 शीलू उमती निष्ठ शक्षयक भा-शां टेन्हन॰ वीक्रयं । मूर्कि চাস্যাহরহ ভৈল পিচু মবচার-(यव। धूशरयटेकान त्रकारित्र धू-

পৈঃ ৷ রক্ষোদ্বানি চাস্য পাণি পাদ শিরো গ্রীবাম্ববমৃজেৎ । তিলাতসী সর্যপ কণাঞ্চাত্র প্রকি-রে । অধিষ্ঠানে চাগ্নি॰ প্রস্থা-लरय । जिंगिका भागनीयकार्य-ক্ষেত। ততো দশমে ২হনি মাতা-পিতরো হ্নত মঙ্গল কৌতুকৌ স্ব-স্তি বাচন॰ ক্লন্বা নাম স্বর্যাতা• যদভিপ্ৰেত নক্ষত্ৰনাম বা॥ 🚓॥ ততো ষথাবৰ্ণাণ ধাত্ৰী মুপেষাশ্ব-ধ্যমপ্রমাণাণ মধ্যমব্যসা মরো-গা॰ শীলবতী মচপলা মলোলু-পা মহূলা মস্তুলা প্রসন্মকীরা ম-नरशिष्ठी मनरशिक्ष्यनी मराञ्रा মব্যসনিনী॰ জীবদ্বৎসা• দো-ঞ্চীণ বৎসলা মক্ষুদ্রকর্মিণীণ সলে জাতা মতো ভূষিষ্ঠৈশ্চ গুণৈ রশ্বি-তা॰ শ্যামা মারোগ্য বলবৃদ্ধধে বালস্য ৷ তত্ত্রোধ্বৃস্তনী করাল• क्र्याष्ट्र। वयस्त्रनी नामिकामूथ॰ ছাদযিস্বা মরণ মাপাদযেৎ। ত-তঃ প্রশৃস্তাযাণ তিথো শিরঃস্নাতা মহতবাসস মুদল্পখণ শিশু মুপবে-শ্য ধাত্ৰী॰ প্ৰাগ্নুখী মুপবেশ্য দ-ক্ষিণ স্তনণ ধৌত মীষৎ পরিসূত गिजनक्षा भ**रत्वनारनन**ं शायरय ॥ 🕸 ॥ চম্বারঃ সাগরাঃ স্তভ্য°

खनरयाः कीत्रवाहिनः । जवन्न সুভগে নিত্য বালস্য বলবৃদ্ধযে ।। পথে। ২মৃতরসং পীত্বা স্নার স্তে শুভাননে। দীর্ঘ মাযুরবা-প্লোতু দেবাঃ প্রাশ্যামৃত যথা।। অতোন্যথা নানা স্তন্যোপযো-গস্যাসাগ্যাদ্যাধিজন্ম ভবতি। অপরিনুতেপ্যতিস্তন স্তন্যপূর্ণ ন্তনপানাদুৎসুহিত স্থোতসঃ শি-শোঃ কাস শ্বাস বনী প্রাদূর্ভাবঃ । তত্মাদেব বিধান স্তন্য ন পাযযেৎ। ক্রোধ শোকাবাৎস-ন্যাদিভিশ্চ স্ত্রিয়াঃ স্তন্যনাশো -ভবতি।। 🟶 ।। অথাস্যাঃ ক্ষীর জ-नमार्थः भागनमा मूद्रशामा यव গোধৃম শালি ষ্ঠিক মাণসরস সুরা সৌবীরক পিণ্যাক লগুন মৎস্য কদেরুক শৃঙ্গটিক বিস বিদারিকন্দ মধুক শতাবরী না-লিকালাবূ কালশাক প্রভৃতীনি विषधा ॥ ॥ व्यानाः खना মপ্সু পরীক্ষেত। তচ্চেচ্ছীতল ম-মল তনু শ্বাবভাস মপ্সু ন্যস্ত মেকীভাব গচ্ছত্যফেনিল মত-স্তুমক্ষোৎপ্লবতে ন সীদতি বা ত-চ্ছদ্ধ নিতি বিদ্যাত্তেন স্বমারস্যা-त्तोगा॰ **শ**तीत्ताशहरमा वलवृष्कि-

শ্চ ভবতি। ন চ কুধিত শোকার্ত্ত শ্রান্ত প্রদুষ্টধাতু গর্ভিণী স্বরি-তাতিক্ষীণাতিস্থূল বিদগধভক্য বি-রুদ্ধাহার তর্পিতাযাঃ স্তন্যং পা-यटयमाञ्जीत्गी यथक वालः ता-ষৌষধ মলানাণ তীব্ৰ বেগোৎপ-ত্তি ভযাৎ ॥ 🟶 ॥ ভবস্তি চাত্র । ধাত্যান্ত গুৰুভি র্ভোজ্যৈ বিষমে র্দোষলৈ স্তথা।দোষা দেহে প্র-সপান্তি তত স্তন্য প্রদুষ্যতি ॥ মিথ্যাহার বিহারিণ্যা দুষ্টা বাতা-**দर्यः ख्रियाः । দূ**ययेखि পय स्डिन শाরীরা ব্যাধ্যঃ শিশোঃ ॥ ভব-ন্তি ঙ্গশল স্তাপ্ত ভিষক্ সম্যাথি-ভাব্যেৎ ৷ অঙ্গ প্রত্যঙ্গ দেশে তু ৰুজা যত্ৰাস্য জাযতে ॥ মুহু মুক্তঃ স্পৃশতি ত স্পৃশ্যমানে চ রোদিতি। নিমীলিতাকো মূর্দ্ধ-স্থে শিরোরোগে ন ধার্যেৎ।। ব-স্তিম্বে মূত্রসঙ্গাতৌ রুজা তৃষ্য-তি मूर्ष्क् ि। विमृत्रमञ्ज देववर्ग ष्ट्रम्गाश्चानाञ्चकूकरेनः ॥ कार्ष्ठ দোষান্ বিজানীযাৎ সৰ্বত্ৰস্থাণ-শ্চ রোদনৈঃ। তেষু চ যথাভি-হিত মৃদুচ্ছেদনীয় মৌষধ মাত্র-যা ক্ষীরপস্য ক্ষীর সর্পিষা ধাত্র্যা-শ্চ কেবল মেব বিদধ্যাৎ। ক্ষীরা-

शामगाञ्जनि धाउँ। काशामग ক্ষাযাদীনাত্মন্যেব ন ধাত্র্যাঃ ৷ তত্র মাসাদূর্দ্ধৃ কীরপাষাঙ্গুলিপ-ৰ্বদ্ব গ্ৰহণ সম্মিতা মৌষধমাত্ৰাণ বিদধ্যাৎ কোলাস্থি সম্মিতাণ ক-ক্ষমাত্রাণ ক্ষীরাম্বাদায কোলস-শ্মিতা মন্নাদাযেতি ৷৷ ৠ৷৷ যেষাণ গদানা থে যোগাঃ প্রবক্ষান্তে ২গদকরাঃ। তেষু তৎকক্ষ সং-লিপ্তৌ পায়য়েত শিশু॰ স্তনৌ।। এক দ্বে ত্রীণি চাহানি বাত পি-ত্ত কক স্বরে। স্তন্যপাযাহিত সর্পি রিতরাভ্যা॰ যথার্যতঃ ॥ ন চ তৃক্ষাভযাদত্র পাষ্যেত শি-শু॰ স্তনৌ ॥ বিরেক বস্তি বম-নান্যতে স্ব্যাচ্চ নাত্যযাৎ। মস্তলুপক্ষযাদ্যস্য বাযু স্তাল্ব-**ञ्चि नागरय** ॥ छमा छ्छ्रेनना যুক্তদ্য দর্পি মধুরকৈঃ শৃত পানাভ্যঞ্জনযো র্যোজ্যণ শীতা-ষ্টুদ্বেজন° তথা ।। বাতেনাগ্না-পিতা॰ নাভি॰ সরুজা॰ তুণ্ডিস্৽-জ্ঞিতা । মারুতক্ষৈঃ প্রশম্যেৎ त्त्रह त्यरमाणनाहरेनः ॥ छम-পাকে তু বালানাণ পিত্তমীণ কা-রুষেৎ ক্রিযা । রসাঞ্চন বি-শেষেণ পানালেপনযো হিত॰ ॥

ক্ষীরাহারায় সর্পিঃ পাষ্যেৎ সি-দ্ধার্থক বচা মাণ্সী প্রস্যাপামা-র্গ শতাবরী সারিবা ত্রান্ধী পি-क्षनी हतिजा कर्छ रमञ्जद मिक्त[े]। कीतान्नामाय मधुक वठा शिक्षनी চিত্ৰক ত্ৰিফলা সিদ্ধং। অন্নাদায দিপঞ্মূলী ক্ষীর তগর ভদ্রদারু মরিচ মধু বিডঙ্গ ডাক্ষা দিত্রান্দী সিদ্ধণ। তেনারোগ্য বল মেধাযূণ-ষি শিশো ভ্ৰস্তি ॥ 🟶 ॥ বাল॰ পুন গাত্রস্খ গৃহীযামটেন তর্জযেৎ সহসা ন প্রতিবোধষে-দ্বিত্রাস্ ভয়াৎ। সহসা নাপহরে-দুৎক্ষিপেদ্বা বাতাদি বিঘাত ভ-ষাৎ। নোপবেশ্যেৎ কৌব্জ্য ভষান্নিত্য চৈন মনুবৰ্ত্তেত প্ৰিষ শতৈ রজিঘা॰সুঃ। এব মনভি-হতমনা স্তৃভিবৰ্দ্ধতে নিত্য মুদগ্ৰ সত্ব সম্পন্নো নীরোগঃ সুপ্রসন্ম মনাশ্চ ভবতি। বাতাতপ বিদ্যুৎ প্রভা পাদপ লতা দর্শন দীপা-বলোকন শুন্যাগার নিমন্থান গৃহচ্ছাযাদিভ্যো দুর্গ্রহোপসর্গত-🏞 वानः রক্ষেৎ ॥ 🏶 ॥ नार्छि हो বিস্জেদ্বাল নাকাশে বিষমে ন চ। নোম মারুত বর্ষেষু রজো ধূমোদকেষুচ।। ক্ষীর সাত্মাত্যা

ক্ষীর মাজ গব্য মথাপি বা । দদ্যাদান্তন্যপর্য্যাপ্তে বালানা ঘীক্যু মাত্রযা। ষ্ণাুস**ৈঞ্ন মন**॰ প্রাশযেল্লযু হিতঞ্চ। নিত্য মবরো-ধরতশ্চ স্যাৎ ক্রতরক্ষ উপসর্গ-ভষাৎ। প্রয়ত্তশ্চ গ্রহোপসর্গে-ভ্যো রক্ষ্যা বালা ভবস্তি॥ 🛊 ॥ অথ সমার উদ্বিজতে ত্রস্যতি রোদিতি নফসংজ্ঞো ভবতি নখ-**দ**শনৈ र्राजी याञ्चानक পরিণুদ-তি দস্তান খাদতি কৃজতি জৃম্ভতে হ্লবে বিক্ষিপত্যুৰ্দ্ধুণ নিরীক্ষতে কেণ মুদ্বমতি সন্দক্ষীপ্রঃ ক্রুরো ভিনামবর্চা দীনার্ত্রবরো নিশি জাগৰ্ত্তি দুৰ্বলো মানাঙ্গো মৎস্য ছুচ্ছুন্দরী মৎঙ্গণ গদ্ধো যথা পুরা ধাত্র্যাঃ স্তন্য মভিলষ্ঠি তথা নাভিল্যতীতি সামান্যেন গ্রহো-পসৃষ্ট লক্ষণ মুক্তণ বিস্তরেণো-ত্তরে বক্যামঃ ॥ 🛊 ॥ শক্তিমস্ত-বৈঞ্চন জ্ঞাত্বা যথাবর্ণ বিদ্যাণ গ্রাহ্যেৎ। অথাস্মৈ পঞ্চবি॰শতি-বৰ্ষায় দ্বাদশবৰ্ষাণ পত্নী মাবহেত্ পিত্র্য ধর্মার্থ কাম প্রকাঃ প্রাপ্স্য-তীতি॥ 🕸॥ ঊনষোডশ বৰ্ষাযা মপ্রাপ্তঃ পঞ্চবি॰শতি॰। যদ্যাধত্তে পুমান্ গর্ভণ স্কিষ্ণ স বিপদ্য-

তে।। জাতো বা ন চিব্ন॰ জীবেৎ জীবেদা দুৰ্বলেন্দ্ৰিয়ঃ ৷ তমা-দত্যন্তবালাষা গর্ভাধান ন कात्ररयः ॥ जिठवृक्षायाः मीर्ष রোগিণ্যা মন্যেন বা বিকারে-ণোপসৃষ্টাষা গর্ভাধান নৈব ঙ্গৰীত। পুৰুষস্যাপ্যেব বিধস্য তএব দোষাঃ সণ্ভবস্তি। তত্ৰ পূ-র্বোক্তেঃ কারণৈঃ পতিষ্যতি গর্ভে গৰ্ভাশয কটা বঙ্গ্ষণ বস্তি শূলানি রক্ত দর্শনঞ্চ। তত্ত্র শীতেঃ পরিষে-কাবগাহ প্রদেহাদিতি রূপচরে-জ্জীবনীয় শৃত শীত ক্ষীর পানে भाष्ट । शर्ज स्कृतरा भूष्ट भू क खल्म-क्षात्रवार्थः कीत मूष्यानिमिकः পাযথেৎ। প্রসূত্রনানে সদাহ পার্শ্ব পৃষ্ঠ শূলাসৃগুদরানাহ মূত্র সঙ্গাঃ। স্থানাৎ স্থানঞ্চোপক্রাম-তি গর্ভে কোঞ্চে সংরম্ভ স্তত্র ন্নি-**क्षाः শীতাঃ ক্রিযাঃ। বেদনাযা•** মহাসহা ক্ষুদ্রসহা মধুক শ্বদংফুৰী क क को तिक। मिक्षः भयः भक्ती ক্ষৌডমিশ্রণ পাষ্যেৎ। মূত্রসঙ্গে पर्जापि मिक्ष°। यानारह हिन्नु-मोवर्फन न छन वहा निक्षः। অত্যর্থণ সুবতি রক্তে কোষ্ঠাগা-রিকাগার মৃৎপিও সমঙ্গা ধাত-

की अभूग नवगानिक। रेगतिक সর্জরস রসাঞ্জন চূর্ণ মধুনাবলি- ॥ ছাৎ। যথালাভ ন্যগ্রোধাদিস্বক্ প্রবালকদ্ধ বা। প্রয়সা পায়যে-দুৎপলাদিকক্ষণবা। কশের শৃঙ্গা-টক শালূক কল্ক॰ বা। শৃতেন প-यरमानुषत करना कि कन्न कारथ-न वा मर्कता मधु मधुरत्व मालि-॥ প্রিষ্ট ন্যগ্রোধাদি স্বরস পরিপী-ত বা। বস্তাব্যব থোন্যা ধার-যেৎ।।।। অথাদৃষ্টশোণিতাযা॰ বেদনাযা মধুক দেবদারু প্র-मा। मिक्षः भयः भाषत्यः তদে-ৰাশস্তক শতাবরী প্রস্যা সিদ্ধণ 'বিদারি গন্ধাদি সিদ্ধণ বা বৃহতী-ছযোৎপল শতাবরী সারিবা প-यमा। मधुक मिक्षः शयमा। कंशू-শীসিদ্ধং বা পয়ঃ পায়যেদিতি। এবং ক্ষিপ্র মুপক্রান্তাষা উপাব-র্ত্তন্তে রুজো গর্ভ শ্চাপ্যায়তে। ব্যবস্থিতে চ গর্ভে গব্যেনোডুম্বর শলাটু সিদ্ধেন প্ৰদা ভোজ্বেৎ া অতীতে লবণ ক্ষেহ বৰ্জ্জ্যাভি ৰ্য-বাগৃভি রুদ্দালকাদীনা পাচনী-যোপস স্তাভি রূপক্রমেত যাব-ন্তো মাসা গর্ভস্য তাবস্ত্যহানি। বস্তাদর শূলেষু পুরাণগুড় দী-

পनीय **म**॰यूक्क॰ शायरयम्ब्रिये॰ বা বাতোপদ্ৰব গৃহীতত্বাৎ। স্মে-তসাণ লীষতে গৰ্ভঃ সোংতিকা-ল মবভিষ্ঠমানো ব্যাপদ্যতে ত মৃদুনা স্বেহাদি ক্রমেণোপচরেৎ । উৎক্রোশ রসসংসিদ্ধা মনর स्त्रहा॰ यवागृ॰ भाषस्य । गाष िन विस भनाषु मिकान् वा। त्रवायान् ज्यायायुगाश्चीकः ठा-नूर्शितव मश्चद्राव । काना छी-ত স্থাযিনি গর্ভে বিশেষতঃ স-ধান্য মৃদূখল মুষলেনাভিহ-न्ता वृष्य वा यानामतन तम-বেত। বাতাভিপন্নএব শুষ্যতি গর্ভঃ। স মাতুঃ স্বক্ষিণ ন পূর্যতি मन्म॰ ज्ञान्मरक ह छ॰ वृ॰श्नीरेयः পযোভির্মাণসরসৈ শ্চোপচরেৎ। শুক্র শোণিত বাযুনাভিপ্রপন্ম ম-বক্রাস্তজীব মাগ্নাপযত্যুদরণ তৎ কদাচিৎ যদৃচ্ছযোপশান্ত নৈ-গনেবাপহত মিতি ভাষস্তে। ত-মেব কদাচিৎ প্রলীষমান না-গোদর মিত্যাহু স্তত্রাপি লীনবৎ প্রতীকারঃ ॥ 🟶 ॥ অত উদ্ধৃ৽ মা-मान्यामिक॰ वक्गायः । यश्क॰ শাকবীজঞ্চ প্রদান দুরদার চা অশন্তক স্তিলাঃ ক্লফা স্তামুবলী

শারীর

भाजावती ॥ वृक्षामनी श्रामा ह লতা চোৎপলসারিবা। অনন্তা সারিবা রাহা পদ্মা মধুক মেব চ ৷ বৃহত্যৌ কাশরী চাপি ক্ষীরি-रध्य। खुटा घृष्ट । शृक्षिशनी वना भिगु अम॰ खु। मध्यर्भिका ॥ শৃঙ্গাটক বিস জাক্ষা কসেরু মধুৰু সিতাঃ। বৎসৈতে সপ্ত যোগাঃ স্যু রন্ধক্ষোক সমাপনাঃ ॥ যথাসংখ্য প্রযোক্তব্যা গর্ভ-সূাবে প্যোযুতাঃ। কপিখ বৃহ-**ी विद्य भटी। त्विक् निमिक्षिकाः** ।। भृलानि कीत मिक्तानि পायरय-দ্ভিষগষ্টদে। নবমে মধুকানক্তা প্যদ্যা সারিবাঃ পিবেৎ ॥ ক্ষীর• শুগী প্যস্যাভ্যাণ সিদ্ধ স্যাদ্ধ-শনে হিত । সক্ষীরা বা হিতা শুগী মধুক সুরদারু চ। এব মাপ্যায্যতে গর্ভ স্তীবা রুক্ চো-পশাম্যতি ৷৷ নিবৃত্তপ্ৰস্বাৰাস্ত পুনঃ যড়ভ্যে। বর্ষেভ্য উর্দ্ধুণ প্র-স্বমানায়া নার্য্যাঃ স্ক্রমারো ২-ब्रायू র্ভবতি ।। 🕸 ।। অথ গর্ভি **ণী**॰ **व्याधार्थकाव**ार्य इम्रंयमधू- ∥ রাস্লেনায়োপহিতেনানুলোমযে-क म॰ भगनीयक मृमू विमधानम-शानत्या तन्नीयाक मृनूवीर्याः मधू-

রপ্রায়ণ গর্ভাবিরুদ্ধশংগর্ভাবিরুদ্ধান্চ ক্রিয়া যথাযোগণ বিদ্যান্ত মৃদুপ্রায়াঃ ।। ৠ ।। ভবন্তি চাত্র। সৌবর্ণণ সুক্তও চূর্ণণ সপ্তও মধু ঘৃতঞ্চ বা। মৎ স্যাক্ষকঃ শাধ্যপূষ্পী মধু স্পিঃ সকাঞ্চনং ।। অর্কপুষ্পী মধু ঘৃতও চূর্ণিতং কনকং বচা। হেমচূর্ণানি কৈটর্যঃ খেতা দুর্বা ঘৃতও মধু ।। চত্বারো হতিহিতাঃ প্রান্ধাঃ স্নোকার্দ্বেয়ু চতুর্বপি । সমারাণাং বপু র্মেধার্ক বল বুদ্ধি বিবর্দ্ধনাঃ ।। ইতি স্ক্রান্ত আযুর্বেদশান্তে তৃতীয় শারীরস্থান

জীভাষাযাণ এনেটোমীত্যক্ত মেতৎ ॥ * ॥ শারীরণ তপো যথা। দেব দিজ গুরু গ্রাক্ত পূ-জনণ শৌচ মার্ক্জবণ। ব্রহ্মচর্য্য মহিণ্সা চ শারীরণ তপ উচ্য-তে ॥ ইতি ভগবদগীতাযাণ ১৭ অধ্যায়ঃ॥

শातीतक॰ क्वी मह्नतानार्यक्र केट दिनाख्यीया॰ माजागा॰ । यथा। ज्या न वय यगा। भातीतक भी-या॰ मुखा॰ श्रमंगियायः। वि-नाख यीया॰ माजागा व्यानि-थ्यामिजमान यानियः मृजः।

भामृ ल

অথাতো ব্ৰশ্বজিজ্ঞাসেতি। ইতি তল্যুন্থলিখন• ।।

শারীরিকঃ ত্রি শরীরসম্বন্ধি।
তৎপর্য্যায়ঃ। কালেবরিকঃ ২
গাত্রিকঃ ৩ বাপুষিকঃ ৪ সাংহননিকঃ ৫ বার্ম্মিকঃ ৬ বৈগ্রহি
কঃ ৭ কাষিকঃ ৮ দৈহিকঃ ৯
মৌর্ত্রিকঃ ১০ তানবিকঃ ১১।
ইত্যমরোক্ত শরীরপর্য্যায় শকাৎ ফিক প্রত্যযেন নিষ্পায়ঃ।।

শার্কঃ ত্রি হিৎসকঃ। শুষ্
ভূকন গমেত্যাদিনা ঞুক প্র
ত্যবেন নিষ্পানঃ। ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণং।।

শার্ক্তঃ পু॰ শর্করা। ইতি শব্দ-রত্নাবলী॥

শার্ক কঃ পু॰ দুগ্ধফেণঃ।। শর্করা-পিণ্ড॰। ইতি মেদিনী।।

শার্করঃ পু॰ দুগ্ধফেণঃ।। শর্করা-বিতদেশঃ। ইতি মেদিনী।। শ-র্করাসম্বন্ধিনি ত্রি।।

শার্করকঃ \ ত্রি শর্করাবহুলদেশঃ শার্করিকঃ \। শর্করাশব্দাৎ কণ্ ফিক প্রত্যযাভ্যাণ নিষ্পামী ।।

শার্করীয়ঃ ত্রি শর্করাযুক্তরদশঃ। শর্করাশকাৎ ণীয় প্রত্যবেন নিষ্ণায়ঃ।। শার্সণ ক্লী আর্দ্রকণ। ইতিরাজ-নির্ঘণটঃ॥

শার্কঃ পুণ বিফুধনুঃ।। ধনুর্মাত্রণ। ইতিমেদিনী।। শৃঙ্গসম্বন্ধিনি ত্রি শার্কষ্ঠা স্ত্রী মহাকরঞ্জঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। পুস্তকান্তরে শা-ক্লোষ্ঠা ইতি চ পাঠঃ।।

শাঙ্গী পুণ বিষ্ণু।ইত্যমরঃ॥ ধ্রিমাত্রণ। ইতি শার্জশব্দার্থ-দর্শনাৎ॥

শাদূলঃ পুণ ব্যায়ুঃ 11 উত্তর-পদে শ্রেষ্ঠার্থবাচকঃ 1 ইত্যমরঃ 11 রাক্ষসঃ 11 পশুভেদঃ 1 স তু সরভঃ 1 ইতি মেদিনী 11 পক্ষি-বিশেষঃ 1 ইতি ধরণিঃ 11 চিত্রকঃ 1 ইতি রাজনির্ধণ্টঃ 11

শাদূ লললিত ক্লী ধৃতিবৃত্তীঅক্টাদশাক্ষরপাদচ্চন্দোবিশেষঃ ৷ যথা ৷ মঃ সো জঃ স ত সা
দিনেশ শুতুভিঃ শাদূ লললিত
৷ ক্ষবাক সমৃ গে পরাক্রম বিধি
শাদু লললিত য শ্চক্রে ক্ষিতিভারকারিষু সূরারাতিষ্বভিদব ৷
সন্তোষ পরমন্ত দেব নিবহে ত্রৈলোক্যশরণ শ্রেষো বঃ স তনোম্বপারমহিমা লক্ষীপ্রিয়তমঃ
৷৷ ইতি ছন্দোমঞ্জরী ২ স্তবকঃ ৷৷

শালগ্ৰা

শাদূ লবাহনঃ পু॰ পঞ্বি॰শতি পূৰ্বজিনা স্তৰ্গতজিনবিশেষঃ । ইতি ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ।।

भामृ निर्वकी िष्ठ की अविश्वि-वृत्वे उनिरंगि विशाम हिल्मा-वित्मयः। यथा। मृर्यादिश्व मं म क उठाः मश्चत्रवः भामृ निर-की िष्ठ । शाविन्म अनुरमान्तः भाम तम्दन प शायसाहिन्म भागे शृक्षयण ननः यत भरम ठमानय शक्ष्ठ । विरक्ष म-क्राविन मम हिल भीर्यामय उन्नाव निर्वकी िष्ठ ।। के वि हल्मा मञ्जती २ ख्वकः।। भार्वतः की अन्नव्यमः।। शाक्रक वि। ইতি মেদিনী।। শर्वती म-

যদ্ধিনি চ ত্রি।।
শার্বরী স্ত্রী রাত্রিঃ। ইত্যমরটীকাষাণ ভরতধৃত বাচম্পতিঃ।।
শাল ও ঋ কথনে। ইতি কবিকল্পক্রমঃ।। কখনে প্রশংসাযাণ
। ও শালতে গুণিনণ গুণী। ঋ
অশশালৎ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
শালঃ পুণ মৎস্যভেদঃ। গজাড
ইতি খ্যাতঃ।। প্রাকারঃ।। বৃক্ষবিশেষঃ। তৎপর্যায়ঃ। সর্জঃ

২ কার্যাঃ ৩ অশ্বর্করণকঃ ৪ শাস্যসম্বরঃ ৫। ইত্যানরঃ ।। শাল্কুর্কঃ
৬। ইতি রত্মালা।। নদভেদঃ
। ইতি শব্দরত্মাবলী ।। শালনৃপঃ। স তু শালিবাহনরাজঃ
। ইতি বিশ্বঃ।। বৃক্ষমাত্রণ। ইতি
রাজনির্ঘলিঃ। ৠা। শালো ঝসে
ধীবর এব দাশ ইত্যুমভেদাত্তালব্যাদিঃ। দস্ত্যাদিশ্চ। কৈবর্ত্ত
ইব বন্ধ রাজীবোৎপল সালো
বসস্তকাল আজগাম। ইতি বাসবদত্ত শ্লেষাৎ। কৈবর্ত্ত পক্ষে
সালো মৎস্যবিশেষঃ। বসস্তপক্ষে সালস্য পুষ্পাণ সালা। ইতি
ভরতঃ।।

গালগ্রামঃ পুণ বিক্ষুমূর্ত্তিবিশেষঃ
। স চ গণ্ডকুডেববজুকীটক্ত
চক্রযুক্তশিলা দারকোডবতাদৃশশিলা চ। তস্য মাহাত্ম্য লক্ষ্ণগাদি যথা।প্রসঙ্গাৎ কথ্যিষ্যামি শালগ্রামশিলার্চ্চনণ। নিক্ষামো মুক্তি মাপ্নোতি মূর্ত্তিণ
ধ্যাযন্ স্তবন্ জপন্।। শন্ধ চক্র
গদা পদ্মণ কেশবাখ্যো গদাধরঃ
। সাজ কৌমোদকী চক্র শন্ধী
নারায়ণো বিভুঃ ।। স চ শন্ধাজপদো মাধবঃ শ্রীগদাধরঃ । গ-

দাব্জ শখ্য চক্ৰী বা গোবিন্দাখ্যো गमाधतः ॥ शम् मञ्जामिशमिटन বিষ্ণু শথায বৈ নমঃ। সশথাজ शना हक् मधुमृतन मुर्ख्दय।। नत्मा গদাসি চক্রাব্জ যুক্ত ত্রৈবিক্রমায চ। সাবি কৌনোদকী পদ্ম শঙ্ম বামনমূর্ত্বে।। শঙ্খাজ চক্রগদি-নে নমঃ শ্রীধরমূর্ত্তযে। ইংষীকেশ সাবি গদা শখ পদ্মিমমোস্ত তে ৷৷ সাব্ধ শৃথ গদা চক্ৰ পদ্মনাভ खक्तिरन। नात्यानतः मध्य गर्ना চক্র পদ্মিন্নমো ২স্ত তে ॥ সাবি শগ্ম গদাব্জায় বাসুদেব নমো-নমঃ। শুখাজ চক্রগদিনে নমঃ শक्रयं गिय ह ॥ শु । हु । गम्। ব্জাষ ধৃত প্রদ্যুত্ম মূর্ত্তযে। নমো **২নিরুদ্ধায় গদা শঙ্খাব্র বর্**ধা-রিণে।। সাজ শখ গদা চক্র পু-ऋरवाख्य मूर्खरय । नत्या १८४१-ক্ষজ ৰূপায় গদা শন্থ বিধারিণে 11 न्मि॰ र मूर्खरय शवा शका भाषा विशातिरा ॥ भवावि मधा गिरिन नत्माञ्जू कृष्ठ मृर्खरा।। मनश्च ह-ক্রাজ গদ জনার্দন মিহে। নমঃ া উপেন্দ্রণ গদিনণ সাবি পদ্ম শুখ্র নমোস্ত তে ৷৷ সচক্রাব্জ গদা শঙ্খ यूकाय रति गृर्वरय। मगमाङ्गावि

শঙ্খায় নমঃ শ্রীক্ষণ্ণ মূর্ত্তয়ে !৷ শা-লগ্রামশিলাদারগতলগদিচক্রধৃ-ক্। শুক্লাভাখাশ্চ সো ইবাদঃ मरेनव शीशनाध्रतः ॥ नगिष्ठ-ক্ৰো বক্ৰাভঃ পূৰ্বভাগস্ত পুষ্ণলঃ । শঙ্কर্যণোথ প্রদ্যমঃ সৃষ্ম চক্রস্ত পীতকঃ ৷৷ স দীর্ঘঃ স শিরশ্ছি-জো যো **খনিরুদ্ধস্ত বর্ত্তুলঃ ।** নানাহার দ্বিরেখশ্চ অথ নারায-ণে। ২সিতঃ ।। মধ্যে গদাক্কতা রে-খা নাভিপদ্ম মহোমতঃ। পৃথু চ-ক্রো নৃসিংহো বঃ কপিলোব্যান্ত্রি-विन्तुकः ॥ जथ व। शक्षविन्तु ख८ পূজন॰ বন্ধচারিণঃ। বরাহ শক্তি লিঙ্গে। ২ব্যাদিষমদ্বযচক্রকঃ।। নীল স্ত্রিরেখঃ স্থূলোথ কুর্ম্ম মূর্তিঃ यितमूगान्। क्रकः मवर्ज्नावर्जः পাওরোমত পৃষ্ঠকঃ।। শ্রীধরঃ প-श्रुद्धार्थ। १वग्राचनमाना श्राकि-তঃ। বামনো বর্তুলো নাম বাম ठळः मूदतश्रदः ॥ नानावर्णा १-নেকমূৰ্ত্তি ৰ্নাগভোগী দ্বনস্তকঃ। ञ्डला मारमामरता नीरना मरधा ठेकः मूनीलकः ॥ मःकीर्वनातः কো বো ২ব্যাদথ ব্রহ্মা সুমোহি-তঃ। সদীর্ঘরেখা শুশির একচ-কাষুজঃ পৃথঃ॥ প্রত্যাচ্চিদ্রঃ স্থূল-

.চক্ৰঃ ক্লেণ্ডা ২বিন্দুশ্চ বিন্দুম্ৎ। " হ্যগ্রীবে ২ন্ধুশাকারঃ পঞ্রেখঃ সমস্ততঃ ৷৷ বৈঙ্গপ্তো ২মলবন্ডা-তি একচক্রাত্মকো ২সিতঃ । মৎ-স্যো দীর্ঘামুজাকারো দাররেখ-স্তু পাণ্ডরঃ ॥ বামচক্রো দক্ষরে-খঃ শ্যামো বো ২ব্যাল্রিবিক্রমঃ। শালগ্রামে দারকাষাণ স্থিতায গ-দিনে নমঃ৷৷ একেন লক্ষিতো বো श्वाकानाधाती मूपर्गनः। नश्ची-নারাযণো দাভ্যাণ ত্রিভি মূর্ত্তি স্ত্রিবিক্রমঃ ৷৷ চতুর্ভিশ্চ চতুর্যু হৈ৷ বাস্দেবশ্চ পঞ্চিঃ। প্রদ্যুয়ঃ ষড্ভি রেবাব্যাৎ শঙ্কর্ষণ ইত-স্তুতঃ ॥ পুরুষোত্তমো ২ফডিঃ স্যাচ্চ নবব্যুহো নবান্বিতঃ । দ-শাবতারো দশভি রনিরুদ্ধো ২-বতাদথ ৷৷ দ্বাদশাত্মা দ্বাদশভি রত উর্চ্চে। হনন্তকঃ। ইতি পাদ্মে পাতালখণ্ডে ১০ অধ্যায়ঃ ৷৷ 🕸 ৷৷ অপি চ। ঈশ্বর উবাচ। শাল-গ্রামে মণে যন্ত্রে মণ্ডলে প্রতি-মাসু চ। নিত্যন্ত্ব শ্রীহরেঃ পূজা কেবলেন জলেন তু ৷৷ গণ্ডক্যা নেকদেশে তু শালগ্রামস্থল ম-হৎ। পাষাণান্তভব শবতৎ শাল-আম মিতি স্থিত ।। শালআম শি-

লাস্পৰ্শাৎ কোটিজন্মাযনাশনণ । কি॰ পুন র্জনন॰ তত্র হরেঃ সা-मिथा कात्रण ॥ मानशारेनक य-জনাৎ শতলিঙ্গ ফল গভেৎ ৷ वर्छ र्जगिङिः भूरेषा यीन क्षम শিলা॰ লভেৎ ৷৷ গোষ্পদেন চ চিক্লেন তেন বৈ ত্রামতে নরঃ। আদৌ শিলা॰ পরীক্ষেত স্নিগ্ধাণ শ্রেষ্ঠাঞ্চ মেচকাং।। অক্নফা ম-ধ্যনা প্রোক্তা মিশ্রা মিশ্রফলপ্র-দা। সর্বকামপ্রদা সৌম্যা করা-লা ভষ দুঃখদা ।। সিন্ধা চ শ্রীক-রী নিত্য° ৰক্ষা দারিদ্র্য দাযিকা । কুদ্রা কুদ্রফলা প্রোক্তা স্থূলা ष्ट्रनकनथाना ॥ मना कार्छ दि-তো বহ্নি মস্থনে চ প্রকাশতে। যথা তথা হরি ব্যাপী শালগ্রামে প্ৰকাশতে ।। প্ৰত্যহ॰ দ্বাদশ শি-লাঃ শালগ্রামস্য যো ২র্চযেৎ। দারবত্যাঃশিলাযুক্তাঃ স বৈঙ্গঠে মহীযতে ॥ শালগ্রামশিলাযান্ত গহ্বর॰ লক্ষ্যতে নরঃ। পিতর স্ত-স্য তিপ্ঠন্তি তৃপ্তাঃ কল্পান্তরণ দিবি ৷৷ শালগ্রামশিলা যত্র যত্র দার-বতীশিলা। মৃতে বিষ্ণু পুরণ যাতি ক্নতাৰ্থণ যোজন ত্ৰয়ণ ॥ জপ পূ-জা চ হোমশ্চ সৰ্বণ কোটিগুণ্

ভবেৎ ৷ মনস্কামঃ সদাভীষ্ট ৷ || ক্রোশমাত্রণ সমন্ততঃ ৷৷ কীকটে-পি মৃতো যাতি বৈঙ্গগভবনং নরঃ ৷ শালগ্রামশিলাযা বা মূল্য মুৎপাদযেয়রঃ ॥ বিক্রেতা চানু-মন্তা চ যঃ পরীক্ষানুমোদকঃ। সর্বে তে নরকং যান্তি যাবদাহৃত-সংপ্লবং ৷৷ অত স্তং বৰ্জ্জমেদেবি হরি বিক্রয়ণ ক্রয়ণ। শালপ্রামো-ख्रता (मर्ता या (मर्ता चात्र-কোন্ডবঃ ৷৷ উভযোঃ সঙ্গণো যত্ৰ মুক্তি স্তত্র ন সংশযঃ। দারকো-দ্ভবঃ শুক্লশ্চ বহুচক্রেণ চিক্লিতঃ ৷৷ চক্রমাসীৎ শিবাকার চিৎস্বৰূ প নিরঞ্জন । নমোস্ত্রোক্ষার ক-পায महानम् अविशिष् ॥ भान-গ্রামে মহাভাগ ভক্তস্যানুগ্রহণ পরু। স্বা যুত্যা ধর্মস্য ঋণগ্র-স্তদ্য মে প্রভো ৷৷ ইতি তব্তৈব ১১ অধ্যাयः ॥ 🕸 ॥ অপর্ঞ। बान्नग উবাচ। गएकीय॰ नमी রাজন্ সূরাসূর নিষেবিতা। পু-ণ্যোদক পরীবাহৈ হ্তপাতক-সঞ্যা ৷৷ দশনামানসং পাপং স্পার্শনাৎ কর্মজণ দহেৎ। বাচি-ক স্বীয়তোষস্য পানতঃ পাণ-मक्ष ॥ भूता नूकाः প্রজানাথः

প্রজাঃ সর্বা বিপাপ্মনঃ ৷ স্ব গণ্ডা-দ্বিপুষো খনেক পাপদ্বীঃ সৃষ্টবা-न् हेमा ।। এना निने स्व पूर्वा-দা॰ স্পৃশন্তি সুতরঙ্গিণী৽। তে গর্ভভাজো নৈব স্যু রপি পাপ-ক্তো নরাঃ।। তদ্যাণ ভবা যে চাশান শক্ত চিক্লৈ রলস্কৃতাঃ। যে সাক্ষান্তগবন্তো হি স্ব স্বৰূপ-ধরাঃ পরাঃ ৷৷ শিলাঃ সংপূজ্যে-দৰম্ভ নিত্য চক্ৰযুতাঃ সদা। ন জাতু চিদ্জনন্যা বৈ জঠর° সমু-পাবিশেৎ ॥ পূজ্যেদেয়া নরে। ধীমান্ শালগ্রামশিলাণ বরাণ। তেনাচারবতা ভাব্যু দম্ভ মোহ বিযোগিনা ৷৷ পরদার পরজব্য বিমুখেন নরেণ চ। পূজনীযঃ প্র-যত্নেন শালগ্রামঃ সচক্রকঃ ॥ দারবত্যা ভব॰ চক্রণ শিলা বৈ গওকীভবা । পুণ্সাণ ক্ষণাদ্ধর-ন্ত্যেব পাপ॰ জন্মশতার্জিত॰ ॥ অপি পাপসহস্যাণাণ কর্ত্তা তাব-নরো ভবেৎ। শালগ্রামশিলা আপঃ পীত্বা পূষেত তৎক্ষণাৎ ৷৷ ব্ৰাহ্মণঃ ক্ষত্ৰিয়ো বৈশ্যঃ শূদ্ৰো বেদপথে স্থিতঃ। শালগ্রামণ পূ-জিষিয়া গৃহস্থো মোক্ষ মাপুষাৎ ॥ 🗱 ॥ ন জাতু চিৎ দ্রিযা কার্য্য॰

শালগ্রামস্য পূজন । ভর্তৃদীনাথ সুভগা সৰ্বলোক হিতৈষ্যা ॥ মোহাৎ স্পৃশেত মহিলা জন্মণী-ল গুণাম্বিতা ৷ হিত্বা পুণ্য সমূহন্ত সম্বরণ নরকণ ব্রজেৎ।। দ্রীপাণি মুক্তাপুষ্পাণি শালগ্রামশিলো-পরি। পরৈ রধিকপাপানি বদ-ন্তি ত্রাহ্মণোত্রমাঃ ॥ চন্দন পবিষ-পঙ্কাভণ দক্ষুমণ বজুসন্মিভণ। নৈ-বেদ্যুণ কালকূটাভণ ভবেদ্ভগবতঃ হতে ৷৷ তত্মা**ৎ সর্বাত্মনা** ত্যজ্যঃ দ্রিযাঃ স্পর্শঃ শিলোপরি । সর্ব তী যাতি নরকং যাবদিন্দ্রা শ্চতু-र्मगा क्षा। অপি পাপসমাচারো ব্ৰন্মহত্যাযুতোপি বা। শালগ্ৰাম-শিলাতোয়ণ পীত্বা যাতি পরাণ গ-তি॰।। তুলসী চন্দন॰ চক্র॰ শড়ো। ঘন্টাথ চক্রকে । শিলা তামুস্য পাত্ৰন্ত বিষ্ণো নাম পদামৃত ।। পদাস্তম্ভ নবভিঃ পাপরাশি প্র-**मार्कः। यमिख मूनयः भाखाः** সৰ্বশাস্ত্ৰাৰ্থ কোবিদাঃ।। সৰ্বতীৰ্থ পরিস্নানাৎ সর্বক্রতু সমর্চনাৎ। পুণ্য ভবতি যদ্ৰাজন্ বিন্দৌ বি-त्मी उपख्ड ।। भान शामिना যত্র পূজ্যতে পুরুষোত্তমৈঃ। তত্র যোজনমাত্ৰন্ত তীৰ্থকোটি সমন্বি-

ত ৷৷ য় ৷৷ শালগ্রামাঃ সমাঃ পু-জ্যাঃ সমেষু দ্বিতষণ ন হি। বিষমা এব পূজ্যা বৈ বিষমেষু ত্রষণ ন হি ।। দ্বারবতী ভব॰ চক্রণ তথা বৈ গ-**ওকীভব°। উভযোঃ সঙ্গ**দো যত্ৰ তত্ৰ গঙ্গা সমুদ্ৰগা।। ৰাক্ষাঃ জ-ৰ্বন্তি পুৰুষান্ আযুঃ শ্ৰীভি বিব-ৰ্জিতান্। তম্মাৎ সিঞ্চা মনো-হারি ৰূপেণ দদতি শ্রিয়ণ ৷৷ আ-যুক্ষামো নরো যস্ত ধনকামোপি-यः भूमान्। शृक्षयन् मर्व गारक्षा-াপ॰ লৌকিক মৈহিক॰।। প্রাণান্তকালে তু যস্য ভবেদ্তা-गावनामृष । वािं नाग रुद्धः পুণ্য° শিলাক্কতি স্তদস্তিকে ।। গ-চ্ছৎসু প্রাণমার্গেষু যস্য বিপ্রস্ত-তো ২পি চেৎ। শালগ্রামশিল। मृर्खि छमा मुक्ति न मण्मयः ॥ भूता ভগবতা প্রোক্ত মম্বরীষায ধীম-তে। ব্ৰাহ্মণো ন্যাসিনো ভক্তাঃ শালগ্ৰামশিলা মম ৷৷ স্বৰূপ ত্ৰি-ত্য॰ মহু মেত্দ্ধি ক্ষিত্যিওলে ৷ পাপিনা পাপ নিৰ্বার কর্তু • ধৃত মুদঞ্তা ।। নিন্দন্তি পাপি-নো যে বা শালগ্রামশিলাণ সক্লৎ । সম্ভীপাকে পচস্ত্যাশু যাবদাহূ-ত সংপ্লবং ৷৷ পূজাং সমুদ্যতং ক-

র্তু॰ যো বার্ষতি মূট্ধীঃ। তস্য মাতা পিতা বন্ধুঃ সর্বে নরক গা-মিনঃ ।। যে। বৈ কথষতি শ্রেণ্ঠ॰ শালগ্রামার্চ্চন স্কর ৷ স ক্ত: ৰ্থো ন্যত্যাশু বৈদ্বগুণ স্বস্তু পূৰ্ব-**জৈঃ।। ইতি চ তত্রৈব ২**০ অধ্যায° ।। 🗱।। অন্যচ্চ। শ্রীঈশ্বর উবাচ। শালগ্রামশিলাযাস্ত তৈলোক্য সচরাচর । সদা বসতি তেনাত্র বিষ্ণু স্তিষ্ঠতি সর্বদা ॥ শালগ্রাম-শিলা পূজাণ প্রদর্গ ষড়ানন। গঙ্গা মিব মহাপুণ্যাণ চতুৰ্ব গীফল-প্রদাণ্যা হৃষ্টেন মনসা যেন স্থা-পিতা পূজিতা তথা। যজ্ঞকোটি সমণ পুণাণ আশু তস্য প্রযক্ত্তি ।। ছিন্ন স্তেন মহাসেন গর্ভবাসঃ সুদারুণঃ। পীত ধেন সদা বি-ক্ষোঃ শালগ্রামশিলাজলণ ৷৷ কা-মাশক্তোপি যো নিত্যু ভক্তিভা-্ব বিবৰ্জ্জিতঃ। শালগ্ৰামশিলা॰ পশ্যেৎ তস্য পাপক্ষয়ে। ভবেৎ ৷৷ শালগ্রামশিলা বিপ্র হত্যাকো-টি বিনাশিনী। স্মৃতা সংকীর্ত্তিতা ধ্যাতা পূজিতা চ নমস্কৃতা॥ শা-ववामिना॰ मृख्ने याखि পाপा-नि (महिनाः । जिःशः मृक्तुः। यथा ষান্তি বনে মৃগগণা ভয়াৎ।। নম-

কৃত্বা তু যঃ স্বর্যাৎ শালগ্রাম-শিলাৰ্চ্চন°৷ ভক্ত্যা বা যদি বাভ-ক্ত্যা স মুক্তি॰ সমবাপ্লুয়াৎ ॥ यः সেবা॰ স্কুতে নিত্য॰ শালগ্রাম-শিলাগ্রতঃ। বৈবস্বতাদ্ভয° তস্য न मात्रात्रव जगनी ॥ भावकाय-শিলাচক্ৰণ পয়ো দধি ঘৃতাদিকৈঃ । यः স্নাপয়তি নূন স কল্পকো-টি॰ বসেদিবি ৷৷ শালগ্রামে নম-স্কারো ভাবেনাপি চ ফৈঃ ক্তঃ। মান বাঃ কি॰ করিষ্যন্তি মন্ডক্ত্যা ্তে মহীতলে।। মদ্যক্তি রণদর্পি-ষ্ঠা মৎপ্রভু ন নমন্তি যে। বৈষ্ণ-বা স্তে ন বিজ্ঞেষা মন্তক্তাঃ পাপ-মোহিতাঃ।। শালগ্রামশিলা যত্র তত্ৰ পুত্ৰ বসাম্যহ°।পূজিতো ২হ• ন তৈ ম তৈয় স্থাপিত্ৰ ন তৈ ন-রৈঃ।। ন ক্বত॰ মর্ত্যলোকে থৈঃ শালগ্রামশিলার্চ্চন । কি মর্চিচ-তৈ ৰ্লিঙ্গশতৈ বিঞ্চুভক্তি বহিষ্কৃ-তৈঃ।। শালগ্রামশিলাচক্রণ না-চিত থদি পুত্রক। জন্মকোটি সহসূেণ পূজিতে মধি ষৎ ফল॰।। তৎফল॰ সমবাপ্নোতি শালগ্রাম-শিলার্চ্চনাৎ। অনর্ছণ মম নৈবে-দ্যু পত্ৰ পুষ্প ফল জল ।৷ শা-লগ্রামশিলাদৃষ্ট সর্ব যাতিপবি-

ত্রতা । নৈবেদ্য । মে ন ভাক্ত ব্যুণ ভুক্ত্বা চান্দ্রায়ণণ চরেৎ ৷৷ ভু-জ্ব। কেশব নৈবেদ্য কোটিভ-ক্তি ফল॰ লভেৎ । সক্বদভ্যর্চি-তো বিষ্ণুঃ শালগ্রামশিলাস্থিতঃ॥ ।। দদাতি বিপুলা॰ মুক্তি॰ সর্বসঙ্গ বিবজ্জিতা•৷ মল্লিম্প কোটিভি দূ´-ষ্টে ৰ্যৎফল পূজিতৈ স্তুতৈঃ ॥ তৎফল° সমবাপ্নোতি শালগ্ৰা-মৈকপূজনাৎ। শালগ্রামশিলা-চক্ৰণ যে। বিদ্বান্ পশ্যতি ধ্ৰুবণ ॥ অৰ্চ্চযেদৈফবে নিত্য তস্য পু-ণ্য॰ নিবোধ মে। কোটিলিঙ্গ সহ-সৈু ৰ্যৎ পূজিতৈ জাত্মবীতটে ॥ कानीवामान्यूगानारको निटन-নৈকেন তদ্ভবেৎ। তশ্মান্তক্ট্যে-ব মন্তক্তিঃ প্রীত্যর্থণ মম পুত্রক॥ ন্ত্ৰ্য সৰ্বদা মতৈয়ঃ শালগ্ৰাম-শিলাক্ষ্য সম্প্ৰ निनार्फन । नान वायनिना करी যত্ৰ তিষ্ঠতি কেশবঃ॥ তত্ৰ দেবাঃ সুরা যক্ষা ভুবনানি চতুর্দশ। শা-লগ্রামশিলাগ্রে থৈঃ সরুচ্ছাদ্ধণ ক্লত॰ ভবেৎ ॥ বসস্তি পিতর স্তে-ষা॰ বিক্তুলোকে ন সংশযঃ। যে-পিবস্তি নরা নিত্য° শালগ্রামশি- 🎚 ना जन ।। शक्ष भवा महरे मु ख था-শিতৈঃ কি' প্রযোজন । প্রায-

म्हिट्ड ममूर्थाम कि॰ मारेनः कि मूलायरैनः ॥ ठान्यायरैनः कि॰ हि-তাদৃক্ পীস্বা পাদোদক॰ শুচিঃ। ইতি পাদ্মে উত্তরখণ্ডে ১২৭ অ-थायः ॥ 🟶 ॥ कल्ल मंगर्मुव-র্যানন্তরণ স চ ভারতণ ত্যক্তৃ। যা-স্যতি। যথা। শালগ্রামো হরে মূর্ত্তি র্জগন্ধাথশ্চ ভারত । কলে দশসহসান্তে যথো তাকু৷ হরেঃ পদ' ৷৷ ইতি ব্ৰহ্মবৈবৰ্ত্তে প্ৰক্লতি-খণ্ডে ৬ অধ্যায়ঃ ৷৷ ঞ্চ ৷৷ তদ্যোৎ-পত্তি লক্ষণাদি যথা। তুলস্যুবা-চ। হেনাথ তে দ্যা নাস্তি পাষাণ मদৃশमा ह। इत्वन धर्मा ज्दनन মম স্বামী স্বয়া হতঃ।। পাষাণ হ্ন-দয স্তৃঞ্চ দযাহীনে। যতঃ প্রভো ৷ তস্মাৎ পাষাণসদৃশ স্তৃণ ভবেহ হরে ২ধুনা ।। শ্রীভগবানুবাচ। অহঞ্চ শৈলৰূপী চ গণ্ডকীতীর मिक्ति। अधिष्ठीनः कतियामि ভারতে তব শাপতঃ ৷৷ বজুকীটা-শ্চ ক্লমযো বজুদ ফু]শ্চ তত্র বৈ। তৎ শিলা স্বহরে চক্রণ করিষ্যস্তি मनीयकः ॥ . এकमारत ठजूमहळः বনমাল। বিভূষিত । নবীননীর-দাকার লক্ষীনারাযণাভিধ ৷৷ একদারে চতুশ্চক্রণ নবীননীর-

(मार्श्रमः । बाज्रीकनार्मनः (ख्रयः রহিত বনমাল্যা।। দ্বারদ্বে চ-তুশ্চক্রণ গোষ্পাদেন সমশ্বিত। রঘুনাথাভিধণ জ্ঞেয়ণ বেষ্টিতণ ব-নমাল্যা ৷৷ অতিকুত্র দিচক্রস্ত नवीननीत्रम्था । पिर्वापनश বিজ্ঞেষণ গৃহিণাঞ্চ সুখপ্রদণ ॥ অ-তিক্ষুত্ৰণ দিচক্ৰঞ্চ বনমালা বিভূ-ষিতণ ৷ শ্রীধরণ দেবি বিজ্ঞেষণ শ্রী-अम॰ गृहिगा॰ मम। ॥ त्रृवक्ष वर्जु-লাকার রহিত বনমালযা। দ্বি-চক্রণ স্ফুটনতান্ত জ্বেশ দানো-দরাভিধণ।। মধ্যমণ বর্ত্ত্বাকারণ षिচক্র॰ বাণ বিক্ষত । রণরামা-ভিধ° জ্ঞেষ॰ শরতূণ সমন্বিত॰ ॥ ठजूमं भठकः अन्तकः नवीनकनम-প্রভণ। অনন্তাখ্যঞ্চ বিজ্ঞেয়ণ চতু-ৰ্বৰ্গফল প্ৰদেণ্য মধ্যমণ সপ্তচক্ৰঞ্চ ছত্র তূণ সমন্বিতং। রাজরাজেশ্বরং জ্ঞেয় রাজসম্পৎকর নৃগা ।। চক্রাকার দিচক্রঞ্ব সঞ্জীক জ-লদপ্রত । সগেষ্পদ মধ্যমঞ্ विटब्बय॰ मधुमृमन॰ 11 मूमर्गन-ক্ষৈকচক্রণ গুপ্তচক্রণ গদাধরণ। দিচক্রণ হয়বক্ত্রাভণ হয়গ্রীবণ প্রকীর্ত্তিত ॥ অতীববিস্তৃতাস্য-🍄 দিচক্রণ বিকটণ সভি। নর-

সি হাভিধ জ্ঞেয় সদ্যো বৈরা-গ্যদ॰ নৃণা॰ ৷৷ দ্বিচক্রণ বিস্তৃতাস্য-**११ रनमाना ममित्र । नम्मी**नृ-मि॰श् विख्ख्य॰ गृहिना॰ मूथम॰ সদা ৷৷ দ্বারদেশে দ্বিচক্রঞ্চ সশ্রী-कश्च ममः क्कूषे । वामू दावश्च वि-জ্ঞেয়॰ সর্বকাম ফলপ্রদ॰ ॥ প্রদ্য-भ्र° मृच्चठक्रश्न नवीननीत्रमथ्र ७° । শুষিরে ছিজ বহুল গৃহিণাঞ্চ সু-थथान ।। एव हात्क देहकनारा जू शृत्थे यव जू शूक्रवः । महर्सगञ्ज বিজ্ঞেষণ সুখদণ গৃহিণাণ সদা।। অনিরুদ্ধঞ্চ পীতাভ॰ বর্ত্তু লঞ্চাতি-শোভন । সুখপ্রদ গৃহস্থানা প্র-वमिष्ठ मनीविनः॥ ॥ भानवाम-শিলা যত্র তত্র সন্নিহিতো হরিঃ ৷ তত্ৰৈব লক্ষী ৰ্বসতি সৰ্বতীৰ্থ সম-ষিতা।। যানি কানি চ পাপানি বৃশ্বহত্যাদিকানি চ। তানি স-ৰাণি নশ্যন্তি শালগ্ৰামশিলাৰ্চ-নাৎ ৷৷ ছত্রাকারে ভবেদ্রাজ্যণ বর্তুলে চ ভবেৎশ্রিষঃ। দুঃখঞ্চ শকটাকারে শূলাগ্রে মরণ ঞ্র-ব°।। বিক্বতাস্যে চ দারিদ্র্যণ পি-ঙ্গলে হানি রেব চ। লগ্নচক্রে ভ-विकानि विनीत्व गत्रवः अन्वः॥ বত দান প্রতিষ্ঠা চ আদ্ধঞ্

দেবপূজন ৷ শালগ্রামশিলাযা-रेन्ठवाधिश्राना अगखक ॥ म স্নাতঃ সৰ্বতীৰ্থেষু সৰ্বযজ্ঞেষু দী-ক্ষিতঃ। সৰ্বদানে চ যৎপুণ্য॰ প্ৰা-निकित्ग जूत खथा।। मर्वराद्धियू তীর্থেষু ব্রতেম্বনশনেষু চ। পাঠে চতুর্ণাণ বেদানাণ তপাসাণ করণে সতি ।। তৎপুণ্য[,] লভতে নূন**ু**॥ শानवार्यभागकिना । भान-গ্রাম শিলাতোষণ নিত্যণ ভুঙ্কে চ या न तः ॥ मूरतिष्मञ्जः श्रमानः জন্ম মৃত্যু জরাহরণ ৷ তস্য প্রশক্ষ বাঞ্ছন্তি তীর্থানি নিখিলানি চ॥ জীবন্মকো মহাপূতোপ্যন্তে যা-তি হরেঃ ≲দ°। তত্তৈব হরিণা∥ সার্দ্ধ মসংখ্য প্রাক্তত লয় ।। পশ ন্ত্যেব হি দাস্যেব নিযুক্তো-माम्यकर्मानि । यानि कानि ह পাপানি ব্ৰশ্বহত্যাদিকানি চ 11 ত॰ দৃষ্ট্ৰা চ ভিষা ষান্তি বৈনতেষ মিবোরগাঃ। তৎ পাদপদ্ম রজ-সা সদ্যঃ পূতা বসুন্ধরা ॥ পুংসাং লক্ষণ তৎ পিতৃণাণ নিস্তরেত্তস্য জন্মনি। শালগ্রামশিলাতোয়ে মৃত্যুকালে চ যে। লভেৎ ॥ স-ৰ্ষপাপ বিনিমুক্তো বিষ্ণুলোকণ স গচ্ছতি। নিৰ্বাণ যুক্তিণ লভতে

কর্মভোগাদ্বিমূচ্যতে ।। বিষ্ণুপা-দপ্রলীনশ্চ ভবিষ্যতি ন সংশ্-यः। শालधार्मालाः धृषा मि-থ্যাবাক্যু বদেকু যঃ।। স যাতি कृर्याम॰ खुक यावरेष बन्नत्ना वयः। শালগ্রামশিলা ধৃদ্বা স্বীকার যো ন পালযেৎ ॥ স প্রযাত্যসি-পত্রঞ্চ লক্ষ মম্বস্তরাবধি। তুলসী-পত্র বিচ্ছেদ॰ শালগ্রামণ করো-তি ষঃ ৷৷ তদ্য জন্মান্তরে কান্তে স্ত্রীবিশ্লেষো ভবিষ্যতি। তুলসী-পত্র বিচ্ছেদ॰ শঙ্খ॰ যো হি করো-তি চ ॥ ভার্য্যাহীনো ভবেৎ সো-পি রোগী চ সপ্তজন্মসূ। শাল-গ্রামঞ্চ তুলসীং শঙ্কাঞ্চৈকত্র এব চ ৷৷ যো রক্ষতি মহাজ্ঞানী স ভবেৎ শ্রীহরিপ্রিয়ঃ। ইতি ব্রহ্ম-বৈবৰ্ত্তে প্ৰক্ষতিখণ্ডে ১৯ অধ্যাষঃ ॥ 🕸 ॥ শূদ্রাণা॰ তৎপূজনে ২ন-ধিকারে। যথা । বিপ্র ক্ষত্রিয় বৈ-শ্যানা শালগ্রামশিলার্চনে ৷ অধিকারো ন শূদ্রাণাণ্ছরে রচ্চা-ৰ্চ্চনে তথা।। ইতি তত্ৰৈব জন্মখ-८७ २३ अशायः ॥ 🕸 ॥ भान-গ্রামে সদা বিকোঃ স্থিতি স্তৎ-পূজনে বিশেষশ্চ যথা। ভূমি রু-বাচ। উক্তা যাঃ প্ৰতিমাঃ সৰ্বাঃ

সুবর্ণাদি বিনির্মিতাঃ। তাসু তি-श्रेमि म्बामू भावधारम ह मर्बेमा । কতি পূজ্যা গৃহাদৌ চ অবি-শেষস্ত পূজনে । বিশেষো বা ভবেত্তমে রহস্য বদ মাধব ॥ वतार উवाठ । गृटर निक्रघर নাৰ্চ্য্য শালগ্ৰামদ্বয তথা। ছে চক্রে দারকাযাস্ত নার্চ্যা সূর্য্য-দ্বয়ণ তথা ৷৷ শালগ্রামশিলা ভগা পূজনীয়া সচক্রকা । খণ্ডিতা স্কুটিতা বাপি শালগ্ৰামশিলা^{||} শুভা ॥ শিলা দ্বাদশ বৈ দেবি শালগ্রাম সমুদ্ভবাঃ । বিধিবৎ পূজিতা ষেন তদ্য পুণা বদামি তে।। কোটি দ্বাদশ লিঙ্গৈস্ত পূ-क्रिटिः सर्वश्रहेकः। यद माद षामभ करेन्नञ्ज मिरनरेनरकन छ-स्ट्रायः भूनः भूक्रायस्का শালগ্রামশিলাশত ৷ তৎফল **নৈব শক্তোহ• ব**ক্তু• বর্ষশতৈ রপি 🎚 ॥ भानगुरमा न स्भृकेदग्रा शैन-বলৈ ৰসুদ্ধরে। ত্রী শূডকর সং-স্পার্শে। বজুস্পর্শাধিকো মতঃ ॥ মোহাদ্যঃ সংস্পৃশেৎ শূডো যো ষিদ্বাপি কদাচন। স পতেম্বকে रघादत यावनावृ ज मन्क्षव ।। यनि ভক্তি ভবৈত্তস্য স্ত্রীণা• বাপি ব-

সুন্ধরে। দূরাদেবাস্পৃশন্ পূজা॰ কার্যেৎ সুসমাহিতঃ ৷৷ চরণামৃত পানেন সর্বপাপক্ষযো ভবেৎ । অভক্যু শিবনির্মাল্য পত্র পু-ষ্পা॰ ফল• জল•।। শালগ্রামশিলা-যোগাৎ পাবন তদ্ভবেৎ সদা ৷ দদ্যান্তক্তাযযোদেবি শালগ্রাম-শিলাণ নরঃ ৷৷ সুবর্ণসহিতাণ সি-ন্ধুঃ সপৰ্বত বনাকরা। সসমুজা ভবেদতা সৎপাত্রায বসুন্ধরে॥ भानवार्यभनायाञ्च योना गु-দ্যাটযেৎ ক্ষচিৎ। বিক্রেতা ক্রয কর্ত্ত। বা নরকে বৈ পতেৎ ধ্রুব॰॥ পূজাফল॰ ন শক্যেত বক্তু॰ বর্ষ-শতৈ রপি। এতত্তে কথিত গুহুণ প্রতিমা স্থাপন প্রতি ৷৷ শালগ্রা-মে বিশেষশ্চ লিঙ্গাদীনাঞ্চ যো ভবে । পृজनामि विधि भगि কিমন্যচ্ছোতু মিচ্ছসি ॥ ইত্যাদি বারাহে রৌপ্য সৌবর্ণার্চ্চা স্থা-शन नामाशायः ॥ 🗰 ॥ ज्य শালগু ামশিলা মূর্তিনিরূপণ চতুৰিংশতি মূৰ্ভিঃ স শালগ্ৰাম-শিলাञ्चिज्ञः। दात्रकामि गिला-সংস্থো ধ্যেয়ঃ পূজ্যো ২পি বা হরিঃ।। মনসো ২ভীপ্সিত॰ প্রা-প্য দেবো বৈমানিকো ভবেৎ ৷

নিদ্বামো নুক্তি মাপ্নোতি মূত্রী र्शाय॰ खवन् ज्ञुतन् ॥ इंजािम গারুডে মূর্ত্তামূর্ত্তধ্যান ৪৪ অ-ধ্যা যঃ ৷৷ গু ৷৷ অপি চ ৷ শগু চক্র গদা পদ্মী কেশবাখ্যো গদাধরঃ । माज कितामकी ठळ मधी নারায়ণো বিভুঃ।। সচক্র শঙ্খাব্জ গদো गांधवः शांभाधावः। शमांख म अ हकी वा शावित्नारहंग ग-**দাধরঃ।। পদ্ম শুছাসি গদিনে বি-**কুৰপায় বৈ নমঃ। শুছাজ চক্ৰ গদিনে নगः मक्संगाय ह।। সুশश्च স্গদাজাৰিধৃতে প্ৰদ্যায় মূৰ্ত্বে। নমো হনিরুদ্ধায় গদা শঙ্খাব্রা-বি বিধারিণে ৷৷ নমে৷ গদাসি শ-খাজ যুক্ত ত্রৈবিক্রমায চ। সাসি क्लिरगानकी शब्द गित्र वापन-मूर्खरय ।। চক্ৰ†জ শ**ध्र**गिन्दिन न-মঃ শ্রীধর মূর্ত্তযে। স্বষীকেশ সা-वि शका भुध श्रीष्ट्रिक्ट्या नमः॥ সাজ শন্ত গদা চক্ৰ পদ্মনাভ-স্বক্রিণে। দামোদরঃ শুখ্য গদা চক্ৰ পদ্মিন্নমো নমঃ ৷৷ সাবি শঙ্খ গদাজাৰ বাস্দেবাষ বৈ নমঃ। শৃখাজ চক্র গদিনে নমঃ সম্বর্য-भाष है।। माख्य मध्य भाग हिन পুরুষোত্তম মূর্ভ্রযে। নমো হধো-

ক্ষজ ৰূপায় গদা শুখানি পত্মি-নে ॥ নৃসি॰হ মূর্ত্তমে পতা গদ। শখাজ ধারিণে। পদাজ শখ गिष्टिन नमाञ्जूहुाठ मूर्डरय ॥ সশুগু চক্রাজ গদ জনার্দ্দন মি-হানমে। উপেন্দ্রণ সগদ সাবিণ পদ্ম শঙ্খিন্নমো নমঃ ৷৷ সুচক্রাব্জ गना मध युक्ताय रुतिमृर्वत्य । সগদাব্জাবি শখা্য নমঃ শ্রীরুক্ত-মূর্ত্তযে ।। শালগ্রাম শিলা দার গত লগ ছিচক্রপুক্। শুক্লাভো বাসুদেবাখ্যঃ সো ২ব্যাদ্বঃ শ্রীগ-**দাধরঃ।। লগ্ন দিচক্রো রক্তাভঃ** পূৰ্বভাগে ত পুদ্দলঃ। সন্ধর্যণোথ প্রদামঃ সূক্ষ চক্রস্ত পীতকঃ ॥ সদীর্ঘ শুষির ছিদ্রো যো ২নিক্ল-क्षञ्च वर्जुनः। नीतन। दाति क्रि-রেখশ্চ অথ নারাষণো হসিতঃ ৷৷ মধ্যে গদাক্কতী রেখা নাভি চক্র মহোনতঃ। পূথু চক্তো নৃসিংহো-থ কপিলো ২ব্যাৎ ত্রিবিন্দুকঃ।। অথ বা পঞ্চিন্দু স্তৎপূজন এ-ক্ষচারিণঃ । বরাহঃ শক্তিলিঙ্গে। ২ব্যাদ্বিষমদ্ব চক্রকঃ।। নীল স্ত্রি রেখঃ ফূলোথ কূর্ম্মসূর্ত্তিঃ স বিন্দু-মান্। রুক্ষঃ স্বর্ত্ত্বাব্রতঃ পাতু বোগত পৃষ্ঠকঃ।। শ্রীধরঃ পঞ্চরে-

খো হব্যাদ্বন নালী গদাম্বিতঃ। বা-মনো বর্ত্তুলো হুস্বো বামচক্রঃ সু-द्रिश्वद्रः ॥ नानावर्णा श्रमकमूर्वि ৰ্নাগভোগী স্বনস্তকঃ। স্থূলো দা-भाषद्या नीत्व। मत्था ठळः मनी-লকঃ ।। সংকীর্ণ দ্বারকো বো ২-ব্যাদথ বন্ধা সুলোহিতঃ ৷ সদীর্ঘ-রেখঃ শুষির একচক্রাদ্বুজঃ পৃথুঃ॥ পৃথুচ্ছিদ্ৰ স্থলচক্ৰঃ ক্লফো বিষ্ণুশ্চ विन्तृव । इये शीरवा १ सू माका तः পঞ্চরেখঃ সকৌস্তভঃ ॥ বৈঙ্গপ্তে নৃণিরত্নাভ একচক্রাযুজাে ২সিতঃ । म॰ मा भीर्या श्रमुकाकारता ভাররেখ**শ্চ পাতৃ বং ॥ বামচক্রো** লফ্**রেখং শ্যামো বো ২ব্যাজিবি-**ক্রথঃ। শালগ্রামে দারকাষাণ স্থি-তাৰ গদিনে নমঃ।। একেন লক্ষি-তোষো ২ব্যাকাদাধারী সুদর্শনঃ । একদারে চতুশ্ত্রু॰ বনমালা विज्यिकः ॥ अर्गतिथा नमायुकः গোষ্পদেন বিরাজিত । কদম্ব अসু माकाর विकासी नातायण विषुः ।। লন্ধীনারায়ণো দ্বাভ্যাণ ত্রিভি মূর্ত্তি স্ত্রিবিক্রমঃ। চতুর্জু শ্চ-তুব্য হো বাস্দেবশ্চ পঞ্চিঃ।। প্রান্থঃ ষড্ভি রেব স্যাৎ সম্বর্ষণ ইত স্ততঃ। পুরুষোত্তনো ২ইজিঃ

স্যান্নবব্যুহো নবোন্নতঃ ।। দশা-বতারো দশভি রনিরুদ্ধো ২বতা-দথ। দাদশাত্মা দাদশভি রত উদ্ধু মনস্তকঃ।। বিষ্ণো মূ র্ত্তিময়ণ স্তোত্রণ যঃ পঠেৎ স দিবণ ব্রজেৎ । ইতি গারুডে ৪৫ অধ্যাযঃ।।ঞ্চা। অপরঞ্চ। হরিরুবাচ। নির্লক্ষণা শুভা স্যাচ্চ চক্ৰান্ধিত শিলাৰ্চ্চ-ना । जाती मूमर्गता मूर्खि र्न-শ্বীনারায়ণো ২পরঃ ৷৷ ত্রিচক্রো ২সাবচ্যুতঃ স্যাচ্চতৃশ্ব্ৰে শ্চত্-ভূজঃ। বাসুদেবশ্চ প্রদায় স্ততঃ সঙ্কর্ষণঃ স্মৃতঃ ।। পুরুষোত্তমো ষ্টমঃ স্যান্নবব্যুহো দশাত্মকঃ। একাদশো খনিরুদ্ধঃ স্যাদ্ধাদশো দাদশাত্মকঃ।। অত উৰ্দ্ধ মনস্তঃ माञिक द्वकामिरकः क्रमः । সুদর্শনাদ্যা লফিতাশ্চ পূজিতাঃ সৰ্বকামদাঃ ৷৷ শালগ্ৰামশিলা ষত্র দেব দারবতী ভব। উভযোঃ সঙ্গমো যত্ৰ তত্ৰ মুক্তি ন সংশযঃ ॥ ইতি গাৰুডে ৬৫ অধ্যায়ঃ॥ শালগ্রামঃ পু॰ ক্ষেত্রবিশেষঃ ৷ যথা। ধরণ্যবাচ। ভগবন্ দেব-দেবেশ শালক্ষায়নকো মুনিঃ ৷ কি॰ চকার তপঃ স্বর্ভব ক্ষে-ত্রে বিমুক্তিদে ।। বারাহ উ-

শালগ্ৰা

বাচ। অথ দীর্ঘেণ কালেন স ৠষিঃ সংশিতব্ৰতঃ । তপ্যমা-নো যথান্যায় পশ্যতে শাল মুত্তমণ।। বিশ্রামণ সরুতে তত্ত ডফুকামো ২থ মাণ মুনিঃ। মা-যধা মম নূঢাত্মা শক্তো দ্রষ্টুণ ন মা মভূৎ ॥ ততঃ পূৰ্বেণ পা-র্মেন তদ্য শালদ্য সৃন্দরি। বৈশাখ্যাস দাদশ্যা মদ্দর্শন মুপাগতঃ।। দৃষ্টা মাণ্তত্র স মু-নি স্তপন্ধী সংশিতব্ৰতঃ । তুষী-व दिक्तिकः मृटिकः थानगं ह পুনঃ পুনঃ ॥ ততো ২হ স্তুয-মানো বৈ ঋষিসুখ্যেন সুন্দরি। প্রাপ্তো ২ঙ্গ্মি পরমাণ প্রীতিণ ত-মবোচণ ততো ঋষিণ ।। তত্ৰা শ্ৰ-মে মহাভাগ স্থিয়া ত্বণ তপসাণ-নিধে । পুত্রেণ পরমপ্রীতে। মৎক্ষেত্রে মৎসমে ভব ৷৷ অ-ন্যচ্চ গুহু° বক্যামি শালস্কায-ন তচ্ছ গু। তব প্রীত্যা প্রবক্ষ্যা-মি ষেটনতৎ ক্ষেত্র মুক্তম॰।। শালগ্রাম মিতি খ্যাত তরি-বোধ মুনে শুভ । ষোষ বৃক্ষ স্থুয়া দৃষ্টঃ সোহ মেব ন সংশ-যঃ।। এতৎ কোগি ন জানাতি বিনা দেবে মহেশ্বর ৷ এবং ত-

শৈ বরণ দ্বা শালক্ষাযনকাষ বৈ ।। পশ্যত স্তম্য বসুধে তত্ত্র-বান্তর্হিতো ২ভবণ। বৃক্ষণ দক্ষি-গতঃ ক্ষরা জগাম স্বাশ্রমণ মুনি ।। মম তদ্যোচতে স্থানণ গিরিক্-ট শিলোচ্চযে। শালগ্রাম ইতি খ্যাতণ ভক্ত সণসারমোক্ষণণ।। ইতি বারাহে শালগ্রামক্ষেত্রমা-হাত্ম্যবর্ণন নামাধ্যাম্বঃ।।

শালগ্রামগিরিঃ পু॰ শালগ্রা-মোৎপাদকপৰ্বতঃ। যথা। বা-রাহ উবাচ। কথ্যিষ্যামিতে গু-হু॰ শালগ্রাম মিতি শ্রুত । ত-স্মিন্ ক্ষেত্রে হরে। দেবে। মু স্বৰপেণ সংযুতঃ ৷৷ শালগ্ৰামে গিরৌ তন্মিন্ শিলাৰূপেণ তি-ষ্ঠতি। অহ তিষ্ঠামি তত্ত্বৈব গিরিকপেণ নিত্যদা ।। তব্মিন্ শিলাঃ সমগ্রাস্ত মৎ স্বৰূপা ন সংশযঃ। পূজনীযাঃ প্রযত্ত্বেন কিং পুন শ্চক্রলাঞ্ছিতাঃ।। লি-ঙ্গৰূপেণ তু হর স্তত্র দেবালযে गिरतो। निवनाजाः निन। ख-ত্র চক্রনাভা স্তথা শিলাঃ ॥ সোমেশ্বরাধিষ্ঠিতস্ত শিবৰূপো গিরিঃ স্মৃতঃ। শালগ্রামণিরি विकृ तर लाग्यताधियः ॥

ত্তযোঃ পৰ্বত্যো ৰ্যো বৈ শিলা বিফুশিলাভিধাঃ ৷ রেব্যা চ ক্তুত পূৰ্বণ তপঃ শিব সুতুষ্টিদণ ।৷ মম ত্বৎ সদৃশঃ পুত্রো ভূযাদিতি বি-ধো তয়া। অহণ কস্যাপি ন সূতঃ কিন্ধরিষ্যামি চিন্তযন্যা রেবাযাস্ত वरता (पर खुवनार॰ मृगलाञ्चन। নিশ্চিত্যৈব° তদা প্রোক্তণ প্রস-মেনান্তরাত্মনা।। লিঙ্গৰূপেণতে দেবি গজানন পুরস্কৃতঃ। গর্ভে " তব বসিষ্যামি পুত্রে। ভূম্বা শিব-প্রিয়ে ।। মম ত্ব মপরা মূর্ত্তিঃ খ্যা-তা জলম্যী শিবা। শিবশক্তি বিভেদেন আব। মেৰুত্ৰ সংস্থি-তৌ ॥ এব॰ দত্তবরা রেব। মৎ সামিধ্য মিহাগতা। রেবাখণ্ড মিতি খ্যাত ততঃ প্রভৃতি গোপ-তে॥‡॥ গণ্ডক্যাপি পুরা তপ্ত॰ ব-ৰ্যাণা মযুত বিধে। শীৰ্ণপৰ্ণাশন রূষা বাষ্ভক্ষাপ্যনন্তরণ।। দিব্যং বর্ষশত তেপে বিষ্ণু চিন্তযতী 🏽 তদা। ততঃ সাক্ষাজ্জগন্নাথো হ-রি র্ভক্তজনপ্রিয়ঃ।। উবাচ মধুরণ বাক্য॰ প্রীতঃ প্রণত বৎসলঃ। গণ্ডকি ত্বা॰ প্রদামোত্মি তপসা বিস্মিতে ২নঘে ৷৷ অনবচ্ছিন্নযা শক্ত্যা বরু বর্ষ সূত্রতে। কি॰

দেয়ণ তদ্বদস্বাশু প্রীতোস্মি বর-वर्गिन ॥ भएकाि भूदता मृख्री শুখ্য চক্র গদাধরণ। দণ্ডবৎ প্রাণ-তা ভূত্বা তত স্তোত্রণ প্রচক্রনে ॥ **जट्या (मर्व गया मृट्छ। मूर्न**्मी (यागिना मि। द्वरा गर्व निष॰ मृ-**ঊ॰ জগৎ স্থাবর জঙ্গম॰।। ততে**। হিমাংশে সা দেবী গণ্ডকী লোক তারিণী। প্রাঞ্জলিঃ প্রণতা ভূত্বা মধুর বাক্য মত্রবীৎ ৷৷ যদি দেব প্রসমোসি দেখো মে বাঞ্ছিতো বরঃ। মন গর্ত্তগতো ভূত্বা বিফো মৎপুত্ৰতা বজ ৷৷ ততঃ প্ৰসন্মে ভগবান্ চিন্তযানাস গোপতে। কি॰ যাচিত নিম্নগ্যা নিত্য মৎ-সঙ্গলুকাযা।। দাস্যামি যাচিত॰ যেন লোকানা ভবমোক্ষণ । ইত্যেব° ক্লপয়া দেবে৷ নিশ্চিত্য মনসা স্বয়ণ II গণ্ডকী মভবৎ প্রীতঃ শৃণু দেবি বচো মম। শা-লগ্ৰামশিলাৰূপী তব গৰ্ৱগতঃ সদা ॥ তিষ্ঠামি তব পুত্ৰত্বে ভ-ক্তানুগ্রহ কারণাৎ। মৎসামি-ধ্যান্নদীনাণ ত্ব মতিশ্ৰেষ্ঠা ভবি-ষ্যদি ৷৷ দর্শনাৎ স্পর্শনাৎ স্না-नाथ भानाटेक्ठवावगाइनाथ। इ-রিষ্যসি মহাপাপণ বাজ্মনঃ কাষ

সম্ভবণ । ইতি বারাহে সোমেশ্বরাদিলি সমহিমাবমুক্তিক্ষেত্রত্রিবেণ্যাদিমহিমানামাধ্যায়ঃ ।।
শালস্কটন্ধটঃ পুণ সুকেশীরাক্ষসঃ । স বিদ্যুৎকেশিভার্য্যা শালস্কটন্ধটাবাঃ পুক্রঃ । ইতি বামনপুরাণণ ।।

শালস্কাযনঃ পু॰ মুনিবিশেষঃ।। নন্দী। ইতি মেদিনী॥ শালস্কাযনজীবসূঃ স্ত্রী ব্যাস-

মাতা। ষথা। ব্যাসস্যাস্থা সত্য-বতী বাসবী গন্ধকালিকা। যো-জনগন্ধা দাসেয়ী শালস্কাযন-জীবসূঃ।। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

শালক্ষঃ পু॰ মুনিভেদঃ। যথা।
বশিষ্ঠো ২ৰুন্ধতীনাথো মৈত্ৰাবৰুণি রিত্যপি । শালাভুরীযঃ
শালক্ষি দাক্ষীপুক্তস্ত পাণিনিঃ
।। ইতি জটাধরঃ।।

শালজঃ পু॰ শালমৎস্যঃ। যথা । শালঃ শালজ গর্জকৌ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শালনির্বাসঃ পু॰ সর্জরসঃ।ধনা॥
ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। শালনঃ২ সর্জঃ ৩সর্জরসঃ৪।ইতি
রত্নমালা।। ধূনকঃ৫ বব্লিভঃ
৬ সর্জ্জমণিঃ ৭। ইতি ত্রিকাণ্ড-

শেষঃ 11

শালপণী স্ত্রী বৃক্ষবিশেষঃ। শা-লপাণী ইতিভাষা।তৎপৰ্য্যায়ঃ । मूमला २ मूथली ७ श्रिता 8 সৌম্যা ৫ সমুদা ৬ গুহা ৭ ধ্ৰুৱা ৮ বিদারিগন্ধা ১ অণ্শুমতী ১০ मूलर्गिका >> भीर्षमृता >२ भीर्घ-পত্রিকা ১৩ বাতত্মী ১৪ পীতিনী ১৫ তম্বী ১৬ সুধা ১৭ সৰ্বানুকা-রিণী ১৮ সোফদ্মী ১৯ সুভগা ২০ দেবী ২১ নিশ্চলা ২২ ত্ৰীহি-পৰ্ণিকা ২৩ সুমূলা ২৪ সুৰূপা ২৫ সুভপত্রিকা ২৬ সুপণী ২৭ শালিপত্রী ২৮ শালিদলা ২৯। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। বিদারী ৩০ সালপণী ৩১। ইত্যমরটীকা-যা॰ ভরতঃ ।। অস্যা গুণাঃ । গ্রা-হিত্ব°। কফ পিত্ত নাশিত্বঞ্চ । ইতি রাজবল্লভঃ ॥ তিক্তম্বণ। গুরুত্বণ। উক্তত্বণ। বাতদোষ বি-ষমজ্ব মেহার্শঃ শোক সন্তাপ নাশিত্বক্ষ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। অপি চ। শালপণী স্থিরা সৌ-ম্যা ত্রিপনী পীবরা গুহা। বি-मातिगन्ना मौर्या<u>ष्</u>यु मी र्यश्वा॰-শুমত্যপি ৷৷ শালপণী গর চ্ছদি জ্বর শ্বাসাতিসারজিৎ। শোষ

দোষ ত্রম হরী বৃংহণ্যক্তা রসা-যনী।। তিক্তা বিষহরী স্বাদুঃ ক্ষ-ত কাস ক্রমি প্রবুৎ। ইতি ভাব-প্রকাশঃ।।

শালভঞ্জিকা স্ত্রী বেশ্যা।।কা-ষ্ঠাদিনির্মিতপুত্রিকা। ইতি জ-টাধরঃ।।

শালভঞ্জী স্ত্রী কাণ্ঠাদিনির্মিত-পুত্রিকা। ইতি হেমচন্দ্রঃ ॥

শালবঃ পু॰ লোধুঃ। ইতি শক-রত্নাবলী।।

শালবেষ্টঃ পু॰ শালনিৰ্যাসঃ। ইতি ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ।।

भाजमातः पू॰ फ्रमः॥ हिक्रूः। ইতিবিশ্বः॥

শাল। দ্রী গৃহং।ইত্যমরঃ।। বৃক্ষস্য ক্ষন্ধশাখা।। গৃহৈকদে-শঃ।ইতি মেদিনী।।

শালাকী পু॰ অস্ত্রবৈদ্যঃ ৷৷ না-পিতঃ ৷৷ শেলধারী ৷ ইতি কেচিৎ ৷৷

শালাকী স্ত্রী পুত্তলিকা। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শালাজিরঃ পু॰ ক্নী সরাবঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ শব্দরত্নাবলী চ ॥ শালাঞ্চিঃ স্ত্রী শাকভেদঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ भानानी खी विषाती। ইতি শব্দ-तन्नावनी॥

भानामृगः भू भृगानः। ইতি श्रावनी।।

শালার ক্লী হস্তিনখঃ ৷ সো-পান ৷৷ গক্ষিপঞ্জরঃ ৷ ইতি মে-দিনী ৷৷

শালাবৃকঃ পু॰ বানরঃ।। সন্ধুরঃ
।।শৃগালঃ। ইত্যমরঃ।। মৃগঃ।
ইতি শব্দরত্নাবলী।। বিডালঃ।
ইতি রাজনির্ঘনীঃ।

শালिः পু॰ গন্ধমার্জারঃ। ইতি त्मिनी ॥ कनमानिधानाः ॥ ষষ্টিকাদিধান্য । ইত্যমরঃ ॥ তৎপর্য্যায়ঃ। মধুরঃ ২ রুচ্যঃ ৩ ৰীহিশ্ৰেষ্ঠঃ ৪ নৃপপ্ৰিয়ঃ ৫ ধা-ন্যোত্তমঃ ৬ কৈদারঃ ৭ সুস্মা-রকঃ ৮। পুস্তকান্তরে মধুরস্থা-त कलम देखि शार्वः। म जू দশবিধঃ। যথা। রাজান্ন ষষ্টিক সিতেতর রক্ত মুগু স্থলাণু গন্ধ তিরিযাদিক শালিস॰জ্ঞাঃ। ত্রী-হি স্তথেতি দশধা ভূবি শালযঃ সূ্য স্তেষা ক্রমেণ গুণ নাম গণ वरीमि ॥ ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ অস্য গুণাঃ। শালফো মধুরাঃ শীতা লঘুপাকা বলাবহাঃ।

পিত্তমা শ্চানিল কফাঃ মিশ্বা বন্ধাল্পবর্চ্চদঃ ৷৷ ইতি রাজবল্লভঃ ॥ 🕸 ॥ ञथ भानिधानानकन॰ । কণ্ডনেন বিনাশুক্লা হৈমস্তাঃশা-লয়ঃ স্মৃতাঃ ॥ 🗱 ॥ শালীনাং না-মানি যথা। ব্লক্তশালিঃ সকলমঃ পাञ्चः मन्नामृठः। সুগন্ধकः কর্দমকো মহাশালিশ্চ দূযকঃ।। পুষ্পাওকঃ পুঞ্জীক স্তথা মহিষ-गखकः । मीर्यम्कः काक्ष्नत्कः। श्याता त्नाधुभूष्णकः ॥ हेणा-দ্যাঃ শালযঃ সন্তি বহুবো বহুদে-শুজাঃ ৷৷ ৠ ৷৷ অথ তেষাণ গুণাঃ ৷ শালযো মধুরাঃ স্নিন্ধা ৰল্যা ব-कान्नवर्ष्ठमः । क्याया नयता ৰুচ্যা স্বৰ্যা। বৃষ্যাশ্চ বৃংহণাঃ ॥ অল্পানিল কফাঃ শীতাঃ পিত্তসা मृजना खशा भानरमा मक्षजृ-জাতাঃ ক্যাযা লঘুপাকিনঃ।। मरु गृब भूतीयान्छ ककाः स्न-যাপকর্বণাঃ। কেদারা বাত পি-ভুমা গুরুবঃ কক শুক্রলাঃ ।৷ ক-याया जन्नवर्ष्ठका मधुतान्ह वना-বহাঃ। কেদারাঃ রুফক্ষেত্রজা উপ্তাঃ। স্থলজাঃ सामवः शिख কফন্সা বাত বহিদাঃ।৷ কিঞ্চিত্তি-ক্তাঃ ক্যাধাশ্চ বিপাকে কটুকা

অপি । স্থলজা অরুষ্টভূমিজাঃ স্বয়ণ জাতাঃ। বাপিত। মধুরা ব্যা। বল্যাঃ পিত্ত প্রণাশনাঃ॥ **ट्रिया**ना *ठान्नवर्ष्ठकाः क्याया গুরবে। হিমাঃ। বাপিতাঃ ক্লফ্ট-ক্ষেত্রে অরুফক্ষৈত্রে চ। বাপি-তেভ্যো গুণৈঃ কিঞ্চিদ্ধীনাঃ প্রোক্তা অবাপিতাঃ।। রুষ্টক্ষে-ত্রে অরুষ্ট ক্ষেক্রেচ। রোপিতা-স্তু নবা বৃষ্যাঃ পুরাণা লঘবঃ স্মৃ-তাঃ । রোপিতারোপিতা ভূষঃ শীঘুপাকা গুণাধিকাঃ ৷৷ ছিন্নৰ-ঢা হিমা ৰূক্ষা বল্যাঃ পিত্ত ক-ফাপহাঃ। বদ্ধবিট্কাঃ ক্যাযা-শ্চ লঘব শ্চাল্পতিক্তকাঃ॥ 🗱॥ অথ রক্তশালে র্গুণাঃ ৷ রক্তশা-লি র্বর স্তেফু বল্যো বর্ণ্য স্ত্রিদো-ষজিৎ। চক্ষ্যো। মূত্রলঃ স্বর্যঃ শুক্রলঃ স্তৃট্ স্বরাপহঃ ॥ বিষ ত্রণ শ্বাস কাস দাহন্দ্রিই পু-ফিদঃ। তত্মাদক্ষান্তর গুণাঃ শা-लट्या मञ्जानयः ॥ तुळ्यानिः माउनथानी इंडि मगधरमर्ग প্রসিদ্ধঃ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। শালিকা স্ত্রী বিদারিকা। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শালিকঃ পু॰ শাকবিশেষঃ। শা- শালীন

ঞ্চা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। শালঞ্চঃ ২ শিতসারঃ ৩ পত্র-কেষ্টঃ ৪ লোহসারকঃ ৫। অস্য গুণাঃ । দীপনত্ব॰ । তিক্তত্ব॰ । প্লীহার্শঃ কফ বাত নাশিত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণীঃ ।।

শালিনীকরণ° ক্লী ন্যগুাবন°। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। তিরস্কার ইতি যাবৎ.।।

শালিপণী স্ত্রী মাষপণী । ইতি রাজনির্ঘণটঃ ।।

শালিপিষ্ট ক্লী স্ফটিক । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

শালিবাহনঃ পুণ রাজবিশেষঃ। স তু শককর্ত্তা বিক্রমাদিত্যশ-ত্রুশ্চ॥

শালিহোত্রঃ পু॰ ঘোটকঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

শালী ত্রি শালাসম্বন্ধিঃ। পদান্তে যুক্তবাচকঃ। যথা। চন্দন চর্ক্তিত নীলকলেবর পীতবসন বনমালী। কেলি চলম্মণিঙ্গওল মণ্ডিত গণ্ডযুগ স্মিতশালী
।। ইতি জ্যদেবঃ ।।

শালী স্ত্রী রুক্জীরকঃ'। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শালীনঃ ত্রি অধৃষ্টঃ। ইত্যমরঃ

लीन

শালোত্ত

॥ भानामयन्त्री ह ॥

শালীনা স্ত্রী মিশ্রেষা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শान् क्री भान्कः। ইতি শক्कः त्रञ्जावनी ॥

শালুঃ পু॰ কষাযদ্ৰব্য॰ ॥ চৌর-কাখ্যৌষধিঃ । ইতি মেদিনী ॥ ভেকঃ । ইতি হেমচন্দ্ৰঃ ॥

শালুকণ ক্লী সমুদাদিমূলণ তৎ পর্য্যায়ঃ । পক্ষশূরণণ ২ শালুকঃ ও শালু ৪। ইতি শব্দরত্নাবলী।। শালুকণ ক্লী সমুদাদিমূলণ ৷ ইত্য-মরঃ ।। জাতীফলণ ৷ ইতি রাজ-নির্যক্টঃ ।।

শাল্কঃ পু॰ মণ্ডুকঃ।ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ।। সমুদাদিমূল॰।ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

শাল্রঃ পু॰ ভেকঃ। ইত্যমরঃ॥ শালেযঃ পু॰ মধুরিকা। ইত্য-মরঃ॥

শালেযা স্ত্রী মিশ্রেযা। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ।।

শালেষ তি শাল্যদ্ভবক্ষেত্র। ইত্যমরঃ।। শালাসম্বন্ধি শাল-সম্বন্ধি চ।।

শালোত্তরীয়ঃ পু॰ পাণিনিমুনিঃ
। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।।

শাল্পলঃ পু॰ শাল্পলীবৃক্ষঃ। ইতি
শব্দরত্বাবলী ।। দ্বীপবিশেষঃ ।
ইতি শব্দমালা ।। তদ্বিরণণ
যথা। অত উর্দ্ধৃণ প্রবক্ষ্যামি শাল্মলো
দ্বালস্য নিবোধত । শাল্মলো
দিগুণো দ্বীপঃ ক্রোঞ্চদীপস্য
বিস্তরাৎ ।। পরিবার্য্য সমুদ্রম্ভ দ্বিমণ্ডোদকণ স্থিতঃ । তত্র পুশ্বিরাচ্চ

জনঃ ৷৷ সত এব সৃদুর্ভিক্ষণ ক্ষ-মা তেজোযুতা হি তে। প্রথ-মঃ সূর্য্যসন্ধাশঃ সুমনা নাম প-ৰ্বতঃ ॥ পীতস্ত মধ্যম স্তত্ৰ শা-তকৌস্তমযো গিরিঃ। নায়া স-ৰ্বসুখো নাম দিবে গ্ৰেষ্টাৰ্যধি সমন্বি-তঃ।। তৃতীয় শ্চৈব সৌবৰ্ণো ভৃ-ঙ্গপত্রনিভো গিরিঃ। স নামা রোহিতো নাম দিব্যো গিরিব-রো মহান্।। সুমনাঃ স্পলো **प्तिनः** मूर्थामर्कः मूर्थामयः। রোহিতস্ত তৃতীযস্ত রোহিণী নাম বিশ্রুতঃ ॥ তত্র রত্নান্য-নেকানি স্বয়ণ রক্ষতি বাসবঃ। প্রজাগতি মুপাদায প্রসম্মে বি-ধিবৎ স্বয়ণ ৷৷ ন তত্ৰ নদ্যো বৰ্ষ-স্বা শীতোফঞ্চৈব তদ্বিধ**া ব**র্ণা-শ্রমাণা বার্তা বা ত্রিষু দীপেষু

বিদ্যতে ৷৷ ন গৃহুণ ন চ দঙ্গেস্তি ঈর্ষাসূষা ভষ তথা। উদ্ভিদান্য-দকান্যত্র গিরি প্রসূবণানি চ।। ভোজন ষড়ুস তত্র তেষা স্বয মুপস্থিত । অধমোত্তমো ন তেয়-স্তি ন লোভো ন পরিগ্রহঃ ।। অ-রোগা বলবস্তশ্চ একান্ত সৃথি-তাঃ প্ৰজাঃ। ত্ৰি॰শদ্বৰ্ষসহস্থানিঃ মানসী॰ সিদ্ধি মাস্থিতাঃ ।। স্বস্ব-मायुः अकाशक धर्माम्बर्याः ठरेश-ব চ। শাষ্মলাদ্যেষু বিজ্ঞেষণ দ্বী-পেষু ত্ৰিষু সৰ্বশঃ ৷ ব্যাখ্যাতঃ শानानामगाना॰ दीशानाम विधिः শুভঃ। পরিমওলস্ত স দ্বীপ শ্চক্র বৎ পরিবেষ্টিতঃ ॥ সুরোদেন সমুদ্রেণ দ্বিগুণেন সমন্বিতঃ । ইতি মৎস্যপুরাণে ভুবনকোষে সপ্তদ্বীপনিবেশনণ নাম ১০০ অ-धायः ॥ 🟶 ॥ जिं । शक्षीत প্রমাণাতু দিগুণেন সমস্ততঃ। সংবেষ্ট্যেক্ষুরসাম্ভোধিং শাল্মলিঃ সংব্যবস্থিতঃ ।। সপ্ত বর্ষাণি ত-ত্ৰৈব তত্ত্ৰৈব স্বলপৰ্বতাঃ । ঋ-জ্বাযতাঃ সুপৰ্বাণঃ সপ্ত নদ্য দ্চ সুব্রতাঃ ৷৷ সমুদ শেচানত শৈচব তৃতীযশ্চ বলাহকঃ। দ্রোণঃ কর্ণ-স্ত মহিষঃ কঙ্গদান্ সপ্ত পৰ্ৰতাঃ॥

ষোনিতোষা বিভৃষ্টা চ চন্দ্ৰা শুক্লা বিমোচনী। নিবৃত্তি শেচ-ত তা নদাঃ স্মৃতাঃ পাপহরাঃ শিবাঃ॥ন তেষু বিদ্যতে লোভঃ -ক্রোধো বা দ্বিজসত্তমাঃ। ন চৈ-বাস্তি যুগাবস্থা জনা জীবস্ত্য-নাম্যাঃ।। যজন্তি সততং তত্ৰ বৰ্ণা বাষু সনাতন ৷ তেষা তস্যাথ সাযুজ্য সাৰপাঞ্চ স-লোকতা ।। কপিলা বান্ধণাঃ ব্রোক্তা রাজান শ্চারুণা স্তথা ৷ পীতা বৈশ্যা স্তথা ক্লফা দ্বীপে रियान् वृषना विकाः ॥ रेडि কৌর্ম্মে ভুবনবিন্যাসে ৪৬ অ-খ্যায়ঃ ॥ 🗱 ॥ মোচরুমঃ। ইতি ब्रुक्गाला ॥

শালালিঃ পু॰ স্ত্রী বৃক্ষবিশেষঃ।
শিমূল ইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ
পিচ্ছিলা ২ পূরণী ৩ মোচা ৪
স্থিরাষুঃ ৫। ইত্যমরঃ॥ দুরারোহা ৬ শালালিনী ৭ শালালঃ
৮। ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ তুলিনী ৯ স্কুলী ১০ রক্তপুস্পা ১১
কণ্টকারী ১২ মোচনী ১৩ ।
ইতি জটাধরঃ॥ চিরজীবী ১৪
পিচ্ছিলঃ ১৫ রক্তপুস্পকঃ ১৬
তুলবৃক্ষঃ ১৭ মোচাখ্যঃ ১৮ ক-

ণ্টকদ্রনঃ ১৯ রক্তোৎপলঃ ২০ त्रगाश्रुष्णः २३ वष्ट्वीर्याः २२ যমক্রমঃ ২৩ দীর্ঘক্রমঃ ২৪ স্থূ-लकलः २৫ मीर्यायुः २७। ইতি त्राक्रनिर्यग्धः ।। क्लेकार्थः २१। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ৷৷ অস্য গুণাঃ ि शिक्तिवन् । वृषाषः । वनाषः । মধুরত্বং। শীতলত্বং। ক্যাযত্বং। नयूषः । त्रिक्षषः । एक क्षिम-বৰ্জনত্বক্ষ। তদ্ৰস গুণাঃ । গ্ৰা-হিত্বণ। ক্ষাযত্বণ। ক্ফনাশিত্বঞ্চ য় তৎপুষ্প ফলঞ্চ তদ্বিধণ। ইতি त्राक्रनिर्यन्धः ॥ भावानी भीठ-লা স্বাদ্ধী রুসে পাকে রসাযনী। লেমল। সিন্ধ বীজা চ বৃংহণী রক্তপিত্তজিৎ।। 🟶।। শালালী-পুষ্প শাকম্ব ঘৃত দৈশ্বব সাধি-ত । প্রদর নাশ্যত্যেব দুঃসা-ধ্যঞ্চ ন সংশযঃ॥ রসে পাকে চ মধুর ক্ষায় শীতল গুরু। কফ পিত্তাসুজিদ্যাহি বাতল চ প্রকীর্ত্তিত ॥ ইতি ভাবপ্রকা-भः ॥

॥ । नत्रकितिभयः। यज শাল্মলিকণ্টকৈঃ পীডান্তে ॥ শালালিকঃ পু॰ রোহিতক্ষৃকঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ भात्रालिनी जी भात्रालिवृकः।

नावानी

ইতি শব্দরত্বাবলী ৷৷

শান্সলিপত্রকঃ পুং সপ্তচ্ছদবৃক্ষঃ 1ইতি রাজনির্ঘন্টঃ 11

শাল্মলিস্থঃ পু॰ গরুডঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শান্দলী স্ত্রী শান্দলিবৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ ৷৷ শলতি দৈর্ঘাৎ দূরণ
গচ্ছতি শান্দলিঃ। শলজগতী
নামীতি মলিণ বৃদ্ধিঃ। দুযো
রিত্যুক্তে স্ত্রীপক্ষে পাচ্ছোণাদীভিন্নপি শন্দলী চ শান্দলি শেচভি কেচিৎ তমতে বিভাষমা বৃদ্বিঃ। শন্দলী রক্তপুস্পা চ কন্দটী চিরজীবিকা ইতি কোষান্তর
মিতি মুন্সটঃ। ইত্যমর্দ্রীকাষাণ
ভরতঃ।৷

শাল্মলী পুণ গ্রহুডঃ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ।।

শাল্মলীকদঃ পুণ্ শাল্মলিবৃক্ষমূলণ ৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷ বিজুলঃ ২
বনবাসকঃ ৩ বনবাসী ৪ মলসঃ
৫ মলহন্তা ৬ ৷ অস্য গুণাঃ ৷
মধুরত্বণ ৷ মলসংগ্রহরোধজ্ঞযকারিত্বণ ৷ শিশিরত্বণ ৷ পিত্ত দাহার্ত্তি শোক সন্ত্রাপনাশিত্বঞ্চ ৷
ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷

भावानीकनः पू॰ जिक्रः कनवृक्तः

শাবর । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।।

শালালীবেন্টঃ পু॰ শালালিনির্যামঃ । শিমুলআঠা ইতি ভাষা ।
তৎপর্যায়ঃ । পিচ্ছা ২ । ইত্যমরঃ ।। মোচরসঃ ৩ শালালঃ ৪
শালালীবেন্টকঃ ৫ । ইতি রত্নমালা ।। মোচসারঃ ৬ মোচনির্যাসঃ ৭ ৷ অস্য গুণাঃ ৷ মোচমাবো হিমো গ্রাহী মিন্ধো বৃযাঃ ক্ষায়কঃ ৷ প্রবাহিকাতিসারাম ক্ফ পিতাসু দাহনুৎ ।।
ইতি ভাবপ্রকাশঃ !।

শাল্পলীবেষ্টকঃ পু॰ শাল্মলীবে-ষ্টঃ। ইতি রত্নমালা ।।

শাল্বঃ পুণ দেশবিশেষঃ। যথা।
শাল্বাস্ত কারসফীযা মরবস্ত
দশেরকাঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।
রাজবিশেষঃ। ইতি মহাভারতণ
শাবঃ পুণ শিশুঃ। ইতি শব্দ-

রত্নাবলী ।। শবসয়ন্ধিনি ত্রি।
মথা। গ্রহণে শাব মাশোচণ বিমুক্তো সোতিকং স্মৃতণ। তবোঃ
সম্পত্তি মাত্রেণ উপস্পৃশ্য ক্রিমাক্রমঃ।। ইতি তিথ্যদিতত্ত্বে ত্রস্বাঙ্পুরাণণ।।

শাবকঃ পু॰ শিশুঃ।ইত্যমরঃ॥ শাবরঃ পু॰ পাপ॰॥ অপরাধঃ॥ লোধুবৃক্ষঃ। ইতি মেদিনী ।।
শবরস্বামিরুভভাষ্যবিশেষঃ ।।
শিবরুভভন্তবিশেষণ্ট ।। শবরসম্বন্ধিনি ত্রি। যথা। সংপূজ্য
' প্রেষণ্ড স্ব্যাৎ দশম্যাও শাবরোৎসবৈঃ। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বও
শাবরভেদাখ্যও ক্লী তামুও। ইতি
হেমচন্দ্রঃ।।
শাবরী স্ত্রী শুকশিষী। ইতি

त्यिनि ॥

শাবরোৎসবঃ পু॰ শ্লেচ্ছক্তোৎ-সবঃ। ষথা। পূজ্যিত্বা মহাফ্ট-माा नवमा विवि खिथा। विमर्क्कारम्भ मन्त्राः जू अवतः সাবরোৎসবৈঃ॥ অন্তঃ পাদো দিবাভাগে শ্রবণস্য যদাভবেৎ 1 তদা সংপ্ৰেষণ দেব্যা দশম্যা[°] শাবরোৎসবৈঃ ॥ রাগিণীভিঃ श्रमात्री जिल्ला क्या कि निर्देश खथा। मध वृद्य निनारेमक मृमदेकः পेटेटर खर्था ॥ श्रेटक र्व रें खु बंशविरेध ली जिलू थे-कीर्ग दिः । धृली कर्मम विरंक-পৈঃ ক্রীড়া কৌতুক মঙ্গ লৈঃ।। ভগ লিঙ্গ বিধানৈশ্চ ভগ লিঙ্গ-श्रगीठरिकः। छग निकापि শ-दिन-४ की ७८२यू त्रवः कनाः॥

পরৈ নিঞ্চিপ্যতে যস্ত যঃ পর• নাক্ষিপত্যপি। ক্রুদ্ধা ভগবতী তস্য শাপ॰ দদ্যাৎ সুদারুণ॰।। ইতি কালিকাপুরাণে উত্তরত-ত্রে ৬০ অধ্যাযঃ।।

শাশ্বত ত্রি নিত্য । ইত্যমরঃ।।
পারিভাষিক শাশ্বত যথা ।
শাশ্বত দেব পূজাদি বিপ্রদান
নঞ্চ শাশ্বত । শাশ্বত সম্ভণা
বিদ্যাঃ সুহুমিত্রঞ্চ শাশ্বত ।।
ইতি গারুডে নীতিসারে ১০৯
অধ্যায়ঃ।।

শাশ্বতঃ পু॰ বেদব্যাসঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শাস্কুলঃ ত্রি মাণসাশী। ইতি হেমচন্দ্রঃ।

শাস্কৃলিক প্লী শস্কৃলিসমূহঃ।
ইত্যমরঃ।

শাস উ ঙ বাশিষি৷ ইতিকবিশাস ল ঙ কল্পক্ৰমঃ ৷৷ আঙ
পূৰ্বা ইতি কেবলানা মন্যপূৰ্বাণাঞ্চ প্ৰযোগ নিরাসার্থণ৷ কিন্তু
ইদণ গুৰুভ্যঃ পূৰ্বেভ্যো নমো
বাক্যণ প্ৰশাস্মহে ৷ ইত্যুত্তরচরিতে প্ৰপূৰ্বোপি দৃশ্যতে ৷ ঙ
আশাসতে ৷ উ আশাসিত্বা আশাস্ত্যা ৷ পঞ্চম স্বরানুবন্ধ সাম-

র্থ্যাৎ ক্ত্বা প্রত্যুষদ্য ন ষপ্ সমাসাভাবাদি তি গোবিন্দভটঃ ।
কিন্তু অদ্য উদন্বস্বফল ছন্দস্যেবেতি ধাতুপ্রদীপঃ । ল ঙ
আশাস্তে শাসু ঙিদ্ধদ ঙে ইত্যত্র জন্দদীয় শাস্তে রেব গ্রহণাদস্যোপধায়া ইকারো ন
স্যাৎ ৷ আশী রিন্টার্থাশ সন ।
ইচ্ছায়া মিত্যন্যে ৷ ইতি দুর্গাদাসঃ ৷৷

भाम छ क नू भामतः । देवि
किर्विक प्रमान । छ भामिषा भिस्कृ । क भामि । नू भाखि ।
भाखि य भाखिया ताख्यः म ममाखि य भाखिया ताख्यः म ममाखि य भाखिया ताख्यः म ममामन की जाख्या । छ० भर्या।
भामन की जाख्या । छ० भर्या।
सामन की जाख्या । छ० भर्या।
सामन की जाख्या । छ० भर्या।
सामन की जाख्या । छ० भर्या।
साखिः ७ । देवि जत्र । । चिवि
भक्त जावनी ।। भाखि । । देवि
किरोधतः ।। ताक मख्युभिः ।।
लिथा ।। भाखि ।। भाखिः । देवि
रामिनी ।।

শাসনহরঃ পু॰ রাজদূতঃ ।। আ-ভ্রাবাহকঃ । ইতি কেচিৎ ।। শাসিতঃ ত্রি ক্রতশাসনঃ । যথা । । সুজীর্ণনন্ধ সুবিচক্ষণঃ সুতঃ
সুশাসিতা স্ত্রী নৃপতিঃ সুসেবিতঃ । সুচিন্তা চোক্তণ সুবিচার্ষ্য
যৎ ক্রতণ সুদীর্যকালেপি ন যাতি বিক্রিযাণ।। ইতি পঞ্চরত্নণ।।
শাসিতা ত্রি শাস্তা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

শান্তা তি শাসনকর্তা। তৎপর্য্যায়ঃ। দেশকঃ ২ শাসিতা ৩
। ইতি ত্রিকাণ্ডদেষঃ।। দ্বৌ ধাতা চ বিধাতা চ পৌরাণৌ জগতঃ পতী। দ্বৌ শাস্তারৌ ত্রিলোকেমিন্ ধর্মাধম্মো প্রকীর্তিতৌ।। ইতি বহ্নিপুরাণে গণভেদনামাধ্যায়ঃ।।

শান্তা পুণ বৃদ্ধঃ। ইত্যমরঃ।। উপাধ্যায়ঃ।। রাজা।। পিতা। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ॥ শাস্তিঃ স্ত্রী শাসনণ। ইতি শব্দ-রয়াবলী॥

শাস্ত্রণ ক্লী নিদেশঃ ॥ গ্রন্থঃ ।
ইত্যমরঃ ॥ স চ গ্রন্থঃ অফীদশ
বিধঃ। তস্য বিবরণ বিদ্যাশব্দে
দ্রুফব্য • ॥ *॥ শাস্ত্রোৎপত্তি র্যথা। মৎস্য উবাচ। তপ শ্চচার
প্রথম মমরাণা পিতামহঃ। আবিভূতা স্ততো বেদাঃ সাক্ষোপা-

ক্রপদক্রমাঃ ৷৷ পুরাণ সর্বশাস্ত্রা-ণা॰ প্রথম॰ ব্রহ্মণা স্মৃত । নিত্য-শব্দময়ণ পুণ্যণ শতকোটি প্রবি-স্তর ।। অনস্তরঞ্চ বক্তেভ্যো বেদা স্তস্য বিনিঃসৃতাঃ। মী-মাণ্সা ন্যায় বিদ্যা শচ প্রমাণণ তর্কসংযুতাঃ ॥ বেদাভ্যাসরত-স্যাস্য প্রজাকামস্য মানসাঃ। ননসঃ পূৰ্বসৃষ্টা বৈ জাতা যে ভেন মানসাঃ।। ইতি মাৎস্যে-৩ অধ্যাসঃ॥ ৠ ৷৷ শাস্ত্রোক্তকর্ম কর্ত্তব্যু ন তুশাস্ত্র বিরুদ্ধণ। যথা । শ্রুতি স্মৃতি সদাচার বিহিত॰ কর্ম্ম কেবল । সেবিতব্য চতুর্ব-হৈণ ভজড়িঃ কেশবং সদা।। অন্য-থা নির্দ যান্তি সমার্গাগম সে-বনাৎ। অতে। বেদ বিরুদ্ধার্থণ শাস্ত্রোক্ত॰ কর্ম্ম সংত্যক্তেৎ ।। স্ব-রুদ্ধি রচিতৈঃ শাস্ত্রেঃ প্রতার্য্যে-र ह वालिगान्। विष्ठि ध्यर দা মাৰ্গণ লোক নাশাষ কেবলণ া নিন্দস্তি দেবতা বেদাণ স্তপো निमास्त्रि मिन्नुकान् । एवन एव নির্যণ যান্তি হুসৎশাস্ত্র নিষে-বনাৎ ৷৷ শ্রুতি স্মৃতি সদাচার বি-হিত কর্ম শাখত। য॰ ষ॰ ধর্মণ প্রায় ত্রেন প্রেয়ে। খিহি সমাচরেৎ

া। স্ব বৃদ্ধি রচিতৈঃ শাস্ত্রৈ র্মোহ-যিত্বা জন নরাঃ। তেন তে নির-য° যান্তি যুগানা° সপ্তবি°শতিঃ া। ইতি পাদ্মে উত্তরখণ্ডে ১৭ অ-ধ্যায়ঃ ৷৷ ৠ ৷৷ অধ্যাদ্ম শাস্ত্রাতি-तिक **गा**ख निन्मा यथा। भूतान॰ ভারত বেদ ধর্মশাস্ত্রাণি যানি চ । আযুসঃ ক্ষপণায়ৈব ধর্মত শ্চে-न ठाठदा ।। भूल नातानि म॰-সারঃ পুংসা॰ সংমূতচেতসা॰ । বিদুষা শাস্ত্র সংভারঃ সদ্যোগা-ভ্যাস বিম্নকৃৎ ॥ ইদ॰ জ্ঞেয মি-দ॰ জ্বেষ যঃ সর্বণ জ্ঞাতু মিচ্ছতি । অপি বর্ষশতেনাপি শাক্সান্ত নাধিগচ্ছতি ।। বিজ্ঞাযাক্ষর ত-মাত্র জীবিতু ফাপি সঞ্লন্। বি-হায শাস্ত্রজালানি পারলৌফি-ক মাচরেৎ।। পণ্ডিতোপি হি ঘূ-র্খে। ২সৌ শক্তিযুক্তো ২প্যশক্তি-কঃ। यः সংসারামচাত্মান সম্-তারবিতু ক্ষমঃ।। ইতি বব্লিপু-तार्थ मूनाम बामनी नामाधायः ॥ 🗱 ॥ বেদবিরুদ্ধশাস্ত্রাণি যথা। অন্যানি চৈব শাস্ত্রাণি লোকে-স্মিন্মোহনানি চ। বেদবাদ বিরু-দ্ধানি মধৈব কথিতানি ভূ॥ বা-ম॰ পাশুগত• যোগ্য• নাস্থল• চৈ-

ব ভৈরব । অসেব্য মেত ২ ক-থিত• ∡বদব†হৃ• তথেতর্ৎ ৷৷ বেদমূর্ত্তি রহু বিপ্রা নান্যশাস্ত্রা-ৰ্থবাদিভিঃ। জ্ঞাযতে নৎস্বৰ-পঞ্চ ত্যক্ত্য বেদ সনাতন ।। ইতি কৌর্ম্মে উপরিভাগে ৩৬ ञध्यायः ॥ 🗱 ॥ जनि ह। कृर्य-পুরাণে হিমালয় প্রতি দেবী-বাক্য॰। যানি শাস্ত্রাণি দৃশ্যস্তে লোকে ২স্মিন্ বিবিধানি চ। শ্রুতি বুৰুদ্ধানি নিষ্ঠা তে-ষা॰ হি তামসী।। করালভৈরধ-ঞাপি যামল বাম মাগ্রিত। এ-বিষধানি চান্যানি মোহনার্থানি তানি তু॥ মধা সৃষ্টানি চান্যা-নি মোহাফেষাণ ভবার্ণবে । ভ-স্থাৎ সদ্ভিঃ শ্রুতি স্মৃতি বিরুদ্ধে दर्शन न कमाहि भम नाख्या ≀ ইতি মলমাসভত্ত্ব° ।। 🗱 ।। পৃথি-ব্যা॰ তন্ত্রশাস্ত্রাবতরণ যথা। শি-ব উবাচ। লম্বোদর মহাভাগ শূণু মে পরম বচঃ। ইদ হ্ मुमलर्ज यम वक्तु। विनिर्गठ ।। নিৰ্গত পাৰ্বভীবক্তান্তন্ত্ৰণ প্ৰম मूर्ल ७ । विनिशा वश्यद्भन शब्ह দিদ্ধাশ্রমণ সুত।। যত্র তিষ্ঠান্ত युन्दर्ग दिन दिनाक श्रीत्रशः।

जनिमानि खटेन यूंकः नीयु॰ **प** ভব মে সুত ॥ ইত্যুক্তঃ শঙ্করে-ণাসে চাফৰাহ রভূত্তঃ। চত্-र्ভि र्रेस्डः मः निश्र निवाय वि-निट्यम्टर्य ।। शिव উवाচ । श-চ্ছ পুত্ৰ মহাবাহে৷ তন্ত্ৰ মাদায সত্বর । সিদ্ধার্শ্রমণ বনণ রুম্যণ যথেন্দ্রস্য চ নন্দন ।। প্রণম্য প্র-যধৌ শীযু॰ তন্ত্ৰ মাদাষ তদ্বন । ইত্যুপক্ৰমা। মুনে ৰাক্য ততঃ শ্ৰুষা তক্তন্ত্ৰণ মুনযে দদৌ। এবণ তন্ত্ৰাণি সৰ্বাণি বিলিখ্য বিনিবে-দ্যেৎ ৷৷ ইতি গাযত্রীতন্ত্রে দশম বান্ধণ পটলঃ।। 🟶।। শৈষ পাশু-পতাদি শাস্ত্রোৎপত্তি র্যথা। প্র-থমণ হি মধা প্রোক্তণ শৈবণ পা-শুপভাদিক । মচ্ছক্ত্যাবেশিতৈ ৰিপ্ৰৈঃ সংখ্যোক্তানি ততঃ পরু• ।। কণাদেন চ সংপ্ৰোক্তং শাস্ত্ৰণ বৈশেষিক॰ মহৎ। গৌতমেন ত-থা ন্যায় সাংখ্যন্ত কপিলেন ভূ ৷৷ ধিষণেন তথা প্ৰোক্ত চাৰ্বাক মতিগৰ্হিত । দৈত্যানা নাশ-नार्थाय विक्ट्ना वृक्क विशा।। বৌদ্ধশাস্ত্রণ তথা প্রোক্তণ লগ্ন-নীলপটাদিক ৷ আপত্য শ্রুতি-বাক্যানাণ দর্শযন্ লোকগর্হিত

য়া কর্মা স্বৰূপ ত্যাজ্যন্থ মত্র বৈ প্রতিপদ্যতে । সর্বকর্মা পরিভূ-ফু কল্মমন্ত তদ্চ্যতে ॥ গৌত-ম প্রোক্ত শাস্ত্রার্থ নির্বতাঃ সর্ব এব হি । শার্গালী ধ্যানি মাপ-মাঃ সন্দিন্ধাঃ সর্বকর্মসু ॥ ইতি গন্ধর্বতন্ত্রে প্রথমপটলঃ॥

শাস্ত্রকৃৎ পু॰ ঋষিঃ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ।। শাস্ত্রকর্ত্তরি ত্রি।। শাস্ত্রগণ্ডঃ ত্রি প্রঘটাবিৎ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ ।। হারাবল্যাণ ছাত্রগণ্ড ইতি পাঠঃ।।

শাস্ত্রচক্ষু ক্লী ব্যাকরণ । ইতি কেচিৎ ॥

শাস্ত্রচারণঃ ত্রি শাস্ত্রদশী । ইতি শব্দরত্নাবলী।।

শাস্ত্রজ্ঞঃ ত্রি শাস্ত্রবেক্তা। যথা।
অনিযুক্তো নিযুক্তো বা শাস্ত্রজ্ঞো বক্তু মর্হতি। দৈবীং বাচং
স বদতি ষঃ শাস্ত্র মুপজীবতি
।। ইতি ব্যবহারতত্ত্বধৃত নারদবচনং ।।

শাস্ত্রভক্তঃ পু॰ গণকঃ। যথা।
দৈবজ্ঞো গণকো জ্ঞানী মৌহূ-র্ত্তো দৈবলেখকঃ, বার্ত্তান্তিকো জ্যোতিযিকো মৌহূর্ত্তিক প্র-সূচকৌ ৷৷ সংবৎসরো বর্ষকো- ষো রেখাজীবী গণান্ধভূক্। তান্ত্রিকো জ্ঞাতসিদ্ধান্তঃ শান্ত্র-তত্ত্বজ্ঞ ঈরিতঃ।। ইতি শব্দরত্না-বলী।।

শাস্ত্রদশী তি শাস্ত্রজ্ঞঃ তৎ-পর্য্যায়ঃ । অন্তর্ধাণিঃ ২ শাস্ত্র-বিৎ ৩ শাস্ত্রচারণঃ ৪ । ইতি শব্দরত্বাবলী ॥

শাস্ত্রবিৎ ত্রি শাস্ত্রদশী।ইত্য-মরঃ।।

শাস্ত্রবিপ্রতিষিদ্ধঃ ত্রি শাস্ত্রনি-যিক্ষঃ ৷ শাস্ত্রশব্দ পূর্বক বি পূ-র্বক ষিধ ধাতোঃ কর্মাণি ক্ত প্র-ত্যাযেন নিস্পন্ধঃ ৷৷

শান্ত্রশিল্পী পু॰ কাশ্মীরদেশঃ। তদ্দেশত্থে পু॰ ভুমি। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ।।

শান্ত্রী ত্রি শাস্ত্রজ্ঞঃ। শাস্ত্রণ বে-ভীত্যর্থে নিন্প্রত্যযেন নিষ্পন্ধঃ শাস্যঃ ত্রি শাসনীবঃ। শাসি-তব্যঃ। শাসধাতো র্য প্রত্যযেন নিষ্পন্ধঃ।।

শি ন ঞ নিশানে। ইতি কবিকল্পক্রমঃ ৷৷ নিশান মিতি শ্যতে
কাপণ। শান ঞ তেজে ইত্যস্য
নিত্যসনন্তত্ত্বাৎ। অনেকার্যত্ত্বাৎ
নিশান মিহ তীক্ষীকরণণ। ন

ঞ শিনোতি শিনুতে খন্ন° ক-র্ম্মকারঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।। শি॰শপা স্ত্রী বৃক্ষবিশেষঃ। শিশু ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাযঃ। পি-চ্ছিলা ২ অগুরুঃ ৩ কপিলা ৪ ভস্মগন্ত্রা ৫ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ অগু-রুশি॰শপা ৬। ইতি ভরতঃ ॥ ক্ষপারা १। ইতি জটাধরঃ।। পিঙ্গলা ৮ পিচ্ছলা ২ বীরা ১০ । ইতি রত্নমালা।। 🕸।। শি॰শপা গুরুসারা চ পিচ্ছিলা গুরুশিণ শপা। সা চেৎ কপিলবর্ণা স্যা-**ख्या**गर्स्य निगमाट ॥ किठित् কপিলা ভস্মগর্ভা চাগুরুশি শ-পা। পিচ্ছিলা শিশ্পা যুগ্মপ-ত্রিকাগুরুচেত্যপি॥ ইতি শব্দ-রত্নাবলী।। অস্যা গুণাঃ। শি॰-শুপা বাতনাশিনী। ইতি রাজ-বল্লভঃ ।। অপি চ। শি॰শপা ক-টুকা তিক্তা কযাযা **শোষকা**রি-नी । উक्क्वीया श्राहरू अर्थ চিত্র বৃষি ক্লমীন ॥ বৃস্তিব্দুণ **माश्रम् वनामा गर्ड्याञिनी ।** ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥

শিক্ স্ত্রী শিক্য । ইতি শব্দ-রত্নাবলী।

শিক্ষঃ ত্রি অব্যবশাষী। ইতি

ত্রিকাওশেষঃ ॥

া শিক্থণ ক্লী মধুজাত জব্যবিশেষঃ
। নোন্ইতি ভাষা। তৎপর্যায়।
। শিক্থকণ ২ মধুজণ ৩ বিষদা
৪ মধুসম্ভবণ ৫ মোদনণ ৬ কাচণ
৭ উচ্ছিষ্টমোদনণ ৮ মিক্ষকামলণ ৯ ক্ষোজেষণ ১০ পীতরাগণ
১১ মিশ্বণ ১২ মাক্ষিকজণ ১৩
কৌজজণ ১৪ মধুশেষণ ১৫ জাবকণ ১৬ মাক্ষিকাশ্রয়ণ ১৭ মধুথিতণ ১৮ মধূথণ ১৯। অস্য গুল্
গাঃ। পিচ্ছিলত্বণ। স্বাদুত্বণ।
কটুত্বণ। মিশ্বত্বণ। কাদুত্বণ।
কটুত্বণ। মিশ্বত্বণ। লেপেন স্ফ্টিতাঙ্গবিলোপনত্বঞ্ব। ইতি
রাজনির্যণ্টঃ।।

শিক্থক॰ ক্লী শিক্থ॰। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥

শিক্য° ক্লী ডব্যরক্ষার্থরজ্জুম্যা-ধারবিশেষঃ । শিকা ইতি ভাষা । তৎপর্ব্যাযঃ । কাচঃ ২ শিক্যা ৩ শিক্ ৪ । ইতি শব্দরত্নাবলী॥ শিক্যা স্ত্রী শিক্যণ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী॥

শিক্যিত ত্রি শিক্যস্থাপিতবস্তা। তৎপর্য্যায়ঃ। কাচিতঃ ২। ই-ত্যমরঃ॥ শিখকঃ পু॰ লেখকঃ।ইতিসং-किश्वमारतानानिवृज्धिः ॥ শিখঙঃ পু॰ মযুরপুচ্ছঃ। ইতা-मतः ॥ यथा । मिथर् । श्री পিচ্ছ বৰ্ছে শিখিপুচ্ছ শিখণ্ডকে । ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ চূডা। ইতি মেদিনী।। শিখণ্ডকঃ পু॰ কাকপক্ষঃ। জু ল্পী ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ।। দে ক্ষত্রিয় সমারাণাণ শিখাত্র-যে। উক্তঞ্চ। বালানাঞ্চ শিরঃ কাৰ্য্যণ ত্ৰিশিখণ মুণ্ড মেব চেতি । শিখাপঞ্চকে ইত্যন্যে। সামা-ন্দ্যন চূডাযা মিত্যন্য। কাক-পাকারদ্বাৎ কাকপক্ষঃ। শি-রসি খণ্ডাতে শিখণ্ডকঃ মনীষা-দিঃ তালব্যাদিঃ। শিখণ্ডে তু শি-খাবর্হে ইতি তালব্যাদৌ রভসঃ । শিখাওকদ্য। শিখওক শিখা-ঙকাবিতি বাচস্পতিঃ। ইতি তট্রীকাষাণ ভরতঃ ।। মযূরপুচ্ছে

ক্লী।ইতি শব্দরত্নাবলী।। শিখণ্ডিকঃ পু॰ স্বক্লুটঃ।ইতিঁ হেনচন্দ্রঃ।।

শিখণ্ডিক। স্ত্রী শিখা। যথা।
চূড়া কেশী কেশপাশী শিখা
শিখণ্ডিকা সমাঃ। ইতি হেম-

हमः॥ শিখণ্ডিনী স্ত্রী যূথিকা।। গুঞ্জা । ইতি मिनि ॥ फुलन अङ् कना। मा यकमा पू॰खु धह-ণেন পুৰুষো ভূষা শিখঙীতি নায়া খ্যাতঃ। ইতি মহাভারত ।। মযূরী। শিখণ্ডিন্ শব্দাৎ স্ত্রি-যা॰ ঈপ্ প্রত্যযেন নিষ্ণায়। ।। শিখঙী পু॰ মযূরপুচ্ছঃ।। গা-স্বেযারিঃ। স তু দ্রুপদরাজপু-**लः ॥ य**यृतः । ইতি यामिनी ॥ স্কৃটঃ।। বাণঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ ॥ छिङ्गा ॥ अर्गगृथिका । ইতি त्रांकिनिर्यण्डः ॥ विकृः । यथा । শিখণ্ডী নহুশো বৃষেতি তস্য সহসুনামস্ভোত্রণ।।

শিখর ক্লী পর্বতাগ্রও। তৎ-পর্য্যায়ঃ। কূটেও শৃঙ্গও। ই-ত্যমরঃ।। শৈলাগ্রদেশকও ৪। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শিখরং পুণ ক্লী বৃক্ষাগ্রণ তৎপর্য্যায়ঃ ৷ শিরং ২ অগ্রণ ৩ ৷
ইত্যমরঃ ৷৷ শিরণ ৪ ৷ ইতি শব্দরত্নাবলী ৷৷ প্রাগ্রণ ৫ ৷ ইতি
রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ পর্বতশৃঙ্গণ ৷৷
পুলকঃ ৷৷ কক্ষঃ ৷৷ প্রক্লাগ্রণ ৷৷
জাভুমাণিক্যণ ৷৷ সকলাগ্রণ ৷৷

ইতি মেদিনী । কোটিঃ । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।। শিখরবাসিনী স্ত্রী দুর্গা । ইতি ॥ ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।। শিখরা স্ত্রী মূর্বা । ইতি শব্দ-

চন্দ্রিকা 11

শিশ্বরিণী স্ত্রী রসালা।। বৃত্তভেদঃ ।। নারীরত্নং ।। মলিকা।।
রোমাবলী । ইতি মেদিনী ।।
বৃত্তভেদো যথা । রসৈ রুটেজ
শ্চিন্না ষ ম ন স ভ লা গঃ শিখরিণী । করাদস্য ভুষ্টে ননু শিখরিণীদৃশ্যতি শিশো বিলীনাঃ
স্বঃ সত্যং নিষত মবধেষং তদথিলৈঃ। ইতি ত্রস্যদেগাপানুচিত নিভৃতালাপজনিতং স্মিতং
বিভূৎ দেবো জগদবতু গোষর্জনধরঃ।। ইতি ছম্পোমঞ্জর্য্যাং ২
স্তবকঃ ।। নবমালিকা।। জাক্ষাবিশেষঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।।
সূর্বা। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

শিখরী পুণ পর্বতঃ ৷৷ বৃক্ষঃ ৷৷
অপাদার্গঃ ৷ ইতি মেদিনী ৷৷
কোটঃ ৷৷ কোষ্টিঃ ৷ ইতি হেমচন্দ্রঃ ৷৷ বন্দাকঃ ৷৷ কক টশৃঙ্গী ৷৷
সন্দুরুকঃ ৷৷ যাবনালঃ ৷ ইতি
হাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷

শিখলোহিতঃ পু॰ বৃক্ষবিশেষঃ। সঙ্গরমুডা ইতি ভাষা। ইতি শব্দচন্দ্রিকা॥

শিখা স্ত্রী অগ্নিজ্বালা। তৎপ-ৰ্য্যায়ঃ। স্থালঃ ২ কীলঃ ৩ অ-ৰ্চিঃ ৪ হেতিঃ ৫ শিখা ৬। ইত্য-মরঃ।। য়।। পিণ্ডিতশিখাগেঃ শু- मृठकद्व॰ यथा। वायुभूतात्व। অর্চিয়ান্ পিণ্ডিতশিখঃ সর্পিঃ কাঞ্চন সমিভঃ। স্নিগ্ধঃ প্রদক্ষিণ শৈচব বহ্নিঃ স্যাৎ কার্য্য সিদ্ধযে ।। 🕸 ।। অগে রশুভলক্ষণ যথ।। বৃদ্ধবাণে। অঙ্গে কক্ষে সক্ষু-লিঙ্গে বামাবর্ত্তে ভয়ানকে। আ-র্দ্রকারিষ্ঠশ্চ সম্পন্নে ফুৎকারব-তি পাবকে ।। क्रकार्किम मु मूर्ग-স্নে তথা লিহতি মেদিনীণ। আ-হতী জুহিষাৎষশ্চ তদ্য নাশো ভবেৎ ধ্রুবণ।। ইতি তিথিতত্ত্বণ ।। 🗱।। শিরোমধ্যস্থকেশঃ। তৎ-পৰ্য্যায়ঃ। চূড়া ২ কেশপাশী ৩ । ইত্যমরঃ।। জুটিক। ৪ জুটিক। ৫। ইতি শব্দরত্নাবলী।। কৈশী ৬ শিখণ্ডিক। ৭। ইতি হেষচম্রঃ ।। अ। भाषजां नियातकान यथा ৷ গাৰত্ৰ্যা তু শিখা[,] বদ্ধা নৈঋ[্] ত্যাণ বন্ধরমূতঃ। জুটিকাঞ্চ 😮

়তো বন্ধা ততঃ কর্ম সমারভেৎ ा का मृजमा निथावस्य मस्या यथा। बन्न वानी मर्मानि निव-্বাণী শুভানি চ। বিষ্ণো নাম-সহস্ত্রেণ শিখাবন্ধ করোম্যহণ १। भा निश्राद्याहन मट्या रथा। গচ্ছন্ত সকলা দেবা ত্ৰন্ধ বিষ্ণু मरर्थताः। তिश्वेषवाच्या नकीः শিখাসুক্ত করোম্যহ ।। #।। শি-খাবন্ধনান্তর মাচমন যথা। নিবন্ধশিখ আসীনো দ্বিজ আ-চমন চরেৎ। ক্লম্বোপবীত স-ব্যে ২ শে বাজ্বনঃ কাষ সংবতঃ ॥ 🛊 ॥ मूक्जनियमग्राहमत्न (मा-বো रथा। শিরঃ প্রাবৃত্য কণ্ঠ॰ বা সুক্ত কচ্ছ শিখোপি বা। অ-ক্লম্বা পাদযোঃ শোচ আচা-্ন্তোপ্যশুচি র্ভবেৎ ॥ ইতি আ-्क्रिकञ्ब॰॥ #॥ माथा॥ वर्शि-्रहुषा। नामनिकी।। अश्रवातः ়া। চূডামাত্রণ।। প্রপদ্ণ। ইতি ्रापिनी ॥ श्रधानः ॥ निका ॥ ্ঘূণিঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ স্মর-জ্বঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।। শিখাকন্দ ক্লী গুঞ্জন ৷ ইতি व्राजनिर्यकः॥ निशायकः पुः काकशकः। ইতি

হেমচন্দ্রঃ ।।
শিখাতরুঃ পু॰ দীপবৃক্ষঃ । গিলসূজ ইতি ভাষা । ইতি ত্রিকাওশেষঃ ।।
শিখাধরঃ পু॰ মযুরঃ । ইতি শব্দ-

শিখাধরঃ পু• মযুরঃ। ইতি শব্দ-মালা ।। মঞুযোষঃ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ।।

শিখাধারঃ পু॰ মবুরঃ।ইতি শ-ব্দরত্বাবলী।।

শিথামূল ক্লী গৃঞ্জন ৷ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷

শিখালুঃ পু॰ মযূরশিখা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শিখাবতী স্ত্রী মূর্বা।ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা।।

শিখাবরঃ পু॰ পনসবৃক্ষঃ। ইতি
শব্দমালা।।

শিখাবলঃ পু॰ মষুরঃ। ইত্যমরঃ॥ শিখাবলা স্ত্রী মযুরশিখা। ইতি রাজনির্ঘনীঃ॥

শিখাবান্ পু॰ অগ্নিঃ।। চিত্রকবৃক্ষঃ

। ইত্যমরঃ ।। কেতৃগ্রহঃ । ইতি
শব্দরত্বাবলী ।। শিখাবৃক্ষঃ প্রানিকাবৃদ্ধিঃ প্রানিকাবৃদ্ধিঃ প্রানিকাবৃদ্ধিঃ প্রানিকাবৃদ্ধঃ প্রানিকাবৃদ্ধঃ । ইতি
শিখাবৃক্ষঃ পু॰ দীপবৃক্ষঃ । ইতি
শিখাত্রশব্দ দর্শনাৎ ।।

শিথিব

শিথিকঠ॰ ক্লী তুখণ। ইতি রত্ন-মালা।।

শিথিগ্রীব॰ ক্লী তুখণ। ইত্যমরঃ।। শিথিধজঃ পু॰ ধৃমঃ। ইতি ত্রি-কাগুশেষঃ।। কার্ত্তিকেষঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।।

শিখিনী স্ত্রী মযূরশিখা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শিখিপুচ্ছণ ক্লী মযুরপিচ্ছণ যথা । শিখণ্ডো ২স্ত্রী পিচ্ছ বর্হে শি-খিপুচ্ছ শিখণ্ডকে । ইতি শব্দ-রত্নাবলী ।।

শিখিপ্রিयः পু॰ नघूरमतः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

निधिमखनः भू॰ वक्रगब्कः। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শিখিমোদ। স্ত্রী অজমোদা। ইতিরাজনির্ঘন্টঃ।।

निधिष्णः पू॰ श्रीकातीपृगः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

निधितक्षकः श्रू अगार्थः। ইতি नक्तत्रावनी ॥

শিথিবাহনঃ পু॰ কার্ত্তিকেষঃ। ইত্যমরঃ।।

শিখিবত ক্লী ব্ৰতবিশেষঃ। যথা । ব্ৰহ্মোবাচ। বক্ষ্যে প্ৰতিপদা-দীনি ব্ৰতানি ব্যাস শ্ৰেষ্ঠাণ। শিগু

श्री अपिता के अला निर्मा निर्मा कि निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्मा के निर्म के निर्

শিশুঃ পুং শাকং। ইত্যমরঃ।।
বৃক্ষবিশেষঃ। শজিনা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যামঃ। হরিতশাকঃ
২ শাকপত্রঃ ও সুপত্রকঃ ৪ উপদংশঃ ৫ ক্ষমাদংশঃ ও কোমলপত্রকঃ ৭ বছমূলঃ ৮ দংশমূলঃ ৯ তাক্ষমূলঃ ১০। অস্য গুণাঃ। কটু স্থা তিক্তস্থা উক্ষম্বং
। তীক্ষম্বং। বাত কফ মুখজাড্য
ব্রণদোষহরস্থা দীপনস্থা রুচ্যত্বশা তস্য পত্রশাক গুণাঃ।
রুচ্যত্বং। বাত কফ রুমিনাশিস্থা
। কটুস্থা তিক্তস্থা দীপনস্থা।

পথ্যত্ব৽। পাচনত্বঞ্চ ।। 🕸 🔃 অ-नि ह। लाजाञ्चला नीलिगु-ন্তীক্ষগদ্ধে। জনপ্রিयः। মুখমো-मः क्रकिनिशु न्हक्त्या कृहिता-ঞ্চনঃ।। শোভাঞ্জন স্তীক্ষ কটুঃ सामृकः शिक्ति उथा। जन्न বাতার্ত্তি শূলম শ্চক্ষ্যো রো-চনঃ পরঃ ॥ 🛊 ॥ শ্বেত শিগুঃ मूठीऋः माामूथङकः मिठास्र-যঃ। সমূলঃ শ্বেতমরিচো রোচ-নো মধুশিগুকঃ ৷৷ শ্বেতশিগুঃ কটু স্তীক্ষঃ শোফানিল নিক্নস্ত-नः। অঙ্গব্যথাহরে। রুচ্চ্যো দী-পনো মুখজাডানুৎ ॥॥॥ রক্ত-কে। রক্তশিশুঃ স্যামধুরে। বহু-লচ্ছদঃ। সুগন্ধিঃ কেশরী সি॰-হে। মৃগারিশ্চ প্রকীর্ত্তিতঃ॥র-किनिशु मंश्रीरिंग। मधुत्रम्छ त-সাযনঃ। শোকায়ান শনীরার্ত্তি পিত্ত শ্লেমাপদারকঃ ॥ ইতি ताकनिर्घणः॥

শিগুজ ক্লী শোভাঞ্জনবীজ। তৎপর্য্যায়ঃ। শেতমরিচ ২। ইত্যমরঃ॥ শিগুভবে ত্রি॥ শিগুবীজ ক্লী শোভাঞ্জনবীজ । ইতি শব্দচন্দ্রিকা॥ শিঘ ই আয়ুনে। ইতি কবি- কল্পদ্রমঃ।। ই শিঙ্ঘাতে। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।
শিজ্ঞাণ ক্লী কাচপাত্রণ।। লোহমলং।। নাসিকামলং। শিক্নি
ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী।।
শিজ্ঞাণকঃ পু॰ লেমা। ইত্যাণাদিকোষঃ।।
শিজ্ঞাণকঃ পু৽ক্লী নাসিকামলং

। ইত্যুণাদিকোষঃ ।। শিঙ্খিত ত্রি ঘ্রাত । ইতি শব্দ-রত্নাবলী ।।

শিজ ইল কি ও অফুটধনী।
ইতি কবিকল্পজনঃ ।। অফুটধনি রিহ ভূষণ কতৃ ক এব। ভূষণানাম্ব শিঞ্জিত নিত্যমরাৎ।
ই শিঞ্জাতে। ল ও শিঙ্কে। কি
ও শিঞ্জযতে। শিঞ্জতি মঞ্জীরণ।
তালৈঃ শিঞ্জছলয় সূভগৈ নিতিতঃ কান্তযানিত্যত্বাদিতি রমানথঃ। বস্তুতস্ত্ব শিঞ্জে শিপ্রঃ পচাদিত্বাদন্ ততঃ শিঞ্জ ইবাচরতীতি কৌ শ্রন্তঃ ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

শিঞ্জা স্ত্রী ভূষণশব্দঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ ধনুর্গুণঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥

শিথিল

শিঞ্জিত ক্লী ভূষণধনিঃ। ইত্য-মরঃ।

শিঞ্জিনী স্ত্রী ধনুর্ধণঃ। ইত্যমরঃ॥ নৃপুরঃ। ইতি হেসচন্দ্রঃ।।

শিঞ্জী ত্রি ভূষণশন্দবিশিষ্টঃ।
শিঞ্জা বিদ্যতে ২স্য ইত্যর্থে ইন্
প্রত্যবেন নিষ্পান্ধঃ।।

শিট্ অনাদরে। ইতি কবিকন্ধ-ক্রমঃ।। শেটতি খলং লোকঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শিশুকী স্ত্রী খাদ্যজব্যবিশেষঃ।
যথা। শিশুকী রাজিকাযুক্তঃ
স্যান্মূলকদলজবৈঃ। সর্যপ স্থরসৈ র্বাপি শালিপিফক সংয্তৈঃ॥ শিশুকী রোচনী গুরী
পিত্ত শ্লেমকরী স্মৃতা। ইতি
রাজনির্ঘণ্টঃ॥

শিত তি দুৰ্বলং।। নিশিভঃ। ইতি মেদিনী।। রুশঃ। ইঙি বিশ্বঃ।।

শিতক্রঃ স্ত্রী শতক্রনদী। শতলজ্ ইতি খ্যাতঃ। ইত্যমরঃ।।
কীরমোরটঃ। ইতি রক্সমালা।।
শিতশৃকঃ পু॰ যবঃ। ইত্যমরঃ।।
দস্ত্যাদি রিত্যেকে ইতি ভরতঃ।।
গোধুমঃ। ইতি ত্রিকাপ্তশেষঃ।।
শিতিঃ ত্রি শুক্রঃ।। কুর্জঃ

বৃক্ষে পু॰। ইতি মেদিনী ।। শি-তি স্ত্রিষু সিতে ক্লফে ভূর্জে সা-রেপি চ ঘষোঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী ।।

শিতিকঠঃ পু॰ শিবঃ।ইত্যমরঃ
।। দাত্যুহপক্ষী।ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।

শিতিচারঃ পু॰ শাকবিশেষঃ ৷

যথা। শিতিচারঃ সূতপুত্রে। বিতন্ন॰ সুনিষন্নক॰। ইতি জটাধরঃ
শিতিচ্ছদঃ ১ পু॰ ই॰সঃ। ইতিশব্দশিতিপক্ষঃ ১ রত্বাবলী ৷৷
শিতিসারকঃ পু৽ তিন্দুবৃক্ষঃ ৷
ইত্যমরঃ ৷৷

শিথিল° ত্রি শ্লখঃ। ইতি হেস-চন্দঃ।।

निथिन की मनवस्ता। मस्तुष्। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিवृত্তিঃ।। সংযোগবিশেষঃ। यथा
। প্রচমঃ শিথিলাখ্যো যঃ সংখোগ স্তেন জন্যতে। ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ।। প্রচম ইতি মূলে
শিথিলাখ্য ইতি কিঞ্চিদ্বয্বাবচ্ছেদেনাব্যবাস্তর সংযোগিনি মহন্ত্বতি অব্যবে বর্ত্তমানঃ
সংযোগঃ প্রচম ইত্যেকে। অত্ত মহন্ত্বপদং ন দেষং পর্মাণু সং-

रकागमा अठबद्दिश न क्लि ति-॥ ত্যন্যে। ভূষে। ২বৰবাৰচ্ছেদে-বর্ত্তমানঃ সংযোগঃ প্রচযঃ তেন 🖡 পরমাণ সংবোগো স্থানুক সং-ষোগো বা ন প্রচম ইত্যপরে। रेषि गिकासमुकारनी गैका किनकत्री ॥

শিনিঃ পু• ক্ষত্রিযভেদঃ वामिटकायः ॥ শিনের্নপ্তা পু॰ সাত্যকিঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। **लि**शविर्येः पू॰ लिलिबिर्येः। ই-

ত্যমরটীকাষা রমানাথঃ।। **भिभिः भू त्रिकार यथा। टेम**-ত্যাৎশ্যন যোগাচ্চ শিপি বারি প্রচক্ষ্যতে তৎপানা দ্রকণাল্ডে-ব শিপৰো রশ্মধো মতাঃ ৷৷ তেবৃ প্রবেশাৎ বিশ্বেশঃ শিগিবিষ্ট ইহোচ্যতে। ইতি ব্যাসবচন ।। निशिविकः पू॰ धनिज्ञा पूम्ह-

র্মা।। মহেশ্বরঃ। ইত্যমরঃ।। কি कुः। यथा। देनकक्रा गृहका-প: শিপিবিঊ: প্রকাশনঃ। ইতি তস্য সহসুনামজ্যোত্রণ রমানা-পশ্চ।। স্বস্তী। ইত্যমরটীকাষাণ

ब्रायमूक्षेः ॥ जमा नेशाखद्रः ॥

শিপ্রা

শিপবিষ্টঃ। শিবিপিষ্টঃ। ইত্য-মর্টীকা।।

नावस्वाख्य अन्दर्शाभनगवस्व मिथः पूर् मद्रावतविद्यवः । যথা। এব বিবাছ বিধিব দৌ-বর্ণে মানসাচলে ৷ অরুন্ধতীণ বশিষ্ঠস্ত মোদ মাপ তথা সহ।। তত্র যৎ পতিত তোষ মানসা-চল কন্দরে। বিবাহাবভূতার্থা-ষ শাস্ত্যর্থণ বসুধারুতণ।। বন্ধ বিষ্ণু মহাদেব পাণিভিঃ সমুদী-রিত•। তত্তোফ সপ্তধা ভূত্বা পতিত মানসাচলাৎ ৷৷ হেমা-**एकः कम्मदत्र** मान्नी मत्रमाश्र পৃথক্ পৃথক্। তত্তোয়ণ পতিত• শিপ্রে দেবভোগ্যে সরোবরে ॥ তেন শিপ্রা নদী জাতা বিষ্ণুনা প্রেরিতা ক্ষিতি॰। ইতি কালি-কাপুরাণে ২৩ অধ্যাশঃ।।

लिथा जी नहीतित्वरः। यथा। ততো হিমবতঃ প্রস্থে প্রতীচ্যাণ তৎপুরস্য চ। শিপ্রণ নাম সরঃ পূर्न ममृष्ठ र्ज्जहिनामयः ॥ ठज-হস্থান মাসাদ্য একা শক্রাদ্যঃ मुद्राः। উপবিষ্ঠা यथानगय॰ পুরস্কৃত্য মহেশ্বরণ 🛭 তণ শিপ্র সংকাসার মনোজ্ঞ সূর্বদেহি-नाः। मीञामनजनः मर्दिर्छरे

र्मानम मिण्या मृष्ट्री करः इत স্তামিন্ সেৎশোকে ২ভূদবে-কৰে। শিপ্তা॰ নাম নদীণ ভশা-क्रिः मृजाः मक्तितामधिः॥ भक्त-श्रीक कवर्गामा भाववश्री क-গজ্জনান্। ইতি কালিকাপুরা-(१३२ जशायः ॥ শিকঃ পু॰ শিকা। ইত্যমরটীকা-याः विमाविदनामः ॥ শিফা ত্রী বৃক্ষাণা জটাকারমূলণ । শিকড্ ইতি খ্যাত । তৎপ-र्यायः। कृष्टे। २। ইত্যমরः ॥ मृल॰ ७। ইতি জটাধরঃ।। नদी য়। মাণসিকা।। মাতা। ইতিমে-पिनी ।। শতপুष्भाषा रुति**जा** । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ। পদ্মকদঃ। ইতি মুস্টধৃতকামী !৷ শিকাকঃ পু॰ পদামূল ৷ ইতি नकत्रञ्जावनी ॥ শিক্ষাকন্দঃ পু॰ পদ্মমূল•। তৎ-পर्यप्रायः । कत्रशिः २ । हेळा-্মরঃ।। শিকাকঃ ৩। ইতি শব্দ-রত্নাবলী ৷৷ পদাকন্দঃ ৪ কর্কটঃ ৫। ইতি জটাধরঃ ॥ শিকা ৬ কন্দঃ ৭। ইতি মুঙ্গটধৃতস্বামী ॥ শিকাধরঃ পু॰ শাখা। ইতি শক-

ठिखका।।

निकाक्ररः भ् बरेवृष्टः इकि রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ निम् छी जी क्रशनित्मयः। एका-নি ইতি হিন্দীজাষা। তৎপৰ্যা-ষঃ। মতিদা ২ বল্যা ৩ পঙ্গল্য-হারিণী ৪ দ্রবৎপত্রী ৫ বাত্মী ৬ গুচ্ছপুষ্পী १। অস্যা গুণাঃ। करूषः। উक्षयः। वाक शृक्षेण्व নাশিত্ব । রসাযনে যুক্তা চেৎ म्ह जाए। कातिष्य । इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ **भिषः भू•** ठक्तमर्पकः। ইতি শব-ठिखका ॥ निश जी कलाशानिषक्। मूँ जी-ইতি ছিম্ডা ইতিচ ভাষা। তৎ-পর্যামঃ। সমী ২। ইত্যমরঃ।। সিমা ৩ সিমী ৪ শিমী ৫ শিমি-কা ৬ শমী ৭ সিম্বিকা ৮ শিম্বিঃ ৯। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শমিঃ ১-। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। শিষিঃ স্ত্রী শিষা। ইতি হেমচক্রঃ ।। এরকা। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। **শিयिकः भूः क्रकम्लाः। यथा।** ক্লম্ভে প্রবর বাসস্ত হরিমস্থজ শিষিকাঃ। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ॥ শিষিকা স্ত্রী শিষা। ইতি শব্দ-त्रकावनी ॥

निष्टिपर्निका खी मूकापनी । ইতি রত্নমালা ॥ निषिभनी जी मूकामनी। देख শব্দচন্দ্রিকা ॥ শিষী দ্রী শিষা। ইতি শব্দরত্না-বলী।। মুকাপনী ।। কপিকচ্ছঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ শিরঃ পু॰ পিপ্ললীমূল । ইতি भिति ॥ यस्र । इंठि कि। ধরঃ।। শয্যা।। অজগরঃ। ইতি मः किश्रमारतागामिन् खिः ॥ শিরঃ ক্লী শিখরণ। মস্তক•। ইত্যমরঃ ৷৷ তচ্চ মা**সমাত্রেণ ভ**-বতি। ইতি সুখবোধঃ॥ তদ্রো-शनागटकी यथ यथा । गिरता-রোগ হর লেপাৎ গুঞ্জামূল সকাঞ্জিকণ। ইতি গাৰুডে ১৮৮ অধ্যায়ঃ।। প্রধান ।। সেনাগ্র र हेि यिनिनी ॥ শ্রিঃকপালী পু॰ নরমন্তককপা-লধারীসন্যাসী। ইতি কেচিৎ। भितःकनः पुः नातित्कनः। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

नितः मृतः की मछक्रतमनादश-

शः। छत्मीवशः यथा। त्युजान-

দ্মাজিতামূল পিপ্ললী শুঠি সং-

যুত্ত। পরিপিষ্ট শিরোলেপাৎ

শিরঃশূল বিনাশনে।। ইতি গা-ৰুডে ১৮৮ অধ্যাযঃ।। শিরজঃ পু॰ কেশঃ। ইতি শব্দ-त्रज्ञावनी ॥ শিরসিজঃ পু॰ কেশঃ। ইতি জটা-धतः ॥ শিরসিরুহঃ পু• কেশঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।। শিরক্ষণ ক্লী শিরস্তাণণা ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ শিরঃসম্বন্ধিনি ত্রি॥ শিরস্ত্র• ক্লী শিরোরক্ষণসমাহঃ। টোপ্ ইতি খ্যাতঃ । ইতামর-ভরতৌ ॥ শিরস্তাণ ক্লী শিরোরক্ষণসন্মা-হঃ। খোপিডা ইতি টোপ ইতিচ ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ। শীৰ্ষণ্য ? ২ শীর্ষক ওশিরস্ক । ইতি হেম-চন্দ্রঃ।। শিরস্ত্রণ ৫। ইতামরঃ।। পু॰ বিশদকচঃ। তৎ-শিরস্যঃ পর্য্যায়ঃ। শীর্ষণ্যঃ ২। ইত্যমরঃ য় দ্বে স্বতঃ স্নানাদিনা বা নির্দ্ম-লে অন্যোন্যাসংপৃক্তে কেশে। ইতি ভরতঃ ॥ শিরা স্ত্রী ধমনিঃ। শির্ইতি ভাষা। ইতি মেদিনী।। অস্যাঃ পर्यायामिक नाजीनक ज-

खवा॰॥

শিরীষ

শিরাপত্রঃ পু॰ হিস্তালবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্<mark>যক্টা কপিখা।</mark> ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

শিরাল ফ্লী কর্মার**ঙ্গ**াই**তি শব্দ**-চন্দ্ৰিকা ॥

শিরালকঃ পু॰ অন্থিভঙ্গবৃক্ষঃ। হাডভাঙ্গা ইতি ভাষা। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা 11

শিরাবৃত্ত॰ ক্লী সীসক॰। রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শিরিঃ পু॰ খদ্ধঃ॥ শরঃ॥ হি॰সুঃ । ইত্যুণাদিকোষঃ।। শলভঃ। रें ि निका उको मूमा म्यापि-বৃতিঃ ৷৷

শিরীষঃ পু॰ স্বনামধ্যাতবৃক্ষঃ। তৎপৰ্য্যায়ঃ। <mark>কপীতনঃ ২ ভ</mark>-ণ্ডিলঃ ৩। ইত্যমরঃ ॥ ভণ্ডিরঃ ৪ ভত্তীরঃ ৫ ভত্তীলঃ ৬। ইতি-তট্রীকা।। মৃদুপুষ্পঃ ৭ শুক্তরু: ৮ বিষনাশনঃ २। ইতি রত্নমা-লা।। শীতপুষ্ণঃ ১০ ডপ্তিকঃ ১১ স্বৰ্ণপুষ্পকঃ ১২ সুকেষ্টঃ ১৩ ব-র্হপুষ্পঃ ১৪ বিষহস্তা ১৫ সুপু-ষ্পাকঃ ১৬ উদ্ধানকঃ ১৭ শুক্র-তরঃ ১৮ লোমশপুষ্পকঃ ১৯ কপীতকঃ ২০ কলিঙ্গঃ ২১ শ্যা-্মলঃ ২২ শুখ্মিনীফলঃ ২৩ মু-

শিরোত্রী

ধুপুষ্পঃ ২৪ ঘৃত্তপুষ্ণঃ ২৫ পুস্ত-কান্তরে শিখিনীফলঃ ২৬ ভণ্ডী २१ क्षेत्रगः २৮ खक्रभूष्णः २२। অস্য গুণাঃ। কটুম্বণ। শীতমণ। বিষ বাত পামাসু সন্ঠ কভূতি ত্বনোৰ নাশিত্বঞ্চ। ইতি রাজ-निर्यक्तः ॥ ज्यात्रि ह । नित्रीरमा ভণ্ডিলো ভণ্ডী ভণ্ডীরশ্চ কণী-তনঃ। শুকপুষ্ণঃ শুক্তরু মৃদ্-পুষ্ণঃ শুকপ্রিয়ঃ।। শিরীষো ম-ধুরোনুক স্তিক্তশ্চ তুবরো লযুঃ । দোষ শোথ বিষপিদ্ধः काम ত্রণ বিষাপহঃ ॥ ইতি ভাবপ্র-कानः॥ #॥ कंछकनितीयमा পর্য্যায়ঃ। কটভী কিনিহী শ্বেতা মহাশ্বেতা চ রোহিণী। ইতি त्रव्याना ॥ 🛊 ॥ यमाखनाः । नित्रीया विष वीमर्भ स्वन घ-ক্ষোষ শোথজিৎ। ইতি রাজ-বল্পতঃ ৷৷

শিরীষপল্রিক। স্ত্রী শ্বেতকিণিহী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

শিরোগৃহ ক্লী অটালিকোপরি-সৃহ॰। তৎপর্যাষঃ। চন্দ্রশালা ২। ইতি ছেমচন্দ্ৰঃ॥

শিরোগ্রীবং ক্লী শিরশ্চগ্রীবাচ द्याः नग्राहातः। यथा। द-

বৈশুক্ত অব্যৰীভাৰণ্ড ক্লীবে मा व व पुना मनाममा अक्षः नमाश्रत्वम् इंठार्थः। यथा । बाक्ष्ठ धिमुक गानिशम भि-রোঞ্জীব•া ইতি ক্লীবলিকস अर्जिकाया जन्न जन्मा শিরোধরা জী গ্রীবা। ইতি . ८२ यहसः ॥ শিরোধিঃ স্ত্রী ত্রীবা। ইত্যমরঃ।। नितामिक पू जी मखकशार्गः ्रब्रञ्च । তৎপर्यायः । तृष्टायनिः ্২ শিরোরত্ব ৩। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।। পণ্ডিত্রদা উপাধি-वित्नम्भ ॥ निरद्यामर्या पूर শুকরঃ। ইতি . ट्रिमह्यः ॥ **लिद्यात्रज्ञ॰ क्री लिद्यानि**ः। रेज्यम् ॥ विद्राक्तका जी मक्षणवृक्तः। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ 11 স্বস্তুক-ब्बाग्रन्छ॥ **भि**द्राक्रहे भू কেশঃ। ইতি नमत्रञ्जारनी ॥ শিরোরহঃ পু• কেশঃ। ইত্য-यतः ॥ শিরোরোগঃ পু॰ মন্তকপীডা।

तथा। व्यथ निद्याद्वागाप्रिकादः।

৷ অত্ত শিক্ষোরোগস্য নিম্বান স थाक्शह । भिरतादागास का-যন্তে বাত পিন্ত ককৈ ন্ত্ৰিভিঃ ৷ সন্নিপাতেন রক্তেন ক্ষ্যেণ ক্রমি-ভি তথা ॥ সূর্যাবর্ত্তানন্তবাত **শ॰ थका का वटा छम काः । এका मण-**বিধস্যাস্য লক্ষণানি প্রচক্ষ্যতে ।। শিরোরোগা অত্ত শিরোরোগঃ শুলৰূপা ৰুগভিধীষতে। ৰাভ পি-ত ককৈ স্ত্ৰিভিঃ৷ ননু বাত পিত্ত ককৈ রিত্যুক্তে তল্রিত্ব বোধাৎ। কিমর্থ ত্রিজি রিতি পদ ৷ বা-তপিত্ত কফানা পৃথক্ কারণ্ড বোধনার্থণ। তর্হি সর্বএর শিরো-রোগাঃ সমিপাছসমূত্তবা ইতি ৰূপণাতদা বাতাদয উল্পণ্ডমা পৃ-থক্ কারণানি বোদ্ধব্যানি। क-ষেণ রসাদি ক্ষয়েণ।। 🛊 ॥ বাতি-ৰুস্য লক্ষণ মাহ। যস্যানিমিত্ত॰ শিরসো রুজশ্চ ভবস্তি তীত্রা নি-শি চাতিমাত্রণ। বন্ধোপতালৈঃ প্রশমশ্চ যত্র শিরোভিতাপঃ স मभीत्ररान ॥ ভবেদিভিবিশেষঃ ॥ অনিমিত্ত॰ অতর্কিত বিপ্রকৃষ্ট নিমিত্ত । নিশি চাতিমাত্র রা-ত্রো শৈত্যেন রোগাধিক্যাৎ । প্রতাপঃ স্বেদন । শিরোভিতাপঃ

लिदबादबा

भितः भी जा। का रिश छिक मार ষস্যোঞ্চ মঙ্গারচিত ষ্টেথ্য ভবে-চ্ছিরো দহুতি চাক্ষি নাশ। শীতে-ন রাত্রৌ চ ভবেচ্ছ্মশ্চ শিরোভি-তাপঃ স তু পিত্তকোপাৎ ৷৷ দছ-**बैं** बार्च शाक्षा देश विक मार । भित्रा ভবেদ্বস্য কফোপদিশ্ব श्कक প্রতিষ্ঠন্ধ মথে। হিমঞ্চ । সূ-नाकि नामा वननक रमा नि-রোভিতাপঃ স কফপ্রকোপাৎ ॥ ককোপদিগ্ধ॰ অন্তঃকফলিগু•। প্রতিষ্টর• স্তর্নশির• II #II সামি-পাতিক মাহ।শিরোভিতাপে ত্রি-७ अवृत्त गर्नानि विकानि गमू-स्विष्ठि। 🗱 । त्रक्क मारु । त्रका-ত্মিকঃ পিত্ত সমানলিক স্পর্শাস-হত্ব॰ শিরসো ভবেচ্চ॥ পৈত্তি-কান্ডেদকলিঙ্গ মাহ। শিরঃস্প-শাসহত্ব মিতি ৷৷ ক্লাক্ষজ মাহ া বসা বলাস ক্ষতসম্ভবানাণ শি-রোগতানা মতিসংক্ষবেণ ৷ ক্ষয প্রবৃত্তিঃ শিরসোভিতাপঃ কস্কৌ ভবেদুগ্ররুজো ২তিমাত্র• 🛭 ক্ষত-সম্ভব॰ রুধির । কফঃ রুচ্ছসাধ্যঃ ।। শ্রমো ভূমতি তুদ্যেত শিরো বিভান্তনেত্রতা। মূর্চ্ছা গাত্রা-वमान क निरतादशदश क्यां ब्रि-

क ॥ 🗱 ॥ क्रियक मार्। निस्त দ্যতে ষস্য শিরোক্সোত্রণ সংভ-ক্যমাণ স্ফুরতীব চান্তঃ। স্থাণা-क गटक्क प्रधितः मभृषः भित्रा-ভিতাপঃ ক্রমিভিঃ স ঘোরঃ ৷৷ স-ভক্ষ্যমাণ ক্লমিভি রিতি শেষঃ । খ্রাণাক্তেভি চকারেণ ক্রমি নি-र्गरमाणि रहाशास्त्रा मूर्यावर्ख गार । मूर्यामय या প্রতি गम মন্দ মক্ষি দ্রুব রুক্ সমূপৈতি গা-ঢ॰ । বিবৰ্দ্ধতে চাণ্শুমতা সহৈৰ मूर्यगाववृत्वो विनिवर्खए ह ॥ শীতেন শাস্তিণ লভতে চ কিঞ্চি-मूरकन जबः मूथमाश्रूयाचा । म-ৰাত্মক কফতম বিকার সূৰ্য্যা-वबर्ख॰ তমুদাহরন্তি ॥ সূর্যোদ-य मिछि नकीक्ष्ठा जातरजाडि यावर । সূर्यामा। ववृत्को मूर्यमा। ধোগতৌ ।। 🟶 ।। অনস্তবাত মাহ । मायाञ्च मूकीः अवत्यव यनगाः সংগীড়া ঘাটাং সরুজাং সুতীব্রাং । সর্বস্থি সোক্ষি ভ্রুবি শ**ং**খদেশে স্থিতি° করোত্যাশু বিশেষতস্তু ॥ গণ্ডস্য পার্ম্বে তু করোতি কম্পণ হনুগ্রহণ লোচনজান্ বিকারান্। অনন্তবাত তমুদাহরন্তি দোষ ত্রফোত্থ শিরসো বিকার ।। এব

निरद्वादना

नात्या रहा गायी प्रवासाय-त्नकाषश्राद । श्रमका प्रमा क का॰ राथा बाह देशीत्रवानिकणाः -रामाः वर्षाः । वर्ष मनस বাতঃ যে অম্ভবাতঃ অক্যা-দিষু বিভি॰ করোভি। বিশেষতঃ প্রভুগার্মে হিভি॰ করোভি। গী-ভষা হিত্তি ক্লম্বা কম্পাদীণ্শ্চ करताि ॥ 🟶 ॥ नश्क गार । পিত রক্তানিলা দুষ্টাঃ শখদেশে বিমৃচ্ছিতাঃ। তীব্র রুগদাহ রাগণ ছি শোপ জৰমভি দাৰুণ। স শি-द्रा विषव दिशान् निक्रका ७ १-ল' তথা। ত্রিরাত্রাজ্জীবিত হস্তি শত্মকো নাম নামতঃ ৷৷ ত্ৰ্যাহ্ৰাজ্জী-বতি ভৈষজ্য• প্রত্যাখ্যেষস্য কা-রুষেৎ ৷৷ পিত্ত রক্তানিলাঃ অত্র ককোপি বোজ্যঃ। ক্তান্তাপঃ ক্ষফ পিত্ত রক্তৈ রিতি সুশ্রুত বচ-ना९। विमृष्ट्जिः श्रवृकाः। म শোথঃ। তিরাত্রাৎ তিরাত্র মধ্যে সার্যতি।।#।। অদ্ধাবভেদক মাহ । क्काननामाधाननावनाधाधाः **७ देश**शुटेनः। दिशमः शांत्रशांसाम ব্যাষানেঃ স্থপিতা খনিলঃ ৷৷কে-বলঃ সকফো বাৰ্দ্ধণ গৃহীত্বা শির-(मा वनी।। मना। अ गांध कर्गाकि

निरद्वादक

नवां हाटर्स्य दनम्याः।

मना ही जा रगका वर्ष मकः ॥ सरमः वाष वा द्याव न-छित्रको

जित्रामः । जामामः जित्रतः न ভারোদ্ধনাদিভিঃ। ব্যাবাদঃ বন্ধপ্রমাণ শস্ত্রাশনিকাণ শস্ত্র-পাতেনেব বজুপাতেনেব বেদ-না ।। 🛊 ম অথ শিরোরোগাণা চিকিৎসা। বাতজাতে শিরো-রোগে **স্নেহ স্বেদ** বিমর্দ্দন । পাৰাহারোপনাহাত্ত স্ব্যাহা-ভাষবাপহা ৷৷ সন্ত মেরওমূলে চ নাগরে তত্র পেবিত । কটুক শিরসঃ পীড়া ভালে লেপনতো হরেৎ ৷৷ রসঃ স্বাসন্স্ঠারোখ স্তুস্য নস্যা বিশেষতঃ। শিরঃ শৃ-**गरः ॥ 🟶 ॥ अथ गि**द्रावेखि वि-ধিঃ। আশিরো ব্যাপি ভচ্চর্শ্ম ষোডশাঙ্গুল মুচ্ছিত। তেনাবে-ষ্ট্য শিরোধস্তান্মাযকক্ষেন লে-পবেৎ ॥ निम्हलत्म्याभविकेमा তৈলৈঃ কোকৈঃ প্রপুরষেৎ। ধা-त्ररामाङ्गकः भारेखा यामः यामा-ৰ্দ্ধ মেব চ ৷ শিরোবস্তি র্হরত্যেষ শিরোরোগং মরুদ্ভবং॥ হনু মন্যা-

FREIGH

कि तमार्थि मिकिकः मुक्किकान । विना छ्यानन जिल्लान-खाः थ्रमुकारक ॥ सिनानि अक বা সপ্ত ৰুজি ভত্পরতোপি বা। ততোপনীতমেহস্ত নোচবেষ-खिनमान ।। नित्रा नना वनन श्रीवामीनि विमर्करम् । मृत्या-কেনান্তসা গাত্র প্রকাল্যাশা-তি যদ্ধিত ৷৷ আমিষ জালল भिष्य • তত्र भान्यामस्याभि **চ** । मूलान् मारान् जलथाः क रमका निमि क्वनान्।। कर्ट्रका-কান্ সসর্পিদ্ধানুক্ত ক্ষীর পি-ব্বত্তথা। 🟶 ৷ পিত্তাত্মকে শিরো-রোগে শীতানা॰ চন্দনান্তসাং ।। अगूरमार्थन भग्नानाः न्यानाः সেব্যাশ্চ মারুতাঃ। সর্পিষঃ শত-ধৌতস্য শিরুষা ধারণ হিত॰।। त्रमः भागक्रवादत्राशः कर्ण् तः कः কুমণ নবং। শীতং ছাগীপষঃ সর্বং বদনেনানুবৰ্ষবেৎ ॥ তৃষ্য নস্যু ভিষন্দ্যাৎ পিত্তলাষাণ শিরোক্র-জি। কিন্তু মন্তক শূ**লেছু সর্বেন্থে**ব হিত মত।। গুড় নাগর ৰন্ধস্য नमाः मस्रक भूलन् । । त्रक्टक পিত্তবৎ সৰ্বণ ভোজনালেপ সে-বন ।। শীতোক্ষবোশ্চ বিন্যাসো

विरानंदवी प्रस्तरमञ्जून । अन्यस्त राज्यन (यहमा मुर्ट्या का भारती-মকৈঃ। এ। সমিপাত ভবে কাৰ্যা मिनाञ्चरी किया। भूतान मर्नि-यः गानः विरमस्य मिनन्ति हि ॥ এরখনুলং তগরং শতাকা জীব-ভিকা সৈশ্বৰ রানিকে চ। ভূক विषक मधुसरिका ह वित्यीयक इक्छिनमा रेजन ॥ जनानम ভৈল বিষিপ্ৰিতঞ্চ চতুৰ্ভন্ণ ভূম-রসে বিপক্ষণ। বড্বিন্দবো নাসি-करवाः अस्पराः नर्वानि रन्गः नितरमा विकातान् ॥ ह्यूडा॰ क किनान् भनिषा का मखान् नि-र्वश मृलान् अक्रिक्तां । मू-পৰ্ণ গৃধু প্ৰতিমঞ্চ চৰচুঃ সৰিস্তি বাহ্মো রধিক বলগা। জীবন্তিকা অত্ৰ হরীতকী শাক্ষিশেৰন্চ। ব-**फ्**दिन्नूटेंजन॰ ॥ 🗱 ॥ ऋगटक ऋग नामाय कर्खेंदगा वृन्रतमा विशिश পানে নস্যে চ সর্পিঃ স্যাত্বাতক্ষ र्मश्रेतः गृजः ॥ । । किया किया जिल्ला • ষণকাহঃ শিগুৰীজৈশ্চ লাবণ । অজামূত্র মৃত নস্য কর্ত্তব্য হ্ন-मिन्ध्येत ।। সূर्यावर्खं विधाउ-ব্য নস্য কর্মাদি ভেষজ। যো-জ্বেৎ সঞ্জ সপি ঘৃতপুপাত্ত

जन्दर्थ। मात्रभः कीत्र मधिकार्थः भानक कीव्रमर्शिद्धाः । कीव्रमि देखे खिद्धाः दक्षकी

্ত্ৰীজন্ম ছাগদী নত্ন্যাৰ্ক ছাথিক: ॥ সূৰ্যানৰ্ক নিক্তমান্ত নন্যেনেৰ প্ৰযোগ

्राञ्चक्कानर**्वरकशूर्वः** स्त र त्यान हि एवसक ॥ विदर्भकः কাৰ শুদ্ধিক ধুপ নিক্ষোক ভো-कन । विषद्रानि विवान क्रकान मयान् शिकु। दिल्लशस्य ॥ न-স্যা বাপ্যাচয়েক মাদৰ্কভেদ ব্য-পোহতি। পিবেৎ সশর্কর কীরণ नीतः वा नातिरकलकः॥ मूगी-তয়াপি পানীষ সৰ্পি ৰা নন্তত ন্তবোঃ। নন্ততঃ নাসিক্ষা পি-বেদিতাম্ব। তফোঃ সুর্য্যাবর্তা-र्काञ्चरकाः ॥ 🗰 ॥ ञनस्रवास्त কর্ত্তব্যঃ সুর্য্যাবর্ত্তহিতো বিধিঃ। শিরাব্যধশ্চ কর্ত্তব্যো ২নস্তবাত প্রশান্তবে ৷৷ আহারশ্চ প্রদাত-ব্যো বাত পিক্ত বিনাশনঃ। মধু মম্ভক সংযাব ঘৃতপুপৈ বিশেষতঃ ।। म॰यावः शकान्नविद्ययः। এत्र-কিয়া ইতি লোকে। স চ মধুমস্ত-कः मधुरनाथिलक्षः । घृङशृद्वा २ भूभः ॥ भयाक धावी तकनी

Maria

यः। अ गथ कर्गाक नितार्थ भूग निरुष्डि मानानिहिष्टः स (बन ॥ श्रथातिकायः ॥ का स बी रविका यक्षिका गनित्याणीत পদ্মক ৷ এতৎ প্রলেপন কর্মা-क्र्॰थकमा विनामरवर ॥ शीज-তোষাভিষেকক শীতল ক্ষীর-(जवन । करेक क कीत वृक्ता-ণা॰ শহ্মকে লেগন॰ হিত•।।।।।। मर्दिया यसीमधूक मायः मार **ज्**याःगञ्ज विष खत्व । ज्या भृ्षं मृष्ण माजिकृर्ण मर्याना-মিত ।। নাসিকাভ্যস্তরে ন্যস্ত नर्बाः भीषवार्थाः इत्तरः । पृष्ठे প্রবোগো বোগোষ মনুভাবি-ভি রাদৃতঃ।। আর্দ্রণ যক্ষ্ ক্রিকা চূর্ণ চূর্ণিত নবসাদর । উভ-য বাজিত গন্ধান্তস্য নশ্যতি শীর্ষরুক্।। ইতি ভাবপ্রকাশে **मिर्द्रार्द्रागाधिकादः ॥**

শিরোর্ত্তিঃ ন্ত্রী শিরংপীড়া। ইতি লোকপ্রসিদ্ধিঃ ।। শিরোবল্লী ন্ত্রী বর্হিচ্ডা। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। শিরোবৃত্তঃ ক্লী মরিচং। ইতি

त्राक्रनिर्यकः॥

निवास

भित्रान्खकनाः शुः ब्रङ्गामानार्गः া ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ **मि**ह्यादिकः शृ उकीवः। ইতি ত্রিকাওশেষঃ ॥ निरत्रारवर्षेन॰ की नितःथावत्न॰ । পাগডী ইতি ভাষা। ভৎ-পর্য্যায়ঃ। উষ্টীয়ঃ ২ বেষ্টন ৩ বেষ্টক । ইতি শব্দরত্নাবলী ।। भित्तात्वर्धः ६ किटला थुकः ७ া ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ **मित्तांक् क्री यलकाव्हि। याथात**-थ्नी रेठि ভाষा। তৎপर्यायः। করোটিঃ ২ শিরক্তাণ ৩ শীর্ষকণ ৪। ইতি রাজনির্ধণ্টঃ ।। **मिल म উद्ध्य। ই** ि कविकन्न-দ্ৰন্যঃ।। উঞ্ছ উদ্ধৃত শস্য শেষা-रतनः। भ भिन्छि धानाः मीनः । শেলিতা। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ শিল ক্লী পু উঞ্চঃ। ইতি মে-**मिनी ।। जीवत्नाशायवित्मयः ।** যথা। ঋতামৃতাভ্যা॰ জীবেজু ষ্তেন প্ৰস্তেন বা। সত্যান্তা-ভ্যা মপি বা ন শ্ববৃত্ত্যা কদাচন ॥ ঋত মুঞ্ছশিল॰ জ্ঞেষ মমৃত॰ স্যাদযাচিত । মৃত্ত্ব বাচিত। टिकः अमृष्ठः कर्यनः स्मृष्ठः ॥ ইতি মানবে ৪ অধ্যায়ঃ।। অবা-

বি তহানেৰু পথি বা কেতেৰু বা অপ্রতিহতাবকাশেষু বত্র বত্তী-नशरम। विमारस जब जजानूनी-ভ্যাণ একৈকণ কণণ সমুক্তবিদ্বা रें हिं दीशायन मर्गना । এरक-क धानगामि खंडरकाक यन मूझः । মঞ্জব্যাত্মকানেক ধান্যোচ্চয-न॰ निलः। उक्षम निलम्ह हे-ত্যেকবন্তাবঃ। তৎ সত্যসমান ফলম্বাদৃত মিত্যুচাতে। ইতি তট্টীকাষা• সল্লুকভটঃ ॥ निनगर्जकः पु॰ भाषागरजननः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ निना जी शायानः॥ बातामः-স্থিতদারু। ইত্যমরঃ॥ স্তম্ভশী र्य ।। यनः भिना । ইতি यে िनी ॥ কপূ র:। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ मिलाक्नी खी मझकीवृक्कः । ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।। <u> निनामिकः पू॰ वेकः। देखि</u> শব্দরত্বাবলী।। भक्षिका ॥ त्वारः । রাজনির্ঘণ্টঃ !! শিলাজতু ক্লী 'পৰ্বতজাতোপ-रिनीजाया। তৎপर्यायः। रेग-

শিলাজ

রেয়ণ ২ অর্থ্যণ ৩ গিরিজণ ৪ অ-শ্বজ ৫। ইত্যমরঃ।। শিলাজ ৬ অগজ ৭ শৈল ৮ অজিজ ३। ইতি রত্নমালা।। শৈলেয়॰ ১০ শীতপুষ্পকণ ১১। ইতি শব্দ-**इन्छिका ॥ मिनाव्या**क्षिः ३२ । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। অশ্মোখণ ১৩ অখ্যনাকা ১৪ অখ্যজতুকণ ১৫ জন্বশ্বক ১৬। অস্য গুণাঃ । जिक्कप्रः। करूपः। जेकप्रः। त्रगारवन् । त्यदश्यामाणती শোক সভাগতার নাশিত্বক হ ইতি রজনির্ঘণ্টঃ।। অপি চ। শর্করা সর্বরোগহরত্ব । যোগ-বাহিত্ব । অত্যুক্ত শীতকত্বঞ্চ । ইতি রাজবল্লভঃ ॥ অস্যোৎপ-ত্তি নাম লক্ষণ গুণাঃ। নিদাবে ষর্ম্ম সম্ভপ্তা ধাতুসার পরাধরাঃ । নির্যাসবৎ প্রমুঞ্জি তচ্ছিলা-জতু কীর্ত্তিত ।। সৌবর্ণ রাজত তামু॰ আযস॰ তচ্চতুৰ্বিধণ। শি-वाজप्रजिङ्ग ह रेमनिर्गिम ইত্যপি ॥ গৈরেষ মশ্বজঞ্চাপি গিরিজ শৈলধাতুজ। শিলা-হ্ব কটু তিক্তোক্ত কটুপাক র- 🛚 **मायन** ॥ ছেদি যোগবহং হস্তি কক মেদাশ শর্করাঃ। মূত্ররুচ্ছ°

िकाश

ক্ষৰ শ্বাসং বাতাসূৰ্যাণসি পা-ণ্ডুতা॰।। **অপস্মার**॰ তথোন্মাদ॰ শোথ সঞ্চোদর রুমীন্। দৌব-র্ণস্ত জবাপুষ্পবর্ণ ভবতি তদ্র-সাৎ ।। মধুর॰ কটু তিক্তন্ত শী-তল কটুপাকি চ। রাজত পা-**ণ্ডুর**ণ শীতণ কটুকণ স্বাদুপাকি চ।। তামু॰ মধুরকণ্ঠাভ॰ তীক্ষ मुकक कायल। लोश करोयू-পক্ষাভ॰ তত্তিক্ত• লবণ• ভবেৎ ।। বিপাকে কটুক শীত সর্ব-শ্ৰেষ্ঠ মুদাহত । ইতি ভাব-थकानः॥ निवाक्षनी जी कावाक्षनीवृकः । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শিলাটকঃ পু॰ অউঃ।। বিলং। रेंछि यमिनी ॥ निनाप्रकः क्री लारः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ শিলাগ্মিকা স্ত্রী মূষা। ইতি শक्ठिक्का ॥ निनामकः प्रः त्नात्नयः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ **मिला**शाजुः श्रू॰ मिराजाशनः । খডী ইতি ভাষা। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ ।। গৈরিকভেদঃ । স তু 'পীত্বর্ণঃ। ইতি রাজনির্ঘল্টঃ।।

শিলাব

সিতোপলঃ শিলাধাতু র্বর্ণরেখা চ মর্কুলং। শিলাধাতুবিশেষস্ত বিজ্ঞেযোলোক শাস্ত্রতঃ॥ ইতি শব্দরত্বাবলী॥

শিলাপটঃ পু॰ পেষণার্থশিলা। শিল্ ইতিভাষা। ইতি কেচিৎ।। শিলাপুত্রঃ পু॰ পেষণযোগ্যশি

ला। लाजा हेि जाया। ठः शर्यायः। यर्यालः २ मिलाशू-

खकः ७। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥

भिनाशूष्ण॰ क्री त्मालय॰। ইভি রাজনির্ঘন্টঃ।।

निलाज्यः क्री टेनटलयः। ইতি জটাধরঃ॥

শিলাভেদঃ পু॰ পাষাণভেদী-বৃক্ষঃ। ইতি রত্নমালা।। প্রস্তর-ভেদকাত্রঞ্চ।।

শिनात्रञ्जा जी कार्श्वकमनी। ইতি त्राजनिर्वकः॥

শিলাবন্ধা স্ত্রী ঔষধজব্যবিশেষঃ

। শিলাবাক্ ইতি হিন্দীভাষা।
তৎপর্য্যায়ঃ। শিলজা ২ শৈলবন্ধলা ৩ বন্ধলা ৪ শৈলগর্জাহ্রা ৫ শিলাম্বক্ ৬ শ্বেতা ৭ ।
অস্যা গুণাঃ। হিনম্বং। স্বাদুরং।
ক্রচ্ছ নেহ মূত্ররোধাশরী শূল
ম্বর পিত্ত নাশিস্বঞ্। ইতি রাজ-

गिनी मु

निर्घण्डेः॥

শিলাব্যাধিঃ পু॰ শিলাজতু। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।

शिंनामन॰ क्वी रेगत्नस्। ইডি শব্দরত্বাবলী॥ প্রস্তরনির্মিতা-मनश्रा।

শिनामातः क्री लारः। ইতি • ट्रमञ्जः॥

শিলাহ্ব॰ ক্লী শিলাজতু। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥

निनिः १ जुर्जशब्दकः। ইতি नक्याना ॥

लिनिः खी बातायः दिख्यार्थः । रगावतार्हे देखि ভाषा । देखि भक्तत्रज्ञावनी ॥

শিলিন্দঃ পৃ• মৎস্যবিশেষঃ ।

যথা। শিলিন্দঃ শ্লেমলো বল্যো

বিপাকে মধুরো গুরুঃ। আম

বাতকরো হুদ্যো বাত পিত্ত হ্রোমতঃ।। ইতি রাজকলভঃ।।

দারাধংস্থিতকাঠ°। ইতি শব্দরত্মাবলী ॥ গণ্ডুপদী ॥ স্তম্ভশীর্ষ•। ইতি মেদিনী ॥

निनीकु॰ क्वी कमनी भूण ।। क-तका। इंडि. स्मिनी ।। जिभूगे। इंडि विश्वः।।

भिजी खुः शुः वृक्तवित्मयः। **रे**डि

त्मिनी ॥ में श्रादित्मयः । म जू ठित्रकलकम् श्राः । इंडि क्रिं। ध्राः ॥

निनीकुक॰ की गामसक्खिका। यथा। गामसक्खिका मार्ह र्मि-नीतक निनीकुक॰। ইতি হারা-यमी।

निनीस्त्री खी विश्गीएजमः॥ ११७१-श्री॥ मृखिका। ইতি মেদিনী॥ निनीशंमः भू॰ भामत्वागवित्भयः । शाम इंडि ভाষা। তৎ शर्या-यः। शामगखीतः २ भीशाः ७। 'ইতি শব্দরত্নাবলী।। পাদবন্মী-कः १। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ দ্বীপ-मग्र विश्वक्षके निमान गार्। পুরাণোদক ভূষিষ্ঠাঃ সর্বর্ত্বু চ শীতলাঃ। ষে দেশা স্তেষু জায-**ए भी भागि वित्ययकः ।।** वि-শেষত ইতি বচনেনান্যত্রাপি শ্লীপদানি ভবস্তি ইতি বোধ্য-তে।। 🐠।। সামান্য ॰ লক্ষণ মাহ। **ৰ্যঃ সন্ধ**রো ব**ণ্ক**ণজো ভূশার্ত্তিঃ त्नात्वा नृगाः शामगञः क्रत्यन। তৎ দ্লীপদ স্যাৎ কর কর্ণ নেত্র শিশ্বোষ্ঠ নাশাস্থপি কেচিদাহুঃ ।। তন্ত্ৰিবিধণ । বাতিকণ পৈত্তি-ক সৈমিককেতি ৷ তেয়া লক্ষণ 🏻

মাহ।। 🛊 ।। বাতজ্ব ক্লফ ৰক্ষ হৈ ক্ষুটিত তীত্ৰবেদন । অনিমিত্ত রুজঞ্চাস্য বহুশো ত্বর এব চ ৷৷ঞ৷৷ পিত্তজ॰ পীতসঙ্কাশণ দাহ স্থর-ষুত• ভূশ•। 🗱। স্লৈমিকন্ত ভবেৎ নিশ্ব॰ তথা পাণ্ডু গুরু স্থির: ॥ লীণ্যপোতানি জানীয়াৎ শ্লীপ-দানি ককোচ্ছ্যাৎ। গুৰুত্বঞ্চ ম-र्षक यनामां छि विना ककान्।। ॥ जमाश मार । तन्त्रीक मित সংজাত কণ্টকৈ ৰুপচীযতে । সৰ্বাত্মকণ মহত্ত্বঞ্চ বৰ্জনীয়ণ বি-শেষতঃ ॥ य९ क्षियानाहात वि-হার জাতৈ র্জাত তথা ভূরিক-कमा पू॰मः। मामु।व मपू।बि गर्बलियः गक्छकः वालि विव-र्जनीयः ॥ 🟶 ॥ ञमा চिकिৎमा ॥ लब्बनारलथन स्वम द्विहरेन রক্তমোক্ষণৈঃ। প্রাষঃ শ্লেমছরৈ क्रदेकः भीत्रमः ममूत्राहदत्र ॥ সিদ্ধার্থ শোভাঞ্চন দেবদারু বি-(श्वीष्टिश मू विष्टुटिंश क्षिलिल्ला । পুনর্ণবা নাগর সর্বপাণা কল্কেন বা কাঞ্জিক মিশ্রিতেন।। শ্লীপদ মিতি শেষঃ।। ধন্তুরৈরও নির্গুঞ্জী বৰ্ষাভূ শিশু সৰ্ব পৈঃ। প্ৰলেপঃ শ্লীপদ হস্তি চিরোখ মপি দারুণ

शा अंगांधा मिन याणा छ । भी निवास में निवास का मिर का मिर

स्विष्ण भीना रिख प्रका मर्छ प्रका मर्छ प्रका मर्छ प्रका मर्छ प्रका मर्छ प्रका मर्ग विकास मर्ग कि का स्वा कर स्वा कि का स्व का स

त्रञ्जावनी।। भिनामस्त्रिनि जि।।

শিলোক্ষঃ পু• প্ৰতঃ। ইত্য-মরঃ॥

नित्नाकः पुः উक्षनिनः। छेथान ভশস্যাৎ ক্ষেত্রাৎশেষাবচয়ন" । উष्ट्रिन शक्ति हक्षानानकता-হণেন শিষ্যতে সঞ্চীযতে উঞ্চ-শিল । উছিশুঞ্ শিলশুঞ্ রুদ্ধো রিত্যুক্তে কু গু জ্বেতি ই-জুঙ্দ্বাৎ কঃ উঞ্চশিল সংঘাত विगृशी**ण विशर्यासः । भका**॰ नटिम्श्रिनित्वन वृक्तिः कटवन মূলেন চ বারিণা চ। ইতি সমা-श्राबद्यम् । উष्ट्रः निनमः। উक्ट ভৈক্ষণ ষচ্চান্যৎতৎপরিগ্রহণ ত্বত ইতি নিগমাভিধানে ক্লী-বং পুমানুঞ্ ঋতং শিলং ইতি বোপালিতে পুংস্যুঞ্চঃ। রষুকা-রাহতসারে পরিণত বাক্ কল্ম-কেদারে। ভবভূতি ক্নত শিলো-ঞ্ছে তত্তল পতিত বৰ চিনুমঃ।। ইতি গোবৰ্জনঃ। কেচিদুঞ্ছ শি-লযো র্ভেদ মাহঃ। প্রতিগ্রহাৎ ' শিল' শ্রেষ স্ততোপ্যুঞ্চ: প্রশ-मार७ रेजि। তक भानाएम र्नि-পাতিত পরিতাক্ত মঞ্চরীণাণ ञानानः भिनः। भिनः धानाः मक्षतीमः এर देखि यामी है।

खेरककणः कर्णाठवकाना क-रामण्ड्य मूक्षः। जनुकः উद्धाः याना कर्णाफ्रयः इणि। णिलः छानगामि मञ्जामि ह। ईण्डा-महिष्णायाः खत्रजः॥ भिरतायः की निर्द्ययः। ईणि त्राक्रनिर्यणः॥

শিলোন্তব ক্লী শৈলেষ ছিতি রাজনির্বন্টঃ 11 চন্দনবিশেষঃ 1 যথা 1 সুশীতল চন্দন বং তৈলপর্ণিক সুচ্যতে 1 উভযৌ তস্য পর্য্যামৌ সোমবোনি শি-লোন্তব 11 ইতি শব্দচন্দ্রিকা 11 শিলোকাঃ পু গক্কডঃ 1 ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ 11

শিল্প ক্লী কলাদিক কর্ম। হনর ইতি পারসীকভাষা। কারিগরী ইতি হিন্দীভাষা। ইত্যমরঃ ।। বাৎস্যায়নোক্ত নৃত্যগীত বা-দ্যাদি শ্চতুংষ্টি বাছক্রিয়াঃ তথা আলিঙ্গন চুম্বনাদি চতুং-ষ্টি রভান্তরক্রিয়াঃ কলাঃ । আদিনা স্বর্ণকারাদি কারুকর্ম-গ্রহঃ। এতৎ সর্বং শিল্প কথ্য-তে। ইতি ভট্টীকায়াং ভরতঃ ।। সুবঃ। ইতি মেদিনী।।
শিল্পকারঃ পুং শিল্পী। শিল্পবিদ্যা- ৰ্যবসাধী। কারিকর ইতি ভাষা । শিব্বং করোতি ইত্যর্থে ধণ্ প্রত্যবেন নিষ্পান্ধঃ।।

শিন্নকারী ত্রি শিন্নকর্মকর্তা। **ज्यान्य अन्या** विश्व-कन्ना ह भूजाया॰ वीर्यग्रधान॰ চকার সং। ততো বভূব্ঃ পুত্রা-শ্চ নবৈতে শিল্পকারিণঃ ॥ মালাকারঃ কর্মকারঃ শঙ্কাকা-রঃ স্বিন্দকঃ। স্মুকারঃ ক॰-সকারঃ যডেতে শিল্পিনা॰ বরাঃ ।। সূত্রধার শিচত্রকরঃ স্বর্ণকার স্তথৈব চ । পতিতা স্তে ব্ৰহ্ম-শাপাদজাত্যা বর্ণসঙ্করাঃ ॥ স্ব-र्वकातः सर्वक्रीया बामाना-না॰ ধিজোত্তম। বভূব সদ্যঃ পতিতো ব্ৰহ্মশাপেন কৰ্মণা ॥ সূত্রধারো দ্বিজাতীনা শাপেন পতিতো ভূবি। শীযুঞ্ যজ্ঞকা-र्धक न मत्मी एवन (रुवूना।। वाञ्चित्रपं ठिळागा नगा निज-ত্রকর স্থপা। পতিতো ব্রহ্মশা-পেন ব্ৰাহ্মণানাঞ্চ কোপতঃ ॥ কশ্চিদ্বণিক্ বিশেষশ্চ সংসগাৎ यर्गतिनः । यर्ग्होर्गामि मा-ষেণ পতিতো ব্ৰহ্মশাপতঃ हैि बक्तरिवर्स्ड बक्तथर७ >•

व्यक्तांयः ॥ मिष्णाना जी की वर्गनातानी-না॰ কর্মগৃহ॰। কারখানা ইতি शावशीकভाষा। তৎপর্ব্যাयः। **जारवनन॰ २। ইত্যमद्रः ॥ नि**-দ্বিশালা ৩ শিক্সশাল ৪ শিদ্ধি-শাল ৫। ইতি তট্টীকা।। শিৰণাত্ৰ জী শিৰকৰ্মগ্ৰন্থঃ। হুৎশান্তাৰি বহুনি সম্ভি তন্মধ্যে বাস্ত্রশাস্ত্রৈক লিখ্যতে। যথা। ন্ত্ৰী পুত্ৰাদিক ভোগ সৌখ্য জ-নক ধর্মার্থ কামপ্রদ জভুনা लयन मूथाम्भाम भिमा मीठा बु चर्चाপर् । वाशी (नवगृशानि भुग मथिलः शिक्ष ममुद्रशामा-তে গেহু পূৰ্ব মুশন্তি তেন বিবৃ-याः वीविश्वक्यामयः ॥ निरेका श्रात् मुनिष्ठि वृक्षा यत्थामि-তে মাসি বলকপকে। শৃশাস্ক वीर्या श्रुमितन निमित्स ७७॰ त्रदो मोगागट थरवण ॥ টৈত্তে শোককর গৃহাদিরটিভ मानाधरव २र्थथमः टेकार्छ मृ-ত্যুকর শুচৌ পশুহর তদুদ্ধি

मः अवित्। भूनाः जाजशाम

ংশিনে কলিকর• ভৃত্যক্ষয়• কা-

र्ভिक शाबा भार्त गर्गारमा पं-

रनजी माटव श्रियः काश्रुद्त वामित्वा रित कर्व नक घटेला প্ৰাপরাস্য গৃহ কর্ত্রা ভুল ताय वृश्विक वृत्य यात्माखन्ना-স্যাণ তথা। দারণ ভিন্নত্যা ক-রোতি শ্রমতী রোগার্থ নাশ खना कना। भीन अनुर्गतक मियून-(त्र ठात्रिस कार्याः शृहः ॥ कन्ता-मि जियू পূर्वতा समिमि छाङा-ঞ্চাপাদিতো হার পশ্চিমত-खिरक कनम्बाद मोत्या त्रदो युभावः । सन्याद्यस्मयुक्षः किमा-म् ७वनः काम्रानिकः शनिक्रः সিংহং বাণি বৃষঞ্ বৃশ্চিক ষটং বাতে হিত সৰ্বতঃ ।। প্ৰাচী মেষ नगारेष यव्य

ত্নিতে চিত্রী স্বাভিত মধ্যগা মিগদিতা প্রাচী বুবৈঃ পঞ্চা। প্রা
লাদো তবনং করোতি নগরং
দিয়ুত মর্থক্ষয়ং হর্মো দেবগৃহে
পুরে চ নিতরা মাধু র্ধনং দিলুথে
।। তারে মার্ক তিকে প্রক্রা সমতাং নীতে বলে বৈনতে দীপাগ্রেণ তদৈক্যতশ্চ ক্থিতা সূত্রেথ সৌমা দিশা। শঙ্গো নেত্র গুগেন ৩৬ মন্তল্বরে ছায়া তথাে
মৃৎসায়ো ক্রাতা গ্রুযুভিত্ত শৃদ্ধ-

श्रदामुकः स्थापनाः सम्यानकः श्रदामुकः स्थापनाः सम्यानकः श्रदामुकः स्थापनाः सम्यानकः

निवः द्वारम विष क्वा स्थमा
सारनः भकः श्राविद्धाः श्रावनः
साननः मामग्रः ॥ ज्ञथ ज्
सिव्धारः ॥ ॥ ११ त्यञ जानन
ज्ञाननः मामग्रः ॥ ज्ञथ ज्
सिव्धारः ॥ ॥ ११ त्यञ जानन
ज्ञाननः मण्डना । ज्ञानन
ज्ञाननः मण्डना । ज्ञानन
ज्ञाननः ह्यान्यान्याः
सारम् । ज्ञात्म क्वामा ह ना ।
सारम् ॥ ज्ञात्म क्वामा ह ना ।
सारम् ॥ ज्ञात्म क्वामा मण्डना
मण्डिनो ह क्वामा मही क्वामा मथ्या
मण्डिनो ह क्वामा ज्ञानमा मथ्या
मण्डिनो हक्वा क्वामा मथ्या
मण्डिनो हक्वा क्वामा मथ्या
मण्डिनो हक्वा क्वामा मथ्या
मण्डिनो हक्वा क्वामा मथ्या

ा (अश्विका वक ज्ञक्य स्वा वी मिशामंबका। पू विजानसा वी स्व ॥ अद्गीकिकायाः ज्वि विज्ञ-क्वाकः गमर्न्द्रस्य प्रक्षिक्य। मदम-सः। क्वाक्षिणः प्रकितिकः मूथा-यान मूल्ला स्ट्रेश विज्ञिकः मूथा-या। थाकः ज्ञि श्रीकट्य क्व मिकः छ्य श्रुट्यक्यम्मा श्रीहन शैन क्वाः मस्य म्यक्वाः वाट्या स्वा विज्ञित । छ्युक्या क्वापूर्व মাশতগদ॰ গদ্বা পরীক্যা পুনঃ শালোদার্ক বিহীনকেথ নিভূতে ক্ষ্যাধকেন্টামুনি।। ভূমেঃ প্রাক্ প্রেরণ শক্ষর কলপ্ সৌম্যাগ্রি-কৌশ্যদ॰

নে চানরণ চৌরাভ্যণ রক্ষসি। वायत्या अवशक धाना इत्र १ गा-एकाकमः बाक्रनः विश्रापम त्रम् বৰ্ণতশ্চ সুখদ সৃষ্টিক্ৰমাৎ সৌ-माजः॥ অभी ताकम ताबू भकत দিশি স্থাপাঃ ক্রমাৎ কীলকাঃ অস্থ্যাৎ খদিরাৎ শিরীষ কল-छा वृका करम विकाः। तर्ना-নাণ্ডশ মুঞ্জ কাশ গণজণসূত্রতক্র-মাৎসূত্রণে নিমাভূঃক্ষুটিভোবরা विनद्धी भरता र्यूषा ना एका।। ক্ষপতাদিত্যত্ত বঙ্গলাদিতিচ পা-ঠঃ ৷৷ এক্তৰ বাপি গৃহাধি-পেন দেবস্য বৃক্ষ্য কলস্য বাপি । বাচ্চা হি কোণ্ঠাকর সংযুতেন সভ্য ৰিলোক্য ভবনেষু সৃষ্ট্যা।। বা কাচাটাতা এহ সা পাপবর্ণাঃ क्षामामित्र कार्शक मना मुक्छ॰ । क्लाबाद्राः कार्श्व लाशास्का-ঢ়া তম্মাৎ কাৰ্য্য লোধন ভূমি-**কাষাঃ।। শল্যাং গৰাং** ভূপভয়ং र्यानाः ऋषः । अप्नाट्याः कवर

अनारनी । धरताकुरग र्शमि म-॥ পত্যনাশ স্ত্রীণা নজস্যামিডয **छत्ना**छि ॥ 🕸॥ कन्गारको द्विष्ठ खरा करिन्थ श्वामि न्यिकन খ্যাত বাস্তবপু দিশাত্রবগত वाकृत गृष्ठे॰ निद्रः। बाद्रः छम्। मूर्थ गृशामि असम अकिस्टर क्रीथामः मूध्यः श्राक् थमरम भि-द्राञ्जि दश्यः अटको मूथ मकि শে এ। প্রাচ্যা॰ নাগমুখ॰ বুবৈ র্নি-গদিত ভাজাশ্বিনে কার্ন্তিকে শা-ৰ্গাৎ কাস্তুন শুক্ততঃ ক্ৰমভ্যা যাম্যে জলে চোত্তরে। কেত্রে চাক্ট বিভাজিতে দিনকরাদারা-लिएथ कार्रगान् मनानात्रक-যোশ্চ তত্র ফণিনঃ শারীরকণ ता थत्न ।। • ।। भीर्त्य मा**र्** পিতৃক্ষয়ঃ প্ৰথমতো খাতে ৰুজা পুচ্ছকে পৃঠে হানিভবে চ স্বক্ষি-খননে স্যাৎ পুত্ৰ ধান্যাদিক । পূৰ্বাস্যে খনিলখাতন যমমুখে খাত শিবে কারবেৎ শীর্ষে প-শ্চিমগে চ বঙ্কি খনন সৌম্যে थत्नदेशसंद्र्ण ॥ मिक्निन्दकार्ण भू व ৰিভাগে পূজনপূৰ্ব শিলা সম-প্যা। স্থাপ্যা শেষশিলা দক্ষিণত উন্ডাঃ সমর্প্য। বিধানেন।। • ।।

বন্দাৰ্থকা৷ সূত্ৰ-ভিত্তি নি नामः उपनादित्राभनः उभा भू-र्व मिन्ग्रिया मंद्रा अय्गिमिन्गार कामार्भः। नात्रमः। नजगामिष् गारमम् जियु जियु नशाक्रमः शू-वापिषिक् भिदता वामशार्याणायाः अम्बिनः।। वास्त्रभारत्रभारत्रभारत्रभारत বাজোঃ শিরসি পুচ্ছে চ বামঙ্গ-त्को ह शृष्ठिकः। चायुः कायः ध-म्बदेशक प्रकारको थिनः छछ। ॥ 🛊 ॥ जिएछ मून जानीयः জনান্তে পাষাণে ধা হেন রক্লৈঃ मगर्छ । नीर्ख छवी तनभरीना-ধিকা বা সন্ধিত্রেশিঃ পাদহীনা-बंशादेना ॥ खरन शूत्र सूत्रांगाः সূত্ৰণে পূৰ্বসূক্তঃ কথিত ইছ পৃ-থিব্যাঃ শোধনেপি দ্বিতীয়ঃ। ত-দনু মুখনিবেশে স্তম্ভ সংরোপণে-স্যান্ডবন বসনকালে পঞ্ধা বা-खरब्दः ॥ सः॥ वृक्तः मुक्त मकन्छ-काक कलिन खाङ्या गृशाकृत-তঃ শস্তে চম্পক পাটলে চ কদলী জাতী তথা কেতকী। যামাদূর্দ্ধ মশেব বৃক্ষ সুরজা চ্ছাষা ন শস্তা গৃহে পার্শ্বে কস্য হরে রবীশ পুর-তো জৈনানু চন্ড্যাঃ ক্বচিৎ ৷৷ স मूक्षवृक्षा जित्नमा नामः वर्वस्थि

कारियान सवित्र नहीं कि । के वारियान सवित्र नहीं श्री श्री वार्की क्वत्राखित्वाचे विकेशी द्याक्ति कि नव्यक्ति क्रिशी स्मी प्रताक रज्ञत्वो भूमाग व-कन्नाको। बाकाभूनक मध्यक विज्ञकान

কপীতন **हारवीषूषत्राश्वयदको ॥ अ ॥ छ ६**-मनवायाजिम्यः अत्यमः याष পৃঠভবো ভবনগ্য পৃষ্ঠাৎ। বিনা-শহেজুঃ কৰিতো ২পনব্যঃ সৃষ্ট্যা व्यमस्य ज्वरन श्वरण श्रमा। **थाःतमः अधिकायकः दक्रपति**-থকে। ভবেৎ সৃষ্টিত। ৰামাবৰ্ড छतास्राञा समगूर्थ रतनो शैन-बाह ब्रिश । छेर मदना मद्रवाह-नाजिवमनः गृष्णा ववा निर्मिः ভঃ প্রাথক্রোপি চ পূর্ণবাছ রূদি-टिंग रमर्ट हर्जुका युद्ध ॥ •ा। হস্তঃ পৰাষ্টযুক্তো মুনিবর রচি-ত্ত পৰ্ব চৈক জিমাক মাজা বয়া विवासी भूमत विभिनिका मिखुंहा मुख्यानाः। भूरेश कषाति शृईः छम्नू ह विषद्धमञ्जू देनः गर्वभू-देण निअही तककार्छ। मधुमय

क्रिकः भाषित्व वन्त बाद्यागा ब्लाटका रकांकि यदनामदेवस गू-शिक्षि मेशास वह कनाटमा नाभाग চোড়ৰকেন আৰ নগর কোখা-बिक स्माजन । धानाम थाउत्व म्भमा खरमः गर्याम र्गामिकः ধান বড়বৰ সভবেন শ্যন ছ-व्यानबाजापिक ॥ 🛊 ॥ ऋरजा ৰাষু বিশ্বকৰ্মা হতাশো এনা काल खारभः याम विकृ: १ भू-त्न प्रता बृह्मका श्वान्त म-बार शकाकाना वामि त्रदेव विंजजा ॥ अत्मा माक्र विश्व বহ্নি বিধৰঃ সূৰ্য্যশ্চ ক্লডো যমে। देवन्या दमर्यास मिख दक्रा वर्षक् रेक्श किया। छान वि-তপতি মিশাকর জবৌ প্রীবাস্-**(मरा) रुगी कारमा विक्** तिि करमन मकरा रस्य बस्तिनिंग-তিঃ ৷৷ 🐞 ৷৷ উক্ষাটন বোগ ভ-यक मूर्थ यद्भ र्छम श्रीष्ठनक अकाराः। मृज्य विनात्माणि ध-नक्षः गात्यारः क्याटेक्दछ भीषत्नन ॥ ।। एसा स्त्राद श्रूनारमा तर्खेतारम प्रख्री भार्यो। मिन्तारमी निरंदरम । र्छाष्ट्रिंगी याञ्क्रमाखगारमे कार्या विकै

भूग्भ नाविष्यत्याकि ।। पाननगाविका शतिक आयोग-प गांद कता शास्त्रीय अपन রোপি কিছ ক্লমি र्जिः क्टेब्राः। ब्लाह्मः एष जानु यूचा यू निर्ण बाजा क गर्ग जिला ভাত্যা• বোজন নেৰ জুনি রাখ-(राज्याक

1

र्थामञ् गास्यवद मः छः। का-ঠক স্ক্যাখ্য মতোপি লেখ্য মি-তাক সূত্ৰাণি ৰদ্ধন্তি সন্তঃ ৷৷ ইতি ৰাম্ভণাত্ত্ৰে ৱাজবদভদখনে মি-अंकनक्षवर्गनः नाम ३ व्यद्या-यः ॥ ।। गुजारमञ्जूक कृणस्म-स्त भिण्डः (यहना महरूपाधः कि তৌ তথাত্ত মৃত্ত ভীতিখন-नः मावान्षिताः संर्थः। क्टल-देव द्र जन। विशृष्ट निहिजः खूता-वरशवकुकः समानाः वजनाक বাস্তপুরুষ ভেনেব পুজ্জা বুরেঃ ॥ थागारम ज्वत्न छ्लान संसन कृत्भ ह वागी वरन कीर्त्यकान्न-পুরে চ বাসভবনে র্ভনে। বাজোঃ পূজনক कथिक भूका दिना समार्यामा

लाः नवाक्राकान्यम् । स्वया-कृषि नाष विहासीय त्यूका नत्स् जाननरगुरुः । जानात्र-গৈৰিত উপলোপি তেতু চৈকাৰি-শালীভিগদ ভবৈৰ ।। **এ**। এ। তা ভূপতি মন্দিরে চ নগরে পূজ্য क्रमूरवंबिष्य त्रकानीविनत्तः गमक जनरम जीर्म नवाना भ-हैकः। धार्मारम्थं महान्मदेवस वक्त शुका खना मध्य कृत्र বাৰ চন্দ্ৰভাগ সহিতে ১৯৬ বাগী छडारग बरम ॥ जेल्मा जूर्कि ज-माखिष्ठः अवगरमाः शर्कनामाना विचि द्राभ खगा गरन छन्। ब्राल (आर्ट्स) अर कानिष्ठिः ৰ উক্তাবৰ্গৰ ভূষরৌ স্তনৰূগে मामाभवयमा समि भटक्योपि मूत्राक प्रक्रिप ज्रांक बार्य छ ना-नामगः ॥ नाविकः मिछा ह मनिग्नेट्र राट्य प्रश् में अंदिरा मृजूः देवंजगन खरणाक विवर्य नामाणि भृत्वे विकि। त्यत्व लक न्यस्य र जानुस्थल को विद्र द्वारगी गृर्को भूरका निन गना-क गर्खियुमार कहारार भएन्। रेशज्कः ॥ । अभिन्न शक्ता (स) तकति के शिष्य र सिक् कत- विकास मुक्ताः भरका। ज्याका-

स्ति जिल्हा । जाखि न्याहन व ख्रिम-देश स्क्रीया खर्मामरेनय ख्रिम-सान्त सर्वा । ख्रागर्यामा मिन्न-देश विद्यारेष द्या । श्रीय द्यामायथ स्थार्था श्रीय द्यामायथा ।

का श्रीम निर्मा क्यानिय सम्बोधिक देन स्थानिय सम्बोधिक देन स्थानिय सम्बोधिक देन स्थानिय सम्बोधिक सम्बोधिक स्थानिय सम्बोधिक सम्बोधिक स्थानिय सम्बोधिक समितिक समितिक सम

त्यामणगरेम ज्ञान गृजनीय छवगम्बिन्नि त्राण प्रमार । कारण प्रमार । कारण प्रमार । कारण प्रमार ।। कारण व्याप्त । कारण व्याप्त । कारण व्याप्त । व्याप्त । व्याप्त व्याप्

िगाः अक्तूबाः मान्यान्यान्या भारतः। कांद्रकाः संभागुनाभाषा धर यर्नाका देन क्ष्माकिक मरकः मुबक्शिन स्री अविष जिंखी **उनाः एउनान् ४०**३। রে পাৰ্য কোধগন্ত বিধেন ক नाउदारेना **क्** कर्ममृजाक । प-मसेन्द्रिकः कथितः जू शकः छव-गीजनाव यात्रिका श्रामा ग প্রোক্ত চতুর্বিশতিলাবুল: য भगार्कण स्विकद्रः अकारास्य ৰড্ভিজ্ঞ সূত্ৰে ম্রণাক ব্রুপ কোণে জিশুলক রিপোঃ র্ডবাব in भद्रीका खूबी वक्टनहरक्डान मूर्राक्राद्यामः ७८७। विरम्पाः । तिथा न्दर्भन मनि धवादेशः পিষ্টাক্ত ৰাগি পুন ভাৰুছে ॥ बाजिल्लान्याः भृष्टम ह रेक र्का कार का वर्षा किन कथा-২৪ ভাগাঃ। এতৎ পদ্মনাং ক্ৰি **७॰ महमु॰ (क्वक मर्दासम क्व** वारखाः॥।।। यस्य वका नकनी যং লভাণলৈ শহস্বারিংলক্তিঃ গট্য र्वाश्वीयी। ध्याका (मरा जर्म गामा जनीजा मरबा काल्यकी भङ् । हार्क्यका ॥ कारकारका नन्मभटेनः जूतान्ह मियान्ह वाटक

पमुखानिमन्छ । दीवी छ वार्स विविधानम् अन्यकः नवामाः व निकः मूजिरिकाः ॥ मूर्ज अधिके। विषदम निरंबरमं छथा महाक्रीम् के असमित्रामित्रारमः । त्यस्त्री व तार्खु-विकिरका के जिस्से विकास महरम्भ भटेमर अभूकारमा कम बिरम्थन শকর দিছিভাগে কণ্ড প্রস্কর্যাৎ করতো বৃগাসু । হোম সুরাণা শভমক্তবুক্ত প্রত্যেক মন্টাধিক विक्षािक यो।। यशास्त्र पूर्व पवि नर्वज्ञाकाः कृत्य जित्व वीहि वदेव स्वादेवः। शालाम मुद्दाद्व मुखाव्देक स्थानः छमटक सूत्रभू-जनका। इतन वृष्टावः मभरतः मध् **जिल्लाम मनगञ्जयाय रति**ज्ञ क्षा (सर कूर्य) प्रश्नानि निकेक मक् कलिनः मूहद्रास्त वृत्रः वि-তান সুদিত্ব দিবাকদুস্য।। পো धूमणुकः पृष्ठ त्यद मरण वदः मान् ज्रम मङ्गा रखदीत्यः। नदारी मुक्तः भूकि छटेशव गांका ममग्रमश्रद्धं छन्टकोषनकः ॥ सक् মুক্ত গৃহক্তাৰ ধৰতো আপসৌৰ-नः मागरकः गन्नर्दं मञ्जू स्म **मनवूष• ज्दन २जिन्हा• ७५**१ । ब्लाका नीमज्या मृगाय शिष्ट्-

তো দেয়াত সমোসকাঃ গৈন্ত क्रक ततिः उदेशन विभिन्नकाक त्मोवाबित्क ॥ मुजीबाक छ नाम का नामहत्त्र त्थाच्याम्म भावः नाम वाकेशक मूबाभागूब्राक देखन जिनाः ल्यारकः॥ शान्ति-न्याशि ह शक्त्रमाण मुनिष्ठः क्रिन शाय सरहो स्थीः। योकीतः क ণিনে চ মুখ্যবিরুধে শ্রীশুও ভকে ल्या ॥ अझाठास मूर्यनंक सम भारती मधाजा मुक्तः उद्या । अकृत् शर्वेष्ठाक शिंगिराञ्च निमिक्ष में স্যান্দিতে পুরিকাণ। সঙ্গীর দ-धिक॰ क्राया विश्विष्ठ॰ प्राणाण-य्राम ७४। १। बार्य इक्न १ हमा न 5 असमा युक्त कथा भक्ता ॥ সাবিত্রেপি চ লন্তকাশ্চ বাবিতৃঃ भूभा खडाः, मामूज जार यान বিবস্বতে মৃত্যমুত দুৰ্মাণ ভথা মো-मकाः। हेन्सार्था अमूनम् भिक्क क्षात्र (पर ज्या क्रमान देशदेव দুৰা মৃতক গুৱালুযুতো নাম্ব স্থা क्रवारक।। छ० जिस्र ममस्ति। स जमारम नजप्रभावाः श्विरीयः वाय। शर्यवाः शा मम्छ राष्ट्र समाबित्ये वर्ग मत्न बित्नका ॥ महान्याभा निर्मेश हतरेका

इटबन शिरकोमनत्का विमार्टिंगा सार्के होतः शृष्ठनिकार्कनीया मध्यास्त्रकाशि खरेश्वव शाशाः य बन्त- नक शिविशिक्षाय उ-व्युक्तावेष विश्वित मनाः। सन्तः-य अपनिवासूक कार्यादम जिनि ्रवादिनो ॥ यः शुक्रदम्रवाञ्च मन-नाजू जारा न जा मुख्य खन्छीर किस्था क्रीवकारमा वर्षणंड॰ म्राप्त यार्ग नत छिठेछि कम रय-वन् । इंडि बीमृजशांत मध्न वि-त्रिक बाद्यनात्य ताक्रवमट वास्त्राक्ष २ व्यापः ॥ 🖝 ॥ ন্দাৰক বাৰ ভাৱকাশক বিধৃ व्यक्तिः गृहामा अभा थाना भाना भाना । ৰশোভিবৃদ্ধি রদিকা যুগদতঃ क्षाएठ। भाराङ्ग अक वृग नि॰श् क्षेत्रका त्या ज्ञागट्यकाः क्रमाध शास्त्र कुरहेम व्यायद्वस्यू दिवनाः 'द्वाक्षाः नूतानाः गृटह् ॥ यानः দেব গৃহাদি ভূপসদনে শাস্ত্রোক্ত হুত্তেন তৎ গেহে কর্মকরস্য না-थक्कणः भारतन प्राप्तः गृरह । षात्वा मध कत्राज्ञामि मणि ए হস্তাস্টল রূপতঃ ক্ষেত্রসাপান্ नामराज्ञीय नगरत गटलन नान॰ भूदत्र।। जायः करमा रख स्टियः

विष्ट्रा पश्चित्र मृश्वानाद्य मृश्वित्र स्वानमा नार्कः शृष्ट्र श्वानद्य मृश्वित्र है दी-स्वानमा नार्क्ष म्यान्य स्वान्यः स्वत्यः स्वयः भ्रानाद्य देवसी स्वतः स्वान्यः स्वयः स्वयः

त्म क्रकाभि

ा नक्टक रमू-

তি ব্যৱসাপি ও बोअस खनामक निगाहरका ধক মৃতে সংবর্জিতো রাক্স: ম ত্যুলে বাৰ হৰ্মা নাম সহিতে ভ-एक विकि कु अन्य गामित्वाभ মভূপতি ক্রমবশাদেবে সূরেক্রো হিতঃ৷ বেহা নেব কমন্ত পুৰা ভ वत्म मार्गः ज्या देखत्वद द्राङ्गाः-শোগজ বাজি যান নগরে রাজা-मदय मनिद्र ॥ ।। या वनगृष्ट्यं॰ গণয়েৎ স্বৰিক্টাতারাবিভক্তে **मविक्रिक** स्निवाः । बूदेश ख्ञीया प्रकरण वित्रक्ता या शक्त गश्च-मिका य मुखा। विद्यानी र ठ ग-श्रामा क्रमक्ता वटक्र पूर्वापिकः ৰুক্যা ছানি ভবন্তি বল গৃহত ্তিকৈর চন্দ্রো ভবেৎ। হানিং প্-করোতি পুরত স্তৃামুং ক-

यः हलानाः शादकं मिक्न वामदक

अजनदा स्टबं एवं जुगाबदा।

कर्त्वक (कर्त्व आस) विक्रिक बाङ्काचिः । बद्धाः वर्ताकाव्य -यनिद्र ह स्वयोगादा यश्रदा है जितादमा । इस दस गुद्ध विक त्रा ज्यस्न गात्मत्रकाः कृत्न বিভারোভ্য হত্র ভূমন কায়া-दित्र मद्भा भक्तः॥ श्रूटमा नक्ष्या -कीरिना मिन गुट्ट कर ह हि -भारतः निः रषात्र स्थानस्य । -নিচমে সিংহণ্ড সিংহাসনে ॥ চ-खाल खनाका विभाग वृत्रका -र्राम् इयानाः हिट्या नाहित्या श्रन (जोक्रनमा ज्वरन १ एश्रा दोक् रगटर शका जानित्व शक्की विमा মপি গৃহে শৌতে গজে৷ জোজি তো যানে প্ৰীপৃহ কাৰ্নে চূপৰ নে শস্তো গৃহে হস্তিনা মাঞ্চলঃ শিলি তপরিনাং হিত্তকর জেরাণ क कार भ

विजावनहरमा धूरमा अरका मान्यः। गर्व शिक्शमा इरद्ध विच
गरना र रखी नदरमा कूराहाः
गृकिगठाः करमन शब्दमा करको
क रज नम्भाः।। क्राः रममाः निष्द शक्र ध्रमानि स्याज निष्द अरको
मक्षरत निष्द। देन ध्रम देनस्य প কলকাঃ কীর্তি প্রতাপোক্ত লোকানাক নিবানতোকিন্দিত প্রাক্ত শত্তুবুক্ত গ্রেক্ত লোকা প্রাক্ত শত্তুবুক্ত গ্রেক্ত লোকা শত্তুবুক্ত ক্রিক্ত ক্রিক্ত ক্রিক্ত ক্রিক্ত ক্রিক্ত ক্রিক্ত ক্রিক্ত ভক্তর ভীক্তর ক্রিক্ত ডি কর্মানিকের্মক্রের মেন্টাঃ ক্রম

। প্রকটিভাগ্র

र्त्याविजाः अ रेकि श्रानाः यश रमायाः ।।।।। वरका १८४। विकि পুরং শুনিমত মধ্যোত্তম কন্যম তেবা' হস্ত সহসু মস্তিমপুরং মধ্য छङः गार्करः। त्लार्थः यूथागरः সু মেরু চরম ভাগান্টকেনাচিত সধ্য বাদশভাগতঃ শুলিকল জ्यार्थः विषयाः नृषीः॥ यार्गाः यश्चमरेगव ठामिम शूरत शैन॰ ठ-ভূর্ভিঃ পুরু প্রোক্তং কন্যস নেব স্বাৰ্গ নৰভি দৈৰ্ঘ্যে তথা বিস্তরে। প্রাম দৈচৰ পুরার্মতো ছি তদনু আমাৰ্কজঃ খেটক খেটাৰ্জেন তু কৃট মেৰ বিবুধৈং প্ৰোক্তণ ততঃ थर्वि ॥ रखानाक जूगाके जा তশসহসুং ভূপতীনাং প্রং তথ एश मन्या वर्षा मृत्यस्य वृ**ष**ा

महरत्न छ । श्रावादम रम्भा कार्क कारण श्रावाद श्रावण शि प्राव्यक्त कार्द्य ॥ वर्ष वि स्वार्क कार्द्य ॥ वर्ष वि स्वार्क कार्द्य ॥ वर्ष वि स्वार्क कार्यक श्रावण ॥ वर्ष वि स्वार्क कार्यक श्रावण ॥ वर्ष वि स्वार्क कार्यक श्रावण ॥ वर्ष वि स्वार्क कार्यक

मानी श्राक्ष था त्य अवंशि था सर्म स्वाक्ष था त्य स्वाक्ष विश्व वि

ना अवस्था जार हो। स

থা প্রোক্তা স্তেন সবৈব কোণ স-हिन विमाधकी नशम। जगा বাথ সুবৃত্তকে চ বিৰিয় বুৰাল न कार्रकः कार्यकार्या বিশাস পারিখা বিভাগে বিভাগ देवर १६ विमानकी कार्यक्रकार मह शक्षाधिक शक्सलात हीन निर्दे ত্রিখা বাস্ত মতো হিডালা । मूर्र्शापयः नचकत्र अमानः जिला नमः मश्रमदेशमः क्लिश्वा अद्यान वि॰म॰ शृथूल॰ खवानाः निक् कान সূर्याके कता वनिष् ॥ **जाबूना** कल पछ शक्ष अभूतः मुकाषिकः **সন্তবেৎ রাজদার সুরাত্রতো হি** সুধিষা কাৰ্য্য॰ পুরে সর্বতঃ। প্রা-থিপ্রাশ্চ নৃপা হি দক্ষিণদিশি স্যুঃ সৌম্যতঃ শুজকাঃ কর্ত্তব্যাঃ পুর মধ্যতোপি বণিজো বৈশা বিচি-देव ग् देशः ॥ जेला तककताः ज-বিন্দ ব্লজকা বক্লো চ ভক্জীবিদঃ প্রোক্তা অন্ত্যজ চর্মকার বরটাং স্যুঃ শৌণ্ডিকা রাক্ষ্যে। পণ্যন্ত্রী-নিশ্বতো চ মারুতবুতে কোণে ন্যসেলুৰকান্ বাপী কুপ তড়া-গ সঙ নখিল তোৰ তথা বার-(१।। निःर्वात ठ**ूर्यत्रक अप्रकी**

कर्खवानि मृहार्गनानिः ज्यूरिकः। कीर्डि छड नृशानमा-बर्गादक र टेज्ड मुकानिमिट्ड **ंटन निर्दर्शनान्त्र** का सर्वारम्या स्वाधिन गा रेडि गटरा वार्ष्यमान नामकामध्या । अनामध्यमान । । वहार भूत्रा-ना वर दक्तार मधान दहारू नमीत्रवाथा। विनिर्धिण एउ अवाम नृशाना ७वडि श्काः मूब्रमा है मार्ग्य ।। रखा वर्षे ह रेखद्रको नक्कत्र काटला प्रभा-দ্যো ভবেজন্তো ভীমগজোপি ভান্ধরকরে যুঁঝা তু বিশ্বৈঃ শিশী । (थाएकामा समम् अव मूनि-ভি স্তিখ্যা মহাতৈরবো হস্টে শঙ্কর নির্ম্মিতাশ্চ সমরে দেকাসু-রে ভৈরবে ॥ যন্তে চাফকরে ক-रुख किमी मूर्यामूना विखत ন্তজ্ঞা নর্কটিকা চ পঞ্চর মতঃ ষট্-वि॰मश्खा कमार । यकेंग शृष्ठ বিভাগভোপি রদনৈ স্তল্যোক गाळा बूरेनः थाका व ७ न व न बी ह बहिरछा. मशामनी छान्नू-देवाः ॥ यद्या मृष्णः मर्कष्टिकाः

विस्थादमास्मा कीत्मन ठ ठर्म

गानि । रख अवर्गाम् एकार्थ-

ক্ষ ভ্ৰমান্যা জ্যোতি छ ।। क्यान्टिनः शक्यक्ना देन ৰ্যাণ কেষাণ মতে হস্তমিতে ३ गाँगे जनी विद्य जनानिनाचा **एक सक्तरेखः श**तिकवनीयाः।। है जि विश्वास्थिक श्रीमानिया करा দীরাঞ্জয়ণ পুণ্যবতাং বিধেষণ ম-स्या भूत्रमाणि छरेथव बास्यः। ৰাপ্য শতন্ত্ৰোপি তথৈৰ কুলা শ্চমারি ল্ডানি চ ষট্ তভাগাঃ ।। क्लाः अमूय देवक्रवो ह छान् शास स्था मृत्रुकि समा-দেব যনোহরক পরতঃ প্রেক্ত स हुजामनिः। मिश्रदण कर नन्म भक्त यरण विमानि रहेस मिंछ। বিশাৰৈঃ ক্ৰমবৰ্জিতৈশ্চ কণিতা द्यमान्धः कृशिका ॥ **॥** ॥ काशी इनटेनक्रम्या जिक्हा वहेक्षिका मुभामूथा ह जजा। जया जित्का नवकृष्ठे युक्त। खुटकं ख कृटेंग्रे वि-ক্ষা মতা সা।। 🛊 ।। সরোক্তজ্র-**क बहामतक वृक्ष हक्दर्कावक** মের ভত্ত॰। ভট্ডেঃ সুভক্ত॰ পরি-टेशकबूधाः दक्ष्यत्वक वयः स्व बिमन् ॥ त्काके मिछ नक्षमह-मुदेकस मधाः जगर्दन चणः कः

रेनर्रेग जनक मधा जू जञ्ज य-मिन्रे ॥ ।। ভखाषा त्रक हरू त्रगुक्क गूज्यक जजरूष वि-তীৰণা নন্ধাধ্যক স্যাৎ প্ৰতি-ভত্তৰুক্ত শধ্যে সূভত্ত॰ পরিষণ চতুর্থ ।। করাফতো হস্তপত প্রমাণ হারে শুভূড়িঃ সহিতানি क्वा । गर्धा गराकक मिर्णा বিভাগে কোণে চতুষা স্থাপি পট-नानाः ॥ ॥ भनामा बद्दा र-ব্ৰেশ্চ দশক ক্লড়া দলৈকাধিকা দুর্গা ভৈন্নব মাতৃকা গণপতি র্ব-क्रिकिक हिंदिन। पूर्वामा मूनि-মারদন্ত সকলা ছারাবতী লীলি-কা লোকাঃপঞ্ পিতামহাদি বি-बुधाः जा बंधालिखी जना॥ ठ-স্যোজতঃ শ্রীধর মাডকস্য সন্দর্শ-ৰাৎ পূৰ্বৰলঞ্চ কাশ্যাঃ। স্নানা-ক গৰাধবনস্য পুণ্য হত তবে-क्टिबिबिबिबिटेखः ॥ विशातिज् कीवन भिर राम जिल्ला भरेतरक भ मकः भृषिद्याः। म रिकेमःशः इ मर्मुक्व चर्लाक मोधाना-विनानि ज़ुर्छ ॥ आरम वाथ भूरत्र নরেন্দ্র ভবনে তৎ যোডশা॰শ॰ क्टरब महााब शन्तिमनिक् ममा-প্ৰিত বিদানুগে ভবেভূবশাও।

शातः पश्चिम रायण्याः भूताकः का-र्या जब क्षत्राध् नर्व बख ग्रापि वाम त्रामा ज्लाक्या कार्यक া ইতি সূত্রধারমখন বির্চিচ্ছে বাস্তশাস্ত্রে রাজবন্ধভে প্রাক্তার যন্ত্ৰ বাপী কূপ তড়াগ লক্ষণ ৪ व्यशायः ॥ ।। वत्या न्यासः ভবনানি বক্ষ্যে ত্বেকাতপত্তার্ক্স-পালকস্য। শতঞ্ হস্তাফ সমন্ত্র-তঞ্বাদে গৃহ চোত্তৰ নেক্ত-স্য ৷৷ বে দাপরে ভূমিভূজে বভূ-ৰু স্তেষাণ গৃহণ হস্তপত ছিহীনণ া তল্ঞ্য শত্মীশ্বরকো দ্নাথ স্ত্ ফাধিকাশীভিকর গৃহত সমঙ্না আনৈকলক্ষ্ম মস্তি যায় প্ৰো-ক্তো মহামঙলিকো নরেশঃ। জ-শীতিহন্ত দ্বিকরেণ হীনং সর্ব্যা-জাৃহ পোডন বেব তস্যা পঞ্চা-यूर्डिटना न्श्रम् अनीरका उरवका হ॰ তদ্য করাঊবন্ডিঃ। সামন্ত্র খ্যো দ্বাযুতাধিপো ২সে তলেক্স্ মন্টেমু করপ্রমাণ II ভবেশা প ঞ্চাশদপি দ্বিহীন সামস্ত সংজ্ঞা ২যুতনাথ এব। তথা তৃতীয়োগি ততে৷ দ্বিহীন ত্রিশৎকরাক্টা-ধিক মেব গেহু[।]। প্রোক্তঃ **প্রবী**-ेटें। भज्जाभित्कारमे आमा हि

बर्देबार मर्गु (मरुण वर्ष) विक्रण विश्वाणिक्स क्षी निर्देश मन जाति यथानिजानि ॥ आक्राधि-প্ৰাব্দে তু শতাধিপাশ্চ তে স্বৰ-রাক্তা অশি সৈনিকাশ্চা তেফাণ গৃহা অক্সলামিকৈন্চ করেঃ স-माना सुनिष्ठि र्यञाना। जूशान-कार्स्सन ह मिल्लिश्न क्योधिक।-রেণ ভবন্ডি হীনা কাসাদাশা नाथिक त्वर रेनर्याः असीमरथाः भक्तम जाग मिछे-॥ गृह- एजूई-उपिछ कब्रानिवृक्ता विद्रामाछ মিতি প্রমাণণা ততঃ পরণ ভূপতি মন্দিরাণি যাবচ্ছত চাউকরাদি-युक्क शानगास्त्र दित्रका वमूर्ख ग्राट्स मणाजिन्सा विजया शु-नम्ह । প্রাসাদ এবামরভূপভরা-क इस्रापि जात्क मूनित्मिनि ভানি।। শালাযা নবধা চপঞ্ করতো মানক বিশ্বান্তক ভিত্তে-রেব চতুর্দশাসুলমিতি বাবৎ স্-পাদ করণা আগারস্য ত যোড-শাশরহিতো ২প্যক্ষেন হীনোথ ৰা ভিত্তে মান মিদ ভিষা বির-চিত কর্য়ণ যথাযোগতঃ।। टेम-र्षा ठळकनानू लाखगनिन मि-शानुरणानाडिया वारम विध्व

'ভূভ়দুছিতি রশি 'ত্রি**ংশন** বি-छात्रञः। रछात्म खिक्रतामयः सर्विध शीक गुरू महरू। वि-श्राटम तम ख्रु तम अन्नाः मूरः (मथलाः॥ यका वाथ न-তাৰ্দ্ধ সপ্ততিযুকৈ ব্যাসমা হন্তা-ब्रुटेन बीत्ररगामयका जतक ज-वत्न मधाः कित्रिंखितः। देन-र्यार्क्तन कृ विखद्धः मिकना छ।-গোধিকঃ সপ্ততে দৈৰ্ঘ্য ত্ৰ্যাণ্শ-विश्रीन मर्फ द्रशिष्ठ गशुः कमिष्ठे ক্রমাৎ ॥ জ্যেষ্ঠা প্রতোলী তিথি रेख मन्या (थात्कामस्य विश्वकः রা চ মধ্যা। কনিষ্টিকা রুজকরা ज्लात्म कार्म शक्र मरेखन ह जाग भःशा ॥ दिश्व वाम क्ला॰ भटिक 'ৰ্গগুণৈ হ'তৈ ন্ত্ৰিসাৰ্ট্দে ৰ্বুতৈঃ र्म्यामा जितिरथामयः किंछिला-ন্যাবচ্চ পটোর্দ্ধক । একৈকোপি পুন স্ত্ৰিধা নিগদিতঃ সৰ্বে ত একা-দশ ক্ষেপাঃ ষণ্ণবতৌ নখাঃ শশি-कवा वरोषमामा खिथा।। विश्वा-নে ৰুগ পৰ্বতাঃ ৮৪ স্তিথি যুতা ধি-ফ্যৈক বিংশাশ্বিতা মধ্যো ২বংত্রি করৈ স্তদেশসহিতেঃ প্রোক্তঃ ক-निष्ठे जिथा। 🛊 । वृष्ण मूक्ष विश्वक क्केक्यूल नीटेंड टेंक्लफ्य

শীর• মারত পাতিতঞ্চ ভবনে ষ্টিঞা বিভীত তাজেৎ।। শাকঃ শাল মধুক্ সর্জ খদিরা রক্তাসনাঃ শোভৰা একো ২সৌ সরলোজ্জু-নশ্চ প্ৰসঃ জীপৰিনী শিংশপা। হারিজঃ পিচুমর্দ চন্দনতরুঃ পদ্মা-খাক ভিন্দুকী নৈতেন্যেন যুতা ভবন্তি ফলদাঃ শাকাদয়ঃ শোভ-नाः ॥ 🟶 ॥ गिट्यामयञ्च नवधा वि-ভক্তেৎ ষড়প্শণ স্তম্ভোৰ্দ্ধভাগ স-মক ভরণ শিরশ্চ। সম্ভী হৃদস্বর সমৈক বিভাগ তুল্যা পটশ্চ ত-ক্রিকযুভো॰শ সমান এব ॥ শা-नानीय উদাহতো হি বিবুধৈ বাণেষু যুগ্মাণ্শকঃ সপ্তাংশেষু **শ্বটোশ্চ নন্দর্পদতো বেদাংশ**তুল্য ख्या। 🛊। कानारे॰ गृश् मकित्व নিগদিত বামে ভবেদর্গলা সৃষ্ট্য। "निष्मुमण क्रुछ मूनिवरेत्र घीरत्र्यू गैदेवेषु यथ।। भाषाजिनार्टेण येन् ব্লেব মধ্যে ত্ৰযো হ্যান্তে ঘ্য মস্য পার্শ্বে। দ্বারোত্তমাঙ্গেন সমান-কৰ্ণাঃ শস্তা ন শস্তা ভৰনাভিব-कुः ॥ भा मीनावरमा मिन मि-धिजारग नमा विदयस्य श्रालया সমানঃ। বামে চ মধ্যে ন শুভাষ रारः मूत्रानस् वायमिनीकं मि-

देका ।। बाजात्व थरेकी गूर्य ह छ-, দধোৰাঃ যোডশাংশাধিকং সৰ্বং বা শুভ মিচ্ছতা চ সতত কাৰ্য্য ম্ব পটাদধঃ। তম্যুন । ন শুভ মুলা তলগত সক্ষো তথা পৃষ্ঠগ কাষ্ঠ পঞ্চক এব নীত বহিত বয়ুল পু-द्वाखतः॥ बाद्याद्भु यमुद्रात्र यमा প্রমাণ সংকীণ বা শোভন না-ষিক তৎ। হুস্ব দারাণ্যেব যানি ্পৃথূনি তেষা॰ শীর্ষাণ্যেক সূত্রাণি अर्या १ अर्बः बादः नी हमानः क्र-জাবৈ ষদ্বা ২হুস্বণ তৎ করোভার্থ नागः। राहामाः यद शूर्ववाख স্বৰূপণ তেষাণ ভঙ্গানৈব সৌখ্যণ কদাচিৎ ৷৷ দ্বারব্যাস রদাংশতো , रिधक भिनः कार्याः गृहः निकरन তুল্য হস্তি গৃহঞ্ বাজি ভবনং তেনাধিক বামতঃ। অফ্টাণ্শেপ নবাংশকে চ বিতথে তোষে জ-্যেন্দ্রে হিত॰ দ্বারণ সৌম্য গৃহক্ষ তে চ স্পুনে ভলাটকে শ্স্যতে॥ প্রাগদারাউক মধ্যতোপি ন শুভ সুৰ্য্যেশ পৰ্জন্যতো ধান্যাৰাক্ষ যমাগ্নি পৌষ্ণ মপরে শেষাসুরণ পাপক । দৌম্যায়া মথরোগ নাগ গিরিজ ত্যাজ্য তথান্য-চ্ছুভ কৈশ্চিদারণ সৌম্যক ন- ||

হি হিত প্রোক্তঞ্চ বাতারনে ॥ দারু বিদ্ধ মশোভনঞ্চ তরুণা-কোণ ভুম স্তম্ভকৈঃ কৃপেনাপি চ मार्ग प्राप्त अवदेन विक्रः छथा की-लटेकः। छेक्श्यामिश्वनाः विश्व পৃথিবীণ বেখো ম ভিত্তান্তরে প্রা-কারান্তর রাজ্যার্গ পরতো বে-(धा न कावद्वर ।। टेम्टर्या मार्क শতাঙ্গুলঞ্চ দশভি হী ন ১৪০। ১৩০ ৷ ১২০ ৷ ১১০ চতুর্দ্ধারিধিঃ প্ৰোক্তণবাথ শতং দ্বনীতি সহিতং ১৮০ বুঝা ২০০ নবত্যাশত ১৯০ । তদ্দৎ বোডশভিঃ শতঞ্চ ১১৬ নবভি ৰ্যুক্তণ তথাশীতিকণ ৮৯ দ্বারণ মৎস্য মতানুসারি দশকণ रवागाः विरथयः वूटेथः ॥ 🟶 ॥ अय মপি চ কপাটোদ্বাটন বা পিয়া-ন॰ ভষদ মধিক হীন॰ শাৰ্থযো-व। विठाटन । शूक्र र यूवि नाम কাষ্ঠাত্র যদাধঃ স্থিত স্যাৎ।। দেবালয়য়া ভবন মঠশ্চ ভা-নোঃ করৈ বাযুতি রত্র ভিন্ন । ভন্মূল ভূমৌ পরিবর্জনীযা ছাযা গতা যস্য গৃহস্য কপে ৷৷ নৈকো लघू बामिनिया विভागে मरधा षियष् पाक्रण वर्गराइ। खखाम-

न शैन मिश क्याय समाधिक রোগকর তদা স্যাৎ ৷৷ স্তস্তো-ষ্টাসু সুবৃত্ত ভদসহিতো ৰূপেণ ठालकृत्वा यूकः शहरतेक खथा-ভর্ণক॰ यद পল্লবেনাবৃত॰ 1 স-ম্ভী ভত্তযুতা ক্যার সহিত শী-র্য' তথা কিন্নরাঃ পত্রঞ্চেতি গৃহে ন শোভন মিদ প্রাসাদকে শ্ব্যা-তে।। खत्छ। द्वरा मध्यमञ्जा न-শস্তো শুভ করে পট্যুপা শ-তো ৰৌ। গৃহে প্রশস্তা শত্র-जुका एउ खड़ा न कल्मन विना প্রশস্তাঃ।। হানি স্তুলামধ্যগতা **थनमा खर्खछम्छान्य छि**खिमृ-ল । স লগ্ন চন্ধাৰ্য্যপি হানবে সূঃ স্তম্ভাসন স্তম্ভশিরশ্চ শীর্ষ ॥ উৎসেধার্দ্ধ বিনির্গত শরষুগা শেনাধিক শস্যতে ছাদ্য পট नमानक नूथकत नामाय निर्मा মত ৷ তৎ কাকস্য চ পক্ষবচ্চ अमूनाज नृर्या कालायक था-मश्य कतानकथ विवृत्धः त्था-ক্তঞ্চ তৎ ষড্বিধণ।। ভূম্যারো-र्ग मृक्षु छ छमू भित्र आमे किन भ-স্যতে দার**ং তৃঁদ্ধ**ভবঞ্চ ভূমি রপ-রা হুস্বার্কভাগেঃ ক্রমাৎ। প্রাসা-रा ह मर्छ नरहत्व क्वरन रेन्द्रः

শুভোনে। গৃহে তন্মিন ভিত্তি-ৰু বাহকা স্ত শুভদাঃ প্ৰাফুমি अखान जया।। 🛊 ।। शृत्वे कनान-ন্তর মেব বাহাৎ গৃহপ্রবেশোন खजकद्यारमो । गृहमा शृद्धे समि ताज्यार्ग उपापिजृत्य में शिश्षे মীক্যুণ।। জীৰ্ণ গেহণ তিত্তিভন্ন• বিশীৰ্ণ তৎ পাতব্য স্বৰ্ণ নাগস্য मटेखः। গোশ্ कि व। निश्चिन। नि-শ্চবেন পূজাণ ক্লন্বা বাস্ত দোবো ন তস্য।। হ্যাস্যাপি সমস্ততো গৃহপতি বৃদ্ধি যদাপীহতে সৰ্বা-भागू विविधिष्ठक कलमः पूर्वे তদেকত্র চ। প্রাজ্মিত্রে রপি বৈর মুক্তর দিশাভাগে মনস্তাপরুৎ शन्हाम्ध्विनाम मक्तिगिनि भ-ত্রো র্ভধ বর্দ্ধতে ।। বামাঙ্গে ধন বস্ত্র দেবভবন• ধাতৃঃ গ্রিযো বা-জিনে৷ নাৰ্য্যস্থে বিধিভোজনস্য ख्यन• माधारिका वाम्यः। व-द्भ भी जब पिछ भन्त मनन স্ত্ৰীণা তথা দক্ষিণে স্থান মা-हिष माझ मिर्निक मिन यागा-**क्रि मर्ट्या ७७**॰ ॥ मूजीरव वक्रत्व श्रमुद्द गगवदा मारात्वाठेकामाः शृंश् द्वारङ् यूक शृंश्य नृंठा द्वन-गाञ्चई (प्रवाश्रिकः । ताद्का

माजृगृरं गरजस जगरक ऋरज মহিষ্যা গৃহ পত্যে ধর্মগৃহ রবৌ वामगृश প्याक जर्य श्रीगृह ॥ त्रेम थात्या तखदा भर्मजाना मुखु। १। रान (नवाब कार्य)। शानगाता गाउथा आगरकारन ভূঙ্গেগ্যব শস্তুকোণে শিবার্চী ৷৷ প্রাক্ পশ্চিমে মারুত বহ্নিকোণে প্রোক্তা প্রবীবৈ রপি নৃত্যশালা । वर्ष्कागृरु त्राजिहतमा कार्ष मा । योगिय (जाजनगानिक) চ ৷৷ ঞ ৷৷ প্রাক্ শোভা নৃপদক্ষি রে চ পুরভঃ স্থান তথা পুত্রক वामारक नृপতে खशायूयवतीः क्र-ফাতপত্রাণি চ। ছন্ত্রণ চামর তা-भगाः अध्यत्र छाष्ट्रवश्नाकरन श्राशीम यमृष्ट्या ह नयन म र्वाम् ज्मीष् छ ॥ विवचनात्था भवन॰ अभन्छ॰ वामिजरभर्॰ म বিতু বিধেষণ। পূদাঞ্ৰিত জো-জनमित्रक महानमः बङ्किपिना বিভাগে।। মাহেন্দ্রাখ্যে গোপুর দি ত্রি ভূমিণ ভানোঃ সংখ্যা ত मा भरवा विरथया । छेकानूकः मिनदारमे नित्रतम प्रख्ने। कार्याः চাজ্ঞয়া ভূপতীনা ।৷ দিক্শালা-छ॰ एक भागामि (गर्॰ क्यार्थ)

नेशा कनामा पिक्शकार । भा-লা কাৰ্য্যা লোকগেছে যুগান্তাৎ बि (बाकाः मा जू मर उष् मूनन।। ইতি শ্রীসূত্রধার মণ্ডন বিরচিতে বাস্ত্রশাস্ত্রে রাজবলভে রাজগৃহ निर्दर्गामि लक्ष्ण ६ व्यक्तायः । 🛊 ।। चरेथकमान हि छनाकि-শাল॰ প্রস্তারতো লক্ষণ মেব তেষা । यथापिङ वाञ्च मण्ड **७८थ**व बरीमि द्राख्वा मथ मान-বানা ।। চত্বারো গুরবস্ত পূর্ব-শুরুতো ২ধো হুস্বতোন্যে স্মাঃ ভূষঃ পশ্চিম পুরিতঞ্চ গুরুতি र्वावलयुषः ভবে । উদ্দিটে षि-श्वनाकरेक र्लयुखरेवः मःरेथाक মিশ্রীক্ততে নফে স্তে। বিষমে সমে শুরু লঘুরূপে তদর্কার্কতঃ ।। স্থা-त्न नरकाः मग्र मूथाननिन्मः अन-किन उ॰ क्रमण विषया । প্রস্তারতঃ ষোডশক গৃহাণাণ প্রোক্তণ তথাখ্যাণ কথ্যামি তে-याः ॥ 🖚 ॥ अन्त्रकः शानाः ज्य नन्म मण्डब चंत्राश्य काखक म-**त्नात्रमाथाः। সूरक्कु मन्माथ किन** मूर्याथाः कृतः विशकः धनमः क्रयः ॥ आक्रमकः देवपून देव-क्यक कवानि नाम मनुगानि

তেষা । ইতি জ্বাদি বোড়শ गृशानि ॥ **अ। शामाानि** एणाटकी विक्रयाञ्चकः हि ब्रिलिन यूग्राः गू-शंका विषया । तमा भी धत মোদিতে চ পরত তদ্ধনান পৃহ• কারালঞ্চ সুনাত মেব তদ-নু ধাৰক সমৃদ্ধ তথা। ইতি র-'गार्थक' ॥ **# ॥ गर्दा**वि **अववर्छ**-বন্তি নিয়ত সভ্দারুকেঃ সুন্দরণ थ्याकः उद्यत्नकः जव क्रमूल श्रा देवमूथायाः निवः ॥ ७९ गर्ननाज्य विमानमःखः ज्या ্বিলক্ষণ স্বস্থতণ ধ্ৰজক্ষা উদ্যোত নেবং ত্বথ ভীষণঞ্চ সৌম্যাজিতে खः जनमनभः ॥ ই छ जूमता मि याज्य गृशि। । शृशिलक नगल्डाक्यू यूगलः भर्रेमा नाला-खदत र॰नरेकर जूनकनक गत्रङ সৌমাণ হয় ভাবুক। তত্মাদুত্ত-ম রে)চিরে চ সত্ত ক্ষেম তথা কেপক চোদৃত্ত ব্য মুখিতক वाय मानमः जूनमः क्रमाः।। ইতি হংসাদি বোডশ গৃহাণি ॥ **क**ा। मरश्रा २ शतर्भः खन्ते ণা মলকৃতাহৰ প্ৰথমঞ্চ তত্ত্ব। ত-থাপ্যলক্ষার মিতি ক্রমেণ খ্যাত जनमः त्रमभ्यः शृद्धः ॥ जात्रभातः

তদনু পুণ্যমতঃ সুগর্ভণ প্রোক্তিণ গৃহ॰ कनम मूर्गछ मেय विक्र॰। স্যাদীপ্সিত তদনু ভত্তক বঞ্চি-তে চ দীন গৃহ বিভব কামদ মের সংখ্যা।। ইত্যলঙ্গাদি যো-ডশ গৃহাণি।। ।। যড্দারু সর্বে-ম্বপবৰ্গকেষু প্ৰভাব সংজ্ঞঃ ত্বথ ভাবিতঞ্চ। রুক্সণ তথান্যত্তিল-কঞ্চ তত্ত্ৰ সংক্ৰীডন সৌখ্য 'मर्डा यरमामः ॥ अभूम मिन ह কাল-ভাসুর-ভূষণঞ্ বসুধর মথ शिक् श्रीनानां काना १ । ज-পিত মণি চ বিশ্বণ বৃদ্ধিদ প্রোক্ত মেতত্তদনু সলসমৃদ্ধ যোডশ প্রোক্ত মাদ্যৈঃ ॥ ইতি প্রভবা-पिरवाज्य गृशांगि ॥ 🐞 ॥ **मर्स्** মুখালিন্দ সমন্বিতাশ্চ দারুদ্বিষ-ট্ক স্থাবৰ্গ নধ্যে ৷ ভতশ্চ চূ-ভাষণিক প্রভিত্ত ক্ষেম্ব তথা শেষ সমৃচ্ছিতক ৷৷ বিশাল সংজ্ঞ স্বৰ্থ ভূতিদক্ষ হৃষ্ট বিরোধ ক-থিত ক্রমেন। তৎ কালপাশ रि नितामयञ्ज मूनान त्रोटक मूनि मन्मणान्छ ॥ तिमाः गृरु टेठव भरमात्रमभ मूज्ज म जिल् কথিতা চ সংখ্যা। ইত্যেকশা-লানি গৃহাণি বিদ্যাক্ত্তঞ্চদ্বা-

र्वाधिक॰ अवाषि ॥ अभवत्रक॰ ষৎ কথিত তত্বামে ধীমতা গৃহে कार्याः। यथ यख्नास्त्रकः मूनिष्ठः ब्हिया ना श्रीकात्यनी ॥ रेडि চুডামণ্যাদি ষোডশ গৃহাণি।। ইতি চতুরুত্তর॰ শত মেকশাল गृशानि ॥ 🗰 ॥ व्यथ विभानात्त्र লক্ষণানি পদৈ স্ত্রিভিঃ কোণ্ঠক রস্ত্র সংখ্যা। তথা। কোষ্ঠ প-রিহৃত্য যুগাণ শালা শতরেয়া হি ভবন্তি দিকু ॥ যাসামিগা চ ক-तिनी धनमाजियका পूर्वानना ह गश्री शिष्वाक्र गञ्चा गानी य माजिवमनाशि ह द्यांग सोत्मा-ছाগী মহেন্দ্ৰ শিবষো ব্ৰহ্ণভাতি-वकु। ॥ रिखना। महिबी विभान ভবন সিদ্ধাৰ্থক তচ্ছ্ৰ গাবী माहिय मध्यकः मृष्ठिकते प्राप्ताम সূর্য্য ভবেৎ।দণ্ড ছাগাগবারি-ত ধনহর হস্তিন্যজাভ্যা তথা কাচ পো করিণীযুত ন হি শুভ চুল্লী চপূৰ্ৰাপর ।। নাৰান্যতঃ স-ন্তত শান্তিদক্ষ স্যাহৰ্কমানং ত্বপ **मक** होथा॰ । इन्डामित्रका नाम চতু ক্টযঞ্ছ হ্র্ম্মাণ দ্বিশালা প্রথমণ তথৈব ৷৷ যৎ স্বস্তিক তত্ত্ৰসদারু মধ্যে ২ল্লিন্দ স্তথাতো কথিতং মি-

भावाः। र जाभाकः नामश वर्षः यान कीर्र्ख र्विमाण ज्वन ह-তুর্য ।। অলিন্দর্মা পুরতো বি-मधाष यज्नाक मरधानि ह भाख मः छः। जन्मामगृद्ध वर्ष। देवभूतन চতথা চতুর্থ ক্ষিত করাল।। তিমান্ গৃহে দক্ষিণতো স্লিন্দে বিত্তঞ্চ চিত্ত ধন কালদণ্ডে। বা-य भून र्वञ्जून भूखनि गा भन्द তিমিমপি কালচক্রণ।। লঘুশ্চ পশ্চাৎ পুরতোপি যুগ্ন স্যাদ্দ-क्तिरेंगरका त्रमानक भर्धा। जरेन পুরু সুন্দর মেব নীলং স্যাৎ कोिंगिरेश्व यथाक्राय ॥ अ-मक्टिंगकः পুরতোপি यूग्रा॰ य-**ऐक**॰ गृशास्त्रः किन नामनाधाः। ততো দ্বিতীয় খলু শাস্ত্রদ স্যা-চ্ছীল তথা কোটর নেব সংজ্ঞ ।। সৌমাণ গৃহণ মঞ্জ সণ্যুতঞ। **ज्लुलाक्यः** विवृदेश विंदशयः । সুভত্ত মন্মাদপি বর্জমান জুরক मर्दिव ७७ ॰ ठजूर्य ।। भूरथ वय॰ मिकिन अभिटरेमकः यज्माक्रक **बीधतनामरधयः । त्थारक गृरह** कामम शुक्तिम ह हजुर्षक के বিনাশ মেব।। বামে তথা দক্ষিণ পশ্চিমেকো যুগা মুখে মঞ্চাম-

न नारक माहारा प्राप्त सूच मंद्रम त्यार हात्य यूपा वया क দিণতে। ২**ডডিভিঃ।** পৃঠেত উ ক্ষোত্তক বাহতিজঃ সুতেজ এবঃ कवारावर नगर १। उत्माउटक अनिवनगरणा हो नर्गा १ विमा नक दिश मितामः। ७९ भूकिन কোপ সমাম মন্তা মনুক্ত ষট্কা जनाज विदयक।। वसूजिक शूर्व मिना विভारंग अरका अरवमानिन বাৰ পশ্চাৎ। মহাস্ত মেতশ্বহি-তঞ্চ দক্ষণ সলক্ষমণ নওপ সংযুত্তণ मा। भुभषय मिक् बिजर কিভাগে মুখে ত্রিক মণ্ডপ মগ্রত-**%। अजाश वर्षामा मिमक मिवा॰** मूर्याधिकः मोथारुद्रः ठलूर्यः ॥ ভগৈয়ৰ ৰূপণ বসদাৰু ৰূমাণ পুন-खुनित्ना २क गक छठना गार সিংহনাদ স্বথ হস্তি বান জ্ঞেৰণ তথা কণ্টক সেতদন্ত্য ।। শাস্তা-দি গেহানি চ ষোডটেশব দ্বিশাল-कानीर क्याक्टरम्। नामानि ह-

THE REPORT OF THE PROPERTY OF

म रोक्सिक् मध्यः माद्रेष्ठद्राः भूनम्ह ।

मिटवः माद्रेष्ठद्वै भूनक। वक्तारा-विटकाणि क (को जिस् कविज्ञावितको ॥ मूर्याः विनावः वक्दमा वाटम मूटथ जि-

क मिन्छ खरेशकः। दिमा सूर्य वानव त्यव त्मर् वात्य श्लामत्वा वयुद्रक अव।। शामान मण्डः मूथ ত ख्रवरक्ष क्षेप्रकिन जिमूक (व-किछ गा९। जनिम गूक विम नः विभागः छवीर्यावसः महमस পেন ৷৷ অধ ছিশালেযু সমস্তকে-यू मर्या विषयाजिमनाऋ टेठकः। ভদাভবেদ্ভাসুর মগ্রষুথ্য মেকো লঘু দক্ষিণ দিখিভাগো।একে৷ লঘু मंकिन পूर्वशः मा। छामून्यू । सः मू-थमखर्मन। हो भूई छ। मिक्नि खरेबरका यूत्रा॰ जरवन्नाक्षणा॰ मू-তেজः ॥ मूर्य खना मिकन्छ छ-देशका (हो मक्ष्णिमिन् इयका-**जिशानः। महाज्यागरः गूथाज** ত্ৰিকে তু মুখান্বিত মণ্ডপ মেত-

त्मन ॥ मूर्थ जना मास्तरादक ह मू भा- बादंगरश्रमंद्राहरू हुए। की दबाइवर व्यक्ता मह गूर्य वर्षणा स्र मिन रायण्या अस्य दिशा एतमाण्यान वित्यक्ट्या मजािषुभावः ॥ मोनीन मुख्य নুখগৈ শত্তি বুগা ভবেদ বাসভাগে। যুগা তথা পা দিখিভাগে ত্যাগ্ৰতে ৰুপ্তা এক এব।। প্রাক্তানা লঘুকে। বি-नाम ज्वरन वार्य नम् मिन्त **उक्तिम् अन मन्युष्टकः कमनः मा**-क्षिम॰ जोशम॰। दमा खूरतः क्यूरथ ह ज्ञान्त नारम्बर्ग प्रः ক্লিণে তস্যাপ্তে মুখমগুপস্য কল-मात्नव गृहान् साजना ॥ इंडि मूर्वापि याजगग्राणि ॥ ॥ ॥ অথ ত্রিশাল ত্রিদশেক্ষরেক স্যা-टिल्लागाताम मक्षणमः छः। उद्या ठजूर्थः अमूमाजिधानः इ**ज्या**हि-**जिंदाः क्यारका विदश्यः ॥ इसाः** श्रामिक उरेषत भूखः रद्गकः का-मञ्जूथ रुष ভज्र॰ रुऐकक्ष मरश्र स थन, करवत्र शकः छथा काम्

जर्कः मत्या क्यांके सम्बाधि FIRE THOUSAND TO THE ! THE PROPERTY OF क्रिक द्रशिक आक्राका वि व्यानक शामक नाम हा। वा-क्षामीया सर्वस्था जीवक को भवा मण्ड जराम । जात्रम বুৰুষজন তৃতীয়া সাৎ কৌন-नः नीता सिमः छङ्गं।। मूथस्य नम् याद्यमितः देवक अञ्चतम भवत मुख्य पथक काकशकः। देश विक् कि निनाम मखरणनाथि-कः गांखमन् व शक्रनामः वाहनः कीर्विकासः॥ मृष्णानिकश मूभ-मधन त्मव निष्ट् । उद्धरम गृहह ৰূষ গজে অপি কোশ সংজ্ঞ। বা-स्विक्ष नयून। कथिक मूज्ज ন্যামাণিচত নগি রত্ত্ত কাঞ্চ नार्षा ॥ यूगमूथ मनदेत्रका रेख-রব॰ দক্ষিণে চ ভরত নরজ মে-**७९ गाकिजूर्थः स्टि**तः। भून त्रि वसू वारम रखियान वियान रूप क क्रमकरभरः ठक्ठवूर्यः करमन ॥ वर्गानाः खडानमः नागत्रगृरः भिक्त । अनिमयूत्रा प्रथ छ- । शर्मित हुन मूर्थ श्रीकः कीतः

দ রত্নদাহ্বয মিদ কোলাহলক। পর•।বড্দারু ঘৰ ভাত্ত সপ্ত লাবব ভিৰ্যক ৰুত শালৰা গান্ধৰ কি · वि जुम्मक स्थित स्थान पः राज्यस्थान स्थानक विश्वत The state of the s The state of the s PROTEST HERE DESPET निमा करताछि गतन सन्म-छ्या बागाया लक्ष्म गहिसी भूरे ह करमा छ । भूत रक्षारा । इंडि विमनापि ट्वांक्रन शृंशानि ॥ ।।। বৈশালানি চ বোডশ প্রথমতঃ े मामक चल्हाक्रक उरेष्ठरकन পুরোপি শন্তর মিদ- মধ্যে ক্র-भाष शृदेवर। क्राय हो नुषरेन পি দক্ষিণ লয়ু জুকাধিক পাস-तः हवादता न्नरनाजिककः न्त-णः आक्रिकिटेन्टका नचुरा। गर्का-रवा नकला जुनक बसूना नहना ভৎ লৌখাদ রাগাখা ভুন সং-সুতঞ্চ ভবন তৎ সর্বশাল জ বেং ৷ প্ৰাথাণ ভূতনশন ক্ৰম-তথা ত্বেক ৰবৈকান্বিত তন্মিন্ मिन नियुष्ठ हे वर्षु के कन्तरान সভ্তঃ তথা ৷ সৰ্বাশাসু লঘুত্ৰয় শরমূপ তৎ পউযুগ্ধ ক্রমাৎ তৎ

সৌভাগ্য বিবর্দ্ধনঞ্চ ভবনং রা-জ্ঞা॰ সদা নিৰ্মিত । আনন্দ সু-थताकि पिक्न लघू रीत्य ह श्रहे-ৰ্য ক্লাগাৰ্ড জন লোভন ও-প্রার্থিকরাহিত সৃষ্টিতঃ।। স্যা-किताबन नवरण नगर्छ रू-व्यापि त्मर्थः क्यां नेशाः জিৰণ জিকক লখনো লোক ক্রিক বুলর । গেহ প্রীতিনক हैं उस महिल श्रुप्तन शीन मूर्य जिल्लाक वियुगा ह उस गरिज ৰিক্তিফ ভূগতেঃ।। ইতি সো-नामि द्वाष्ट्रण गृहानि॥ • ॥ यष्-माक्रकः खेबिमनः विनामः ७९ श्रीमियानः मूथ द्रुवयूकः श्रीवर-সতঃ শ্রীষর মেব ৰৃদ্ধ্যা শ্রীভূষণ र्यममूर्थक शहर।। वाटेनः क्रिज्य মত্রভোপি ঋতুভিঃ শ্রীতৈলিক• মন্দির রাগাতা রসদার যুগা স-হিত তথ শ্ৰীবিলাসণ ভবেৎ। শ্ৰীতেজে জয় মগ্ৰতশ্চ মুনিভিঃ ষড়দারু যুগাধিত সোমাদি ত্রি-দশাদি ভূপতিগৃহাঃ পঞাধিকা विन्मिकिः ॥ इकि बिममामिनवैश्-হাণি 🛭 🐞 🏿 ভবন নবক মুক্তণ য-क्रजुः नालमधार नयन लघुमूथः

मनन गर्था मईला माक्यऐक॰ দ্বিত্য মপি চ তেষা মস্তিমণ মুগ্ম-ৰুক্তণা মলষ মথ চগেছণ বাম হু-স্বাধিক স্যাৎ ভৰতি চ গুণুৰুৰ পোতন পূৰ্বতোগি বিভিন্নলি দ मूकर्नाः भूकेसोटका करेश है क मिन बादमातम् बोहगासम्बन ।। ठळा ठ ठ के गम् इन्दर व क्ष वात्गाखदा रि नव्नातिकाति र॰ गार। ज्यास्तरक नकरास्त

मूनिमट श्केतिश ह नावा छ। সাণ্যডেব কথিতা ভরুম প্রসক্তে । भागानि यथा तिहरू भि नगः সুখাৰ যদা তদগ্ৰরচিতাঃ পৃথ গেব শালাঃ ৷৷ ইতি সূত্রধর মণ্ড-ন বিরচিতে বাস্ত্রশাস্ত্রে রাজবঞ্জ-ভে দ্বিশাল ত্রিশাল চডঃশাল গৃ-रुवक्त वर्गनः मुख्या २शासः 11 4 11 भवन गथ नृशानाः पत्र-লানা॰ শতৈক॰ নবভি রপি সু-তানা মন্ত্ৰিণঃ ষড়িহীন বলপ-তি গুণহন্ত: ত্রাঙ্গুলোনণ গুরোশ্চ छमन् यूगलशीन॰ बाक्षनारमः थः শন্ত ।। ব্যাদোর্দ্ধভাগে নত देव-

ৰ্ঘ্যতশ্চ কলাণ্শ নাত্ৰোধিক এব শন্তঃ। এ্যাপেন পাদেন সমুক্ত यः गार विवान्नाना गरिएका-त कार्याः।। वीशनी वनमा महनाः ति तमक। सिष्ध्यमः छिमूकी द्-निकार कार नवरन क्यांत्रिशाकी शक आर्ग अन महरक हे इस्तम्पर नज्स्यः मा १ मूथ । अर्थ हे कियाव मि-दीरजनिक शर्याक वानाममः॥ নেব তিমান পৃষ্ঠা প্ৰস্তুম মৰিকাৰ কিতি শ্ৰমণ ৷৷জ৷৷ সিংহাসনং চো सम्बानाः बखा मत्नानक हर्ःभावग्रावि।। अस्तिमत्या भारः कटेथद । मभाःभ दयः भ मरका विशेनः वादन ह देवसाई नम् ष्ट्रयः मा ॥ मूनि जि तथ भिर्देव र्वा जजनागज्य नामूमय हैर বিভাগৈ-ভাঙ্গিতে গীঠ মফৌ। কনক মপি রসাংশং সপ্তথা গ্রাস-পটী শিব নৰ মুনি রুটন্ন, দন্তি काट्ये निद्धारको॥ इक्ति माजम জাগ মেব তিথিতো ভাগেন ক-ক্ষাসনং যুক্তং স্তম্ভযুগেন তোর-.পযুতঃ রব্দ্নঃ শুভৈ রাজিভং। ক-ৰ্ভব্য॰ নৃপবন্ধভ॰ মতিমতা জ্যেষ্ঠ-ধ্ব সিংহাসন ভাতব্যঞ্ যশো-जिवक्तन मिटेजः मि रेह न् कका-नन ।। नदेव इति शून द्वार

ছাদ্য পুধাসন ভোরণ সংযুক্ত गा। शीय बचा क्वान विदेश नाम नः धरेन निर्माण देवनः मध कि एक ॥ देकि निकासम्बद्ध नाम गामि॥ ।। वाञ्यसमा म् विक्या विशेष्या गुरेश करीन जि পভাক এব। দ্বিলুবিক শোভষ : यखिदका २ ८मो यूग मुविन्कः॥ गावारैकः थियवकु धार मृब्धः यए जिः भून त्य श्रीमारकन यूजः न्यञ् छिष्टि ৰাজ্যা॰ প্ৰিবল্যো ভবেৎ। এ কোনঃ গরিগম্বনাভ উদিত 😎 भीश हिएक। यूरेश देविकः भद्रश-দ্ভিভিভ বিবিধাকারে বৃতঃ পঞ ए।। निर्दा देशका विवर्षित्छ। रि भृष्टम रूपमा भवादका उदर भट्डा श्टमो यक्टिमानि ज्यमहि-ट्या टक्स स् त्यार्भनः। बादतरेश-व यूत्रामुद्रक्ष शक्रफः शक्रहर्य জালক প্রোক্তাঃ প্রদুদেশেব রূপ

ममना द्रमामि ककामदेनः ॥ रेजि शासना गराकाः ॥ 🖝 ॥ क मन्द्रा श्रद्धां छण इ संभा अन्यत्याति विद्या । क्रास्त्रम (सक्शः লো ৰুষ্ট নশেতি ভন্তসহিতা क्र शरामा खन्ना जरपगठण्ड जय-का अनुसा ह गुनी।। विद्या जला-ब्बर्क नमञ्जाम जरेप मञ्जि महिकाह शकी। तद्वाखवा गाम्यू-गटणि जूटेना खर्था भनाशा প্রতিভক্তশ্চ ৷৷ স্তব্ডে স্থোরণ क्रान्तिरेखक ममना निर्जू र देवठा-मदेक मृष्ट्रारेमा भंज भि॰ इत्राज নৃ ত্যান্বিতঃ শোভিত• । রক্ষ কাটিক রক্তৃমি নৃপতেঃ कीषान्भमः मध्यः अशामिष् ভদ্ৰকে চ ৰুচিকা তন্মধ্যতো বে-**मिका•॥। रे**छि गडारुक•॥ 🛊 ॥ কোণ চতুষ্টবেন সকলে

কোণ চতুষ্ঠবেন সকলে
পাণিগ্ৰহে স্বস্তিকা কল্যাণ রবিকোণকৈশ্চ নৃপতেঃ সা ভদ্রিকা
সর্বদা। কোণেঃ শ্রীধরিকা চ বিংশ্বতি মিতৈ স্তিস্থোৎসরাণাং গৃংহ

কোণৈ রুইভি রন্ধিতা চ শুভদা **ह** खार्कत्न शिषानी । विदश्च मश्च कताक जूगजनत्म वहिश्रक देवरमा ख्या वर्गन वर्ष अवस्था है स्थान वि दगक्ए। शैनत्स विकास क नदब्धवागन नदका के कि ভঙক হেন্না নৌভিক পট্টকা মণিভিঃ সৌন্যানন রাজিভা 🏾 ইতি বেদিকা চতুকীয়া। 🐞 🏗 দীপ ভাষ্ড ত্রিকর মুদ্দবে বছজি কন জনেণ হস্তাত্ত ত বিহিত মপি তৈঃ গীঠ প্রভাবিতক। দীপ-স্যোৰ্দ্ধে কনক কলস শোভিত কন্ধণাদ্যৈঃ স্বর্যান্ধাতো রথ ভর-মতে। নাগ বঙ্গে বিবজ্জো।। ইঙি শ্রীসূত্রধার মঙ্ক বিরচিতে বাস্ত-শান্তে রাজবল্লভে শ্বন সিংহাস-ন ছত্ৰ গৰাক্ষ সভাষ্টক বেদিকা **ठ**जूखेर मीशखंख **नकन ৮ ज** थायः॥ ।। शृश् वास्त्रापः ধৌরাজধোগ্যা অনন্তাহি সন্ত্য-ত্র তেভাঃ কিষম্ভঃ। মধোক্তাশ্চ रयागा। नृशानाः मग्रेका मूरणाः ভাষিতা স্তে চ কল্যাণদাশ্চ ৷৷ ত্রিশাল গৃহ দিক্ত্রেষ হুসমুগ্র মুখে বীথিকাগ্রে চ ষডদারু মধ্য• । श्रेगानिम ठाजूर्निमः टेठकरकुः।

গৰাক্ষ কোণে চ ভড়ে বিষেক্ ॥ मृत्य जमुतक औरतः गाय गुकाः छप्। जुमिका शक गरेशक हो।। HAMMAG. MAN. CAMPA विनार गार राजा रकता तायर श यह व सिम्बल्डन वा अ जरवा हे छ । **भक्कः देवतः 'नृ**खा नाभाव (शक् । खर्ड (अनी यशमादनन कार्या) न्याधिका देनव श्रुका न ह और ॥ शैन उद्ध भावत्या दाष्ट्र भट्डि त्मा दिशः मामिनारका दिश वर् । ज्देन (खर्र क्र क्र मः था। প्रमानः তুল্যানেকী বৰ্জমানাঃশুড়াঃ স্যুঃ ।। সার্দ্ধ ত্রষেণ বিভক্তেৎ কর তত্ত্ব ग॰था मर्था नवा॰भ मूमिङ्क कः রাঞ্চভিত্তিঃ। স্তন্তাশ্চ বোডশ গৃহহপি চ ভদ্রকেষু দক্তৈ মিতা-क मकलाम् छ्यूर्य मा९ ॥ ভত্তে চ ভূমিদ্বয মৃদ্ধুমাও সাৰ্দ্ধ ত্রিভূম• ক্থিতঞ্চ গেহ•। প্রতাপ वर्षमा भिषः म्थागाः लश्चीवि-লাসঞ্ বদামি তন্মাৎ ৷৷ স্তম্ভা দৰ্শ দশ ভত্তবৈশ্বক বোডশ মধ্যে তৎ সমৰূপণ। মদন শরাবনি মা-ও সমেত লক্ষীঃ কর্ম্মকরোতি চ নিত্য• ॥ ভাগাঃ পঞ্গগুণাশ্চ পঞ্ ভবন যড়িংশতা স্তম্ভকৈঃ স্থ-

ডো চার্দ্ধপদে চনন্দপদকৈ র্ডজ চতুর্বারকৈঃ। ভজে বৈ গুণভজ-কাণি সকলেকাশীজিকা জ্ঞজনা নাও ভূজিতখে চ সার্দ্ধশরভূঃ

गृह॰ 11 मरशा ख-ক্ত শতক ভাগ সমকে ভিত্তি শ্চ তৃত্বারকণ সপ্তাণশাদ্রি শরাণশ রাম সহিত ভজ চতুন্তিশতা। ষট্ত্রিস্পৎ দ্বিশতী চ তে তু সক-याः खडाः किलो পূर्वला नामा তৎ কমলোদ্ভবঞ্চ কথিত ভূমাৰ্দ্ধ नशाचिकः ॥ इर्यारमाम्बर्कः वि ভজ্য নবধা সম্ভী ভবেদ্ভাগতঃ পাদোনণ ভরণণ শিরশ্চ কথিতণ পট্টঃ সপাদে। ভবেৎ । স্তন্তঃ প-**ঋপদোনভাগ উদিতঃ কোণাই**-বৃত্ত তথা ভাগাৰ্ধেন জয়তিকা নিগদিতা সা ভন্তকস্যোপরি ৪ गृरमगामय मिथिजाटेग विंजा-জ্যু॰ দ্বিভাগেন কক্ষাসন বেদি-ক। স্যাৎ। ত্রিভাগেন তৎ কণ্ঠ-एठा निम्न (यव॰ गृहरम्यामयार्कन পীঠ নৃপাণা।। উত্তান পটে। ন্. পমন্দিরে ২সৌ হত্তে চ হত্তে দি-যবোদতঃ স্যাৎ। পাষাণতঃ সৌ-খ্যকরো নৃপাণা ধনক্ষণ সোপি करत्राजि शारह ॥ मूर्धिक न-

করিয়া বিযুক্তে সকর্ক রৈ স্তৈঃ সু-দূঢা গৃহে জুঃ। শস্তা ন শস্ত ভ-বনেষু চিত্ৰ কপোত গৃঞাঃ কপি-কাক ব্লোড়ণ।। শুদ্ধো থলিন্দ বি-শেষত্রত সকলা ভূম্যোচ্চরঙ্যা-विका शैदग्रना गाथ मख्यात्र ग्र-छ॰ गोंख॰ ज्थारकामय॰। भोरा ভন্ত চতুষ্কিকাভি ৰুদিতো মাণ্ডে-न कुक खर्था बरेल खना में भी-দকৈন্ত মুকলো বা শীষকেঃ শে-बद्भः ॥ द्वारखा गृहः इन्न ठल्केयः স্যাৎ তথৈব ঘণ্ট। কলসেন যুক্ত॰ তুষার সংজ্ঞ স্তৃথ সিংহকর্ণঃ প্রা-সাদকে তেপি বডেব শস্তাঃ॥ य-ড্জাভি গেহু ভূণ পর্ণ পটেট র্বণ-শৈঃ কড়ৈ ৰাপি মৃদা শিলাভিঃ। ছল্র প্রকারেঃ কথিতক ষড্ভি লোকপ্রসিদ্ধ্যা চ পরীক্ষণীয় ।। ইতি द्राष्ट्रगृशामि॥ ॥ वात्म छा-গে দক্ষিণে বা নৃপাণা তেখা কা-ষ্যা বার্টিকা ক্রীডনার্থণ। এক দ্বি ত্তি দ্ওসংখ্যা শতং স্যাম্বধ্যে ধা-রামগুপ• তোষ ষট্রেঃ ৷৷ কেত্র৽ স-প্তাবিভাগ ভাজিত মতো ভত্তঞ্চ ভাগত্তম তন্মধ্যে জলবাপিকা জিনপদৈ রেকা শতো বেদিকা ৷ স্তব্যে ছাদশভিশ্চ মধ্য রচিতঃ

কোণেরু কুপাদিতঃ কর্ত্তব্যা জল ষম্ভ এষ বিধিবৎ ভোগাষ ভূমী-ভূজা ৷৷ তস্যা চম্পক সন্দ জা-তি সুমনো বল্লাঃ সুনিৰ্বালুকা জাতী হেমসমানকেত্রক রপি শ্বেতা তথা পাটলা। নারকঃ ক-রণা বসন্তলতিকা চারক্ত পুস্পা-**मिक• अधीरता वमती ह পूग यध्-**ক। জুমুশ্চ চূতজ্মাঃ ॥ মালুরঃ काली ह हमन वहात्या श्रा শিবা চিঞ্চাশোক কদৰ নিম্নতর-বং খজু রিকা দাডিমী। কপু রাগ্ত-क्र कि॰ खका इयित भूः भूषा गरका নিযুকী প্রোক্তা নাগলতা চ বী-क्रिक्ञ गाविमूकी नामनी ।। তাকৈল। শতপশ্ৰিকা চ বঙ্গলা थजूत क रकान को नान खान তনালকৌ মুনিবরো মন্দার পা-त्रिक्रमो। ज्या छाका विविव

। যদ্যাপ্নোতি ন ভূতলে শুভ-তন্ত ভচ্চস্পকান্ বাপ্যেৎ ॥ আহান প্রতিসেচনাষ চ যদি-যন্ত্র স্তুসারোদ্ভবে দোলা স্ত্রী-জনখেলনায় রুচিরে বর্ষা বস-স্তোৎসবে। বালা প্রোচ বধু সু-মধ্য বনিতা গানে র্মনোহারিভি-

ত্রীয়ে শারদকেথ শীতলজন-ক্রীডা শুভে মণ্ডপে ৷৷ ইতি বাটি-का ॥ 😻॥ जूबक्यांगाः गृह वाय-ভাগে শালা চতু:রম্ভিকরা বিধে-या। गणकित्वा मधामिका ह रेनः ৰ্ষ্যে কনীষসী তৈ দশভি বিহীনা ॥ ব্যাদে চ জ্যেষ্ঠা তিথি হস্তমান। बरमामटेनका मनदेकः करमण । তদ্বাহ্য ভিত্তিশ্চ কর প্রমাণা প-कार्क शकािक करताम्या मा। १। তেজোহানি मशीरमा विमयट পূৰ্বাপ্ৰমাস্যা মৃণাণ তে যাম্যোত্ত-রতো মুখাদি সতত কীর্ত্তি র্যশো ধান্যক। কর্ত্তব্যে। ধিষণ প্রতীহ क्लमञ्चानः षिरुखामगं छमा। স্তোরণ মুচ্ছিতঞ্ মুনিভি হ স্তৈঃ স্পোভান্বিত ।। বক্ট্যা সাধুহ্যা-ब्रुटेन निगिषिटा दिमाब्रुटनना-धिकः श्रीवर्म खुरि नाव विव ह মনোহারী দিসপ্তাঙ্গুলঃ। রাগা-मान्नरंकञ्च वाकि विकरमानी-ত্যা তথা ভৈরবঃ শাস্তাখ্যস্ত মু-गाक माज উদযে मान श्दाः म-প্তথা ।। ইত্যশ্রশালা ।। 🟶 ।। সিংহদার পূর্মানেন কার্য্য ত্রি-रहाका वा मानिका खडानीर्य । माणा गर्या जाउँको त्रक्रार्थ क्लो जारगनाबिस्को वाशि मा-को ।। जारग मिक्न वामस्क छ कतिनाः गांका इरद्र कांद्रकः कर्छ-का मृद्राक्षका छ कलरेम वं-को पिछ ज् मिका । मः कीर्रा त-मरनाः गरेभ निंभमिरण मका म्-भःकाकेणः मर्द्र मुक्त ज्यकाणि कमिरण नरेमः करेद्र मुक्तिकः केंछि भज्ञभाना ।। का। जरकान्त-द्रिक भज्ञभाना ।। का। जरकान्त-द्रिक स्व जन्माः । क्रशा ज्यक्षे-जि द्राण विकानः गरेक्य ज्या-विकरणानि रिहर्सा। ज्ञानिहरूका सामकरेद्रक होनाः भक्षाक्या ज्ञ् भम् छियाका। जिल्ला रेमर्सा

ৰ ৰংগাদিতাশ্চা। প্রোক্ত চজুহ ৰফিকুর পূণ্ডে ক্রমেণ বড়জি শ্চ করে বিহীন । বড়জাগছে। স্যাম্বাধিণ

देशाय है निश्च वृद्धिः ॥ वर्षे । वर्ष

हेक्ट क्रमण्या जागाधिक देएकी णः। देषरद्धश्च मजामम्मा श्रद्ध-তঃ পৌরোধসং তৈবজৎ বিংশ-**जार्ककतः विरुखतिरूकः टेनर्ट्या** विश ভडरवर्।। विना कक्कि সিমিনঃমণি গৃহহ বেদাধিকা বি<u>~</u> मार्क मंग्नः एक क्रजूकरेश विविद् कः देनदर्भाधिक। वागमञ्जः। रुर्म्याः দ্যুত করান্তিকদ্য রচিতে৷ হক্তৈঃ শ্রন বিভয়ে হীন ছর্দ্ধকরেণ প-क्क निमः जुर्याः म देमर्याधिकः । বাজিশতা মান মিদ• ছিজা-লে হী ন চতুর্ভিঃ ক্রমতো বিধে-কা দিশক রাগানি বিভাগতশ্চ कट्या छहर्न छ कुरेटयिश ।। कुर्गा-विका विख्याला रिविक्ष भीष् বিনাশ সমূলৈতি গেহা ছারা নজ মূর্জ্বিয়দাপ্রকল্চ তৎ সম্ভতে र्शिकतः अपिये ।। द्यारम मथ-क्रिन्ड विवृद्द भाना मानमित्र মনুভূক্তে গঞ্জিশ্র পুন রপি **जिन् गान गूनिङ लट्या दिव वृ**-স্কাঃ। এক দার প্রালুখ শো-ভন স্যাৎ চাতুৰ্ক্তু ধাতৃ ভূপে-म देजरम। यूत्राः आह्याः शन्हिरम माजिएक्यू यून बातः पक्ति। বৰ্জনীয় ।। ইতি বাস্ত্রশান্ত্রে

त्राजवल्लाखरन त्राजगृशांतिः नवटमार्राष्ट्र ॥ भिन्निका जी ज्निविद्यम्ब । न शनिंशी देखि रिमीखारा । তৎপৰ্য্যায়ঃ। শিদ্মনী ২ শীন্তা ওক্বেজা ৪ দুদুক্তদা । অস্যা গুণঃ মৃত্ররোধাশারী শূল শর পিত্তাপহারকরণ। ইতি রাজ निर्घकः॥ শিন্ধিনী স্ত্ৰী কোলদলোবিক। ইতি মেদিনী।। भित्रिभावा जी की भित्रभावा। ইত্যমরটীকাযাণ স্বামী।। শিক্সী ত্রি শিক্সকর্ত্তা। তৎপর্কা-यः। কারুঃ ২। ইত্যমরঃ।। অন্য বিবরণ শিক্ষকারশব্দে অফব্যুণ ॥ निज्ञमञ्जूती ह ॥ **निव॰ क्री मक्रवा॰। ইত্যমরঃ।।** . मूथ• ॥ कन• । रेज़ुशामिटकायः ॥ टेमक्षवः॥ ममूजनवः॥ ८४-তটকণ । ইতি রাজনির্বনটঃ।। শিবঃ পু॰ বন্ধানঃ সংজ্ঞাবিশেষঃ । তস্য ব্যৎপত্তি র্যথা। শিব॰ कलाभि विमार्छ २मा भिवः। শ্যতি অশুভ মিতি বা। শেরতে **२**विश्वेरस समिमानस्य **१८छे**। গুণা অস্মিন্ ইতি বা শিবঃ।

ইতানর টীকাষা ভরত:॥ ত পर्यायः। मासुः २ क्रेमः ७ मेख-পতিঃ ৪ শূলী ৫ মহেশ্বঃ ৬ ঈ-चेतः १ मर्वः ৮ नेगानः २ गह-রঃ ১০ চক্রশেধরঃ ১১ ভূতেশঃ ১২ খণ্ডপরভঃ ১৩ গিরীশঃ ১৪ গিরিশং ১৫ মৃতঃ ১৬ মৃত্যুঞ্জয়ঃ প কুভিকাসাঃ ১৮ পিনাকী ১৯ প্রমধাধিপঃ ২০ উত্তঃ ২১ কপ-मी २२ औक्केः २७ मिछिक्केः ২৪ কপালভূৎ ২৫ বামদেবঃ ২৬ ৰহাদেবঃ ২৭ কিৰাপাকঃ ২৮ ত্ৰি-লোচনঃ ২৯ ক্লশানুরেতাঃ ৩০ সর্বজ্ঞা ৩১ ধূর্জটিঃ ৩২ নীললো-হিতঃ ৩৩ হরঃ ৩৪ সারহরঃ ৩৫ ভর্গঃ ৩৬ ত্রাম্বকঃ ৩৭ ত্রিপুরাস্ত-ৰুঃ ৩৮ গৰাধরঃ ৩৯ অন্ধকরি-পুঃ ৪০ ক্রতুশ্পী ৪১ বৃষধজঃ ৪২ ব্যোমকেশঃ ৪৩ ভবঃ ৪৪ ভীমঃ ৪৫ স্থানুঃ ৪৬ রুজঃ ৪৭ উমাপতিঃ ৪৮। ইতামরঃ ॥ বৃষপর্বা ৪৯ রেরিহানঃ ৫০ ভগালী ৫১ পাণ-শুচন্দনঃ ৫২ দিগম্বরঃ ৫৩ অউ-रामः ८३ कोनक्षतः ८८ भूत्रिष् ৫৬ বৃষাকপিঃ ৫৭ মহাকালঃ ৫৮ বরাকঃ ৫৯ নন্দিবর্দ্ধনঃ ৬০ হীরঃ ৬১ বীরঃ ৬২ থকঃ ৬৩ ভুরিঃ ৬৪

কটিপুঃ ৬৫ ভৈরবঃ ৬৬ ব্রুবঃ ৬৭ শিবিপিকঃ ৬৮ গুড়াকেশঃ ৬৯ रमवरमवः १० महामधः १३। ইতি किंगियतः ॥ ठीवः १२ थएनर्छः शकाननः १८ कर्छकालः १८ छ-রুঃ ৭৬ ভীরুঃ ৭৭ ভীষণঃ ৭৮ क्बानमानी १२ क्रियंतः ४. रवा। भरतवः ४० निकासकः ४२ ধরণীশ্বরঃ ৮৩ বিশ্বেশঃ ৮৪ জ্য-उः ৮৫ হরৰপঃ ৮৬ সন্ধ্যানাটী ৮৭ সুপ্রসাদঃ ৮৮ চন্দ্রাপীডঃ ৮৯ শুলধরঃ ৯• ব্যাকঃ ৯১ বৃষ-ভধজঃ নহ ভূতনাথঃ ৯৩ শিপি-विकैः २८ वरतस्त्रतः २७ वित्यस्तरः ৯৬ বিশ্বনাথঃ ৯৭ কাশীনাথঃ २५ वरणस्तः २२ जस्मिली ५०० विभागाकः २०३ हिखी २०२ थ्रिय-তमः ১০৩ विषयाकः ১०৪ ভদ্রः २०६ छर्कुरत्नलाः २०७ महाकानः **२०१ यमा खकः २०৮ नन्मी खद्रः २०**२ অন্ট্যুর্ত্তিঃ ১৯০ অহী শঃ ১১১ খে-চরঃ ১১২ ভূঞ্দীশঃ ১১৩ অর্জনা-রীশঃ ১১৪ রসনাযকঃ ১১৫। ইভি ग करवारणी ॥ छेः ১১७ निना-क्षानिः ১১१ यंनधत्रधतः ১১৮ কৈলাসনিকেতনঃ ১১৯ হিমাজি-তন্যাপতিঃ ১২ া ইতি ক্রিক্স-

निर्ण ॥ जग महमुनामानि 🖺 মহাভারতে অনুশাসনপর্বণি ড-खेगानि ॥ #॥ चना क्लालि नाम कात्रण यथा। देशत खेवाठ। ত্থাসীত্তত্ত বরারোহে শিরোপর । পঞ্ম শৃণু সুশোণি জাত"কাঞ্চন সুপ্রভ॰ ত্বলন্ত• প-রমণ শীর্ষণ জাতণ তস্য মহাত্মনঃ ।। म এব মত্রবীদেবি জন্ম জা-নামি তে ছহ°। অতঃ ক্রোধ গ-রীতেন সংরক্তনযনেন চ ৷৷ বা-মাঙ্গুষ্ঠ নথাত্যেণ ছিন্নণ তস্য শি-द्या गया। बद्याताठ। यत्राम्न-পরাধেন শিরশ্ছিমণ ঘ্যা মম। তন্মাচ্ছাপসমাযুক্তঃ কপালী স্ব **ভ**विद्यानि ॥ ইতি মাৎস্যে ১৫৮ व्यक्षायः ॥ क्षा व्यव नित्र मखाः । তত্র একাকর মন্ত্রো মথা। সান্ত মৌকার সংযুক্তণ বিন্দুভূষিত ম-खक । आंगानात्था मनुः था-क्ला ७५०। कामाना मनिः॥ হোঁ। • ।। चन्रा পূজা প্রাতঃ ক্ত্যাদি মাতৃকান্যাস প্রাণাযা-मक विधाय बीक श्रीम नगान या-তৃকাস্থানেষু স্বর্যাৎ। ততঃ সা-मानाशृकाशकवुाक शीवनामः रूषा भौठमकी नात्म । ठठः

श्रमानि नामः। ७७३ कत्रा-॥ क्नारमे। ७७३ वेषानामाः भक्षमूखी र्नाटम । मृजञ्ज a তৎপৰ্য্যন্ত ন্যাস ক্ৰমা ধ্যাবেৎ । অন্যত্রানধিকারাৎ। তত উদ্ধৃ প্রাগদক্ষিণোত্তর পশ্চিমেযু মুখেরু ঈশানস্য পঞ্চলাঃ পঞ্জন্ধ ঋচঃ शनानिकाः अनवाना नत्माञा ন্যদেৎ। ততঃ পূর্ব পশ্চিম দ-ক্ষিণোত্তরেষু তৎ পুরুষস্য চত-मुक्ना विनारमः। ততো समस्य গ্রীবাধাণ অংশদ্বধে নাজে স্ব-(क) शृत्धे वक्षित्र अववात्रमात्छे। কলাঃ ন্যাসেৎ। ততাে গুহে व्यक्षत्कारम छक्रम्रस्य कानुष्रस्य जञ्चाष्ट्रय अकिषद्य करेगाः शाः র্শ্ববোঃ বামদেবস্য ত্রবাদশক-লাঃ বিন্যদেৎ। ততঃ পার্মবোঃ खनर्या नीनिकायाः मूर्जि वार युत्था मामाजाञ्मारकोकलाः ন্যদেশ। ততঃ পঞ্চাঙ্গুলীযু 🔻 শानामाः शक्सका नात्मः। এব॰ মূধাস্য शहर छ**ञ् পा**দে-ষ্টে। ঋচো ন্যদেৎ। ভভো विनामा धाराष । मूकानीक शरयाद भोक्किक कवा वर्टर्व मू- ||

থৈ: পঞ্চভি ড্রান্সে রক্ষিত সীপ निन्तु मुझरे॰ भूर्तन्तृ कारिथङ । শূল টক কুপাণ বজু দহনা-মাগেন্দ্ৰ ৰক্টাকুশান্ পাশ ভী-তিহর দধান মমিতাকল্পোজ্জ-लाकः ভজে॥ এবः धाषा गान-সৈঃ সংপূজ্য অর্ঘ্য স্থাপনং কৃষ্ শৈবোক্ত পীঠপূজাণ বিধাৰ পুন शाका जावाहनामि शक भूज्या-'क्षिन मान পर्याखः क्षा व्यावतन পূজা॰ বিধাষ धृপाদি বিসজ্জ-नान्तः कर्या मगाशरयः। जमा পুরশ্চরণ পঞ্চ লক্ষজপঃ ॥ ১॥ • ॥ जमाकाकतमत्वा यथा । বডকরঃ শক্তিরুদ্ধঃ কথিতো श्काकरता मनुः। शैं ७ नमः শিবাষ হ্রীঁ। অস্য পূজা প্রা-তঃক্বত্যাদি শৈবোক্ত পীঠ মশ্ব-क नाम विधाय श्रमामिना-न क्राक्रनगमान् शानायायश ক্লন্ত্ব। ধ্যাধেৎ। বন্ধকাভণ ত্রিনে-ত্র॰ শশিসকলধরণ স্মেরবজ্ঞৃণ ৰহস্ত**ং হস্তিঃ শূল**় কপাল বর-দ মভয়দ চারুহাস ভজামি ৷ বামোৰ স্তম্ভগাঘাঃ করতল বিল-নৎ চারু রক্তোৎপলায়া হস্তে-नाक्षिक प्रहः मिन्य विनम्

यनामाः शियायाः ॥ ५व भाषा মানসৈঃ সংপূজ্যার্যস্থাপনং ক্র-দ্বা শৈবোক্ত পীঠ পূজাণ বিধায भून श्रीषायामः असभूभाक्षति **मान शर्यास्त्र**े विश्वायावत्र शृकाः क्रषा धूर्यमानामि विमर्द्धन কর্ম সমাপবেৎ। অসা পুরশ্চর-**१० हर्ज्यमनमञ्ज्ञभः ॥ २ ॥ 4 ॥** তস্যান্টাক্ষর মন্ত্রান্তর যথা। তারো মাবা বিযদিন্দু মনুস্বর বি-ভূষিত ৷ পঞ্চাক্ষর সমাযুক্তা বসু वर्ता मनू र्याण्डः ॥ ७ द्वौँ रहीँ নমঃ শিবায। অস্য পূজা প্রাতঃ ক্লত্যাদি শৈবোক্ত পীঠ ন্যাসা-ख॰ विशाय शृर्ववषृष्णाणि नगाम॰ कताकनगारमो ह क्रचा शारव । ्रतन्त्रः जिन्तृत्रवर्गः यनियूक्रपेन्नमः চারুচন্দ্রাবত শ ভালোদ্যমেত্র-মীশ প্রিতমুখকমল দিব্যভূষা-क्रतांश । वात्माक नाख भारा त्रक्रभ भवलयः मः एषठााः श्रिसी-্ৰা শ্চণ্ডোতুঙ্গ স্তনাতো নিহিত ্করতট॰ বেদ টক্ষেইহস্ত॰ ৷৷ এব॰ ধ্যাত্বা মানসৈঃ সংপূজ্যার্ঘ্যস্থাপ-नः क्रवा शीर्रशृष्ठाः विश्वाय भून र्शाञ्चावाहनामि शक्षभूणाञ्चल मान পर्वाखः विशाय व्यावत्रः। পू-

জा॰ क्रन्न। धृशामि विमर्क्जनास्त्र॰ कर्या निया शरा श्राम्हरा यखेनकङ्गा ७॥ 🛊॥ ज्याना মৃত্যুঞ্জযাখ্য মন্ত্রঃ। তার স্থির। স-কর্বেন্দু ভৃষ্ণিঃ সর্গ সমন্বিতঃ। ত্র্য-ব্দরাত্মা নিগদিতো মন্ত্রো মৃত্যুঞ্জ-राषाकः। ७ जूँ मः। यमा शृजा প্রাতঃরুত্যাদি শৈবোক্ত পীঠন্যা-नाख॰ विधाय अयापिनाम॰ क-क्राक्रमारमे ह क्षा धारवं । চক্ৰাৰ্কাগি বিলোচন স্মিতমুখ: পৰ্বৰ্ষান্তঃ স্থিত মুজা পাশ মৃ-গাক্ষসূত্র বিলসৎপাণি হিমাণ-. ७ अ ७ । का जितम् भव मू-শাপ্ত তনু হারাদিভূযোজ্জুল कान्त्रा विश्वविद्यार्नः शरून-্তি॰ মৃত্যুঞ্জয• ভাবযে ।। এব• ধ্যা-ছ। মাননৈঃ সম্পূজ্যাৰ্য্যস্থাপন• ক্তবা পীঠমন্বস্তা পীঠপূজা বি-शांक शून श्रीषावाहनामि शक-পুলাঞ্জলি দান পর্য্যন্ত॰ রুত্বা আবরণপূজাণ বিধায ধূপাদি বি-मर्क्कनान्तः कर्य ममाभरयः । ञ-ना भूत्रमहत्रनः नक्तवयक्रभः॥ 🗱 ॥ ।। अथानग्राश्वत चामभाक्यत म्-'खु: अय मञ्जः ।'मृजू: अय॰ ममूक्ः।-र्या भानव विषयः वरम् । मृज्रा-

मकः ॥ चामभाष्ट्राः भक्षः सहः र्वद्यः ॥ ७॥ ७॥ जनाः जातिहान काकत मन्द्रः। श्रेश्रस् मुख्यान्त्री শ্চাৎ ততে তগৰকে প্ৰকাশ क मिकना मूर्खिः स्वा त्र मुस्यूमी-इत्यर। अत्रक् र द्वारक्ष्या भाग বিশ্পভাষ্টরা মনুঃ ১৪: 🎉 বাজা ভগৰতে দক্ষিণামূৰ্ত্তৰে মঞ্চ শে-शं॰ थ्रयक् याहा। जगाः अधाः। প্রাতঃক্ত্যাদি শৈব্যেক শীর্ক मक्छ विनामा समाहिना। क्त्रावनगाटनो हः स्टब्स् अक्सरकु ा वहेर्कः बरहाक्याकः व्यवस्था क्टला क तः। भाक्ष का का का टेल विष्ठित क्रश्रम् । तक महाकटेब लंबनाटेन कुणकूका বিচিন্তা বটমূলক জিন্তালাক-नायक ।। क्षिक त्रक्षक्र के ক্তিকী নক্ষালা মমৃত কলা বি-দ্যা জ্ঞান মুজাঃ করাইজার ক্ষেত मूत्रभक्ष हटाहुङ जिल्ला कि ধৃত বিবিধভূষণ পক্ষিণামূর্ত্তি শী-

क्षक ममुक्तावा भूम दार विद्या। । जा किलानामि हेम्द्रां क कि ्रमा कियाय ग्न र्गाषावार ना माभ म्जूक्षमाजित्या समाप्त । विश्विम सुलाक्ष्मिम निर्माण ७ जूँ मः भावर भावर ७ जूँ मः विशासक्तर गुका क्या गुभान । व्यम शाम गुकापिक मर्काम् । जिल्लामाक कर्ण ममागरेक । स्कृत नशामा नवाजाः। जि ः कार्क्रकातिका ज्ञानित्नो वर्धिन् नुस्थानिकामितिकि गांचः रीकः ार्ब गम्बिमशा त्र का पान पान 🌣 🎉 अञ्चलकारितः। जनन क्ष्म গুরুল প্রাণ প্রত্যান্ত বাৰ্থাতি दिसक्ति पटेक मिक्टिंग स्वहा-.काक जांग गुजा थाजकगापि ালৈকাক পীঠা দয়ত বিনাম্য भ्रमाहिन्छानः क्वाननगरने ह क्रमा बारक्यः। नीम ध्रतान क्र-क्रिया विज्ञास्य विस्तव गामाक-स्वार्भावनागर मृगर्खः । व्यक्तिक्ष प्रिमार अविक्रक जून वारमञ्जू रक्ष मृत्रहें क्षांभागि कल्लाक्षक बगन्न नामटेकः मन्त्र-জ্ঞার্মার সংখ্যাপর লৈবোক্ত পীঠ शृकाः विकाप शृन ब्रापावास्ना-मि नक्षम्भाक्षणिकानः गर्गाङ क्षा जानके शुक्ताः विवास प्राा-एक ।। अवन् शाका सानदेना साम्मू- कि विनक्ति साम्भू स्वापालका

थाना नूत्रकृत्रका लक्कनः। ज्य व्यक्तनात्रीयतः ॥१॥ भार्या বহি সমাৰত ভারবামাল্য মীরি-**७** । शांखी दङ्गि ममाबार खूर्या-াস্বর সমস্বিতঃ 🏿 বিন্দুমাণ্ড বিতী-সংস্যাৎটাভঃ সমী ভূতীৰকঃ। नीवक्श्रेष्ट्रका मद्या विषयर-तः भतः ॥ श्रमाशास्त्र । जारि-তোম্যাসনঃ সত্যো বিন্দুষান্ প্র-थर भूनः। विजीया विद्वितीकत्र। मीर्या भाडीम् ভূষিতা। তৃতীয়া जानकी मगी मत्ता नीकवराषा-कः। नीणकश्रीष्ट्रात्ना मञ्जा वि-यदयहतः भन्नः ॥ त्या नी रेः हेि সম্ভঃ। অব্য পূজা প্রাতঃরুজ্যাদি दैनदराक शीठनामाल क्या ॥-चापि नाम क्राजनारमे ह विशाष शानः वर्षा। शानाकी-যুত তেজদ গৃতজ্ঞীজুটেশুখ-द्रश्रेकुन मार्शिकः कुर्ण्य-त्र अभवषीः मृता क्यान करेतः र परिकर विष्ठ वित्नवविनामः निकानमा गुन्तत्र गाचुवर्गात्र-बान मखनिनय खेनीनकर्छ छ एक ।। धर काकि नामरेना अ ग्वार्या रागमाहि देनदर्गक नी-ठगुका विशव भूम बीका जाता

र्नामि शक्षभूष्णाञ्जलमान गर्यः-ভে ক্রমা আবরণপূজাণ বিধাষ ৰূপাদি বিসৰ্জনাত কৰ্ম সমা-পাষে । অস্য পুরুশ্চরণ ত্রিলক্ষ-क्रिनः। जयः नीनकर्भः ॥ ৮ ॥ । अमारीकत्रपत्ना यथा । তারো হারীলকভাষ মন্ত্রশাফা-क्तः भन्नः। ७ नत्य। नीलक्शेय विमा भुजाितक मर्ब शूर्ववर মি হু ।। জ্বা প্রকাশকরমন্ত্রঃ चेखकत्रगळक यथा। ऋपयः तथ-রু শাক্ষিন্ লাভো ২নভাম্বিতো नैक्र । পঞ্চাকরো মনুঃ প্রোক্ত खोत्रारणा २४॰ यणकतः। नगः निर्वाप। उनगः निराय। जनग পূজা-প্রাভারত্যাদি শৈবোক্ত नीं मध्य नामः विधाय सया-দিন্যাস প্র্যাৎ। ততে। মূর্ত্তি न्त्रामः । छ्छः क्त्रान्नन्त्राटमो । ততো গোলকনাসঃ । ততে राणिकनानि आनायामक कृष शास्त्र । शास्त्रकाः मरङ्ग রজত গিরি নিভ চার্মচন্দ্রারত THE THE PARTY OF THE PARTY OF ग रहा द्वार २ इंग्डिमहर । मधा मान व्यवस्थार सुरु वनतगटे राष्ट्रिक रंगान दिशामा वि

শ্বীজ निथिल ভযহর পঞ্ব-জু ত্রনেত্র ।। এব ধ্যাত্বা মা-নদৈঃ সম্পূজার্য্য স্থাপনং ক্নত্বা শৈবোক্ত পীঠপূজাণ বিধাৰ পুন र्शाषावार्नामि शक्षभूणाञ्चल দানপর্যান্ত বিধাযাবরণ পূজাং क्षचा धुशानि विमर्क्क नास्त्रः कर्मा नगाशरम् । ज्या शूत्र हत्। यहे-ত্রি॰শল্লকজপঃ ৷৷ ১০ ৷৷ 🛊 ৷৷ অথা-ना जाकत्रमञ्जः। अधीरमा रङ्कि শিখরো লান্তস্থো দান্ত ঈরীতঃ। ফডন্ত শ্চণ্ডনন্ত্ৰো ২য়ণ ত্ৰিবৰ্ণাত্মা সমীরিতঃ ॥ উর্ধ ফট্ ইতি মন্ত্রঃ॥ অস্য পূজা প্রাতঃক্বত্যাদি শৈবো-ক্ত পীঠন্যাসান্ত বিধাৰ ঋষ্যাদি-माानः कत्रावनगारनी ह क्षत्रा शा-ষেৎ। চণ্ডেশ্বর রক্ততনু ত্রিনে-ত্র॰ রক্তাণ্ডকাচ্য হাদি ভাবয়া-মি। টক ত্রিশুল ফাটিকাক্মা-লা॰ কমশুলু বিভ্ৰত মিশুরুছে।। अवः शाषा सनदेनः सम्बद्धाः ALERIA MARIE DE A SECTION AND A SECTION AS कि: जक्रम द्व रामायास्ता-मि शक भूणाक्षामान शर्याख॰ विधायावत्रण्याः क्रेंचा श्रुभानि विमर्क्कना छ॰ कर्य ममान्यस्थ ।

षमा भूत्रकत्रन जिनकाभः । **चर° हरअभूतः ॥ ১১ ॥ ই**ভি **छ**-बनादत्र निवयबाः ॥ 👁 ॥ 👁 ॥ विकृ निवदमा ब्रट्डामा भवा । वबार छेवाछ। नित्वा त्म मन्नि ণ স্থান তিষ্ঠতে বিগতস্বরঃ । লোকানা প্রবরঃ শ্রেষ্ঠঃ সর্বলো-ক বরো হরঃ।। ত॰ যে বিদন্তি তে দেবি নূন ম। মেব বিশ্বতি । ষে মাণ বিদ্স্তি দেবেশি তে বি-मिख निव॰ পর॰ ॥ অহ॰ যত্র শিব স্তত্ত্ব শিবো ষত্র বসুশ্বরে। অ-হু তত্ত্বাপি তিপ্তামি আবয়ে ন্৷-স্তর• কচিৎ ।। শিব• যে। ৰন্দতে ভূমে স হি মা মেব বন্দতে। লভ তে পুছলা দিদ্ধি মেষ মো ৰে-'ত্তি তত্ত্বঙঃ।। ইতি ৰাবাহে শাল-গ্রামক্ষেত্র মাহাত্ম্য বর্ণন নামা-शायः ।।।।। प्रदी विकृ निवाना-मदछ्दा स्था। जनः नात्राप्रवा ক্ষিক্ষামাভা সমাতনঃ। বি-ক্ষা সংস্থিতো দেবঃ স্বাদ্যানণ ্বহুমেশ্রঃ।। ন মে বিদুঃ পর ত-कु (म्यामा न यहर्यसः। একোৰ॰ प्तर प्रवाचा ভवानी विक् त्रव ह ৷৷ অহ' হি নিছি্যঃ শাস্তঃ কেব-লো নিষ্পরিগ্রহঃ। মা মেব কেশ-

कातः पद्धापिदका वि ৰিয়া তেৰা বিনশাড়ি কিন্তাং মে निकांकि निमाक्रिम ॥ दस् हार সরাঞ্চরেদিতাং, একুছে-, ভার, माध्यकः। तिनिक्तकत् मीकातः ৰ বাজি ৰৱকাবুত ॥ তন্মাৎ সা शतिबर्खना सिन्हा श्रेष्ठशक्त विक १ कर्यांना यनमा ताठा , जखरक्रम्-. ণি ষত্ৰতঃ ম ইছি কৌৰ্মে ২৫ জ-शांकः ॥ ६॥ छरा ,थनवर् ।इक-षः यथा । भएठ भद्रार्क विकास কালে জোৰপ্ৰালকঃ 1 কা नाति जन्मानः कर्षः व्यवक्रि निवितः यकि ॥ काष्वाणान माद्वमा जूषा दादा मदस्यद्वः। बर्द्दमरणवः बन्नाधः ज्ञारमञ्जू बाम्य ।। ७ यादमा ब्रह्माद्वरद्धाः **७गनाबीमत्मारिकः । ऋद्या**ि লোক সংহার ভীষণ কোক মা জিতঃ ্যা প্রাবিশ্য মণ্ডল ছোরণ हमा १८मो बच्या भूमहा निर्फ राज-

ISIAN AND PRINTED IN MICH. CAN PARTICIPATE OF THE PARTICIPA वर्ताबरणुस्यू जही विक्रियान THE WAR PROPERTY MEST चित्रदक्ष रेनहिन्दी व्यक्तिः॥ निनः नशादिक एकितालाक क्रम्बाहर व वया आमिका ह्यापिमदेश श्-तस्तु। मन्युनगरका (हरा: बर्स्डाइकि बीचरा । तर्तु रह इक्षः नर्गु कि संराष्ट्र श इन्द्रा ब्रह्मानक्षतः धक्षीचान-नक्षात्रकः। बिभूनाः क्षवियम्दा त्यायः देशक्षत्रः संक्रिकः ।। शीषा हर वहरानक अपूठ मर्ठः य-कः । बद्धाणि जाधन तान मा-लाक भन्न स्थापनः ॥ भीना नृजा-म्कः प्राती कर्षः श्वत्र सम्मा । (साम्याकाम त्मनग त्वर, मारा-তি বুলিক্ষা স কুজু৷তাধ্ব র-मः द्वार्देशव श्रिमाकशृक् । गाछि यजादः जगराम् मधा उदा ७ म-अनः ॥ मः विरव्याथ स्वर्वम् बक्तः विष्कु शिक्षां विष्कृ । ७८४ प्रतन-কৈঃ পৃথিৱী বিত্তৰ যাতি বারি-क्षत्र नाति क्षतः सथनः जनक

क्रावासकी देका परानम् क राजी समाधि मानक ॥ कार्काट्न महिला नामः जान याकिनाकर । क्रांति ह ज्या कान नी बाज की अंतर में क्षियानि ह नैदानि एक बहुन सर्वि माक्षर । देवेलाबिक (संवर्गना थनम् मिक्र मख्याः। देवकात्रि কা ভেজসন্দ ভূতাদি নেডি স-खनाः। जिविदश २४ महकादब्रा म्हर्फ अनय बर्फ ।। महास মেভিঃ সহিত বন্ধাৰ সমিতৌ জস^{*} ৷ অব্যক্ত**• জগতে**৷ বোৰিঃ म॰रदाः (एक मन्त्रपः ॥ সংহত্য ভূতানি তত্ত্বানি চ মহে-श्रंतः । विरंशाक्ष्यकाषारनामान श्रधानः भूक्रयः भन्नः ॥ श्रधान পুংসো রজ্ঞযো ব্রেষ সংহার ঈরি-তঃ। মহেশ্বরেচ্ছা জনিতোঁ ন স্ব-य॰ विमार्ट नयः ॥ अवस्ति। তদব্যক্ত প্রস্কৃতিঃ পরিগাঁবিতে 1 প্রধান জগতো যোনি রাদ্যত-ख मटाजन । कृष्टेश निष्मारम হাত্মা কেবলঃ পঞ্চবিশ্লকঃ। গী-যতে মুনিভিঃ সাক্ষী মহানেকঃ পিতামহঃ ॥ এব॰ সংহারকর্ণী শক্তি মাহেশুরী ক্রবা। প্রধানক

तर उन्हें हैं कि अधिक , H गर्दना खास जशायः॥ ।। जनस् वाका बर्धारा विश्वापान নুবাচ। ন বন্ধা ভকতো ভিন্ধে। न अंखु र्वका ख्या। ज हार युक्तवा जिंदमा इजिन्नव गना-তন ।। প্রধানস্যাপ্রধানস্য ভা-গাভাগসা ৰূপিণঃ। জ্যোতিৰ্ম্ময-স্য ভাগো মে খনেকে। খনেকো-হ মণ্শকঃ।। ক স্তৃ কোহক কো बक्ता नरेमर शत्रमाष्ट्रमः। जःभ-ত্রষ মিদ্ধ ভিন্নণ সৃষ্টি হিত্যন্তকা-त्र ।। हिन्डयम् याञ्रनाञ्चानः সম্ভব সরু চাদ্ধনি। একদ্ব বদ रेवत्रके भखुनाः स्नाजः वद्गा। मित्रा वीवानि एउएन यटेथटेव-কস্য ধর্মিণঃ। অঙ্গানি মে তথৈ-कना जागज्य भिष् इत ॥ य-ক্যোতি রগ্রাণ স্বপর প্রকাশণ কৃ-টুস্থ মব্যক্ত মনস্তৰূপণ। নিত্যঞ্ बीर्चामि वित्नवर्गारेमा शैनि शद्र ভচ্চ ব্য॰ ম ভিনাঃ।। ইতি কা-लिकाशूमार॰ >> श्रकायः ॥ ● ॥

অপিচ । ভতে। বদ্য बिका ठटक बट्र चनाष्ट्रक है ण्ड**्** क्लाइ (भाइ)-अका गरम्भन्न ॥ जन्मना-जारमा नीनाम अक्रक केंद्र-ज्ञः । भध्वकगमानमानानिः कारः हु देवकदः ॥ अखेतकम्दरा-ভাগঃ পঞ্চবক্তু শততুত্ব জঃ ৷ ক हिकाञ्चमभः कायः शक्तः म हता-(मधदः ॥ त्रम खंखा खनकारम मृक्तिमिक्तिः नारवाक्षयः । चय মেবাভবৎ সুফা বন্ধৰপেৰ লো-কভৃৎ।। স্থিতিশক্তি নিজা ना-माः श्रक्ताभाः नारवाक्यः। बरहरणा देवस्थर कार्य छान न-कि निका छ्या ॥ दिविक्डा छत्विक् त्रइ त्यव महत्र्वतः। गर्व-निक्तियात्मन मना ठऊभडा ষম।। অন্তপক্তিণ তথা কাষে শা-खर्त मन्त्रारमाजवर । अख्कर्छ। ভবচ্ছজু: সএব পর্মেশ্বরং।। ওত ত্তিষু শরীরেষু স্বয় মেব প্রকাশ-তে। জ্ঞানৰূপণ পরণ জ্যোতি র-नामि जगरान् अजूः ॥ मृकिष्-**छा छक त्रगारिक अव सर्हर्द्धः ।**

बन्ना विकृ: निव ल्लाउ मण्डा मान मुश्क नुषक्। अछ छुक वि-बाला है छकार मिन न न्यक्।। धर भरीक रागक छान गणाक संख्या रिन्धि छत्विय ३२ व्यथा यः श 🛊 ॥ बाबरेश्वय ख्वाम । जल्म बकार मन्द्रान मनसमाम न-खदा । वर्दर एटावझी नर् जना-**७० रेवा मुझ**ी छंग्रेरश भग-মভাভ বনাৰ জগত: পতি। জ্যোতীৰণ প্ৰকাশাৰ্থ স্থ্যাৰ্থ-क श्वन्तर्गाङ ॥ नदीतिम न म-मृत्न बक्षां खर्गक मूकः। हर्ज्-ভূজ প্রকাশন্ত জ্যোতিভিঃ ক-ৰলাসন ।। ভবৈষ চ ত্ৰিখা ভূত॰ वर्भ बीकार ममून मः । छेक् म-बाह्य कारगर वन विक् निवा-प्रक् ॥ ज्यानुं जारंगा वर्नु-त्वा जनाव मन्नमख्या ॥ मश ওদীবিক ভূভো দদৰ্শান্তস্য শ-ভূতা । এক মেব শরীরম্ভ তিখা कुछ गृष्ट ग्रहः। रता पपर् খে গৰ্ৱে তথা সৰ্ব মিদ জগৎ ।। कमाहिद्वक्व काव बात्का-कार्य नर्गः बद्धाः । बाषाः ७-था देवकदव ह भाखव॰ देवकदव छ्या ॥ भाजवः देवस्य कार्य

वाटका ज्लाप कार्य । गर्व লীনতা শতু রেকতাঞ্চ বৃহ র্মহঃ श मंगर्भ वामस्मरवाहि। जिन्नकाशः **शृथग्रगरः। शत्रशास्त्रकः** লীনতা তৰ্পান্চ বং ॥ইছি কা-निकार्बार्व ३७ व्यक्तिमः ॥ ।।। **जिंगा बत्रक्तरा बाद्रश काद्रश यहा** । रेडि ख्रिशः निगम्डाः एएका-वाका जनामनः। छना भारत राव जकाशक विराधकः ॥ वद-ফুতে দেবতাঃ সৰ্বাঃ প্ৰস্থান্চ স-कला रेगाः। श्राश्वाख गर्षु भः भौर्याट गकन जगर ॥ सादाहर সকল কাষ তাকু মিকামি শ-कता पः ज्ञाखन्य छ०कापः व त्राचा भन्नतायुना ॥ च मानायय তেজোভি র্কন্ অরহর শৃহঃ। আপ্যায়ত্ব তদা দেবাঃ শহুৱো হ্-उ পোত्रिन ।। दामुदादानि छाम् गर्वान् विमृष्ण जिल्लाः छन्।। বারাই তেজসা হর্ভু ক্ষাং আম-भरता जवर ॥ भटनः भटन वना তেজ আহরত্যের মাধবঃ । ভ-म। प्रश्व वादारः मचरीनः वा জাৰত ৷৷ তেজোহীন বনা দেহ खाल मर्दे तथागद्यः। साम-नाम नराम्पदा यस वाहार म

जनामा जिल्लाः महर्व भगाणि । जन्मभू जन्माण् जनगण्टने ॥ एक

्ट्रिक। वृष् सेतान मिलिन नगर्मा करिए गर्वाञ्चली म छ द्रमनामित्राद्रातना ২তবং ৷ উৰ্বাধোজাগত শ্চাক-भारवुकः गूरेखेत्रवः ॥ विवक्रिया-জনোজায়: সার্জনকৈকবিস্তৃতঃ । रें छि कानिका भूतार । २२ जशा-तः ॥ 🕳 ॥ जना विवादश वर्षा । ইশ্বর উবাচ। হিতাষ সর্ব জগতা॰ मद्यागायाच्यम ख्या । माताम् এহীতু মিছামি তথা সন্তান বৃ-करम्।। नाहागा ठळ वर्षे छव-**रक्षा मम मान्भुकः। ममर्त्य जनमाः** কালী বাচন্তান্ত হিমাচল।। মা-कॅटब्रें डेवार्ड। इतः नत्वाधा খুনবে। ছগ্ছন্ গিরিরাড্গৃহ । তেন সপ্জিতা তে তু প্রোচু স্তে मनत्या गिति ॥ च महस्त्राभरते। .प्रदा (मयरम्यक सा गर्डः। भा-পামুগ্রহণে শক্তো যএকো জগ-ভা পাৰ্কী৷ মং সংহরতি সর্বাণি खगिष थानरमास्टर । या विजू-ि श्रापा एक नानाकरणा य-

নোহরঃ ৷৷ স তে দুহিতর ভাষ্যা মাদাতু মিচ্ছতি। যদিপশ্য-সি ছদোগ্য বর ছ ছবিতঃ সমণ য তদা প্রয়ছ ত্রাক্তি দালী শ-निष्टे निवित्रिक्ट ७ विक । ইত্তিভ তৈও গিরিপতি বর यकुमयन्छि॰ । मृहिजूम्ट श्रियः खाषा थाना मून मगाखना।। দাস্যামি শম্ভবে পুত্রীণ যুশ্মাজিং প্রার্থিত স্তুহ । পূর্ব মেব তপ স্ত-প্তা তবেশঃ পতি রীহিতঃ ।। ধাতু নিযোজন মিদ কোন্যথা কর্ত্ত্ मूष्मरह्ष । का श्नाः आर्थि-তু শক্তঃ সুতা সম বিনা হরাৎ য়। হরেণানুগৃহীতা যা তা মন্যঃ कः ममूर्मारहर । इतः गृहीद्वा भनमा नागा मानीह বাঞ্তি॥ ইত্যুক্ত্বা মেনযা সাৰ্দ্ধণ সূতাণ দা-তৃক শন্তবে। অঙ্গীক্ষত্য বিসৃষ্টা **एक मूनरमा १७ मार्ट्यतः ॥ एक** গন্ধা মুনষঃ সুৰ্বে মরীচি প্রমুখা षिজाः। শৈলরাজো যদাচফ ত-मृहू र्यमनात्रत्य ॥ श्रिया अनयाः माजू जूङा मूष्महर्ज् इत्र। यमि-দানী প্ৰযা কৰ্ত্ব যুজ্যতে ক্ৰিয-তাম্ব তৎ ৷৷ অস্মাণ শ্চাপ্যনুজা-নীহি হর গন্ত নিজাস্পদ ।। সি-

षा काषा इद्राः साधाः सूपिक छान् विम्खेवान्। यथायागाः नमा-ভाষা क्रमात्मदेककत्मा मूनीन्।। काली बिवाक मिक्टम यूय याया-ত যা॰ প্রতি। ইতি চাপি হরে-ণোক্ত• প্রতিশ্রতার্যবা যযুঃ ॥ অ্থান্যোন্য প্রিয়ত্যা রুত্বা রুত্বা গভাগত । সময কার্যামাস বি-বাহায হরো গিরি॰ ৷৷ মাধবে মা-সি পঞ্চম্যাণ সিতপক্ষে গুরো র্দ্দি-নে। চজে চোত্তরকল্পগাণ ভর-ণ্যাদৌ স্থিতে রবৌ।। আগতা মুন-य ख़ब भर्तीि श्रम्था मूरुः। श्रत-৭ চিন্তিতাঃ সৰ্বে তথা ব্ৰহ্মাদ্যঃ সুরা: ।। তথা চ সর্বে দিকপালা ্ মুনধোষে তপোধনাঃ। শচ্যাসহ তদা শক্তো বন্ধাণ্যান্ত মাত-तः ॥ नातमक ग**छ छ**व मिवर्षि र्जकाः मूणः। এতৈः পরিকরেः नार्कः गृदेन तानामिजः यदेकः ॥ কন্যা বিধনা গিরিপুত্রীণ হরো ২এহীৎ টিবিবাহে গিরিণা শড়োঃ সর্পা ষেক্টো তনৌ স্থিতাঃ ৷ তে জাঘূনদ সমদ্ধা অলকারা खना ज्वन् । षिजूष्का श्जृय-হাদেবো জটাঃ কেশন্ব মাগতাঃ ৷৷ শিরংস্থিত চন্দ্রখণ্ডঃ শোচিসা

बुविजा २७४९। ववाउँ निज মভবত্তদারত্র মহার্ঘ্যক ।। বি-চিত্র বসনং ব্যাযুক্ত রাসীত্তদা দিজাঃ ! বিভৃতিলেপো ২ভুত্তস্য मूर्गिक्षमणायाख्व है। हाक्रकार्या হর স্তত্ত বভূবান্তভদর্শনঃ। ততে दिन्दाः मगन्नर्वाः मिन्ना विम्राध-রোরগাঃ।। বিস্ময় পরম প্রাপু-र्दतः मृक्षे जशादिशः। हिमदान् মুদিত শ্চাভূৎ সহ পুলৈশ্চ মে-नया।। उद्घा छय नहाना मून्ट र्दर॰ দৃষ্টা তথাবিধং ৷ ইদং বন্ধা তত্ত जर्गा इत पृष्ट्री **मरनाइत** ॥ সর্বণ শিবকরণ যম্মান্তস্মান্যস্যা-ভবৎ সুরাঃ। তন্মাৎ শিবো ২য° लाटक्यू नाष्प्राष्ट्रनगिष्कः नि-वः ॥ भटश्यंत्र मभायूक যঃ শরেদ্ধা। সতত তস্য ক-ল্যাণ বাঞ্ছিতঞ্চ ভবিষ্যতি ॥ এবং কালী মহামায়া যোগনি-ज। जगर्थमूः। शूर्वः मानगर्गी ভূষা পশ্চাৎ গীরিসূতাভবৎ॥ স্বয়ণ সমর্থাপি সতী কালী সম্মো-হিতৃ হরণ। তথাপ্যুক্ত তপ স্তে-পে হিতাষ জগতা॰ শিবা। এব॰ সম্মোহ্যামাস কালিক। চন্দ্রশে-খরণ ৷৷ ইত্যেত্ৎ ক্থিত সর্বণ

छाङ्क्तारा नहीं यथा। हिमवङ নযা ভূষা পুনঃ প্রাপ মহেশ্বর ।। रेि कालिका भूताए। ८७ व्यक्षा-यः ॥ 🐠 । अन्य छन। यथा। भू-वछा छेवाह । रहन्ति महस्त माः তে সমাহ্যাশু নন্দিন া প্রাহা-मञ्जय रेमलारमी य व्हिंजा खतमा-সনে।। ততে। মহেশ বঁচনামন্দী गर्रगना धिनः। উপস্পৃশ্য জল॰ थीमान् मन्त्रात गननायकान् ॥ निमना मः ग्रृजाः मर्स गननाथाः সহস্দঃ। সমুৎপত্য স্বরাযুক্তাঃ প্রণতা স্ত্রিদশেশ্বরণা আগতাংশ্চ गगाममी क्ञांक्षनिभूटो। २वा-**यः। সর্বান্নিবেদ্যামাস**্থক্রায-মহাত্মনে।। নন্দুয়বাচ। যানেতা-न् शभामि भाषा वित्नवान् ज-টিলান্ শুচীন্। এতে ৰুজা ইতি খ্যাতাঃ কোট্য একাদশৈব চ ৷৷ वानद्रामगान् श्रभामि यान् शार्षृ-ল সম বিক্রমান্। এতে বৈ দার-পালা স্তে মন্নামানো যশোধনাঃ ।। रम्यान् श्रमामि याः म जि পानीन् निथिधकान्। यह ह यसि ন্তথা কোট্যিঃ ক্ষন্দনায়ঃ সমার-কান্।। এতাবত্য স্তথা কোট্যঃ শাখানাম বডাননাঃ। বিশাখা

खावरमदांका रेमगरमयांक भ-কর।। সপ্তকোটি শতাঃ শভো অমী বৈ প্রমথোত্তমাঃ। একৈক॰ শ্ৰভি দেবেশ তাৰত্যো ছপি মা-তরঃ ॥ ভগারুদিত দেহা শ ত্রি-নেত্রাঃ পুলপাণ্যঃ। এ:ত শৈবা ইতি প্রোক্তা স্তব ভক্তা গণেশ্ব-রাঃ ।। তঁথা পাশুগতা শ্চান্যে ভন্মপ্রহরণা বিভো। এতে গণাঃ স্ত্রসংখ্যাতাঃ সাহায্মার্থ সমা-গতাঃ ॥ পিনাকধারিণা :রৌজা शनाः कालमूथाः शतः । তব छ-त्काः नगागाञा जिंगश्वाता-স্ভুতাঃ।। খটাঙ্গ যোধিনো বীরা রক্তচর্শ্বসমাবৃতাঃ। ইমে প্রাপ্তা গণা যোদ্ধু মহাব্রতিন উত্তমাঃ भ मिथामामा स्वीनिनक वर्षे।-প্রহরণা खथा। निরামধা নাম-গণাঃ সমাষাতা জগলাুরো ম সার্দ্ধ দিনেত্রাঃ পদ্মাক্ষাঃ শ্রীবৎ-সান্ধিতবক্ষসঃ। সমাযাতাঃ খ-গাৰত। বৃষভধজিনোব্যযাঃ ॥ মহাপাশুপতা নাম চক্র শূলধরা खशा । टेज द्रादा दिक्ता गाँक মভেদেনার্চিত্যে হি রৈ: ॥ ইমে মৃগেজ্রদনাঃ শূল বান ধুনুর্ধরাঃ । গণা স্তুজোম সমূতা বীরভদ্র

शृद्धांग्याः ॥ अद्य है दिना ह नहार गण्डा ११ महमूनः ॥ नाहासार्थः जवासान यथाश्री-जाः निश्व जान्॥ जट्डी (जाजा श्राः मद्धं श्रेंद्रभू त् यद्कजनः॥ हे जिसमनभूद्धारा ७८ जशायः ॥ जमा निक्रभूकानि निवनिक-भूदम जस्वाः॥

निकः श्रु॰ त्माकः ॥ कीव्यक् श्रुः ॥ वाव्यकः ॥ श्रुश्व वृः ॥ व्यकः ॥ श्रुश्व वृः ॥ व्यकः ॥ श्रुश्व वृः ॥ व्यक्त वृः ॥ व्यक्त वृः ॥ व्यक्त वृः ॥ विक्र वृः वृः ॥ वृः वृः वृः ॥ वृः वृः वृः वृः वृः वृः वृः ॥ वृः वृः वृः वृः वृः वृः ॥ वृः वृः वृः वृः वृः वृः ॥ वृः वृः वृः वृः वृः वृः वृः वृः ॥ वृः वृः वृः ॥ वृः वृः वृः वृः वृः वृः ॥ वृः वृः ॥ वृः वृः वृः ॥ वृः वृः वृः ॥ वृः ॥ वृः वृः ॥ वृः ॥

শিবকঃ পু॰ কীলকঃ।ইত্যমরঃ

। দ্বে খোঁটা ইতি খ্যাতে ।

গবা॰ গাত্রকভূষনার্থ• গোঠে

নিখাতস্তত্তে ইতি সুভূতিঃ ।

কভূষনার্থ কাঠে ইতি কেচিৎ।

वस्र नथरके हेलि कि हिए। यव वस्रा भी मूं श्रांत हैलि कि हिए । भार्कि गांवक थूं भिनः ला जन्क त्रभ नाम्नील फिनः वार्श कः भिनक खानका मिः। की ना-एक नथारक श्रांति की नाः की-लगरम चांक् वार्श कः की नकः । हेलि जन्न कः।

শিবকরঃ পু॰ চতুর্বি॰শতিভূতাহনন্তর্গতজিনবিশেষঃ । ইতি
হেমচন্দ্রঃ । মকলকারকে ত্রি ।।
শিবকাঞ্চী স্ত্রীবিশেষঃ ।
যথা । শিবকাঞ্চী , বিফুকাঞ্চী
কাঞ্চীযুগ্রঞ্চ সন্মত॰ । এতাস্তঃ
পৃথিবী মধ্যে ন গণ্যস্তে কদাচন্
ন ।। কাশী শিবত্রিশূলয়। কাঞ্চীহরিহরাজিকা । বাম দক্ষিণ
হস্তাভ্যা॰ দধার দিজপুর্সবাঃ গ।
ইতি ভূতশুদ্ধিতন্ত্রণ ।।

শিবকীর্ত্তনঃ পু॰ ভৃঙ্গরীটঃ।। বিষ্ণুঃ।ইতি মেদিনী।। শৈবঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শিবগতিঃ পু॰ ভূতাইছিশেষঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।

শিবঘর্মাজঃ পু॰ মঙ্গলগ্রহঃ। অস্য প্রমাণ মঙ্গলশকে দ্রফীব্য ।। শিবঙ্করঃ ত্রি মঙ্গলকর্ত্ত।। তৎ- পর্যায়ঃ। কেনৰরঃ ২ অরিষ্ট-তাতিঃ ৩ শিবতাতিঃ ৪। ইতি হেমচক্রঃ।

শিষচতুর্দশী স্ত্রী চতুর্দশীকর্ত্ত-ব্যশিবব্রতবিশেষঃ ৷ যথা ৷ ন-न्मिर्कमत खेवाठ । मृगूषावरि-তো বন্দ্ৰ বন্ধের মাহেশ্বরণ ব্ৰতং। ত্ৰিষু লোকেষু বিখ্যাতা नामा नियहजुननी ॥ मार्गनी-ৰ্ষে ত্ৰযোদশ্যাণ সিতাযা মেক-ভক্তক। প্রার্থযেদেবদেবেশ॰ ্ত্বা মহ॰ শরণ গতঃ ।। চতুর্দ-শ্যাণ নিরাহারঃ সমভ্যর্চ্য চ শঙ্করণ ৷ সুবর্ণ বৃষতণ দত্বা ভো-ক্ষ্যামীতি পরে ২হনি ॥ এব॰ नियमक्र मृथु। প্রাতরুখায गा-নবঃ। কৃতস্নান জগঃ গশ্চা-मूगरा नर नहता। शृक्रतर क्मरेनः खरेक गंक्ष धृशान्ति-পনৈঃ। পাদে নমঃ শিবাযেতি শিরঃ সর্বাত্মনে নমঃ ৷৷ ললাটি वागटनवाय निवानि इत्रत्य नमः । मूथ मिन्नूम्थारवि श्रीकर्श-যেতি কন্ধর ।। সন্দ্যোজাতার্য करनो कू चामस्मवाच देव जुब्को। ष्यायात्रहामगारगठि हामग काशि **शृ**क्रस्य ॥ स्टानो छ ।

যেতি তথেশামেতি চোদর । পার্শ্বে চানভথৰ্ম্বার জ্ঞানভূত। য বৈ কটি ।। উক্স চানভ বৈ

MICHAN STATE अनदेखश्रमानाशाम कान्यी हा-. कंट्यबुधः ॥ अशानाय नत्या जः द्भाव अन्ति द्यामाप्रत नमः। ব্যোমকেশাক্ষকপাষ পৃষ্ঠ মৰ্ভ্য-क्टरबन्दरः ॥ नमः भूटेका नम ख-.ইফ্টা পাৰ্ৰতীঞ্চাপি পুজ্বেৎ। ত-তম্ভ বৃষভ হৈম মুদক্ত সমন্বিত ॥ अक्रमानाभित्रयूष्ठः शक्त्रञ्ज श-तिष्ठः। ভरिका मीनाविरेश र्युकः ৰাহ্মণাষ নিহ্বদযেৎ ।। প্ৰীষতা॰ ্দেবদেবো ২ত্র সদ্যোজাতঃ পি-নাকধৃক্। ততন্ত বিপ্রানমেন ত-প্ৰেচ্ছক্তিতঃ শুভান্ ॥ পৃষদা-काक मःथाना स्रान्ध्याद्रमञ् **सः। शक्षमभागः छठः शृं**का वि-প্রান্ ভূঞ্জীত বাগ্বতঃ ৷৷ তম্বৎ ক্লফচতুৰ্দ্দশ্যা মেতৎ সৰ্বণ সমা-চরেৎ। চতুর্দশীযু সর্বাসু সর্ব্যাৎ .পূर्ववमर्कन ।। य जू यामवित्य-योः मू छात्रिताथ क्यां पिर्। ষাৰ্পশীৰ্ষাদিমানেষু স্তব মেতদু-मीत्ररष्थ ॥ भक्ताय नम खुछा॰ নম স্তে করবীরক•। ত্যস্বকাষ ন-

মতে হন্ত মহেশক নমঃ পর•॥
নমতে হল সহচেদৰ স্থানৰে চ
সমঃ প্রীতে নাথ

नम (स नहरंद शुनः॥ नम (स श-क्रमानमञ्चनकः त्माभाक्षशद्वित्। নমে জীমাৰ ইত্যেব স্থা নহ শ-রণ গভঃা৷ গোমুত্ত গোম্য कीवः पश्चि मर्भिः इत्नापकः। श-क्षभवा ज्या विख यवान् भा-শৃক বারি চ !৷ ভিলাণ শ্চ রুঞান্ বিধিৰ প্ৰাশন ক্ৰমশঃ স্মৃত ৷ প্রতিমাসণ চতুর্দ্দশ্যে রেকৈকণ প্রাশন স্মৃত ৷৷ মন্দারে স্মাল-তীভিশ্চ তথা ধুস্তৃরকৈ রপি। निक्नुवादित त्रांगिक के गणिका-ভিশ্চ পাটলৈঃ ৷৷ অর্কপুষ্প কদ-দৈশ্চ শতপত্তৈ স্তথোৎপলেঃ। একৈকেন চতুর্দ্দশ্যা মর্চ্চযেৎ পাৰ্বতীপতি ।। পুনশ্চ কাৰ্ত্তিকে মাসি সংপ্রাপ্তে তপ্থেৎ দ্বিজান্ । जरम नीनाविरेष छ रेक बंख याना विज्यदेशः ॥ क्रश नीन বৃষোৎসর্গ শ্রুত্যক্ত বিধিনা ন-রঃ। উমা মহেশ্বরণ হৈমণ বৃষভঞ্চ গৰা সহ ৷৷ মুক্তাফলাঊকযুত• সিতনেত্ৰত্ৰযাবৃত ।। সৰ্বোপক্ষ-রযুক্তাবা॰ শ্ব্যাষা মৃদক্তবোঃ।

তাৰুপাত্তোপরি পুনঃশালিতভুল गः गुरु ।। स्था विधास मोस्राय বেদৰত পরাষ্ট াজ্যে কাম विता त्रयः न क्कज्रक्रिक कि ॥ श्वनुद्ध त्याबित्य ममामान র্যো তত্ববেদিনি । অব্যক্তাকাষ त्रोगाय मन कन्रापकादिनि ॥ সপত্নীকাৰ সংপূজ্য মাল্য বস্ত্ৰ বিভূষণে: । গুরৌ সতি গুরো र्पिय॰ তদভাবে विकाण्टर ।। न বিত্তশাঠ্য প্ৰবী ত প্ৰৱন্ ৰো-হাৎ পতত্যধঃ। অনেন বিধিনা-যস্ত সর্য্যাৎ শিবচতুর্দশী । । সো **২**শ্বনেধ সহসুস্য ফল মাপ্পোতি মানবঃ। ত্রন্মহত্যাদিক কিঞ্চি-দ্মদত্রামুত্র বা ক্লতে ৷৷ পিতৃভি ভূা তৃভি শৈচৰ তৎসৰ্বণ নাশ মা-श्यार। मीर्यायू तारतागा कला-ভিবৃদ্ধি রত্রাক্ষণামূত্র চতুভুঁজ-ত্ব॰। গণাধিপত্য॰ দিবি কল্পকো-টিশত॰ বসিত্বা পদ মেতি শস্ত্যোঃ ।। ন বৃহস্পতি রপ্যনন্ত মস্যাঃ ফল মিন্দ্রো ন পিতামহোপি ব ক্তৃ । ন চ সিদ্ধগণোপ্যল ন চাহ॰ यनि जिन्नायुज्दकार्देखानि বক্তে ৷৷ ভবত্যমরবল্লভঃ পঠতি ষঃ স্মরেদ্বা সদা শুণোভি চ বি-

यथगद्धाः भकता शांश विश्वाणि नीः। इगाः निर्वष्ठकुर्वनी वयः রকামিনী কোটয়ঃ স্তবন্তিত ম निनिष्ठः किम् नम्। हरत्रम्यः मन 🕆।। যা বাথ নারী সরুতে হ ভ-জ্ঞা ভর্তার মাপৃচ্ছ সূত গুরু-च। माणि अमाना भत्रसम् রস্য পর্ণ পদ যাতি পিনাক-शारमः ॥ इंडि गाय्ता निव-ठलूर्कनीवरु ४० व्यशांसः ॥**।।।** काञ्चनी क्रका ठजूमंनी । जज শিবত্রত• কর্ত্তব্য• । তস্য বিব-রণ শিবরাত্রিশব্দে জফীব্যা ৷৷ শিবজ্ঞা স্ত্রী শিবোপাসিকা।। মঙ্গলজ্ঞাত্রী ॥ শিব॰ জানাতি যা ইত্যৰ্থে ড প্ৰত্যয নিষ্পন্ন।।। শিবজ্ঞান ক্লী শুভাশুভকাল-বোধকশাস্ত্র । यम्। याकामि ক্রিয়া অবশ্য কর্ত্তব্যা জ্যোতিঃ-শাস্ত্রোক্ত শুভক্ষণ প্রাপ্তিক্ত ন ভবতি তদা শিবজ্ঞানোক্ত শুভ সমযে কৰ্ম কৰ্ত্তু মুচিত ভবতি। এতচ্ছিবজ্ঞানোক্ত মাহেন্দ্রবো-গে ক্নত যাত্রাদি র্জ্যণ অমৃত-यारा कार्यामिकि॰ वत्क का-ধ্যনাশ শূন্যে মৃত্যু অপমান ব। প্রাপ্নোতি । দিবা রাত্রৌ

মাঘ ফাল্পন চৈত্ৰ বৈশাখ শ্ৰাবণ ভাষেষু এতে যোগা একৰাপাঃ আশ্বিন কাৰ্ত্তিক অগ্ৰহাবণ পৌষেষু একপ্ৰকারাঃ জ্যৈষ্ঠাযাচযো শৈচকৰাপা ভবজি !!

> শাস্ত্র ক্ষান্ত্রন টেভা বৈশাখ প্রাক্তা ভাতের দিবা দণ্ডা যথা ৭ প্রতি

স্বিবারে আহ ব ৮ আ ৬ ব ৬ মা ৪ শৃহ।

ব্যানবারে অ ৪ ব ৮ আ ৬ ব ৪ শৃহ আ ৪ শৃহ।

ব্যারে আ ৪ ব ৬ আ ৪ শৃহ আ ৪ শৃহ আ ৪ শৃহ।

ভুরবারে মা ৪ শৃহ ব ৬ মা ৬ শৃ ৪ ব ৪ শৃ ৪।

ভুরবারে আহ ব হ আ ৬ ব ৬ আ ৬ শৃ ৪ আ ৪।

শনিবারে শৃ ৪ ব ৪ শৃহ আ ৮ শৃ ৪ ব ৪ শৃ ৪।

তেমু রাত্রি দণ্ডা যথা।

রবিরাবে শৃংমাং অ ৪ব ৮ মা ৮ শৃঙ ৷
সোমবারে ব ২ অ ৬ব ৬ অ ৮ শৃ ৮ ৷
নঙ্গলারে অ ২ব ৪ শৃং ২ অ ৬ব ৬ অ ৪ব ৪ শৃং ২ ৷
বুধবারে শৃং ২ অ ৬ মা ৪ব ৪ শৃং ৪ অ ৮ ৷
শুরুবারে ব ১৪ শৃং ৪ব ৪ অ ২ শৃং ৬ ৷
শুরুবারে ব ৪ অ ৪ শৃং ৪ মাং ২ ব ৬ শৃং ৪ আ ২ মাং শৃং ২ ৷
শানিবারে শৃং ২ব ৪ অ ৬ব ৪ আ ৪ব ২ অ ৪ শৃং ৪ ৷
আধিন কার্ত্তিক অগ্রহায়ণ পৌহেষু

किता मखा यथा।

রবিবারে শৃংঅভব ৮অ৮শৃং মাং শৃং। সোমবারে অ৪শৃ৪অ ৬ব১৬। মঙ্গলবারে অ২ব ২অ১০ব ৬ শৃঙব৪। বুধবারে অ২মা২অ২ব ৬ অ৬শৃং মাঙব৪। গুরুবারে অ৪ব৪শৃ৪ব ৬ শৃং২অ৪ব ৬। শুক্রারে অ২ব২অওবও শৃ২অ৮অ ৪। শনিবারে অ২ব২অওবওঅ৮শৃ২ আ ৪। তেরুরাত্তি দিলা যথা।

রবিবারে শু ২ ব ৪ আছিব ৬ আ ৪ শু ২ আ ৮।
সেলবারে ব ৬ আছিব ৮ আছিব ৬।
নহলবারে না ৬ আ ২ শু ২ আছিব ৪ না ৪ শু ২ আ ৪।
বুধবারে ব ২ আ ২ ব ৬ আছিব ২ শু ৪।
শুক্রবারে ব ২ আ ৮ ব ৬ আছি ৮ শু ২ আ ৪।
শনিবারে ব ১৪ শু ৪ব ৪ আ ২ শু ৬।
উক্তান্তাবা

र्मिवा मखा यथा।

রবিবারে শৃ ৪ আ ৬ ব ৬ আ ৬ ব ৪ মা ২ শৃ ২ ।

সেলবারে ব ৮ আ ৪ শৃ ৬ ব ৮ শৃ ২ ।

মঙ্গলবারে আ ৬ শৃ ৪ আ ৬ ব ৬ মা ২ আ ২ মা ২ শৃ ২ ।

বুধবারে শৃ ২ ব ৪ আ ৮ ব ৬ আ ৮ শৃ ২ ।

ভুজনারে মা ২ শৃ ২ ব ৬ মা ৪ শৃ ৪ ব ৬ আ ৬ ।

ভুজনারে শৃ ২ মা ২ ব ৬ মা ২ শৃ ৪ আ ৬ ব ৪ শৃ ৪ ।

শানিবারে মা ২ শৃ ২ ব ৬ মা ৬ শৃ ৪ ব ৪ আ ৬ ।

ভুজু রাজি দঙা যথা।

রবিবারে আ ৪শু ৪ব ৪আ৬ব৮শু ৪।

সোমবারে ব ৮আ৮শু ৪আ৪শু ২ মা২শু ২।

মঙ্গলবারে আ ২ব ৪মা ৪শু ৪ব ২ আ৬শু ২ব৬।

বুধবারে আ ১০শু ২ব ৪আ৪শু ১০।

গুরুবারে শু ২ আ৬শ ২ব ৪শু ২ আ৬শু ৪ আ৪।
শুনিবারে শু ২ আ২ব৮শু ২ আ৬শু ৪ আ৬।

মতান্তরে অস্য প্রমাণ **যথা**। মাহেন্দ্রে বিজয়ে। নিত্য অমৃতে কাৰ্য্যশোভন । বক্তে কাৰ্য্যবি-লম্বঃ স্যাচ্ছন্যে চ মরণ গ্রুব ।। বৈশাখাদি শ্রাবণান্ত একভা-বেন সংবহেৎ। অমৃতাদি দিবা রাত্রে চতুর্মাস যথাক্রম ।। यागमान॰ निवामातन द्ख्य नः ৰ্বত্ৰ মাসকে। তৎ প্ৰমাণেন জ্ঞাতব্য॰ দণ্ডমান॰ বিচক্ষণৈঃ ॥ রাত্রিমান প্রমাণেন জ্বেষো দণ্ড প্রমাণকঃ। ন বার তিথি **নক্ষত্র**ণ ন যোগ করণ তথা ৷৷ শিবজ্ঞা-न नमानामा नर्ब मूनि र्तिहा-রয়েৎ। তথা ভাজাদি মার্গপ-র্যান্ত সপ্তবারে সমাদিশেৎ।। भूना वकामिरवागः हि शोवामि চৈত্ৰত স্থপা। ইতি জ্যোতিষ্ শিবজ্ঞান•॥ 🟶॥ অনেক প্রকা-র পাবজ্ঞান পাবাজ্ঞা শিবা-লিখিত অমৃত্যটী চ দৃষ্ট কিন্ত পরস্পর মনৈক্য জ্ঞাত ॥ শিবতাতিঃ স্ত্রী কল্যাণকারিণী ৷ ইতি হেমচন্দ্রঃ।। অস্য পর্য্যায়ঃ শিবঙ্করশব্দে ত্রুষ্ঠব্যঃ।। **गिवमलः क्री विक्**ठकः। **ই**ভি কেচিৎ ৷৷ শিবেন শিবায বা

मखः जवामाज्यः॥ **निवनाक क्री** (प्रवनाकवृक्तः । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শিবদূতিকা স্ত্রী মাতৃকাবিশেষঃ । ইতি শব্দরত্বাবলী।। निबमुठी जी मूर्गा। दे छ विका-अल्यकः ॥ त्याभिनीवित्यकः । ৰথা। জন্ধাণী প্ৰথমা প্ৰোক্তা ভতো নাহেশ্বরী পরা। কৌমা-त्री देवकवी टेंच्य वाताशी शक्ती **७था ॥ नात्रिंगशी ठरेथरेवस्त्री** निवृत्वी ज्यास्मी। अजाः भू-জ্যা মহাভাগা যোগিনীঃ কা-यहासिनौः ॥ তम्य उदशिख मख भगनामि यथा। किरिका হৃদ্যাদেবী নিঃসূতা খ্যানতো হরে: । শিবদূতীতি বিখ্যাতা শিবাশতসুসংবৃতা ৷৷ মন্ত্র মস্যাঃ श्रवक्रामिवर्ष कामार्थनायक । ষৎ প্ৰামা সাধকো মাতি দুৰ্লভ দেবী• শিবদৃতী• শিবান্মিকা•। ন চিরালভতে কামান্বরঃ সর্বজ-ষীভবেৎ।। অন্তঃ সমাপ্তি স-হিতো বিন্দ্বিন্দুভ্যা॰ দশাবর। । স্বরেণ পাস্তা দস্তোন সংস্ফো

यूगल পূर्वत्शाभाष्ठाः भावकः । यश्चेत्रत कलामूरेनाः मःहिन्यः अ थमञ्ज्ञिः ॥ मट्याः २वण लिवेनू-ত্যাস্ত শিবদূতী জবপ্রদঃ। ৰপ-मगाः अवकामि भूग् बर्मक न भव ।। ठवू जु ज भराकाय निन्द्रमम्नम्। जिन् । त्रकम्छ॰ मूखमाना-क्रोक्रोक्टस प्र्।। নাগঙ্গুল হারাভ্যাণ শোভিত• नश्रताब्द्वल । वाशुक्रपादी-शानः पिक्ता भूग ठळाश्क्।। বানে পাশ তথা চন্ম বিভুদুৰ্দ্ধু পরিক্রমাৎ। कृतरकुष भीरमा-ष्ठे॰ जूत्रमृर्खि॰ ভरकत्र॰ ॥ निकि-भा मक्तिन भाम मिल्डिके जन পোপরি। বামপাদ শৃগালস্য পৃষ্ঠে ফেরুশতৈ ईত। ঈদৃশ শি-বদূত্যান্ত মূৰ্দ্ধি খ্যাবেদিভূতবে ৷৷ धानमाळाम्र रेथञ्गा नतः कन्।-१ माध्या ।। भूकनामित्राटकः বী সৰ্বান্ কাৰান্দদাতি চ ।।।।।। यः निवाविक्रणः व्यन्ता निवृन् তী॰ শিবপ্রদাণ। প্রণমেৎ সাধ-কো ভক্ত্যা ♥স্য কামাঃ করে স্থি-তাঃ ৷৷ যদা জ্বান জগতা॰ ব্লক্ত-বীজ হিতাষ বৈ। মহাদেবী ম-श्वाया जनामााः कायणः मृखा।।

मृত প্রস্থাপ্রামাস শিব গুড়ায সাধিকা। তেন সা শিবদূভীতি **फट्टा मर्दिः** श्रागियरक ।। रक्तम-ৰুৱী চ শাস্তা চবেদমাতা মহো-मद्री। कदामा का यमा (मदी छ-गामा जगमानिनी ॥ जरगाम्ब ভগাহারা ভগজিহ্বা ভগা তথা । এতা দাদশ যোগিন্যঃ পূজনে পরিকীর্তিতাঃ ।। এতা ছাদশ र्षांशिनाः भिवम् छाः मरेमव हि । विष्ठत्रिष्ठि त्रय॰ मिती यदा य-ত্ৰৈব গছতি॥ ইতি কালিকা-পুরাণে উত্তরতন্ত্রে ৬০ অধ্যায়ঃ ।। এমাণান্তর বাসনে ৫৩ व्यक्षात्य भार्क एख यभू वादन दमवी-गारात्या ब्रक्कवीकवशाशात्य ह <u> ডফব্য ।।</u>

শিবক্রমঃ পু॰ বিশ্ববৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শিবদ্বিফী স্ত্রী কেতকী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শিবধাতৃঃ পু॰ পারদ । পারদ । শিববীর্য্য স্যাদিতি দর্শনাৎ।। গোদস্তমণিঃ। ইতি কেচিৎ।। শিবনাভিঃ পু॰ শিবলিঙ্গবিশেষঃ

। যথা। উত্তমণ মধ্য মধ্মণ ত্রি-বিধণ লিক মীরিতণ। চতরকল मूष्टार त्रमादिष्क मूखना।
उत्तर विष माथाक मूनिजिः
भाजाकादिष्ठा। छत्रक मथान स्थाक छत्रक मथान गुरु।। भिद्रनाजिमक निष्ठ श्रिक्त का महर्षिकः। स्थितं मर्वनि-का महर्षिकः। स्थितं मर्वनि-का स्थिति। स्थितं मर्वनि-का स्थिति। स्थितं मर्था। १। ইতি दीत्रमिकामयः।। भिद्रभूती खी कानी। ইতি हम-हसः॥ भिद्रशियः की क्रमाकः। ইতি

শিবপ্রিয়ণ ক্লী রুডাকণ। ইতি রাজনির্ঘক্তঃ 11 শিবস্য প্রিয়-ডব্যে ত্রি 11

শিবপ্রিয়ঃ পু॰ বকবৃক্ষঃ। ইতি ।
জটাধরঃ।। ফটিকঃ।। বুস্তুরঃ।
ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শিবপ্রিয়া জী দুর্গা। ইতি শব্দ-মালা ॥

শিবমল্লকঃ পু॰ অজুনবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্দক্ষঃ।

শিবমল্লিক। স্ত্রী বসুকঃ 1 ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

শিবমলী স্ত্রী বকবৃক্ষঃ। ইত্য-মরঃ।

শিবরসঃ পু॰ ত্রাহাৎপর্যাবিত-রসঃ।তৎপর্যায়ঃ। অন্নোদক-জঃ২।অস্য গুণাঃ। দীপনত্বং। मनुत्रके । सम्बन्धः । समृग्राहर-जनके विम्वर्णश्रीका । ইতি द्वार्ज-विर्वर्णेः ॥

निवदािकः खी निवर्ण्यमे । स्था कालगाधरीत्य कात्म ना-গারপণ্ড॰। মাঘমামস্য শেষে ধা প্রথমে কান্ত্রনস্য চ। ক্লফা চতু-ৰ্দশী সাতু শিবরাত্তিঃ প্রকী-র্ত্তিতা।। অত্রৈকস্যা স্তিথে স্মা-वीयव काञ्चनीयत्व मूथा भाग বৃত্তিভ্যা ভাবিরুদ্ধে। ততস্ত মাঘ্যনম্ভরা চতুর্দ্দশী শিবরা-ত্রিঃ তস্যা মুপবাসঃ প্রধান• 1 ন সানেন ন বস্ত্রেণ ন ধূপেন ন চাৰ্চ্চৰা। তুষ্যামিন তথা পুলে র্যথা তত্ত্রোপবাসতঃ।। ইতি শ-क्रांटिकः ॥ 🛊 ॥ कार्णः। ७-তো রাত্রো প্রকর্তব্য পিবপ্রী-नम তৎপরেঃ। প্রহরে প্রহরে न्नान॰ পूकारेक्टव वित्नवज्ञः ॥ অত্র বীক্ষাবাপ্রহরচতুষ্ট্যসাধ্য• ব্রত প্রতীয়তে। নরসিংহাচা-ৰ্য্যধৃতেশ্বরসংহিতাযা । শৈবে। वा देवकदा वानि या वा मा-मना शृक्षकः। मर्बः शृका कलः रिष्ठ भिवताि विश्मू थः ॥ 🕸 ॥ मद्दर्भ अधिक । पूर्वित अध-

य जान पत्रा टेव्स विकीयदर । চ তথাজ্যেন চতুৰে ম-थना छथा।। ज्ञेणान मःहिडासाः। मार्य क्रकाठ्रक्षमाा त्रविवादता যদা ভবেৎ। ভৌমো ৰাপি ভবে-দেবি কৰ্ত্ব্য॰ ত্ৰত মুক্তম॰ ॥ শিব-**ৰোগস্য বোগেন তম্ভবেদুগুনো**-ত্তমণ। শিবরাত্তিব্রতণ নাম সর্ব . পাপ প্রণাশন ।। আচাঙাল মনু **याना॰ जुक्ति मुक्ति क्षमायकः ।** নাগরখণ্ডে । উপবাসপ্রভাবেন বলাদপি চ জাগরাৎ। শিবরা-ত্রে স্তথা তস্য লিঙ্গস্যাপি প্রপূজ-যা।। অক্ষান্ লভতে লোকান্ শিবসাযুজ্য মাপ্সুযাৎ। পাছে। वर्ष वर्ष मशासिव नरता नाती পতিত্ৰতা। শিৰরাত্রো মহাদেব॰ কামণ ভক্ত্যা প্রপুজষেৎ ॥ ঈশা: নসংহিতাষা । এব মেব ব্ৰতং স্প-ৰ্য্যাৎ প্ৰতি সম্বৎসর বৃতী। দ্বা-দশান্দিক মেতদ্ধি চতুর্বি॰শান্দি-ক॰ তথা।। সর্বান্ কামানবাপ্পো-তি প্ৰেত্য চেহ্ চ মানবঃ ॥ 🛊॥ ट्याजिशृञा सृष्टिः । श्रामाय-ব্যাপিনী গ্রাহা শিবরাত্তি চত্-र्फगी। श्राप्ताय मार वर्मः। श्र-**प्टार्या २ अगरामूर्जु॰ यर्टिकादय**

निरारक। छेकु मनखतः। वायूत्र त्रारम। बरमाममास्टरम मृत्या ह তসৃষপি নাডিষু। ভুতবিদ্ধা তু যা তত্ত্ব শিবরাত্তিব্রত ঞ্রেৎ।। ঈশানসংহিতাযা । মাধে ক্লক চতুর্দশ্যা মাদিদেবো মহানিশি। শিবলিকতমোভূতঃ কোটিসূর্য্য मग्राज्य ।। जरकान वाशिनी গ্রাহা শিবরাত্রি ব্রতে তিথিং ৷ व्यक्तत्राजामध म्हार्कुः यूका यज **ठजूर्मभी ॥ व्याश्वा मा मृ**भाट य-স্যাণ তস্যাণ স্থ্যাদ্ভূত নরঃ। অত্র মহানিশা দ্বে ঘটিকে রাত্রে र्मधाम यामत्याः ॥ ইতি দেবলো-ক্তা মহানিশা আছা। যটিকা একদণ্ডः। এবঞ্চ यक्तित्न आक्रिय निनी(था ७ यद्या थिनी 🛮 ठ जूर्मनी তদ্দিনে ব্রত॰ উভষ ব্যাপ্ত্যনুরো-था । काल माधवी त्यर गावः। এ-তেন পরদিনে উভযব্যাপিত্বেপি পূৰ্বদিবসীয় বাত্তি দ্বিতীয় যাম প্রভৃতি চতুর্দশী সদ্বে বহু প্রহর ব্যাপিত্বেন পূৰ্ৰদিন এব ত্ৰত মিতি नित्रस्थ । यहां जू शृद्धमा निभीथ गांव वाशिः शत्त्रमूः अताव माजवाशि खमा भूर्वमू। वंजः। প্রধান কালব্যপ্তানুরোধাৎ। পু-

प्राचीः निर्वाधिकः ॥ विकृतिक छात्र। अवसी निस्ताबिक कार्या क्रवजनात्रिक। इस्त्रांश्वरंगः वि-भारत जना नर्गाक भारत ॥ जि-पारक भारत क्यकी माजभन चाब ठणूर्मगा स्मर ७६। उका-एखाएक मरधा जु यानि जीयानि সন্তি বৈ। পূজিতানি ভবতীহ **जुजाबा॰ शाद्भर्य क्र**एउ ॥ **रे**जि कान्वार । दिनमान अमादनम् स ष् त्रात्वो ठ**र्ज्**मी। निरद्राजिस मा ब्ह्यमा हर्ज्ममा भारत ।। ইতি গৌতমীৰাক। বদা তু পূৰ্ব-मिटन म निनीथना खिः भन्निन धारतार याज काशिनी छन। शदा वाशा असार गानिनी छिथा-শুক্তমাৎ তিথে ব্রিসদ্ধা ব্যাপি-স্থাক্ষ ৷ এতিৰিষৰ এব লিকপুৱা-ণ । শিবরাত্তিক্তে ভূতা কাম-विषाः विवर्षस्य । अःकटेनद्वाः

्य शहरीहिंछ। स्व शहरीहिंदी। स्व हरिंदी। स्व हरिंदी।

क्षा मार्थ मार्थ । क्रिक्ट क्रांचान निगैरिशाण्य सार्थिकी क्रमूर्य को छक्तिन उछ । मक्रा जू गूर्बक्र निंगीय रामिनी. शर्बमूः श्रामाय मख गाभिमी **छमा भूद्धम्। उंछ**ा यमा जू न পূর্বেদ্য নিশীথব্যান্তিঃ পরেদ্যুঃ अलाब वा थिनी छम। भन्नित्न । শারণম্ব পরদিনে চতুর্দশী লাভে **हकूमना।** जनमाट जगावगा-याः। তত थरगिनः ॥ 🖝॥ थाज-क्रमश्रभः ७९ मिल्लाकार्या मूर्याः मार् देखि भठिषा जनागीना। कार मैंरकारपद । यरखनारनन गृ-द्रीयाविषय॰ छक्कि मानतः শিৰরাত্তি ত্রতং হেতৎ করিয়ে **२**श् अश्वाकन । निर्वित्र मञ्ज य চাত্র দ্বৎ প্রসাদাজ্জগৎপতে ।। ইতি শিবরহস্যাৎ শিবরাত্রি ই-णाहिन। निषमा। ठजूर्मगाः नि-রাহারে। ভূषा শস্তে। পরেহনি। ভোক্যেহণ ভুক্তি মুক্তার্থণ শরণণ

মে ভবেশ্বর ॥ ইতি গরুডপু-। त्रागीय॰ পঠে । त्रांखो व्ययम-প্রহরে প্রতিষ্ঠিতে লিকে অপ্র-তিষ্ঠিতে বা প্রতিষ্ঠাপ বিধাৰ সু-का॰ अर्गाए। दशे जाता क-ডিতি পাদ্যাতত্ত্বেশ বিমামিঃ-সার্য্য তেনৈব তালত্রেশ কর-ছোটिকষা চ দশদিখন্ধন ক্ৰম্বা **ज्**ठ छिकि॰ विशाय हा॰ हानगाय नग रेणापिना राजानि नागा হোঁ ইতি মন্ত্রেণ প্রাণাযামণ বি-शाय भृज्रत्य । भार्थितिमास চেত্তদা বক্ষমাণ পূজাবিধিনা পূজ্যেৎ। তত্ৰায় বিশেষ। হোঁ विभागाय गम देखि अथमअइ-রে দুগ্ধেন স্নাপষিত্বা পুন জলেন স্নাপযিত্বা। শিবরাত্তিত্রত .দেব পূজা জপ পরাষণঃ। করোমি বি-धिवज्जा गृशागार्गाः गरम्बत ॥ ইত্যনেনার্য্য দত্বাগদ্ধাদিভিঃ সং-পূজ্য মূলমন্ত্ৰ জপিত্বা প্ৰণমা গী-ত নৃত্যাদিভি স্ত প্রহর নষেৎ। তদ্যান তব্জপঃ স্নান তৎ ক থা শ্রবণাদিক । উপবাসক্তে হেতে গুণাঃ প্রোক্তা মনীবিভিঃ ॥ इंठि प्रतीश्रुतात्व मामानाजः শ্রবণাৎ অত্তাপি তথা ॥ 🛊 ॥

षिजीयथरता जु कित्मयः। (सी অবোরাম নম ইতি দয়া সানং। व्यक्त मनः निवाद माछ-व नर्गान रहार छ। निवही-ख्बी नमानार्य अनीत छमया जह । 🛊 ॥ ज्जीर अश्रत जू। रही বামদেবাফ নক ইতি ফুতেন না-नः। अर्कावञ्चन्ता पृत्य पात्रिका পোকেন দক্ষোহণ পার্যতীশ্বর । भिवतात्वो प्रमागर्याः मूगाका छ शृङ्ग पर ॥ 😻 ॥ ठजूर्य अहरत जू **ट्ये मरामाजाजाय नम ३** जिम-थूना जान । जर्छ मञ्जल । यश ক্লভান্যনেকানি পাপানি হর শ-कत्र। निवदात्वी ममागार्थाः উমা-কান্ত গৃহাণ মে॥ ততো নমঃ শি-বাৰ ইতি মূলমন্ত্ৰ• জপিত্বা প্ৰভা-তে ২বিমেন ইত্যাদি বক্ষ্যমাণ मञ्जान् পঠে । তথা চ गरू ७ थू-রাণা। মূলমন্ত্রণ ততো জপ্তা প্র-ভাতে তৎ সমাপ্তেৰ । অবিদ্বেন ব্ৰত দেব দ্বৎপ্ৰসাদাৎ সমৰ্গিত ৷৷ ক্ষমস্ব জগতা• নাথ ত্রৈলো-ক্যাধিপতে হর। যন্মযাদ্য ক্রত॰ পুণ্য॰ তক্রজস্য নিবেদিত ।। ত্বৎ-প্রসাদাম্ম্যা দেব ব্রত মদ্য সম: পিতে। প্রসন্মে। ভব মে শ্রীমন

মভূতি প্রতিপদ্যতা ।। স্বদালো-কন মাত্রেণ পবিত্তোম্মি ন সংশ यः। भद्रमिस्त बाष्मगान् एकाज-ষিদ্বা চতুদশীলাভে তত্ৰ তদলা-ভে অমাবস্যায়াণ পারণণ সর্ব্যাৎ । তত্র যন্ত্র:। সংসার ক্লেশদন্ধস্য बर्जनात्नन भक्त अनीम जूम्-त्या नाथ ज्ञानमृधिश्रामा ज्व ॥ # ॥ # ॥ তत्र भार्थित निव-লিঙ্গপূজা বিধিঃ ৷ তত্র শিববা-का॰ काल्म। विश्रमा ज् मरेन-वारः ७८७ तथा ७८७ तथि । गृ য়ন্ বলি॰ প্রহ্যামি বিপ্রাণা गिव मर्गनाथ ॥ विनः शृङाः। তথ। 1 শূদ্রঃ কর্মাণি যো নিতা॰ স্বীৰানি সৰুতে প্ৰিবে ৷ তদ্যা-হ মৰ্চা॰ গৃহামি চন্দ্ৰখণ্ডবিভূ-ষিতে ।। তথা। ৰমোভেন শি-বেনৈৰ স্ত্ৰীণাণ পূজা বিধীয়তে। এবকারেণ প্রণব নিবৃত্তিঃ। এব॰ শূজস্যাপি । তথা নৃসিণ্হতাপ-नीट्य । माविजी॰ श्रानर यक् वंशी॰ खी मृजस्या त्र्वक्षि। नाविजी॰ প্রণবং राष्ट्र विभी॰ औ শূজো যদি জানীয়াৎ স মৃতো-श्रा भक्छि देखि । निक्छिश-ৰ্য্যস্ত• পৰাশরভাষ্যেপি লিখিত৽

া গোবিন্দভট্যমৃত । স্বাহা প্রণব मन्यूकः भृष्य यञ्चः ममिषुकः। শুজো নির্য মাপোতি ত্রান্সণঃ শুদ্ৰতা মিষাৎ ॥ 🟶 ॥ গৌতমঃ । त्राजातूमश्रूथः क्यां ९ देनवकार्याः मरेतव हि। शिवार्कन॰ महारशा-वः अहिः अर्याानूनज्ञ्यः ॥ मना **मितातात्वो। ज्ञ ८२** गार क्र-ডাবামলে। ন প্রাচী মগ্রতঃ শস্তো त्नामीठी॰ শক্তি সংস্থিতা॰। न প্রতীচীণ ষতঃ পৃষ্ঠ নতো দক্ষণ স-মাশ্রবেৎ ৷৷ যজমানঃ শস্তোঃ প্রাচী মুবস্থিতবে ন স্বাশ্রবেৎ শড়ো র্জগৎসংহারকস্যাগ্রতঃ माभ्याप । शक्रवकुशक्त थन ধান বক্তু প্রাচ্যবস্থিত। এক-বজ্রুপকে সুতরা তথা। তজ-প মাহ ভবিষ্যপুরাণ । সৌম্য मोनीमूज्य वाकः वकवज्रुः চতুভূজ । শিবৰাপ গৃহে স্ব-र्याष्ट्र थात्रारम वाशानिकिङ ॥ অত্তাত্ত্ৰে পূজা নিষেধাৎ দেবা-গ্রেম্বস্য চাপ্যত্রে প্রাচী প্রোক্তা खक्रकटिंगः। ইত্যস্য न विषयः। किंखु जिथानामि श्रिमका श्राही আহা। এতদনুসারাদ্বক্যমাণ পূ-ৰ্বাদ্যাগেষ্যম্ভ পূজা। অতএব ত-

স্ত্রান্তর । যত্রৈব ভানুন্ত বিষ-ত্যুদেতি প্রাচীতি তা॰ বেদবি-দো বদস্তি। তথা পুরঃ পূজক পূজ্যযোশ্চ সদাগমজ্ঞাঃ প্রব-দন্তি তাম্ব 🗓 এবঞ্চ দেবতান্তর পূজা পূৰ্বায়ে প্ৰাগ্নুখেন সায় পশ্চিমাভিমুখেন রাত্তাবুদশ্বথে ন কাৰ্ব্যা। প্ৰাক্ পশ্চিমোদগা-সাস্ত প্রাতঃ সায় নিশাসু চ। ইতি বচনাৎ ৷ ইতি বাচস্পতি মি-শ্রাঃ। মৈব॰ পূজা রত্নাকরোক্ত ভবিষ্যপুরাণীয় সপ্তাক্ষর সূর্য্যমন্ত্র প্রস্তাব এব প্রাগাদি দিঙ্নিষমা-ভিধানাৎ। ব্যবহারোপি অত্র ন তথেতি।।ঞ্চা লিঙ্গপুরাণে। বিনা-ভস্ম ত্রিপু:গ্রুণ কিনা রুদ্রাক্ষ মা-লযা। পূজিতোপি মহাদেবো ন न्याज्ना कनश्रमः ॥ ज्यामृता-পি কর্ত্তব্যা ললাটেপি ত্রিপুঙ্ক । निक्पूताल। आयुगान् तक-वान् श्रीमान् श्रूखवान् धनवान् সুথী। বর মিষ্ট লভেল্লিক পা-र्थिव॰ यः जनकित्य ।। जनाजु পাৰ্থিবং লিঙ্গং জ্ঞেদং সৰ্বাৰ্থ সা-थकः। ভবিষ্যে। मृद्धन्त्र रंगान-ক্লৎ পিও॰ তামু কা॰স্যময়ণ তথা। ক্রত্ব। লিঙ্গণ সক্তৎ পূজ্য বসেৎ ক-

ন্দাযুত দিবি।। কাৰ্ক দিবি<u>এ</u> দ॰ লিঙ্গ॰ "ফাটিক॰ সৰ্বকামদ॰। नर्मागितिकः (अर्थ मनामि हि লিঙ্গবৎ ৷৷ লিঙ্গবৎ লিঙ্গাকার• ৷ कालको भूमा। अकामन भरी-गांग न नित्र अखिति दः। अबी-তাঙ্গুঠতো হুস্ব॰ ন কদাচিৎ স-মাচরেৎ।। অকো ২শীতি রক্তি-ক।। অঙ্গুঠতঃ বৃহৎপর্বগ্রন্থিতঃ। অঙ্গৃষ্ঠাঙ্গুলিমানম্ভ যত্ৰ যত্ৰোপ-দিশ্যতে। তত্ৰ তত্ৰ ৰৃহৎপৰ্ব গ্ৰ-श्चि भिन्या भाषा ॥ देखि इ-रनागनित्रिंगिको । गित्रधर्म । मर्मु मर्फरमिन्न नित्रय म न গচ্ছতি। রুদ্রলোক মবাপ্নোতি ভুজ্বা ভোগাননুত্রমান্ য় তথা वालुकानि ह लिक्नानि मह्मानि ह কার্যেৎ। সহসু মর্চ্চনাৎ সো-পি লভ'ত বাঞ্ছিত ফলণা তত-শ্চামুকতিথা বারভ্যামুক লাভ কামঃ সহসু মিত পার্থিব শিবলি-ঙ্গ পূজন মিতি যথাস্থানে বাক্যে त्मर । क्षा बक्तभूतांत्। यावस-দীযতে চার্য্য ভাস্করায নিবেদি-ত ৷ তাবন্ন পূজ্বেদিক্তু শক্ষরণ ব। মহেশ্বরী॰ ॥ রাষবভউধৃত॰ । সৰ্বত্ৰৈব প্ৰশস্তোক্তঃ শিব সূৰ্ব্যা-

ৰ্চন বিনা। অজঃ শধ্যঃ। অগ্নি-পুরাণে । তল্লিকৈঃ পূজ্বেমন্ত্রঃ সৰ্বদেবান্ পৃথক্ পৃথক্। ধ্যাত্বা প্ৰণৰ পূৰ্বস্ত তলায়া সুসমাহিতঃ ॥ नमकारत्रव मरखन श्रूष्णानि वि-नारमः ११४क् ॥ 🟶 ॥ प्रवीश्-রাণে। মৃদাহরণ সংঘট প্রতিষ্ঠা-হ্বান মেব চ স্নপন পূজনকৈব বিসর্জ্জন মতঃ পরণ ৷৷ হরো ম-হেশ্বর শৈচব শূলপাণিঃ পিনাক-ধৃক্। পশুপতিঃ শিবশৈচব ম-হাদেব ইতি ক্রমাৎ ৷৷ অত্র পূ-ৰ্ৰোক্ত সপ্তকৰ্মাণি পরবচনোক্ত সপ্তনামভিঃ ক্ৰিষানুৰূপ বিভক্তি-মন্ডি ৰ্যথাষ্থ কাৰ্য্যাণি। অদৃ-कीर्थाया तर्थकमामञ्जदन भार्र-ক্রমাদেব আবাহনাৎ প্রাক্ প্র-তিষ্ঠা ঐাঙ্কে স্পাসন দানবৎ ॥ 🟶 ॥ তত্রানুষ্ঠান॰। হরাষনম ইতি মৃদাহরণ মহেশ্বরাযনম ইতি সং-ঘটন শূলপাণে ইহ সূপ্র তো ভব ইতি প্রতিষ্ঠা। ধ্যাষেমি-ত্য মিত্যাদিনা ধ্যাত্বা পিনাকধ্ক্ ইহাগচ্ছ ইত্যাদ্যাবাহন• পশুপ-তবে নম ইতি শ্লপন এতৎ পাদ্য পূজ্যেৎ। বিসৰ্জনাৎ পূর্ব ভ

বিয্যপুরাণোক্ত॰ স্বভাবসিদ্ধ প্রা-टेठामानाानि निक् वामावर्खन পূজন । যথা। সৰ্বায ক্ষিতি মূ-ৰ্ত্তবে নমঃ। ভবাষ জলমূৰ্ত্তবে नगः। ऋजाय अधिमूर्खरयनमः। উগ্রাষ বাযুগূর্ত্তবে নমঃ। ভীমায আকাশমূর্ত্তযে নমঃ। পশুপত্যে যজমানমূর্ত্তবে নমঃ। মহাদেবায সোমমূর্ত্তযে নমঃ। ঈশানায সূ-र्यामूर्खरय नमः। मूर्खरयारको मि-বলৈতাঃ পূৰ্বাদি ক্ৰম যোগতঃ। আগ্নেযান্তাঃ প্রপূজ্যা স্তা বেদ্যাণ লিঙ্গে শিব• যজেৎ ॥ ততো মহা-দেব কমস্ব ইতি সংহার মুদ্রযা विमर्करष् ॥ 🛊 ॥ निक्शूताल । গো ভূ তিল হিরণ্যাদি বলি পুষ্প নিবেদনে। জ্ঞেযো নমঃ শিবা-ষেতি মন্ত্ৰঃ সৰ্বাৰ্থসাধকঃ ।। সৰ্ব-মন্ত্রাধিকশ্চায মোক্কারাদ্যঃ ষড-ক্ষরঃ তন্মন্ত্রজাপী তৎকর্মারত স্ত-দাতমানসঃ। নিষ্কামঃ পুরুষো রাজন্ স রুজপদ মশুতে।। ভবি-ষ্যে পঞ্চাক্ষর মুপক্রম্য। অপবিত্রঃ পবিত্ৰো বা সৰ্বাবস্থা• গতেগপি বা । মহাপাতক যুক্তো বা মন্ত্রস্যাস্য জ্বপে ষথা।। অধিকারী ভবেৎ স-ৰ্ব ইতি দেবে। ২ববীচ্ছিবঃ। ইতি

তথেত্যৰ্থঃ। পূৰ্বোক্ত যথা পদা-নুরোধাৎ। তেন যথাধিকারী ভবেত্তথাত্রবীদিত্যর্থঃ। তথা স[‡] র্বেয়া মেব পাক্রাণা পর পাত্রণ মহেশ্বঃ। পতন্ত তামতে মুশা-দতীব নরকার্ণবাৎ ৷৷ শিব মুদ্দি भा यमख॰ **मर्बकात्रन कार्नन** ज-দনস্ত ফল দাতু ভ্ৰতীং কিম-खुळ ।। मञ्चा देनद्वमा, वज्जामि ना-দদীত কদাচন ত্যক্তব্য শিব্সু-फिना जनामात्न न **ज**९कनः ॥ আদানে গ্রহণে। শিবধর্মে। ত न्या ९ शूटेनाः कटनाः भरेत खारेय त्रि ह यद कलः। जनन्छ कलः জ্ঞেয়ণ ভক্তি রেবাত্র কারণণ ॥ ভ विरया। निकानुरनभनः कार्याः দিব্যগরেরঃ সুগন্ধিভিঃ। বর্ষকোটি শত॰ দিব্য॰ শিবলোকে মহীষতে ।। শিবধর্মে। তন্মাৎ পুষ্প প্রদা-নেন লিঙ্গেষু প্রতিমাসু চ। অ-শীতিবৰ্ষকোটীনাণ দুৰ্গতিণ ন ন-রো ব্রজেৎ।। স্কান্দে। শুদ্ধাণ্যপি চপত্রাণি শ্রীবৃক্ষস্য সদৈব হি। দা-তব্যানীতি শেষঃ। ভবিষ্যে। ধু-স্তুরকৈশ্চ যে। লি**ঙ্গণ সরুৎপূজ্য**-তে নরঃ। স গোলক্ষ ফলং প্রাপ্য শিবলোকে মহীযতে।। বিল্পতাত্র

রখবৈশ্ব যো লিঙ্গু পুজ্বেৎ স ক্লং। সর্বপালে রিনিমুক্তঃ শিব-লোকে মহীয়তে॥ তথা সর্বকাম-क्षाप विवा मादिषामा क्षाप्तामा । বিশ্বপত্তাৎ পর• নান্তি যেন তু-ব্যতি শবরং ৷৷ তথা কেশ কীটা-পবিজ্ঞানি নিশি পর্যুষিতানি চ। স্বয় পতিত পুস্পাণি তাজেদুগ-হতানি চয় তথা দেবদারু সমে-তঞ্চ সৰক্ষ শ্ৰীবাস সম্পুরুণ্য শ্ৰীফলণ চাজামিশ্রন্ত দহাপোতি পরাণ গ-তি॰।। সর্জ্জঃ শাল রসঃ। শ্রীবাসঃ मृत्रवाखवः । अन्मूकः टेनाटवायः । এভ্যঃ मोगिक्षिकः धूनः वर्षेत्रश्-সু গুণোত্তর । অগুরু শতসাহ-সু॰ দিগুণ ক্ণাসিতাগুরুণ।। গুয়ুলুণ যৃতসংযুক্তণ সাক্ষাৎ গৃহাতি শ-ৰরঃ ।। তথা। তৈলেনাপি হি र्या प्रमा घृषाखादन मानवः। তেন দীপ প্রদানেন শিববজাজ-তে জুবি ॥ নন্দিকেশ্বরে । অথ ভক্তা শিব পূজ্য নৈবেদ্য মুপ-क्षारय । सम्बद्धार प्राची . छ जिनाम क ब्राट्य ।। भावि ज-खून প্রস্থান্য স্বাদ্য সুসংস্কৃ-**७**॰ १ निवाय ७॰ ठक्र॰ ममा९ ठ-जूर्ममा• वित्मवजः ॥ श्रद्यमानः

প্ৰাণ্ডক । শিবসৰ্ববে কান্দ । এক যামুকক পৰু বঃ শড়ো र्तिनियमत्त्रः । तर्याशा मयूजः ভোগেঃ ক্রীড়তে স শিবে পুরে া৷ এক নোচাফল প্ৰক যঃ শি-वाय निर्देषरयः । वर्षणकः छ-থা ভোগৈঃ শিবলোকে মহীযতে १। निवभूत्रात्व । देनदिनाः यृञ ज'युक्क मधुलकं निर्वतरार । অগ্নিষ্টোমদ্য যজ্ঞদ্য ফল মা-ধ্যোতি মানবঃ॥ শিবসর্বস্বে স্কা-ন্দ । পরিপঞ্চ সুস মৃষ্ট মাজ্য-সিক্তণ সুসণস্কৃত। শিবায মাণ-म॰ मन्ना जू मृगू यद कल मानुसाद ॥ जल्म कनमात्न यथकनः পরিকীর্ত্তিত । তৎফল প্রাপ্ যান্নিত্য সর্বণ মাণ্স নিবেদনাৎ १। निवश्तर्य । निष्ठत्वेती छत्व-क्तिरी निकः माकार मरहश्रदः। ছবোঃ সপ্জনাৎ স্যাতা দেবী দেবশ্চ পূজিতৌ।। দেবীপুরাণে। সব্য প্রজেত্ততো ২ সব্য প্রণাল रेनव मञ्चरायः। এकी जृज्यना क्रटा यः अर्या। खिः अनिक् ।। ছিন্ন স্তেন ভবগ্রন্থি ন তদ্য পুন-রুদ্ভব: ॥ ভবিষ্যে । জানুভ্যাণ টের পাণিভ্যা[°] শিরসা চ বিচক্ষ-

१९। क्रञ्चा अवामः त्रिट्टाम गर्नान् कामानवाश्रुयाय ॥ निक्रश्रुवाल । गन्न भूष्म नमकादेत्र मू थवादेषा-শ্চ সৰ্বশং। যো মা মৰ্চ্চযতে তত্ৰ **उना जूयागारः मना ॥ गराजा-**রতে। সর্বলকণহীনোপি যুক্তো বা সর্বপাতকৈঃ। সর্ব॰ তরতি তৎ পাপ ভাবয়ন্ শিব মান্মনা ।। রাষ্বভট্বৃত । অধােমুখে বা-किथु। त्रुकी तत्रुकी जिः मःगृश श-রিবর্ত্তযেৎ।। প্রোক্তা সংস্থার মু-দ্রেষ মর্পণে তু প্রশস্তে। অর্থ-ণে আত্মনীতি শেষঃ। স্কান্দে। নির্মাল্য যোহি মন্তক্ত্যা শিরসা ধার্থিয়তি। অশুচি ভিন্নর্য্যা-দো নরঃ পাপ সমস্বিতঃ ৷৷ নরকে পচ্যতে ঘোরে ভির্য্যক্ষোনে চ জাযতে। বন্ধহাপি শুচি ভূ স্বা निर्माणा यञ्ज थात्ररय । जमा পাপ মহচ্ছীয়ু নাশ্যিষ্যে মহা-ব্ৰতে ।। শুচিঃ স্নানাদিনেতি শে-्यः। এবঞ । "পৃষ্টু। রুজস্য নির্মা-ল্যা॰ সবাসা আপ্লুতঃ শুচিঃ। ইতি कालिका भूता शिय मश्विति विययः। অনুপনীত বিষয় মিতি শ্রীদত্তঃ। বহ্নচ গৃহপরিশিষ্ট । অগ্রাহু

निवरेनरवमा॰ शबः शून्त्रः कलः कनः। मानवाम मिनान्भर्मा ६ সৰ্বণ যাতি পবিত্ৰতাণ ৷৷ কালিকা-পুরাণে। যো যদেবার্চনরতঃ म जरेबरवमा जककः। रकवनः সোর শৈবে তু বৈক্ষবো নৈব ভ ক্ষযেৎ ॥ ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব ॥ 🗱 ॥ ञनाकः। बक्तावाः । निव-রাত্রি ব্রত্য বক্ষ্যে কথাঞ্চ সর্বকা-মদা । যথা চ গৌরী ভূতেশ পৃক্ততিমা পরুণ ব্রতণ ।৷ শ্রীমহা-দেব উবাচ। মাঘ ফাল্লুনযো র্ম্ম-धा या ह इस्था हजूर्मभी। जमाा॰ জাগরণাক্রডঃ পূজিতো ভুক্তি मुक्तिमः ॥ कामयूक्ता इतः शृ-জ্যো দ্বাদশ্যা মেব কেশবঃ। উ পোষিতৈঃ পূজিতঃ সন্নরকাতার-যেত্তথা।। নিষাদ শ্চার্নে রাজ। পাপী সূমরসেনকঃ। স সরু-রৈক সংযুক্তো মৃগান্ হয় বনং গতঃ ৷ মৃগাদিক মসংপ্রাপ্য ক্ষুৎ-পিপাসার্দ্দিতো গিরৌ ॥ রাত্রৌ তডাগতীরে স্ নিঙ্গঞ্জে জাগ্রদা-স্থিতঃ। তত্রান্তি লিঙ্গং স্বং রক্ঞ-রীরণ চাক্ষিপত্ততঃ। পর্ণানি চাপ-তমুর্দ্ধি লিঙ্গল্যৈবং ন জানতঃ ৷৷ তেন ধূলি নিরোধাষ ক্ষিপ্ত॰ নী-

রঞ্চ লিঙ্গকে। শরঃ প্রমাদেটনক-স্তু প্রচ্যুতঃ করপল্লবাৎ।। জানু-ভ্যা মবনী গদা লিক স্পৃষ্ট্য গৃ-হীতবান্। এবং সানং স্পর্নঞ্ পুজন জাগরো ২ভবৎ ৷৷ প্রাত গৃহাগতো ভার্যাদত্তামণ ভুক্ত-বান্স চ। কালে মৃতো যমভটিঃ পাশৈ ৰ্বদ্ধা তু নীষতে ৷৷ তদা মন গণৈ ধূদ্ধে জিয়া মুক্তীক্তঃ স চ । अक्रुत्रन मटेश्वाज्माला म९-পার্শ্বগো ২মলঃ ৷৷ এব মজ্ঞানতঃ পুণ্য জ্ঞানাৎ পুণ্য মথাক্ষয়ণ । जरगामगा। भिवः भूका क्या।-ত্তন্মিয়মণ ব্ৰতী।। প্ৰাত দেব চতু-র্দদা্যাণ জাগরিষ্যান্যহণ নিশি।। পূজা॰ দান॰ জপ॰ হোম॰ করি-যাামাত্ম শক্তিতঃ। চতুর্দশ্যাণ নিরাহারো ভূষা শস্তো পরেহনি ভোক্ষোহণ ভুক্তি মুক্তার্থণ শরণণ মে ভবেশ্বর ॥ পঞ্চাব্যামৃতৈঃ শ্বাদ্বা অন্তকালে গুরু শ্রিভঃ। ওঁ न्तानमः निवाय गन्नारेमाः शृक-যেদ্ধরণাতিল তণ্ডুল ব্রীহীণশ্চ জু-হয়াৎ স্ব শৃত চরু। হত্বা পূর্ণাই-তি দদ্যাৎ শৃণুযাদ্যীত সৎকথা ॥ অর্দ্ধরাত্রে ত্রিযামে চ চতুর্থে চ পুন ৰ্যজেৎ। মূলমন্ত্ৰণ তথা জপ্ত্যা

যোর মদনাভিস্তো হরঃ। বি-

প্রভাতে চ ক্ষ্মাপ্যেৎ ৷৷ অবি-মেন ব্ৰত দেব ছৎ প্ৰসাদাৎ সমর্গিত । ক্ষমস্থ জগতা নাথ देवदनाकंगिंशिंगरङ भिव ॥ यग्र-याना क्रुं भूगा ७ ष्टियमा नि-द्विनिङ् । ष्टश्रमानामाया (नव ত্রত মদ্য সমর্পিত ।। প্রসঙ্গো ভব মে শ্রীমন্ মালাৃহ• প্রতিগম্য-তা া৷ স্বদালোকন মাত্রেণ প-বিত্তোন্মি ন সংশযঃ ৷ ভোজ্বে-জ্যাননিষ্ঠা॰শ্চ বস্ত্র চ্ছত্রাদিক• **मरम** ।। रमवामिरमव जृरजभ লোকানুগ্রহকারক। যম্ম শ্ৰদ্ধবা দত্ত প্ৰীৰতা তেন মে প্রভুঃ ॥ ইতি কমাপ্য চ ষতীন্ अ्गां भाग वार्यिक । कीर्ख ঞ্জী পুত্র রাজ্যাদি প্রাপ্য শৈবণ পুর• বজেৎ।। দাদশস্বপি মা-**मियू श्रन्न**र्यानिश जागतः। य-**ीन् दामम मः भृ**का मीभमः यर्ग মাপুষাৎ।। ইতি গারুডে শিব-রাত্রিভ্রতকথা ১২৪ অধ্যায়ঃ ॥ निविषक की यशासवमा एनकः । তদ্যোৎপত্তি, র্যথা। তত্তাপি शक्षां यहता हरू वृद्दक्र वा দৃষ্ট্বা প্রহর্তুকামো ২স্য ততঃ স थो जवस्तः ॥ ७८७। माक्रवनः

বেশ ঋষযো যত্ৰ সগত্নীকা ব্য-বস্থিতাঃ ৷৷ তে চাপি ঋষষঃ সর্বে । যুদ্ধা নতাভবন্। তত ভান্ প্রাহ ভগবান্ ভিক্ষাণ মে প্রতি দীয়তা ।। তত স্তে মৌনিন স্তস্থঃ नई এব यहर्ययः। তদা अगानि পুণ্যানি পরিচক্রাম নারদ।৷ ত প্রবিষ্ঠ॰ তদ। দৃষ্ঠ্য ভার্গবাত্তেয ষোষিতঃ। প্ৰক্ষোভ মগমন্ সৰা হীনসত্ত্বাঃ সমস্ততঃ ৷৷ ঋতে ত্বৰু-শ্বতী মেনা মনসুষাঞ্চ ভাবিনীং ॥ এতাভ্যা॰ ভতৃপূজাসু ক্লত॰ বৈ সুন্থির॰ মনঃ। ততঃ সংক্ষুতি-তাঃ সৰ্বা যত্ৰ যাতি মহেশ্বরঃ ॥ তত্র প্রধান্তি কামার্ত্ত। মদবিহ্ন-লিতেন্দ্রিযাঃ। ত্যক্ত্বাপ্রমাণি শূ-ন্যানি স্বানি তা মুনি বোবিতঃ।। वनुक्रभा यथा मतः कतिग देव ঙ্গর । ততন্ত্র ঋববো দৃষ্ট্রা ভার্গবাঙ্গিরসো মুনে ৷৷ ক্রোধা-দিতা ক্ৰন্ সৰ্বে লিছো ২স্য পততা ভুবি। ততঃ পপাত দে-वमा लिकः भृथीः विमात्रयः ॥ অন্তৰ্জান জগামাথ ত্ৰিশুলী নীললে।হিতঃ । ততঃ স পতি-তো লিকো বিভিন্ন্য বসুধাতলং ৷৷

রসাতল বিবেশাশু ব্রহ্মাণ্ড চো দ্ধতো ২ভিনৎ। তত শচাল প্-থিবী গির্যঃ সরিতো নগাঃ ॥ পাতাল ভুবনাঃ সর্বে জন্মনাজ-সমাঃ স্থিতাঃ। সংক্রান্ভ্বনান্ मृख्रा ভূলোকাদীন পিতামহः ॥ कगाम माधव॰ जकुं॰ कीदनाम॰ নাম সাগর । তত্ত দৃষ্ট্। হাষী-কেশ প্রণিপত্য চ ভক্তিতঃ ৷৷ উবাচ দেব ভুবনাঃ কিমর্থ: ক্ষু-ভিতা বিভো। অথোবাচ হরি ৰ্জন্ শাৰ্বে। লিঙ্গে। মহৰ্ষিভিঃ।। পতিত স্তদ্য ভারার্ত্তা সঞ্চাল বসুন্ধরা ৷ তত স্তদন্ভুতময় শ্রু-ত্ব। দেবঃ পিতামহঃ ॥ ভত্র গ-চ্ছামি দেবেশ এব মাহ পুনঃ পুনঃ ৷ ততঃ পিতামহো দেবঃ কেশবশ্চ জগৎপতিঃ ৷৷ আজ-গান ত মুদ্দেশণ যত্ৰ লিঙ্কণ ভবস্য তৎ ৷ ততো ২নস্ত হরি র্লিঙ্গ দৃফ্টারুছ খগেশ্বর ॥ পাতাল প্রবিবেশাথ বিস্মযাত্ত্বরিতো বি-ভুঃ। বন্ধা পদ্ম বিমানেন উদ্ধৃ-মাক্ৰম্য সৰ্ৰগঃ॥ নৈবান্ত মলভ-দুক্ষা বিশ্বিতঃ পুন রাগতঃ। বিফু ৰ্গত্বাথ পাতালং সপ্তলোক পরা-ষণঃ ।। চক্ৰপাণি ৰিনিক্সান্তো

'लেভেন্ত' न गर्।मूत्ना विक्•् পিতামহ শ্চাহ হরি র্রন্ধাণ মাহ চ।। নমো ২স্ত তে শূলপাণে ন-মো হস্ত বৃষভধজ। জীমূত বাহ-न करव गर्व जायक भक्त ॥ य-হেশ্বর হরেশান সুবর্ণাক্ষ বৃষা-কপে। দক্ষযজ্ঞক্ষযকর কাল রু-জ নমে। ২স্তু তে॥ স্বমাদি রস্য জগত স্তু॰ মধ্য॰ পরমেশ্বরঃ। ভ-বানস্তশ্চ ভগবান্ সৰ্বগংস্তু॰ ন-মো হস্ত তে ॥ পুলস্ত্য উবাচ। এব॰ সংস্তৃষমানস্ত তিমান্ দারু-বনে হরঃ। সুৰূপী তাবিদ বা-ক্য মুবাচ বদতা বরঃ ৷৷ হর উ-বাচ। কিমৰ্থ॰ দেবতানাথো প-রিভূত ক্রমন্তিই ।। মাণ স্তবাতে ভূশাসুস্থ কামতাপিত বিগ্ৰহণ ৷ দেবাবূচতুঃ। তবাঙ্গপাতিত লি-ঙ্গণ যদেতজুবি শঙ্কর। এতৎ প্র-গৃহতা॰ ভূষ স্ততো দেব বদা-वट् ॥ इत उवा । यमार्क्यस्ट ত্রিদশা মম লিঙ্গণ সুরোত্তমৌ।। তদেতৎ প্রতিগৃত্নীয়া নান্যথে-তি কথঞ্চন। ততঃ প্রোবাচ ভগ-বানেবমস্তিৃতি কেশবঃ ৷৷ ব্ৰহ্মা স্বয়ঞ্চ জ্ঞাহ লিঙ্গণ কনক পিঙ্গ-ল । তত শ্চকার ভগবা শ্চাত্-

वर्षा रवार्करम ॥ भाजानि टेव्या॰ यूथानि नात्नाकि विनिर्णानि ह **ৰি আদ্যাণ দৈবি পরিখ্যাত মন্যৎ** পাশুপত মুনে ॥ তৃতীয় কাল-चमन ठजूर्थक क्लानिन । त्निव আসীৎ স্বয়ণ শক্তি ৰ্বশিষ্ঠস্য প্ৰি-য়ঃ সুতঃ।। তস্য শিষ্যে। বভূবাথ গোপায়ন ইতি শ্রুতঃ। মহাপা-'শুপত স্থাসীন্তারদ্বাজ স্তপোধ-নঃ।।তস্য শিষ্যোপ্যভূজাজা ঋ ষভঃ সোমকেশ্বরঃ। কালাস্যো ভগবানাসীদাপত্তয় স্তপোধনঃ॥ তস্য শিষ্যো বকো বৈশ্যো না-য়া ক্রাথেশ্বরো মুনে। মহাত্রতী চ धनम खना भिषा क दीयांवा-ন্।। দন্দোদর ইতি খ্যাতো জা-ত্যা শূজো মহাতপাঃ। এব॰ স ভগবান্ ব্ৰহ্মা পূজনায শিবস্য চ ।। ক্রত্বা প্রত্যা প্রবাশ সংমব ভবন॰ গতঃ। গতে ব্ৰন্ধণি সৰ্বো পি তপঃ সংহত্য ত তদ।। লিঙ্গং চিত্রবনে সৃষ্ণ প্রতিষ্ঠাপ্য চচার হ।। ইতি বামনপুরাণে ৬ অ-ধ্যায়ঃ ॥ 🟶 ॥ অপি চ। ততঃ সৃষ্টি, চিন্তযতো ব্ৰহ্মণো মোহি-তদ্য চ। বালিখিলাঃ সমূৎপদা ্ত্তপ ভপ্ত॰ সমারভন্ ॥ দিবা॰

ৰৰ্ষসহসু• ৰৈ তেপু স্তে দুশ্চর• তপঃ। ভতঃ কালেন মহতা পা-ৰ্বতী চ পতিব্ৰতা ॥ তেষাণ তপঃ সমালোক্য চাভি দেবী সুদুঃখি-তা। প্রসাদ্য দেবদেবেশ শঙ্ক-রু প্রাহ্ সুত্রতা ॥ ক্লিশ্যন্তি বা-লিখিলাশ্চ প্রসাদার্থণ তব প্রভো । এতেভ্যোপি প্রিয়ণ দেব বিধি-বৎ স্কু সেব্যা ৷৷ ভচ্ছুত্বা বচন (पर्गाः शिनाकी शर्ते हिन्नकः । প্রোবাচ কান্তে কালঞ্চ বচন প্রিয়যা সহ।। ন বেৎসি দেবি ত-দ্বেন ধর্মস্য গহন। গতিঃ। নৈ-তে ধর্মাণ বিজানন্তি যথার্থণ ধর্মা-চারিশঃ ৷৷ ন দাস্যামি বরং তে-ভোগ যন্মাত্তে মূচবুদ্ধয়ঃ ৷ এতৎ व्याबवीय पार्वी मा देमवर मर-শিতব্ৰতা।। ততো ৰুদ্ৰ উবাচেদ° দেবীণ দেবঃ স্মিতাননঃ ৷ তিণ্ঠ স্ব মত্র যাস্যামি যত্রৈতে মুনিসত্ত-মাঃ॥ ইত্যুক্তা তু ততো দেবী শ-ক্ষরেণ মহাত্মনা। গচ্চুস্বেত্যাহ মুদিতা ভর্তার ভুবনেশ্বরী।। যত্র তে মুনযঃ দৰ্বে কান্ঠ লোফ দ-মাশ্রিতাঃ। তান্ বিলোক্য ততো प्तरव। नशः मर्वाक्रमुखतः ॥ व-ন্যালাক্তাপীডো যুবা ভিকা-

কপালভৃৎ। আশ্রমে পর্যাটন্ ভিক্ষা॰ মুনীনা॰ নিষতাত্মনা॰।। দেহি ভিক্ষাণ তত শ্চোকুৰা স जुमबाञ्चमः यरयो । छः विरना-ক্যাশ্রমগত• যোষিতো ব্রহ্মবা-দিনা ।। সকৌতুক স্বভাবেন তস্য ৰূপেণ মোহিতাঃ। প্ৰোচুঃ গরস্পর• কার্যানস্তি পশ্যাম ভিক্ষুকণ।। পরস্পর মিতীবোক্ত্বা गृश्च मृल कल॰ दह। गृहान छि-ক্ষা মূচু স্তা স্ত॰ দেব॰ মুনিযোষি-তঃ ৷৷ তস্মৈ দদ্বৈ তাণ ভিক্ষাণ পপ্রচ্ছ স্তাঃ স্মরাত্রাঃ। নার্য্য-উচুঃ। কো ২সৌ নাম ব্ৰতবিধি স্তুযা তাপস সেব্যতে। যত্ৰ নৰ্মে-ন লিঙ্গেন বনমালা বিভূষিতঃ॥ ভবান্ বৈ তাপসো হৃদ্যো হৃদ্যাঃ স্মে। যদি মন্যদে। ইত্যুক্ত স্তাপ স স্তাভিঃ প্রোবাচ হসিতাননঃ॥ ইদ॰ মম ব্রতং কিঞ্চিন্নরহস্য প্র-কাশতে। শৃখুন্তি বহবো ষত্ৰ তত্ৰ তত্র ন বিদ্যতে॥ তস্য ব্রতস্য সু-ভগা ইতি মন্বা গমিষ্যথ । এব মুক্তা স্তদা তেন তাঃ প্রত্যুচু স্তদা মুনি॰।। ততো ২ভ্যেত্য গমিষ্যা-মে। মুনে ন কৌতুক মহৎ। ই-ত্যুক্ত্বা তা স্তদাতীব জগৃহঃপাণি-

পল্লবৈ: ৷৷ কাচিচ্চকৰ্ষ বাহভ্যাণ কাচিৎ কামপরা তথা। জানু-ভ্যা মপরা নাভ্যাণ কচেযু ললনা পরা ৷৷ অপরা তু কটীৰন্ধে চাপরা পাদ্যো রপি। ক্ষোভ বিলোক্য মুন্য আশ্রমেষু স্বযোষিতা ।। হন্যতা মিতি সংভাষ্য কান্ঠ পা-ষাণ পাণযঃ। পাতযন্তি চ দেব-স্য লিঙ্গ মুদুধ্য ভীষণ ৷৷ পাতিতে তৃ ততো লিঙ্গে গতো ২ন্তৰ্দ্ধান মীশ্বরঃ। দেব্যা স ভগবান্ রুজঃ কৈলাশুণ নগ মাঞ্রিতঃ।। পতিতে प्रिवर्णवमा लिएक नएके ठ्रताहदत्र । ক্ষোভো বভূব সুমহানৃষীণা॰ ভাবিতাত্মনা॰ ॥ উবাচৈকো মৃ-নিবর স্তত্ত বুদ্ধিমতা বরঃ। বি-রিঞ্চি॰ শরণ॰ যামঃ স হি জ্ঞাস্যতি চেষ্টিত ৷৷ এব মুক্ত্বা সৰ্বএব ঋষ-যো লজ্জিতা ভূশ। ব্ৰহ্মণঃ সদ-ন॰ জগ্মু র্দেবেঃ সহ নিষেবিতং ॥ ঋষষঊচুঃ। অজ্ঞানাচ্চ ক্নত॰ ব্ৰ-क्रमणां जिल्लान पूर्वरिनः ॥ जरमाः পশমনে যত্নু॰ সরু সর্বোপকারক । बदकावाह । शब्हा मः नत्र १ (४-বণু শূলপাণি ত্রিলোচন । প্র-मीमाटक्रवटमवमा ভविषाथ यथा পুরা।। ইত্যুজ্বা বন্ধণা সার্দ্ধণ কৈ-

লাসং গিরি মৃত্তমং। দদৃ ও স্তে স-মাসীন মুম্যা সহিতং হরং। তত স্তোত্থ সমারক্ষো বন্ধা লোক পিতামহঃ । অনস্তায় নম স্তৃত্য বরদায় পিনাকিনে।। এবং স্তৃতো মহাদেবো বন্ধণা ঋষিভি স্তৃথা। উবাচ মাং মা বজ্বু লিঙ্গং

পুরতঃ পুনঃ।। ক্রিযতাণ মদচঃ শীয়ু থেন মে প্রীতি রুত্তমা। ভবিষ্যতি প্রকৃষ্টা ষা লিঙ্গদ্যাত্র न म॰भयः ॥ य लिकः शृक्षिः ষ্যম্ভি মন ভক্তি সমাশ্রিতাঃ । ন তেয়া দুর্লভ কিঞ্চিৎ ভবি-ষ্যতি হিত॰ ফল॰।। ইতি বামনে 8२ ज्यायः ॥ <a>॥ अकृत्यन्त- স্থিতানি লিঙ্গানি যথা। সনৎ-नमात्र छेवार । वर्षमा मिक्ति। ভাগে চক্রতীর্থ প্রকীর্ত্তিত । স্থানো ৰ্বট্য্য পূৰ্বেণ মম তীৰ্থণ প্ৰ-কীৰ্ত্তিত ।। স্থানো ৰ্টস্যোত্তরত ন্তীর্থণ গাণেশ্বরণ মতণ। স্থানো ৰ্বটস্য পশ্চিমতঃ স্কন্দতীৰ্থণ প্ৰ-कीर्खिङ ॥ ইमानि পুग्रजीर्थानि गर्धा ऋखविः ञ्चिजः । यहारापवः সমভ্যক্য প্রাপ্নোতি পরমণ পদণ ।। বটস্য চোত্তরে পার্শ্বে ভক্ষকেণ মহাত্মনা। প্রতিষ্ঠিত মহালিক।

गर्बकाम श्रामायकः ॥ वष्टमा भूब-**पिश्वारग विश्वकर्यक्रुङ मह्द**ा निष्ठ॰ প্রত্যন্ত্রখ॰ দৃষ্ট্রা সিদ্ধি মা-প্নোতি মানবঃ ॥ তত্রৈব লিঙ্গ-ৰূপেণ সংস্থিতা ধা সরস্বতী। তা॰ প্রণম্য প্রযন্ত্রেন বৃদ্ধি মেধাঞ্চ विन्मि ॥ यद्येशार्श्वाञ्च वित्र বন্ধণা তৎ প্রতিষ্ঠিত । দৃষ্ট্বা ব-টেশ্বরণ দেব প্রমাতি পরমণ পদণ ॥ ততঃ স্থানু বট॰ দৃষ্ট্ব। রুত্বা চাপি প্রদক্ষিণ । প্রদক্ষিণীক্কতা তেন সপ্তদীপা বস্দ্ধরা ।। স্থাণোঃ প-न्हिमिष्धारम सङ्गलीरमा भवः स्मृ-তঃ।ত মভ্যৰ্ক্য প্ৰযত্নেন সৰ্ৰপা-পৈঃ প্রমুচ্যতে ।। তস্য দক্ষিণদি-গ্রাগে তীর্থ রুজাকর স্মৃত । তিমিন্ মাতঃ সর্বতীর্থ মাতো ভ-বতি মানবং।। তদ্য চোত্তরদি-গ্রাতের মহাত্মনা । প্র-তিষ্ঠিত মহালিক গোকর্ণ না-ম নামতঃ ।। আযাত্মাসে যা ক্লফা ভবিষ্যতি চতুর্দ্দশী। তস্যাণ **পশ্যতি গোকর্ণ তস্য পু**ণ্যফল॰ শৃণু ।। কামতো ২কামতো বাপি ষৎ পাপণ তেন সঞ্চিত । তস্মা-দ্বিমূচ্যতে পাপাৎ পূজ্যিত্বা হ-র শুচিঃ ৷৷ কৌমার অন্ধচর্য্যেণ

যৎপুণ্য প্রাপ্যতে নরৈঃ। তৎ-পুণ্যু সকল তেষা মফম্যা যো श्रुक्तिक्व ।। यमी एक श्रुव श्रुव भारत ৰূপ॰ দৌভাগ্য॰ ধনসম্পদ॰। স্প-माद्रिश्वत माश्रामा मिसाट নাত্র সংশযঃ॥ তদ্য চোত্তরদি গ্তাগে লিঙ্গপূজা বিভীষণঃ। অ জর শ্চামর শ্চৈব করম্বিত্বা বভূব হ ৷৷ আষাচস্য তু-মাসস্য শুরু या ठाकभी जत्व । जना म्यूजा সোপবাস শ্চামৃতত্ব মবাপ্ন্যাৎ ।। शृदें क शृक्षिष्ठ निष्ठ जिन স্থানে দ্বিজোত্তম। পুজবিদ্বা প্র-যত্নেন সৰ্বকাম মবাপ্স্যাৎ ৷৷ দৃ-ষণ স্ত্রিশিরা শৈচব তত্ত্ব পূজ্য ম र्श्वतः। यथाजिनविज्ञान् का-মানবাপতু মুদান্বিতৌ।। চৈত্রে-মাসি সিতে পক্ষে ষো নর স্তত্ত পূজ্যেৎ। তদ্য তৌ বরদৌ দে-বৌ প্রযক্ষেতা হি বাঞ্চিত।। স্থাণো ৰ্টস্য পূৰ্বেণ হস্তিপাদে-শবঃ স্থিতঃ। ত॰ দৃষ্ট্। মুচ্যতে भारेभ तना ज्या नम् **उरेवः॥ ७**-স্য দক্ষিণতো লিঙ্গু হারীতস্য स्राप्तः व्हिन । य॰ প্রণग্য প্রয়াত্ত্বন সিদ্ধি মাপোতি মানবং ॥ তস্য দক্ষিণপার্শে তু হারীতস্য মহা-

शनः। वित्रः देवलाका विशान **७॰ मर्बशागर्द्रा॰ निव॰।।** क्हाल-ৰূপিণা চাপি ৰুডেণাগু মহাত্মনা ৷ প্ৰতিষ্ঠিত মহালিক সৰ্বপাপ विनागन ॥ जुकि मुक्किथन প্ৰোক্ত সৰ্ব কিন্তিয় নাশন । **उन्निक स्थार्थनाति वाधिरकोग** ফল॰ লভেৎ।। তস্য পশ্চিম দি÷ ন্তাগে লিঙ্গ সিদ্ধ প্রতিষ্ঠিত া निष्किश्वत जूवि था। ७॰ गर्वनिकि अमायक ।। जमर्गनार भूजनाक সৰ্ৰসিদ্ধি॰ হি বিন্দতি। তস্য দক্ষি-**१मिछारा मृक्टलन महाजना ॥** প্রতিষ্ঠিত যত্ত্ব লিঙ্গণ দর্শনাৎ সি-किमायक । তमा পূर्द চ मिछ। গে আদিত্যেন মহাত্মনা।। প্রতি-ষ্ঠিত লঙ্গবর সর্বকিল্বিষ নাশ-ন । চিত্রাঙ্গদস্ত গন্ধর্বো রস্তা চা-পারসা॰ বরা ।। পরস্পার• সানু-तारगो ज्ञान मर्भनका किर्ना मृख्ना शानुः शृक्षिया मान्तारभी পরস্পর•॥ আগম্য বরদ॰ দেব• প্রতিষ্ঠাপ্য মহেশ্বরণ টিত্রাঙ্গদে-শ্বরণ দৃষ্ট্যা তথা রভেশ্বরণ দিজ ॥ সুভগো দশনীয়শ্চ সলে জন্ম স-মাপুষাৎ। তদ্য দক্ষিণতো লিঙ্গ• শক্ত্রিণা স্থাপিত পুরা ॥ তমা

क अवा । गडाभद्रम मुस्सिना ब हैमनोहारा लगाई । हिम्स क বিশাশারণ জর্পনাক্ষরণা চা रवाकोदान मूनिना छात्राश भ प्रत्यभन्ना गर्बछप् उपछान व्याख- रमव व्यमामञ्डा श्राद्याः পশ্চিৰদিন্ডাগে বাযুনা জগদাযু-ना १। প্রতিষ্ঠিত মহালিক দর্শ-নাৎ পাপ নাশন। তস্যাপি দ-ক্ষিণে ভাগে লিঙ্গ ইহমবভেশ্বরণ য় প্রতিষ্ঠিত পুণ্য ক্রতা দর্শাৎ বি-দ্ধিদাযক । তম্যাপি পশ্চিমে ভা-গে কার্ত্তবীর্ষ্যেণ স্থাপিত ।। ति-क्र॰ পाशहतः मामा पर्मना भू-ণ্য মাপুষাৎ। তস্যাপুত্রেরদিগুন-গে তৎপাৰ্শ্বে স্থাপিত পুনঃ !৷ আরাধ্য হনুমাণ্শ্চাপ সিদ্ধিণ দে-व প্রসাদতঃ। ভদ্যৈৰ পূর্বদিগু-গে বিফুনা প্রভবিফুনা ।। আ-রাখ্য বরদ দেব চক্র লবা সৃদ-শন । তস্যাপি পূৰ্বদিগুাগে ই-स्मि वक्ररणन ह ॥ अठिष्ठिकी नित्रवाती नर्बकामश्रामायको । এতানি সুনিভিঃ সাধ্যৈ রাদিত্যৈ ৰ্বসুভি স্তথা।। সেবিতানি প্ৰয ख्रिन गर्बेशाशहतानि दि । ज्ञान

লিছ্যা পরিতঃ ঋষিভি স্তব্দর্শি-किः। প্রতিষ্ঠিতানি निकानि (व-स-त-शाम विमाटा। छथा क्छ-**ब्रक्ट टेन्टर यावटमायर**ी समी ।१ बर्जु (वर्कः विकानाः (पर शनिष्ठ-মতঃ হিত । তদ্যাপি পূর্বদিগু-त्य वानिशिक्त यश्विष्टिः ॥ थ्र-তিষ্ঠিতা কুত্রকোটি বাবৎ সমি-श्रिकः मंद्रः। प्रक्तित्वन जू त्रविमा পন্ধৰ্বৈ ৰ্যক্ষ কিন্নব্ৰৈঃ ।। প্ৰতিষ্ঠি-তানি বিশানি তেয়া সংখ্যা ন-বিদ্যতে। তিনুঃ কোট্যর্দ্ধ কো-प्रि **विकामा॰ वायू** त्रववी९ ॥ অসংখ্যাতাঃ সহস্থাণি যে রুজা স্থাণু মাখ্রিতাঃ। এতজ্জাদা শ্র-क्रधानः ज्ञानूलिकः नमावारयः।। বস্য প্রসাদাৎ প্রাপ্নোতি মনসা हिन्तिष्ठ कन। ज्ञासा वा म-कारमा बा প্রতিষ্ঠা স্থাণুমন্দির ।। বিমুক্তঃ পাতকৈ র্মোরেঃ প্রাপ্নো-তি পরম॰ পদ॰। চৈত্রমাসে ত্রকো-দশ্যা॰ দিনে পুণ্যতমে শুভে।। প্রতিষ্ঠিত স্থাণু লিঙ্গণ বন্ধাণালো-क्धातिना। श्विं जि प्रत्वे मः रियम्ह পুজিত শাশ্বতীঃ স্মাঃ ৷৷ তশ্মিন कारण निताशता यानवाः अक्र-ষান্নিতাঃ। পূজ্বন্তি শিব॰ যে বৈ

তে বান্তি পরমণ পদা। স্থাপুতী र्थ मिष् छ। । दर अर्व छ अपः কিণ। প্রদক্ষিণীক্তা তৈত্ত লাপ্ত बीशा तम्बता ॥ इंछि वानन्तः ज्ञाटन ६० जनगर ॥ 🖝 ॥ अस् गृट्ह निक्रषयार्कमनित्यत्यो अभी । গেহে निम्बयः नार्काः भानः গ্রামদ্ব তথা। দে চক্রে দারকা-याञ्च नार्काः मूर्यादयः छशा ।।।।। **छिम्माना अक्न गविधिनि एव दिने य**े থা। অভক্ষ্য শিবনিশ্বাল্য প-ত্র॰ পুষ্পা॰ ফল॰ জল॰। শালগ্রাম-শিলা যোগাৎ পাবন ভদ্ভবেৎ সদা।। ইভি বারাহে রৌপ্য সৌ-वर्गाकी ज्ञानन नामाधायः॥ 🛊 ॥ লিঙ্গপূজা বিনান্যপূজাকরণ নি रियश यथा । लिक्ष्शृङ्का॰ विना দেবি অনাপূজা করোতি सः। বিফলা তদ্য পূজা স্যাদন্তে নর ক মাপুষাৎ ৷৷ তম্মা ল্লিঙ্গ মহে-শানি প্রথমণ পরিপূজ্যেৎ। #1 ७९ शृक्षन প্রসংশা यथा। यजा-স্টু॰ লিঙ্গপূজাষা॰ রহিত৽ সতত৽ প্রিষে। তদ্রাষ্টুণ পতিত মন্যে বিষ্ঠা ভূমি সমং স্মৃতং ।। বন্ধ ক-जिय विषे सिव यमि निकः न शूः জ্বেৎ ৷ তৎক্ষণাৎ পরমেশানি

ত্রব শ্চাঞ্চালতা। বজেৎ ॥ শুক্ত क गर्दारमानि सन भूकारक थिए । भूजरवर भन्नरम्भामि छ-षात्रा वाष्मगामयः।। निवाकन्त शृजान् यकारह विकंछ नना । विश्वाशर्ख मयः पावि जनगृश् वि-দ্ধি পাৰ্বতি ॥ শাক্তো বা বৈক त्वा वाशि त्यात्वा वा शत्रत्यश्रति। जामो विषः ममञ्जूष्ठी विद्यनः তৈ ৰ্বরাননে।। পশ্চাদন্য॰ মহে-শানি শিব॰ প্রার্থ্য প্রপূজ্বেৎ। শিবপূজা বিনাদেবি অন্যপূজা করোতি ষঃ।। স এব রসনাহীনঃ ঙ্গম্ভীরে। জাষতে প্রিয়ে। নির্দ্মায পাৰ্থিব লিঙ্গ ৰুজ সংহারৰপিণ ।। আশুতোষ মহাদেব শবর বৃষভধজ । নিশ্মাষ পার্থিক লি-ঙ্গণ বিধিবৎ পূজ্ঞযেৎ শিবণ।। শি-বপূজ। মহেশানি যদ্গৃহে সতত॰ প্রিযে। কাশীপুরু মহেশানি ত-काृरु रव्नवर्गिन ॥ गिवनित्र थ-পূজ্যাথ সৰ্ৰপূজা ফলং লভেৎ 11 • 11 ठजुर्विधनिकः यथा 1 ठजू-দ্ধাপার্থিব লিঙ্গ মৃৎস্না ভেদে-ন পাৰ্ৰতি ॥ শুক্লণ রক্তণ তথা পীত॰ রুক্তঞ্চ পরমেশ্বরি। শুক্ল-ম্ব ত্রাক্ষণে শস্ত ক্ষত্রিযে রক্ত মি-

য্যতে।। হরিত বৈশ্যজাতে। তু क्रकः भूटक श्रकीर्डिजः॥ हन्मन-প মহেশানি সৰ্বজাতিবু শস্তে । ইতি निकार्फनव्यक्त ५। २। ७ পটলাং ৷৷ ৩ ৷৷ অস্য পঞ্বক্তাণি यथा। ७९ गर्ब॰ मृत् চार्विक था-र्थिवमा मूथ श्रीटर । विजाबा मू-শপদ্ম হি শিবসা বরবর্ণিনি॥ স-দ্যোজাত বামদেব মঘোরঞ্ছ ত-তঃ পরে ৷ তৎপুরুষ তথেশান **शक्ष्वकुः अकीर्खिङः ॥ मा**मा।-জাতঞ্চ বৈ শুক্ল শুদ্ধ শ্বাটিক সঙ্গিত । পীতবর্ণ তথা সৌম্য वामरावर मरना इतर ।। क्रकार्व गरवाद्रक मगः जीम विवर्कनः। प्रकः ७९ शूक्रयः प्रवः प्रिवामृर्खि मत्नाह्तः॥ नामनक जर्णना-न॰ गर्दरमय निवाश्वकः । ठिश्व-বেৎ পশ্চিমে চাদ্য দ্বিতীয়ন্ত ত-त्याखदत्र॥ व्यत्यात्रः मिक्ता एमवः পূর্বে তৎপুরুষ তথা। ঈশান মশ্বাতে৷ ধোষ চিস্তবেৎ ভক্তি-তৎপরঃ ৷৷ ইতি তত্তৈব ৬ পটলঃ ॥ ॥ अमा शृकायाः मूथवामाक-त्रनारमाकष्य यथा। मन्भूका भा-র্থিব লঙ্গে পর ত্রন্ধ স্বয়ণ প্রিয়ে ৷ ততম্ভ লিঙ্গ কবচং পঠিম্বা কম-

वानत्न ॥ गूथवामाः मन्ठाः हि ক্লন্বা তু পরমেশ্বরি। মাতৃকা মন্ত্র महिज मूथवामा मृमूर्झज ॥ অকারাদি ক্ষকারান্ত অনুলোম বিলোমতঃ ৷ উচ্চার্য্য পরমেশা-নি মুখবাদ্য শুচিন্মিতে।। সবিন্দু বৰ্ণ মুচ্চাৰ্য্য পঞ্চাশন্মাতৃকা• প্ৰি-(य। जन्दलाय विटलारयन मर्दिव **চ दत्रान्दन ॥ अटनटेन्ट विशादन-**न मूथवानाः करताि यः। मनि-कः मगनः माणि म मिता नाव मः भरः ॥ कृजुः क्षरा २३॰ (मर्द-শি মুখবাদ্য প্রসাদতঃ। যন্মিন্ কালে মহেশানি অসুরা বলবন্ড-विष् ।। जियन् कारम मरहमानि मूथवामा॰ करतामारः। তৎ এ-ত্বা পরমেশানি অসুরা রাক্ষ্সা-**म्ह रय ॥ श्रामाय एक मरहमानि ७**९ ঞন্ত্র। পরমেশ্বরি। যে নরা ভূবি তিষ্ঠস্তি মুখবাদ্য বিনা প্রিয়ে ॥ স সৰ্বযাতনাভোগী অন্তে সম্ভী-রতাণ বজেৎ ৷৷ ইতি চ তত্ত্বৈব ৮ भारतः ॥ 🕸 ॥ जात्रा निर्माला ভোজনদোষকারণ যথা। দে-बुरवाठ । मूर्वाङ তব निर्मानाः ব্ৰন্দাদীনাং ৰূপানিধে। তৎ কথং পরমেশান নির্মাল্য তব দূষিত

য় ঈশ্বর উবাচ। মধ্যস্থান স্থিত॰
বলু ভন্মুখণ পরমেশ্বরি। শ্যামলণ
তলু ঈশানণ সদা উর্দ্ধৃণ শুচিন্ধিতে ।৷ কালাগ্নি কাপিণ তলু সর্বশক্তিময়ণ সদা । তেজোময়ণ মহেশানি মুখ মূর্দ্ধৃণ বর্নাননে ।৷
ক্রীরোদ মথনে দেবি উন্দিতণ
গরলণ মহৎ। ততঃ করতলীক্তত্য তদ্বিষণ পরমেশ্বরি ।৷ নিপীতণ

॰ সূন্ধ• তীক্ষ• বন্ধাওনাশ-नः। তिष्यः कश्चेरमरम जू क्रिङः হি সৰ্বদা মম ৷৷ ততঃ প্ৰভৃতি **(मर्दिन गूथ- जानायर्ड महा)** পত্ৰ॰ বা যদি বা পুষ্প। ফল। বা বরবর্ণিনি ৷৷ অন্য হি পরমেশা-নি উপচার মনোহর । যো দ-मा**९ शत्रामानि ममुर्था**शति পাৰ্ৰতি ৷৷ অগ্ৰাহু তত্তু নিৰ্মাল্য শাক্ষাধুন্দময় যতঃ। এতজু পর-**प्रिमानि निर्मानाः रेख धात्रस्** া। স ভুকৌ জাযতে দেবি নিষ্কৃতি ৰ্নাস্তি তত্ৰ বৈ। অগ্ৰাহ্ণ মম নি-শ্মাল্য॰ অতএব বরাননে॥ ফদ-ত্তি সমুখে দেবি পুষ্পা বা পত্ৰ মুত্তম । ত্রিশ্মাল্য মহেশানি গৃङ्गीयां भित्रमा मना ॥ अथम॰ িবিষ্ণবে দত্বা বিক্ষুমন্ত্ৰেণ পাৰ্ৰতি ।

নিৰ্মাল্যণ মম দেবেশি বিক্ষোর্জা-रु বরাননে ।। দেবাসুর মনুব্যা-শ্চ গন্ধৰাঃ কিম্বাদ্যঃ। তে সৰ্বে পরমেশানি বরাকাঃ ক্ষুদ্রবুদ্ধরঃ ॥ নির্মাল্যেষু চ দেবেশি অধিকা-রী **কথ• ভবে**<। ইতি চ তত্ত্বৈব ১७ । ১८ भेटलो ॥ 🛊 ॥ ठजूर्न-শ্যা॰ মহেশানি শুক্লাযাণ বরব-ৰ্ণিনি। ৰুক্তাযায়া মহেশানি অ-मावानगा॰ वित्मयण्डः ॥ निर्माय চ চতুর্দশ্যাণ লিঙ্গণ ভক্ত্যা চ পূ-জষেৎ ৷ একহন্তে মহেশানি নি-माय भाषितः निवः ॥ मक्तित বামহন্তে বা নির্মাষ ফে চ পার্থি-বং ৷ তৎফলং পরমেশানি লক্ষ-লিঙ্গসমণ ভবেৎ ৷৷ ইতি লিঙ্গাৰ্চ্চ-ন তন্ত্ৰ ৷৷ 🗱 ৷৷ বাণলিঙ্গলক্ষণাদি-ক॰ বাণলিঙ্গশব্দে দ্রম্বর্যুণ।। 🗱।। व्यथ द्वी जिल्लाक लक्ष्य । वी द्रिभि-**ত্তোদযধৃত। निन স**মুক্তব রৌজ मत्गानामा विषर्वना । निर्वादन গাৎ সমণ শ্লিঞ্বণ সংজাতণ রৌদ্র-मूठाटा ॥ ममूक्टराशि । मति প্রবাহ সংস্থান: বাণলিঙ্গ সমাক্র-তি। তদন্যদপি বোদ্ধব্য॰ রৌজ-লিঙ্গ॰ সুখাবহ॰॥ নদীসার নর্ম্ম-দাযা॰ বাণলিঙ্গ সমাক্কতি। তদন্য-

मिश (दाक्रवा॰ निम॰ द्रोपि॰ छ॰ বিব্যতি ।। ব্লোত্তলিক তথা খ্যা-ত বাণলিক সমাক্ষতি। শ্বেত রক্ত তথা পীত রুক্ত বিপ্রাদি পূজিত ৷৷ স্বভাৰাৎ ক্লকৰণ বা সৰ্বজাতিষু সিদ্ধিদ । নৰ্মদা স-ডব॰ রৌড়ে বাণলিপ্রবদীরিত ।। **इ**ि द्वीखिलक नक्षण ।। भिव-নাভি লক্ষণ তৎ শব্দে ডক্টব্যু ।। 🛊 ।। जथ रेपरिलिक लक्ष्ण । रेप-বলিঙ্গ মধিকত্য সিদ্ধান্তলৈখনে ৷ कत्रमण्यू हे मन्त्र्यमं मूल हेट्सम्-ভূষিত । রেথাকোটর সম্বুক্ত নিয়োমত সমন্বিত ।। দীর্ঘাকার-ঞ্চ যক্তিক বন্ধ ভাগাদি বজ্জিত ll 🛊 ll অথ গোল**লিক লক্ষ**ণ 1 লিক্স গোল মিতি প্রোক্ত্য গো-লক প্রোচ্যতে ২ধুনা। সন্মা-ওস্য ফলাকার নাগরক ফলো-পমণ ৷৷ কাকডিম্ব ফলাকারণ গো-ললিঙ্গ মিতীরিত । ইতি গো-न निष्ठ नक्षण ॥ 🛊 ॥ अथार्य-निक नक्षण । ठरेवर । नाना-কোল ফলাকার প্রন্ধসূত্র বিব-র্ত্তন । মূলে স্থূলক যলিক ক পিথফল সন্নিভ॰ ॥ নালস্য বা কলাকার॰ মধ্যে স্থলঞ্চ যন্তবেৎ

विश्वाकृति वद्गः निक्र मृतिवान मूमीक्रिकः॥ रेकार्यनिष्ठ नक्ननः ।। 🗰 ।। जिल्ला 🗧 विविध महा-बियः क्रबियकः। जक्रवियः चय-ভূত খবড়ু বাঞ্চিকাদি। ক্ত্রি-ন॰ নিৰ্শিত ধাতুলিকাদি। সি-কান্তশেশরে ৷ তলিক দিবিধ ভেরৰ মচলক্ষ চল তথা। প্র-ত্যেক জিবিধ জ্ঞেয় লিখ তদুভয়াত্মক ।। প্রাসাদে স্থাপি-**७**॰ नित्र यहनः छिन्नामिक्। স্থাপিত অটল গেহে স্থির লি-क गर्दािकर्टा ।। अक्षश ७९ खिङ निकः खरखू टेमव भान-कः। जीर्रिक गानमः निकः (७-ষা॰ লক্ষণ মুচ্যতে ।। সিদ্ধান্ত-শেপরে। নানাচ্ছিত্র সুসংযুক্তণ नानावर्वं ममन्त्रिष्ठः। अपृष्ठे मूलः যলিক কর্কণ ভূবি দৃশ্যতে।। তলিসম্ভ স্বয়ভূত মপরণ লক্ষণ-চ্যুত । स्रयसु नित्र भिष्युक ०-চ্চ নানাবিধ মত ।। শুখাভ **মস্তকণ লিঙ্গণ বৈ**ক্ষবণ তদুদাহ্ন-ত । পদাভ মস্তক বান্ধ ছত্রা-ভ॰ শাক্র মুচ্যতে ॥ শিরোযুগা• তথাগ্রেষ ত্রিপদ যাম্য মীরিত । খন্নাভ• নৈৰ্খত॰ লিঙ্ক• বাৰুণ•

कनगरुष्ठि ॥ बाववाः धजवा-লিক্ষ কৌৰেরম্ব গদায়িত। ম-শানসা ত্রিশুলাভ লোকপালা-मि निःमुङ ॥ समञ्जान ना-খ্যাত সৰ্বশাস্ত্ৰ বিশারকৈ:া **ইতি यरजुलिक लक्ष्या 📦 🛚 ।** गৎमामूरक। मृक्षे। निकः सरह-শস্য স্বয়ন্ত্ৰস্য পাৰ্বতি। সৰ্ব-পাপ বিনিশ্মুক্তঃ পরে ব্রহ্মণি লী-यरा ॥ 🗱 ॥ এতে या॰ शृक्षाकना स **ত** देवर । विश्वारेष्ट्रमञ्ज मू-ক্তৈয় ভুক্তষে চানুষকতঃ। পা-র্থিব ভুক্তবে শস্ত মুক্তবে চা-न्यमण्डा। এব॰ বৈ দারুজ॰ জে-য॰ চিহ্নলিঙ্গ তথা পুনঃ। স্থির-लचीश्रमः एखरः देश्यः ताकाः-প্রদক্ষ তৎ ৷৷ পুত্রবৃদ্ধিকর তা-मु ताक्रमायुः श्रवक्रनः ॥ अध-পুরাণ । পারদঞ্ মহাভূতৈ সৌভাগ্যাৰ চ মৌক্তিক ৷ চন্দ্ৰ-কান্ত মৃত্যুজিৎ স্যান্ধাটক স-र्चकामन ॥ 🗰 ॥ वीत्रमित्वानमः ষ্ত কল্পোত্তরেপি। সর্বা ফলপ্র-मा ज्य र्याश्य उपदानत् हि। ज-नुषामाः चुन स्ट्यो मन्द्रा विम्रामुब्द्धनाः ॥ त्रात्वो श्रकाम-काः मर्द्ध वियामा घाणकात्रिणः

। नानावर्गाञ्च विरक्तवा त्रदेन र्भ-देशक क्षेत्रकः ॥ बङ्गामाः ज्या-विकामगान अजानामि विनिर्मिः छ । गर्बकामक्षम पुरवा विकर ভাৎকালিক॰ **म**ত•।। #।। लक्क्व-সমুক্তবে। গান্ধ সৌভাগ্যদ । লি-मः लीलाः मुक्किश्रमायंकः। छथ। ৷ ৰামা গুণোন্তৰ লিক্ত নামা-काम श्रामावकः। टेमकछः खनमः नित्र मोजागाच ह नाव्यः॥ উচ্চাটনে তু পাশাপ্ত মৌলং শত্রক্ষাবহ । তাৎকালিক দ-রিজশ্চ হৃত্যা ভক্ত্যা সমর্চবেৎ।। তথা। কন্তুরিকাষা ছৌ ভাগৌ চছার শ্চলনস্য চ। अक्रूम् ग ত-य टेन्टर मिना ह हर्डश्मम ॥ এতহৈ গদ্ধলিক্ত হয়। সংপূজ্য ভক্তিতঃ। শিবসাযুজ্য মাপো-তি বন্ধুভিঃ সহিতো নরঃ ॥ কা-र्याः भून्भमयः लिकः हवगद्य म-মন্বিত । নবধঞা ধরা ভুজ্বা গবেশো ২ধিগতি ভৱেৎ।। রজো-ভি নিৰ্মিত লিক যং গৃজ্যতি ভক্তিতঃ। বিদ্যাধরপদ প্রাপ্য পশ্চাৎ শিবসমো ভবেৎ ৷৷ শ্রী-কামো গোশক্লিক ক্যা ভক্ত্যা প্রপুজবেৎ ৷ স্বচ্ছেন কাপিলে-

टेनव शामरयन श्रक्तारय ।। कार्याः रिकेक्यः निकः यत् (११)-यूग गालिक । **बिकामः शृक्ति**का **मन्ह भूखकाम सम्बद्धार ११** जि-তাখণ্ডময়ণ লিঙ্গণ কাৰ্য্য মারো-গ্য বৰ্জন•। বশ্যে লবণজ• লি*স্ব•* তাল ত্রিকটুকাম্বিত ॥ গব্যয্ত-भयः निकः मःशृका वृक्षिवक्षनः । লবণেন চ সৌভাগ্য পার্থিব স-र्बकायमः ॥ कायमः जिनिभित्छ।-থ॰ তুষোথ॰ মারণে স্মৃত৽। ভস্মো-খ॰ সৰ্ৰফলদ॰ গুডোখণ প্ৰীতিব-र्क्तन॰ ॥ গম্বোত্থ॰ গুণদ॰ ভূরি শ-ৰ্করোত্থণ সুখপ্রদ•। ব•শান্ধুরোত্থণ ॥ व॰मकत्र॰ रगाममः मर्वदागमः।। কেশান্থি সম্ভব লিঙ্গ সর্বশত্র বিনাশন । ক্ষোভণে মারণে পি-ফসম্ভব॰ লিঙ্গ মৃত্তম॰॥ দারিজ্য-দ॰ জ্রমোন্ডুত॰ পিন্ট• সারস্বতপ্র-म॰ 11 पिं पूरका खर॰ लिक्न॰ की-र्खि नची मूर्थथमः। धानामः धा-नाजः निकः कत्नाथः कनमः ভবেৎ ৷৷ পুল্পোখণ দিব্যভোগা-यू म् रिका धाक़ीकरलाखवः। न-বনীতোদ্ভবং লিঙ্গং কীর্ত্তি সৌ-ভাগ্য বৰ্দ্ধন ৷৷ দূৰ্বাকাণ্ড সমু-ख्ठ मणम् ज्राविना मनः । कश्त्र

সম্ভবণ লিঙ্গণ চলা বৈ ভুক্তি মু-ক্তিদা।। অযক্ষান্ত॰ চতুদ্ধা তু জ্ঞেষ সামান্য সিদ্ধিষু। ইতি গৰুডপুৱাণ ৷৷ সৰ্ব মণিভব **८७७ ० व वजु मित्रिक्ति। यम-**লিঙ্গ মহাজুত্যৈ সৌভাগ্যায় চ 'बोक्किक' ॥ পूर्किमृल' गर्गानी-ল॰ জ্যোভিন্তীর সমুদ্ভব॰। স্প-र्भकः अनमहेला टेज्जमः मृ-ৰ্যকান্তজ ।। চন্দ্ৰাগীড মৃত্যু-জিত ক্ষাটিক সৰ্বকানদ । শূ-লাখ্য মণিজ শত্রক্ষযার্থ মৌ-ক্তিক• তথা ॥ আগত্য• হীরক• জ্ঞেষণ রোগহৃদ্মৌক্তিকোন্ডবণ। एक्ट भूकन ठीए रेवमूर्या मजू मर्ग हृ ।। नील लक्षी अम॰ জ্ঞেয় ক্ষাটিক সৰ্বকামদ। ইতি সারস্থাহঃ।। মহাভুক্তিপ্র-দ॰ হৈম॰ রাজত॰ ভূতিবর্দ্ধন॰। আরক্ট তথা কা স্ণ্ স্ণ্ সা-मानामूकिमः ॥ ज्यू नीमायमः *লিঙ্গ* শত্তুগা[°] নাশনে হিত°। কীর্ত্তিদ কাংস্যজ লঙ্গ রাজ-ত পুত্রবর্দ্ধন ।। পৈত্তল ভুক্তি মুক্তার্থণ মিশ্রজণ সর্বসিদ্ধিদণ। ইতি কালোত্তরতন্ত্রণ ॥ তত্ত্রৈব শিব নারদসংবাদে । পিতৃপাণ

মুক্তয়ে লিঙ্গণ পূজাণ রজত সম্ভ ব ৷ হৈমজ পত্যলোকসা প্রা-श्वरा भृजरा भूगान्॥ भृजरा खायुक[,] वित्र[,] श्किकारम। शि मानवः॥ 🖛॥ मध्मामृत्कः। छा-युनिक॰ करनी नार्फिं देत्रजामा मीमकमा **ह । त्रक्क**हन्मन विकक्ष गडा का भागिका ज्या । भा मा-তৃকাভেদতন্ত্রে ১২ পটলে ৷ পা-ৰ্থিবে শিব পূজাষা সৰ্বসিদ্ধিযু-তো ভবেৎ। পাষাণে শিষপূজা-या॰ क्रिशुन॰ कम मीत्रिज॰ ॥ वर्न-লিকে চ পূজাষা শত্ৰুণা নাশ-नः गणः। সर्वभिक्रीश्वरत्ना द्वीरभा ফল॰ তস্মাজতূর্গুণ।। তামেুপু-ষ্টিত বিজানীয়াৎ কাত্স্য চধন-नःकरका शक्रायाक लक्ष्यंगःला-ক্ষায়াণ ক্লোগবান্ ভবেৎ ৷৷ স্ফা-िंदिक मर्रनिकिः माखिश मद्रक-তে थिए । लोश्लिक त्रिंश-নাশ কামদ ভক্ষলিসক ।। বা-লুকাষা কাম্যসিদ্ধি গোমৰে রি-পুহি শন । সর্বলিক স্য মাহাত্ম্য धर्म कामार्थ (माकनः।। मःका-द्रिश विना एक विशासामा प्राप्त পূজ্যেৎ ।৷ 🗱 ৷৷ তৎ সংস্কার স্ত-दैवं वया। त्रोशाकः चर्नलियः

ঞ্চ স্বৰ্ণপাত্তে নিধাৰ চ। তক্ষা-मूखाना जलिक म्याया पिन-ত্ৰৰণ। ত্ৰ্যম্বকেন স্নাপ্ৰয়িত্ব। কা-লক্ষদ্র প্রপূজ্যে । বোডশে-নোপচারেণ বেদ্যান্ত পার্বতীণ ষ-**रब**ः ॥ जनामूखाना जनिकः গঙ্গাতোফে দিনত্রষণ ৷ ততো विषा निष्ना मध्यात गान-ति मूर्यीः ॥ 🛊 ॥ लक्क श्रीन लि-क्रिक्टन (मारकाः वया । निक्रः मूलकनः अर्या। श्राकतिक मल-क्॰ । देवर्गशीत ज्वा ज्वा कि व ধিকে শত্রু বর্দ্ধনণ।। মানহীনে বি-नामः मानिधिक ह निश्कायः। বিস্তারে চাধিকে হীনে রাস্ট্রনা-শো ভবেৎ ধ্রুব ।। পীঠহীনে তু मार्त्रिषाः भित्राशीतः त्रनक्षयः। ৰ**ন্দসূ**ত্ৰ বিহীনে চ'রাজ্ঞাণরাস্টু-क्ष नगाि ॥ जन्मा भर्व श्रयाञ्च-न नित्रः त्रशां मूनकः।। #॥ व्यथं निकथमानः। त्मर्ग्रवाह । লিঙ্গপ্রমাণ দেবেশ কথযস্ব মৃষ প্রভো । পার্থিবে চ শিলাদৌ চ বিশেষো উবাচ। মৃত্তিকা তোলক গ্রাহ্ মথ বা ভোলকদ্ব। এতদন্য-मन्दी ७ क्माहिम्मि भाईि ॥

ইতি মাতৃকাভেদতন্ত্রে ৭পটলঃ॥ অপি চ। মৃত্তিকা তোলক আহ্ मथ वा তোলक्षय । बिमूबमा थ्यनात्वन घर्षेत्रः कात्रत्यकृथः ॥ অকুষ্ঠ পর্বমানন্ত রুত্বা লিঙ্গ প্র-भूकरय । इंडि वर्षकर्मिनी भि-কাধৃত বিশ্বসারতন্ত্রণ।। 📽 ।। ত্রি-मृबीकर्त मुक्क कालाखर । नित्य (तमा॰ छथा शीर्फ मय-সূত্ৰ নিপাতনাৎ। সমফেব বি জানীযাৎ ত্রিসূত্রীকরণ স্ত্রিদণ ।। 🛊 ॥ मृखिकात्ज्यान बाद्यांश-দীনাণ পুজাফলস্য প্রশস্তম্ব মুক্তাণ তত্ত্বৈর। শুক্ল হি পার্থিব লিঙ্গ নির্মাষ যম্ভ পূজ্বেখে। সএব পর-মেশানি ত্রিবর্গ ফলভাগ্তবেৎ ॥ ক্ষত্রিযন্ত বরারোহে রক্ত নির্মা-য পার্থিবণ। পূজ্রেৎ সতত যস্ত ত্রিবর্গ ফলভাগ্ডবেৎ ॥ হরিত পার্থিক দেবি নির্মায যস্ত পূজ रय । म ह देवल्गा मरहणानि ত্রিবর্গ ফলভাগ্ডবেৎ।। রুষণ হি পাर्थिवः निकः निकार यस करय । म मजः भत्रत्यभानि ত্রিবর্গ ফলভাগ্ডবেৎ ।। শিলাদৌ **চ मट्डमानि ख़्लक्ष कलमायकः**। **अक्रकेमानः (मर्दिना यदा (इमाः**

जि यानकः ॥ कटमा प्रवरति-नि कनः वहविशः नाख्यः। ञ्रूना স্থূলতর লিঙ্গ রুজাক পরমে-श्रुति।। भूजनाकातगारणिति कवा॰ বছবিধ স্মৃত ।৷ স্থূলাৎস্থূলতর মিতি পার্থিবলিঙ্গে তরপর । মৃ-ন্তিকা তোলক আছ মিত্যাদি वहनाथ॥ ।। निना कार्षिक মরকভাদীনা॰ পঞ্চসূত্রীকরণ মু-कः। यथा। निर्वानक्रिमा समानः তন্মান দক্ষ সব্যয়ে। যোন্যগ্র মপি যক্ষান তদধোপি তথা ভ-त्य ॥ इंडि रेनक ॥ निक्रमा যাদৃগ্যিস্তারঃ পরিণাহোপি তাদৃ-**नः। विक्रमा विश्व**ना त्वती त्यानि স্তদৰ্ম সংমিতা।। স্বরী তাসুষ্ঠতো হুস্ব॰ ন কদাচিদপি কচিৎ। রত্না-দি শিবনিৰ্মাণে মান মিচ্ছাবশা-स्टर्स्य । इंडि जन्नास्त्र ।। 🛊 ।। नि-ঙ্গশব্দব্যুৎপত্তি র্যথা। আকাশ লিঙ্গ মিত্যাহঃ পৃথিবী তস্য পী-ঠিকা। আলয়ঃ সৰ্বদেবানাণ লয়-নালিক্যুচ্যতে॥ ইতি ক্ষনপুরা-**१ ।। 🟶 ।। विक्रमिक्स्मि यथा। मित**-উবাচ। ন তুষ্যাম্যচ্চিতো ২চ্চা-या॰ भूष्म धूम निर्वारिनः। निराम **ংর্কিতে তথাত্যর্থণ পরণ ত্**ষ্যামি

পাৰ্ৰতি ॥ এব দেবি পুরা ক্লত্যে জीतार्॰ गर्वरेषवरैठः। विक्षा लिन भिज्राकः मरमवामूत किन्न-देतः ॥ श्रयक्रामि मितः प्रति रश মলিকাৰ্চ্চনে রতঃ। ত্যক্তা সৰী-ণি পাপানি নিৰ্গদে৷ দক্ষকভাষঃ १। ययना यसम्कारता मोट्यव थ-**जिनमार्छ। इंछि वीत्रमिर्खामय-**धृत कम्न शूजानः ॥ **#**॥ जवानि-শেষেণ পূজাদিফল মপি তত্ত্বৈব। **বস্ত্রপৃতজ লৈ লিঙ্ক॰ স্বপিত্ব। মম** मानवाः। लक्षांना क्षेत्रियमानाः কল মাপ্পোতি সত্তমঃ।। সুগন্ধি **চ**न्मनत्रोम निक्र मानिया छक्छि-তঃ। আলিপ্যতে সুরস্ত্রীভিঃ সু गटेक र्यक्किक्टिकः ॥ 😻 ॥ नि-প্রপূজনাকরণে দোষ তথপূজা कनक उटेजर निव नात्रम महार्टम । विना निकार्कनः यगा काला-গচ্ছতি নিত্যশঃ। মহাহানি ভঁবে-खमा पूर्वजमा पूर्वाचानः ॥ **এ**क-তঃ সর্বদানানি ব্রতানি বিৰিখা-नि ह। जीर्थानि नियमा युक्त नि সারাধন মেকতঃ।। ন লিসারা थनामना९ भूता (वर्ष ठजुईनि । বিদ্যতে সর্বশাস্ত্রাণা মেষ এব সুনিশ্চিতঃ ৷৷ ভুক্তি মুক্তিপ্রদণ

लिकः विविधानिवातनः । भूक-বিদ্বা নরে৷ নিত্য শিবসাযুজ্য गाश्रुवार ॥ मई गनार भतिज्ञाका ক্রিয়াজাল মশেষতঃ। ভক্তা প-त्रेगरा विद्यान् लिक त्यकः श्रेशु-জ্বেৎ।। ইতি কন্দপুরাণ।। #।। व्यथरम्य महमुनि वाकंत्रिय म-তানি চ। মহেশার্চন পুণ্যস্য क्ला॰ नार्रेडि साफ्नी॰ ॥ रेडि मर्नामृत्क ५७ भग्नाः ॥ 🛊 ॥ श्वरः नातायवः त्थात्का यमि मञ्जू श्रिकृत्यः । यत्रा मर्ला ह भा-তালে যে দেবাঃ সংস্থিতাঃ সদা।। তেষা পূজা ভবেদেবি শন্তুনাথ-मा शृक्षना । ইতি माতৃका ভেদ-ण्खः ॥ **॥ स** एक प्रमिशिकाया । অসারে খলু সংসারে সার মেত-চ্চতুক্ত্ৰৰ । কাশ্যা বাসঃ সভা। मद्यो गया छः गरुरम्यनः ॥ 🛊 ॥ व्यथ भारतिनिविक महाव्याः । জ্যোতিশ্বয় यहानिक देवनाम-নগরে প্রিয়ে। তবৈয়ব ষোডশা॰-'লৈকঃ কাংশ্যাণ বিশ্বেশ্বরঃ স্থিতঃ ॥ शूर्वलिकः मरहमानि गिववीजः ন চান্যথা। শিলামধ্যে যথা চক্ত॰ लकीनां त्रायंगः भद्रः । भारतमा मठा॰रेगरका वाचीनातायरना न

হি।। পকার বিক্রুৰপঞ্চ আকার । কালিকা বা প্রস্তুত্র স্থানের স্থান্ত্র त्रक बक्रकशः न हानाथा॥ शातनः পরমেশানি ত্রন্ধ বিষ্ণু শিবাত্মকণ ৷ বো বজেৎ পারদ লিক সএব শস্তু রব্যয়ঃ।। ইতি মাতৃকাতেদ ভয়ে ৮ পটলঃ।। তস্য নির্মাণ বি-थानः भात्रमभरक जरूदाः ॥ 🛊 ॥ প্রকারান্তর শিবলিক্ষোৎপত্তি ৰ্যথা। ততো বিবাহণ নিৰ্বৰ্ত্য ক্লভ-হ্নত্যা যথাগতাঃ। গতাঃ সর্বে ম-হেশোপি সত্যা সহ তদা গৃহ॰। ব্দগাম রেমে সত্যা চ চিরু নির্ভ-র মানসঃ ৷৷ অথ কালে কদাচিত্ত সত্যা সহ মহেশ্বরঃ ৷ রেমে ন শে-কে ত সোঢু সতী প্রান্তাভবত্ত-मा ॥ উবাচ দীনষা বাচা দেব-**(मद॰ क्र**शम् क्षक्र॰। ज्ञावन हि भ-ক্লোমি তব ভারণ সুদুঃসহণ ॥ ক্ষম-স্ব মা মহাদেব ক্লপা সক্ল জগৎ-পতে। নিশম্য বচন॰ তস্যা ভগ-वान् वृष्डश्रकः॥ निर्जतः त्रमणः চক্রে গাঢ निर्फय यानमः। क्रा मःপূर्व त्रमनः मञी ह ठाउकरमञ्च-না ৷৷ উত্থানাষ খন শ্চক্ৰে উত্ত-যো স্তেজ উত্তমণ। পপাত ধর পূষ্ঠে তৈ ৰ্ব্যাপ্ত মখিল জগৎ

পাতালে ভূতলে স্বর্গে শিবলিকা স্তদাভবন্। তেন ভূতা ভবিষ্যাশ্চ निविन्ताः मत्यानयः॥ यज नि-**দ॰** তত্ৰ ধোনি ৰ্যত্ৰ ধোনি স্ততঃ শিবঃ। উভয়ে। শৈচব তেজোভিঃ শিৰলিক্ষণ ব্যক্ষাৰত ৷৷ ইতি না রদপঞ্জাতে ৩ রাত্র° । # ।। কামনাভেদে পার্থিব শিবলিঙ্গ मः था। मः था। भार्थिव विः ঙ্গুলা মুখ্যকাম• নিগদ্যতে। মৃল্লি **ঙ্গ• পার্থিব• নাম ভুক্তি মুক্তিক** রু পর ।। দেশকালাদিক ভ্রাত্বা क्रिंग ६ निक्रः कन्थ्रिमः। न कः রোতি যদা জ্ঞাত্বান কার্য্যণ তস্য সিদ্ধাতি ॥ বিদ্যাথী শতসাহ-मु॰ धनाथी ह जमकंक । भूवाथी সাৰ্দ্ধসাহসু• কন্যাৰ্থী চ শতত্ৰৰ ॥ विदान् निकायुक कर्याप म-ৰ্বপাপহর• পর•। রাজ্যাথী শত-मार्मु॰ काञ्जाथी मञ्शक्षकः॥ মোক্ষাথী কোটিগুণিত ভূতি-কামঃ সহসুক । ৰূপাথী ত্রিস-হসুত্ত তীর্থাথী দিসহসূক ।। সুহৃৎকামঃ সহসুত্ত বস্ত্রার্থণ শ **७४७**५- । नात्रगाय- गखना **मार्गार्थः गठारुकः ॥ उक्र** টন বশশ্চৈব সহসুস্ত যথোক্ত

1 স্তম্ভনে চ সহসূত্র দারণে চ ত দৰ্জক ৷৷ মহারাজভবে পঞ্চশত-क्षांश्राम निकटि । मङ्मु संयुक्त সর্ব কামদ পরিকীর্ত্তিত।। এক পাপহর প্রোক্ত দ্বিলিকক্ষার্থ-সিদ্ধিদ'। ত্ৰিলিঙ্গ' সৰ্বকামাণাণ কারণ পর মীরিত ।। তথা। লি ন্সানা মযুত ক্রা পূজা রাজভ य श्दा । महमु १० व निश्रामा নিগডানোচহে দ্ধুবং ॥ কারাগৃ-र विमुक्तार्थ मयूष्ट कात्रराष्ट्रशः । ডाकिनामि ज्य शक्ष्मश्रमु कांत्रराख्या ॥ मह्मानाक शकाः শদপুত্রো হি প্রকারযেৎ। ইতি वीत्रियत्वापयध्ड ॥ व्यत्न ह ক্ৰমান্দেবি লক্ষণ যম্ভ প্ৰপূজ্বেৎ । সৰ্বাভীষ্ট ফল দেবি লভতে নাত্র সংশযঃ।।ঞ্চা। একীক্বত্য লি-अर्था विधि निरम्पी यथा। व কীক্নত্য মহেশানি ষুগলণ ন তুপূ জ্বেৎ। একীক্নত্য মহেশানি দ* পঞ্চ শতানি চ।। প্রত্যেকেনাৎ বা দেবি বিল্পপত্রৈঃ প্রপূজ্বেৎ । একৈক॰ পূজ্বেল্লিঙ্গ॰ यूगन ন তু পূজ্বেৎ।। দরিজো জায়তে দেবি যুগলস্য চ পূজনাৎ। ই निकार्फनञ्जः ॥ 🕸 ॥ শিवनिः

मृखिकामि निक्तभन यथा। जीर्थ মৃৎস্না॰ সমাহৃত্য নিৰ্মায লিঙ্গ-মভূত। তীর্থাভাবে মহেশানি ব্দুজস্য মৃত্তিকাণ প্রিষে ॥ পর্বত-প্রভবা দেবি নদীনামেত্যুদা-হুত । এতদ্ভিষা মহেশানি নদী क्कु जा देखि थिए ।। निर्वातमा ह **(मृदिनी निमाणिक अमायिनी ।** সৰ্বাভাবে মহেশানি গোষ্পদস্থা-ध মৃত্তিকা ।। অথবা পরমেশা-নি যত্র চিত্তণ প্রসীদতি। সুপীনণ সুন্দর রম্য শর্করা রহিত সদা ।। निर्माय भार्थियः निकः क्छनी সহিত প্রিষে। যো লিঙ্গ পর-মেশানি স রুদ্রঃ পরমেশ্বরঃ॥ **अ** ७ वर्ष के नी जिल्ला का स्विती পরমেশ্বরী । শিবস্য পূজনাৎ দেবি দেবী দেবৌ চ পূজিতৌ।। ইতি মৎস্যসূক্তণ।। 🟶।। বাণলি-ন্ধ নিশ্মাল্য গ্রহণে প্রতিপ্রসবো यथा। वानित्य न ठाटनी ठ॰ न ठ निर्माला कन्नना। गर्ब॰ वानार्शि-ত॰ গ্ৰাছণ ভক্ত্যা ভক্তৈশ্চ নান্য-থা।। গ্রাহ্মগ্রাহ্ম বিচারোয়ণ বাণ-লিঙ্গে ন বিদ্যতে। তদর্গিত॰ জ-লং পত্ৰং গ্ৰাহ্মণ প্ৰসাদ সংজ্ঞষা।। বাণলিঙ্গে স্বয়ন্তুতে চন্দ্রকান্তেন্দ্র

সংস্থিতে। চাব্ৰাষণ সমং জ্বেষণ শক্তো নৈবেদ্য ভক্ষণ্ডৈ ।। ইতি निवनात्रममः वामः ॥ निवटनाकः पुर देवनामः। यथा । বিল্পত্তৈ রখত্তেশ্চ যে। লিঙ্গণ পূজ্যেৎ সরুৎ। সর্বপাগৈ র্বি-निर्मुकः निवलाक महीयछ ।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বধৃত ভবিষ্য-পুরাণ।। শিবস্যভূবন জনশ্চ।। শিববল্পভা স্ত্রী শতপত্রী।ইতি রাজনির্দণ্টঃ।। শিবপ্রিষে ত্রি।। শिवविद्या जी निक्रिमी। देखि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ निववनी जी निकिनी। श्रीवनी । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ শিববাহনঃ পু॰ অনজান্। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ শিবশেখরঃ পু॰ বকবৃক্ষঃ।ইতি জটাধ্রঃ।। ধুস্তুরঃ। ইতি রাজ-निर्धकैः॥ निवनामङक्नाः শিবসাযুজ্য ক্লী মোক্ষবিশেষঃ। । স চ শিবেন সঁহযোগঃ। যথা।

নাগরখণ্ডে। উপবাস প্রভাবে-

ন বলাদপি চ জাগরাৎ। শিব-

রাত্রে স্তথা তদ্য লিঙ্গুয়াপি

প্রপূজ্যা ৷৷ অক্ষযান্ লভতে লোকান্ শিবসাযুজ্য মাপ্সুয়াৎ ৷ ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ৷৷ শিবসুন্দরী স্ত্রী দুর্গা ৷ ইতি তন্ত্রশাস্ত্র ৷৷

निवा खी नूर्गा। मूकिः॥ रथा শিবা মুক্তিঃ সমাখ্যাতা যোগি-ना॰ साक्रशमिनी। निवाय या॰ জপেদ্দেবীণ শিবা লোকে ততঃ স্মৃতা।। ইতি দেবীপুরাণে ৪৫ जशायः ॥ 🟶 ॥ जिन ह । नि-বা কল্যাণ ৰূপা চ শিবদা চ শিবপ্রিয়া। প্রিয়ে দাতরি চা-শব্দঃ শিবা তেন প্রকীর্ত্তিতা।। रेि बन्नोदिवर्र्ड श्रक्ति विश्रेष ৫৪ অধ্যাষः ॥ অপর্ঞ । শুশ্চ কল্যাণ বচন ইরেবোৎক্রফবা-চকঃ। সমূহবাচক শৈচব বা-কারো দাত্বাচকঃ ॥ শ্রেষঃ সংঘোৎক্রফালত্রী শিবা তেন প্রকীর্ত্তিতা। শিব রাশি মূর্ত্তি-্মতী শিবা তেন প্রকীর্ত্তিতা ॥ শিবো হি মোক্ষবচন শ্চাকা-রো দাতৃবাচকঃ। স্বর্য নির্বা-ণদাত্রী যা সা শিবা পরিকীর্ত্তি-তা ।। ইতি ব্ৰহ্মবৈবৰ্ত্তে ঐক্লফ্ল-জন্মখণ্ডে ২৭ অধ্যাयः ॥ 🟶 ॥

भगीवृकः ॥ रत्रीखकी ॥ भृगानः ॥ जानवि । इंजानतः ॥ जाम-লকী। ইতি মেদিনী।। বুদ্ধশক্তি-বিশেষঃ। স তু দাবি॰শজিনমা-তা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। হ্রি-षा ॥ पूर्वा ॥ गाद्राहना । इंडि त्राक्रिमिर्गण्डः ॥ 🛊 ॥ 🛊 ॥ नृगा-वना धतः **ख**ङाखङ गर्थ।। (भ। ভন : শুভফলাপ্তিসূচক কথ্যতে-ত্যবিভথ শিবারুত। শাস্ত দীপ্ত কঙ্গভা॰ বিশেষতো জ্ঞান মত্র চ मरमाशयुक्राटा ॥ मश्वा मिश्रका-**मिननाथ यूका विवयमाञ्चा ज्व-**তি প্রদীপ্তা। সা ধূমিতা যা॰ স-বিতা প্রয়াতঃ শেষা দিগস্তাঃ কি-व शक्ष माखाः ॥ मक्षा मिटेशमी স্থলিত৷ দিগৈন্দ্রী প্রধূষিতা চা-নলদিক্ ক্রমেণ। প্রত্যেক মেক॰ প্রহরাফকেন ভুঞ্জে দিশোফৌ সবিতা ক্রমেণ ৷৷ আদ্যে দিনস্য প্রহরে প্রবৃত্তে মহেশ দেবেশ হতাশ দিক্ষু। শিবা রটন্তী সরু তে নরাণা সংত্রাস কাষ ব্যষ বন্ধনানি॥ অফ্লো দ্বিতীয়ে প্রহ-রস্য ভাগে সহসুনেত্রানল কাল দিক্। শিবা রটন্তী স্ক্তে ন-রাণাণ সংতাস কাষ ব্যয় বন্ধনা-

নি।। ব্রান্দ্যে তৃতীবে প্রহরে দি-नमा श्वाक्ष देवत्यव याजू निक् । শিবা রটন্তী সরুতে নরাণা সংক্রাস কাষ ব্যয় বন্ধনানি।। সমাগতে ২হ্নঃ প্রহরে তুরীষে প্রেতেশ রক্ষঃপতি পাশিদিকু। শিবা রটন্তী ক্ষকতে নরাণা সং-ত্রাস কাষ ব্যষ বন্ধনানি ॥ আ-দ্যে নিশাষাঃ প্রহরে প্রবৃত্তে র-ক্ষোধি যাদঃপতি বাতদিকু। শি-বা রটন্তী ঙ্গরুতে নরাণাণ সংত্রা-म काय वाय वन्ननानि ॥ ততো দিতীয় প্রহরে রজন্যা স্তোযো-धिनाथानिल मामिष्कू। निवा রটন্তী সরুতে নরাণা সংত্রাস काय वाय वन्ननानि ॥ यात्म जृ-তীযে ২পি চ যামবত্যাঃ সমীর দোষাকর শস্তু দিক্ষু। শিবা রট-ন্তী সরুতে নরাণাণ সংত্রাস কাষ ব্যয বন্ধনানি ৷৷ সমাগতে রাত্রি তুরীষযামে নিশাকরেশান সুরে-শ দিক্ষু। শিবা রটন্তী করুতে ন-রাণাণ সংত্রাস কাষ ব্যয় বন্ধনা-নি।। ইতি শিবাৰুতে দগ্ধ দীপ্ত ধূ-মিত দিক্ ত্রষ যামপ্রকরণ প্রথ-भः ॥ 🗱 ॥ ইতীরিত দিক্ত্রয ষা-भरगाशा कल विक्रक विकरिष्ठः

শিবাৰাঃ। জনো ২খ দিক্পঞ্ক यागरयागार क्लानि भूगा क মতঃ শুভানি ৷৷ কুতান্ত রকো वक्रगानित्वम् पिकामायात्म त-रिटेंडः मृगालाः। मानिस्वार्छ। শ্রেতি রিফীসিদ্ধি লাভঃ সুভিক্ষণ প্রিয়লোকসঙ্গঃ।। রক্ষঃ প্রচেতো ংনিল সোম শন্তু দিকু দিতীযে প্রহরে রুতেন। স্যাদিষ্টবার্ত্তা-ঞাতি রিফীসদ্ধি লাভঃ সুভিকণ প্রিয়লোকসঙ্গঃ ।। জলেশ বা-তেমু শিবামরেশ দিক্ষারবেণ প্র-ह्र वृञीय। मामिस्वार्वाव्य-তি রিষ্টিসিদ্ধি লাভঃ সুভিক্ষণ প্রি-যুলোকসঙ্গঃ ৷৷ সমীর সোমেশ जूरत्रण रङ्कि मिक्कु यद्मा अहरत চতুর্থে। স্যাদিষ্টবার্ত্তাশ্রুতি রি-ঞ্চিসিদ্ধি লাভঃ সুভিক্ষণ প্রিষলো-কসঙ্গঃ ৷৷ শশাৰু ৰুদ্ৰেন্দ্ৰ হতাশ काल मिक्कांत्रदेवः शक्ष्मयाम्जा-েগ। স্যাদিঊধার্স্তাব্রুতি রিউসি-দ্ধি লাভঃ সৃতিক প্রিয়লোকস **दः ॥ ঈশান শ**ক্রাগ্নি ক্রতান্ত র-কো দিক্ষু স্বরেণ প্রহরে চ ষষ্ঠে । স্যাদিষ্টবার্ত্তাশ্রুতি রিষ্টসিদ্ধি ৰ্লাভঃ সৃভিক্ষ প্রিয়লোকসঙ্গঃ ।। ইন্দ্রামি কালাসুপ পাশপাণি

দিকারটবং সপ্তম্যামকালে । শ্যাদিষ্টবার্ত্তাশ্রুতি রিফসিন্ধি ল্লাভঃ সুভিক প্রেয়লোকসঙ্গঃ ॥ অত্যন্তক্ষেখ্ত পাশি বাত **मिक्किका व अर्दा इत्या । मा**-দিফবার্ত্তাঞ্রতি রিফসিদ্ধি র্লা-**७ः मृजिकः श्रियत्नाकमङः ॥** ইতি শ্রীবসম্ভরাজে শিবারুতে দিগ্নামপ্রকরণ দিতীয় ।। 🟶 ॥ একাদিকানা নিধনাঊমানা শিবারুতানা মধুনা যদর্থণ। প্রা-**गामिक अर्थेम् मिक्ट नवः यस्य** कल॰ তত्তमुनीत्रयामः ॥ धनानाः ভীষ্টাপ্তি মভীষ্টলাভ প্রুবং ত-তো হর্থস্য ফল॰ শুভঞ্। ভয়॰ প্রলাপ সকলক্ষ্ণ সৌখ্য মেকা-দিশবৈদঃ স্বৰূতে প্ৰশান্তে ॥ ভ-यानानिकें क्षांठि तर्थशनि तिरेके ৰিষোগো মহতী চ ভীতিঃ। স্যা-षिश्रहाश्चि भारतभक्ष मीरश्च (च्या-দিনা চেৎ ক্লতসপ্তকেন ৷৷ ঐ-শ্রুগে নিনাদে প্রথমে হর্থলাভো **ज्दक्ति**ठीरम निधिनर्भनकः। कः ন্যাণ তৃতীয়ে লভতে চতুর্থে অ-ধাগন পঞ্চনকে হর্থসিদ্ধি ॥ ষষ্ঠে রবে স্বপ্যতি ভূমিনাথো ভীঃ সপ্তমে স্যাদ্বিফলোফমেষ।

ত্রাসোগ্নিভাগে প্রথমে দ্বিভীযে নরাধিপঃ ঙ্গপ্যতি ভী স্তৃতীবে ॥ ঘাত শতবুর্থে নগরস্য শব্দে শি-বাক্ততে পঞ্চমকে চ যুদ্ধণ। বদস্তি তজ্ঞাঃ কলহঞ্চ যঠে ভীঃ সপ্তমে मां विकला २ छे गर्छ ॥ जाता শুভ॰ স্যাদশুভ• विতীবে বাম্যে মহাব্যাধিভষ তৃতীযে। স্বরে চ-তুর্থে স্বজনাগমঃ স্যাৎ পুত্রো ভবেৎ পঞ্চসু ফেৎক্কতেষু ।। জা-যেত কন্যা রটিতে চ ষষ্ঠে ভীঃ मश्राप मा विकला १ के गञ्ज । গ্রামস্য ঘাতো দিশি রাক্ষসানা মাদ্যে দ্বিতীষে ২পি চ গোঙ্গলস্য ৷৷ মৃত্যু স্তৃতীষে দ্বি চতুম্পদানা হানি শ্চতুথেপি চ পঞ্মে ২ত্ত। চৌরান্ডয়ণ রাজভয়ঞ্চ যথে ভীঃ সপ্তনে স্যাদ্বিফলো ২ফমস্ত ॥ শব্দে শিবাষা বরুণস্য ভাগে আদ্যে ভষ॰ হানি রথ দিতীযে। স্যাজাজ্দূতাগ্মন তৃতীযে দাহ শ্চতুর্থে খলু চৌরভীতিঃ।। স্যাৎ পঞ্চমে রাজভয়ঞ্চ ষষ্ঠে ভীঃ স-প্তমে স্যাদ্বিফলো ২ফমস্ত । বা-ষব্যভাগে ভষ মেকশব্দে ভযা-তিরেকে। ভবতি দ্বিতীযে ॥ বৃষ্টি স্তৃতীয়ে মহতী চতুর্থে মেঘাগমো

বৰ্ষতি পঞ্চমে চ। ক্ৰোধণ বিধন্তে নৃপতেশ্চ ষষ্ঠে তীঃ সপ্তমে স্যা-षिक्ता १२४ मञ्ज ॥ দিশ্যুত্তরস্যা॰ বিহিতে বিরাবে মিুষেত কশ্চিৎ প্রথমে দ্বিতীযে। মহাভয়ণ বিপ্র-বধ স্তৃতীযে ক্ষত্ৰণ চতুৰ্থে খলু इनाटक है।। विष् शक्ष्य यर्शतत्व চ শূদ্ৰো ভীঃ সপ্তমে স্যাদিফলো ২ফমস্ত । রাহো স্তথা দর্শন মা-দ্যশব্দে কেতো ৰ্দ্বিতীযে চ তথো-ত্তরেণ।। উক্কাপ্রপাত স্ত্রিযু দূর্দ্দি-नक ठजूर् छक थन् शकरम ह। সঙ্গো ভবেছৈরিজনৈশ্চ ষষ্ঠে ভীঃ সপ্তমে স্যাদ্বিফলো ২ফমস্ত ॥ चात्मा ज्राविष्ट्रमिन गीमात-শে বৃষ্টি দ্বিতীযে চ রবে শিবা-ষাঃ। বাত স্তৃতীযে স্বশনি শ্চতু-র্থে মিুষেত কশ্চিৎ খলু পঞ্চমে চ ।। লভেত পৃথী॰ নিনদে চ ষষ্ঠে ভীঃ সপ্তমে স্যাদিফলো ২উমস্ত । ইতি শিবাফকৈ রুতে স্বরাফক . প্রকরণ তৃতীয় ।। 🟶 ৷৷ ক্ষেম-লাভ পুনরাগমনানা নিশ্চয় यमिशिगा विश्वदः। स्यतः याजि পথিকঃ পরদেশ ত শিবা রুত-मथ প্रथमामः ॥ स॰ य॰ एनम॰ গম্ভ মজাুদ্যতানা পুশো শব্দা-

নুচ্চরন্তী শৃগালী। শাভাষা সা সিদ্ধৰে বাঞ্ছিতানা দীপ্তাৰাম্ব স্যাদভীক্ষকাষ ।। প্রাচী: দিশ সমুখভান্বিয় প্রতিষ্ঠমানস্য नद्रमा रमा। नकः मृशानी भू-রতঃ করোতি বন্ধ বধ বা প্র-করোতি তস্য।। প্রাচীদিগীশা-ভিমুখস্য পুণ্দঃ প্রস্থানকামস্য শিবা সশবা। ভিযে হর্থনাশাষ **ए पिन्या गावामा भून बाङ्ग्छि** কার্য্য সিদ্ধ্যে ।। প্রত্যর্ক মাশাণ চ-লিতস্য পূৰ্ৰাণ শিবা বিরাবণ পূরু-ষস্য যস্য। করোতি পৃষ্ঠে প্রক-রোতি তস্য সর্ব প্রকারা মভিলা-न निक्षि ॥ अश्वािंशत्ना यमा ह দক্ষিণাশাণ শিবা রবণ মুখ্ণতি দ-ক্ষিণেন। স্পাদিত্য সুক্তা যদি নো **जनानी' अव' ভবেত্তमा मशी**थ-তিত্ব• ৷৷ বৈবস্বতাশা• চলিতস্য यमा দিবাকর স্তিষ্ঠতি দক্ষিণেন। শিবা চ বামা স্বৰুতে বিৱাবং স্ म्लामाटा जमा ममस मिस्रे ॥ शू-मान् यहा याग्रकअभ् अवामी क-রোতি শব্দ পুরতঃ শৃগালী। আ-স্তে বিবস্বানপি সম্মুখন্চেৎ ভ-বেক্তদানী ষচিরেণ মৃত্যুঃ।। নর-मा सामाा॰ कन्न ७ विवारमाः मृ

গালভার্যা যদি পৃষ্ঠভাগে। কেৎ-कात्र गामूक्षि गानवमा मृज्यक পুক্রেণ ভবত্যবশ্যং ॥ দিশং প্রতী-চী॰ বজভঃ শৃগালী নরস্য যস্যা-ভিমুখী বিরৌতি। শান্তা স্থিতা भाउरनथमाजी मीखा जू मीख• কল ৰাতনোতি।। প্ৰাচেতসীণ मक्षिल्मा कार्शः मृगालिका-क्षम् जिल्लान । यमा जनानी॰ সুবহুননর্থান করোতি চার্থান-পি হস্তিপু॰সঃ॥দিশ॰ প্রচেতঃপ-तिशालामानाः नत्रमा यमा वज-তঃ শৃগালী। বামা বিরাব প্রক-রোতি শান্তা ভবন্তাভিপ্রেত ফ-লামি তস্য।। বো বারুণীণ যাতি क्षिण मनुषाः मृगुन् निवाय। त-টিতানি পৃষ্ঠে। গতস্য তস্যা-ও হতাশভীতি,রসংশয় স্যাৎ জবিণক্ষমশ্চ।। যস্যোতরাশা॰ চ-লিতস্য পুশ্নঃ প্রাচ্যাণ শিবা মুঞ্চ-তি কেৎক্তানি। ভানুঃ প্রতী-চ্যাণ বিহিত স্থিতি শ্চেদপেক্ষিত• সিদ্ধ্যতি তৎক্ষণেন ৷৷ মুঞ্চত্যুদী-চীণ চলিতস্য পৃষ্ঠে শিবা বিরাবণ পুরুষদ্য যদ্য। আন্তে চ মধ্যে নভদো বিবস্বাণ্সদ্যার্থ হানি র্ম-রণ প্রদিষ্ট ।। সবেরকাষ্ঠা প্র-

তि यः প্রযাতি জালামুখী চাতি-মুখী বিরৌতি। তদ্যাধ্বাদ্যাভি-মতার্থ সিদ্ধি ভবেচ্চ সম্পূৎ পুন-রাগমশ্চ ॥ তিগুতি তীত্রকরো দি-শি যুস্যা ফেৎ স্বব্ধতে যদি: ত-ত্র শৃগালী। তদ্বজতঃ পথিকস্য ভবেতা॰ নিশ্চযতো ধন জীবিত नारमो ॥ प्रक्रिनठः व्यथमः यपि পশ্চাৎ বাৰগতা পথিকস্য শৃগা-লী৷ ফেৎ সৰুতে সৰুতে তদব-শ্য॰কেন ধনাপ্তি গৃহাগননানি।। অধ্যাস্য শান্তা॰ কন্ধভঃ নরস্য वामा मृगानी यमि वा ब्रवेखी। তদার্থলাভ বিতরত্যবশ্য মর্থক-য॰ দক্ষিণতো রটস্তী ॥ বামা প্র-দীপ্তে কঙ্গভঃপ্রদেশেখলাভ• ভ-থানর্থ মুপাদিশন্তি। শিবারটন্তী পথি দক্ষিণা তু ক্ষিপত্যনৰ্থানথ-मक्रितृ ॥ भार्छ निगर्छ यनि বা প্রদীপ্তে পৃষ্ঠে প্রমাণে প্রতি-ষেধ্যিত্রী। শকাষমানা তু শিবা পুরস্তাৎ নিমজ্জযত্যাপদগাধ-मिटको ।। वाटम श्रमदा **পू**त्र-তোথ পৃষ্ঠে পুংসঃ শিবা জন্মতি যত্র তত্র। আযান্তি চৌরাঃ **প্রথ**-মে বিরাবে দ্বে। র্ভবেক্তক্ষর দ-र्गनकः ॥ नृशामदता २थीगमनः

তৃতীবে তূর্ব্যে ক্ষতিঃ পঞ্চমকে ২-र्थलाञ्डा वानिका मितामि कलाय বৰ্চে ভীঃ সপ্তমে স্যাদ্বিকলো ২-ঊমস্ত ।। হাহা রব॰ দুঞ্চতি হাট-ভাবা হাস্য তু ত্স্যা স্তদুদাহ-রস্তি। অত্যেসরা বা পথি যা বি-ষাসোঃ সা দ্বিপ্রকারাপি মনো-त्रशादेखा ॥ नृशमा याजा ममस्य পুরস্তাৎ প্রষাতি চেদ্বর্ম নিবেদ-ষম্ভী। সর্ব্যাচ্ছিবা বৈরি পরাভ-ব॰ তজ্জযশ্ৰেষঞ্চাভিমত৽ ধ্যাৎ।৷ কার্য্যান্তরেম্বপ্যন্গম্যমা-ना (अयः अमा भारतिम अपि-स्रो। শিবা প্রদীপ্তে তু দিশি প্র-দেশে সমারটন্তী নহতে ভয়ায়া৷ ज्याकारम मीख निमि अमीरेख नीटेंग न्ना शिष्ठ ख्यानि प्रती । यहां छि नर्बागि नास्तानाः-শান্তস্থিতা সৰ্বভ্যপ্ৰদাত্ৰী ৷৷ য-দা চ নদ্যুত্তরগা নরাণা শব্দ मृगाली अङ्गरक कमाहिए। ठर्छ-घटा ७९ भित्रक्रनीय गर्ख्य ভাবি জলেচরেভ্যঃ ৷৷ ইতি শিবা क्र वाजा अक्त्रन हजूर्य ।। 🗱।। স্থান স্থিতানা মপি যোগভাজা• देनियिखिकांना मूशिंमगुटा जू । শিবাবিরাবৈ রশিব শিবক সুনি-

শ্চিতার্থ• মুনিসম্মতেন ৷৷ করো-তি ফে ফে ইতি সৰ্বদিক্ষু যদা তদা স্থানবিঘাত যুদ্ধে। শিবা-विधरख कृषिण षमः थान् तो জান্ স্বরান্ মুঞ্তি চেদুপেকাণ ।। नित्रखत्र॰ तोि विनिक् निक् সমন্দ কারুণ্য রবাতুরা চেৎ। অ-পত্যমোহেন যদা শৃগালী ত্যক্ত-ম্পৃহা সা কথিতেহ তজ্জেঃ॥ স্থিদা প্রদীপ্তে কন্সভো বিভাগে জ্বালামুখী ফেৎ স্বরুতে ২তিরৌ-ডে । গ্রামস্য তস্য প্রকরোতি না-শৃণ তস্যাথ বা তিপ্ঠতি যস্য মধ্যে ৷৷ গ্রামস্য মধ্য সমবাপ্য যস্য জ্বালামুখী মুঞ্চতি ফেৎক্নতানি । স শূন্যতা॰ গচ্ছতি নিশ্চষেন লোকদ্য বা স্যাদস্থ প্রভূত।।। গ্রামান্তিকে সপ্তদিনানি যাবৎ মহাভযোৎপাদিত ফেৎক্তানি । বিরৌতি চেত্তৎ সরুতে শৃগলী তদাসি লোকস্য ভষ প্রভৃত ॥ মধ্য দিনে যাবদহানি পঞ্চ শিবা সমীপে নগরস্য যস্য । বিরৌভি যাত বিদধাতি তস্য ভষঞ্চ বহ্লি-প্রভব• প্রভৃত• ।। পঞ্চার্দ্ধরাত্রাণি কথঞ্চিদেষা জুরারবা ব্যাহরতে শৃগালী। ষস্যান্তিকে ত বহবো

হঠেন মুক্ষন্তি চৌরা জন সন্নিবে-শে ৷৷ স্থানস্য যস্যোপগতা সমী-প• দিনানি পঞ্চোচ্চরতি প্রভা-তে। স্বরেণ রৌদ্রেণ শৃগালভা-**র্য্যা স্যাত্তত্ত হানি মহতী নরাণা**ণ ॥ সুরক্ষিতস্যাপি মনুষ্যলকৈ র্থা-মস্য শীযু॰ গ্রহণ বিধত্তে। ত্রয• দিনানাণ দিবসাবসানে শিবা র-টম্ভী পরুষ স্বরেণ ৷৷ দিক্ষারটন্তী সকলাসু রৌজ ভুগত্যখিনা প-রিতঃ পুরশ্চেৎ। শৃগালভার্য্যা খ-লু তছুবীতি যুদ্ধ নহত্তত্ৰ মহাভি-ষাত ।। স্বালা বিমুঞ্চ্যতিরৌ-जनामा नमाञ्चा शावि या न-মস্তাৎ। কৌমারক॰ যা জনযত্য-কস্মাৎ স্বর্যাচ্ছিবা সা যুবরাজ-পাত ৷৷ রোমোদান যা জনয-ত্যকন্মাৎ কে ইত্যতিক্রুররবা ন-রাণা ৷ মূত্র পুরীযন্ত তুরঙ্গনা-ণা॰ সা সৰ্বদা স্যাদশিবা শিবেহ ॥ তরঙ্গিণী রোধসি সৌম্যৰূপা॰-জীন্ পঞ্বা মুঞ্তি যা নিনাদান্। শিবাণ শিবাণ তাণ নৃপতিত্ব দাত্রীণ বন্দেত দেবী মভিবন্দনীযা ।। শ্মশানভূমে দিন মধ্যভাগে মধ্যে রজন্যাঃ স্বগৃহ প্রদেশে। যা রৌ-তি তস্যৈ বলি মর্যাযুক্তণ ভক্ত্যা

প্রদদ্যাদ্যদি ভত্রমিচ্ছে ।। সর্বে-ষু কাৰ্য্যেষু সমুদ্যতেষু ৰুলিঃ শি-বাষা বিনিবেদনীয়ঃ। গুৰু জি य শ্মিন্ বিষধে ২জুপেজ্য দেবী ব-লি জন্পতি তত্ৰ সিদ্ধিশা ইতি শি-বারুতে স্থানস্থিত প্রকরণ পঞ্চন ॥ # ॥ कथाल दिन्निकान मिना-नी॰ मान्ननागममस्टन मित्रमाः। **मिवायस बनिवाधिकतम्बन्याधि** তাথিল সমুদ্যতকার্য্য ।। শুন্যা-লষণ রুজগৃহণ শাশানণ চতুষ্পথণ माठृगृश् जलाजः । बन्धावनि भ्ठवद्ग त्यव यामा बिन्धमानाय मजाः अदम्भाः ॥ दञ्चाकः मश्रामृ **ठि**ज्थाति दिल्ला विज्ञानिक मंखिल कः विषधा ९। भोत्रानिक स्माक পরীক্ষিতায়াঃ সংগৃহ গো গোময मखरीकार।। यठाख्कीर्वत्तर।-ষা ৰশ্ব্যায়াশ্চ বিশেষতঃ। ব্লোগা-ৰ্ত্ত নবসূতায়া নগো গোমৰ মাহ-রেৎ।। তন্মিদ্বিচিত্র• বিতত ৰিদ-ধাৎ পিফাক্তকেনাফদল সরো-জ। সংপূজ্যেত্তক্ত সূরাধিপাদীন্ क्रां मर्वानिश लाकशालान्।। মধ্যে সুতৈঃ পঞ্চভি রভ্যুপেতা শিবাহিতা পিউমমী প্রসন্ম। পু-জ্যা শিবা ত্যাতি ভক্তিযোগাৎ

প্ৰভূত পূজাকত ধূপ দীপৈঃ ৷৷ माजा ७८ जो पन माम जनते थ री-बक भूभिकाभिय भरेगाः। मःजृः তি রক্ত নরাসন মাক্র বৃদ্ধিমতা विकर्णनिकार्या। आशास्त्री॰ বাপ চতুৰ্কশীয়া সংমন্ত্ৰ্য মন্ত্ৰেণ চ मुखकुषः। बिल् लिकामा निर्णि नि अध्यन ममासन्या यमि छज मिट्हिका। जब मक्षः। उ मिट्द बानामूथि विन गृहान गृहान ह ফট্ স্বাহা। ওঁ শিকে শিকদুতি ভ-গবতি চণ্ডে ইদ মৰ্ঘ্য বলিলীলা সমূচিত গৃহাণ গৃহাণ আগচ্ছ আগচ্ছ বাষুবেগেন শুভ: স্ক **ब्रह्म कारा। ই**তার্ঘ্যমন্ত্রঃ ।। বলি-দানাষ মন্ত্রান্তরণা ওঁ নমো ভগ-বতি এন এন বলি গৃত্র গৃত্র गम्न भूल धूल मीलामिक मर मर পচ পচ ঘোরৰূপিণি ভো ভগব-তি পিবত পিবত স্বাহা॥ এতস্য মন্ত্ৰ দ্বিত্যস্য মধ্যাদেকেন কেনা-शा जिमस्त्रीयः। बिनः गिवायाः দুমহাপ্রভাব পৃথক্ পৃথক্ মন্ত্র-म् ग॰ यान्छ ।। छात्रृत बङ्घामन कृष्मिनां टिर्निमिखिकः मात्रन-শাস্ত্রদক্ষণ্ধ প্রপূজ্যেত্তত্ত্ব ভবত্য-ভী ফ মাচার্যার্য্যে পরিতোমি-

তে হি ৷৷ অন্নেষিকা বহি ক্লভা-छ क्रज थिकानि श्र्वाकिक्रयन - সার্দ্ধ । জ্যেষ্ঠাঞ্চ সম্ভাজা বিরৌ-তি एक ध्यायकती अपूर्व गिरि-नी मा ॥ शिर्डिविनी नई ममीहि-তেষু দেবী ভবানী ভূবি কেরবা চ া ক্বতাধিবাসা ক্রপষা সদৈৰ শিবা-क्रटा তেन यटा विदान्।। इंडि শ্রীবসন্তরাজশান্তনে সদাগদার্থ শোভৰে সমস্ত সত্যকৌতুকে বি-त्रिक्टि॰ गिराइस्ट॰ यर्छ॰ ॥ 😻 ॥ অথ তান্ত্ৰিক শিবাবলিঃ। তদুক্ত क्ल कृषां मर्गे । विस्तर्त थाष्ठ-दत वो भागात्म वाथ माधकः। या अधाय देमदर्गाः मन्त्राका-ल भिरतमस्य ।। कानि कानी-তি বক্তব্য• ততঃ সা শিবৰূপিণী। পশুৰূপা সমাযাতি পরিবারগ-লৈঃ সুহ।। ভুক্তা রৌতি ঘদৈশা-ना। गूथ मूखाला मूखतः। ७-(पर वक्षण छमा खनाथ) क्षा-मृष्यगः।। व्यवना, यहां पिषाटनन नि-যত তোষযেচ্ছিবা ৷ নিতাপ্রা-ন্ধা তথা সন্ধ্যা বন্দন পিতৃত-প্ৰণা তথৈৰ স্বলস্ব্যোদাণ মি-. ত্যতা সলপ্জনে 🛊 পশুৰূপাণ **मिवा॰ सि वी॰ स्वा मार्फियि निर्ज**

নে ৷ শিবারাবেণ তস্যাশু সর্বণ মশ্যতি নিশ্চিত। জপ পূজা বিধানানি ষৎকিঞ্চিৎ সূক্তা-नि है।। शृहीषा नाश मानाय শিবা রোদিতি নির্জনে। এক্যা जुजारक बंब निवंश (एवं रेज-प्रव ॥ छेट्टिय गर्नमकीना थी-তিঃ পর্য দূর্বভা। পশুশক্তিঃ পশিশক্তি নরশক্তি র্যথা ক্র-মাথ। পুজিতা দিগুণ কর্ম সা-ष- তৎ সাধ্যেদ্যতঃ। তেন সর্ব অধপ্নেন কর্ত্তব্য পূজন মহৎ।। द्राकामि ভ्रमाशक मिनास्त ভবাদিকে। শুভাশুভানি ক-न्यापि विचित्रा विन गाश्दार ॥ গৃহ দেবি মহাভাগে শিবে কা-লাগিৰপিণি। শুভাশুভ ফল राकु बहि गुङ्ग रिन॰ ७२ ॥ अर भूकार्या माछत्या चलिः अ-वजन विषः। यमि त्मा जुङाएठ বৎস ভদ নৈব শুভ ভবেৎ।। শুভ বদি ভবেত্তত্ত ভূজাতে তদশেষতঃ। এব॰ জ্ঞাত্বা মহা-ইভিতন্ত্রসারঃ 🔃 শিবাটিক। দ্রী বংশপত্রী। ইভি ভাবপ্রকাশঃ ৷৷

निवाद्मक क्री टेमह्नवः। ইতি व्राजनिर्घन्छः ॥ निवमत्य वि ॥ निवानी खी क्यडीव्कः। इंडि শব্দচন্দ্রিকা।। দুর্গা। ইতি লো-কপ্রসিদ্ধা 11 শিবাপ্রিयः পু ছাসঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ iা শিবস্য শিকাষা অপ্রিষবস্তুনি বল্লভেচ ত্রি গ্র শিবাপীড়ঃ পু॰ বকৰ্কঃ।ইতি त्राजनिर्वकेः ॥ भिवा भित्रत्याः শেখরশ্চ 11 निवाकना जी भंगीतृषः। देख त्राकनिर्धकः॥ শিবারাভিঃ পু॰ সম্বুরঃ। ইতি गक्रमावा ॥ जिकानिवट्याः च-ত্রুশ্চ 11 गिरालय॰ क्री भागान॰। श्रातवनी ॥ भियालयः पू॰ तक्ककुलमी। रेकि नकिता। निरमागृरः । यथा। त्रामार्कतहिककायाः । ठल मूर्या वार्ट् शिर्य नि**कारक**-ত্তে শিবালবে। মন্ত্ৰমাজ থাক-থন মুপদেশঃ স উচ্যতে।।। ইতি তিথ্যাদিতকুণা निवानः प् भृगानः। हैि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

শিবাস্থৃতিঃ স্ত্রী জবন্তীবৃদ্ধ। ইতি শব্দচন্দ্ৰিক।।। **णिवाङ्गामः शू॰ वकवृकः। ই**ভি त्राजिनिर्विक्तः॥ भिवन्तानम्भरः॥ হ্বা ত্রী রুজজটা। ब्रोक्निर्यन्छैः॥ शिवनागरक वि॥ শিধাক দী ক্রদ্রাক। ইতি त्राजनिर्वकैः॥ শিবিঃ পু॰ হি॰সুপশুঃ। ইভি किकाश्वरमयः ॥ सृद्धितृकः ॥ ताक्रविरमयः। मह उनीनत्रता-জপুত্রঃ। ইতি মেদিনী।। তস্য চরিত্রণ বধা। নৈত্রেয উবাচ। मृगू त्राकन् श्रेवकार्याय स्रमाध्य শিবিনা যথা। সমাণ্শণ দত্তবান্ मछाः भूता व्योगीनदता यूवा ॥ সত্যদানরত জ্ঞাত্বা বিবি মি-স্রাপ্তকর্ণী। জিজাসার্থণ স-व्यक्तां वर्खमाटन महाश्रद्धता। ৰক্নি কুৰা কপোতন্ত হরি-**ट**णानाक शुन्रध्यतः। भन्नगाकी ं महीभाकः निनित्ना छर्यविख-্ৰা ৷৷ জাহি মাং পৃথিবীপালে-ত্যবদৎ শোনজান্তবাৎ। স ত-মাখাসখাসাস কলোড॰ শরণা-াতং মারাজান যুপরম্যাথ শ্যে-नः ध्यावाह मःमनि। वहनः मृत्

य त्राजन् क्थार्डमा अपूरिनः ॥ धर्माश्चान श्वा नाष्ट्र देव भृथि-ব্যা॰ সর্বপার্থিবাঃ। তবিরুদ্ধ॰ ক-থ কর্ম কর্ত্ত্ নিচ্ছসি পার্থিব।। नर्वमा मुन्नामः वार्षाः वनतार्थाः স্ত ক্সাচিৎ। পরার্থা ভবতো निष्ण नकलमा ज्या दिव ॥ নোপকারপরে ২প্যেব মুপকার-পরো জনঃ। অপকারপরে ২পি ष मूलकात्रलद्रः नम् ॥ मटेमवः বিহিতো ধাত্ৰা ভক্ষোৰণ তণ স মুৎসৃজ। স শ্যেন মাহ সংপ্রাপ্ত खागाथी मनारश मम।। जनाउ-বাহ ন সমর্পবিষ্যে কপোতক শ্যেন বদত্ত যুক্তণ। স্বণমন্যসেতৎ করবাণি সর্ব মৃতে কপোতাৎ খ मू गडा भव।। जूडा हि मूमश-**जाका** अयक्शिय विश्वमा स्था কামৰদে চান্যছক্ৰবিদ্বা কপো-তকণ্য শ্যেনঃপ্ৰাহ কি মেতত্তে , প্রীভি রাসীৎ খগে দৃঢা। কথ-कित्रग जूनावि य या गानि श्र-বচ্ছ দে।। রাজা তমত্রবীজুফৌ यत्य माभानि माठरम। अङ्ग्य-চ্ছাৰি তে সন্তঃ ব্যাণ্সণ তুল্বা পোতেন সম নৃপ:। উৎক্বত্য

ভোলখামাস প্রস্থাইটো মনসা ত-७: ॥ जूलया धि्रमानञ्ज कर्णा-তো ব্যতিরিচ্যতে। পুন স্চোৎ-ক্লত্য মাংসানি ততঃ প্রাদাৎ স পার্থিব: ॥ ন বিদ্যুতে যুদা মাণসং কপোতেন সমূপ কচিৎ। ততঃ প্রকীণ মাধনাপি সাধু: সুখযতে পরে ৷ যদা তেন ন তুল্যা তৎ म जूना माक्रव्य वयन। ज्ञास्त्र বরস্ত্রীযু ন রাজ্যে ন চ জীবিতে ॥ করুণাসক্তচিত্তেন তেনাপে-का क्या कि । भन्नमृत्थाजूना নিত্য স্বস্থানি মহাস্ত্যপি ৷৷ না-পেক্সন্তে মহাত্মানঃ সর্বভূতহি-তে রতাঃ ৷ পরার্থ মুদ্যতাঃ সন্তঃ সম্ভঃ কি॰ কি॰ ন স্বৰ্ধতে ॥ তা-मृभगावूद्ध बात्रि जलरेम छ॰ প্রগীষতে। এক এব সতা॰ মার্গো यमनीक्रञ्भानन ॥ मर्ख मक-রোৎ ক্রোডে পাবক যদগা প-তিঃ েআত্মান পীডবিত্বাপি माध्रः मूथया श्रेतः ॥ क्लामयन् তাপিতান্ বৃক্ষো দুঃখঞ্ সহতে यदः। यथ छित्रम् नमाकत्व श्-ষ্পবর্ষণ পপাত চ।। দেব দুব্দুভ-(या तम् इन। योगीनरत्र नृत्य । ভত স্তুস্য তদা জ্ঞাত্বা বাক্য॰

চৈতদভাষত।। শত্ৰুঃ স্বৰূপ না-স্থায় ধর্মে রাজ্ঞঃ পরিস্থিতি ৷ ই-ন্দ্ৰোহ মন্মি ভদ্ৰু তে কপোতো र्वावार्नः ॥ जिखानगारनो ত্বা॰ রাজনিম॰ যজ্ঞ মুপাগতে। মহাকারুণিকেনেহ্ যৎক্তুত তৎ मूम्कत ।। रेनव् शृर्व नृशा कळू র্ন করিষ্যম্ভি চাপরে। যতে মাণ-সানি গাত্তেভ্যঃ সমুৎক্তানি পাৰ্থিব।। এষা তে সাশ্বতী কী-र्खि व्यक्तिनन् जित्राजि। पि-ব্যৰূপধর শৈচৰ পাল্যবিদ্বা মহীণ চির ৷ সর্বান্ লোকানতিক্রম্য বন্ধলোক গমিষ্যতি ॥ এব-মুক্তা তমিন্দামী জগাতু ব্রিদ-॥ শালষণ। রাজ। তু ক্রতু মিফ্বা ত মুমুদে দেবতা তদা।। ইতি বহিপুরাণে শিবে রুপাখ্যান-नामाधाग्यः॥

गिरिका खी यानिति गरः। याँ।পান ইতি খ্যাতঃ। ইতি ভরতঃ
।। ডুলী ইতি পালকী ইতি চ
ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। যাপ্যযানং ২। ইত্যমরঃ।। শিবীরথঃ ৩
। ইতি হারাবলী।। তদ্দানবিধি
র্যথা। বহ্লি রুবাচ। শৃণু তাবমহীপাল মহাদান মনুভ্রমং।

যেন বৈ দত্ত মাত্রেণ মুচ্যতে ন-त्रकार्गवार ॥ मार्गमीर्य ७८७ পক्ष ममूरभाषा श्दत पिंदन । माय काञ्चनत्या दानि देवनाथ-मा नत्र म ह ॥ कामनागः इति মভ্যচ্চ্য কলসোপরি সংস্থিত । শিবিকা॰ চক্রব•শোখা• ঋজু-माक्रमयी॰ जथा ।। जानीय म-মিধি বিকোঃ শুভুছত্র সমন্বি-তা । সংভূষ্য চ সগেঞ্কা জা-গর॰ তত্র কার্যেৎ ॥ বিদ্যাভি-জনসম্পন্ন বিদগ্ধ শাহ্রবিত্তম। আজ্ঞাসার শুচি দক্ষ কলতা-পত্য ভূষিত ।। প্রাতঃ সভার্য্য মভ্যচ্চা বাসোভিঃ স্বৰ্ণভূষণৈঃ। উপানচ্ছরিকাণ খন্দাণ পটকঞ্চুক বেণুকা ।। আদর্শ স্থগিকা পা-নীয়পাত্রণ কাণ্য্যভাজনণ। চত্বা-রো বৃষভা দেযা ধেনবঃ শুভ-লক্ষণাঃ ।। শিবিকাবাহকানাস্ত তথা ছত্রস্য ধারকে। বৃত্তি র্দেষা তথামঞ্ বর্ষান্ধ বান্দণস্য তু ॥ वर्ष वर्ष भून (पंष॰ बाक्सनमा তদৈব তু। বৃত্তি রেব স্বসংপত্তৌ वर्ष वर्षि वार्षिकी ॥ इंश्रम्-ত্রাতপত্রাণ স্বরু কেশব মে প্র-ভৌ। ছৎপ্রীণনাষ মে দত্ত॰ শা-

कृष्ण ॥ युक्त ि विकिर्विक

क्वितिक क्लाउँकः। निविक्ष-

বৃক্ত ব্লহিত প্রসিদ্ধেশ্চ পুরস্কৃ-

७ ।। मूलकंग हैं खरवश आय-

জবিদ্বাদ্যগায় বৈ ॥ ষৎ প্রভো শিবিকাণদেব প্রীতো ভব জনা-र्मन। पखरान् छ।न्दिप्रय मरा ত্মীকাষ পুত্রিণে।। সুরাপ স্তেয-রুৎ সঙ্গী অক্ষ । গুরুতন্নগঃ। শিবিকাদান মাহান্স্যাৎ মৃচ্যতে নাত্র সংশযঃ।। পিতৃপক্ষামাত্-পক্ষান্ পত্নীপকা॰ স্তথৈব চ। আত্মান বন্ধুপকা শ্চ তার্বে-मत्रकार्गवार ॥ जुङ्ग म विभू লান্ ভোগান্ ইহামুত্র সুথপ্র-দান্। সপত্নীকঃ সপিতৃকো বি-কুসাযুজ্য মশুতে ॥ ইতি বহি পুরাণে শিবিকাদানাধ্যায়ঃ।। **मि**विशिष्धः शू॰ महारमवः। ইতি শব্দরত্নাবলী ।। শিপিবিউশ-कार्थाभाव॥ शिवित॰ क्री निर्विनः। **इ**लामतः ॥ एव जागञ्चक देमनावादम । करेटक इंडाटना। नृशना मृत-

স্থানে ইত্যেকে। ইতি ভরতঃ॥

শিবিরম্ভ নিবেশে চ ক্লীবস্তু যুদ্ধ-

বেশানি। ইত্যুণাদিকোষঃ।।।।।

व्यथ निविद्रलक्ष्णः। 🕮 ज्ञाया-

নুবাচ। শিবির পরিখাযুক্ত

মুক্টেঃ প্রাকার বেটিত । যুক্ত

कालनभात्रक जि॰ह्वात शूत-

नक **उरेथर** ह ।। 🖝 ।। তত্ত্ব বিহিত निरिक्षकाद्ध यथा । विश्वकाङ्ग क्रवाह । क्रमा क्रमा ভরোঃ কাপ্ত॰ প্রশন্ত শিবিরে প্রভো । অম-व्यवस्थ रक्षाः या गर्बः माः वक् मर्गि ॥ औडगवानुवाछ । जा-व्यय नातिरकलक गृहिनाक ध-नश्रमः। भिवितमा यमीभारन र्शृदि भूखथम खद्भः॥ गर्वत मङ् লার্হ্ণ তরুরাজে। মনোহরঃ। त्रमालवृक्तः शूर्वित्रातृना॰ मन्न०-ला ख्या ॥ खंख्यमक मर्वज जूतकारता निभाभय । विद्यम्ह श-নসকৈত জয়ীরে। বদরী তথা।। প্রজাপ্রদশ্চ পূর্বিমান্ দক্ষিণে ধ-नम ख्या। मन्भरक्षमम्ह मर्बव যতে। হি ৰদ্ধতে গৃহী॥ জন্মুবৃক্ষণ্চ मािष्यः कमनाामाञ्क खथा। वसुर्यमण्ड शूर्वित्रम् मिक्ति भि-जेम ख्या।। मईज खंडमटेन्हर धन পুত্ৰ শুভপ্ৰদঃ ৷ হৰ্ষপ্ৰদো গুৱা-কশ্চ দক্ষিণে পশ্চিমে তথা।। ঈ-भारत मूर्थमरेक्टर मर्बरेखवः निमा-

ময়। সৰ্বত্ৰ চম্পকঃ শুদ্ধে। ভূবি **ज्जञ्जम खथा।। जलावू का**णि ज्या ७ भाषा मुक्त मुका मुकः। थब्कृ ती कर्त्वि । ठानि निविदत मञ्जालामाः ॥ वास्तृकः कात्रत्व-सन्ह वार्डा**यन्ड ए**ज्यानाः । लठाकलक एउम॰ गर्ब गर्बे নিশ্চিত ৷৷ 🛊 ৷৷ প্রশস্ত কথিত कारता निविक्षक निर्मामय। व-नावुरका निविद्यान्छ निविद्या नग-त्त्रि ह।। वटहै। निविकः निविद्त নিত্য চৌরভব ততঃ। নগরেষু श्रीकार पर्मना भूगा छ्या ৷৷ হে কারো তিন্তিতীবৃক্ষো যত্না-ख॰ शतिवर्द्ध्य। **भरत्र** १ सन्हानिः স্যাৎ প্রজাহানি র্ভবেৎ ধ্রুবং॥ শিবিরে ২তিনিষিদ্ধশ্চ নগরে किश्रिप्ति ह। च निविष्तः श्रिमिषा-**क्ट नगदायु ७था शूदा ॥ वा**ष्ट्रा মতিনিবিশ্বশ্চ প্রাক্ত স্ত পরিব-ब्र्जरबर । थब्क्रुंत्रम्ह एष्ट्र टेम्हर নিষিক্ষঃ শিবিরে তথা ৷৷ ন নিষি-कः अगिक्ष क जात्मयू नगद्मयू ह । वृक्षण्ठ हनकामीनाः शानाः म-क्लथमः।। आरम्यू नगरत हानि শিবিরে চ তথৈব চ। ইক্রুক্সশ্চ শুভদঃ সম্ভত্ত শুভদ স্তথা ৷৷ অ-

শোকশ্চ শিরীবশ্চ ক্রম্মশ্চ শু-ভপ্রদ:। কচ্চী হরিদ্রা গুভদা গু-जन कार्जक खथा।। र्द्रीककी ह শুভদা আমেষু নগরেষু চ। ন ব।-ট্যাণ ভক্রদা নিত্যণ তথা চামল-की अव ।। 🛊 ।। भकाना महि छ-ভদ সশ্বানাঞ্চ তথৈব চ। কল্যাণ মুক্তৈশ্রবসাণ বাজে স্থাপনকা-तिना ।। न'**७७अन म**रनाया मू-চ্ছমকারণ পর । বানরাণা ন-রাণাঞ্চ গর্দভানা গবা মপি ॥ अक्रुताना भूगानाना भार्काता-ণা মভদ্ৰক । ভেটকানা শূক-त्रांगा॰ मर्दियाका छाछ छान ।। ञे-শানে চাপি পূৰ্ৰিমন্ পশ্চিমে চ তথোত্তরে। শিবিরস্য জল• ভদ্র यनाखा ७७ स्व ह ॥ की एर्व প্রত্থে সমানঞ্চ ন স্বর্যায়ন্দির বুধঃ। চতুরস্রে গৃহে কারো গৃহি-णा॰ धन नामन॰ ॥ मीर्घ अञ्चः शति-মিতো নেত্রাঙ্কেনাপি সংহত**ে** । শূন্যেন রহিত ভত্ত শূন্য শূন্য-क्षम॰ नृगा॰ ॥ क्षाट्य रुखपाष পূर्व॰ मीर्व रुख्वय॰ ७था। গৃ-হিণাণ শুউদ্' দারণ প্রাকারস্য शृह्मा ह । न यशास्त्रात्म कर्खवा॰ किकियानाथितक अछ ॥ छ्यू-

রসু॰ চন্দ্রবেধ• শিবির॰ মঙ্গল প্র-দ•া৷ অভত্র• সূর্য্যবেধঞ্চ শিবির• यक्नाथमः। जञ्जमः मूर्यादाः ধ॰ প্রাঙ্গণঞ্চ তথৈব চ।। শিবিরা-ভ্যম্ভব্নে ভদ্রা স্থাপিতা তুলদী-म्गा । धन भूखश्रमाजी ह भू ণ্যদা হরিভক্তিদা ॥ প্রভাতে जुलनी॰ मृक्ते। अर्वनान कल॰ ल-ভেৎ ৷ মালতী যুথিকা ঙ্গন্দ মাধ-বী কেতকী তথা।। নাগেশ্বরণ মল্লিকা চ কাঞ্চন॰ বঙ্গল॰ শুভা। অপরাজিতা চ শুভদা তেষা মু-म्यान मीश्रिजः॥ शूर्व ह मिक्टन-চৈব শুভদ নাত্র সংশযঃ। উদ্ধৃ ষোডশহস্তেভ্যো নৈব পর্যা-मगृर• गृरी ।। **উर्দ्न•** वि•मण्डिरस्ड-ভাঃ প্রাকার ন শুভপ্রদ । সূ-ত্রধারণ তৈলকারণ স্বর্ণকারঞ্চ হী-व्रकः ॥ वाषीमृत्न वाममरशा न স্ব্যাৎ স্থাপন বুধঃ। ত্রাহ্মণ ক্ষ-ত্রিষণ বৈশ্যণ সচ্ছুদ্রণ গণকণ শু-ভ•া৷ ভট• বৈদ্য• পুষ্পকার• স্থা-शरय< শিবিরান্তিকে।।**♦**।। প্রশ্রে চ পরিখামান° শতহস্ত• প্রশস্ত: ক । পরিতঃ শিবিরাণাঞ্চ গম্ভীর **मगर्**खकः॥ मरह्छ शृर्दकरिक्षव পরিখা দারশীক্ষিত । শত্রো রগ-

मा॰ निवामा भगा त्यत मूरथन ह

।। मानानीना॰ विश्विजीना॰ हिछानाना॰ करेश्व ह। नियाना॰
मिश्रुवाताना॰ উजुबताना मजजक॰।। श्रुज्ताना॰ विहानाक्षारणात्रखाना मवाक्षिक॰। करंक्या मकितिकाना॰ मिविद्र कार्थ मीक्रिक्शना॰ क्रिक्शक्याथएखा उ०२ व्यक्षायः।।
है विद्यादिवद्ध श्रिक्षक्याथएखा उ०२ व्यक्षायः।।

শिवेश प्र याशायान । ইতি हातावनी ॥

শিবেষ্টঃ পু॰ বকবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শিবপ্রিযে ত্রি।। শিবেষ্টা স্ত্রী দূর্বা। ইতি রাজ-নির্ঘণ্টঃ।।

শিশিরঃ পু॰ হিসঃ। ইতি মেদিনী
শিশিরঃ পু॰ ক্লী ঋতুবিশেষঃ।
ইত্যমরঃ।। স তু মাঘ ফাল্পন
মাসন্বযাত্মকঃ। তৎপর্য্যায়ঃ।
কম্পনঃ ২ শীতঃ ৩ হিমকৃটঃ ৪
কোটনঃ ৫। স্কচিৎ পুস্তকে কোটনঃ ৫। স্কচিৎ পুস্তকে কোটনা কোডব ইতি পাঠঃ।
ইতি রাজনির্ঘনীঃ। তৎকালীন কলগণ্ডণা জলশকে অন্টব্যাঃ

।। ।। তত্ত্ৰ জাতকলং। দিবাল ভোগী মধুরপ্রাণাদী কলত্র পু-ভ্রাদিষ্তঃ ক্ষার্ডঃ। জোধী স্-ধী শ্চাককলেবরশ্চ বসঃ প্রস্-ভিঃ শিশিরাভিধানে:।। ইতি কোষ্ঠীপ্রদীপঃ।। ।। তত্ত্ব রগ-নীয়ানি। করীষধুমঃ সম্মংশ্বন দাহঃ শিশিরোৎকর্ষণ্ড। ইতি কবিকরলতা।। ।। অসা গুণাঃ । শিশিরং শীতলং বৃষ্যং শীতং বাতপ্রকোপনং। ইতি রাজ্ব-লভঃ।। অপি চা শিশিরঃ শীত-লো হতীব ককো বাতাগ্রিবর্জনঃ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।

শিশিরঃ ত্রি শীতগুণযুক্তঃ যথা

শীত গুণে তর্দর্শঃ সুষীমঃ
শিশিরো জড়ঃ তৃষারঃ শীতলঃ শীতো হিমঃ সপ্তান্যলিককাঃ ৷৷ ইত্যমরঃ ৷৷

শিশুঃ পুণ বালকঃ। তৎপর্বাযঃ। পোতঃ ২ পাকঃ ওছার্তকঃ
৪ ডিডঃ ৫ পৃথুকঃ ৬ শাবকঃ ৭।
ইত্যমরঃ।। শাবঃ ৮ জর্ভঃ ৯
শিশুকঃ ১০ পোতকঃ ১১ ডিফকঃ ১ই। ইতি শক্রত্বাবলী।।
গর্ভঃ ১৩। ইতি জটাধরঃ।।
তদ্য লক্ষণাদি যথা। বৃদ্ধশাতা-

তপঃ। শিশো রভ্যুকণ প্রোক্ত॰ वालमा हिम्म म्यू छ । तक्ष यहा -দি সম্পূৰা স্নাতব্যম্ভ সনারকৈঃ া প্রাক্ চুডাকরণ্টোলঃ প্রাগম-প্রাশনাচ্ছিতঃ। জমারস্ত স বি-**एक्टर**म गावत्योक्षी न वक्षन॰ ॥ ইতি গোপালন্যাৰপঞ্চাননক্ত স্মৃতিনিৰ্ণয় ।। অপি চা চতুৰ্থা-ष्ट्रनतामू क्षु वार्यमत्सी नमा वयः । শিশো র্ত্তণ প্রস্বৃত্তি গুরু সম্ব-कि वाक्षवाः॥ देखि बक्कभूतान বচনণ।। জাত মাত্রঃ শিশু স্তাবৎ यावपरकी मना वयः। म हि गर्छ-मत्मा एकत्मा वाकि माळ अमर्भः কঃ ৷৷ ভক্যাভক্ষে তথা পেষে বাচ্যাবাচ্যে তথানৃতে। তন্মিন্ कांटन न (मायः मार्थ म सावटमा-পনীষতে॥ ইতি মনুবচন ।। 🛊॥ তস্যাধ্যাপনক্রমো যথা । প্রার্ (या श्रक द्राजीत्ना वक्रगाणिमूथ) শিশুণ অধ্যাপষ্টেত প্ৰথমণ দ্বি-জাশীর্ভিঃ প্রপূজিত ।। ইতি মল-मामजरद वृष्णािजित्तनः ॥ 🛊 ॥ শিশুপুত্র তাকু। প্রবজ্যাশ্রম-নিবেধে। যথা । মাতর॰ পিতর॰ বৃদ্ধ ভার্য্য দৈব পতিত্রতা । শি-ঞ্চঞ্চ তন্য হিছা নাবুধূতাশ্রমণ

শিশুগা

बर्फ्र ॥ रेषि यरानिर्वापक्ष ।।।।। जनावाल मस्य अकेराः।। निखकः पू॰ क्लक्डिविटनयः। শুশুক্ ইড়ি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ । উनुनी २। ইত্যमतः।। ए उ পল ইতি খ্যাতে অভিচঞ্জল মৎস্যে। শিশুমারাক্তি শ্বৰ-ग্যভেদঃ উলুপী। **ইভি কলিঙ্গ**া-मयः। त्नास्य देखि भारका मध-স্যবিশেষঃ উল্পীত্যন্যে। ভা গাল ইতি খ্যাতে ইত্যেকে। শিশুমার এব উচ্যতে ইতি স ৰ্বস্ব॰। তথা চ রত্নকোষাদৌ চু-नृशी निख्नातः मापून्शी नि-ৰ্ভক তথা। উৰ্দ্ধুণ লুম্পতি ভ্ৰা-মাতি উলুপী লুপ ৯ শ প ঞৌ फ़्रा उर्शृदः अशामिशाक्षिन् यनीयामिषा ७ लागः ला ही र्यन षिबुद्याकारतात्रि। नि-শুক ন্তুলুপী বালঃ প্রোষ্ঠী তু সকরী দয়ে। রিতি বাচস্পতিঃ। চৰগাদিঃ কেচিৎ। শিশু রিব শিশুকঃ। শিশুকঃ শিশুমারেপি বাল-কোলুপিনো রপি। ইতি রুদ্রঃ। ইতি ভরতঃ ॥ অপি চ। উল্

शीमाष्ट्रवृशीय हून्शी हूनकी

णका । निख्य (क्टिंज नर्गायः निख्यादाक्रको अत्म ॥ देव-किम्थनादाक्रको अत्म ॥ देव-किम्थनादाक्र । इकि नक्दद्वा-भादक म क्यादश बद्रास्कः। इकि द्राज-निसंकैः ॥ क्या निख्यादः ॥

बानकः। ইकि दिनिनी ॥ वृक्ष-वित्यकः। ইकि ह्मिन्सः ॥ निस्थामा जी मिन्निवित्यकः ॥ मधा। निष्योगिकि निद्य गाष्ट्र भूगमानी निद्यानिका ॥ निस्थ-शक्षा सम्मन्ती छथा कर्म्भगस्माथ ॥ ইकि निक्याना ॥

শিশুচাক্রাষণ ক্রী ব্রতবিশেষঃ।
বথা। চতুরঃ প্রাত রগ্নীষাৎ
পিঞান বিপ্রঃ সমাহিতঃ। চতুরো ইন্তমিতে সুর্ব্যে শিশুচাস্রায়ণ স্মৃতং।। ইতি মনুঃ।।
শিশুতা জী শিশুদ্বং। শিশোর্তাবঃ। শিশোরবন্ধা। ইতি জটাবরঃ।।

শিশুদ ক্লী শৈশবং। ইত্যমরঃ।।
তৎপর্যাকঃ বাল্যশব্দে অফব্যঃ
শিশুপালঃ পু॰ চেদিদেশীযরাজঃ। স তু ক্লফেন হতঃ। শিশুপালবধকাব্যং মাঘেন ক্লতং।

তৎপর্যাবঃ। দনবোষস্তঃ ২ চৈদ্যঃ ৩ চেদিরাত ৪। ইতি জটাবরঃ॥ শিশুপালকঃ ৫। ইতি ত্রিকাপ্রশেষঃ॥

निश्रभातकः श्रूपः प्रमायन्यः। । इणि जिक्षाश्रामयः।। क्लिक-प्रमृकः । इणि गन्नास्तिक।।। यानकशालुकः जि॥

শিশুপালহা পু প্রাক্তকঃ হৈতি হেমচন্দ্রঃ ৷৷

শিশুভাবঃ পুণ শিশুষণ। তান্ত্ৰিকভাববিশেষঃ। যথা। উক্তানুজক্ষ যৎকিন্ধিৎ ক্রিয়তে সর্বদা প্রিয়ে। শিশুভাব ইতি খ্যাতঃ সর্বতন্ত্রেষু গোপিতঃ।। ইতি
তন্ত্রণ।।

শিশুনারঃ পুণ জলজনতে ।
শৌষ ইতি শুশুক ইতিচ থ্যাতঃ
। ইত্যমর্ভরতৌ ।। অস্যপর্যাযঃ শিশুকশব্দে জন্টব্যঃ ।।
অস্য গণনা গুণাশ্চ পাদিশব্দে
জন্মাঃ ।। তারাস্কার্ট্যতঃ ।
ইতি মেদিনী ।। তারিস্কারণ যথা
। শিশুমারস্ত যঃ প্রোক্তঃ স গ্রুবো যত্র তিওতি সমিরেশক্ষ
তস্যাপি শৃণুম মুনিস্তুম ।। বদক্ষা সক্ষতে পার্পণ দৃষ্ট্যা তমি-

শি ৰুচ্যতে। ভাৰতা শৈচৰ তারা-ন্তাঃ শিশুৰাৱীঞ্জিতা দিবি ॥ ञारस्कार जू स्वीि जीवसा-ভাষিকানি ভু৷ উত্তানপাদ স্ত-मा। विख्या मुख्दा रन्ः॥ बटका २४त्रण्ठ विटक्करमा भएकी मुकीन माञ्जिण्डा शक्ति नादायन म्हाटल व्यक्तिन शृर्वशामटकाः॥ বৰুণ শ্চাৰ্য্যমা চৈব শশ্চিমে ভদ্যা मक्षिमी । निमा मन्दरमञ्ज ख-স্য নিত্রে। ২পান॰ সমাঞ্রিতঃ ।। পুচ্ছেমিন্চ মহেন্দ্রন্চ কল্যপোথ ততো প্রবঃ। তারকা শিশুমার-স্য নাম্ভ মেতি চতুষ্ঠয়ণ।। ইত্যেষ मिदिरिया शृथिवा। जाि या॰ ज्था । श्रीभाना मूमशीनाक পৰ্বতানাঞ্চ কীৰ্ত্তিতঃ।। বৰ্ষাণাঞ্চ नमीनाक स्र ह एवम् वमा दि दि । তেষা বৰুগ মাখ্যাত সংক্ৰেগঃ व्यवजार भूनः ॥ भाष देवकदः কাৰ ভতো বিপ্ৰ ৰসুন্ধরা। পদ্মা-কারা সমৃত্তা পর্বতাক্যাদি সং-যুতা।। জ্যোতী সি বিষ্ ভূ বনা-नि विकूर्यनानि विकृ विनित्न। नि भन्छ। नहाः সমুদ্রাশ্চ म এব সর্ব॰ यमन्ति यमान्ति ह विश्ववर्या ॥ छ।-নম্বৰপো ভগবান্ ৰতোসাবশে- यमूर्ख नंजू तख्युकः। कट्टा हि देशवासि ध्रापि (ख्यान कानी-हि विकान विक्षिणानि ॥ यम हि ख्या- निक्सण नर्बः कर्य-कत्य कानस्याखरमायः। जमाहि यक्षण्टद्राः क्यानि ज्विख त्या ॥ स्थायहृष्ट

ब्रहेकः क्लानिका क्लानिका हुन त्रक छटाशानुः। कटनः यकर्य স্তিমিতাত্ম নিশ্চমৈ রালক্যতে বস্তু কি মত্ৰ বস্তু ৷৷ ইতি বিষ্ণুপু-রাণে ২ অংশে ১২ অধ্যায়ঃ ॥॥॥ অপি চ। কেচিদেতজ্যোতি র-নীক শিশুমার সংস্থানেন ভগ-বতো বাসুদেবস্য যোগধারণাযা মনুবর্ণষন্তি। যস্য পুচ্ছাঞে ২বা-क्नित्रमः ऋषनीज्ञत्रस्मा अ-ব উপক্সঃ।তস্য লাছুলে প্র-জাপতি রগি রিজো ধর্ম ইতি পু-চ্ছ্যুলে ধাতা বিধাতা চ কট্যাণ मश्चर्यः॥ छमा मिक्नावर्ख अख-नीजृजनद्वीद्रमा यान्ग्रमगयनानि দক্ষিণপাৰ্মে নক্ষত্ৰাণি উপকল্পয-**ञ्चि । मिक्क गायना नि जू मत्या य था** শিশুমারস্য স্বস্তলাভোগ সন্ধি-বেশস্য পার্শ্বযো রুভ্যো রুপ্যব-यवाः मम मःशा ভवन्তि। शृत्धे

স্ক্রীথী আকাশ্রাস্বা চোদরতঃ । भूनर्वम् भूरयो प्रक्रिम वामरवाः <u>क्वारका ज्ञाजारक्षया ह प्रकिल वा-</u> মযোঃ পাদযো রভিজিদুত্তরাবা-ए प्रमाण कामरमा नीमिकरमा य-থাস-খ্য- শ্ৰবণ পূৰ্যবাচে দক্ষিণ वामत्या त्नां हनत्या र्थनिष्ठा मृनक . मिक्न वानरवाः कर्न्या मंघानी-नास नक्खानि मकिनायनानि वा-মপাৰ্শ্ব বৃধিষু যুঞ্জীত। বৃধিষু অ श्रिष् । ७८थवं मृगनीर्यामीन्रामभ-यनानि मकिनेशार्यम् आिलिना-ম্যেন বুঞ্জীত। শতভিষা জ্যেষ্ঠে कक्षत्य। एकिन वामत्या नीतम् । উত্তরাহ্নাবগস্ত্যঃ অধরাহনৌ यभः मूर्थः ठाजातकः मटेनम्छत উপত্रে तृरुभािकः कञ्चाम तक्तमा।-**मिट्छा। सम्रत्य नातायट्या मनिम** চক্রো নাজ্যা মুশনা স্তনযো র-शिरनी त्यः आंगानानरमा तार ৰ্গনে কেতবঃ সৰ্বাচ্ছেযু রোমস সর্বে জারাগণাঃ। এতদু হৈব ভগ-वरा विरकाः **गर्वा**मवागयः बः প মহর্হঃ সন্মাষা প্রায়তো বা-থ্বতে। নিব্নীক্ষমাণ উপতিষ্ঠেত ন-মো নমো জ্যোতি র্লোকাষ কা-नायनायानिभियाः शक्तय महा-

পুরুষাযাভিধীনহীতি। গ্রহক্ষ
তারামৰ মাধিদৈবিকং পাপাপহ-মন্ত্রহুতা- ত্রিকালং। নমস্যতঃ স্মরতো বা ত্রিকালং নশ্যেত তৎ কালজ মাশু পাপং
।। ইতি শ্রীভাগবতে ৫ ক্ষত্রে শিশুমার সংস্থানং ২৩ অধ্যায়ঃ।।
শিশুবাহকঃ পুং বনচ্ছাগলঃ।
ইতি হে মচন্দ্রঃ।। বালকবোঢরি ত্রি।।

শিশুবাহ্ন শু বনজাগঃ।
ইতি ত্রিকাপ্তশেষঃ।
শিশঃ পু মেটুঃ। ইত্যমরঃ।
অস্য পর্য্যায়াঃ লিঙ্গশক্ষে জ

ফব্যাঃ ॥

শিশিদানঃ ত্রি পাপকর্মা। তৎপর্যায়ঃ। ক্লফকর্মা ২। ইত্যমরঃ ৷৷ ত্লে পাপাচারে। শশ্বমিন্দাতে হসে শিশিদানো মনীষাদিঃ ত্লি তালব্যঃ। ক্লফ্
পাপাচারত্বাৎ মলিনং কর্মাস্য
ক্লফকর্মা। কেচিত্রু অক্লফকর্মা ইতি পঠন্তি। ত্লে নিম্পাপে
শিদি শৌক্লে ইত্যস্য কানে শিশিদানঃ। অক্লফ্ নিন্দাপত্বাৎ
শুক্লং কর্মাস্য অক্লফকর্মা শুক্লকর্মা ইত্যর্থঃ। ইতি ব্যাচক্ষতে

ह। इंडि खन्नडः ॥ # ॥ मिश्वि
पानः क्रयः वर्षा खन्नवर्षां छ कर्नाधनः ॥

मिष वर्षा इंडि क्रिविक्नफ्रमः ॥

भिष वि इंडि पूर्गापामः ॥

भिष कि अमर्काशरागागः ॥

भिष कि अमर्काशरागागः ॥

वि क्रिक्नफ्रमः ॥ अमर्काशरयागः शः शित्रभ्यीकत् । कि स्मयः श्रिक्निक्म । कि स्मयः यि स्मयः वि वर्षानां । कि स्मयः यि स्मयः वि वर्षां । कर्ना वि इंडार्थः । व ति निर्मायता भिष्म कि ज्ञम् वर्षां । व ति विस्मयं वि विद्याय वि विद्याय । इंडि मूर्गापामः ॥

निष ५ ४ छ वित्मारक। ইতি कवि-कन्नक्रमः॥ वित्मिय छेशतक्षमः। ५ जानिय । ४ विनिनिक न्यतः मूर्त्ता यः। ইতি इलायूथः। मू-र्तिविभिक्षः करताि इंछार्यः। छ त्मक्षा। ইতি मूर्गामामः॥ भिक्षः जि माछः। मूत्रुक्षिः। श्रीतः। छमा लक्ष्मः यथा। न श्रीतः। कमा लक्ष्मः विवा वा मूनिः। न ह वाशक हशन इंछि मिक्षमा लक्ष्मः। ইতि म-श्रीजार्द्ध ज्ञारम्थ्यः। ज्ञिन ह । धर्मा नािङ्गिरा देखः

रवमः मगमियुग्यमः। एक निया ৰামণাঃ প্ৰোক্তা নিতা মাত্ৰথ-ণানিডাঃ।। ইতি কৌর্শে উপরি जारग २८ व्यशातः ॥ 🗰 ॥ व्य-नाक। वित्यस्य मन्द्र निष्ठेखः त्य-ষঃ শিষ্টঃ প্রচক্ষ্যতে। মন্বভরেষু ষে শিষ্টা ইহ তিষ্ঠন্তি ধার্মিকাঃ া৷ মনুঃ সপ্তৰ্য শৈচৰ লোক স স্তান কারণাৎ । তিষ্ঠন্তীহ চ ধর্মার্থণ তান্ শিষ্টান্ পরিচক্ষ-তে ।। रेठः भिरेकेः भानिरा ধর্মঃ স্থাপ্যতে বৈ যুগে যুগে। ইতি মাৎস্যে ১২০ অধ্যায়ঃ।। শিক্টাচারঃ পু॰ সাধুব্যবহার:। যথা। ততঃ স্মার্তঃ স্মৃতো ধর্ম্মে। বর্ণাশ্রম বিভাগশঃ। এব বৈ দিবিধাে ধর্মঃ শিষ্টাচারঃ স উ-চ্যতে ॥ ত্রয়ী বার্ত্ত। দণ্ডনীতিঃ প্রজা বর্ণাশ্রমেজ্যযা। শিষ্টে-রাচর্য্যতে যস্মাৎ শিষ্টাচারঃ স শাশ্বতঃ ॥ দান॰ সত্য॰ তপো श्र्वाट्डा विस्ताजा शृजन १ ह-মঃ। অষ্টো তানি চরিত্রাণি শি-काष्ट्रात्रमा लक्ष्मणः।। निकी यन्या-कत्रत्छान॰ मनुः मश्चर्यगन्छ य। মন্বস্তরেষ সর্বেষ্ শিকাচার স্ত তঃ স্মৃতঃ ।। শ্রুতি স্মৃতিভ্যাণ বি-

विर्डा शर्मा वर्गाश्रमाञ्चरः । निकोत्तर्भित्वस्य धर्माः म मा-भूममण्डा ।। ইতি माष्ट्रमा ১२० व्यापाः ॥

শিষ্টিঃ ন্ত্রী আজ্ঞা। শাসন°। ইত্যমরঃ॥

শিষ্যঃ ত্রি উপদিশ্যঃ। তৎ-পर्यायः। ছातः २ जस्त्रवामी ৩। ইত্যমরঃ ॥ অন্তেসৎ ৪। ইতি জটাধরঃ ৷৷ তস্য লক্ষণ যথা। বাজুনঃ কাষ বসুভি র্গুরু শুসায়ৰে রতঃ। এতাদৃশ গুণো-পেতঃ শিষ্যো ভবতি নারদ।। দেবভাচাৰ্য্য শুশ্ৰাষাণ মনো বাক্ কাষ কর্মভিঃ। শুদ্ধভাবো ম-হোৎসাহো বোদ্ধা শিষ্য ইতি স্মৃতঃ।। ইতি দীক্ষাত্ত্ত্বণ।। অপি চ। শান্তো বিনীতঃ শুদ্ধাত্বা শ্ৰ-कावान् शात्रवक्यः। সমর্থ क छ-শীনশ্চ প্রাক্তঃ সচ্চরিতো বতী ।। এব मामिश्वरेन र्युकः निरया **७विंछ गोनाथा। 🐞 ।** निरिक्त-निया लक्ष भोर। शाशित कृ-त्रटाकार गठार क्रमगर ह। मीनायाँ हात्र गुन्याय मञ्जलवर्ग-ताय ह।। निलकाय ह मुर्शाय ठी-र्थाइवनद्राप ह। जिंक्ट्रीनाय

(मरविण न स्तरा अबिनाय के।। গুৰুতা শিষ্যতা ৰাপি চৰে ৰ্-সর বাসতঃ । তথা চোকে সার-म शहर । मानुकः या अठ निया वर्ष (भकः भद्रीकरमः वर्षात्कव ভবেদেয়াগ্যো বিশ্রো গুণসম-विजः॥ वर्षप्रयम ब्राज्यना। देव-শ্যস্ত বৎসরৈ দ্রিভিঃ। চতুর্ভি-র্বৎসরৈঃ শুদ্রঃ কথিতা শিষ্য-যোগ্যতা।। ইতি তন্ত্র সারঃ।।। जनाक । जाठांद्र मामत्यम्ब ख न जाहार्या छेनास्व । य खाहार्या পরাধীন স্তম্বাক্য শাস্যতে হৃদি ॥ गामत्न खित्रवृखिक निषाः म-फि कृताक्षडः। এব॰ लंकनम॰यू-ক্তণ শিষ্যাণ সৰ্ব গুণাৰিকে ৷৷ অধ্যা-প্रयिष्धिरात्म मञ्जद्भ मनुख्यः। ইতি পান্মোত্তরখণ্ডে ২৫ অধ্যা-यः॥ 🛊 ॥ भूख नियास्य खलाषः यथा। यथा भूख ख्या नित्या न ভেদः পুত শিষ্যযোগ তপ্ৰে পিওদানে চ পাৰানে পরিপোষ-ণে ॥ যথামিদাতা পুত্রশ্চ তথা শিষাশ্চ নিশ্চিক । ইতীক কাণু-भाशाया मूराठं कमत्नाखदः ॥ ইতি বন্ধবৈবৰ্তে শ্ৰীক্ষকজ্মাণডে ७३ ज्यायः ॥ ॥ भूख निका-

खाः वित्नारम्। स्था । **मन**्जमा-त्र छेवाह। शूख अवाचि प्रारम् अष्टः निरंगात्राद्रः विरंशे । न বিশেষোভি পুত্রদা শিষাদা চ পিতাৰহ।। ত্ৰন্ধোবাচ। বিশেষঃ শিষ্য পুক্ৰাভ্যা॰ বিদ্যতে ধৰ্মন-न्मन । धर्मा क्मा नमारगारग ज्था-পি গদতঃ শৃণু॥ পুন্নামো নরকা-শ্ৰাতি পুত্ৰ স্তেনেহ গীয়তে। শে-ষপাপহর: শিষ্য ইতীয় বৈদি-की क्षा कि ॥ मन १ अभा त উবাচ । কোষ• পুন্নামকে। দেব নরকাজাতি পুত্রকঃ। কম্মাচ্ছেষণ ততঃ পাপ॰ হরেছিষ্যশ্চ তদ্বদ ॥ ইতি বামনে ৫৭ অধ্যায়ঃ ॥ ত্র-ক্ষোবাচ। অতঃপর প্রবক্ষ্যামি (শ্वপाপস্য लक्ष्य । भाग प्रवर्षि ভূতানা মনুষ্যাণা বিশেষতঃ।। পিতৃণাঞ্চ দিজশ্ৰেষ্ঠ সৰ্ববৰ্ণেষ্ চৈ-কতঃ। ওঙ্কারাদি নিবৃত্তিশ্চ পা-পকার্য্যক্তিশ্চ বা/ ছত্যাদিক महाभाभ॰ दशर व कर छथा। वृज्ञानि विर करकार्थि, अञ्चलानि প্রতিগ্রহণ 🏗 কপু গাপনণ পা-. १० भवतायथाकी नामः। नैर्यादि-দ্ধণ বাক্যদুষ্টণ নিষ্ঠুরস্বণ ষডম্বরণ।। **ঢाकिष• छालवामिष• नामा वाठा**-

প্যধর্মজ । মারণত্ব মধান্মিক্য । প্নরকাবহ মূচ্যতে ॥ এতৈঃ পা-পৈশ্চ সংযুক্তঃ পাত্যতে যদি गहरा । उडानाधिक मत्मरयन শেষাৎ পাপাৎ জ্বেত্তঃ ৷৷ শারীর বাচিক যতু মানসং ত্রিবিধণ তথা। পিতৃ মাতৃক্তণ यफ क्रु॰ यका व्याटिक में देतः॥ জ্ঞাতিভি ৰান্ধবৈ শ্চাপি তন্মিন্ জন্মনি ধর্মাজ ৷ তৎ সর্বণ বিল-য॰ যাতি কৰ্মণা সূত শিষ্যযোঃ ॥ তত্মাৎ পুত্রক শিষ্যক বি-খাতব্যো বিপশ্চিতা। শ্রুত মর্থ মভিধ্যাষ শিষ্যাৎ শ্রেষ্ঠতরঃ সূতঃ ॥ শেষান্তার্যতে শিষ্যঃ সৰ্বত্ৰৈব হি পুত্ৰকঃ। ইতি বাম-त्न ७५ जशायः॥

শিল্প: পু॰ শিল্পকঃ। ইতি শব্দ-চম্রিকা।।

শিল্পকঃ পুণ গদ্ধ এব্যবিশেষঃ ।
শিল্পারস্থা শিল্পাইতি লোবান্
ইতি চক্তা বিটে তৎপর্য্যায়ঃ !
কপিনাস্থা তানি ৷ ৩ তৈল ৪
ক্রেজিণ ৫ ল্কেনা ৬ চলা ৭
ত্রুক্টেশ্টে মুক্তিমুক্তঃ ৯ পিশ্রাতঃ ১০ বরঃ ১১ ৷ ইতি রত্ত্বমালা
।। পিশুকঃ ১২ সিক্লঃ ১৩ যাবনঃ

281 हैं जा महा । जा जा नृत्वा मार्श्नी छवाः। निङ्कः शतमा मार्शी दिन्दामा मृत्रा नथः। महिनी शतमा निङ्की तिकामा जा नामा । दिने का मार्थी हैं वि वा शार्थः। है जि ता जा वह जा कर है जा जा वह जा कर है जा है जा कर है जा है जा है जा कर है जा कर है जा कर है जा है

শিক্ষ ও শিক্ষণে।ইতি কবিকরক্রমঃ । ইবী । ও শিক্ষতে ।
শিক্ষণ বিদ্যাগ্রহণ । অশিক্ষতান্ত্রণ পিতৃ রেব মন্ত্রবিদিতি রযুঃ । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

विटमग्राभामानः । क्री ইতি শিকাশকটীকাষাণ ভরতঃ **गिका** जी गिकव ।। (गान क-বৃক্ষঃ। ইতি শব্দমালা।। বেদান্ত-শাস্ত্রবিশেষঃ। ইত্যমরঃ।। যথা । শিক্ষা কল্পে। ব্যাকরণ নিরু-ক্ত॰ জ্যোতিষা॰ গণঃ। ছন্দো-বিচিতি রিত্যেতৈঃ যড়কে। বেদ উচ্যতে ॥ ইতি। তত্ত্র অকারা-দিবর্ণানা স্থলকরণ প্রয়ত্ম বো-ধিকা অ স্ব এ হ বিসৰ্জ্জনীযাঃ क्छा रेगामिका निका। रेवि তট্রীকাষা ভরতঃ।। 🟶 ।। অথ শিক্ষাশাস্ত্রণ লিখাতে। অথ শি-কাণ প্রবক্যামি পাণিনীয়মতণ

यथा। भाजानूश्र्वः उविमान्तः থোক্ত॰ লোক বেদৰোঃ।। প্ৰসি-দ্ধানপি শব্দার্থ মবিজ্ঞাত মবৃদ্ধি-जिः । **পून व्यक्तीकविकामि वा**ठम উচ্চারণে বিধি-।। ত্রিম্বটি কত্-ষষ্টি বা বর্ণাঃ শস্কুমতে সভাঃ। প্রাক্তে সংস্কৃতে চান্দি ৰয় পঞা-ক্তাঃ স্বযন্ত্র ।। স্বরা বিশ্বতি রেকশ্চ স্পর্শানাং পঞ্চবিংশতিঃ। गानगण भूजा क्रकी हवानण यभाः स्थाः।। अनुसादता विनर्श-শ্চ xকএপৌ চাপি পরাশ্রিতৌ । দুস্পৃষ্ট শ্চেভি বিজ্ঞেযো ৯কা-রঃ প্রত এব চ।। আত্মা বুদ্ধ্যা স-মেত্যাৰ্থামনো মুঙে বিবক্ষম। মনঃ কাৰাগ্নি মাহস্তি **সংপ্ৰেরৰ**তি মারুত ।। মারুত স্তুর্সি চরমান্ত জনযতি স্বরুণ। প্রাতঃ সৰুন বো-गन्छ॰ इत्मा गायव माजिङ ॥ कर्छ गाधासिन यूक मधाम देव-ফুভানুগণ। তারণ তাতী ৰ সৰনণ गौर्यगुः कागठानुगः॥ सामीर्या मृक्गुं ज्रिंट्रा वक्तु मानमा साझ-তঃ। বৰ্ণাঞ্চনযতে তেষাং বিজ্ঞা-গঃ পঞ্ধা স্মৃতঃ ৷৷ স্বর্তঃ কাল-कः स्नार श्रयन्त्रम्थान्यः। ইতি বৰ্ণবিদঃ প্ৰান্থ নিপুণ ত॰

निर्वाषण ॥ जेमाल भानुमाल क यतिष्ण यद्भे जयश हत्या नीर्यः भूठ हेि कामारा नियमा अहि ॥ উদাত্তে नियान भाकातावन्मा-তে শাষ্ড ধৈবতে। স্বরিতপ্রভ-বা হেতে বড্জ সধ্যম পঞ্মা: 11 चरकी द्वानानि वर्गाना मूत्रः कर्शः শির স্তথা। জিহ্মামূলক দস্তাশ্চ नामित्कोत्धी ह छानू हा। अखा-বশ্চ বিবৃত্তিশ্চ শ ষ সারেক এব চ । জিহ্বামূল মুপশ্বা চ গতি রফবি-(धाञ्चणः ॥ यत्ना जाग श्रमस्नान-मूकातामि পর পদ । স্বরান্ত णामृ मः विमागायमनाषाक मृयानः ॥ रुकातः १५७८मः युक्तः मस्रस्।-ভিশ্চ সংযুত্য। ঔরস্য ত বিজা-নীষাৎ কণ্ঠ্য মাহু রসংযুত্ত।। ক-ঠ্যাবহাবি চু য শা স্তালব্যা ওষ্ঠ कार्श्। मूर्ण मूर्कना स दूत स मखा % जू न माः मृजाः॥ जिस्रा-मूदन जू कः थाएका मरखारका বং স্থাতা বুধৈং। এ ঐ তু কণ্ঠ তালব্যা ও ঔ কঠোগ্ঠজৌ স্মৃতৌ ॥ अक्रमाळा जू कुछा। माराका-देतकात्ररमा र्ज्यदेश । अकादती-কারযো মাক্রা তযো বিবৃত সং-বৃত ।। সংবৃত মাত্রক জেব।

विवृञ्द विवादकः । विवि वा সংবৃতাঃ সর্বে অন্ত্রোবা বিবৃতীঃ त्र्याः ॥ त्रताना स्वनिदेशक वि-বৃতং করণ স্মৃত । তেভ্যো ২পি বিবৃতাবেঙৌ ভাভাগ মৈটো ভ-रिथव ह ॥ अनुस्रात समानाक নাসিকাস্থান সুচ্যতে। অযোগ-বাহা বিজেষা আশ্ৰয়নভা-शिनः ॥ अलावूवीशानिर्धारा मखायूला खतानन्। जन्यातख কৰ্ত্তব্যো নিত্য ন্থোঃ শ ষ সেষু চ ।। অনুসারো বিবৃত্যান্ত বিরামে চাক্ষরদ্বে। দ্বিরোপ্টেটা তু বিগৃ-द्रीयाम्बरेजकात वकात्रयाः ॥ वाशी यथा श्दाद भूखान् मण्यून ভ্যাণ ন চ পীড়ধেৎ। ভীতাগভন ভেদাভ্যা তদ্বৰ্ণান্ প্ৰযোজ-रय ।। यथा সৌরাख्किका नाती তক্ৰা ইত্যভিভাষতে । এবং র-লাঃ প্রযোক্তব্যাঃ থে অ রাঁ ইব (अमय।। तक्तर्व श्वयुक्षीतन् ना গ্রসেৎ পূর্ব মক্ষরণ। দীর্ঘমরণ প্র-ৰুঞ্জীয়াৎ পশ্চানাসিক্য মাচরেৎ ॥ क्रमय टेठकमावः मामक्रमा-ত্ৰস্ত মূৰ্জনি। নাসিকাষা তথা-र्क्षक त्रकटेमाव॰ विमाज छ।।। शन-शामु करत जिन्नेम् का रामान म

बंगू खंतर। भार्म वश्र विभावक क्य-नैं। इंडि निमर्नमः॥ गर्धा जूंकः नात्व कन्य मूट्डी शास्त्री मत्मी ভরেৎ। সরঙ্গ কম্পাদেৎ কম্পাণ व्रथीरविष्ट निमर्भन• 11 **এव॰ वर्भाः** প্রবোক্তব্যা নাব্যক্তা ন চপীড-त्रथा नमायर्भ व्यक्तारमन बन्न-लात्क महीयत्छ ॥ गीजी नीषुी শিরঃকম্পী তথা লিখিতপাঠকঃ । জনর্থজ্ঞোদ্দকণ্ঠশ্চ ষডেতে পা-ঠকাধমাঃ।। মা ধুর্য্য মক্ষর ব্যক্তিঃ **अमरक्कान्छ मूचदः। देशर्याः** वय সমর্থক ষডেতে পাঠকা গুণাঃ॥ শঙ্কিত ভীত মুদ্দৃষ্ট মব্যক্ত মন্-নাসিকা। কাকস্বরণ শির্দি গতণ তথা স্থানবিবজ্জিত ॥ উপা॰-শুদুষ্ট স্বরিত নিরস্ত বিলয়ি-कः शकांकिङ अभीकः। निश्नी-**जिङ अन्तर्भाकत्रक वरमञ्जी-**ন॰ ন তু সানুনাস্য ।। প্রাতঃ পঠেমিত্য মুরঃস্থিতেন স্বরেণ শা-मृ नकराजा भरता । यथा भरता কণ্ঠগতেন চৈব চক্ৰাহ্ম সংকৃজি-ভ সন্ধিভেন।। তারম্ব বিদ্যাৎ স-বন•ভৃতীয• শিরোগত• তচ্চ স-मा थर्याका । मयृत र मानाज्-ত স্বরাণা তুল্যেন নাদেন শিরঃ

স্থিতেন II অচোম্পৃ**ক্টাশ**ণ স্ত্ৰীয- || ন্নমস্টাঃ শ ল স্তথা। শেষাস্পৃ-ষ্টাহলঃ প্রোক্তা নিবোধানুপ্রদা-नजः॥ यत्यानुनानिका न द्यानाः দিনে। হ বাষঃ স্মৃতঃ। ঈষপ্লাদায় ন-ঞ্জশ্চ শ্বাসিনশ্চ কফাদ্যঃ।। ঈ্ষ-চ্ছাসা॰ শ্চরো বিদ্যাৎ গোর্দ্ধানৈ তৎ প্রচক্ষতে। দাকীপুত্রঃ পাণি निना (यदममः व्याभिकः जूवि।। इन्मः शामि जू (वममा रूखो क ল্লোথ পঠ্যতে।জ্যোতিষা মঘন॰ চক্ষু নিৰুক্ত শ্ৰোত মুচ্যতে ॥ শিক্ষা ঘূৰ্ণম্ভ বেদস্য মুখ ব্যাক রণ স্তুত । **ভ**ত্মাৎ সাঙ্গ মধী-ত্যৈব ব্ৰহ্মলোকে মহীয়তে ৷৷ উ দাত্ত মাধ্যাতি বৃষোঙ্গুলীনা প্র-मिनी मृल निविक मूर्था। छ পান্তমধ্যে স্বরিত ধৃতঞ্ কনিষ্ঠি-काया मनूनाख त्यव ॥ উनाखः थटमिनी विमाष धहरा मश তোংস্কুলিণ। নিহতম্ব কনিষ্ঠিক্যাণ স্বরিতোপকনিষ্ঠিকা॰।। অস্তো-দাত্ত মাদ্যদাত্ত মুদাত্ত মনুদাত্ত নীচস্বরিতং। মধ্যোদাত্তং স্বরিতং দ্যুদাত্ত জ্যুদাত্ত মিতি নৰ পদশ-য্যা।। অগ্নিঃ সোমঃ প্র বো বীর্য্য॰ হবিষাণস্ব বৃহস্পতি রিজ্ঞাবৃহস্প-

তী। অগ্নি ব্লিতান্তোদাত্ত সোম रेगामुमाख॰ थ रेगूमाख॰ व रें-তानुमाखः वीद्याः नीवस्रतिकः इ-বিষা মধ্যোদাত্ত স্বরিভি স্বরি-ত বৃহস্পতি রিতি দ্যুদাত্ত মিন্সা-বৃহস্পতী ইতি ব্যুদাত্ত ॥ অ-न्मारला समि एकरमा मृक्रामाल উদাহতঃ। স্বরিতঃ কর্ণমূলে তু मर्बारमा श्रव्यः मृष्ठः ॥ ठावस्र বদতে মাত্রাণ দিমীত্র স্ত্রেব বায-সঃ। শিখী ব্লোভি ত্রিমাত্রস্ত নঙ্গ-ল স্তু দ্বি মাত্রকণ।। স্বতীর্থাদাগতণ **मक्ष म**श्रवर्गक जिक्का । न जगा পাঠে মোক্ষোস্তি পাপাহে রিব কিন্বিষাৎ॥ সূতীর্থাদাগত• ব্যক্ত• माञ्चायाः मूदावन्थिः। मूत्रद्रान সূবক্ত্রেণ প্রযুক্তণ বন্ধ রাজতে।। মন্ত্রো হীনঃ স্বরতো বর্ণতো বা মিথ্যাপ্রযুক্তো ন ত মর্থ মাহ। **স** বাগ্বজু বজনান হিনস্তি যথেন্দ্ৰ-শত্রুঃ স্বরতোপরাধাৎ ৷৷ অনক্ষ-রণ হতাযুষ্যণ বিশ্বরণ ব্যাধিপীডি-ত॰। অক্ষতা শস্ত্ৰৰূপেণ বজু॰ প-ততি মন্তকে।। হস্তহীনম্ব যো ২-ধীতে স্বরবর্ণ বিবর্জ্জিত । ঋগ্বজুঃ সামভি ৰ্দক্ষো বিযোনি মধিগচ্ছ-তি।। হস্তেন বেদং যোগীতে স্বর

বৰ্ণাৰ্থ সংযুক্ত । ঋগ্বজুঃ সামিজিঃ পুতো বন্ধলোকে মহীযতে।। শ **इतः भाइती॰ .थानामाकीপृ**खाय ৰীমতে। বাদ্মবেভ্যঃ সমাহত্য দৈবী॰ বাচ মিতি স্থিতিঃ॥ ষেনা-क्त अभावाय यक्षिणमा महिन्ध-রাৎ ক্লিৎন্ন ব্যাকরণ প্রোক্ত छरेत्र शानिनास नमः ॥ सन (थी-তা গিরঃ পুংসাং বিমলেঃ শব্দবা-রিভিঃ। তম শ্চাজ্ঞানজ ভিন্ন ভব্মৈ পাণিনধে নমঃ ৷৷ অক্তানা-শ্বন্য লোকস্য জ্ঞানাঞ্জন শলা-কষা। চক্ষু ৰুশ্মীলিত॰ যেন তদ্মৈ পাণিনযে নমঃ॥ ত্রিনয়ন মুখনিঃ-সৃতা মিমাণ ষ ইহ পঠেৎ প্রয়তশ্চ मन। विकः। म ভবতি ধন ধান্য পশু পুত্র কীর্ত্তিমানতুলঞ্চ সৃষণ সমশ্বতে ।। দিবীতি দিবীতি ।। অথ শিক্ষা মাজ্যোদাক্তশ্চ হকার• স্বরাণাণ যথা সৌরাফ্টিকা। গী-ত্যচোস্পৃকৌদাত্ত চাবস্ত শঙ্ক-র একাদশ।। ইতি বেদশিক্ষা স-माश्चि मगम् ॥ क्षा जिन ह। ज-গ্নিৰুবাচ। বক্ষ্যে শিক্ষাণ ত্ৰিষ**ডিঃ** স্য ৰ্বণা বা চতুরাধিকাঃ। স্বরা-বি॰শতি রেকশ্চ স্পর্শানা৽ পঞ্চ-वि॰मिण्डः ॥ यानयम् मृज शरकी

চন্বারশ্চরমাঃ স্তাল অনুসারো বিসর্গশ্চ ×ক্ত এপৌ চাপি পরা-প্রিতৌ ।। নুৎসৃষ্ট স্চেতি বিজে-ষো ৯কারঃ প্রত এব চ। রকশ্চ ধে স্বরণ প্রোক্তণ ইকারঃ পঞ্চর ৰ্তঃ৷ অন্তস্থাতিং সমাযুক্তঃ ঔ-রসঃ কণ্ঠা একলং। আত্মা বুদ্ধ্যা সনেত্যার্থ• মনো মুড্রে-বিবক্ষযা।। মনঃ কাষামি মাহন্তি সঞ্জেরষতি মারুত । মারুত স্তুরসি চরগান্ত্রণ জনষতি শ্বর• ৷৷ প্রাতঃ সবন যো-গন্ত ছন্দো গাযত্র মাশ্রিত । কণ্ঠে माधान्त्रित्वयुक्तः मधामः देवस्कूका-নুগ• ॥ তার• তাতী ব সবন• শী-र्यगुः क्षभञानूगः। त्नामीत्नी मृ-ৰ্দ্যুভিহতো বক্তু মাপদ্য মাৰুতঃ ।। বৰ্ণান্ জনষতে তেষা বিভা-গাঃ পঞ্চা স্তাঃ। সরঃ কালগ-**७: काना** थयञ्जान्थनान्छः ॥ অক্টো স্থানানি বর্ণানা মুরঃ কণ্ঠঃ नित खथा। किसागृतक पछान्छ नामित्कारकी हु छान् हु॥ ७ छ।-ৰশ্চ বিৰুত্তিশ্চ শ ষ সা রেফ এব .চ। জিহ্বামূল মুপগ্না চ গতি রফী-विरशासनः ॥ यरमाञाव श्रम-क्षान मूकादामि शद्र शम । खता-**छ॰ তাদৃশ॰ विमा**ा यमनाषाङ

मुखनः ॥ अञीर्थामाग्रञः पक्ष মপবর্ণঞ্চ ভক্ষিত ৷ এব মুক্চারণ পাপ মেব মুক্তারণ শুভ ।। সু-ठीर्शामागठ जवा नानार्थ मू-बावविष्ठः । मूत्रदत्तः मूरद्भुन প্রযুক্ত॰ বন্ধ রাজতে।। ন করা-ला न लाखारकी नावारका नान्-नानिकः। भागमावक्षिक्ष्यानः न-वर्गान् वङ्क् मर्श्वि॥ छेमाख न्छा-নুদাত্তশ্চ স্বরিতশ্চ স্বরা ব্রয়ং। হুষে। দীৰ্ঘঃ প্লুত ইতি কালতো नियमा अहि ॥ क्छा।वहावि हु क भा खानवा। अर्छकावूशू । मूर्र मू-र्कना ॥ हूत मा मखा ५ जू न माः गृठाः ॥ जिस्रामृत्त जू कः প্রোক্তো দন্ত্যোক্তো বং স্তো व्रेंधः। এদৈতো कथा जानत्वी ও ও কঠ্যোষ্ঠজৌ স্মৃত্যো । অর্দ্ধ-মাত্রা তু কণ্ঠ্যা স্যাৎ একারেকা-রয়ে। ভবেৎ। অফোগৰাছা বি-জ্ঞেয়া আশ্রয়স্থান ভাগিনঃ।। অ-চোম্পৃষ্টা যণ স্ত্ৰীষন্ন স্পৃষ্টাঃ শলঃ স্তাঃ। শেষা স্ফা হলঃ প্রোক্তো নিবোধানুপ্রদানতঃ।। यत्या श्नूनामिका न द्यां नामि त्ना इ वायः न्यूछः। अवकारमा भन यणः श्वानिनक श्रकालयः। ञ्रय-

ष्ट्रांम॰ यद्या विल्राटकार्शियः তৎ প্রচক্ষতে। ইত্যাগ্রেষে শি-কাধ্যায়ঃ।।

শিক্ষাকরঃ পু॰ ব্যাসঃ। ইতি শব্দমালা॥ শিক্ষাকর্ত্তরি ত্রি॥ শিক্ষাগুরুঃ পু• বিদ্যাদাতা গুরুঃ । মন্ত্রাদ্যুপদেশকর্ত্ত। দীক্ষাগুরুঃ । যথা। ইয় হি রসভাববিশেষ দীকাগুরোর্বিক্রমাদিত্যস্যাভি-ৰূপভূষিষ্ঠা পরিষৎ । ইত্যভি-खान नज्ञलामा > जकः।। শিক্ষিতঃ ত্রি বিজ্ঞঃ।ইত্যমরঃ।৷ শিক্ষাযুক্তঃ। যথা। আপরিতো-याहित्या॰ न नाथु यत्ना अत्याग বিজ্ঞান । বলবদিপি শিক্ষিতান। মাত্মন্যপ্রত্যয° চেতঃ ।। ইত্য-ভিজ্ঞানশঙ্গজলাযাণ ১ অঙ্কঃ ৷৷ শিক্ষিতাক্ষরঃ পুণ শিক্ষাকারী। ছाजः। यथा। मा। मन्त्रम्यः का-লাক্ষরিকঃ শিক্ষিতাকরঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ৷৷

শী ও ল ঞি স্বপ্নে। ইতি কবি-কল্পদ্রনাঃ। ও ল শেতে। ঞি শ্বিতো ২স্তি। মণ্ডপে শ্বামী-তি গণক্লতানিত্যত্বাৎ পরস্মৈপ-দে শপো হলুগুাবে চেতি রমা-নাথঃ।। বস্তুতস্ত্ব শেতে শ্বঃ भीषु

পশ্চাৎ শ্য ইবাচরতীতি কৌ माशुः। ইতি पूर्नापामः॥ শীঃ ন্ত্ৰী শান্তিঃ।৷ শ্ৰমণ ইতি শব্দরত্বাবলী ৷৷ শীক ঋঙ সেকে। সর্পে। ইভি ক্বিকল্পক্ষমঃ ৷৷ ঋ অশিশীকৎ । ও শীকতে। ইতি দুর্গাদাসঃ।। শীক কি আমর্শে॥ সেকে। ইতি कविकन्नफ्रमः ॥ कि भीकरि শীকতি। আমর্শঃ স্পর্শঃ। তথা চ। চন্দ্রাবতীতরক্ষার্জাঃ শীক-यि ह यदभूः। ইতি इकायूकः । বাষবঃ স্পূশস্তি ইত্যর্থঃ। ভট-मलख जागर्यं। रेठि मूर्कना य मधाः পठिषा कमार्थ मार्। ইতি

भीकत्र क्री भत्रवाखदः। त्यिनि ॥

मृशीमागः॥

শীকরঃ পু• বাভাদিপ্রেরিভজ-लक्षाः । देखामद्रः ॥ वाषुः । ইতি মেদিনী॥

नीष् की বিলয়াভাবঃ ৷ তৎ-পর্যামঃ। ছরিত ২ লঘু ৩ কি-প্রাণ ৪ অরণ ৫ দ্রুত ৬ সম্বরণ ৭ চপল ৮ ভূর্ণ ১ অবিলম্বিত > जार ३३। जवायाः नीघुवा-ठकाः यथा। त्राक् ३२ वार्षिठ भौषीदव

১৩ অঞ্জনা ১৪ অহ্লাৰ ১৫ সপ-पि ১**७ जाक् ১**१ म॰कू ১৮ । ত-ছতি ত্রি। ইতামরঃ।। 🟶 ।। লাম-জ্জকণা ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। मीयुगः बि क्ष्ण्यामी। यथा। হরিতে রোগোমুতাপঃ শস্যানা भीषिष्णिष्ण विश्वनः। केशितन भौजुन्नव स्त्राष्ट्रश्रा १थ पू-र्जिकः ॥ देखि छिथामिछवः ॥ বাষৌ পু॰। ইত্যমরে আশুগ-भवा प्रभार ॥

भीषुगाषी जि जालगमनणीनः। भीषु शक्रु शिष् भीषु भन-পূৰ্বক গমধাতো ধিন্ প্ৰত্যযেন 11

শীষ্টেতনঃ পু॰ সন্ধুরঃ। ইতি শ-नियाना।। जञ्चराजनायुक्त बि শীৰুজন্মা^{ন্} পু• করঞ্জবিশেষঃ। কাঁটাকরঞ্জ ইভি ভাষা। যথা। ু পৃতীকঃ শাণ্ডলঃ পোষ্টা শী-যুজনা সৰৃত্তিরুৎ। ইতি শব্দ-ठिक्किका ॥

मौघुशूमाः श्रृ व्याखावृकः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ শীয়বেধী^ন পু॰ কিপ্রশরবেধকর্ত্তা । जदभक्तायः । लघूरुखः २। े रेजि एर्याञ्जः ॥

শীয়। স্ত্রী দন্তীবৃষ্ণঃ ইতি রাজ-নির্বন্টঃ ।।

শীঘূীৰ ত্তি জতসন্ধনি শীঘূ-ভবং ৷ শীৰ্শকাৎ শীম প্ৰত্য-বেন নিষ্ণামং ৷

भीठ॰ क्री शिमश्चमः। ইত্যমরः॥ জল॰। ইতি শব্দমালা॥ प्रচ॰। ইতি রাজনির্ঘণটঃ॥ भीठ॰ তু-যার বানীর বহুবারক্রদেষ্ চ। ইতি ভরতধৃতাজয়ঃ॥

শীতঃ পু॰ বেতসৰ্কঃ ৷৷ বহুবারকবৃক্ষঃ ৷ ইতামরঃ ৷৷ অশানপণী ৷ ইতি শব্দরত্বাবলী ৷৷ পপটিং ৷৷ নিম্বঃ ৷৷ কপুরঃ ৷ ইতি
রাজনির্ঘণটাঃ ৷৷ হিমক্ষত্বঃ ৷ অস্য
বিবরণ হেমস্তশব্দে অফব্যুণ ৷৷
শীতঃ ত্রি শীতলঃ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷
অলসঃ ৷ ইতি মেদিনী ৷৷ ক্রিণ্ডানা ।
তাল কয় বাসু কারিছণ ৷ শুরুদ্বল কফ বাসু কারিছণ ৷ শুরু-

गीठकः पू॰ नीठकानः॥ मृष्टि-ठः॥ मीर्यमृती। इंडि सम्मनी॥ यगनभगे। इंडि गम्बस्नावनी ॥ वृन्ठिकः। इंडि गम्बसाना॥ गीठकतः पू॰ हसः। इंडि हिंस- করশন্দ দর্শনাৎ ।। শীতলগাগিবুজে শীতকারিণি চ ত্রি ।।
শীতক্ষাবঃ পু॰ হিনক্ষাবঃ ।
যথা। কুন্ন জব্যপল সম্যক্ষলগলৈঃ প্লুত । শর্বরী
মূ্যিতঃ স স্যাদ্ধিন শীতক্ষাবকঃ ।। ইতি বৈদ্যক ।।

नीजनानः पृ हिमक्षणः। मण् व्यवशायन (श्रीय मान वयकानाप्रावः। छ० शर्यग्रायः। नीजकः २
। ইতি मिती।। द्रमञ्जः ७।
ইত্যমরঃ।। नहाः ८। ইতি क्रिनध्रः।। देश्यनः ৫। ইতি नकब्रज्ञावनी।। कृश्यापकः विष्ठाया नग्रमा जी ইফকাগৃহং। नीতকালে ভবেদুক্ষং উক্ষকালে চ
नीजनः।। ইতি চাণক্যং।।

नीठिक तथः भू हिन्दः । यथा । काट्य कार्य मूमि नीठिक त-लाखा कार्य मूमि नीठिक त-लाखा करा नाति । विश्व कर्य भूमित स्थान । धना प्रः यूवठी मठी क्ववठी खुळानि धना ख्व रेषः श्रीनित्र । क्विक-व्या मूक्षा हितः नाजू वः ॥ रेजु खु ।।

শীতস্তঃ পু॰ করবীরঃ। ইতি

त्रष्ट्रगाना ॥

শীতঙ্গন্তী স্ত্ৰী জলজবৃক্ষবিশেষঃ
। শীউলিছোপ ইতি ভাষা।
যথা। শীতলী শীতঙ্গন্তী চ শুক্ৰপুক্ষা জলোদ্ভবা। ইতি রত্নমালা।

শীতরুচ্ছ: পুণ ব্রতবিশেষঃ। যথা
। বদা তৃশীতং ক্ষীরাদি পীষতে
তদা শীতরুচ্ছঃ। ব্যহং শীতং
পিবেছোষং ব্যহং শীতং স্বঃ
পিবেছ ৷ ব্রাহং শীতং যৃতংপীদ্বা
বাযুভক্ষঃ পরব্রাহং ৷৷ ইতি ষমস্মরণাৎ। ইতি মিতাক্ষরা ৷৷
শীতগদ্ধং ক্লী শ্বেতচন্দনং। ইতি

শীতগুঃ পু॰ চন্দ্রঃ।ইতি রোপ-দেবঃ।।

ब्राक्रिक्छः॥

শীতচম্পকঃ পু॰ দর্পণ• ।। প্র-দীপঃ । ইতি মেদিনী শব্দরত্না-বল্যৌ ।।

শীতপণী স্ত্রী অর্কপুষ্পিকা। অর্কহলী ইতি ভাষা। ইতি রত্ন-মালা।।

শীতপল্লবা স্ত্রী ভূমিজমুং। ইতি রত্নমালা।।

শীতপাকিনী স্ত্রী কাকোলী। ইতি শব্দমালা। মহাসমঙ্গা। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ।
শীতপাকী জ্রী বাট্যালকঃ।
ইতি শব্দরত্বাবলী।। কাকোলী
। ইতি রত্মশলা।। গুঞ্জা। ইতি
রাজনির্ঘন্তঃ।

শীতপুলা ক্লী পরিপেল। ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ।

শীতপুশঃ পু॰ শিরীষবৃকঃ। ইতি রাজনির্ঘকঃ।

শীতপুষ্ণক ক্লী শৈলেষ । ইতি শব্দচন্দ্ৰিক। ।।

শীতপুষ্পকঃ পু॰ অক্বৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শীতপুষ্পা ন্ত্রী অতিবলা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

শীতপ্রভঃ পু॰ কপুরঃ।ইতিরাজ-নির্ঘন্টঃ।। শীতলপ্রভাষুক্তে ত্রি শীতপ্রিফঃ পু॰ পর্পটঃ।ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শীতকলঃ পু• উড়ম্বরঃ।। শেলুঃ । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

भीठवन। खी महाममङ्गा हेि वाजनिर्यण्डः॥

শীতভানুঃ পু॰ চম্রঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

শীতভীক্ষঃ স্ত্রী মলিকা। ইত্য-মরঃ ।৷ শীতভীতে ত্রি ॥

শীতলা

শীতমঞ্জরী স্ত্রী শেফালী। ইতি ताजनिर्घकः॥ শীতমষ্থঃ পু॰ চন্দ্রঃ। কপুরঃ। ইতি মেদিনী ॥ শীতমরীচিঃ পু॰ চন্দ্রঃ। কপুরঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শীতমূলক ক্লী উশীরণ ইতিরা-জिनर्ष कि ॥ भी छल मृल यू उक वि শীতরমঃ পু॰ প্রদীপঃ। ইতি किंगिधतः ॥ भीखत्रमगीरम कि ॥ শীতরশ্যিঃ পু॰ চন্দ্রঃ। বথা। ছে-लिः मृश्य का<u>र्सभाः नौजतिशः।</u> ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ।। কপূরিশ্চ শীতল কী পুষ্পকাসীম ।। শৈলজ ।। মলযোক্তব । তত্ত্ চন্দন । ইতি মেদিনী ।। পদ্মক ।। মৌক্তিক॰। ইতি রাজনির্ঘক্তঃ ॥ শৈত্য॰। ইতি শব্দরত্মাবলী॥ বীরণমূলণ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। শীতলঃ পু॰ অশনপণী। ইত্য-गतः ॥ व्यक्तिभाषः। म जू ठजू-রি॰শতিতীর্থক্করমধ্যে দশমতী-র্থস্করঃ। ইতি হেসচ**ন্দ্রঃ**।। বত-বিশেষঃ ৷ স তু মেষ সংক্রাস্ভ্যাণ কর্ত্তব্যঃ॥ চন্দ্রঃ। ইতি **শব্দরত্ন**। বলী।। বছবারবৃক্ষঃ। ইতি শব্দ-চন্দ্রিক।।। চম্পকঃ।। কপূরভে- 🏻

मः।। রালः। ইতিরাজনির্যক্তঃ।। ত্রি শীতগুণবিশিষ্টঃ। শীতলঃ তৎপর্যায়ঃ। সুষীমঃ ২ শিশি-রঃ ৩ জড়ঃ ৪ তুষারঃ ৫ শীতঃ ৬ হিমঃ १। ইত্যমরঃ।। শীতলক॰ ক্লী সিতোৎপল। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শীতলকঃ পু• মরুবকঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ শীতলচ্চদঃ পু॰ চম্পকঃ। ইতি ताकनिर्घकः॥ भीठनशब्धः॥ भौठमङ्गलः क्ली উৎপनः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। হিমবারি চ।। শীতলতা স্ত্রী শীতলত্বং। শীত-লস্য ভাব ইত্যৰ্থে তদ্ভাবে তাত্ব মিতি সংক্ষিপ্তসারসূত্রেণ তাপ্র-ত্যৰ নিষ্পন্না ৷৷ শীতলম্ব ক্লী জডতা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শীতলতা চ।। শীতলপ্রদঃ পু॰ চন্দন । ইতি কেচিৎ।। হিমদাতরি ত্রি।। শীতলবাতকঃ পু॰ অশনপণী। ইতি শব্দরত্নাবলী ৷৷ শীতলবা-यूयुट्ड बि ॥ भीठना जी भीठनीवृष्णः। यथा। भीवना भीवनी भीवमञ्जी शा-ওরপুষ্পিক। । ইতি শব্দচন্দ্রিক।

য়। দেবীবিশেষঃ। সাচ বসস্ত বি-**एका है कारम** अधिश्राजी रामवे । यथा ऋम छेदाह। छगदन् तम् দেবেশ শীতলাযাঃ স্তবং শুভং 🏽 । वकु गर्शाम्यम विस्कारिक **खराशङ् ॥ ऋथत** छेवाह। नया-মি শীতলাণ দেবীণ রাসভস্থাণ **मिशब्दी** । भार्कनी कलामाल-তা॰ সূর্পালম্বত মস্তকা॰।। ইতি ऋमभूतान ॥ अमा विवतन মসূরিকাশকে জফ্টব্য ।। স্বটু-विनी ॥ आज्ञामनीजना ॥ बानु ক। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ भीठनी खी जनজবৃক্ষবিশেষः। শিউলীছোপ্ ইতি ভাষা। তৎ-পর্যায়ঃ। শীতপঞ্জী ২ শুক্ল-পুস্পা ৩ জলোদ্ভবা ৪ কালানু-সারিবা ৫। ইতি রত্নমালা।। শীতবন্ধঃ পু• উডুম্বরঃ। ইতি त्राजनिर्यन्धः॥ भीठलवक्रत्नि भीठरीर्वाकः भू क्षकवृकः। ইতি त्राजनिर्घणः ॥ मीजनवीर्या-যুক্তে ত্রি॥ भीजभिव॰ क्री रेमम्बदनदगः ॥ देशलायना मगद्भ जवार। ইতা मद्रः শীতশিবঃ পু॰ মধরিকা ৷ ইত্য-मतः ॥ শকুফলাবৃক্ষः । ইভি ॥

মেদিনী ।।
শীতশিবা স্ত্রী মিশ্রেয়া। ইভি
রাজনির্বন্টঃ । শমীবৃক্ষঃ । ইভি
রত্নমালা ।।

শীতশৃকঃ পু॰ ষবঃ ৷ ইতি কেচিৎ ৷৷ শীতলশুকযুক্তে তি ৷৷
শীতসহঃ পু॰ পীলুবৃক্ষঃ ৷ ইতি
জটাধরঃ ৷৷ শীতসহনীযে তি ৷৷
শীতসহা স্ত্রী নীলসিদ্ধবারঃ ৷৷
বাসস্তী ৷ ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ৷৷
শীতকার॰ ক্লী শেতটক্ষণ ৷ ইতি
রাজনির্ঘন্টঃ ৷৷

শীতা দ্রী রামপত্নী। ইতি শব্দরত্নাবলী ।। লাঙ্গলপদ্ধতিঃ ।
ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ। যথা।
শীতা নভঃসরিদিতি লাঙ্গলপদ্বতৌ চা শীতা দশাননরিপোঃ
সহধর্মিনী চা৷ শীত স্তুত হিমগুনে চ তদন্বিতে চ ৷ শীতো
হলসেচ বছবারতরৌ চ দৃষ্টঃ ।।
ইতি তালব্যাদৌ ধরণিঃ ।। অতিবলা ৷৷ জটু ঘিনী ৷৷ দূর্বা ৷৷
শিল্পিকাতৃণ ৷ ইতিরাজনির্ঘনীঃ
শীতা শুঃ পু কপূরঃ ৷ ইতি
রাজনির্ঘনীঃ ৷৷ চক্রঃ ৷ যথা ৷
শীতা শুঃ মিফি মন্ন জন্যতি
সতত জন্মরাশৌ নরাণা ৷

ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব• ॥ , শীতাণশুতৈল ক্লী কপূরিতৈল । ইতি রাজনির্ঘক্টঃ ॥ শীতাঙ্গী স্থা ইংসপদীবৃক্ষঃ।ইতি त्राक्रिनर्गन्धः॥ गीठलात्त्र जि॥ শীতাদঃ পু॰ দম্ভরোগবিশেষঃ। তস্য নিদান দন্তশবে प्रकेरा॰ । তদৌষধ स्था। भीजाम इज রক্তে তু তোষ নাগর সর্যপান। निकृ। था जिकलाका नि अर्या। का खूष धात्र ।। का नीन त्वाधु क्रका गनः भिना मिश्रम् एउ-জোহা। এতচ্চূর্ণ মধুযুক্ শী-তাদে পৃতিমাণসহর ।৷ তেজো-स्रा তেজবলা। তৈল धृठ বা বাতম্ব শীতাদে সংপ্রশস্যতে। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ শীতাদ্রিঃ পু॰ হিমালমপর্বতঃ। ইতি কেচিৎ ॥ শীতার্ত্তঃ ত্রি শীতেনপীডিতঃ। তৎপৰ্য্যায়ঃ। শীতালুঃ ২। ইতি জটাধরঃ ৷৷ শীতালুঃ ত্রি শীতার্ত্তঃ। ইতি জটাধরঃ ।। শীতাবলা স্ত্রী মহাসমক।। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ শীতাশা পুং চম্রকান্তমণিঃ৷ইতি

রাজনির্ঘন্টঃ ৷৷ শীতলপ্রস্তরশ্চ শীতীভাবঃ পু॰ মোকঃ। ইতি ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ।। শীতলত্বঞ্চ।। भीराखम॰ क्री जन। ইতি नक्ठिका ॥ শীতা তি সীতা। ক্লফা। ইত্য-मत्रज़िकायाः त्रमानाथः ॥ मीज-যোগ্যঞ্চ 11 শীৎকারঃ পু॰ বরন্ত্রীণাণ রতি-कालधनिः। यथा। मी एकाद्रा-রতনারীচঃ সুরতে বরুষোষিতাণ । ইতি জটাধরঃ॥ শীৎক্তত ক্লী শীৎকারঃ।ইতি धत्रिं ॥ শীধুঃ পুণ ক্লী পকেকুরসক্তত-मग्रा । ইত্যমরভরতে।। वि भीषुणानकर्छ। । ইতি শাব্দিকাঃ।। শীধুগন্ধঃ পু॰ বঙ্গলবৃক্ষঃ। ইতি **जिका ७८ गयः ॥ महा ११ स**न्छ ॥ শীন ত্রি ঘনীভূতঘৃতাদি। ইতি मुक्षद्वाधवग्रक्त्रनः॥ मीनः भू॰ मूर्यः॥ जकगतः। ইতি মেদিনী ।। मीकानिका जी मिकानिका। ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ ॥ শীভ ঋ ও কখনে। ইতি কবি-

कब्रफ्यः॥ ॥ जिन्नीज्या ७ শীভতে। কথন• প্রশ•সা। ইতি मर्गामामः ॥ শীভবঃ পু॰ শীকরঃ। ইতি শব त्रञ्जावनी ॥ শীভ্যঃ পু• শিবঃ।। বৃষঃ। ইতি কেচিৎ 11 শীরঃ পুণ অজগরসর্শঃ। ইতি अक्त्रज्ञावनी॥ শীরী^ন পু• হরিদর্ভঃ ৷ ইতি রাজ-निर्मणेः ॥ इतिकार्छ देखि व পাঠঃ 11 भीर्ग क्वी खोल्यंक । देखि ভাবপ্রকাশঃ ৷৷ भीर्न विक्रमः। विमीर्नः। ইতি त्यमिनी ॥ भीर्गाला जी शृश्विभनी । देख गक्रा किया विभी विभागा का শীর্ণপত্রঃ পু॰ কর্ণিকারবৃক্ষঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিক। ।। পটিকা-लाधुः ॥ निषः। ইতি রাজ-निर्घण्डः ॥ विभीर्गशत्व क्री ॥ পু॰ নিম্বৰ্কঃ। ইতি त्राजनिर्घणः ॥ विनीर्गलेख क्री नीर्नशामः पूर स्माः इंडि बि काखरमयः ॥ इन्नाहत्रनम्ह ॥ শীর্ণপুষ্পিকা ত্রী অবাক্পুষ্পী।

ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা ৷৷ नौर्गवृष्ठ॰ की वृश्यामान । তর-गूक् रेडि ভाষा। रेडि मक-**हिन्त्रा ॥ ७९** श्रिशासः । मूथ-वामः २। इंछि त्रज्ञमाना॥ मूथा-শঃ ৩। ইতি কেচিৎ ॥ অস্য গুণাঃ। কফ ভেদাগ্নি রুচি শু-क्कातिका कातका । मध्तका । व्यानार क्षीरनानिषः। लघूगा-কিম্বঞ্চ। ইতি রাজবল্লভঃ ॥ শীৰ্ণাজ্মিঃ পুত যমঃ। ইতি হেম-ठलः ॥ क्रमभारम जि ॥ শীৰিঃ ত্ৰি অপকারকঃ ৷৷ হিৎস-কঃ। ইতি শুধাতো রৌণাদিক किन् প্রত্যেন নিষ্ণানঃ। ইতি निका उका मूमी । नीर्यः क्री मखकः। ইত্যमतः॥ রুকাগুরুঃ। ইতি রাজনির্যনিঃ।। **गीर्यक** की गिरतातकगमारः । টোপ্ ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যা-**यः । भी**र्यगु॰ २ भित्रञ्ज॰ ७ । ইত্যমরঃ ॥ শিরোন্থি। ইতি द्राजनिर्वकः॥ जयभद्राजयभ-<u>ज॰ । यथा याख्वतन्त्राः । जूला-</u> भ्याला विष॰ कार्या निवानी ह বিশুদ্ধযে। মহাভিষোগেন্ত্রে-

তানি শীর্ষকত্তে ২ভিযোক্তরি ৷৷

विश्वकारम मिकार्थमा मान्य निवृद्धरा भशा जिरशादगयु मर्।-পাতকাদি গুরুতরাভিযোপেষু। শীৰ্ষকত্ত্বে শীৰ্ষক প্ৰধান শি-রো ব্যবহারস্য চতুস্পাদঃ জ্ব্য পরাজ্য লক্ষ্ণঃ। তেন দঞ্চো লক্ষ্যতে তত্ৰ ভিষ্ঠত স্থঃ তৎপ্রযুক্তনপ্রভাগীতার্থঃ। ইতি দিব্যতত্ত্বণ ॥ শীর্ষকঃ পু॰ রাহুগ্রহঃ। ইতি गमत्रञ्जावनी ॥ मखरक क्री ॥ শীর্ষঘাতী ত্রি মস্তকচ্ছেদকঃ। শীৰ্য শব্দপূৰ্বক হন ধাতোঃ ক্ ৰ্মভ্যা॰ সমারশীর্যাভ্যা• হন ইতি সংক্ষিপ্তসারসূত্তেণ ণিন্ প্রত্যযেন নিষ্পন্নঃ।। नीर्यटक्तिकः जि वधार्यः। यथा। म भीर्वत्छि पिकः भीर्वत्छिए। যোবধ মহতি। ইতি হেমচন্দ্রঃ। শীর্ষচ্ছেদ্যঃ ত্রি মস্তকচ্ছেদ্দে। পযুক্তঃ। বধ্যঃ। ইত্যমরঃ।। भीर्यग्रः क्री भीर्यकः। भित्रज्ञः। ইত্যমরঃ।। ত্রীণি শিরোরকণস-নাহে টোপ্ইতি খ্যাতে। শীর্ষে कः मूथ मन्त्रा भीर्घकः । भीर्घ गाताङ्खि भीषंगु ए ए का-দিতি যঃ। শির স্তাযতে শিরস্ত্রণ

ডঃ। ইতি ভরতঃ।। শীৰ্ষণ্যঃ পু॰ বিশদকচঃ ৷ তৎ-পর্য্যায়ঃ। শিরস্যঃ ২। ইত্যমরঃ ।। एव खण्डः स्नानामिना वा निर्मा-লে অন্যোন্যাস পুক্তে কেশে। শীর্ষে ভবং শীর্ষণ্যং চয়েকাদিতি यः। भाषमञ्ज्यापिना नीर्यमा শীর্ষনাদেশঃ। ইতি ভরতঃ।। শীর্ষরকণ ক্লী শিরস্তাণ। যথা। मित्रक्ष भी र्यत्रक्ष भी र्यगुर भी-র্যকঞ্চতৎ। ইতি হারাবলী।। मील कि नगार्थो। देखि कवि-कब्रफ्रमः॥ कि मौलिए। श्रे । সমাধিঃ সেবানুভাবন প্রবৃত্তি र्वा। यः भीलिंछ मना धर्म मिछि रलायुथः। ≷िछ पूर्गामानः ॥ শীল ৎ ক অভ্যাদে॥ অতিশা-यत्। ३७ कविकन्नफ्रमः ॥ অতিশাষন অতিশ্যকরণ ৷ जानवामि। जाननीन । छ-পধারণে ইত্যন্যে। শীলঘ নী-नितिहान मिठि क्यानियः । ইতি দুর্গাদাসঃ॥ भीलः क्री अञावः॥ मब्छः। रुङ्ग्यत्रत्मित्नि ॥ भीनः पू॰ अफगतमर्गः। ইতি **म**क्तत्रावनी ॥ চतित्वः । रेज्र-

मत्रीकाया सम्बन्ध मन्त्र । जिल्हार। देखि निवास्टरोग्री नीवतः हो अवास्त्रमः ॥ अह भारमः ॥ जिल्लाइनः १२ रनकान्-ভাবন । প্রবর্তন । ইতি भी-न बारण जनमें अजारका निष्ण-मः।। शाठिबिक्तयः। वया। छ-्रिनी खननी भीलन अपूछ । ইতি ব্ৰহ্মবৰ্ষে ত্ৰিকাপ্তশেষঃ ম नीववान् जि नीवविभिकः १ সৎস্বভাবঃ। ধ্বা। প্রথাশিনা শীলবতা মরাণা সমৃত্তভা-জা॰ বিজিতেন্দ্রি যাণা॰। এবম্বি-ধানা মিদ মাযু রত্র চিন্ত্যু সদা-वृक्षमूनिथवामः ॥ ইতি मन-मामञ्बर ॥ मब्बर । ইতি भी-नमकार्यमर्थनार ॥ শীলা স্ত্রী কৌভিন্যসুনিপত্নী। यथा। यथारङ्ग ভোজ্যবেলাया॰ नम्खीया नित्रखटि । ममर्भ भी-লা সা জ্রীণাণ সমূহণ রক্তবাস-**সা• ।। ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব• ।।** শীলত ক্লী চীর্ণ। ইতি ত্রিকা-ওশেষঃ॥ অভ্যন্তে ত্রি॥ भीवन की देशालय ।। देशवान । ইতি মেদিনী ॥ भीतां पू॰ অक्रगतमर्भः। भीश-তো রৌণাদিক ক্রনিপ্ প্রভ্যযেন

शक भाग १ हिक विकास मा ्रियाकि । यार्गि त्रमन । ইडि ं मूर्राशामा ॥ **एक् जी रनाकः।** इंछामतः॥ শুক ক্লী গ্রন্থিপর্ণ। ইত্যমরঃ।। रख ।। वजाएमा ।। मित्रकान । रेडि (रमह्यः ॥ त्नावकवृकः। ইভি বিশ্বঃ।।

শুকঃ পু॰ পক্ষিবিশেষঃ। শুষা ইতি বদভাষা শুগা ইতি হি-ন্দীভাষা। তৎগর্যায়ঃ। কীরঃ ২ । ইতামরঃ ॥ বক্রতুত্তঃ ৩ त्मशारी ह माजिमश्रियः ६ त-ক্তত্ত ৬ বক্তচঞ্চ ৭ চিমিঃ ৮ চিমিকঃ ৯। ইতি শব্দরত্মা-वनी ॥ भूकः > श्रियमर्भनः >> । ইতি জটাধরঃ।। মঞ্পাঠকঃ **>२। जमा मा॰मछनाः।** शत्रम-বৃষাত্ব। বিপাকে গুরুত্ব। भी-তলত্ব । কাস খাশ ক্ষম হরত্ব । मः आहिषः। वधूषः। मीलनष्र । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ 🗱 ॥ তস্য 'শুভসূচকদ্ব যথা। বামঃ পঠন্ রাজগুৰুঃ প্রযাবে শুভু ভবে-ক্ষকিণতঃ প্রবেশে। বনেচরাঃ কাষ্ঠশুকাঃ প্রযাতুঃ স্যুঃ সিদ্ধি-

एकम्

দাং সংস্থ নাপততঃ । ইতি ব সম্ভরাজশাসনে ৮ বর্গন। তা। ব্যাসপুত্রঃ । স চপরীক্ষিতার প্রীন-ভাগবত প্রাবধানান। তল্যোৎ-পত্তাদি র্রথা। হরিব শে বাষরী-ধে চ। পরাশর সলোৎপন্নঃ শু-কো নাম মহাযশাঃ। ব্যাসাদর-গাণ সম্ভূতো বিশ্বুনোগি রিব জ-লন্।। স তস্যাণ পিতৃকন্যায়াণ পীবর্গ্যাণ জন্যিয়তি। রুষণ গৌরণ প্রভুণ শস্তুণ তথা ভূরি-প্রভণ জয়ণ।। কন্যাণ কীর্ত্তিমতীণ

ষোগিনী॰ যোগমাতর॰ ।

ত্রন্ধদন্তস্য জননী॰ গৃহিণী মনুহস্য চ ।। ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৪
অংশ ১৯ অধ্যাষ্টীকাষা॰ শ্রীধরষামী ।। বিহ্নপুরাণে প্রজ্ঞাপতিসর্গনামাধ্যাষেপ্যেব॰ ।। ॥ ।।
অপি চ । ছৈপাষনাচ্ছকো জজ্ঞে
ভগবানেষ শক্ষরঃ । অংশেনৈষাবতীর্য্যোর্ব্যাণ সংপ্রাপ পরমণ পদ॰ ।। শুকস্যাপ্যভবন পুল্রাঃ পখাত্যন্ততপশ্বিনঃ । ভূরিশ্রবাঃ
প্রভ্রুং শব্রুং ক্রফো গৌরশ্চ পঞ্চমঃ ।। কন্যা কীর্ত্তিমভী চৈব মোগমাতা ধৃতব্রতা । ইতি কৌর্ম্মে
১৭ অধ্যায়ঃ ।। ॥ ।। সচ শ্রীক্রক্ষস্য

की आर्थः वृत्यांवस्य छेनासम्भा कन्मा चल् । इकि भाषा ना-छान्यकः । इकि स्मिनी ॥ वृक्य-वित्यकः । त्यानकांचा इकि छाषा। ইতি রত্ম্মালা ॥ छक्छनः क्षी छाष्ट्रभर्वः । ইতি को छोधतः ॥

শুকজিহ্বা দ্রী বৃক্ষবিশেষঃ ।
শুষাঠোঁটী ইতি ভাষা । যথা।
শুকাখ্যা শুকনামা চ শুকজিহ্বাশুকাননা । ইতি রন্নমালা ।।
শুকতক্রঃ পু॰ শিরীষবৃক্ষঃ । ইতি
ক্রন্নমালা ।।
শুকজেনঃ পু৽ শিরীষবৃক্ষঃ । ইতি

শব্দনালা।।
শুকনানা ত্রী শুকজিহ্বা।ইছি
রন্ননানা।। শুকসংজকে ত্রি।।
শুকনাশনঃ পুং দক্রমঃ। ইত্তি
রাজনির্ঘটঃ। শুকনাশকে ত্রি।।
শুকনাসঃ পুং শ্যোণাকবৃক্ষঃ।
ইত্যমরঃ। শুকবন্নাসাযুক্তে ত্রি
শুকপিণ্ডিঃ ত্রী শুকশিষী।ইত্তি
শব্দরন্ধাবলী।।

खकপूक्तः पू॰ गञ्जकः। ইতি ह्य-চন্দ্রঃ। खकमालाकृलकः।। खकপूक्त्रकः क्री स्थारियः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ শুকবৎপুচ্ছ-যুক্তে ত্রি।।

শুকপুষ্প। ক্লী স্থোপের ইতি ভাবপ্রকাশঃ।

শুকপুদাঃ পুশ শিরীষবৃদ্ধঃ। ইতি রাজনির্যক্টঃ।।

শুকপ্রিফঃ পু• শিরীষবৃক্ষঃ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ। শুকবল্লভেত্রি।। শুকপ্রিফা জী জয়ৄঃ। ইতি রাজ-নির্যক্টঃ।।

श्वक्षक थू॰ व्यक्तृकः। ≷ि রাজনির্ঘটঃ॥

শুকৃষ্ বা শীঘুণ। ইতি কেচিৎ।। শুকুবর্ষণ ক্লী গদ্ধজ্ব্যবিশেষঃ। গাঁঠিসালা ইতি ভাষা। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

श्वेत्र हा श्री क्षिण । हिंछ ते जिल्ला हा श्री कि विषय वि ।। श्वेत्र हा श्री कि विषय हिं।। श्वेत्र हिंदि ।। श्वेत्र हा श्री कि विषय हिंदि ।। श्वेत्र हिंदि । श्वेत्र ह

শক্চন্দ্রকা ।। শুক্সাদনীয
দ্রবামাত্রে ত্রি ।।

ক্রান্দ্রা ত্রী শুকাখ্যাবৃদ্যাইতি
রক্ত্রাদ্র্যে ত্রি ।

শুকী ত্রী কশ্যপগন্ধী । ষ্থা ।

শুকী ত্রী কশ্যপগন্ধী । ষ্থা ।

শুকী শোনী চ ভাষা চ সুত্রীবা

শুচিস্থিকা । অত্রশুচিভাষিকা
ইত্যপি পাঠঃ । শুকী শুকানজনষদুলুকী প্রত্যুলুককান্ ।।
ইতি গারুভে ৬ অধ্যায়ঃ ।। শু-

কপকিণী চা শুকোদর ফ্লী তালীশগল্রু। ইতিরাজনির্ঘণ্টঃ।৷ কীরজঠরঞ্চ শুক্ত॰ ক্লী মা•স•। ইতি শব্দ-• চন্দ্রিকা॥ কাঞ্জিক॰। ইতি হা-त्रावनी ॥ जवजवाविरगयः यथा। कम भृत कनामीनि मत्त्र-হ লবণানি চ। যত্তদুব্যে ২ভি-সৃযন্তে তচ্ছক্ত মভিধীয়তে।। অসা গুণাঃ । শুক্তণ তীক্ষোফ লবণ পিত্তরুৎ কটুক লঘু। ৰক্ষ ক্ৰমুদ্রানাহ শোথাশো বিষ স্বৰ্গনুৎ ॥ ইতি রাজনির্ঘ-•हेः ।। 🟶 ।। ७७७० सम्राध्तर कोल-বশাদমতা গত। ইতি প্রায-শ্চিত্তবিবেকঃ ৷৷ তস্য ভক্ষণ নি-रिर्दश यथा। यमः। जाशू शान्ह

করন্তাশ্চ ধানা বটক শক্তবং।
শাকং মাংস মপুপান্ধ সূপং রুষর
মের চা। যবাশ্বং পান্ধসাম্পর বচানাৎ বেহসন্তরং। লবং পান্ধবক্র্যিতং ভক্ষাং শুক্তম পান্ধবক্র্যেৎ । তং প্রতিপ্রস্রো
যথা। মনুংগ দ্ধিভক্ষাক্ষ শুক্তেযু সর্বঞ্চ দ্ধিসন্তবং। ইতি তিধ্যাদিতত্ত্বং।।

শুক্ত ত্রি নিষ্ঠুর । ইতি মেদিনী । পৃত ।। অম । ইতি বিশ্বঃ ।। প্লিফ ।। নিজ্জন । ইতি শব্দ-রত্নাবলী ।।

শুক্তা স্ত্রী চুক্রিকা। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

শুক্তিঃ স্ত্রী জলজন্তবিশেষঃ।
বিনুক্ ইতি ভাষা। তৎপর্যাযঃ। মুক্তাম্ফোটঃ ২। ইত্যমরঃ
। শুক্তিকা ৩। ইতি জটাধরঃ।।
মুক্তিপ্রসূঃ ৪ মহাশুক্তিঃ ৫ তৌতিকঃ ৬ মৌক্তিক্প্রস্বাণ মৌকিকশুক্তিঃ ৮ মুক্তামাতা ৯।
অস্যা গুণাঃ। কটুদ্বং। সিশ্বদ্ধ।
শাস হৃদ্গ্রহ নাশিদ্বং। শুল প্রশমনত্বং। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।
কপালখণ্ডং।। শৃদ্ধঃ। শধ্বদ্ধঃ

॥ নখী ॥ অশ্বাবর্ত্তঃ ॥ অর্শোরো-गः। ইতি यमिनी ॥ চक्द्रागित-**भिनः। रे**डि एम्फ्सः ॥ ङ्बि-বরণ বথা। প্রস্তারি শুক্ল কত-ब्बा श्रीमाण्य माधर्ममण्डाः थन् পঞ্চ রোগাঃ ৷ স্যাক্ষ্তক্তিক৷ সা-कृ न शिकेकाथा जीवः निता-ণা পিডিকাশ্চ তাসা ।। রো-গা বলাস গ্ৰথিতেন সাৰ্দ্ধ মেকা-দশোক্তাঃ খলু শুক্তভাগে। শু-ক্তি মাহ। শ্যাবাঃ স্যুঃ পিশিত নি ভাশ্চ বিন্দবোষণ শুক্লাভাঃ শিত নিচিতাঃ স শুক্তি সংজঃ ৷ শ্যাবা ইত্যাদি বৰ্ণত্ৰয বিকল্পো বোদ্ধ-**बाः ॥ 🟶 ॥ जथामा। न्हिकि** ६-সা। সেক আন্চোতন পিণ্ডী বিডাল স্তৰ্গণ তথা। পুটপাকো-২ঞ্জন॰ চৈভিঃ কল্পৈ র্নেত্র মুপা-চরে ।। ইতি কল্পবিধিঃ।। তত্ত্র म्किविधि यथा। मिक्ड मिव्य কার্যো রাত্রো চাত্যন্তিকে গদে। দেকস্ত সূত্ৰধারাভিঃ সর্বন্মিন্নয-মে হিতঃ।। শীলিতাক্ষদ্য মৰ্ত্যস্য थारिय मञ्जूबमूलः। এরওদল মুল ত্বক্ শৃত মাজ প্ৰাপে হিত । সুখোক্ষণ নেত্ৰষোঃ সিক্তণ বাতা-जियाननानन > ११ यथी देशदिक

तिस्य गाँधे क्रांत्र अविद्या । देखा अविद्या । देखा अविद्या । स्याप्तिका । स्वित्या श्री मुख्या कार्येश

শুক্তিজ॰ ক্লী মুক্তা। ইতি হেম-চন্দ্রঃ।

भक्रद्रशायनी ग

ইতি জটাধরঃ।। চুক্রিকা। ইতি

श्विमान् पूर श्वं विदास । यथा । महिल्ला मन्न मन्न महिलान् शक्ष मान । विक्षा- महिलान् भित्र । विक्षा- भित्र भारति । विकास महिलान् ।। विकास महिलान् ।।

শুক্র ক্লী মজ্জজাতধাতুঃ। তৎপর্যাবঃ। পুংস্তৃ ২ রেতঃ ৩
বীজ ৪ বীর্ষ্য ৫ পৌরুষ ৬
তেজঃ ৭ ইন্দ্রিষ ৮ অমবিকারঃ
১ মজ্জারসঃ ১ রোহণ ১১ বল ।
১২ ৷ ইতি রাজনির্যক্তঃ ।। তস্যোৎপত্তির্যধা। রসাজক্ত ত-

क नामा गरगात्मनः अङ्गी-ক্রিক্টা ধ্রি চতো মজ্জা मा के मा कराव परकार में क्रम विकास विकार मुख्य त्या-का निक्य विषय राग श्रीकेवर मृष्टा गंडरीक रगूःगाता की-वनगावन जन्मः ॥ जीवनगाव-ৰ উত্তম ইতি। যত আহ। জী-त्वा रमि मर्सिम् (मरह कुव विर्मिष्ठः । दीर्या त्रस्क भरत यित्रम् कीर्यं याणि कयः कना द u 🛊 ॥ গर्डमःজननশুक्रमा न-ক্ষণ যথা। স্ফটিকাভ ডব প্ন-धा॰ মধুর॰ মধুগন্ধি চ। শুক্র মি-চ্ছন্তি কৈচিত্তু তৈল ক্ষৌত্রনি-**७१ ७९ ॥ क।। ত্র্যা স্থান মাহ।** ৰথা প্ৰাস সৰ্পিস্ত গুঢ় শ্চেকো त्रा प्या। এव हि नकत्व কাষে শুক্রণ তিষ্ঠতি দেহিনাণ।। অত্ত সর্পি দৃষ্টান্ডো বহুশুক্রে रब्रमथरनम् भिर्शः मुक्करमा ली-ভাৎ। ইকুরস দৃষ্টান্তন্ত সন্ধ भूत्क भूष्म অञिशीष्टर्गिक् রস শুক্রযো লাভাৎ ॥ 🟶 ॥ তস্য कर्त्रण मार्गः यथा। माकूटल मिकः ণে পার্ষে বস্তি দারস্য চাপ্যধः। মূত্রসোতঃ পথে শৃক্রণ পুরুষদ্য

अवर्डाउ ॥ ॥ यथ भूकना क-রণ কারণ মাহ। ক্রৎজ দেহ স্থিত। **भूक॰ क्षेत्रध्यनत्र स्था । जो**त् ব্যাষ্যুত শ্চাপি হ্বান্তং সংগ্ৰ-বৰ্ত্তে ॥ স্ত্ৰীযু ব্যাযযুক্তঃ সুৱত-कणः वायामः वर्षाः। अनाका। শুক্ত॰ কামেন কামিন্যা দর্শনাৎ न्थर्भागामिश । भाषा मध्यवश्र ধ্যানাৎ সংভোগাচ্চ প্রবর্ত্ততে ॥ ইতি ভাবপ্রকাশঃ ৷৷ 🛊 ৷৷ শুক্রক यकत्र जवा भिष्या । मार्च शरेटन ১ রাজ্যায়ঃ ২ তিলঃ ৩ পটোল বাস্তৃক কাকমাচী পুনর্নৰাশাক ভিন্ন সৰ্বশাক ৪ তাবদমুদ্ৰব্য ৫ कात्ररवलककनः ७ करका विकक वा १ वामाय ४ निक्र के मुक নরিচ° ১০ গুডত্বক্ ১১ পিপ্ললী শগী ভিন্ন কটুরসঃ ১২। ইতি त्राक्तवज्ञाय मःगृही**ण ॥ 🗰** ॥ অপি চ। বীজক্ষকর নিত্য ভক্যুণ ভোজ্যঞ্চ পানকণ ৷ বৰ্জ্জ-যেৎ কার শাকাদ্যানত্যমূ বহু তিক্তকণা কাণ্শ্য রাজত রঙ্গস্থণ ভোষণ পানেপ্যবৰ্ধনণ। মূত্ৰান্তে मृज्यवीष्ठकयकाति विवर्द्धारां ११ 🗱 ११ 'छेक् वृक्तिक त्र जन गण । १ তামুখেঃ স্বৰ্ণ দীদানাণ পাত্ৰস্থ

कल हर्यात्वाः। भू कर्वाक्तवतः छ।-य॰ ততু পেৰ॰ প্ৰৰত্নতঃ ।। ইতি कानिकाभूतात्व ५२ व्यथायः॥ 🕨 ॥ भूक्कवर्षक जवगानि यथा । পানীষণ ১ বিশেষতঃ হৈমন্তিক-**जनः** २ ठालाषु ७ ठमनामिज-ব্যানুলেপন ৪ রক্তশালিধান্য ৫ হৈমস্তিক ষষ্টিকধান্য ও গো-ধূমঃ ৭ মাষঃ ৮ সামান্যশুন্ধনা-রীচপত্রশাক > সামান্যক্লিমশু-ষনারীচপত্রশাকজল॰ ১০ কল-ষীশাক ১১ কাক্ষাচীশাক ১২ পোক্রশাক ১৩ মুঞ্জাতকঃ ১৪ বার্ত্তাঙ্গঃ ১৫ বিদারী ১৬ হস্ত্যা-লুক ১৭ মধালক ১৮ প্রামুণ ১৯ मूक्षा<u>यु</u>॰ २० नागत्रक्र॰ २১ বছৰারফল॰ ২২ পঞ্চকণ্টাফল• ২৩ কণ্টাফল্যস্থি ২৪ পক্ষতাল २৫ शक्कमनः २७ हम्भक्कमः ल॰ २१ जाका २৮ थब्कू त॰ २२ ধাত্রী ৩০ সন্মাওমজ্জা ৩১ তা-বন্ধৎস্যাঃ ৩২ বৃহন্দৎস্যঃ ৩৩ সমুদ্রমৎস্যঃ ৩৪ রোহিতমৎস্যঃ ৩৫ ভাকৃটমৎস্যঃ ৩৬ পাঠীন-মৎস্যঃ ৩৭ ভেকলিমৎস্যঃ ৩৮ চিত্রফলমৎস্যঃ ৩৯ বাউশমৎ-স্যঃ ৪০ মদ্গুর্মৎস্যঃ ৪১ বর্মি-

মৎস্যঃ ৪২ ফলীমৎস্যঃ ৪৩ চি ঙ্গটমৎস্যঃ ৪৪ পর্বত্যৎস্যঃ ৪৫ এলঙ্গ মুখ্য ৪৬ শকলীমুশ্যঃ ৪৭ চম্পত্ৰন্থৰ সাঃ ৪৮ প্ৰোপ্তী-यथमाः ४२ एकम्थनाः ६० मा-मानामान्त ७ श्रमहामान ६२ ভূশবাৰা ক ৫৩ অনুপ্ৰমাণ্ডৰ ৫৪ क्लक्यां न ०० कल्लाद्रयां न ৫৬ ছাগমা স ৫৭ বারাহ্মা স ৫৮ কুর্ম্মাণ্স ৫৯ তিত্তিরি ৬০ স্লিম্ব ৬১ চটকানা মাণ্স ৬২ ছ্ত্মাত্ম ৬৩ হত্মবীজ্ঞ ৬৪ শুকপক্ষিমাণ্সণ ৩৫ মযুর ৬৬ শরারি ৬৭ মলা ৬৮ কাদর ৬৯ बलाका १० वक्यां मः १३ जीर्न-यमा १२ मगखकीत १७ भार्-গ্ধণ ৭৪ হস্তিনীদৃগ্ধণ ৭৫ তাবৎ-कीत्रमञ्जालका १७ माहियमधि ৭৭ দ্ধিসরঃ ৭৮ দ্ধিমস্ত ৭৯ নব-নীত ৮• তাবদ্যুত ৮১ তাৰদি-^{*} ক্ষুঃ ৮২ বিশেষতঃ পৌগুকেক্ষুঃ ৮৩ দন্তনিশীডিতেকুরসঃ ৮৪ ষন্ত্রনিষ্পীডিতেকুরসঃ ৮৫ অগ্নি-পকেক্ষুরসঃ ৮৬ ইক্ষুফাণিত ৮৭ ইকুগুডঃ ৮৮ ইকুখণ্ড ৮৯ মধু-রী ৯০ শুঙ্কপিপ্ললী ৯১ শুগুী ৯২ সোর্ডক ১৩ লশুন ১৪ পলাখুঃ

৯৫ সৈন্ধবং ৯৬ অন্ধং ৯৭ সতৈ-ল লবণাম্বিত দগ্ধনৎস্যঃ ৯৮ रेञन नवगयुक भनानत्विञ কদমলেপিত অসারদগ্ধ লবণ বেশবার পুরস্কৃত সার্ভক কটু-रिक्रमणाम्बद्धारमाः २२ मा-ক্ষৎস্যাধ্যব্যঞ্জন ১০০ মাণ্সর-नः ३०३ शद्भिकाशमाःमः ४०२ ষ্তপুরঃ ১০৩ মধুমন্তকণ ১০৪ मूक्तरकनकः २०७ जूनगा २०७ ১০৭ এরওমূল ১০৮ গোক্সুরঃ ১০৯ সামান্যবলা ১১০ বিশেষ-তঃ পীতবুলা ১১১ অশ্বগদ্ধা ১১২ थमात्रनी ১১७ मार्यभनी ১১৪ क्रमञ्जीवृक्तः ১১৫ রাজवृक्षयः व • ১১৬ শিলাজতু ১১৭। ইতি রা-कदल्ला प्रभावीय ।। 🖝 ।। নেত্ররোগবিশেবঃ। ইতি মেদি-मी ॥ ज्यमा विवत्रनः भूक्रमत्क দ্রস্কব্যুণ ।।

শুক্রঃ পু
প্রহবিশেষঃ। তৎপর্যায়ঃ। দৈত্যগুরুঃ ২ কাব্যঃ
৩ উশনা ৪ ভার্গবঃ ৫ কবিঃ ৬।
ইত্যমরঃ।। সিতঃ ৭ আক্ষুজিৎ
৮ শতপর্বেশঃ ১ ভৃগুসূতঃ ১
ভৃগুঃ ১১ ষোডশার্চিঃ ১২ মঘাভূঃ ১৩ শ্বেতঃ ১৪ শ্বেতরথঃ ১৫।

ইতি শব্দরত্নাবলী।। যোডশা॰-শুঃ ১৬। ইতি জটাধরঃ ॥ 🗱 ॥ তদ্য শুক্তেতি নামকারণ বথা ৷ নিদন্তাদিষু দৈত্যেষু ভূষএবো-थिए उर्थ । मुकाबा जागर जरदा मकी भक्त यखरी ।। महाराज्य বচো ৎসহত শৃণু বত পরমান্ত্রতী। অবিচিন্তা মসহক মৃতানাণ জী-ৰন পুনঃ ৷৷ বে হতাঃ প্ৰমথে দৈত্যা বথাশক্ত্যা রণাজিরো তে সৰ্বে জীবিতা ভূষো ভাৰ্গ दिवाथ विमास। ११ जिलम देव म-হাদেব সহৎকর্মা ক্লত॰ রণে। স॰ জাত মফল•দেৰ শুক্ৰবিদ্যাৰলা-व्युवार ॥ इंटाव मूट्क वहरन निक्ता क्वनिक्ता। अध्यादाह প্রভুঃ প্রীত্যা স্বার্থসাধন মুক্তর্মণ ।। গচ্ছ শুক্র• গণপতে মমান্তিক নুপান্য ৷ অহুণ তং সম্ভূতিষ্যামি খৰা বোগঁণ সমেত্যভ়ি ৷৷ ইত্যেব मूर्ण क़रजन नन्मी गन्मि खंडः । ত नमञ्ज मूलाशमा, ननी मल्लूकाँ दिशवान् ॥ तथा छा र्शव मानित्ना সি॰হঃ কুদ্ৰমৃগণ যথা। তামাদাব হরাভ্যাস মাজগাম বিনাযকঃ ॥ নিপাত্য রক্ষিণঃ সর্বানথ শুক্রণ ন্যবেদ্বৎ। ত মানীত কবি শ-

ৰ্বঃপ্ৰাক্ষিপদদনেপ্ৰভূঃ !৷ স শস্তু-না কবিশ্রেষ্ঠো গ্রস্তো জঠর মা-ছিতঃ। তুষীৰ ভগৰম্ভণত বাশ্মী বাণ্ডি রথাদরাও।। শুক্র উবাচ। নমোস্ত তে শক্ষর শর্ব শস্তো সহ-मु मिजाब्यि भिरता नम एउ। मृ-ষ্ট্ৰৈব সৰ্বণ ভূবনণ তবোদরে প্রা-ম্ভো ভবন্ত শরণ প্রপন্নঃ ॥ ই-ত্যের মুক্তে বচনে মহাত্মা শস্তু ৰ্বচঃ প্ৰাহ ততে। বিহুস্য । নিৰ্গ-চ্ছ পুক্রোপি মমাধুনা ত্বং শিশ্পেন ভো ভার্গববংশচন্দ্রঃ।। নামা তু শুক্রেতি চরাচর স্ত্রাণ স্তোষ্যস্তি নৈবাত্র বিচারণাস্তি। ইত্যেব-মুক্ত্বা ভগবান্ মুমোচ শিশ্পেন শ্কো স চ নিৰ্জগাম ৷৷ বিনিৰ্গ-তো ভাৰ্গববংশচন্দ্ৰঃ শুক্ৰন্ব মা-পদ্য মহানুভাবঃ। ইতি বামনে ७७ जुड़ाायः ॥ 🚓 ॥ ज्राः नाग्र-বৰ্ণীনকোণ স্ত্ৰী ব্ৰাহ্মণজাতি য-জুর্বেদ রজোগুণাম্লরস ব্যরাশি হীরক রত্ন ভোজকটদেশানা ম-ধিপতিঃ। ভৃগুমুনিসস্তানঃ। ন-वाजुल्मतीतः । भूषायः । मूर्याम् । थः। त्युठंदर्गः। bo कु कु कः। मृता-जनमाला वत कमखलू मखभाती। শুক্লবন্তঃ। ইন্দ্রাধিদেবভাকঃ।

সচীপ্রত্যধিদেবতাকঃ। শুভগ্র-रः। जनदाङ्काल अवनः। জলচারী। কফপ্রকৃতিঃ। ৰূপ্য-ज्ववा थाना कि यायी। यक्षावयः। রতীশ্বরঃ। জলভূমিচারী। শ্বিশ্ব-क्रिटिः। विश्वम यन्यागाः स्वामी চ। ইতি বৃহজ্জাতক গ্রহ্মাগত-ত্বাদ্যঃ ।। #।। তস্য ভোগ্য॰ দি-ন॰ শুক্রবারঃ। তত্র জাত ফল॰। প্রসমচিত্তে৷ মতিমান্ গুগজ্ঞ মু-কেশবেশঃ সিতৰন্ত মাল্যঃ। ব-স্কুপ্রিয়ো ভার্গববারজাতঃ শীয়ু প্রসাদঃ সশলো নরঃ স্যাৎ ॥॥॥ তস্য ক্ষেত্ৰজ্ঞাত ফলং। শুক্ৰালয়ে कात्राकवाविषटका माञाजिटशयः শ্রুতশাস্ত্রদক্ষঃ। কলিপ্রিয়ো বাত কফান্বিতঃ স্যান্মেধান্বিতো হাস্য-পটু শ্ব্দাত্যঃ ৷৷ 🛊 ৷৷ তস্য ত্ৰেকাণ-জাতফন্ত্ৰ কেকাণে ভৃষ্ণনন্দ্ৰস্থ সূতনুঃ পাত্রণ ধরিত্রীপতেঃ সর্বজ্ঞঃ বেজনানুরাগঙ্গশলে। দাভা স **তা॰ বল্লভঃ। সংপূৰ্ণ**ক ৰ**রাঙ্কনা**--ত্মজ্বনৈঃ স্ফীতঃ ক্রপালুঃ শটিঃ শান্তঃ সভারতোতিযুক্ত স্থাদনো श्रमीन्तरका नतः ॥ 😻 ॥ छमा নবাংশজাতফল । নারীরক্তো ললিতন্যনো মঞ্কেশঃ ফ্লশাঙ্গঃ ||

কয়ুগ্রীবো ভবতি কনক শ্যাক ৰ্শীঃ সুকেশ্বঃ। ক্রুরঃ ক্রেণঃ করি त्रिंदिना मानगीत्ना खन्द्रकाः ব্যান্যুর্যো বিমল্যশ্যা মান বো ভাৰ্গবাংশে ॥ 🛊 ॥ তস্য হা-্দশা•শ জাত ফল•। শূরো বহু-ৰ্ষনো ভোগী নৃত্য গীতপ্ৰিয়ঃ স দা। শুচি দাতা ক্ষমী ভোকা काममा॰टम ज्टा नंतः ॥ 🕸 ॥ ত্বস্য ত্রি॰শা॰শ জাত ফল॰।।'ব-रुष्ट्र वर्णात्रशृर्वः मुन्तत नहाक्रमृति र्यूविष्क्रनिविद्यामी वक्षरमोधा-র্পতোগঃ। দিজ সুর গুরুভক্তো দানশীলঃ রূপালু রসুরপতি গু-(द्राः मामानव जि॰मक्रम्यः)। रेजिकाश्रीधानीयः ॥ 🛊 ॥ दिस्र-📆 জাদি সপ্তবিংশতি বোগান্তর্গত চতুৰি শযোগঃ। তত্ৰ জাত ক-লুং ৷ ৰাখ্যা বিবাদে বিজ্ঞান गजायाः नकाम मालागवर रेज যুক্ত জিতেজিক স্টাম কুলে। মহৌজা শুক্রাভিধানে জননং হি মস্য।। ইতি কোষ্ঠীপ্রদীপঃ ।। 🐙 १। व्यक्तिः ॥ विवक्तवृक्तः ॥ জ্যৈষ্ঠমাসঃ। ইত্যমরঃ॥ শুক্রকরঃ পু॰ মজ্জা। ইতি হেম-চন্দ্রঃ।। বীর্য্যকারকে তি ॥

শুক্রত্ব পু॰ মর্রঃ। ইতি শব্দ চন্দ্রিকা।। রৈতাতীজকে ক্রি শুক্রত্ব পু॰ মুক্রা। ইতি শব্দ চন্দ্রকা।। নীর্যাজাতমারে কি।। শুক্রলা স্ত্রী উচ্চটা। ইতি চক্রলা শব্দট্কাযাণ ভরতঃ।। বীর্দ্রান তিরি কি ক্লি

শুক্রবারঃ পু শুক্রগ্রহভোগ্য দিনং । যথা । তীর্থেভরক্রপ্রতি-প্রসব্দাহ । শুজিঃ । অষনে বি কুর হৈব সংক্রাভ্যাং গ্রহণের চ । উপাক্রপাণি চোৎসর্গে বুগাং দৌ ভূতবাসরে ।। সূর্য্য শুক্রাদি বারেপি ন দোষ স্তিল তপ্রি। ইতিপ্রাবশ্চিত্তভত্তং ।।

শুক্রাঙ্গর পুণ মযুরঃ। ইতিজাটি । ,ধরঃ।।

युवः ॥

শকাং তি শুক্রসমনী। শুক্রশকাং ইয় প্রত্যয় নিশ্বর: ।।
শুরুণ ক্লী, রজ্তং। ইতিনেদিনী
।। নবনীতং। ইতি শক্চিক্রিকা।।
অক্রিয়েগুরিশেষ:। ইতি জ্বীধর:।। সভু চকুংশুক্রভাগ্রুরোগঃ। ভিষিবর গং মথা। প্রস্তারি
শুক্রকভজাবিনাংস সাথ্য সং-

काः थेन् शक्तागाः। छव भूते মাহ। সুশ্বেত মৃদু শক্কার্ম পুরু তৰ্ব্বতে চিব্লাৎ। অস্য চিকিৎ সা। ভূক্বা পাণিতল মৃষ্ট্রা চন্দু रवा वीम मीयरा । अहिद्रत्रदेशः তৰারি তিমিরাণি ব্যপোহতি। শ্বান ক্ষফতিলৈ ৰাপি চক্ষুষ ষনিলাপহ•। আমলৈঃ সভত न्नामः शत्रमृष्टि वनातरः ॥ मुर्छ नियमदेनः निखी मूटशाका खन्न रमक्षवा। शाक्या न्याव श्रीक লেম শোখ কণ্ডূ ব্যথাহরী।। ত্রিফলা পিণ্ডিকা নেত্রে বাড পিত্ত ককাপহা া অন্যদৌষধ **শুক্তি শুক্তশক**যো র্ডেব্য ।। वर्गवित्मयः । नामा ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। শুভুঃ ২ শুচিঃ ৩ শ্বেতঃ ৪ বিশদঃ ৫ শ্যেতঃ ৬ পাওরঃ ৭ অবী ৮ প্রিডিঃ ৯ গোরঃ ১০ বলকঃ ১১ ४वलः ७२ चेंब्र्जूनः ५७। **३७**% ় মরঃ।। শ্বেতা ১৪ শ্যেতা 🎉 শ্যেনী ১৩ বিষদঃ ১৭ সিভা ১৮ জাবলকঃ ১৯। ইতি ভট্টীকর্মা। শিতিঃ ২০ পাঞ্জুঃ ২১ । ইতি শকরত্বাবলী।। রামঃ ২২ খরুঃ ২৩। ইতি জটাধরঃ॥ শক্রযো

গঃ। ইতি মেদিনী ॥ শ্বেতৈরঙঃ । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শুক্লপক্ষঃ। যথা ষট্ত্রি॰শন্মত ৷ তত্র পক্ষাবু **७) गारम भूक्न इस्ट्ये क्ट्यून हि।** <u> इत्यर्क्तिकदाः भूकः कृष्ण भाष्यक्र</u> गामकः ॥ देखि विशापिकतः ॥ भूक्रधनसूरक वि ॥।।। भूक्रवस्ति चथा। मूराण्मू टेकः अवाः मञ् की-র্ভিজ্যোৎসা শরদ্বনাঃ। প্রাসাদ *त*ोश ७१ त मनातृष्य हिमाखयः॥ সুর্ব্যেন্স্কান্ত কপুর করন্তা রজ-छ॰ रुनी। निर्माक जन्म शिकीत **ठक्ननः कत्रका हिमः ११ हा**द्यार्न-নাভ তন্ত্রন্থি স্বর্গঙ্গেভরদাভূক । শেষাহিঃ শর্করা দুগ্ধ দধি গঙ্গা সুধা জল ।। মৃণাল সিকতা হ প ৰক কৈরৰ চামর । রস্তাগর্ভ পু-**ওরীক কেতকী শখ নির্মরাঃ** ।। हंग दिनिंश श्रंक क्व हुन मुक्ति क्श्रक्षकाः। मुक्ता क्रमूम नक्का प्र-स भूर्णामत्ना खनाः ॥ देवना म ক্লাশ কার্পাস হাস বাসবৃসঞ্জরাঃ **িনারদঃ পা**রদঃ সন্দ খটিকা ক্ষ--ঙ্কিটাদ্বঃ ।। ইতি প্রতানি ।। 🏶 🗓 শুক্ল কৃষ্ণ বাচকানি বস্তুনি যথা। সিত রুষ্ণে বিধু হরী শিতি তারা-ত্রক নাগরাজ ঘনসারা:। রাম

পযোরাশ্যজ্জু ন সিংহীজানস্ত চ क्रशंनामाद्गी। विन् केटला विकृ শ্চ। হরিং ক্রমঃ সিংহশ্চ। শিতী श्वन द्वारको। जाते नक्तं ने प्राक्तवीतिक। ह। अजुकः भिति नः अयम् । जागताजः त्यदि जिंग्ही सम्मादः कर्तृ तः विष (अर्थेक । बादमा वंग ज्या प्राम विका भरगावानि म् अनगृहः अयुक्तमा । व्यक्तिः मुक्कः श्राप्त শ্চু বিশ্হীজ বিশ্হোরাছ**্র** विनर्का दर्गे खडाः इक्क । इस হাসঃ চন্দ্ৰাস্য পদাশ্চৰ শগ্ৰ কর তারকেশ সদাকাশ ব্যাস **दुभ ठालाकाः।** नील भारता शिद्धा भारति अमात्रिष्ठ कर्वे क াঃ।। শবিকরঃ কঘুকান্ডিঃ ক্র্যান্ড শ্চ। তারকেশ শ্চন্দ্রঃ উজ্জুলবা-লশ্চ। স্দুৰ্কাশঃ সর্বদাকাশঃ স **, कांगनक। (बाागरकनः निर्दान-**ভোবালো চ। তালাকো বল ভদ্র खान कनको है। नीना भूको বলভক্র: রুক্তকান্তিশ্চ। অধি কেশো অধিকশিবো ক্লাধিক বা-লক। অরিষ্ট স্তক্রণ কাকন্চ। সদাসিচ্যঃ সিচ্যে৷ বস্ত্রণ অসি-**চ्यः अन्नमगृर्कः । कलकर्शः**

इन्मः निक्रा । कलक्षे निरक পারাবতে হংসে বল্লখনৌ। ছি-রি জিম্মু ঘন ধিভেয়া গজাঃ সিদ্ধ মুরারিতঃ। অভ্যোনাহাজানি क्रमाम्बग्ना मडिस्टा विकास ক্লশ্যামাভিধাৰকা ভৰতীতি বু-स्मः। रसिभक क्षेत्राच्छः। वर्षः ক্রিফুগজঃ। অন্ধিগজঃ। বনগজঃ । शक्क इति विक् गर्छ। इसी। এব॰ সৰ্বত্র। গঙ্গা ইতি বৃহ্বটন किर्फिणां शक्त भर्गात्वा गुज्जात्व । गुत्रातिनिक् र्शना क्रक नम्ट्रा চ। অমুবাহঃ উচ্চৈঃপ্রবাঃ মেখ-শ্চ। ক্লফাজ নাভীপুণ্ডরীক नीलाककः। यमुमाति र्वलक्छा स्मूनात्वरी ह ॥ क्रकार्था श्रान्छ-**हिनोवाहकनका** शंद्रा वद्री যোজ্যঃ। নীরদ ঘনোপলসিত मनाहियकत मिस्रूरवि পृथूना-জাভাঃ। সিত শ্যামবাচকা ইতি পূৰ্বব । ক্লফাৰ্থা গ্ৰাক্তটিনী বাচ-কশব্দাদ্বরো যথা। ক্লফনদীকর-কান্ডিঃ গঙ্গাশ্ৰেণ্ঠকান্তিঃ । পকেন क्रक्षनमीवत्रमा ममूखरमाव का-खिः। नीत्रामा निन्धिका मरखा মেঘ*চ। ঘনোপলসিতঃ ঘনো-পলঃ করকা তদ্বৎ সিতঃ ঘনো-

মেয়ঃ তদ্বদুপলসিতঃ কাস্তঃ। স-काश्यिकदाः ठलाः मर्भ यकदा ह । मिक्रुरवि निनीश्रवादः मयूज क्रिमितिनारमे ह । शृश्वाकाञः क्रेडी अधिमानारमायाचा यमा इक्टमाद है। उथा है। वहन के-শভবক্ষায় মন্ধকারাতিদীধিতিঃ । সদাধিকেশকছায়ে। নেকপীয नमक्टिनिः ॥ वश्च मेरशामिक्छायः वि<u>ञ</u>्च देगन्नव काखिमान्। का-টিকী চ লসলম্বীঃ পটা শুক ক-টি॰ বহন্।। খে তাম্বর শ্রেষণ ধ-ত্তে দ্দটিকান্ত শ্রিষান্বিতঃ। অ-ৰ্জু নদ্যুতি বিদ্যোতী: ত্যেৰ মাদি मगूबरयथ ॥ 🟶 ॥ तकः एषं ठवा-চকানি বস্তুনি যথা। রক্ত শ্বেতৌ হরি শুচি পুষর শতপত্র সূর্য্যক স্তাজাঃ। নবহংস মহাপদার্ক রু-लामताः कमन कीनातन।। रति শ্চন্দ্ৰ সূৰ্য্যযোঃ। শুচিঃ শ্বেত বৈ-শ্বানরযোগ পুষ্কর জল পদ্মযোগ । শতপত্র॰ হ॰म পদ্মযোগ। সূর্য্য-कान्तः कािरक मूर्याकात्य ह। **অङ्यः भश्चायुक्तरमः । नवर्ग्नः** নবহুংসে প্রত্যগ্রসূর্য্যে চ। মহা-পদ্মঃ শ্বেতনাগে পদ্মে চ। অর্কঃ ক্ষটিক সূর্য্যষোঃ। কমলং জলা-

बुष्याम कीनान जन बक्द्राः ।। সুহাতত্বাদিভি র্ভানে। রত্ত্বেনা-त्र त्रमाण्यूरेकः। जलाखा कम শোভাভিঃ সরোজ সমুদারিডিঃ ॥ ভানোঃ পরস্থাৎ সৃহত্তত্ত্বাদি-ভিঃ সিত রক্তৌ যথা। রবিমিত্র• চন্দ্র: রবিতুল্যশ্চ। ভানুরত্ন সূ-র্যাকান্ডো রবি পদ্মরাগৌ চ। অগ্নিরত্ন॰ সূর্য্যকান্ডো অগ্নি পদ্ম-রাগে চ। রদা॰শুক॰ দন্ত বস্ত্রে অধ্রশ্চ। জলজ্পোভা জলজা চাদৌ শোভা চেতি পক্ষে প-দ্মকান্ডিঃ। এবং সরোজারিশো-ভা সরোজস্পর্দ্ধিশোভা পক্ষে সরোজারি শক্তঃ। अমুদারিশো-**जा क्रमूमन्यकिंत्याजा**। शक्क সমুদারি রাদিত্যঃ ॥ 🛊 ॥ শীত-শ্বেত বাচকানি বস্তুনি ৰখা। পীতশ্বেতো গৌর দ্বিজরাজ কপ র্দ শস্তু হরি তার্ক্যাঃ। হৈমস্তো-মাফাপদ মহারজত চন্দ্র কলধো-তাঃ । গৌরঃ শ্বেত গীতবোঃ । षिजतात्ज। **७**क ठळाटगः। क পর্দ্ধঃ শন্তুজটাজুট বরাটযোঃ। শञ्जू र्बन्न जिल्लाहनरमाः। इतिः পিঙ্গল সিংহযোঃ। তাকোঁ। গ্ৰ রুডঃ পকে উচ্চৈ:প্রবাং। হৈ-

मरलामः ट्रह्मा १व॰ ट्रियः। औरक श्रिमाय । असीलम जूदर्श जद्राष्ट्रयाः । बराद्रक्रकः जूबर्व बागारमाः। एखः वर्व न-नाक्रद्धाः। क्लार्थाङ रहम क পুরুষাঃ া সুশোভিতারকৃট্রীঃ वर्गायमयमू जिः। महत्ना-পল সৎকান্তি গাঙ্গেষছবি পে-শলঃ।। তারকুটো ৰপ্যসমূহঃ। পকে আরক্টো রীতিঃ। সুশো-ज्य मर्गः कनक्ष ॥ 🛊 ॥ जैथ স্লোকোত্তীণানি। গোপতি তা-ক্ষাকান্তিঃ রবি গরুডচ্ছবিঃ। পক্ষেগোপতি রিন্দ্র স্তদ্য তার্ক্য खर्तकः। चामरमविगति मर्तना-खट्यकः देवनामनः । ইতি क-"বিকল্পতাযা" ২ স্লেষে উদ্দিষ্ট-वर्गन > अजूम ।।

শক্তাদান গ্রুপকঃ। যথা।
পক্তাদান তিথয় ক্রমাৎ
পক্ষণ ক্তাঃ। দর্শান্তাঃ রুষ্ণপক্ষে তাঃ পূর্ণিমান্তান্চ শুরুকে
।। ইতি ভিথ্যাদিতত্ত্বং।। শ্রেডবর্ণদ্যা।

শুক্রকণ্ঠকঃ পু॰ দাত্যহপদী।ইতি শব্দমালা।।শ্বেতগলযুক্তে ত্রি।। শুক্রকদঃ পু॰ মহিষকদঃ।ইতি ताकनिर्वनिः ॥ त्यक्त्वकः ॥
एक्नकः जी व्यक्तिकः ३ वि
ताकनिर्वनेः ॥
एक्नकः जि व्यक्तकः ॥
एक्नकः जि व्यक्तकः ॥
एक्नकः जी त्यव्यन्त्रकः ॥
एक्नकः जी त्यव्यन्त्रकेत्र्वाः
। उत्पात्रभः यथा । त्याव्यकः
गा वीकानि नवनीव्यकानि ।
व्यक्ता वानिवानि गूः भूक्रकः
व्यावः ॥
व्यावः ॥

শুক্লদ্ব ক্লী শুক্লতা। শুক্লসভাব ইত্যৰ্থে স্ব প্ৰত্যবেন নি**শম**।। एक्षपक्षः शुः मृत्राविकः। रेजि गक्रिका॥ त्थ्रं भू स्त्रू वि एक्रधाजूः शू॰ किंगी। रेजि হেনচন্দ্ৰঃ ম শ্বেতৰৰ্ণৰাতৃদ্ৰব্যঞ্চ ন্ডক্লপক্ষঃ পু॰ সিতপকঃ। চন্দ্ৰস शंक्षर्कान्कृतश्यम् मनकनाकिः गाञ्चा । जयमगायः । मिछ खान्यानानः माष् म्क्रणः वि गमः मू हिः। मूक्त्रभाव क्रक्त्रभ ক্ষে বহুলো বনি চ স্মৃতহা৷ ইতি রাজনির্ঘটঃ ॥ সত্ শুক্লপ্রতি-পদাদি পৌৰ্মাস্যস্তপঞ্চশতি থ্যাত্মকং ছেকা তের পকাবুড়ে गारम भूक करको ज्याम हि।

विखन्बिकतः भूतः स्टब माखः कराजकः॥ रेडिं डिथापिछवः ॥ 🐞 ॥ कर्षविद्युख्य ज्ञानवंशा-মিডিথে জাছদ। स्था। শুক্লপকে ভিখি প্রাহা বস্যা মভ্যুদিতো द्रविः। क्रकंशतक ठिशि आंशा य-স্যা মন্তমিতো রবিঃ ৷৷ ইতি বিষ্ণু श्राचित्र । 🐞 ।। मण्कात्रकर्मनः শুক্লপক্ষত্তিব্যতা যথা। আশু-मायनः। উদগৰনে আপুৰ্যামাৰে भटक कमार्टन सकत्व होस्क-ৰ্ষ্মোপন্তন গোদান বিবাহাঃ বি-वारः गार्बकानिक रेट्याटक ॥॥॥ विषात्रधमा मूक्तभक्कर्वराजा यथा। मनन भातिकाटा। ब्रत्य र्छ-ता र्गा नंता उरस्विनीन् व्किञः। श्वर्कत्मृष् भूरको ह বিদ্যারম্ভ: প্রশাস্তে ॥ 🛊 ॥ পু-ষরিগারন্তসা শুক্লপক্কর্বাতা यशा। यৎ मा भू कारन। ध्वां भागः भक्तः প্ৰভ শুক্ল মতীতে চোত্তরাবণে ! रेजामि ॥ 🗱 ॥ प्रतिथितिश्रीशाः শুক্লপক্ষবর্ত্তব্যতা যথা ৷ ব্যবহা-त्र नम्णट्य। व्यक्तिं। नर्राप्तानाः क्लावमा वित्नवंतः। উङ्ग्रायन **जानरम मूक्तनरक ७८७** मिटन ॥ शा गृशातक गृरक्षरविभाषाः गूज-

শক্ত ক্রিতা বথা। মৎস্যপ্রাবে। শুরুপক্ষে ভবেৎ সৌখ্য

রক্ষে তক্ষরতো ভবং। ইতি
জ্যোতিস্তব্ধং।। ৩।। নবামআদ্ধান্য শুরুপক্ষকর্ত্তরতা বথা
। আশ্বিনাধিকারে। শুরুপক্ষে
নবং ধান্যং পরুং জ্ঞাত্বা সুশোভনং। পচ্ছেৎ ক্ষেত্রী বিধানেন
গীতবাদ্য পুরংসরং।। তেন দেবান্ পিতুঁ ক্ষেত্র তর্পবেদর্চ্চবে
তথা। অপি চ। বৃশ্চিকে শুরুপক্ষেত্র নবামং শস্যতে বুবৈং।
ইতি তিথ্যাদিতব্ধং।।

खक्षभूष्यः भूः इत्वकक्षः ॥ जन्म-भूष्यवृक्षः ॥ मक्रवकः । ইতি त्रञ्ज-माना ॥ भ्यञ्जभू मयूटक वि ॥ खक्षभूष्या जी नागम सी॥ भी-जनसारी हो त्रञ्जमाना ॥

শুক্লপূষ্ণী স্ত্রী নাগদন্তী। ইতি রাজনির্বন্টঃ।

শুক্লপৃষ্ঠকঃ পু॰ সিন্ধুকবৃক্ষঃ। ইতি শব্দচন্দ্ৰিক।। শ্বেতবৰ্ণপৃ-ষ্ঠমুক্তে ত্ৰি।।

श्करनः भू॰ जिनिविद्यास्था। वामूप्तवा स्रमी क्रयः। नव श्क्रमा वनास्त्रमी । स्रम्हा विज्ञा स्रमा स्रम्भ क्रमा विज्ञासा स्रम्भ स्रम्भ क्रमा विज्ञासा নন্দো নন্দনঃ পদ্মো রামো বি-কুছিষ স্তৃমী। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। শুক্লমণ্ডলং ক্লী চক্ষুংশ্বেতক্ষেত্রং। । ইতি কেচিৎ।। শ্বেতবর্ণগোল-লবস্তু চ ধ

শুক্রবোহিতঃ পু॰ শেতরোহিত-ৰৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শু-ভুরোহিতমৎস্যশ্চ।।

শুক্ললা স্ত্রী উচ্চটা। ইতি রত্ন-মালা।। শেহদাতরি ত্রি।।

শুক্লবর্গঃ পুণ শ্বেতবর্ণসজাতীয-তব্যং। যথা শশ্ব শুক্তি কপর্দ-কাদি। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শুক্লবাষসঃ পুণ বকঃ। ইতি ত্রি-

কাণ্ডশেষঃ। শ্বেতকাকশ্চ ।।
শুক্লশালঃ পু॰ গিরিনিয়ঃ। ইভি
রাজনির্বন্টঃ। শ্বেতশালবৃক্ষশ্চ
শুক্লদীরা স্ত্রী কাকোলী। ইভি
রাজনির্বন্টঃ।শ্বেতদৃদ্ধযুক্তে ত্রি
শুক্লা স্ত্রী সরস্বতী। ইভি ত্রিকাশুলেষঃ।। শর্করা। ইভি শব্দচক্রিকা।। কাকোলী।। বিদারী

শ্বেতবর্ণা চ।। শুক্লাঙ্গী শেকালিকা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শ্বেতাব্যবযুক্তে তি।।

॥ त्रूरी। रेषि द्राक्रनिर्वकः॥

শুক্লাপাকঃ পু॰ মযুরঃ। ইতি হে মচন্দ্রঃ। শেতবর্ণনেত্রান্তে তি ।। শুক্লায়॰ ক্লী অমশাকঃ। ইতি রাজনির্মণ্টঃ।।

শুক্লার্ম^ন ক্লী নেত্ররোগভেদ:। যথা। অথ শুক্লভাগজা রোগাঃ। তেষাণ নামানি সংখ্যাঞ্চাহ। প্র-ন্তারি শুক্ল কতজাধিমাণ্য সা युर्भ म॰ ख्ढाः थल् शक्रद्वाभाः । স্যাচ্ছজিকা সাজ্জুন পিষ্টকা-খ্যা জাল॰ শিরাণা পিডিকাশ্চ তাসাং৷৷ রোগা বলাস প্রথিতেন সার্দ্ধ মেকাদশোক্তাঃ খলু শুক্ল-ভাগে ॥ 🏶 ॥ তেষু প্রস্তার্য্যর্ম-ণো লক্ষণ মাহ। প্রস্তার্য্যন্ম তনু স্তীর্ণ শ্যাব রক্ত নিভ পিত। তনুঃ পুত্তলী। স্তীর্ণ বিস্তীর্ণ । শ্যাবরক্ত মিত্যত্র বিকল্পে বো-क्रवाः॥ ॥ श्रक्तार्यार। मूत्यः ত মৃদু শুক্লাৰ্ম শুক্ল তম্বৰ্দ্ধতে विदार ॥ 🗱 ॥ त्रकार्यार । भ-দাভ পৃদু রক্তার্ম যন্মা সে চীয-তে সিতে। পদ্মাভ কর্ণেন রক্ত মিতার্থঃ। চীষতে উপচীষতে ॥ # ॥ अधिया मार्मा ह। शृशू मृ-षिया 'गार्य तहलक यक्ति छ । পृथू विखीर्गः। वहनः भूष्टेः। य-

রুমিভ ঈষৎ রুফলোহিত।।।।।। স্বাযুর্মাহ। স্থির প্রসারি মাণসা-षा॰ एकः भाषुर्या शक्ष्यः। स्त्रितः ক্ঠিন । শুক্ল সাবরহিত ।। 🗱।। ওজিমাহ। শ্যাবাঃ দ্যুঃ পিশি-তনিভাশ্চ বিন্দবো ষণ শুক্লাভাঃ সিত নিচিতাঃ স শুক্তি সংজ্ঞঃ। শ্যাবা ইত্যাদি বর্ণত্রযে বিকল্পো वाक्तवाः ॥ 🟶 ॥ ञर्क्क् नमार । একো ষঃ শশরুধির প্রভস্ত বিন্দুঃ শুক্লস্থে। ভবতি ত মজ্জুনি বদ-**खि ॥ # ॥ शिक्ट**कमार । स्निम মারুত কোপেন শুক্লে মা[°]স॰ স-মুমতে । পিষ্টবৎ পিষ্টক বিদ্ধি मनाकाममं मज्ञिष्ण ॥ शिकेव९ শ্বেত ॥ 🟶 ॥ সিরাজালমাহ । জালাভঃ কঠিনঃ শিরোরুণঃ শি-রাণাণ সম্ভানো ভবতি শিরাদি জাল সংজ্ঞঃ। শিরাদি জালসং-ত্তঃ শিরাজালস তঃ ॥ 🟶 ॥ শি-রাপিডিকামাহ। শুক্লস্থাঃ সিত পিডিকাঃ শিরাবৃতা যা স্তা বি-দ্যাদসিত সমীপজাঃ শিরাজাঃ ॥ 🗱 ॥ বলাসগ্রথিতমাহ। কা॰-**দ্যাভো ২মৃদু রথ বারিবিন্দু ক**-(क्रा विरक्करका नक्षनित्ठ वला-সস-জ্ঞঃ। কা•স্যাভঃ শ্বেত ই-

ত্যর্থঃ। অমৃদুং কঠিনঃ। বারিবিন্দুকল্পঃ এতেন মনাগুলতত্বণ
বোধ্যতে। বলাসসভ্যঃ বলাসগ্রথিতসভ্যঃ। কচিদেকদেশেনাপি সমৃদ্যাবগমাৎ। যথা
ভীমো ভীমসেন ইতি। অতএব
সূক্রণতে। নামসংগ্রহে বলাসগ্রথিতপদং নির্দিষ্ট । ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।

खिक्रमाँ पूर खक्रण। खक्रमका
क्रिम् প্রত্যায়েন নিপায়ঃ ॥

खक्रांशना স্ত্রী শর্করা। ইতি
রক্ষণালা। শ্বেতপ্রস্তরে পুং ॥

खङ्गः পুং বটবৃক্ষঃ ॥ আমুতিকবৃক্ষঃ। ইতি মেদিনী ॥ শুকঃ ।
ভূষা ইতি ভাষা। ইতি শুকশক্দার্থে মেদিন্যুণাদিকোষো।।
ভঙ্গা স্ত্রী পর্ক টীবৃক্ষঃ। ইতি মে
ক্রিমী ॥ নবপল্লবকোশী। ইতি
হেমচন্দ্রঃ ॥ ধান্যাদিশৃকশ্চ।
ভূষা ষস্য প্রসিদ্ধিঃ ॥

শুঙ্গাকর্ম ক্রী পুংসবনসংস্কার-বিশেষঃ যেথা। অগ্নিস্ত মায়-তো নাম গর্ভাধানে বিধীষতে। পুংস্বনে চন্দ্রনামা শুঙ্গাকর্মণি শোভনঃ ।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বং ।। তৎকর্মানুষ্ঠানং যথা। শো-

ভননামান মগ্নি সংস্থাপ্য বিৰু-পাক্জপাস্তা স্শণ্ডিকা সমা-প্য বটবৃক্ষস্য পূৰ্বোত্তরশাখাষাণ कलयूगलभालिमी क्रिमिछ तम्-পহতা বটশুকা ধ্বানা মাধা-**গায়া ত্রিভি স্ত্রিভি প্র্ডেক্টে সপ্ত**-বারান্ সপ্তভি মঁ দ্রৈঃ ক্রীণীষাৎ। मञ्जाना॰ मञ्जाना मृष्णानयः माधा-রণাঃ। প্রজাপতি খঁষিঃ সোম ব-ৰুণ বসু ৰুজাদিত্য মৰুদ্বিশ্বেদেবা দেবতা ন্যগ্রোধুশুকা পরিক্রয়ণে विनित्यागः। उँ यमानि तनिगी সোমাষ দ্বা রাজ্ঞে পরিক্রীণামি। ইতি গুডকত্রযেণ একণ পরিক্রয-প॰ ।। ষদ্যসি বারুণী বরুণায ত্বা রাজ্ঞে পরিক্রীণামি। ইতি গুডক ত্রযেণ দিতীয় পরিক্রযণ ৷৷ য-দ্যাদি বসুভ্যো বসুভ্য স্ত্রু রাজ্ঞে পরিক্রীণামি। ইতি গুড়কত্রযেণ তৃতীয় পরিক্রয়ণ ৷৷ যদ্যসি রু-**ডেভ্যো রুদ্রেভ্য স্থা রাজ্ঞে পরি**-ক্ৰীণামি। ইতি গুড়কত্ৰযেণ চতু-র্থ॰ পরিক্রয়ণ ।। যদ্যসি আদি-ত্যেভ্যঃ আদিত্যেভ্য স্থা রাজ্ঞে পরিক্রীণামি। ইতি গুড়কত্রযেণ পঞ্চন পরিক্রেয়ণ ৷৷ যদ্যসি মরু-ভো৷ নরুদ্ধা স্থা রাজে পরিক্রী-

ণামি। ইতি গুডকত্রযেণ ষষ্ঠ॰ প-রিক্রয়ণ ।। যদ্যসি বিশ্বেভ্যো দেবেভ্যো বিশ্বেভ্যো দেবেভ্য-ন্তু। রাজ্ঞে পরিক্রীণামি । ইতি গুডকত্তবেশ সপ্তম পরিক্রমণ ।। ততঃ ক্রীতা॰ বটশুঙ্গা॰ অনেন यखन वृक्षानात्यः । श्रकाश-তি ঋষি রোমধ্যো দেবতা ন্য-গ্ৰোধ শুঙ্গাচ্ছেদনে বিনিযোগঃ। ওষধযঃ সুমনসো ভূত্বা অস্যাবী-র্য্যণ সমাধত্ত ইষণ কর্ম্ম করিষ্যতি। তত স্তাণ বটশুঙ্গাণ তৃণেন বেঞ্চি-তা মন্তরীকেণানীয় অন্তরীকে স্থাপষেৎ। ততঃ ক্বত শোভন-নামো অগ্নে রুত্তরতঃ প্রকালিত শিলাযাণ বন্ধচারী সমারী ভগ-বতী বা শ্রুত স্বাধ্যাযশীলো বা ব্রাহ্মণঃ আচারতো নীহার জলে-नानावृञ्दलारकुन भूनःभूनः त्र-ষ্যেৎ। ততো ২গ্নেঃ পশ্চিমতঃ উত্তরাত্রেষু সন্দেষু পশ্চিমাভি-मूथी॰ वधृ॰ পূৰ্বদিগানতমন্তকा॰ রুত্ব। পৃষ্ঠদৈশে স্থিতঃ পতি দক্ষি-ণপাণে রঙ্গুঞ্চানামিকাভ্যাণ বস্ত্র-বদ্ধাণ পেষিত্বটশুক্ষাণ গৃহীত্বা গর্ভবত্যা দক্ষিণনাশাবিবরে শু-ঙ্গারসং নিক্ষিপতি অনেন সম্ভেণ

। প্রজাপতি ঋ ষি রন্ যুঁ প্ছন্দো

श्मी ख বৃহস্পত্যো দেবতা নাআ্থাপু সারসমা দানে বিনিযোগঃ। পুমানগিঃ পুমানিজঃ
পুমান দেবো বৃহস্পতিঃ। পুমাণসং পুত্রং বিন্দস্ব তং পুমাননুজাযতাং॥ ততা মহাব্যাহ্নতি হোমং ক্ষমা প্রাদেশ প্রমান
লাং যৃতাক্তাং সমিধং তৃষ্ণী মগ্নো
হলা প্রকৃতং কর্মা সমাপ্য উদীচ্যং শাট্যায়ন হোমাদি বামদেব্য গানান্তং কর্মা সমাপ্য কর্মাকার্যিত্ বান্ধলায় দক্ষিণাং দদ্যাৎ। ইতি ভবদেবঃ॥

শুঙ্গী ^ন পু॰ প্লক্ষকঃ।। বটবৃকঃ। ইতি জটাধরঃ।। শুঙ্গাবিশিফে ত্রি।।

শুচ ইর ষ ঞ ঈ শৌচে । বিশরণে ।। ক্লেদে । ইতি কবিকলক্রমঃ ।। শৌচং শুদ্ধিঃ । বিশরণং বিভেদঃ । ক্লেদঃ আর্জভাবঃ ।। ইর অশুচৎ অশোচীৎ । যঞ শুচ্যতে লোকঃ শ্লানাৎ । শুচ্যতি গাত্রং বাণঃ । শুচ্যতি বস্ত্র মন্ত্রসা । ঈ শুক্তঃ ।
শুচির পৃতীভাবে ইতি প্রাঞ্চঃ ।
রমানাথস্ত এতদনুরোধাদেতা-

नर्थान् व्याथगाठि । इठि मूर्गा-मात्रः ॥

শুচ শোকে। ইতি কবিকর্মদ্রনঃ

। তালব্যাদিঃ। শোচতি। শোকঃ পুত্রাদে রদর্শনাদ্ধানুভবঃ
। কিং শোচতেহাভ্যুদ্রে বতামানিতি ভটিঃ। প্রিষত্যা মাংশোচতে শোচতে। ইতি মহানাটকং। গণক্রতানিত্যত্বাদাত্বানেপদং। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শুচা দ্রী শোকঃ। ইতি শব্দরত্ন-বলী।।

शिहः पृ॰ जिहिशा विविक्तृकः

श जायाविषामः ॥ मूक्त्वनः ॥

मृत्राव्यमः । देवाम्यः ॥ जीयः

श श्रिम्यत्नी ॥ देकाश्रेमामः ॥

देवि भित्नी ॥ दोनामिः। यथा

श गावकः शवमानम्ह श्रिवि विक्रिः

मह विक्रावः भिर्माथः शवमानः

माष्ट्रित्रम् । निर्माथः शवमानः

माष्ट्रित्रम् । निर्माथः शवमानः

माष्ट्रित्रम् । निर्माथः श्रिक्षाः

महित्रम् ज्ञार्यः । निर्माथः मूहि

विक्रिल्या । ज्ञाविः मञ्जू शकः । ।।

शावकः शवमानम्ह मूहि द्यमाः

शिवा व्या । प्रदेशः ॥

श्रिक्षः । प्रदेशः ।

ষথা। তপন স্তাপন শৈচব শুচিঃ সপ্তাশ্ববাহনঃ। ইতি শাম্বপুরা-ণণ ।। চম্রঃ।। শুক্রঃ।। বান্ধণঃ। ইতি কেচিৎ।।

শুটি: ত্রী কশ্যপপত্ন্যা স্তামাযাঃ
সূতা। য়থা। ষট্ সূতাশ্চ মহাসদা স্তামাযাঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ।
শুকী শ্যেনী চ দ্বাযা চ সূত্রীবী
শুচি গৃধিকা।। ইতি গারুডে ৬
অধ্যায়ঃ।।

खिंदः जि मूक्षध्वितिमिकः। ইত্যমরং॥ मूकः॥ অনুপহতঃ। ইতি
মেদিমী ॥ ॥ ।। পরুষর্বস্পর্শে
হস্তকালনাৎ দুচি র্যথা। দৈবাৎ পরস্ত্রিষণ দৃষ্টা বিরমেদেয়া
হরিণ স্মরন্। স্পৃষ্টা পরসূবর্বঞ্চ
হস্ত প্রকালনাৎ শুচিঃ॥ ইতি
বক্ষবৈবর্ত্তে শ্রীক্ষক্ষম্বংওও৫
অধ্যায়ঃ॥

শুচিতা স্ত্রী শুচিত্ব । যথা। শৈত্য গাম গুণ স্তবৈব সহজঃ
স্বাভাবিকী স্বচ্ছতা কিং ক্রমঃ
শুচিতা ভবস্তি শুচ্যঃ স্পর্শেন
যস্যাপরে। কিঞ্চান্য ৎ কথ্যামি
তে স্তুতিপদ ত্ব জীবিনা জীবন ত্ব ক্ষে মীচ পথে ন যাস্যসি
পয়ঃ ক স্তা গিবিষদ্ধ ক্ষমঃ।।

ইতি লক্ষণসেনঃ ॥

শুচিদ্রনঃ পু॰ অশ্বপৃক্ষণ ইতি রাজনির্ঘন্তঃ। শুদ্ধবৃক্ষণত।। শুচিপ্রনীঃ ত্রি আচমন । বথা। আচানঃ স্যাদাচমন মুসম্পর্ণঃ শুচিপ্রনীঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী শুচিমলিকা ত্রী নব্মালিকা। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ।।

শুচিরোচিঃ পু॰ চন্দ্রঃ। ইতি কেচিৎ।। শুক্লকিরণে ত্রি।। শুচা ঈ অভিষকে। ইতি কবি-কল্পদ্রুমঃ।। তালব্যাদিঃ। পঞ্চ-মন্বরী। ভালব্যবর্গাদ্যোপধঃ। ঈ শুক্তঃ। যদা বাস্তো ২ব মি-ত্যেকে। অভিষবঃ লানং মন্থনং পীড়নং সন্ধানকা। ইতি দুর্গা-দাসঃ।।

শুদীরতা স্ত্রী বীর্যাণ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ॥

শুটীর্য্য ক্লী বীর্যা । ইতি শব্দ রত্নাবলী।।

শুঠ ই খোটনে। ইতি কবিকন্ধক্রমঃ।। খোটন মিহ গভ্যাবাতঃ
। ই শুঠ্যতে। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
শুঠ্ খোটনে। ইতি কবিকন্ধক্রমঃ।। খোটন মিহ গভ্যাবাতঃ
। শুঠতি পয়ঃ সেতুনা। ইতি

मूर्गामामः ॥

শুঠ্ক আলস্যে। ইতি কবিকল্প-দেশঃ ।৷ ক শোঠযতি বৃদ্ধঃ ক্রি-যাসু মন্দঃ স্যাদিত্যর্থঃ । ইতি দুর্গাদাসঃ ।৷

श्रुष्ट्रं हे कि लायरंग हे हि कविकन्न प्रमाश । हे मुकेरं । कि मुकेषि मुके ि शक्ष माजशा ।
तमानाथ श्रुष्ट्रिश मुकी कर ।
तमानाथ श्रुष्ट्रिश मुकी कर ।
दम्मानिश स्मा श्रुष्ट्रिक मुके ि
शक्ष मुक्री मुकेष कार्य मुके ि
शक्ष मुजारंग मुकेष कार्य माजश्र हे जूर्या श्रुष्ट्रिका मुकेष कार्य श्रुष्ट्रिका स्मान्य । वस्र जस्म स्मानिश स्मान्य वार्या स्मान्य । वस्र जस्म स्मानिश स्मान्य । । स्मानिश स्मान्य । ।

শুণিঃ ন্ত্রী শুণী।ইত্যমরটীকা।।
শুণী স্ত্রী শুদ্ধার্ত্রকণ। শুঁঠ ইতি
ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। মহৌষধণ
২ বিশ্বণ ৩ নাগরণ ৪ বিশ্বভেষজণ ৫। ইত্যমরঃ।। শুণিঃ ৬
বিশ্বা ৭ মহৌষধী ৮। ইতি তটীকা।। ইন্দ্রভেষজণ ২ মেষজণ
১০। ইতি শব্দরত্বাবলী ।। বিশ্বৌষধণ ১১ কটুগ্রন্থিঃ ১২ কটুভদ্রণ ১৩ কটুষণণ ১৪ সৌপর্বণ

১৫ শৃঙ্গবের ১৬ কফারি: ১৭ চান্দ্ৰক ১৮ শোষণ ১৯ নাগ-রাহ্ব॰ ২০। অস্যা গুণাঃ। ক-টু ब॰। উক ब॰। निश्व ब॰। कक শোফানিল गूल वटकामताशा-ন শ্বাস শ্লীপদনাশিত্বক। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। 🗱 ॥ অপি চ। শুপी क़ठाामवाज्यी भावनी क-**টুका लघुः । ज्ञित्कारका मधुता** পাকে কফ বাত বিবন্ধনুৎ ॥ व्या वर्गा ह निःशान मृल काम ऋषाययान्। रुखि भीशष শোথার্শ আনাহোদর মারু-তান্।। আগ্নেষগুণ ভূষিষ্ঠ তো-या॰म॰ পরিশোষ্যে । স॰গৃङ्ग-ন্তি মল তত্তু আহি শৃষ্ঠ্যাদযো ষথা।। বিবন্ধ ভেদিনী যা তুসা কথ গ্রাহিণী ভবেৎ। শক্তি ৰিবন্ধ ভেদে স্যাদ্যতো ন মল পাতনে।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। ॥ অন্যচ্চ। শৃঠী তু কফ বা-**छत्री मद्मश नमू मीमनी।** वि পাকে মধুরা বৃষ্যা হৃদ্যোক্ষা কটু রোচনী।। ইতি রাজবন্ধভঃ एकाः की मधी। देखि मक-চন্দ্ৰিকা ধ

हिन्द्रशा कत्रिकत्रक ॥ শুওকঃ । পু শৌভিকঃ। ইতি भक्तप्रावनी ॥ यूक्तरवृक्षः । देखि শুপরোহঃ পু• ভূতৃণ । ইতি त्राजनिर्घण्डः ॥ भूखकाखद শৃঙ্গরোহ ইতি পাঠঃ।। গুণ্ডা স্ত্রী মদ্যপানগৃহণ। অমু-रिखनी ॥ दिना। ॥ मूत्रा। रिख-হস্তঃ। ওঁড্ ইতি ভাষা। ইতি त्मिनी ॥ निन्ती। देखि दिश्वः ॥ স্ট্নী। ইতি শব্দমালা॥ শুঙাপান ক্লী মদপানগৃহ । তৎপৰ্ব্যাখ্যা মদস্থান ং২ ৷ ইত্য-यतः ॥ यमञ्रलः ७। ইতি भफ-त्रवावनी ॥ শুজারঃ পু॰ শৌজিকঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।। खखानः पू॰ रखी। ইতিধন-**अश्वः** ॥ শুণ্ডিকা স্ত্রী অলিজিহা। ইতি কেচিৎ।। শুণ্ডাশব্দার্থাপ্যেষা।। শুভিদ্বিকা স্ত্রী ছুচ্ছুন্দরী।ইতি রাজনির্বন্টঃ।। ি পু॰ শৌগ্রিকঃ। ইতি শব্দ-ब्रञ्जावनी ॥ रखी ह ॥ चु भ मनि प्रतः। इं ि इस । चुन खी खी इं डिम ही क्रा इं डि

রাজনির্ঘণ্টঃ 11 শুত্জিঃ স্ত্রী শতক্রনদী। ইত্য-মরটীকাষাণ ভরতঃ ॥ শুতুক্রঃ স্ত্রী শতক্রনদী। ইতি ভরতদ্বিপকোষঃ 11 श्वकः क्री टेमस्तवः॥ मद्रिष्ठः। ইতি त्राजनिर्वकः॥ मित्रिष्ठ शर्वारिय সৃষ বলিখিত তদশুদ্ধ ।। न्धकः जि क्वनः॥ निर्फायः॥ পবিত্রঃ। ইতি মেদিনী॥ শুক্লঃ । ইতি ধরণিঃ ॥ রাগান্তরামি-গ্রিতরাগঃ। ইতি সংগীতশাস্ত্রণ ৷৷ শারীরাশুক্তাকারণ যথা । শ্রীনারদ উবাচ। মানবানাণ ্বিজাদীনা**ণ শরীরস্যাপবিত্রতা** । ভবেৎ কেন প্রকারেণ কথ্য-তা॰ তৎ मनानिव ॥ मईएम পুরাণাদি শাস্ত্রজ্ঞানা ছিজ-মনা । জিতেন্ত্রিয় স্মৃতিবিদা তনোঃ কথৰ পূততা ।। শ্রীস দাশিব উবাচ। যঁথা দেহাপবি-ত্ৰত্ব বিপ্ৰাদীনা যতো ভৰেৎ ॥ । एतरार्घ मृन् ७९ मई॰ नद्रानाः মানুপূৰ্ৰিক ।। জাতকে মৃতকে ২মাতে জলোকোভিঃ ক্তে তথা। অপবিত্রো দ্বিজাদীনাণ **प्रदः मक्षापिक ग्रम् ॥ अशृ**ज-

তনু রুৎসর্গে নরো মূত্র পুরীষ-ষোঃ। অস্পৃশ্য স্পর্শনে চৈব बन्नरक क्रेंशानियू॥ त्रक्रेशाःच नथ मृत्र पष्ठ अज्ञामिजिः कः-তে। বিপ্রাদে রশ্চিঃ কায়ঃ শ-স্ত্রাস্ত্রেঃ কণ্টকাদিভিঃ ॥ ভুক্তৃ। হস্তাননোচ্ছিফে ২পবিত্রঃ ক্ল-**उदेमथूदन। भवत्न बाक्नवानी**-নাং শরীরং ক্ষুরকর্মণি ৷৷ জ্বা-দিভি শ্চতুঃষষ্টি রোগৈ র্যুক্ত षिजैयना । বপু রপ্রযত পূজা मान ट्याम क्रिशामिषु ।। शूरमा-দ্যারে বমৌ শ্রান্ধ পতিতানাদি ভোজনৈঃ। তথা চ রেতঃ স্বাল-নে মর্তাদেহাপবিত্রতা ৷৷ অপ-বিত্রণ দ্বিজাদীনাণ বপুঃ স্যাদ্রা-হু দর্শনে। পর্হিত দানগ্রহণে পতিতে পাতকাদিভিঃ॥ অশৌ-চান্তেন শুদ্ধিঃ স্যাৎ জাতকে মৃতকেপি চ। সর্বর্ণাশ্রমাদীনাণ उताः मक्तामिकस्मम् ॥ इंडि পাদ্মে উত্তরখণ্ডে ১৯ অধ্যায়ঃ।। श्वक्रक्यः पूर गर्मछः। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ৷৷ পবিত্রজঙ্ঘা-যুক্তে ত্রি।। । শুদ্ধদত্ ত্রি শুদ্ধা দন্তা যস্য সং।

,শুক্লদন্তযুক্তঃ। যথা। গতে ত্

त्रिन् जलगूिः भूक्षमजादनः भिथा। ज॰कपूरंक। २क्रमाना-वान् शाद्रका मृतनात्नः॥ इडि. ७८७) ৫ मर्गः।।

শুদ্ধমতিঃ পু• চতৰি:শতিভূতা-र्रमञ्जर्ञाञ्किनिवित्यकः । इति द्यमञ्चः ॥ शविजवुदको छी ॥ তম্বতি ত্রি। বথা। তদরবে শুদ্ধ-মতিঃ প্রসূতঃ শুদ্ধমিশ্বরঃ। দি-লীপ ইতি রাজেন্দ্র ইন্দঃ ক্ষীর-निश्वविद्या ३७ त्रद्यो > मर्गः॥ শুক্ষমাণসং ক্লী মাণসব্যঞ্জনবিশে-বঃ। বথা। পাকপাত্রে মৃত॰ দদ্য। ত্তৈল বা তদভাবতঃ। তত্ৰ হিন্ধু হরিডাঞ্চ ভব্জবৈত্তদনন্তরণ।। ছাগাদে রস্থিরহিত মাণ্স তৎ খণ্ডখণ্ডিত । ধৌত নিৰ্গালিত **जिन् कृट्ड उड्डर्क रक्ट्रिनः।**। निषारयोगाः जनः मञ्चा नवाकः পচেত্রতঃ। সিদ্ধে জলেন স পিষ্য বেসবার পরিক্ষিপেৎ ॥ জব্যাণি বেসবারস্য নাগবল্লী मलानि हि। ज्ञुलाम्ह लवकानि ষরিচানি সমাসতঃ ।। অনেন বিধিনা সিদ্ধা শুদ্ধমাণস মিতি শ্মৃত । শুদ্ধমা সং পর বৃষ্য वनाः ऋठाशः वृःर्गः ॥ जिताय

শমন শ্রেষ্ঠ দীপন ধাতুবর্ধ-ন ৷ ইতি ভাবপ্রকাশঃ ৷৷

শক্চজিক। স্ত্রী গুড়্চী। ইতি
শক্চজিকা। গবিত্রলতা চন।
শুদ্ধান্তঃ পুং অন্তঃপুরং॥ নৃপস্যাসর্বগোচরককান্তরং। ইত্যমরমেদিন্যৌ। রাজ্যোধিৎ।
ইত্যজ্যঃ॥ অশৌচান্তঃ। ইতি
ধরণিঃ।।

শুক্দান্তপালকঃ পুণ অন্তঃপুররক্ষকঃ। তৎপর্যায়ঃ। গৃহদৌবারিকঃ ২ কক্ষারক্ষকঃ ৩
রাত্রিহিওকঃ ৪। ইতি শফমালা ।। তস্য লক্ষণ যথা।
বৃদ্ধঃ সলোদ্যাতঃ সূক্তঃ পিতৃ
পৈতামহঃ শুচিঃ। রাজ্ঞা মন্তঃপুরাধ্যক্ষো বিনীতশ্চ তথেযাতে ।। ইতি মাৎস্যে ১৮৯
অধ্যায়ঃ।।

শুদ্ধান্তা ন্ত্রী রাজ্ঞী। যথা। শু-ক্ষান্তশ্চ বিশুদ্ধান্তে শুদ্ধান্ত। রাজযোষিতঃ। ইতি ধরণিঃ।।

শুদ্ধাপত্নতিঃ স্ত্রী অলকারবিশে-ষঃ। যথা। শুদ্ধাপত্নতি রন্যস্যা-রোপার্থো ধর্মনিত্নবঃ। নাষণ শুষাংশুঃ কিং তর্হি ব্যোমগঙ্গা-সরোক্রহং॥ ইতি চন্দ্রাকোকঃ॥ एकिः जी पूर्गा। यथा। यदाना-চিন্তনাদাপি শোধ্যতে স হি পাতকাৎ। তেন শুদ্ধিঃ সমা-थाना (पदी क्रजनते) श्रिना ॥ इंडि प्रवीপूत्रात्व प्रवीनिक काशायः ८० ॥ मार्जना । देखि क्रिविदः ॥ देविषिककर्त्वार्श्य थ-याजक मञ्कातवित्नसः। सथा। শুদ্ধাশুদ্ধোঃ সংস্কার ৰূপত্তে-ন একপুরুষস্যৈকদোভষস্থিতি ৰ্ঘটতে। অশুদ্ধে ভাবৰগছে श्वरक्ष खनजावकशर्व रेनड९ বিরোধাৎ। অতএব শর্থীঃ। ততঃ आक्र मश्चरको जू नर्यादन-कामत्म তथा। कर्जू छाषकानि-की एकि तएकः भून त्रव मः॥ व्यस्ति ठर्गिशाली। कथ म শুদ্ধৌ শ্ৰাদ্ধ কালাশৌচস্যাধি-कातिविटमयग्यामञ आर कर्जू खाৎकानिकीं । आद्विशा-নাক্ষেপাত্তস্মাত্র নিষ্ঠা শুদ্ধিঃ ক-ষ্যতে। স পুন রশুদ্ধ এব কর্মা-স্তর এব। ইতি আদ্ধবিবেকঃ। এবং শুদ্ধে ভাবৰূপত্বে অশ্যে-চদ্য তদভাবৰূপত্বে বিরোধঃ। তথাত্বে অশৌচ শঙ্করোপি ন স্যাৎ। একস্মিন্ শুদ্ধাভাবৰপ-

অশৌচে সত্যপরস্য তদ্ধপ্স্য **छमानी** छ**९ शूक्र**यीय **छिक्ति कश** প্রতিষোগ্যস্তরাভাবাদন্ৎপত্তেঃ । তস্মাৎ শুদ্ধাশুদ্ধ্যা ভাবৰূপ-ত্ব॰। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব॰।। 🟶।। অথ।-लोहिस्काः। अयव्किमनात्नीः চ মুর্দ্ধকেতেন শুদ্ধাতি। অথ-চেৎ পঞ্মীণ রাত্রি মতীত্য পর-তো ভবেৎ ॥ অঘবৃদ্ধিমদাশৌ-চ॰ তদ। পূৰ্বেণ শুদ্ধাতি। অযবৃ-क्षियबञ्ज । मिथिकननारगोठा-পেক্ষ। अপूज জননাশৌচ্যা সপিওমরণাশোচাপেক্ষয়া সিতৃ মাতৃ ভর্ত্ মরণাশৌচস্য। 🟶 । জা-তে পুত্রে পিতৃঃ স্নান॰ সচেলম্ব বি-ধীযতে। মাতা শুদ্ধ্যেদশাহেন শ্বানাজু স্পর্শন পিতৃঃ। শুদ্ধে ৎ ম্পর্শমাত্রে উত্তরবাক্যে তথা দ-र्णनाथ। 🐠। जननारगोह मरश जू यमाभवः जननः मा। जमा পূৰ্বাশৌচ ব্যগগমে শুদ্ধি: রাত্রি-लार्य पिनष्रस्यन প্रভাতে पिन-ত্রষেণ মরণাশোচ মধ্যে জ্ঞাতিম-त्रत्वात्र विकि ॥ 🗱 ॥ यमा यमा তুবৰ্ণস্য যান্যৎ স্যাৎ পশ্চিম ছ-হঃ। স তত্ৰ বস্ত্ৰস্তিদিক গৃহস্তদ্ধি করোত্যপি।। সমাপ্য দশম॰ পি-

थ ग्रामाञ्ज नुमासका क्षामान হি ভতো গছা প্ৰেভন্দাক চৰা-ननी ॥ अज्ञान। गानिजनाक তাজ্বা স্বান করোতাপি। শ্বশ্রু লোম নখানাক বভ্যাজ্য তজ্জ-হাত্যপি।। গৌর সর্বপ কল্কেন 'ভিলতৈলেন স্'যুতঃ। শিরুমা-ৰ ততঃ ক্বন্বা তোবেনাচন্য বা-শ্বতঃ ।। বাসো বুগ নব শুভু মত্রণ শুদ্ধ মেব চ। গৃহীত্বা গাণ সুবর্ণঞ্চ মঙ্গলানি শুভানি চ।। স্ফুল সংকীৰ্ত্তবিদ্বা তু পশ্চাৎ শুদ্ধে। ভবেষরঃ। গৃহশুদ্ধিঃ প্রা-ক্তন পাকভাও পরিত্যাগ উপ-লেপাদিন।। ত্যাজ্য ত্যাগাই।।। অবাহঃসু নিবৃত্তেষু সুমাতাঃ ক্ল-তনদলাঃ। আশুসাদ্বিসুচ্যেত বান্ধান্ধন্তিবাচা চ ॥ 🛊॥ স্ব-बात्नीहमा मरधा जू मीर्थात्नीहः खरामानि । नजू शूर्वन खिन्नः স্যাৎ স্বকালেনৈব শুদ্ধাতি ।। সমান লঘু চাশৌচ পুৰেণৈব বিশুধাতি। যদি স্যাৎ সূতকে সূতি মূৰ্তকে চ মৃতি ভবেৎ ॥ म्बार्यक्षेत्र अदबक्षि त्रशःमास षित्राज्ञक॰। মর্নৌৎপত্তি যো-গে তু নরণাচ্ছ দ্বি রিষ্যতে।। 🕻 ।।

अर्थाक् स्थागका जीवा रि माथ गर्जन मुदः। छमा माम-मदेग खामा॰ मिवदेमः खिक त्रिया-তে।। गर्जक्राः यथामान म-চিরে তৃত্তমে ত্রাহঃ। রাজন্যে তু চতু নাত্ৰ বৈশ্যে পঞ্চাহ মেব চ।। অফাহেৰ তু শুদ্ৰস্য শুদ্ধি রেখা প্রকীর্তিছা। রাত্রিভি মাসভু-नगां गर्जन्यात विश्वकां ।। त्रजगुगतरण मादी भारतन छी त्रकवना । एका छर्दू म पूरर्थ-द्भि ज्ञान्या देव गरेशबरयाः ॥ देव-त कर्मान रेगत्वा ह शक्षरमञ्जि ভন্যতি। । দত্তা নারী পিতৃ র্গেছে সুষতে দ্বিতে ২থ বা ।। य गरमोह॰ हर्त्तर मगाक् शृथक्-श्रान वावश्रिका। **यह स**्वर्ग रखुः কেন শুদ্ধোজু জনক দ্রিভিঃ।। य रिखः त्रहामनः अर्याः व भगना-भीनि टेठवं हि। याश्वत्या वा शद्रा বাপি স দশাহেন শুদ্ধাতি।। খ্ৰী-ণা সসস্ভানাৰ ত্ৰাহাৎ ভাগ্য-खि वाश्ववाः। यत्थात्करेनव क-লেন শুদ্ধান্তি হি সনাভয়ঃ।। 🗱।। ষণ্যাসাভ্যম্ভরে শুদ্রে মৃতে বালে बारः विषुः। जनजीरः विवर्ष रिव मृट्ड खरकाखू भए जिः ॥

স্তুদ্শিহে জু গছতি। সদ্য এব বিশ্বজিং শ্যা-মাশোচ নৈব স্তক।। নৃণা মহ্ন-তচ্ডান। মণ্ডজি নৈশিকী স্তা । নিবৃত্তচূডকানাত ত্রিরাজাক্ষ্-জি রিয়তে। জা। দ্শাহেন সপি-

ন্ত ওধান্তি প্রেত সূ রাত্রেণ নঙ্গল্যাপ্ত সীম্বা শুক্যান্ড रगावजाः ॥ खाकापित्था मणा-হেন দাদশাহেন ভূমিপঃ। বৈ-শ্যঃ পঞ্দশাহেন শূজো বাদেন শুদ্ধাতি।। দশ্যে ২হনি শুদ্রস্য कार्वाः मःस्थानं तः तूरेशः। बाटम-নৈব বিশুদ্ধিঃ স্যাৎ সুতকে মৃত-কেপি বা ।াজ: সংস্থিতে পক্ষিণীণ রাত্রি° দৌহিত্তে ভগিনীসূতে। স°-স্কৃতে তু ত্রিরাত্র**॰ স্যাদিতি ধর্মে।** ব্যবস্থিতঃ৷৷ পিত্রো রুপরমে স্ত্রীণা মূঢানাম্ভ কথা ভবেৎ। ত্রিরাত্তে-रैंग्व श्विः गामिजाश जगवान् শিবঃ ৷৷ ঞ্চ ৷৷ ষদা ভোজনকালে তু অশুচি ভ্ৰতি দিজঃ। ভূমৌ নিঃকিপ্য ভদ্যাসং মামা চৈব বি ভদ্যতি।। 🛊 ॥ চিকিৎসকো যৎ ঙ্গৰুতে তদন্যেন ন শ্বক্যভে। ত স্মাৎ চিকিৎসকম্পর্শে **ও**দ্ধো ভ-বতি নিতাঁশং।। 🟶।। গর্ভিণী সূ-

त्रज्येवा

वना खना छनात्मान कात्रत्वे क्रियट मना ॥ ॥ थ्येडी जुर्छ

্নুগচ্ছতি

गण्डा नाषा महान ल्लुक्रोधि॰ ष्ठ आगा विस्कारि ॥ अका-हा काखित एकि देवत्या 'ह माशार्म जू। भूरक मिनवयं প্ৰোক্ত প্ৰাণাযানশত পুনঃ।। 🐞 নার স্পৃষ্ট্বীস্থি সম্বেহণ সাদ্বা বিপ্ৰো ৰিশুদ্ধাতি। আচম্যৈব তু নিঃম্বেহণ গা মালভ্যার্ক মীক্ষ্য বা ।। 🟶 ।। অসপিও॰ বিজ পথেত বি-প্রো নিষ্ঠি বন্ধুবৎ। বিশুদ্ধাতি জিরাত্তেণ মাতু রাপ্তাণ্শ্চ বাদ্ধ-বান্।। যদ্যম মন্তি তেষাম্ব স मगार्श्न अकाि । जनम्बस म-देइव न फिखियन् गृहर चरम ॥ । अशि अन्यनामदीक् यमि বিপ্রো ২ঞ্জণাতষেৎ। মৃতে সূত্রে গৃহ• গদা ত্রিরাজেণ বিভাগতি ॥ অञ्चिमक्षयनामूर्क् गावधारां षिजाण्यः । मिर्वारतित एक्षिः मार्बाममा कालदनन ह ॥ का। স্বজাতে দিবসেনৈৰ ত্ৰ্যহাৎ ক্ষ-खिय दिनगुर्याः । न्यन् विनाम्-গ্ৰামনে শুজো নক্তেন শুদ্ধানি

বৈর শুদ্ধিঃ স্যাদিতি শাতাতগো रविषे ॥ 🟶 ॥ नवंशाञ्जलः गाता गरिया कागत्यानयः। শুধ্যন্তি দিবলৈ রেব দশভি নাত্র मःगयः॥ कात्न नत्वानकः शुक्रः ন পাতব্যম্ব তন্ত্ৰ্যহে । 🛊 । 🛊 ॥ व्यथ जवाश्विकः। बात्क। मृवर्ग ৰূপ্য শুখাশা শুক্তি রত্নমযানি চ । কা স্যায স্তামু রৈত্যানি ত্রপু मीमययानि ह ॥ निर्वालभानि वि-শুদ্ধান্তি কেবলেন জলেন তু। শুজোচ্ছিফানি শুধান্তি ত্রিধা-ক্ষারাম বারিভিঃ।। সূতিকা শব বিমৃত্র রজম্বলা হতানি চ। প্র-क्खियानि छानभी यक यावश সহেদপি।। বৈত্যা পিত্তল। ত্রপু রঙ্গণ যৎপাত্রণ যাবৎকাল মগ্নিণ সহেত তৎপাত্ত প্রকালনান্ত্ত-র॰ তাবত্তাপনীয় মিতার্থঃ।। 🛊 ॥ বৃহস্পতিঃ। অন্তসা হেম রত্নায়ঃ ্কা॰সা॰ শুদ্ধোত ভন্মনা। অগ্নৈ ভামুঞ্চ রৈত্যঞ্চ পুনঃপাকেন মৃ-

मायः ।। त्राजधर्मा । शब्दलाहि-के कां माः यद ग्राश्वाण मधानि वा । शब्दशिक्क मिन ह विश्व-कामभिन स्र छद ॥ मभिन र्म-देन त्रिक्षियः। छश्। ह। कां रमा

न शांदराष्ट्र शांको यव माामिश ভোজন মিতি। যত্র পাত্রান্তরে ভোজন তত্ত্ব শ্রুতস্যৈব তস্য **मार्**हिंगा का मार्वे कि शिक्षा বৌধাৰনঃ। ভিন্নকাণ্দ্যৈ তু ষো ২শ্লীষাৎ নদ্যা• স্নাত্ব। জপেদ্ধি-জঃ। গাযত্র্যুষ্টসহসুম্ব একভ-ক্তঃ শুচিং।। দেবলং। তামু রজত সুবর্ণাশা স্ফটিকানাণ ভিন্ন মভিন্ন । ইতি ভিন্নত্বেপি ন দোষ ইতার্থঃ।। 🐠 🛭 বিষ্ণুঃ। শারীরে र्य टेलः भूतां मि में टेला की यमूश-হত তদভ্যন্তোপহত সর্বণলো-হভাও মগ্নো প্রতপ্ত ওদ্বোত। মণিমৰ মশামৰ মজমৰঞ্চ সপ্ত-রাত্রণ মহীখননেন শৃঙ্গদন্তান্থি-मयक जकरान मोक्रमयः मृत्रायः क्शांपिछि। लोश्यमः मूर्वा-मारुक शत । । । । मनुः। जीवि দেবাঃ পবিত্রাণি ব্রাহ্মণানা মক-ब्रयन्। जम्के मिछ निर्विकः यक वाठा প्रभगारा ॥ चम्के मूश-

হাত শকাদিভি রক্তাত ৷ অজ্ঞা-তঞ্চ সদা শুচি ইতি যাজ্ঞবক্ষ্যৈক-বাক্যদাৎ । বাচেতি উপযাত শক্ষাযাণ পবিত্ৰণ ভবদ্বিতি ব্ৰাহ্ম ণৈ ৰ্যনাচা প্ৰশ্যতে ইতি শুল-পাণি মহামহোপাখ্যায় সন্ধৃক-ভটো ৷৷ 🛊 ৷৷ শাতাতপঃ ৷ গোঙ্গ-ल कमूगालायाः रेजनयखम्यः खरगाः। अभीमा भगानि स्नीहानि ञ्चीयू वालाजूद्रयू ह ॥ 🕫 ॥ यनूः। নক্ষিকা বিপু ষশ্ছাষা গৌ রশ্বঃ সু-র্যারশায়ঃ। রজো ভূরাযুর্রিশ্চ न्भारमं (यशानि निर्मि**रम**् ॥ विशायनः। जानूकीः मञ्जूषा था-রা বাতোদ্ধৃতাশ্চ রেণবং। আক-রাঃ শুচষঃ সর্বে বৰ্জবিদ্বা সুরাক-র ।। শঙ্গলিখিতৌ। আকর জ ব্যাণি প্রোক্ষিতানি শুচীনি ৷৷জা यमः। जाममा मृष्टः स्मीखः সেহাশ্চ ফলসম্ভবাঃ। মেচ্ছভাও-স্থিতা দুফা নিক্রান্তাঃ শুচয়ঃ স্মৃ-**ाः॥** । विक्थर्पाख्रतः। मूथव-ৰ্জ্জঞ্গগৌঃ শুদ্ধা মাৰ্ক্জারশ্চণক্রমে শুচিঃ। পুষ্পাণাঞ্চ ফলানাঞ্চ প্রো-কণাৎশুদ্ধি রিষ্যতে ৷৷ 🛊 ৷৷ শুব্রিঃ । মক্ষিকাঃ সম্ভত্রধারা ভূমি স্তো-ষ॰ হুতাশনঃ। মার্জার শ্চাপি দ-

बीं ह मोक्रजन्ह महा छहिः।। 📲 🛚 🗎 विधायनः। व्यत्नदकाषादक्षान् শিলে ভূমিসমে ইফকাশ্চ সংকী-ণীভূতা ইতি। সংকীণীভূতাঃ পর-न्भत्रमस्काः ॥**क्षा विक्**रा (शाक-**ণেন পুস্তক• ইতি।।#া। শাতাতগঃ** । তাপন ঘৃত তৈলানা প্লাবন গোরসস্য চ। তন্মাত্র মুদ্ধৃত । । **জ্যেৎ কঠিনস্ত পযো দধি।। অবি-**লীনঃ তথা সর্গি বিলীনং শ্রগণে-ন ভূম অবিলীন কঠিন ম 🗱 👫 मनुः। जवगानाटेक्य मर्दिया अकि रू ९ क्षरन श्रृष्ठ । < शक्ति कर में ए তানাঞ্চ দারবাণাঞ্চ তক্ষণণা ইদ-खुष्टिकोमान्नमारव । উৎक्षवन॰ বক্তান্তর নির্বাপণেন কীটাদ্যপ-ন্যনং ॥ 🛊 ॥ শাতাতপঃ। ভিশপ্ত পতিতৈঃ সূতিকোদক্য নাস্তিকৈঃ। দৃষ্ট॰ বা স্যাৎ যদমন্ত তস্য নিষ্কৃতি রুচ্যতে ॥ অভ্যুক্ষ্য কিঞ্চিদুজ্ত্য ভুঞ্চীতাপ্যবিশক্ষি-खमा वाशि मृष्ठे॰ इवि রযজ্ঞियः। বিডালাদিভি রুচ্ছিষ্ট দৃষ্ট মমণ विवर्जयमनाव हिन्नभामक न्यान শাদিতি।।।।। মনুঃ। অন্তিস্ত প্রো-কণ শৌচ বহুনা ধান্য বাসসা

1 প্রকালনেন ম্বল্লানা মন্তিঃ **লৌ**- 🏻 চণবিধীয়তে।। 🛊 ।। শুদ্ধি রিভ্য-न्वृत्छो विकृः। खणाना मिक् वि-কারাণা প্রভূতানা বাষুগিদা-त्नि गर्व वर्गानात्कि ।। 🛊 ।। 📗 অবিরাঃ। যথা যত স্ততো হ্যাপঃ 🕆 শুদ্ধি যান্তি নদীণ গতাঃ। শূজা षिथगृरश्यमः थिविकेष मना एः চি ॥ প্রবিষ্ট• স্বত্বাপাদক প্রতি-ত্রাহাদিনেতি শেষঃ।।।।। স্ক্রপণ প• সকৰ্দম• তেভ্য স্তোষ মপাস্য তৎ। প্রক্ষিপেৎ পঞ্চগব্যঞ্চ সম-ন্ত্ৰ• সৰ্বশুদ্ধিরুৎ।। অপাস্য সণ-প• তেভ্যো বহুতোবৈভ্য এব বা । শত যক্ষ্যথ বা ত্রিংশৎ তোযঙ্গ-खान् ममूक्तद्र ॥ शक्षभवाः ७७ স্তেষ্ প্ৰক্ষিপেন্মত্ৰপূৰ্বকণ। শতা দি অন্নত্বাদ্যপেক্ষয়া অত্যন্নস্য সৰ্বো-कात्रगाजिधानार ॥ 🛊 ॥ तृर्यनूः। শ্ব শৃদ্ৰ পতিতা শ্চান্ত্যা মৃতা শ্চে-দ্দিজমন্দিরে। শৌচণ তত্ত্র প্রব-ক্যামি মনুনা ভাষিত যথা। দ-শরাত্রাচ্ছনি প্রেতে মাসাৎ শূত্রে ভবেচ্ছ্চিঃ। দ্বাভ্যান্ত পতিতে গেহে অস্ত্যে মাসচতুষ্ট্যাৎ ॥ অত্যন্ত্যে বর্জযেক্যেছ মিত্যেব॰ मन् त्रवदी थ।। यमः। विक्रमा मत्र-

ণে বেশ্ব বিশুদ্ধাতি দিনত্তবাৎ। দিনৈকেন বহিভূমি ব্লগি ক্ষেপৰ लिश्रोतः।।।।। स्थाकः कालान-ম্ভর কর্তব্য মাহ সম্বর্তঃ। গৃহশু-ক্রিপ্রবন্দ্যামি অন্তঃস্থ শবদূষিতে । প্রোৎস্ক্রা মৃন্মক পাত্রণ সি-क्रमण छटेषव ह ॥ भृशामशामा তৎসর্ব পোমধেনানুলেপযে । গোষবেনানুলিশ্যাথ ছাগেনাখ্ৰা-भरयषूषः ॥ बाकरिव र्यञ्जभृरेजन्त হিরণ্য সশ বারিভিঃ। সর্বমভ্যু-करबद्दा ठठः खश्राजामः नयः ॥ यखानारमरण गायबी ॥ # ॥ मित्रवार । शक्षा दा ठजूर्श दा जू त्रत्यक्षा विश्ववाणि । पूर्वी विश ত্রিধা বাপি শুধ্যতে মলিনৈক্ধা ৷৷ দহন খনন ভূমে রুপলেপন वाशत्न । अर्জनावर्षभ्याशि त्नी-চ পঞ্বিধ স্ত ।। প্রসূতে গ-र्ভिगी यदा गि्यत्व यदा मान्यः। চাণ্ডালৈ রুষিত যত্র যত্র বিন্য-স্যতে শবঃ।। বিশ্বুত্তোপহত যচ্চ ঙ্গণপো যত্ৰ দৃশ্যতে। এব॰ কশ্মল-ভূষিষ্ঠা ভূ রমেধ্যাতিকথ্যতে ॥ क्रिम की है अमरक्रिश मृ विञा खब त्यमिनी । बक्रमा कर्य देशः कि-প্তা বাত্তৈ ৰা দুফতা॰ ব্ৰজেৎ ॥

নথ দন্ত তনুজ ছক্ তুষ পাণ্শু রজো মলৈঃ। তম্ম পদ তৃণৈ বা-পি প্রচ্ছন্ন। মলিনা ভবেৎ ॥ বা-পন মৃদন্তরেণ পুরণ ৷ জন্সা ব-नीजृठसमापि। रें छ । । । ।।।।। जिल्हा वाखन्द्रा खेताह। অব্যশুদ্ধি প্রবৃদ্যামি তানিবোধ-তসত্তমাঃ৷সৌবর্ণ রাজতাজ্ঞানা শাক বজুাদি চৰ্ম্মণাণ ৷৷ পাত্ৰাণাণ চমসানাঞ্চ বারিণা শুদ্ধি রিষ্যতে । উক্ষবার্ভিঃ শ্রুক্ শ্রুবধা ধান্যা-দেঃ প্রোক্ষণেন চ !! তক্ষণাৎ দারু শৃत्राप र्यख्यावमा मार्जना । मारिक क्रमक भागूरिकः एका-ত্যাবিক কৈশিক ।। তৈক ধা-ষিমুখণ পুণাণ পুনঃ পাকামহীম-য ।। গোম্বাতে চ তথা কেশ ম-ক্ষিকা কীট দূষিতে। ভন্মক্ষেপা-विश्विकः माविश्विक मार्कना-দিনা ।। ত্রপু সীসক ভাষাণা॰ কারামোদক বারিভিঃ। ভস্মা-**डि र्लार का माना मळा ७** मन ७६ ॥ जरमधाकमा मृ-তোবৈ পদ্ধলেপাপকর্ষণাৎ শুচি গো তৃপ্তিদ তোষ প্রক্লতি-इ॰ मरीगाज ॥ जथा मानम स **ठाखान क्यामामि निशाण्डिः।**

রন্দি রগী রজ শ্ছাষা গৌ রশ্বো वमूबानिनः ॥ जन्नाक विभुत्वा মেধ্যা স্তথা চামলবিন্দবঃ। স্বাদ্ধা পীদা ক্তে সুপ্তে ভুক্তা রখ্যোপ-मर्भर्थ।। व्याठान्तः भून द्राठात्म বাসো ব্যুৎপরিধাষ চ। ক্ষুতে নি-ষ্ঠীবিতে স্বাপে পরিধানে ২ঞ্-পাতনে।। পঞ্চস্বেতেবু নাচামেৎ দক্ষিণ শ্ৰবণ স্পূদেৎ ৷ তিন্ঠস্ত্য-भगमत्या (मवा विश्वकर्ण जू म-ক্লিণে।। ইতি গাৰুডে ৯৭ অধ্যা-यः ॥ 🛊 ॥ व्यनाकः। मनि वञ्ज **अवामाना॰ उषमुक्ताकनमा ह** । टेनल मारूमशांशांक ज्व खटचा-ষধস্য চ।।'শাক ধান্যাজিনানা-ঞ্ সংহতানাঞ্চ বাসসা । বন্ধ-লানা মশেষাণা মধুনা শুদ্ধি ব্লি-ব্যতে ॥ সন্মেহানা মথোকেন ভিলকদ্ধেন শোধনণ। কার্পাদি-কানা বস্ত্ৰাণা শুদ্ধিঃ স্যাৎ সহ ভন্মনা ৷৷ নাগদন্তান্থি শৃঙ্গাণাণ তক্ষণাচ্ছ জি রিষ্যতে। পুনঃপা-কেন ভাঙানা মৃম্যানাঞ্ ও দ্বতা ।। শুদ্ধ ভক্ষ কারুহন্তঃ পণ্য যোষিমুখ্য তথা। রখ্যাগ-ত মবিজ্ঞাত দাসবর্গেণ ষৎফ্রত ।। বাক্যশন্ত॰ চিরানীত মনেকা-

ন্তরিত লঘু। চেঞ্চিত বাল বৃ-काना वानगा जू मूब छिहि।। **बिक्**ना यशि शामाना समक्रय-সূতাঃ জ্রিকঃ বাষিপুবো বিজে-व्यानाः भार्छ वागम्विन्नवः ॥ ভূমি বিশুদ্ধাতে খাত দাহ গো क्य राष्ट्रियः। राष्ट्राम् राष्ट्रायमार् সেকাৎ বেশ্ব সন্মার্জনাজ্জ नार ।। रक्न की में वनत्वरहार रो।-ষুতে মকিকাৰিতে। স্থারি ভক্ষ কান্নাণি প্রকেপ্রব্যানি শুদ্ধবে। উজুর্বরাণাঞ্চামেন ক্ষারেণ ত্রপু সীসবোঃ। কা•স্যানা• ভস্মনা अकि रखायाक्ष्मि र्जवमा ह ॥ व्यत्यशाक्तमा मृत्वात्य गंन्नानश्-রণেন চ। অন্যেষা মপি তদুবৈয়ঃ श्वीक र्गक्षावहातुष्ठः ॥ माणूः अ-সবনে বৎসঃ শঙ্গনিঃ ফলপাত-নে। গৰ্দভো ভারহারিছে শ্বা म्गजहरन खिंहिः ॥ तथा कर्मम ভোষানি নাবঃ পথি তৃণানি চ।। মাক্সতেনৈব শুদ্ধ্যন্তি পকেউর-চিতামি চ। শৃত জোণা চকস্যাস্ত गरमध्याणिश्रूष्ठ॰ जरवष्या व्यक्ष মুক্ষৃত্য সম্ভ্যাজ্য শেষস্য প্রোক্ষ-ণ স্তুত। উপবাস ত্রিরাত্ত বা দুষিতামস্য ভোজনে॥ অজ্ঞাতে

জ্ঞাতপূৰ্বে চ নৈব শুদ্ধি বিধীয়-তে। উদক্যা খান নগাণ্চ সৃতি-काखावभाविमः॥ न्यूको न्राचीज শোচার্য তথের মৃতহারিণঃ। স-त्यक् मिक मान्यूमा मरामाः साम गाहरत्य। चौहरेगांव जू निःश्वर्॰ শা মালভাৱে মীকা চ।। ইতি বা-भनभूकार्व ३८ अधारिः ॥ जनाय नाक्ट अस्त्राटन नमाठाताशाद्य प्रथेवाः ॥ 🛊 ॥ जनशक्ति येथा। भटके ह र्यमुदेन टेहर लामार्वार्व সরস্বতি। নর্মদে সিন্ধু কাবেরি জলেশ্মিন্ সন্নিধি॰ সরু ॥ ভূত-श्वीकञ्च उष्ट्रंप प्रखेवा।। 🕸 ॥ আসন শুদ্ধি র্যথা। এতে গন্ধপু-পে আৰার শক্তি কমলাসনায ননঃ। আসন মন্ত্রস্য মেরুপৃষ্ঠ ঋষিঃ সুতল ছন্দঃ কুর্মো দেবতা আসন পরিগ্রহে বিনিযোগ: । পৃথি ৰয়া ধৃতা লোকা দেবি ত্ব विक्ना शृंछा। एक शात्रय गा॰ नि-ত্য পবিত্ৰ পদ্ধ চাসন ।। # 11 मखनखिक र्यथा । शक्ष गरवान भूटनन मख्नः भित्रिटनाध्रयः। भिजनीत्य। अक्षभत्या न जल्ला-इ॰ मखनक वित्नाधरय । शक-গব্য প্রমাণয় তত্তৈব। পলমাত্র•

দুগ্ধভাগংগোসূত্র তাবদিষ্যতে।

যৃত্ঞ পলমাত্র স্যাৎ গোম্য তোলকদ্ব ।। দিবি প্রসৃতিমাত্র ।

স্যাৎ পঞ্চগব্য মিদ স্তৃত । আবা পঞ্চগব্যানা সমানো ভাগইষ্যতে ।। মূলমত্রের সংমন্ত্রা তিনের পরিশোধ্যে । তেন সর্ববিশুদ্ধি স্যাৎ সর্বপাপ নিক্ত ভব্দার ।। ইতি তন্ত্রসার ।। ।। এইশুদ্ধির্গোচরশ্বে জফব্যা ।। শুলাদনসূতঃ পুণ বুদ্ধভেদঃ ।
ইতি হেমচক্রঃ ।।

শুধ ৯ য ও শৌচে। ইতি কবি-কল্পদ্রমাঃ ॥ ৯ অশুধ্র । ম শুধ্য-তি লোকঃ স্নানার । ঔ শোদ্ধা । রজসা শুধ্যতে নারীত্যত্র শু-ধ্যতীতি কিপি শুধ্ব করোতীতি ত্রেণ কর্মনি যকি কপে । ইতি দুর্গাদাসঃ ॥

শুন শ গভ্যাং। ইতি কবিকন্ধ দ্রুমঃ।। শ শুনতি শোনিতা। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শুনঃ পুণ সঞ্বরঃ। যথা। সঞ্বর-স্ত শুনিঃ শ্বানঃ কপিলো মঞ্চ-লঃ শুনঃ। ইত্যমরটীকাষাণ ভরতগৃত বাচস্পতিঃ।। শুনঃশেকঃ পুণ মুনিবিশেষঃ। স তু ঋচীক মুনিপুদ্রঃ। অয়রী: বেণ যজ্ঞার্থণ ক্রীক্তঃ বিশ্বামিকে: ণ রক্ষিত্রুচ। ইতি রামাষণে বা-শ্রীকীবে বালকাণ্ডে ৬১ সর্গঃ।। সক্কুরশিশ্নে ক্রী।।

শুনকঃ পু॰ সকুরঃ। ইতি রাজ-নির্ব**কঃ**।।

শুনকচঞ্চ কা স্ত্রী ক্ষুদ্রচঞ্চ্কুপঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শুনকচিলী স্ত্রী শাকবিশেষঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। শ্বচিলী ২ শ্বান-চিল্লিকা ৩। অস্যা গুণাঃ। ক-টুত্বং। তীক্ষত্বং। কণ্টু ব্রণনাশিত্ব-ক্ষাইতি ক্লেজনির্যন্টঃ।।

শুনাশীরঃ পু॰ ইন্দ্রঃ। ইতি छ-রতদ্বিকাপকোষঃ।।

শুনাসীরঃ পুণ ইন্দ্র:। যথা। শু-নাশীরো দিতালব্যঃ সুনাসী-রো দিন্ত্যকঃ। তালব্যাদি র্দ-স্তামধ্যঃ শুনাসীরশ্চ দৃশ্যতে।। ইত্যমরটীকাষাণ ভরতঃ।।

শুনিঃ পু॰ সন্ধুরঃ। ইতি হেম-চন্দ্রঃ॥

শুনী স্ত্রী। ইত্যমরঃ ।।

স্বন্ধাঞ্জী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।।

শুনীরঃ পু॰ স্কুরীসমূহঃ। ইতি

ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।।

শুদ্ধ ক শুদ্ধৌ। ইতি কৰিকল্প-ক্ৰমঃ ।। ক শুদ্ধয়তি। অয় না-ত্মনেপদীত্যেকে । ইতি দুর্গা-দাসঃ ।।

শুদ্ধ এ শুদ্ধো। ইতি কবিকল্পদ্রুমনঃ ।। শুদ্ধি রিহ শুদ্ধীভাবঃ
শুদ্ধীকরণঞ্চ। এ শুদ্ধতি শুদ্বুতে জলেন লোকঃ। যোগাণ
শুদ্ধতি সত্যেনেতি হলামুধঃ।
গাণবাচণ। ইতিদুর্গাদাসঃ।।

শুদ্ধাঃ পু অগিঃ। ইত্যুণাদি-কোষঃ।।

শুর শ দীপ্তি হিণ্সনযোঃ। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ ।। • শ শুভতি শুগুড়তি শুশোভ শুশুন্ত। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

শুন্য ক্রী শুনীসমূহ: । ইতি ত্রিকাওশেষ: ।। রিক্রে ত্রি ইতি জটাধর: ।।

শুভ প শ দীপ্তি হিংসনফোঁট।
ইতি কবিকল্পদ্রনাঃ। প শ শুদ্রতি শুণোভ। প্রাঞ্চন্ত আদৌ চ
শুভ শুদ্র ভাসন হিংসনফো রিতি পঠন্তি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
শুভ ৯ ও দীপ্তো। ইতি কবিকল্পদ্রনঃ।। ৯ অশুভৎ। ও
শোভতে। ন শোভতি সভা-

নধ্যে ইতি গণক্তানিতাম্বাদিতি রমানাথঃ। বস্তুতস্ত শোভতে শোভঃ পচাদিম্বাদন্। ততঃ
শোভ ইবাচরতীতি কৌ সাধ্য
। ইতি দর্গাদাসঃ।।

শভত ক্লা মকল । ইত্যমরঃ।।
পদ্মকাঠ । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।
শভঃ পু বিষ্ণভাদিসপ্তবিংশতি
যোগান্তর্গত ত্রযোবিংশযোগঃ।
তত্র জাভফল । শুভপ্রসূতঃ শুভক্ষরাশা শুভোদযেকো বিদ্যা সমাজে। করোতি নিত্য শুভকর্ম ধীমান্ শোভাধিকঃ শোভন বেশধারী ।। ইতি
কোষ্ঠীপ্রদীপঃ।।

শুভঃ ত্রি ক্ষেমশালী।। খসঞ্চা-রিপুর । ইতি মেদিনী।। শুভণ্যুঃ ত্রি মঙ্গলান্বিতঃ। ইত্য-মরঃ।।

শুভগদ্ধক॰ ক্লী বোল । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।। মঙ্গলগদ্ধযুক্তে ত্রি শুভগ্রহঃ পু॰ সৌম্যগ্রহঃ। মতৃ শুরুঃ শুক্রঃ পাপাযুত্বুধঃ অ-দ্বাধিকচন্দ্রক। যথা । অর্দ্ধো-নেন্দুঃ সজো রাহুঃ শনি স্তৈ র্বৃত ইন্দুজঃ। রবিঃ পাপা ভবস্তোতে শুভা শ্চান্যে প্রকীর্ত্তিয়ঃ ।।

শভুর

ইতি সারসংগ্রহং ।। তদ্বারে শু-ভকর্ম করণ যথা । শুভগ্রহা-ক্বারে চ মৃদু ক্ষিপ্র ফ্রবেষু চ । শুভরাশি বিলয়ে চ শুড়ং শা-স্থিক পৌষ্টিকং ।। ইতি সং-স্থারতন্ত্বং ।।

শুভদরঃ তি মঙ্গলকারকঃ। যথা
। ক্ষেমদরঃ ক্ষেমকারো মজদর
শুভদরৌ। ইতি ভূরিপ্রযোগঃ॥
স্থনামখ্যাতাক্ষশাস্ত্রকারকে পু॰
শুভদরী স্ত্রী পার্বতী। ইতি শব্দরত্নাবলী॥

শুভদঃ পু॰ অশ্বখনুকঃ। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ। শুভদাতরি ত্রি।। শুভদন্তী স্থানিকভেত্বো-বিত্যা সুদতী। ইতি নৈদিনী ।। শুভপত্রিকা স্ত্রী শালপর্ণী। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ।। মঙ্গলপত্রিকা চ শুভবাসনঃ পু॰ মুখবাসকরগন্ধঃ, । যথা। মুখবাসকরো গন্ধ আ-মোদী মুখবাসনঃ। সুখবাসন ইত্যেকে শুভবাসন ইত্যপি। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শুভঙ্গী দ্রী যজভূমিঃ। ইতি কেচিৎ।। মঙ্গলভূমিশ্চ।। শুভা স্ত্রী শোভা।। কান্তিঃ।। ইচ্ছা। ইতি মেদিনী।। বংশ- त्ताहना ॥ त्याद्ताहना ॥ भयी ॥ श्रियकः ॥ त्याह्य ॥ द्याह्य ॥ द्याह्य ॥ देखि व्याह्य ॥ द्याह्य ॥ देखि व्याह्य ॥ द्याह्य ॥ द्याह

শুভাঙ্গী স্ত্রী স্বেরপত্নী।। কা-মদেবপত্নী। ইতি কেচিৎ।। মঙ্গলাব্যব্যুক্তে ত্রি।। শুভাচারা স্ত্রী উমাস্থী। ইতি শব্দমালা।।শোভনাচারবতী চ শুভাঞ্জনঃ পুং শোভাঞ্জনবৃক্ষঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শুভান্বিতঃ ত্রি মঙ্গলযুক্তঃ। তৎ পর্য্যায়ঃ। শুভংযুঃ ২। ইত্য-মরঃ।।

শুভূ॰ ক্লী অভূক॰। ইতি মেদিনী ॥ গডলবণ॰॥ ক্লোপ্য॰॥ কাসী-म॰। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥

শুভূ: পু• শুক্লবর্ণ:। ইত্যমর:॥
চন্দন॰। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।
শুভূ: ত্রি উদ্দীপ্ত:।। শুক্লগুণ'যুক্তঃ। ইত্যমর:।।

শুভূদন্তী স্ত্রী শুভদন্তী। সাতৃ পুষ্পদন্তনামদিগ্নজকরিণী। ই-ত্যমরচীকা।

केष्ट्रा ३ वि स्मिनी ॥ यंभ- । छञ्जाभाः प्रः हताः । इवि

কেচিৎ॥ শ্বেভকিরণন্দ ৷ **७**जुान्छः प्रकार हेकामतः॥ कर्भू तः । इंछि तालनिर्दक्तः ॥ खञ्जानुः श्रु वश्चिकमः। ३७ রাজনির্ঘন্টঃ ॥ শ্বেতালুশ্চ ॥ শুভূঃ পু• বন্ধা। ইতি সিদ্ধান্ত-कोनूमा मूनामिवृद्धिः ॥ खंडः पू॰ मानविदिर्गवः। म जू गत्वश्रीभूखः अङ्गाम्तभोजः घ-श्विकवा रूज्या। यथा। विद्याह-नस्र थाङ्गापिः शक्ष जमान्काः णुणः। गत्वष्ठी कामत्निमं জম্ভো বাস্কল এব চ ।। শস্তুঃ শ্রেষ্ঠো ২নুজ স্তেযাণ পুর্রানে ষা মতঃ শৃণু। শুক্ত শৈচব নিশু-ম্ভশ্চ বিশ্বক্সেনে। মহৌজসঃ। গবেষ্টিনঃ সুতা হেতে জন্তুস্য সুত দুন্দুভিঃ॥ইত্যাদ্যে বহিপু-त्रात्व क्षार्शीय প্রজাসগাখ্যা-्वः ॥ जनाकः । भूलखा उवाहः । কশ্যপন্য দনু মান ভাষ্যাসীৎ विक्रमत्वर । जगान्ह द्यो मूजा-वाखाः मर्माकाशवाधिको ।। জ্যেষ্ঠঃ শুদ্ধ ইতি খ্যাতো নিশু-স্ত শ্চাপরো ংসুরঃ। ইতি বাসন-**পুরাণে ৫২ অধ্যাযঃ।। অপরক।** ঋষি রুবাচ । নিশুক্ত নিহত।

म्कृ ज्ञान्त्रः शानमिन् । इ-नामान वनदेश्व एकः क्रुक्ता रक्षीष्ठः ॥ वनावत्नभार्षे-प्रमाप्तं गर्व मावह। हेनामि । मिल्ला पत्री शाना मृष्टि मृगामा विभिन्न निध्याक्ष्य। ॥ छ मामास छला मृत्या वक्षि। म गान छिना मृत्या वक्षि। म गान हिना मृत्या वक्षि। म गान हिना मृत्या वक्षि। म गान विभान्ति । हेनि मार्क्तस्य भूतात्व (मनीमाहात्क्रा स्वस्वयः) भूतात्व (मनीमाहात्क्रा स्वस्वयः)

अखराजिनी स्त्री मूर्गा। हेिंछ नफत्रक्रोंबनी।।

শুরপুর ক্লী শুস্তদৈত্যস্যপুরী।
তৎপর্যায়ঃ। একচক্র ২ হরিগৃহ ও। ইতি ভূরিপ্রযোগঃ।।
অধুনা শন্তলপুর ইতি খ্যাত।।।
শুস্তপুরী দ্রী শুস্তপুর । ইতি
তিকাঞ্চশেষঃ।।

खडार्निनी जी पूर्गा। रेजि (रूप-इस्तरा।

শুক্ষ ক ভাবে।। সর্জনে।। বর্জন নে। ইতি কবিকলক্রমঃ।। ক শুক্ষবতি।শুক্ষ লোক্সইত্যেতবো

द्विञावरथी देव निष्ठमयत्तारञ । खायः कथनः। ইতি मूर्गामामः॥ खकः पूर की यस जिल्लाम । মাসূল ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ॥ ষ্টাঃ পন্থাঃ তত্ত্ৰ জাদিনা জব্য क्य विकय श्रानामि ह यद्भय॰ मीयरा म **एका जगा**ल् हें जि ষটী ইতি রাজ ইতি চ খাতঃ। শ লতি প্রতিবন্ধো খনেনেতি শুল্কঃ। শল জ গতৌ তালকা-मिः नामी**ि कः निशालनाम**ल উত্ব । ঘট চালে ষ্ট্যতে ংত্র रेि चिक चिक । चर्छ। वर्ज তি মাধবী। ঘটে। রাজগ্রাহ वारशकानामि दिखि मूक्षे । যটে। যাট ইতি খ্যাতে ইতি রমানাথঃ। ইতি তট্টীকাষাণ ভ-त्रजः ॥ 🗱 ॥ यतामर्थ अर्वः । ইতি व्यक्तिनी ॥

শুলং ক্লী রক্জুং।। তা<u>স</u>্ণ। ইত্য

শুল ক মানে।। সর্গে। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ ।। পঞ্চমস্বরমুক্ত স্তালব্যাদি রস্তন্ত তৃতীকোপধঃ ।
সর্গঃ সৃষ্টিঃ। ক শুল্বমতি বেধাঃ
পৃথিবীং পরিমাতি সৃজ্জতি বা
ইত্যর্থঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

खब॰ की जासुः। तब्बूः। रेजा-यतः ॥ 🛊 ॥ তামুপাত্রপক্ষাম-**ভোজনদোৰো यथा । তাৰে** পজ্বা চক্ষ্মনি মণো ভৰতি বৈ कर । रेठि मध्मामृत्क ४४ **ग**र्जनः ॥ यखकर्मा ॥ जाहातः ॥ जनमिधिः। ইতি मिनी।। শুন্থারিঃ পু• গন্ধকঃ। ইতি ट्यह्य हा ভত্মা ত্রী ভক্রপত্নী। ইতি কেচিৎ ॥ শুশ্রবান্ ত্রি প্রবণবিশিষ্টঃ। শ্রুধাতোঃ কুসুপ্রত্যযেন নিষ্প मः। ইতি मिका छ को गुनी ॥ শুক্রঃ ন্ত্রী মাতা। যথা। শি-শোঃ শুশ্রমণাথ শুশ্রঃ। ইতি মহাভারতে মোক্ষধর্মঃ।। শুশ্রমণ ক্লী সেবা। যথা। শু <u> শ্রুবণোপাসনক্ত্র সেবোপান্তি</u> রুপাসনা। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ শুক্ষা স্ত্রী উপাসন গা কথন য় শ্রোত্মিচ্ছ। । ইতি নেদিনী।। শুষ য ঔ ৯ শোষে। ইতি কবি-কল্পজনঃ॥ শোষঃ স্নেহ রহিতী-ভাবঃ ৷ য শুষ্যতি ধান্য মাত-

পেন। ঔ শোষ্টা। ৯ অশুষ্द।

रेि मूर्गानामः॥

खवः प्रावाशा शर्वः। देखाः
खवशानः ॥
खवः जी लावः॥ विनः। देखि
त्विनी ॥
खवितः की विद्याः॥ वःगापिदापाः॥ मत्रस्तु जि। इछामतः॥
खवितः प्राय्वाकः। इछि दिनः
पिनी॥ खितः। इछि विश्वः॥
खविता जी निन। इछि विश्वः॥
खविता जी निन। इछि विश्वः॥
स्विता जी निन। इछि विश्वः॥

ভাষা। ষথা। ভাষণ পর্যুবিত ।

তাষা। ষথা। ভাষণ পর্যুবিত ।

বাপি নীত বা দুরদেশত । জ
ক্রুস্য মুখান্ড্রই তদক পাবন ।

মহৎ ।। ইতিজ্ঞান্দে উৎকল্পভ ।

ভাষণা হিত ভাজা ইতি চ

ভাষা। তস্য গুণা । ভাষপত্র ।

গবোমিত পিত কেম স্বরাপ ।

গবামিত পিত কেম স্বরাপ ।

গহং। ভাষা ভাষণ তস্যাপি চ পিত ।

হারক সুরোচন ব্যঞ্জন যোগ্যারক ।। ইতি রাজ্বলভ ।।

গকারক ।। ইতি রাজ্বলভ ।।

জনহন্যঃ পৃ আতপারিনা-নিমেহীরতনীনঃ। শুক্রীযাচ্ ইতি ভাষা। তদ্য গুণা নৎস্য-শব্দে অকব্যাঃ।

শুষ্কলঃ ত্রি আমিষণ। ইত্যুণাদি-কোষঃ।। আমিষাশী। ইভ্যমর-টীকাষাণ ভরতঃ।।

শুক্ষনী ন্ত্ৰী শুক্ষমাণসং ।। মাণস-মাত্ৰং । যথা । শুক্ষনী শুক্ষ-মাণসে স্যামাণস মাত্ৰেপি দৃশ্য-তে। ইতি শৌক্ষলশন্দ্দীকাষাণ ভব্নতঃ ।। खकर्कः प्र वयर्कः विकि

শুক্রণ: পু• কিগা **ইভি ত্রি**কা-শুশেষ:।।

শুকাঙ্গঃ পুশু ধবৰ্কঃ ইভি বৈদ্যকং ৷৷ কেহ্লুন্যাবৰকৈ ত্ৰি শুকালী ত্ৰী গোধিকা ৷ ইভি শুকান্ডিকা ৷৷

खकार्यः क्री खठी। देखि अक-हिल्लका।।

শুকঃ পু॰ সূর্যঃ। ইভাগাদি-কোষঃ। অগ্নিঃ। ইভি সংক্রিপ্ত সারোণাদিষ্ ত্তিঃ।

खंश की एकः। ইछि मिनि ।। পরাক্রমঃ। ইछি হেমচন্দ্রঃ।। खंशः পু॰ সূর্যঃ। ইভি মেদিনী ।। অগিঃ। ইভি ক্রিকান্তশেষঃ।। বাযুঃ।। পক্ষী। ইভি সংক্রিপ্ত-সারোণাদিবৃত্তিঃ।। অর্চিঃ। ম্থা। শুমো। ইচিষি হুতাশনে। । ইতি শুভাকঃ। ইত্যামরটীকা-যা॰ ভরতঃ।।

ভন্ম ক্লী তেজঃ। ইতি জটাধরঃ

। সে, ব্যাং। ইতি হেমচন্দ্রঃ।
ভন্মা পুং অগ্নিঃ।। চিত্রকবৃক্ষঃ।
ইত্যমরঃ।। অদক্তোপি ভন্মেতি
সর্বস্থাইতি ভরতঃ।।

ডিকিঃ সু- কানুসা। তেজানা চিক্রণ। ইতি সাক্ষিপ্রসায়োশাদি বৃত্তিঃ।।

শৃকঃ পু॰ ক্লী সমতীক্ষাঞা ভঁষা ইতি ভাবা। তৎপৰ্য্যায়ঃ। কি-শারুঃ ২ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ শুঙ্গা ৩ কোশী। ইতি হেমচক্রঃ।। দৰা । ইতি मिनी ।। निवरामणुष्-जिमिकनगदनां खवजरः ॥ भू-क्थ्रधानिकवृष्तिकत्रत्यागः । তৰিবরণ যথা। অথ শূকদো-याधिकातः । তত्ত मृक्टमायमा निकान गार । जक्रमाटक्करमा বৃদ্ধি যোভিবাঞ্ছি মূচধী:। बाधिय खमा कायरख में हा-क्षि ह मृक्जाः॥ व्यक्तमार অনুচিতবৃদ্ধিক্রমাৎ। অনুচিতা **छ वृक्षिः जृति**विकातकनकना मृकमा सारमन। मृककाः। भृत्का जनभृकः मवित्वा जन-जबवित्ययः। म जू जनगत्ना-खनः। अन्न पृथु छ है छा। पिकः। ज्या भ्रद्धशारना नित्रवृषि-'करत्रा वाष्यागयनाम्।एक। या-গঃ শূক উচাতে। যথা। ভলা-তকান্থি জলশূক মথান্তা পত্ৰ मखर्तिम् मिल्मान् महदेमभा-

: दिन । এত दिक्छ वृश्लीकवा-তোৰপিষ্ট খালেগিত মহিৰ্বি-ष्ट्रिमलीकृट**७ १८क**ा। खुना नर-্ধরতুরক্ষম লিঙ্গতুলাণ শেষণ - করোত্যভিমত**॰ ন** হি **সংশ**যো-স্তি। ইত্যাদি। যতু জলশূকর-हिं सथान्तामिटेंचन जन्हिं মেব লিঙ্গবর্জন । অশ্বগন্ধা বরী कर्छ गांभी जिन्ही कनाविज । চতুর্গুণেন দুগ্ধেন তিলতৈল বি-পাচবেৎ ৷৷ তত্তৈল মেচু বকো-व्य কর্ণ পাণি বিবর্দ্ধন । তে চ শূকদোষা দশ চাকৌ চ ভৰস্তি 11 🛊 11 তেम्বाদৌ সর্যপিকা মাহ। গৌরসর্যপ সংস্থানা শুক দূর্ভগ হেতুকা। পিডিকা শ্লেয় বাতা-**छा। ए**छम। मर्राभिका जुना ॥ শৃক দুর্ভগ হেতুকা শুকনিমিতা। मूर्यरानिनिमिखा हा। ॥ अही-निका मार । कठिना विषये जू-টেগ্ৰ ৰাষুনাষ্ঠীলিকা ভবেৎ। অ-ষ্ঠীলা লোহকারস্য ভাওবিশেষঃ 1 নিহাই ইতি লোকে। তদ্বৎ ক-छिन। इंछाष्ठी निका। विषदेभ जूँ देश ব্লিতি বক্ষ্যমাণ শূকবিশেষণ । বি-यरेम श्रुव मीरेर्पः। जूरेनः ररेकः 🗓 🐠 ।। এথিত মাহ। শূকৈ ৰ্বৎ 📗

পূরিত শশ্বৎ গ্রথিত নাম তৎ ककार। रक्षित्रः ना मृदेकः शृ-ব্লিভ তালাপিত ছাদ্যাপিত ।।। 🗱 🛚 ।। স্ত্রিকা মাহ। স্ত্তিকা রক্তপি-েপ্তাথা জয়ুকান্থিনিভ। সিতা ? अखिका अखनूना कनवार ॥॥॥ वनकी बार्। जनजी गाउथा रामृक् थरमङ शिष्किनानजी । সা চাইজা সিভা স্ফোট দারুণা কথিতা চ সা।। এষা ব্রক্তপিত্ত নি-**मिखा (ॐयो ॥ 🛊 ॥ मृप्तिত मारु १** মৃদিত পীডিত যজু সংরক্ষণ বা-তকোপতঃ ৷ পাণিভ্যাণ ভূশ সণ-মূতে সংমৃত পিডিকা ভবেৎ ৷৷ শুকদোষে জাতে পাণিভ্যাণ ভূশ সংসূতে পিচিতে লিঙ্গে অতাপি বাত কোপত ইত্যনুবৰ্ত্তে।।#॥ অবমস্থ মাই।দীর্ঘা বাহুশ্চ পিডি-কা দীৰ্ব্যতে মধ্যমস্ত যাণা সোব-गरुः ककामृष्णाः त्वनना त्वान-र्यंक्षा नीर्या नीर्याकुताः ॥ #॥ পুষ্করিকা মাহ। পিডিকা পিডি-কাৰ্যাপ্তা পিত্ত শোণিত সম্ভবা । পদ্মকর্ণিক সম্ভানা জ্ঞেয়া পুদ্ধ-রিকেতি সা ॥ পিডিকাব্যাপ্তা ক্ষুদ্রপিডিকাব্যাপ্তা। অতএব প-অক্ৰিক সংস্থানা।। 🟶।। স্পর্শ-

বেচ্ছোণি न्नानामहत्रुरम्य वक्षाः॥ ।। उ खगा गार । गूकाबादता नवा त्रका রক্তপিতোদ্ধনা চ সা। এবোভ माथा। शिष्किः। भूतक स्रीर्वनम् छवा ॥ 🛎 ॥ শতবেনक यार । ছिटेफ दन्मूरे**थ लिंक** हिन्न यमा সমন্ততঃ। বাত শোণিতজে। ব্যা **थि र्विट्छियः मञ्दानकः॥ मज-**বোনক চালনী ভকুল্যখাক্ত रयोनकः ॥ 🛊 ॥ इक्शांक सार । বাত পিত্ত হৈতে জ্ঞেষ স্কুক্পাকো खुत मारहरू । এতमा निन पुरु-পাক লক্ষণ ৷৷ 🛊 ৷৷ শোনিতাবুদ নাহ।ক্রক্ষৈঃ স্ফোটেঃ সরক্তাভিঃ পিডকাভিঃ প্রপীডিত া লিঙ্গণ বাসুরুজ শ্চোগ্রা জ্ঞেষণ তৎ শো-ণিতার্বুদ॰।। বাসুরুজঃ স্ফোটক।-विञ्ञात्न (यहना ॥ **॥** ॥ मा॰मार्बुह गार । गा॰मपूछा विकानीया-मर्बूकः भाष्म मख्यः। 🛊। माष्मः शाक मार्। भौदार्ख बना मा॰ मानि यमा महीक्ठ (व्यवनाः । वि-माजि॰ गा॰नशाकञ्च नर्वामा क्र-ত ভিষক্।। শীর্যান্তে গলন্তি। সৰ্বদেশাঃ বাত পিত্ত কফজাঃ

शानि गार । ज्लार्लशनिक जन ॥ ॥ । । विक्रिश मार । विक्रिश ৰিদ্যাতেন পোক্ত মতিনিৰ্দি 'শেৎ। উক্ত॰ সাদিপাতিকবিত্ত-विज्वाः कथराकः ॥ **॥** ॥ जिल-कानक यार्। इस्थानि विद्यानाथ-বা শুকামি সরিষাণি তু। পতি-তানি পচন্ত্যাশু মেটু॰ নিরবশে-यण्डः ॥ कलानि जूका मा॰नानि শীর্যান্তে ফ্যা দেহিনঃ সন্নিপাত ममूषाः क बिम्राखाः जिनकानः कान् ॥ हिळानि नानादर्गानि । শূকানি শুক্তবণানি। মঞ্চাঃ ক্ষোশন্তীতিব<। সবিষাণি সবি-ৰ শূকাখ্য জন্তবিশেষ ক্লতানি। भौर्यारेख भनश्चि। इक्छिन जूनाः হাৎ তিলকালকাঃ।। 🐠।৷ অসা-श गार । তত गा भार्त्त । यक মাংসপাকশ্চ ষঃ স্মৃতঃ। বিজমি-শ্চ ন সিধ্যন্তি ৰে চ স্যু স্তিলকা-नकाः॥ 🛊 ॥ अथ भूकरमायमा **ठिकि** भा। गृकत्नात्ययु मर्द्वयू विवत्रीः काद्रस्य क्रियाः। ज-**लोका** रित्रप्रक॰ त्रिष्ठरिष्ठयू ভোজবেष ॥ श्वश्चनूं भाषु्रवका-**लि जिक्लाकार्थ म**ंग्रा । की-রেণ লেপ সেকাচ্চ শীতানেব হি काद्रस्थः ॥ नाबी मूत्रम यक्ता-

दिस गृहम् मिनामूँदेणः । म
गान देणम मक्रम्मादम् द्रमानः

विनागरम् ॥ मृहमः व्यक्तिमः

गानि देणमः ॥ म्रमाञ्चनः मास्वर भिक् भ्याञ्चिः । मण्डि शृष्य

त्वर भाष कष् गृमाम्विः गर्म
वर्ग भाष कष् गृमाम्विः । च्राक
दर्गाभमा नामाणि मृतीकरतािः ।

देखि गृकरमामाधिकातः । च्रिक

ভाবপ্रकानः ॥

শূককঃ পু॰ প্রাবটঃ।। রসঃ। ইতি মেদিনী।।

শূককীটঃ পু॰ শূক্যুক্তকীটবি-শেষঃ। শুষাপোকা ইতি ভাষা । তৎপর্যাষঃ। বৃশ্চিকঃ ২। ই-ত্যমরঃ।। শূককীটকঃ ৩। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

भूककी हेकः पूर् भृककी हैः। ইতি भक्त ज्ञावनी ॥

শূকতৃণ ক্লী তৃণবিশেষঃ । শূকডী ইন্তি হিন্দীভাষা। তৎপর্যাযঃ। শূকণ ২ শূকাঢ়াণ ও কনিগ্ঠকণ ৪। অস্য গুণঃ। দুর্মারম্ব
গশ্নাঞ্চ শূকাভাবে হিতঞ্চ তৎ
। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। দুর্মারম্ব-

शास्त्र मर्फेंद्रनृ ९ ইতি চ পাঠः गा मृक्शाना की खनायूकनना-्नोज । म कू शना चवानिः। ह-कामतः ॥ वंशा जीसामिकः ৰদি হ শুকসমন্বিত স্যাৎ তৎ नृत्रंशना मथ मूला मञ्जेकाति। শিশীনিগৃঢ মিতি তৎ প্রবদম্ভি निश्चीशानाः जृत्भाख्य मत्था ज्-चशाना मनार ॥ जमा छनाः। তত্র ত্রিদোষ শমন লঘু শৃক-খান্য তেজো বলাতিশ্যবীর্য্য-विबृक्षिकायि। प्रतम प्रतम मृक-ধান্যেষু সংখ্যা জ্ঞাতু শক্যা নৈৰ তৈ দৈৰিতৈ বা।। ইতি রা-জনিষ্টঃ ।। चिशि ह । मृक्श-ন্যাণ শ্মীধান্যাণ স্মাতীত প্র-শ্ব্যাতে পরতো বাতক্তজক্ষণ প্রাযেশাভিনব গুরু ৷৷ ইতি त्राजवल्लाकः ॥ यनाकः । यवस्र সিত শুকঃ স্যাৎ নিঃশূকোতি-ষবঃ স্মৃতঃ। তোকা স্তদ্বৎসহ-রিড ভতঃ বরণ্চ কীর্ত্তিতঃ ॥ यरः क्यारमा मधुद्रः भीजरना ্লেখনো মৃদ্ধ। ব্ৰণেষু তিলবৎ পথ্যো কক্ষো মেধামি বৰ্দ্ধনঃ ৷৷ কটুপাকো ২নভিষ্যনী স্বর্য্যো বলহরো গুরুঃ ৷৷ বহুবাত মলো

क्ष रेष्ट्रग्रकात्री क शिष्ट्रिकः । - কওছগামৰ শ্লেম্ম পিত্ত মেদ-প্ৰ-नायनः॥ श्रीनम श्राम काद्मा-क्षष्ठ लाहिल ज्हे अर्९ ी অস্মাদভিষবো-ন্যুন স্থোকো ন্যুনভর স্তভঃ ॥ ইতি জাৰ-প্রকাশঃ ॥

শূকপিঞ্চিঃ \ স্ত্রী শুকশিষিঃ। ইভি শূকপিঙী 🕽 শব্দমলা শব্দরত্মাব-ंत्ना ॥

শূকরঃ পু॰ পশুবিশেষঃ। শূওর ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাশ্বঃ। বরা-হঃ ২ স্তৰুরোমা ৩ রোমশঃ ৪ রকিরিঃ ৫ চক্রদ স্ট্রঃ ৬ কিটিঃ ৭ দ ঠ্ট্ৰী ৮ ক্ৰোডঃ ৯ দম্ভাযুধঃ ১০ বলী ১১ পৃথুক্ষন্ধঃ ১২ পোত্ৰী ১৩ যোগী ১৪ ভেদনঃ ১৫ কো-লঃ ১৬ পোত্রাযুধঃ ১৭ শুরঃ ১৮ বহ্বপত্যঃ ১৯ রদাষ্ধঃ ২০। ব-ন্যস্য ত্ৰস্য মাণসগুণাঃ৷ গুৰুত্বণ ৷ বাতহারিত্বণ। বৃষ্যত্বণ। বল স্বে-म क्त्रइथ ॥ श्रामा जमा भा-न ७ वाः । वनावज्ञारमा भाष्यः क्रष्र । (भरम) वन वीर्या वृष्कि কারিস্বঞ্চ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ অপি চ। লুলাপ পণ্ড বারাহ চ-मत्री वात्रवामयः। এতে कृत्म- । শূकार्श्रुष्ठिः पूर ज्वमिनिः। कार्यूत्र-

শ্কাপু ,

চরাঃ প্রোক্তা ষতঃ কুলে চ্র स्थानीर ।। कृत्वहत्रा मक्र शिख र्ता व्या वनावशः। अथूताः শীতলাঃ সিগ্ধা মূত্ৰলাঃ শ্লেম্বৰ-ৰ্দ্ধনাঃ।। ইতি ভাৰপ্ৰকাশঃ।। 🖞 भूकद्रक**मः पू**ं वाद्राहीकमः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শূকরপাদিকা স্ত্রী কোলশিয়ী। ইতি রাজনির্ধন্টঃ ॥ শূকরাক্রান্তা স্ত্রী বরাহক্রান্তা। ইতি শব্দচন্দ্রিকা॥ শৃকরী স্ত্রী বরাহক্রান্তা।ইতি भक्तक्रावनी।। भृकत्रभन्नी ह।। শৃকরেন্টঃ পু॰ কদেরুঃ। ইভি রা-জনির্ঘন্টঃ॥ শূকরপ্রিষজব্যে ত্রি मृकलः भू पूर्विनीजासः। ইতি (इगठनः ॥ শূকবতী স্ত্রী কপিকচ্ছঃ। ইতি শব্দচন্দ্ৰিক।।। শূকযুক্তে ত্ৰি।। শূকশিয়া জ্রী কপিকছেঃ।ইতি नक्ठिक्का ॥ শূকশিষিঃ ন্ত্ৰী কপিকচ্ছৃঃ৷ই-শুকশিষিক। ভামরঃ ভট্টীকা চ॥ শূকশিশ্বী শুকা স্ত্রী কপিকচ্ছৃঃ।ইতিশব্দ

ठिख्निका ॥

माना देखि कारदाता देखि ह भावमाणाया। देखि राजावनी॥ भूजिभर्वः शुः चावध्यकः। देखि भक्तप्रावनी॥

সূত্রঃ পু• চতুবৰীত্বগত চতুর্থ-वर्षः । ७९ भर्यायः । अवत्रवर्गः २ तृषतः ७ खरागुकः ७। ३-खामनः ॥ मामः । भामजः ए ष्यस्राज्या ७ जवनाः १ दिज-সেবকঃ ৮। ইতি শব্দরত্না-कि वनी ॥ भगः २। इंडि क्रो-**४तः ॥ अन्त्रावर्गः >॰ शब्हः >>** ा देखि द्यहसाः ॥ हजूर्यः ১२ विक्रमामः ३७ উপामकः ১८। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। 🛊 ॥ প্লক-ৰীপে ভদ্য সংজ্ঞা সত্যাসং। শা-मालबीदभ इयुक्ततः। अभवीदभ भगकः। क्लिक्बीरग रमदकः। भाकषीरभ जन्जछः। भूकत्रधी-পে সর্বে একবর্ণাঃ। অস্যোৎ-পত্তি বঁদাণঃ পাদাৎ। অস্য শা-দ্ৰনিৰাপিতো ধৰ্মঃ জীবিকা চ बाक्रन कविय देनगु ख्याना । অন্যৈকাশ্রমো গার্হস্থাঃ ইতি **बि**ভागवত॰।। #।। जश गृज-ধৰ্মাদি। বিপ্ৰাণা মৰ্চন । বিপ্ৰাণ भूजधर्मा विधीयर**७। इति**धी

ज्ञानी ने का का वाजाने बिद्धि । गृथः का विन्यमानि गञ्जमानि नृका विश्वमानि गञ्जमानि नृका विश्वमानि गञ्जमानि नृका विश्वमानि रा ।। यः मृक्षा बामनीनामी माङ्गामी म् नाङ्गी । मङीना-कः ॥ महीनादक चल्ले वक्ताः न-छः ॥ महीनादक चल्ले वक्ताः न-कः ॥ महीनादक चल्ले विक्रा-गर्भ तस्निनः। नमक विक्रा-कातः मक्रक समजाङ्गा । छ-मा जालातसानिः ना । मलक ला जालातसानिः ना । मलक

कलोका मश्रक्यम् ॥ क्यादका
ए महमूक विश्वायाः कायत्व क्र
विः । क्यानिकियः भूःकनीनाः

म कर्दः मश्रक्यम् ॥ गवाः वन
हिमः माक शावकी मश्रक्यम्

। क्यादा क्यादा नवः ॥ इि वक्य
पून क्यादा नदः ॥ इि वक्य
देवर्ष श्रिक्यक्यभ्यत्थ ५० क्य
शायः॥ ॥॥ व्यापि । विकानाः

भाष क्ष्यम् मृदेकः कार्या महा
ष्टिश शाषश्यक्यान् गदेम् क्या
प्रा मृष्टिक मावकः॥ क कृ ह्व्य
क्या मृष्टिक मावकः॥ क कृ ह्व्य
क्या देवद क्रिक्यक्या मृर्यः क्यार्थः

क्या मृष्टिक मावकः॥ क कृ ह्व्य
क्या देवद क्रिक्यक्या मृर्यः क्यार्थः

क्या क्ष्यनार्थः मश्र मृरः कृतीत्य

क्रिक्यक्याः ॥ विकानाः क्या-

वर्गानाः देवगानाः अविषयाः। ত্রিভ্যঃ শুক্রাবণা কার্য্যা ইত্যবা-मीषठ छम। ॥ इंडि शास्त्र मृखि थटल २७ व्यथायः ॥ 🗰 ॥ किस्र । শুক্রবৈব দিজাতীনা শুদ্রাণা ধর্মসাধন । কারুকর্ম তথাজীবঃ পাক্ষজ্ঞোপি ধর্মতঃ ॥ ইতি গা-রুডে ৪৯ অধ্যাবঃ ॥ 🛊 ॥ শুদ্ররা-**८** जा नित्यत्था यथा । शर्मि-কৈ নাবৃতে আমে ন ব্যাধিক্ছলে ভূশণান শুজরাজ্যে নিবসেৎ ন পাষঙজনৈ वृंতে ॥ 🛊 ॥ मुजाय यिकान निरम्दा यथा। न भू-জাৰ মতিং দদ্যাৎ ক্লষরং পাৰসং मिथ। নোচ্ছिकेश मधु घृठ॰ न ह क्रकाजिन॰ रविः ॥ न टिवाटिय ৰত° ৰুষাৎ ন চ ধৰ্মান্ বদে-দুধঃ। ইতি কৌর্ম্মে উপরিভাগে ১৫ व्यशायः ॥ 🟶 ॥ भूजाणाः विनाधिकात निरम्दश यथा। ख-যোবৰ্ণা মহাভাগ যজ্ঞসামান্য-ভাগিনঃ। শূতা বেদ পৰিত্তে-ভ্যো বান্ধণৈস্ত বহিষ্তাঃ ৷৷ ইতি বারাহে সংসারচক্রনামা-**थायः ॥ 🗱 ॥ कत्नो ८७ थन**्राः ষথা। কলিঃ সাধিতি ষৎপ্রোক্ত॰ শূদ্রঃ সাধিতি যোষিতঃ। তচ্চাহ

ग्ज

ভগবান্ সাধু ধন্যা শ্চেতি পুনঃ পুনঃ ৷৷ ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৬ অ॰-শে २ जशांचः॥ ७॥ ७मा महा-পানাদৌ দোষো যথা। তথা ম-**ए) मा भारतन जायानी गमरतन ह** । বেদাক্ষর বিচারেণ শুজ শ্চাণ্ডা-লতা ৰজেৰা। ইতি শুদ্ৰকম-লাকর ধৃত পরাশর বচন গা 🟶 🏗 বান্ধণস্য তদ্বভোজননিধেধো यथा। भूजामः जामता श्रान्देव মাসং মাসার্দ্ধ মেব বা। তদ্বো-নাবভিজাষেত সত্য মেত্ৰিদু ৰুধাঃ ৷৷ অথোদরস্পূতাকো মৃতঃ শ্বানোপি জাযতে। ত্বাদশ দশ চাফৌ চ গৃধু শৃকর পুষ্করাঃ ॥ উদরস্থিতশূজাকো হ্যধীষানো-পি নিত্যশঃ। জুহ্বন্ বাপি জপন্ বাপি গতি মূৰ্দ্ধু ন বিন্দতি॥ অ-মৃত বান্ধণস্যান্ধ ক্তিয়ান্ন প-যঃ স্মৃত[,]। বৈশ্যস্য চান্ন মেবান্ন° শূদান্ত রুধির স্বত ৷৷ তমাৎ শূড়ণ ন ভিক্ষেত যজ্ঞার্থণ সদ্দৃ-জাতধঃ। শ্বশান মিব সচ্ছ্ত স্ত-স্মাত্ত॰ পরিবর্জ্জফেৎ ।। কণানা-মথ বা ভিক্ষাণ স্বৰ্য্যাচ্চাতি বিক-र्षिতः। मक्क छाणाः गृद्द वर्वन् তৎ পাপেন ন লিপ্যতে ॥ বিশু-

कामय मञ्जाला निवृद्धाः नग মাণ্সতঃ। বিজ্ঞতক্তে। বৰিষ্ বিঃ শুড়া স পরিকীর্তিতঃ ।। ইতি বৃহৎপরাশরসংহিতায়া ৪ অ-शायः ॥ 🐞 ॥ जनि 🕫 । रात्रीजः । শূজামেন তু ভুক্তেন উদরস্থেন त्या मृठः। न देव श्रेत्र मृख्यः শূত্রস্থাধিগচ্ছতি ৷৷ শূতান শূত্রস্বামিকামণ তদ্দত্তমপি ভো-জনকালে তলাৃহাবস্থিত যতদ-পি শুদ্রাম॰। তদাহাঙ্গিরাঃ। শূ-**जरविश्वान विद्यान की त**े वा यिन বা দধি। নিবৃত্তেন ন ভোক্তব্য॰ শূদ্ৰামণ তদপি স্মৃত ৷৷ অপি শ-নাৎ সাকাতদত মৃত তখুলাদি । न जू जफ्ख कशर्मका मिना की ত মপি। স্বগৃহাগতে পুনরঙ্গিরাঃ া যথা যত স্ততো স্থাপঃ শুদ্ধিণ যান্তি নদীণ গতাঃ। শুজাদিপ্রগৃ-হেম্বন্ধ প্রবিষ্টম্ভ সদা শুচি ॥ প্রবিষ্ট॰ স্বত্ত্বাপাদক প্রতিগ্রহা-দিনে তিশেষঃ। অতএব পরাশরঃ । তাবন্ডবতি শুদ্রামণ বাবন্ন স্পৃ শতি দিজঃ ৷ দিজাতি করসংস্পৃ ষ্ট॰ সর্ব॰ ভদ্ধবি রুচ্যতে॥ স্পৃশতি প্রতিগৃহাতীতি কল্পভরঃ। তচ্চ সংপ্রোক্ষ্য গ্রাহ্থ মাহ বিষ্ণুপুরাণ

। मण्याकिषा भृद्गीयाक्षानः পৃহ ৰাগত । তচ্চ পাতা ভরে আ-क् माहानियाः। यंशाद्व यंख् वि-ন্যন্ত শূড়ো ৰচ্ছতি নিত্যশঃ। পাত্রান্তরগত আছে দুর্মণ স্বগৃহ ৰাগত ।। এতেন স্বগৃহ নাগত-रेगाव शक्षपः ज्ञाग्रगञ्मा भू-দানদোষভাগিত্ব॰ প্রতীয়তে । তত শৈচতাদৃগপি মুসুষু ণা সৰ্বথা পূজাম ন ভোক্তব্য ।। ইতি श्वकिञ्दः ॥ 🛊 ॥ कत्नो भूज-বিশেষান্ন ভোজন নিষেধো যথা १ भृट्फ्यू मात्र शालाल जलि-ত্রার্দ্ধশীরিণাণ। ভোজ্যান্নতা গৃ-হস্কস্য তীর্থসেবাতিদূরতঃ ৷৷ এ-**जानि लाक्छछार्थ॰** कला রাদৌ মহাত্মভিঃ। নিবর্ত্তিতানি কর্মাণি ব্যবস্থাপূৰ্বক॰ বুধৈঃ।। ইতি ভি-থ্যাদিতত্ত্ব॰ ।। ঋ।। অপরঞ্চ । ব্যাস छेवाह । नामग्रं भृषम् विखा ২ন্ন মোহাদ্বা যদি বান্যতঃ। স শুদ্রযোনিণ ব্রজতি যম্ভ ভুঙ্কে श्रनानि ।। यशानान् या वि-জো ভুঙ্কে শূত্রস্যান্নণ বিগর্হিতণ । জীবমেব ভবেৎ শূদ্রো মৃতঃ শ্বা চাভিজায়তে ॥ ব্রাহ্মণঃ ক ত্রিয বিশাণ শূ জস্য চ সুনীশ্বরাঃ।

यगारमानाष्ट्रस्य मृख खाला-नि माश्रमार ॥ 🛊 ॥ कनी छत्रव শূতবিশেষাৰ ভোজনবিধি ৰ্বশা । আর্ত্তিজঃ সলমিত্রক গোপালো দাস নাপিতৌ। এতে শৃতের ভোজ্যামা যশ্চাত্মান নিবেদ--(राष्ट्राष्ट्रचीनदः जन्डकातः क्विज-কৰ্মক এৰ চ। এতে শৃচ্চেষ্ ভো-জ্যোহা দত্বা স্বল্প পণ সুবৈঃ ৷৷ পায়ন বিশ্বপক্ষ যাবসকৈব শক্তবঃ। পিগ্যাকঞ্চৈব **তৈলঞ** শূদ্রাদ্গাহণ দিজাভিভিঃ ৷৷ ইতি কৌর্ম্মে উপরিভাগে ১৬ অ-शायः ॥ जिं ह। कमू शकानि ৈতৈলেন পাষসং দধিশক্তবঃ। দ্বি-কৈ রেতানি ভোজ্যানি শূত্রগেহ क्रानाशि॥ श्रा वनाक । भूषा-স্তু যে দানপরা ভবস্তি ব্রতাম্বি-তা বিপ্রপরাষণাস্ত্র। অঙ্গণ হি তে-ষাণ সতত সুভোজ্ঞাণ ভবেন্দ্রিজ দৃষ্টি মিদ॰ পুরাতনৈঃ।। তস্ম। দ্দান প্রকর্ত্তব্য ব্রতক্ষেন প্রয ত্নতঃ। সৰ্ৰপাপ বিনাশায মহৎ-मूथिववृक्षरम ।। ইতি वङ्गिभूजात्म व्यमानाधायः ॥ 🐞 ॥ देविमिटक-তরমন্ত্রপাঠে শুদ্রাদে রপ্যধিকা-রঃ। বেদমন্তবৰ্জ্জণ শূজস্যেতি ছ-

ন্দোগাব্লিকাচার চিস্তামণিশৃত-স্থৃতৌ বেদেতি বিশেষণাৎ। এ-বঞ্চ পুরাণ মধিক্বত্য। অধ্যেতক্য॰ ন চান্যেন ব্ৰাহ্মণ ক্ষত্ৰিষ বিনা। শ্রোতব্য মিহ শূজেণ নাধ্যেতব্য কদাচন।। ইতি ভবিষ্যপুরাণ ব-চন। পুরাণমন্ত্রেতরপর। গঞ্-যজ্ঞ সান প্রান্ধেযু পৌরাণিক ম-দ্রোপি নিষিদ্ধঃ। শূজমধিকতা। নমস্কারেণ মন্ত্রেণ পঞ্চযজ্ঞান श्राथर । ३७ याख्वरकान । ত্রন্ধ করে বিশানের মন্তবৎ স্নান মিষ্যতে। তৃষ্টী মেৰ হি শুদ্ৰস্য সন্মক্ষারক মত।। ইতি বো-গিযাজ্ঞবক্ষ্যেন। প্রাদ্ধ মধিক্ষত্য । অষমেব বিধিঃ প্রোক্তঃ শূজা-ণা॰ মন্ত্রবজ্জিতঃ । অমন্ত্রস্য তু শূজস্য বিপ্রো মন্ত্রেণ গৃহ্নতে ॥ ইতি বরাহপুরাণেন চ। নমস্কা-রেণেতি তৃষ্টী মিতি মন্ত্রবর্জিত মিতি চাভিধানাদেতৎপর বৈ-দিকপরঞ্চ শুড়াধিকারে গোত্ম-বচন । অনুমতো ২স্য নমকা-রো মন্ত্র ইভি। সাবিজ্ঞীণ প্রাণবণ ষজু ৰ্লন্ধীণ স্ত্ৰী শূজধো র্নেচ্ছস্তি। সাবিত্রীণ প্রণবণ ষজু লক্ষীণ জ্রী-**मृत्या यिः जानीयाः म मृत्या**

২ধো গচ্ছতীতি । ইতি তিথ্যা-দিতত্ত্ব• ॥ঞ্চাঞ্চা। প্রসঙ্গাদত্ত কা-যক্ষেৎপত্তি র্লিখ্যতে । পাদ্মে मृखि খণ্ডে। मृख्यातनी मनमः क-र्माख्यस्य थानिनाः विधिः। कनः খ্যানে স্থিতস্যাস্য সর্বকাষাদ্বি-निर्गछः॥ पिराक्षभः भूगान् रख मनीनाबक लायनी । विबश्ध ইতি খ্যাতো ধর্মরাজসমীপতঃ ।। थानिना॰ मनम्बर्क्याताथाय म নিৰূপিতঃ ৷ বন্ধণাতীক্ৰিযজ্ঞানী দেবাগ্যো ৰ্যজ্জুক্ স বৈ। ভো-জনাচ্চ मना जन्मानाश्वि मेरियाज দিকৈঃ ৷৷ ত্রন্ধকাষোন্ডবো যমাৎ কাষস্থে জাতি রুচ্যতে। নানা গোত্ৰাশ্চ তদ্বংশ্যাঃ কাষস্থা ভূবি সন্তি বৈ ।।।।। প্রকারান্তর॰ যথা । ক্বান্দে রেণুকামাহাত্ম্যে। এব॰ र्षाक्त्रं न॰ तामः मन्ताय निर्मिः তান্ শরান্। এক এব যথৌ **হয়॰ স**ৰানেবাতুরান্ নৃপান্ ।। কেচিদাইন মাশ্রিত্য কেচিৎ পা-তাল মাবিশন্। সগর্ভা চন্দ্রসে-নস্য ভাষ্যা দাব্যাশ্রমণ ষধৌ।। ততো রামঃ সমাঘাতো দাল্যাশ্রম মনুত্তম । পূজিতো মুনিনা স-**(मृग श्वर्य) शामग्रामनामिजिः ॥**

দদৌ মধ্যাহ্লসমযে তক্ষৈ ভোজ-ন মাদরাৎ। রামস্ত ভাববামাস क्रिक्॰ अभरनात्रथ•। याठयामा-স রামাচ্চ কাম দাল্যো মহামু-নিঃ ॥ ততো ছৌ পরমপ্রীতো ভোজন চক্রতু মুদা। ভোজনা-নন্তর দান্যঃ পপ্রচ্ছ ভাগবং প্র-छि॥ यद्वेश शार्षिछ । एत छन् मन्निष् यहिन । द्राम छवाह । তবাঁশ্ৰমে মহাভাগ সগৰ্ভা স্ত্ৰী স্মাগতা। চক্রদেনস্য রাজর্বেঃ ক্তিবস্য মহাত্মনঃ।। তমে ত্ব প্রার্থিত দৈহি হিংসেয়ণ তাণ ম-হামুনে। ততো দান্তঃ প্রত্যুবাচ **ममामि তব বাঞ্ছিত ।। मा**द्य উ-বাচ। স্ত্রিষণ গর্ভ মমুণ বালণ ত-মে স্ব দাতু মর্হসি। ততো রামো श्ववीष्मान्ताः सम्पं मह मागठः॥ ক্ষত্রিষান্তকর শ্চাহণ তত্ত্বণ যাচি-তবানসি। প্রার্থিতশ্চ দ্বয়া বিপ্র কাষ্ঠো গর্ভ উত্তমঃ ৷৷ তস্মাৎ কাষস্থ ইত্যাখ্যা ভবিষ্যন্তি শি-শোঃ শুভা। এবং রামো মহাবাহ र्शिषाखर्गर्ज यूखयः॥ निर्क्रगायाः শ্রমাতস্মাৎ ক্ষত্রিযান্তকরঃ প্র-ভূঃ। কাষস্থ এষ উৎপন্নঃ ক্ষত্রি-প্যা॰ ক্ষত্রিযাততঃ ॥ রামাজ্যা

न मात्रान के अधर्याषशिक्षः। কাষস্থর্মো ২ সৈ দত্ত শ্চিত্র গু প্রসা যঃ স্মৃতঃ ৷ তলোত্রজা-শ্চ কাৰ্ছা দাৱগোৱা ভড়ো २७वन् । मार्डा।शरमण्ड एउ বৈ ধূর্মিঠাঃ সভাবাদিনঃ ৷৷ স দাচারগরা নিতাং বভা হরিছ-तार्फरन-१ .सर्वः विध-शिष्ट्रवाक जिल्लीनाक शृक्षकाः ॥ **॥** ॥ थकाताखतः। गाहिकानिका-मून देर्वाम् वः अमृष्ट । স কাষস্ ইতি প্রোক্ত স্তন্য थर्मा विधीयर७ ॥ ऋखारेब-गागा गाहिया देवगाविथा-জा देवरमञ्डा विशीनाः पर-শজাভানা পেখন স স্মা-চরে ।। **গণকত্ব বিচিত্র ।। গণকত্ব** বি জগাটী প্রভেদতঃ। অধমঃ শৃ-ডজাতিভাঃ **পঞ্চদংস্কারবান**-भो ॥ ठाठ्वर्गमा (मदा॰ हि लिशि (लथन माधना । वाद-সাयः भिन्नकर्य छज्जीवन मु-माञ्च ।। मिथा यटखाभवी-তঞ্চ বস্ত্র মারক্ত মন্ত্রসা। স্প-শ্ন॰ দেবতানাঞ্কাষ্চাদ্যো विवर्जयथ ॥ इंछि कमनाकत्-ভটকত শুদ্রধর্মতত্ত্ব ৷৷

শূজहতा॰ की भृष्ठवर्खवावर्षा। यथा । व्यवगा निक्रमानमः मु-जीवा नायवर्षिना । आकार ক্লভাবো স্তত্ত্বণ বক্তি জীরঘুনন্দ-नः ॥ एक मध्यायुत्रानः । এব भूरजाशि गागागाः वृक्तिआक्रकः नर्मा। नगकारद्वन मह्यन कर्मा-मायामयषुरः ।। मानश्रमानः भू जः गापिकार् ७१वान् थ्रजूश मार्टन गर्वकामाश्चि द्रमा मुक জাষতে যতঃ।। ততো দান মে-বাপেক্ষিত ন তু ভোজন মপি। সামান্য সর্বজন কর্ত্তব্যত্বেন প্রতিমাসক্লফপক্ষাদিবিহিত্ঞা-দ্ধ আভ্যুদিষকশ্রাদ্ধঞ্চ এবং দ্বিজাতিবৎ শুদ্রোপি সর্য্যা-দিত্যস্বয়ঃ। নমক্ষারেণ মন্ত্রেণ ন তু স্বয়ণ পঠিতমন্ত্রেণ। আমা-मर्वाक्रात्म जनस्य मिक्ताः मवा।वृज्धिः। श्रिम यम यूमाश्रठः । ইতি বশিষ্ঠেন স্বিন্নদৈয়বান-ত্বাভিধানাৎ। কন্দুপক্ষ্য ভৃষ্ট-ত্ব॰ ন তু স্বিষত্ব॰। হারীতেন স্বে-**দন ভ**ৰ্জনযোঃপৃথক্ত্ব মুক্ত॰ 1 য্থা। আদীপন তাপন স্বেদন ভৰ্জন পচনাদিভিঃ পঞ্চমীতি। অস্যার্থঃ৷ আদীপন কাষ্ঠানা ৷

STATE CONCRETE CARRE नारकः। जन्ननं स्वराह्मा न छबुबातक। हैकि शक्यी नूना ইতি কৰতক্ষা অন্তএৰ বিষয়া-त्मान वावशियक ॥ कम्पूर्णकानि रेंडरनन भाषमः मधि मक्करः । দিকৈ রেতানি ভোজ্যানি শৃত্ত-গেহত্তভান্যপি।। ইতি কৃশ্পপু-রাণ বচনেন শুজকত্ ক কন্দুপ-ক্বাদে ৰ্ৰাক্ষণস্য ভক্ষ্যত্বেন প্ৰাক্ষে (तयक मुक्त । कम्राक जला-পদেক বিৰা কেবল পাত্ৰেণ য-ছব্লিনা পঞ্চ । পাযসং পাকেন काठिना विकाजाशमः मूकः। अ-त्रगामभत्रष भू॰ विक्रिनिए भिग-পতেঃ। তথা চামরং। পরমান্ন ह পাষসঃ ইতি। দিনে ত্রযোদশে প্রাপ্তে গাকেন ভোজবেদ্বিজান্ 1 অষণ বিধিঃ প্রযোক্তব্যঃ শুজা-শা॰ মন্ত্ৰবৰ্জ্জিতঃ ।। ইতি শ্ৰান্ধ-চিন্তামণিধৃত বরাহপুরাণ বচন মপি কন্দুগরুগরণ। এবম্ব এতম্বচ-মণ সচ্ছ ত্রপর মৈথিলোক্ত হে-য় । এবি আম্মাণসস্যাপিঞান্ধে দেষ দ্বং সামগ-শ্রাদ্ধতত্ত্বে ংনুস-ধেষণ। তত্র জব্য দেবতা প্রকা-भार्यः वाकात्वन मखाः भारेगाः।

स्कार स्वाकि स्वाका बार्गका । वसाना प्राप्ता बिट्या बर्खन गृश्ट । रेंडि व-तार प्रावाद । ज्या आटकार्ज-कर्वराणांका विविः भूषकर्व ষ্ট্রপাঠরহিতঃ। শুজস্য ,মন্ত্রপা-ठीनिधिकार्त्री यमग्रात्राजि পুনৰ্চৰ তৎ ব্ৰিষা গ্ৰহণাৰ্থ প রিভাষার্থক। তভদ্য তৎকর্ম-मश्चिमाखन दिश्र उति गर्का-কার্যিভূত্রান্ধণো গৃহতে। তেন वाकालन छव यक्क পर्रनीय इंडि ভাৎপৰ্য্যণ। তত্ৰ যজুৰ্বেদিকো ম-স্ত্রঃ। তথা চ স্মৃতিঃ। আর্মক্রমেণ সৰ্বত্ৰ শুজা বাজসনেধিনঃ। ত-স্মাচ্চ্ডঃ স্বয়ণ কর্মা যজুর্বেদীব कात्रदेष ॥ वार्यक्रत्यन मून्र ক্তক্ৰমেণ যজুৰ্বেদিসম্বন্ধিগৃহাদি-ना। ठेंचूनी मिन वर्गाना यानि প্রোক্তানি বেবদা। ধর্মশাস্তাণি রাজেজ শৃণু ভানি নৃপোত্তম।। বিশেষ্তম্ভ শুদ্রাণাণ পাবনানি यनी विजिः। असो मणपूराणानि চরিত রাধবস্য চ ৷৷ রামস্য সরু-भार्कृष धर्म कामार्थनिक्र । তথোক্ত ভারত বীর পারাশ-ষ্যেণ ধীমতা ।। বেদার্থণ সকল

त्रांका गर्नाकात्र अवस देखि. खरिश देशन अवस्ति । গৌরাধিকাদি বিধি ব্যক্তি कविना । जब ह क्रांटका द्वार-गञ्ज रक्कं भूषरमाहि रहस्य स्व-विजानामानार आक्र शहान-मतः मृद्यम शठनीय इसि देनशि-लाकः। एव रहार्श्तस्य भू জাণা॰ মন্তবিৰ্ক্তিত ইতানেন মন্ত্ৰ-माज निरयशां मध्याश्रहादश्न নমস্কারেণ মন্ত্রেণ ইন্ত্যুপালানা-চচ। পৌরাণিকস্যাপি আছে নিষেধঃ প্রতীয়তে। এবং স্মানে-পি। ত্রন্ধ কর্ত্র বিশা মেব মন্তরৎ স্থান বিষ্যতে। তুকী মেব ছি শৃ-জন্য **সনমকারক মত ৷৷ ই**ত্য-त्नन नमस्वात विधाना । १११४-জ্ঞেপি। শূদ্রস্য দ্বিজ শ্বশ্রবা ত-या জीवनवान् खटव । निटेन वी विविदेश कीरवर विकाछि हिन् মাচরন্।। ভার্যারভিঃ শুচি ভূ-ত্যতর্ত্ত। প্রান্ধক্রিযারতঃ। নমৃষ্ণা-রেণ মন্ত্রেণ পঞ্চয়ভ্রান্ন স্থাপয়েৎ ।। ইতি नमकात्रमाव तिथासा९ धाकामियू पोताबिकमञ्जनित्य-ধঃ। ততশ্চ স্নান শ্রোদ্ধা পঞ্ধ-জ্ঞেতরত্র শুদ্রস্য পৌরাণিক মন্ত্র-

THE PERSON NAME AND ASSOCIATION OF THE PERSON NAMED IN PARTY. श्रीनितः सानि राज्यः प्रवतः मु (म.। देखि मन्यक्तार। हूखा का-या त्रभावतः देखि राखरहान-हमाक मुक्काबगात्व जनभूगान्-द्वाद्यम् कालाख्यम् नानविद्य-रकाकात्रनगाजिशनाक भूजानी-नाः नामकंत्रत्व वम् द्यायानिक श-দ্ধতিযুক্ত নামকরণস্য চ প্রতীতে বৈদিক কৰ্মণি শুজাণা পদ্ধতি-যুক্ত নামাভিধান জিয়তে ইতি ।। ।। भूं जञ्जाहबदन देववहीरर्थन প্তৰে জল' সত্ত্ৰৎ ক্ষিপেৎ ন পি-বেৎ। তথা চ যাজ্ঞবন্ধ্যঃ। श्र-ক্ঠ তালুগান্তিজ্ঞ যথাসংখ্য দ্বি-काठयः। अस्त्रतन् जी ह मृजम्ह সক্লৎ স্পৃঞ্চাভি রস্ততঃ। অন্ততো রোত্তর মগকর্ষাৎ। অভএব স্পৃ-ক্টাভি রিত্যুক্ত নতু ভকিতাভি রিতি। স্ত্রী শুদ্রঃ শুদ্ধ্যতে নিত্য कालनाक करतार्थरवाः । देखि ভিন্নপুরাণ বচনধা বাজ্ঞবন্ধ্যঃ। श्राधा बाल्गान जीर्यन विद्या নিত্য মুগম্পূৰ্ণেৎ। অত্ত ৰিজ-रेगाव चाठमरम बाकाछीरशीला-नामा खी मूजरबा न राज्नाह-

যন । এব মের মিতাকরায়া[•] वाक मूक मतीरिना । जिया ব্রেদশিক তীর্থ- শুডজাতে স্ত देशव ह। मक्रमाहमनाष्ट्रिक द्र তবো রেব চোভবো রিভি ॥ . এতদন खत्रः ইন্দ্রিয়াদিস্পর্শনন্ত ত্রাহ্মণবদেব। প্রমাণান্তরম্ভ বা-জসনেষি সামগশ্রাদ্ধাহ্নিকত खर्य। त्रनूमस्त्रय । ইতি वन्माय-**णैय औरतिरतञ्जागायाज** শ্রীরঘুনন্দনভটাচার্য্য বিরচিত। শুজরুত্যবিচারণতত্ত্ব সমাপ্ত ।। শূতধর্মঃ পুং শূত্রস্য শান্তবিহি-তাচারঃ। তদ্য বিবরণ শূজ-ক্বত্যশব্দে **দ্রম্ভব্য**ণ।। मुखियः शू॰ भनाषुः। ইতি व्राक्रिनिर्वन्छः ॥ শूक्रमा श्रियकः ব্যে ত্রি॥ শুজপ্রেষাঃ পু॰ শুজস্যপরিচার-क्वान्नगामिः। इंडि क्हि ।। শত্রশাসন ক্লী শূড্রস্যাধিকারো-लिथाभवानि हो। यथा। मान-ভিষ্যন্দির্যণ শাখানগর মি-ত্যপি। শাসন ধর্মকীলঃ স্যা-মঙ্গতিঃ শুদ্রশাসন।। ইতি পুর-

वर्रा जिको खरमयः ॥

শুদা স্ত্রী শুদ্রজাতিন্ত্রী। ইত্যমরঃ 🛭

শূডান কী শূডাবানিকান।
কথা। শূডানেন তু ভুক্তেন উদরঙ্গেন ধাে মৃতঃ। স বৈ খরত্ব
মুক্তর শু দত্তশাবিগছতি।।
শুডান শু দ্বামিকান। ইতি
শুকিতত্ত্ব।। অন্যৎ শূদশকে
দক্তবাং।

শুজাজ র্যাঃ পু॰ শুজাভার্য্যা যস্য সংশ্রুজাস্বামী। ইতি ব্যাকরণ॰ শুজার্তা স্ত্রী প্রিযঙ্গুর্কঃ। ইতি শঙ্কচজ্রিকা।

শুজাবেদী পু॰ শুজাবিবাহকর্তা।
বথা। শুজাবেদী পততাত্তে রুতথ্য তন্যস্য চা শৌনক্ষ্য
সূতোৎপত্ত্যা তদপত্যত্ত্যা ভূগোঃ।। ইতি দাষভাগঃ।।

শুজী জ্বী শুজস্য ভার্যা। ইত্য-মরঃ।।

मृनः े बि विर्क्तिकः। ই कि श्रीशमृनवान् । काः क कव कृ श्रव्यागजाः निष्णाः । ই कि वागि कर्नाः। ই कि
स्नायुं ।। आशि कि कि नाः। । स्रिक्तिकाः।
ই कि हातावनी।। ॥।। श्रद्धिकाः।
मृना यथा। श्रक्षम्ना गृह स्रमा
हू नी श्रद्धां । क्ष्यनी
कि । स्रमुश्च वद्या व्याक्तिकाः। क्ष्यनी
कि । स्रमुश्च वद्या व्याक्तिकाः।

ষন।। পঞ্দুনাপাপনাশো যথা। । মনুঃ। অধ্যাপন ক্রমবজ্ঞঃ পি-ভূযজ্ঞস্তু তর্পণ । হোমো দৈবো

বলি ভৌতো ন্যজো **২ডিখি**-পূজন• ৷৷ পঞ্চোন্ধো শহা-

যজ্ঞান্ন হাপষ্ঠি শক্তিতঃ স গৃহেপি বসমিত্য শুনালোইয

र्म निशास्त्र ॥ देखि आविष्ठिखः

তত্ত্বণ 11

শুনাবান্ পু॰ শুনা বিদ্যতে যস্য সং। কসাই ইতি ভাষা। ইতি কেচিৎ।।

শূন্য° ক্লী আকাশণ। ইতি শব্দ চন্দ্ৰিকা।। বিন্দুং। ইতি হেম-চন্দ্ৰঃ।।

भृनाः

बि खिल्पारम छनः।

खानि देि शातमा छारा। छदशर्यासः। विलिकः २ जुकः ७

तिक्किः १। देलिकः १। खनाः ६

कि छिनिकाराः छत्रछः॥ नि
किनः। देलि भिनी। ६॥ खः

विमाजीवनः भृनाः मिक्म्ना।

किनवास्ता। भूसदीनः गृहः भृ
नाः मर्वभूना। मित्रिक्छ।।। देलि

हानकाः॥

শূনামধাঃ পু॰ নলঃ। ইতি রাজ-

भूत

নিষ্কঃ ॥ শূন্যগর্ভবন্তনি ত্রি ॥ শূন্যখাদী বিপ্ত সৌগতঃ । ইতি জটাধরঃ ॥ নান্তিকশ্চ ॥

भूगा जी मंगी। इंडि विश्व-दमिट्नो ॥ यहाक छेकिनी । कंगीयनमा इंडि था। । इंडि भंक किंका ॥ वक्षा। इंडि द्रा-क्रिनिके ॥

मूनाणियः प्र निर्जनगृहः। जंब नश्न निरम्राथा यथा। मार्कर खरं । नूनिर्गालिय न्यंभारिन ह अर्वे-वृत्क ठलूकार्य। यशास्त्रगृहरू চাপি শক্রা লোফ পাণ্ডব্।। काना लग विश्व (प्रवाना खक-ণাঞ্চ তথোগরি। ন চাপি ভগ্ন-नेयरन नाखरही नाखिहः वयः ्।। नार्जवामा न नग्रक नाउद्री-পরমন্তকঃ। নাকাশে সর্বশূর্ম্যে চ नहे टिल्डाफर्ट्स ७थ। ॥ ने ब-পেদিতার্থঃ। ইত্যাহ্নিকতত্ত্ব• ॥ मृशकातः पुः मृखागाः शाहकः। यथा। मृज्यारकाथकीवी यः শৃপকার ইতি স্তঃ। ইতি ত্রন-देवदर्ख अक्रेडिश्ट २१ जशा-सः ॥ जनाय मञ्जानकात्रातमे **जरुवा** ।। **मूत ७ के व स्टर्ड**। शिक्ता देखि

कविक्राक्षमः । उत्य मुक्तिः। के मूर्वः । उत्य क्रिकेन्यः । रेडि मूर्वामायः ॥

मूत १ क ७ विकटन । इंछ कनि कन्न कर । ७ क्छ मृत्र । वि-क्रमः উদ্যমः । ই छि मूर्गा माणः ।। मृद्धः भूः वीदः । ই छा मदः ।। सामवः । म जू श्रीक्र कमा भिछा-महः । ই छि त्यमिनी ।। मूर्गः । ই छि कि का छ मिनी ।। मूर्गः ।। मृकदः ।। ठिक्कः ।। माणः ।। मृकदः ।। ममुद्रः । ই छि द्राष्ट्र-निर्यक्रः।।

मृत्रः श्रुः मृत्वित्मयः। एल रेठि ভाষা। छ॰ शर्यापः। घ-(मं प्रः २ कमः ७। ইতামরः॥ मृत्रःश्रेटि छ द्वीका॥ एलः ६ १ ইछि छ छ। यतः॥ एलः ७। रेठि प्यमिनी॥ कण्नः १ कमी ५ मृक्भी २ चूनकम्मकः १० मृ-नीमातिः १० कम्ममृत्रः १८ छीडक-शेः १८ कमार्शः १७ कम्पर्यक्तिः ११ वहकमः १५ क्राक्नः १२ मृत्रंवकमः २०। खमा छनाः। कपूषः। क्राषः। सीशनषः। शाहनषः। क्रियः क्रानिन थाम

त्यामयमार्गः भूत छन्न मानि-भाग अनुरमायकात्रियम । देखि त्राकिनिवकिः।। अभि । गृतरम नीभारना कनः क्यायः क्षुकृष करूर विकेडी विनाम क्रिंग ककार्नाक्षरका नचुः ॥ वित्न-चामर्गरम भषाः भीर धना वि-ৰাশনঃ। সৰ্বেষা কন্দশাকানা। শুরণঃ শ্রেষ্ঠ উচ্যতে ।। দক্রণাণ ক্বক্তপিক্তানা স্বস্তানা ন হিতো হি বঃ। সন্ধান যোগ সংপ্রাপ্তঃ শূরণো গুণক্তমঃ ৷৷ ইতি ভাব-अकामः ॥ जनाक । भूत्रा দীপনো ৰুচাঃ কফমে। বিশদো वबुः । वित्यवामर्गमाः भरथा। क्षागांकमञ्ज मायनः ॥ इंडि রাজবল্পভঃ ॥ 🖝॥ শ্যোনাক-वृक्तः। ইভি শব্দমালা।। मृत्राधिकः प्र हितानशकी। रेषि नकहिन्का ॥ मृत्रामयः प्रः ठजूर्बिःमिष्ठिजाया-ুৰ্হদন্তৰ্গতাৰ্ছদিশেষঃ । ইতি হে-यठकार ॥

শূরসেনঃ পু॰ রাজবিশেষঃ।।
দেশবিশেষঃ। যথা। শূরসেনো
যদুপতি র্মপুরা মাবসন্ পুরী॰।
মাথুরান্ শূরসেনা॰ শ্চ বিষযা-

न त्रपूरक श्रा कि कि कि का निकार कर मार्ट्स के बार्स के बार्स के कि का मार्ट्स के कि का कि का मार्ट्स के का कि का मार्ट्स के का मार्ट्स के

শূর্পকঃ পু• অস্রবিশেষঃ।স চ কামদেবস্যশকুঃ। ইতি ছেম-চন্দ্রঃ।

मृर्शवर्गः पु॰ इसी। ইछि बिकासत्मारा। जनाज्ना व्यक्तियुटक वि
मृर्शकाद्राधः । पु॰ कामरमदः ।
मृर्शकाद्रिः । ইछि इनायुधः ।।
मृर्शकाद्रिः । देखि इनायुधः ।।
मृर्शकाद्रिः । देखि निषीतित्मयः ।
देखि मद्यहित्वा ।।
मृर्शवाठः पु॰ मृर्शमा दायुः ।

স্বলারবাডাস ইতি ভাষা। তৎ-

शर्यायः। कृत्रकानः २। ইতি

विके अपनिशा শূর্গঞ্জে পু॰ হস্তী। ইতি হারা-वजी ॥ भूगी जी क्षत्रमूर्णः। हेजूनाहि-কোरः ॥ मूर्भनथा। ইতি मय-याना ॥ শূর্মঃ পু॰ লৌহপ্রতিমা। ইত্য-मत्रविकायाः त्रायमूक्षदेः ॥ শূর্মিঃ স্ত্রী লোহপ্রতিষা। ইতি ভরত দ্বিকাপকোষঃ।। শূর্শ্বিকা / স্ত্রী লৌহপ্রতিমা। ইতি नृम्यी) नकत्र प्राचनी II ৰুজাযা । ইতি কবিকন্প-ক্রমঃ।। দীর্ঘী। শূলতি লোক द्रागः। ইতি मूर्गामागः॥ मृलः पृ क्षी तागिवित्यसः॥ विञ्जवित्मयः। दर्भा देखि छाला ইতিচ ভাষা। ইত্যমরঃ ॥ মৃত্যুঃ া কেতনঃ।। বিষয়াদি সপ্তবি॰-শতি যোগান্তর্গতনবম যোগঃ। इंडि सिनी।। जल्मांगकांड-ফল॰। ভীতো দরিজো দবিতা-थियम मृत्नाख्यः मृनहेव य-वत्साः। विमाग्याजाः तरिः ভোপ শূলী করোতি লোকে ন रिङ कंगािष्ट ॥ देखि कािशी-

প্রদীপঃ ৷৷ সুতীক্ষঃ ৷৷ অষঃ-

कीनः। ইতি ধরণিং ॥ व्यर्षा। रेिं किंदिना विख्लवेवान যথা। অউ শূলা জনগদাঃ শিব-मृला कंजूलाशाः अनेमाः (क-भगुनित्ना खरिवाछि कलो যুগে।। ইতি মহাভারতে আদি পর । । । विश्व भूलाधिकार्रः। তত শূলসা সমিক্ষি নিদান मार । पाटेयः পृथक् সমস্তাম ष्ठतेषुः मृत्ना श्रेश जत्यः। म ৰ্বেয়েতেষু শূলেষু প্ৰাযেণ পব-नः थङ्ः॥ थङ्ः कर्छा॥ 🛊 ॥ শাতিকস্য বিপ্রকৃষ্ট নিদান সং-প্ৰাপ্তি লক্ষণ মাহ। ব্যাষাম পা-नामि ठिरेमथूनाकः अकागता छजनापिभाना । कनाव मुकान চকি কোরদূষাৎ অত্যর্থ ৰক্ষা-ধ্যশনাভিঘাতা থা ক্যায় তি-ক্তাতিবিৰাটজান বিৰুদ্ধবন্ধুরক अक्रमाटेकः। विहे हुक मूवानिन সমিরোধাৎ শোকোপরাসাদ-তিহাস্য ভাষাৎ ॥ বাযুঃ প্রবৃ-क्ला जनरविक्त मृत्र शब शृष्ठ-शार्थ बिक विख्रामा । জीर्ग थिएगारव ह घनागरम ह भीएं ह कान नमूरेनिक गाए ॥ मूह শৃত শ্চোপশম প্রকোপৈ র্বিণাত্র

সণ্স্তম্ভন তোদ ভেদেঃ ৷ সংখদ-नाजाक्षन मर्गनादेगाः विद्यास ट्याटेकाम्ह मयः श्रवाणि॥ बा-यात्मा महायूका निः। शानः छक्न-गत्रवाणि । रेमपूर्म जीत्नवा । প্রজাগর॰ রাত্রো। এষা মতিবো-गां । कनाव जित्रू हैः। जाएकी ত্বরী। কোরদূষকঃ কোজবঃ। অভ্যর্থকক্ষত্রবাসের। অধ্যশ-ন॰ ভুক্তস্যোপরিভোজন•। অ-ভিষাতো লোফীদিভিঃ। ক্ষাষ তিক্ত রসসেবা। বিৰুঢজান্ন বি-ৰত মন্ধুরিত মন্ন কলাষ শাকাদি তজ্জ মন্ন॰ ভক্ষ্য॰ । বল্লুর॰ শুদ্ধ-মা॰স॰। তস্য শ্লস্য দেশ মাহ। श्रमयापियू ॥ 🕸 ॥ তস্য श्रष्ट्वमा পৃথগপি লক্ষণ পঠতি। কফ পি-ভাবরুদ্ধন্ত মারুতো রসবর্দ্ধিতঃ। হদিশ্বঃ সরুতে শূল মুচ্ছাসস্যা-বরোধক ।। স হচ্ছেল ইতি খ্যা-তো রস মারুত কৌপজঃ। 🟶 । পাৰ্শ শুলস্যাপি লক্ষণ মাহ। কফ॰ নিগৃহ্থ পবনঃ শূচীভি রিব নিস্তু-मन्। भार्श्यः भार्यस्याः मृलः পর্য্যাদায়ান সংযুক্ত ॥ তেনো-চ্ছুসিতি বক্তেুণ নরোমঞ্চ ন কা-**ज्क**ि । निर्णाक नाथवातिय

भार्यम्बाः खातीर्दिकः ॥ 🗸 ॥ विश्विमाणि वाकन यार । मः ताशा । क्रिका नाम् त्रि সংশ্ৰিত্য তিগত। বস্তি বক্ষৰ না-ভীবু ভতঃ শূলস্ক জাবতে।। বি भूज वाक मर्द्राधी विख्नुनः म উচ্চতে।। 🖷 ।। अङ्ग्रेड यनू गेत्रिकः। जीर्ल ज्ञा अमारा दाबा। १ মে রাত্রিভবশীতেন বাতপ্রকো-পাৎ। ঘনাগনে বর্ষাসূ নেয়োদ रिक ।। 🛊।। ७८ थव रेमिखिक मार्। कात्राििजी काक विकारि देवन निष्णाव शिशाक अन्यशूरेयः । क प्रेम्न मोवीत मूताविकादेतः व्या-ধানলাযাস রবিপ্রতাপৈঃ।। আ-गािं वाशामगति विषयः शि ত্ত॰ প্রদ্নপ্যাশু করোতি শুল॰। তৃণ্মোহ দাহার্ত্তিকর হি নাভ্যা मत्यम मृष्ट्। जुन ल्यायपूकः ॥ मधा॰ मिट्न ऋणां ठाईनदां व निमायकाटन जनमाजाट्य চ । শীতে ২তিশীতৈঃ সমূপৈতি শা-স্তিণ সুস্বাদুশীতৈ রপি ভোজেনৈ-শ্চ।। নিস্পাবো রাজমাষঃ। সৌ বীর॰ সন্ধানভেদঃ। সুরাবিকা-देतः। পরিপঞ্চান সন্ধান সমূৎ-পদ্ম। সুরা মতা। তস্যা বিকারেঃ। 🏻

রবিপ্রতাপ আতপঃ। প্রাম্যাতি-त्यारमा देवषुनाधिका । विमारी शुक्राणि जगरेन विषये क्रिक व्याधमिक। व्यविनारि वस्त्राभि গিত্তবশাৰিদাহিত্ব ভবতি। জ-नमाख्य नद्रमि । नीटन नीच-कारन। भीरेज बाजामिजिः ॥का। देशीयक मारु। जानून वातिक किलां परवाविकारत मा रमकू পিষ্ট হৃশরা তিলশস্থূলীভিঃ। অন্যৈ ৰ্লাসজনকৈ রুপি হেতু-ভিশ্চ শ্লেষ্বা প্রকোপ মুপগম্য करतािं गूल ।। शलाम काम म मनाक्रि में अंदमरेक द्वामा गर्य স্তিমিত কোষ্ঠ শিরো গুরুবৈঃ। जूकिः मरेमव हि क्रकः ऋकरठ-তিমাত্র• সূর্য্যোদধে ২থ শিশিরে अमुमागरम ह।। चान्श वर्कन **(मण्डाः एकाः। वार्तिकः मा**णू-कामि। किलाउँ। शकु मद्रा मन कीत्र॰ विख्खिया मधिकृष्टिका তক্রেণ তক্রন্সদী স্যাভিযোঃ পি-**७३ किमा** हेकः ॥ शरमाविकातः भाषमापिः । शिकः भाषापिः । অন্যৈঃ গুৰাদিভিঃ স্তিমিত মা-ৰ্জচৰ্মাবগুণ্ঠিত নিব ষৎ কোষ্ঠ• শিব্লশ্চ তবো র্গুরুব্য়ে সহ ৷

नृठा

मूर्याामय ३७ खिशाविज्छात यम श्रेषमञागरमाभागका स निनिद्धा छत करेगा जिन्हा है । प्रमुक्ति । केल्किन केल्किन केल्किन क गर । स्वत्यक क्रमा द्वरिं विकासिक विद्यानक ॥ । विद्वारिक गार । गर्सिष् (मर्प्यू जनल लिक विना खिरक जर्बड-व हि भूल । भूकछ स्मम विष वकुवृद्याः विवर्जनीयक वम्राज्ञ छ-ज्ञाना गर्दम् (मर्गम् सर गृष्ठे পাৰ্শ্ব ত্ৰিক বস্তি নাড্যামাশফেষু । সর্বভব॰ ত্রিদোর্যজ॰ পূল॰ বি-ন্দ্যাৎ। সুক্ষসাধ্য বিষ বজুতু-ला॰ मा त्रशाच्चक द्वार ॥ 🛊 ॥ व्याम-জ মাহ। আটোপ হলাস বনী গুরুত্ব॰ স্তৈমিত্য মানাহ কফপ্র-रमदेकः। क्कमा निष्मम ममाम लिक भारमाखिवः भूल मूमारुत्रि ।। क्षमा क्षम्बमा। जाता-ন্তবং আমাদুভবে। যন্ত্য তং শূলং । অত্রামাচ্চলে জাতে প**শ্চাদ্দো**-य मस्यः। অতএব শূলস্যা छेच যুক্ত । স চ প্রথম মামাশযে ভ বতি পশ্চাৎ সম্বন্ধিদোবৈ ৰ্বস্তি নাভি হৃৎ পার্শ্ব স্থান্য ভবতি यथा (फार्यमञ्जूकः ॥ 🐞 ॥ ज्या म-

भूकना (मार्यवित्मत्वन सम्भवि-শেৰ মাহ ৷বাতামক বস্তিগত कारि में महाबंक गाँच वार्ड मानाः। क्रेन्याचे मत्नी कक मामे विका मानियू जिल्लान् हे मामे-गाउँ ।। बेरेगार्च करको हर-পাৰ্যভা সংহতে সকৌ কক यतिके कर्यमायिके ॥ 🛊 ॥ **उदा उदा क** यामगूल गार 1 অতিনাত্ৰ বদা ভুক্ত পাবকে मृमुजा॰ गएछ । चित्रीक्रञ्छ তৎ কোষ্ঠে বাবুনাব্ত্য তিগতি।। ষদার ন গত পাক তছ্ল সক্তে ভূশ। মূৰ্জ্যান বিদা-रा॰ क इत्यान मित्रिक ।। কম্প বাত মতীসারণ প্রমোহণ জ-नरपमि। जिंदिशाका छव॰ भृव মেভ নাহ শ্নীষিশঃ ৷৷ অবিপা-কোন্তৰ আমোন্তৰ মিত্যৰ্থঃ॥ **শূলস্যোপজবানাহ। । (বদনাতি-**তৃষা মূচ্ছা আনাহো গৌরব জ্ব-রঃ। ভূমে। হরুচিঃ ক্লশত্বঞ্চ বল-হানি স্তথৈব চ। উপদ্ৰবা দলৈ-বেতে বস্য শূলস্য নাস্তি সং ৷৷ 🗱 ॥ भूलरेमार एकपः भतिशाम मार्। देव र्मिनाटेनः श्रव्यापिटा বাষঃ সমিহিতো যদা। কফ থি-

हर ममान्छा गृशकादी छद्यक्ती ॥ जूक कीर्याच्या कर पहल शतिशासकः । देवा विकास जाक्ति। निकान अवस थि सक्। एक दोन पिना लक्ष मुक्तः। सहित्सं हा। शाक्षा अश्रमक नामान स्थान वित्मय नाइ। स्रीदि कीर्व छात्री-(न वा यक्त मूशकायरक। शका-शथा श्रायाद्वार द्वाकनाद्वाक त्नन वा ॥ न भग या जिनियमा মোনজব উদাহতঃ। নেদ পু-व गमाधाः ठिकि भाजिधाना । ॥ 🗱 ॥ जय भूनमा हिकिৎमा। ব্যন॰ লজ্বন॰ স্থেদ॰ পাচন॰ কল-ব র্ত্তযঃ। ক্ষারচূর্ণানি গুটিকাঃ শ-मारख मूनभाखरम।। विद्धाम वा-তশূলম্ভ স্নেহ স্বেদৈ রুপাচরেৎ। भूव भवाभिक्तमा माष्ट्र (सम এ वम्थावशः ॥ मृज्जिकाः नजनाः পাকাদ্বনীভূতা পটে কিপেৎ ৷ ক্ৰয়া তথ পোটলী শূলী তথা स्थितः विशाभरयः ॥ मृज्ञिकारस-मः॥ 🗱॥ कार्भामान्हि जनशिका **जिल यदेव दिवस्थम् लाजमी वर्चा-**ভূ শণবীজ কাঞ্জিকযুতৈ রেকী-क्टेंठ वे। भूथक्। त्यमः माम्य

কুর্গরোদর শির: ক্ষিণ্ জানু পা गानुगी ७६ कम् क्रिक्टका विः सर्दछ निश्ताक चार्राविक स कार्याम्बर्गावस्थाः ॥ ।॥ कि देश क शिकाः समा जागरवन केद्रांशिति। भूणः मृप्खतः एव শান্তি গছতি সহর ৷৷ নাডি ब्बशाक्दरक्षणः महनः काञ्चिः काविष्ठः। यहनेः ययनकृतः॥।।। বিশ্ব নেরওমূলত্ত কাপ ক্রম্বাশৃত शित्य । शिष्ट्र सोवर्कत्नारभण महाः भूवनिवात्रगः ॥ 🕸 ॥ १७७ শानि यवाः कीतः मर्शिः शानः वि-रत्रहन । जाक्लानि ह मा जानि **ভেষজ॰ পিত্ত শূলিমা॰।।#।। मनी** রজত তামাণাণ ভাজনানি গুৰাণ চ।তোষেন পরিপূর্ণানি শলস্যো-পরি ধার্যেৎ।। 🗱।। বিরেচন পি-ত্তহর প্রশন্ত রসাশ্চ শন্তাঃ শ-শ লাবকানা । ক্লো সগুড়া গ্ৰুতস• युका॰ जकरयका इत्रीठकी॰। श्र-লিছাচ্ছলশাস্তার্থণ ধাত্রীচূর্ণণ সং ষাকিক । াঞ্চা শাল্যমণ জাঙ্গলণ মাণস মরিষ্ট কটুক রস। মধুনি জীৰ্গোধৃন কক শূলে প্ৰযোজ-ষেৎ ॥ অরিউণ ভেষজকাথসিদ্ধ• ममा ।। 🗱 ।। व्यवख्यम थुक्क । ११-

करकालः महामके । मूर्यारकना-बूना शोखः कक मूलः अना मरब ॥ । वामभूरम जियाकारी। क्रम्ब धर्मानमे । त्रदा स बस्दः गर्वः समा समिदिवर्षनः १६० । शिकासमूर्धमञ्जूकाः कि market their regularies and महिलार नर्गम्न नियात्रमः ।। क्रीका वाजिका ॥ बना माम देन-यर्छी कर्छ मछास्य विक् रेक्स देवः । अञ्चलित्वः मूर्यारकम्ण बिरुणाक् समूटजानतः ॥ **।**। मृ-षाः देवषः ७८४ त्रथः विवकः वि-श्रंटिषकः। हिन्दू रेमस्य गःयूकः अमाः भूगनियात्रभः।। वाङ द्रा-গান্তৰ্গতাম্বান চিকিৎসাবাং লি থিতে৷ নাম্নাচনামা রসোৎন্যক্ত नित्रहमः भूता विकः।। अया-**ও॰ তন্ ক্রন্থ। তু ছিন্থ। যর্মে বিশো**-ষ্যেৎ। স্থাল্যা॰ নিক্ষিপ্য তৎ স र्बः शिशादनन विशाशा ह।। हृह्याः निद्वमा दङ्गिक बानद्वय क्रम-লো জনঃ। ৰথা তত্ত্ৰ ভবেন্দ্ৰ শ किखुकारता मृत्छ। ज्यव ॥ जन নিৰাপবেচ্ছীত চূৰ্ণিত চূৰ্ণবেজু ত । মাষদ্ধমিত তাৰক্টীচূৰ্ণ ঞ মিশ্রিত ।। জলেন ভক্ষবেদ্ধি-

छाः भरागुनाम्दना नदः। च-गाधा मिन मिष्ट्रवा उपरागाउन नागाजितः वदाधकातः ॥ ।। व्यथ शतिकाम् वामा विकिৎमा। मकातः धार्मकः वर्षाभवनः म विकास का किया मांगामाना र्मा प्रकारक विकास मानी वा क् निकाम्बर्भमानाथ गण्युङ । नायात्रका अने पुना दिना काक्रम को केरा ।। कवाबः वाथ निवामा कर्द्रेज्वीद्वानः वहाः। यथा-विशि बस्मकी मान् शिक्ष्णु नार्षिन छा जनभा जित्रा ह छथा मस्रा देखरमदेनत्र ७८७ न व । मन्द्र वि-রেচন সদাঃ পক্তিশূল নিবার-বেৰ দ বিডক তখুল ব্যোষ জিবৃদ্ধন্তি সচিত্রক। সর্বাণ্যেতা-नि मःगृष् मृक्कपूर्वानि कात्ररय ॥ धर्फन त्यामकान् क्रवा थाता-मूरकन वातिका । जरबिक्तां य-জ॰ শূল• পরিগাম সমৃদ্ভব• ॥ বি-**ज्ञा**षि साम्रकः ॥ 🛊 ॥ नागत তিল গুডকদ্ধ প্রদা সংগিষ্য যঃ পুমান্ লিছা। উগ্রু পরিণতি-শুল নশ্যেত্তস্য ত্রিরাত্তেণ।। পী-ত॰ শযুকজ॰ ভস্ম জলেনোফেন তৎক্ষণাৎ। পক্তিজ নাশ্যত্যেব

गु ले

भूलः विक् तिवामूत्रान्।। लाह भया कना खशी हुनं ममधू मर्शि य। विलिश्न् विनिश्र्षां भूलः हि পরিণামজ । भागितिताइ॰ ॥ । । नातित्वन महाजान्ति वा-बर्गि गृण्यिक । म्याक्तिकि RE NA CHARACTER H. PA ध्राता अक्टर के भव रिश-রিণামজ । বাতিক তিপত্তিক কা-शि रिप्तयिक माधिशाक्रिक ।। नातिरक्लकातः ॥ 🐠 ॥ व्यथितः দ্রবস্য চিকিৎসা। অমন্তবাথ্যে শূলে জুন তাবৎ স্বাস্থ্য ৰশ্বতে। याव करूक शीलाम मन ने क র্দযেদ্দুবং ॥ জাতমাত্রে জরৎ-পিতে শূল মাশু বিমাশবেৎ। পিত্তাৰ্ত্ত• বমন• ক্লম্বা কন্ধাৰ্ত্তঞ বিরেচনং ৷৷ অন্নত্তবে চ তৎ কা-র্য্য॰ জরৎপিত্তে মদীরিত । জ-রৎপিত্তেপি তৎপধ্য প্রাক্ত ম मजर्द जू यथ ।। जामश्रकांगरय **एक गट्छमन्यवः भन**ा मा-বেওরী পলবণা সুষিমা তৈল পাচিতা ।। তাদৃশী সর্পিষা খা-দেদমজবনিপীডিতঃ। ধাত্রীক-लखर॰ हूर्न भष्महर्न अमन्त्रिख• ॥ यकी हूर्वन वा युक्के लिशा ९ तकी-

জেণ তদাদে। শ্যামাক তথুলৈঃ সিদ্ধ সিদ্ধ কোত্রব তণ্ডুলৈঃ।। থিষক ততুলৈঃ সিদ্ধ-পায়স- স-সিত হিতা। প্রিমন্থ কলু বিশে-বছা গৌডিক শোরণ কন্দ জ-न्मा अन्ति एक एषट । कना व सर्-भेकुन्-रा नकून् रा लाकमप्-ভান্দা গৈডিক স্ততেন সংস্কৃতি शैक्षात्र ।। क्षा क्षायणकृतश्र वा मंत्रामास्विक छथा। छथकाना मर्था भक्त् रकाजवरम्। नन छ-था। प्रधिकः प्रश्ना मःकृष्ठः ভক्तः। मरहित देखि लारक।। 🛊।। रगा शूम-ৰণ্ডক তত্ত্ৰ সৰ্পিষা গুড সম্যুত। मनिष् भी अपूरका मृतिष् कः থিত হিত ॥ অমজবো দুশ্চি-कि॰ त्मा पूर्वि एक त्या नश्भामः। তস্মাত্তস্য প্রশমনে পরণবত্ন স-মাচরেৎ।। অন্ধর্জবে জরৎপিত্তে বহ্নি মন্দো ভবেদ্যতঃ। তন্মাদ-ভাষপানাশি মাত্রাহীনানি কার-रेय ।। 🟶 ।। कलाय यव रगाधुमाः শ্যামাকাঃ কোরদূষকাঃ। রাজ-माराम्ह माराम्ह अल्याः कश्र-भानयः ॥ मधिनृश्वत्रमः कीतः मर्लि र्गवा॰ मगाहिषः। वाञ्चकः कात्रवली ह करके हिक्कनानि है।।

वर्शिया रिवर्ग येथ नागरतीरिका-मााः क्रिक्नाः। এতিयमामस्य भेडा वडा वृतिहिक्शिकारकः॥ मधिन्खरेमः पत्रा न्यः इत्हा त्रामा बना ७९ कीतः संविष्कः कीत्र मिछार्यः ॥ 📽 ॥ श्रेष्ठामलक পথ্যানা চূর্ণ প্রত্যেকশঃ পল া ত্রিপল লোহকিউসা তৎ সর্বণ यश् मर्शिया ॥ ममात्माष्ठा मम-सीयापक्रमाख॰ अमानुष्ठः। जा-দিমধ্যাবসানেষু ভোজনঙ্গা নি-ছস্তি তৎ।। অন্নদ্রবণ জরৎপিত্ত बञ्जिभित्तः मूनाक्रनः। পরিণাম म-**भूथक भृतः मः**वद्यमद्वाधिकः ॥ धजमधूत•॥ #।। बगायान• देनथु-ন• মদ্য• লৰণ কটু ৰু• ব্লস• ৷ বে-भरताथ एक दकाय विषय मृ-ववाम् जारकः ॥ इति मृवाम शः রিণানশূলানত্তব জরৎপিতাধি-কারঃ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ 🖝॥ ক্ষপি চ। অৰ্কপত্ৰ গৃহীয়া তু यनात्री जाशरयक्ट्रिनः। सिन्नी-ष्ण शृतरम् करने कर्नमृतः विम-भारि । का भारतक पृष्ठ की-দ্ৰ॰ লবণ॰ তা গুভাজৰে। ষৃষ্ঠ॰ शयः नयार्कः हमूःभलर्द्धः श-র॰॥ সাজনক ইত্যত্ত তাগুলক

रिक्ट वा नार्वः ।। को। हुन मात्र-लकरमाब भीज भूलहरू भन्न ें । रेकि गांक्रटफ ४४०। ४४०। ७२८ व्यानाः ॥ ॥ किशः । नामूज दैन क्षर कारता ब्राजि-क। नवन विष्ठ । कर्षे लाइ-রজঃ কিউ তিবৃৎ শূরণক সম ।। त्रि भागृज भरमा मन्त्रभा-ৰক পাচিত । এতচাগিবল **চূ**र्न शिरवन्रकन वार्तिना।। की-र्द जीर्द চ जुकी अशामि ষ্ত ভোজনং। নাভিশূল॰ মূত্র-भृतः खबा शीर्जवक रदा। नर्ब॰ मृलरुद्र॰ চূর্ণ॰ জঠরানল मीभन । পরিशाম সমুখদ্য मृ-লস্য চ হিত পর ।। ইতি शिक्टि ३२२ व्यापिः ॥ 🛊 ॥ छमा छमन्ममाखद यथा। জ-रनामत सहरू भीर गुनद्राग जगिन हे बामाजीर्ग बन्ने प्हर्मि ज्ञ म त्योर गम शराः। त्रकार्तृत दिमणीमा डेननालाख्वा ग-শাः।। ইতি শাতাতগীয় কর্ম-विभाकः ॥

শূলকঃ পু॰ দুৰ্বৃত্তযোটকঃ। ইতি হলাযুধঃ॥ অত্ত শূকল ইত্যপি পাঠো দৃশ্যতে। যথা। বিনীতস্ত गार्वारी मूर्वमीक्स न्यमः। देखि रमञ्जर ॥

भूगश्रद्धिः श्री समाप्ती। इंडि तामनिर्दर्भः ॥

শূলহাতন কী সভুর ইতি শন্চশ্রিক।।

भूलपः प्रः प्रमूग्निः। रेषि

तज्ञमाला॥ भूलपाछदक्षि॥

भूलपिष् प्रः रिष्णः। रेषि तप्र
माला॥

भूलधवा पूर नियः। ইতি भक्त-त्रजावली ॥

मृलधतः भू निवः। **रे**डि नक-त्रज्ञावली ॥

मृणध्ता जी मूर्गा देखि जन-तज्ञावनी।।

मृत्यशित्वी श्वी मूर्ग। यथा।
नठी नाधी जनकी जननी
जनको मूर्ग। जया
जामा जित्वज मूर्गातिनी।।
इंडि उद्यमात पृत्र जक्कामरखावः॥

मूनश्क् की पूर्ण। इंडि बिकांख-त्यवः॥ महास्मरत पृ॰॥

मृजनामन क्री मोरक्जनवर्गः। ३७ एस्ट्रक्टः॥

भूमभती जी भूनीष्ट्रभ । रेंकि

ब्राक्तिवंगेः॥

म्लभव्। भू॰ व्यवज्का। ইভি

भूगरेकी जी परामी। रेखि द्राज-निर्वकः॥

मृंगर्व १ रिष्:। रेषि विका-अरम्यः॥

শূলা জ্বী দুউবধার্থকীলকঃ ॥ বেশ্যা। ইভি বিশ্বঃ ॥

मृनाहरू जि लोशिमिनाक्या विकः शक्याःमः। कवाय देखि शात्रमाजाया। छदश्यायः। छितः २ मृनाः ७। इछाम्तः॥ यामिजातः ॥ देखि क्रियंतः॥ मृनिकः ६। इछि मक्तिमिका॥ प्रमाखनाः मृनाम्दम् क्रियाः। मृनिकः की मृनाहरूः। इछि म्यादिका।।

मृतिकः भू॰ भागकः। ইভি द्यनः চন্দ্রঃ।। শূলঘুক্তে জি।। শূলিকঃ भू॰ ভাঙীরবৃক্ষঃ। ইভি

मक्ति जी क्रिं। यथा। थिनि मृणिनी जी क्रिं। यथा। थिनिनी मृणिनी जाता गिनिनी हिंदिनी ज्या । मिथिनी होणिनी दीन जुम्की गतियापूरा।। देखि ति-

नीमाशका ॥

मला

শূলী পু॰ শিবঃ । ইত্যুদরঃ ।।
শশং । ইতি ভাকপ্রকাশঃ ।।
শূলান্ত্রধারকে শূলরোগবৃদ্ধে চ
ত্রি । বথা। ইউ বৈশিক্ষা শূলী
কটা বাংলা শ্লী তিখা প্রিলা
ভাগেন জাবতে তথ প্রাধারকঃ
। সো ২মদান প্রস্থাতি তথা
কত্রণ জপেমরঃ ।। ইতি শাতা
তপীয়কর্মবিপাকঃ ।।

मृनी खी ज्वरजमः। ज्यभगायः

1 मृनभनी २ जमाधा ७ धूम्मृनिका ६ जनाश्रमा ६ मधूनजा
७ निक्तिना १ महिनीश्रिमा ৮ ।
जम्मा छवाः। निक्तिन द्वरः। द्वरच्यमद्वरः। भिक्तिमा इद्यदः। द्वरच्यमदः। मृक्षत्क्विना दिवरः। इनि

শুলোৎখা স্ত্রী সোমরাজী।ইতি শব্দচন্দ্রিকা।

শুল্য তি শুলাক্ত । কবাব্ ইতি পারস্য ভাষা। ইত্যমরঃ।। ভৎপাকপ্রকারে। ফথা। কাল-থণাদি মাণসানি এথিতানি শ-লাক্ষা। মৃত সল্বণ দ্যা **मृ**गांन

निध्रा महान शिक्षा छन् শুল্য মিতি প্রোক্ত পাককর্ম-विकारिनः भिना खेनाः। म नाः 'नवा क्याक्ता' क्या श्रहकत सर्व अने अधिका न्याः कि निक्र विकास में अन्य रेडि निकारिक क्षेत्र क्षेत्र । का हरना के करवार श न्य अवस्थिति कविकासमा ।। भूषा है । इंडि मूर्गामानः ॥ শুৰা বি অন্তঃ ইত্যুগাদিকোৰঃ ो। जंबून । मक्र इंडि मिरी रेडि , ह छोवा। यथा। दङ्ख्य मया-युक्त भर्णेमृजामि निर्मिष्ठः। वा-भा प्रिति मूर्ण्यक गृहान शत्राय-श्रुति ॥ देखि कालिकाशूतान ॥ শুব্দঃ 🥍 কতকঃ।। অধ্যাত্মা। हेजुर्गापिरकामः ॥

ग्कालः • भू• ग्गालः । ইতি
नक्षिका ॥
न्गालः भू• भरुदिस्यः। स्याल्

সালঃ পু পতাব্দেবনালেবনি ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। শি-বা ২ ভূরিমায়ঃ ৩ গোমায়ুঃ ৪ মৃগধূর্ত্তকঃ ৫ বঞ্চকঃ ৬ ক্রোফুঃ ৭ কেরুঃ ৮ ফেরবঃ ৯ জযুকঃ ১০ ১ ইত্যমরঃ ॥ স্গালঃ ১১ জযু-কঃ ১২ মূত্রমন্তঃ ১৩ সরবঃ ১৪

বোররাসনঃ ১৫বন্ধা ১৬ কেরঃ ১৭ শ্বর্ত্তঃ ১৮। ইতি শব্দরত্না-वनी ॥ नाना वृकः ३२ (गामी २० करेथाएकः २३। इन्डिक्को-धतः॥ निवान्। ३३ द्रम्ब ६३० काबुनायकः ३६। हेकि वाक निर्यकः ॥ रेप्तछाद्यमः । केछि त्यमिनी ॥ कामूदमकः ॥ सिर्भूतः ॥ थनः। इंडि गात्रयहा जिधानः ॥ जीद्भः । इंजात्नकार्थरकारः ॥ 🛊 ॥ मृगानगयानीमा 🐯 ভাশুভসূচকদ্ব যথা ৷ অনুর্থ-**एक् गॅकि मक्सीनः महा मृ**-गानः थन् म्ख्याजः। मसा हि ৰামা গতি রস্য শস্তো বামো निनातन निनि यो बङ्गा ॥ হুবা হুবেতি প্রথমণ ততন্ত্ব টটে-তি দীর্ষঃ সুতরা॰ রবো यः। স্কা-জ্বযুকানাং স মতঃ প্রশস্ত স্ত-मनाक्रभः क्षिजः अमीखः ॥ শৃগালশব্দা ভিবনে নিশাষা মুচ্চাটনার্থ দিশি পশ্চিমাযা। প্রাচ্যাণ ভষাযোত্তরতঃ শিবাব ভবত্যবাচ্যা॰ ভষনা শনাষ।। ইতি বসম্ভরাজশাস্বনং ॥ শৃগালকণ্টকঃ পু॰ কুপবিশেষঃ। শেষালকাটা ইতি ভাষা। ইতি

भक्ठिका ॥ **भृगानरकानिः भू** क्रूजरकानि-त्कः। भियामन् ইতি ভাষা। , जन्मश्रीकः। कर्ककः २१ हेजि ब्रह्माना।। जलि ह। जन हा-की ५ शाभरमानी ८ तमन ७ न्यानित्रक्ष ७ ७९ । तमतीत्रामृत्य ্সু বন্ধলে ৰূকে চতু ইৰণ।। ইতি भक्तकावनी ॥ শুগালঘন্টী স্ত্ৰী কোকিলাকঃ ৷ ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ **मृगानकवृः** श्वी गापुत्रः॥ या के किन । इंडि यि मिनी ॥ শৃগালবিমা স্ত্রী পৃশ্বিপণী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ मृगानिका <u>जी</u> मृगानभन्नी ॥ बामा ९ म वायन । इं जि यि पि-নী।। ভূমিক্যাঙ্গ। ইতি জটা-ধরঃ ।। ক্জশ্গালঃ । থেঁক্সে-ষালী ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ । লোমালিকা ২ দীগুজিস্থা ৩ किथिः ८ एकामूथी ७ । रेषि ত্রিকাণ্ডশেষঃ ৷৷ मृगानी खी विखवः। शनायन মিতি যাবং। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ ॥ কোকিলাক্ষঃ ॥ বি-मात्री। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

मृशालका ह।।
मृश्रालः जि श्रू-शाः कर्गाणताः।
स्मार्हे हे जिल्ला ।। रखानीनाः लोर सर्गानरस्मानकतः।
जिल्ल हे जि माजूका हे जि ज जारा उपर्यापः। उन्मूकः २ निगणः ७। रेजामतः।। मृश्राला ८। रेजि जिल्लाः। मृश्राला ८। रेजि जिल्लाः। मृश्राला ८। रेजि जिल्लाः। विकल विणि रे-जानि जारा।। वस्ताः। रेजि रूमहन्तः।।

শৃথলকঃ পু॰ উফৃঃ।ইতিরাজনির্ঘণটঃ ।। পলামন নিষেধামপাদেরু দারুম্য পাশলক্ষিত করভঃ। ইত্যমরভরতো ।। শৃথলশ্চ ।।

শৃথলা ত্রি নিগড়ঃ ৷৷ পুংস্করী-বস্ত্রবন্ধঃ ৷ ইতি নেদিনী ৷৷ অ-নাৎ শৃথলশব্দে ডফ্ব্যুণ ৷৷ শৃথলিতঃ ত্রি শৃথলাযুক্তঃ ৷ নিগডিতঃ ৷ ইতি ধনঞ্জয়ঃ ৷৷

শৃ**ध**লী স্ত্রী কোকিলাকঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শৃঙ্গ ক্লী পর্বতোপরিভাগঃ।তৎ পর্য্যায়ঃ। কূট ২ কূটঃ ৩ শিখ-র ৪। ইত্যামরঃ।। দন্তঃ ৫ প্রা-গ্ভারঃ ৬। ইতি জটাধরঃ।।

দৈলাত্রণ । ইতি ত্রিকাণ্ডলেষঃ १। त्रानुः। ইতি नानार्थ व्यवतः॥ প্রভূষণ । চিহ্নণ। ক্রীডাজলযন্ত্রণ ।। বিষাণ ।। উৎকর্মঃ। ইতি নে-मिनी II **উर्जु**॰ II ठीक्क॰ II शहक॰ I रेंछि भक्तक्रावली ॥ गरियानि-मुझ्बिर्मिख्यामाविद्यायः। भिङ्गा इंडि ভाষा। यथा। किंदिना गाय মনো দংগুজাৎ প্রাতঃ সমুখায वरमा वयमान्। अत्वाधयन् শৃষ্ণ রবেণ চারুণা বিনির্গতো বৎ-সপুরঃসরে। হরিঃ ।। ইতি 🕮-ভাগবতে ১० ऋटिक्न ১২ অধ্যাयः ।। कारबाटजकः। यथा। भृष्टः हि **মিমাধোন্ডেদ শুদাগমন হেতুকঃ।** উত্তমপ্রক্ষতি প্রাযো রসঃ শুজার ইব্যতে ॥ ইতি সাহিত্যদর্পণঃ॥ #11 গোশুঙ্গ ভঙ্গ প্রাযশ্চিত্ত যথা । खरापवज्जेषृष्ठः यमबहनः। ज-স্থিতক গবা ক্রমা লাজুলচ্ছেদ্-न ७था। शाहित कर्गमुक्राना गामार्कंड यवान् शित्व ॥ जिन्न-রাঃ। শৃঙ্গভঙ্গেস্থিভঙ্গে চ চর্ম-নির্দ্মোচনেপি বা। দশরাত্র চরে-च छु॰ मुक्त मा यिन भी छंत्व ॥ ज्यादे वर्जे इतिनात्थाभाषाय-ধৃত সমর্ত্ত বচন । শৃঙ্গভঙ্গেন্থি-

শৃপযু

ভঙ্গে চ কটিভঙ্গে তথৈব চ।
বিদ জীবতি বণাসান্ প্রাষ্শিতত্ত ন বিদ্যতে।। অত্র বণাসোত্তরমরণে তদ্দোষ শমনাষ
প্রায়শিচত্ত নাস্তি তদভ্যন্তর
মরণে বংপ্রাষ্শিচত্ত ভবতি।
এবঞ্চ শৃক্ভক্ষাদি নিমিত্তক
পাপে পৃথক্ প্রায়শিচতে ন কর্ব্যাণ বংপ্রায়শিচতে ন কর্ব্যাণ বংপ্রায়শিচতে নেব শুরুণা প্রস্কাত্তদপগমসিদ্ধাং।
যণাসোত্তরম্ভ শৃক্ভক্ষাদি নিমিত্তক পূর্বোক্ত মাসার্দ্ধ বাবকপান প্রাজাপত্য বা কর্ত্ব্য ।
ইতি প্রায়শিচত্ততত্ত্ব ।।

भृतः पुः कृष्ठभीर्यकर्षः। ইতি মেদিনী ॥ মূনিভেদः । ইতি শব্দরত্বাবলী॥

भृषकः पुः जीतकत्कः। ইতি जिल्लामा

শৃঙ্গকন্দঃ পু॰ শৃঙ্গাটকঃ। ইতি রাজনির্যক্টঃ।।

मृज्ञकः की अधकः। ইতি तत्र-भावा।। भारत भूः। यथा। मृज्ञाकः-রোজাযতে। ইতি সংক্ষিপ্তমার-কারকপাদः।। শৃত্সজাতে ত্রি।। শৃত্সমূলঃ পুং শৃত্সাইকঃ। ইতি রাজনির্বকঃ।। भुभवा

मृत्रत्मारी पूरे हम्पकः। ইতি
ताक्रिनिर्यकः॥

भ्वता जी अजग्नी। ইতি শক্চন্দ্ৰিকা॥

नका खिका ॥ **गृक्षवान् पृ॰ अक्रवर्वीयनीया** शर्ब-তঃ। স তু দ্বীৰ্ষে ৮০০০ অশীতি-্ সহসুযোজনানি। প্রন্থে ২০০০ षिपश्युरयाजनानि । विखाद তথৈব। ৰথা। হিমবৎ হেমকূ-**हेक्ट** निवधकामा मक्किता । नी-লঃ শ্বেতশ্চ শৃঙ্গী চ উত্তরে বর্ষ-পৰ্বতাঃ।। লক্ষপ্ৰমানে ছৌ ম-ধ্যৌ দশহীনা স্তথা পরে। সহ-मुषिতरगाकामा जानविजातिन শ্চ তে ॥ ইতি বিষণুপুরাণে ২ · অংশে ২ অধ্যাধঃ ৷৷ লক্ষপ্রমা-ৰৌ **ৰৌ প্ৰাক্ পশ্চিমতো দৈ**-र्याण निषध नीत्नी। यहानि ज-बुषीण यखनाकात्रमा नकस्या-জন প্রমাণদ্বামধ্য রেপাষা মেব मूथाः लक श्रमांवदः। निषद নীলো তু তন্মধ্যরেখাতো দক্ষি-শত শ্চোত্তরতশ্চ সপ্তদশযো-जनमञ्जाखदि०वामीयमृहस्रो। তথাপি चूनमुक्ता नक्श्रेमाना-বিত্যুক্ত•। অপরে তু হেমকূটা-मत्या मभरीना मण मण न्यानाः

হেমকৃট শ্বেতৌ নবতিষোজন-महमु अभारनी । हिमबष्ड्रिमना বশীতি ষোজনপ্রমাণৌ । তদু-ক্ত॰ বারাহে। দীপস্য মঙলী-ভাবাৎ হ্রাস বৃদ্ধী প্রকীর্তিতে। ইতি তট্টীকাষা , শ্রীধরস্বামী ।। ভাগবতমতে দৈর্ঘ্যে ২০০০ দ-শসহসুযোজনানি প্রস্থে ২০০০ षिगर्मुरयाजनानि । यथा । উ-ত্তরোত্তরেণেলাবৃত• নীলঃ শ্বে छः मृत्रवान् देखि ब्राया त्रमाक हित्रभाय क्रक्रां वर्षां ना सर्गा-দাগিরষঃ প্রাগায়তা উভয়তঃ ক্ষারোদাবধবো দ্বিসহসু যোজ-ন পৃথব একৈকশঃ পূৰ্ৰস্মাৎ পূ-ৰিমাদুত্তরোত্তরো দশাংশাধি-কাণ্শেন দৈর্ঘ্য এব হুসন্তি। এব॰ দক্ষিণেনেলাবৃত নিষধো ছেম-কূটো হিমালয় ইভি প্রাগারতা येथा नीलालयः। व्ययूज्याक-নোৎসেধা হরিবর্ষ কিংপুরুষ ভারতানা যথাস খ্য ৷৷ ইতি শ্রীভাগবতে ৫ ক্ষন্ধে ১৬ অধ্যাবঃ শৃঙ্গবের॰ ক্লী আর্ড্ক॰। ইত্য-মরঃ।। শুগী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥ धरुष्ठा नभूतं । यथा। मा-क्रटा शष्ट्र भीषु॰ व मरवाशा॰

जत्रक श्राच । जानीहि जमनी किन्छ जता नृशिक्यिति ।। मृत्रद्वत्रभूतः गदा जहि भिजः श्रहः मम। जानकी नच्चतात्शक मागकः माः नित्यक्य ।। हेळा-शामनामाद्य नकाकात्थ >8 जशासः ॥

শৃঙ্গবেরক॰ क्ली आर्जक॰। ইতি एक्सिटसः॥

শৃঙ্গবেরাভমূলকঃ পু• এরকা। ইতি ভারপ্রকাশঃ।।

শৃঙ্গাট॰ ক্লী চতুষ্পথ । ইতি হেমচন্দ্ৰঃ ধরণী চ ।।

मृत्राधः प्र जलकक्कः। ইতি
ভূরিপ্রবোগ ত্রিকাণ্ডশেকে। ।।
सामूकक्कः। ইতি শক্রত্নাवली।। কামাখ্যাদেশস্থপর্বভঃ।
स्था। দীপবভ্যাঃ পূর্বভস্ত শৃদাটো নাম পর্বভঃ। তত্র ভর্গস্য
দেবস্য লিঙ্গ মেকং প্রতিষ্ঠিতং।।
সরিভূসিন্ধা ত্রিস্রোভা দক্ষিণোদিবিগামিনী। শৃঙ্গাটকস্য সভতং স্বনন্তী, প্রার্থি ভর্গস্য প্রিষ্কারিণী।। সলিলে যো নরঃ শ্লাতি ত্রিস্রোভাষাং নরোত্তমঃ।
শৃঙ্গাটকং সমারুত্থ পূজ্যেলিঙ্গ

শকরং । সদীপ্তকাৰ: শুকাছা প্রাপ্য কামানিহাতুলানা অন্তে ভর্গগৃহণ যাতি ততো মোক্ষ ম-বাপু যাৎ ।। ইতি কালিকাপুরা-ণে ৮২ অধ্যায়ঃ ।।

मृत्राहेक॰ की हजूनायन। देखा-मद्भः ।। कलकलकाकलिद्दल्यः। গানিফল ইতি শিঙ্গাড়া ইতি চ ভাষা। তৎপর্যাক্ষ ৷ জলসূচিঃ ২ সংখাটিকা ৩ বারিক্টকঃ ৪ । ইতি জটাধরঃ ॥ শৃঙ্গাটঃ ৫ বারিসজকঃ ৬। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ ৷৷ ক্ষীরশুক্তঃ 🕈 ৷ জলক-किकः छ। इठि नममाना ॥ শৃঙ্গাটকঃ ৯ শৃঙ্গক্ষ : ১০ জল-বল্লী ১১ জলাশযঃ ১২ শৃঙ্ককনঃ ১৩ শৃঙ্গমূলঃ ১৪ বিষাণী ১৫ । অস্য গুণাঃ ৷ শোণিত পিত্তহর ত্ব॰। লঘুত্ব॰। সরত্ব॰। কুবাতমত্ব॰ । वित्नवाद जिल्लाव वाक जुन लाक नानिष्धा क्रिक्षित्रकः। भिर्मार्छा एक विकास कनिर्वकः॥ जिन्हा ७ अप्रवः। विकेष्डियः। नीजनप्रका देखि व्राज्यक्षञः ॥ कः ॥ शामावित्य-ষঃ। সমূদা ইতি হিন্দী ভাষা। यथा। শুদ্ধাশাশ তনুত্বত্য কর্ত্তি।

শৃঙ্গাটকঃ পু॰ জলকণ্টকঃ। ইতি রাজবল্লভঃ।।

मृत्रातः क्री विद्यवा निम्मृतः ॥

हुर्गः। ইতি মেদিনী ॥ আর্ত্রকः।

ইতি শব্দচন্দ্রকা ॥ কালাগুরুঃ
। ইতি রাজনির্যন্টঃ ॥

শৃস্পারঃ পু॰ সুরজঃ ৷৷ নাটারসঃ ৷৷
গজভূষণ ৷ ইতি মেদিনী ৷৷
নাটারসস্য লক্ষণ যুথা ৷ পু॰সঃ
স্তিষা জিষাঃ পু॰সি সংযোগ
প্রতি যা স্পৃহা ৷ স শৃস্পার ইতি
খ্যাতো রতিকীডাদিকারণ ৷৷
ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ ৷৷ অপি
চা শৃস্থ হি মন্মথোডেদ স্তদাগ্যনহেতুকঃ ৷ উত্তমপ্রকৃতিপ্রা

्रवी त्रमः भूजात देखोर ।। भ-॥ व्याणाः वर्षिषाव विना का-बनुद्राभिनीः । व्यानद्रमः नाविः काः मा पंक्रियामान्छ नायकाः ।। চন্দ্র চন্দন রোলম্ব রুতাম্যু-'দ্বীপন' মত'। দ্রবিক্ষেপ কটা-কাদি রন্ভাবः প্রকীর্তিতঃ ॥ ত্যক্তোগ্রা মরণালস্য জ্গুনা ব্যভিচারিণঃ। স্থামীভাবে। র-किः गागवर्णा २व॰ विक्टेंपव-তঃ ৷৷ স চ ছিখা বিপ্রালম্ভঃ সং-ভোগশ্চ। ইতি সাহিত্যদর্শণঃ ॥ खना९ रेमथूनमय्य प्रखेवा॰ ॥ ः॥ भृत्रत्रानिज्दक नत्रत्वा যথা। শৃঙ্গারাহার নিজাণা य শ্চ.ভঙ্গণ করোতি চ। স ব্রজেৎ কালসূত্রঞ স্বামিনশ্চ বিশেষতঃ ।। ইতি ব্ৰহ্মবৈবৰ্তে প্ৰকৃতিখণ্ডে 8२ व्यशायः ॥

मृक्षात्रकः क्री मिन्द्रः। ইতি
वाक्षित्रकः॥ मृक्षिति वि।
मृक्ष्मकी । वाद्रकन् প্রত্যায়ন
विभावः। ইতি मिक्का छ को पूर्णी
॥ वार्षि क मृक्षात्रक ठळ पूर्ण।
मृक्षात्रज्ञकः॥
मृक्षात्रस्यानः पूर्ण कामामवः।

रेडिश्नाय्थ (स्माटको ॥ मृनाती प्रभावः ॥ भाजः मम्मातः ॥ मृत्यभः । रेडितः विमी ॥ मोषिकाः । रेडिताजः निर्वकेः ॥

मृत्रिः जी मंदग्रवित्मयः। मिक्री-मार्ह इंडि डावा। बंशा। मार्ग् त्रग्रा द्विया मुक्री मृत्रि तिङ्गिल क्रव्यादिः। मेर्गिक्षिया मार्ग्यत-मीडि र्ह मांस्वयः क्रिटिं। ইडि मक्रव्यादनी ।।

শৃঙ্গিক॰ ক্লী বিষয়ভদঃ । ইতি হলাবুধঃ ।।

শৃদ্ধিকা ত্রী 'প্রতিবিধা। ইতি শব্দরত্বাবদী।

শৃঙ্গিণঃ পু• মেষঃ ৷ ইতি হেম-চন্দ্রঃ ৷৷

শৃদিণী স্ত্রী গোঃ। ইত্যমরঃ।।
স্বেশ্সীবৃক্ষঃ।।
স্বেশ্সীবৃক্ষঃ। ইতি মেসিনী।।

म्झी श्रु॰ इंडी॥ वृक्षः॥ श्रवं छः॥
मृझ्यूरंक जि। ই जि स्मिनी॥
मृझी जी यथ मार्वित्मयः। मिझी
दे जि कियम दे जि ज जाया।
जथ शर्यायः। यमार्विध्या २।
दे जायाः। यमार्विध्या २।
दे जायाः। यमार्विध्या २।

रेिक किलाकः ॥ यमगूरती ६ ण-প্রিয়া ৫ শৃক্ষিঃ ৬। ইতি কেচি-দিকি ভরতঃ ॥ অস্যা গুণাঃ। चानूत्रमष्। विश्वष् । मृश्युष् । কফ কোপনত্ব। শোগ পাওু गब्र शिखना निष्य । ३ छि ता-क्षरञ्चा अञ्जितिया । श्रायहञी-चथः। रेठामदः ॥ कर्कां मृत्री ॥ क्षकः ॥ वृद्धः ॥ विषः । हेि ताकविर्यन्छेः ॥ **चलकाइन्दर्यन** । यथा। जी मृकी मखनवर्त । ইতি ভরতধৃত রত্নকোষঃ।। भृजीकमक॰ क्री जनकान्नमूदर्भ। ইতামরঃ ৷৷ অলক্ষারবা ক্রঞ্জলা-ति वंधमूर्व छ मृत्रीकनक मू-চাতে गृषी जलकातः क्रार्थः क नकः गृक्षीकनकः। प्रसङ्खात मू वर्गम गृंकीि ह नाम। जी मूकी मधनयार्व देखि त्रष्ट्राकायः ॥ मृत्री द्वाछा हम्बद्धि क्रांतीन् শৃঙ্গিঃ শ্রাগি রাজে নামীতি ইঃ নিপাতনাৎক্রিঃ পাচ্ছোণা-मीठि देशि र्दी। देखि खद्रकः॥ শ্নিঃ স্ত্রী অস্কুশঃ। ইত্যমরঃ।। শৃণাতি মশ্মস্থান শৃণিঃ ৷ শু স্থ गि हि॰मत्त कृ भू जा। ग्ला हा बारम नि तिजि बामिषा (कः ॥

নিঃ নিশাতনাদিহ হুস্বঃ। নামীতি ভ্ৰি ৰা। শ্ৰি বকুশবাচী
চ কাশশ্চ ত্ৰবাচকঃ। ইতি শ
ভেদাৎ তালব্যাদিঃ। সরতি মশ্বাহান গছতি সৃৰি দস্ত্যাদি
রিত্যনা। স্ত্রিয়া মিত্যত্র হুয়ো
রিতি পাঠঃ। ইতি মেদিনী।
আবক্ষ মগ্ন মব্যত্য শ্ৰিণ শিতাগ্র মিতি মাঘঃ। স্ত্রিয়া মিতি
প্রাথিকত্বাদুক্ত মিতি মুক্সটঃ।
ইতি ভরতঃ।

শৃত ে ত্রি পক্ষীরাজ্য প্রাণস। ইত্যমরঃ ।। শৃত মন্ন॰ বিরৰ্জ-यमिष्ठि पार्यः। ইष्टि छत्रछः ॥ ৰুথিত। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা রত্ন-মালা চ।।।।।। অথ কাথ বিধিঃ। পানীয় স্বোডশগুণ ক্ষুন্নে দ্রব্য পলে কিপেৎ। মৃৎপাত্তে কাথ-মেৎ গ্রাস্থ মন্টমাংশাবশেষিতং ॥ कर्वाटमी जू शनः वादः म-দ্যাৎ ষোডশিক জন। তজ वः भारतस्त्रीयान् रकासः मृष-গ্রি সাধিত ।৷ সৃতঃ ক্বাথঃ ক্বা-यक निर्वृहः म निश्रमाटि । 🗱 ।। काथशानमाजा मार्। माजा-ভুষা পলেন স্যাত্রিভি ব্লক্ষেম্ভ मध्यमा । जनना ह शनाटकन

নেহ কাথৌষধেন চ ৷৷ তন্ত্ৰান্ত-রে। কাপ অব্যপলে বারি ছি র-ষ্টগুণ নিষ্যতে। চতুর্ভাগাবশি-खेंड शब॰ शन ह्यू खेंब॰ ॥ मी-श्वानलः महाकाषः शायरयः घा-श्रुणि जल। जानावर्कः श्रीत-্ত্যজ্য প্ৰস্তম্ভ চিকিৎসকাঃ ॥ ক্ষাৰ্থ ত্যাগ মনিচ্ছস্ত স্তৃষ্টভা-गावरमधिकः। भावन्भार्यगाभान-শেন वृक्ष देवस्ताः शलवश् ।। य-ষ্টভাগাবশেষিত্স্য চতুর্ভাগা-বশিষ্টাপেক্ষয়া গুরুত্বাদীপ্তান-ल॰ महाकाय॰ शनवय॰ शायरयः স্বাধ্যমামি মল্পকাবং পলমাত্রং পাষ্যেৎ। মাত্রোক্তমা পলেন मािष्ठािष वहनाथ। कार्य ক্ষিপেৎ সিতা মণ্টশ শ্চতুর্থাফ্ট-ম বোডশৈঃ। বাত পিত্ত ক-্ফাতক্ষে বিপরীত মধু স্মৃত ।। कीत्रकः श्वश्चालुः कात्रः नवनक निनाष्ट्र । रिष्ट्र विकर्केरक्ष कार्य भारगामिङ किरमर ॥ कीत्रः घृष्ठः ७७ टिलाः मृताः हाना अव ज्या व कर हुनी-**पिक॰ कार्य निक्लिश** कर्य म-শ্মিত্ব ৷৷ তত্ত্বোপবিশ্য বিশ্রা-**खः अगन्नवम्यान्यः। ७ वशः**

হেম রক্তত মৃদ্ভাজন পরিস্থিত ॥ शिद्य अमहस्रापः शीषा পাত मसामूथ । विधायाहमा मनिन॰ कामृनाम्ग्रशरपाकरय ॥ ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ 🛊 ॥ অ-ন্যক। অব্যাদাপোখিতাতোযে বক্লিনা পরিতাপিতাৎ। নিঃশৃ-তো বো রসংপৃতঃ স শৃতঃ সমু-माज्ञा ३७ देकाक ॥ শৃষ্ধ ব ৯ ঙ উ পর্দে। ইতি কবি-कन्नक्रमः॥ र শ्दर्गाठि निम्द-সভি। ৯ অশ্বৎ। ও শর্বত। के मिकिया मृक्षा। भटना श्ला-ता भर्भ । मृध् अहमत है छि मुझानि अन्नत्यभनी शाज् तरेना - न मनारा । अहमन विजयः। ইতি গোবিশভটঃ। শর্জষতি বৃদ্ধ সংসিতশকৈ বালঃ। ইতি त्रमानाषः। ইতি দুর্গাদাসः॥ मृक्ष উ 🐠 क्लाप्त । ইতি কবি-कब्रख्यमः ॥ উ गर्किया मृक्षा । क नर्करिं नर्कर । क्रिनन मार्ज्ञावः । इठि पूर्गामामः ॥ मृश् भू वृक्षिः॥ श्वमः। ইতি विश्वः ॥ সৃধৃঃ পু॰ জৎসিতঃ।। অপান॰। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃতিঃ৷৷

খু গি হি॰সনে। ইতি কবিকল-ক্রমঃ।। গি শৃণাভি শীর্ণঃ শী-র্ণিঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শেখর ক্লী লবক । ইভি রাজ-নির্ঘন্টঃ ৷৷ শিগুন্ল ৷ ইভি শব্দ-চন্দ্রকা ৷৷

लिश्रदः श्रृः निश्चाविष्ठभानाः।
इंठामद्रः।। यथा। निश्चाविनाञ्छः
मानाया माशीष्ठः लिश्चद्राशि ह
। इंठि निक्तद्रप्रादनी ।। गीठमाः
क्रविदिन्यः। छल्लकनः यथा।
बामनाकत्रशामः माष्ट्र म हान्नः
छल्लक्ष् श्रद्धाः। इन्मदक ह
तरम वीद्रत गीवर्ड लिश्चद्रप्राक्षः।
बाप्रस्थद्रा यथा। वाष्ट्र र्छकः
छर्दम्यद्रा यथा। वाष्ट्र र्छकः
छर्दम्यद्रा यथा। वाष्ट्र र्छकः
छर्दम्यद्र म छर्दम्प्रस्थाः।
इंठि ठरेद्वव।।

(भथती खी वन्ता । इंडि भक् त्रजावनी।।

শেপঃ পু॰ শেফঃ। ই**ভি শব্দ** রত্নাবলী।।

শেপালः পু॰ শৈবালঃ। ইতি
শব্দরত্বাবলী।।

শেফঃ পু॰ শিশ্বঃ। ইতি শব্দ-র ্বাবলী।।

लिकः क्री लिक्षः। ইত্যমরः।।

শুক্রপাতে সতি শেতে পততি ইতি শেকঃ। শীঙধাতো নামী-তি কস্ প্রত্যবং। শেকস শে-ফসী শেক শেপো শেবশ্চেতি পঞ্চরপাণি ভবস্তীত্যাচার্যাঃ। ইতি ভরতঃ।

लिकानिः खी लिकानिका। इंडि नक्तत्रपारनी॥

শেকালিকা স্ত্রী পুষ্পবৃক্ষবিশেষঃ । मिडेनी देंछि ভाষা। তৎ-পর্য্যাযঃ। সুবহা ২ নির্গুঞ্জী ৩ নীলিকা ৪। ইত্যমরঃ ৷৷ চত্বারি শেফালিকামাত্রে। শিবলীতি-খ্যাত নীলপুস্পাযা শেকালি-কাষা মিতি কেচিৎ। শেফালি-कानि घष भाषानिकाभाख निर्श्वधानि षयः नीलश्रुष्ण त्म-ফালিকাষা মিতি কেচিৎ। ইতি তট্রীকাষাণ ভরতঃ ৷৷ শেফালী ় ৪ মলিকা ৫ রজনীহাসা ৩ নি-শিপুন্সিকা १। সা শুক্লা চেৎ শেতসুরসা ৮ ভৃতবেশী २ । रेि नमत्रज्ञावनी ॥ ख्रनानी > भीजमक्षत्री ,>> विक्रमा >২ বাতারিঃ ১৩ ভূতকেশী ১৪। অস্যা গুণাঃ। কটুম্বং। তিক্তম্বং। উक्षष् । क्ष्मष् । वाठ क्रं

अन्नमिनाञ अनवाजामितमाय-नानिष्कः। ইতি রাজনির্যন্টঃ।। শেকালী স্ত্রী শেকালিকা। ইতি **अक्त्रजावनी ॥ नीनिमञ्जूवादः** 1 ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। **ल**मूषी जी वृक्षिः। ইত্যमतः॥ শেল ঋ চাল গত্যোঃ। ইভি किरक्रमान्यः ॥ सः विनित्निन ा ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ শেলুঃ পু• বহুবারকবৃক্ষঃ। ইত্য-भद्भः ॥ শেবঃ পু॰ মেঢ়ুঃ॥ উন্নতঃ॥ অহিঃ । ইত্যুণাদিকোষঃ।। শেবধিঃ পু॰ নিষিঃ। ইত্যমরঃ॥ **ભ**वन॰ क्री रेगवान॰ । ইতি শব্দরত্নাবলী।। **শে**विनी जी नही। ইতিরাজ-निर्यकः॥ **ભ**वानः क्री रेगकानः। ইতি व्यक्तव्यावनी ॥ শেবালী স্ত্রী আকাশমাণসী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ শেষ ক্লী প্রসাদঃ ৷ ইতি মেদিনী (अवः प्रच महर्यनः। म जू वन-**८** इति । । विश्वः । । अनुस्ताः । म ह मर्भवाद्धः । ইতি मिनि ॥ ত্যা ধ্যান যথা। কণাসহসু-

সংফুক্তণ চতুৰ্বাহণ কিরীটিন 1 নবামুপল্লবাকার পিঙ্গলশাশ্র লোচন ৷৷ পীতাম্বরধর দেব শৃध চক্র গদাধর । করাত্রে দ-ক্ষিণে পদ্ম• সদা• তস্যাপ্যধঃ ক-রে ৷ দধান সর্বলোকেশ সর্বা-ভরণভূষিত ।। কীরান্ধি মধ্যে শ্ৰীমন্ত মনন্ত পূজ্বেততঃ। ইতি ভবিষ্যপুরাণ।।।।।।। গজঃ।। নাগঃ ।। স্বীক্ততেতরবস্তু। ইত্যজ্যপা-লঃ।। ভগবতো দ্বিতীয়া মূৰ্ত্তিঃ। যথা। একা ভগবতো মূর্ত্তি জ্ঞা-नक्षा निवायना । चामूरम्या-ভিধানা সা গুণাতীতা সুনিম্বলা ॥ দ্বিতীয়া কালস জ্ঞান্য। তাম-সী শেষসংজ্ঞিত। । নিহস্তি সক-লা॰ শ্চান্তে বৈক্বী পরমা তনুঃ॥ ইতি কৌর্ম্মে ৪৮ অধ্যায়ঃ।। 🟶 🛚 ।। শেষ শযন প্রকারো ষথা। অ-নম্ভ স্তত্ত্র গদ্বা তু যত্ত্র ক্ষীরোদ-সাগরঃ। তত্ত্র স্বয়ণ শ্রিষাযুক্তণ मूमूक्षरु॰ জनार्फन॰ ॥ তम्যा-পধান মকরোদনস্তো দক্ষিণাণ ফণা॰ । উত্তরা॰ পাদযো শচক্রে উপধান॰ মহাবলঃ॥ তালবৃন্ত॰ তদা চক্ৰে স শেষঃ পশ্চিমাণ ফ-ণা॰। স্বযন্ত বীজযামাস শেষৰূপী

कनार्कनः॥ मध्यः एकः नम्काति नियुषी क महावनः॥ धेमानयाथ क्ष्मा म मृद्ध ग्रक्त छः छः
मा ॥ गमाः भग्नकः मार्ककः छः
देशव विविधाष्यः। यानि हानप्रनि जम्माम्माद्ययम क्ष्मा मृद्धो
॥ धवः कृषा श्वकः कायः भयनीयः छमा हद्धः॥ ज्रू छ छव्य क्रमस्थाः भवाश्वत्र । छूछ छव्य क्रमस्थाः भवाश्वत्र । छूछ छव्य क्रमस्थाः भवाश्वत्र । छूछ छव्य क्रमस्थाः भवाश्वत्र । छ्व छव्य क्रमस्थाः भवाश्वत्र । छ्व छव्य क्रमस्थाः भवाश्वत्र । छ्व छव्य क्रमस्थाः भवाश्वत्र । एतः अक्रमिनदेम्यव ध्यार्थन निमाः हितः॥ मञ्जाध्यार्थन निमाः ।

भिषः प्रश्नी उपयुक्तित्व । इणि मिनी।। भिरम १ विनि स्वे भविष्येणां भिष्यः भिष्यः भूर-जानि। स्वनस्त्र जू भिषः भूर-निक्र वव निस्ते श्रद्यागाद। स्व-स्वामनाः भिषः। यथा। मध्य शिष्यो निधिवाहरको भूरनिको स्वास्त्र जू स्वित्वाहरको । इणि म-स्वानमः। इण्यम्बर्णिकायाः स्वत-स्वानमः। इण्यमद्विकायाः स्वत-स्वास्था। स्वामित्मयदक्वनित्य-स्वास्था। स्वाम्यः हाधित्मयः भव्यभ्यः स्वर्य ह। भूनः भूनः প্রবর্দ্ধন্তে তত্মাৎ শেষণ ন কা-রবেৎ ৷৷ ইতি গারুডে ১১৬ অধ্যায়ঃ ৷৷

लगर की उपकातिष्य। भारार्था। भारतात्म्य मुश्रकातिष्य क्षः
स्था। लगर मुश्रकातिष्य क्षः
नगम्गवाह वामितः। भारतार्थाः
लगरा छक्त मर्द्यस्थीि किः
मिनिः। ইতাধিকরণমালাষা
भारता চার্যাঃ। শেষস্যভাবঃ।
ইতি ব্যাকরণ।।

শেষরাত্রিঃ স্ত্রী রাত্রিশেষঃ।তৎ-পর্য্যায়ঃ। উচ্চদ্রঃ২ অপররাত্রঃ ৩।ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শেষা खी समिमीनगर्भनः। ইতি
यिनिग।

দৈশরিকঃ পু॰ অপামার্গঃ। ইত্য-মরঃ ॥

শৈশরেষঃ পু॰ অপামার্গঃ। ইতি ভরতধৃতরত্মকোষঃ॥

শৈত্য ক্লী শীতলত্ব ৷ যথা ৷
শৈত্য নাম গুণ স্তবৈব সহজঃ
স্বাভাবিকী স্বচ্ছতা কিং ক্লমঃ
শুচিতা ভবস্তি শুচমঃ স্পর্শেন
যস্যাপরে ৷ কিংবান্য কথযামি তে স্ততিপদ ত্ব জীবিনা
জীবন সংক্ষীচপথেন গান্ধ্সি

শৈলরা

१४३ क खुा॰ निरविक् क्रमः ॥ रें छि मञ्चन दमनः ॥ रेमथिना॰ क्री मिथिनक्। मिथि-ৰাদ্য ভাব ইত্যৰ্থে ষ্ণ্য প্ৰত্যবেন निष्मार ॥ শৈনেষঃ পু• সাত্যকিঃ। সূত্ প্রীক্লফুসারথিঃ। ইতি ত্রিকাও-(अवः ॥ टेनतीयकः श्रू नीनविकी। इंडि রত্নসালা।। শৈরেষকোপি পাঠঃ । मञ्जामामिक ॥ रेनन की रेनलम् ॥ जाका-শৈল। ইতি মেদিনী।। শিলা-জতু। ইতি ব্লাজনির্ঘণ্টঃ।। **শৈলঃ পু• পর্বতঃ। ই**ত্যমরঃ ॥ रेगनक॰ क्री रेगनक॰। ইতি नक्त्रप्रावनी ॥ टेगलगञ्च॰ क्री भावत्रवस्तरः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥ टेमनगर्ज्ञास्रा जी मिनावस्रा। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। टेणलङः क्री मूगिक्षित्रवादिरमयः। তৎপর্য্যায়ঃ। শীতশিব ২ শৈ-लायः ७ भिलामनः ८ भिलायः ७ मीठल॰ ७ रिमल॰ १ कालानु-गार्थाः ৮ रेगनकः २ कृषः ३० কালানুসারি ১১ অশাপুষ্প ১২

टेमलथा॰ ३७ मिलाशूका॰ ३८ गृर॰ ४৫। ইতি রত্নমালা।। चमाखनाः देनत्वयनत्न प्रयो-ব্যাঃ॥ পৰ্ৰতজাতে ত্ৰি॥ रेनवजा ं जी रेम श्ली। गर्ज-शिक्षनी । देखि ताक्रनिर्वकः ॥ मूर्गा। हिमटेनलक्ष्याः । यथा। ত্ৰৎ শ্ৰুত্বা ভগবদ্বাক্যণ বিশ্বিতা হিমশৈলজা। ইভি শিবরাত্রি-ব্ৰভক্ষা ৷৷ देशनभन्ना शृ॰ महारापतः। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। শৈলধরঃ পু• শ্রীক্লফঃ। ইতি थनक्षयः ॥ रेगनिर्यामः क्री रेगलयः। ইতি दक्रि ।। रेननभवः भू॰ विस्कृकः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ रेमनिखिंदः जी ऐकः। रेजि क्रिवितः ॥ टेनलताजः प्र हिमालयभर्वटः। ইতি বক্ষামাণশব্দ দর্শনাৎ।। टेंगनताजमूञा जी मूर्गा। यथा। অৰূপা পরভাবদাদহৰূপা ক্রি-যান্মিকা। জাতা শৈলেন্দ্রগেহে সা শৈলরাজসুতা ততঃ ৷৷ ইতি **मिवी पूर्वार्थ ४८ व्यक्षायः ॥**

रेमनरकना भू मिनारकना। ইতি বাজনির্ঘণ্টঃ॥ रेननवीकः भू जन्नाठकन्कः। ইতি রাজনির্মণ্টঃ।। रेनलिनिवितः क्वी मगूषः। इंडि ত্ৰিকাণ্ডশেৰঃ।। लेनमूज जी भार्वजी। यथा। মাতঃ শৈলসুভাসপত্নি বসুষা-শৃসারহারাবলি স্বর্গারোহণ-বৈজ্যন্তি ভবতীণ ভাগীরথীণ প্রার্থষে। ইতি বাল্মিকীষ্পঙ্গা-ফুক ।। জ্যোতিমতী। ইতি त्राजनिर्घकः॥ रेनवाथा॰ क्वी रेनवज । इंडि त्रव्रगाना ॥ শিখর । ইতি क्री শৈলাগ্ৰ ত্রিকাপ্তশেষঃ ॥ रेमलाक॰ की रेमलय । है जि রাজনির্ঘটঃ॥ रेनना हैः पूर त्तवनः ॥ जिल्हः ॥ শুক্লকাচঃ ।। কিরাতঃ । ইতি (यिनिनी ॥ रेमनािकः श्रु नमी। यथा। नि-মিত্তানীদৃশান্ দৃষ্ট্বা ভৃত ভব্য ভবে। বিভুঃ। শৈলাদি প্রাহ वहनः मित्राजः मित्रियंतः ॥ হর উবাচ। নন্দিন্ জ্যোদ্য ভা- 🎚

वी तो न कथकिए शक्तां करः। निमिखानी ह मृंगारख अजनानि গণেশ্বর ৷৷ তচ্ছজুবচন শ্রেম্বা শৈলাদিঃ প্রাহ শঙ্করণ। কঃ স-ন্দেহো মহাদেব যৎ ত্ব' জযসি শাত্রবান্ । ইতি বামনে ৬৫ व्यशायः॥ रेमनानी प्र• निहारे हेजायतः॥ लिकाः प्रमहिनकी। देखि क्रिंगिथद्रः ॥ लिली खी महक्डा यथा। अ-জ্ঞপ্তিঃ পরিভাষা শৈলী সঙ্কেত সমযকারাশ্চ । ইতি ত্রিকাও-শেষঃ ॥ আচার্য্যাণা মিষ॰ শৈ-লী ষৎ সামান্যেনাভিধাষ বি-শেষেণ বিবৃণোতি। ইতি মুগ্ধ-বোধটীকাষা॰ দুর্গাদাসঃ ॥ रेमम्बः पू॰ विचवृकः॥ निः। हेळामतः ॥ धृर्तः॥ ठालधातकः । ইতি শব্দরত্মাবলী।। रेमनृषिकः भू नहेवृखारवधी। यथा। वृद्यास्वी निवास म जू रेमलृषिकः मृठः। ইতি उमा পুরাণোক্ত । ইতি প্রাযশ্চিত-विदिकः ॥

শৈলুষিকী স্ত্ৰী শৈলুষিকজাতি-

ন্ত্ৰী। তদামন প্ৰায়ন্দিত্ত যথা।

সমর্ভঃ। নটা॰ শৈল্ বিকী॰ টেব রজকী॰ বেণুজীবিনী॰। গদ্বা চা স্রামণ সর্যাৎ তথা চর্ম্মোপ-জীবিনী॰। কামতস্ত মদাগচ্ছে-চ্চরেচ্চান্দ্রামণদ্ব । ততশ্চা-জ্ঞানত শ্চান্দ্রামণ । চাম্রামণে ধেষ্টক॰ । ইতি প্রাযশ্চিত্ত-তত্ত্ব॰।।

देशलाखः शृ॰ हिमालगः। यथा।

प्रमुख एउ जला प्रती मीसका
मा॰ व्यवस्थि। मि॰इरम्याशित

रेशलाख्यम् एक महि काक्षरम्।
हेजि प्रतीमाहास्याः।
रेशलाख्यसः शृ॰ जूर्कवृकः। हेजि

ताक्रमिर्गेषः।

লৈলেয় ক্লী শৈলজাখ্যগন্ধ
দ্রব্য শৈলেয়ক ইতি রশ্চ
ইতি ছরিলা ইতি চ খ্যাত ।
তৎপর্য্যায়া যথা । শৈলেয় শৈলজ বৃদ্ধ শিলাপুলা শিলোড্র । স্থবির পলিত জীর্ণ তথা কালানুসার্য্যক ।। শিলোখ্য শিলাদক শৈলাজ গানিপুলাক । শিলাপ্রস্ন স্ভগ শৈলক যোডশাহ্র্য ।।
অস্যগুণাঃ । শৈলেয় শিলির ভিক্ত সুগুদ্ধি ক্য পিত্তজিৎ।

माइ ज्या वित भाम जनमाय विनामनः ॥ इंजि त्राक्षनिर्यन्धः ॥ अभि ह। रेगरमयत्र मिनाभू-न्या वृक्षः कानानुमार्याकः। रेग-रम्यः भीजनः समाः क्य भिज-रमः भीजनः समाः क्य भिज-रमः नयू ॥ क्षृ स्रश्रेभाती मार विषश्मामत्रक्षश्यः। इंजि जात-श्रकामः ॥ ॥ जानभर्गे ॥ रेमस्वः। इंजि मिनी ॥ रेमस्वः जि रेगनमञ्जः। इंजि रम्पत्रश्चावनी ॥

শৈলেষঃ পু॰ সিংহঃ।। ভুনরঃ।
ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শৈলেষী স্ত্ৰী পাৰ্বতী। ইতি ব্ৰিকাণ্ডশেষঃ।

শৈলোন্ডবা স্ত্রী কুদ্রপাষাণভেদী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥

শৈল্য॰ ত্রি শিলাসম্বন্ধি। শিলা-যা ইদ॰ ইত্যর্থে ফ্য প্রত্যযেন নিশামণা।

শৈব॰ ক্লী শৈবালঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। শিবপুরাণণ। যথা।
অফীদশপুরাণানি পুরাণজ্ঞাঃ
প্রচক্ষতে। ব্রাহ্মণ পাদ্মণ বৈষ্ণবঞ্চ শৈবণ ভাগবতণ তথা।। ইতি
মলমাসতত্ত্বে বিষ্ণুপুরাণণ।। শি-

वमदक्षिनि जि॥

रेनवः भू॰ वमूकः॥ ध्रुख्दः। ইতি রাজনির্ধন্টঃ গ আচার-वित्मयः। यथा। व्यक्तीवत्यांगः সংযুক্তো যজেদেঘী বিধানতঃ यावक्यानः नमाधिक जावब्दैनः বঃ প্রচক্ষতে ॥ ইত্যাচারভেদ-তন্ত্রণ ॥**ৠ। শিবোপাসকঃ। তৎ**-পর্য্যাযঃ। ঔর্দ্ধুপ্রোতসিকঃ ২। ইভি ত্রিকাওশেষঃ।। এতস্তেদা যথা। তত শ্চকার ভগবান্ চা-তুর্বর্গ্য হ্রাষ্ঠনে। শাস্ত্রাণি চৈ-या॰ यूथानि नात्माञ्जितिनि তানি চ ॥ আদ্যুণ শৈবণ শরি-খ্যাত মন্যৎ পাশুপত মুনে। তৃতীয় কালবদন চতুর্থঞ্চ ক পালিন ৷৷ দৈব আসীৎ স্বয় শক্তি ৰ্ৰশিষ্ঠস্য প্ৰিষঃ সূতঃ। তন্য শিষ্যো বভূবাথ গোপা-যন ইতি শ্ৰুতঃ।। মহাপাশুপত स्रामीखातकाक ख्राभावनः । ত্ন্য শিষ্যোপ্যভূজাজা ঋষভঃ সোমকেশ্বরঃ।। কালাস্যো ভ-গবানাসীদাপস্তম্ব স্তপোধনঃ। তস্য শিষ্যো বকো বৈশ্যো না-মা ক্রাথেশ্বরো মুনে ॥ বহাত্র-তী চ ধনদ স্তদ্য শিষ্যশ্চ ৰীৰ্য্য-

বান্। সন্ধোদর ইতি খ্যাতো জাত্যা শূদ্ৰো মহাতপাঃ ৷৷ এব॰ স ভগবান্ বন্ষা পূজনাষ শি-বস্য চ ৷ ক্রমা তু চাতুরাশ্রম্য স্বমেব ভবন• গতঃ॥ ইতি ৰাম-ति ७ व्यक्षायः॥ 🛊 ॥ छम् अ-ৰূপণ যথা। আযান্তণ শৈব মা-লোক্যাহ। শ্রীমানসাবেতি জ-**টाल**भोल व्यायुष्त्रशालिष्ठ य-ধ্যভাগঃ। বিভৃতি সংভূষিত ভা-স্থদকো ৰুদ্ৰাক্ষমালা কলিভো-र्कुरमश्ः ॥ ইতি বিষয়োদতর-ঙ্গিণ্যা তরঙ্গঃ।। देगवन की अध्यक्षिशा देगवा-লে পু•। ইতি মেদিনী ৷৷ रेगविनी खी नही। ইতামরः॥ रेगवान क्री जनक्षप्रवादिरमधः । শেখালা ইতি ভাষা। তৎ-পर्यायः। जननीनी २ रेगवनः ৩ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ শেপাল ৪ শেবলং ৫ শীবলং ৬ শেপালঃ १ जनभौनिका ৮। ইতি पाठ-म्भिजिः॥ जनमीनः २। ইতি মুন্সটাদষঃ ইতি ভরতঃ ॥ সৈ-বাল ১০ শেবাল ১১ বারিচা-মর॰ ১২ শৈবলং ১৩ সলিলঙ্গ-

ন্তল॰ ১৪ হটপণী ১৫ অযুতাল•

কঃ ১৭ জলকেশঃ ১৮ কাবারণ ३२। देखि हातावनी ॥ खनकः ्र•। व्यमा श्वनाः। भीकनवः। - विश्वष् । সম্ভাপ ত্রণনাশিত্বক। े देखि द्राष्ट्रनिर्यण्डः ॥

देणवाः पूर श्रीक्रकमा स्वाप्टिकः वित्मबः। यथा। जूत्रभाः त्मवा সুত্রীব মেষপুষ্প বলাগহকাঃ। ইভি ত্রিকাণ্ডলেবঃ ৷৷ পাণ্ডব-रमनाभि विद्यानयः। यथा। शृके-কেত্ শেচকিতানঃ কাশিরাজ-भः वीर्यावान्। श्रूक**कि** श्रास्ति ় ভোজশ্চ শৈব্যশ্চ নরপুঙ্গবঃ।। हेि जगवकाीजायाः ३ वद्यायः ॥ শিবসম্বন্ধিনি তি।।

টেশশব॰ ক্লী শিশোর্ভাবঃ।বাল্য॰ । ইত্যমরঃ ॥ यथा । टेममटव **২ভ্যন্তবিদ্যানা** ধৌবনে বিষ-रेविवा । वार्क्त मूनिवृछी-ना॰ सारगनात्छ उनुष्ठाङा॰ ॥ ইতি রঘুব শে ১ সর্গঃ।।

শৈশিরঃ : পুং শ্যামচটকঃ। ইতি त्राজनिर्यकः॥ निनित्रमद्यक्तिनि ত্রি। যথা শ্রুতিঃ। তপ স্তপস্যো দৈশিরাবৃত্য়। ইতি তিখ্যাদি-তম্ব- 11

3७१ देखि मञ्जतक्रावली ११ जात- | टेमट्याशिका खी मिया-ষ্যাপনা। ইতি সিদ্ধান্তকৌ সুদী পু॰ প্রাথমকল্পিকঃ 1 टेनकः ইত্যমরঃ।। ছে প্রথমারক বে-षाश्चायत्न। भिक्कन॰ भिका। त्म সক্তাৎ সরো রিতি অঃ। শিক্ষা क्षांश्रामिता छ । जार्मिता वि এছোপি শিক্ষা তামধীয়তে শৈ-का प्रस्कामिछि स्वः প্রথমণ শি-ক্ষণীয়ণ কল্প শাস্ত্রণ অধীয়তে প্রাথমকল্পিকাঃ। ইতি ভরতঃ।। শৈক্ষিকঃ ত্রি শিক্ষাশাস্ত্রবৈতা। শিক্ষাণ বেত্তি অধীতে বা ইত্য-র্থে ফ্রিক প্রভ্যযেন নিষ্পন্নঃ ।। শো য নিশানে। ইতি কবিকল্প-জ্ঞ ।। নিশান মিহাল্পীকরণ । ষ শ্যতি শত্রু শূরঃ। ইতি দুর্গা-मानः ॥

> শোকঃ পু॰ চিত্তবিকলতা। ই-ষ্টবিষোগানুচিন্তন । ইতি না-গোজীভটঃ॥ वस्रामिविदयाग-জনিতা মনঃপীডা। ইতি ভাব-अकामः ॥ जद्भर्यग्रायः। मनुः ২ শুক্ ৩। ইত্যমরঃ ॥ শুচা ৪ निःमभः ৫। ইতি শব্দরত্নাবলী ।। শোচন॰ ৬ খেদঃ १। ইতি হেষচন্দ্রঃ ।। 🟶 ।। তমিবারণহেতু

র্যথা। ভরত পতিত দীন শোচন্ত সুভূশ তদা। শোচ-गान विशिष्ठ वात्रसमान स्ट्-ত্তিঃ ৷৷ শোচমানাম্ভ সম্বেহা বান্ধবাঃ সুদদ স্তথা। পাত্ৰস্তি গভ॰ স্বৰ্গাদশ্ৰপাতেন রাষৰা৷ ज्तिमुद्धा गण्डः चर्गः श्रूर्वानः গভিতঃ পুনঃ। শোচিতো বন্ধু-वरेगंन्ह मृजस्त्रहः भन्निज्ञाकः।। ইতি বহ্নিপুরাণ:।।।।। অসি চ। **थथ (नाकाश्रामनः। वाख-**বন্ধ্যঃ। ক্তোদকান্ সমুক্তীর্ণান্ মৃদুশাদ্বল সংস্থিতান্। স্নাতান-পনুদেষ ভানিভিহাসৈঃ পুরা-**७**देनः ॥ यानूरकः करनीस्टर् निः नादत नाद्रमार्गन । सः क-রোতি স সংসূতো জলবুৰুদ স মিতে।। পঞ্ধা সম্ভূতঃ কাৰো যদি পঞ্চ মাগতঃ। কর্মভিঃ य भरीद्यारेष खब का भरिदा-वना ॥ शब्दी वमूमञी नाम मूम-ধি দৈবভানি চ। কেনপ্রখ্যঃ কথ নাশ মত্যলোকো ন ষা-माि ॥ क्षियाव्यं वास्रदेव मूं क॰ প্রেতো ভুঙ্কে যতো ২বশঃ। অতে। ন রোদিতব্য হি ক্রিষা কাৰ্য্যা বিধানতঃ ।। ইতি শুদ্ধি- | শোচনা স্ত্ৰী শোকোৎপাদনা ।

७वः॥ ॥ जनाकः। श्रीक्राया-নুবাচ। অশোচ্যানন্বশোচ স্তু প্রজ্ঞাবাদা॰শ্চ ভাষমে। গ-তাসৃনগতাসু শ্চ নানুশোচন্তি পখিতা: া৷ অব্যক্তোষ মচি-জ্যোষ মবিকার্য্যোষ মুচ্ছত 🔢 **ङ्यारम्यः विमिरेषमः नान्** শোচিতু মর্হসি।। অথ টেন-নিভাজাত নিভাশ বা মন্যাসে মৃত । তথাপি দ মহাবাহো-নৈন শোচিতু মর্হসি।। জাত-मा हि अत्व। मृजू अर्व जम बृञ्जा ह। जन्मानगतिशाद्यादर्थ ন জ শোচিতু মহসি ৷৷ দেহী निछा यन्दर्गाय । एटर गर्बमा ভারত। তক্ষাৎ সর্বাণি ভূতানি न द॰ শোচिতু मर्रात्र ॥ इंडि প্রীভগবদ্গীতাষা ২ অধ্যাব: ॥ শোকনাশঃ পু॰ অশোকবুকঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ শোকহারী স্ত্রী বনবর্বরিকা ৷ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। **लाकातिः प्र कम बक्कः। ३**छि শব্দচন্দ্ৰিকা ৷৷ শোচন ক্লী শোকঃ। ইভি হেম-ठखः ॥

্ৰোচিণিডন্তাৎ ডন প্ৰত্যবান্তা-দাৎ প্রত্যেষ নিষ্পদা। ইতি সং-किश्रमात्रवाकत्रवः॥ শোচিঃ ক্লী প্রভা। ইত্যমরং ।। শোচিকেশঃ পু॰ অগিঃ।। চিত্র-कवृक्तः। ইত্যমরः॥ শোচ্যক: ত্রি অবরঃ। কুজঃ। ্ইতি শব্দমালা॥ **लागियाः** क्ली वीयाः। ইতি मस-त्रकावनी ॥ শোঠঃ ত্রি মূর্খঃ।। অলসঃ। ইতি 'रमिनी ॥ धृर्जः ॥ नीहः ॥ भा-পরতঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ ल्गान स गरको ॥ वर्त्। देखि কবিকরজনঃ ৷৷ বর্ণশেচহ রক্তী-ভাবঃ৷ শোণতি সূর্য্যঃ সন্ধ্যায়া৽ ा ইতি দুর্গাদাসঃ ।। त्मान की निम्द्रशा क्षित्र 1 ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ শোণঃ পু॰ রক্তোৎপলতুল্যবর্ণঃ १ छ ९ भर्यायः । काकनमञ्ज्विः २। ইত্যমরঃ॥ রক্তোৎপলনি-ভঃ ৩। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ রক্তোৎপলাভঃ ৪। ইতি জটা-थतः १। नर्मवित्ययः । তৎপর্যা-যঃ। ছিরণ্যবাহঃ ২। ইত্যমরঃ ॥ বেশাণরত্ন স্ক্রী পদ্মরাগমণিঃ । হিরণ্যবাহঃ ৩। ইত্তি ভরতঃ ॥

স তু অমরকতক দেশাৎ পাট-লিপুত্রে গঙ্গাযাণ মিলিতঃ। ত-क्किल्थनाः। क्रिक्षः। मङार्थ-শোষাপহত্ব। পথ্যত্ব। বহ্লিক-त्रवः। यत कीगात्रवृक्तिश्रमप्रकः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। 🟶 ।। অগ্নিঃ া। শ্যোনাকঃ।। লোহিতাশ্বঃ।। কোকনদছাযে ত্রি। ইতি মে-मिनी ॥ সমুজবিশেষः । ইতি ধরণিঃ।। রক্তেক্ঃ।। শ্যোণাক-थरजमः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শোণকঃ পু• শোনাকবৃক্ষঃ ৷ रेजामतः ॥ শোণঝিন্টিকা স্ত্রী রক্তসৈরেয়ঃ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। त्नाविकी जी अक्रवकः ॥ कन्छ-किनी। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শোণপত্রঃ পু• রক্তপুনর্ণবা। ইতি व्राजनिर्घकः॥ শোণপদ্মক জী রক্তকমল । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শোণপুশকঃ পু কোবিদারঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। लागपूष्णी ही जिन्मृतपूष्णी। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ ইত্যমরঃ ॥

শোণা জ্রী শোণবর্ণযুক্তা। ইতি | জটাধরঃ ।।

শোণাকঃ পু॰ বৃক্ষবিশেষঃ।শো
গাইতি খ্যাতঃ। তৎপর্যায়ঃ।
শোনাকঃ ২ শুক্নাসঃ ৩ শ্বক্যাঃ ৪ দীর্ঘদ্ভঃ ৫ কট্মটঃ ৬
অরলঃ ৭ স্বর্ণবন্ধকঃ ৮ মান্তশাত্রবঃ ৯।ইতি শব্দনালা।। মঞুকপর্নঃ ১০ প্রত্যারঃ ১২
কট্মঃ ১৩ টুন্ট্কঃ ১৪ শোনকঃ
১৫ অরলঃ ১৬। ইত্যমরঃ।।
স্যোনাকঃ ১৭ অরটুঃ ১৮।ইতি
তট্রীকা।।

শোণিত ক্লী রক্তণ ইত্যমরঃ।।
ত্যোৎপত্তি গর্ভস্বস্য পঞ্চমেমাসি ভবতি। ইতি সুখবোধঃ।।
কল্পুমণ। ইতি রাজনির্বকঃ।।

শোণিতচন্দন ক্লী রক্তচন্দন । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ !!

শোণিতপুর ফ্লী বাণপুর । ইভি ত্রিকাওশেষঃ।।

শোণিতাহ্বৰ ক্লী সন্ধুন ইতি রত্ননালা।।

শোণিতোৎপল ক্লী রক্তোৎ-পল । ইভিকেচিৎ ॥

শোণী স্ত্রী রক্তোৎপলত্ল্যবর্ণা-স্ত্রী।ইতিব্যাকরণ জটাধরশ্চ॥ শোণোপলঃ পু॰ মাণিক্য॰। ইতি
• রাজনির্যক্টঃ।।

শোণঃ পু রোগবিশেষঃ ৷ তৎ-পৰ্যাৰঃ। শোকঃ ২ শ্বয়পুঃ ৩1 ইত্যমরঃ।। শোথকঃ ৪। ইতি नक्त्रज्ञावनी ॥ जय त्नाथाधि-কার:। তত্র শোপস্য বিপ্রকৃষ্ট• निमान गार्। एका। यथ ज्ङ ক্লণাবলানা কারায় তীকোক গুৰূপদেবা। দধ্যাম মৃচ্ছাক বি-রোধিপিষ্ট গরোপসৃষ্ঠান্ন নিষে-বনক।। অৰ্শাস্য চেচ্চা ৰপুষো-শুশুদ্ধি মৰ্মোপদাতে। বিষমা-প্রসৃতিঃ। মিথ্যোপচারঃ প্রতি-কৰ্মণাঞ্চ নিজসা হেতুঃ স্বয়পোঃ श्रीमर्फेः॥ श्रिक्ष र्वमन विद्रका-नि। वागवाः शाधुदताशानवः। অভক্ত• অভোজন•। আমঃ অপকে। ভুক্তস্য রসঃ। পিষ্টগ-রোপসৃষ্টান্ন পিন্টো যো গরঃ সংযোগজ বিষণ তেন সংসৃষ্ট-मनः। वश्रवा श्रञ्जिः लाध-नार्शा वश्रा श्राधनः। य-ৰ্মোপৰাতঃ দোষক্ৰত এব জ্ঞে-ষঃ। বাছহেতুরুতন্ত মর্মো-পঘাতঃ আগন্তজ্ঞশোপহেতু ব্লে-ৰ। বিষয়া প্ৰসূতিঃ আসগৰ্ড

পতনাদিকা। প্রতিকর্মণাণ ব্য नामिना शक्कर्यानाः । मिर्यान-शक्तातः अगगाक्कर्रा । भग-থোঃ শোথস্য। নিজ্স্য আত্মীय-ना। সনিক্রকীয় হেতে। বাভাদেঃ । एकुः बत्काक मधुद्रापि ॥ 🛊 ॥ मिन्नक निमान गार्। मादेवः পৃথক্দবৈঃ সর্বৈ রভিদাতাদিশা-দপি। সর্বো হেতুবিশেষৈস্ত ৰূপ-ভেদো নবাত্মকঃ।।।।। সংপ্রাপ্তি-পূৰ্বক সামান্য লক্ষণ মাহ। র-क्रिशिख ककान् वायू मू रखे। मूखे।-ন্ বহিঃ শিরাঃ। নীদা রুদ্ধগতি-देखिर्द् सर्वा १ वर्षमा मन्यवः॥ উৎসেধ্য সংহত্ত শোপ্য ত সাহ निष्ठमामञः। मरगोत्रवः मामन-ৰহিত্য সোৎসেধ মুয়াথ শি ব্লাততত্ব । সলোমহর্ষণ বিবর্ণতা **চ সামান্য लिङ्गः श्वर्थाः अपि-**🐠 ।। উৎসেধঃ উন্নতত্ত্ব• কি• বি-শিষ্ট মুৎবেধ অতঃ পূৰ্বোক্তা-মিচমাৎ রক্তপিত্ত কফ বাতানাণ ममूलाकार। मण्डल घन । जमूर-সেধ পোথ মাহ রিত্যব্য:।।।।। তদ্য শোপন্য কি ন্যাদিত্যাকা-क्कारा गार्। अनवश्रिज्यः गाः मनिया शिकिः मानिवार्थः।

िकिएमा वाजित्त्रत्कवाणि निवृ-**खः। ठकानकञ्चित्रः मरगोत्रवः** স্যাৎ। গৌরব মপ্যনবস্থিত স্যাৎ। অথ চ সোৎসেধ স্যাৎ। উন্নতত্ত্ব মপ্তানবস্থিত স্যাদিত্য-र्थः॥ ।। বাভিক শোখ মাহ। চর স্তন্ স্তৃক্পরুবো ২রুণো ২সি-ভঃ প্রসুপ্তি হর্ষার্তিযুতো নিমিত্ত-তঃ । প্রশামাতি প্রোন্নত মেতি পীডিতে৷ দিবা বলী স্যাৎ শ্বৰণুঃ ममोत्रवार ॥ हतः मकाती। अमृ-প্তিঃ স্পূৰ্ণাজ্ঞতা। হৰ্ষো ২ত্ৰ ঝিনি বিনীরোমাঞেবা ৷ অর্তি: গীডা । এতদ্যুতঃ। দিবাবলী বিক্কৃতি বি-ষম সমবাধারকাৎ। অতএবো-ক্তে চরকেণ। স্নেহোম মর্দনা-লৈ ধঃ প্রশাম্যেৎ স চ বাতিকঃ । ষ্টাপ্যরুপবর্ণঃ স্যাৎ শোথো নক্ত• প্রশাম্যতি ॥ 🛊 ॥ পৈত্তিক मार्। मृद्धः সগদ্ধো ২সিত পীত রাগবান্ ভুম স্বর স্বেদ তৃষা মদা-ষিতঃ। ৰ উব্যতে স্পৰ্শৰুগক্ষি রাগরুৎ স পিত্তশোগে ভূশ-मार शाकवान्।। उंगाट गन्न-পাতে। ভূশ দাহ পাকবান ভূশ-मारहा यः भाक खम्बुकः ॥ 🛊 ॥ লৈমিক মাহ। শুক্রঃ স্থিরঃ পাণ্ডু

त्राताहकाषिङः अस्त्रकं मिजा यः मि दक्षिमानाहु । म क्रक् जम थनया निशीष्ठित्य न कामरक জাত্রিবলী ককাত্মকঃ।।।।। বন্দু क गार। निमानाक्रिक मन्मर्गाद टब्बरः त्नारथा विकासकाः ॥ **॥**।। गाविभाषिक गार । गर्वाकुकि সনিপাতাচ্ছোপো ব্যানিপ্রলক্ষ-**ৰঃ। ব্যামিশ্রবক্ষণ ইত্যুক্তে স** রিতি উক্তবাতজাদি লোপসকললকণ নিয়মার্থ ।। षाजियाज्य गार्। जियाज ন শস্তাদি ছেদ ভেদ কজাদি जिः। शियानिरमामस्यानिरम छ-ब्राङ कशिकक्ट**कः।। इटेमः भृ**-देवक मन्यमंदि श्रवकः माकि मर्गवात्। ज्लाका लाह्जि-**जा मध्यायमः शिखनकनः ॥ (इ** দঃ থজাদিনা ভেদঃ পাষাণাদি ना कुछ भन्नामिना नाषीबनामि চ। আদিশব্দেন লগুড় প্রহারা-पि गृ**ष्ट्रा अ**लाञ्चे द्रोता **ক**পিকচ্ছাজ্যে শুকৈ:। বিসর্প वान् अग्रवन्तीलः। शिखलकनः देशिखिक (भाषनक्ष क्ष ।। 🗱 ।। 春 यकगार । विषकः मनिषक्षानिः পরিমর্থা মূত্রণাৎ। দংট্রা দন্ত 🛚

मथायाजामविष्याविमा वर्षि ।। বিশূত্র শুক্রোপছত নলবদ্পু-मक्ति । विक्तृकामिनम्भाष गत्रयागायकूर्वना ।। मृत्र्क्टला ংবলবী চ শীত্যো বহুরজাকর:। পরিসর্পণ শরীরোপরি সঞ্চরণ **ाम** खु। विश्वनीहरू। मखावनी 1 চৌঁহ ইভিলোকে। দন্তা প্রো खवाः। व्यविष आविना मशीका-নেন দ ক্ৰা দন্ত নথানা স্বভাকা-দেব সবিষম্ব কুণ। কিন্ত সর্পাদি-বিষণ সারকণ ভক্তি। অবিষ্ঞা-निमा॰ मः ख्रोमिविषः लाषः वाः थानिकत्र अवजीति विरमकः । বিমূত্তেত্যাদি বিভাদ্যুগহত দ-लिनक व**दञ**्। তथा महत्रः मःगार्जनीनिः कित्था धूनाकिः **एका मन्मर्का भागता गर्ना भागत-**চুৰ্নাৎ গরঃ সংযোগজং বিবং তন্য যোগো যায় তেন বস্তুমার-थूननार। जनमधी मध्यानः। जः य मनागवज खशानि नामाना-গন্তক্সশোপ চিকিৎসাতে৷ ২স্য বিশিষ্টচিকিৎসাভিধানাৎ পৃধ-ক্পঠিতঃ।। কন্ত ক্লি দোষা যত্ৰ শোধ- সৰ্বস্তি তদাহ। দোবাঃ भवष् मूर्कुः हि वर्षज्ञामाणहर

THE PROPERTY OF THE PARTY OF TH Solven Sales न्यूयाकाः अगुः महनस् छका। जिन् जाः अञ्जूष् । नारा भक्षानसभारता। अधः शकानस-प्रवेशा का। उत्रज्ञवानार । श्वा-मः निशामा ऋर्षि क मिर्वनाः बत धर ह। यमा हात्र कृति नी खि শোধিন ত বিবৰ্জ্জযেৎ ৷৷ #া৷ কট সাধ্যদ্বাদিক মাহ। বো মধ্য-प्राप्त श्वर्षः म करिः मर्वगन्त शः । অর্দ্ধাঙ্গে হরিষ্টভূতশ্চ ষ শ্চো-क्रि॰ পরিসর্পতি।। মধ্যদেশে উরঃ-शकागरमार्था । मर्दगः मकन শরীরভবং । সর্বজ ইতি পাঠে সামিপাতিকঃ। অদ্ধানে অৰ্দ্ধনা-রীশ্বরাকারে। ব শ্চোর্দ্ধুণ পরি-সর্গতীতি পুরুষবিষয়ণ। তথা চ। छिक्गामी नद्गं शिखा। मर्यागामी मूथा ख्रियः। উভयः वश्चि मः জাতঃ শোধো হস্তি ন সম্পদ্ধঃ।। উर्দुगानी मूथगानी। जया ह छ खास्टरतः भाष्यवृद्धः सम्पूर्म्-ना॰ यः आनुराज्यं रेखि। म ন সিধ্যতীতি শেষঃ। অধোগাসী পাদগানী। তথা চ তন্ত্রান্তরে। স্ত্ৰীণা বজ্ৰাৎ পদ যাতি বস্তি-

জশ্চ ন সিধাতীতি। উভয়ণ নর निविभा जगत्रक। जनत्राभज-বিষ্কৃতিঃ শোধঃ পাদসমুখিতঃ ৷ श्रूकर रिख वा नाती मूथ एका व-खिला बरा। অयमर्थः। शाम-সমুখিতঃ পাদাভ্যা মুখিতো মু-খগানীতি বাবৎ শোণঃ পুরুষণ হস্তি স কি বিশিষ্টঃ অমন্যোপ-জব কুতঃ। শোফাদন্যে ব্যাধ্যো হতীসার এহণার্শ:প্রভূত্যঃ তে-বা মুপদ্ৰবৈঃ ক্ৰতঃ। তদুপদ্ৰবেণ জাত ইতার্থঃ। অন্যোপদ্রবর্তঃ । অনন্যোপদ্ৰবক্ষতঃ। অৰ্থাৎ ষহেতুভি রেব জাতঃ। শোথ-वाशिद्यव कू शून मूर्थकः मूथा-काङः शनगाभी हि यादः ना-রী॰ হস্তি। সোপানন্যোপডাব হতএব । বস্তিজঃ ঘষণ পুরুষণ নারীক হস্তি দোপ্যনন্যোপডব হ্রতএব।। 🛊 ।। 🛊 ।। তাথ শোথস্য िकिस्मा। एकी पूनर्व देवत्र পঞ্চমূলী শৃত জল। বাতিকে শ্বৰথো শন্ত॰ পানাহার পরিগ্র-रेशः ॥ 🗱 ॥ भरहान जिकनातिक দাৰীকাথঃ সগুয়ুলুঃ। হস্তি পিত্ত-ক্তত শোপ তৃকা শ্বর সমন্বিত ।। 🟶 ।। সুক্ফীর ভাবিতাঃ ক্রফা

শোৰ

পথ্যা মূত্রেণ বা যুতাঃ। যোজি-তাঃ শম্বস্ত্যাশু শোপ শ্লেম স भृषिक ॥ 🛊 ॥ भिष्य भिर्मिक याः अर्था। प्रतिष्क गर्वत्यव हि । বিল্পপ্ররসং পৃতং শোষণ জি-ভবে शिवि ।। भारि दा-शरुष्क क्यां प्रक त्वशिक्त শীতল । ভল্লাতক্যা হরেচ্ছোথ । जिला क्रक्षमृखिका ॥ यश्या नवनीज्य हानामृष्ठाज्यायिजः । অত্র দূধা মহিষ্যা এব । যত षाह। महिरीकीत मः शिरके न বনীত সমন্বিতঃ। ডিবৈ র্লিপ্তঃ সম যাতি শোখো ভলাতকো-थिडः ॥ 🛊 ॥ यकि पृक्ष जितन र्लिला नवनीराजन मः बूजः । শোথ নারুষর হস্তি চূর্বিঃ শা-वारवामा ह ॥ कः ॥ विषक्रत्भाथ-চিকিৎসা তু বিষচিকিৎসাঘাণ खरुवा।। 🛊।। व्यथं नौमानाि -কিৎসা। পথ্যা নিশা ভার্গ্যমৃতা-धि मार्बी পूनर्वा माक्र मट्येषथक 1 काथ॰ अभीरमामत भाविभाष-मू-খাগত হস্তাচিরেণ শোপ ৷৷ প-थानिकाथः॥कः॥ कन विकास्य काषः लाम् खित्व माधरष । वाज्याख्य (भाषः इन्। पृत्र

गड्य ।।।।। वृन्हीय त्मरक मनी गरत्र पञ्जी विवृद्यायन हुन देक दी । मूकः मूमिकः विधिना निशीष्ठः গীত পর শোথহর ভিষ্টিঃ।। বৃশ্চীবঃ বর্ষাভূঃ।।।।। কেশ স্তথা-र्क वर्षाञ् निश्वकात्थन त्माथस्य । গোদুত্তেণাপি স্বৰীত সুখোষে-नावरमहनः ॥ 🛊 ॥ भूनवंवा माङ्ग শুন্ঠী শিশুঃ সিদ্ধার্থক স্তথা। অ-म्निभिक्तः मूर्यारकायः প্রলেশः म-र्नाथर्थ ॥ 🖷 ॥ छडार्जकः वा গুড নাগর• বাগুডাভযা• বাগুড পিপ্ললী বা। কর্যাভিবৃদ্ধ্যা ত্রিপ-লপ্রমাণ খাদেররঃ পক্ষ মধাপি नामः ॥ भाष अछिगार भवामा রোগান্ সন্থাস কাশারুচি পীন-मानीन्। कीर्बन्नार्मा अर्गी वि-कातान् इनगा ज्यानगाम् कक वाञ्द्रागान्॥ 🗱 ॥ विश्वः श्वरण-ন তুল্যা বৃশ্চীব রসানুপান মঞ্চ্য-छ । विनिर्द्धि गर्दभाष घन वृन्मः ठखवायु तिक ॥ 🛊 ॥ कंगा नागत्रक हुर्न मछ ७ लाथ ना मनः। आयाकीर्व अमयनः मृतः भ्रः विस्तिग्धनं ॥ 🛊 ॥ ७७०० পলত্রষণ আছণ শৃঙ্গবেরণ পলত্র-यः। भृत्रदिवसमा क्रका लाइविषे

তিলবোঃ পল•া৷ চূৰ্ৰ মেতৎ সমু क्रिके नर्भयपूर्यागमः। ७७।-**मिविष्का ।। ७ ।। मानककाथ** क ষ্টাভ্যা॰ ভৃতপ্ৰন্থ বিপাচবেৎ। একজ দশুজ শোপ ত্রিদো-- বৃঞ্ ব্যপোহতি।। মানকঘৃত॰ রামা মহৌষধৈঃ। পরু মভ্যঞ্জ-मारेखनः मण्नः श्वर् श्रद्धा ওমসুলকতৈল। ইতি শোথা-**धिकातुः। ইতি ভাবপ্রকাশः॥** শোথকঃ পু॰ শোথঃ। ইভি मक्त्रज्ञावनी ॥ শোপমী জ্রী পুনর্বা। ইত্য-यतः ॥ भानभगी। रेजि ताज-निर्यकेः॥ त्माथनागत्क वि॥ শোপজিৎ পু ভলাতকঃ। ইভি ত্রিকাওশেষঃ !! শোধজিয়ঃ পু॰ পুনর্বা। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। শোথহাৎ পু ভল্লাতকঃ। ইতি রত্নমালা।। শোকহারকে তি ॥

শোধক ক্লী কন্ধুগুণ। ইভিরাজ-

निर्मणेः ॥ अक्षिकात्रक वि ।

यथा। यहामाञ्जभनः श्रेटका छ-

প্তরুচ্ন্ত্র পাবনঃ। জলোপবা-

महम्ब खनाकृत्रं ख (माधकः ॥

ইতি প্রায়শ্চিত্তভূষ্ত বিশ্বাদ নিত্রবচন ।।

শোধন ক্লী শৌচ। ইতি শুং शावर्थं नर्गना ।। विक्री। इंडि <u> भक्त क्रिका ॥ का नीम । इंडि</u> वाजनिर्यन्धः ॥ विश्वि विश्वि गामापिविष्ठात्रनः। यथा। मूर्याः হণকালেন সমানো নাস্তি ক-भागः। তত্ত यहार क्राप्ट मर्व मन-স্তকলদ ভৰেৎ ৷৷ ন মাস ভিথি বারাদি শোধন সুর্ব্যপর্ববি ৷ ইতি মলমাসভত্ত্ব।। #।। ধাত্-निर्काषीकत्रनः। यथा। अञ्जी-क्रुं भवानि (रुद्धा रुद्ध) थेंडा-পবেছ। নিধিঞ্চেত্তপ্ত তপ্তানি ভৈল চক্ৰেচ কাঞ্চিকে।। গো-মৃত্তে চ সলখানা ক্যাবে তু ত্ৰিধা ত্ৰিধা। এব হেয়ঃ পরেৰাঞ্চ ধাতৃনা পোধন ভবেৎ।। #।। जनामिनीतिकत्वनः। स्था। जन-সা ববিশুদ্ধসা কাথঃ শুদ্ধিক-तः गतः । भरोत निष्माखमा সৰ্বত্ৰৈব প্ৰযুজ্যতে ॥ বাতিকে **দশযুলানা** कीत्रिगा रेशिखरक ত্রণে। আরখবাদেঃ কফজে ক-বাষঃ শোধন হিত ৷৷ 🛊 💵 অপি চ৷ অফমেনাণ্শ শেষেণ

ठजूर्थनार्क्तकन वा । अथ वा काथरनरेनव निक मूरकामक॰ वरम् ।। स्थापायकाक त्यरमायः विख्रित्भावन मीशन । देखि ह ভাবপ্রকাশঃ ৷৷ 🛊 ৷৷ লিখিত পত্রাদেঃ প্রমাণীকরণ । বথা। লেখ্য শোধন মাহ কাত্যায়নঃ । স্বহস্ত লেখ্য সন্দেহে জীবতো বা মৃতস্য চ। তৎ স্বহস্তকৃতৈ-त्रत्मः शरेख उर्ह्मश निर्गयः॥ 🗱 🛚 বিরুদ্ধলিখিতস্য শুদ্ধীক-त्रवः। यथा। ज्याधान मार् व হস্পতিঃ। ন্যুনাধিক পূৰ্ৰপক। **जावबामी वित्नाथरयः। न म** मामुखद्र गाव अठावी मछा-मिर्द्धो ॥ काजायनः । त्ना-ধষেৎ পূৰ্ৰপক্ষ দাবমোজন पर्गन । উত্তরেণাবরু**দ্ধ**স্য নি-বৃত্ত॰ শোধন• ভবেৎ ॥ ইতি वावश्रांत्रञ्जु॰ ॥ 🛊 ॥ व्यक्तमा १-त्रनः। यथा। जाका। क्राह्मतः खका-**जि यम् ७१३ मा मा महा। ५ कब्र॰** তৎ খল ভাগহারে। সমেন কে-নাপাপবর্ত্তা হার ভাজ্যো ভ জেদা সতি সম্ভবে তু।। ইতি লীলাবতী।। অন্যৎ শুদ্ধিশব্দে **जरुवा** ॥

| শোধনঃ পু॰ নিয়ুকঃ।ইতি রাজ-निर्म्कः॥ ल्गाधनः वि श्विकात्रकः। यथा । टेंग्न टेनम्बर यक्तास्य नित्र-**१** लिमायूरेगः । जितृम्बनयू-रेजः शिरकः अस्वरंभा वनरमा-ধনঃ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। ल्गाधनी जी मःगार्कनी। रेक्र-मतः ।। তামুবলী।। नीनी। ইতি রাজনির্ঘটঃ ৷৷ শোধিতব্যঃ 1 শোধনীয়ঃ ত্রি শোধ্যঃ। শুধধাতো রনীয় প্র-ত্যযেন নিষ্পন্ধঃ ॥ **माधनीवीक क्री क्यशानः**। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।। শোধিত ত্রি মক্ষিকাদ্যপন্যনেন क्ठामाधन बाझनाहिः। ७९-পর্য্যায়ঃ। সংমৃষ্ট ২। ইত্যমর-ভরতৌ।। অপি চ। ব্যঞ্জনে কে-न की गिरि शुरक मन्मुके लाहि-**७ । ३७ भक्तप्रावनी ॥ ज्ञश**-नीजमलः। जद्भर्यग्रायः। निर्नि-कु॰ २ मृके॰ ७ निःरमाधा॰ ८ वा নবস্কর ৫। ইত্যমরভরতৌ।। শোকঃ পু॰ শোপঃ। ইত্যমরঃ॥ **लाक्त्री** जी भानभरी।। क्रक-পুনর্ণবা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥

(लाकनाननः श्रुः नीलवृकः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ৷৷ শোথনা-न्दक बि ॥ শোকষৎ পু ভল্লাতকঃ।ইতি ष्ठावश्रकामः॥ त्माथशत्रत्क वि **(मा**जन क्री भग्रा हेि मक-চক্রিকা॥ শোভনঃ পু॰ গ্রহঃ। ইতি ধরণী ॥ विकडामि मश्रविश्गिकिरयामा-ন্তৰ্গত পঞ্চমযোগঃ। ইতি মে-দিমী।। ভত্র জাতকল । স্যা-চ্ছোভনঃ শোভনযোগজ্মা-দক্ষে। বিপক্ষপ্রতিলন্ধবিত্তঃ । • ममूखत भाकराष्ट्रः मुधीतः मः-मानमुद्धा मनुष्कः अवीवः ॥ ইতি কোষ্ঠীপ্রদীপঃ।। শোভনঃ ত্রি সুন্দরঃ।ইতিমে-দিনী।। অস্য পর্য্যাব্যে মনো-ख्वनरम जक्दाः ॥ শোভনকঃ পু॰ শোভাঞ্জনবৃক্ষঃ 1 ইতি শব্দচন্দ্রিকাঃ।। শোভান শব্দকারকে ত্রি ॥ শোভনা ত্রী হরিজা।। গোরো-চনা। ইতি ব্লাজনির্ঘণ্টঃ।। শোভা স্ত্ৰী শোভন্তে ২নষা। मीखिः। তৎপর্যায়ः। কান্তিः ্২ দ্যুতিঃ ৩ ছবিঃ ৪। ইত্যমরঃ 🛭

।। দ্যুতী ৫ ছবী ৬। ইভি ভটীকা য় অভিখ্যা १। ইতি জটাধরঃ ॥ শুকা ৮ তাঃ ৯ শ্রীঃ ১০ ভাসা ১১ ভ। ১২। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ সুষমা ১৩ ছায়া ১৪ বিভা ১৫ দৃক্পিষা ১৬ ভান ১৭ ভাতিঃ ১৮ কমা ১৯ রমা ২০। ইতি त्राक्रनिर्यकः॥ छमा लक्ष्यः। সা শোভা ৰূপ ভোগালৈয় ৰ্থ-मामक्रविভূষণ । শোভৈব কা-স্তি রাখ্যাতা মন্মথাপ্যাধনো-ब्कुला ॥ रेजुब्कुलनीलमिनः ॥ 😻 ॥ त्यानीवित्नवः । यथा। দৃষ্ট স্তু শোভষা গোপ্যা যুক্ত-क्ष्मिनकानरन। मरमा मक्क्-মাত্রেণ ভিরোধান ক্রত স্বযা ।। শোভা দেহ পরিত্যজ্য জগাম **চন্দ্রমণ্ডল•।। তত স্ত**স্যাঃ শরীর-ঞ্ নিশ্ধ তেজে। বভূব হ। সংবি-**ज्जा प्र**या मुख् क्लार्यन विमुध-তা।। রক্সাষ কিঞ্চিৎ স্বর্ণায কি-**ক্ষিমাণিবরাষ চ। কিঞ্চিৎ স্ত্রীণাণ** মুখাব্জেভ্যঃ কিঞ্চিদক্তে চ কি-**क्ष्म ।। किक्षि** किम्मलारमञ्जूम পুষ্পেভ্য শ্চাপি কিঞ্চন। কিঞ্চি-চ্চন্দন পক্ষেভ্য স্থোবেভ্যশ্চা-পি কিঞ্চন।। কিঞ্চিৎ ফলেভ্যঃ

শাসোভাঃ সুপক্ষেভাশ্চ কিঞ্চন।
কিঞ্চিমৃতনবস্ত্রেভা। দুগ্ধেভাশ্চাপি কিঞ্চন।। ইতি ত্রবৈবর্ত্তে
প্রকৃতিখণ্ডে ২ অখ্যাষঃ।। ॥।।
হরিদ্রা।। গোরোচনা। ইতি
রাজনির্যন্টঃ।।

শোভাঞ্জনঃ পুং বৃক্ষবিশেষঃ। শজিনা ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যা-যঃ। শিগুঃ ২ তীক্ষণদ্ধকঃ ৩ অক্ষীবঃ ৪ মোচকঃ ৫ ৷ ইত্য-মরঃ ॥ তীক্ষণস্ধাঃ ৬ সূতীক্ষঃ ৭ ঘনপলবঃ ৮ শ্বেতমরিচঃ ১। ইতি জটাধরঃ।। তীক্ষঃ ১০ গদ্ধঃ ১১ গন্ধকঃ ১২ কাক্ষীবকঃ ১৩ আক্ষীবঃ ১৪ শুভাঞ্জনঃ ১৫ স্ত্রী-চিত্তহারী ১৬ ডবিগনশেনঃ ১৭ । ইতি শব্দরত্নাবলী।। क्रकःগ-দ্বা ১৮ মূলকপণী ১৯। ইতি त्रज्ञगाना ॥ नीनिनगुः २० जन-श्रियः २५ मूथरमामः २२ क्रयः-শিশুঃ ২৩ চক্ষুষ্যঃ ২৪ রুচিরা-ঞ্জনঃ ২৫। অস্য গুণাঃ। তীক্ষ-षः। कर्षेषः। सामूषः। উक्षः। পিচ্ছিলম্বং। জন্ত বাতার্ত্তি শূল নাশিস্বং। চক্ষুহিতত্বং। রোচন-ष्ठक । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। অপি চ। শোভাঞ্জনঃ কটু

স্তিক্তঃ শোথ বিজধি গুলানুৎ। ইতি রাজবন্ধভঃ ।। অন্যক্ষ । অথ শোভাঞ্জনঃ শ্যানঃ শ্বেতঃ রক্তশ্চ। শোভাঞ্চনঃ শিগ্র তীক্ষ-গন্ধ কান্দীব মোচকাঃ। তদ্বীজ শ্বেতমরিচা নধুশিগুঃ সলোহি-তঃ।। শিগুঃ কটুঃ কটুঃপাকে তী-क्यारका गश्रुता लघुः। मीभरना রোচনো ৰূকঃ কব স্তিক্তো বি-मार्क्ष ॥ मः आश्रुकत्ना ह-দ্যঃ পিত্তরক্তপ্রকোপণঃ। চক্ষ্যঃ কফ বাতম্বে৷ বিডাধি শ্ব্যথ ক্রমী-न्।। (यरमाशरी विष भी इ खना গণ্ড ব্ৰণান্ হরেৎ। শ্বেতঃ প্রোক্ত-श्वरंग दिल्यामाश्रकेष्ठ-বেৎ ৷৷ প্লীহান বিজ্ঞধি হস্তি ত্রণমঃ পিত রক্তরুৎ।। মধুশিগুঃ **थ्याक्र**श्रद्धा विदेशसामीशनः म-রঃ। শিগু বন্ধল প্রভাগাণ স্বর-भः পরমার্তিङ्धा 🗱 ॥ हक्षाः শिगु क वीक जिल्लाक विषता-শন । সব্যা কফ বাতম তম-স্যেন শিরোর্জিনুৎ।। শিগুশাক হিম স্বাদু চক্ষ্য বাত পিত্তস্ত্ । वृण्ड्ग खळकूं भिक्ष क्रा मन ক্ষমিপ্রণুৎ ।। গ্লা। অস্য পুষ্পগুণাঃ । শিগোঃ পুষ্পন্ত কটুক তীক্ষো-

ষণ প্রাযু শোধনুৎ। ক্রমিহ্নৎ কফ ৰাতম বিজধি প্লীহ গুল্ম-**कि** । । । ज्या कल ७ नाः । শোভাঞ্জনকল স্বাদু ক্যায় क्क शिखनू । भूत अर्थ क्य श्वाम खनाक्य मीयन श्रद्धाः ইতি ভাবপ্রকাশঃ ॥ 🛊 ॥ অথ রক্তশোভাঞ্জন পর্য্যায়ঃ। সুর-की जामूगका 5 मधुलका छ-ভাঞ্জনः ॥ ইতি রত্নমালা ॥ অন্যচ্চ। রক্তশোভাঞ্চনে তু-ल्गो मधुनिशु मधुज्रतो। देखि नस्त्रज्ञावनी ॥ #॥ जमा भून গুণাঃ। মধুশিগ্রো স্তৃকিহিত। রক্তপিত্তপ্রসাদন ।। ইতিভা-বপ্রকাশঃ ॥ # ॥ অন্যৎ রক্ত-শিগুশব্দে জন্টব্য ।।

শোলী স্ত্রী বনহরিজা। ইতি রাজনির্ধন্টঃ।।

শোষঃ পু॰ ষশ্বরোগঃ। ইত্যমরঃ

।। শোষণ । ইতি মেদিনী ।।
তব্যোগস্যৌষধ যথা । বচা
ত্রিকটুককৈব করঞ্জ দেবদারু
চ।মঞ্জিষ্ঠা ত্রিফলা শেতা শিরীযো রজনীদ্বয় ।। প্রিষন্ধ নিম্ন
ত্রিকটু গোমুত্রেণাব্যর্ষিত ।
নস্য মালেপনক্ষেব স্নান মৃদ্ধ-

র্ত্তন তথা। অপস্থার বিষো-মাদ শোষালন্ধী জ্বাপহণ। ভূতেভাশ্চ ভষণ হস্তি রাজঘা-রে চ শাসনণ। ইতি গারুডে ১৯৯ অধ্যায়ঃ।

लायन की त्रमाकर्यन । टायन

हेि जाया। जर्भायाः। तमा-प्रनः २। हेि हिर्माण्यः॥ त्यह-तहि जित्रवः। यथा। गायतः-त्रहि जित्रवः। यथा। गायतः-न भतीत्रमा ज्ञामाध्यतःन ह। शास्त्रम् हार्ज शासामातःन ह प्रमा वतः हि आक्रि त्राक्षित्रके ॥ शास्त्रमा वर्षा। हिमाप्तः गाः-विष्यकः। यथा। हिमाप्तः गाः-विष्यकः। यथा। हिमाप्तः शाः-विष्यकः। यथा। हिमाप्ताक्ष्यः । हेि ज्ञावश्यकाणः॥ गायमञ्चरः क्री शिक्षनीमृनः।

ইতি রাজনির্ঘণীঃ।।
শোষাপহা স্ত্রী ক্লীতনকং। ইতি
রাজনির্ঘণীঃ।। শোষনাশকে ত্রি
শোষিতঃ ত্রি ক্রতশোষণঃ। যথা।
আতাপি ভক্ষিতো যেন বাতাপিশ্চ মহাসুরঃ। সমুজঃ শোষিতো যেন স মে ২গস্তাঃ প্রসীদতু॥ ইতি মলমাসতত্ত্বং।।

শৌক্রা

(मोक॰ क्वी एंक्शनः। हेंज्यस्यः ।। जीमा कर्ना । देखिरमिनी।। भौकत°) की जीर्थितरगरः । (भौकतव र रेया। वतार डेवार । শৃণু মে পরমণ গুৰুণ যন্ত্রমা পরি-भृष्डिङ । यम **क्किं भद्रकि**व শুদ্ধ ভাগবতপ্রিম ॥ পর কোকামুখং স্থানং তথা, স্জা-মুক পর । পর পৌকরব হা-न गर्नगः मात्र स्माकनः॥ राज সংস্থা চ মে দেবি হ্যান্কভাসি র-সাতলাৎ। যত্ৰ ভাগীরথীগদা ষম শৌকরবে হিভাগ ধরণাবাচ ৷ কেষু লোকেষু ষান্তীশ শৌ-করে যে মৃতাঃ প্রভো। কিং বা পুণাণ ভবেত্তত্ত্ব স্নাতস্য পিবত खश।। कि जीशं विभागाकः ক্ষেত্রে শৌকরবে তব। ধর্ম সং-**ज्ञालनार्थाय अवित्या रकु गर्र**-मि॥ बद्रार छेबाह्। भृष्ठद्वन মে দেবি ষত্ত্ব শা পরিপৃচ্ছসি। কা॰ গভি॰ তে প্রপদ্যন্তে নরাঃ শৌকরবে মৃতাঃ ৷৷ তেষা সা नमा देव भूगा॰ गठरमाव म्टमा ব।। তত্ৰ যানি চ তীৰ্থানি মম সংস্থান সংস্থিতাঃ ৷৷ শৃণ্ পুণা নহাভাগে মম কেত্রেষু সূদ্রি।

প্রাপুবন্তি মহাভাগে গদ্বা শৌ-করব॰ প্রক্তি।। দশ পূর্বাপরাণ শ্চাপি অপরান্ সপ্ত পঞ্চ। স্বৰ্গণ গছান্তি তে তত্ৰ যে মৃতা खित्र जखरः ॥ भगनात्मव मू-६व्यानि यूषमा मय मर्गना १ म-প্রজন্মান্তরে ভত্তে জাকতে বি-भूता करण।। धन धाना नम्राक्ष-यू कशवान् खनवान् खिहिः। य-ন্তক্ত শৈচৰ জাবেত মম কৰ্মপ-त्रायभः ॥ अव• देव मामूरवा **जू**षाः অপরাধ বিবর্জিতঃ৷ গমন ত-স্য ক্বেল্য মরণ তত্র কার**ণ** ॥ ষে মৃতা ন্তত্ত সুশ্রোণি কেত্তে **लोकत्रत्व मगा नश्च छक गरा** পন্ম চতুহন্তা শ্চতুভূজাং॥ ত্য-জ্বা কলেবর তুর্ণ মম লোকা-ৰ গচ্ছতি। ইতি বারাহে শৌ-করবতীর্থ মাহাজ্যে আদিত্য ৰয়প্ৰদান গৃধু জমুকোপাখ্যান-नागाशायः ॥

শৌক্তিকেষ ক্লী মুকা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শৌক্তেষ ক্লী মৃক্তা। ইতি রাজ-নির্মাণ্টঃ ৷ শুক্তিসম্বন্ধিনি ত্রি ৷৷ শৌক্ল্য ক্লী শুক্লতা। যথা। গ-লিত জরসা শৌক্ল্য কেশাদৌ

বিসুসা জরা। ইত্যমরঃ।। लोहः क्री खहिन। खहिषः। एकिः। छमा सक्नामि यथा। অভক্য পরিহারস্ত সম্পর্ণ কা-প্যনিন্দিতৈঃ। স্বধর্ম্মে চ ব্যবস্থা-ন পৌচ যেতৎ প্রকীর্ত্তিত ৷৷ ইত্যেকাদশীতত্ত্বে বৃহস্পতি ব ্চন ।। 🛊 ।। অন্যচ্চ। সর্বেষ। মেৰ শৌচাৰা মৰ্থশৌচণ বিশি-ষ্যতে। যো ২র্থার্থে রশুচিঃ त्नीहाम गुना वार्तिना एकिः॥ সভ্যশৌচ॰ মনঃশৌচ॰ শৌচ मिलियनि अरुः । मर्बज्जारा ल्गिष्ठः जनल्गिष्ठ अक्रमः ॥ যস্য সত্যঞ্চ শৌচঞ্চ তস্য স্বর্গো न मूर्लेङः। ইতি গারুডে ১১० ज्यशायः॥ 🟶 ॥ जिन ह। साव-তা শুদ্ধিণ মন্যেত ভাবচ্ছৌচণ সমাচরেৎ। প্রমাণ শৌচ সং-খ্যায়া ন শিষ্টৈ রুপদিশ্যতে ॥ শৌচন্ত দ্বিবিধণ প্রোক্তণ বাহ্ माञ्रखन वर्गा। मृब्द्धनाच्याः স্মৃত• বাহু• ভাবশুদ্ধি র**থা**ন্ত-রণ।। ইতি মারুডে ২১৫, অধ্যা-यः ॥ 🗱 ॥ शामानित्नो हन्त्रना যথা। মেধ্য পবিত্র মাযুষ্য भलकी कलिनामनः। शाहरया

মলমার্সাণাও শোচাধান মভী-ক্ষশঃ।। ইভি রাজবল্লভঃ।। 🟶।। অপি চ। উদ্ধৃতান্তো মৃত্তিকাভ্যা निष्य नात्रम यञ्ज्ञ । कृत्या ६-সর্গণ ততঃ সর্ব্যাৎ শৌচণ মূত্র পুরীববোঃ॥ ইতি পান্মোতরখ-(७)०२ ज्यायः ॥ क्राक्षा अन-कामरभोठकां विशास्त्र । यात्र উবাচ। দশাহ প্রাহ্ রাশৌচ সপিওেধু বিপশ্চিতঃ। মৃতেষু চা-থ জাতেষু বান্ধানাণ দিজোত্ত-ৰাঃ। নিজ্যানি চৈব কৰ্মাণি ক।-मानि চ दित्यकः। न क्या-हिरिष्ठ॰ किञ्चिथ स्वाधाय मन-मानि ह।। शुहीननिधनाः खुनाः।-न् भालारको श्वरमिष्ठकान्। শুকানেন ফলৈ ৰাপি বৈতানা-जूश्याखणः ॥ # ॥ न न्श्राम्य ति-ৰানন্যে ন চ তেভ্যঃ সমাহরেৎ । ठजूर्प अक्षरम बाङ्कि मञ्ज्यमा কথিতো ৰুধৈঃ।। সূতকে তু সণি-ভানা সম্পশ্নে ন প্রদুষ্যতি। সূতক সৃতিকাঞ্চৈব বৰ্জবিদ্বা न्नाः भूनः ॥ 🛊 ॥ मभारः निर्श्रः প্রোক্ত মশোচ চাতিনির্গুণে। এক দ্বি ত্রিগুণৈ র্যুক্তণ চতু স্ত্রোক मिटेनः **एकिः ॥ म**माहाजु পর•

সমাগধীৰীত জুহোভি চ। চতুৰ্থে তস্য সম্পর্ণ মনুঃ প্রাহ প্রজাপ-जिः।। क्या श्वीनमा मूर्यमा य-হারোগিণ এব চ। শ্বথেভাচরণ-मार र्यातनास स्ट्लीहक । • II ত্রিরাত্রণ দশরাত্রণ বা ভাক্ষণানাম্ভ পাবক । প্রাক্ স কারাৎ তিরা-क मानमानुकु मनारक ॥ छे নিৰ্বাৰ্ষিকে প্ৰেতে মাতাপিত্ৰো স্তদিব্যতে। ত্রিরাত্তেণ শুচি স্তু-रना। यनि एठा छनि र्थनः॥ जान-স্তজাত মরণে পিত্রো রেকাছ মি-যাতে। জাতদন্তে ত্রিরাত্তণ সাা-দাদি স্যাভান্ত নিৰ্গুণৌ॥ আদস্ত জননাৎ সদ্য আচুডাদেকরাত্র-ক॰। ত্রিরাত্র মৌপন্যনাৎ সপি-ঙানা মুদাহত ।। জাতমাত্রস্য वालमा यि माम्बद्धः शिष्टुः। मः দ্যঃ শৌচ সপিণ্ডানা কর্ত্তব্য 'रमामतमा **छ।। छर्कुः म**नाशातम-काश् मादता यहि निर्श्वनः। অংথार्कु मुख्यतनार मिश्री ना मरगोठकः॥ अकारः निर्श्वनाः নাম্ভ চূডাদূর্দ্ধ তিরাত্তিক । অ-प ख्रकाञ्यद्भवः मद्भर्यम्यम् मख-মাঃ।। একরাত্র॰ স্পিঞানা॰ যদি ছে ২ত্যন্তনির্গ্রণাঃ। ব্রতাদেশাৎ

সপিভানা মৰাক্ স্নানণ বিধীয়-তে।। সর্বেষা মেব গুণিনা মূর্দ্ধুন্ত विषय॰ भूनः॥ 🛊 ॥ अद्याक् यन्।।-मठः खीनाः यपि मामार्ज मःमु-**दः ॥ তদা মাসস**মৈ স্তাসা মশৌ-চণ দিব সৈঃ স্মৃতণ। অত উদ্ধৃষ্ণ প-তনে স্ত্রীগা স্যাদ্দশরাত্রক। স-माः स्नीष्टः मिखानाः गर्ज्ञा-বাচ্চ বা ততঃ॥ গৰ্ৱচ্যুতাবহো-রাত্রণ সগিঙ্গে ২তান্তনির্গুণে। যথেষ্টাচরণে জ্ঞাতো ত্রিরাত্র মি-**তि निम्हयः ॥ 🛊 ॥ यमि म्याद मृ**-তকে সূতি শারণে বা মৃতি র্ভবেৎ । শেষেণৈৰ ভবেচ্ছদ্ধি রহংশেষে ত্তিরাত্রক॰ ॥ সর্বৈণ্ৎপত্তিযো-পে তু মরণাচ্ছদ্ধি রিষ্যতে॥ #॥ व्यववृक्षित्रमारेगीतः मूर्कृरक्षःखन अकाि ।। जथ ८०९ शक्ष्मी॰ द्रा-ত্রি মতীত্য পরতো ভবেৎ। অ-यवृक्षिमनात्नीहः छमा शृद्धं । छ-ক্ষাতি।। **ঞ**া দেশান্তরগত॰ ঞ্র-ত্বা সূতক শাব নেব তু। তাবদ প্রয়তো মর্ত্যো যাবচ্ছেষঃ সমা-প্যতে।।।।।। অভীতে মৃতকে প্রো-ক্ত॰ সগিভানা॰ ত্রিরাত্তক•। ত-থৈব মরণে স্নান মূর্জণ সম্বৎসরা-म्यनि ॥ दिनार्थ विनशीयात्ना द्याः

विभाग् वृज्जिकविंछः। नमाश्ली-हें अदिख्ना नदीवकानू नदेश lien স্ত্ৰীণা নসংস্কৃতানান্ত প্ৰদা-নাৎপরতঃ সহা। সপিভানা ত্রি-রাজে সাাৎ সংকারান্ডর্ভু রেব চ ११ व्यव खुबखकमाना नटनो ह॰ न-त्रत्न चृष्ट । खेनिदर्श यत्रत्न म-माः स्नीत यूमाश्व ।। जामजा ६ माइद्र मदा चाटोजादनकता-ত্রকণা পাঞ্জানাৎ ত্রিরাকণ माक्तिनंत्रोज गण्ड भन्न ॥ 🗰 ॥ মাভামহানা মরণে ত্রিরাত্ত স্যা-मर्भो ठकः १ अरकामकानाः यद्गरः मृष्टक टेम्प्य हि। शकिनी रवानिमदक्त वान्नत्वम् छरेथव ह ।। अकत्राजः नगुष्मिकः श्वरतो न-ব্রহ্মচারিণা"। প্রেতে রাজনি স-জ্যোতি ৰ্যস্য স্যাদিষ্যে স্থিতিঃ ॥ शृष्ट मृष्ठामू पखामू कनाकामू बारः निजुः। भन्नभृदीम् जार्याम् পুলেষু ক্লভকেষ্ চ ।। ত্রিরাত্ত माज्ञथाहार्दा चलायाचनागा-সু চ। জাচার্যপুত্রে পদ্মাঞ ष्यत्राता यूपाल्ल ॥ अकारः माामूशाधारिय ख्यादिय (आविदिय २ शि ह । जिद्राज मनशिए ब्रू य-शृष्ट्र मः खिएउ वू है।। धकाइया य-

শুযোঁ সাদেকরাত্রশ শিব্যকে হ ত্রিরাত্ত শ্বশ্রমরণে শ্বশুরে চৈত-दमत रि ॥ नमाःदभी हः नमुक्तिकः मर्गाद्ध मन्द्रिक मि ।। ७-ध्विविध्या मेगार्ट्स बामगार्ट्स ख्रिभाः। देवभाः भक्षमभारस्य मृत्या गारमन **खक्का**ि॥ #॥ क्ख विष् भूख मायामा (य मूर्) वि-প্রস্যা বান্ধবাঃ ৷ তেখা মশৌচে বিপ্রস্য দশাহাচ্ছ্র্ম্মি রিয়তে ॥ वाकना देवनाव्याव्यावः शैनवर्गः म् यानियू। यत्मव लोहः वर्षा-তा॰ विश्वकार्थः न मः भयः॥ मर्द ভূত্তম বর্ণানাও শৌচও কর্যাু র-তন্ত্ৰিতা:। উদ্বৰ্ণ বিধিদৃষ্টেন স্বস্ত শৌচ স্ববোনিষু।। ষড়াত্র বা ত্রিরাত্ত্রণ স্থাদেকরাত্রণ ক্রমেণ ভূ ৷ বৈশ্য ক্ষত্রিয় বিপ্রাণাণ শুদ্রে-বাশোচ মেব তু।। অৰ্দ্ধমালো ২থ ষড়াত্রণ ত্রিরাত্রণ দিজপুরবাঃ। শুড ক্ৰিৰ বিপ্ৰাণাণ বৈশ্যেয়া-শৌচ বিষ্যতে॥ ৰড্ৰাত্ৰ- বাদশা-হক বিপ্রাণা বৈশ্য শুদ্রবোঃ। অশৌচ কত্তিয়ে প্রোক্ত ক্রমেণ षिজপুঙ্গব ।। শূজ বিট্ ক্ষত্রিযা-ণান্ত ব্ৰা**ন্ধণে স**ংস্থিতে সতি। দশ-রাত্রেণ শুদ্ধিঃ স্যাদিত্যাহ কম-

लाखवः ॥ ₩ ॥ ञ्रमिश्र• दि-জ প্রেত বিপ্রো নিহ্ তা বন্ধু বং। অশিত্বা চ সহে।বিত্বা দশ-রাত্রেণ শুদ্ধাতি ।। বদান শত্তি ভেষান্ত ত্রিরাত্তেণ ততঃ শুটিঃ। वनम्बन मदेश्व न ह अभिन् भृष्ट् वमन् ॥ मानदत्रद्वाष्ट्रपत मामाजू तात्थम् वसुष् । मना-হেন শ্বস্পর্শে স্পিও কৈব শু-দ্যাতি ৷৷ যড়াত্রেণাথ বা সর্বে ত্রিরাত্তেণাথ বা পুনঃ। অনাথ-ঞৈব নিহৃত্য বান্ধাণ ধনবজ্জি-ত ।। সাদা সংপ্রাশ্য তু দৃত खकाि वाक्रगामयः। व्यवत **८** कि इत वर्ष भवतः वा बद्धा वि া অশোচে সংস্থাৰ স্বেহাত্ত-मार्गिटान **एका** जि ॥ 🕸 । । ८थ-তীভূত দ্বিজ বিপ্রো যো ২নু গচ্ছতি কামতঃ। স্বাস্থা সচেল॰ স্ফুাগ্নি ঘৃত প্রাশ্য বিশুদ্ধা-**जि ॥ अकाश्य क्यांत्र एकि** देविगाना॰ माष घाटरन जू। শূজে দিনত্ত্বণ প্রোক্তণ প্রাণা-यागणा श्रमः ॥ 🗱 ॥ जनवि-সঞ্চিতে শূড়ে রৌতি চেদ্রাহ্মণঃ || यकः । विद्रावः मामथार्गीत भिकारः बनाया मृष्ठः ॥ अञ्चि

मध्यनाष्ट्रीटगकार देवना मु जरवाः। अनाथा टेव्स मरक्रां जि র্ত্তান্ধণে স্নান মেব জু । অনৃস্থি-সঞ্চিতে বিপ্ৰে ৰান্ধণো ব্লেতি क्षिषा। शास्त्रीमञ्जूतक्षिः मरहरतान न मः भयः ॥ 🛊 ॥ य रेखः महानानः अधाष्ट्यनामीन চৈব হি। বান্ধবোৰা পরো বা-शि म प्रभारहन एकारि ॥ **॥** ॥ य एउया यह यद्यां जिल्लान পি কাষতঃ। তদাশৌচে নিবৃত্তে ২সৌ সানংক্তমা বিশুদ্ধাতিয়ে যা-বত্তদন মন্নাতি দুর্ভিক্ষোপহতো-নরঃ। তাবস্তাহান্যশৌচ সাৎ প্রাথশ্চিত্ত তত শ্চরেৎ ॥ # ॥ माशामारगीठः कर्जवाः विकाना মিহোত্রিণা । সপিতানাম্ভ ম-রণে মরণাদিতরেষু চ ।। **₩** ।। স-পিওতা তু পুরুষে সপ্তমে বিনি-বৰ্ত্ততে। সমানোদকভাবস্ত জ यानारमा त्ररापरन ॥ शिष्ठा शि তামহ শৈচৰ তথৈৰ প্ৰপিতামহঃ । लगजाक मञ्र्यामगः मानि-**७**। माश्राभिक्ष । चन्छानाः তথা জ্রীণাণ সাগিঙ্যাণ সাগুপৌ-রুষণ। জাষানাণ ভত্সাপিণ্ডাণ প্রাহ দেবং পিতামহং ৷৷ যে চৈ-

শৌচিক

ने इंदर्ग हैं पूर्व कर कर ी किमवशिष्ठ मानिक्षण छत्व-एखना जिल्लोकन ॥ **क** ॥ कार् नः निविद्या देवमा मानी मान पदिषद ह। माञादता नियमी टेह-व बन्धविष्क्रातिली।। मिल्लिश ত্রতিন স্তাবৎ সদ্যঃশোচা উদা-স্তাঃ । রাজা চৈবাভিষিক্ত শ্চ বিপ্রাঃ সত্তিণ এব চা। ষজ্ঞে বি-বাহকালে চ দেব্যাগে ভথৈব ह। महाः स्नोहः मगाशाङ ह-ভিন্দে বাপ্যুপদ্রবে ॥ ডিয়াহ্ব-হতানাঞ্চ বিদ্যুতা পার্থি বৈ র্দ্বি-देखः । महाःरमोहः मगायाञ মক্তাতি মরণে তথা ৷৷ অগ্নে ম-क्रञ्जला वीवाधनालानामात्क । बाक्षवादर्य ह मन्त्राद्य महाः-শোচণ বিধীষতে ৷৷ 🕸 ৷৷ নৈষ্ঠি-কানা• বনস্থানা• যতীনা• বন্ধ-চারিণা । নাশৌচ কীর্ত্তাতে স-ক্তিঃ পতিতে চ তথা মৃতে॥ পতি-**जाना॰ न मारुः मामार्खार्खिः** নান্থিসঞ্যঃ। ন চাত্রুপাতঃ পি-**८७। वा कार्याः आक्वामिकः क्-**চিৎ ৷ ব্যাপাদযেদথাত্মান স্ব-য॰ যোগ্নি বিষাদিভিঃ । বিহিত॰ **७**गा नाटमोह॰ नाग्नि नाशुमका-

দিক ।।

। অথ কল্চিৎ প্রমা
দেন মিবতে হিন বিষাদিভিঃ ।
তদ্যালোচি বিষাতব্য কার্যাইফবোদকাদিক ।।

দেন তিনহং কান সর্ব্যাৎ প্রতিনহং । হিরণ ধান্য গো বাস
স্থিলাম গুড় সর্বপান্।। ফলানি পুল্প শাকঞ্চ লবণ কার্চ
মেব চ। তোষ দিধি ঘৃত ক্রীর
সৌষধ তৈল মেব চ।। অশোচিনা গৃহাদ্গ্রাহ্ণ শুদ্ধাম মেব
নিত্যশঃ। ইতি কোর্মে উপরিভাগে ২২ অধ্যাবঃ।। অনাৎ
পালোভরখণ্ডে ১০৯ অধ্যাবে

দেইব্য ।।

भौहाहातः पृ श्विक्षकर्मा। यथा
। भौहाहात विश्वीनमा ममला
निष्क्रलाः क्रियाः। ইত্যাহ্निकाहात्रञ्ख बक्षभूताणः॥ ज्ञनाक्र। উপনীय গুৰুঃ শিষ্যः
मश्राम्हि পূৰ্বকং। বেদ মशांभररप्ताः शिहाहाताः क्रियाः।
भौहिकः पृ वर्षभक्षत्रविरम्यः।
यथा। देकवर्जमा ह कन्यायाः
भौशिकारम्य भौहिकः। ইতি
পরাশ্রপদ্ধতিः॥

শোচেবঃ পু॰ রজকঃ। শব্দরত্বাবলী।।

শৌট ঋ গর্বে। ইতি কবিকন্ধক্রমং ৷৷ চতুর্দশবরী ৷ ঋ অশুশৌটৎ ৷ শৌটতি বীরঃ ৷ ইতি
দর্গাদাসঃ ৷৷

শোদীরঃ পুণ ত্যাগী ৷৷ বীরঃ ৷
ইত্যুণাদিকোষঃ ৷৷ গর্বান্বিতে ত্রি
৷ শোটধাতো রীরণ্ প্রত্যাবেন
নিশারঃ ৷ ইতি সিদ্ধান্তকৌমু
দ্যা মুণাদিবৃত্তিঃ ৷৷

শোটীর্য্য ক্লী বীর্ঘ্য ৷ ইতি শব্দরত্মাবলী ৷৷ গর্বঃ ৷ শোটীর শকাৎ ভাবে ক্ষ্য প্রত্যাবেন নিভারণ ৷৷

শৌড ঋ গর্বে। ইতি কবিক্রা
ক্রমঃ ৷৷ চত্র্দশেষরী ৷ ঋ অশুডশৌডৎ ৷ ইতি দুর্গাদাসঃ ৷৷
শৌঙঃ ত্রি মত্তঃ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷
শৌঙর্যাণ ক্রী অহকারঃ ৷ ইতি
কেচিৎ ৷৷

শৌশুকঃ পুণ জাতিবিশেষঃ ৷
শুড়ী ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ
৷ মণ্ডহারকঃ ২৷ ইত্যমরঃ ৷৷
শুণ্ডারঃ ৩ শৌশু ৪ শুণ্ডকঃ ৫ ৷
ইতি শব্দরত্নাবলী ৷৷ ধ্বজঃ ৬
পানঃ ৭ পণঃ ৮ ৷ ইতি জটা-

धतः॥ कष्मभानः २ मूत्राकीवी
२० वातिवामः २२ भानविक्
२२ धकी २० वामूठीवनः २८॥
१० द्यारा ज्याप्राध्या । उत्पाद्या ज्याप्राध्या । उत्पाद्या ज्याप्राध्या । उत्पाद्या ज्याप्राध्या । उत्पाद्या । उत्पाद्य । उत्पाद्य

শেণ্ডী^ন পু॰ শেণ্ডিকঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।

শৌণ্ডী স্ত্রী পিপ্পদী॥ চব্য° । ইতি বিশ্বঃ॥

শৌজীরঃ ত্রি অহন্ধারী। যথা।
শৌজীরো গর্বিত স্তন্ধাে মানী
চাহক্দৃদ্ধতঃ। উদ্গ্রীব উদ্ধান্তরা হকুপ্রো নীচশ্চ পিশুনাে
হরমঃ।। ইতি ধনঞ্জযকােষঃ।।
শৌজঃ পুং ভাদশ্বিধপুল্রাস্তগ্তপুল্রবিশেষঃ। স তু ব্রাহ্মণ
ক্ষত্রিয় বৈশ্যান্যতমাৎ শূজাা
যাণ জাজঃ। যথা। ঔরসঃ
ক্ষেত্রজাে দত্তাে গৃঢ়োৎপদ্মশ্চ
ক্ষত্রিমঃ। ক্রীতাপ্রিদ্ধ কানীন
শৌজ পৌনর্ভবা অপি।। স্বয়ণ
দত্তঃ সহোঢ়োপি ভাবুরস্যােরসৌ সমৌ।। ইতি জ্টাধরঃ।।

শৌভ

শৃজসম্বন্ধিনি ত্রি।।

लोकामिनः प्रमाकावन्मा-विश्वकृतिविद्यक्षः। इछा-मतः॥ एक सामनममा इछि मनीयापिः। एकामदना नाम-त्राका। छथा हि। एकामदना वट्छा छूटकु नाग्यव्य एकदमाम-नः। इछार्या जिथानः। एकाम-नगापछाः लोकामिनः वास्ना-माछ इछि किः। इछि छत्रछः॥ लोधिका खी त्रक्ककृः। इछि द्याहस्यः॥

শৌনকঃ পু• মুনিবিশেষঃ। যথা

া সপিগুীকরণাদুর্দ্ধ্ব• ন দদ্যাৎ
প্রতিমাসিক• ৷ একোদ্দিফবিধানেন দদ্যাদিত্যাহ শৌনকঃ
।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব• ৷৷

শৌনিকঃ পুণ মাণসবিক্রযকর্ত্তা।
যথা। বৈতণসিকঃ কৌটিকশ্চ
মাণসিকঃ শৌনিকঃ সমাঃ ॥
ইতি জ্ঞটাধরঃ হেমচন্দ্রশ্চ ॥
মৃগবা। ইতি শক্ষমালা ॥

শৌভ ক্লী হরিশচন্দ্রপুর । ইতি ত্রিকাওশেষঃ ।। তৎপর্য্যায়ঃ । ব্যোমচারিপুর ২ । ইতি ভূরি-প্রযোগঃ ॥

শৌভঃ পু॰ দেবতা। ইতি ত্রি-

শৌদ্ধিকে

का ७८ मयः ॥ ७४ वाकः । **३७** भक्तभावा ॥

শৌভনেযঃ ত্রি শোভনসম্বনী। শোভনশকাৎ কেষ প্রত্যাযেন নিষ্পায়ঃ।।

শৌভাঞ্জনঃ পু॰ শোভাঞ্জনবৃক্ষঃ
। ইতি ভরত দ্বিৰূপকোষঃ ৷৷

শৌভিকঃ পু• ইন্দ্ৰজালিকঃ। ইতি শব্দমালা।।

শৌভূেষঃ ত্রি শুভূাষা অপত্যং। ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণং॥ শুভূ-সম্বন্ধিনি চ॥

শৌরিঃ পু॰ বিষ্ণুঃ।। শনৈশ্চর-গ্রহঃ। ইত্যমরভরতৌ।। শৌপিকঃ > ত্তি শূর্পপরিমিত॰। শূ-শৌপ্যঃ > পশকাৎ ফিফ প্রত্য-বেন ফা প্রত্যকেন চ নিষ্পক্ষো।। শৌর্যাণ ক্লী আরভটী।। শক্তিঃ। ইতি মেদিনী।।

শেষণ ত্রি শুক্ষসম্বন্ধী। শুক্ষ-শব্দাৎ ফ প্রত্যযেন নিপান্ধণ।। শৌক্ষিকঃ পুণ শুক্ষাধ্যক্ষঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

শৌদ্ধিকেষঃ পু॰ বিষভেদঃ। ই-ত্যমরঃ ।। শুদ্ধিকো দেশভেদ শুত্র ভবঃ শৌদ্ধিকেষঃ কেষঃ তালব্যাদিঃ। ইতি ভরতঃ ।। শৌ বিকঃ পু॰ ক শকারঃ। কাঁশারি ইতি ভাষা। তৎ পর্যাষঃ।
তামুস্টকঃ ২। ইত্যমরঃ। কামন্দমী ৩ কা শ্যকারঃ ৪। ইতি
জটাধরঃ। তামুকঃ ৫

রকঃ ৬। ইতি শব্দর্কাবনী ।। শৌবং ক্লী শুনঃ সক্ষোচঃ ॥ শু-নোবৃন্দং ।। শ্বোভবং । ইতি সং-কিপ্তসারব্যাকরণং ।।

শৌবন ক্লী শুনোভাবং ৷৷ শুনো ২পত্য ৷ ইতি সংক্ষিপ্তসারব্যা-করণ ৷৷

শৌবস্তিকণ ত্রি ভারিদিনস্থানি
বস্তা বথা। আত্মন্তরি স্থাপিশিতে নরাণাণ ফলেগ্রহীন্ হণসিবনস্পতীনাণ। শৌরস্তিকত্বণ
বিভবা ন ষেবাণ বজ্জন্তি তেবাণ
দযদেন কস্মাৎ।। ইতি ভটো
২ সর্গানা ষেবাণ বিভবাং সম্পানদাং শৌবস্তিকত্বণ ভাবিদিনত্বিশ্ তত্বণ ন বজ্জন্তি তেবাণ ক্যাত্বন দযদোশভবার্থে কণী বিধানাৎ
কণি মনীযাদিত্বাৎ ত্যাগমং ত্বারম্বরেতি উন্ ণিত্তেব্রি রিতি বিং ঘতৌ ভাবে ইতি ত্বণ। ইতি
তট্যকা।। শোবাগদ তি শাগদসমনি ।
শাগদশকাৎ ক প্রত্যবেন নিশালণ ৷ ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণ
শৌকলঃ পুল শুক্ষমাণসম্যাপনকঃ
। ইতি মেদিনী ৷৷

स्थितः जि जानियाणी। रेजस्थाः स्थानियः जानियः जानियः जानियः जानियः ज्याि जानियाणी अरािष्णिशिन्। एकनी एकमाः रम माखाः ममार्जः नि मृणार्ठ। ठा मि ल्याक्तः ।
एकः नाः मः नाि रेजि एकः नः श्रेकािष्णाः । रेजि विमाितियाः। माक्रमः ।
रेजि विमाितियाः। माक्रमः रेजि भारिः रेजि खानी। रेजि

मेनू ३ हेत करता । हेकि कविमेनू ३ विकास । । (को जानवादगीमा कुछ जान गामि । स्थान ।

চুলুম্ ইভাঙ্গিসিজ। किন্ত दो मखामी रेंछि धाजुअमील कम দীশবৌ। তেন মৃত শ্চোভতি ইতি ষৃতশ্বুৎ ত নাচক্টে ইতি কৌ ঞীন•শ্চেভি ডিছাটিলো-পে ঘৃতশ্চযতি পুনঃ ক্লিপি ঞে ৰ্লোপে ঘৃতস্ক ইতি স্থিতে সং-रवाशासः नमा लाल घृठक् ইতি কেচিৎ ॥ ইর্ অশ্চুতৎ অন্চোতীৎ। অশ্চাতৎ অ-শ্চ্যোতীৎ। কর ইতি আসে চন করণক। রক্ত মান্চ্যোত তি ক্ষুর ইতি। ইদ॰ কৰচ ম-**म्हाणिमिछि। निम्हाण्ट**स সূতন্কবরী বিন্দৰো ধাবদেতে ইতি মালত্যাণ গণক্কতানিত্যত্বণ 1 ইতি দুর্গাদাসঃ ॥

শ্বেটাতঃ পু॰ প্রাথারঃ। ইত্য-মরঃ।।

শ্ব[ি] ক্লী [®] মুখ°। ইতি শ্ব**শ্রশ্**ক-টীকাষা ভরতঃ॥

শ্বশান ক্লী শবদাহস্থান । তৎ পর্য্যায়ঃ । পিতৃবন ২ । ইত্য মরঃ ।। শতানক ৩ ক্লজাজীতঃ ৪ দাহসরঃ ৫ । ইতি ত্রিকাও-শেষঃ ।। অন্তশ্য্যা ৬ পিতৃকা-নন ৭ । ইতি জ্টাধরঃ ।। # 1।

তদ্য ব্যুৎপত্তি র্যথা। শ শব্দেন শব প্রোক্তঃ শান শ্বন মূচ্যতে । निर्वष्ठि भागानार्थः गूरन ण-ব্দার্থকোবিদাঃ।। মহাস্ত্যাপি চ **ज़्जानि अवरा मम्शक्रि** । শেরতে ২০ শবো ভূমা শাশানম্ব ততো ভবেৎ।। সহাশাদান যথা । ৰাব্লাণদীতি বিখ্যাতা ৰুজাবাস ইতি বিজাঃ। মহাশ্যশান মিত্যে-ক প্ৰোক্ত মানন্দকানন ।। ইতি শ্ৰীস্কান্দে কাশীখণ্ডে ৩০ অধ্যায়ঃ ॥ ।। উৎमदि वामदि देव पू-র্ভিকে শত্রবিগ্রহে রাজদারে শ্ব-শাৰে চ য স্তিঠিতি স বান্ধবঃ ॥ ইতি চাৰক্য ।। 🕸 ।। খাশানে গত্বা বিকুস্পর্দে দোষো **বথা। বরা**হ উবাচ। **স্মশান**° যো নরো গন্ধ। অন্নাট্যেব তুমাণ স্পৃদেৎ। মম मायाभद्राधनाः मृन् ठटखन य ফল• ৷৷ জন্বুকো জাযতে ভূমে वर्षाणा नव शक ह। गृधुख সপ্তবর্ষাণি জাযতে খচরেশরঃ **। চরস্তে। মানুষ মাণস্ট** উভৌ তৌ গৃধু জমুকৌ। পিশাচো জা-ষতে তত্ত্ৰ বৰ্ষাণি নব পঞ্চ চ ॥ ততস্তু স্বপোচ্ছিষ্ট ব্ৰিণ্মদৰ্যা-ণি খাদতি। ততো নারাষণাচ্ছ্রণা

ধরণী বাক্য মত্রবীৎ 🔃 এতমে 🛭 ণরমণ ওছণ লোকনাথ জনার্দন্ । পর কৌতৃহল দেব নিশিল। वक् मर्शि॥ भागानः भूखती-কাক ঈশ্বরেণ প্রশংসিত । তত্ত্র কি বিশ্বণ দেব পাবিত্রে শিব ভাষিতে ৷৷ স তত্র রমতে নিত্যুণ ভগবাণ্দ্ৰ মহাদ্যুতিঃ। কপালণ गृष्ट (मरवाज मीखिमन्ड॰ मरही-জন ।। প্রশংসিতঞ্চ রুদ্রেণ ভ বতা কিং বিনিন্দিত্য ৷ শ্বশানং পমপত্রাক্ষ রুদ্রয় চ নিশি প্রিষণ ।। বরাহ উবাচ। শূনু তত্ত্বেন মে-दनिव रेम गाथानि मुख्यः। जना পি তে ৰ জানন্তি অন্যে শংসি-ত ব্রতাঃ।। ক্রত্ব। সুদুষ্করণ কর্মা স-ৰভূতপতি হ্রঃ। হয়। চ বাল युकानि जिश्दा किरिवीः खिषः॥ তেন পাপেন সংব্ৰো। ন শক্নো-তি বিচেষ্টিতু ॥ তত ঈশো মযা চোক্তো বাক্য মেব স্থাবহং। কিমিদ ভিষ্ঠদে রুজ কণ্মলেন मगानृजः॥ তব চৈব প্রিষার্থাষ যেনাহ মিদ মাগতঃ। ততো নম বচঃ শ্রুত্বা লক্ষসংজ্ঞো নহেশ্বরঃ য়া উবাচ মধুর বাক্য পাপসম্ভ-खटलाहनः। তব বিষ্ণো প্রসা-

দেন মধা তত্ত্রিপুর হত ।৷ নি-হতা দানবা স্তত্ত গর্ভিণ্যশ্চ নি-পাতিতাঃ। বাল বৃদ্ধা হতা স্তত্ত্ব विक्रूतरङा मित्या मय ।। তস্য পাপস্য দোষেণ ন শকোমি বিং **टिकिन् । अन्कर्यागमाय**न्ह नरेके भर्या के माधव ॥ किं मया विश्वकर्डं वा स्मानायस्य ধব। বিষ্ণে তত্ত্বন মে ত্রাহি त्नाधनः भाभनागनः ॥ त्यन देव ক্লতমাত্ৰেণ শীৰ্ণ মুচ্যেত কিন্ধি-বাৎ। এবং চিন্তাত্মন ন্তত্ত মযা ক্ষজস্য ভাষিত ।। কপাল মালা। म॰शृंश ममल॰ शृष्ट् महत्र ॥ य-টেমব॰ বচন॰ শ্ৰুত্বা ভগবান্ পর-মেশ্বর:। উবাচ মাণ পুন ব্যক্তণ মাণ বোধ্য জগতৎপতে।। কীদৃ শঃ সমলো বিষ্ণো যত্ৰ গচ্ছাম-হে বয়ং। তত স্তম্য বচঃ প্রত্থা শ-ষ্করস্য যশস্বিনি ॥ তৎ পাপশো-ধনাৰ্থাৰ মৰাবাস প্ৰভাষিত। भागानः मगरला ऋफ शृजिरका ব্ৰণগন্ধিকঃ।। স্বয়ণ তিগ্ৰতি বৈ তত্ত্ৰ মনুজা বিগতস্পৃহাঃ। তত্ত্ৰ গৃহু কপালানি রম তত্ত্বৈব শবর ৷৷ তত্ৰ বৰ্ষসহস্থাণি দিব্যান্যেৰ দূ ঢবতঃ। ততো ভক্ষ মাণনানি

পাপক্ষ চিকীষু কং ৷৷ ছিংস্যমা-নানি ভোজ্যানি বে চ ভোজ্যা च्चव थियाः। এवः मदेवं भेटेवः সাৰ্দ্ধণ রম তত্র সুনিশ্চিতঃ।। পূর্ণে वर्षमहरम् जूषिया पः मगतन পুনঃ৷ এষাসি স্বাঞামণ পুণ্যণ গৌতমন্য মহামুনেঃ ৷৷ তত্ৰ জ্ঞা-স্যাসি চাত্মান: আশ্রমে বিধিসং-স্থিতে। প্রসাদাৎ গোত্মস্যাথ ভবিতা গতকিন্মিষঃ ৷৷ এবং তস্য বর দন্ধা ভবৈত্রবান্তরধীয়ত। রু-জোপি ভূমতে তত্ত্ব শ্বশানে পা-পসংবৃতে।। এবং ন রোচতে ভূমে শ্বশান মে কদাচন। যত্ৰ ৰুজ ক্লত পাপ স্থিত কিল ভ্যাবহ া এততে কথিত ভডে শ্বশান ৰে জুগুপিত । বিফুাপি ক্ত-সংস্থারো মম কর্মপরাম্বণঃ ৷৷ প্রাযশ্চিত্ত॰ প্রবন্ধ্যামি বেন 👒 ধ্যতি কিন্দিষাৎ। রূম্বা চতুর্থ ভ-क्य मिनानि देश शक् है। आका-শ শ্বন প্র্যাৎ একভক্তঃ স্থ শান্তরে। প্রভাতে পঞ্চগব্যম্ভ পা-তব্য কৰ্মশোধন ৷৷ প্ৰসুক্তঃ সৰ্ব পাপেভ্যো মম লোকাষ গচ্ছতি। ইতি বারাহে খাশানপ্রবেশাপ-রাখ প্রাথশ্চিত্তনামাধ্যাখঃ ॥

यागानकाली जी कालिकादि-শেষঃ। অথ শ্বশানকালী। তদু-कः कानीज्ञा । वानीः मायाः ততো লক্ষীণ কামৰীজ মতঃ প-तः। कालिएक मःभूदेएक ठकुः इः वीक गोनित्थर।। अकामना-ना प्रदिनि हजूर्नर्ग अमायिनी । 🛎 । जिन् । यद्य । भव मर्के ह-बः वृद्धः छद्यास्य भद्रनीष्ठवः। हजूबात्रमभाषुकः भरश मूलः मः मानित्थर ॥ मतन्यसम् विन-८४८ क्वर्गामाखेवर्गकः। धतः गा॰ विलिथिमामा॰ ठजूकक ठ-**जूकरक ॥ পূर्বामि উত্তরান্তঞ্চ** मर्था प्रवी॰ প্রপুক্তবেष। 🕸।। অস্যাঃ পূজাক্রমঃ। প্রাতঃরু-जारि थानामास कर्म क्रश अग्रापिनामः क्र्यां विश्वा **नित्रित ज्ञक्षश्वरय नमः। क्रि** भूगांनकालिकारेंग प्रविठारेंग नमः। श्रद्धः वाधीकाय नमः। शानरमा योगानकरम नमः । म्बाद्य कामवीककी नकाय न-মঃ। ততঃ করাঙ্গন্যাসে। ঐ व्यक्षिणा नगः। ही वक्ती-ভ্যা• স্বাহা। 🕮 মধ্যমাভ্যা• वयष्। क्ली अनामिकाजाः है।

कानित्क कनिश्राज्याः (बोबऐ। क्रीयानि दाश्वदास क्राइन भृष्ठी ल्याः करे। এবः समयामिष् ॥ 📲।। ততো গ্যানং। অঞ্নাজিনিভা (परी भागाना वर्गामिन। तः क्रानका॰ मुक्काकनीः एकमा॰ সাতিভৈরবাণ।। পিসাফীণবাম-श्रुत यमाभूष मया मकः। म-**माः क्रजिन्दाः मक्र्राखन मध**-তী॰ শিবা॰।। স্মিতবজ্ঞা। সৃদা-**हाममा•महर्द्द्श्वर्श्वाः। नाना**-লকারভূষাঙ্গী নগা সভা সদা-मदेवः ॥ अव-शाषा करनदम्बी-শাশানে তু বিশেষতঃ। গৃহে বাপি গৃহস্থোপি মৎস্যমাণ্টেশঃ সুভো-জনৈঃ।। নগ্নো ভূষা মহাপূজা স্থ্যাজাক্রো বিশেষতঃ। 🐠। পু-জনম্ব ধ্যাত্বা মানটেশঃ সংপুজ্যা-र्घाञ्चाशन कर्गा । शूनर्गाञ्च यत्थालहादेवः मःभूका भट्डाम् বান্যাদিক পদ্ধৰে। তছহি র সিতাকাদিক পুজবেৎ। অস্যাঃ **পুরশ্চরণ** একাদশলক্ষপঃ। তথা চা বৰ্ণলক্ষণ জপেয়াত্ৰণ ভদ্দ-শা•শেন হোমবে**ৎ।** শন্তান্তর• । তত্ত্বৈ কামবীজ সমালিখ্য कालि कार्टेश ममालिए ५०। नरमा-

एउन ह एएटिन मक्षार्था मन् इन्छमः॥ मनीटिन कानिकारमनी जनाद मन्द्र शृन्देस्य । इन्डि जन्नमादः॥

न्यानियानी पृश्विकः। यथा।
क्वित्राः क्विशानिकः क्विछः
क्विर्या वित्राः। भ्रामानवानी
माश्मानी थर्भतानी मथास्कृष्यः। देखि वर्ष्ट्रकरेख्यवरखावः॥।।
न्यानात्व वामकर्खति वि । यथा।
न्यानात्व विद्यानिकः भ्रामानवानिकः विद्यानिकः भ्रामानवानिकः।
देखि सिक्विदः।।
देखि सिक्विदः।।

यांनानत्वयां प्रः सहारमदः। इकि रहमहस्रः।।

শ্বশানবাসিনী স্ত্রী কালী। যথা।
শ্বশানবাসিনী সৌম্যা শিবানী
শিববল্পভা। ইতি কালিকাশত
নাম স্তোত্রণ।

।

भागानावयगितनी खी कानी।
यथा यात्रत्रावाः वहाद्रोजीः
भागानावयगितनीः। ইতি তखनाद्र प्रकाशनाविकाधगनः॥
भाष्य की भूः मूर्थविक्षिण्यामः।
पाणी हेणि जाया। हेणुमदः॥
भूः मूर्थभूक्षयामा एवयाः वृष्की
मणाः जलामं भाष्य जेगारः।।

শানিতি মুখনামেতি শৃতিঃশ্বনি মুখে ভাষতে উপলভ্যতে শাঞ্

ত ডুঃ খাঞা ক্লাৰ মুদত্তণা খা মুখণ শ্ৰেষতি শানঃ শ্ৰেৰতে ভু মিতি ভূনি শ্বঞ্ৰ নান্ত মিত্য-ন্যে। ইতি ভরতঃ।। 🛊 ।। ভস্য শুভাশুভ লক্ষণ যথা। নিম্ন বক্তু মপুত্রাণা ক্রপণানাঞ্চ হু-স্বক । সংপূর্ণ ভোগিনা কা-ख॰ भाष्म विका खख॰ मृत् ॥ সংহত চাস্ফুটিতাপ্ত রক্তশ্ম ध्यम्क होत्रकः। त्रकान्न शक्रय-শ্বাক্র কর্ণাঃ স্যুঃ পাপ মৃত্যবঃ।। ইতি পাৰুডে ৬৬ অধ্যায়ঃ 🛭 # 11 त्काशाखनग्रवर्खन • स्था 1 मार्क्ट ७ ७ वाह । इंडि अंडि-জ্ঞায তদা নরিব্যস্ত সুতো দমঃ ৷ কোপামৰ্য বিবৃত্তাক্ষঃ শাশ্ৰ মা-বৰ্ত্ত্য পাণিনা ৷৷ হাহতোশ্মীতি পিতর খ্যাত্বা দৈব বিনিন্দা চ া প্রোবাচ সম্ভিণঃ সর্বানানিনা-ষ পুরোহিত ।। ইতি মার্কণ্ডেষ পুরাবে শেষাধ্যাयः।।।।। অসঁগ शात्र कल रथा। मानशर्मा। কেশ শ্বঞ্জ পার্যতা মগ্র্যা ভব-তি সন্ততিঃ। 🐠। তস্য ক্ষৌর करमा यथा। वंद्राह्यूतावः । या-

खंदर्भ कार्रिया नथरहर मनखन्नः। गाछिनः। क्रमण्याकक्रिन् स्थानि वाश्रीक निथावर्जः। ইक्रिक्षक्रद्वः।।
श्राक्षम्भी जी श्रक्षम्यकानाती।
क्रथ्मम्भी जी श्रक्षम्यकानाती।
क्रिश्मम्भावन्यः।
क्रिश्मम्भावन्यः।
क्रिश्मम्भावन्यः।
क्रिश्मम्भावन्यः।
क्रिश्मक्षम्यः।।
क्रिश्मक्षम्यः।।
क्रिश्मक्षम्यः।।
क्रिश्मक्षम्यः।।
क्रिश्मक्षम्यः।।
क्रिश्मक्षम्यः।।

श्रिक (सिनी।।

गामः जि क्ष अर्थिनिकः।

इतिम् अर्थिनिकः। ইতাম तः।।

गामः प् श्रिमात्रकः।। काकिनः।।

क्ष्मात्रकः।। काकिनः।।

क्ष्मात्रकः।। काकिनः।।

क्ष्मात्रकः।। इतिहर्नः। ইতি মে
मिनी।। धूख्रः॥ भीन् वृक्षः॥

गामाकः। ইতি ताজনির্ঘনিং॥।

भग नकवृक्षः॥ भग्न ज्रुनः। ইতি

विश्वः॥ ॥ गामवस्त्रमः।।

क्ष्मानि क्ष्मवः भीतिनीतः नः

स्राम् ताह्यः। विश्वाक्षनाजि

जुकारि वन देखत्व बाक्नाः ॥ निवक्षे यम देवशायन ताम वन क्ष्याः। भनिः क्रशमका कानी কলি কোল বদাৰুরাও।। কেশ কজ্বল কন্ত্রী রাজপট বিদু-রজ'। বিষ কোষ স্বস্থ শক্তা-श्वक्र भाभ छत्या निमाः।। यत्री পক্ষ মদাভোধি যসুনা ধূম কো-किलाः। शालाकृलामा ७४१-भा कर्भः थक्षन क्वित्नाः॥ শবল তাল তাপিঞ্জ তিলেন্দী-বর বল্লখঃ। রসবিজ্ঞ শৃঙ্গারৌ किंग्सि श्रीनिका।। নীলী জয়ুফল মুম্ভা কাক ফ্ল-ত্যা करीर्खयः। जिमक्राया गः कात्रात थनास्त्रः कत्रनाम्यः ॥ ইতি কবিকল্পলতায়া ২ শ্লেষ স্তবকে ৪ সমূমণ।।

শ্যামক॰ ক্লী রোহিযভূগ•। ই.ত রাজনির্ঘন্টঃ।।

শ্যামকঃ পু॰ শ্যামাকঃ। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ ।।

गागकर्थः भू॰ प्रमृतः । ইতি

हलायुधः ॥ निचः ॥ शक्तितिन
यः । ইতি নীলকঠশকদর্শনাৎ

गागकन्त স্ত্রী অতিবিধা। ইতি

রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

गामकाका जी गलपूर्व। रेजि क्राक्षमिर्यकः ॥ भागवादिः जी गलम्बा। देखि े त्राकविर्यकेः ॥ भगमगद्यः प्र जमानवृष्यः। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। भागमनः शुः क्रक्रवर्गः॥ शिक्षनः । ইতি स्मिनि ।। क्रकश्चनवि ত্রি। ইত্যমরঃ।। भागमनरूषा जी एका। देखि রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ শ্যামলভা স্ত্ৰী স্বনামখ্যাতলভা । তৎপর্যায়ঃ। গোপী গোপা পোপবল্লী সারিবোৎপলসারি-বা। অনন্তা শারিৰা শ্যামা-श्राक्षे गामनाशस्य ॥ देखि

वा। अनु भारता भागाश्रकी भागानाश्वास्त ।। इंडि
भक्त कावनी ।। अभि हा का निभी महाभागा मूल्टा हु-भनमातिया। भीष्मूना ह भा-निभी ममूत्रविष्मा ह मा।। त्रज्ञाना ।। त्राक्षिपिक्षे अ-भर्याय श्रमी मातियामक ज-स्विती ।।

শ্যামলা দ্রী পার্বতী। শ্যামণ শ্রীক্লকণ লাভি দদাতীতি ব্যুৎ পত্তি সিদ্ধা। ইতি কেচিৎ ॥ অশ্বগন্ধা।। কটভী॥ জমুং ॥ कल्दी। रेणि तालिंगिका। भगमिलका खी नीलीक दालिंगिका। जालिंगिका। भगमिलकः प्रकारकाः रेणि दालिंगिकः॥

माग्रम्भतः पूर शिक्षकः। यथा । যাবস্তি চ শরীরাণি ভোগা-হাণি মহামুনে। প্রাক্তানি চ नर्वानि श्रीकृष विश्रष्ट विना॥ ধ্যায়ন্তে যোগিন স্তঞ্চ শুদ্ধ জ্যোতিঃস্বৰূপিণ। হস্ত পাদ।-দি রহিত নির্গুণ প্রক্ততঃ পর ॥ दिक्वां ख॰ न मनारख ७४-ক্তাঃ সূত্ৰদৰ্শিনঃ। সতো বভূৰ ভজ্যোতি রহে৷ তেজস্বিন বি-না।। জ্যোতি রভ্যন্তরে নিত্য শরীর শ্যামসুন্দর । ইতি ত্রন্ধ বৈবর্ত্তে গণপতিখণ্ডে ৪১ অধ্যা-यः ॥ 🐠 ॥ अनाकः। नाम्यमुन्दर তে দাস্যঃ করবাম তবোদিত• । দেহি বাসা সি ধর্মজ্ঞ নোচে-দ্ৰাচ্ছে ব্ৰুবাসহে॥ ইতি শ্ৰীভা-গবতেদশমস্কন্ধে ২২ অধ্যায়ঃ ।। 🛊 ।। ज्यिन ह। मनर्ग ব্ৰহ্মা শব্দরশ্চ সূব্রেঃ সহ। বস-स्त जन्मशास्त्र मर्थमू॰ जात-कार्ठः॥ अमृलाद्गन्निर्मान मः

ৰ্ভূষণ ভূষিত। কিব্ৰীটিন স্ব-**ওলিন** বন্যালাবিভূষিত ।। শধ্য চক্র গদা পদ্ম ধারিণক চতু-र्जूजः। नरीननीतमः भगममून्य-तः मूमदनाहतः॥ देखि बक्तरेव-वर्खि श्रह्मिष्टि ३८ विशायः॥ मागा जी माबिर्वायशी। ज-প্রসূতাকনা।। প্রিয়ক্ষ্ণ। বাস্ত-किः॥ सम्ना।। क्राकिः।। क्रकः बिदृष्टिका ॥ नीलिका । ইতি (यिषिनी ॥ श्रीलूः ॥ (मायलाञा ॥ खडा ॥ इका ॥ अधिका । देखि विश्वः ॥ अपृष्ठी ॥ कसुद्री ॥ बहेशकी ॥ वन्ता ॥ नीवर्य-नर्वा ॥ शिक्षनी ॥ इतिक। ॥ नीलपूर्वा॥ जूलमी॥ शत्रवीः क्षां लीः। जी ॥ हाया ॥ क्रकमात्रिवा। मि॰मशा हेडि व्राक्रनिर्यन्धेः ॥ शक्विवित्नयः । শামা ইতি ভাষা। তৎপৰ্য্যায়ঃ । वज्ञाही २ मञ्जनी ७ ज्ञनाङ्गी 8 मूर्गा ७ प्रती ७ চটका १ কুষণ ৮ পোতকী ৯ পাণ্ডবিকা ১০ ৰামা ১১ কালিকা ১২ শি-তিসিম্বিনী ১৩। ইতি রাজ-निर्वकः ॥ 🐠 ॥ गामाया छ ९-পত্তিৰ্যথা। ভতঃ সা কালিকা

मिती (याभनिजा जगमरी। भूई ত্যক্তসতীৰপা জন্মাৰ্থ মেন का॰ यत्यो।। नगयनान्बत्यव त्यनकाकठेटत निवा। मर्डूष ह সমুৎপদা সা লক্ষীরিব সাগরাৎ ॥ वमखमभरष (एवी नवभा) मृ গযোগতঃ। অর্জরাক্রৌ সমুৎ-পদা গঙ্গেব শুনিষগুনাৰ ৷৷ তত ন্তস্যাম্ভ জাতায়া• প্ৰসন্ধা শ্চাড-वन मिनाः। जानुकूरना वरवी वायू গম্ভীরো গান্ধলঃ শুভঃ ॥ বভূব পুষ্পবৃষ্টিশ্চ ভোষবৃষ্টিঃ পরা ভ-था। জত্বলু म्हान्नयः माञ्जा क्रग-জ শ্চ ঘনা ঘনং ৷৷ তস্যান্ত জাষ-गानाया॰ मर्ब॰ खाइग मुश्रमाञ । তাম্ব দৃষ্ট্যা **মথাজাতা॰ নীলো**ৎ-পলদলানুগাং ৷৷ শ্যামাং সামে नका (पती यूप याशा जिहिर्विजा। দেবাশ্চ হর্ষ মতুল প্রাপু স্তত্ত मूर मूरः ॥ जूक्तू छ। मखती-ক্ষে শন্ধর্বা শ্চাষ্সরোগণাঃ। তান্ত नीत्ना ६ भनम् नगामा १ हिम्बर छः मूठा ।। कामीि नामा हिमदा-नाजूशव क्रंड मित्म। वान्नवास्त्र স্বসন্তানা নামা তা পাৰ্বতীতি চ ॥ কালীতি চ তথা নামা কীর্ত্তিতা शितिनिमनी। ইতি कालिकाश्र-

त्राटि ८० जेशायः ॥ 🖚 ॥ जेथ भागा मलाः। की की की हैं हैं ही हो निकरन कालिएक की की की हूँ हूँ ही ही बारा। यथा কালীভন্তে। কামত্রমণ বহি সা-স্থ॰ রতি বিন্দু সমন্বিত । কূর্চ্চযু ঝা তথা লজ্জা যুগল তদনন্তর ।। प्रकित्व कालिक छि पूर्ववी-জানি চোচ্চরেৎ। অন্তে বহি वध् ममा९ विमा त्राब्ही अकी-ৰ্ত্তিতা।। মন্বৰ্থ মাহ জামলে। ক-ক্রোজ্জলৰূপত্বাৎ কেবল মো-कमायिनी ॥ ज्वनार्ग ममारया-গাৎ সৰ্বতেজোমধী শুভা। মা-या बरयन प्राप्तिन मृस्यि ज्ञिजा-ন্তকারিণী।। বিন্দৃনা॰ নিক্ষলত্বা-क्र देकवना कनमायिनी। वीक-ত্রষা শান্তবী সা কেবল জ্ঞান **हि** ६ कवा ॥ भक्ती क दर्यात्र गमत्राणि अताधिनी। लब्जा-বীজন্বযেনৈব সৃষ্টি স্থিত্যস্তকারি-**गी ॥ मट्याधन भट्यटेनव महा** मनिधिकातिनी। यार्या जगठा॰ মাতা সৰ্বপাপ প্ৰণাশিনী॥ 🛊 ॥ অস্যাঃ পূজাপ্রযোগঃ। প্রাতঃ-क्रुजामिकः क्रुषा मखाठमनः अ-ৰ্যাৎ। যথা। কালিকাভি ব্ৰি-

ভিঃ পীয়া কাল্যাদিভি রুপম্পৃ-শেৎ। দ্বাভ্যা যোগ্ঠে দ্বিরুম্বজ্য टेठरकेन कालरय९ कर्रा गु-খ্যাণেকণ শ্রোত্র নাভ্যুরস্কণ ज्रुको क्या । जा**हरेगा**व॰ বেৎ কালী বৎসরাত্তাণ প্রগশ্য-তি।। ক॰ শিরঃ। তদ্যথা। জी-মিতি ত্রিরাচামেৎ। ওঁ কাল্যৈ नगः क्लानिता नगः ইতি ওপ্তৌ षि क्रमृरक्ष । ७ जलारिय नमः रें ठि कत्र॰ कोन्टरयथ ॥ ७ जुरू **ब्रह्मारेय नमः ইতি मूर्था . ७ वि** রোধিন্যৈ নমঃ ইতি দক্ষিণনাসা যাণ। ওঁ বিপ্রচিত্তাবৈ নমঃ ইতি বামনাসাধা । ওঁ উগ্রাটেষ্ নমঃ ওঁ উগ্রপ্রভাষে নমঃ ইতি নেত্র-रकाः। ७ मीखारेय नमः ७ नी লাবৈ নসঃ ইতি শ্রোত্রযোঃ 1 ওঁ ঘনাবৈ নমঃ ইতি নাভৌ। ওঁ বলাকাষে নমঃ ইতি বক্ষসি। ওঁ মাত্রায়ৈ নমঃ ইতি শিরসি। ওঁ মুজাবৈনমঃ ওঁ মিতাবৈ নমঃ ইত্য°সধোঃ। ইতি মন্ত্ৰাচমন°।#। ততো ভূতশুদ্ধান্ত বিধায় মাষা वीट्यन रेथाविधि अनायाम्बयः क्र्या । 🛊 ॥ अया मिना मः। ৰথ।। অস্য মন্ত্রস্য ভৈর্ব ঋষি

क्रिक् इटमा मिक्निका मिन বতা হ্রাঁ বীজ' হুঁ শক্তিঃ ক্রীঁ कीलकः भूक्षार्थ हेजूकीय नि कार्थ विनिर्यागः। তथा ह का-लीकरम। कीलकः ठामावीकः देखतर्गम समस्य नमः। मूरथ छे-िकक्ष्रमाम नगः। समि मिकन-কালিকাবৈ দেবতাবৈ নমঃ। গু-एक है। वीकायनमः। शामत्याः ষ্টু শক্তবে নমঃ। সর্বাঙ্গে ক্রী কীলকায় নমঃ।।ঞ্চা ততঃ করাঙ্গ-ন্যাসৌ। তদুক্ত॰ কালীতন্ত্ৰে অঙ্গ-न्याम कत्रन्याटमी यथायमञ्जिन-ষতে। ভৈরবো ২সা ঋষিঃ প্রো-**ट्या উक्षिक् इन्न** উनाश्रवः ॥ त्न-বতা কালিকা প্রোক্তা লজ্জা বী-**जब वीजकः।** कीलकः ठामावी-জ॰ স্যাক্ততুর্বর্গফলপ্রদ॰।। শক্তি-क कर्फवीक मानिक का मत-विशेष कियार्थ निर्यागः गा-দিত্যাদি তেন মায্যা।। 🛊।। যড-त्रनात्रः। यज्मीर्य जाका वीटक-न श्रन्तारमान कन्नरय । वीत-তন্ত্রেপি। দীর্ঘ ষট্ক যুভাদ্যেন প্রণবাদ্যেন কল্পষেৎ। ইতি বা । তদ্বধা। ওঁ ক্রঁ। অঙ্গুণ্ঠাভ্যাণ নমঃ

७ँ को ँ उद्धनी छा। श्राहा। ७ँ क् यश्याणा॰ वयहे औँ व्यापनि কাভ্যা॰ হঁ। ওঁ ক্রৌঁ ক্রনিষ্ঠাভ্যা॰ विषष् उ कः कत्र व शृक्षानाः करे। এव॰ अनुसानिष्। ও कैं। श्रमयाय नमः रेजामिः। এवः अँ হু। অঙ্গুড়াভ্যাণ নমঃ ইত্যাদি বা ।।ঞ্চা ততো বর্ণ ন্যাসং। অ॰ আ॰ इ. ब. ह. ह. स. स. १ जमः इंठि ऋमर्ष । এ॰ अ॰ उँ के बन्धः क् थ ग म म नमः ইতি দক্ষিণ বাহো। ७° ठ॰ ছ॰ জে বাং ঞাং টং ঠং ডং টং নমঃ ইতি ৰাম বাহৌ। व ত थ प দ ধং নং গং কং বং ভং নমঃ ইতি দক্ষিণ পাদে। य॰ य॰ র॰ ল॰ ব॰ ण॰ यः मः इः वः कः नमः रे ि वान পাদে। বিৰূপাক্ষমতে সবিন্দু-त्रषः नामः। यथा वौत्रज्ञ ष আণ ইণ ঈণ উণ উণ ঋণ ৠণ ৯ণ ই देव ऋष्टयं नाटमिष्ठापि । श्रून र्निर्विन् र्यथा। ज जा रे में छे छे स क्ष ५ दू देव समय न्यूटमिन णानि। किंग्र मितमून् वा नारम प्राचान् निर्विकृत् वाथ वर्गकान् ইত্যাচার্য্য পরিগৃহীত ভৈরবীয वाकामू ७ व (भव यूक शक्षा जथ

विधिनामः। छम्कः वीत्रज्दाः। কেবলা॰ মাতৃকা৽ ক্রছা মাতৃকা৽ তারসংপুটা ।। মাতৃকা পুটিত তার ন্যাদেৎ সাধকসত্তমঃ । শ্ৰীৰীজপুটিতা তাম্ব মাতৃকা পু-টি্তম্ব তৎ।। কামেন পুটিতা॰ দেবীণ তৎপুট কাম মেব চ। শ-ক্তাা চ পুটিতাং দেবীং শক্তিঞ্চ তৎ পুটা॰ नारम् ।। क्वी॰ बमुक्ष পুনর্নাস্তা ঋ ৯ ১ ঞ পূর্বব । মূলেন পূটিতা দেবী তৎ পুট মন্ত্র মেব চ।। অনুলোম বিলো-त्मन नाखु। मञ्ज॰ यथाविधि। मृ-নেনাঊশত পর্য্যাদ্যাপক তদ-নম্ভরণ ৷৷ যথা ওঁ অণ ওঁ এবং মা-তৃকা পুটিততারণ। এবং শ্রীবীজ পুটিতা তা । তৎপুটিত শ্রীবীজ ৷ এবং কামেন পুটিভাং মাতৃকাং । মাতৃকা পুটিত কাম। এব॰ শক্ত্যা পুটিভা মাতৃকা মাতৃ-কা পুটিভা॰ শক্তি॰ ন্যমেৎ । ज्या को॰ षमुक स स ५ ५ ५ ६ পূৰ্বব । তৎ পুটিতা মাতৃকা ন্যদেৎ। মাতৃকা পুটিতঞ্চ তৎ। মন্ত্রপুটিতা॰ মাজ্কাণ তৎপুটিত मनु । भून तन् दलाम विदलारमन কেবল মাতৃকাস্থানে ন্যস্য যু-

লেনাফশতেন ব্যাপক সন্মাৎ। অষ ন্যাস স্তারায়া অপি কার্য্যঃ । ইতি গুপ্তেন দুর্গাষা অঙ্গবোচা প্রকীর্ত্তিতাঃ। তারাযাঃ কালি-কাষাশ্চ উন্মুখ্যাশ্চ তথা গরে।। এতস্মিন্যাসবর্ষ্যেচ সর্ব॰ পাণ প্রণশ্যতি ॥ 🛊 ॥ তত স্তব্ধ ন্যাসঃ । यथा मृल॰ ত্রিখণ্ড॰ বিধায প্রথম-খণ্ডান্তে ওঁ আত্মতব্বাষ স্বাহেতি পাদাদি নাভিপর্যান্ত । দ্বিতীয-খণ্ডান্তে ওঁ*বিদ্যাতত্ত্বাৰ স্বাহা ইতি নাভ্যাদি হনযান্ত । তৃতী-ষখণ্ডান্তে ওঁ শিবতত্ত্বায় স্বাহা रेि श्रम्यामि भिद्रः পर्याखः ना-সেৎ। তদুক্ত স্বতন্ত্রে। মূলবিদ্যা जिथकाटख अनवाटेमा यंथाविधिः। আত্মবিদ্যা শিবৈ স্তব্বৈ স্তত্ত্বন্যা-**স•স**মাচরেৎ।।#৷৷ অথ বীজন্যা-मः। जनुकः अभातीकत्त्र। बन्धः त्रस्तु क्यर्वार्म्यस्य ननार्धे नाजि দেশকে। গুছে বক্তে চ সর্বাকে সপ্তবীজ জনাম্যসেৎ।। যথা चामावीकः बन्ततस्तु विजीयवी-कः क्राम्या ठ्ठीयवीकः ननाटि হতৃথবীজ নাভৌ পঞ্নবীজ খ্বহে ষঠবীজ বক্তে সপ্তমবীজ न्दारका जञ्जय कामा ।। सा

ভতে মুলেন সপ্তথা ব্যাপকন্যা-मः कृषा यथाविधि मूखाः अपना शास्त्र । यथा कानीज्या करा-লবদনা পোরা মুক্তকেশী চ-তুৰ্জা । কালিকা দক্ষিণা দিবাা: মুখনালাৰিভূষিতা: ॥ मनान्ध्वनिद्धः थन्न वामारशार्षु कत्रा बुकाः। अञ्चरः वत्रप्रदेशव मक्किरवार्क्याथ**णाविका** ॥ यहा-মেঘুপ্রভা শামা তথা চৈব দিগম্বরী । কণ্ঠাবশক্তমুগুলী গলক্রধিরচর্চিতা ।৷ কর্ণাবত-শতানীত শবযুগ্ম ভমানকা॰। ষোরদফ্টা করালাস্যা পীনো-মতপ্ৰোধরা ।। শ্বানা কর-সংঘাতৈঃ ক্লতকাঞ্চীণ হসমুখীণ। সৃক্ষৰ গলজক্তথারা বিছ্নুরি-তাননা ।। ঘোররাবা মহারৌ-षी॰ भगानावयनामिनी॰। वा-লাক্ষওলাকার লোচন ত্রিভ-यात्रिका॰॥ मञ्जता॰, मक्निनद्या-शिगुक्नामधिककाष्ठ्रयाः । **भव**-क्य महारमव समस्यायित मः हि-তাণ।। শিবাভি র্যোররাবাভি শ্চ-जूर्षिकु ममन्निजाः। महाकारनः ন চ সম• বিপরীতরতাতুরা•া৷ সুখপ্রসন্নবদনা প্রেরানন সরো-

রুহাণ। এবং **সঞ্চিন্তবেৎ কালী**। সর্বামার্থ সিদ্ধিদাং॥ 🛊॥ শব-যুগ্মেতি যোর**বা**ণাবত সেতি প্রে: তকর্ণাবতংসেতি চ। শঙ্গস্ত পক সংযুক্তবাণ কর্ণবিভূষিতা মিতি। বিগভাসুকিশোরাভ্যা• ক্রতকর্ণা-বত সিনী মিতি চ দর্শনাদুভষ মে-বপাঠঃ।। 🟶 ।। ধ্যানান্তর স্বতন্তে । অঞ্জনাত্রিনিভা॰ দেবী॰ করাল-वमना॰ भिवा॰। मुख्यालावली-কীৰ্ণাণ মুক্তকেশীণ স্মিতাননাণ।। मशकाल सम्दर्शा अस्टिंग शी-নপষোধরা । বিপরীতরতাস का॰ यात्रमः खुा॰ निरंतः मर ॥ नागयख्डाপवीजाग्रा॰ ह्यार्कः क्रिक्टा भवा । भवी लक्षात्र युक्ता थ মুঙ্মালা বিভূষিতা ।। মৃতহস্ত मररेमुख दक्षकाकी॰ पिग॰ख-কা । শিবাকোটি দহদৈ স্তু যো-গিনীভি র্বিরাজিতা ।। রক্ত-পূর্ণ মুখান্ডোজা॰ মদ্যপানপ্রম-ত্তিকা । বহ্নার্ক শশিনেত্রাঞ্চ রক্তবিষ্কুরিতাননা ।। বিগতা-সুকিশোরাভ্যা• ক্লভকর্ণাবভ•-मिनी। कश्रीवमक मूखानी भ-লক্রধিরচর্চিতা ।। শ্বশানবঙ্কি-মধ্যস্থা॰ অন্ধ কেশব বন্দিতা।

সদ্যঃ ক্তুশিরঃ খন্ন ব্রাভীতি क्रायूकाः ॥ 🟶 ॥ शानाख्रतः त-হস্যে। যথা। শবাৰ্টা॰ মহাতী-मा॰ यात्रमः कुं। इमगूथी। ठ-তুর্ভুজাণ ধন্দ মুও বরাভযকরাণ श्रवाः ॥ मुखमानाधद्राः तिवीः वनक्किसा मिगवती। এব म-किस्टरिष कामी॰ यागानामयः बामिनी ।। #।। এव धाषा মানদৈঃ সংপূজ্য শম্ভাপন क्यां । यथा। खवारम ज्रमो ष्ट्रॅं कात्रगर्ड[॰] जित्कान॰ विनिश्र অব্যপাত্র• সংস্থাপ্য মূলেন শুদ্ধ-जनामिना नशामिनाव मानृर्गः गन्नामिक• मन्ना ७ गत्त्ररह्णा-**मिना ठौर्थ नावाञ्च मः वङ्गियः** লাষ দশকলাত্মনে নমঃ ইত্যা-**धातः। जः সূर्यामखनाय बामगकः** वाषात नमः इंडि मध्यः। উ॰ সোমমণ্ডলাষ ষোডশকলাত্মনে नमः रेजि जलः मःभूका। उँहाँ श्रमभाष नगः। ७ है। नितरम **याहा। ७ँ हुँ मिथारेय वय** हे। ७ँ रेहुँ কবচাষ হুঁ ইভাগীশাসুর বাযুষু । অগ্রে ওঁ হ্রে নৈত্রত্রয়ায বৌষ ট্। চতুর্দিকু ওঁ হুঃ অস্ত্রায কট্। ইতাভার্চ্য। তদুপরি মৎসা মুক্ত

যাচ্ছাদ্য মূল দশধা জপ্তা বেনু-সুত্রবা অমৃতীক্তা অন্তেণ সংক্ का जृष्टिनी सानिमूट अपना তজ্জল কিঞ্চিৎ প্রোক্ষণীপাত্তে নিঃক্ষিপ্য সুলেন তেনোদকেনা-দ্মান•পুদ্ধোপকরণঞ্চাভ্যুক্ষ্য পী-ঠপুজা নারভেৎ।। 🟶 🛭 অস্যাঃ शुका रखः। जातो विमू श्रवी-জ ভুবনেশীক্ষ বিলিখ্য তত স্ত্রি-কোণ তদ্বাহে ত্ৰিকোণ চতুষ্টৰ• ৰৃত্ত মন্টদল পদ্ম পুনৰ্ত্ত চ-তুর্ধারাক্সক ভূগৃহণ লিখেৎ । তদুক্ত কালীতত্ত্ব। আদৌ ত্রি-কোণ মালিখ্য ত্ৰিকোণ তৰ্ছ র্লিখেৎ। ভতে। বৈ বিলিখেমন্ত্রী ত্ৰিকোণত্ৰষ মুক্তমণ।। ততো বৃত্তণ यगामिथा निर्थमखेनमः छठः । वृक्त विनिथा विधिवनित्थिख्भूत त्यकक ।। जभातीक तत्र। नत्था जू বৈন্দৰ চক্ৰ• বীজ সাযা বিভূষি-ত° ইতি ॥#॥ অত্র বিশেষাধারো ষুওমালাযা। তারুপাত্তে কপা-লে বা শাশান কান্ত নিৰ্মিতে। শনি ভৌমদিনে বাপি শরীরে कृष्ठमः ज्या । ऋर्ष द्योत्भा १ थ লৌহে বা চক্রণ কার্য্যণ বিধানতঃ 114।। যন্ত্রান্তর মাহ তন্ত্রে। শক্ত্য-

গ্নিজ্যাঞ্চ ষট্কোণ শক্তিভিশ্চ ন-ৰাত্মক । পদ্মে বসুদলে ভূমিপূ भ्रजूबाद्रम•बूट्छि । • ।। शीठ-পূজা- ততঃ সর্ব্যাদাধারশক্তি-পূৰ্বক। প্ৰহ্নতি কমঠকৈব শেষ পৃথী তথৈব চা৷ সুধাষুধি মণি-দীপ চিন্তামণিগৃহ তথা। "ম-শান• পারিজাতঞ্চ তমুলে রত্নবে-मिकाः॥ ভरम्याशति गरनः शीर्रः नारमः नाधक मखमः। हजूर्षिक् बूनीन् स्मबान् निवाक्त नवमूख-কান্।। ধর্মাদ্যধর্মাদী শেচত্যাদি হ্রী জ্ঞানাত্মনে নমঃ ইত্যন্ত• সংপূজ্য কেশরেষু পূর্বাদি ক্রমেৰ शृक्रत्यः । इन्हा छाना किया टेंच्य कामिनी काममासिनी। त-**छी त्र**िधिया नन्ना मस्य टेहव मत्नात्रनी।। जर्बब व्यवकाति न-মোম্ভেন পূজ্বেৎ। তদুপরি ফ্লোঃ ममानिव 'यहारक्षक श्रेषांमनाय নমং। াঞাততঃ পুন ধ্যাত্বা পূজা-अजावानीय मृजयस क्रिक मूर्छा-वाबाहरम्य। ७ मारविन जिल्न সুলভে পরিবার সমন্বিতে। যাব-দ্বাণ পুৰুষিব্যামি ভাবৎ দ্বণ সু-স্থিরা ভব।। ততো মূল মুকার্য্য व्यमूकीरमवि देशवर देश छि

रेर मित्यरि रेर मिक्साय ইহ সমিহিতাভব। ততো হুমি **जावक्षकी अन्नमद्यः नक्नीक्रज** ধেনুসুত্রধা অস্তীক্ত্য পর্মী-করণমুদ্রযা পরমীক্ষত্য ভূতি-नगकिर्वि शामियुकाः अपनी প্রাণপ্রতিষ্ঠাণ বিধাব মূলেন পাদ্যাদিভিঃ পূজ্বেৎ। ভতে मृल मूक्तार्या এতৎ भागा ममूकः प्तिवर्णात्व नमः। अव मर्याः वार् । आहमनीयः प्रथा। जानीयः निः विषयाभि। भूनताठयनीयः अश । এব পদ্ধো নমঃ। গুতানি পু-ष्णानि वोष्ट्रे। ততো मृत्नन शक भूमाञ्चलीन मचा धूम मीरमी मना । वनन्भेजीकां मि श्रेन मूल मूकार्या এय शृर्णा नमः। দীপ মন্ত্ৰস্তু। সূপ্ৰকাশো ৰহাদী-ণঃ সৰ্বত স্তিমিরাপহঃ। সবাহা-ভ্যন্তর॰ জ্যোতি দীপো ২য° প্র-তিগৃহতা ।। মূল মুচা 🖚 এব मीरा नमः। **७७ ७ फ्र**यंनि **সম্ভ্রমাতঃ স্বাহা ইতি যণ্টা॰ স•** পূজ্য বামহক্তেন তা॰ বাদয়ন্ নীচৈ ধূপি দন্ধা দুফিপৰ্যান্ত দী পণদদাৰ। ভতো মুলেন পুষ্পা-জ্ঞলি ত্ৰষ্ণ দত্বা যথোপপদ নৈ-

त्नाः मेषा व्यावत्र भूकाः व-রণ তে পুজ্যানি। ইজ্যাজ্ঞা গৃ-रीषा क्लादत्रवागामिरकारवत्रु उ हाँ सम्याय नयः। ७ ही नितरम यारा। ७ द्वँ निशास वर्ष। ७ द्विः कवहाय हूँ ॥ ७ द्वीँ त्न-बबराग वीयऐ। ठेजूर्फिक् ७ हुः অন্তাৰ ফট্। বহিঃ ৰট্কোণে ওঁ कारेना नयः। गर्बे अश्वानि न-लाटखन। कथानिटना समादेष **ज्यूजनारे**य विद्याधिरेना विश्विति-ভাবৈ উগ্রাবৈ উগ্রপ্রভাবৈ দী-देश नमः। अव श्वनादेश वलाकादेश ইতি দিতীৰ ত্ৰাসে। এবং মাত্ৰা-বৈ মুদ্রাবৈ মিতাবৈ ইতি তৃতীৰ ত্ৰ্যস্থে। সৰ্বাঃ শ্যামা অসিকরা মুখ্যালা বিভূবিতাঃ। ভৰ্জনী॰ বামহস্তেন ধার্যস্ত্যঃ শুচিম্মিতাঃ ।। দিগন্বরা হসমুখ্যঃ স্ব স্ব বাহন ভূষিতাঃ৷ এবং ধ্যাত্বাৰ্চবেৎ॥ঞা । ততো ২উপত্ৰেষু পূৰ্বাদি ক্ৰমেণ ৰাহেশ্বৰ্য্য চামুখাবৈকোমাৰ্ব্যে অপরাজিতাদৈ বারাছৈ নার-সিংহাৈ এতা গন্ধাদিভিঃ পূজ

ति । भवाता श्राणामि ति देखतान भृक्तव । एका मृत्व स भूभाक्षण जय पश्च भाषा। पिना महाकाल भूकत्य । ॥ ।। छमा शान । महाकाल यक एकता पिक्त श्रुवर्वक । वि-खुउ पथ भर्षे । या मुहर्मा वृष्कि । वि-मुश भिक्ष ।। वा मुहर्मा वृष्कि ।

ল প্ৰক্ৰবাসস। ত্ৰিনেত্ৰ মু-জ্ঞকেশঞ্চ মুখ্যালাবিভূবিত ।। ক্টাভার লসচত্রথও নুগ্র জ विविज्ः। তথা চ ज्यातीकरम। मिया छ प्रकित्व ভাগে মহাকা-क প্রপূজ্যে । हूँ क्लुँ या রা **লা**• বা• আ• ক্রো• মহাকালভৈ-द्भव गर्वविद्यामानय नानव शौ 🗬 কট্ স্বাহা ইত্যনেন পাদ্যা-দিভি রারাধ্য ত্রি স্তর্গবিদ্বা মূলে-न (परी॰ शरकाशहादेतः शृक-ষেৎ। তথা চ কালীতন্ত্রে। মহা-कालः यटकम्बद्भाद शन्हारमचीः श्रश्करवद्।।।।।कालीकरव्र।क-বচ ক্রেণ সমুদ্ধৃত্য যাঃ রাণ লাণ বা॰ আ• চ ক্রোম্ভতঃ। মহাকা-লভৈরবেতি সর্ববিদ্বাদ্যাশবেতি চ ম নাশবেতি পুনঃ প্রোচ্য মাবাণ नची ममुक्दत्र । कर्षे वाश्या

সমাযুক্তো মন্ত্ৰঃ সৰ্বাৰ্থসাধকঃ।। ততো দেবী খ্যাত্ব। यथाশক্তি জপ্তা গুৰুত্যাদিনা বামহন্তে জ-প• সমর্গ্য আত্মসমর্পণ কর্যাৎ । ততঃ স্তম্ভা প্রদক্ষিণীক্তা অ-ক্টাঙ্গ প্ৰধাম• কৃষা শ্ৰীজগমঙ্গল• নাম কবচ•পঠেৎ ৷৷ 🟶 ৷৷ ততে৷ ञावत्रगरमवञा मिवारङ विरनाभा সংহার মুক্তবা অমুকী দেবি ক্ষম-ষেতি বিসৃজ্য তত্তেজঃ পুম্পেণ नमः यसम्पादताशरय । উত্তরে শিখরে দেবি ভূম্যাণ পর্বত বাসি-नि। उत्तरमानि मम् ९ भरत भक्त **प्रिक्त मनाखत्रः ॥ ३**७ि मट्यन ॥ #11 ७७ खटेंबर्यमाः किश्वि मूक्टि-ষ্টচাণ্ডালিন্তৈ নমঃ ইতৈয়শা-ন্যা॰ দিশি দত্বা শেষ মিফেভ্যো দত্বা কিঞ্চিৎ স্বীক্ষত্য পাদোদক পীত্বা নির্মাল্য শিরসি বিধৃত্য यथक्र• विरुद्धि ।। 🟶 ।। ততে। ষম্ভকো• বামহন্তে ক্লছা সব্য-रुख कनिष्ठेया मायावीजः विनि-খ্য তথা তিলক জর্য্যাৎ। তথাচ। বামে ক্লম বন্তলেপণ মায়াণ সব্য कनिष्ठेश। दिनिश जिनक अ-ৰ্ব্যাৎ মন্ত্ৰেণানেন সাধকঃ॥ ওঁ ৰ ৰ স্পূশামি পাছেন ৰো মাণ

পশ্যতি চক্ষা। স এব দাসতা याज् ताकात्ना मुक्तमभावः॥ क পকালে ভু কপু রফুক্তা জিহ্বা কা-र्गा। कर्ण ताला मन जिस्ता क-র্ভব্যা জপকর্মণি। ইতি বিশ্বসার ৰাক্যাৎ ইক কাম্যজ্প ইতি তত্ত্ব । ততাে দূলেনাফোতর শতাভিমন্ত্ৰিত পুষ্প চন্দনঞ **धृषा देव त्वाका वर्ण मान दय** । সর্বসিদ্ধিযুতো ভূদা ভৈরবো বৎসরান্তবেৎ। অস্য পুরশ্চর-ণ লক্ষ্য জপঃ। তথা চ কালী-তন্তে। লক্ষ মেক জপেমন্ত্র হ-वियाणी मिवा एकिः। ब्राब्बी णशृल**भूद्रामाः भरा।या॰ नक**ः মানতঃ।। ব্যবস্থা মাহ স্বতন্ত্রে। দিবা লক্ষণ শুচি ভূঁত্বা হবিষ্যাশী জপেনরঃ। ততন্ত্র তদ্দশাণশেন হোমযেৎ হবিষা প্রিষে ৷ অত্যা-त्रमा कालाखन्न गार नीवमानत्र-তে। লক্ষ মেক জপেমন্ত্ৰ হবি यानी मिवा खिहिः। अखिहरू তথা রাত্রৌ লক্ষ্যেক তথৈব চ া। দশা॰শ॰ ছোমযেন্মন্ত্রী তর্পস্থে-দভিষেচবেদিতি সাম্পুদাষিকাঃ । वञ्च उञ्च अभादीकरम् । लक भिकः ज्ञानिकाः रिकानी मि-

বা শুচিঃ। রাত্রৌ তাষু লপুরাসাঃ শयगयाः वक्सानजः॥ द्राजि-জপে তু কালো মুখনালাৰা^{*} ৷ গতে তু প্রথমে যামে তৃতীযপ্রহ-त्राविष । निमायार्<mark>यं अ</mark>जश्चरान ব্লাত্রিশেষে জপেন্ন তুম এবং ল-ক্ষদ্ধ জপ্তা তদ্দশাংশেন মন্ত্ৰ-विष्। अयुज् रहामस्यत्मवि मि-বারাত্তি বিভেদতঃ ৷৷ তেন দিবা লক্ষণ জপ্তা তদ্দশাংশং হোমং त्रयाथ। त्रांखी नक ज्ञुन তদ্দশাংশং হোমং স্ব্যাদিতি র-হস্যার্থঃ। দ্বিজাতীনাঞ্চ সর্বে-ষাণ দিবা বিধি রিছোচ্যতে । শূজাণাঞ্চ তথা প্রোক্তণ রাত্রা-বিষ্ট মহাফল ৷৷ অন্যত্ৰ চ ৷ দিবৈব প্রজপেন্মন্ত্রণ নতু রাত্রৌ कर्नाहन ॥ 🗱॥ अथ मखराजनाः। कौँ। २१ कौँ कीँ कीँ। २१ অনযোঃ পূজাপ্রযোগঃ সর্বং পূ-**ईव**९। धान जिल्ला वत्र हा শবাৰচা মহাভীমা ঘোরদ खुं। वत्रश्रमाः। शामायुकाः वि-নেত্রাঞ্চ কপাল কর্তৃকাকরা ।। মুক্তকেশীণ ললজ্জিহ্বাণ পিবস্তীণ ৰূধির মুহঃ। চতুৰাহযুতা দে-ৰী॰ বরাভ্যকরা• স্মরেৎ ॥ অন্-

योः भूतम्हत्वन लक्ष्यभा ७ है। है। वृ वृ की की की मिक्टन कानिटक की की की हूँ हूँ हीँ होँ। २३। जमाः शृ-कामिक मिक्नाव कार्याः। शुत्र-**भ्रत्भः लक्ष्यक्रमः ॥ 🛊 ॥ ७ है** हीं हूँ हूँ की की की पिक (नका निरके को की की दू दू हीँ दीँ काशा २०॥ 🛊 ॥ हेाँ हीँ हूँ हूँ कीँ कीँ कीँ मिक्टन-कालिए की की की हैं हैं हीँ होँ यहा । २२ ॥ ॥ ॥ हीँ होँ हूँ हूँ लीँ कीँ कीँ मिक्रानिक की की की **टूँ ट्रैँ ट्रैँ** । २•। शान शृंकामिक॰ मिक्कणावर ॥ 🛊 ॥ कीं कीं कुं। ७॥ 🟶 ॥ ७ হীঁ জীঁ মে স্বাহা। ৬। অস্যাঃ পূজা প্রযোগঃ। অস্য ভৈরব श्रीव विंतारेष्ठ्नः मिक्तकानी ब-ক্ষৰূপা ভূবনেশ্বরীদেবতা নি-**ज**वीजः वीजः वज्जावीजः नः क्तिः। दर्वनामापि पिक्वशावः। ধ্যানন্ত। ,খজোডিফেন্পুখওসুব-দসূতরসাপ্লাবিতাঙ্গী ত্রিনেত্রা স वा शाली कशालाकानम्क गर्था मूक्कर्कनी शिवस्त्री। निध-।

द्धावक्षकाकी मनिमसमूत्रहारेका ৰ্বুতা দীগুজিহ্বা পাৰামীলোৎ-পলাভা রবি শশি বিলসৎ স্বও-वानीक्शामा।। अव शाया मिक-ণাবৎ সৰ্ব কাৰ্য । পুরশ্চরণন্ত একবিশভিসহসূত্রপঃ ৷৷ঞা ক্রী री ही । था । । की की की यारा । । । । । की की की कर्षिशा । ७॥ 🛊 ॥ की की কীঁকীঁকীঁকীঁ সাহা।৮।। #।। अ नमः की अ नमः की का नि-কাবৈ স্বাহা i ১৪ ৷৷ ঞ্চ ৷৷ এতদ্যাঃ পূজাপ্রযোগঃ। অস্য দক্ষিণামৃ-र्खि भाषाः शंकिष्टमः कानिको-দেৰতা। ধ্যানম্ব। চত্ত্ৰজা হ্ৰ-ফবর্ণা মুখ্রমালাবিভূষিতা। খদ্ধ-क मिक्टन शारनी विज्ञीन्सीवत-দ্বা। কতৃঞ্ খর্পরিঞ্ব ক্রমা-দ্বামেন বিজুতী। দ্যা॰ লিখন্তী॰ জটা মেকা বিজ্ঞতী শিরদাদ্ব-यी।। मूखमाना धता भीटर्स जी-वासा सब हानदाः। वक्तना नान-হারঞ্চ বিভূতী রক্তলোচনা ॥ क्रकवज्रधता किंगा वाग्याकिन সমন্বিতা। বামপাদ শব হৃদি मः इंशि प्रक्षिणः भूमः ॥ विवाशा নিংহপৃঠে তুলেলিছানা শবং স্বয়

৷ সাউহাসা নহাখোররাবস্ত্রা मूजीयवा ॥ शानस्यदः व्यनाद नर्वः मिक्नावः । भूत्रम्हद्रनः लकः हराज्यः। व्यनामाः मञ्जर्भः मंश लक्ष्मभः॥ 🛊॥ की दी हीँ प्रक्रित कानित्क कारा। >> ।। 🗱। की हूँ ही एक्टिन कालिक कर्॥ ३०॥ ॥ जी की हैं हूँ हीँ हीँ मिक्ति की विकास की की हूँ हूँ ही ही बारा। ২০। এতাসাণ দক্ষিণামূর্ত্তি ঋষিঃ भ॰ क्<u>रि</u>क्ता प्रक्रिशका विकार प বতা। অন্যৎ সর্বণ দক্ষিণাবৎ ॥ # ॥ ক্রী স্বাহা। ৩। ভৈরবো-मा अधिः ॥ 🐠 ॥ कीँ कीँ हुँ रूँ दुौँ दुौँ काशा ৮॥ ♦॥ कीँ हुँ हुँ याश। ६। अमा ॥ ॥ कौ पिकत्वकानित्व सारा १२॥ की क् द्री की दू है। याशा 🖢 ॥ की की की है। है। है है की की की की है। है है के बार ३७॥ #।। नमः खें की की कानिकाटेंग आहा। >> ॥ 🛊 ॥ नमः ज। जाँ क्लां क्लां करे बारा

कालि कालि हुँ। 38 ॥ 🗢 ॥ 🐠 তাসাণ ঋষাদিক পূজাদিকঞ मिक्किनावर। भूतम्हत्रनः लक्क्लभः ।। 🟶 ।। অথ গুহুকালিকামন্ত্রাঃ । कीं की की रूँ रूँ ही ही शुर्शकानितक की की की रूँ दूँ दुँ दुँ श्राहा।२১॥ ॥ कीँ दूँ दुँ दुँ श्राहा।२১॥ ॥ कीँ दूँ दूँ दुँ दुँ दुँ दुँ दुँ दुँ दुँ दुँ হীঁ গুছে কালিকে স্বাহা। ১৪ ट्टीँ यारा । १८ ॥ 🛊 ॥ कीँ श्वरः कानित्क कीँ स्राशा २ ।। 🟶 ।। क्वीँ पिक्टिश्वालिटक क्वीँ স্বাহা। ১০ ॥ 🟶 ॥ এতেষা সর্বণ পূৰ্ববং। বলিমন্ত্ৰন্ত। এন্তেহি জগন্মাত জ্জগতা জননি গৃহ গৃহ মম বলি॰ সিদ্ধি॰ দেহি দেহি শब्कर अक्र ज्रू कूँ हीँ है। कि कि कि ए जैं का निकारिये नमें क हे या दा ॥ #॥ यदा अञ्चलाः

मा अर्थ-म्यः । अर्थिरि अर्थको ॥ प्रिकितिका । । अस्पर्यम् त्रार्थक लि मम विनि गृह गृह वर्ग नेजुन् 'नाभव नाभवं योषवं योषव चहुत्र क्तूत्रं हिकि हिकि निकि एपरि प्रिकृ कि चारा ॥ • ॥ जब **ख्यकानगारि**मखाः । की की की हूँ हूँ ही ही छजनारेना की की की रू रू ही ही श्राहा।२०॥ 🛊 ॥ की की की रूँ दूँ दीँ दीँ भागातकाति कीँ कीँ कीँ दूँ दूँ दूँ दीँ दीँ श्वारा । २५॥ 🛊 ॥ की की की ष्ट्रँ हैं हैं यहाकानि की कीं कीं हूँ हूँ हीं हीं सारा 1২০ ৷৷ 🟶 ৷৷ এতাসাণ পুজাদিকণ **क्ष्मिगांव**९ । श्रानञ्ज । यहारम्य-প্রভাণ দেবীণ ক্লফবস্ত্রপিধাষি-নী'। ললজ্জিহ্বা' ঘোরদ'ফ্ট্রা' কোটরাকী॰ হসমুখী॰।। নাগ-হারলতোপেতা॰ চম্রার্জরুতশে-थताः। माः निथन्तिः करीत्म-কা॰ লেলিহানা॰ শব॰ স্বৰ॰ ॥ नागरख्डाপरीठान्नी॰ नागनगा निरमूरी । १११ मम्बू ७ मण्यू छ-वनमाला॰ मटशामती॰।। महमु-কণসংযুক্ত মনন্ত শিরসোপরি **চতুর্দিকু নাগকণাবেফিতা** গু-

नि वाभक्ष्वज्ञीका । जनस-নাগরাজৈন ক্রিউদক্ষিণক্ষণা 11 नारगर्ने क्रिकाश्चाद्रीकिष्ठिका त्रञ्ज नृ पूर्वी । विरिषं भिवयक्षण छ क - ক্সিত- বৎস**ৰা**পক-গা বিভুকা- চি-खररामवीं नागवस्काभवीजि नी ।। नंतरमहमभावक अखन-শ্ৰুতিমণ্ডিতা॰ াা প্রসমবদনা• সৌম্যা॰ নবরত্নবিজ্বিতা॰। না-ব্ৰদাদ্যৈ শ্বুনিগণৈঃ সেৰি তা° শি-वत्माहिनी ।। नाष्ट्राना महा-ভীষা॰ সাধকাভীকটাবিনী॰।। **एक्कानी हेजू। शनकान ।। # ।।** ভদ্রকালীমন্ত্রান্তর• ৷ वीक मूक्छा कानीिछ शममूक्तरंत्र । यहाकानिश्रमः हाञ्जा किनि-যুগা ততঃ পর ।। অস্ত্র মগিপ্রি-ষান্তো ২ব ভত্তকাল্যা মহাম-नुः॥ ७ कानि महाकानि किनि किलि करें चाहा।।।।।।। शान॰ यथा । कृष्कामा कार्रेत्राकी गणिग-लिनम्थी मुक्तरकभी क्रमञ्जी ना-इ॰ जृञ्जा वमञ्जी कगमिन मिन॰ **গ্রাস মেক॰ করোমি। হস্তাভ্যা**° शांत्रयञ्जी ज्ञाननवानिथामञ्ज्ञ **भागवृ**या॰ मटेख व्हां बृयनाटेचः

পরিষরত্ ভবং পাতু সাংভ্রম कामी।। अगाः स्वतः साहिकः -দক্ষিণকালীভক্ষর ৭. ইতি কেটিৎ । वञ्चकञ्च भूद्रभद्धत महस्रोत्कत्रमः হসুজগঃ। ইতি রুক্।নন্দরুত ভ-खनातः ॥ #-१। अना नकानी मखा-.प्रिक॰ छष्ट्रस्य .खक्रेतुः ।। 🖝 ॥ অথ দীপাৰিতাশ্যামাপূজা। यामला । कार्जिक मानि क्रका-याः शक्षमणाः महानिमि। शृक यि स्वा श्वियाञ्चन कानीविष्ठा প্রসীদতি॥ সৃদ্ধধী॰প্রতিমা॰ রূত্বা यशकानीः क्षशुक्रस्य । त्याम-কেশস হিতাষা । ভূদাকে য-স্তুমাবাস্যা নিশার্কে যোরদক্ষি-ना । शृष्ट्रविधिक्षक्ता नर्व-সিদ্ধীশ্বরো ভবেৎ।। ইতি। এবঞ্ অর্দ্ধরাত্র॰ পুজাষা মৃখ্যকালঃ। म ह कादना यमूर्र यमित्न लमा शृ-र्विति शृक्षा यथा छटेवर । छट्वा-ভযদিনে শস্তকালে ভূতযুতা য-मि। উনামাহেশ্বরী मो क्र छिथिः निकिथन। मुख्या ।। बिनान व-লিভিথাবাত্মনাশকর পর তত স্তত্র ন কর্তব্যে বলিদান 🚁 নজ্জ ন।। মন্ত্রসিদ্ধিকর তত্ত্ব প্র-রেক্লি জগুসাধন । রাত্রৌ পূজা।

शक्रदेश। दाजात्क विशासमा প্রকালে নিজিহানিং স্যাকোপ-भ निक् क्रण्या। उदा काली- -क्रा । जुबार्क स्ट्रा भरक भक्ष-मन्त्रा॰ सर्व्यत्रीः। यत्थानहारतः সংগুজ্য মহানিশি নৃপো ভবেৎ।। শনি ভৌষদিনে চেৎ স্যাত্তস্ত শতগুণ কল ৷ ভৱোভযদিনে ভূত্যুক্তঙ্গহ্বাণ মহানিশি ।৷ मां राजाः कात्रिया ठकवर्जी ভবেষ্প ইতি। মহেশ্বরী দক্তি-ণকালী॰ তৎপ্রকরণোক্তত্বাৎ।। ॥ कार्डिकामानामामाका कानी পূজাহেতু मार विश्वनादत । का-র্ত্তিকে ক্লফগকে তু পঞ্চদশ্যাণ ম-रानिनि। श्राविज्र्वा गराकानी রোগিনী কোটিভিঃ সহঃ॥ অ-তো ২ত্র পূজনীয়া সা তন্মিমহ-नि गानरेवः। तनि शृक्षापिकः नर्न निर्मायाः क्रियट्छ छ य ।। ভত্তদৰ্শবভা॰ বাতি কালীবিদ্যা প্রসীদতি। মহানিশি অর্দ্ধরাত্তে । তথা চ উত্তরকামাখ্যাতজে। শরৎকালে চ দেবেশি দীপষা-बाम्रितिश है। अभावाम्याः मः मानामा संशतात्वी विरुक्तनः ॥ मृत्रायी॰ शुखनी॰ क्रया मीनामिक

त्रलक्षाः। विला नामाविकः स-দ্যাৎ বাদ্যভাও সৰম্বিত ৷ নৃ-তা গীত কৌত্কক বাৰৎস্ **अक्टलारय** ज्ञानरयमनिनी মিতি।। এতেনাস্যা দীপযাত্রা-পার্দ্ধরাত্তে বোধা। আবিভূ-তেত্যনেনার্দ্ধরাত্তে জন্মশ্রবণাৎ ভৱৈব পূজ। মুখ্যেতি । তথা বৃহদ্ধপুরাণে। রাত্তৌ নিশীথ व्याखाया समावामा। मिटेश्व जु। পৃথীতল সমাৰাতা কালীদিশ্ব-সনাধিকা।। অত স্তামত্র বৈ ভ-ক্ত্যা দেব দেবী দ্বিজাতমঃ। পূ-জবেদাত্মনো ভক্ত্যা গশু পূজা-ৰ্য্য সম্পদেতি।। তথা গুপ্তসাধন-**ज्याः निमा जै भरत्यमानि मृ**-র্য্যে চান্ত মুপাগতে। প্রহরে চ গ-তে রাত্রে বটিকে ছে পরে চ ষে ।। यहानिमा সমাধ্যাতা তত का-ভিৰহানিশা। অৰ্দ্ধরাত্তে গতে দেবি পশুভাবে। ন পুজ্বেৎ ॥ অন্ধরাত্তেগতে অন্ধরাত্তাৎপরণ। **उथा। मममत्य जू या भूका छ** नर्व मक्य ७८वं । यर्ष ट्याटन ৰছেশানি তৎ সৰ্ব মমৃতোপম॰।। मक्षमात्कामारक ताबि गर्ब कीरहा-

भगं छदि । असे मद्यामिक सिंचि खेरा जूना । न मण्या । अ-छः भन्न न देणानि विश्वज्ञा । मण्या । अस्य मर्व मद्रमानि भएछादि मह्यामिक । अर्कता-

গৌণত্ব অবণাৎ না' যত্ৰ शृर्विपरमे असद्भावनाशिनामाया-मा म जू छ ९ भूर्व शाखिः भद्रित-न ह तादाः भक्षमपूर्खं वाभिनी ভদা পরেদ্যুঃ পুজেতি চেন্ন গুপ্ত-সাধন তন্ত্ৰোক্তবচনঞ্চ নিত্যপূজা-দিপর । কার্ডিকামাবাস্যামা ম-র্দ্ধরাত্তে জন্মনিমিত্তকপুজায়া বি-শেষেণাভিধানাৎ। সশুভি রপি এব ভূতহলে পূর্বদিনে অর্জরাত্র धर शृक्षा कार्या। सथा श्रीहरू शृकासाः भागामात्रेण निभासा य-कर्खवादमी जगारिया। यक्षताज-কর্তব্যতা সুখ্যতমৈতি। পরস্ত যত্র शृक्षिति अर्धातीका ९ शत ममा-वामा। भन्निति अर्द्धताखां १ भूई মেব তত্ত্র পশুভাবিনঃ পরদিনে वीव्रिक्तिराद्याकं भूदिमित्न भूका কাৰ্য্যা ইভি। প্ৰমাণ গোপ্য-**ागिमलीलागमीयस्थे** भेटिल এব ख श्रृंकित्न अर्क्षद्राज्या-शिनामाचाना। श्रद्धित ७था जू-

তাপি সজবারাদিবুকা তত্তাপি शर्वपित शृका धरकत सक-वातानिक मर्थका हरू के नीरका-পন্য মুখ্যন্বাৎ। তথ্যেক বেন-মকেশতন্তে। **কজবারে লক্ষণ** পূৰ্ববিদ্ধা ততোধিকেতি ৷ ক্ৰজ-বার ইভি শনিবারোপলকণ । मनि ভोगमित्व हिष् माख्यः শতগুণ ফল মিতি শ্রবণাৎ ৷৷ঞ৷৷ কার্ত্তিকামাবাস্যায়াণ কালীপু-জায়া নিত্যতা মাহ মামাতল্তে । वर्ष वर्ष 5 कर्खवाः काणिका-ষা মহোৎসব । কার্ত্তিকে তৃ वित्नरम् अमानामाः निनासः কে ইতি।। দেৰা।গনে চ। প্ৰতি-**मश्यमद्रः प्रयाद** कालिकाश মহোৎসব॰। কার্ত্তিকে ভূ বিশে-(य॰ जमादानगा॰ निमार्क्टक ॥ তত্র সংপূজ্যক্ষেত্রী ভোগ মো-कथमाविनी । देखि॥ धवकाब কার্ত্তিকপদ গৌৰচান্ত কার্ত্তি-কপর জন্মতিথিক্কতান্ত্রাৎ ৷ ন जू नानावहरन जूनाकं अवगर সৌরকার্ত্তিক পর । ভবা সভি यन्यन् वर्षं जूनार्कं द्राद्ध्वी ना-गावामा। शांशि खबर्स क्रज-लाभः मा। । अव यज वस्य

তুলাকে দৰ্শবৰ তত্ত্ৰানধ্যবসা-यागर्खः। नगर्भमूकः विस्ताद-পত্তি ভৱে। কার্ত্তিকস্যাপ্যমা-वाना। योषठाक अभाषठः। नि-শীৰব্যাপিনী বা তু তদ্যাণ পূজাণ मगाष्ट्रद्र ॥ निगीय मर्कतांव । এব॰ रख পूर्विं मिरन निभी थवा।-शिनामावामा। कनारकं शत्रिन-न ह जूनार्क १ क्रिताका ९ भत्र मू-रूर्जानियाणिनी छ्वाणि शृर्वनि-ति निनीयमा मूथाकानदान्ता-ধাৎ ভূততিখি যোগানুরোধাচ্চ जूनार्कमा मिनएजमनियाकमण्ड-নাশ্ৰতভাৎ। পরম্ব তুলার্কপদ॰ नानावहरन यमाखि ७९ थात्रि-काजिशासन श्वनक्लाजिशासन ব। বোধ্যণ। অতএব ভিথিতত্ত্বধৃত यानिभूतानः। शकः त्रानि विटन-रवन यदकर्म विश्ठि नटेतः। टेन-वः वाभाषवा रेभवाः छमनावाभि দৃশ্যতে ।। ইভি। অগন্ত্যসংহি-তাষাং। মেষং পৃষণি সংপ্রাপ্তে नत्भ कर्त्र हेकास्त्र । आवित्रा-मी । जरूवमा को नवागमाः भन्नः পুমান ইতি।। অত মেবার্ফে জগ্ম-অবণ মীনার্কেপি কদাচিৎ উপ-वामः। यकु छन्नीय मिछि इस्

. शर्रेष्ठि:। जूनाटकं वर्षात्राटकः या .দীপ**দাত্র। ভিথি ভ'বে**£া <u>'</u>তত্র म-भूकरम् काणीः नईकामार्थः क्रिकटम्।। निभाटकिना जिथि मी-•স্তি ক্তদংঃ কালসংযুক্ত। তত্ৰাপি भूक्रावि कामी जूनार्क देनव · नज़्त्र(य<।। इंडि जनमून • । नम्--শাক্ষেপি ভূলাকে ইভাত্ত ভূশ-न्नः कमार्क्याङ्कः। एउम जू -मार्क कनगरक वा देजार्थः। তুলার্কমাত্রপরত্বে প্রতিসম্বৎস-্র ইত্যঙ্গা বাধাপতে রুক্তছাৎ ा जूनार्कः देनदः नज्यस्मिजामा •তুলাক্বিহিতপূজা• ন ভাজেৎ हेरार्थः। जूनार्कविह्ळ्गूजाया পোশকার্ত্তিকভ্রেম কর্ত্তব্যভাষাণ ্ৰিখে জাৎপৰ্যন্যোক্ত ছাৎ। বৰ্ - সর্বত্র ভ্লাক্ষটিতবচমেষু ভ্লা: -क्रांबावाजाचा क्रालक्ष्णका :**+ह्यः। म कृ वित्नवग्रयः।** म -বা-পূজাবা মপি তদম্বঃ। তেন *কুলার্কোপলন্ধিতামাবাস্যা*খা• मिलीएथ कानी॰ शृक्रस्य ३७ ্বিধি জ্ঞেন গৌণচাজ্র কার্ত্তিকা-শারাস্যান্তাভঃ। তদ্যা নেব তু-नार्क महस्र तियमार । अनार्था ্জুলান্ত্রব্যারক্ষরাভাবেন করা-

্চিৎ ভৎপর প্রতিপদাদি দর্শান্ত वा वृश्वकार्र्डिक षातृशशिष्टः। वृ--थाकां कियानावानावाः कनाहिष् म्फ़िल्क मद्भाव नजू जूनादर्ग नि-÷ষসঃ ৷ জাধা ক ভুলাক নিষ্তামা-वाजाबा सिभीत्थ काली गूज-ः सिक्षि श्राक्षामणिष्ठः । जूना कं নৈব লঙ্গাৰেদিতাক্ত তুলাৰ্কপদক তুলাকোপৰক্ষিতামাৰাস্যাপূজা-পর•। স•ব্দ্ববাক্যে তু কার্ত্তিকে मानीजुरल्थाः नजू तान्यास्मर्थाः नि भौनहाद्यन विधाना । कि চিন্তু উপলক্ষণতথা অমাৰাস্যা-ষা অন্বৰ ভাৎপর্ব্যেণ তুলারা-শিষ্টে ভান্ধরে ইত্যুদ্ধেখ্য ইতি ভাষরপদোত্তর সপ্তম্যা উপল-चन्छम्। जश्कानमञ्ज (वाक्र नामधार देखि वनखि॥ 🗯 ॥ তন্ত্রান্তরে। তুলারাশি গতে ভা-त्मो मीनवाखा निमान् ह। भूक-विक्न का निकार प्रती शर्म का मार्थ निक्रत्य । कट्डा वर्कत्रावा ९ পুরস্তান্তু বাববৈ যটিক। হয়। ना महाद्वाखिककिको यक्ष छ म-ক্ষয়**ু ছুবেৎ** ৷৷ বহানিশাত বি-প্তের। স্মারিরাত্তাৎ পর পিকে। মাজী **চতুক্তর•**:শন্ত• তত্ত্ব 'পূজা

बंशकना ॥ वित्नाष्थिखिखा ॥ उजुर्भभाष

ষোগ মেব छ। কালরাত্রি শহে-भानि कामी जात्रा श्रियकत्री।। छानार्गद । महात्राखावमारा-जा। पिक्शियाः अशुक्रमः। सा-র্ত্তিকে মাসি সুশ্রোণি কালীপ্রী-তিকর পর ।। তত্রাপি চ নিশী-থে তমহাসিদ্ধিপ্রদ॰ নৃণা॰। নি-শীথাৎ পরতো দেবি যন্তু নাডী **ठ**ण्केष ॥ मा महादाि इन्द-ক্ষটা তত্র পূজা বহাফলা। তার-ত্যোন দেবেশি পূজাষাঃ কল-করন ।। সলার্ণবেপি। ভূতযু-ক্তা নহেশানি মহারাত্রৌ তু যা त्रदृः। मा कानतानि समिको কালী তারা প্রিয়ন্ধরী ॥ তত্ত পূজা তযোঃ কার্য্যা নামা পশু বিহিৎসন্। বলিদান ৰলিভি থাবাজনাশকর শিবে 🛭 সল-চূডামণো। তিথিভাঃ শতগুণ পৰ্ব দৰ্শঃ কোটিগুণোন্তরঃ। ফ-लाभठात वहरेल रेकारके मृर्का-म्मद्रम् ॥ शृक्षविद्या महाका-नी॰ नरता निर्दाण मृक्ष्णि। हजू-ৰ্গপ্ৰদ॰ দশে কাৰ্ডিকে কালি-কার্চন ।। অনন্তফলদ তত্ত্র গ-

ৰ্যুক্তে চ পৰ্বনি। নিশাৰ্চ্চে পূজ-(यामिरी॰ मृत्रूखा॰ मूखमानिनी॰ ा। गण्ठाक्तिलीतरव स्वारत मर्ब-व्याग्छियकदा । कालीव्रलम्खा-द्या मीरभाष्मर्ग हजूकमा म॰-মিশ্রা ষা ভবেৎ স্বহুঃ। তস্যা• ষা তামসী রাত্রিঃ সোচ্যতে কা-লরাত্রিকা।। তদ্যা॰ পূজা প্রক-र्ख्या कानी जाता (क्षिपकती। 🛊 🛚 তুলা মকর মেবেবু কন্যাযা মি-প্নে ভথা। ভূতবিদ্ধাপ্যমাবা-স্যা পূজ্যা ভবতি যত্নতঃ।। ইতি জীমৃতবাহনক্ত ধর্মরত্নে কাল-বিবেকধৃতহারীতবচন া। 🛊 ৷ L শিবরাত্রিপ্রকরণে দেবলোক্ত ম-रानिंगा यथा । यरानित्म (व यिंदिक द्वाद्व र्यधाययायरयाः । ইতি। গঙ্গামাহাত্ম্যপ্রকরণে গৃহ-ए तज्ञाकतध्वा जू। महानिमा जू বিজ্ঞেষা মধ্যম॰ প্রহরদ্বয়ং। তত্ত্র শ্বানণনঙ্গৰীত নিত্য নৈমিত্তিকা-**দৃতে ।। बक्त**रिवदर्ख श्रीक्रक्षज्ञम्-খণ্ডে। ষণা্হূর্ত্তে ব্যতীতে তু রা-ত্রাবেব মহানিশা। ক্নত্যতত্ত্বার্ণ-বে বৌধাষনঃ। মহানিশা ভূবি-Cछ्डवा मथा॰ मधाम याम् दवाः। CF-गागरम। अयावामा। यक्तताटक

मिक्ना॰ शृक्तरयः भद्गाः। जन-अत्क ह यः अया। न शत्क्षित সনিধিং।। তুলাষা ভৌমবারে চ অমাবাস্যা যদা ভবেৎ। তিথিঃ সাপি মহাপুণ্যা শিবেন পরি-কীর্ত্তিত।।। বর্ষৈ শ্চতুর্ভি র্বৎ পুণ্য বিধিবৎ পূজ্য কণ্ডিকা । তৎফল লভতে বীর অমাবাস্যাণ निगार्क्तक॥ कानीक्रनज्खा निनाटकं भूजरयटकरीः भागाना-वरवामिनी॰ **रे**ठि ॥ मानिनीछ-**एक । ७७९ मन्नाग्वराये पर्या** রাত্রৌ তু বন্দনা। মহারাত্রাবপি তথা কাৰ্য্যা দেশিকস্ত্তমৈঃ 11 शा वाशकात्वा यथा। श्रीतम्तृः वाठ। प्रवत्नव यहारमव यना-রার্ণবভারক। দেবভাষাঃ স্বাপ-कानः कथरत प्रशानित्य ॥ 🕮 শিব উবাচ। চতুর্দ্সগুৎ পর **प्ति ता** ता वा अथम या मकः । स्रा পকালম্ভ কথিতঃ পূজানর্থকল-প্রদা।। পূজা হোমঃ স্তোত্র নতী জাগ্রৎকালে প্রশাসতে। ইতি काबीत्रनामृज्ज्खा। 🛊 ॥ ममूज-মপনে দেবি দেবাসুরগণাঃ পুরা । নারাধ্য দা॰ প্রমণ্নীযু রত স্তৃ विसक्तिंशि ।। जाविज् जा महा-

কালী বন্ধাও নাশনাশিনী। ত-पृथ्वा स्वा देवजाक जीजा गा॰ শরণ গড়াঃ ৷ ভেষা মপ্যি ভষ্ণ **मृक्षे औरठा ३ विषमिति । ग**षा ধ্যানপরো ভূষা বিষ পাতৃ স-मात्रत्छ॥ भूटबाङ्ग चा महावि-म्। আবিভূতা চ মে লদি। তু-ना॰ क्र्या॰ निगार्क ह एन मा-नेय निजिष्ठ ॥ मनुषा পশু প-क्गामि निजिष्ठ চानाज्यस् । তন্মিন্ কালে মধা পূজ্যা ইন্দ্রে-नानामूद्रन ज् ॥ प्तन्तान । ञ्ज काल प्रया शृक्ता हैत्स्वना-পাসুরেণ চ। মহাদেব উবাচ। चर्कताबागृश्दर्छ ह गया टिट्सन পূজিতা। ততো মুহূর্ত্তে সংপূজ্যা বীরেণা**প্যস্**রেণ চ। অত আদ্যঃ পাশবঃ স্যাৎ বৈরঃ শেষঃ প্রকী-र्खिणः ॥ सारखूदन मनून। म-র্ভ্যে তেন প্রপূজিতা। ইতি গো-शारगाथननीनागरम ७ পটनः ॥ 🛊 ॥ कालीञ्चनर्स्टय ॥ निर्मा-ৰ্দ্ধে সা তিথি নাস্তি তদুৰ্দ্ধে ভূত-সংযুতা। তত্রাপি পূর্জবৈদেবীণ ভূতযুক্তা॰ ন লব্দেষেদিতি।। 🟶 ।। অথ রক্ষাকালীপূজাপ্রমাণ । উত্তরকামাখ্যাতন্ত্রে। মারীভ্যে

সমাবাতে দুর্ভিকভয়পীডিতে। পূক্তষেৎ পরষা ভক্তাা কালীণ कानविनामिनी।। त्रक्रगां मर्व ভূতানা রক্ষাকালীতি সা স্থৃতা । क्वानार्वत। मर्वविद्याननासाः র্থণ রক্ষাকালী প্রপূজ্যে । শনি मक्लवादत ह श्रातादा भृष्ट्राय শিবাং ৷৷ চতুৰ্দশ্যা ম্যাযায়া ন-वगा मरुंगीजिरथो। शृक्षना व व्रमा कानी यरथिक्राङ्कलक्षमा ॥ कालीक्लप्रवास्य। निमामूर्थमः दिगानी काली त्रकार्थ मामता । পূজনীয়া নৃজিঃ সর্বৈরুপচার স-মন্বিতৈঃ।। বিত্তশাঠ্য ন কর্ত্বব্য यशविख्वविख्रदेतः । **ज्या विमानः विधिवः मध्** ভিঃ পাষ্দেন চ।। পূপে শ্মোদক-म॰देव क शृथ्देकः बीकदेन दिल। নানা ফলৈঃ শাক সূপে পঞ্ত-देख मारम्भती ।। भूकरमित्रमा-खार्थः कालीः व्रकाविशायिनीः । थातायमयस्य भूका कर्षका जू তি নিচ্ছতা।। রাত্রো বিসর্জন॰ কাৰ্য্যণ ক্ৰীড়া কৌভুক মঙ্গলৈঃ। टेज्द्रवरुद्ध। यथ बद्धा महरू-শানি ঘোরে মারীভয়ে তথা। ওৎপাতিকে চ দুর্ভিকে যুদ্ধে রা-

खुं ज्यागर ।। शृकाः स्कां भ भशकानाः देकार्थः शक्यवं म् । अमावनात्न मः शृका निमामाञ्च विमक्क त्यः ॥ मृष्ट् विजयः कान् नः अमात्य श्वमयाज्यः । जन् वाखदा । निमामू (अ महाकानीः महामाती जत्य मिताः । कानीः देवत्नाका तकार्थः शृक्रत्यः दकः गाजिकाः ॥ ॥।

व्यथ कलहाजीशृकाञ्चमानः। মধুমাদে দ্বিতাকীয়া বৈশাখ बिठ्दय ११नि । পৌৰ্যাদ্যাণ **७था देकारके जगामाध्य मरङ्श्र**ति ॥ इंजािन। अभागः कार्छिक চৈব নবম্যা শুক্লপক্ষকে। ইতি কাত্যায়নীতল্পে ৭৮ পট্নঃ জৈতিগাসি তথামায়া সফল• কালিকার্চ্চন । ইত্যুত্তরকামা-था। उन्हारके-মাসি অমাযা বৈ মধ্যরাত্তে ম-হেশ্বরি। পূজ্বেৎ কালিকা দে-वी॰ नानाजरवााशशाद्रोकः॥ ७-ত্রৈব সিতপক্ষে তু পঞ্চদশ্যাণ নি-मार्क्तरक। भूकरबक्त करेल ल-কৈঃ শক্তিতো বাপি কালিকাং ॥ ইতি गायाज्य २१ भऐनः ॥ 🛊 ॥ অধ রটন্ডীপুজাপ্রমাণ।।

মাঘে মাস্যসিতে পক্ষে রটস্ত্যা-था ठलूकंगी। ठमाः निगार्क-ममत्य भूक्त्यमूखमानिनी ।। ইতি মাযাতন্ত্রে ১৭ পটলঃ।। ম-कत्रक्ष त्रवी क्षक ठ जू र्मगा। नि-नार्क्तरक। भूजरयम्बिनाः का-नी धर्माकामार्थिन क्षर्य।। हेजू-ত্তরকামাখ্যাতত্ত্বে ২ পটলঃ॥ শ্যামাকঃ পু॰ তৃণধান্যভেদঃ। শামা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাযঃ । শ্যামকঃ ২ শ্যামঃ ৩ ত্রিবীজঃ ৪ অবিপ্রিয়ঃ ৫ সুস্নারঃ ৬ রা-क्धानाः १ ज्वतीरकाखमः ৮। चामाञ्चनाः। मध्तपः। ठिकपः 1 ক্যায়ত্বণ। লঘুত্বণ। শীতলত্বণ া বাতকারিত্ব। কর্ফ পিত্ত এণ **(मायना निषः । সুগ্রাহিष्णः ।** ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।। অপি চ । শ্যামাকঃ শোষণো ককো বা-তলঃ কফ পিত্তক্তৎ। ইতি ভাব-প্রকাশঃ ॥

শ্যামাঙ্গঃ পু॰ বুধগ্রহঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। রুক্ষকলেবরে ত্রি। ষথা। শ্যামাঙ্গী॰ শশিশে-থরা॰ নিজকরৈ দানঞ্চরক্তোৎ-পলং রত্নাঢ্যে চসকং পরং ভষ-হর॰ সংবিভুতী৽ শাশ্বতী৽। মু- ক্তাহার লসৎ পযোধরনতা॰ নেত্রত্রবোল্লাসিনী॰ বন্দেহণ স্-রপূজিতা॰ হরবধূণ রক্তারবিন্দ-স্থিতা॰।। ইতি তক্ত্রসারে ভূবনে-শ্বরীধ্যানা ।।

गागमी जी नीलामी। इंडि

শ্যালঃ পু॰ পত্নীভ্রাতা। শালা ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ।। তৎ-পর্যায়ঃ। বান্ধীরঃ ২ শ্যালিকঃ ৩। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ শ্বস্ত-র্যাঃ ৪ আত্মবীরঃ ৫। ইতি জটা-ধরঃ।। তমরণে একরাত্রাশৌচণ মথা। আচার্য্য পত্নী পুত্রোপা-ধ্যায় মাতৃল শ্বস্তর শ্বস্থ্য্য স-হাধ্যায়ি শিষ্যেশ্বেকরাত্রেণেতি। ইতি শুদ্ধিতত্ত্বণ।। দন্ত্যসাদিশ্চ শ্যালিকঃ পু॰ শ্যালঃ। ইতি শ-ব্যত্নাবলী।।

गामिक। खी शङ्गाजिती। गामी देखि जाया। उद्शर्यगयः । गामी २ क्वित्रक्षिका ७। देखि मस्त्रज्ञावनी।।

শ্যাবঃ পু॰ কপিশঃ। ইত্যমরঃ॥
স তু রুষ্ণপীতমিশ্রবর্ণঃ। ইতি
ভরতঃ॥ তদ্যুক্তে ত্রি॥
শ্যাবদন্ত্রি রুষ্ণপীতমিশ্রিত-

Colle

वर्गस्ययुक्तः। देणि निकास क्रीयूमी॥ ্যাবদন্তঃ) ক্রিস্বাভাবিকর্ম ग्रवमञ्जः । वर्गमनगुकः প্রধানদ ভদ্মনধ্য ক্ষুত্রদন্তবি-শিষ্টঃ ৷৷ প্রধানদক্তোপরি দ্ভা-छत्रयुक्तः। यथा विख्ः। ज्य নরকানুভূত দুংখানা ভির্যাক্ষ युखीर्गाना॰ मानूर्या लक्नशानि ভবস্তি। স্ঠাতিপাতকী। ত্রন্ধ-रा यन्त्री। সুরাপঃ শ্যাবদন্তকঃ। मृवर्गश्री अन्थी । **खत्रज्ञत्रा** দুশ্চর্ম। ইত্যাদি। শ্যাবদন্তকঃ यভाবक्रकमञ्जः । अश्रानमञ् चयमधावर्खिक्जानुसः। श्रधा-নদন্তোপরি দন্তান্তর মিতি কে-চিৎ ৷৷ সন্ধী সমুচিতনখঃ । দুশ্ৰমা স্বভাৰতঃ অনাবৃত মেটুঃ। অতএব মহারোগিণো यावस्त्रीव मत्नोह मार कूर्याभू द्वापः। क्रियाशीनमा मूर्थमा मः হারোগিণ এব চ। ষথেফাচর-गनाए संत्रगांख गटनोहकः ॥ कियाशीनमा निडाटनियिखिक कियानन्श्रीवनः। यूर्थमा गा-यजात्रहिতगा। সার্থগায়ত্তীর-হিতস্যেতি রুজধরঃ। মহারো-

গিণঃ পাপরোগাইকান্যভূম-রোগবভঃ। তে চ উন্মাদ স্তুপ্রেলা-বো রাজবন্ধা স্বাসো মধুমেহো ভগন্দর উদরো হশ্মরী ইত্য-টে পাপরোগা নারদোক্তাঃ। यरथकोठत्रनमा मृाल्टवना।मृता-সক্তস্য। এবঞ্চ ভবিষ্যপুরাণো-ক্ত- ৰতিচান্দ্ৰাষণপ্ৰায়শ্চিত্ত• অক্তপ্রাধশ্চিত্তানা কণ্ঠাদী-ना नाट्य वाक्तवा । यनाटेथ-ষা• প্রাযশ্চিত্তোপদেশো বিফ-नः गा९। यथा विकृः। **अ**नथी শ্যাবদন্তশ্চ দাদশরাত্রণ রুচ্ছুণ চরিত্বোদ্ধরেযাতা॰ তদ্দস্তনখৌ ইতি। অত্র দ্বাদশরাত্রণ পরাক-ৰূপণ তত্ৰ পঞ্চধেনবঃ। ন তৃ প্রাজাপত্যে। তদ্ধাহ কর্ত্তু র্যতি-চাজাষণেন বিষমশিকীত্বাৎ 1 অত্র বহুনা নেকধর্মাণা নিতি বচনাৎ আকাজ্জিতত্বাৎ স্ব-ष्ठामीना गि श्रायमिः छ॰। ज-তএব প্রাযশ্চিত্তবিবেকেপ্যুক্তণ এব॰ দুশ্চশাদিষপ্যश गिछि । মহাপাতকাদতিপাতকস্য গুরু-ত্বাৎ তচ্ছেষেপি প্রাযশ্চিত্ত • দ্বি-खनः। ইতি छक्तिञ्दः॥ শ্যেতঃ পু• শুক্লবর্ণঃ॥ তদ্বতি জ্রি

শৈ্যন

া ইত্যমরঃ ৷৷

(भाजरकालकः भू॰ मध्मावित्स-यः। भूँगै ইতি ভাষা। यथा। সকরঃ শ্যেতকোলকঃ। ইতি ्रात्रावनी ॥

শোনঃ পু॰ পাজুরবর্ণঃ। ইতি त्मिनी॥ शकिवित्मयः। म ঞাল ইতি বাজ্ ইতি চ ভাষা। তৎপর্য্যাযঃ। শশাদনঃ ২ পত্রী ৩। ইত্যমরঃ ৷৷ কপোতারিঃ ৪ পতন্তীরুঃ ৫। ইতি শব্দরত্না-বলী। যাতিপক্ষী ৬ গ্রাহকঃ १ यातकः ৮। ইতি জটাধরঃ॥ भागामः २ कवामः २ क्तः ११ বেগী ১২ খগাস্তকঃ ১৩ করগঃ ১৪ নীলপিচ্ছঃ ১৫ লম্বর্ণঃ ১৬ রণপ্রিষঃ ১৭ রণপক্ষী ১৮ পিচ্ছ-বাণঃ ১৯ স্থলনীলঃ ২০ ভযন্ধরঃ २>। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শশ-ষাতকঃ ২২। ইতি ভাবপ্রকা শঃ ৷৷ অস্য মাণসগুণাঃ প্রসহ-শব্দে प्रसेवाः॥ 🗱॥ छम्। 🤓 ভাশুভসূচকত্ব যথা। প্রদক্ষি ণীক্ত্য নরণ বজন্তো যাত্রাসু বামেন গতাঃ প্রবেশে। শ্যে-নাঃ প্রশস্তাঃ প্রকৃতস্বরা স্তে শা-্ডাঃ প্রদীপ্তা বিতত্ত্বরা স্তে ॥

শোনাক

ल्यारना नृगा॰ एकिंग वाम शृष्ठे-ভাগেষু ভাগৈয়ঃ স্থিতি মাদধা-তি। তিপ্ঠন্ পুরস্তামৃত্যে করো-**তি यूक्त जय॰ इम त्रथ**४जयः ॥ ইতি বসম্ভব্নাজশাসনে অঊম-वर्गः ॥ यागविष्णयः । यथा । শ্যেনেনাভিচরন্ যজেত। ইতি তিখ্যাদিতব্বধৃতা শ্ৰুতিঃ ।। শ্যেনষণ্ট। স্ত্রী দন্তীবৃক্ষঃ। ইতি

রাজনির্ঘণ্টঃ 11

শ্যেনচিৎ পুং শ্যেনপক্ষিরক্ষকঃ । ইতি কেচিৎ १।

শ্যেনী স্ত্রী শেতবর্ণা ইতি জ-টাধরঃ॥ শ্যেনপত্নী চ।।

শ্যৈ ও গভৌ। ইতি কবিকল্প-क्य ।। जानवामि त्रञ्जूश-দ্যোপধঃ। ঙ শ্যাযভে। ইতি जुर्गाजामः ॥

শ্যৈনম্পাতা স্ত্রী মৃগষা। ইত্য-यद्गः ॥

ल्यानाकः पुर वृक्ववित्यवः 1 শোনাগাছ ইতি ভাষা। তৎ-পর্য্যায়ঃ। মণ্ডুকপর্ণঃ ২ পত্তোর্ণঃ ७ नहें ४ कहें का ए है के का खकनामः १ श्रेकः ৮ भीर्षवृद्धः ৯ স্টমটঃ ১০ শোণকঃ ১১ অর-লঃ ১২। ইত্যমরঃ।। স্যোনাকঃ ১৩। ইতি ভরতঃ।। শোণঃ ১৪ व्यवपुः ३७ मीर्घवृष्ठकः ३७ । ইতি শব্দরত্বাবলী।। পৃথুশিষিঃ ১৭ শলকঃ ১৮। ইভি জ্টাধ্রঃ ॥ क्रियुद्धः ५२ स्वत्रक्क्यः २० অत्रलूकः २১ श्रियजीवः २२ । **उट्छमा यथा।** त्यानाकः भृथ् **मित्यात्ना ज्लुत्का मीर्यवृ**खः কঃ৷ টেন্দুকঃ পীতবৃক্ষণ ভূত-गारता गुनिक्रमः ॥ निःमातः ফলবৃন্তাকঃ পৃতিপত্রে৷ বসন্ত-কঃ। মুপ্তুকবর্ণঃ পীতাঙ্গো জ-ষুকঃ পীতপাদকঃ ।। বাতারিঃ পীতকঃ শোণঃ সলটশ্চ বিরো-চनः। ভুমরেন্টো বহিজ্ঞে নেত্র নেত্র মিজাভিধঃ ৷৷ পুস্ত-কান্তরে টেব্দুক স্থানে টুণ্টক ফলবৃন্তাক স্থানে ফল্লবৃন্তাক भीजभावक द्यारन भीजभावभ अलि शास्त अनि वङ्गिष्ठण স্থানে বৰ্হিজ্ঞ ইতি চ পাঠঃ॥ ण्टवार्श्वनाः । <ागानाकवृगनः তিক্ত॰ শীতলঞ্চ ত্রিদোষজিৎ ৷ পিত্ত শ্লেষাতিসারম্ব সমিপা-তত্ত্বরাপহণ ৷৷ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ য় 🟶 ॥ অপি চ। শ্যোনাকঃ শোষণশ্চ मा। मा। करूक हून्हे-

काः। मध्कर्णनं शत्वानं श्वकनाम क्रवेषिताः॥ पीर्षमृत्छा १व्रम् म्हाशि शृथ्भिषः क्रवेष्ठवः।
त्मानात्का पीर्शनः शात्क कः
पूर्व खरता श्मिः॥ श्राही छित्का श्निन क्षिम्र शिख कामामनामनः। क्रपूर्वमा क्वा॰ वानः
क्वा॰ वाख क्याशिशः॥ क्षाः
क्वा॰ वाख क्याशिशः॥ क्षाः
क्वा॰ वाख क्याशिशः॥ क्षाः
क्वा॰ वाख क्याशिशः।। क्षाः
छक्र वाख्यत्काशिशः॥
ভावश्रकाशः॥

শ্রক ই ও সর্পে। ইতি কবিকন্ধক্রমঃ। রেফযুক্তাদ্যঃ। ই শ্রক্যতে। ও শ্রদ্ধতে। সর্পো গতিঃ
। ইতি দুর্গাদাসঃ।

खग् ३ खर्फ। ইতি किविकन्न
क्रमः॥ द्रिकास जानवानिः ॥

खगः भ्रूजगजाविजि ज्रिमङ्गः ॥

३ खन्नात्व। ইতি मूर्गामामः॥

खन् म मान् । ইতি किविकन्न
क्रमः॥ जानवानी द्रिक्युकः॥

म खन्यजि। ইजि मूर्गामामः॥

खन् क मान् । ইजि किविकन्न
क्रमः॥ क खानयिज। स्रम्

अग्रिक्यान्यक्राज्ञाद्य। स्ता
श्रिक्यव्यान्यक्राज्ञाद्य। स्ता-

वा मन्द्राधार । इंडि मूर्गा-मामः ॥

প্ৰত্ব্য শ্ৰদ্ধা। ইতি সুধাৰোধ-টীকাৰা দুৰ্গাদাসঃ।।

ख्यं म बर्रा इंडि कविकन्न-जन्मः॥ मृज्यथयित। इंडि मूर्गा-मामः॥

শ্রথ ৭ ক দেরিল্যে। ইতিকবি-কল্পদ্রমঃ।। শ্রথষতি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শ্রেণ ক বত্নে। প্রতিহাবি। ইডি
কবিকল্প দেনঃ। ক শ্রাথবৃতি
পঠিতু শিষ্যঃ। শ্রাথবৃতি শিশু
লোকঃ পুনঃপুনর্হ্ববৃতি ইত্যব্যঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শ্রথ কি বন্ধে। নোকে। বন্ধে।
ইতি কবিকলজনঃ। কি প্রাথবতি প্রথমতি। লাঘ্য প্রাথমতি ক্টুর্যর্থ মধুর সদ্যক্ষ পদ্য প্রথমতি ক্রানালফুতি পেশল প্রথমতি ক্রানালফারিতঃ
শাস্ত্র বিচিত্রঞ্জ য ইতি হলাবুধোক্ত প্রথমতীতি প্রথমক
দোর্শলা ইত্যদন্ত্র নামপ ।
তনেকার্থপ্রাম ব্যাতীতার্থঃ।
ইতিদুর্গাদাসঃ।
।

প্রথাই ও দৈথিলো। ইতি কবি-কর দেনং।। দৈথিলা মিহ'লি-থিলীভাবি স্বংকরণক। ই আ-হাতে। ও শ্রহতে বস্ত্রং লিথিলং ব্যাদিতার্থঃ। শ্রহতে বস্ত্রং লো-কঃ লিথিলং করোতি ইতার্থঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

खपनः की वशः॥ यदः॥ यूनः भूनः र्यनः॥ वसनः॥ त्याकनः ॥ मिथिनीकवनः। ইতি खेथ विष्टुणा धनां खेळारान नि-कामः॥

শ্রেদধানঃ ত্রি শ্রেদ্ধাযুক্তঃ। বথা
। তচ্চদাধান। সুনধো জ্ঞানবৈরাগ্যবুক্তবা। গশ্যস্ত্যাদ্মনি
চাদ্ধানং ভক্তা। শ্রুতগৃহীত্যা
। ইতি শ্রীভাগবতে ১ স্কন্মে ২
অধ্যাবঃ।।

खेका की मध्यठावः।। म्लूहा। इंडामतः।। धामतः।। धिकिः। इंडि मस्त्रक्रावनी।। माञ्चाद्यं मृद्ध्यठावः। यथा। প্রভাবো इर्मकार्यायु उथा खाम्मज्ञानी-संज्ञा नाश्चि स्थामधानमा धर्म-संज्ञा श्रद्याक्रनः।। ইতি मृजिः ।। टिल्मः श्रमामः। ইতি পা-चक्रने स्थाद्या दिन्द्यामः॥ मा

'ত্রিবিধা'যথা। **শ্রীভগবানুঘাচ**া ত্তিবিধা ভবতি শ্রদ্ধা দেহিনা॰ সা স্বভাবজা। সান্ধিকী রাজদী চৈব তানসী চেতি তা॰ শৃণুনা সন্ধানু-্ৰূপা সৰ্বৃদ্য শ্ৰদ্ধা ভব্তি ভারত । अकानत्या १४॰ भूकत्या त्या य-চ্ছদ্ধঃ সএব সঃ।। ৰজত্তে সাদ্ধি-का (प्रवान् यक तका भि ताज-সাঃ। প্রেতান্ ভূতগণাংশ্চান্যে যজন্তে তামসা জনাঃ।। ইতি শ্রীভগবদ্গীভাষা• ১৭ অধ্যায়ঃ ॥ 🕸 ॥ তम्राः अन्। रशा । बक्कावाछ। अक्कार्युक्त हैरम ध-ৰ্মাঃ প্ৰদা মধ্যান্ত সংস্থিতাঃ। শ্রদা নিত্যা প্রতিষ্ঠাশ্চ ধর্মাঃ শুদ্ধৈব কীৰ্ত্তিতাঃ।। শ্ৰুতিমাত্ৰ-রদাঃ সূক্ষাঃ প্রধানপুরুষেশ্বরাঃ। শ্রন্ধানাত্রেণ গৃহস্তে ন করেণ ন **इक्ति ।। कार्यक्रिय न द**र्छ স্তবৈবার্থস্য রাশিভিঃ। ধর্মঃ সংপ্রাপ্যতে সৃশ্বঃ প্রদ্ধাহীটনঃ সুরৈ রপি।। এদা ধর্মাঃ পরঃ সূন্ধঃ শ্রদ্ধা জ্ঞান॰ হত তপঃ। শ্ৰন্ধ। স্বৰ্গশ্চ যোক্ষশ্চ শ্ৰেদ্ধ। সৰ্ব निम॰ জग९॥ সईष्ठ॰ জीবिত॰ वाशि पन्गापश्चक्या यति। ना-धयाज एक कि कि अकामा-

नः ততো ভবেৎ।। এবং अका-ম্বযাঃ সৰ্বে সৰ্বধৰ্মাঃ প্ৰকীৰ্ত্তিত্যঃ । क्लियः अक्षयो गरमा। (शुबः পূজ্যশ্চ সর্বদা।। ইতি বঙ্কিপুরা-(१ (४नुमानगहाक्याधायः॥ **प्रमिश**ी **अ**थीना मूमिरं भारत धक्या প্রতিপাদন । দান মি-**छा** जिनिर्मिष वाशान छमा व-ক্যতে।। উদিতে শাস্ত্ৰকথিতে। শ্রদ্ধা দেবলোক্তা যথা। সৎ-**ক্লতি "চানসূথা চ সদা এন্দ্রেভি** ৰীৰ্ত্তিতা। অতএব ভগবদ্দীতাসূ । অশ্রদ্ধবা হত দত্ত তপস্তপ্ত রুতম্ব যৎ। অসদিত্যুচ্যতেপার্থ ন চ তৎ প্রেত্য নেহ চ ॥ হরি-ৰণশে বলিণ প্ৰতি ভগবদ্বাক্যণ। অশোত্রিয়ণ শুদ্ধ মধীত মত্রতণ षमिक्षः यद्ध मन्षिका एउः । অশ্রদ্ধবা দত্ত মসংস্কৃত হবি র্ভাগাঃ ষডেতে তব দৈতাপুসবঃ। रेि शिक्षिण्यः।। क्षा योख्यकाः । अकाविधिनमायुक्तः कर्मा यद ক্রিষতে নৃভিঃ। সুবিশুদ্ধেন ভা-বেন তদানস্ত্যায় কল্প্যতে ৷৷ যো-গিষাজ্ঞবন্ধাঃ। বিধিহীন ভবে-দুষ্ট ক্ত মশ্ৰন্ধয়া চ য় । ত-দ্বরস্তাসুরা স্তদ্য মূট্দ্য দুষ্ঠা-

প্নাঃ।। ইতি প্রায়ন্চিত্ততত্ত্বণ।।
শ্রেদ্ধাল্যু জ্রী দোহদবতী
শ্রেদ্ধাল্যু জ্রি। ইত্যমরঃ।।
শ্রেদ্ধানান্ ত্রি শ্রেদ্ধার্মুক্তঃ। যথা
। শ্রেদ্ধানান্ লভতে জ্ঞানণ তৎপরঃ সংযতেন্দ্রিয়ঃ। জ্ঞানণ
লক্ষ্বা পরাণ শাস্তি মচিরেণাধিগচ্ছতি।। ইতি ভগবদ্দীতাষাণ
৪ অধ্যায়ঃ।।

শ্রন্থ কি দর্ত্তে ।৷ বধে ৷ ইতি
কবিকল্পদ্রমঃ ৷৷ কি শ্রন্থয়তি
শ্রন্থতি ৷ দর্ত্তো গ্রন্থন ৷ ইতি
দুর্গাদাসঃ ৷৷

শ্রেষ্ঠ গ মোক্ষো প্রতিহ্ববি ।
ইতিকবিকল্প দ্রুমঃ ।। গ প্রথাতি
বংসং লোকঃ মোচ্যতীত্যর্থঃ ।
প্রথাতি শিশুং লোকঃ পুনঃপুন হর্ষষতি ইত্যর্থঃ । শ্রেষ্ঠ ।
ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

শ্রন্থঃ পুণ বিষ্ণুঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। শ্রন্থগাত্বপোপ্যত্র।।
শ্রন্থন ক্রী অন্থন । ষথা। সন্দত্রোরসনা গুন্ফঃ শ্রন্থন গ্রন্থনণ সমাঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।
শ্রন্থিতঃ ত্রি অন্থিতঃ।। বদ্ধঃ।।
রুতবধঃ।। মুক্তঃ।। হর্ষিতঃ।

ইতি শ্রন্থগাতোঃ ক্ত প্রত্যাবেন

নিষ্ণায়ঃ

শ্রেপিত

তি যৃত দুগ্ধ জল ভিন্নপক্তব্য

থথা। নিষ্ণাক্ত
ক্রিপ্রভাগ

ক্রেপ্রভাগ

শ্রেপিত

শ্রেপিত

ক্রিপ্রভাগ

ক্রেপিত

শ্রেপিত

ক্রিপ্রভাগ

কর্মি

ক্রিপ্রভাগ

কর্মি

ক্রিপ্রভাগ

ক্রিপ্রভাগ

কর্মি

করম

শ্রম উভষ ঞিইর তপঃ খেদযোঃ। ইতি কবিকল্পজ্ঞমঃ।। উ
শ্রমন্থা প্রান্ত য প্রামাতি
লোকঃ তপঃকরোতি খিদাতি
বেতার্থঃ। ক্রি প্রান্তাে হস্তি।
ইর অপ্রমাৎ অপ্রমীৎ। অস্মাৎ
পুরাদিরালিতাে ও ইতানাে ।
ধূর্যান্ বিশামষেতি স ইতি
রথা প্রামৎক নম্রে ইতাদন্তাল

শ্রমঃ পুণ তপং।। খেদং। ইতি
শ্রমধাত্বর্থদর্শনাৎ।। শুন্তিং।
তৎপর্যাধং। ক্রমং ২ ক্রেশং ৩
পরিশ্রমং ৪ প্রধাসং ৫ আযাসং
৬ ব্যাধামং ৭। ইতি হেমচন্দ্রঃ
।। ক্রমথং ৮। ইত্যমরং ।। শস্ত্রাভ্যাসং। তৎপর্যাধং। খুরলী ২
বোগ্যং ৩ অভ্যাসং ৪। ইতি চ
হেম্ন্দ্রেঃ।।

खाननः पू॰ यि विति स्थः। इं ि यि विनी।। छे ९ श्री। यः। युक्छि-यो कि १ श्री। या १ श्री युक्षः खान । ये विः। या १ श्री युक्षः वा विश्वा जिल्लू तमा य॰ जिल्ला। या १ में भाष्यः। इं ि इं यह स्थाः ।। निका की विनि जि । इं ि यो पिनी।।

ख्यमन छी जूमर्गना॥ मान्त्री॥ मूखीती॥ भवतीरङमः। देखि समिनी॥

শ্রমী ত্রি শ্রমবিশিষ্টঃ। শ্রম-শব্দাদস্ত্যর্থে ইন্প্রত্যয়েন নি-প্রায়ঃ।।

প্রাক্ত প্রাক্ত । শিষাতো রল্প্রতাষেন নিষ্ণার: ।।
প্রাক্ত কি আশ্রমঃ তৎপর্যান্ত প্রাক্ত ।।
প্রাক্ত পুণ কর্ণঃ। ক্ষরণা ইত্যানরঃ।।
প্রাক্ত কি কর্ণঃ। ইত্যানরঃ।।
পর্বণ ক্রী কর্ণঃ। ইত্যানরঃ।।
ন স্ত্রিয়াণ প্রবণঃ কর্ণঃ। ইতি হেন্দ্রালী। ইত তট্টীকাষাণ ভরতঃ।।
ক্রিয়াণ প্রবণঃ কর্ণঃ। ইতি হেন্দ্রালী। ইত তট্টীকাষাণ ভরতঃ।। ষণ্মানাভ্যন্তরে প্রবণ্যোন্দ্রিক ভবতি। ইতি সুখবোধঃ

।। শ্রুতৌ ক্লী। সা তু কর্ণেন্দ্রিয়-জ্ঞান•। শোণা ইতি ভাষা। ইতিমেদিনী।।

व्यवनः पूर व्यवनानक्वरा **रेडि** स्मिनिशा

व्यवनद्यामनी जी व्यवनानक्व-यूक्जाज एक बामभी। यथा। পিতামহ উবাচ। প্রবণদাদশীণ रक्श जुकि मुक्ति अमायिनी । একাদশী দাদশী চ এবণেন চ সুযুতা।। যিজ্যা সা তিথিঃ প্রোক্তা হরিপূজাদি চাক্ষয় । একভক্তেন নক্তেন তথৈবাযা-চিতেন চ। উপবাদেন ভক্ষ্যেণ নৈবাদ্বাদশিকো ভবেৎ।। কা॰-স্যু মাষ তথা ক্ষেত্ৰ লোভ বিতথভাষণ । ব্যাযামঞ্চ ব্যবা-यक पिरायक्ष मथाक्षनः॥ नि-नाशि**रु॰ म**मूत्रक दापभाा॰ **त**-र्व्हारमदः। गामि ভाजभाम শুক্লে দাদশী শুবণান্বিতা।। ম-रठी दामगी एछया উপবাসে মহাফলা। সঙ্গমে সরিতঃ স্নান• ৰুধযুক্তা মহাফলা ৷৷ সম্ভে সর-ত্নে সজলে যজেৎ স্বৰ্ণয় বামন । সিতবক্ত যুগচ্চমণ ছল্রোপান-म्यूगाविकः॥ अं नत्या वामूरमवाय

नितः नृत्यस्य प्रकृते । स्था त्राय मूथ 'छष्ट कर्छ हस्यान देव मयः। नगः श्रीनंजरम् बर्गा **ज्र्को गर्नाज्यातित्य।। व्याय-**कार नमः करको द्वनवारगा-**मतः वृक्षः । दे**वत्नाकाश्रवर्ष মেট্র জজ্বা সর্বপতে নমঃ॥ नवाष्ट्रत नमः शास्त्री देनद्वमाः ষ্তপাযস। সম্ভাশ্চ মোদ-कान् मन्ता । जागतः कात्र रामि-শি॥ শ্বাদ্বা প্রীতো ২র্চ্চবিদ্বা তু क्रुणाक्षिन ईप्तर । नरमा नम एउ भाविन्म तूथ खरानः-ख्डक ॥ जार्योय मःक्यः कृषा সৰ্বসৌখ্যপ্ৰদো ভব। প্ৰীয়তা দেবদেবেশো বিপ্রেভ্যঃ কল্সা-न् मटम् ।। नमा छीदा २४ वा अय्राष्ट्र गर्वान् कामानवाश्चराष्ट्र । ইতি গাৰুডে ১৪১ অধ্যায়ঃ।। অন্যৎ দ্বাদশীশব্দে দ্রফব্য ।। व्यवनगैर्षिका जी व्यावनीवृकः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। ध्ववना पूर्खी नक्कवित्न्यः। ইতি মেদিনী॥ সাতু অশ্বিন্যা-দ্যন্তৰ্গত দাবি॰শনক্ষত্ৰণ। ত-

স্যাঃ স্বৰূপ• শ্রাকারতারাত্র-

ষাত্মক । তদ্যাধিদেবে। হরিঃ।

वथा। তात्रकावयगिर्छ नदाहरू ্ৰাক্তা কেশবে গগৰী মধ্যবৰ্জিনি। মন্তবারণগতে ২জলগতে৷ নির্ব-यू र्शक मही मु निश्चिकाः॥ म॰ ১ । १॰ ১৮। ३७ कानिमामकुठ-त्राज्यिमनिक्षणभः ॥ 🛊 ॥ ज्ज জাতকল । শাস্তানুরক্তো বহ-পুত্ৰ মিত্ৰঃ সৎপুত্ৰ ভক্তি ৰিজি-णितिवर्गः। ८ छ्क्यमकात्न व्यव-ণা হি যস্য প্রেমা পুরাণশ্রবদে প্রবীণঃ ॥ ইতি কোষ্ঠীপ্রদীপঃ ॥ 🟶 ॥ তত্র গৃহারস্তার্থ তৃণ কা-ষ্ঠাদি চ্ছেদন সংগ্ৰহ দক্ষিণাদি-ক্গমন নিষেধা ধথা। ছেদন॰ मः अर्देश्य कार्शानीनाः न का-त्रत्य अवगारमी तूधः वर्हे क न गट्हिष्टिकां । जिन्न ।। जिन्न পীডা ভয় শোকো রাজগীড়া ধনক্ষঃ সংগ্ৰহে তৃণ কাঠানা ক্ততে বস্বাদিপঞ্চকে ॥ ইতি জ্যোতিস্তব্ব• 11 শ্রবণা স্ত্রী মুগুরিকাবৃক্ষঃ। ইতি त्रव्यां ।। শ্রবাপ্যঃ পু• বলিষোগ্যপশুঃ। यक्षियभन्धः। ইতি मिक्वास्त-कोमूनी ॥ শ্রবিষ্ঠা স্ত্রী धनिष्ठानक्वः।

ं ইত্যমরঃ 🗓

শ্রবিষ্ঠাজঃ পুণ বুধগ্রহঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ। তত্ত্ত জাতে ত্রি।। প্রব্যঃ ত্রি শ্রোতব্যঃ। প্রবণা-হ্বাক্যাদিঃ। শ্রুধাতো র্য প্র-ত্যবেন নিষ্পায়ঃ।।

वा न खरित। ইতি करिकन्न
क्रमः।। दिक्युक खानवानिः।

न व्याति। ইতি मूर्गामामः।।

व्या न म পাকে। ইতি কবিকন্ধ
क्रमः॥ दिक्युक खानवानिः।

न व्याति। म व्यापयित। ইতি

मूर्गामामः॥

শ্রাণ ত্রি পক্ষণ ইতি মেদিনী।। যৃতদুগ্ধজলভিন্নপক্ষদ্রব্যাণ ইতি জটাধরঃ।।

শ্রাণা স্ত্রী যবাগৃং। ইত্যমরং।।
শ্রাদ্ধণ ক্লী শাস্ত্রোক্তবিধানেন
পিতৃকর্ম। ইত্যমরং।। তস্য
লক্ষণ যথা। সংস্কৃতব্যঞ্জনাত্যঞ্চ
পধাে দধি ঘৃতাদ্বিতং। শ্রদ্ধাা
দীযতে যক্ষাৎ শ্রাদ্ধণ তেন নিগদাতে।। ইতি পুলস্ত্যবচনাৎ
শ্রদ্ধা অমাদে দানণ শ্রাদ্ধণ
ইতি বৈদিকপ্রধােগাধীনধৌগিকণ। ইতি শ্রাদ্ধতত্ত্বণ।। অপিচ। সধােধনপদােপনীতান্

शिकामीन् **एक्भी खगरमरना मि** ना दुविखागः आकः। छत् बानगिविशः। यथा। विश्वामिजः। নিত্য নৈমিত্তিক কাম্য বৃদ্ধি-শ্রাদ্ধণ সপিওন। পার্রণফেতি বিজ্ঞেষ গোষ্ঠ্যা শুদ্ধার্থ মন্ট-মণ।। কর্মাঙ্গ নবমণ প্রোক্তণ टेमविकः मन्याः स्मृतः। याजा-বৈৰ্ফাদশ প্ৰোক্ত পুষ্টাৰ্থ দ্বা-**দশ॰ স্ত॰।।** এতভবিষ্যপুরাণে विवृত । यथा ভবিষ্যে। অহন্য-हिन राष्ट्राक्षः তविতा मिडिशी-यरा १ देवश्रामय विशेन॰ छम-শক্তাবুদকেন ज् ॥ একোদ্দিফস্ত राष्ट्राकि जरमिनि कि मूठारा । **जन्माटेमव॰ कर्खवा मयूग्रानाम-**यिष्कृषान्।। कामगाय जू हिज॰ কাম্য মভিপ্রেতার্থসিদ্ধয়ে পাৰ্বণেন বিধানেন তদপ্যক্ত थगािथन ॥ वृत्को यथ किया প্রান্ধ বৃদ্ধিশ্বান্ধ তদুচ্যতে। मर्ब॰ अमिष्कन॰ कार्या॰ शृबीद्भ তৃপবীতিনা।। গদ্ধোদক তিলৈ-র্ফ্ত॰ স্ব্যাৎ পাত্র চতুষ্ট্য॰ । অৰ্যাৰ্থ• পিতৃপাত্তেষু প্ৰেতপাত্ত• প্রদেচযেৎ।। যে সমানা ইতি षाভ্যা মেতজ্জ্বেষ সপিওন ।

মিত্যেন তুল্য শেষ স্যাদেকে৷-দ্দিষ্ট স্ত্রিয়া অপি ॥ অমাব্রাস্যা• ষৎ ক্ৰিয়তে তৎ পাৰ্বণ মুদাহ্বত । ক্ৰিষতে বা পৰ্বণি ষৎ তৎ পা-ৰ্ৰণ মিতি স্থিতিঃ ৷৷ গোঠ্যাণ যৎ ক্রিষতে প্রাদ্ধ গোষ্ঠী শ্রাদ্ধ ত मूठाटा वश्नाः विमुषाः मण्य সুখার্থ॰ পিতৃতৃপ্তবে ॥ ক্রিয়তে শুদ্ধবে ষত্তু বান্ধণানাম্ভ ভো-জনণ। শুদ্ধার্থ মিতি তৎ প্রোক্তণ বৈনতেয় মনীষিভিঃ।। নিষেক-কালে সোমে চ সীমস্তোম্বনে ্তথা। জ্ঞেষ॰ পু॰সবনে চৈব শ্রা-क्ष॰ कर्याञ्च त्यव ह।। त्वनानुष्ति-স্য ষচ্ছাদ্ধণ তদৈবিক মিহোচ্য-তে। হবিব্যেণ বিশিষ্টেন সপ্তম্যা-দিষু যত্নতঃ ৷৷ গচ্ছন্ দেশান্তরণ यजू आफ नर्गाक नर्शिया। ষাত্রার্থ মিভি তৎ প্রোক্তণ প্রবে-**८** ह न म॰ गदः ।। गद्गीद्वाशहर्य শ্ৰাদ্ধ মর্থোপচয় এব চ। পুষ্টার্থ মেতদ্বিজ্ঞেষ মৌপচাষিক মুচ্য-তে।। 🗱।। তন্য পঞ্চবিধত্বণ ষ্থা। বৃহস্পতিঃ। নিত্য নৈমিত্তিক। কাম্যণ বৃদ্ধিশ্রাদ্ধণ তথৈব চ। পা-ৰ্বণঞ্চেত মন্না আদ্ধি পঞ্বিধণ স্মৃত ।। কূর্মপুরাণে। অহন্যহনি

নিত্য স্যাৎ কাম্য নৈমিত্তিক भूनः। একে। फिरुष्ठ विख्छर॰ वृक्षिञ्चाक्षरः भार्वनः॥ এতৎপঞ বিধ প্রান্ধ মনুনা পরিকীর্ত্তিত ॥ 🛊 ॥ मर्गाभूतात्व देविधा মুক্ত যথা। নিত্য নৈমিত্তিক। কামাণ ত্রিবিধণ শ্রাদ্ধ মুচাতে। **তमा देवविधाः।** विकृता निजा কাম্যৰূপত্যা দ্বৈবিধ্যণ বক্ষাতে ৷ তত্র নিত্যপদ মাবশ্যক্রপত্যা পার্বনৈকে। দিউয়ে। রপি পরি-खरार्थं । काग्राभन मनावशाक-ত্বার্থণ। ইতি শ্রাদ্ধবিবেকঃ॥ 🕸 ॥ चामावाद्वय यूनिशूट्य निमि-না তৎ পুল্রদ্য প্রাদ্ধণ রুতে । য়থা। ধরণুবাচ। কো গুণঃ পি-তৃষজ্ঞস্য কথনেব প্রপূজ্যতে । কেন চোৎপাদিত প্রাদ্ধ কন্মি-मर्थ किमाज्ञकः।। এতদিচ্ছाম্য-হুণ শ্রোতৃণ বিস্তরেণ বদস্ব মে। বারাহ উবাচ। মনোস্ত বংশসস্ভূ-ত আত্রেয ইতি বিশ্রুতঃ। আ-ত্রেষদ্যাত্মজো বিপ্রো নিমিনামা তপোধনঃ ৷৷ নিমিপুত্রস্ত ধর্মাত্মা ত্রিষু লোকেষু বিশ্রুতঃ। বর্ষাণা-ঞ্চ সহস্যাণি তপস্তপ্ত্যা বসুদ্ধরে ॥ মৃত্যুকাল মনুপ্রাপ্ত স্ততঃ পঞ্ছ

माश्रजः॥ नर्छक्ष ७॰ मूजः पृक्ती-নিমেঃ শোক উপাবিশৎ।। পুত্র শোকাভিসংযুক্তো দিবা রাত্রৌ চ চিন্তযন্।। নিশিঃ ক্লন্ব। ততঃ শো-ক বিধিনা তত্ত্ব মাধবি ৷৷ ত্রেমব গতসঙ্গল স্ত্রিরাত্তে প্রত্যপদ্যত। তগ্য প্রতিবিশুদ্ধগ্য মাষ্মাসে जू बामनी ।। यनः मण्मृका विष-ये वृक्षि विखादगामिनी। म निम শ্চিন্তযামাস আদ্ধকল্প সমাহি তঃ।। যানি তদ্যৈব ভোজ্যানি मूलानि ह कलानि ह। यानि का-নি চ ভক্যাণি নবঞ্চ রস সম্ভব ।। যানি তদ্যৈৰ চেফ্টানি সৰ্ব মেত দুদাহরৎ। আমন্ত্র্য ব্রাহ্মণ পূর্বণ च्छिट् दा मगाहिन् ॥ प्रकिना वर्ज्जः गर्बः स्रिधः स्रय मन्नर्बज् । সপ্তক্তন্ত্রা তত স্তত্ত্ব যুগপৎ সমুপা विশए।। দদাভুমাণ্স শাকানি मृलानि চ कलानि छ। পूজरिषा তৃবিপ্রান্ স সপ্তরুত্বস্ত সৃন্দরি॥ ফ্রবা তু দক্ষিণাগ্রাণশ্চ স্পাণশ্চ थायकः चिन्धिः। थानमि श्रीमर्छ পিঙা॰ নাম গোত্র মুদাহরন্ ॥ এতস্মিমস্তরে দেবি নারদে৷ দ্বি-জসত্তমঃ। জগাম তাপসারণ্য• খযাশ্ৰম বিভূষিত।। ত॰ দৃফ্বী

পুজ্যামাস স্বাগতেনাথ মাধ্বি ৷ ভীতো গদাদয়া বাচা নিশ্বস্তু-শ্চ মুহু মুহঃ।। সত্ৰীডো ভাষ-তে বিপ্রঃ কারুণ্যেন সমস্বিতঃ। ক্লন্তঃ শ্বেহশ্চ পুত্রার্থে ময়া সংক-ब्रा य क्र छ ।। ত श्री विषा विकान् সপ্ত অহাদ্যেন ফলেন চ। প-শ্চাদ্বিসজ্জিত পিণ্ড দর্ভানা-স্তীৰ্য্য ভূতলে।। উদকানয়নঞ্চৈ-ব ত্বপদব্যেন পাষিত । শোক ন্নেহ প্রভাবেন এতৎকর্ম ময়া-ক্তত।। ন চ তাত ময়। পূৰ্ব ন দেবৈ ঋষিভিঃ ফ্লতং। ভষং তীব্রং প্রপশ্যামি মুনিশাপাৎ সুদারু-ণাৎ।। নারদ উবাচ। ন ভেতব্য• দিজশ্রেষ্ঠ পিতর[,] শরণ বজ । ज्यभर्भः न ह शैंगामि धर्मिटेनवा-ত্র সংশযঃ।। নারদেটনব মুক্তস্ত निमि श्रीन मुलाविग९। कर्मना মনদা বাচা পিতরু শরণ গতঃ॥ ততোতিচিন্তযামাস বংশকর্তার মান্ত্ৰঃ। ধ্যায্মান স্ততোপ্যা-শু আজ্গাম তপোধনঃ॥ পুত্র-শোকেন সম্ভপ্তণ পুত্ৰণ দৃষ্ট্যা ত-পোধনঃ। পুত্র মাশ্বাসধামাস বাগ্ডি রিফাভি রব্যবৈঃ॥ নিমে সঙ্গলিত শ্রেষান্ পিতৃষক্ত স্তপো-

थत । পিতৃষজ্ঞেতি निर्मित्की धर्मा २**य॰ बक्षना ऋय**े। ততো হ্নতিতরোধর্মঃ ক্রতুরেকঃ প্রতি-ষ্ঠিতঃ। ক্ৰতঃ স্বযন্ত্ৰা পূৰ্ব॰ আ-**प्कारम। विधि ऋखमः ॥ ३७ व**। রাহে আন্ধোৎপত্তিনামাধ্যায়ঃ ॥ 🕸 ॥ अभि ह। अभमत्यान मा-তব্য॰ মাসি মাসি তিলোদক॰ । প্রণম্য শিরসা দেবী নির্বাপস্য চ शातिनीः। देवकवी कामाशी ८५-তি অজয়। চেতি নামতঃ ।। এবং দত্তেন প্রীয়ম্ভে পিতরশ্চ ন স্থ শ্বঃ। পরমাত্মা শরীরস্থে দেব-তানা॰ মধা ক্তঃ ৷৷ ত্রয় স্তত্র ব-রারোহে দেবগাত্রাদ্বিনঃসূতাঃ। পিতৃদেবা ভবিষ্যন্তি ভোক্তারঃ পিতৃপিওকান্।। দেবতাসুর গ-ন্ধৰ্ব। যক্ষ রাক্ষস পদ্মগাঃ। পিও॰ শ্রাদ্ধস্য পশ্যন্তি বাযুভূতা ন সং শযঃ।৷ পিতৃযজ্ঞ বিশালাক্ষি ষে अर्देखि विद्या जनाः। आयुः की-ৰ্ত্তি ৰ্বলং তেজো ধনং পুত্ৰ পশু ব্রিষঃ ৷৷ দদস্তি পিতর স্তস্য আ-রোগ্যণ নাত্রসংশযঃ। আত্মকর্ম-বশালোকান্ প্রাপ্রস্তীহ শো-ভনান্।। তির্যাক্ষু চ বিমুচ্যক্তে প্রেতভাবাচ্চ মানবাঃ। নরকে

পচ্যমানানা ত্রাতা ভবতি মান-বঃ।। পূজকঃ পিতৃ দেবনা॰ সর্ব-कानः गृश्याया । विजाजी सर्भ যিষা তু পূর্বেন বিধিনা নরঃ।। অক্ষ্ণ তস্য মন্যন্তে পিতরঃ শ্রা-দ্বতর্পিতাঃ। নরা যে পিতৃভক্তা স্তে প্রাপুবন্তি পরা• গতি•।। कः।। পকাম তত্ত্ৰ বৈ কাৰ্য্য সুবিসৃষ্ট-ঞ্চ শুদ্ধিতঃ। বৃত্তে তু তত্ৰ মধ্যা-ङ्ग्रि आकात्रस्य कात्ररय ।। স্বা-গতঞ্চ তথা কৃত্বা পাদ্যার্থণ মণ্ডল* শুচিঃ। পাদ্য দদ্ধা তু বিপ্রায গৃহস্যাভ্যন্তর নযেৎ ৷৷ আস-ন॰ কল্পবিদ্বা তু আবাহ্য তদনন্ত-तः। **अर्थाः ममाक्षिधार**नन गन्न-भारेलाः थाशृका ह।। धूशः मीशः তথা বস্ত্ৰ• তিলোদক মথাপি বা ৷ পাত্রঞ্চ ভোজনস্যার্থে বিপ্রাব্রে कार्याः शःकिरमाय निवातकः । অগ্নিকার্য্যণ ততঃ ক্রত্বা অন্নঞ্চ প-রিবেশযেৎ।। তত্র কার্য্যস্ত সঙ্করঃ **शिज्नुफिना मुन्तति। यथा**मुरथन ভোক্তব্য মিতি ক্রযাদ্দ্বিজ প্রতি ৷৷ রক্ষেম মন্ত্রপাঠা॰শ্চ আচমে-ত বিচক্ষণঃ। তৃথাণ্স্ত বান্ধণান্ জ্ঞাত্ব। দদ্যাদৈ বিকির ততঃ।।

উত্তরাপোশন দঘা পিওপ্রশাস্ত কার্যেৎ। দক্ষিণাভিমুখো ভূষ। मर्जानाखीर्या जूजला। शिष्-मानः अन्वीं अभिवामि विरुप्य তথা। পিঞানা পূজন কার্য্য **ज्युत्रका यथाविधि ॥ जाक्रामा চ श्रु ज मामक्या माम्यान**् । পিণ্ডা স্ত্রমস্ত বসুধে বাবতিষ্ঠস্তি ভূতলে ৷৷ আপ্যাৰমানাঃ গ্ৰিতর 🛚 ন্তাবত্তিপ্ঠন্তি বৈ গৃহে। উপস্পৃশ্য শুচি ভূষা দদ্যাৎ শাস্ত্যুদকা-नि ह ॥ अन्या नित्रमा ভূমो निर्वाणमा ह शांत्रिनीः। देवस्यी কাশ্যপী চেতি অক্ষয়া চেতি না-মতঃ ৷৷ ভক্ষবেৎ প্রথম পি**ও**ণ मूमटक मम्मा धारक धव वि ধিঃ স্মৃতঃ।। পিতৃদেব॰ বিসৃজ্যা-থ ভক্তা। তু প্রণমেত্রু তান্। এব॰ দত্তেন তুষ্যস্তি পিতৃদেবা ন मः भवः ॥ मीर्चाय्याः अवष्ट्छि পুত্ৰ পৌত্ৰ ধনানি চ। তেনোত্ত-নেষু বিপ্রেষু দদ্যাৎ প্রাক্ষে বি-ধানতঃ॥ অন্যূপা তত্তু বৈ শ্ৰাদ্ধ• নিষ্ফল নাস্তি সংশ্যঃ। মন্ত্রহী-ন জিয়াহীন ষৎপ্রাদ্ধ সরু তে দিজঃ ৷৷ মন্তক্তস্যাসুরেন্দ্রস্য

ফল• ভবতি ভাগতঃ। ইতি বা ब्राटर পिতৃयक्षनिर्गमनामाधायः ।। 🖝।। তদ্যাধিকারিক্রনো যথা । পুল্রঃ পৌল্রঃ প্রপৌল্রো বা ভ্ৰাতা বা ভাতৃসন্ততিঃ। সপিও-সম্ভতি ৰাপি ক্ৰিয়াৰ্ছা নৃপ জায়-তে ৷৷ তেখা মভাবে সর্বেধাণ স-মানোদকসম্ভতিঃ। মাতৃপক্ষস্য পিণ্ডেন সংবদ্ধা যে জলেন বা ॥ সলম্বেপি চোৎসন্মে স্ত্রীভিঃ कार्याः किया नृश। मःचाठान्तः ৰ্গ তৈ ৰাপি কাৰ্য্যাঃ প্ৰেত্তস্য ষাঃ ক্রিষাঃ।। উৎসমবন্ধুরিক্থাদা कात्ररयमवनीপिछिः। পূर्वाः कि-या नशामान्छ তथा टिटवाखदाः ক্রিষাঃ।। ত্রিপ্রকারাঃ ক্রিযা-স্ত্রেতা স্তাসাণ ভেদণ শৃণুষ মে। जामाह वार्यायुशामि न्यर्गामा-ন্তান্ত যাঃ ক্রিযাঃ।। তাঃ পূর্ব। **মধ্যমা মাসি মাস্যেকোদ্দিষ্ট স**্থ জ্ঞিতাঃ। প্রেতে পিতৃত্ব মাপক্ষে मिश्चिकत्रशामन्।। क्रियट्ख याः ক্রিষাঃ পিত্র্যাঃ প্রোচ্যস্তে তা নৃপোত্তরাঃ। পিতৃ মাতৃ সপিতে-ख ममान मलिटेन खथा।। म॰घा-তান্তর্গতৈ শৈচব রাজ্ঞা বা ধন-হারিণা। পূর্বাঃ ক্রিষাস্ত কর্তব্যাঃ

পুত্রাদ্যৈ রেব চোত্তরাং ৷৷ দৌ-হিত্তৈ ৰা নরশ্রেষ্ঠ কার্য্যা ভন্ত-नरेय खथा। गृञार्शन ह कर्डवाः স্ত্রীণা মপুতেরাঃ ক্রিষাঃ।। প্রতি-म॰व ६ मतः त्राज्यस्य का कि छै॰ वि-ধানতঃ। ইতি বিক্পুরাণে ৩ অংশে ১৩ অধ্যায়ঃ ॥ 🕸 ॥ या-জ্ঞবন্ধ্য উবাচ। অথ গ্রাদ্ধবি-ধি॰ বক্ষ্যে সর্ব পাপ প্রণাশন॰। অমাবাস্যাফ্টকা বৃদ্ধিঃ ক্লফপকে। ২যনদ্ব ।। তাব্য । বাহ্মণ সম্প ত্তি বিষুবৎ সূর্য্যসংক্রমঃ। ব্যতী-পাতো গজছায়া গ্রহণ চন্দ্র সূ-ৰ্য্যযো:॥ আদ্ধ প্ৰতিৰুচি কৈচৰ শ্রাদ্ধকালাঃ প্রকীর্তিতাঃ। 🛊 । অত্যাে যঃ সৰ্ববেদেষু শ্ৰোত্তিষাে विम्ब्वा॥ विमार्थविष्कार्थ সামা দ্রিমধু দ্রিসুপর্ণিকঃ। স্বসূীয খাদ্বিগ্জামাতৃ যাজ্য শ্বশুর মাতৃ-লাঃ।। ত্রিণাচিকেত দৌহিত্র শি-ষ্য সম্বন্ধি বান্ধবাঃ। কর্ম্মনিষ্ঠা স্ত পোনিষ্ঠাঃ পাঞ্চাগ্নি বন্ধচারিণঃ ।। পিতৃ মাতৃপরাশ্চৈব ত্রাহ্মণাঃ व्याक्तरमवजाः। 🛊 । त्रागी ही-নাতিরিক্তাঙ্গঃ কাণঃ পৌনর্ভব ख्या। व्यवनीन्।। मत्या त्य ह त्य চাচারবিবজ্জিতাঃ। অবৈষ্ণবাশ্চ

रि मर्स् न आक्वार्शः कर्नाहन ॥ ॥ निमञ्जरंबक शृर्वन्य विं-জৈ ভাব্যঞ্চ সংযতৈঃ। আচান্ত শ্বৈতি ভাসনে সূপবেশ-ষেৎ।। যুগ্মান্দৈবে তথা পিত্রে मूथातत्म यमक्रिष्ठः। क्षीरेतत्य প্রাগুদক্পিত্রো ত্রীণ্যেকণ চো-ভযোঃ পৃথক্ ৷৷ মাতামহানা ম-*(भाव• जन्न• व*) देवश्वरागिक• । रख्यकानन पत्रा विखेतार्थः সশানপি।। আবাহ্য তদনুক্তা-**তো বিশ্বেদেবাস ই**ভ্যুচা । য**ৈ**ব ব্লম্ববকীর্য্যাথ ভাজনে সপবিত্রকে ।। नत्मादनवा। शयः किञ्ज्। यदा-সীতি ষবাণ স্তথা। যা দিব্যা ইতি মন্ত্রেশ হস্তেবের বিনিক্ষিপেৎ 11 गरमानरक छथा धृश मालामान প্রদীপকণ। অপসব্য ততঃ কৃত্ব। शिकृगा म**ञ्जानकिन** ॥ विश्वना॰ স্ত সশান্ দম্বা উষস্তব্যেত্যচা পিতৃন্। আবাহ তদনুজাতো জপেদাযান্ত ন স্ততঃ ৷৷ যবার্থস্ত **जिंदनः कार्याः अर्यामर्यामि शृ**-ৰ্বৎ। দত্বা তু সংশ্ৰবাণ স্তেষাণ পাত্ৰে ক্ৰম্বা বিধানতঃ।। পিতৃভ্যঃ স্থানমসীতি ন্যুক্তণ পাত্রণ করো-ত্যধঃ। অগ্নে করিষ্যেত্যাদায

পৃচ্চত্যন্ন ঘৃতপ্লুত ৷৷ সরুষেতি তথোক্তো ২গ্নো হত্বাসৌ পিতৃষ-জ্ঞতঃ। হতশেষ প্রদদ্যাক্ত ভা-জনেষু সমাহিতঃ ৷৷ যথালাভো-পপমেষু রৌপ্যেষ্ চ বিশেষতঃ। দত্বান্ন পৃথিবীতে পাত্র মিতি পাত্রাভিমন্ত্রণ ।। ক্বন্থেদ বিষ্ণু-तिञास निकाक्षे नित्रमाय । সব্যাহ্নতিকা॰ গাৰ্মন্ত্ৰী॰ মধুব।-তেত্যচ তথা ৷৷ জপ্তা ৰথাস্থ বাচ্যণ ভুঞ্জীরণ স্তেপি বায়্তাঃ। व्यवभिक्षे श्विषाकः मनामाजाः ধনো হত্বরঃ।। আভূপ্তেশ্চ পবি-ত্ৰাণি জপ্তা পূৰ্বজপন্তথা। অন-गानाय ज्थाः य त्मरदेकतान्यना र।। তদয়৽ প্রকিরেন্ডুমৌ দদ্যা-চ্চাপঃ সক্তৎ সক্ত । সর্ব মন্ন মৃ-পাদায সভিন্ন দক্ষিণামুখঃ ॥ উচ্ছिফ मित्राधी शिश्वान् अन-मा । পিতৃ यद्धव । भाजा गरा-ना नत्थाव॰ प्रमाष्ठाठमन॰ ७७३ 11 येखि श्रीयंखा मिछि চाटेश्व॰ वित्थापवान् जनः पपट् । य-खिवाठा ততো प्रमापकरयापिक মেব চা। দম্বা তু দক্ষিণা॰ শব্জ্যা স্বধাকার মুদীরবেৎ। বাচ্যতা **নিত্যনুজ্ঞাতঃ পিতৃভ্যশ্চ স্বধো**-

চ্যতা ।। বিপ্রৈ রম্ভ স্বধেত্যুক্তো ভূমৌ সিঞ্চেত্ততো জল । দাতা-রো নো বিবর্দ্ধস্তা বেদাঃ সম্ভতি রেব চা৷ শ্রন্ধা চনো মা ব্যগম্ৎ वर प्रयथ भाष्ट्रि छ। रेज्यकु পি প্রিয়ণ বাচণ প্রাণিপত্য বিসজ্জ-যেৎ ৷৷ বাজে বাজে ইতি প্রীত্যা **शि**ष्रृर्बः विमर्द्धनः । यन्त्रः एउ मः खराः शूर्व मर्गाभाव निभा-তিতাঃ ॥ পিতৃপাত্র• তদুত্তান• क्षषा विश्वान् विमर्ख्याय । श्रम-কিণ মনুবজ্য ভুঞ্চীত পিতৃদে-বিত ।। বন্ধচারী ভবেত্তাম্ব রজ-নী ভাষ্যয় সহ। এব প্রদক্ষি-क्षा वृष्को नान्नीयूथानि ॥ যজেত যব কর্ন্ধনু মিশ্রাঃ পিণ্ডা ষবৈঃ শ্রিতাঃ। একোদিষ্ট দৈ-বহীন মেকার্ট্যেকপবিত্র**ক**ণ **৷৷** আবাহনাগ্নৌকরণরহিত অপ-সব্যবৎ। উপতিষ্ঠতা মিত্যক্ষ্য श्रात विथान् विमर्क्करयः ॥ अ-ভিরম্যতা॰ প্রক্রমাৎ ক্রম্ স্তেভি-রতাঃ স্ম হ। 🗱 । গদ্ধোদক তিলৈ ৰ্মিশ্ৰণ সৰ্য্যাৎ পাত্ৰ চতুষ্টয়ণ।। অর্থ্যার্থণ পিতৃপাত্তেষু প্রেতপাত্রণ প্রসেচযেৎ। যে সমানা ইতি দ্বাভ্যাণ শেষণ পূৰ্ববদাচরেৎ ॥

এতৎ সগিতীকরণ মেকোদিকৈ ত্ৰিয়া অপি। অৰ্থাক্ সপিভীক-त्रं भगा मन्दरमहोक्डर्वर ॥ ७-माभाम मामञ्ज मगा म-বৎসর ছিজ। পিণ্ডা-স্ত গোজ विथ्वरा नमामत्री जलि वा ।। 🟶 ।। ছবিষ্যান্দেন বৈ মাসং পা-**ষসেন তু বৎসূর•। মাৎস্য হা-**রিণকৌরভূ শঙ্গন ছাগ পার্য তৈঃ ।। ঐণ রৌরব বারাহ শাশৈ র্মাণ দৈ ৰ্যথাক্রম। মাসবৃদ্ধ্যাপি তু-ষ্যন্তি দত্তৈ রিহু পিতামহাঃ ॥#॥ मनावर्षा जरगानगाः ययाम् ठ ন সংশযঃ। প্রতিপৎ প্রভৃতিষ্বেব॰ ত্ত্ৰেণ নিহতামান্ত চতুৰ্দ্দশ্যা প্ৰ-দীয়তে। 🛊 । স্বর্গণ হুপত্য মোজ-শ্চ শৌর্য্য ক্ষেত্রণ বলণ তথা ॥ পুত্রশ্রেষ্ঠান্ স্সোভাগ্যানপত্য• মুখ্যতা সুতান্। প্রবৃত্ত চক্ত-তা পুত্রান্ বাণিজ্যপ্রভৃতী -স্তথা।। অরোগিত্ব: যশো বীত-শোকতা॰ পরমা॰ গতি৽। ধন॰ বিদ্যাণ ভিষক্ সিদ্ধিণ স্বপ্যণ গো-**জাবিক• তথা। ৷ অশ্বানাযুশ্চ বি**-ধিবদ্যঃ শ্রাদ্ধ সংপ্রবচ্ছতি। ক্লত্তিকাদি ভরণ্যস্ত সকামানা-

ध्यापियान्।। वजाणाः श्रीननः স্ত্যেব নবং আদ্ধং ক্বতং বিজাঃ। व्यायू शुकाः धनः विनाः सर्गः মোক সুখানি চ।। প্রয়ন্ত্তি তথা রাজ্য• প্রীতো নিত্য• পি-তামহঃ॥ ইতি গারুডে ১১ অ-शायः ॥ 🛊 ॥ जिन ह। वान শ্রাদ্ধ মহ• বক্ষো ভূক্তি মুক্তিপ্র-म॰ नृगा॰ । পূर्ब॰ निमञ्जरमि**शा**न् निमि मू। उन्निठातिनः ॥ अपिक-ণোপবীতেন দেবান্ বামোপবী-তিনা। পিতৃষিমন্ত্রবেৎ পাদৌ কালবেদ্বাক্য মন্ত্ৰতঃ ৷৷ ওঁ স্বাগ-ত ভবদ্ভি রিতি প্রশ্নঃ। ওঁ সুস্বা-গত মিতি তৈ ৰুক্তে ওঁ বিশ্বেভ্যো **(मट्वर्ड) এड९ शामानक मर्च्य** স্বাহা পিতৃভ্যঃ স্বধা ইতি দেব ব্ৰাহ্মণ পাদযো দেবতীৰ্থেনাভুগ ঙ্গশ জল সসুম দান া৷ ততো দক্ষিণামুখস্য বামোপবীতেন অ-মুক সগোত্তেভ্যঃ অস্মৎপিতৃ পিতামহ প্রপিতামহেভ্যো যথা-নাম শৰ্মভ্যঃ সপত্নীকেভ্য এতৎ शारमानक यर्घा॰ स्वधा ইতি পি-ত্রাদি ব্রাহ্মণ পাদযোঃ পিতৃতী-র্থেন ভুগ্নঙ্গশ তিল সসুম জলদা-नः। এবः गाजामशानिष्। এতদ

আচমনীয় স্বাহা স্বধেতি ত্রা-ন্ধণহস্তে। এষ বো অর্য্যঃ ইতি ব্রাক্ষণহস্তে হর্যাদানণ। এতদ্বঃ পুষ্ণা ইতি ব্ৰাহ্মণহন্তে পুষ্ণাদা-नः। उँ त्रिक्ष भिन भागनः हेहा-সধ মিত্যভিধাষ ওঁভূঃ ওঁভূবঃ **७ यः ७ मरः ७ जनः ७ ० १** ওঁ সত্য পপ্তব্যাহ্বতিভিঃ পূৰ্ব-मूथ प्रविद्याक्तर्गाश्रादमनः। छे-ত্তরাভিমুখাঃ পিতরঃ ওঁদেব-তাভ্যঃ পিতৃভ্যশ্চ মহাযোগিভ্য এব চ। नमः स्थारेय साहारेय নিত্য মেব নমে। নমঃ।। ইতি ত্রিজ্র্লেও। ওঁ আদ্যান্মিন্দে-শে অমুকমাসে অমুকরাশিগতে সবিতরি অমুকস্যাণ তিথো অ-মুক সগোত্রাণা মক্ষৎপিতৃ পি-তামহ প্রপিতামহানা যথানাম শৰ্মণাণ বিশ্বেদেব পূৰ্বকণ আদ্ধ **गर॰ করিষ্যে ওঁ বিশ্বেভ্যো দে**-বেভ্য ইদমাসন স্বাহা। ওঁ বিশ্বান্ দেবনাবাহ্যিয্যে ওঁ আ-বাহ্য ইত্যুক্তে ওঁবিশ্বেদেবাস আগত শৃণ্তান ইমণ হবণ এদণ र्हि निशीम छः। अँ वित्यापिताः শূণুতেন হব ধে মে অন্তরীকে ম উপদাবিষ্ট যে ২গ্নিজিহ্ব। উত

वा मुक्जा जामहान्त्रिम् विश्वि मानस्थः। ७ ७ वस्यः ममवन्छ সোমেন সহ ব্লাক্তা যলৈ কুণো-তি ব্রাহ্মণস্ত্রণ রাজন্ পার্যামসি ৷ ওঁ আগচ্ছন্ত মহাভাগা বিশ্বে-प्तिवा महावलाः। एव यज विहि-তাঃ প্রাদ্ধে সাবধানা ভবস্তু তে । ওঁ অপহতা সুরা রক্ষাণসি বে-দিসদঃ। ইতি ত্রিভি র্যববিকরণ ৷ ওঁপবিত্র মহণ করিষ্যে ওঁঙ্গ-ৰূম্বেতি তেনোক্তে সাগ্ৰন্থপত্ৰ-षर॰ প্রাদেশ প্রমাণ॰ রুদ্বা ওঁ পবিত্রে স্থো বৈষ্ণব্যৌ অনেন ঙ্গশাস্তরেণ ছিত্বা ওঁ বিফো র্ম্মন-সা পূতে স্থ ইত্যভাূক্য সশান্ত-রেণ ত্রিবৃত ক্বনা পাত্রে পবিত্র-निर्विभनः। मस्य। सिवी त्रजीके-যে আপো ভবন্ত পীত্তমে শংষো রভিসুবম্ব নঃ। ইতি পাত্তে জ-লদান ৷ ওঁযবোসি যবযাস্ম-দ্দেশো ষবধারাতী ইতি যৰ-দান ।। ওঁ গন্ধদারা দুরাধর্বা নিত্যপুষ্টাণ করীষিণীণ ঈশ্বরীণ সর্বভূতানা স্থা মিহোপস্কযে শ্রিষণ ইতি গন্ধদান । শ্চ তে লক্ষ্মীশ্চ পত্ন্যা ইতি পুষ্প-मान । **उँ या मि**वा। व्याशः शय-

সা সংবভূবু বা অন্তরীকা উত পार्थ वीर्या हित्रग्रवर्ग यख्डिया স্তা ন আপঃ শিবাঃ সংশ্যোনাঃ সুহবা ভবম্ব ওঁধুরিলোচন সং-জ্ঞকেভ্যো বিশ্বেভ্যা দেবেভ্য এষে। ২র্ঘ্যো নমঃ। ইতি হস্তে **২**ৰ্ঘ্যণ দত্বা অনেনৈব পাত্ৰেণ সণ্-প্লব পবিত্রগ্রহণ প্রথমপাত্রেণ সংপ্রবং পবিত্রঞ্ব গৃহীত্বা ত্রাহ্মণ দক্ষিণপার্শ্বে স্পোপরি উর্দ্বুসুখ পাত্তে স্থাপন তদুপরি জশদান ততঃ ওঁধুরিলোচন সংজ্ঞকে-ভ্যো বিশ্বেভ্যো দেবেভ্য এতানি गन्न भूष्म यूग मीम वारमायूग সোত্তরীয় যজ্ঞোপবীতানি নমঃ । गन्नामिमान मिष्ठ्य मञ्ज म॰-क्ष मिक्ति तुखा बाक्त गराहन । ততঃ পিতৃ পিতামহ প্রপিতামহ মাতামহ প্রমাতামহ বৃদ্ধপ্রমাতা-মহানাণ সপত্নীকানাণ শ্রাদ্ধ মহণ क्तिरमा। अनुब्छा शनः। उँ ज्रक ষ্বেতি ত্রাহ্মণৈ রুক্তে। ওঁ দেবতা-ভাঃ পিতৃভ্যশ্চ মহাযোগিভ্য এব চ ইতি ত্রি র্জপেণ। তত ওঁ অমু-ক সগোত্রাণাণ অস্মৎপিতৃ পি-তামহ প্রপিতামহানা যুথানাম শর্মনাণ সপত্নীকানাণ জাদ্ধণ যু-

ষাস্বহ• করিয়ো। ওঁ জরুত্ব শ্রাদ্ধ-করণানুজ্ঞান । ওঁ অমুক মগো-ত্রেভ্যো অস্মৎ পিতৃ পিতামহ প্র-পিতামহেভ্যো ষথানাম শর্ম্মভ্যঃ ব্ৰাহ্মণ বামপার্শ্বে আসন । ওঁ পিতৃনাবাহিষিষ্যে ওঁ আবাহ্যে-ত্যক্তে উশস্তস্তা নিধীনহ্যশন্তঃ সমিধীমহি। উশন্শত জাবহ পিতৃন্ হবিষে অত্তরে ৷ ওঁ আ-ষাম্ভ নঃ পিতরঃ সৌন্যানে। অগ্নি-স্বাক্তাঃ পথিভি দেবিয়ানৈঃ। অ-ব্মিন্ যজ্ঞে স্বধ্যা মদস্তো ২খি-ক্রবন্ত তে ২বন্তুস্মান্। ইত্যাবা-হন। ওঁ অপহতাসুরা রক্ষা িস विभिन्न । जि खिन विकत्न । ওঁ ভিলোসি সোমদৈবত্যো গো-সবে। দেব নির্শ্বিতঃ। প্রত্ননন্তিঃ পূক্তঃ স্বধ্যা পিতৃন্লোকান্ প্রী-ণাহি নঃ স্বাহা। তিলদানণ। গন্ধ পুষ্ণা হস্তাভ্যাণ দদ্ম পিতৃপাত্র মুখাপ্য যাদিব্যেতি পঠিত্বা অনু-ক সগোত্র অস্মৎপিতঃ অমুক্ শৰ্মান্ সগত্নীক এষ তে অৰ্ঘ্যঃ স্ব-ধা। এবং পিতামহাদৌ। সপবি-ত্ৰণ পাত্ৰণ সৃহীত্বা ত্ৰাহ্মণ বামপা-র্শ্বে দক্ষিণাগ্রঙ্গশোপরি ওঁপিতৃ-

ভাঃ স্থানমসীতি অধোমুখণাত্র স্থাপন । ওঁশুস্বন্তা লোকঃ॥ পিতৃদদনাঃ পিতৃদদন মদি । অধোমুখ পাত্রস্পর্শন॰। ভতঃ অমুক সগোত্রেভ্যো অক্ষৎপি-তৃ গিতানহ প্রণিতামহেভ্যঃ স পত্নীকেভ্যঃ এতানি গন্ধ পুষ্প ধূপ দীপ বাদোযুগ সোত্তরীয় যজে।-পবীতানি স্বধা ৷ পিতৃতীর্থেন গ-क्षापि ए। नक्षापिए। यक्टि-ড মস্ত সঙ্গল সিছি। রস্তা। বান্ধণ বাচনা। এবা সাভামহাদীনা ম-नूका भना नि कर्य। ७ या नित्रा-তি ভূমি সন্মাৰ্জ্জন॰। ততো ঘৃতা ক্ত নন্ত গৃহীত্বা দক্ষিণোপবীত॰ পিতৃবাক্ষণ । ওঁ অগ্নে) করণ মহ করিয়ো ওঁ ঙ্গরুয়েতি তেনে।ক্তে ওঁ অগ্নয়ে কব্যবাহনায় স্বাহা। ওঁলোনায পিতৃমতে স্বা**হ**। । আহতিদ্বং দেব ব্ৰাহ্মণ হস্তে দত্বা অবশিক্তার্দ্ধণ পিণ্ডার্ঘণ স্থাপ-যিত্ব। অপর মর্দ্ধণ পিত্রাদিপাত্তে মাতামহাদিপাত্রে চ নিঃক্ষিপেৎ । পাত্রে অন্নাদি নিধায় স্বশং দত্বা অধোমুখাভ্যাণ পাণিভ্যাণ পাত্রণ গৃহীয়া। ওঁপৃথিবীতে পাত্র॰ দ্যৌঃ পিধান॰ ত্রাহ্মণস্য

মুখে অমৃতে অমৃত জু:হামি স্বা-হা। পাত্রাভিমন্ত্রণ। ইদ বিকু বিচক্রমে ত্রেধা নিদধে পদ । সমূচ মস্য পাণ্শুলে বিক্ষো হব্য° রক্ষস্ব । ইত্যন্নোপর্ব্যধো-मूथ षिजाष्ट्र्षे नित्नमन । उँ অপহতেতি ত্রি র্যব বিকরণ । ওঁ निरुन्ति गर्ब॰ यमस्यश्रवद्धर्व० হতাশ্চ সর্বে ২সুর দানবা মযা। রক্ষাণসি যক্ষাঃ সপিশাচ সংঘা হতা মযা যাতৃধানাশ্চ সর্বে॥ ইতি সিদ্ধার্থ বিকরণ । তত ওঁ ধুরিলোচনসংজ্ঞকেভ্যো বিশ্বে-ভ্যো দেবেভ্য এতদন্ধ সমৃত সপানীয়ণ সব্যঞ্জনণ স্বাহা ইতি বারি স্পাটেণ্য রন্ম সকল্পনং। ও শ্রাদ্ধ নিদ মচ্ছিত্র মস্ত সকল সিদ্ধি রস্তু। ততো বামোপবীতে-ন সব্যঞ্জন সঘৃত মন্ন পিত্রা-দিপাত্তে নিধাষ তদুপরি ভূমি-সংলগ্ন সশং দদ্ধা ওঁ পৃথিবীতে পাত্ৰ॰ অভিমন্ত্ৰণ• ॥ উত্তানাভ্যা॰ পাণিভ্যাণ পাত্ৰ• গৃহীত্বা ওঁ ইদ• বিষ্ণু রিত্যশোপরি উত্তানাঙ্গুণ নিবেশযেৎ ওঁ অপহতা ইঙি তিল বিকরণ । ভূমিপাতিত বা-মজানুঃ। অমুক সংগাতেভ্যো

-ক্ষাম্বংগিত্ পিতামহ প্রপিতাম-হেভ্যো অমুকামুকশশ্বভ্যঃ সপ ত্নীকেভ্য এতদন্ধণ সঘূতণ সপানী-ষ সব্যঞ্জন প্রতিবিদ্ধবজ্জিত श्वभा व्यक्तमकद्भाः। ७ सङ्कं व হম্ভী রমৃত ঘৃত পয় কীলাল | পরিসুত॰ স্বধাস্থ ভর্পথত মে পি-তৃন্। দক্ষিণামুখবারিধারাত্যাগঃ । ७ वन भिन्न मिह्य मञ्ज मह ন্দ্রসিদ্ধি রস্ত । ততঃ সব্যাহ্নতি-क्रम। भाषका विमर्क्किषया मधु-॥ ৰাতা ঋতাযতে মধুক্ষরন্তি সিন্ধ-्वः माधीर्भः मरञ्जासभीः। मधु नकः মুতোযসো মধুমৎ পার্থিবং রজঃ মধু দৌ রস্ত নঃপিতা। মধুমানো বনম্পতি মধুমানস্ত সূর্য্যে মাধী পাবো ভবন্ত নঃ। মধু মধু মধু ইতি জপঃ। যথাসুখ বাগ্বতা জুষধ মিতি ক্রমাৎ। ভুক্তবৎসু সপ্তব্যাধাদিক পিতৃস্তোত্ৰ জ-পেৎ। ওঁ সপ্তব্যাধা দশার্থেরু म्गाः कानक्षत्र गित्रो। ठक-वाकाः मत्रबीत्य रुगाः मत्रमि মানসে।। তেপি জাতাঃ স্ক্রন্ফে-•ত্তে ত্রাহ্মণা বেদপারগাঃ। প্রস্থি-তা দূরমধান যুষ তেভ্যোবসী-मठ। তত छुरश्चम्। मिक्नाग्राथा

বামোপবীতী। উচ্ছিফাগ্রতঃ ওঁ অগ্নিদন্ধাশ্চ যে জীবাঃ যেপ্যদ-भाः ऋता यय। ভূयो मरखन তৃপ্যন্ত ভৃপ্তা যান্ত পরাণ গতি।।। ইতি ভূমৌ ঙ্গশোপরি সযৃত মন্ন॰ জলপ্পুত বিকিরে । ততা দেব বান্ধণ ক্রমেণ জলগণ্ডুষ দন্ত্রা পূৰ্ববৎ পুনঃ সব্যান্ততিকাণ সা-বিত্রী॰ মধুবাতেভিত্যচ॰ মধু ম-ধিতি চ জপ্ত্ব। ওঁ রুচিতণ ভবন্ধি-রিতি দেবত্রাহ্মণ প্রশ্নঃ। সুরু-চিত মিতি তেনোক্তে ওঁশেষ মন্ন মপ্যস্তীতি প্রশ্নঃ। ইটেষ্টঃ সহ जु ७ एक छित्रा छित्रा विवासि **ৰান্ধণে বামোপবীতেন ওঁ তৃ**-প্তাস্থ ইতি প্রশ্নঃ ওঁ তৃপ্তান্ম ই-ত্যুক্তে শেষমন্নেতি প্রশ্নঃ। ওঁ ইফৈঃ সহ ভুঙ্ক্বেতি তেনোক্তে মাতামহাদি ত্রান্ধণে তথৈব প্র-শ্বঃ। ততঃ পিত্রাদি ব্রাহ্মণে পি-**ণ্ডানহ॰ পাত**যিষ্যে পাত্যেত্যু-ক্তে। তদুচ্ছিষ্টাগ্রতো ২ভ্যুক্ষণ মণ্ডলঞ্চ চতুকোণ তিল বিকরণ ওঁ অমৃক সগোত্র অস্মৎপিতঃ অমুক শৰ্মান্ সপত্নীক এতত্তে পিণ্ডাসন স্বধা ইখে রেখা মধ্যে পিতামহায প্রপিতামহায চ।

সব্যাহ্নতিকা॰ গাষত্রী॰ মধুবাতে-তি ত্রি জঁপন্ অয়৽ সাজ্য৽ পিও৽ ক্লমা স্পোপরি অমুকগোত্রা-স্মৎপিতঃ অমুকশৰ্মন্ সপত্নীক এষ তে পিণ্ডঃ যে চাত্ৰ দ্বা মনুষা শ্চ স্ব মনু ভব্মৈ তে স্বধ্বা। এব॰ পিতামহ প্রপিতামহ মাতামহ প্রমাতামহ বৃদ্ধপ্রমাতামহেভ্যঃ ৷ পিওশেষ বিকিরণ পিণ্ডাস্তিকে ৮ ওঁ লেপভুজঃ প্রীযন্তাণ ইতি স্ত-রণ সশেষু হস্তমার্জ্জন । প্রকা লিতেন পিওপাত্রোদকেন অ-মুক' সগোত্র অস্মৎপিতঃ অমুক শর্মন্ সপত্নীক এতত্তে জল মক-নেনিক্ষ ওঁষে চাত্র ত্বা মনু ষা স্চ ষ্ক মনু তক্ষৈ তে স্বধেতি পিতৃপি-ওসেচন । পিওপাত্র মধোমুখ *মুখা বন্ধাঞ্জলি ওঁ অত্ত্র পিতরো* यानगक्षः यथाञाग यातृसायश्च यि-তি জপঃ। जाशः न्युकु। वारमन পরাবৃত্য উদজুখন্চ প্রাণা স্ত্রিঃ সংযম্য। ওঁবসন্তাষ নম স্তুভ্য• ত্রীমায চ নমে। নমঃ। বর্ষাভ্যশ্চ শরৎ স॰জ্ঞ ঋতৰে চ নমঃ সদা।। হেমন্তায় নম স্তভ্যাণ নম স্তে শি-শিরায চ। মাস সংবৎসরেভ্যশ্চ দিবসেভ্যো নয়ো নুষং ॥ ওঁষ-॥

ড্ভা ঋতুভো নমঃ পিতৃভো . नमः। ইতি জপः। वारमरेनव পরাবৃত্য দক্ষিণাভিমুখঃ অমীম-দস্ত পিতরো ধথাভাগ মাবৃষাধি-ৰত। ইতি জপঃ। বাসঃ শিথি-লীক্নত্যাঞ্চলিং ক্লন্বা ওঁ নমো বঃ পিতরঃ পিতরো নমো বঃ। ইতি জপঃ। গৃহান্নঃ পিতরো দত্ত। रेि गृरवीकन । ७ मता वः পিতরো দেশঃ। ইতি পিও বী-ক্ষণ । ওঁ এতদ্বঃ পিতরো বাসঃ ইত্যুচ্চাৰ্য্য অমুক্ সগোত্ৰ ইত্যা-দিনা এতত্তে বাসঃ ওঁ যে চাত্ৰ ত্বা মনু ষা॰শ্চ দ্ব মনু তব্মৈ তে স্বধা । मुगांखित भूजमानः। वारमन शानिना উদকপাত্রণ গৃহীত্বা ওঁ উৰ্জ্জণ বহন্তী রমৃতণ ঘৃতণ পয়ঃ कीनानः ইত্যাদিনা পিডোপরি পূৰ্স্থাপিত বারিধারাত্যাগঃ। পাত্র শেষোদকৈঃ প্রত্যেক পি-खरमहनः। शिखवारक्रन शक्वांनि দান ৷ পিখোগরি দশ হস্তঞ্চ দত্বা ওঁ অক্ষমীমদন্ত হব প্রিয়া অধূষত ুঅস্তোষত স্বভানবো विश्रा न विखेश मंजीरश शाहि-ন্দ্র তে হরীতি জপঃ। ইখ॰ মা-**जामहारम बीमाना माञ्चान**

সুসুপ্রোকিত মন্ত্রিতি ভূমাভ্যু-ক্ষণ ফুদ্বা। অগা মধ্যে স্থিত। দেবা সৰ্ব মপ্সু প্ৰতিষ্ঠিত ৷ বান্ধ-পদ্য করে ন্যস্তাঃ শিবা আপো ভবন্ধন: ॥ শিবা আপঃ সম্ভিতি श्रुख बाक्षवमा कलमान । नकी র্বসতি পুলেষু লন্ধী র্বসতি পুষরে । बन्दी र्वट्ड मना लाएं स्नीम-নস্য সদাস্তবেম সেমনস্য মস্ত পুষ্পদান । ওঁ অক্ষতঞ্চাস্ত মে পু-শ্যাণ শান্তিঃ পুষ্টি খৃতি শ্চ মে। বদয়ৎ শ্রেষক্ষরু লোকে তত্তদস্ত সদা মম।৷ ওঁ অক্ষতঞ্চারিইঞ্চা-ন্ত যব তওুল দান । অমুক সগো-ত্রাণা মক্ষৎ পিতৃ পিতামহ প্রপি-তামহানা সপত্নীকানা দত্ত মি-দ মন্ন পানাদিক মক্ষয় মস্ত ইতি পিত্রাদি ত্রান্ধণহন্তে সভিলজ্জ দান ৷ যজমানস্য প্রশ্নে অস্তিতি ত্রান্ধণো বদেৎ। এবং মাতামহা-भीना मक्तराः। आभिवः। ७ अ-যোরাঃ পিতরঃ সম্ভ গোত্রণ নো বৰ্জতাণ ৷ দাতারো নোভিবৰ্জস্তাণ বেদঃ সন্ততি রেব চ। শ্রদ্ধা চনো মা ব্যগমন্বহু দেয়ঞ্চ নো ২স্তি তি।। অন্নঞ্চ নো বহু ভবেদতিথীণ 🄏 লুভেমহি। যাচিতারশ্চ নঃ

সন্ত যা চ যাচিম্ম কঞ্চন।। এতা এবাশিষঃ সম্ভ সৌমনস্য মস্ত সু-মুখ চাম্ভ ইত্যুক্তে পিওপাত্তে 🗪 यं अञ्चलान् अभान् अविवानि ठाखीया भिजामि जानन प्लाकृ স্বধাণ ব্যুচ্যিষ্যে ওঁ ৰাচ্যতাণ ওঁ পিতৃ পিভামহ প্রপিতামহ মাতা-মহ প্রমাতামহ বৃদ্ধপ্রমাতামহে-ভ্যো ষথানাম শর্মভ্যু সপত্নী-কেভ্যঃ স্বধোচ্যতা অস্ত স্বধা ইত্যুক্তে উর্জ্জণ বহন্তী রমৃত• খৃত ইতি পিঞানা মুপরি বারি-ধারা॰ দদ্যাৎ। তত ওঁ বিস্ফেদ-বা অস্মিন্ যজ্ঞে প্রীযন্তাণ দেব ব্রাহ্মণহন্তে ববোদক দান ওঁ প্রীযন্তা মিতি তেনোক্তে ওঁছে-বতাভ্য ইতি ত্রি জ্র্কপেৎ। অ-सागूथ निखनावानि চालियश আটম্য দক্ষিণোপবীতী পূৰ্ৰাভি-मूथः अ व्यमुक मरभावाय व्यम्-কশৰ্মণে ভাহ্মণায সগত্নীকায শ্রাদ্ধপ্রতিষ্ঠার্থণ দক্ষিণা মিদণ র-**ज्जु प्रश्न महः मदम इ** जि मिक-ना॰ नम्गा এব॰ या जायशामी ততো দেবত্রাহ্মণায় দক্ষিণাদান• । ততঃ পিতৃবান্ধণে। পিওপাত্র মুক্তান কন্ম ওঁ পিঙাঃ সম্পন্নাঃ

ওঁ সুসম্পন্না ইতি পিণ্ডে ক্ষীরধা-রা দন্ধ পিশুচালন । ওঁ বাজে বাজে বত বাজিনো নো ধনেষ্ বিপ্ৰা অমৃতা ঋতজ্ঞাঃ। অসা মধ্য পিবত মাদযধ্ব তৃপ্তা যাত পথি ভি দেবযানৈঃ॥ ইতি গিত্রাদি বি-সৰ্ক্তন•াওঁ আ মাবাজস্যপ্ৰসবো জগম্যাদেমে দ্যাৰা পৃথিবী বিশ্ব-ৰূপে অনাগন্ত পিতরা মাতরা মু-বৰ্মা মা সোমো ২মৃতত্বাৰ গম্যাৎ ৷ ইতি দেব বিসজ্জনি ৷ ওঁঅভির-ম্যতা মিত্যক্তে অভির**তাঃ স্ম ই**-প্রাক্ষণে রনুজ্ঞাতদ্য নিবর্ত্তন॰ ৷ গবাদিষু পিণ্ড প্রতিপাদন মিতি । এষ শ্রাদ্ধবিধিঃ প্রোক্তঃ পঠ-তা॰ পাপনাশনঃ। অনেন বিধি না শ্ৰাদ্ধং ক্বতং বৈ যত্ৰ পত্ৰচিৎ । অক্ষয় স্যাৎ পিতৃগাঞ্চ স্বৰ্গ প্রাপ্তি প্রবা তথা। ইত্যুক্ত পা-ৰ্ণশ্ৰাদ্ধ পিতৃণা বন্ধলোকদ ।। ইত্যাদ্যে গাৰুডে পাৰ্বশৃক্ষান্ধণ ২২২ অধ্যায়ঃ।।ঞ্চা। ব্ৰহ্মোবাচ। নিত্যপ্রাদ্ধ প্রবক্ষ্যামি পূর্ববত্ত-দ্বিশেষধেৎ। ওঁ অমুক সগোত্রা-ণা মস্মৎপিতৃ পিতামহ প্রপিতা-মহান। মমুক শর্মাণাণ সগন্নীকা-না প্রাঞ্জ সিদ্ধান্নেন যুস্মভ্য ম-

হ° করিষ্যে ৷ আসনাদিক মত্র-माषित्याप्तरविविक्किंडः ॥ 🖝 ॥ वृक्ति आकः अवकागि शृईवछ-দিশেষক । জাতপুত্রমুখদর্শ-नालो वृक्षिआकः शृक्षाज्यूरथयू **मिक्ति । जिस्से किंद्र मध्य अन्तर्भन्न** भिखाः शिखाः रेपविशास्य नम-স্কারান্তেন দক্ষিণোপচারেণ ক-र्खवा । प्रक्षिणकान् गृशेषा अ अम्यानामीयामूक वृष्को अमूक সগোত্রাণা মক্ষৎ পিতৃ পিতামহ প্রপিতামহ মাতামৃহ প্রমাতামহ বৃদ্ধপ্রমাতামহানা অমুক শর্ম-ণাণ সপত্নীকানাণ নান্দীমুখানাণ শ্রান্ধে কর্ত্তব্যে বসু সত্য সজ্ঞকা-মাং বিশ্বেষাং দেবানাং **প্রান্ধং** निकारमन यूयाम् यया कर्खवाः। ইতি দেব ব্ৰাহ্মণামন্ত্ৰণ ওঁ করি-ষ্যসীতি তেনোক্তে ইত্মমেব মাতৃ পিতামহী প্রপিতামহীনাণ দেব-বন্ধানন্ত্ৰণ ৷ তত ওঁ অনুক স-গোত্রায়া মৎপ্রপিতামছা অমু-की (प्रवा) नामीमूथाः आकृ निकालन यूकामू यया कर्डवा মিতি প্রপিতামহী ত্রান্ধণামন্ত্রণ । করিষাদীতি তেনোক্তে ইখ মেব পিতামছী আহ্মণামন্ত্ৰণ

শ্রাদ্র

मार् अनुसारकार । उठ ७ पनामूक मृत्यो अमुक मरगावा-পা সম্মৎ প্রপিতামহ পিতামহ পিতৃণা নান্দীৰুখানা আদ্ধ निकारम्य यूयाम् यया कर्छवा মিতি ত্রাহ্মণামন্ত্রণ ওঁ করিষ্যসী-তি তেনোক্তে ইখ মেব বৃদ্ধ প্র: মাতামহাদি ব্রাহ্মণামন্ত্রণ । দেব-পিতৃ সর্বদেবত্রাহ্মণ আদ্ধা করণা-नुब्बाभनः। जामत्न ७ विस्थान বাস আগত শৃণুতাম ইম্ হ্ব थम॰ तर्शि निशीम**छ । ७** वित्य-দেবাঃ শূণুতেম হব বে মে ২-স্করীক্ষেষ উপ দ্যবি ফ যে অগ্নি জিহ্বা উত্তবা যজত্রা আসদ্যা-न्मिन् वर्शिव गामयश्रः। ७ जागः চ্ছম্ম মহাভাগা বিশ্বেদেবা ইতি विस्थितिवावाइन । गन्नानिना-নঞ্চ। অচ্ছিদ্রাবধারণ বাচন । ততঃ প্রপিতামহী প্রভৃতীনা মনু-জ্ঞাপন আসন গন্ধাদিদান অচ্ছিদ্রাবধারণ । ইখ প্রপিতা-মহাদীনা অনুক্তাপন । আস न॰ जावाइन॰ गन्ना किमान॰ । এব বৃদ্ধপ্রমাতামহাদীনা অ-নুজ্ঞাপনাদি করণ। ওঁ বসু সত্য সজ্ঞকেভ্যো বিশ্বেভ্যো দেবেভ্য

এতদর সঘৃত সপানীয় স ব্যঞ্জন॰ সবদর॰ সদধি প্রতিষিদ্ধ বজ্জিত নমঃ। ইতি অন্নসন্ধন্নন । ওঁ অমুক সগোত্তে মৎপ্রপিতা-শহি অমুকী দেবি নান্দীমুখি এত-**एम॰ मरापतः ममिध नगः। ३७०** পিতামহী মাতৃবান্ধণে। ততঃ প্রপিতামহাদি বান্ধণপাত্তে ওঁ অমুক সগোত্রেভ্যো 👺 প্রপি-তামহ পিতামহ পিতৃভ্য এতদ-**स॰ সবদর॰ সদধি সব্যঞ্জন॰ স**-शानीय॰ नमः। **अव॰ वृक्त**श्रमा-णमशानिजाः ॥ 🗱 ॥ একো ফ পুরাবশ্য তদিশেষ বদে मृन्। প্রথম নিমন্ত্রণ পাদপ্র-কালন আসন। অদ্য অমুক সগোত্রস্য মৎপিতৃ রমুকদেবশ-র্মণঃ প্রতিসাম্বৎরিক মেকোদি-रो॰ आक्रं निकारमन मुगानू जः হ॰ করিষ্যে। শ্রাদ্ধকরণানুজ্ঞা-পन । जामन जर्माः। गक्षानि-দান পিতৃত্বাপন।। অন সকল ন জপ্য নিবীতী উত্তরাভিমুখী-ভূযাতিথিঞাদ্ধ স্ব্যাৎ। তত স্তৃপ্তি•জ্ঞাত্বা দক্ষিণাভিমূখো বা-मां भारती की कि कि मंगील व অগ্নিদন্ধা ইতি অন্নবিকিরণ ৷ ওঁ

चमुक मरगांच शिव तमुक्रफर भर्मान् अवदा कल स्वतनिक य ठाळ चा मनू या अ च मनू তল্মৈ তে স্বধা ইতি রেখোপরি मिक्गाम्थवात्रिशातामानः। देखि भाकरण २२७ व्यक्तियः ॥ 🛊 ॥ ব্রন্ধোবাচ। সপিঞ্জীকরণ বন্দ্যে शूर्व श्रम ७९ ममाइनि । इस সতপকালে তু প্রেভানেঃ পিভূ-लिकिए । मिश्रीकद्रव क्रिका অপরাত্নে তৃপূর্ববং। পিতামহা-দি ত্রাহ্মণ নিমন্ত্রণ । ওঁপুরোয়ব্বো মা**ত্র** সংজ্ঞকেভ্যো দেবেভ্য **এ**जनामनः नमः। वामगार्यः जाः সন দান । ততঃ পিতাৰহ প্ৰপি-তামহ বৃদ্ধপ্রপিতামহানা সপ ত্বীকানা প্রাদ্ধ নহ করিব্যে। ইতানুজ্ঞাগ্ৰহণ ৷ পাত্ৰজ্ঞাৰ করণ পাত্রোপরি দশ দহা পাত্রান্ত রেণ পিধাষ অচ্ছিডাবধারণান্ত পরিসমাপ্য তথৈব পিজু রপি সপ ত্নীকস্য প্ৰেতান্ত নামা আছক রণানুক্তাপন । দেবপাত্রাচ্ছিডা। বধারণ ৷ ভ পরিসমাপ্য পিতা **মহ প্রপিতামহ বৃদ্ধপ্রপিতামহ** পিতৃ ক্ৰমেণ পাত্ৰাণাণ মনাক্ বা-চন ভালাটন ক্লম্বা বে সমানাঃ

সৰ্নসং পিতরো বনরাজ্যো ছে-या लाकः यम नतम बर्खा **प्लिट्य क्ब्राजा । (य ज्ञानाः** ननन्दमा जीवाजीत्वयू मामकाः তেষা শ্ৰী মৰি কন্মতা অসিন্ लार्क भंड॰ नगाः।। अञ्चलक ৰবেন পিতৃপাত্তোদক পিতাম-হ প্রপিতামহ বৃদ্ধপ্রপিতামহ-পাত্তে দম্বা বৃদ্ধপ্ৰপিতামহ পা-ত্র- পরিভাজ্য পিতামহ প্রপিতা-**নহযো রুদক পবিত্রঞ্চ পিতৃ**-পাত্তে নিক্ষিপেৎ। ততঃ পিতৃত্রা-দাণহন্তে পবিত্রদান । পাত্রপু-স্পেণ শিরসঃ করপাদার্চ্চনণ হস্তে ২ন্য জলদান হস্তাভ্যা পাত্র মুখাপ্য ওঁ বাদিব্যেতি চ পঠিছা অমুক সগোত্র মৎপিত রমুক প্ৰেভ এৰ ভে অৰ্ব্যো যে চাত্ৰ স্থা মনু যাংশ্চ ছ মনু তক্ষৈতে স্বধা रेि পিতৃত্রাহ্মণহস্তে স্তোক ম-ৰ্য্যোদক পিতৃতীৰ্যেন দম্বা পিতা-মহবাক্ষণহস্তে পবিত্র দান পাত্র পুলেণ শিরঃ কর পাদার্চন ং হস্তে ২ন্য জলদান । হস্তাভ্যা পাত্র-মুখাপ্য ষাদিব্যেতি পঠিত্বা অমু-ক সগোত্ত মৎপিতামহ অমুক দেৰশৰ্মন্ সপত্নীক এষ তে ২ৰ্ষ্যঃ

স্বধা ৷ পিতৃপাত্রেণৈব পিতামহ खाक्ष गर्रा खाक गर्रा । प्र मचा শেষ मृतकः शिखरमहनार्यः পাত্রান্তরে নিধাষ তেনৈব পা-ত্রেণ পিতামহত্রাহ্মণানা হস্ত-স্থ উদক পবিত্রঞ্গ সৃহীদ্বা পিতৃ-ব্ৰাহ্মণ বামপাৰ্শ্বে দক্ষিণাগ্ৰন্থ-শোপরি পিতৃভ্যঃ স্থানমসীতি অধোমুখগাত্র স্থাপন । পিতা-মহানাণ গন্ধাদিদানণ অগ্নৌকর-ণ । দেবানা অবশিক্ষান্ন পি-তামহাদিপাত্তে কিপেৎ। পি-তামহাদি পাত্রাভিমন্ত্রণাদি বাচ-ন পর্যান্ত ক্রমেণ সমাপ্য পিতৃ-ব্ৰাহ্মণ পাত্ৰাভিমন্ত্ৰণ অঙ্গুঠ-निद्यमन ' जिल विकित्रन । जि দ্ধান্ন বিকিরণ ক্রন্থা অনুক সগো-ত্র মৎপিত রমুক প্রেত এততে অমণ সঘৃত সপানীয়ণ সব্যঞ্জন প্ৰতিষিদ্ধ ৰক্ষিত ধে চাত্ৰ স্বা মনু ষা॰শ্চ স্ব মনু তল্মৈ তে স্বধা। ততো দেবপ্রভৃতি আপোশান• দদ্যাৎ। অতিথৌ প্রাপ্তে অতি-থিঞান্ধ স্ব্যাৎ অম্মিন্সবে। **७८७। विकित्रन** । शिठामशामी প্ৰশ্নণ ৰূত্বা পিতৃত্ৰান্ধণে ওঁ স্বদিতণ ভবন্ডি রিভি প্রশ্বঃ অমুক সগোত্র

মৎপিতামহ অমুক শৰ্মন্ সপ-ত্নীক এক তে পিডো কে চাত্ৰ স্বা मन् षा॰ क व मन् ७ टेन्य ए अशा। ध्व मन्त्ररचाः। शिखनान महिज मसा मन्द्रम मिक्षि तस रेि वा-চন হয় ভতঃ পিতৃপ্ৰেত্ৰিও-পাতন ওঁ সম্মাসিদ্ধি রস্তিতি বাচন । 😇 সমাপ্য পিও ত্রিধা হ্নতা ৰে শ্ৰানাঃ সমনসঃ ইতি মন্ত্ৰৰণ পঠিশ্বা পিতামহ শ্ৰীপি-তামই বৃদ্ধপ্রপিতামহ পিণ্ডেষু क्लिए । शिए ध्रु गम्ना मिक পিওচালন । অভিথিত্র। ন্ধের-দিত মিত্যাদি প্রশ্নঃ। বান্ধণা-না ৰাচমন ভুক্ত ক্ৰমেণ তাৰুল-দান সুসূপ্রোকিত মস্ত শিবা আপঃ সম্ভ বৃদ্ধপ্রপিতামহাদি ক্র-**त्यव बक्षवाना॰ ट्रंड जनमान** । গোত্রস্যাক্ষর মস্ত পিতৃত্রাক্ষণ হস্তে ওঁ উপতিষ্ঠতা মিতি সতিল জলদান নাম গোত্তেণ উপতি-ষ্ঠতা মিতি তেনোক্তে অযোরাঃ পিতরঃ সম্ব সন্তিতি উক্তে স্বধাণ বাচষিষ্যে ইতি পিতামহাদিত্রা-ন্ধণানুজ্ঞাপন• ওঁ বাচ্যতা মিত্যু-ক্তে পিতামহাদিভ্যঃ স্বধোচ্যতা॰ । অন্ত স্বধা ইত্যুক্তে পিতৃত্রান্ধণে

পিতৃভাঃ স্বধোচ্যতা ইতি অস্ত यश हेजुरक ७ छक् वर्षी রমৃত ইতি দক্ষিণাভিমুখ বারি-थातालागः। अंतित्यस्तराः অস্মিন্ ষজ্ঞে প্রীবস্তা দিতি দেব ব্ৰাহ্মণহন্তে যবোদক দান ৷ ও দেবতাভা ইতি ত্রি কর্নপঃ। পি-ঙান্ পাত্ৰে ভোলবিশা আচম্য **शि**ांगशामित्जा मिष्मिषाः मेषा ততঃ পিতৃবান্ধণায় ততো অভি-थिवाक्रागाय ह। आणित्या त्य मी যন্তা মিত্যাশীঃপ্রার্থন আশিষঃ প্রতিগৃহন্তাণ ইত্যক্তে দাতারো নোভিবৰ্দ্ধন্তা মিতি পাত্ৰ মুক্তান ক্লন্ব। বাজে ৰাজে ইতি বিসর্জ্জন । , অভিরম্যতা মিতি পিভূত্রান্ধণ বি-সর্জন। সপিতীকরণশ্রাদ্ধ ব্যাস প্রোক্ত 🚛 তব। প্রাদ্ধ বিকৃঃ **आफ्रुट**ी कनः आक्रामिकः र রিঃ। ইতি গা**রুডে ২২৪ অখ্না বং** ।। 🟶 ।। जिथानिवित्नत्य आकर्क- 📗 রণ ফল॰ যথা। ব্যাস উবাচ। স্থ্য আদ্ধ মমাবাস্যা প্রাপ্য কার্ব্য দিজোত্তবৈঃ। প্রিপ্তানাহার্য্যক ভক্ত ভূক্তি মুক্তি ফলপ্রদেশা পি-ভাষাহার্য্যক শ্রাদ্ধ ক্ষীপে রা জনি শস্যতে। অপরাহে দ্বিজা:

जैना॰ क्षेत्रस्थनामित्वव छू ॥ প্রতিপৎ প্রভৃতি ছেতা স্তিপ্রঃ क्रफनकरक। ठजूर्मनी॰ वर्द्धाविषा প্রশস্তা ভূতরোতরা: ৷৷ অমাবা-मार्छका खिनुः लीव मारापियू ত্রিষু। তিসু শ্চাম্বউকাঃ পুণা। गायमा मन्यी ७था।। ब्रायाननी मनायुका वर्षाम् जू वित्मयजः। শ্বস্থাক আদ্ধকালা নিত্যুণপ্রো ক্তা দিনে দিনে।। নৈমিত্তিক হি कर्तवाः अहरन हस्यमूर्वारयाः ॥ वास्तवानाक मत्रत्व नात्रकी माम-থান্যথা। কাম্যানি চৈবপ্রাদ্ধানি শস্যন্তি গ্রহণাদিষু।। অযনে বিষু-বে চৈব ব্যতীপাতে প্যনম্ভক । সংক্রান্ত্যা মক্ষৰ শ্রাদ্ধণ তথা জ্ব-শ্বদিনেশ্বপি।। নক্ষত্ৰেঘু চ সৰ্বেঘু তথা কামে বিশেষতঃ। স্বৰ্গন্ত ল-ভতে হয়ে হতিকাসু,দিজেভনঃ ॥ অপত্য মথ রোহিণ্যা সৌম্যে তু ত্রহ্মবর্চসে। মুদ্রাণা কর্মাণা সিদ্ধি মাজাষা শস্য মেব চ ।। পুনৰ্বসৌ তথা ভূমিণ শ্ৰেষণ পুষ্যে তথৈব চ। স্বান্কামান্তথা সর্পে পৈত্ত্যে সৌভাগ্য মেব চ ॥ वर्षास जू धनः विमा । कञ्चनाः পাপনাশন-৷ জ্ঞাতিবৈশ্ৰপ্ত-তথা

रूट विवासाः सूररून मूणान्।। ৰাশিজ্যসিকিং স্বাতৌ চ বিশা-थायाः मूर्वकः। टेयटक वर्षन মিত্রালি রাজ্য শক্তে ভটেখন চা मृत्व इदि वास्त्रमानः गिषि मार्गा छटेषत है।। गर्नान् कामान् हेब श्रेट्सरव देश के छ व्यवरण भूनः ॥ व्यक्तिशा ७ थ। कामान् वाक्रत्थ **ह शतुः दलः। चटिक्**कशामटक अ-**यामिहर्बंध गृटह ७७०१ दिव** ভ্যাণ বহুবো রোগা ছশ্বিন্যাণ জু-द्रगा॰ खथा।। बात्या ठाकीवन॰ তস্মাৎ যদি আদ্ধা প্রবচ্ছতি। আদিত্য বারে চারোগ্য চাব্রে সৌভাগ্য মেব চ।। কৌজে সর্ব क विकय भर्तान कामान बूधमा চ। বিদ্যা মভীফা॰ জীবে তু ধন॰ दैव ভার্গবে পুনঃ।। শটনশ্চরে ল-ভেদাৰুঃ প্ৰতিপৎসু শুভান্ সু-ভান্। কন্যকা॰ বৈ দ্বিতীয়াযা। **कृ** विकास क्षा । अभून् কুদ্রাণ শত্র্গাম্ব পঞ্চমাণ শো-जनान् मूठान्। वक्षानमू जिन्ह-ষি ঞাপি সপ্তম্যাণ লভতে নরঃ ম অফম্যা মপি বাণিজ্য লভতে व्यक्तिः नम्।। नगन्नवन्। त्यकः भूतः नभगाः विश्वः वह ॥ क

কাদশ্যা স্তথা ৰূপ্যং ত্ৰন্ধবৰ্চনিং নঃ সুতান্। ছাদশ্যাণ জাতৰ-পন্ত রজত রৌশ্য মেব চ ॥ ब्बाजिटेनर्छ॰ बरमानगा॰ ठजूर्फ-मास अथकाः। भक्तमाः गर्व-काम सादशांकि वाक्तनः मन। ॥ তসাক্ষাক নকর্ত্তব্য চতুর্দশ্যাণ দ্বিজ্ঞাতিভিঃ। শস্ত্রেণ তু হতা-ना॰ देव छत्र आफ्त॰ প্রকর্মবেৎ।। ডব্য ত্রাহ্মণসম্পত্তে ন কাল নি-ষমঃ ক্লতঃ। তস্মান্ডোগাপবর্গার্থ• প্রাদ্ধ সর্ব্যাৎ দিজাতিভিঃ।।।।।। কর্মারত্তেম্ব্ সর্ব্যাদাভ্যদ-यः भूनः। भूजक्रमापियु व्याक्तः ্পাৰ্বণ প্ৰবি শৃত ।। অহ্নাহ-নি নিত্য স্যাৎ কাষ্য নৈমিত্তি-क॰ ७९।। একে। फिरुव विरक्षिय বৃদ্ধি আদ্ধি পাৰ্বণ 🖨 এতৎ প-कविषः आकः मनूना शक्किर्विः ত ৷ বাজায়া যন্ত নাখ্যাত তৎ व्यवस्त्रमः शानस्य ॥ श्वन्तरमः म-প্তমং প্রাদ্ধং বন্ধণা পরিকীর্ত্তি-ত। देनिविकः ठाकेमः आकः य রুষা সূচ্যতে ভ্যাৎ।। সন্ধ্যা রা-জ্যো_ূৰ্ন কৰ্ত্তব্যু রাহে৷ রন্যত্ত দ-र्मनाष्ट्र। तम्भानाकः वित्भत्यन छ-दि९ भूग मन्खमः॥ गयाया मन्यमः

आक्षः अषारग १मत्रककेटक । গাষন্তি পিতরোগাথা• কীর্ত্তমন্তি म नीविनः ॥ अकेवा वह्वः भूखा यानारकाणि भगाः जस्करः । य-**ज्ञिल्ल वायरमध्यम मीनः वा क्य** मूष्मुरक्षः॥ अखेना वहतः भू ত্ৰাঃ শীলৰম্ভো গুণাম্বিতাঃ। তে-याञ्च मगरब्जानाः स्टाहरकाणि ्गया॰ बद्धि ।। भरा॰ धार्शान्-यद्भव यः आक्षः मभागात्रद्भः। তারিতাঃ পিতর স্তেন স যাতি প-রমাণ গতিও ৪ 🟶 🛭 বরাহপর্বতে টেব গঙ্গাষাঞ্চ বিশেষতঃ। বারা-**निमा दित्मदेवन यक दानवः अयः** হরঃ।। গঙ্গাদ্বারে প্রভাসে চ কি-ম্বকে নীলগৰ্বছে। সৰুক্ষেত্ৰে চ ञ्कारम् जृञ्जू यश्नारम् ॥ क्लादा कञ्चजीर्थ ह दैननियात्र-ग्य **এ**व **চ। मत्रश्रकाः वित्मदश्** পুন্ধরে চ বিশেষতঃ ৷৷ নর্মদাযাং ঙ্গশাবর্ত্তে জ্রীশৈলে ভদ্রকর্ণকে। বেত্রবত্যা॰ বিশাশাযা॰ গোদাব-त्यु ठीर्थ्यू श्रु तित्यु हु। निनी-নাঞ্চৈব তীরেষু তুষ্যন্তি পিতরঃ मना। 🗱। बीहि ভिन्ह यदेव स्था॰ देन রম্ভি শূল ফলেন চা শ্যামাকৈশ্চ

ख्या **गारेक नीं नारेत्रम्ह श्रियम्** जिः॥ लाध्रमक छिटेन सूरिका ৰ্মাস প্ৰীণযতে পিতৃন্। আমা-नामाठकानिकृत् मृषीकाक म-माডियान् ॥ विमात्री क छक्र धा-**क्ट आक्रकारल अमाशरय । ला-**জামাধুযুতান্দ্যাৎ শক্তৃন্ শর্ক-त्रश मह।। प्रमाण्हारक अयरन्न-न मृक्षाप्ठक करमक्रकान्। खो गारनो मध्नामा॰रमन बीमामान् হারিণেন তু।। ঔরভ্রেণাথ চতুরঃ শাঙ্গনেন তু পঞ্চ। বণাবান্ ছাগমাণ্দেন পার্ষতেনাথ সপ্ত বৈ ৷৷ অফাবেণস্য মাণ্সেন রৌরবেণ नरेवव जू। দশমাসাণ্স্ত ज्ञास्त्रि वतार गरियागिरेयः ॥ गण कृ-र्मारवास्त्र माण्टमन मामारनकान-শৈব তু। সংবৎসরম্ভ গব্যেন প্ৰসাপাৰসেন বা ৷৷ বাধীুণস-স্য মাণ্দেন তৃপ্তি দ্বাদশবাৰ্ষিকী ৷ কালশাক মহাশদ্ধ খিল্ল-**भागाभिषः मध्।। जानस्राटिय-**व्कन्नाटख मूनामानि ह मर्बनः। ক্ৰীত্বা লক্ষ্যু সময়াথ মৃতানাহত্য रेव बिजः। मनाष् आस्त्र श्रय-ত্নেন তদস্যাক্ষ মুচ্যতে ॥ 🕸 ॥ পিপ্ললি শিগুকঞৈব তথা চৈব

यगृतकः। जया शामार् वाङ्गाकान्। जृठ्ग मूत्रम ज्या। अमु अ नि अभून देव उष्ट्रनीयक स्मित् ह। त्राजनाया खश कीत माहिरक বিবৰ্জ্ঞবৈৎ ৷৷ কোডবান্ কোবি-**माता॰ म्ह भावकी॰ मित्रह॰ उथा।** বৰ্জ্জবৈৎ সৰ্বযত্নেন প্ৰাদ্ধস্থানে দিকোত্তমঃ।। ইতি কৌর্ম্মে উপ-রিভাগে ১৯ অধ্যায়ঃ।।ঞ্চা। ব্যাস উবাচ। স্নাত্বা যথোক্তণ সণ্তর্প্য পিতৃন্ চন্দ্রকষে দ্বিজঃ। পিণ্ডা-স্বাহার্য্যক প্রাদ্ধ সর্ব্যাৎ সৌগ্য-মনাঃ শুচিঃ।। পূর্ব মেব পরীক্ষেত ব্রাহ্মণ বেদপারগণ। তীর্থণ তদ্ধ ব্য ক্যানা প্রদানে বাভিথিঃ স্মৃতঃ ।। যে সোমপা বিরজসে। ধর্মজ্ঞাঃ শান্তচেতসঃ। ব্রতিনো নিষমস্থাশ্চ ঋতুকালাভিগামি-नः॥ शकांत्रि द्रश्राशीयात्ना य-कुर्दमितिरमव छ। সুवस्र्क् छ जिय-বণ স্ত্রিমধু বাথ যো ভবেৎ ৷৷ ত্রি-পাচিকেত শ্ছন্দোগো জ্যেষ্ঠসাম-গ এব চ। অথর্বশিরসো ২ধ্যেতা ৰুজাধ্যায়ী বিশেষতঃ ।। অগ্নিছো-ज्या विदान् न्यायविक यखन-विष्। मञ्ज बाक्षनविदेक्ठव सम्ह माष्ट्रभूभाठेकः ॥ अविवरी अ-

विकम्ह छथा चामभवार्षिकः। ब-कारमधार्यमञ्जादना गर्जश्वकः म-হ্সদং ৷৷ চাব্রাষণত্রতচরঃ সত্য-বাদী পুরাণবিৎ। গুরু দেবাগ্নি পূজাসু প্রসক্তো জ্ঞানতৎপরঃ।। বিমুক্তঃ সৰ্বতো ধীরো ত্রন্নভূতো মহাদেবার্চনর-**ৰিজোতনঃ** ৷ তো বৈষ্ণবং পংক্তিপাবনং ৷৷ অহিণ্সানিরতো নিত্য নপ্রক্রি প্রাহক স্তথা। সত্রিণো দাননি-রতা বিজেয়াঃ শংক্তিপাববনাঃ ।। মাতা পিত্রো হিঁতে যুক্তঃ প্রা-**ज्ञारी ह वा दिजः।** अशाबा विमानि कीटला विट्लायः शंकि-পাবনঃ ৷৷ জ্ঞাননিষ্ঠো মহাযোগী বেদান্তার্থবিচিন্তকঃ। আদ্ধনিরতো ত্রান্মণঃ পাবনঃ ৷৷ বেদবিদ্যাত্রভন্নাতো ব্রহ্মচর্য্যাপরঃ সদা। আথর্বণো মুমুক্ষু ভাষাৰঃ প ক্তিপাবনঃ ৷ অসমানপ্রবরকো হুসগোত্র স্ত-থৈব চ। অসম্বন্ধী চ বিজ্ঞেষাঃ ব্রাহ্মণাঃ পণক্তিপাবনাঃ ৷৷ ভো-জ্বেদ্যোগিন পূর্ব তত্ত্ত্তান-त्रिक यिक्। जनाट रेनिष्ठिक मार गुश्रम्बानक॰ **७था।।** एमला-ভে গৃহস্বং বা মুমুক্ষুণ সঙ্গবজ্ঞিতং

। महालाएं माधकः वा गृश्य মপি ভোজবৈৎ।। প্রক্তে র্ডন তব্জে। যস্যাশাতি যতি হবিঃ। ফল বেদবিদা তস্য সহস্যুদ্তি-রিচ্যতে ৷৷ তত্মাৎ ষত্মেন যোগী-ख गीश्रदेखान**०९**१द्वर । या জযেদ্ধব্য কব্যেষু স্বলাভে স্বিত-तान् विजान्॥ अय देव अथभः कन्नः अनात्न इवा कवात्याः । অনুকল্প স্তৃষ জ্ঞেষঃ সদা সন্তি রনুষ্ঠিতঃ ৷৷ ৠ৷৷ মাতামহ৽ মাতুল-क यमुीय अञ्चत अक्र। मिहि ত্রণ বিট্পতিণ বন্ধু মৃদ্বিগ্ যাজ্যৌ **চ ভৌজ্यে ।। क्षा न आक्र** ভোজযেমিত্র॰ ধনৈঃ কার্য্যো ২-मा म॰ গ্রহঃ। পৈশাচী দক্ষিণা সা হি নৈবামূত্র ফলপ্রদা।। কামণ শ্রান্ধে ২র্চযেমিত্রণ নাভিন্নপ ম-পি দ্বরিণ। দ্বিষতা হি হবি ভুক্তণ ভবতি প্ৰেত্য নিষ্ফল ৷৷ বান্ধণ স্তুনধীযান স্তৃগান্নি রিব শাম্যতি। তক্ষৈ হ্ব্যাণন দাতব্যাণন চ ভক্ষ-নি ছ্যতে ৷৷ যথৌষরে বীজ মুপ্তা न वश्वा वाखरा कर्ना । ज्यान्त হবিৰ্দ্দত্বা ন দাতা লভতে কলে।। যাবতো গ্ৰসতে পিণ্ডান্ হব্য ক-ব্যেশ্বমন্ত্রবিৎ। তাবতো গ্রসতে

প্রেতা দীপ্তান্ শূলফ্রামোগুড়ান্ ॥ अभि विमा। ऋटेन मूका शैन-বৃত্তা নরাধমাঃ। যত্রৈতে ভুঞ্চতে र्वाः ज्रुटविमानूतः विकाः॥ यना বেদশ্চ বেদী চ বিচ্ছিদ্যেতে ত্রি-পূরুষ ৷ এষ স্বান্ধণো নার্হঃ आकामियू कमाठन ॥ भृज्रत्थ-ষ্যো ভূতো রাজ্ঞা বৃষল আম্যা-জকঃ। বধ বন্ধোপজীবী চ ষডে-তে अक्षवक्षवः ॥ मखाबारयारमा বৃত্ত্যর্থ॰ পতিতামনু রব্রবীৎ । বেদবিক্রযিণো হেতে প্রাদ্ধাদিযু বিগর্হিতাঃ।। শ্রুতিবিক্রমিণো যে তু পরপূর্বাসমুদ্ভবাঃ । অধমান্ ষে ষাজ্যন্তি গতিতা স্তে প্রকী-ৰ্ত্তিতাঃ।। অসংস্কৃতাধ্যাপকা ষে ज्ञार्थ २४गा १४ छि । ज्यी-ষতে তথা বেদান্ পতিতা স্তে প্রকীর্ত্তিতাঃ।। বৃদ্ধ শ্রাবক নির্গ্র-স্থাঃ পঞ্চরাত্রিবিদো জনাঃ। কা-পালিকাঃ পাশুপতাঃ পাষ্ণ্ডা যে চ তদ্বিধাঃ।। ষস্যাশ্বস্তি হবীংষ্যে-তে দুরাত্মানস্ত তামসাঃ। ন তস্য তম্ভবেচ্ছাদ্ধ প্ৰেত্য চেহ ফল-প্রদ॰॥ অনাশ্রমী যো দ্বিজঃ স্যা-लाखभी वा नित्रर्थकः। मिथा। **अ**-নী চ ষে বিপ্ৰা বিজ্ঞেষাঃ পণক্তি-

मूबकाः॥ मून्ध्या मनशी स्कितिः की ह गामि छकः। विषयक्रम नटेम्पर रचनः क्रीरमः १ भ मास्ति कः॥ समारभा क्वलीमुरका वी-त्रश मिविष्णिष्टः। जात्रमाही ज्ञानी लागविक विता विजाः । পরিবেতা তথা হিন্দাঃ পরি-বিত্তি নিরাক্ষতিঃ। পৌনর্ভবঃ স্ব-শীদী চ তথা নক্ষত্র দর্শকঃ।৷ গী-ভবাদিত্রনিরতো ব্যাধিতঃ কাণ এব চ। হীনাঙ্গ শ্চাতিরিক্তাঙ্গো श्वकीर्भे ठरेथव ह ॥ कन्णामृषी **সঙ গোলো হু**ভিশক্তো ২থ দে-বলঃ। মিত্রক্র পিশুন শৈচব নি-ত্য ভাষ্যানুবর্ত্তকঃ॥ মাতা পি-ত্রো গুরো স্ত্যাগী দারত্যাগী ত-থৈব চ। গোত্রভিদ্ভুফশোচশ্চ কাওপৃষ্ঠ স্তথৈৰ চা। অনপত্যঃ कृष्टेमाक्की याहरका त्रक्रजीवनः। ममूजयायी क्रव्हा व्या ममय-**ভেদকঃ।। বেদনিন্দাপরকৈব গ**-রদাররতা স্থথা। দ্বিজনিন্দারতা-देम्ठव वर्জाः आक्वानि कर्मम् ॥ ক্লতমঃ পিশুনঃ ক্রুরো নাস্তিকো विमनिसकः। निव्धाक् अहक रेम्ठव वित्मयां ६ १ : कि मूयकाः ॥ সর্বে পুন রভোজ্যামা স্তুদানার্হা

হি কৰ্মল। আমুভাৰানিরস্তান্ত नाम नीमा अयर्ज्ञ ।। मुजाम-ब्रम्भूकोयः मद्याशामन विक्रं-किः। यश्चखातिशीनमा बाक्तनः भिक्तित्वकः॥ अक्षीजनायनतेन्छ-বন্ধান হোম বিবৰ্জ্জভঃ। তামসো ताजनरेक्ट वाक्षनः शः जिन्य-कः॥ वहनाव किमूत्कन विहि-তান্ধৈ ন সৰ্বতে। নিন্দিতানা-চরস্ভোব বর্জ্জনীষাঃ প্রযন্ত্রতঃ।। ইতি কৌর্মে উপরিভাগে ২০ অ-शायः ॥ 🗰 ॥ शायरयत्नामटेक ভূ মি' শোধ্যিত্ব। সমাহিতঃ। স-মিপাত্য দিজান্ সর্বান্ সাধুতিঃ সন্নিমন্ত্রবেৎ।। শ্বো ভবিষ্যতি মে শ্ৰাদ্ধ পূৰ্বেদ্য রভিপূজ্য চ। অসম্ভবে পরেদ্যু বা যথোক্তলক্ষ-ৰৈ যুঁতান্।। তম্য তে পিতরঃ ঞ-षा প্রান্ধকাল মুপস্থিত। অ-ন্যোন্যমন্সা খ্যাত্বা সম্পতন্তি মনোজবাঃ।। ব্রাক্ষণৈ স্তে সহা-শ্বন্তি পিতরো হস্তরীক্ষগাঃ। বা-যুভূতাশ্চ তিগ্ঠস্তি ভূক্ত্ব। যান্তি পরা• গতি•।। আমন্ত্রিতাশ্চ তে বিপ্রাঃ গ্রাদ্ধকাল উপস্থিতে। বসেষু নিষ্তাঃ সর্বে ব্রহ্মচর্য্যপ-রায়ণাঃ ৷৷ অক্রোধনো ২ছরো

২মন্তঃ সত্যবাদী সমাহিতঃ ৷ ভা-त्र॰ टेमथून मशान॰ आ फारू वर्ष्करम ব্দুপ ।। আমন্ত্রিতো বান্ধণে যে। **২ন্য॰ বৈ সূক্তে কণ•। স বাতি** রৌরব বোর শূকরত্ব প্রযাতি চ।। আমন্ত্রবিদ্বা বো মোহাদপর॰ মন্ত্ৰযেৎ দ্বিজ । স তত্মাদধিকঃ পাপী বিষ্ঠাকীটো ২ভিজাষতে॥ व्यात्क निमन्निका वित्था रेमश् ন॰ যো ২ধিগচ্ছতি। ব্ৰহ্মহত্যা ম-বাপ্নোতি তির্যক্ষোনৌ স গছতি ।। প্রাদ্ধণ রন্ধা তু ভুকু। চ যো-২ধান॰ প্রতিপদ্যতে । ভবস্তি পিতর স্তুস্য তন্মা**সং পাণশুভো**-জনাঃ ৷৷ নিমন্ত্রিতস্ত যঃ শ্রাচ্ছে প্রস্ব্যাৎ কলহু দ্বিজঃ। ভবস্তি তস্য তন্মাস• পিতরো মলভো-জনাঃ ৷৷ তস্মামিমন্ত্রিতঃ শ্রাদে নিযতাত্মা ভবেৎ দ্বিজঃ ৷ অক্রো-ধনঃ শৌচপরঃ কর্ত্তা চৈব জিতে-দ্রিয়ঃ।। শ্বো ভূতে দক্ষিশাণ গন্ধ। **मिन॰ मर्जान् म्याहिजः। म्याना**-नाश्द्रवाणि मिक्कणाकान् मूनि-র্মলান্।। দক্ষিণাপ্লবন স্নিগ্র বিবিক্তণ শুভলক্ষণণ শুচিণ দে-শং বিবিক্তঞ্চ গোম্বেনোপলে প-যেৎ।। নদীতীরেষু তীর্থেষু স্বভূ-

भो देववं मानुष्। विविद्धन् ह তুষ্যন্তি দত্তে চ পিতরঃ সদা ॥ পারক্যে ভূমিভাগে তু পিতৃণাণ নৈব নিৰ্বপেৎ। স্বামিভি স্তিছি-ন্যেত মোহাৎ যৎ ক্রিয়তে নরৈঃ া৷ অটব্যঃ পর্বতাঃ পুণ্যা স্তীর্থা-ন্যাযতনানি চ। সর্বাণ্যস্বামিকা-ন্যাহ্ন বি তেষু পরিগ্রহঃ।। তি-লানবকিরেত্তত্ত্র সর্বতো বন্ধষেদ-জান্। অসুরোগহত সর্ব তি-লৈঃ শুদ্ধাত্যক্ষেন বা ৷৷ ততো ২ম বহুস কার টেনকব্যঞ্জন ম-চ্যুত । চোষ্য পেয় সমৃদ্ধক যথা-শক্ত্যা প্রকল্পষেৎ ৷৷ ততো নি-বৃত্তে মধ্যাহ্নে ন্যুপ্ত লোম নখান্ দ্বিজান্। অভিগম্য যথামার্গ প্র-বচ্ছেদ্দন্তধাবন• ৷৷ তৈল মভ্যঞ্জ-ন স্নান স্নানীযঞ্ পৃথ্যিধ। পাত্তৈ রৌডুম্বরৈঃ সর্য্যাৎ বৈশ্ব-দৈবত্যপূৰ্বক ।। ততঃ ছাত্বা বিবৃ-खिंगः প্রত্যুখাষ **क्र**णक्षिणः । शाना गाठमनीयक म**ः** श्रयत्त्व्रात्यः থাক্রমণ।। পুস্তকান্তরে বিবৃত্তে-ভাষানে নিমিত্তেভা ইতি নিবৃ-ত্তেভ্য ইতিচ পাঠঃ॥ যে চাত্র বিশ্বদেবানা দ্বিজাঃ পূর্ব নিম-ন্ত্ৰিতাঃ। প্ৰাত্মখান্যাসনান্যেষা॰

बिमद्धार्थिश्लानि ।। मिन्निशास्-থযুক্তানি পিতৃণা মাসনানি চ। দক্ষিণাত্রৈকদর্ত্তানি প্রোক্ষিতানি **जिल्लामरेकः ॥ रज्यू भरव मरबर्ग-**তানাসন সংস্পৃশন্ দ্বিজঃ। আ-সধ্ মিতি সংজন্মাসীরং স্তে শৃ-थक् शृथक्।। क्षी देनदव आजूरथी পিত্রে ত্রয় শ্চোদগুখা স্থপা। এ কৈক বা ভবেত্তন্ত্র দেব মাতা-মহেম্বপি ৷৷ সৎক্রিষা দেশ কা-লৌ চ শৌচ বাহ্মণসম্পদ। পঞ্চৈতান্ বিস্তব্নো হস্তি ভস্মান্ধে-হেত বিস্তরণ।। অপি বা যোজ-(यरमक॰ जाऋग॰ द्यमशात्रभ• । क्षेठभीना मिमस्थाम मनक्षिति-বুর্জিত ।। উদ্ধৃত্য পাত্রে চাম। তৎ সৰ্বস্মাৎ প্ৰাক্কতাৎ পুনঃ। **(** जिंच किर्म किर्म किर्मा किर्म किरम किर्म कि व्यवर्डरय ॥ व्यारमामस्मी जम-মন্ত দদ্যমন। ত্রনাচারিশে। তত্মা-দেক মপি শ্রেষ্ঠ বিদ্বাণ্য ভোজ-বেৎ বিজ্ঞা ডিকুকো ব্রহ্মচারী বা ভোজনার্থ মুপস্থিতঃ। উপ-বিষ্টেযু ষঃ শ্রান্ধে কামণ ভমপি ভোজ্বেৎ।। অতিথি র্যস্য না-শ্বাতি ন তৎ শ্রাদ্ধণ প্রশস্যতে। ভশ্বাৎ প্রযন্ত্রাৎ প্রাদেয়ু পূজ্যা

एिषरमा बिरेकः ॥ व्याष्टिश त्र-হিতপ্ৰান্ধে ভূঞ্গতে যে বিজাতয়ঃ । কাকযোনি বজন্তোতে দাতা रिव्य म मः भयः ॥ श्री श्री नात्रः ११-তিতঃ স্বৰ্চী ত্ৰণী পুৰুস মান্তিকৌ । अक्रुष्टाः मृकताः श्वारना वर्जाः आक्ष्य मृत्रं । वीज ९ म मरा চি॰ নগ্ন॰ মত্ত॰ ধুর্ত্তঁ॰ রজকলাণ। **নীলকাষাষ্বসন॰ পাৰ্ভা॰**শ্চ বি-বৰ্জ্জ ষেৎ।। যতত্ত্ব ক্ৰিয়তে কৰ্ম रेপতৃক ভাষাণান্ প্রতি। তৎ-गर्व रमय कर्छवा॰ देवश्वदेमवक शृर्व-कः॥ यरथानिकीन् नर्वाःखान-काञ्चर्गाषिज्यदेनः। मुननामिजः শিরোবেষ্টি ধুপবাসোনুলেপনৈঃ ॥ তত खु विश्वास्य एक वान् वाक्र ना-ना मनुख्यमा। छेन्द्रादशा यथाना-य॰ বিশ্বেদেবাস ইত্যা ।। দ্বে প-বিত্তে গৃহীয়া চ ভাজনে কালিতে भूनः। भरमारम्या जनः क्लिथा যবোসীতি যবা॰ গুথা॥ যা দিব্যা इें ि मखा इस्ड प्रयाः निर्वान (स्९। अममामास्रमानानि धृ-পান্দীনি চ শক্তিতঃ ৷৷ অপসব্যং ততঃ কৃত্বা পিতৃ্ণা॰ দক্ষিণামুখঃ। আবাহন ততঃ স্ব্যাৎউশস্তস্ত্রে-ত্যচা বুধং।। আবাহ্ তদন্জা-

তো জগেদায়াত্ত ন স্ততঃ। শলো-**(मर्वाषकः शांत्व छिलामीछि जिला** खथा ॥ किथु । हार्या व्या-পূর্ব॰ দত্ব। হস্তেষু বৈ পুনঃ। স॰-সুবাণ্শ্চ ততঃ সৰ্বান্ পাত্ৰে স্ব-য্যাৎ সমাহিতঃ॥ পিতৃভ্যঃ স্থান মেতেন ন্যুক্ত পাত্র নিধাষ ত্। অগ্নো করিষ্যেত্যাদায় পৃচ্ছত্যন্ন• যৃতপ্লুত ।। সরুষেতি ছনুজাতে। जूरुवामू भवी ठव । यख्वा भवी-তিনা হোমঃ কর্ত্তব্যঃ ঙ্গশপাণি-ना ॥ প্রাচীনাবীতিনা পিত্রাণ देवश्रामवञ्च द्यागरयः । प्रक्रिनः পাত্যেজ্জানু° দেবান্ পরিচ-রন্ সদা ৷৷ পিত্বাণ পরিচর্য্যাসু পাত্যেদিভর তথা। সোমাষ বৈ পিতৃমতে স্বধা নম ইতি ক্রব-ন্।। অগ্নযে কব্যবা হনাৰ স্বধেতি জুহ্যাত্তঃ। অম্যভাবে তু বি-थमा भागाददवाभभामद्य ॥ महादाविक्टिक वाथ लाउ वा সুসমাহিতঃ। তত তৈ রভ্যনুজ্ঞা-তো গত্বা বৈ দক্ষিণাণ দিশণ।। गागरयताशिलाशी स्रानः রূষা তৃ দৈকত ।। মণ্ডল চতুর-मु॰ वा मिक्किगायने ७ ७७०। वि क्रिष्टिमा यथा॰ मर्द्धि रेगर्कन

চৈৰ হি।। ভতঃ সংস্তীৰ্য্য তৎস্থা-न मुद्धारिष पिक्शावकान्। जीन् পিভান্ নিৰ্পৈত্তত্ত্ত হবিঃশেষান্ সমাহিতঃ ৷৷ ন্যুপ্য পিগুদ্স্ত ত-দ্বন্ত নিশ্বজ্যালেগভাগিনা । তেষু দত্তেম্বপাচন্য ত্রি রাখন্য শ-देन द्रमृन्।। यज्भाजृत्रमञ्जूर्या ६ পিতৃনেব চ সম্ভবৎ। উদক নি-नरयट्यः भटेनः शिक्षांखिरक পুনঃ।। অবজিয়েত তান্ পিগুান্ यथाज्युष्ठान् ममाहिजः। अथ পিণ্ডাবশিন্টামণ বিধিনা ভোজ-(यिष्कुकान्।। यांगान् शृशां भ विविधान् ममा १ क्रमत भाषमः । मूश माक कलानीकृन् शररा प्रि घ्ठ॰ मधू।। जन्नदेशक यथाकाम॰ विविधः ७का (भषकः। यमुक्ति-ষ্ট॰ দ্বিজেন্দ্ৰাণাণ তত্তৎ সৰ্ব• নি-- दक्तरब्ध।। शान्ताः खिलाः क वि-विधान् भक्ता विविधा खथा । উক্তমন্ন দ্বিজাতিভ্যো দাতব্য শ্ৰেষ ইচ্ছতা।। অন্যত্ৰ ফলমূলে-ভ্যঃ পানকেভ্য স্তথৈব চ। না-শ্রাণি পাত্যেজ্জাতু ন সপ্যেমা-নৃত॰ বদেৎ।। न পাদেন স্পৃশেদ-मः न टेंडजनवश्रुनरयः । क्लार्थन टेठव यक्तख॰ यक्तख॰ वत्रया श्रूनः

।। যাতুধানা বিলুস্পস্তি জন্মত। চোপপাদিত । স্বিদ্নগাত্রো ন-তিষ্ঠেত সমিধৌ চ দ্বিজমানা ।। ন চাত্র শ্যেন কাকাদীন্ পক্ষিণঃ প্রতিষেধ্যেৎ। ন দদ্যাত্তত্র হস্তে ন প্রত্যক্ষলবণ তথা ৷৷ ন চাযসে-न পাত्रেन न टेंচवा अक्षा भूनः। কাঞ্বনেন তু পাত্রেণ রাজতৌতু ম্বরেণ চ।। দত্ত মক্ষমতা॰ বাতি খান্দোন চ বিশেষতঃ ৷৷ পাত্তে তু भृषात तो ते अपिक जाजवरण পিতৃন্ ৷৷ স যাতি নরক ঘোর ভোক্তা চৈব পুরোধসা। ন প॰-क्छा वियम मना न बारा ह माभटबर ।। याहिका माभिका मा-**छा मत्रकान् रास्डि माक्रवान् । जू-**ঞ্জীত বাগ্বতাঃ পৃষ্টা ন ক্রমু প্রা-ক্লতান্ গুণান্।। তাবদ্ধি পিত-রো ংশান্তি বাবনোক্তা হবির্গু-ণাঃ। নাগ্রাসনোপবিফস্ত ভূঞ্জী-ত প্রথম বিজঃ ৷৷ বহুনা প-শ্যতা সো ২জ্ঞঃ পণ্ক্র্যা হরতি किषियः। न किश्चिषक्कं याक्र्।-क्ति नियुक्छ बिष्का्छमः॥ न **মা॰স॰ প্রতি**ষ্ঠেষ্টে নবান্যস্যা-ন্দশীক্ষযেৎ। যো নাশ্বাতি দিজো মা স্ নিযুক্তঃ পিতৃক্ম্ণি॥ স্

প্রেত্য পশুতা॰ যাতি সম্ভবানেক-বি॰শতি॰। স্বাধ্যায়॰ প্রাব্যেদে-ষা ধর্মশাস্তাণি চৈব হি॥ ইতি-হাস পুরাণানি আদ্ধকলা শ্চ শোভনান্। ততোয়মুৎসৃজে-জুক্তেশ্বগ্রে বিকিরন্ ভুবি ॥ শৃষ্কা স্বদিত মিত্যেব তৃপ্তানা-চামবেততঃ। আচান্তাননুজা-নীযাদভিতো রম্যতা মিতি।। স্ব-ধান্তিতি চ ত জায়ু জান্দণা স্তদ-নম্ভর্ণা ততো ভুক্তবভাণ তেখা मन्द्रायः निद्रम्दर्थ।। यथा असू স্তথা স্ব্যাদনুজ্ঞাতো দিজোত-মৈঃ। পিত্তো স্বদিত মিত্যেব॰ বাচ্য গোন্তেযু সূক্রত ।। সম্পন্ন নিত্যভাূদৰে দৈবে রুচিত মিত্য-পি। বিসৃজ্য ব্ৰাহ্মণাণ্ডান্ বৈ পিতৃ পূৰ্বস্ত বায়ুতঃ॥ দক্ষিণা॰ দিশ माकाष्क्रन् याटाटा मान् वतान् পিতৃন্। দাতারো নো বিবৰ্দ্ধস্তা॰ বেদঃ সম্ভতিরেব চা৷ শ্রন্ধা চনো মা ব্যগমদ্বহু দেয়ঞ্চ নো ২স্তি তি । পিণ্ডাণ্স্ত গো ২জ বিপ্রেভ্যো **प**न्गान्तभी जत्नि या। यश्यस्य ততঃ পিও মদ্যাৎ পত্নী সূতা-र्थिनी। প্ৰকাল্য হস্তাৰাচম্য জ্ঞাতীন্ শেষেণ ভোজ্ঞাৰ ৷৷

জ্ঞাতিয়পি চ ভুক্তেযু স্বান্ ভৃত্যা-ন্ ভোজযেত্ততঃ। পশ্চাৎ স্বয়ঞ্চ পত্নীভিঃ শেষ নন্ন সমাহরেৎ।৷ নোদ্বাসবেত্তদৃচ্ছিষ্ট॰ যাবন্ধস্ত॰ গতে। রবিঃ। ব্রহ্মচারী ভবেতাস্ত জম্পতী রজনীয় তা া৷ দলা শ্রাদ্ধণ তথা ভুক্তা সেবতে যস্ত टेमथून । महाद्योद्भव मानामा की ग्रेटिशानि॰ बद्धाः निस् শুচি রক্রোধনঃ শক্তি সক্রাবা मी नगारिकः। श्रीमायक छना-ধান কৰ্ত্তা ভোক্তা চ বৰ্জ্জমেৎ ।। আদি॰ রুত্বা পরশ্রাদ্ধে ভুঞ্জতে य विकाजयः। महाशाजकिन्छिः खना। याखि ए नत्कान् वर्न।। এষ বো ২ভিহিতঃ সমাক্ আছ্ব-कन्नः मनाजनः॥ जात्नन वर्खस्य-मिठा गुनामीत्ना २थं उद्धवि । অনগ্নি রধ্বেগা বাপি তথৈব ব্য-সনামিতঃ।। আমশ্রাদ্ধ দিজঃ त्रर्गा व्यवसङ्घ मटेमव हि। या-म आक्षण मना क्यां। दिविखः आ-দ্ববান্বিতঃ॥ তেনাগ্নৌকরণ স্ব-ৰ্যাৎ পিণ্ডা স্তেনৈৰ নিৰ্ৰপেৎ । यात्नन विधिना आक्षः क्रिका সংযতমানসঃ।৷ ব্যপেতকল্মধো নিজ্য যতীনা বর্ত্তে পদ ।

তস্মাৎ সৰ্বপ্ৰয়ত্ত্বেন শ্ৰাদ্ধ স্থ-র্য্যাৎ দ্বিজোত্তমঃ।। আরাধিতো ভবেদীশ স্তেন সমাক্ সনাত-নঃ। অপি মূল ফলৈ ৰ্বাপি প্ৰন্থ-र्विवर्धता विकः॥ छित्नामरेक **अर्थरावा शिकृत् न्नाचा ममाहि**-ण्डः। न **की**वंश्रीष्ट्रका ममा-(कामान्ड॰ वा विशीयत्व।। (यवा॰ वा शि शिष्टा एमाद्वियादेशद्व श्र-চক্তে। পিতা পিতামহলৈচৰ **उदेवत अ**शिजामरः॥ (या यमा শ্বিষতে তলৈ দেষণ নামাস্য তে-ন তু। ভোজযেষাপি জীবন্ত যথাকামন্ত ভক্তিতঃ।। ন জীবস্ত ষতিক্রম্য দদাতি শ্রুষতে শ্রুতিঃ। चार्यायनिका मगाबीजि कि ত্তি কযোঃ সম॰॥ ঋক্থাদৰ্দ্ধ॰ সমা-ममा निर्यारगा भामित्व य-দি। অনিযুক্তাৎ সূতো বস্তু শুক্ত-তো জাযতে দ্বিজঃ।। প্রদদ্যাদ্বী-জিনে পিঞ্জ ক্ষেত্রিণে তু ততোন্য-থা। দ্বৌ পিণ্ডো নিৰ্বপেত্ৰাভ্যা• ক্ষেত্রিণে বীজিনে তথা।। কীর্ত্ত-যেদথ চৈকস্মিন্ ৰীজিন ক্ষেত্ৰি-ণ ততঃ। মৃতাহনি তু কর্ত্ব্য মেকোদ্দিষ্ট বিধানতঃ।। অশৌ-চে স্বে পরিকীণে কাস্য তৈ কাৰ-

ত স্ততঃ। পূৰ্বাহ্নে চৈব কৰ্ত্তব্যণ **धाक म**जूमभार्थिना ॥ तमवव ९-সৰ্ব মেব স্যান্ন বৈ কাৰ্য্যা তিল-ক্রিয়া। দর্ভাশ্চ ঋজবঃ কার্য্যা যুগান্ বৈ ভোজ্যেৎ দ্বিজান্।। নান্দীমুখা স্তে পিতরঃ প্রীযন্তা মিতি বাচষেৎ। মাতৃশ্রাদ্ধন্ত পূ-र्ब॰ माा॰ পিতৃণা॰ माापनखद्र॰॥ ততো মাতামহানাঞ্চ বৃদ্ধৌ শ্রা-क्वाय॰ याञ । स्वर्ग्ड प्रमा-रिष न अर्यामश्रमिकन ॥ श्राज्य খো নিৰ্বপেৎ পিণ্ডানুপবীতী স মাহিতঃ। পূর্ব॰ বৈ মাতরঃ পূজ্যা ভক্ত্যা চৈব গণেশ্বরঃ ৷৷ স্বণ্ডিলেযু পবিত্রেষু প্রতিমাসু দ্বিজাতিষু । शूटेष्ट्रा धुरियम् देनरवरेमा र्शका-দ্যৈ ভূষিণৈ রপি।। পূজ্যিত্বা মা ज्गनान् अर्गाष आक्षवण यूशः 1 অকুৰা মাতৃষাগন্ত য**ে শ্ৰাদ্ধ**ণ পরিবেশ্যেৎ।। তস্য ক্রোধ্সমা-বিফা হি॰সা মিচ্ছস্তি মাতরঃ। ইতি কৌর্মে উপরিভাগে ২১ व्यथायः ॥ अ॥ माष्ट्रमा ३७ । ३१ ॥ 🗷 ॥ শ্রান্ধে কদলীপত্র नि ষিদ্ধ• ভোজনপাত্ৰতথা। ইতি रियाणि व्याथा आक्षथए ॥ न

জাতী সমুমানি দদ্যাৎ ন কদ-লীপত্রণ। ইতি ক্রতুবচনণ।।ঞ্চা। लाक्षाखद्र निविक्षानि यथा। ষাত্রা যুদ্ধ নদীপার নিখ্যালা-পো দিভোজন । দ্যুতক্রীডা **मिरानिज। आटक मश्र रिरक्क**-ষেৎ ৷৷ ইতি কৰ্মলোচনণ ৷৷ঞ্চ৷৷ - मृज्धि । मृज्धः कनश्रुक्त मा-য॰সন্ধ্যা॰ দিৰাশয॰। আদ্ধকৰ্ত্ত। চ ভোক্তা চ পুনভুক্তঞ্চ বৰ্জ্জ-ষেৎ।। অপি চ। বিষণুপুরাণণ।। বৰ্জ্জানি সৰ্বতা প্ৰাদ্ধ কোপো ২ধগমন পরা। ভোজুরপাত্র রাজেন্দ্র ত্রম মেতন শ্বসতে ॥ ব্লাজমার্ত্তওে। পুনর্ভোজন ম-ধান দ্যতাধ্যয়ন মৈথুন। দা-ন॰ প্রতিগ্রহণ সন্ধ্যাণ আদ্ধণ রু-षाके वर्ष्क्रं एष ।। नवावर्क्तमान ধৃতা স্মৃতিঃ। পুনর্ভোজন মধা-ন ভারাধ্যয়ন মৈথুন । দান সন্ধ্যা পুনঃ স্থান আদ্ধ ক্ষা-ষ্ট বৰ্জযেৎ।। ইতি আদ্ধতত্ত্ব।। আদ্ধ ত্রি শ্রদাসমন্বিত। ইতি **८र्मध्यः** ॥ শ্রাদ্ধকর্তা তি শ্রাদ্ধকারকঃ।

ষথা। আদ্ধকর্তা চ ভোক্তা চ

भूनज् कि वर्कारय । देषि

শ্রাদ্ধতবং ॥

শ্রাদ্ধতবং ॥

শ্বাদ্ধকের পুং যমঃ। ইত্যমরঃ

॥ স তু বিবস্বতঃ সংজ্ঞাষাং প

দ্বাণ জাতঃ॥ মনুভেদঃ। ইতি
পুরাণং॥

শ্রাদ্ধশাক ক্লী কালশাক। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।

শাদ্ধিকঃ ত্রি শ্রাদ্ধভোক্তা। ইতি
সিদ্ধান্তকৌমুদী। গ্রাদ্ধসম্বদ্ধি
দ্রব্যং। যথা ষাজ্ঞবন্ধ্যঃ। সন্ধ্যাগজ্জিত নির্যাতে ভুকস্পোদ্ধানিপাতনে। সমাপ্য বেদং দ্যুনিশ মারণ্যক মধীত্য চা। পক্ষদশ্যাং চতুর্দশ্যা মন্টম্যাং রাহ্নসূতকে। ঋতু সদ্ধিষু ভুক্তা বা
শ্রাদ্ধিকং প্রতিগৃহ্ণ চা। ইতি
তিথ্যাদিতত্ত্বং।।

প্রাদ্ধী তি প্রাদ্ধভোক্তা। প্রা-দ্ধমনেন ভুক্ত মিনিচনৌ ইতি সূত্রেণ নিষ্পায়ঃ। ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদী।।

প্রান্তঃ পু॰ শান্তঃ। জিতেন্দ্রিষঃ
। ইতিহেনচন্দ্রঃ।। প্রনমুক্তে ত্রি
। প্রান্ন তপঃ থেদধ্যে ইত্যন্দাৎ
ক্ত প্রত্যাধন নিম্পন্নঃ।। মুধা।
স্থি মৎপ্রাণনাথয় সাধ্যন্তী
নিরন্তরণ। অতিপ্রান্তাসি স্ব

স্ভাব স্নেহযো রিষ মৌচিতী॥ ইতি কাব্যচন্দ্রিকা ॥ শ্রান্তসংবাহন ক্লী শ্রমান্বিতস্য-আসনাদি প্রদানদারা প্রমো-পশমন । ইতি কেচিৎ।। শ্রাম ত্ক মন্ত্রে। ইতি কবিকল্প-ক্রমঃ॥ অশ্রামৎ। মন্ত্রো ২ভি-মুখীকরণ। গুপ্তোক্তি রিত্যে-कि। इंडि मूर्गामामः॥ **शुः योगः ॥ यखशः ॥** শ্ৰামঃ কালঃ। ইতি মেদিনী॥ শ্রামণেরঃ পু॰ জিনভিক্ষুশিযাঃ। তৎপর্য্যাষঃ। চেলুকঃ ২ প্রব-জিতঃ ৩ মহাপাসকঃ ৪ গোমী ৫। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ শ্রাষঃ পু॰ শ্রেষণ । আশ্রয় । ইত্য-मद्रः ।। श्रीमद्यक्षिनि वि । यथा । শ্রীদেবতা অস্য শ্রায়ণ হবিঃ ৷ रेलि श्रीमकामन् প্রত্যেন नि-পান মিতি সিদ্ধান্তকৌমুদী ॥ ত্রি শ্রেষসিজাতঃ । শ্রায়সঃ रेजि निकाखत्कोगुनी ॥ শ্রোবঃ পু॰ প্রবণ। শ্রু ধাতো র্যঞ প্রত্যধেন নিষ্পন্ধঃ।। শ্রাবকঃ পু॰ শাক্যমুনিশিব্য-বিশেষঃ ৷৷ কাকঃ৷ ইতি ত্রিকাপ্ত শেষং ৷৷ শ্রোতরি ত্রি ৷৷

শ্ৰোবণঃ পু॰ পাযতঃ। ইতি মে-मिनी ।। देवनाथामिद्यामनामा-ন্তৰ্গত চতুৰ্থমাসঃ। শ্ৰবণানক্ত युका लोर्गमानी आवनी नायव মাসে সং। তৎপর্যায়ং। নভাঃ ২ প্রাবণিকঃ ৩। ইত্যমরঃ ॥ नजः १। ইতি শব্দরত্বাবলী।। म ह बिविधः मोत्र न्हाखन्ह। কর্ম্ব টম্বরবিকো নাসঃ সৌর-व्यावनः । कर्क छेष्ट्रतविश्रातक **खक्र**थिलमामिमनीरङा गाम শ্চান্দ্রপ্রাবণঃ। চান্দ্রোপি দ্বিবি-ধো মুখ্যো গৌণশ্চ। তত্ত্ৰ মুখ্য-চান্দ্র শ্রাবণীয ক্লফপ্রতিপদাদি लीर्गमारखा मात्मा लोगना-सः व्यादनः। मूथा लकनः व्या-গেবোক্ত•৷ ইতি মলমাসতত্ত্ব• ।। •।। তত্র জাতফল•। লো-क श्रीमास्त्रा धनवान् वानानाः मूस्य क्लबाश्रक मामयूकः। ' আজ্ঞাকরা যস্য জনস্য সর্বে স প্রাবণাথ্যে সূতরাণ প্রসূতঃ ।। 🐞।। অথ প্রাবণক্ত্য । তত্ত্র (पवीश्रवाणः) मूरश्र जनार्परन क्रस्क शक्षमाा॰ जित्ना ऋत्न। शृ-क्रायमनभारमवी॰ भूशैविष्ठेश मः इंडा॰ ॥ सूरी मिजवृकः ।

দেবীণ সংপূজ্য নম্বাচন সপভয় माभूगार। शक्षमाः शृक्षरयमा-গাননভাদ্যান্ মহোরগান্।। कीतः मर्शिक देनद्वमाः (मयः म-পবিষাপহ। গাৰুডে। অনন্ত বাস্কি শ্বা পদা কমল মেব চ। তথা ককোটক নাগ 'ধৃতরা-শথক ৷৷ কালীয় তক্ষক-कालि लिक्नन यनिভ प्रकः। य-জেন্তানসিতানাগান্ দ্ফমুক্তো मिव॰ बद्ध**ः। भू**तानाखदानि । অনন্তো বাসুকিঃ পদ্মো মহাপ-त्या २थ ७ककः। अनीतः कर्व हैः শধো হফৌ নাগাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ ।। পাদ্মে। শেষঃ পদ্মে। মহাপন্মঃ ঙ্গলীরঃ শথপালকঃ। বাসুকি স্ত-ক্ষক শৈচৰ কালীষো মণিভদ্ৰকঃ ।। পরাবতো ধৃতরাফুঃ কর্কো-**छेक ध्नञ्जर्यो। त्रज्ञाकरत्रा** शिह्-यर्ममा भवानि ज्ञाभटयक्तवदनाम-রে। স্বৰ্ণাপি তদশীযাৎ ত্রান্ধ-गानिश ভाक्रराय। शिवृमर्गमा निष्ठमा । 🛊 ॥ 😎 প্রযোগঃ। হ-রিশ্যনানন্তর গৌণচান্তেণ শ্রা-वन्क्ष्यनवगाः क्रञ्यानामि क्र-मञ्जूथः। जामा आवर्ण मानि रू-स्किन्टिक नक्षमा । जिस्यो जमूक-

গোত্রঃ শ্রীঅমুকদেবশর্মা সর্পত ষাভাবকামো মনসাদেবীপূজা मरु कतिरया। रे**छि म॰क**न्ना सु-হীবৃক্ষে পুজ্বেৎ। তদভাবে ঘটে জলে वा नगमामिक क्या प्रवी ময়েতি ধ্যাত্বা মনসাদেবি ইহা-গচ্ছ ইত্যাবাহ্য এতৎ পাদ্য ওঁ यनमार्टिता नयः। इंडिटनन य-থাশক্তি গন্ধ পুষ্প ধূপ দীপ নৈ-বেদ্যানি দদ্যাৎ। ততো ২নস্তা-দীন্নাগান্ পূজ্যেৎ। তত্ত্র ক্ষীর সর্গি নৈবেদ্য প্রধান । অনন্তা-मिक॰ शामगामि**डिः म॰शृ**का ७ँ ষোদাব্নন্তৰপেণ বন্ধাও দচ-রাচর । পুষ্পবদ্ধারষেমূর্দ্ধি ত-সৈ নিত্য নমে। নমঃ।। ইত্যনে-ন ত্রিঃ পূজ্বেৎ। এবং প্রণবাদি नरगारखन य य नामा शृकरय । ওঁ বাসুক্ষে নমঃ। ওঁ শখাষ नगः। ७ ँकश्रमाय नगः। ७ ँक-क्हिं हिकायनमः। ७ मध्यकाय न-मः। ७ कालीयाय नमः। ७ छ-क्काय नमः। अँ शिक्रलाय नमः। अँगशायाय नमः। अँ अलिका-य নমঃ। ওঁ মণিভদ্রায় নমঃ। ওঁ-ধনঞ্জযায় নমঃ। ওঁশেষায় নমঃ । ওঁ ঐরাবতায় নমঃ। অশক্তৌ

गन्न श्रूणाजाः शृक्षस्य । निः स्थान गृह्य स्थाय व्यक्तः भारत्य प्रमाद स्थः जक्षरम् । जेज्यमित्न शृक्षाद्ध गृङ्का-गृनश्यभौनाट शृक्षमित्न शृ-का यूगाद। जावनाः शोर्न-मामाः जाक्ष मावनाकः। हेि क्रज्जाव । श्रा ॥ ज्यनानक्षकः मस्निनि वि ।।

खावना खी मशानीवृक्तः। ইতি (यमिनी।।

শ্রাবণিকঃ পু॰ শ্রাবণমাসঃ।ই-ত্যমরঃ।।

শ্রাবণী স্ত্রী শ্রাবণমাসীষপূর্ণিমা
। যথা। পৌর্ণমাসী তথা মাঘী
শ্রাবণী চ নরোত্তম। এতাংস্ত
শ্রাদ্ধকালান্ বৈ নিত্যানাহ
প্রজাপতিঃ।। ইতি শ্রাদ্ধতত্ত্বং
।। বৃক্ষবিশেষঃ। মুঞ্জী ইতি থোলস্বিদা ইতি চ হিন্দীভাষা।
তৎপর্যায়ঃ। মুঞ্জিতিকা ২ ভিন্দুঃ ৩ প্রবণশীর্ষিকা ৪ শ্রবণা ৫
প্রব্রজ্বতা ৬ পরিব্রাজী ৭ ত-পোধনা ৮। অস্যা গুণাঃ। কন্
যায়ত্বং। কটুত্বং। উক্তত্বং। কফ্
বাত আমাতিসার কাস বিষ
চ্ছের্দ্দি নাশিত্বঞ্ধ। ইতি রাজ-

निर्यक्ता व्यक्षि ह। यूषी जिक् রপি প্রোক্তঃ আবণী চ তপো-ধনা ৷ প্রবণাহ্বা মুখিতিকা তথা অবণশীর্ষিকা॥ মহাত্রা-বণিকান্যা তুষা স্মৃতা ভুকদম্বি-का। कनम्यू शिका इ गानिया-থা তু তপষিনী ৷৷ সুভিতিকা करूः भारक वीर्यगाका मधुता लमूः। त्यशा गक्षा भन्नी कृष्ट् क्रि सानार्डि शाखून थ। ही-পদারুচ্যপস্মার প্লীহ মেদো श्वमार्खित्र । यश्यू श्वी हं ठलू-वा। ७८१ ब्रका मर्श्विष्टः ॥ ইতি ভাবপ্ৰকাশঃ।।ঞ্চা অন্যৎ মুণ্ডিতিকাশব্দে জষ্টব্য ।। আবন্তী ন্ত্ৰী ধৰ্মপত্তনাখ্যদেশঃ । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। শ্রোবন্ঠীয়ঃ ত্রি শ্রবণানক্ষত্রসম্ব-क्षीयः। व्यविष्ठा नकार इन् थ-ত্যযেন নিষ্পন্ধঃ। ইতি সিদ্ধান্ত-कोगमी॥

প্রি ঞ সেবনে। ইতি কবিকরক্রমঃ।। ঞ শ্রয়তি শ্রয়তে।
ইতি দুর্গাদাসঃ।।

প্রিতঃ ত্রি মেবিতঃ ।। আশ্রিতঃ
। প্রিধাতোঃ ক্ত প্রত্যবেন নিস্পানঃ । ইতি সিদ্ধান্তকৌম্দী ।।

শ্রিতবান্ ত্রি সেবাকারকঃ।
শ্রেধাতোঃ ক্তবতু প্রত্যযেন নিত্পন্ধঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী।।
শ্রেষণমন্য স্ত্রী আত্মান শ্রেষণ
মন্যতে বা। ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরপণ।।

প্রিষ উদাহে। ইতিকবিকর-দেশলী। উপ্রেষিদ্বা প্রিফুন। ইতিদুর্মাদাসঃ।।

প্রী ঞগ পাকে। ইতি কবিকর-জনঃ। ঞ স শ্রীণাতি শ্রীণীতে। ইতি দর্শাদাসঃ।।

बीः खीं लक्षीः ॥ नवकः । देणमदः ॥ दिन्द्रा । दिन्द्रा

निक्षिकात्रां के श्रीशृर्वः ममू
मीत्रस्य ।। देखि त्राष्ट्रव्यं धृष्ठ

श्रास्त्रां । देखि त्राष्ट्रव्यं धृष्ठ

श्रामिना निक्षा अधिकाद्या स्व
याः नतानाः देखात्मम कीर्याः
श्रीमकामिषः नामः। म जू मृजा
नाः उत्थि भिक्षातातः। देखि

मःकात्रञ्यः ।। ॥ १। श्राभ्रं ।

श्रीमकान श्रमानः श्रीमक्षाक्ष

प्रस्ति ।।

श्रु॰ রাগবিশেষঃ। স জু হনুমন্মতে ষড়াগান্তর্গতপঞ্ম-রাগঃ। পৃথিব্যা নাভিতো নির্গ-তঃ। অস্য জাতিঃ সম্পূর্ণ। তস্য স্বরাবলিঃ। যখা গ ম প ধ নি। षमा गृहः यष्क खदः। एम-ख्टले जिन्दाद्ध गानमगरः। त्रागमालाया॰ ज्यमग्रकातः। मृ-न्तत्रपूक्षः। शुक्कवञ्जभनीशानः। মতান্তরে রক্তবন্ত্রপরীধানঃ। কাটিক পদ্মরাগমণিমালাগলঃ । পদ্মপুষ্পহস্তঃ। বিচিত্রসি॰হা-সনাৰ্ডঃ। অস্য সংমুখে গাষ-खि गायकाः ॥ **#** ॥ श्नूमगार् वागा जार्गाः १४०। यथा। श्र-थमा मालञ्जीः। उन्गाः मन्पूर्व-জাতিঃ। অস্যাঃ স্বরাবলিঃ য ঋ 🎚

ग म भ ध नि। जमा। गृह । यज्ज-यतः। हिमर्खा विठीयथहत्रानि-वटन गीननवरः। त्रागमालासाः তদ্যাঃ স্বৰূপণা ব্যক্তবৰ্ণান্ত্ৰী।কো-भलान्त्री। शीजवञ्जशत्रीशाना । কৌতুকাদ্ ভূমস্তীসতী নাষকা-ডিম। সথীগণেন সহহাস্যযুক্তা-মৃতক্রতলোপবিষ্টা ৷৷ ১ ৷৷ দ্বিতীয়া মারবা অথবা মালবা। অস্যাঃ ষাডবজাতিঃ। অস্যাঃ স্বরাবলিঃ य १ १ म १ नि। जमा गृश् यज्ज স্বরঃ। হিমত্তে শেষবেলাযা গা-নসম্বঃ। রাগমালাযা ত্রাঃ श्वकार यथा। अर्ववञ्चनद्वीधाना। পুষ্পমাল্যধরা। নাষক মেলনার্থ মেকাকিনী সঙ্কেতস্থানোপবিষ্টা ॥२॥ जृजीया धनाञ्जीः। जनाः ষাডবজাতিঃ। অস্যাঃ স্বরাবলিঃ । य প ধ नि ঋ গ। গৃহ॰ यড्জ শ্বরঃ। হিমত্তৌ দিতীযপ্রহরদিব-**८म (শ্वर्वनायाः वा गानम्यदः ।** রাগমালাষা তস্যাঃ স্বৰূপ । विरमाभिनीनात्री। त्रक्कवञ्जभत्री-ধানা। বিযোগজসম্ভাপেন দুঃখি-ভাতিক্রশা। একাকিনী রোরুদ্য-ষানা বঙ্গলতরুতলোপবিষ্টা ॥ ৩॥ চতুর্থী বসম্ভরাগিণী। অস্যাঃ

সম্পূর্ণা জাতিঃ। অস্যাঃ স্বরাব-निः रं भागम श्वाना अमा गृर विष्क्रवतः। शियत्वी सर्गा-**८इ. वमछरछों निवामार्ख ह गान**-न्ययः। द्वागमालायाः जनाः य-ৰূপণ। সুন্দরপুরুষাক্তিঃ। কস্য-চিন্মতে শ্যামবর্গা। রক্তবসনা। मयृत्रभूष्क्रिंगशा आगुमूजलर्खा । যৌবন মদন মদমক্তা। পুষ্পামা-काशनदम्भा। भूटभामादन मह मर्खकी मूखत्रगायनी िकः मूरथन রাগরক্ষুতা। বামহস্তধৃততামূ-मरी टिका। जी गणनहिल हाना কৌতুক ক্ৰীডা নৃত্য গীত বাদ্যা-সক্তা। রাগমালান্তরে উক্তগুণ-युका बिक्षकपूर्विममृगर्वि र्ल-থিতা ।। ৪ ।। পঞ্চমী আশাবরী । অস্যা ঔডবজাতিঃ । অস্যাঃ স্ব-द्राविनः ४ नि य म १। ज्या গৃহ পৈবতস্বর:। হিমত্তে দিতী-্ষপ্রহরদিবসে গানসমযঃ। রাগ-. यानायाः जन्माः यक्षाः । भा-মবর্ণা স্ত্রী। কোমলাঙ্গী। শ্বেত-भाषिणतीशाना । कर्णतानुरलभ-ना। रुखनात्वा वृर्देमन्दिकि তা। কেশৈৰ্বদ্ধ চূড়। জলমধ্য-ऋপर्वञ्छहाया मूलेविका। द्वाग-

মালাম্ভরে উক্ত গুণযুক্তা বৃক্ষপ-ত্রবন্ধকটিদেশা নগ্না লিখিতা।। ৫ ॥ 🛊 ॥ অস্য পুত্রা অকৌ। যথা । সিন্ধুঃ ১ মালবঃ ২ গোঁডঃ অথ-বা গোণ্ডঃ ৩ অস্য স্থানে কেচিৎ কল্যাণঃ ইতি কেচিচ্চ হামীর ইতি পঠন্তি। গুণদাগরঃ ৪ সন্তঃ ৫ গম্ভীরঃ ৬ শঙ্করঃ অথবা আ-গডः १ विश्वात्रः ৮॥ 🟶 ॥ क-লনাথমতে শ্রীরাগঃ প্রথমরাগঃ यमा ভार्याः वर्। यथा। गोत्री ১ গৌলাহলী ২ ধবলী ৩ ৰুজাণী ৪ মালকৌশ অর্থাৎ কৌশিকী ৫ দেবগান্ধারী ७। তমতে পুত্রা चरकी रनुमग्राठजूनााः । किन्न গোঁড শঙ্কর বিহাগরস্থানে ক-ল্যাণ আগডা বিগডা লিখিতাঃ ।। 🗰 ।। সোমেশ্বরমতেপি প্রথম রাগোষণ। অস্য রাগিণ্যঃ ষট্। यथा। मानवी जयवा मत्रवा ১ ত্রিবেণী অথবা তিরবনী ২ গৌ-রী ৩ কেদারা ৪ মধুমাধবী ৫ পাহাডিকা অথবা পাহাডী ৬। অস্য পুলাঃ পূৰ্বোক্তমতদ্বযতু-ল্যাঃ। তমতে অস্য রাগস্যা গিণীসহিত্স্য শিশিরত্তৌ গান-সম্বঃ ৷৷ া ভরতমতে পঞ্ম-

রাগোষণ । অস্য রাগিণ্যঃ পঞ্চ । যথা। সিন্ধুকী ১ কাফী ২ ঠুম-রী ৩ পূর্বদেশে বিস্তার ইতি থ্যাতা। বিচিত্রা ৪ শিরহটা অথ বা সোরঠী ৫। তমতে অস্যান্টপুল্রাঃ যথা। প্রীরমণঃ ১ কোলাহলঃ ২ সামস্তঃ ৩ শব্দরণঃ ৪ রাকেশ্বরঃ ৫ থটরাগঃ ৬ বড়-হংসঃ ৭ দেশকারঃ ৮। তেষাণ্ডার্যা যথা। বিষ্যা ১ ধ্যাষ্যা ২ জন্তা ৩ সূহনী ৪ শরদা ৫ কেনা ৬ শশ্বেখা ৭ সুরস্তী ৮। ইতি নানা সঙ্গীতশান্ত্রতঃ সংগৃহীতং।।

শ্রীকঠঃ পুণ শিবং। ইত্যমরঃ॥
সরুজাঙ্গলদেশঃ। স তু হস্তিনাপুরস্য উত্তর পশ্চিমে বর্ত্ততে
। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥

শ্রীকণ্ঠপদলাঞ্চনঃ পুণ ভবভূতিঃ। স ত্ মালভীমধেবনাটককর্তা। ইতি শব্দমালা।।

শ্রীকণ্ঠসখঃ পু• সবের:। ইতি হলাযুৱঃ।।

শ্রী বন্ধাকর্কোটকী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।

শ্রীকরণ ক্লী রক্তোৎপলণা ইতি ত্রকাণ্ডশেষঃ।। শ্রীকরঃ পু॰ বিফুঃ। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ।। স্মৃতিপ্রস্থকারবিশেষঃ। ধথা। শ্রীকরাচার্য্যাদিগ্রস্থাদর-পরাহতবিবেকানাণ। ইতি দায়-ভাগাদ্যশ্লোকটীকাষাণ শ্রীকৃষ্ণ-ভর্কালকারঃ।। শ্রীকারকে ত্রি।। শ্রীকরণ ক্লী লেখনী। ইতি শক্রপ্লাবলী।।

শ্রীকান্তঃ পুণ বিক্যুঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

শ্রীকারী শুণ মৃগবিশেষঃ। তৎপর্যায়ঃ। শিখিষূপঃ ২ সরস্কঃ
৩ মহাযবঃ ৪ ষবনঃ ৫ বেগিহরিগঃ ৬ জজ্মালঃ ৭ জাজ্মিকাহ্রয়ঃ ৮। অস্য মাণসগুণাঃ।
লযুত্বণ হাদ্যত্বণ বলপ্রদত্বশা
ইতি রাজনির্যন্টঃ।।

শ্রীখণ্ডঃ পুংক্লী চন্দনং। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

শ্রীগর্ত্তঃ পু॰ বিকুঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ ।। খল্লঃ। যথা। জসি-র্বিষশনঃ খল্ল স্তীক্ষধারো দুরা-সদঃ। শ্রীগর্ত্তো বিজয় শৈচব খ-র্মপাল নমো হস্ত তে।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব• ।।

এতিহঃ পু॰ পক্তিণঃ পানীযশালা
তৎপ্র্যায়ঃ। শঙ্কনিপ্রপা ২।

ইতি হারাবলী।। শ্রীঘন• ক্লী দ্বাধা ইতি জটা-ধরঃ।।

প্রীঘনঃ পু॰ বৃদ্ধা ইত্যমরঃ।। **बिह्न की विश्वमूम्पर्गाः मृ** जायखिरित्यसः। यथा। 🕮 ज्ञान স্যোদ্ধৃতি বক্ষো তত্ত্ব পূজা প্র-সিদ্ধযে। বিন্দুগর্ভণ ত্রিকোণম্ব क्षा ठाकोत मुक्तद्व ॥ मना-রদ্বয় মধুসাফার যোডশকোশ ক'। ত্রিরেখাত্মক ভূগেহবেষ্টি-**७॰ रख मानिएथ** ।। ইতি नख बल्हान्द्रशे ३३ ठत्रकः ॥ 😝 ॥ অপি চ। অথ ঐচক্রণ। যথা विन्तू म बागुः अखेरकानः এठ-खर॰ य॰शतहकः। विषणात॰ চতুর্দশার স্থিতিচক্র মেতত্রয় 1 অন্টগত্র° বোডশদল° বৃত্ত-ত্রয়ণ ভূসদনত্রয়ণ চতুর্দারসমা युक्त प्रेंज्य मृख्यात्रकः। जम् क्छ॰ जामला। विन्तृ बिकान व **সুকোণ দশার যুগ্ম মন্বসু নাগ** দল সংগত যোডশারে। বৃত্ত-वयक धत्री मंगनवयक श्रीहक রাজ মুদিত পরদেবতাষাঃ ৷৷ ठळकाज॰ मिमृत असूगामिना লিখিত সুৰ্ণ রৈজত পঞ্চরত্ন

ক্ষটিক তামাু দুৰ্থ কীৰ্ণ স্ব্যাহ। তথা ভূতভৈরবতন্ত্রে। অক্র यूमया॰ दाथा॰ नालिश नूमन॰ মুখ । ৰো হত্ত যন্তে প্ৰবৰ্ত্তেত कमा गर्ब इताग्रह ।। यमा यव ক্ষিত্তি ৰ্ফেৰি তত্ত্ব তা॰ নাৰ্চ্চযেদ্য-मि। जगान्य कथित्रदेशव शात्रश তস্য জাৰতে ॥ থশো রালোক-ন ন সাত্তথা করত বত্নতঃ। ৰ-দি দৈবাৎ পশো রগ্রে লিখিতণ বিদ্যতে কচিৎ ৷৷ মনাঙ্গকতি রে-বাত্র ক্রিয়তে পাপবৃদ্ধিনা। তথা ভূততৈরবে। যো शস্মন্ যন্ত্রে মহেশানি কেশরাণি প্রকল্পযেৎ। यागिनीमहिंछ। छमा हि॰मा॰ পৰ্বস্থি ভৈরবাঃ।। ইতি বচন।-মত্র কেশরাণি। ন রাত্রাবক্ষথেৎ ষম্ভ সাধকন্ত কদাচন ১ প্রমাদা-দৰ্কিতে যন্ত্ৰে শাপো ভবতি তৎ-ক্ষণাৰ াা ৃতক্রাপরাজিতাপুষ্পে করবীরে জবাসু চ। তত্র দেবী ব-সেমিত্যা ভাষেয়ে পূজন মম ॥ তথা সচ্চন্দভৈরবে। সর্য্যাচ্চ স্থ-खिटन यञ्च॰ इस्त्रमाज॰ मू**मू**मतः। রত্নাদিবু চ নির্মাণে মান মিচ্ছা-বশান্ডবেৎ ৷৷ একতোল দ্বিতো-ল॰ বা ত্রিতো**ল॰ বেদতোলক**°।

ইতোধিক নরঃ ক্লন্বা প্রাৰশ্চি-ত্তীভবেৎ গ্রুব•া৷ রক্তেন রজ-সাপূৰ্ব্য প্ৰীচক্ৰণ ভূবি পূজ্বেৎ। নশ্যন্তি সৰ্ব বিমানি প্ৰাপ্যতে চ যথেপ্সিত ৷৷ দশভাগ সুবর্ণস্য कामुमा सामभ छथा। यख्मभ রজতস্যাথ চৈতল্পৌহত্ত্রয়ণ ভবেৎ ।। চক্রে १ श्रिन् পূজবেদে। हि म সৌভাগ্য মবাপুৰাৎ। অনিমা-नाक निकाना मिरिला कायरक ২চিরাৎ ।। বিজ্ঞানে রচিতে যন্ত্রে পদারাগে ২৭ বা প্রিযে। ইন্দ্র-नीत्न १थ देवमृत्यां ऋगिटक मः রকতে ২পি বা।। ধন পুত্র তথা দারান্ যশাংদি লভতে এ বং। তামুম্ব কান্তিদ প্রোক্ত সুবর্ণ শত্রনাশন ৷৷ রাজত কেনদ रिश्व का विक नर्वनिकितः। अ তল্যন্ত্ৰমাত্ৰে ভেৰেণ ।। জ্ঞা অথ শ্রীচক্রনাশে প্রাযশ্চিত্ত। দঞ্চণ চ ক্ষুটিত ষম্র হৃত চৌরেণ বা थिरय। উপবাস**॰ अन्न**बीं छ দिन মেক মতন্দ্ৰিতঃ ।। লক্ষমাত্ৰণ জ-পেদ্বিদ্যাণ হোম তৰ্পণ পূৰ্বকণ। সম্ভক্তা চ গুৰু তোষা বান্ধ-ণানপি ভোজ্বেৎ ৷৷ লক্ষণ জপ্তা দশাংশহোমঃ তদ্দশাংশঞ্চ তর্পালী জ্ঞীজঃ পুং কামদেবঃ জ্রিষাজাত-

। লক্ষ মযুত মিত্যেকে। কদাচি-লুপ্তচিক্ল বা স্ফুটিতাদি বিদুষ-ণ । ভন্ন করোতি ষো মর্ত্যো মৃত্যু স্তস্য ক্রত ভবেৎ ॥ ত-স্মাচ্চ ভীর্থরাজে বা গলাদি শরিতামরে। সমুজে বা ক্ষিপে-एकवि हानाया मूःथ माश्रुवाद ॥ ्डेम्ड यख्यभाजविषय ॥ 😻 ॥ অথ শ্রীচক্রপাদোদকমাহাম্মা । श्रक। शुक्षत्र नर्भनाम् यम्ना (गी-দাবরী গোমতী গঙ্গাদার গধা প্রধাগ বদরী বারাণসী সিন্ধুসু। রেবা সেতু সরস্বতী প্রভৃতিযু ব্রহ্মাওভাওোদরে তীর্থসান সং र्मुकाहिकनमः बीहक्शामा-मकः।। क्षा। जाथ मर्गन कलः। ममाक् भञक्रवृन् कृषा यदक-ल॰ সমধাপু या ६। ७९ कल॰ ल-ভতে ভক্ত্যা ক্লম্বা শ্রীচক্রদর্শন ।। ষোডশ বা মহাদান ফ্রন্তা ষ্প্লভতে ফল । তৎফল সম-वारक्षां कि क्या बीर्डकमर्गनः ॥ সাৰ্দ্ধত্ৰিকোটিতীৰ্থেযু স্নাদ্বা বৎ कन मभूरछ। তৎकनः नजरङ **ज्जा क्या बीठकमर्भनः ॥** ইতি তন্ত্রসারঃ।।

স্থাৎ।। শায়ঃ। ইভি কেচিৎ।। শ্রীতালঃ পু• তালর্কসদৃশবৃক वित्मयः। छ० शर्यायः। मृष् **তानः २ नत्रीजानः ७ मृतूष्ट्र**मः 8 विभागभनः ६ त्वथार्यः ७ भगीरवाशासवः १ नितानशक्तकः ৮ यादमा खुटः २१ चारा खनाः । मधुत्रष्यः। गीठष्यः। जेयस्कः यायष्। शिख्याशिष्ट्। कक-কারিত্ব•। ঈষদ্বাতপ্রকোপণত্বঞ্চ । ইভি রাজনির্যন্টঃ॥ 🕮 দঃ পু॰ স্বেরঃ। ইত্যমরঃ।। শোভাদাতরি ত্রি।। শ্রীধরঃ পু• বিষ্ণুঃ।। ভূতার্ছদ্-**एछनः। ইতি ह्मिठ्यः। भावा**-প্রামবিশেষঃ। যথা। অভিকৃত্ত দিচক্রন্ত বনমালাবিভূষিত। শ্রীধরণ দেবি বিজ্ঞেষণ শ্রীপ্রদণ भृशिगा॰ माना ॥ देखि बक्तदिवदर्ख প্রকৃতিখণ্ডে ১৯ অধ্যায়ঃ।। **জ্রীনন্দনঃ পু**ু কামদেবঃ। ইতি र्मिट्यः। बन्नीशृत्रकः।। ঞ্জীনিকেতনঃ পু• বিষ্ণুঃ। ইতি नमत्रज्ञावनीं ॥ শ্রীনিবাসঃ পু• বিষ্ণুঃ। ইতি শ্রীফলা স্ত্রী নীলী।। ক্ষুদ্রকার-ত্রিকাণ্ডশেষঃ !! শ্ৰীপণ ত্ৰি শ্ৰিষণপাতি ষৎ। ইতি

मुक्षत्वाधवागकत्रवः ॥ শ্রীপতিঃ পু॰ বিকৃঃ। ইত্যমরঃ॥ शृथिवीनाथः। ইভि मिनी।। শ্রীপথঃ পু• রাজপথঃ। ইতি **ट्या**ट्यः ॥ শ্রীপর্ন ক্রী পদ্মণা অগ্নিমস্থ-मुक्तः। ইতি মেদিনী।। প্রীপর্নিক। প্রী কট্ফলবৃকঃ। रेकामतः ॥ ঞ্জীপর্ণী জ্রী গম্ভারীবৃক্ষঃ। ইত্য-भक्षः। क हेकल वृक्तः। ইতি भि-**फिनी ।। भाषानी** वृष्णः ॥ इर्ठ-বৃক্ষা ইতি হেমচন্দ্রঃ। অগ্নি-সম্বৃক্ষ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। **बीशिकः भू• म**त्रलवृक्त्रमः । **ইত্যমরটীকাষা** রামাশ্রমঃ।। শ্রীপুরা: পুশ্বিশঃ। ইতি ত্রিকা-श्वदन्यः । कामरमवन्त्र ॥ শ্রীপুষ্পা ক্লী লবঙ্গ। ইতি রাজ-निर्घकेः॥ शत्रकाष्ठं । देखि त्रव्यामा ॥ **ঞ্জীফলঃ পু• বি**স্তৃত্যুদঃ। ইত্য-यतः॥ त्राजामनी। ইতি রাজ-निर्वकिः॥ (वली। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

किनिका जी कुजकात्रविशी।

মহানীলীকৃষ্ণঃ। ইতি রাজ-নির্ঘন্টঃ।।

क्षिक्नी जी जामनकी।। नीन । इंडिस्मिमी।।

শ্রীভদ্র। স্ত্রী ভদ্রস্থাক**ঃ। ইতি** শব্দরত্বাবলী।।

শ্রীভাগবত ফ্লী অফাদশনহাপু-রাণা ন্তর্গতাফীদশসহসু**লো**ক-यूक्तभूतावित्मयः। यया व्य-ক্টাদশণ ভাগবত সার্মার্ক্ট সৰ্বতঃ। কৃতবান ভগবান্ ব্যা-সঃ শুক্ঞাধ্যাপ্ৰ<u>ৰ সূত্</u>ণা ক্ষয়ৈ ৰ্বাদশভি <mark>ৰ্যুক্তণ ত্ৰন্ধবিদ্যা</mark> সমন্বিত ৷ বেদ বেদান্তসার ए९ भूतानानाक महन्या। यव সংকীৰ্ত্তিতঃ কুফো ভগৰান্টেৰ পদে পদে। শ্রীভাগবত মিত্যেব रि गात्रि नताः किष्य।। गूठा-তে সৰ্বপাপেভ্যো বণা নায়া গদাভূতঃ। মহীভূতা শ্ৰণ মেরু र्फिराना॰ रक्नारवा यथाना मृत-ভিঃ কামধেনুনা মঞ্চারস্সু ৰ-থোৰ্বলী। কাৰ্ফানাণ পাৰ্বতী-नारथा ताञ्जा॰ जानत्रिथ र्यथा।। मखोनाटेक्ट गम्बदा निमान जाइवी यथा। भूतानाना ७था রাজন জ্রীজাগবত মুত্তমণ।।

অম্বরীশ উবাবচ। পুরাশ ত॰ ভাগবত- পঠ মে পুরতো হরেঃ। চরিত দৈত্যরাজস্য প্রহ্লাদস্য চ ৰৎপতেঃ।। গৌতম উবাচ। অ-ম্বরীশ শুকপ্রোক্ত নিত্য ভা-गवं मृग्। शर्व सम्दर्भनाति यमीक्ष्मि ভवक्षयः॥ ऋत्म ऋत्म হস্বনেধস্য কল মাপ্নোতি মান-বং। প্রত্যথ্যাষ রাজসুষ্ফলেন শরিযুজ্যতে।। প্রতিমোক বা-জপেয়ফল তস্যোপজায়তে । পদে পদে गशताक ठीर्थनान-ফল॰ লভৈৎ।। এতদ্ভাগবভ॰ (मित पूत्रान मूकिमाधकः। ठ-ত্রাপি দশমক্ষন্ধঃ সর্বভক্তমনো-হরঃ ৷৷ তত্তাপি রাসলীলাঢ্যা **११ शायी महाकला। श्रीभाई-**ত্যুবাচ। সর্বঞ্চ হরিলীলাত্য শ্ৰীমন্তাগৰত খদি। ক্ষমস্য দশ-ৰস্যায় মহিমা কেন হেতুনা ॥ রাসলীলেতি ভত্রাপি কথ্যতে স্-ৰ্বতোধিকা। তত্ৰ মে কারণ শ্রো-তু মুৎকণ্ঠা বৰ্দ্ধতে ভূশং 🏻 শ্ৰী-সদাশিব উবাচ। স্বয়ণ ভগৰতো জন্ম তস্য লীলা চ বর্ণাতে। শ্রু-তীনাঞ্চ স্তুতি ৰ্যত্ৰ সৰ্ববেদাৰ্থস-মিতা।। স্বৰণ ভগৰতো লীলা

মরঃ। অশ্বখৃকঃ। ইতি রাজ-

নিৰ্বক্টঃ। বিষ্ণুঃ। ইতি শব্দ-

त्रप्रावनी।। भिवः। ইতি ত্রি-

কাণ্ডশেষঃ ॥ ছব্রেবঃ। ইন্ডি

भक्षामा ॥

সর্বশক্তিশ্চ দর্শিত।। দশমকন্ধ মাহাত্ম্য এতটের কারণ মক্ত য় তত্রাপি রাসলীলায়া ষম্মাহাম্মা মুদীরিত । ভত্তাপি কারণ বঢ়ি। শৃৰু পৰ্বতনন্দিনি।। যঃ স্বয় छ-गत्। त्रकः शृटेर्वश्र रेजीकः তে। স সর্বশক্তিসম্পূর্ণঃ সর্বলী-লাপ্রকাশকঃ।। তদ্যৈব শক্ত-ষো গোপ্যঃ প্রোক্তাঃ সর্বোক্ত-মা যতঃ।। শক্তীনাঞ্চ শক্তিম-তো দীলা ষত্ৰৈকতঃ স্থিতা। সা **बीषा गर्बठः (अर्थ) कीर्खिङ**। পরমর্ষিভিঃ।। ইতি পালে পা-कावश्यक्त व्याप्तः ॥ শ্রীভাতা পুণ অশ্বঃ। ইতি রাজ-निर्विकैः ॥ हसः । नमूट्या ६-পন্তাৎ !! শ্রীমতিঃ স্ত্রী রাধা। যথা। শ্রী-রাধা ঐমতিঃ শ্রেষ্ঠা শ্রেষ্ঠকণা শ্রেতিপ্রিকা। ইতি নারদপঞ্চরা-ত্ৰে ত্যাঃ সহসুনামস্তোত।। 🎒 মতী স্ত্রী শ্রী মুক্তা। বোষি-

मामुः পূर्वः এতছকোবোজ্যः।

जिका ७८ मरः ॥ निवीमित्र मे ।।

भियान् पु॰ जिलक वृक्तः। ইত্য-

ইভি শিফাচারঃ।।

প্রীমন্তকঃ পু• রসোনঃ।

क्रेमान् जि मत्नाख्डः ॥ धनी । दें कि त्मिनी।। उद्भर्गायः। বান্ হ লক্ষণঃ ৩ এ)লঃ ৪ ৷ ইভামরঃ ।। গ্নীমলাপহা স্ত্রী সূমুপতা। ইতি ब्राष्ट्रिक्टिश **এ মুখঃ পু• কা**লচক্রস্য সপ্তমবৎ• मुद्रः। ইতি কেচিৎ।। পত্ৰপৃষ্ঠে **শ্রীশৃক্তবি**খন°। ইতি লোকপ্র-**িসিদ্ধঃ॥ শো**ভাযুক্তাননে ক্লী॥ **बीमूर्जिः जी त्मवविश्र**ः। विस्र्-क्षिमा। स्था। अथ भीमूर्छ-ंषः। अकातमञ्जदम्र । देमली माक्रमयी स्त्रोही त्विशा त्वशा **इ देवक्छा। यत्नावरी मनिय**री প্ৰতিমাক্টবিদা মতা ৷৷ চলাচ-লেভি মিবিধা প্রতিষ্ঠা জীবম-শিরণ। উদাসাবাহনে নস্তঃ স্থি-রাষা মুদ্ধবার্চনে। অন্থিরাঘা° विकन्नः मार इंखिल जू जत्द ছবং বিলেপ্যামা ম-ন্যত্র পরিষার্জ্জন ।। গোপাল

মন্ত্রোন্দিউত্বাত্তৎ শ্রীমূর্তি রপে-ক্ষিতা। তথাপি বৈষ্ণৰ প্ৰীত্যৈ लिथाः और्युर्वरमा रिष्णाः॥॥। ष्य भ्रीमृर्खिनक्रशानि। इस्मीर्सः পঞ্চরাত্রে। ভগবৎ 🕮 হযশীর্ষ बंकमशादम। जामिमूर्खि बामूःमः तः महर्मन मथाम्जर। छजुर्किः পরং প্রোক্তং একৈকো ভিদ্যতে ত্রিধা।। কেশবাদি প্রভেদেন মূ-র্ত্তিবাদশক শ্মৃত । পক্ষজ দক্ষি-বে দদ্যাৎ পাঞ্চজন্য তথোপরি ॥ वादगाशति शका यमा ठळा छा-(धा वावश्रिकः। त्यानिमृदर्व स्व ভেদে।য় কেশবেতি প্রকীর্দ্রাতে ॥ ১॥ অধরোতরভাবেন কুত भिठलू येक देव। नात्रयनाथा। या मृर्जिः शांभिना ज्ञिन मुकिता॥ २॥ मन्। धः शक्षकः यमा शाक्कः नाः ज्यानिता मिक्कतार्कु गमा यमा ठळ॰ ठार्था बाविष्ठ् ७ ॥ व्यामिमृर्त्व स्व स्वामा २ यः याधः বেতি প্ৰকীৰ্ত্ত্যতে ৷ তা দক্ষিণাশঃ স্থিত চক্রণ গদা মন্যোপরি স্থিতা ।। বামোর্দ্ধসংস্থিত পদা শথ চাধো ব্যবস্থিত। সন্ধর্ষণস্য ভে-দো ২য় গোৰিন্দেভি প্ৰকীৰ্ত্ত্যভে ।। ৪।। দক্ষিণোপরি পদা তু গদা-

চাধো ব্যবস্থিত।। সন্ধর্ষণস্য ডে-দে। ২ম॰ বিষ্ণু ব্লিত্যভিশব্যাভে।। ए।। मिक्स्पार्गात्र मञ्जय ठका চাধঃ প্রদৃশাতে। বামোপরিতথা পদ्म॰ गमा চाधः अमृगारक॥ म-ধুসূদননাৰা ২য° ভেদঃ সন্ধৰ্মণ-मा চ। ৬। ত্রিবিক্রমমূর্ত্তি নাহ। मिक्टिशार्कि शमा यमा शक्क চাপাধঃ স্থিত ।। বামোর্দ্ধে সং-স্থিত চক্র নধঃ শন্তা প্রদূশ্যতে। ব্ৰহ্মাণ্ডগ বামপাদ দক্ষিণ শে-यपृष्ठेग॰ ॥ १ ॥ श्रीवामनमृर्छि-बाह्। दलिदक्ष्य मःयूकः दाय-ন॰ চাপ্যধঃ স্থিত । বাৰোঞ্জে क्रियानी यमा भूखतीक मधः **क्टि॰।। एक्टि**वार्क्कु॰ महम्।র॰ পাঞ্চজন্য মধঃস্থিত । সপ্ততাল ध्यगारणन रायन कात्रस्य महा 11 ৮ ।। উर्जु॰ एकिन्छ महत्क मधः **शबः** वादञ्छिः। वात्मार्ष्क् को-মোদী यमा পाक्षकना मधःव्रिक॰ ৷৷পদ্ম৷ পদ্মকর৷ বাঁমে পার্শ্বে বস্য ব্যবহিতা। হিতো বাপ্যুপবিফৌ वा नानुता ग विणानवान्।। अतु-मना हि एउएमा २२॰ श्रीभारत्रि क्षकीर्खाएक । २ । मिक्स्मिक् मराहकः (कोरमामी जम्भः विज

।। वारमार्कु निन ग्रा अधः 'नवा' तिदाकटके। स्तरीहरू कि दिएक पर का शिक्ट मनक सम्बद्धित ।। व निरमार्थ गुवरी का नामक मारमहास्था । कहमार्कान किल । एक किया मि जन्म विकास পদ্মনাটভতি আ মূর্ত্তিঃ স্থাপিছা 'यामगायनी । ३३। मिक्साटब् **পাঞ্**জন্য মধন্তাতু সংশেশ্য ।। यदागर्जु कोत्मामी (मवी दर्जि রাজ স্বধঃস্থিত । অনিরুজস্য ভেদে। ২য়ণ দামোদর ইতি স্থিতঃ ॥ ১২॥ এতেষান্ত দ্রিষে) কার্যে। পদ্ম বীণাধরে শুভে। ইতি জ-্মেণ মার্গাদি মাসাধিপাঃ কেশ-वामरमा काममा। 🐠।। व्यथ मि-জার্থসংহিতাষাণ চতুর্বিণ্শতিমূ-र्खयः। वामूप्तरवा गना नश्च ठळ পদ্মধরো মতঃ ৷ ১ ৷ পদ্মণ শঙ্খণ তথা চক্রণ গদাণ বহুতি কেশবঃ ।। ২।। শন্তা পদা গদা চক্ত श्रद्ध नातायण्डं .मा।। ७। भाषाः চক্রণ তথা শহ্বণ পদ্মণ বহুতি মা-্ধবঃ ॥ ৪ ॥ চক্রণ পদ্মণ তথা শাস্থাণ ্গদাঞ্চ পুরুষোভ্তনঃ । ৫। পদ্ম कोरगांकिं नधः ठळः थरख २ भारधाक्रकः ॥ ७ ॥ महर्यत्वा

সদা শথ পঘ চক্রধরঃ স্মৃতঃ। १। उक्-अले न्या नाडी रगावित्ना-শ্বিতে ভূজিনাটো পদা-পদা-তথা পায় চক্ত বিকৃষিভতি বঃ। ৯। क्रिक् अन्य क्या श्रेषा अमस्य वे-ध्यम्बः ॥ ५०॥ श्राणः महत्राकः চক্ত শহা খতে ২চ্যতঃ সদা । ३३। मधः किरमानकीः ठळ भूर्विकः श्रेष्ठा मुद्धरह्य ॥ ७२ ॥ শাঙা টক্র গদা পদাধরঃ প্রদায় উচ্যতে। ১৩। পদ্ম॰ কৌমোদ-কী চক্ত শঙ্খ ধতে ত্রিবিক্তমঃ া ১৪ া শহা চক্র গদা পন্ম বামনো বহুতে সদা ৷ ১৫ ৷ পদ্ম চক্রণ গদা• শধ্য• শ্রীধরো বহতে ভুজে ॥ ১৬॥ চক্র॰ পদা॰ গদা॰ শৃখ নরসিংহে। বিভর্ত্তি যঃ ৷ ১৭ । शबाः मूमर्भनः भाषाः शनाः शत्त জনार्फनः।।১৮।। অনিরুদ্ধ শ্চক্র गमा नद्य भग्न लमखुकः। ১৯। হ্বীকেশো গদাও চক্রও পদাও শ-্রাঞ্চ ধারষেৎ।। ২০।। পদ্মনাভো বহেৎ শশ্বংপদ্ম চক্রং গদা ওবা া২১। পদা চক্র গদা শগ্র श्रदेख मार्गामदः मना ॥ २२ ॥ শঙ্খ চক্র সরোজঞ্চ গদা বহতি যো হরিঃ ৷২৩ ৷ শঙাং কৌমো-

मकी नचा एक इटका विकर्षि बन्धा रक्षा बळा**क्ट ग्रेहरक (ख** या निक्नाशःकत क्रमाक्षाक्षा मध्माभूदार्य है। अञ्मूरमण्डर প্রোক্ত প্রতিমালকণ বর্ম। বিস্তরেণ ন শক্ষোতি বৃষ্ণাতি त्रिश विकाश । ইতি। स्मिता-निष्ठा श्दतः श्रीमदेवस्वताः शासः রাত্রিকাঃ। প্রাকট্যাদ্যিকালা-না শ্ৰীমূৰ্ত্তি বহু মন্বতে ৷ সে-वा। निक निटेक दाव मटेकः य ষে উমূর্ত্তবঃ। শালগ্রামাত্মকে करण नियरमा देनम विमारक ॥ विज्जा जनमगामा विजनी মধুরাক্ততিঃ। সেব্যা ধ্যানানুক-रेशव बीमृर्खिः क्रकटेमवरेजः ॥ **अन्याक विविधाः श्रीयमव्छा**-त्रापि मूर्खयः। श्रापूर्जावविशाव-গ্ৰে লেখ্যা স্তত্তদ্বিশেষতঃ ॥ নিত্যকর্মপ্রসঙ্গে ২ত্র মূর্ত্তি জন্ম প্রতিষ্ঠবোঃ। বিধি র্ম লৈখিতু ষোগ্যঃ স তু লেখিষ্যতে ২এ-ण्डः ।। ইতি **औ**रत्निভक्तिविनारम १४) विनामः ॥

প্রীযুক্তঃ / ত্রি লক্ষীবিশিষ্টঃ। শ্রী-শ্রীযুতঃ / মান্।। জীবৎপুরুষনা-মঃ পূর্বং দাতব্যোষণ।। श्रीत्रमः मून श्रीद्वर्षः। १**७ मान** निर्देशः।

वित्रक्शां की स्मावित्नका।
नात्रकाषान् इष्ठि छावा। इष्ठि
नाम ताकाषारम्य श्रीकाः।
वित्रां श्रीकाशाः। व्रष्ठि श्रीकाशाः।
क्रितां श्रीकाशाः। व्रष्ठि श्रीकाशाः।
क्रितां त्रां श्रीकाशाः।
क्रितां त्रां श्रीकाशाः।
वित्रां त्रां श्रीकाशाः।
वित्रां त्रां श्रीकालकाः।
क्रितां त्रां श्रीकालकाः।
क्रितां त्रां श्रीकालकाः।
क्रितां त्रां श्रीकालकाः।
क्रितां त्रां त्रितां त्रस्तिः।
क्रितां त्रां त्रस्तिः।

শ্রীরামঃ পু॰ রাষচন্দ্রঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শ্রীলঃ ত্রি লক্ষীবান্। ইত্যমরঃ
।। শোভাযুক্তশ্চ ।।

শ্রীলতা স্ত্রী মহাজ্যোতিয়তী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শ্রীবৎসঃ পুণ বিষ্ণুঃ।। বিষণুচি
রুবিশেষঃ। সতু বক্ষস্থ্নের্বর্ণ

দক্ষিণাবর্ত্তলোমাবলী।। অর্থতাংশ্বজঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

সুরুসাভেদঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

শ্ৰীবৎসকী বৃ হৃদ্ধক্ৰাবৰ্ত্তহয়ঃ। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ।। প্রীবৎসভৃৎ পু• বিক্ষু । ইতি হেমচন্দ্রঃ ।।

विषयमणाञ्चनः भू॰ विष्
ः । श्रीविष्टा नाञ्चनः । हिन्
ः स्मा श्रीविष्ट्रमणाञ्चनः । वक्तमानना यहापूक्षमणाञ्चनः । वक्तमानना यहापूक्षमणाञ्चनः । वक्तमाना यहापूक्षमणाञ्चनः । विष्या हिल मविष्याः कि खिल्या हिल्ममानाः । हेल्यमानिकायाः अवलः ।।
श्रीविष्याकः भू॰ विक्रः। हेलि
हलायुः ।।

শ্রীবরাহঃ পু॰ বিষ্ণুঃ। ইতি ত্রি-কাগুশেষঃ।।

্রীবলী স্ত্রী কণ্টকবৃদ্ধতেশং।
তৎপর্য্যবং। শিববলী ২ কণ্ট বল্লী ৩ শীবলী ৪ অন্ত্রা ৫ কটু কলা ৬ দুরারোহা ৭। অস্যা গুণাং। কটুছং। অন্ত্রছং। বাত শোফ ককাপহত্বক।। তৎ কলং তৈল্ললেপন্ন মত্যন্ত্রপন্তরহা। ব্রুণ ইতি রাজনির্বন্তঃ।।

শ্রীবাটী স্ত্রী নাগবদ্গীভেদঃ। ইতি রাজনির্বক্টঃ।

শ্রীরারকঃ পুণ সিতাবরশাকঃ। ইতি রাজনির্যক্টঃ।।

শ্রীবাসঃ পু॰ সরলবৃক্রসঃ। টা-

तिन है जि जाया। जैंद नर्गायः
। भाषमः ६ वृक्ष्मभः ७ श्रीत्यकः
८ मत्रन प्रतः ६ । हे जामतः ॥
टेजन भी ७ श्रीतिकः १। है जि
कि तायः ॥ श्रीतिकः १। है जि
कि तायः ॥ श्रीतिकः १। है जि
कि तायः मतन १ प्रतः क्रम्मू क्र श्री भाषा स्वाप्तः । मान्यः
भी मत्रमान मृता मथः॥ मार्वः
१ भी भत्रमान मी तत्कामा ज्ञतः
नामनाः। हे जि ताक्ष्त सक्ष्याः॥
भाषाः। विकृः। हे जि त्यमिनी॥
भाषाः। हि कृः। हे जि त्यमिनी॥
भिवः। हे कि मक्त प्रांतनी॥
विकाः भे मत्रस्व प्रतः। हे जान

শ্রীবাসাং^ন পু॰ সরলজবং। ইত্য-মরটীকা।।

শ্রীবিদ্যা ত্রী মহাবিদ্যাবিশেষঃ।
সাতৃ ত্রিশ্বস্দরী। তস্যাঃ
ষট্ত্রিশদ্ভেদাঃ গ্রন্থ বাহল্যভিষা ন লিখিতাঃ। অথ শ্রীবিদ্যা। তত্র মেরুঃ। জ্ঞানার্নবে।
ভূমি শচ্জুঃ শিবো মাষা শক্তিঃ
ক্রুপাধ্যাদনৌ। অর্জচন্দ্রশ্চ বিদুশ্চ নবার্গো মেরু রুচ্যতে।।
মহাত্রিপুরস্দর্যা মন্তা মেরু
সমুদ্ভবাঃ। সকলা ভূবনেশানী
কামেশী বীজমুক্তুতং। অনেন

जकना विष्णाः कथवानि वद्रान-নে।। শক্তান্ত ন্তৃৰ্য্যবৰ্ণো ২ৰণ कलगरधा मूलाहरन । वाश्ववः পঞ্বৰ্ণাঢ্য কামরাজ মথোচ্য-তে।। मामनः निवन्साणः नि-वाखः भीनत्वाहत्न। कामताब মিদ ভডে বড্বৰ্ণ সৰ্মোহনু• ।। শক্তিবীজ বরারোহে চক্রা-দ্য পৰ্মোছন । এতা মুপাস্য-(मरविंग कामः मर्वाक्रमुम्बद्धः ॥ কামরাজে৷ ভবেদেবি বিদ্যেষ ব্ৰন্দৰপিণী। অস্যাৰ্থঃ। শক্তি-রেকারঃ তুর্য্য ইকারঃ তেন ক-কার একার ঈকার লকার মহা-মায়। বাগ্ডবকুট । শিবো **হকা**-রঃ চন্দ্রঃ সকারঃ তেন হকার সকার লকার মহামাৰা ইতি কামরাজ কৃটে। চন্দ্রঃ সকারঃ তেন সকার ককার লকার ম-হামায়া ইতি শক্তি কৃটণ। তেন ত্রিভিঃ কৃটেঃ কামরাজবিদ্যে-यः॥ # ॥ जनाः शानः यथा। বালাৰ্ক মণ্ডলাভাসাণ চতুৰাছণ ত্রিলোচনাণ পাশাস্থ শরাণ শ্চাপণ ধারষম্ভীণ শিবাণ আবে ৷৷ এবং ধ্যাত্বা মা**নস পূজাদিক**ং স্ব্যাৎ। ইতি তম্ত্রদার: ॥

श्रीवृक्तः पूर अश्रथवृक्तः। देखि

रह्महस्तः ॥ विख्ववृक्तः। स्था ।

हेरव मामानित्व शर्क नवमा।

मार्जरगणवः। श्रीवृत्क वाध
यामि घार गावर शृकार करता
माहर ॥ देखि विधानिव्युष्ठ
श्रीमूर्गावाधनमञ्जः॥

শ্রীবৃক্ষকঃ পু॰ অশ্বস্যহদাবর্তঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

প্রীবেন্টঃ পু॰ সরলবৃক্ষস্য নির্যাসঃ । ७५ १ व्यापायः । श्रीत्राकः वृकः ধূপশ্চ চিতাগদ্ধো রসাযকঃ ! শ্রীবাসঃ শ্রীরসো বেফৌ লম্বী-विकेख विकेकः॥ विकेमात्रा त्रगादवर्षः कीत्रगीर्यः मूध्यकः १ धृशाक खिलशर्नक मत्रेलाटका-পি ষোডশ।। তদ্গুণাঃ। শ্রীবে-ষ্টঃ কটু তিক্তশ্চ ক্ষায়ঃ শ্লেম পিত্তজিৎ। ষোনিদোৰ রুজা-कीर्व जगन्नामान दिनायन् ॥ देखि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ 🛊॥ অপি চ। শ্রীবাসঃ সরলঃ শ্রাবঃ শ্রীবেফৌ বৃক্ষধূপকঃ। শ্রীবাসো মধুর স্তি-कः निष्काक छ्वतः मतः ।र পিত্তলা বাত মূর্জাকি স্বররোগ ককাপহ:। রক্ষো ২শ্রী স্বেদ দৌর্গন্ধ্য মূকা কণ্ডু ত্রণ প্রণুৎ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ । শ্রীশঃ পুণ বিষ্ণুঃ । শ্রীরামঃ । ইতি শব্দরত্বাবলী ।। শ্রীসক্তণ ক্লী লবলং । ইত্যমরঃ ।। শ্রীসহোদরঃ পুণ চন্দ্রঃ । ইতি কেচিৎ ।।

শীহস্তিনী দ্রী বৃক্ষবিশেষঃ।
হাতিশুঁড়া ইতি ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। ভূরুণ্ডী ২ হিত্তামরঃ
যা নাগদস্তী ৩। ইতি জটাধরঃ।।
শ্রুণ গড়ো। ইতি কবিকল্পদ্রুমঃ।।
শ্রুবতি। রেফ রহিতোপ্যয় মিতি
কৈচিৎ। শ্বতি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শ্রুণ ন গতো ৷ শ্রুণ । ইতি
কবিকল্প দেশ ৷ ন শৃণোতি ৷
রক্ষাণসীতি পুরাপি সংশৃণুমহে
৷ ইতি মুরারো ব্যতীহারাদাত্মনেপদ ৷ সংশৃণুর ম্যাখ্যাত ৷
ইতি গণকতানিত্যত্বাৎ ৷ আ
খ্যাত শব্দ যা ক্রিয়াবিশেষণত
যা হকর্মকত্বে সমো গম্ছেত্যাদিনা ম বা ৷ ইতি দুর্গাদাসঃ ৷৷
শ্রুণাক্ষা প্রুণ বিকল্পত্রক্ষঃ ৷ ইতি
রত্নমালা ৷৷
শ্রুমিকা স্ত্রী স্ক্রিকাক্ষারঃ ৷
ইতি রত্নমালা ৷৷

শ্রুত ক্রী শাস্ত্রণ। ইত্যমরঃ।। শ্রুবগুগোচরঃ। ইতি শব্দরত্না-বলী।।

खँठः कि व्यवशृष्टः। ইতামরः॥ वाकर्निडः। देखि (मिनी।। ঞ্চকীর্ভিঃ স্ত্রী জনকভাতৃদশ-্রপ্রজরাজকন্যা। সাশতুম্বপত্নী। ষধা। শত্রু মঞাপি ধর্মাত্মা অত্র-বীন্মিথিলেশ্বরঃ। শ্রুতকীর্ত্তে র্ম-হাবাহো পাণি গৃহীয় পাণিনা ॥ ইতি বাদ্মীকীযে রামাযণে বা লকাণ্ডে ৭৩ সর্গঃ।। অপিচ। এব ভবতু ভত্ত তে সশধ্জসু-তে ইমে। পত্নেগ্র ভজেতাণ সহি-ভৌশব্র ভরতাবুভৌ ৷৷ ইতি **एटेंबर १२ मर्गः ॥ (मर्वरक्) भूः॥** কীর্তিযুক্তে ত্রি। ইতি কেচিৎ।। क्षा अवस्थि। इंडि र्माञ्जः॥

শ্রুতবোধঃ পু॰ কালীদাসক্তত
• ছন্দোগ্রন্থবিশেষঃ। যথা। ছন্দ
সা॰ লক্ষণ যেন শ্রুতসাত্রেণ

বুধাতে। তদহু কথ্যিয়ানি

শুতবোধ মবিস্তরণ।। ইতি ত্র
দৃগ্রন্থস্যাদ্যশ্লোকঃ।।

শ্রুতাদিঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশে

।। যথা। সংহিতা ঋষুজ্যু সামাণ সহিতা তৈঃ প্রভাবিভিঃ। সা-মান্যাবৈ ক্তান্দেব দৃশ্যতে বাপরে বিহ।। ইতি মাৎস্যে ১২০ অধ্যায়ঃ।।

শ্রুত শ্রের বিশ্ব শ্রুত শ্রুত শ্রুত শ্রুত হারাবলী।।

শ্রুত শ্রেণী স্থ্রী দেবস্থী। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।

खेळामान की बक्तरामः। देखि हात्रावनी ॥

শ্রুতাধ্যয়নসম্পন্ধ তি ধর্মশান্ত-তঃ। যথা যাজ্ঞবন্ধ্যঃ। শ্রুতা-ধ্যয়ন সম্পন্ধাঃ স্পলীনাঃ সত্য-বাদিনঃ। রাজ্ঞা সভাসদঃ কা-ব্যাঃ শত্রো মিত্রে চ বে সমাঃ।। ইতি ব্যবহারতত্ত্বং।।

শতামিতঃ ত্রি শাস্ত্রজ্ঞঃ । যথা
। অভূমৃপো বিবৃধস্থঃ পরস্তপঃ
শ্রুতামিতো দশরথ ইত্যুদাক্ত তঃ ৷ গুণৈ র্বরং ভূবনহিত্ত্বলোল ন যং সনাতনঃ প্রিভর মুপাগমৎ
স্ববং ৷৷ ইতি ভটিঃ ৷৷

শ্রুতার্থঃ পু॰ শান্ধবোধবিষ্ধী-ভূতার্থঃ। শ্রুবণমাত্রবোধ্যে। হর্থঃ। যথা। শ্রুতার্থস্য পরি-ভ্যাগাদশ্রুতার্থস্য কল্পনাৎ। প্রাপ্তস্য বাধাদিত্যেব পরিস-খ্যা ত্রিদোষিকা।। ইতি প্রাব-শ্চিত্ততত্ত্ব ।।

শ্রুতাযুঃ পু• সুর্ব্যবংশীষরাজ-বিশেষঃ ৷ স তু জশস্য চতুর্দ্দশ-পুরুষঃ। যথা। নাভাগস্যায়-বীষো ২ভূৎসিশ্বুদ্বীপ স্ততো ২-ভবৎ। ততঃ শ্রুতাযুঃ পুলো ২ভূৎ ঋতুপাল স্ততো ২ভবৎ।। ইতি মাৎস্যে ১৩ অধ্যায়ঃ।। ঞ্জুতিঃ স্ত্রী বেদং।। কর্ণঃ। ইত্য-মর:।। গর্ভস্থস্য পঞ্চমাসে: শ্রু-তি র্ভরতি। ইতি সুখবোধঃ॥ শ্রু-তীব্দিযগ্ৰাহঃ শব্দঃ শব্দদাদিঃ । यथा। খ্রাণস্য গোচরো গন্ধো গন্ধত্বাদি রপি স্মৃতঃ। তথা র-সো রসজ্ঞায়া স্তথা শব্দোপি চ ঞতেঃ।। ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ ॥ 🛊 ॥ कर्नमा खंडाखंडनकन মাহ। রক্তার পরুষ স্মঞ্চ কর্ণাঃ সুঃ পাপমৃত্যবঃ। নির্মাণসৈ শ্চিপিটে র্ভোগাঃ রূপণা হুম্ব-कर्नकाः ॥ भ•त्रकर्नाम् त्राजा-নো রোমকর্ণাঃ শতাযুষঃ। বৃ-**इ** ६ क्री क त्रा कादना धनिनः পরিকীর্ত্তিতাঃ ৷৷ ইতি গারুডে ৬৬ অধ্যায়ঃ॥ 🟶॥ শ্রোত্রকর্ম

ग वार्डा। ইতি यिक्नी ॥ अन्ना-नक्ष्य । ३७ भक्तत्रप्रावणी ॥ यज्जामगद्गिका। इंडि एम-চন্দ্রঃ॥ শোরৎ ইতি ভাষা। সা চ দাবি॰শতি প্রকারা যথা। না-की ठालनिका तमा ठ मूम्थी ठिखा বিচিত্রা ঘনা মাত্রী সরসামৃতা मध्कती रेमजी शिवा माधवी। वाना भार्त्रवी कना कनत्रवा माना विभाना ज्या মাত্রেতি শ্রুত্তযঃ পুরাণকবিভি দাবিংশ-তিঃ কীর্ত্তিতাঃ।। নান্দী বিশালা मृगूथी विठिवा मखदः मना। यः ড্জে। মতো মুনীন্দ্রেণ ভরতেন **मिर्दिन है। हिंदा यना हाननि-**কা নিবেশাৎ সংজাযতে ২সৌ ঋষভ স্তথৈব। স্বরোপি মালা সরসা নিবেশাৎ গান্ধারনামা পৃথিতঃ পৃথিব্যা ।। মাতন্সী মাধ-বী মৈত্রী শিবাজাত স্ত পঞ্চমঃ। कला कलव्रवा वाला भार्त्रव्याञ्च পঞ্মঃ ৷৷ জাষামৃতা রসানাম্ভ সংযোগাল্জৈবতস্বরঃ। মাত্রা মধু-করী যোগাৎ নিষাদঃ সংপ্রজা-যতে।। শ্রুতিস্থানে স্বরান্ বক্তু॰ নাল বক্ষাপি তত্ত্বতঃ। জলে চ मुख्ता॰ यार्गा मीनाना॰ नाम

लकारण।। भगतन शकिनो॰ सर्दे তদ্ব স্বরগতা শ্রুতিঃ। শ্রুতি নাদৰশা প্ৰোক্তা তথাত্যা চ ক-লা মতা।। যথা তৈলগতং সৰ্গি র্যথা কান্তগতো ২নলঃ। জ্ঞায-তে ২ত্রোপদেশেন যথা স্বরগ-তা শ্ৰুতিঃ ।। বীণাদেস্ত শ্ৰুতি-জ্ঞান-স্বরজ্ঞানন্ত বংশজ্ । অ-শ্বিনৌ বসবো রুডাঃ সহৈণা-**८क्षत शुक्रवः ॥ श्रममन्त्र र्र**तः র্নাদ মতো দ্বাবি॰শতিঃ শ্রুতিঃ। ইতি সঙ্গীতদায়োদরঃ ॥ 🕸 ॥ অন্যচ্চ। তীব্ৰা সমুদ্বতী মন্দা ছন্দোবত্যস্ত ষড্জগাঃ ৷ দযাব-তী রঞ্জনী চ রতিকা ঋযভে স্থি-তাঃ॥ রৌডী ক্রোধা চ গান্ধারে বজ্রিকাথ প্রসারিণী। প্রীতিশ্চ মার্জনীত্যেতাঃ শ্রুত্যো মধ্যযা-মাঞ্রিতাঃ।। ক্ষিতি রক্তা চ সন্দী-পীন্যালাপী চৈব পঞ্চে। মন্দ-স্থী রোহিণী রম্যেত্যেতা ধৈব-তসংশ্ৰষাঃ।। উগ্ৰাচ ক্ষোভি-ণীতি ছে নিষাদে বসতঃ শ্রুতী। ইতি সঙ্গীতরত্মাকরঃ।। **শ্রতিকটঃ** পু॰ প্রাঞ্জোহঃ॥

অহিঃ ৷৷ পাপশোধন ৷ ইতি

त्यिषिनी ॥

শ্রুতিকটুঃ পু• কঠোরশব্দঃ ।। जनकातमा (नायविद्यायः। यथा । শ্রুতিকটু শ্যুতসংস্কৃতি রক্ত-মোক্ত্যনুচিতা কবিযু**ক্ট বিস**ন্ধি-काः। উদাহরণ। বাচা মধুরষা তবি শিতাপাক্তরঙ্গা। মনা-খদন মুজোলা কার্তার্থাণ সরু মাদৃশঃ॥ ইতি কাব্যচন্দ্রিকা॥ শ্রুতিকথিতঃ ত্রি শ্রুত্যুক্তঃ। বে-দোক্তঃ। ইতি লোকপ্রসিদ্ধঃ॥ শ্রুভিজীবিকা স্ত্রী ধর্মাশাস্ত্র• । যথা। স্মৃতি ধর্মাদ হিতা চ দ -হিতা শ্রুতিজীবিকা। শলরত্নাবলী।। বেদজীবনে।-शायम्ह॥

শ্রুতিতৎপরঃ ত্রি সকর্ণঃ। ইতি জটাধরঃ ॥ বেদাভ্যাসরতশ্চ॥ শ্রুতিধরঃ ত্রি শ্রুতিমাত্রধারকঃ । শ্রবণসাত্রেণাভ্যা**সকর্ত্তা। ভ**-(में।यथ° यथा। इति क्रवाह। इ-खिकर्नमा देव मृत• भृशीषा চূर्न-यक्षत । मर्वतिश विनिम्कि চূর্ণ॰ পলশত॰ শিব।। সক্ষীর॰ ভক্ষিত স্ব্যাৎ সপ্তাহেন বৃষ-ধজ। নর প্রতিধর শূর মৃ-গেন্দ্রগতি বিক্রমণ।। পদ্মগৌর প্রতীকাশণ যুক্তণ দশশতাযুষা।

বোডশানাফ্রভি॰ বিপ্র সভত দুগ্ধভোজিত ।। মধু সপিঃ স-गायुक्क कक्ष गायुक्त जल्द । তজ্জগ্ধ মধুনা সার্গ্ধ দশবর্ঘ-সহসূিণ ।। সর্য্যান্বর শ্রুতিধরণ थ्रमाजनवल्ल । ইতি গারু-ডে ১৯১ অধ্যাষঃ।।

ঞ্ছতিবজ্জিতঃ ত্রি বধিরঃ। ইতি किरोधतः॥ त्वलत्रिञ्च ॥ শ্রুতিবেধঃ পু॰ কর্ণবেধঃ। তদ্য বিহিতকালো যথা দীপিকাষা• । নো জন্মেন্দু ভ মাস সূর্য্য রবি-জ স্বাজাহ সুপ্তাচ্যুতে শস্তের্কে नयुयुवा विष्कृ मृদুভে স্বাত্যুত্ত-রাদিত্যভে। সৌবৈয় জ্র্যায ত্রি-কোণ কণ্টকগতৈঃ পাপৈ স্ত্রি লাভারিগৈ রোজোব্দে শ্রুতি-বেধ ইজ্য দিতভে লগ্নে তু কা-লে শুভে॥ ইতি জ্যোতিস্তব্ত্ত্ ॥ অন্যচ্চ। তত্র তিথয় রিক্তা-ভিন্নাঃ প্রশস্তাঃ । বারাঃ বৃহ-ম্পতি বুধ শুক্রাণাণ প্রশস্তাঃ। নক্ষত্রাণি অশ্বিনী রেবতী হস্তা চিত্রা পুনর্বসু ধনিষ্ঠা মৃগশিরঃ ঠিপুষ্যঃ প্রবণানুরাধা উত্তরফল্প-ণী উত্তরাষাতা উত্তরভাত্রপদ **या**जी। नगानि वृष जूना धन्

মীন সংজ্ঞকানি। অযুগাবর্ষে। জন্মনাস চৈত্র পৌবাগ্রহাষণ ভিন্ন মাসাঃ প্রশস্তাঃ। শুক্লপ-কে চন্দ্রতারাদিশুদ্ধৌ হরিশ্য-ন ভিন্নকালে কালশুদ্ধৌ শ্ৰুতি-বেধঃ কাৰ্য্যঃ। ইতি জ্যোতিষ্ণ।। শ্রুতিক্ষোটা স্ত্রী কর্ণক্ষোটা-লতা। ইতি রাজনির্ধনীঃ॥ শ্রুবঃ পু॰ ষাগঃ। ইতি জটাধরঃ ॥ সুবে ক্লী। ইতি কেচিৎ ॥ শ্রুবা। ইতি রাজ-निर्घणः॥ ध्यवावृक्षः भूः विकक्ष वृक्षः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ শ্রেটী স্ত্রী অঙ্কবিশেষঃ হ তস্যা-দ্যসূত্র• যথা। অথ শ্রেটীব্যব-হারে করণসূত্র । সৈকপদম পদার্দ্ধ মথৈকাদ্যক্ষযুতিঃ কি-ল সংকলিতাখ্যা। সা দিষুতেন পদেন বিনিদ্বী স্যাৎ ত্রিহাতা किन म॰कनिटेजका॰।। উদাহর-**৭**°। একাদীনা॰ নবাস্তানা॰ পৃ-থক্ সংকলিতানি মে। তেষাণ সংকলিতৈক্যঞ্চ প্রচক্ষগণক জ্র-ত ।। नामा । ।। २। ७। ८। ৫। ७।१।৮। २। नकारना

তেষা প্ৰকলিতানি ৷ ১ ৷ ৩ ৷

७। ३०। ३७। २১। २৮। ७७। ৪৫। অথ তেষা পণকলিতৈ-क्यानि। ३। ४। २०। २०। ७७। ৫৬। ৮৪। ১২০। ১৬৫॥ তস্য শেষসূত্র ষথা ি করণসূত্র • সার্দ্ধ মার্য্যা। পাদাক্ষর নিতে शक्ट छन दर्भ कलक रय। बि-শুণে সমবৃক্তানা সংখ্যা তদ্বৰ্গো वर्ग वर्ग=छ। य य भारती স্যাতা অর্জসমানাঞ বিষমা-**गा॰। উদাহরণ॰। সমানা মর্দ্ध-**তুল্যানা বিষমাণা পৃথক্ পৃ-थक्। वृद्धानाः वन य मः था মনুফুপ্ছন্দসা কত।। ন্যাসঃ উত্তরো দ্বি ২ গুণঃ গচ্ছঃ ৮ लक्षा नमवृद्धानाः मः था २६७ । তথাৰ্দ্ধসমানঞ্চ ৬৫২৮০ বিষ-মাণাঞ্চ ৪২৯৪৯০১৭৬০। ইতি লীলাবতী ৷৷

শেবিঃ পু স্ত্রী নিশ্ছিত্রপণক্তিঃ
তেৎপর্য্যায়ঃ। পক্তিঃ ২ শ্রেণী
ত বিঞ্জোলী ৪ বীথী ৫ আলিঃ
ত পালিঃ ৭ আবলিঃ ৮ আলী
ম পালী ১০ আবলী ১১ বীথিঃ
১২ বীথিকা ১৩ রাজী ১৪ রাজিঃ
১৫ রেখা ১৬ লেখা ১৭। ইতি
শব্দরত্বাবলী ৷৷ সমানশিলি

৬ পালিঃ ৭ আবলিঃ ৮ আলী
৯ পালী ১০ আবলী ১১ বীথিঃ
১২ বীথিকা ১৩ রাজী ১৪ রাজিঃ
১৫ রেখা ১৬ লেখা ১৭। ইতি
শব্দরত্নাবলী ।। সমানশিল্পি
সংহতিঃ। কম্পানি ইতি ইক্বরেজীব ভাষা। ইতি মেদিনী ।।
সেকপাত্রণ। ইতি বিশ্বঃ ।।

শব্দরতঃ প্রথা সম্পাদ্দিশী বাক্ষি

শ্রেণিকঃ পু॰ মগধদেশীযরাজ-বিশেষঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

শেণী পু॰ ন্ত্রী শেণিঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী॥

শ্রেষঃ ক্লী ধর্মাণ। মুক্তিঃ। ইত্য-নরঃ।। শুভণ।। অতিপ্রশক্তে ত্রি। ইতি মেদিনী।।

শ্রেষদী স্ত্রী হরীতকী।। পাঠা।। করিপিগ্ললী। ইত্যমরঃ।। রামা । ইতি বিশ্বঃ।। শুভযুক্তা চা।

শ্রেষাংশঃ পুং বৃত্তার্ছিশেষঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

শ্রেষান্তি শ্রেষ্ঠঃ। ইত্যমরঃ॥ শুভ্যক্তশ্চ।।

শ্রেষ্ঠ ক্লী গোদুগ্ধণ ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ।।

শ্রেষ্ঠঃ পু॰ স্বরেঃ। নৃপঃ।। দ্বিজঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।। বিষ্ঃ। ইতি তদ্য সহসুনাম- স্তোত্রণ ॥

শেষ্ঠঃ ত্রি প্রশস্তঃ। বরঃ। তৎ
পর্যায়ঃ। শ্রেয়ান্থ পুদ্ধলঃ ৩
সন্তমঃ ৪ অতিশোভনঃ ৫ ।
ইত্যমরঃ।। মুখ্যঃ ৬ বরেণাঃ ৭
প্রমুখঃ ৮ অগ্রঃ ৯ অগ্রহরঃ ১০
উত্তমঃ ১১ প্রগ্রহঃ ১২ অনুত্তমঃ
১৩ অগ্রীয়ঃ ১৪ প্রবেকঃ ১৫
অগ্রাঃ ১৬ অগ্রিয়ঃ ১৭। ইতি
শব্দরত্বাবলী ।। অনবরঃ ১৮
অগ্রিমঃ ১৯ প্রাগ্রঃ ২০ প্রাগ্রহরঃ ২১ প্রবর্হঃ ২২ । ইতি জটাধরঃ।। বৃদ্ধঃ।। জ্যেষ্ঠঃ। ইতি
শব্দরত্বাবলী।।

শ্রেষ্ঠকাষ্ঠঃ পু॰ শাকবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শ্রেষ্ঠা দ্রী স্থলপদ্মিনী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥ মেদ। । ইতি কেচিৎ ॥ উত্তমানারী চ ॥

শ্রেষ্ঠায়॰ ক্লী বৃক্ষায়॰। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

শ্রেষ্ঠাশ্রমঃ পু॰ গৃহস্থাশ্রমঃ। আশ্রমত্রযাণা॰ পালকদ্বাৎ।। শ্রেষ্ঠা^ন পু॰ সলোত্তমশিল্পী। যথা । সলিকস্ত সলী শ্রেষ্ঠী সল-

শ্রেষ্ঠিনি শিল্পনা । ইতি জটা-ধরঃ।। শোণিফ

শ্ৰেত

শৈ স্বেদে। ইতি কবিকল্পক্রমঃ।। প্রায়তি রৌজালোকঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শৈ ম পচনে। ইতি কবিকল দ্রুগানাসং।।

অপ্যতি। ইতি

দুর্গাদাসং।।

শ্রোণ ঋ সংঘাতে। ইতিকবি-কলজনঃ । ঋ অশুশ্রোণৎ। সংঘাতো রাশীকরণ । ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শ্রোণঃ পুণ পঙ্গুঃ। ইত্যমরঃ।। শ্রোণা ন্ত্রী শ্রবণানক্ষত্রণা কাঞ্জি-কণা। পক্টে ব্রি। ইতি কেচিৎ।।

শোণিঃ স্ত্রী কটিং। ইত্যমরং॥
সাতু গর্ৱস্থস্য মাসদ্বেদ ভবতি। ইতি সুখবোধং॥ পদ্বাঃ।
ইতি শব্দরত্বাবলী॥

শোণিফল॰ ক্লী কটিঃ 1 ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

শোণিফলক ক্লী কটিপার্শ্বঃ।
তৎপর্য্যায়ঃ। কটঃ ২। ইত্যমরঃ।। ফলক চর্মা তদাকারঘাৎ শোণিঃ ফলক মিব শোন ণিফলক । কট্যতে আবিষতে কটঃ কটে বর্ষা বরণযোঃ অল্ কটিঃ। ইতি কেচিৎ। ইতি ভরতঃ।। শোণিবিম্ব ক্লী কটিসূত্র । ইতি ধনপ্রমঃ ।।

শোণিসূত্র ক্লী থদ্ধবন্ধনসূত্র ।
পরতলা ইতি হিন্দীভাষা ॥
কটিবন্ধনসূত্র । ঘুন্শী ইতি
ভাষা । ইতি কেচিৎ ॥

্রাণী স্ত্রী কটিঃ।। পন্থাঃ। ইতি ভরত দ্বিলপকোষঃ।।

প্রোতঃ ক্লী কর্ণঃ। নদীবেগঃ ।
ইতি জটাধরঃ।। ইন্দ্রিবং। যথা
স্থাক নকং করণং শ্রোতঃ খং
বিষধী ব্রিষণ । ইতি হেমচক্রঃ।।
শ্রোতব্যং ত্রি শ্রবণীয়ং। যথা।
অধ্যেতব্যং ন চান্যেন ত্রাহ্মণং
ক্রিষণ বিনা। শ্রোতব্য মিহ
শ্রেণ নাধ্যেতব্যং কদাচন ।।
ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বং।।

শ্রোতা ত্রি শ্রবণকর্তা। যথা।
অপ্রিষন্য চপথ্যস্য বক্তা শ্রোতা চ দুর্লভঃ। ইতি হিতোপদেশঃ। পুরাণশ্রোত্ত্বে প্রমাণ
মাহ। পঠেদর্থ বুধ্যমানঃ প্রাব্যেকৈ নরোত্তমে। শ্রোতা তু
প্রাগ্রখো ভূষা শৃণুযাৎ ভক্তিতৎপরঃ।। ইতি পান্মেপাতালথণ্ডে ৭১ অধ্যায়ঃ।।

শ্রেত को কর্ণ। ইত্যমরঃ।।

শোত্তিযতা। ইতি ত্রিকাও শেষঃ।।

শ্রোত্তিয়ঃ পুং বেদাধ্যেতৃত্রান্ধণঃ । তৎপर्यगयः। ছान्ममः २। ইত্যমরঃ ৷৷ শ্রুষতে ধর্মাধর্মাব-নেন ইতি শ্রোত্রো বেদঃ ত্রাসু সিতিত্ৰঃ শোত্ৰণ বেতি অধীতে বা শ্রোত্রিয়ঃ ঢ ষেকাদিতি ইয়ঃ । ছন্দো ২ধীতে ইত্যর্থে ইবে ছন্দঃ শব্দস্য শ্রোত্রাদেশঃ। ইতি পরে। ছন্দো বেত্তি অধীতে বা ছান্দসঃ। ইতি পূৰ্বেণ ষ্ণঃ। ইতি ভরতঃ ।। ৠ।। তস্য লকণ যথা। জন্মনা বান্ধণো ভেষেঃ সংস্কা-রৈ ধিজ উচ্যতে। বিদ্যাভ্যা-সী ভবেদিপ্রঃ শ্রোত্রি**ষ** স্ত্রিভি রেব হি॥ ইতিপাদ্মে উত্তরখণ্ডে ১১৬ অধ্যায়ঃ ॥ মানবে মার্ক (क्ये भू त्रांट्य हो त्या व । । 🛊 ।। অপি চা একাং শাখাং সকলাং বা ষড্ভি রঙ্গৈ রধীত্য চ। যট্-কর্মা নিরতো বিপ্রঃ শ্রোত্রিখা नाम धर्माविष ॥ ইতি দানকম-लाक्तः॥

শোত্রিযতা স্ত্রী শোত্রিযধর্মঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। শ্রোত্রণ ২। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। শ্রেতি ক্লী গার্হপত্যাহবনীয়
দক্ষিণাগ্নয়ঃ। যথা। ত্রয়ো ষেগার্হপত্যাহবনীয় দক্ষিণাগ্নয়ঃ।
ইদ মগ্রিত্রিক শ্রেতি তেতাগ্নিহোত্র মিত্যপি।। ইতি জ্বটাধরঃ।।

শ্রৌতঃ ত্রি শ্রুতিবিহিতধর্মাদিঃ । यथा। धर्मारेख विहिर्ण धर्माः **ध्यो**ञः स्नारका विषा विरेकः। দানাগিহোত্রসম্বন্ধ নিজ্যা শ্রৌ-তস্য লক্ষণ ॥ স্মার্ক্তো বর্ণাশ্র-মাচারো ষমৈশ্চ নিষমৈ র্যুতঃ। পূৰ্বেভ্যো বেদ্যিত্বেহ শ্ৰৌত मश्चर्या १ बन्दा। साटा यः জুংষি সামানি বন্ধণোঞ্চানি সা শ্রুতিঃ। মন্বন্তরস্যাতীতস্য স্মৃ-দা তমানু রব্রবীৎ।। ততঃ স্মার্ত্তঃ স্মৃতো ধর্মো বর্ণাশ্রম বিভাগ भः। এব॰ বৈ দিবিধে। ধর্মঃ শিষ্টাচারঃ স উচ্যতে ৷৷ বিজ্ঞে-যঃ শ্রবণাৎ শ্রোতঃ স্মরণাৎ স্মার্ত্ত উচ্যতে ॥ ইজা বেদাত্ম-কঃ শ্রেতঃ স্মার্ত্তো বর্ণাশ্রমাদ্ম-কঃ।। ইতি মাৎদ্যে ১২০ অধ্যা-যঃ।। অপি চ। অধিকরণমালা-কুঝাধবাচার্য্যধৃত পরাশরভা-ষ্যে শাতাতপঃ। শ্রোত কর্ম

भिकू

স্বয় স্ব্যাদন্যোপি স্মার্ত্ত মাচ-রেং। অশক্তো গ্রোত মপ্যন্যঃ স্ব্যাদাচার মন্ততঃ।। ইতি তি-থ্যাদিতত্ত্বং ।।

শ্রোত্রণ ক্লী কর্ণঃ ৷ শ্রোত্রিযকর্ম তেৎপর্য্যায়ঃ ৷ শ্রোত্রিয়তা ২ । ইতি শব্দরত্বাবলী ৷৷ শ্রোত্র-কর্ম চ ৷৷

শ্রৌষট্ ব্য॰ দেবহবির্দান । ইত্যমরঃ ।। দেবহবির্দান ই-ত্যনেনায় মন্ত্রঃ সূচিতঃ । ইতি ভরত্মত ।।

শ্রাহ্ম ক্লী পদা। ইতিকেচিৎ।।

শ্লক ই ও সপো ইতিকবিকন্ধ।

দেখা। অন্ত্যুস্তৃতীযবর্ণযুক্তা।

দিং। ই শ্লক্ষাতে। ও শ্লন্ধতে।

সপো গতিং। ইতি দুর্গাদাসং।।

শ্লগ ই বজে। ইতি কবিকল্প-ক্রমঃ।। অস্তাস্থত্তীযবর্ণযুক্ত তালব্যাদিঃ। ই শ্লম্প্যতে। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শ্লথ ৎক' দৌৰ্বল্যে। ইতিকবি-কল্পদ্ৰনঃ ।। অন্ত্যস্থত্তীযযু-ক্তাদিঃ। ক শ্লথষতি। ইতি দুৰ্গাদাসঃ ।। '

শ্লথঃ ত্রি শিথিলঃ। যথা। শি-থিলঃ প্রশ্লথঃ শ্লথঃ। ইতি জটা- थतः॥ मूर्वनः। ইতি अथशाष-थनर्শनाव ॥

শক্ষণ তি অল। ইত্যমরঃ ॥

মনোহরং। ইত্যুণাদিকোফঃ ॥

শক্ষকং লী পুণকলং। ইতিরাজনির্ঘণীঃ॥ মনোহরঞ্যা

শ্লক্ষপৃক্ পুণ অশান্তকবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। স্ন্যুবন্ধলশ্চ।। শ্লাথ ঋ ব্যাপ্তো। ইতি কবি-কল্পক্রমঃ।। অন্তান্ত তৃতীযযুক্তঃ । ঋ অশ্লাখৎ। ইতি দুর্গা-দাসঃ।।

শ্লাষ ঋ ও কথনে। ইতি কবিকন্ধজনঃ।। অত্যস্তত্তীযযুক্ত
তালব্যাদিঃ। কথন প্রশংসা।
ঋ অশ্লাঘৎ। ও শ্লাঘতে গুণিন
গুণী। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শ্লাঘা স্ত্রী প্রশংসা।। পরিচর্বনা
। অভিলাসঃ। ইতি মেদিনী।।
শাষ্যঃ ত্রি শ্লাঘনীয়ঃ। প্রশংস্যঃ
। যথা। গৌরবিতা স্ত্রাচার্যানিশ্রোঃ শ্লাঘ্যা স্তর্ভবন্মুখাঃ।
ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।

প্লিকু ক্লী জ্যোতিঃশাস্ত্র•। ইত্যু-ণাদিকোষঃ।।

ল্লিকুঃ পু॰ ভ্তাঃ। ইতি সিদ্ধান্ত-কৌমুদ্যামুণাদিবৃত্তিঃ।। বিজাঃ। ইত্যুণাদিকোষঃ ।।

শ্লিষ উ দাহে। ইতি কবিকল্প
দ্রুনঃ ।। অন্ত্যুস্তত্তীযযুক্তঃ ।
উ শ্লেষিত্বা শ্লিফুা। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

ন্নিষ ঔষ ৯ ঞি লেষে। ইতি
কবিকল্পদ্রমা। অন্তান্থত্তীযযুক্তাদিঃ। ঔলেফা। য ন্নিষ্যতি
। ৯ অন্নিষ্ৎ। আলিঙ্গনে তু
অন্নিক্ষৎ। ঞি ন্নিফৌ ২ন্তি।
নেষ আলিঙ্গনা। তচ্চ বাহুত্যা
নেব কঢ়া। ন্নিষ্যতি কামপীতি
জযদেবঃ। প্রাপ্তাবপ্যয়ণ। ন্নিয্যতি বৃক্ষণ লতা। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শ্লিষ ক্ শ্লেষে। ইতি কবিকল্পক্রমণ । অন্তাঙ্গতৃতীষযুক্তঃ।
কল্লেষ্যতি। ইতি দুর্গাদাসঃ॥
শ্লিষা স্ত্রী আলিঙ্গনং। ইতি
ক্রিকাণ্ডশেষঃ॥

নিউঃ ত্রি শ্লেষযুক্তশব্দাদিঃ।
ভিন্নার্থ কৈককপান্বিতবাক্যণ।
তস্য লক্ষণ যথা। নিউ মিষ্ট
মবিষ্পান্ত মেককপান্বিতং বচঃ।
ইতি সরস্বতীকপাভরণণ।।
দ্বীপদং ক্রী স্ফীতপাদাদি। গোদ
ইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। পা-

प्रवाहित र १ विकास स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान प्रवाहित स्थान स्थान অথ শ্লীপদাধিকারঃ। তত্র শ্লী-शनगा विश्रक्षरे निमान गार्। পুৱাণোদক ভূষিষ্ঠাঃ সৰ্বৰ্ভুষু চ শীতলাঃ ৷ যে দেশা স্তেষু জায-স্তে শ্লীপদানি বিশেষতঃ ।। বি-শেষত ইতি বচনেনান্যত্রাপি শ্লীপদ° ভবতি ইতি বোধ্যতে ॥ 🗱 ॥ मायानाः वक्त याह्। যঃ সম্বরো বংক্ষণজো ভূশার্তিঃ শোথো নৃণা॰ পাদগতঃ ক্রমেণ। তৎ শ্লীপদ॰ স্যাৎ কর কর্ণ নেত্র শিক্ষান্ঠ নাসাস্বপি কেচিদাহঃ ॥ 🗱 ॥ তৎ ত্রিবিধণ। বাতিকণ পৈত্তিক॰ শ্লৈষ্মিকঞেতি। তে-ষা॰ লক্ষণ মাহ। বাতজ॰ রুক্ত ৰক্ষণ হি স্ফুটিতণ তীত্ৰবেদনণ। অনিমিত্তরুজ চাস্য বহুশো জ্বর এব চা। পিত্তজ্ পীত সঙ্কা-শংদাহ জ্বরযুত্ত ভূশং৷ শ্লৈমি-কন্তু ভবেৎ স্নিগ্ধ তথা পাণ্ডু গুৰু স্থিরণ।। ত্রীণ্যপ্যেতানি জা-नीया श्रीनमानि करकाष्ट्रवा । গুরুত্বঞ্চ মহত্বঞ্চ যন্মান্ন। স্তি বি-নাকফাৎ ॥ ৠ । অসাধ্য মাহ ৷ বল্মীক মিব সংজাত কণ্টকৈ রুপচীযতে। সর্বাত্মক মহত্ত্বস্থ

वर्क्जनीयः वित्नयण्यः ॥ यथ स्न-মলাহার বিহারজাতৈ জাঁত তথা ভূরিকফস্য পু॰সঃ। সাসা-ব মপ্যত্ৰ তু সৰ্বলিঙ্গণ সকণ্ডুকণ वालि विवर्क्कनीयः॥ 🛊 ॥ भी-পদস্য চিকিৎসা৷ লজ্ফালে-পন স্বেদ রেচনৈ রক্তমোক্ষণৈঃ ा थायः सामश्देत कृतेयः भी-शकः मगूशाहरत्रः ॥ ३॥ मि-স্বার্থ শোভাঞ্জন দেবদারু বি-শ্বৌষধৈ মূ ত্রষ্টেঙঃ প্রলিম্পেৎ 1 পूनर्वा नागत मर्यभागा क-ক্ষেন বা কাঞ্জিকমিশ্রিতেন ৷৷ ২ া। শ্লীপদ মিভি শেষঃ।। ধত্তুরৈ-त्रथ निर्श्वेषी वर्षाज् मिशु मर्य-পৈঃ। প্রলেপঃ শ্লীপদ হন্তি চি-রোখ মপি দারুণণাতা৷ অসাধ্য মপি যাত্যন্ত শ্লীপদ চিরকা-লজং। মূলেন সহচরাযা স্তাল-মিশ্রেণ লেপনাৎ ৷৷ তালস্য ফলরসো গ্রাহঃ ॥ ৪ ॥ সপ্তলা স্থূলপত্রাণাণ কল্কণ তপ্তেন বারি-ণা। সংসৃষ্ট লবণোপেত সেবি-ত• শ্লীপ দ॰ হরেৎ ।াটো শাখো-ট বন্ধলস্থাথ গোমূত্রেণ যুত্ত शिरवर। भीभमाना विनामाय েমদোদোষ নিবৃত্তধে॥ ७॥ র-

জনী গুড় সংযুক্তা গোমূত্রেণ लिटवद्यक्षः। पर्साथः भीनमः इ-खि मक्त अर्थः वित्मयवः ॥ १॥ र्क्षां वृ विकला हूर्न शिक्षना म-হ যোজিত। সক্ষেদ্রণ শ্লীপদণ লিছাৎ চিরোখণ শ্লীপদণ জ-(स्था ৮॥ भन्नईटेनिका॰ হরীতকী গোষুনা পিবতি । লীপদ বিবন্ধসুক্তো ভবতাসো দপ্তরাত্তেণ ।। গদ্ধর্বতৈল॰ এ-রওতৈল ৷ গোষুনা গোমূত্রেণ ॥ ३ ॥ इंडि भीन नाधिकां तः । ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ 🕸॥ তন্য কর্মবিপাকো যথা। গোতমো-পি ক্ষচিদ্বিশেষ মাহ। অনৃতবা-গুল্বণো মুহু মুহিঃ সংলগ্নবাক্-জলোদরো দারত্যাগী কূটদা-ক্ষী স্পীপদী। ইভি মিভাক্ষরা-सा॰ প্রাযশ্চিতাখ্যাযঃ।। কূট-সাক্ষ্যস্য সুরাপানসমত্বেনানু-. পাতকত্বাৎ তৎকৰ্মজন্য স্লীপ-দরোগযুক্তেন পরাকব্রত ক্ব ৰ্ত্তব্যং। ইতি মম্বাদিমতং॥ দ্বীপদপ্রতবং পু॰ আমুবৃক্ষঃ। ইতি শব্দমালা।। ষ্ট্রীপদাপহং পু॰ পুত্রজীববৃক্ষঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥

भीनः वि नशीरान्। रेषि শ্ৰীলশকটীকাষা স্বামী।। **ভো**ষঃ পু॰ স•যোগঃ। তৎপর্যাষঃ । मिक्तिः २। देखामद्रः ॥ मारुः ॥ जानिकनः। देखि भिषशापर्थ मर्गनाथ ॥ 🗱 ॥ मकालकात्रवि-(भरः। তमा लक्षनामि र्यथा। বাচ্যভেদেন ভিন্না যদ্যুগপদ্তা-যণ স্পূশঃ। শ্লিষ্যন্তি শব্দাঃ শ্লে-ষো ২সাবক্ষরাদিভি রম্ভধা ॥ অর্থভেদেন শব্দভেদ ইতি দ-শনে কাব্যমার্গে স্বরোন গণ্য-তে ইতি চ নযে বাচ্যভেদেন ভিন্না অপি শব্দা যদ্যুগপদুচ্চা-রণেন শ্লিষ্যস্তি ভিন্ন স্বৰূপ ম-পত্ৰতে সঞ্জেষঃ ৷৷ 🟶 ৷৷ স চ বৰ্ণ পদ লিঙ্গ ভাষা প্রকৃতি প্রত্যয বিভক্তি বচনানাণ ভেদাদঊধা । ক্রেণোদাহরণ । অলক্ষারঃ শঙ্কাকর নরকপাল পরিজনো বিশীৰ্ণাঙ্গো ভূঙ্গী বসু চ বৃষ এ কে। বহুবযাঃ। অবস্থেষ স্থা-ণো রপি ভবতি সর্বামরগুরো র্বিধৌ বক্তে মূর্দ্ধি স্থিতবতি বয়ু क भून त्रमी।। भृश्कार्छम्रत-পাত্রণ ভূষিত নিঃশেষ পরিজ-न॰ प्तर। विलम ९ करत्र गूग इन॰

मन्युणि मम मावत्याः महनः ॥ ভক্তিপ্রস্থ বিলোকন প্রণ্যিনী नीत्वाष्थ्रव न्यिक्ती शाना-লম্বনভা॰ সমাধিনিরতৈ নীতে হিতপ্রাপ্তযে। লাবল্যৈকমহা-নিধী রসিকতাণ লক্ষীদৃশো স্ত-মৃতী যুমাক সরুতা ভবার্ত্তি-শমন নেত্ৰে তনু ৰ্বা হয়েঃ ॥ এষ वर्व राज्याशायाति॥ यहान मूत्र সন্ধান্মেত মর্ব সমাসং গ্রাগমা হরণে। হর বহু সরণ ত চিত্ত মোহ মবসর উমে সহসা।। অয় সৰ্বাণি শাস্ত্ৰাণি হৃদি জ্ঞেষু চ ৰক্যতি। সামৰ্থ্যক্লদমিত্ৰাণাণ মি-बागाक न्थाज्ञकः ॥ तकनित्रम-ণমৌলেঃ পাদপদ্মাবলোককণ্-সমযপরাপ্তা পূর্বসম্পৎ সহসু । প্রথম নিবহ মধ্যে জাতু চিত্তপ্র-সাদাদহ মুচিতরুচিঃ স্যান্দিতা সা তথা মে।। সর্বস্বং হর সর্বস্য षः जवत्क्रमञ्स्थातः। नर्याभः কারসাম্মুখ্য মাধাসি তনুবর্ত্তন॰ ।। ভেদাভাবাৎ প্রকৃত্যাদে র্ভে-रमानि नवस्या ভবে ।। नवस्या-পীত্যপি ভিন্নক্রমঃ। উদাহরণ । ষো ২সক্তৎ পরগোত্রাণাণ পক্ষ-চ্ছেদক্ষণক্ষমঃ। শতকোটিদতা॰

বিভূদিবুধেন্দ্রঃ স রাজতে ৷৷ অত্র প্রকরণাদি নিষ্মাভাবাৎ দাব-প্যথে বাচ্যো। ননু স্বরিতাদি শুণভেদাৎ ভিন্ন প্রযন্ত্রোচ্চার্য্যা-ণাণ তদভেদাদভিন্ন প্রযন্ত্রোচ্চা-ৰ্য্যাণাঞ্চ শব্দানা বন্ধে খনিয-মেনালন্ধারান্তর প্রতিভোৎপ-ত্তিহেতুঃ। শব্দস্লেষো ২র্থস্লে-বশ্চেতি দ্বিবিধো ২প্যয় মর্থাল-ক্ষার মধ্যে গণিতো ২নৈ্য রিতি কথ ময় শকালকারঃ। উচ্যতে। ইহ দোষ গুণালস্কারাণাণ শব্দার্থ গতত্বেন যো বিভাগঃ সো ২ম্বয ব্যতিরেকাভ্যা মেব ব্যবতিষ্ঠতে । তথাহি करुषानि गाण्यानान्-প্রাসাদযো ব্যর্থত্বাদি প্রৌতত্বা-দ্যুপমাদযঃ সম্ভাব তদভাবানুবি-ধাযিত্বাদেব শব্দার্থগতত্ত্বেন ব্যব-স্থাপ্যন্তে। তথাহি। স্বযঞ্চ পল্লবা-তামু ভাস্বৎকর বিরাজিতা। ই-ত্যভহ্নেষ্য। প্রভাত সন্ধ্যে বা শ্বাপ ফললুন্ধে হিতপ্রদেতি স-ভঙ্গশন্দলেষ শ্চেতি দাবপি শ-কৈকসমাশ্রযাবিতি ছয়ে৷ রপি শक्टसयञ्च मुर्गरायः। नजामा-मा। थटक्षवज्रः। व्यथटक्षयमा जूम বিষয়ঃ যত্র শব্দপরিবর্ত্তনেপি ন

লেষত্ব খণ্ডনা। যথা স্তোকেনো-গ্যতি মাযাতি স্তোকেনাযাত্য-ধোগতি । অহে। স্বসদৃশী বৃত্তি खनारकारिः थनमा ह। देखि । নচাষ মুপমা প্রতিভোৎপত্তি-হেতুঃ শ্লেষঃ। অপি তু শ্লেষপ্র-তিভোৎপত্তিহেতু রুপমা। তথা-হি। যথা কমল মিব মুখ মনো-জ্ঞ মেতৎ কচতিতরা মিত্যাদৌ গুণসাম্যে ক্রিযাসাম্যে উভয্-সাম্যে বা উপমা তথা সকলক-লং পুরমেতজ্জাতং সংপ্রতি চ সি-তাণ্শুবিশ্বমিবেত্যাদৌ শব্দমাত্র সাম্যেপি সা যুক্তৈব তথা হ্যক্ত• क्रफटिन। ऋूठे॰ वर्थानकातीत्व-তাবুপমা সমুচ্চযৌ কিন্তু। আ-**শ্রিত্য শব্দমাত্র° সামান্য মিহাপি** সম্ভবত ইতি। নচ কমল নিব মুখ মিত্যাদি সাধারণধর্ম প্রযোগ-শূন্য উপমাবিষয় ইতি বক্তুণ युक्तः शृर्णाश्रमाया निर्विषयज्ञा-পত্তেঃ। দেব স্বনেব পাতাল মা-শানাণ ত্ব নিবন্ধনণ। ত্বঞ্চামর মরুজুমি রেকো লোকত্রযাত্মকঃ । ইত্যাদি শ্লেষদ্য চোপনাদ্যল-ক্ষার বিবিক্তোস্তি বিষয়ঃ। ইতি দ্বে র্যোগে সঙ্কর এন উপপত্তি

পর্য্যালোচনে তু উপমাষা এবা-य॰ यूटका विषयः व्यनाः विषयाः পহার এব পূর্ণোপমাষাঃ স্যাৎ। ন চ অবিন্দু সুন্দরী নিত্যু গললা-বণ্য বিন্দুকেত্যাদৌ বিরোধপ্রতি-ভোৎপত্তিহেতুঃ শ্লেষঃ। অপি তু শ্লেষপ্রতিভোৎপত্তিহেতু বি-রোধঃ। নছত্রার্থদ্বপ্রতিপাদ-কঃ শব্দঃ শ্লেষঃ দ্বিতীয়ার্থস্য প্র-তিভাত মাত্রদ্য প্ররোহাভাবাৎ৷ ন চ বিরোধাভাস ইব বিরোধঃ। শ্লেষাভাস ইব শ্লেষ স্তম্মাদেব-মাদিষু বাক্যেষু শ্লেষপ্রতিভোৎ-পত্তিহেতু রলঙ্কারান্তর মেব সা-ধীয়ঃ। তথা চ সদ্বংশমুক্তা মণি র্নান্যঃ কবি রিব স্বল্পক্ষোকো দেব মহান্ ভবান্। অনুরাগবতী স ন্ধ্যা দিবস স্তৎপুরঃসরঃ। **অহে**। দৈবগতি শ্চিত্রা ন তথাপি সমা-গমঃ॥ আদাষ চাপ মচল ক্র-षाशीनः छनः विमममृखिः। य শ্চিত্র মচ্যুতশরো লক্ষ মভাজ্ঞী-মম স্তবৈষ্যা ইত্যাদাবেকদেশ-বিবর্ত্তিৰূপ শ্লেষ্ ব্যতিরেক সমা-সোক্তি বিরোধত্ব মুচিত ন তু শ্লেষত্ব॰ শব্দশ্লেষ ইতি চোচ্যতে ৷ অর্থালঙ্কার মধ্যে চ লক্ষত ইতি

কোষণ নয়ঃ কিন্তু বৈচিত্ৰ্য মল-কারঃ ইতি যত্তৈব কবি প্রতিভা-সংরম্ভগোচর স্তব্রৈব বিচিত্রতে-তি দৈবালস্বারভূমিঃ। মুখ মপেক্ষিত্ব মেতেষাণ শব্দা-না মিতি চেৎ অনুপ্রাসাদীনা মপি তথৈকেতি তেপ্যৰ্থালঙ্কা-রাঃ কি॰ নোচ্যন্তে রসাদি ব্য-ঞ্জক স্বৰূপ বাচ্যবিশেষ ব্যপে-ক্ষেত্যনুপ্রাসাদীনা নলম্বারতা শব্দ গুণ দোষাণা মপ্যর্থাপে-करियव छन्ए। यठा । वर्थ छन् **(मायानका**ताना॰ ने काटशकटेय-ৰ ব্যবস্থিতি রিতি তেপি শব্দ-गण्डा । विद्या विद्या মূর্দ্ধি স্থিতবভীত্যাদৌ চ বর্ণাদি-स्राप्त अकश्रयद्वाकार्यप्रव १-ৰ্থশ্লেষত্ব॰ শব্দভেদেপি প্ৰসজ্য-তামিত্যেবমাদি স্বয়ণ বিচার্য্য । ইতি কাব্যপ্রকাশে শব্দালক্ষা-त्रनिर्वरया नाम > উल्लामः ॥ শ্লেম্মকঃ পু॰ কফঃ। ইতি শব্দ-**চ**िक्किका ॥ खी मिल्लका।। क्लिकी । इंडि विश्वस्मितिनो। क्षिय-নাশকে ত্রি ॥ শ্লেমমী স্ত্রী জ্যোতিঘতী। ইতি

জটাধরং।। মলিকা। ইতি মে-দিনী।। ত্রিকটুং। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।।

শ্লেমণঃ ত্রি কফী। ইত্যমরঃ।।
শ্লেমণা স্ত্রী বৃক্ষবিশেষঃ। যথা
। শুরুক্ষন্ধ স্তর্গনী চ শ্লেমণা চ
বৃষাপি চ। ইতি শব্দমালা।।

শ্বেমালঃ ত্রি শ্বেমাযুক্তঃ। ইত্য-মরঃ॥

শ্রেমালঃ পুং বৃক্ষবিশেষঃ। বহু-যার ইতি খ্যাতঃ। ইতি শব্দ-ঢন্দ্রিকা।।

সেন্দ্রং পৃং কট্ফলফুলঃ। ইতি
শব্দচন্দ্রকা।। কফনাশকে ত্রি
শেল্পা পুং কফঃ। ইত্যমরঃ।।
তস্য প্রকোপহেতু র্যথা। গুরু
মধুর রসাতিন্মিগ্ধ দুগ্ধেক্ষু ভক্ষা
দ্রবদধি দিননিদ্রা পূপ সর্পিঃ
প্রপূরিঃ। তুহিনপতনকালে
শেলাং সংপ্রকোপঃ প্রভবতি
দিবসাদে ভুক্তমাত্রে বসস্তে
। ৠা তস্য লক্ষণং যথা। কৈ
মিত্যং নধুরাস্যতা শিশিরতা
শৌরুন্তং প্রদেকো মলপ্রাচুর্যাং।
স্থিরতা রসশ্চ লবণঃ কণ্ডু রতিস্বল্পতা। আলস্যং চিরকারিতা
কঠিনতা শোথারুচিঃ নিপ্পতা

তক্রা তৃপ্তাপদেহ কাস গুরুতা এতাঃ কফোক্তা রুজঃ ৷৷ 🟶 🗓 অস্য প্রশমতাকারণ যথা। গুরু শীত মৃদু সিগ্ধা মধ্র স্থির পি-চ্ছিলাঃ৷ স্লেম্বৰঃ প্ৰশমণ যাস্তি বিপরীতগুণৈ গুণাঃ ৷৷ কক্ষ ক্ষার কষায ভিক্ত কটুক ব্যাষাম নি-ষ্ঠীবন স্ত্ৰীদেবা ধনি যুদ্ধ জাগ-র রতিক্রীড়া পদাখাতনণা ধৃনা-ত্যুক্তশিরো বিরেক বনন যেনো-পনাহাদিক পানাহার বিহার ভেষজ মিদ প্লেক্ষাণ মুগ্র জ-(य ।। कः।। य ह शक्वित्या यथा **া অবলম্বক ইভ্যেকঃ ক্লেদকঃ শ্লে-**ষ্ম:কাপরঃ। বোধক স্তর্প কন্ণ্চিতি **শ্লেক্স। পঞ্চবিধঃ স্মৃতঃ ।। ঞ্ল ।। এ**-তেষা' লক্ষণানি যথা। কফ ধায়া-ম্ভ শেষাণা॰ যৎকরোত্যবলম্বন॰ । ততো ২বলম্বকাখ্যাতি॰ শ্লেম্মা প্রাপ্নোত্যুরঃ স্থিতঃ ।। ১।। আ-মাশযাশ্রিতঃ সো ২ন্নক্লেদনাৎ क्रिंगकः गुंडः १२। क्षित्रकः क्ष-ষণাৎ সন্ধেঃ স চ সন্ধ্যাণ ব্যবস্থি-তঃ॥ ৩॥ রসনাবস্থিত স্তেম বো-ধকো রসবোধনাৎ।।। শিরসি প্রস্থিত শ্চাসৌ তর্গকো নেত্র তৰ্গণাৎ ৷৷ ৫ ৷৷ ঞ্চা অদ্য স্থানা-

নি। উরঃ কণ্ঠ শিরঃ ক্লোম পর্বা-न्यामान्यात्रमः। त्याना ब्रानशः জিহ্বা চু কফস্থান মুরঃ পরণ।#।। ७९ প্রকৃতিকলকণ । গম্ভীরবু-দ্ধিঃ স্থূলাক্ষঃ স্নিগ্ধকেশো মহাব-नः। यक्ष जनागगानाको स्न-ম্বপ্রকৃতিকো নরঃ।। 🕸 ।। স্নেহো বন্ধঃ স্থিরত্বঞ্চ গৌরবং বৃষ্যতা ব লং৷ ক্ষমা ধৃতি রলোভশ্চ কফ-কর্মাবিকারজে।। ইতি সুখবোধঃ ।। 🗱 ।। শ্লেমকর জব্যা वि यथा। ভোজনানন্তর সান জলপান বিন। তৃষা। তিলতৈল প্ৰশ্বাতে-ল প্ৰিশ্বনানলকী দ্ৰব ৷ ৷ পৰ্যুষি তান্ন° তক্রঞ্চ পক্ষরম্ভাকলণ দধি। মাযায়ু শর্করাতোষণ সুল্লিঞ্জ্ল-সেবনং ৷৷ নারিকেলে দরুণ কক-সান পর্যাষিত জল তরু দুঞ্জা পঞ্চলণ সুগন্ধকর্কটীকলণ ॥ খাতস্বানঞ্বর্যাসু মূলক প্লেম कार्रा । जब्हान विमन्त्रम् ह य-र्घीराविनामनः ॥ 🗱 ॥ स्मा नाम कजवगि यथा। वङ्गिरयमः ভৃষ্টভঙ্গণ পঞ্চতৈলণ বিশোষকণ। ভূমণ শুদ্ধভক্ষাঞ্চ শুদ্ধপক্ষ্রী-তকী ৷৷ পিণ্ডারক মপক্ষঞ্চ রম্ভাক-ল মপকক । বেশবার সিন্ধবার-

মনাহার মপানক।।। সমৃত রো চনাচূর্ণ সঘৃত শুষ্কশর্কর। মরী-চণ পিপ্ললীণ শুষমার্ত্রকণ জীরকণ মধু।। ডব্যাণ্যেতানি গন্ধর্বি স-माः समार्तानि ह। देखि बन्नादेन-বর্ত্তে ব্রহ্মখণ্ডে ১৬ অধ্যাযঃ।।**⊯।।** অপি চ৷ সার্যপতৈল ১ তৈলা-ভ্যঙ্গঃ ২ উদ্বৰ্ত্তনণ ৩ শৈশিরজ-লং ৪ বাপ্যজলং ৫ কৌপজলং ৬ নৈর্মরজলণ ৭ নাদেযজলণ ৮ সা-गारनगारकानक॰ २ विरमय**ः**-পাদশেষোক্ষোদক ১০ পেষিত-বচামুস্তকসংযুক্তজলন্ধানং অন্তরু ১২ সন্ধুমণ ১৩ পত্রকণ ১৪ কক্ষোল ১৫ শটী ১৬ দগ্ধভূমি-জাতশালিধান্য ১৭ অতিরোপ্য-थाना॰ ১৮ यवः ১৯ শ্যামাকধা-नाः २० क्लिखवधानाः २३ कङ्ग्-ধান্য ২২ হস্তিশ্যামাকধান্য २७ চীনকধান্য २८ मुलाः २৫ মুদ্রন্ত ২৬ রাজমায়ঃ ২৭ মসূরঃ २৮ চণকঃ ২৯ সলখঃ ৩০ जूरती ৩১ নানাশিশ্বা ৩২ জলসংযোগি-সামান্যশুষ্কনারীচপত্রশাকণ ৩৩ হিলনেটিশাক ৩৪ শালফীশা-ক ৩৫ গ্রীম্মসুন্দরশাক ৩৬ পু-নৰ্বাশাক ৩৭ কলাযশাক ৩৮

ব্রহ্মীশাকণ ৩৯ চাঙ্গেরীশাকণ ৪০ পৃক্কাশাক ৪১ পালম্বীশাক ৪২ চণকপত্রশাকণ ৪৩ কে',সুম্ভশাকণ 88 ওষণীশাক ৪৫ মহারাষ্ট্রী-শাক ৪৬ কদলীনোচক ৪৭ ক্লু-্ দ্রবার্তাঙ্গফল• ৪৮ অঙ্গারপরবা-র্ত্তাঙ্গঃ ৪৯ পাণ্ডুরঙ্গফল ৫০ কার (वल्लकन॰ ७३ करकी विककन॰ ७२ পটোলনাডী ৫৩ স্বস্নাণ্ডনাডি কা ৫৪ বেত্রাগ্র ৫৫ শূরণঃ ৫৬ কেচুকমূল ৫৭ ঘৃত তৈলাভ্যাণ সিদ্ধংমূল ৫৮ মূলকপুষ্প ৫১ थखकर्वः ७० मृलकंकल॰ ७১ वा-রাহীকন্দমূল ৬২ আমুপেষী ৬৩ অম্লরসদাডিমণ ৬৪ মাতৃলু-ব্দত্বক্ ৬৫ লিম্পাক ৬৬ জন্বী-র॰ ৩৭ কর্কস্কুঃ ৬৮ শুক্ষসমস্ত-কোলফল ৬৯ অঞ্জীর পণ জব-नालः १५ लवलीयनः १२ जायवः ৭৩ পক্ষামিকাফলণ ৭৪ পক্ষতিন্দু-ক প৫ অমবেতস ৭৬ মহার্দ্রণ ৭৭ করুণ ৭৮ কোষামুফল ৭৯ তালাস্থ্যজ্জ। ৮০ বালবিল্বণ ৮১ বিল্বপেষিকা ৮২ ধাত্ৰী ৮৩ বিভী-তকণ ৮৪ বিভীত্মজ্জা ৮৫ ধাত্রী-মজ্জা ৮৬ নন্দ্যাবর্ত্তমৎস্যঃ ৮৭ ক্ৰ্যীন্দ্ৰাঃ ৮৮ এলঙ্গন্সাঃ

৮৯ मिछकम्पमाः २० विक्के-মৎস্যঃ ৯১ প্রোষ্ঠীমৎস্যঃ ৯২ মৎস্যান্ত ৯৩ কুর্ম্বান্ত ৯৪ খগা-ণ্ড॰ ৯৫ এণমা•স॰ ৯৬ খন্দ্ৰিমা•স• ৯৭ কৃৰ্মপাদঃ ৯৮ কপিঞ্চলমাণ-সং ১১ বর্ত্তিকাপক্ষিমাণসং ১০০ প্রাসন্নামদ্য ১০১ অরিঊমদ্য ১০২ অর্ঘ্যমধু ১০৩ পুরাণমধু ১০৪ নূত नगर ১०৫ भिवाकीतः ১०७ উछी-ক্ষীর ১০৭ শৃতোফ দুগ্ধ ১০৮ ছা-গদ্ধি ১০৯ হাস্তিনদ্ধি ১১০ দ্ধি-মস্তঃ ১১১ দধিসরঃ ১১২ মথিত-তক্ৰণ ১১৩ আৰিকযৃতণ ১১৪ ঔ-ফুকঘৃত॰ ১১৫ পক্ষেফুরসঃ ১১৬ হিঙ্গু ১১৭ জীরকণ ১১৮ বাস্পিকা ১১৯ শুদ্ধন্যাক ১২০ কাসুন্দী-বটিকা ১২১ হরিজা ১২২ যুমানী ১২৩ শুষ্কপিপ্ললী ১২৪ আর্দ্র-পিপ্ললী ১২৫ শুগী ১২৬ আর্দ্র-क > > > नर्यकः > > निकार्थः ১২৯ পলাখুঃ ১৩০ গুডত্বক্ ১৩১ পত্রণ ১৩২ যবক্ষারঃ ১৩৩ সজ্জি-কাকারঃ ১৩৪ টঙ্গণকারঃ ১৩৫ মঙঃ ১৩৬ ভৃষ্টতঙুলঃ ১৩৭ লা-জাঃ ১৩৮ লাজমণ্ডঃ ১৩৯ অপ-ক্ষবশক্তৃঃ ১৪০ বাট্যমণ্ডঃ স তু ज्येषवमधः :८১ मूलायृयः ১८२

রাগযুষঃ স চ দাডিম জাক্ষাযুক্ত मूकायृयः ১৪৩ ममृत्रवृषः ১৪৪ छ-नथ्यृयः ১९৫ थ्र युषः ১८७ क লিক্যুযঃ স তু লবণ্যৃতাদি তি মাযমিশ্রিতপ্রদাধি ১৪৭ পলাল-বেষ্টিত কর্দমলেপিত অঙ্গারদগ্ধ লবণবেশবার পুরস্কৃত সার্ডক ক টুতৈল সন্তোলিত মৎস্যঃ ১৪৮ প্রদিশ্বণ ১৪৯ শালিপিফক ১৫০ ভাষূল ১৫১ চূর্ণ ১৫২ খদিরঃ ১৫৩ এলা ১৫৪ জাতীফল° ১৫৫ কপূরিণ ১৫৬ কটুরসঃ ১৫৭ তি-জ্রসঃ ১৫৮ ক্রাষ্রসঃ ১৫৯ উক্ষসভাবদ্ৰব্য° ১৬০ মালতী-পুষ্ণাণ ১৬১ মল্লিকাপুষ্ণাণ ১৬২ পদাপুষ্ণা॰ ১৬৩ বন্ধলপুষ্ণা৽ ১৬৪ পুরাগপুষ্ণ ১৬৫ কন্নারপুষ্ণ ১৬৬ উৎপলপুষ্প ১৬৭ পাট-লপুষ্পণ ১৬৮ চম্পকপুষ্পণ ১৬৯ রাত্রিজাগরণ ১৭০ বিল্বসূলণ ১৭১ পाটला ১৭২ শालপर्गी ১৭৩ গৃন্ধিপর্ণী ১৭৪ এরগুমূল ১৭৫ কণ্টকারিকা ১৭৬ বিশালা ১৭৭ লোধুঃ ১৭৮ ভৃষরাজঃ ১৭৯ কে-শরাজঃ ১৮০ ডোণপুষ্পী ১৮১ ঝিন্টী ১৮২ বচা ১৮৩ শক্ৰাশন ১৮৪ হরিতা ১৮৫ দার্বী ১৮৬

অবন্তুজঃ ১৮৭ এডগজঃ ১৮৮ রেণুকা ১৮৯ ভূর্জঃ ১৯০ আসনঃ ১৯১ নিয়পত্র॰ ১৯২ ভূনিয়ঃ ১৯৩ वरेकः १२८ यामः १२७ पूरान-ভা ১৯৬ কটুকী ১৯৭ ত্রাবন্তী ১৯৮ मृकी ১৯৯ कर्एकन २०० ঙ্গুণ ২০১ পারিভদ্রঃ ২০২ বাস-কঃ ২০৩ মধুযুক্ত গুড়ুচী ২০৪ পি-প্ললীমূল ২০৫ চবিকা ২০৬ গজ-পিপ্ললী ২০৭ অর্কঃ ২০৮ ধুস্তুরঃ ২০৯ সামান্যগুগুলুঃ ২১০ নূত্র পুরাতনগুয়ুলুঃ ২১১ অরুণাত্রি-বৃতা ২১২ সিতাত্রিবৃতা ১১৩ সি-ন্ধুবারঃ ২১৪ মনোঙ্গা ২১৫ সৌ-রাষ্ট্রী ২১৬ তামু ২১৭ কা স্য २५४ ॥ 🕸 ॥ स्थाप्त क्षेत्र प्रवाशि যথ। এরওতৈল ১ অনূপদেশ-বারি ২ বার্ষিকপানীয়ণ ৩ পাল্লল-**জল॰ ८ मामानामानिधानाः. ৫** মাষঃ ৬ অতসী ৭ নূতনধান্য ৮ মধুরনারীচশাক > কঞ্চশাক ১০ কলম্বীশাকণ ১১ উৎপাদিকা-শাক ১২ মধ্যমক্রমাওফল ১৩ **चनात्रकनः ১८ भी**र्ववृञ्जकनः ১৫ **टिनान** ३७ मीर्घ भटि। निका ३१ অলাব্নাডিকা ১৮ পিণ্ডালুকণ ১৯ করীয পলাল ক্ষিতি বেণুভ্যো

জাত ছত্তিকাশাক ২- বিশেষ-তঃ পলালজাতসংখ্যেদজশাক ২১ মধুপরুটিকা ২২ বছবারফল ২৩ বালাম্লিকাফল ২৪ চীরুক ২৫ পঞ্চকটাফল ২৬ কটাফ-লান্থি ২৭ পক্ষকদল ২৮ তাৰ-মৃৎস্যঃ ২৯ পাগুরুম্ৎস্যঃ ৩০ ক্ষথিতমৎস্যঃ ৩১ লবণভাবিত-মৎস্যঃ ৩২ ভাকৃট্মৎস্যঃ ৩৩ পাঠीমমৎস্যঃ ৩৪ শিলিন্দমৎ-স্যঃ ৩৫ ভেকলিমৎস্যঃ ৩৬ গর্-ৰৎস্যঃ ৩৭ কৰ্ণফলমৎস্যঃ ৩৮ ইল্লিশ্মৎস্যঃ ৩৯ শৃঙ্গীমৎস্য:৪০ চিন্দটমৎসাঃ ৪১ বাচমৎসাঃ ৪২ চিন্দটীমৎস্যঃ ৪৩ গবাচীমৎস্যঃ অর্থাৎ পাঁকালমৎস্যঃ ৪৪ স্লি-স্বপক্ষিমাণ্সং৪৫ তাবৎক্ষীরং ৪৬ আমদুগা '৪৭ আবিকদৰি ৪৮ बाहियमधि ४२ शामूमधि ৫० ख-ভায়দধি ৫১ তাবদবৃত ৫২ মা-হিষমৃত ৫৩ তাবদিক্ষ্ণ ৫৪ বি-শেষতো ভীরুনামকেক্ষুঃ ৫৫ কা-ন্তারীকুঃ ৫৬ ইকুকাণিত ৫৭ ইকুখণ্ডঃ ৫৮ নবান্ন ৫৯ চিপি-টঃ ৬০ মৃতপুরঃ ৬১ পাষসঃ ৬২ শস্কুলী ৬৩ সরসগুবাকফল ১৪ মধুররসঃ ৬৫ অতিশ্যামভোজ- 🏻

নং ৬৬ লবণরসঃ ৬৭ শীতবীর্যাদ্রব্যাং ৬৮ সন্দ্রুকপুষ্পং ৬৯
বৃথিকাপুষ্পং ৭০ বন্ধৃকপুষ্পং ৭১
তাবজ্জস্বরসঃ ৭২ তাবজ্জস্তমজ্জা ৭৩ ৷ ইতি দ্রব্যাগুণাৎসংগৃহীতং ৷৷

শ্বেষাতঃ পু• শ্বেষাতকবৃক্ষঃ। ইতিশব্দরত্বাবলী।।

শ্বেশাতকঃ পু॰ বছবারকবৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ॥

स्मियाखकः पू॰ वृक्षिरिंगयः। বহুষার ইতি বঙ্গভাষা। লসো-ডা ইতি হিন্দীভাষা। তৎপৰ্য্যা-ষঃ। বছবারঃ ২ পিচ্ছিলঃ ৩ দ্বিজন্পৎসিতঃ ৪ শেলুঃ ৫ শীত-ফলঃ ৬ শীতঃ ৭ শাকটঃ ৮ कर्बुमातकः २ ভৃতজ्ञनः २० गन्न-পুষ্পঃ ১১। অসা গুণাঃ। কটুত্ব॰ । হিমন্ত্র । ক্যায়ত্ত। चामूष्। পाठनष्। क्रिम्ल-হরত্বং ৷ আমাসুদোষ মলরোধ বহুত্রণার্ত্তি বিস্ফোট শান্তিকর-ত্ব°। কক কারকত্বঞ্চ। ইতি রা-জনির্ঘন্টঃ ৷৷ অস্যামফলগুণাঃ । বিষ্টম্ভিত্বণ। ৰূকত্বণ। পিত্ত কফাসুনাশিত্বগু ।৷ তৎ প্ৰকল खनाः। नधूत्रषः। त्रिक्षषः। स्न-

মালমণ। শীতলম্বণ। গুরুম্বং। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। সৈমিকঃ ত্রি সেমোন্ডবং। স্লে-মসম্মীয়া ইতি শ্লেমশ্বনাৎ ফিক প্রত্যাস্থেন নিপামঃ।।

শ্লোক ঋ ও স'ঘাতে।। বৰ্জনো।
সক্জনে। ইতি কবিকল্পদ্দঃ।।
স'ঘাত ইহু ছন্দোবিশিফ বাক্যরচনা। ঋ অশুলোকৎ।
ও লোকতে কবিঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

স্নোকঃ পু॰ গদ্য ।। যশঃ। ইত্য-সরঃ II 🕸 II স্লোকনামকারণ° যথা। মা নিষাদ প্রতিষ্ঠাণ দ্ব ম-গমঃ শাশ্বতীঃ সমাঃ। যৎ ক্রৌ-ক্ষমিথুনাদেক স্বধীঃ কামমো-হিতা। তদ্যেখ ক্রবত শিস্তা বভূব হুদি বীক্ষকঃ। শোকা-র্ত্তেনাস্য শঙ্গনেঃ কিমিদ ব্যা-হৃত गरा।। চিন্তযন্ স মহাপ্রা-জ্ঞ শ্চকার মতিমান্ মৃতি । শি-ষ্যকৈবাত্ৰবীদ্বাক্য মিদং স মূনি-পুজवः॥ भागवत्का श्कातमम স্তন্ত্ৰী লয় সমশ্বিতঃ য় শোকার্ত্ত-স্য প্রবৃত্তো মে শ্লোকো ভবতু নান্যথা।। ইতি রামাষণে বা-न्यीकीरय वालकार ५ मर्गः ॥

ন্ধোণ । সংহাতে। ইতি কবি- '
কল্পদ্ৰমঃ । খ অশুশ্লোণৎ ।
সংহাতো রাশীকরণ । ইতি
দুর্গাদাসঃ ।।

শ্বঃ ব্যাণ অনাগতাহঃ। কালি
ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ।।
শাশ্রেষসণ ক্লী কল্যানণ। ইত্যমরঃ।। পরমাত্মা। শর্মা। ইতি
মেদিনী।। কল্যান্যুক্তে ত্রি।।
শ্বক ই ও সর্পে। ইতি কবিকল্পদ্রুমঃ।। বকারযুক্তাদ্যঃ। ই শ্বল্যাতে। ও শ্বলতে। সর্পোগতিঃ
। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শ্বগণঃ পুণ ককুরসমূহঃ। মথা।
দারাদে ব্বযো রিমুমো স্যাতাণ
ণিত্তদ্বিতে পরে। শ্বাপদন্যকো
স্ত বা। ন তু শ্বগণ প্রভৃতীনাণ।
ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণটীকাষাণ
দুর্গাদাসঃ।

শ্বচ ঙ > গত্যা । ইতি কবিকল্পশ্বচ ইড জনঃ । দ্বৌ বকারযুক্তাদী। পুনঃ পাঠাদাদ্যো নেদনুবন্ধঃ । ডিতৌ তুদৌ। এক
এবেৎ পাঠবলাদ্বাধ্য ইতি নিযমাৎ । ড শ্বচতে। ই শ্বঞ্চাতে । ড শ্বঞ্চাতে। ইতি দুর্গাদাসঃ ।

শ্বঠক) গভো।। অসংফ্তে।। শ্বপক্পুণ্চভালঃ। যথা। নি-श्वे रेक ∫म॰ऋ्छ। रेंछि कवि-কল্পক্রমঃ।। ছৌ বকারযুক্তৌ श्रनः शाठामातमा तमन्वसः। ত্ৰযো অৰ্থাঃ। ক শ্বাঠযতি। ই ক শ্বগ্রহাত জনঃ। গছেতি কিমপি সংস্করোতি বা ইত্যর্থঃ। সংস্কা-র গত্যে। রিভি কেচিৎ। ইভি मूर्गामामः ॥

শ্বঠ ত্ক দূৰ্বাচি। ইতি কবি কল্পদ্রুমা। বকারযুক্তঃ। শ্বঠ-যতি নীচঃ। স্থাসত বদতী-ত্যর্থং। রমানাথস্ত সম্যগ্রাষণে ইতি মত্বা শঠৰতি সম্যাধদতী-তার্থ ইত্যাহ। সমান্তাগ ইত্য-প্যেকে। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

श्वेम खुकः पूर शाक्तु ३। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

শ্বদ স্ট্রা স্ত্রী গোক্ষুরকঃ। ইত্য-यद्गः ॥

শ্বধূর্ত্তঃ পু॰ শৃগালঃ। ইতি শব্দ-त्रञ्जावनी ॥

श्विमा की रखना निमा। दे-শ্বনিশা স্ত্রী (ত্যুমরভরতৌ ম ম. खनकुत्रनिमा। यथा। **य**म्रा॰ মত্তা নিশি শ্বানঃ শ্বনিশ শ্বনি-শা চ সা। ইতি জ টাধরঃ ॥

যাদঃ শ্বপচঃ শ্বপ ক্। ইতি ভর-তধৃত বোপালিতঃ॥

শ্বগচঃ পু॰ চণ্ডাল ঃ। ইত্যমরঃ॥ তগ্য সংজ্ঞা অন্ত্যাবসাধী। ত-•স্য ধর্ম্যে। যথা। চণ্ডাল শ্বপচা-নাম্ভ বহির্গামাণ প্রতিপ্রয়ঃ। অপপাত্রাশ্চ কর্ণ্ডব্যা ধনণ যে-या॰ श्व भक्तं छ॰॥ व । मा॰ मि नृ তচে-লানি ভিন্নভাঙে যু ভোজন । কার্ফাবঃ সমলক্ষ্মাঃ পরিব্রজ্যা চ নিত্যশঃ ৷৷ ন তৈঃ সময় মন্থি-एक्ट श्रुक्ररया धर्मा माठतन्। ব্যবহারো মিথ ভেষা বিবাহঃ मृह्रिंशः महा। जन्न (यया श-त्राधीनः (एषः माष्ट्रिक्षञाक्रान । द्रात्को न विज्ञत्त्रयू एक आरमयू नगत्त्रयू ह ॥ मित्रा हत्त्रयूः का-র্য্যার্থ চিক্লিতা রাজশাসনেঃ। व्यवाक्षवः नवरिक्षव निर्श्दत्रगू রিতি স্থিতিঃ॥ বধ্যা॰শ্চ হন্য সতত যথাশান্ত্র নৃগাজ্ঞযা। বধ্যবাসাংসি গৃহীমুঃ শয্যাশ্চা-ভরণানি চ ।। 🟶 ।। চাণ্ডালঃ শ্বপচঃ ক্ষত্তা সূতো বৈদেহক खथा। मागधारयागरवी देवव म-প্রৈতে হন্ত্যাবসাষিনঃ॥ তৃস্যা-

মতকণে প্রাথশ্চিত্ত যথা। অ-স্থ্যাবসায়িনা ময় মশ্মীযাদ্যস্ত কামতঃ। সতু চাব্রায়ণ জ-র্যাৎ তপ্তক্বচ্ছ মথাপি বা ॥ ইতি প্রায়শ্চিত্ততত্ত্বধৃতাঙ্গিরো-বচন ।।

শ্বপাকঃ পু॰ চণ্ডালঃ। ইত্যমরঃ ॥ তসােৎপত্তি র্যথা। কতু জা-ত স্তথোগ্রাযাণ শ্বপাক ইতি কীৰ্ত্ত্যতে। ইতি মানবে ১০ অ-भागिः ॥ 🗱 ॥ त्रक्षवायां खना न्भर्गत्न आयन्तिक यथा। ठा-ভালেন শ্বগাকেন সংস্ফাচে-দ্ৰজম্বলা। অতিক্ৰম্য তান্য হা-नि थायन्तिखः ममात्रद्रश् ॥ ত্রিরাত্র মুপবাসঃ স্যাৎ পঞ্চা-ব্যেন শুদ্ধাতি। তা॰ নিশান্ত ব্য-তিক্রম্য স্বজাত্যুক্তম্ব কারষেৎা৷ ইতি বচনাস্তর দর্শনাৎ এতৎ কামতঃ।। অত্রাজ্ঞানে বৃহস্প-তিঃ। পতিতান্ত্য শ্বপাকৈস্ত স স্পৃষ্টা স্ত্রী রজস্বলা। তান্যহা-নি ব্যতিক্রম্য প্রায়শ্চিত্ত॰ সমা-চরে ।। প্রথমে হক্লি ত্রির তান্ত িতীণে एउट माচরেও। অহো-রাত্র তৃীযেহ্নি চত্র্থে নক্ত माठ तथा। ठजूर्थक्रीजि एकि সানাৎ পূৰ্ব । ইতি প্ৰায**িচত্ত**-ভন্ত ॥

स्वनः पु॰ वीक्षभूतः। ইতি तन्न-

শ্বককঃ পু
ত্
বৃষ্ণিপুলঃ। স চ
অকুরপিতা। যথা। অনমিত্রস্যায়যে ২ন্যো বৃষ্ণিঃ। তস্মাৎ
শ্বককঃ। তৎপ্রভাবঃ কথিত এব
। শ্বককস্যান্যঃ কনীযান্ চিত্রকোনাম ভাতা। শ্বককাদক্রো
গান্দিন্যা মভবৎ। ইতি বিকুপুরাণে ৪ অংশে ১৪ অধ্যায়ঃ।।
শ্বভীরঃ পু
শ্বালা।।

শুভূ ক বিলো। গতৌ। তকে।
ইতি কবিকল্পজনঃ। বিলণ রন্ধুকরণণ। ক শুভূযতি ভাঙা বালকঃ। তন্ধ ইতি তকি দৌস্থো
ইতাস্য ৰূপণ। শুভূযতি দীনঃ
দুংখেন জীবতীত্যর্থঃ। তন্ধস্থানে তন্ত্র ইত্যপপাঠঃ। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

শব্দু ক্লী ছিদ্রণ। ইত্যসরঃ।।
শব্দুং পুণ শোপঃ। ইত্যসরঃ।।
শব্দীচী স্ত্রী পীড়া। শ্বি ধাতো
রৌণাদিক ইচি প্রত্যযেন নিষ্পামা। ইতি সিদ্ধান্তকৌ মুদী।।

বিশে। ইতি কবিকল্পদ্রনাঃ।
বিকারমুক্তাদিঃ। শ্বলতি। বেগঃ
শীঘুগতিঃ। ইতি দুর্যাদাসঃ।।
শ্বেদ্ধ ক ভাষে। ইতি কবিকল্পদ্রুনা। বকারমুক্ত স্তালব্যাদি
রস্তস্থতীযোগধঃ। ক শ্বন্ধযতি। ভাষঃ কথনং। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শ্বল বেগে। ইতিকবিকল্পদ্রমঃ।।
বকারযুক্তাদিঃ লদ্বযান্তঃ। শ্বজ্বতি। বেগঃ শীঘ্গতিঃ। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

শ্ববৃত্তিঃ দ্রী সেবা। চাকরী ইতি
ভাষা। ইত্যমরঃ ॥ শুন ইব
বৃত্তিঃ পরপিখোপজীবনাৎ ।
ইতি ভরতঃ ॥

श्वराष्ट्रः पू॰ हि॰मुलखः। यथा।
नामृ नः भूखतीकन बीली ठाथ
म्गामनः। श्वराष्ट्रन जतकन्ठ
व्याखन्ठ श्रालकः मस्यो॥ ইতি
क्रिंशितः॥

শৃশুরঃ পু॰ পতি পড়্যোঃ পিতা । ইত্যমরঃ।। পূজ্যঃ। ইতি মেদিনী।।

শ্বশুরৌ পু॰ শ্বশেশশুরৌ। শ্ব-শুর শাশুড়ী ইতি ভাষা। দ্বিব-চনান্ডো ২য°। ইতামরঃ। শ্বশুর্যঃ পু॰ দেবরঃ॥ শ্যালঃ। ইত্যমরঃ॥

শ্বনঃ ন্ত্রী পতিপক্সোঃপ্রসূঃ। শাশুড়ী ইভি ভাষা। ইত্যমরঃ ।।।।। তস্যাঃ সুষাডিঃ সহাবিশ্বা-স কারণ ষথা। ধর্মব্যাধ উবাচ । यथा তে দূহিতা দত্তা পুত্রার্থে বরবর্ণনী। সাচ স্বন্ধার্য্যবাপ্রো-ক্তা দুহিতা জন্তবাতিনঃ।৷ অ-তো ২ৰ্থ মাগতো ২হ° তে গৃহ° প্রতি সমীক্ষিতৃ । আচার দেব-পূজাঞ্চ অতিথীনাঞ্চ তপণ ॥ এতেষা মেক মপ্যত্ৰ স্বৰ্দ্বাপি ন দৃশ্যতে। তদগৃহ গন্ত মিচ্ছামি পিতৃণা॰ শ্ৰাদ্ধকাম্যযা।। স্বগৃহে নৈব ভুঞ্জামি পিতৃণা কার্য্য মিত্যুত। অহ ব্যাধো জীব-ষাতী ন তু তল্লোকহিংসকঃ।। মৎসূতা জীবঘাতস্য যদূঢা স্বৎ সুতেন চ। তমাহত্ত্বঞ্চ সম্পূৰ্ণপ্ত॰ প্রাযশ্চিত্ত তপোধন ৷৷ এব মৃ-জ্বা স চোত্থাষ শপ্তা নারীণ ত-দা ধরে। মা সুযাভিঃ সমণ শ্বস্থা বিশ্বাসো ভবতু কচিৎ ৷৷ মা চ স্বুষা কদাচিৎ স্যাৎ যা শ্বশ্ৰু জীবতী মিষেৎ। এব মুক্ত্বা গ-তো ব্যাধঃ স্বগৃহণ প্রতি ভাষিনি

॥ ইতি বারাহে আদিরুতবৃত্তা-স্তনামাধ্যায়ঃ॥

শ্বশ্রমণ্ডরৌ পু॰ শ্বশ্রশণ্ডরযোঃ সহোক্তিঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। শ্বশু-রৌ২। ইত্যমরঃ।।

श्रम घ नू श्रागता है कि किति क्रमण्याः ।। वकात्रयुक्तां पिः । य नू श्रमिकि लाकः कीवकी कार्यः । व्याश्वरम्य र्मिमानतान् । है कि किती ।। न विश्वरम् शृर्वः विद्याधिक एमा कि विश्वरम् विश्वरम् विश्वरम् । विश्वरम् ।। विश्वरम् ।।

শ্বস লুর স্বপ্নে। ইতি কবি-কল্পদ্রমঃ॥ লু শস্তি। র বৈদি-কঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

শ্বসন ক্লী শ্বসিত। নিশ্বাসঃ। ইতি মেদিনী।

শ্বসনঃ পু॰ বাযুং ৷৷ মদনবৃক্ষঃ ৷
ইত্যমরঃ ৷৷
শ্বসনাশনঃ পু॰ সর্পঃ ৷

হারাবলী ।। শ্বনশ্বরঃ পু॰ অজুনবৃক্ষঃ । ইতি শব্দচন্দ্রিকা ॥

শ্বসনোৎসুকঃ পু॰ সর্পঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

শ্বনিত ক্লী শ্বাসঃ। যথা। শ্বা-সম্ভ শ্বনিত সো ২ন্ত মু থে উ-চ্ছাস আহরঃ। আনো বহিমু -থস্ত স্যাঘিঃশ্বাসঃ পান এতনঃ ।৷ ইতি হেমচক্রঃ।৷

শ্বসূনঃ পু॰ ক্ষতস্ববৃক্ষঃ। জন্ধর-•শোক্ষা ইতি ভাষা। ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা।

শ্বস্তন ত্রি ভবিষ্যদ্বস্ত। ইতি শব্দমালা।। ভবিষ্যৎকালে ক্লী । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শ্বস্তা॰ ত্রি শ্বোভববস্তু। ইতি শব্দমালা।

শ্বা পু॰ সক্কুরঃ। তৎপর্য্যায়ঃ।
সক্ষুরঃ শ্বা চ ভষকঃ শুনকো মৃগদংশকঃ। কৌলেষকো রন্তিদেবঃ সারমেযো রতত্রগঃ॥ সস্বরো দীর্ঘসুরতঃ শ্বানো আমনৃগো ২পি চ। বক্রপুচ্ছঃ শ্বালুঃ স্যাৎ শরৎকাম্যরতত্রপঃ॥
ঔষধাদিযোগিতঃ শ্বা স্যাদল'র্মো প্যলর্জকঃ। মৃগ্যাস্পলঃ

श्वा जू विश्वकद्धः भूगानयः ॥ ইতি শব্দরত্বাবলী।। শ্বাগণিকঃ ত্রি শ্বগণ্যেন চর্তি যঃ । यथा। स्राना ७ कि ह। स्रा-ণ্যেন চরতি শ্বাগণিকঃ শ্বাগণি-কী শ্বগণিকঃ শ্বগণিকী। ইতি निकाखरकोमूमी॥ श्वाम्खः भुः क्रक्रुत्रमभनः। ইতি मिक्वा खरको यूनी ॥ শ্বানঃ পু॰ স্বন্ধুরঃ। ইতি শব্দ-त्रज्ञावनी ॥ খানচিল্লিকা জ্রী শুনকচিল্লী! ইতি ব্লাজনির্ঘণ্টঃ 🔏 श्वानी जी ब्रक्ती। इंडि भय-त्रज्ञावली।। শ্বাপদঃ পু॰ হি•সুপশুঃ। ইতি **ए** यह अप्तरकार ।। वाष्ट्रा १ विषय त्रञ्जावनी ॥ শ্বাবিৎ ৈ পু॰ শল্যঃ মজারুঃ ইতি श्वातिम्) ভাষা। ইত্যমরঃ॥ শাশঃ পু• ভৈরবঃ। লক্কুর বাহ-নত্বাৎ। ইতি কেচিৎ।। শ্বাসঃ পু॰ শ্বসিত ।। বাষুঃ। रेिं (रूमहस्यः ॥ ७९ পर्यायः । প্রাণঃ ২। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ রোগবিশেষঃ। স তু বলবান্-মহাপাতকজঃ। যথা। উন্মাদ- 🎚

শ্চ ঘটা দোযো রাজ্যমাশরী তथा। शामक मधुरमरहो दात्-मत्री **পাপস**'छकाः॥ ইতি নার-माङः। ইতি শুদ্ধিতত্ত্বং।। म চ হীনবল উপপাতকজঃ। যথা । कलामत यह धीर मृनदाश बनानि ह। सामाजीन बन क्रिक ভূম মোহ গলগ্ৰহাঃ ৷৷ রক্তার্দ বিদর্পাদ্যা উপপাপোদ্ভবা গদাঃ । ইতি মলমাসতত্ত্ব ।। ঞ্চা। অথ শ্বাসাধিকারঃ। তত্র নিদান মা-र। रेग दाव कात्ररंग र्शिका प्रांशि-ना॰ म॰ थवर्खरा । देन दाव वह-ভিঃ শ্বাদো ব্যাধি র্ষোরঃ প্রজা-যতে।। শ্বাসস্য ভেদানাহ। ম-হোৰ্দ্ধ ছিম তমক ক্ষুদ্ৰভে দৈন্ত পঞ্চা। ভিদ্যতে স মহাব্যাধিঃ শ্বাস একো বিশেষতঃ ॥ 🟶 ॥ পূৰ্বৰূপ মাহ। প্ৰাগ্ৰপণ তস্য হৃৎপীড়া শূল মাগ্নান মেব চ। আনাহো বক্তুবৈরস্য শণখনি-স্তোদ এব চ ॥ 🕸 ॥ সংপ্রাপ্তি মাহ। যদা সোতা সি সংরুধ্য মাৰুতঃ কফ পূৰ্বকঃ। বিশ্ব খ্জ-তি সংরুদ্ধ স্তদা শ্বাসং করোতি সঃ।। স্রোতাণি প্রাণোদকান্ধ-वशनि। क्युर्वकः क्यः शूर्वः

্প্রধান যস্য সং। বিশ্বপুজ্তি সৰ্বতো বনাৰ্গান যাতি। সংৰুদ্ধঃ क्टक्न कृष्णगार्गः ॥ 🛊 ॥ महा-यानमा लक्ष्ण गार्। উकृषगान বাতো যঃ শব্দবৎ দুঃখিতো নরঃ । উচ্চৈঃ শ্বসিতি সমদ্ধে। মত্তর্যত ইবানিশা। প্রণফজ্ঞান বিজ্ঞান उथा विज्ञास लावनः। विवृजा-ক্যাননো বন্ধমূত্রবর্চ্চা বিশীর্ণ-वाक्।। मौनः अश्वनिष्ठः हामा দূরাৎ বিজ্ঞাযতে ভূশ। মহা-শাসোপসৃষ্টস্ত ক্ষিপ্র মেব বি-পদ্যতে ৷৷ উদ্ধৃযমানবাতঃ উদ্ধৃ৽ নীয়মানো বাতো যস্য সঃ। শ-क्रवर मक यथा मृगर। की मृक् म मक छादाधियेजू मार्। मख-ৰ্ষভ ইব উচ্চৈঃ শ্বনিতীত্যম্বয়ঃ। সল্লঃ আনদ্ধঃ আনাহ্যুক্ত ইতি যাবৎ। জ্ঞানণ শাস্ত্রণ। বি-ख्डान॰ **उ**पर्थविनि म्हयः। विभी-র্ণবাক্ স্থালিতবচনঃ । দীনঃ গ্লানঃ। মারকশ্চাষ মহাশ্বাসঃ ।। 🟶 ।। উर्कृषाम मारु। উर्कृ॰ य-সিতি যোতার্থণ ন চ প্রত্যাহরত্য ধঃ। শ্লেমাবৃত মুখ্ভোতঃ কুল गन्नवशक्तिजः ॥ छक्तृम्सि विश-শ্য'স্ত বিভ্রাস্তাক্ষ ইত স্ততঃ ।

প্রমূহন্ বেদনার্ভশ্চ শুদ্ধাস্যো-রতি পীডিতঃ।। উর্দ্দুশ্বাদে প্রন্থ-পিতে ভূধঃশ্বাসো নিরুধ্যতে। মুহুত স্তাম্যত শ্চোদ্ধৃ শ্বাস স্ত-देगाव रखामृन्॥ मर्दियु श्वारमधृ-দ্ধৃ শ্বনতে। অত্র অত্যর্থ মিতি বিশেষঃ ৷৷ ন চ প্রত্যাহরত্যধঃ ন শ্বাস মধঃ করে।তি। শ্লেমাবৃতে-**जािन। सम्मना जान्छ॰ यगूখ॰** শ্রোতাণদি চ তৈঃ ক্রুদ্ধো যো-गञ्जवश् रखनार्षिछः। विश्रगान् ্ইত স্ততো বিক্নতং যথা স্যাদেবং পশ্যন্ ৷ অধংশ্বাদো নিরুধ্য-তে শ্বাসো নাধঃ প্রবর্ত্তত ইত্যর্থঃ ॥ 🗱 ॥ উर्कृशाममा। तिरुमा नकः ণ মাহ। মুহ্নতো মোহণ প্রাপ্ন-বতঃ তাম্যতো গ্লানি৽ প্রাপ্নুবত-का छक्षामा अन्न् आगान् হস্তি। তদ্যৈবেতি ন তু মোহ গ্লানি রহিতস্য ।। 🟶 ।। ছিনশ্বাস মাহ। যম্ভ শ্বসিতি বিচ্ছিন্নণ সর্ব প্রাণেন পীডিতঃ। নচাশ্বসিতি দৃঃখার্ত্তে। মর্মাচ্ছেদ রুজার্দিতঃ॥ আনাহ স্বেদ মূৰ্জুাৰ্ত্তো দহুমা-নেন বস্তিনা। বিপ্লুতাক্ষঃ পরি-कीनः यमनुद्धिक त्ना हनः ॥ वि-চেতাঃ পরিশুফাস্যে। বিবর্ণঃ প্র-

लशबदः। ছिन्नशारमन विष्टिनः স শীয়ু॰ বিজহাত্যসূন্।। বিচ্ছি-भ॰ मिरिष्क्षिणः। जर्दशार्यन या-বন্ধলেন। মর্শ্বচ্ছেদরুজার্দিতঃ क्रमय नित्र एक रवमन एवर भी-ডিতঃ। দহুমানেন বস্তিনা উপ-लक्षिकः। विश्वजाकः ज्ञाक्ष्मभूनं-নেত্রঃ। বিচেতা উদ্বিগ্নচিত্তঃ। **ছिन्नश्वारमन विष्टिन्नः मः। यस्र** শ্বসিতি ৰিচ্ছিন্ন নিত্যাদিলকণ-সুক্তো যঃ সনর শ্ছিমশ্বাদেন বি-িচ্ছিন্নঃ পীডিতো বোদ্ধব্য ইত্য-र्थः। 'মারকশ্চায' বিচ্ছিনশ্বাসঃ া। 🛊 ।। তমকশ্বাস মাহ । প্রতি-দলাম যথা বাযুঃ শ্রোভাণস প্রতিপদাভে। ত্রীবাণ শিরশ্চ সংগৃহ স্লেমাণ সমুদীর্য্য চা। করোতি পীনস স্তেন কঠে ঘৃর্-রকণ তথা। অতীব তীত্রবেগঞ্চ শ্বাস প্রাণপ্রপীডকণা প্রতা-স্মাতি স বেগেন ত্রস্যাতে সংনি-ক্ল**ধ্যতে। প্রমোহ**° কাসমানশ্চ ্স গচ্ছতি মুক্ শুক্ষা। শ্লেষাণা-मूठागातन ज्य ज्वि मृश्य-তঃ। তদ্যৈব চ বিমোক্ষান্তে মুহূ-র্ত্ত লভতে সুখণ।। তথাস্যোদ্ধৃণ-মতে কণ্ঠঃ ক্লচ্ছ্যাচ্ছক্লোতি ভাষি-

তু । ন চাপি নিজা লভতে শ-यानः यामभी जिल्हः॥ भार्यः छ-माावगृङ्गाि भंगानमा मगीतनः া আসীনো লভতে সৌখ্য মুক্ষ-ঞৈবাভিনন্দতি।। উচ্ছিতাক্যো ললাটেন স্বিদ্যতা ভূশমার্তিমান্ । विश्वकारमा। सूरुः श्वारम। सूरु-শৈচবাবধন্যতে।। নেখায়ু শীত প্রাথাতেঃ শ্লেমলৈন্চ বিবর্দ্ধতে । ग याशा खमकः श्वामः मारधा। ৰা স্যানবোখিতঃ।। সংগৃহ্ ব্যথ-का नमूनीया वर्कायका। शीनमः নাসাসুবি । তেন শ্লেমাণা যুর্-রকণ যুযু রশকণ। প্রাণ প্রতীডকণ প্রাণাধিষ্ঠান স্থান্য প্রপীডক । প্রতাম্যতি তম্সি প্রবিশতীব ৷ (वर्रान श्रामर्दरान । मःनिक्रधाः তে নিশ্চেষ্টো ভৰতীতি চক্ৰঃ। সংনিৰুধ্যতে শ্বাস ইতি জেজ্জ-ট**ঃ। শ্লেম্ব**ণা অমুচ্য মানেন। স্থ° সুখ মিৰ। উদ্ধৃ সতে ব্যথিতে। ভবতি। শ্যানঃ শ্যানিহিতা-ঙ্গঃ। অবগৃহ্লাতি পীড়য়তি। উফ্ত-ক্ষৈবাভিনন্দতি ইত্যনেন তম-কো বাত কফারন্ধ ইতি বোদ্ধব্য॰ । উচ্ছिতाकः मृनाकः। ननाटि-ন স্বিদ্যতা উপলক্ষিতঃ। অবধ-

ম্যতে গজাৰ্চস্যেব সৰ্বগাত্ৰ• চাল্যতে ৷৷ ওমকলৈয়ৰ পি-ত্তানুবন্ধ জনিত স্বরাদি যোগেন প্রতমক স'জ্ঞা মাহ। ত্বর মূচ্ছা পরীত্স্য বিদ্যাৎ প্রতমক তুত ৷ উদাৰ্যন্ত ৰুজো ২জীৰ্ণ ক্লিমকা-च নিরোধতঃ।। তমসা বর্দ্ধতে **২ত্যৰ্থ• শীতৈ শ্চাশু প্ৰশা**ম্যতি। मब्कु छममी हामा विमाध्य তমক তুত্থ ৷৷ 🚓 ৷৷ ক্দুদ্রশাস মাহ। কক্ষাবাদোন্তবঃ কোষ্ঠে ক্ষুজোৰাত উদীর্যন্। কুদ্রশা-সেন সো ২তার্থণ দুঃখেনাঙ্গপ্র-বাধকঃ ৷৷ হিনস্তি ন চ গাতাণি ন চ দুঃখো যথেতরে। ন চ ভোজ-ন পানানা নিরুণদ্যুচিতা গ-তি ।। নেন্দ্রিষাণা ব্যথাঞ্চাপি काश्चिष्ट्रभाषरयक्रकः। म माथा উক্তো दिननः मर्सि व। वाकन ক্ষণাং ৷৷ ক্ষুদ্রঃ অল্পনিদান লিকঃ । উদीরযন্ উर्দ्नुः शष्ट्रन्। मूः थः मुःथश्रा मर्द महाशामान-र्याशि॥ क्षा श्रामाना॰ माध्यक्ष-দিক মাহ। ক্ষুদ্রঃ সাধ্যতম স্তে-ষা॰ তমকঃ ক্লচ্ছ উচ্যতে। ত্রয়ঃ শ্বাসা ন সিদ্ধ্যন্তি তনকো দুৰ্বল-স্য চ । কাম প্রাণহরা রোগা

बर्दा न ख्राफ्यः। তথা यथा শ্বাস হিক্ষে হরতো জীব মাশু তে ।। 🟶।। অথ শ্বাসদ্য চিকিৎসা। याम रिकाजूत॰ প्रायः निरंभः स्विटेन ऋभाष्टरत्य । यूटेक र्वावन তৈলাভ্যা॰ তৈ রস্য গ্রথিতঃ কফঃ ।। শ্বাসো বিলয় মাঘাতি মারুত-শেচাপশাম্যতি। স্নিগ্ধ জ্ঞাদ্বা তত শৈচন• ভোজ্ঞ্যেক্ত রসৌদন• ।। खत्रमः भृष्टरत्रमा भाकिरकः। সমন্বিতং। পায়যেৎ শ্বাসকাসম্বং প্রতিশ্যায কফাপহ ।। শৃঙ্গবের মার্দ্রকণ। প্রস্থণ বিভীতকানাণ অন্থি বিনা সাধ্যেদজামূত্রে। ञ्य मरालाहा नीए। मधुमहि-তঃ শ্বাশকাসমঃ।। দশমূলী শটী রামা পিপ্ললী বিশ্ব পৌন্ধরৌ। শৃঙ্গী তামলকী ভাগী গুড়ুচী नागदाधिङि॥ यवागृ विधिन। সিদ্ধা॰ কষায॰ বা পিবেন্নরঃ। স্থা-म समाइ शाशार्व हिका काम **अ**भाग्रस्य ॥ **छात्रमकी** जूगाप-लकी। দশমূলস্য বা कार्यः शी-ষ্করেপাবচূর্ণিতঃ। শ্বাসকাস প্র-শननः পार्श्वभूल विनामनः॥ त-ম্ভা সন্দ শিরীষাণাণ সসুমণ পিঞ্ল-লীযুত্ত। পিফু। তওুল তোষেন

পীত্বা শ্বাস মপোহতি।। শৃঙ্গী মহৌষধ কণা ঘন পুষরাণাণ চূর্ণণ শটী মরিচযোশ্চ সিতাবিমিশ্রণ। ক্লাথেন পীত মমৃতা বৃষ পঞ্চমূল্যা শ্বাসণ ত্যাহেণ বিনিহস্তি হি ঘোর-ৰূপণা পঞ্মূলী তু সামান্যাৎ পিতে याजा कनीयमी। मह्जी भाक्रटा एका देगव एक करक श्वित्क ॥ ज्ञां अक्निकाहुर्नः পীত কোফেন বারিণা। শীঘু শমষতি শ্বাসং কাসঞ্চাপি সুদারু-ণণা হরিজাণ মরিচণ জাক্ষাণ ক-ণা॰ রাম্না॰ শটী॰ গুড॰। কটু তৈ-ल॰ लिश्न् श्नाप भागान् था-**ণহরানপি।। শত॰ সঃগৃহ্ছ ভার্গ্যা-** ॥ স্তু দশমূল্যা স্তথা পরণা শৃতণ रतीवकीनाक भटाउखारय ठवु-র্গুণে ৷৷ পাদাবশেষে তক্মিণস্ত রসে বস্ত্রনিপীডিতে। আলো-ড্য চ তুলাং পূতাং গুড্স্য স্বভ্যা • ততঃ।। পুনঃপচেত্রু মৃষ্রে । स।-বলেহত্ব মেতি তৎ। শীতে চ ম-धून खब यऍ भनानि विनिक्ति भ । विकर् विमूगक्षक भनमाव॰ পৃথক্ পৃথক্। যবক্ষার কর্ষযুগ্ধ। সংচূর্ণ্য প্রক্ষিপেত্রতঃ ॥ ভক্ষষে-দভষা মেকাণ লেহস্যান্ধিণ পলণ

তথা।। স্বাসং সুদারুণ হন্তি কা-म॰ शक्षविध॰ তথা। जर्मा॰मा-রোচক॰ গুলা শক্তেদ ক্ষয় তথা ৷৷ স্বরবর্ণপ্রদো ছেষ জঠ-রামেশ্চ দীপনঃ। নামা ভাগী-গুডখ্যাতো ভিষ্ঞিঃ সকলৈ র্মতঃ ।। ভার্গী গুড়ঃ।। রুসো গন্ধো বিষ-ঞাপি টক্ষণঞ্চ মনঃশিলা। এতা-নি কর্ষমাত্রাণি মরিচণ চাফকর্ষ-कः ॥ कर्षेत्रयः कर्षयुग्राः शृथगत বিনিঃক্ষিপেৎ। রসঃ শ্বাসঙ্গঠা-রো ২য° সর্বশাসনিবারণঃ ।। শ্বাসঙ্গঠারো রসঃ। ইতি শ্বা-সাধিকারঃ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ॥ 🛊 ॥ जनाकः। विजीठकमा देव চূर्नः সমধু शामनागनः। शिक्षनी बिकना हुर्न भर् देमक्षव मः यूठः ।। সর্বরোগ জ্বর শ্বাস শোষ পীন-সহস্তবেৎ। ইতি গাৰুডে ১৮৯ विधायः ॥ 🗱॥ जमा भूतारगाकः निमान यथा। धन्न छति ऋवाह। অথাতঃ শ্বাসরোগস্য নিদান প্রবদামাহ । কাসবৃদ্ধা ভবে-চ্ছাসঃ পূৰ্বো বা দোষ কোপনৈঃ ।। আমাতিসার বমথু বিষ পাঙু-क्देत्र त्रि । त्रस्का धूमानिटेन र्भ-र्भगाणामि शिमायूना । क्रूजक

স্তমক শ্ছিমো মহানৃদ্ধৃশ্চ পঞ্চমঃ । करकाशक्रक्षभगनः श्रवत्ना वि-শ্বগন্থিতঃ ৷৷ প্রাণোদকামবাহী-নি দ্যু শ্রোতা পি দূষ্যন্। উরঃ-यः अकृत्व शाम गामामयममू**ल**-वः॥ क्षा वागुनः छमा सरनार्श শূল প্রাণবিলোমতা। আনাহঃ শন্তভেদশ্চ তত্রাপাসীত ভোজ নৈঃ। প্রেরিতঃ প্রের্যন্ কুড়ে স্বয়ু সশ্মনং মরুৎ। প্রতিলোমং শিরা গচ্ছেৎ উদীর্য্য পবনঃ কফ॰ ।। পরিগৃহ্থ শিরো ত্রীব মুরঃ পা-শ্বেচপীডযন। কাসং যুর্রকং নোহ মরুচি পীনস ভূশ।। ক রোতি তীব্রবেগঞ্চ **শ্বাস**ণ প্রাণো-পতাপন । প্রভ্রাম্যেত্ত**স্য বেগেন** নিগুতান্তে কণ সুখী ৷৷ রুজ্বাচ্ছ-যানঃ শ্বসিতি নিষ্ণঃ স্বাস্থ্য মিচ্ছ্-তি। উচ্ছিতাকো ললাটেন স্বি-দ্যতা ভূশ মার্তিমান্।। বিশুদ্ধা-স্যো মুহুঃশ্বাসঃ কা কত্যুক্ত স বেপথুণ। মেঘাষু শীত প্রাথাতেঃ क्षियरेनम्घ विवर्क्षरञ् ॥ म याना खमकः मारधा नरता वा वनि-নো ভবেৎ। স্বর মূচ্ছাযুতঃ শী-তৈঃ শামোৎ প্রতমকস্ত সঃ ॥ শিলাশ্বসিত বিচ্ছিন্ন মর্মচ্ছেদ-

রুজার্দিতঃ। সম্বেদ মূর্চ্ছঃ সানা-হো বস্তি দাহ নিরোধবান্।। জ-ধোদ্ষিঃ প্লভাক্স মুছনুকৈক-লোচনঃ। শুকাস্যঃ প্রলপন্ দী-নো ন্উচ্ছাযো বিচেতনঃ।। মহ-তা মহতা দীনে। নাদেন শ্বসি-তি কথন্। উদ্যুমানঃ সংরক্ষে। মত্তর্যভ ইবানিশং।। প্রনষ্ট জ্ঞা-ন বিজ্ঞানো বিভান্ত ন্যনান্নঃ । অক্ষণ সমাক্ষিপন্বদ্ধ गৃত্রবর্চা বি-भीर्गिक्।। अक्रक्टकी मूहर्म्गृहः কর্ণ শঙ্ম শিরোভিরুক্। যো দীর্ঘ মুচ্ছ্ সিত্যুদ্ধ ন চ প্রত্যাহরত্যধঃ ।। স্বেশাবৃতমুখশোতাঃ কুদ্ধ-गम्बदशिक्षिणः। উर्क्षृकृशीकरण ভ্রান্ত মক্ষিণী পরিতঃ ক্ষিপন্।। मर्माम् ष्टिमानातम् পরিদেবী নিরুদ্ধবাক্। এতে সিদ্ধের ত্যক্তা ব্যক্তাঃ প্রাণহরা দ্রুব ।। ইতি গারুডে শ্বাসরোগ নিদা-न॰ ३৫৫ व्यथायः ॥ 🐉 ॥ व्यथ শ্বাসরোগস্য কর্মবিপাকঃ। শ্বা-সরোগো মহানুগ্রো দেহি দে-হাভিয়াতকঃ। কৰ্মণা যেন ভব-**তি ত**या निगम्जः मृग्।। नरहार्ष् ভিন্ন তমক ক্ষুদ্রা ভেদো ২স্য পঞ্ধা। স্থাসঃ সংজাযতে নুণা•

পৃথক্ কর্মানুসারতঃ ॥ যস্ত যজ্ঞ সমাসাদ্য পশুশাস নিরুধ্য চ। হস্তি খাদস্তি বা তঞ্চ মহাশ্বাসেন পৃহতে ॥ ১ ॥ পৌরাণিক কথা-मरश रख वाठानाथा वरम् । म উর্দুশ্বাস মাসাদ্য দুনোত্যহরছ-নিশ ।। ২।। নিষিদ্ধদান গ্ৰহণাৎ ছিলশ্বাদেন গৃহতে। ৩। মর্ত্যঃ শাস্ত্রার্থ নিণ্ডিবাক্যু যো দূষ-ষত্যপি॥ পীড্যতে তমকশ্বাদৈ ক্ষুদ্রৈঃ পাকস্য বিন্নতঃ 1 ৪ । ৫ । পরত্র কর্মতে৷ দেহী নরকেষু বিপচ্যতে।। নরকান্তে পুনর্ব্যায়-যোনি॰ শূকর বাযসী। পৃথক কর্মবশাদ্যোনৌ গঘা সংপ্রাপ্য ভপ্যতে ৷ মান্যত্ব মন্প্রাপ্য পূ-ৰ্বোক্তেনোপগৃহতে। শ্ৰন্থা তৃ-গ্রন্থ কদন শাসরোগ সমুদ্ভব ।। প্রণম্য ভরতঃ শ্রীমান্ ভৃগুণ বাচ মুবাচ হ। রাজোবাচ। শ্বাস-कर्म क्य रयन मारनन नियम ন চ ।। ক্তেন মুক্তো ভবতি তম্বে বদ প্রসাদতঃ। ভূগু রুবাচ। হা-টকীণ কারযেমূর্ত্তিণ ভক্ত্যা বরুণ বাতবোঃ।। তামুপাত্রোপরি স্থা-প্য তৎপাত্র॰ কলসোপরি। রা-জ্বত কার্যেৎ পাশ ধজ্বফ্রিব

পলদ্ব থা বাম দক্ষিণতো মূৰ্ত্তি में मार्क महिमिटकः। वार्या র্ধজসমাযুক্তা॰ গন্ধ মাল্য পরি-ষ্তা ।। বরুণস্যাপসব্যে তু স্থ-র্যান্নাযোঃ প্রপূজন । ন চ খা-সং বিনা কাস স্তচ্ছাসঃ কাসতো-**शि वा ॥ उन्नार**े शृक्यावियो मगाक् वायू वंक्रव এव छ। वाक्र-ণ কারবেদ্ধোম বরুণস্যেতি ম-खा । युष्ठ क्लोख खिल यदिः সহসু॰ বা স্বশক্তিতঃ। বাযো স্তি-ল যৱেঃ কাৰ্য্যণ মনোবাতেতি ম-ন্ত্রতঃ।। সাদর বাহ্মণ পূজ্য বস্ত্র यानगक्रामिजिः। कर्सार्यम-ম বাক্যেন ব্রাহ্মণায় নিকেদযেৎ ।। সদক্ষিণাঞ্চ তন্মূর্ত্তি॰ দত্বা গা-থা॰ পঠেমরঃ। ওঁনমঃ পাশ-ভূতে তুভ্য• শ্বজাধিপতবে নমঃ॥ জলাধিপত্ত্যে তুভ্যু॰ বায়ে। সর্ব-জনপ্রিয়। শুচযে দীয়তে দান॰ ধ্বজপাশৌ তু রাজতৌ।। স্বাস-কাসৌ হরেষাতা॰ প্রীতৌ সর্বজ-নপ্ৰিয়ে। পূৰ্বজন্ম বিপাকো-খৌ শ্বাসকাসে চ দারুণ ।। স-হিরণ্য° প্রযক্ষানি মুক্তোহ° ত্বৎ-প্রসাদতঃ। সাদর মাধব নদ্বা দিপেরান্ভাক্ষর শিবণ ৷৷ বস্ত্রা-

ন্তর কত বিপ্র পুন ভানু নুদী রষেৎ। অতঃপর প্রস্বর্ধীত যদা माखुर्जपूर्वरहो ॥ 'श्वामकारमो জ্বব্যাধী দান তস্যোপশাস্ত-যে। পশুষাতোদ্ভবে শ্বাদে স্থ-য্যাদগ্রেন্ত তর্পণ।। ওঁ অগ্নে মূর্ র্জেতি মন্ত্রেণ ছাগণ দদ্যাৎ স मिकन । कथाविष्मा**र्डा त**ी त्भ वर्षा १ मात्रवङ नृष ॥ म-ধিপাত্রণ সরজতণ সরস্বত্যৈ নি-বেদযে । निविक्तनान अहरा গোদানম্ব সমাচরেৎ মা ইচ্ছা-হারেণ সংতর্প্য দ্বিজ্ঞাপি প্র জাপতি°। হোমেনানেন দা-নেন মুক্তো ভবতি কর্মতঃ ॥ সাদর মাধব নত্বা সত্তর্গ্য দ্বি-জপুষ্বান্। স্নাত্বা কলসতো যেন মুক্তো ভবতি মান্ধঃ।। ইতি ভৃগুভরতোক্ত শ্বাসকাস कर्माविभाकः ॥ क्षा। जिन । পিশুনো নরকস্যান্তে জায়তে ু শ্বাসকাসবান্। যৃত তেন প্রদা তব্যু সহসুপলসন্মিত ৷৷ ইতি শাতাতপীয কর্মবিপাকঃ॥ শাসকাসঃ পু॰ শাসযুক্তকাস-রোগঃ। শ্বাসজনককাসঃ। যথা । কাস বৃদ্ধ্যা ভবেচ্ছাসঃ পূর্বে।

্বা দোষকোপনৈঃ। ইতি গারু-**७ ३७७ अधायः ॥ अना ९-**শ্বাসশব্দে ড্রফব্য় ।। শ্বাসন্দঠারঃ পু॰ শ্বাসরোগস্য-ঔষধবিশেষঃ। যথা। রসো গ-স্বো বিষ্ণাপি টক্ষণ্ঞ মনঃশি-লা। এতানি কর্বমাত্রাণি মরি-**एक्शिक्य कर्णा कर्नु व्ययः कर्य-**যুগা পৃথগত্র বিনিঃক্ষিপেৎ। রসঃ শ্বাসঙ্গঠারো ২য় সর্বশ্বাস নিবারণঃ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। यानव्ययानधात्रण क्री व्याणाया-भः। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ শাসহেতিঃ স্ত্রী নিজা। ইতি र्घ्या শ্বাসারিঃ পু॰ পুষ্করমূল। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ | यागी पू॰ वायुः। ইতি শব্দরত্না-বলী।। শ্বাসযুক্তে তি ॥ শ্বি টু ঐ ও ইর গতিব্দ্লোঃ। ইতি কবিকল্পক্রমা। তালব্যা-निः। টু শ্বर्ः। ঐ শূষাৎ। ও मृनः। ইর অশ্বৎ অশ্বধীৎ। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ শ্বিত ৯ ও আ শৌক্লো। ইতি कविकन्नज्ञनः ॥ वकोत्रयुक्तः । ৯ অশ্বিতৎ। আ শ্বিতিত শ্বিত্ত•

। **७ १४०८७ क्षामामः। ३**७ि मूर्गामानः॥

শ্বিত্রণ ক্লী শ্বেতস্বর্গণ। পर्यायः। अष्ठे॰ २। ইতামরः॥ শ্বেত• ৩ শ্বেত্র• ৪১ ইতি ভট্টাকা ।। अ।। अथ द्रशृसि मानग्रा क्षे ভেদদাচ্চাত্রৈব শ্বিত্র মাহ। স্ব-ঠৈকসম্ভব শ্বিত্র কিলাসঞ্চারু-१ ७ ७ ८ १ निर्मिष्ठे मशतिम् । वि ত্রিধাত্দ্রব সংশ্রমণ।। স্বটেকস-खद॰ ऋरिषेन मह এक खुला॰ म-স্তবো নিদান যস্য তৎ। শ্বিত্র-স্য ভেদানাহ। কিলাসণ চারুণণ ভবেৎ। শ্বিত্র মেব রক্ত गা॰সা-শ্রেষাৎ কিলাস মরুণ ভবেদি-छात्रयः। नन् अर्थमा शिखमा কো ভেদঃ ইত্যত আহ। নির্দি-ষ্ট মপরিসাবীতি। শ্বিত্র মপরি-সাবি ভবতি সন্তম্ভ সাবি অথচ ত্রিধাতৃদ্ভব সংশ্রষ মিতি ত্রযো ধাতবো বাত পিত্ত কফা স্তে-ভ্যঃপৃথগ্ভূতেভ্য উদ্ভবে যস্য তৎ। অথচ ত্রযোধাতবো রক্ত মাণ্স মেদাণ্সি সংশ্রেষা ২ধি-श्रीन समा छए। अर्थ मामि-পাতিক সৰ্বধাতৃগতঞ্চ ভবতি **३** छि एक ।। क्षा का का विकास

লকণ ভেদ মাহ। বাতাজকারুণ পিতাতামু কমলপত্রবৎ। স-দাহণ রোম বিধাসি কফাচ্ছেতণ খন' গুরু॥ সকতৃক' ক্রমাজক' माण्य रमनः मू ठानित्मव । वर्ष-নৈবেদমুভষ কফা তক্ষোত্তরো-ख तथा जक्षन भीषत्नाहिन। क-মলপজ্রবদিত্যনেন মধ্যে শ্বেভ-ৰস্তে লোহিত বোধ্যতি। ঘন পুষ্ট ক্রমাজক্ত মাণ্স মেদঃসূ চাদিশেৎ। তথা চ চরকঃ। অরু-**৭• রক্তগে বাতে তামু**॰ পিত্তে প-লঙ্গতে। শ্বেত প্লেমণি মেদঃত্তে শ্বিত্রণ ঙ্বষ্ঠ• পরণ পরণ ইতি।। উভ-य॰ बिविध मिल सिख॰ वर्तन नेषृ-গেব। অৰুণং তামুণ শ্বেতঞ্চ দেবি ভেদাৎ ৷৷ দ্বিধি দোষজ বণ-জঞ্। তথা চভোজঃ। শ্বিত্রঞ্ দিবিধ বিদ্যাদেশ্যজ ত্রণজ তথেতি ॥ 🛊 ॥ शित्र॰ সাধ্য মসা-ধ্য মাহ। অশুক্ল রোমাবহল ম-সংসৃষ্ট মিথো নবং। অনগ্লিদ্ধা-জ সাধ্য থিত্র বর্জা মতো ২-नाथा।। व्यवश्वः छन्। व्यनाकः। গুহু পাণিতলে ঠেষু জাত মগ্য-**ठित्रस्थन**ः। वर्द्धनीयः वित्नारयन কিলাস সিদ্ধি নিচ্ছতা।। গুহুণ

মেহন ভগঞা তল মত্র পাদত-ল । সুশ্রুতেনান্তে জাত মিতি मामानारा निर्मिखेषा ॥ 🛊 ॥ অথ শ্বিত্রস্য চিকিৎসা। বিজী-তকত্বক্ মলপু জটানা॰ ক্লাথেন ক্ষা গুডসংযুতেন। অৰল্গুজণ বীজ মপাকরোতি শ্বিত্রাণি ক্ল-क्षानानि भूखतीकः॥ मलनृः क-টুবঁরী। অবগ্লজঃ বঙ্গচী। সাঞ্চড-় ৰাবস্তুজবীজ হরিতাল তচ্চতু-র্থা॰শ॰। মনঃশিলা তালকার্দ্ধা ७अ। क्व मिन्नक्।। मृत्वन श বাং পিষ্টং সবর্ণতাকারকং শ্বিত্র-স্যা২। শ্বিত্রস্থাও বজতান্ত প-कार्क्तनाधिरकन वा। शित्रिक गीः সিতায়াশ্চ মূলেন পরিলেপিত• ॥ গিরিকণী নীলাপরাজিতা। ধ-স্বস্তরীতিলোকে ৷৩৷৷ ক্লাথঃ সবা-क ही हुर्गः शाबी श्रामित्रमात्रत्याः। শড়োন্দু সন্দ ধবল ধ্বিত্রণ সংসে-বিতো হস্তি ৷৷৪৷৷ মথিতেন পিবে-कृर्नः कारकाम्यत वञ्चकः। रेजना-ক্তণ ঘৰ্মদেবী স্যাত্তকাশী শ্বিত্ৰ-হৃদ্ভবেৎ!৷ মথিত নিৰ্জ্জল বিলো-ডিত পি । তক্রণ চতুর্থাণ্শ জ **लयुक्तः বস্ত্রপূতः দধি। ৫। খদির**-मा भनागारकी माग्राकाः भ

लहरः। जिरुल। शितृमर्फन्ठ माइ मार्वाथ भर्भ हैः॥ भृथक् भनान् मगू कृष्ठा नि श्रिकायाः शलवयः। জলাচকৰ্বে সাধ্য যাবৎ পা-मावटणिविछ ।। काथामानक मृ-ष्ट्राभी यृज्अञ्च विभावस्थ । व-তুঃপল সোমরাজ্যাঃ খদিরস্য পল॰ তথা।। পটোলমূল ত্রিফ-ला जायमाना मूत्रालञ् । कर्या-দিং কটুকঞ্চাপি কার্ষিকান্ সৃদ্ধ পেষিতান্ ৷৷ পলম্বৰণ কৌষিকস্য শুদ্ধস্যাত্র প্রদাপষেৎ। সিদ্ধং স-র্পি রিদ॰ শ্বিত্রণ হন্যাদম্ভ ইবান-नः॥ अकामगानाः अक्षानाः श-त्रमः देव ७८थो यथः। स्मामहार्जी-ঘৃত নাম নির্মিত ব্রহ্মণা পুরা।। লোকানা মুপকারায শ্বিত্রস্থা-দি রোগিণা ।। ইতি সোমরাজী যৃত ৷৷ ৬ ৷৷ মহৌষধ মহামেদা নিম্বপত্রাণি সর্যপাং৷ মনঃশিলা চ সিন্দূর পদ্ম বারিণ্যবন্তুজ ।। হরিছে হরিতালঞ্চ ত্রিফলা পীত-গন্ধকান্। এতানি সমভাগানি বিষাদ্ধাণশানি যোজযে ।। সর্পি-শুভ•। দিগুণ ত্রিগুণ কীর• গোন্তঞ্চ চতুর্গুণ ৷৷ তামুপাত্তে

তু সংস্থাপ্য শনৈ মৃদ্বিমনাপচেৎ । চতুর্তাগাবশেষম্ভ সকক্ষ সৰ-তারবেৎ ৷৷ অগ্নৌ ক্ষিপ্তস্ত নিঃশ-क॰ जनमूक॰ विष्कनः। जालाङ পানযোগাতদাও সরান্ গদান্ জষেৎ।। অফীদশানাণ স্ঠানাণ দক্রণাণ শ্বিত্রিণাণ তথা। দুর্ফনা-ভীষু মর্ত্যানা স্থাবিণা কীটি-না॰ তথা।। অসৃক্ সু।বপরীতা যে বে চ ত্যক্তভিষক্কিযাঃ। সর্বগ্ৰ-হবিষ্ক্তানা শীর্ণাঙ্গানা বিশে-ষতঃ।। সৰ্বধাতু গতে স্বষ্ঠে পতিত-॥ জ্র শিরোরুহে। ঘর্ষরাব্যক্তঘো-ষাণাণ তথা সর্বাঙ্গবাতিনাণ ॥ পানে ২ভ্যঙ্গে তথা নদ্যে বস্তি-কর্মণি নিত্যশঃ। সপ্তরাত্র প্র-যোগেণ সৰ্বন্দণ্ঠানি নাশ্যেৎ।। দিসপ্তাহ প্রযোগেণ পূর্ণচন্দ্র নি-ভাননঃ। জাতকেশ নথ শাশ্র ৰ্ভাতি ষোডশ বৰ্ষবৎ ॥ অনঙ্গ সহিত সাক্ষাৎ সর্বাময় বিনা-শনঃ। এতদ্যৃত মহাশ্রেষ্ঠ ভা-গবেণাবভারিত ।। মনুযাণা হিতার্থায় সর্ব্যাধিহর পর । নহামাৰ্ত্তিক মিদ ঘৃত সৰ্বাম-রার্চ্চিত ।। ৭॥ ইতি ভাবপ্রকাশঃ श क्ष ॥ जिल्हा भाजी थिन त्र-

যোঃ কাথ পীত্বা চ জৰু সংযু-তে । শঞ্জেন্দু ধবল শ্বিত্ৰ হস্তি তূৰ্ণ ন সংশযঃ॥ ইতি গাৰুডে ১৭৫ অধ্যাযঃ॥

শিত্রমী জী পীতপর্ণী। বিচ্টী
ইতি ভাষা। ইতি শব্দচন্দ্রকা।।
শিত্রী ত্রি শিত্ররোগযুক্তঃ। বথা
। শিত্রী বস্ত্রণ শ্বা রসম্ভ চীরী লবণহারকঃ। ইতি মিতাক্ষরা।।
শিদ ই ও শৌক্রে। ইতি কবিকল্পদ্রমঃ। বকারযুক্তঃ। ই শ্বিশ্যতে। ও শ্বিশতে পুওরীকং।
ইতি দুর্গাদাসঃ।।

শেতণ ক্লী ৰূপ্যণ ইত্যনরং ৷৷
শেতঃ পুণ শুক্লবর্ণঃ ৷৷ দ্বীপবিশোনী

৷৷ কপর্দকঃ ৷ ইতি হেনচন্দ্রঃ ৷৷
শুক্রগ্রহঃ ৷৷ শেতাভুঃ ৷ ইতি
শব্দ রত্নাবলী ৷৷ শঞ্চঃ ৷ ইতি
রাজনির্ঘকঃ ৷৷ জীবকঃ ৷ ইতি
কাটাধরঃ ৷৷ শিবাবতারবিশেষঃ
৷ যথা ৷ বেদব্যাসাবতারাণি দ্বাপরে কথিতানি তু ৷ মহাদেবাবতারাণি কলৌ শূনুত সত্রতাঃ ৷৷
আদৌ কলিযুগে শ্বেতো দেবদেবো মহাদ্যুতিঃ ৷ নামা হিতায
বিপ্রাণা মভুদ্বৈবস্বতে হস্তরে ৷৷

হিমবচ্ছিখরে রম্যে ছগলে পর্ব-তোত্তমে। তস্য শিষ্যাঃ শিখা-যুক্তা বভূবু রমিতপ্রভাঃ॥ শ্বে-তঃ শ্বেতশিখ শ্চৈব শ্বেতাস্যঃ থেতলোহিতঃ। চত্বার স্তে মহা-ত্মানো ত্রাহ্মণা বেদপারগাঃ।। সুভাবো দমন শ্চাথ সুহোত্তঃ ক-ঙ্গণ স্তথা। লোকান্দি **রথ যো**-गीत्सा देकगीयवास मश्रम् ॥ व्यक्टिंग पविवादः मान्तवत्य वृष-ভপ্রভুঃ। ভৃগুন্ত দশমে প্রোক্ত खयामूबः भद्रः यृष्टः॥ वामत्म <u> ২ত্রিঃ সমাখ্যাতো বালীচাথ ত্র-</u> যোদশে। চতুর্দশে গৌতমস্ত বেদশীর্বা ততঃ পরণ ৷৷ গোকর্ণ শ্চাভবত্তস্মাৎ গুহাবাসঃ শিখ-खाय । जिंगाना छेशामक ना-ৰুকো লাঙ্গলী ক্ৰমাৎ।। শ্বেড স্তথাপরঃ শূলী তিণ্ডী মুণ্ডী চ বৈ ক্রমাৎ। সহিষ্ণুঃ সোমশ-र्या চ न क्रनीरमा श्रष्टिरम श्र-ভূঃ।। বৈবস্বতে হস্তরে শস্তো রবতারা স্ত্রিশূলিনঃ। অফাবি॰-শতি রাখ্যাতা হন্তে কলিযুগে প্রভোঃ ৷৷ ইতি কৌর্ম্মে ৫০ অ-ধ্যায়ঃ ॥ ৠ॥ শ্বেতপর্বতম্য প-রিমাণাদি যথা। উত্তরোত্তরে-

ণেলাৰ্ড নীলঃ শ্বেডঃ শৃন্ধবা নিতি ত্রখে। রম্যক হিরণুষ স্ব-ৰাণা মৰ্য্যাদাগিরষঃ প্রাগাষ- তাঃ উভষতঃ ক্ষারোদাবধযো দ্বিসহসুযোজন পৃথব একৈক-শঃ পূৰ্ৰস্মাৎ পূৰ্ৰস্মাদৃত্ৰরোত্ত-त्वा मना॰नाशिका॰रनन रेनर्ग्र এব হ্ৰুসস্তি। এবং দক্ষিণেনেলা-বৃত নিষধে। হেমকুটো হিমা-লয় ইতি প্রাগায়তা যথা নীলা-দ যঃ। অযুত্রোজনোৎসেধা হরিবর্য কি॰পুরুষ ভারতানা॰ ষ-থাসংখ্যা। ইতি শ্রীভাগ্রতে ৫ करक ३७ व्यथायः ॥ 🕸 ॥ त्राज-বিশেষঃ। যথা। ত্রন্ধোবাচ। শ্বেতাভিজনসম্পন্নঃ সত্যবাগ-नम्यकः। त्रवाधीजः एठः पछः গুরবঃ পরিতোষিতাঃ॥ ন তে দত্ত॰ দিজেভ্যো ২ন্ন॰ কদাচিদ্ধি বুভুক্ষিতে। তন্মাত্তীবেহ সং-জাতা কুধা তে নৃপদত্তম ৷৷ অ-मनानाम् अर्गाः न माज्ञि ৰ্মহীতলে। স্বৰ্গে বাপি তথানা-ত্র অন্নদান তত্তা ২ধিক ৷৷ ইতি বঙ্কিপুরাণে অন্দাননামা-भागः॥ শ্বেতঃ ত্রি শুক্লবর্ণযুক্তঃ। ইত্য-

মরং॥ 🛊 ॥ শ্বেতবস্তৃনি যথা। অথ খেতানি। সুধা শূচ্চিঃ শ্র-বঃ শন্তু কীর্ত্তি জ্যোৎসা শর-দ্যনাঃ। প্রাসাদ সৌধ তগর ম-न्मात्रक श्माजयः ॥ मृत्याम् কান্ত কপূরি করন্তা রজত হলী ৷ হির্মোক ভস্ম হিণ্ডীর চন্দন করকা হিমণা হারোর্ণনাভ ত ন্তুন্থি স্বৰ্গকেভরদাভুক। শে-याहिः नर्कता मूक्षः मि गङ्गा॥ সুধা জল।। মৃণাল সিকতা হংস বক কৈরব চামরণ। রম্ভাগর্ত্ত পু-প্রীক কেতকী শখ্য নির্বারাঃ।। লোধু সি হ ধজ চ্ছত্ৰ চূৰ্ণ সৃক্তি क्रशक्तकाः। युका अमूर्य न केव मस्र भूरणागरना खनाः ॥ रेकला-স কাস কাপাস হাস বাসব স্থ-क्षत्राः। नात्रमः शात्रमः जन्म थ-**টिका क्वांटिकामयः।। ইতি क**वि-কল্পলতাযা॰ দ্বিতীয়ে শ্লেষস্তব-েকে বৰ্ণো নাম দ্বিতীয়ণ সসুমণ।। **শ্বেতক• ক্লী ক্বপ্য•। ইতি** রাজ-निर्घणैः॥

শ্বেতকঃ পু॰ বরাটকঃ। ইতি ভূরিপ্রযোগঃ।

শ্বেতকণ্টকারী খ্রী শুক্লকণ্ট-কারিকা। শ্বেতরেঙ্গনী ইতি হিন্দীভাষা। তৎপর্যায়ঃ। সি-তকণ্টকারিকা ২ শ্বেতা ৩ কে-ত্রদূতী ৪ লক্ষণা ৫ সিতসি•ছী ৬ সিতকুজা ৭ কুজবার্ভাকিনী ৮ সিতা ২ সিক্তা ১০ কটুবাৰ্দ্রাকী ১১ ক্ষেত্রজা ১২ কপটেশ্বরী ১৩ নিঃমেহফলা ১৪ বানা ১৫ সিত-क्का ३७ मरहोयशी ३१ गर्मजी ar हिन्नक। १२ हास्त्री २० हस्त-, পুষ্পা ২১ প্রিষম্বরী ২২ নাসলী ২৩ দূর্লভা ২৪ রামা ২৫ ৷ অ-मार्थनाः। क्रांचि । कर्षेच । উষ্ণত্ব• । কফ বাতনাশিত্ব• । **ठक्षाष् । मीशनष । तमनियाम-**কত্বক। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥ 🕸 ॥ খন্যক। শ্বেতা ক্ষুদ্র। চন্দ্রহাসা লম্বণা ক্ষেত্রদৃতিকা। গদিভা চন্দ্রভা চান্দ্রী চন্দ্রপুষ্পা প্রিয-ষরী।। কণ্টকারী সরা তিক্তা करूका मीभनी लघुः। करकाका পাচনী কাস শ্বাস ত্বর কফানি-লান্।। নিহন্তি পীনসং পার্শ্ব-शीषा कृषि इताययान्। ত्रयाः ফল কটুরদ পাকে চ কটুক ভবেৎ ৷৷ শুক্রস্য রেচনণ ভেদি তিক্তা পিত। গ্রিফল্লযুঃ। হন্যাৎ क्क मक्र९ कर्ष्ट्र काम प्रमा क्रिम

শ্বেতকে

অস্য মূল গুণাঃ। হিমন্ত্ৰণ রু-

জ্রান্।। তদ্বুৎ প্রোক্তা সিতা क्षुषा विरमशाकाङ्कादिनी । ইতিভাবপ্রাকাশঃ॥ খেতকন্দা স্ত্রী অতিবিষা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।৷ শ্বেতকিণিহী দ্রী বৃক্ষবিশেষঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। সিতাভিকটভী ২ গিরিকর্ণিকা ৩ শিরীষপত্রী ৪ কালিন্দী ৫ শতপত্রা ৬ বিষ-দ্মিকা ৭ মহাশ্বেতা ৮ মহাশৌ ণ্ডী ২ মহাদিকটভী ১০। অস্যা গুণাঃ ক টু ৰ া উষাৰণা গুলা বিষায়ান শূলদোষনাশিত্ব ৷ বাত কফ জীৰ্নবোগ শমনত্বঞ্চ। শ্বেতা চ তত্ৰ গুণবুক্তা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ পুস্তকান্তরে সি-তাতিকটতী স্থানে সিতালিক-**ऐंडी। महानिकऐंडी द्यारन म**-হালিকটভীতি চ পাঠঃ ।। *শেতঙ্গ*রঃ পু• ঐরাবতহস্তী। ইতি শব্দরত্নাবলী॥শুক্লগজশ্চ শ্বেতঙ্গশঃ পু॰ তৃণবিশেষঃ। তৎ-পর্যাযঃ। সিতদর্ত্তঃ ২ হুস্বঙ্গশঃ ৩ পৃতঃ ৪ যজ্ঞীযপত্রকঃ ৫ বজুঃ ৬ ত্রন্মপবিত্রঃ ৭ তীক্ষঃ ৮ যজ্ঞ-ভূষণঃ ম সচীমুখঃ ১০ পুণাত্ণঃ ১১ বহিঃ ১২ পূতত্বঃ ১৩।

চাত্রণ। মধুরত্বণ। পিক্ত রক্ত জ্বর তৃষা শ্বাস কামলাদোষ নাশি-ष्य । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শ্বেতকেতুঃ পু॰ বুদ্ধঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। কেতুগ্রহবিশে-ষঃ। যথা। কেতবো হুত্র দৃশ্য-স্তে বাৰুণা স্ত্ৰয এব তে। উৰ্দ্মি-কেতৃঃ শ্বেতকেতু ধূ মকেতু স্তৃ-তীযকঃ ৷৷ শ্বেতকেতু ৰ্যদা দৃ-শ্যেৎ শ্বেতাস্থি সরুতে মহীণ। তদা মান্যমা•সানি ভক্ষযন্তী-र मान्याः॥ कृष्डयार्ड॰ जगर রুৎস্ব॰ চক্রবদ্ভুমতে তদা ॥ অপি চ। শ্বেতঃ শস্ত্রাঙ্গল॰ ঙ্গ-• ৰ্য্যাৎ লোহিত স্ত্ৰ্গ্নিজ্ৰণ ভষণ। কুদ্ভৰণ পীতকঃ সৰ্য্যাৎ ক্লফো রোগ মথোল্বণ ।। অন্যচ্চ। অ-वखी পूकतातगाः यावक्षनगानः থাপরান্ দেশান্ ক্ষচিৎ ক্ষচি-**ডোগ দুর্ভি কৈঃ পরিপীডিতান্** ॥ শ্বেতাখ্যস্ত জটাকারী শ্যা-মো ব্যোমত্রিভাগগঃ। নিবর্ত্ত-তে ২পসব্যেন,ত্রিভাগীপরুতে প্ৰজাঃ।। ইতি সম্যামৃত ।। শ্বেতকেশঃ পু॰ রক্তশিগুঃ। ইতি किरोधदः ॥ श्वक्रकिष्ण ॥

শ্বে**তকোলঃ পু**॰ শক্রমৎস্যঃ। ই**ভি ত্রিকাওশে**ষঃ।।

(शृज्यमितः भू॰ एक्क्यमितः। তৎপর্যায়ঃ। কদরঃ ২ শ্বেতসা ব্ৰঃ৩ কাৰ্য্মকঃ ৪ সজকণকঃ ৫ সোমসারঃ ৬ সোমবৃক্ষঃ ৭ সো-মবন্ধঃ ৮ পথিক্রমঃ ৯। অস্য শুণাঃ। ভিক্তত্ব॰। ক্যাযত্ব॰। कर्षेषः। উक्षयः। कषृठि ভূত সন্ত কফ বাত ত্রণনাশিত্বঞ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। পুস্তকাস্ত-রে কার্মুকস্থানে কামুকঃ সজ্জ-কণ্টক স্থানে স্বৰ্গ্তক ইতি চ भाकः॥ 🗱।। जनाकः। थिनतः শেষতসারো ২ন্যঃ কদরঃ সোম-বন্ধলঃ। কদরো বিশদে। ২এ-ণেগা মুখরোগ কফাসুজিৎ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।

শ্বেতগজঃ পু• ইন্দ্রহন্তী। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ শুক্লবর্ণহন্তী চ ॥ শ্বেতগক্তঃ পু• হ•সঃ। ইত্য-মরঃ॥

শ্বেতগুঞ্জা স্ত্রী শুক্লগুঞ্জা। সাদাকুঁচ ইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ
। শ্বেতকাষোজী ২ ভূন্টিকা ৩
কাকাদনী ৪ কাকপীলুঃ ৫ চক্রশ্ব্যা ৬ চূডালা ৭। অস্যা

গুণাঃ। ভীক্ষত্ব•। উষণ্ডব•। তস্যা বীজ বান্তিকর । তস্যাঃ শিকা শূল বিষনাশিনী। তদ্যাঃ পত্রু বশ্যে শস্ত । ইতি রাজনির্ধন্টঃ । অপিচ। শ্বেতা রক্তোচ্চটা প্রোক্তা ক্লফলা চাপি সা স্মৃতা 1 রক্তা সা কাকচিঞ্চী স্যাৎ কা-कनछी ह ब्रक्किका।। काकामनी काकशीनुः मा युजानात्रवल्लती । গুঞ্জান্বযন্ত কেশ্য॰ স্যাৎ বাত পিত্ত জ্বাপহ্ণা মুখশোষ ভুম শ্বাস তৃষ্ণা মদ বিনাশন 1 **न्याभगर्बः वृ**षाः वनाः क वन श्राब्ध । क्रमीखन्थ न ষ্ঠানি রক্তা চ ধবলাপি চ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ॥ অন্যচ্চ ৷ গুঞ্জা শিখণ্ডিকা ভামাু রক্তিকা কাক-শান্তিকা। শ্বেতান্যা চক্রিকা চূডা দুমাষা কাকপীলুকা।। গু-ঞ্জা কেশ্যা বলকরা রুচ্যা পিত্ত ককাপহা। নেত্রামযহরা বৃষ্যা হস্তি কণ্ডু গ্ৰহ ব্ৰণান্।। ক্লমীন্দ্ৰ-লুপ্ত সন্ঠানি তদ্বচ্ছেতাপি শৃস্য-তে। ইতি মদনপালনিঘণ্টঃ।। শ্বেতচন্দন ক্লী শুক্লচন্দন। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। অস্য পর্যায়-खरनो हन्मनमस्य जरुरवारो ॥

শ্বেতচিল্লী স্ত্রী শাকভেদঃ। তৎ পৰ্য্যায়ঃ। বাস্ত কী ২ সুপথ্যা ৩ শ্বেতচিল্লিকা ৪ সিতচিল্লী ৫ উ পচিন্নী ৬ জ্বন্দী ৭ কুদ্রবাস্তৃকী ৮। অস্যা গুণাঃ। শ্বেতুচিল্লী मूमधूता काता ह शिशिता ह मा। जित्नाय भमनी প्या ज्रद्रां य বিনাশিনী।। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ শ্বেতচ্ছদঃ পু॰ হ॰সঃ। ইতি হলা-यूधः। गन्नभवः। वातूरेज्नभी ইতি ভাষা। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা॥ ষেতজীর কঃ পু॰ গৌরজীরকঃ। -ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শেতটঙ্কক ক্লী শেতটঙ্কণ । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ শ্বেভটম্বণ ক্লী ক্লারবিশেষঃ।

শেতটক্ষণ ক্লী ক্ষারবিশেষঃ।
শাদাসোহাগাইতিভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ। শেতটক্ষকং২ লোহি
৩ সিমুকরং ৪ সিমু ৫ মালতীতীরসম্ভবং৬ শিবং ৭ জাবকরং
৮ শীতক্ষারং ৯ টক্ষণং ১০। অস্য
গুণাঃ। মিশ্বরুণ। কটুত্বং। উষ্ণত্বং। কফ বাতাম ক্ষম শ্বাস
বিশ্বকাস মল নাশিত্বং। ইতি
রাজনির্ঘণটঃ।।

শ্বেতদূৰ। স্ত্ৰী শুক্লদূৰী। তৎ-পৰ্য্যায়ঃ। গোলোমী ২ সিতা-

খ্যা ৩ চণ্ডা ৪ ভত্রা ৫ ভার্গবী ৬ দুর্মরা ৭ গৌরী ৮ বিমেশা-নকান্তা ৯ অনন্তা ১০ শ্বেতা ১১ দিব্যা ১২ শ্বেতকাঞ্চা ১৩ প্রচ-ত্তা ১৪ সহসুৰীৰ্ব্যা ১৫ সহসূকা-ত্তা ১৬ সহসুপর্বা ১৭ সুরবল্লভা ১৮ শুভা ১৯ সুপৰ্বা ২০ সিত-ष्ट्रा २३ वष्ट् । २२ कळ्। खक्रश ২৩। অস্যা গুণাঃ। অতিশিশি-রত্বণ। মধুরত্বণ। বান্তি পিতামা-তিমার কাস দাহ ত্যানাশিস্ণ। क्र ठायक। इंजि ताक्र निर्यलेश।। শেতদিপঃ পু॰ ইন্দ্রহন্তী। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ শুক্লগজশ্চ॥ শ্বেত্দীপঃ পু॰ চন্দ্রদীপঃ। সচ देवक्रकाथाविक्षामा यथा। त्य-তদ্বীপণ গতবতি দ্বমি জফুণ ত-দীশরণ। তত্র হায মভূৎ প্রশ্ন ্ব মা॰ য মনুপৃচ্ছসি ॥ ইতি 🗐-ভাগবতে ১০ ক্ষন্দে ৮৭ অধ্যায়ঃ ।। 🗱 ।। অপিচ। একদা ব্রন্ধণো लाकानायाख॰ नातम॰ यूनि॰। পৰ্যাটনাৰণো লোকান্ দৃষ্ট্যা ন-দ্বাৰবীৰচঃ।। ভগবন্ জহি মে যুদ্ধ পত্ৰ সন্তি নহাৰলাঃ। যো-क् निष्हानि वनि छ छ जानानि জ্গ্ল্য ৷৷ মুনি ধ্যাত্বা ত সূচি-

র॰ শেতদ্বীপ নিবাসিনঃ। মহাবলা মহাকাষা শুত্র যাহি মহামতে ।। বিষ্ণুপূজারতা যে বৈ বিফুনা নিহতাশ্চ ষে। ত এব তত্র
সংজাতা অজেষাশ্চ সুরাসুরৈঃ
।। শ্রুষা ত্রাবণো বেগামান্ত্রভিঃ পূজাকেণ তান্। যোজুকামঃ সমাগত্য শ্বেতদ্বীপসমীপতঃ
।। তৎপ্রভাহততেজক্ষণ পূজাকণ
নাচলত্তঃ। ত্যক্ত্বা বিমানণ
প্রথমৌ মন্ত্রিণশ্চ দশাসনঃ।।
প্রবিশ্বের তদ্বীপণ ধৃতো হস্তেন যোষিতা। পৃষ্ঠশ্চ স্বণ স্বতঃ
কোসি প্রেষিতঃ কেন বা বদ।।
ইত্যুক্তো লীলষা স্ত্রীভি হস-

ঃ পুনঃ পুনঃ। রুচ্ছাদ্ধস্তাদ্বিনির্মুক্ত স্তাসাণ স্ত্রীণাণ দশাননঃ।। আশ্চর্য্য মতুলণ
লক্কা চিন্তবামাস দুর্মাতিঃ। বিক্কুনা নিহতো যামি বৈঙ্কণ্ঠ মিতি নিশ্চিতঃ। মিষ বিক্ষুর্যথা
সপ্যেত্তথা কার্য্যণ করোম্যহণ।
ইতি নিশ্চিত্য বৈদেহীণ জহার
বিপিনে ২সুরঃ।। জ্ঞাত্ত্বৈব পরমাত্মানণ স জহারাবনীসূতাণ।
ইতি শ্রীব্রহ্মাণ্ডপুরাণে শ্রীমদধ্যাত্মরামায়ণে উত্তরকাণ্ডে ৪

অধ্যামঃ ।। অন্যক্ষ । শ্বেতা॰ গঙ্গা॰ নরঃ স্নাত্বা মঃ পশ্যেৎ শ্বেতমাধব॰ মৎস্যাক্ষণ মাধব-ক্ষৈব শ্বেতদ্বীপ• স গজ্জি ।। ইতি তীর্থচিস্তামণিঃ ।।

শ্বেতধাতৃঃ পু• খটিকা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥ শুক্লবর্ণধাতু-দ্রব্যঞ্চ ॥

(श्रेट्समा पृ हस्तः। कर्ण् तः ।। मम्प्रक्रिनः। ইতি মেদিনী।। स्थिनीनः पृ स्यः। ইতি শব্দরভাবলী।। শুক্রনীলবর্ণ চাম্বেতপত্রঃ পু হংসঃ। ইতি শ্বেতপত্রঃ পু হংসঃ। ইতি শ্বেতপত্রগশব্দার্থদর্শনাৎ।। শুক্রপর্বে ক্লী।।

শেকপত্রবর্থঃ পু॰ ব্রহ্মা। ইতি
শব্দমালা।। শ্বেতপত্রো হংসো
রথো বাহনং যস্য ৷৷

শেতপদ্ম ক্লী সিতান্তে:জে ।
তৎপর্যাক্ষঃ। সিতাক্ত ২ পুণ্ডরীক ৩ শ্বেতবারিজ ৪ হরিনেত্র ৫ শরৎপদ্ম ৬ সারদ ৭
শন্তবল্লভ ৮। অস্য গুণাঃ। হিমন্ত্রণ তিক্তন্ত । মধুরন্ত । পিত্র
দাহাসু ভুমদোষ পিপাশানাশিল্প । ইতি রাজনির্যন্ত ।।
শেতপর্ণা স্ত্রী বারিপর্ণী। পানা

শ্বেতপু

ইতি ভাষা। ইতি রক্সনালা।।
শ্বেতপর্ণাসঃ পু॰ শ্বেততুলসী।
যথা। অর্জ্জকঃ শ্বেতপর্ণাসো
গন্ধপূত্রঃ সঠেরকঃ। ইতি রক্ষমালা।।

শ্বেতপাটলা স্ত্রী শুক্লপাটলার্কঃ
। ইতি জটাধরঃ ৷৷

শ্বেতপিঙ্গঃ পু• সি•হঃ। হেমচন্দ্রঃ।৷

শ্বেতপিঙ্গলঃ পুং সিংহঃ৷ ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ শুক্লকপিলবর্ণ-যুক্তে ত্রি॥

শ্বেতপিঙ্গলকঃ পুণ সিংহঃ। ইতি শব্দমালা।।।

শ্বেতপিঞ্জীতকঃ পু॰ মহাপিঞ্জী-তরুঃ। ইতি রাজনির্ঘক্টঃ ৷৷

শ্বেতপুষ্ণঃ পু্ সিন্ধুবারবৃক্ষঃ । ইতি জটাধরঃ রাজনির্ঘণ্টশ্চ ।। শুক্লসসুমে ক্লী ।।

শ্বেতপুষ্পকঃ পু॰ করবীরবৃক্ষঃ। ইতিরাজনির্ঘক্তঃ।৷ শুক্লপুষ্প-যুক্তে ত্রি ॥

শ্বেতপুষ্পা স্ত্রী যোষাতকী ৷
শ্বেতঘোষা ইতি ভাষা ৷ ইতি
রত্নমালা ৷৷ নাগদন্তী ৷৷ মৃপের্বারুঃ ৷ ইতি রাজনির্বন্টঃ ৷৷
শ্বেতপুষ্পিকা স্ত্রী পুরুদারী ৷৷

শ্বেতরা

महाननभूष्टिका। इंडि রাজ-নির্ঘন্টঃ।।

শ্বেতপ্রসূনকঃ পুণ বৃক্ষবিশেষঃ।

মথা। তিক্তঃ শাকতরুঃ সেতুবৃক্ষঃ শ্বেতপ্রসূনকঃ। ইতি শব্দমালা।৷ শুক্রপুস্পরুক্তে ত্রি ॥
শ্বেতপ্রগা স্ত্রী শ্বেতাপরাজিতা।
ইতি রত্নমালা॥

শেতমন্দারকঃ পুণ বৃক্ষবিশেষঃ।
শেতআক ইতি হিন্দীভাষা।
তৎপর্য্যাযঃ। পৃথীদ্বরবকঃ ২
দীর্ঘাযুষ্যঃ ৩ সিতালকঃ ৪ দীর্যালকঃ ৫ সিতাহ্বয়ঃ ৬। ইতি
রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

শ্বেতমরিচণ ক্রী শোভাঞ্জনবীজণ ৷ ইত্যমরঃ ৷৷ শুক্রমরিচঞ্চ ৷৷
শ্বেতমালঃ পুণ মেয়ঃ ৷৷ ধূমঃ ৷
ইতি বিশ্বঃ ৷৷ মেদিনী শব্দরত্নাবল্যোঃ শ্বতমাল ইতি পাঠঃ ৷৷
শ্বেতরক্তঃ পুণ পাটলবর্ণঃ ৷ গোলাবীরঙ্গ ইতি ভাষা ৷ ইত্যমরঃ
শ্বেতরঞ্জনণ ক্রী সীসকণ ৷ ইতি
কেচিৎ ৷৷
শ্বেতর্থঃ পুণ শুক্রগ্রহঃ ৷ ইতি শ-

त्यवत्यः पूर् खळ्ळारः। राज म-सत्रज्ञावनी।। खक्रवर्गग्रम्पनम्ह त्यवताकी ज्वी हत्ह्या। देखि ताक्रनिर्यण्डः।। শ্বেভব

त्थल्यािकः श्रः ह्याः। र्नायुथः॥

শেতরোহিতঃ পু॰ বৃক্ষ বিশেষঃ।
শেতরোহিত ইতি হিন্দীভাষা।
তৎপর্যায়ঃ। সিতপুলাঃ ২ সি
তাহ্বয়ঃ ৩ সিতাহ্বঃ ৪ শুক্ররোহিতঃ ৫ লক্ষীবান্ ৬ জনবক্লভঃ ৭। অস্য গুণাঃ। কটুত্বং।
সিশ্বন্থং। ক্ষায়ত্বং। সুশীত্বাত্বং। ক্ষমিদোষ ত্রণ প্লীহ রক্ত
নেত্রাময় নাশিত্বশুং। ইতি রাজনির্ঘণীঃ।।

শ্বেতলোধুঃ পু• পটিকালোধুঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শ্বেত্বচা স্ত্রী অতিবিষা। শুক্লবচা। শাদাবচ্ইতি ভাষা। তৎ
পর্যায়ঃ। মেধ্যা ২ ষড্গ্রন্থা ৩
দীর্ষপত্রিকাপ্ত তীক্ষণন্ধা ৫ হৈমবতী ৭ মঙ্গল্যা ৮। অস্যা গুণাঃ
। অতিগুণা ঢাত্বং। মতি মেধাযুঃ
সমৃদ্ধিদত্বং। কফনাশিত্বঞ্চ ।
ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। অন্যক্ষ ।
শরসীকবচা শুক্লা প্রোক্তা হৈমবতীতি সা। হৈমবত্যুদিতা তদক্ষ্লং হস্তি বিশেষভঃ।। তদ্বৎ
বচাবৎ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।
শেতবক্ষলঃ পু্ উভুম্ববৃক্ষঃ।

শ্বেতবৃ

ইতি জটাধরং।। শুরুত্বক্ চ ।।
পুণ চন্দ্রং। ইতি
হেমচন্দ্রং।। অজ্জুনং। ইতি
জটাধরং।। শুরুয়োটকশ্চ ।।
শ্বেতবাসাং পুণ শুরুবস্ত্রধারিসন্ন্যামী। ইতি হ্লাযুধং।। পরিহিতশুক্লবসনে ত্রি।।

শেতবাং পু॰ ইন্দ্রঃ ইতি মুগ্ধ-বোধব্যাকরণ ।।

শ্বেতবাহঃ শ্বু• অজ্জুনঃ।। ইন্দ্রঃ । ইতি কেচিৎ।।

শ্বেতবাহনঃ পুণ চক্রঃ। অজ্জনঃ এইতি মেদিনী ৷৷ সকরঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী ৷৷

শেকবাহী পুণ অজ্নঃ। ইতি
শব্দরত্বাবলী । ইন্দ্রাণ্যাণ স্ত্রী ।।
শেকবৃত্বা স্ত্রী বনতিক্রা। যথা ।
শেকবৃত্বা কপীতস্ত্র বনতিক্রা
বিসর্পিণী । শন্ধিনী চাকচিচ্চা
চ গিরিজা ধূসরচ্ছদা ৷ ইতি
রত্নমালা ।।

শ্বেতবৃহতী ত্রী শুক্লকুদ্রবার্ত্তা-কী ৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷ শ্বেতা ২ শ্বেতমহোটিকা ৩ শ্বেতসিংহী ৪ শ্বেতফলা ৫ শ্বেতবার্ত্তাকিনী ৬ ৷ অস্যা গুণাঃ ৷ বিজ্ঞেবা শ্বেতবৃহতী বাত শ্লেম্ম বিনা- শিনী। রুচ্যা ব্যঞ্জনখোগেন নানা নেত্রাম্যাপহা।। ইতি রাজনির্ঘক্তঃ।

শ্বেতবৃক্ষঃ পুণ বরুণবৃক্ষঃ। ইতি
রাজনির্ঘন্তঃ। শুক্লভরুক্ত।।
শ্বেতশরপুঞ্জা ক্রী ক্ষুপবিশেষঃ।
শ্বেতশরকোঁকা ইতি হিন্দীভান্
বা। তৎপর্যায়ঃ। সিতশাষকা
২ সিতপুঞ্জা ও শ্বেতপুঞ্জা ৪
শুভুপুঞ্জা ও অস্যা গুলাঃ। ক্রন্দু ভূপুঞ্জা ও অস্যা গুলাঃ। ক্রন্দু ভূপুঞ্জা ও গোত্যস্বক্ষ । ইতি
রাজনির্ঘন্তঃ।।

শেতশিগৃঃ পুণ শুক্লশোভাঞ্জনঃ।
শাদাশজিনা ইতি ভাষা। তৎপর্যায়ঃ। সৃতীক্ষঃ ২ মুখভঙ্গঃ
৩ সিতাহ্বয়ঃ ৪ সুমূলঃ ৫ শ্বেডমরিচঃ ৬ রোচনঃ ৭ মধূশিগুকঃ
৮। অস্য গুণাঃ। কটুম্বং। তীক্ষমণ। শোফানিলাঙ্গম্বাথা মুখজাড্য নাশিষ্ণ। ক্রচ্যম্বং। দীপনম্বন্ধ। ইতি রাজনির্ধন্টঃ।। শিগুরহ্বল পত্রাণাণ সুরসঃ পরমার্তিহ্বৎ। চক্ষুমাণ শিগুজণ বীজ্ঞণ
তীক্ষোফণ বিষনাশনণ।। অবৃষ্ঠাণ
কফ বাতম্বণ তম্বসোন শিরোর্তিন্ধ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ।।

শেতশিংশপা দ্রী শুক্লশিংশপাবৃক্ষঃ তৎপর্যায়ঃ শ্বেতপত্রাহ
শেতচিল্লিকা ৩ ৷ অস্যা গুলাঃ ৷
তিক্তম্বং শিশিরম্বং ৷ পিত্ত দাহ
নাশিম্বঞ্চ ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷
শেতশুঙ্কঃ পুং যবঃ ৷ ইতি জটাধরঃ ৷৷ শুক্লশুক্ল ত্রি ৷৷
শ্বেতশূরণঃ পুং বনশূরণঃ ৷ ইতি
রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷
শেতসর্পঃ পং বক্ষরেক্ষঃ ৷ ইতি

শ্বেতসর্পঃ পুণ বরুণবৃক্ষঃ। ইভি জটাধরঃ।। শুক্লবর্ণাহিশ্চ।। শ্বেতসারঃ পুণ খদিরঃ। ইভি জটাধরঃ।।

শেতসুরসা স্ত্রী শুক্লশেকালিকা । ইত্যমরঃ।।

শ্বেতম্পদা স্ত্রী অপরাজিতা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শ্বেতহয়ঃ পুণ ইন্দ্রাশ্বঃ। ইতি
ক্রিকাণ্ডশেষঃ।। অর্জ্জনঃ। ইতি
হেমচন্দ্রঃ। শুক্লবর্গবোটকশ্চ।।
শ্বেতহন্তী পুণ ঐরাবতঃ। ইতি
ভূরিপ্রযোগঃ॥ শুক্লমজশ্চ।।
শ্বেতা স্ত্রী বরাটিকা।। কাঠপাটলা।। শুজিনী। ইতি মেদিনী।। অতিবিধা। ইতি রত্নমালা।। অপরাজিতা।। শ্বেতবৃহতী।। শ্বেতকন্টকারী।।

नायानरञ्जी।। निवादकवा।। त्थि जर्बा ॥ व भद्राहमा ॥ क्ती। भक्ता। वृक्तराः। किना देखि कहा दिली ভাষা তৎপর্য্যায়ঃ চুরিকা-পত্ৰী ২ পৰ্যমূলা ৩ অবিপ্ৰিষা ৪ । जमा ७१। जिम्बूतपः। भीजनवः। खनामाञ्खः। क्रि কারিত্বক। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। শ্বেভাত্তিবৃৎ স্ত্ৰী শুক্লত্তিবৃতা । সাদাতেউডী ইতি ভাষা। তৎ-পর্য্যাবঃ। ত্রিভণ্ডী ২ ত্রিবৃতা ৩ ত্ৰিপুটা ৪ সৰ্বানুভূতী ৫ সরলা ७ निर्माखद्रा १ देत्रहनी ৮ १ व्यमा श्वनाः। त्रहनदः। सामू-प्रश উक्षप्रश मभीत शिखब्रत ল্লেম পিত্ত শোখোদর নাশিত্ব । ৰক্ষত্বক্ষ। ইতি ভাবপ্ৰকাশঃ।। শ্বেতান্লিঃ স্ত্রী কুপবিশেষঃ। তৎ-পর্য্যায়ঃ। অম্লিকা ২ পিক্টোডী ৩ পিণ্ডিকা ৪। অস্যা গুণাঃ। । यध्तपः। व्यापः। शिखनानि-षः। वनमाञ्चकः। ইতি রাজ-निर्घन्द्रः ॥,

শ্বেতার্কঃ পুণ শুক্লার্কবৃক্ষঃ। সা-দাআকন্দ ইতি ভাষা। তৎ-পর্ব্যায়ঃ। তপনঃ ২ শ্বেতঃ ৩ প্রতাপঃ ৪ সিতার্ক্তকঃ ৫ শর্করাপুষ্পঃ ৬ বৃত্তমল্লিকা ৭ ৷ অস্য
গুণাঃ ! কটুত্ব ৷ তিক্তত্ব ৷ উফত্ব ৷ মলশোধনকারকত্ব ৷
মূত্রক্ত্বাসু শোকার্ত্তি ব্রণদোষ বিনাশনত্বক ৷ ইতি রাজনির্বন্টঃ ৷৷

শ্বেতাবরঃ পু॰ সিতাবরশাকঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। শ্বেতাহ্বা ন্ত্রী সিতপাটলা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শ্বেতেক্ষু: পুণ শুক্লবর্ণেক্ষু: । সাদাআকু ইতি ভাষা । তৎপর্যায়ঃ
। সিতেক্ষু: ২ কোপ্তেক্ষু: ৩ বংশপল্রকঃ ৪ সুবেশঃ ৫ পাণ্ডুরেক্ষু:
৬ ৷ অস্য গুণাঃ ৷ কঠিনত্বং ৷
রুচ্যত্বং ৷ গুরুত্বং ৷ কক মূত্রকারিত্বং ৷ দীপনত্বং ৷ পিত্ত দাহ
নাশিত্বং ৷ বিপাকে কোঞ্চলত্বং
। ইতি রাজনির্যন্টঃ ৷৷

শেতোদরঃ পুণ সবেরঃ ৷ ইতি
ত্তিকাগুশেষঃ ৷৷ শুক্রবর্ণজঠরশ্চ
শেত্তা ক্লী শিত্রা ইত্যামরটীকা ৷৷
শেতোহী স্ত্রী ইন্দ্রাণী ৷ ইতি
দুশ্ধবোধব্যাকরণ ৷৷
শোবদীয়া ত্তি মঙ্গল ৷ ইতি

শ্বোবসীযঃ ত্রি মঙ্গল°। ইতি হেমচন্দ্রঃ।৷ र मूर्कनायकातः। मञ् এकश-ঞাশন্বণান্তর্গত সপ্তচদারিংশ বৰ্ণঃ। চতুন্ত্ৰি॰শহাঞ্চনান্তৰ্গত একত্রি॰শত্তম ব্যঞ্চনঞ্চ। স্যোচ্চারণস্থান মূর্কা। ইতি वार्कद्रवः॥ छ० भर्यभयः। यः শেতো > বাস্দেবশ্চ ২ পীঙা ৩ था**छ। ६ विनायकः ६ श**द्रस्मिष्ठी .৬ বামবাহুঃ ৭ ভ্রেষ্টো ৮ গর্জ विस्माहनः २ लट्याम्ट्या ३० य-स्मोरजभः ३३ काम श्रुक् ३३ का-মধুমকং ১৩ সুশ্রীঃ ১৪: উশ্বা ১৫: वृर्षा ১७ **लका ५१** मक्रस्क्रमः ১৮ প্রিমঃ ১৯ শিবঃ २० সূর্য্যাত্ম। ২১ জঠরঃ ২২ কোষো ২৩ মন্তা २८ क्टका २७ विमातिनी २७ कनकरका २१ मशका २५ युकाशा २२ यहाशूः ७० नितः ৩১। ইতি ভন্ত।। 🙌 व्यशि 🖂 ষকারঃ শেত আখ্যাতো মূধ্ব ন্যোবৃষ সংজ্ঞকঃ। পিত্তঃ শক্তি-**क्ट गाया ह गशास्त्रानिः श्रविन्तृ** নৎ। ইতি মন্ত্ৰাভিধান ।। 🖝।। चना बन्तर यथा। बकातः मृन् চাर्वित्र अस्टेरकानमयः महा। द्रः ক্তচন্দ্র প্রতীকাশ স্বয়ণ পর্ম-সঙলী।। চতুৰ্গিনষ• বর্ণ• সুধা- 🛚 ষঃ

निर्मिष्ठ विश्रहः। शक्राप्तवषयः वर्गः शक्यानमयः मताना तकः সত্ত্ব তমো যুক্তণ ত্ৰিশক্তি সহিত সদা। ত্রিবিন্দু সহিত বর্ণ আ-शानि छद्य मध्यूष्ण।। मर्वतन्य-यर° दर्श समि जात्य পाईछि । ইতি কামধেনুতন্ত্র• ৷৷ 🗰 ৷৷ অপি চাঃ স্বন্ধিতা বামতো দক্ষগতা চ গোহুতি স্তৃধঃ ৷ূপুনৰৰ্দ্ধু-গতা ভাসু ৰক্লি চন্দ্ৰ দিবাৰুৱাঃ ৷৷ মাত্রা ভবানী বিজেষা ধ্যান মস্য প্রচক্ষ্যতে। ইতি বর্ণো-क्तांत्रञ्ज भा 🕬 । ज्या शांन भा यथा। চতুর্জা চকোরাকী। চারুচন্দন চর্চিতা শুক্লবর্ণা ত্রিনখনাণ বরদাঞ্চ শুর্চিস্মিতাণ ৷ রত্নালকার ভ্যাত্যা শেক मालगाभरमाण्डिला । । । । । । । লৈ রভিবন্দ্যাণ সেবিতাশ মো-ককাজিকভিগ। এব গ্যাছা स কারন্ত তথ্যন্ত্রণ দশহা ক্রপেৎ া **३**ि बर्गाकात्रञ्जः ॥

सः प्रः काः। देखः स्मिनी ॥ मानवः॥ मर्दः॥ (अर्थः॥ गर्छ-विस्माननः। देखि कन्हिलका-क्युटकायः॥

यः वि विष्यः॥ (अर्थः। देखि

(यमिनी १।

सश म अ अश्वा । ই कि कि वि-विकास । मिस्सि पूर्णामां नः ।। सम म हि॰ दम। ই कि कि विक न्न-के कि पूर्णामां नः ।। स्व अ दमहरम। ই कि कि विक न्न-के कि पूर्णामां नः ।। स्व अ दमहरम। ই कि कि कि निक न्न-का का ।। अमहरक के निक ने कि ने ने ने ने ।। स्व अश्वा । ই कि कि विक ने ने ने ने ने ।। स्व अश्वा । ই कि कि विक ने ने ने ने ने ।। स्व अश्वा । ই कि कि विक ने ने ने ने ने ।। स्व अश्वा । इ कि कि विक ने ने ने ने ।। स्व अश्वा ने । ह कि कि विक ने ने ने ।। स्व अश्वा ने । ह कि कि विक ने ने ने ।।

দুর্গাদাসঃ ।।

ষট্ ত্রি সংখ্যাবিশেবং। ছব ইতি
ভাষা। তদাচকানি যথা। বজুকোণঃ ১ ত্রিশিরোনেত্রণ ২ ত্রকঃ
৩ অঙ্গং ৪ দর্শনং ৫ চক্রবর্ত্তী ৬
কার্ত্তিকেয়নুখণ ৭ গুণঃ ৮ রসঃ
১ খাতুঃ ১০ জরবাহুঃ ১১ ব্রুপণ
১২। ইতি কবিক্রনতা।।

ষটুকর্ম্ম ক্রী ষট্প্রকারশাস্ত্যাদি-

कर्मा यथा भात्रतायाः। जया-

ভিধাস্যে তন্ত্রে ২ সিন্ সমাক্

सर्क्य लकन्। मर्वज्ञानुमाः

द्भिन প্রযোগঃ ফলসিদ্ধিদঃ॥ শা-স্তি বশ্য স্তম্ভনানি বিদেষোচ্চাট-নে ততঃ৷ যারণাস্তানি সংশস্তি ষ-ট্কর্মাণি মনীষিণঃ।। রোগ রুত্যা এহাদীনা নিরাশঃ শান্তি রীরি-छ। वनाः कनानाः मर्दिशः विरथ-यद्र मृतीत्रिष्णा अवृर्खित्वाधः मर्दि-ষা স্তম্ভন তদুদাহত। সিগ্ধানা ক্লেশজনন• মিথো বিদ্বেষণ মত• श छक्षावेन यतनगातन जुर्नन পরিকীর্বিত । প্রাণিনা প্রাণ-र्तन भातन छन्ना रूक ॥ यस-वठा मिकाणामीन खाषा कर्यानि সাধ্যেৎ। রতি বাণী রুমা জ্যে-ष्ठी मूर्या काली वशाक्रमणा यहे-কৰ্ম দেবতাঃ প্ৰোক্তাঃ কুৰ্মাদৌ তাঃ প্রশৃজ্ববেৎ। ঈশ চন্দ্রেন্দ্র निर्श्वि वांचुशीना भित्ना गठाः॥ সূর্ব্যোদক সমারভ্য বটিকাদশ-ক ক্ৰমাৰ ে ঋতবং স্য ৰ্বসন্তা-माः चएशतावः मित्न मित्न॥ वमञ्जीम वर्षाथा भतरक्षमञ्ज শৈশিরাঃ। যদা। অধ্বরাত্রণ শ-**রৎকালো হেমন্ত**শ্চ প্রভাতকঃ।। পূৰ্বাক্লশ্চ বসন্তঃ স্যাৎ মধ্যাক্লো ত্রীম এব চ। প্রাবৃত্তুপো ২প-রাক্ল: স্যাৎ প্রদোষ: শিশির:

न्त्रृजः ॥ जयवा। উरवास्वारम ह হেমন্তঃ প্রভাতে শিশিরাগমঃ॥ প্রহরার্জে বসন্তঃ স্যাৎ জীমে। यशानिनागत्य । जूरीवात्य ह বর্ষাখ্যঃ শরদস্ত গতে রবৌ ॥ 🛊॥ অথ কালনিষ্মঃ। হেমন্তঃ শা-ন্তিকে প্রোক্তো <mark>বসন্তে। বশ্যক</mark> র্মাণ। শিশির স্তম্ভনে প্রোক্তো বিদেষে গ্রীম এব চ।। প্রাবৃডুক্চা-টনে জ্রেষা শরন্মারণ কর্মণি াঞা অথ তিথিনিষমঃ। পঞ্মী চ দ্বি-তীয়া চ ভূতীয়া সপ্তমী তথা। বু-ধেজ্যবার সংযুক্তা বিজ্ঞেষা দ্বেষ-कर्मान ॥ क्रकाठजुमें नी जवमके मी यन्तरात्रकाः। উक्राव्टिनः छिथिः শস্তা প্রদোবে চ বিশেষজঃা৷ চ-जूर्नगरुमी क्या जमानामा ज-থৈব চ। মন্দ ভৌমদিনোপেতা শস্ত। মারণকর্মণি।।. বুব চন্দ্রদি-**तात्मठा गक्ष्मी मगमी ज्या।** পৌৰ্ণমাসী ভূ বিজ্ঞেকা ডিপ্টি স্ত-खन कर्माणा। **७७** अट्रामस्य म-ৰ্য্যাৎ শুভানি চ শুভোদরে। রৌ দকর্মাণি রিক্তার্কে মৃত্যুদে। रि ह मात्रव । । । जिल्ले शूर्वमू-(था वर्णा मिक्क्षां जिलाबरक । পশ্চিমে স্তম্ভন॰ বিদ্যাৎ উত্তরে

শান্তিক ভবেৎ ৷৷ আকর্ষণ ম-थारमर्य दैनम् रङ मात्रमः छथा। উচ্চাটনম্ব বাষব্যেঞ্জশান্যাণ্মো-क्रमायक ।। क्षा उपाछिहादत का-ৰ্য্যাচ দক্ষিৰাপ্লবনা মহী। বসম লোহিত প্রোক্ত উফীশ লো-হিত শ্বৃত ৷৷ ভূষণ লৌহ জব্যে- ग वात्मन शृक्जनानिकः। नत्नाम् বিশেষেণ মারণে রজ্জু রীরিতা।। **ग्**ठमा यूक्त भूनामा मखमा गर्फ-ভস্য বা। ক্রত্বাক্ষণলাণ জপ্তব্যণ শত্ৰুণা॰ বধ বিচ্ছতা।। ভশ্নেভ দস্ত মৰিভি জপেদাকৰ্ষকৰ্মাণ। সাধ্য-কেশ সূত্র প্রোতৈ স্তরঙ্গদশনো-खटेवः॥ जन्मानाः नमाटनाका বিদ্বেষোচ্চাটনে জপেৎ। 🛊। গ-দ্মান্দ স্বস্তিক ভূষে। বিকট স্ব-क्ष्रि॰ भूनः॥ विकु॰ ভप्रक विका र ज्ञाननानि गनीविनः। श्रामान-मञ्जारवाका जानृत्वी त्रस्रत करते।। निर्देश जुटमो मञ्जाना **त्यानक अक्**टोमन । जनगिन वक्कवानि ॥ अ। यशुकाः कम-তো ত্তেকাঃ পদ্ম পাশ গদাহ্বয়াঃ । युरलामनि थमा थाः मास्टिका-षिषु कर्षाम् ॥ **जनः ना**खितिरशे শক্ত[,] वरमा बङ्कि ऋमीत्रिञ्ः। **ज्या**

त्म शृषिषी मन्त्रा विरष्टर द्याप की खिना । अका छेटन मृत्वा वा मृ **ज्**रियामि चात्राय प्रकार छन्छ-क्लामर्स नमाक् छखन्नधन नग्य ভ ।। তত্তৎ কর্ম বিশাতব্য म ্ত্রিণা নিশ্চিতাত্মনা ৷ 🏶 । শীতা•-ए निलक्ने नी त्याम वायू इवि र्ञुका ।। वर्भाः मू र्भष्ठवीकानि विहेक्स्रम् यथाक्रमः। अथनक विषद्धिक मःभूटो द्वारनः छथा॥ ষোগঃ পল্লব ইভ্যেতে বিন্যাসাঃ यऐनु कर्यम्। याखानी खतिषान् कः ग्रारमाश वर्गान् वर्गाविधि॥ अ খন তিজ্জানীয়াৎ প্রশস্ত শা-স্তিকৰ্মণি। মন্ত্ৰাৰ্ণন্বৰ মধ্যস্থ সা-श नामाक्तव्र नित्थं ९११ विषर्द्ध এय विख्करमा मिखि ईमाकर्मान । আদাৰন্ডে চ মন্ত্ৰঃ স্যান্ধায়া ২সৌ मः भूष्टः ग्रृष्ठः ॥ এव मा। ९ खस-নে শস্ত ইত্যুক্তো মন্ত্রবেদিভিঃ। नाम चामाख मरशायू मछः गा।-**C**जाथन॰ यंज्ञ ॥ विट्ययनविधाः तियु थ्रमञ्जभिष मीतिष्ठ । मञ्ज-স্যান্তে ভবেদ্বাম যোগঃ প্রোক্তা-টনে মতঃ ৷৷ অন্তে নাম্নো ভবে-ষ্মন্তঃ পল্লবো মারণে মতঃ। সিত ব্লক্ত পীত মিশ্র ক্লফ ধ্যাঃ প্রকী

র্ত্তিতা:।। বর্ণতো মন্ত্র সংপ্রোক্তা দেবতাঃ বট্সু কর্মাসু । ৩) মন্তাপাণ লিখনজব্য চলন রোচন নি-भा ॥ शृर्ध्य हिलाकादती यात्रत २केविवानि हा त्यानाधित्वाव **शिकानिश्ख्रकंत्रम ख**ण्डः ॥ शृह-ধূম স্ত্রিকটুক বিষাষ্টক মিতীরি-७ । प्रवंश काल मूजामीन् म-भाक् छाषा विष्ठकनः॥ यहेकसी-ণি প্রযুঞ্জীত কথোক্ত ফলসিদ্ধষে 1 **७**। উक्राउटन वयत् थ्याकः द् কডন্ডশ্চ মারণে। স্তম্ভনে চ নমঃ প্ৰোক্ত ৰাহা শান্তিক পৌষ্টিকে ।। हाम छर्पनत्याः चारा नाम পূজনযো वंगः। यखारख याज-रंग्रेखी ज्लाकाटन यथान्त्रि ॥ অস্যার্থ: এতানি তত্তৎকর্মণি জপকালে সম্ভ্রান্তে যোজযিত্বা ম-ন্ত্ৰ॰ জপেৎ। হোমাদিবু নাব॰ নিষমঃ। হোম ইতি কশ্চিৎ তন্ন । অগ্নিকার্য্যে জপেৎ স্বাহা নমঃ সূৰ্বত চাৰ্চনে। শান্তি পৃথ্টি বশ দ্বেষাকর্ষোচ্চাটন মারণে ৷ স্বাহা স্বধা বষট্ হৃঞ্চ বৌষট্ ফট্ যোজ-सब्द क्या । वन्याकर्यन मञ्जान ৰূরে স্বাহা প্রকীর্ত্তিতা।৷ ক্রোধো-পশমনে শাস্তো প্রীতৌ ষোজ্যণ

नत्या वृदेशः। (वोषष्ट् नत्या र-नाकीय श्रि मृज्यक्षरायू ह।। হুঁ কারণ প্রীতিনাশে চ মারণে क्ट्रिंग्स ज्था। **जेका** व्हेन ह वि-(बर्य वय ऐ शब्रुक्सर्छ) वय ऐ ॥ भ-खाफीशनकांर्याम् वाञावारञ वसरे सृष्टः। ইতি विटमयवहना-क्लारम नाय॰ विश्विः। **क्का ना**खि-कारमे मञ्जलिथन शङ्गामि निरम স্তত্রৈব। শান্তিকে রাজত তামুণ ভূর্জপত্রঞ্চ বশ্যকে। **সর্বকার্য্যে**ষু সৌবর্গ ক্রুরে স্যাৎ প্রেতকর্গ ট ।। ত্রিগন্ধ• শান্তিকে প্রোক্ত• গ-ঞ্গন্ধন্ত বশ্যকে। সর্বকার্য্যে ২ফ গন্ধঃ স্যাৎ ক্রুরে চাষ্ট বিষাণি চ ॥ भाष्ठिक लिथनी मुर्वा वन्गा-দৌ শিথিপুচ্ছিকা। ছেমা সৰ্বাণি কার্য্যাণি ক্রুরে স্যাৎ কাকপুচ্ছি-का ॥ भृत्रम् भाष्टिकर्मा मा । ६ বশ্যঞ্চ ভিকাগৃহে। দেবালফে চ সৰ্বাণি ঋশানে কুরকর্ম চ ।। 🟶 ।। अथ जृठाना मूनसः। দণ্ডাকারা গতি ভূমেঃ পুটযো রুভযো রপি। তোষস্য পাবক-স্যোৰ্দ্ধে গতি স্তিৰ্ধ্যক্ নভম্বতঃ॥ গতি র্ব্যামো ভবেমধ্যে ভূতানা मूलयः स्मृतः। धत्रत्न क्रमत्य अ-

যাঁৎ ভদ্তন বশ্য মাদ্যবিৎ।। শান্তিক পৌষ্টিক কৰ্ম তোষ मा मगरम वरमाः। यात्रवामीनि मक्रा विशक्ताका हैना नित्क । क्लिजिनिग्यत्न मेख बृहत्य চ বিহাৰসঃ। জা অথ ভূতা**না** यखनानि। वृख पित छ । य-ড্বিন্দুলাঞ্ছিত মাতরিশ্বনঃ।। ত্ৰিকোণ স্বস্তিকোপেত ৰহে **त्रर्षिन्म् मःयूजः। जा**खाक मस्र-সো ভূমে শ্চতুরসু• সবজুক•॥ তত্তভূত সমাভানি মণ্ডলানি विषू र्बुथाः। वर्देशः देखः त्रिक्षिणा-ন্যাহঃ স্ব স্ব নামাবৃতান্যপি॥ স্বয়ণ বিয়ৎ মরুৎ রুফো রক্তো-গ্নি ৰিষদ প্ৰথা পীড়া ভূতা-मि **अर्यागानस्तर** जनार्गत् । একলক্ষণ জপেমন্ত্রণ ধ্যান ন্যা-স সমন্বিত । প্রযোগ দোষশা-স্তার্থ নাত্মরকার্থ কারণ ।৷ ন-চেৎ कनक नात्रािं एंतरण भाग माभूषाः। यखु। न भर्छः মারণ কর্ম স্ব্যাচ্চেদ্যুত জ-পেৎ। তৎ প্রাযশ্চিত্তপর । ইতি তন্ত্রসারঃ ॥ यहेकर्मा पू• यागानि अर्यूजा

बाक्षनः। ইত্যमतः॥ তথা চ।

इक्राधास्य सामाम मान्या। शांशत्य छथा । श्रीतिश्रक हैंड जुक्तः यहे कर्मा विश्व किहार ॥ यहे कर्माभमा हैंडि क्वीहिः । हेडि ज्वाठः ॥

वर्ष्ट्री की टेजरवीविटमसः। यथा। अथ रहेकृत्रोट जत्री। **डाकिनी दाकिनी वीट्ड मार्कि** नी काकिनीयूगः। याकिनी श-কিনী বীজে আহ্ত্য সুরসুন্দরি য়। আদ্য মৈকার সংযুক্ত মন্য-দীকার মণ্ডিত । শক্র স্বরান্বিত দেবি তাত্ৰীয় বীজ মালিখেৎ ।। বিন্দু নাদ কলাক্রান্তণ ত্রিত্যণ रेगनमञ्जरत । তৃতीय तीकः म-বিসর্গণ ইত্যপি কেচিৎ। তন্ত্রা-ন্তরে। উরৌ স্বা মাদনণ জীবণ শিব মত্র ত্রিধা লিখেৎ। অর্কেণ <u>মাষা শক্রাভ্যাণ ক্রমাত্তণ মণ্ডি-</u> ত॰ ঙ্গরু॥ বিন্দুনাদাস্বিত॰ চাদ্য-ছষ মন্ত্যে বিদর্গবৎ। ধ্যান ম-স্যাঃ প্ৰবক্ষ্যামি সৰ্বভূতনিক্সন্ত-ন ৷৷ বালসূষ্যপ্রভা দেবী জ वाक्रमूम महिलाः। मूखमानाव-লীর্ম্যাণ বলিসূর্য্য সমাণগুকাণ ।। সুবর্ণকলসাকার পীনোমভ शरवाधवाः। शामान्द्रमो भूख-

क्ष उप इक्षणमानिकां।। म-विश्वासिक्षियः ॥ न्यण्यानि विवास शतरमश्रति । ं यद्य यम्मा बन्नाद्मारः जिर्दैकावः **७९ भू छै॰ नि**एंष ।। यह त्रकेन-**ল॰** পদ্ম॰ রবিপত্র• ততে৷ লি-েখে । চতুরসু॰ চতুর্দ্ধার মেব॰ मखन मानिएथ ।। यङका त्रनः पार्वि शुक्रस्थ शृर्वविक्ट्रित । त्र-छानि विजयः पिति विकास পরিপুজ্যেৎ। ডাকিন্যাদ্যা-শ্চ ষট্কোণে রসুপত্রে ততঃ পর•৷ বান্ধ্যাদি ৰুগল• পশ্চা-ভবিপজে ততঃ পরণ ৷৷ বালা-ষাঃ পীঠশকীস্ত বামাদ্যাঃ পূ-करंष क्या । ठजूत्रामु ला क्लामान मायूधान् लद्रतमश्रदि ।। অনেনৈৰ বিধানেন নিত্যা-খ্যাণ তৈরবীণ বজেৎ। ইতি তন্ত্রসারঃ 🛚

ষট্কোণ' ক্লী লগ্নাৎষষ্ঠগৃহণ।
ততু রিপুস্থানণ। যথা। পাতাল' হিবুক' চৈব সুস্থদম্ভ শুত্থকণা ত্রি ত্রিকোণঞ্চ নবমণ দুশিচকাণ স্যাৎ ভৃতীযকণা। খীস্থানণ পঞ্চমণ জ্রেয়ণ যামিত্রণ সপ্রমণ স্মৃতণ। দ্যুনণ দ্যুনণ তথা-

স্তাখ্য ষট্কোণ রিপুষন্দির ।। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব॰।। 🗰 ।। विकु । ইতি রাজনির্বন্টঃ ॥ य **७**जुः। यथा गर्**० नयञ**ः। वीकः यहेरकान मरना ऋतमनन पूरत তারগণ দিকু লক্ষীঃ মাষা কন্দ-প্ভূমি স্তদন্ রসপুটেয়ালিখে-षीक्षर्कः। ইতি जन्नमातः॥ ষট্চক্র॰ ক্লী শরীরস্থপদ্মাকার-ষট্প্রকারচক্রণ। **ষথা। সপ্তগ**-দ্মানি তত্ত্ৰৈব সন্তি লোকা ইব প্রভো। গুদে পৃথীসম চক্রণ হরিদ্বর্ণ চতুর্দলে।। লিঙ্গে তু ষড্দল চক্ৰ স্বাধিষ্ঠান মিতি त्रृष्ठः। जिल्लाक रङ्गि निनयः তপ্তচামীকরপ্রভ ৷৷ নাভৌ मभारतः ठळः ऋखनिमा नम-ষিত[ে]। নীলাঞ্জননিভ[®] ব্ৰশ্ন-ञ्चानः পূर्वक मन्त्रितः ॥ मनिशृ-রাভিধ স্বচ্ছ জলস্থান প্রকী-র্ত্তিত। উদ্যদাদিত্য সংকাশণ হদি চক্ৰ মনাহত ৷৷ সম্ভকাখ্য • कामगातः देवकवः वाय्यनितः। কণ্ঠে বিশুদ্ধ শরণ যোডশারণ भूदतामय ।। भाखवी वत्रहळा-খ্য॰ চন্দ্রবিন্দু বিভূষিত । বন্ধ মাজ্ঞালষ চক্র দিদল শ্বেত

মুত্তম ।। ধারাচক মিতিখ্যাত यनः ज्ञानः श्रकीर्खिष्ठः । मर्जुः দল মেকার্ণ পরমাত্ম প্রকাশ-কণা নিত্যজ্ঞানম্য সত্যু সহ-मुामिछा मिष्णा। यहेठकानीश **ভেদ্যানি নৈতন্তেদ্য॰ কথঞ্চন।।** ইতি পাদ্মে স্বৰ্গখণ্ডে ২৭ অধ্যামঃ ।। ।। অন্যক্ত। তত্ত্বৰূপ মেক ७९ षऍठक॰ প্রতি লক্ষ্যেৎ । ষট্চক্ৰেপি মহামাষা কণ ধ্যা-वा अयञ्जलः ।। नायरयमृनमस्यन আদি ষোডশ চক্রকং। আদি ধোডশচক্রস্থাণ সাধকানন্দকারি-**बी॰।। চিন্তযন্ সাধকো দেবী॰** জপকর্ম সমারতেৎ। ভ্রুবোরু-পরি নাডীনাণ ত্রষাণাণ প্রান্ত উ-চ্যতে।। তৎ প্রান্ত ত্রিপথস্থান यहें (कान हजूत्र मूल । त्रक्त वर्ष যোগজৈ রাজাচক্র মিতীরিত ।। কঠে ত্রয়াণা নাডীনা বেষ্ট-ন॰ বিদ্যতে নৃণা॰। সুসুদ্ধেতা পি-क्लाना॰ वर्ष्कान ७९ वज्रून॰ ।। তৎ ষট্চক্ৰ মিভি প্ৰোক্তণ শু-ক্ল॰ কণ্ঠদ্য মধ্যগ॰। ত্ৰষাণা মথ नाजीना॰ श्रमत्य टेहक्डा छत्व ॥ তৎ স্থান যোডশাসু স্যাৎ স-প্তাঙ্গুল প্রমাণতঃ। তৎ পীতমুক্ত

ৰোগতৈ রাদি বোডশচকক ।। খ্যানাৰা ৰথ মন্ত্ৰাণাণ চিন্তনস্য क्लभग है। यन्त्रामानाक रूपव॰ ভত্মাদাদীতিগদ্যতে ৷৷ ইতি কা-**विकान्द्रार** ६८ व्यथायः ॥ 🛊 ॥ .व्यथत्रकः। यूनावादा ত্রিকোণা-(श) इंड्रा छान किया शक । बद्धः चर्छ वित्रष्ठ काणिमूर्याम-मध्यक्ता छम्टर्क् कामवीकं इक म भाष्डीम् नामकः। छमृत्कृ जू শিখাকারা সঙলী অন্ধবিগ্রহা।। ভদ্বাহ্যে হেমবর্ণাভ॰ বসবর্ণ চ-**जूमनः।** ज्ञान (इम ममर्थाण) नमा তত विভावरय ।। जम्र्क् श्री ममक्षयाः यज्नलः श्रीतकः **क्षञः। बामिमाञ्च यज्ञत्नं यूका**-।। विश्वेन मण्डकः ॥ मूल माधात व-ট্কানা॰ মূলাধার॰ ততো বিদুঃ। **ৰ শব্দেন পর• লিঙ্গ• স্বাধিষ্ঠান• ততো वि**ष्रुः॥ ठक्ष्क् नाजित्त-শে জু মণিপূর মহৎপ্রভণ মে-बाख॰ विम्रामां छक्ष वहर छ छ। य-ৰ ততঃ।। মণিবন্তিন তৎপদ্ম ৰণিপুর তথোচ্যতে। দশভি শ্চ-দলৈ ৰ্কুক্ত ডাদিফান্তাক্ষরাম্বিত ।। শিবেনাষিষ্ঠিত পদ্ম বিশ্ব-लारेकककात्रणः। छमूर्ष्कु श्ना-

হত পদা মুদ্যদাদিত্য সন্নিভ ॥ कामिठा खाकरेत्र तर्कशरेखक म-মধিষ্ঠিত । ভন্মধ্যে বাণলিকস্ত সূর্য্যাযুত সমপ্রভ ।। শব্দ বন্ধ-ময়ণ শব্দো ২নাহত স্তত্ৰ দৃশ্য-তে। তেনাহতাখ্য পদ্ম তৎ মুনিভিঃ পরিকীর্তাতে ॥ আ-নন্দসদন তত্ত্ব পুরুষাধিষ্ঠিত। **পর•। তদুর্দ্দম্ভ বিশুদ্ধাখ্য• দল** ষোডশগৰুজ ।। স্বরৈঃ যোড-শকৈ ৰ্যুক্তণ ধুমুবৰ্ণ মহৎপ্ৰভণ । বিশুদ্ধি তনুতে যত্মাৎ জীব-मा इंग्रेटिंगकना ।। विश्वकः পদ্ম মাখ্যাত আকাশাখ্য ম-হৎ পর । আজ্ঞাচক্রণ তদূর্দ্ধে তু আত্মনাধিষ্ঠিত পরণ। আ-ক্তাসংক্রমণ• তত্র শুরো রাজ্ঞে-তি কীৰ্ত্তিত । কৈলাসাধ্য ত-मृत्कृ जू ताधनी ।। এবঞ্চ শিবচক্রাণি প্রোক্তানি তব সুত্রত। সহসারাযুক্ত বিন্দু-श्रानः छमूर्क् मीत्रिजः। ইত্যে-তৎ কথিত সৰ্ব যোগমাৰ্গ ম্-নুত্তম। ইতি তন্ত্রসারঃ।। ষট্চরণঃ পু॰ ভুমরঃ। ইতি হলা-ষুধঃ । যুকা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ बर्गामक ॥

यें क् निक्डिता हिल्ला। मारन ॥ वरन । इंछि क्विकन्न क्तमः॥ मूर्कनानि केषयाखः। ক ষ্ট্যতি লোকঃ ৷ নিবসতি হন্তি বলী স্যাৎ দদাতি বা ইত্য र्थः। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ यहे जिनी बि जमा जिथा तमे जि लकत्रनक यहेकर्माकाती। यथा। **टिताइडी टिनन्नाशी टिन** হোমী তিলপ্ৰদঃ। তিলভুক্ তি-লবাপী চ ষট্তিলী নাবসীদতি ॥ ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব° ॥ ষ্টত্রি॰শৎ স্ত্রী সংখ্যাবিশেষঃ। ছত্রিশ ইতি ভাষা। যথা। আ-ক্লিকচিন্তামণে। আসনাভ্য-ঞ্জনে তদ্বদুৰ্ত্তন বিৰক্ষণে। স मार्ज्जन॰ সর্পিরাদিম্নপনাবাহ-নে তথা ৷৷ পাদ্যাৰ্ঘ্যাচননীয-क जानीय यथु शक्र रको। शून-রাচমনীযঞ্চ বস্ত্র যজ্ঞোপবীত-কে।। অলঙ্কারো গন্ধপুষ্প ধূপ দীপৌ তথৈব চ। তামূলাদিক নৈবেদ্য• পুষ্পাশালা• ভথৈব চ।। অনুলেপশ্চ শ্যা চ চামরব্য-জন তথা। আদর্শদর্শনঞ্চৈব ননকারো খথ নর্ত্তন।। গীত বাদ্যে চ দানানি স্তুতি হোম

थमकिन । मखकार्श्वभानंक ততো দেববিসর্জন ৷৷ উপচা-রা ইমে জেষাঃ ষট্ত্রিণশৎ সূর-পূজনে। ইত্যেকাদশীতত্ত্ব ।। षष्ट्रापः पुः ज्यातः। इज्यातः॥ उष्ट्रनानि यथा। य य ऐ शमा-দ্যাঃ শঙ্গনানি তেবা মাশ্চর্য্য-ৰূপাণি নিৰূপযামঃ। শ্ৰমেত वादमा यिन मञ्जू खञ्जन् शत्नाः-তবা বামদিশ প্রদর্গ আ-वानरयका क्रमूम॰ প্रশস্ত॰ ज्र उना मा प्रमान् अत्यानः। অত্রাপরে সন্তিচ ষট্পদা ষে যাত্রাসু তে বামগতাঃ প্রশস্তাঃ ॥ ইতি বসন্তরাজশাঙ্গনে ষট্-शकाक्यः ३७ वर्गः ॥ कः ॥ युका। ইতি রাজনির্ঘণীঃ।। ষট্চরণশ্চ ষট্পদপ্রিষঃ পুণ নাগকেশরবৃক্ষঃ । ইতি শব্দমালা।। ষট্পদাতিথিঃ পু॰ আম্বৃকঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।। চম্পকঃ । ইতি কেচিৎ॥ यऐशलानन्तवर्क्षनः पूर किःकि-রাতবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। यऐंगमी खी यूंका। इंछ एइम-চন্দ্রঃ।। ভুমরপত্নী চ ।। ষ্টপ্ৰক্তঃ পু॰ কামুকঃ। যথা।

अवश्यक श्री के श्री कर है। अवश्यक स्थापन अवश्यक स्यापन अवश्यक स्थापन अवश्यक स्यापन अवश्यक स्थापन अवश्यक स्यापन अवश्यव स्यापन अव

ति छत्विव ॥ राष्ट्रक की नजीतुमा राष्ट्रवयर । यथा। जल्म राष्ट्र भित्रा मधा ষডক মিদ মুচ্যতে। ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা । াঞ্চা বেদাঙ্গষট্শাস্ত্রা-ণি। যথা। শিক্ষা কল্পো ব্যাক্ষ-রণ॰ নিরুক্ত॰ জ্যোতিষ॰ তথা। ছন্দ শ্চেতি ষডঙ্গানি বেদানাণ বৈদিকা বিদুঃ ৷৷ ইতি শব্দরত্না-वनी।।।।। अभि ह। अञ्चानग्रह শিক্ষাপদ্য•। ছন্দঃ পাদৌ তু বে-দস্য হস্তে) কল্পো ২থ কথ্যতে। জ্যোতিবাম্যনণ নেত্রণ নিরুক্তণ শোত্র মুচ্যতে।। শিক্ষা ঘূাণয় বেদস্য মুখ ব্যাকরণ স্মৃত। তস্মাৎ সাঙ্গ মধীত্যৈব ব্ৰহ্ম **ला**क गरीयांठ !! इंडि डि-থ্যাদিতত্ত্ব॰ ॥ 🐲 ॥ আদ্যশ্রা-कीयनानामशीठामिकः।

त्वाकश्रमिकः ॥ ॥ यहेश्यकीत्रगदाविद्यसः । यथो । दगम्बः
दगम्बः क्रीकः नर्लि प्रंति ह
दगम्बः स्वानः प्रच्याक्ताः
विकास स्वानः प्रच्याक्ताः
विकास स्वानः प्रचानः ॥ देवि
विकास स्वानः स्वानः ॥ देवि
विकास स्वानः स्वानः ।। देवि
विकास स्वानः ।।

ষড়**কঃ পু**ং ক্ষুদ্রগোক্ষুরকঃ। ইতি রাজনির্বণ**ী**

রাজানধন্য ।

বড়ঙ্গজিৎ পুণ বিক্ষুঃ। ইতি শন্দমালা।। বড়ঙ্গজেতরি ত্রি ।।

বড়ভিজ্ঞঃ পুণ বুদ্ধঃ। ইত্যমরঃ।।

বড়শীতিঃ স্ত্রী রবিস্ফুলভিবিশেষঃ। সাতু নিথুন কন্যা ধন্স্মীন রাশিষু ভবতি। যথা। ভ-

विश मार्ना ज्यां िरस्य । मृतं कर्क हे मः का छी प्र कृतलिकः वायता । विस्वकी कृता त्याय त्यां वायता । विस्वकी कृता त्याय त्यां क्यां क्यां

ষডশীতিচক্রণ ক্লী মিথুন কন্যা ধনু শ্রীন রাশিস্বরবেং শুভাশু-ভ ফল জ্ঞানার্থণ নক্ষত্রাঙ্গ নরা-कात्रक्तः। यथा। मूर्य टिकः करत रवनाः भामयूर्य दयः दयः ৷ ক্রোডে বাণ স্তথা বেদাঃ করে সব্যেতরেপি চা। দ্বয়ণ দ্বয়ণ তথা নেত্রে মস্তকে ত্রিত্রণ তথা। দ্যক্ষৈব তথা গুল্লে ষডশীত্যাণ স্বভে স্থিতে ৷৷ মুখে দুঃখ করে-लाजः शामरया ज्रमण श्रमि । काञ्चामाषक्षन॰ वादम श्रञ् স্যাৎ স্বীষভে নৃগা• ।। সন্মান• নেত্ৰযো শৈচৰ অপমানঞ্চ মস্ত-কে। গুহে চৈব ভবেমৃত্যুঃ বড-শীতি ফলশ্রুতিঃ।। ইতি জ্যো-তিস্তত্ত্ব ॥

যড়ফক ক্লী যোগবিশেষঃ।
সতু বর কন্যযোঃ স্ব স্ব রাশ্যপেক্ষযা পরস্পর ষষ্ঠাফমরাশি
সয়ন্ধঃ। স চ নিত্রারিভেদেন
দ্বিধঃ। তত্র নিত্রষড়ফক
যথা। শ্রীপতিরত্নমালাযাণ। মকর সমেত নিথুন কন্যা কল
সৌ মৃগেন্দ্র মীনৌ চ ।। বৃষভ
তুলে অলি নেষৌ কর্ম্ন ট ধনুষী
চ মিত্রবিধৌ।। বড়ফকাবিতি-

শেयः ॥ 🐠 ॥ अतियक्षके नार । मकतः कतिकल तिथुना कना। प्रात्य गर् वाय खन्या। कर्कि षटी वृष धनूषी वृश्विक भिशुतन ठात्रिविरथो।। यमि कैना। खेटम ভর্তা ভর্ত্তঃ ষষ্ঠে চ কন্যকা। ষডফক বিজানীয়াৎ বজ্জিত ত্রিদশৈ রপি ॥ #॥ ষডফক।-দৌ তারানিষম মাহ। ভীমপ-त्राक्रमः। तोश्रामा হ্যভয়ে র্ছযো রপি তযো রৈকাধিপত্যে-পি বা তারা ষট্চ সুমিত্র মিত্র-জনন কেমার্থ সম্পদ্যদি। ষট্কাষ্টে নব পঞ্চকে ব্যুষ ধনে যোগে চ পুং যোষিতোঃ প্রী-ত্যাযুঃ সুখবৃদ্ধি পুষ্টিজনকঃ कार्ट्या विवार छमा ॥ गर्गः। মরণ তার বিরোধে গ্রহ রিপু-ভাবে চিরেণ। রোগাদি নর-नार्स्याः षष्कारके देवतः छत्व-माञ्चा वामः। देमवामि त्या-গেপি ষডফকাদৌ তারা বিপৎ প্রত্যরি নৈধনাখ্যাঃ। বর্জ্যা বি-বাহে পুরুষোড়ুতো হি প্রীতিঃ পরা জন্মসু তারকাসু।। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ৷৷ 🟶 ৷৷ মতান্তর • যথা। সিংহেন মকরঃ শ্রেষ্ঠো

কন্যধা মেষ উত্তমঃ। তুল্যা সহ
মীনস্ত প্ৰত্যেন সহ কর্মটঃ ।।
ধনুষা বৃষভঃ শ্রেপ্তো মিথুনেন
চ বৃশ্চিকঃ। এতৎ ষড্যক
প্রীত্যৈ ভবত্যেব ন সংশযঃ ।।
ইতি গারুডে ৬১ অধ্যাযঃ ।।
ষডক্ষীণঃ পুং মৎস্যঃ। ইতি
কেচিৎ ।।
ষডাননঃ পং কার্ত্রিকেয়ঃ। ইত্যা-

ষ্ডাননঃ পু॰ কার্ত্তিকেষঃ। ইত্যমরঃ ।। তস্য কার্ত্তিকেষনাম
কারণ যথা। অগ্নিপুত্রঃ সমারস্ত শরস্তমে ব্যজাযত। তস্য
শাথো বিশাখন্চ নৈগমেযন্চ
পৃষ্ঠজঃ। অপত্যা ক্রতিকানাঞ্চ
কার্ত্তিকেয় স্ততঃ স্তঃ।। ইতি
মাৎস্যে ৫ অধ্যায়ঃ।।

ষত্ষণ ক্লী মিঞিতষট্কটু জব্য॰
1 যথা। পিপ্ললী মরিচ॰ শুণ্ঠী
ত্রয় মেতদিমিশ্রিভ॰। ত্রিকটু
ত্যুষণ ব্যোষণ কট্ত্রিক মথোচ্যতে। গ্রন্থিকানল চব্যৈস্ত চতুঃপঞ্চ ষড়্ষণ গ্রন্থাকাল সমরিচণ ষড়্ষণ মুদাহ্রতণ। পঞ্চকোলগুণ তত্ত্ব কক্ষ মুক্তণ বিযাপহণ। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।
বদ্ধবা স্ত্রী ষড্বিধ্গবা। যথা।

গষা গজো গযাদিত্যো গাষত্ৰী **ठ गनाध्यः। गया गयामूब्रेट** - छ-व राज्ञरा मुक्लिमारिका॥ ३७ বাষুপুরাণে পষাপদ্ধতিঃ।। यञ्जय॰ তি গোষট্কযুক্ত হলাদি। यथा। अस्रोगदः अर्म्याङ्वः यञ्ज-ব জীবিকার্থিনা । চতুর্গব नृ-সংশানা ছিগব ব্ৰজ্যাতিনা ॥ ইত্যাহ্নিকাচারতত্ত্ব॰ ॥ 🏶 ॥ প্রত্যুষ্বিশেষঃ। যথা। পশুভো গোষ্গ বুলো পর ষট্তে তু यद्भवः। ३७ (२ यह खः।। स्नाः গবা॰ সমাহারঃ। ইতি দ্বিগুস-মাস নিষ্পন্ন তত্ত্র ক্লী।। **य**ञ्जूषा স্ত্রী বচা। ইতি ভাব-প্রকাশঃ॥ শ্বেতবচা ৷৷ শটী ৷৷ गराकत्रक्षः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ

ষদ্ধ ক্লী পিপ্লামূলণ ইতি বৈদ্যকণা ষট্পৰ্নি পুণা। ষদ্ধৃত্বিল স্ত্ৰী শদী। ইত্যমরঃ॥ ষদ্ধৃত্বী স্ত্ৰী বচা। ইতিশ্বরত্না-বলী।।

ষত্জঃ পুণ তন্ত্রীকঠোখিতস্বর-বিশেষঃ। ইত্যমরঃ।। অস্য ব্যুৎ-পত্তি র্যথা। নাসাণ কঠ ব্র স্তালু জিহ্বাণ দন্তাণশ্চ সংখি-তঃ। ষত্ভাঃ সংজায়তে যালাৎ ভন্মাৎ ষড্জ ইতি স্তঃ। স
চ ময়্রস্বরতুল্যস্বরঃ। যথা। ষ
ড্জ রেতি ময়্রে। হি গাবে।
নর্দান্তি চার্মভ । অজা বিরোতি
গান্ধার জেটি দোল নদতি মধ্যম।
।। ইতি ভরতঃ।। তানসেনমতে
সপ্তস্বরাণা মধ্যে প্রথমস্বরে।
২যা থরজ ইতি লোকে খ্যাতঃ
। অস্যোচ্চারণস্থান কণ্ঠঃ।
অম্য বিপ্রবর্ণঃ। অস্যাচ্চিক
নাম। অর্থাৎ একস্বর্নিলিতঃ
। সর্বস্বরাপেক্য্যা ক্রুম্বরে।
২যা অস্য তাল একঃ। অস্যা
টেটা ভেদা ভবন্তি। ইতি স
সীতশান্ত্রণ।।

যড্দুর্গণ ক্লী ষট্প্রকারকোউণ। ভদ্যথা। ধন্বদুর্গণ ১ মহীদুর্গণ ২ গিরিদুর্গণ ৩ মনুষ্যদুর্গণ ৪ মৃদ্দুর্ণ র্গণ ৫ বনদুর্গঞ্চ ৬। ইতি মহা-ভারতে রাজধর্মঃ।।

ষড্ধা ব্য ষ্টপ্রকারণ। ইতি ব্যাকরণণ।।

ষড্বিধণ ত্রি ষট্প্রকারণ। যথা।
সংজ্ঞা চ পরিভাষা চ বিধি নিযম এব চ। অতিদেশো ২ধিকারশ্চ ষড্বিধণ সূত্রলক্ষণণ।। ইতি
মুগ্ধবোধনিকাষাণ দুর্গাদাসঃ।।

অপি চ। তত্ত্ৰ কিতি গ্নিছেতু
নানাৰপবতী মতা। ষড্বিধস্ত রস স্তত্ত্ব গম্বোপি দ্বিবিধা মতঃ ।। ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ।।

ষড্ভুজঃ পু॰ ষড্হস্ত যুক্তঃ। যথা

. । ভীম স্ত্রিপাদ স্ত্রিশিরাঃ ষড্ভুজো নবলোচনঃ। ভগ্ন প্রহরণো
রৌজঃ কালাস্তকষমোপমঃ ।।
ইতি ব্রন্ধবৈবর্ত্তপুরাণে মাহেশ্বরম্বররূপণ ।। চৈতন্যদেবঃ ।
স তু পুরুষোত্তমক্ষেত্রে ষড্ভুজো ভূম্বা শ্রীজগন্নাথদেবশরীরে লীনো হভূৎ। ইতি লোকপ্রসিদ্ধণ ।।

यज्ञा श्री कलना वित्मयः।
थत्र का श्री कलना वित्मयः।
थत्र का श्री का या। ज्यान्य विकास विवास विकास विकास विकास विकास विवास विकास विवास विकास विवास विव

शृर्वमत्म प्रश्लिकाः शीनवकःय-লরুহাণ অগ্নিপ্রভাণ ষড্ভুজাণ मिक्टिंग शमाज्य वर्जुवद्गाः वाटम শক্তি শূল পরশুধরা দেবী মিতি।। রুজচণ্ডা। যথা। দক্ষিণ-**मटन ब्रज्ज क्षां क्रिक्व**र्गः मिन्रा-ভরণভূষিতা প্রসমবদনা সড্ ভূজা॰ দক্ষিণে বজু শূল পরশুধ-·রা° বামে পাশাঙ্কুশ কেশধরা° দেবী মিতি॥ চণ্ডবতী। যথা। বাষ্দলে চণ্ডবতী পুমুবর্ণা প্র-সন্নবদনাণ সর্বালন্ধারভূষিতাণ ষড্ভুক্তা॰ দক্ষিণে অঙ্কুশ পাশা-ক্ষসূত্রধরাণ বামে দণ্ড শূল ড-মরুধরা দেবী মিতি। ইতি বৃহন্ননিকেশ্বরপুরাণোক্ত দুর্গা-পূজাপদ্ধতিঃ।।

यजुमः भू॰ मधुता िष विश्वकात-तमः। यथा। मधुता लव । खि-जः क्यांत्या श्रः कृष्टे ख्या। मखीं जित्रमीय बाम्सात्मा यज-मी तमाः।। खेया॰ नाम लक्ष्यः।। मधुतः कीला मिजाङ तिकाति। म ज लक्ष्यां । लव गळु भोट्टेः। स्थाकः मिस्राति म मृगात्व।।। ভিক্ত পिচুম कीला ने गळुः। सामामा कि तमः। क्यांय ख्रवत

खुकः मह भृगीकना पियू॥ करू-ख कात्रम खः गामती हाति म চেষ্যতে। ইভি রাজনির্ঘণীঃ।। এষা গুণা গুতুৎ শব্দে দ্রক্টব্যাঃ ष्ड्रांब॰ क्ली यखहः। यथा। नम्रः-শৌচণ ভবেদ্বিদ্দ তথাচোক্তণ চতুৰিখা গর্ভশ্রাবে চ বেদো-ক্ত॰ পূৰ্ৰকালে ছচেতসঃ ৷৷ ব্ৰা-শ্বণানা মহোরাত্রণ ক্ষত্রিযাণাণ 'দিনত্ত্ৰণ। ষড়াত্ৰকৈব বৈশ্যা-না॰ শূদ্রাশাৎ দ্বাদশাহ্লিক ।। ইতিবামনে ১৪ অধ্যাযঃ।। যড়েখা স্ত্রী ষডভুজা।ইতিরাজ-নিৰ্যক্তঃ॥ বড়াজী চ ॥ ষড্লবণ ক্লী মৃজ্জোপেত পঞ্চ-শবণণ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। যড্বজুঃ পু॰ কার্দ্তিকেষঃ। যথ। । যত স্ততো বিশাখো ২সে। খ্যা-তো লোকেষু ষণাখঃ। স্কন্দো বিশাখঃ ষড্বক্তুঃ কার্ত্তিকেয়শ্চ বিশ্রভঃ ৷৷ 'ইতি মৎস্যপুরাণে ১৩৪ অধ্যায়ঃ।।

বড্বিন্দুঃ পু॰ বিফুঃ। ইতি ত্রি-কাপ্তশেষঃ।। কীটভেদঃ। ইতি মেদিনী।। শিরোরোগস্য পর্ক-তৈলবিশেষঃ। যথা। এরপ্তমূল॰ তগর॰ শতাহ্বা জীবন্তিকা সৈ- মানু মানিকে চ। তৃঙ্গং বিডকং
মধুষ্টিকা চ বিশ্বোবধং ক্লফঃ
তিলাস তৈলং ॥ অজ্ঞাপষ স্তৈলবিমিঞ্জিতক্ষ চতুর্ত্তবে ভৃত্পন্ত
লবিমিঞ্জিতক্ষ চতুর্ত্তবে ভৃত্পন্ত
লে বিপকং । ষড্বিন্দবো মান্
সিক্ষোঃ প্রদেষাঃ সর্বামিহম্যঃ
শিরসো বিকারাম্ ॥ চ্যুতাংশ্চ
কেশান্ পলিতাংশ্চ দন্তান্ নির্বিধ্য মূলান্ সুদূটীকরোতি ।
স্পর্ণ গৃধুপ্রতিমঞ্চ চক্লুঃ কর্বন্তি
বাজ্যো রধিকং বলক্ষা। জীবন্তিকাল হ্রীভকীশাক্ষবিশেষঃ ।
ইতি ভাবপ্রকাশঃ ॥

যঞ্জ পু॰ বৃষভঃ। যাঁড ইতি
ভাষা। তৎপর্য্যাষঃ। গোপতিঃ
২ ইট্চরঃ ৩। ইজ্যমরঃ॥ ফলঃ
৪ শঞ্জ ৫ শলঃ ৬। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ ক্লীব॰। ইতি জটাধরামরটিকে॥ সমূহঃ। ইতি
বৃদ্ধাঃ॥

यखः पृ॰ क्वी जलां पिकषयः।
भवत्रमुपां पिनमृदः। ইত্যमतः॥
यखानी जी टेंडनमानः। इटीक्
देंडि डाया।। मत्रमी।। काम्के जी। देंडि प्रिष्टिनी।। मूजाकि उप्पानिगाः पञ्जमकातापो
निथिडा।।

ষণ্টঃ পু॰ নপুসক। ইতি রাজ-निर्घन्छः इमहस्र मह।। छम्न र्गन-ण्णर्नतरवाः श्राविष्ठि**छ॰ वथा**। नाल (१९ किन्ये। न् वीत्र ही-না॰ তথা স্ত্রিষ•। দেবতা পিতৃ मक्श्य राज्यमानि निम्मदेकः॥ ক্ত্ৰা তু স্পৰ্শনালাপ শুদ্ধেতা-ৰ্কাবলোকনাৎ। অবলোক্য ত-থোদক্যা মন্ত্যজ্ঞ পতিত শব ।। বিধর্মি সৃতিকা ষণ্ট বিবস্তা-স্তাৰসাযিনঃ। মৃত নিৰ্যাতকাণ ৈশ্চব পরদাররতাশ্চ যে।। এ-তদেব হি কর্দ্তব্য প্রাক্তেঃ শো-ধন মাত্মনঃ। অভোজ্য সূতি-কা যক্ত মাৰ্জ্জারাখূণশ্চ স্বর্কুটা-ন্।। পতিতাপবিদ্ধ চাণ্ডাল মৃ-তহারাণ্শ্চ ধর্মাবিৎ। সংস্পৃশ্য শুদ্ধাতে স্নানাদুদক্যা গ্রামসূ-করো।। ইতি মার্কণ্ডেষে সদা-ठाकाधायः॥

ষণাসাঃ ত্রি ষাণাসাঃ। ষণাসে ভব। ষণাস শব্দাৎ কর্মণি
ফ্য প্রত্যযেন নিষ্পন্নঃ।।
যণাখঃ পুং কার্তিকেয়ঃ। ইতি হলাযুধঃ।। ষট্সংখ্যকবদনে ক্লী।
তদ্বতি ত্রি।।
যণাপ্রী বড্ভুজা। ইতিরাজ-

निर्म्कः ॥

वयः की मूर्कभाषमात्रण छादः। वयः। अत्र यद्याः रेखि मूक्षरवाध-काकत्रणः।।

ছদ ক গভোঁ। আও পূর্বো ২বং। ইতি করিকরক্রক্রান্ত। মূর্জণ্যাদিঃ এক আসাদয়তি। ইতি দুর্গাদাসঃ ৷৷

यह ५ छ छ न विवादि ।। नत्ति ।। भर्ति । देखि किविक हा प्रमाः ।। ५ ज्यादि । छ मानः मनः । छ ज्यादि ।। जी नि । विवादि । ने नि । देखि पूर्णा ना मानः ।। दि । ने ।। देखि पूर्णा ना मानः ।।

यन मंख्रको। ইতি কবিকল্প জনঃ

11' मख्रकिः সেবনং। সনতি গু
ऋ॰ লোকঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

यন দ এ উ দানে। ইতি কবি
কল্প জনঃ। দ এ সনোতি সন্তে। উ সনিদ্বা সন্থা। ইতি

দুর্গাদাসঃ।।

য় । গতে। ইতি কবিকল্পক্রমাণ।।
সঞ্জি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ষন্জ ও ঞি সঙ্গে। ইতি কবি-কল্পড়া। ও অসাজ্জীৎ। ঞি সজ্জে। ২ন্তি। সজ্ঞতি বপ্ৰি বাসঃ। ইতি মুর্গাদাসঃ ।। বপ সধে। ইতি কবিকরজ্ঞমঃ ।। সপতি অসীবপৎ। সমঃ সম্বন্ধঃ । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

यम देवक्रदा । ইতি কবিকল্প क्रमः

।। देवक्रदा । देवली जादः। मन
छि यदियागान मीम छिनाः या
ताजूताः। ইতি मूर्गामामः ।।

यम ত্ক देवक्रदा । ইতি কবি
कल्ल क्रमः ।। मियम यियं छि। ইতি

मूर्गामामः ।।

ষয় সপ্ণে। ইতি কবিকল্প দ্রুনঃ

।। সম্বতি। ইতি দুগাদাসঃ।।

যজ্জ অর্জ্জনে। ইতি কবিকল্প
দ্রুনঃ।। সিষজ্জবিষ্ঠি। সর্জ্জতি ধনা লোকঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ষর্ব সর্পণে। ইতি কবিকল্পদ্রনঃ

। সর্বতি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

যর্বপী স্ত্রী পক্ষিবিশেষঃ। যথা

। হাপুত্রিকা খঞ্জনিকা ষর্বপী
খঞ্জনাক্তে।। ইতি শব্দরত্নাবলী।।

যল গতৌ। ইতি কবিকল্পদ্রনঃ।।
সলতি। সিধালযিষতি। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

गएका २ खि। मक्कि वशूषि । यकिः क्री म॰थावित्मयः। याहि-

ইতি ভাষা। ইতি জ্যোতিকা। विकिकः श्रु॰ शानावित्ववा य ফিরাত্রেণ পচাতে বাটিবা ইতি স্বামিস্ভূতী। ইত্যমরভরতো।। তৎপর্যায়ঃ। ষষ্টিশলঃ ২ ক ফিজঃ ৩ নিশ্বতপুলঃ ৪ যকি-বাসরজঃ ৫। অস্য গুণাঃ। গৌ-রো নীলঃ মফিকো ২বং দিখা मामात्मा कृष्ठाः भीख्या त्मा वशतो। वनाः भर्या मीभरना বীৰ্য্যবৃদ্ধি দত্তে তক্ষাৎকিঞ্চি मृत्मा षिতीयः ॥ ইতি রাজনি-र्यन्धः ॥ व किन शाकीरा वि॥ যফ্টিকা স্ত্রী ষফ্টিকধান্য । যথা ৷ হৈমস্তিক• সিতাস্বিম• ধান্য• मुका खिला यदाः। कलाय कङ् নীবারা বাস্তৃক ছিলমোচিকা ৷৷ ষষ্টিকা কলিশাকঞ্ মূলক কেমুকেতর । ইতি তিথ্যাদি-তত্ত্বে হবিষ্যান্মপ্রকরণীয় স্মৃতি-वहना। किश्वा भन्नि विकिका ভিঃ পাৰ্ৰণ নিত্য মিতি বাচস্প-তিমিশ্রাঃ ॥

ষষ্টিক্য° ত্রি ষষ্টিক্ধান্যোপযুক্ত-ক্ষেত্রাদি। ইত্যমরঃ ।। ষষ্টিত্রমঃ ত্রি ষফ্টেঃ পূর্বঃ । ষষ্টিশব্দাৎ তমট্ প্রত্যযেন নি- শিষ:। ইতি মুদ্ধবোধবা করণ মফিধা ব্য মফিপ্রকারণ। মফি-শব্দাৎ থাচ্প্রত্যমেন নিম্পন্নণ।। মফিনতঃ পুণ হস্তী। মফিবর্ষপ-মান্তণ বযঃপূর্বান্ধিন্তিতা। মফি-মতঃ। ইতি সারস্বতাভিধানণা। শব্দমালা চ।।

য**ঠিলত। স্ত্রী ভুমরমারী। ইতি** রাজনির্ঘণ্টঃ।।

ষষ্টিসম্বৎসরঃ পুণ প্রভবাদিষষ্টি-मःश्रक्वर्षः। यथा। जथ विकि मय्भनत्रावना। भारकस्पकानः পৃথগাক্কতিম্বঃ ২২ শশাঙ্ক নন্দা-থি যুগৈঃ ৪২৯১ সমেতঃ। শরা-দ্রি বস্থিন্দু ১৮৭৫ হৃতঃ সলবঃ ষষ্ট্যাবশিষ্টাঃ প্রভবাদযোকাঃ ॥ वर्षवर्द्धश्च यटक्ष्य मृटेर्याः मः-পূর্য্য খোর্ম্মিভিঃ ৬০। সত ব্যুৎ-ক্রমতঃ খাগ্নি হৃতেংশে মাস-কাদযঃ।। অস্যার্থঃ। শাকেন্দ্র-কালঃ শক্রাজাব্দকালঃ পৃথক্ দ্বিষ্ঠঃ ভত্তৈব আক্লভিষ্ণঃ ২২ দাবি॰শত্যা পূরিতঃ শশান্ধ ন-ন্দাশ্বি যুগৈ ব্লেকনবত্যধিক শ-তদ্বধাধিক চতুঃসহস্ত্রেঃ সমে-তো ২কঃ। শরাদ্রি বস্বিন্দুহা-তঃ পঞ্চসপ্রত্যধিকাফীদশশতৈ

যাবৎ সম্থা হর্তু শক্নোতি তা-বতা হতঃ কৰ্তব্যঃ। সলবঃ পূৰ্ব শকাব্দঃ শরেত্যাদিনা লক্ষ্যণ-थाया युष्टः कार्याः स्काशक्षरणस्य পশ্চাদেবো ২ক্কঃ পূৰ্ববৎ বন্ধ্যা-হ্নতে লব্ধস্যারশিষ্টে প্রভবাদয়ঃ ৷ একাবশেষে প্রভবঃ দ্ব্যাদ্যবশি-ষ্টে বিভবাদিঃ। বর্ষ বর্জ্জন্ত যচ্ছে-ষণ বর্ষাতিরিক্তণ শরাজি বস্বিন্দু হ্ৰতাবশিষ্ট তৎ সুৰ্য্যে দ্বাদশ-ভিঃ সংপূর্ব্য খোর্ম্মভিঃ ষক্ষ্যা সতে ব্যুৎক্রমত ইত্যনেন যক্তি-হ্মতাবশিষ্টাঃ অক্ষা দণ্ডাঃ ষষ্টি-হত লক্ষাপ্শকে খাগ্নি হতে ত্রিণ শতা হতে অবশিষ্টা অংশকা ল-কা মাসাঃ স্যু রিতি ॥ 🛊॥ প্রভ বাদি ষষ্টি বর্ষাণ্যপক্রমা। আদ্যা জু বিংশতি ৰ্ৰান্ধী দ্বিতীয়া বৈক্ষবী স্থা। তৃতীয়া রুজদৈরত্যা শ্রে-ষ্ঠা মধ্যাধমা ভবেৎ ৷৷ ভবিষ্যপু-রাণে ভৈরব উবাচ। যফ্টাব্দ ক-থযাম্যত্র ক্রাঃ সৌম্যাশ্চ যে প্রি-যে। সংৰৎ সরফল মুখ্য প্রভবা-क्ति वदानद्व।। क्ल्लाया छथा নেঘাঃ সর্বশস্যা চ মেদিনী। বহু-ক্ষীরা স্তথা গাবে৷ ব্যাধি রোগ বি-বজিতাঃ।। প্রশাস্তাঃ পার্থিবা-

শ্চৈব প্রভবে পরিকীর্ত্তিতাঃ।১ া সুভিক্ষণ ক্ষেম মারোগ্যে সর্বে ব্যাধি বিবৰ্জ্জিতাঃ।। প্রশাস্তা মা-नवाः मर्वं वरूममा वमुस्रता । शकी खकी जनाः गर्द विভবে ह বরাননে ॥ ২॥ রোগা বছবিধা-टैन्ठव मनूषा वाकि अक्षताः। म-ৰ্বএব প্রণশ্যন্তি শুক্রে বর্ষে বরা-ননে।। ৩॥ উশ্বত্তঞ্চ জগৎ সর্ব॰ ধন ধান্য সমাঙ্গল । নিত্যোৎ-नवः अजावृिकः अत्यादन जाय-তে প্রিযে॥ ४॥ नीরোগাশ্চ নি-রাবাধা মানবা বিগতদ্বিষঃ ৷ ব-হক্ষীরা স্তথা গাবঃ প্রাজাপত্যে বরাননে ॥ ৫॥ নিরাতক্কণ জগৎ সূৰ্বণ ধন যৌবন গৰিতণ। অঙ্গি-রসি প্রজাঃ সর্বা নিজ্যোৎসাহা বরাননে॥७॥ সুভিক্ষণ ক্ষেম মা-রোগ্যং বর্ষাকালং সূশোভনং। শস্যবৃদ্ধি বিজানীয়াৎ শ্রীমৃখে সুরবন্দিতে ॥ १॥ বহুকীরা স্তথা গাৰো ধান্যক বলবত্তর । জায-ন্তে সৰ্বশস্যানি ভাবে বৰ্ষে বরা-ননে ॥ ৮॥ মহার্য জাষতে সর্ব যুত তৈল রসাদিক । প্রজা-नाक ज्यक्कि र्यूनि मन्दरमत्त শুভেয় মা নিষ্পত্তিঃ সর্বশস্যা-

না নধ্যা ধাতরি কীর্ত্তিতা। ইকু ক্ষীর গুডাদীনা প্রবলম্ব বরা-ননে ॥>।। সুভিক্ষণ কেম মারো-গ্যাণ কার্পাসস্য মহার্যতা ৷ লবণ यदू गवाक नेश्वाद पूर्व ज थिए ।। >> ।। मूजिकः क्य यादाभाः প্রশান্তাঃ পার্থিবাঃ প্রিষে। তক্ষ রোপহত বিত্ত বহুধান্যে বরা-नत्न॥ ३२॥ त्रास्कु छन्न मृ ক্ষণ তক্ষরৈ শ্রেচাপপীডন । জা-নীযাদিগ্রহণ যোর প্রমাণিনি ৰৱাননে ৷৷ ১৩ ৷৷ জা**ষন্তে সৰ্ব**ূ শস্যানি মেদিনী निक्र शखना । লবণ মধু গব্যঞ্ মহার্ষণ বিক্রমে প্রিষে ॥ ১৪॥ কোদ্রবাঃ শালি यूकाान्ह नञ्जू याचा खटेश्व ह । মহার্ঘণ জাযতে সর্বণ বৃষে চ সুর-বন্দিতে 1120 11 চণকা মুক্ষা মাষা-भ्ह जनाक विषयः थिए। यहा-ৰ্য' জাষতে সৰ্ব' চিত্ৰভানৌ ৰব্না-ননে ॥১৬॥ সুভিক্ত কেম মারো-গ্যু॰ বিশ্বঞ্চ নিৰুপদ্ৰব । ব্যবহা-রো ভবেৎ শ্রেষান্ স্বর্ভানৌ দে-বপূজিতে।।১৭।। অতিবৃষ্টিশ্চ জা-যেত ধান্যস্যাথ প্রপীডন ৷ শ-স্যুণ ভবতি সামান্যুণ দাৰুণে দেব-বন্দিতে ৷৷ ১৮ ৷৷ বহুশস্যানি জা-

যন্তে সর্বদেশে সুলোচনে। সৌ-तारछे नावेषात्म ह भार्षित ना-ब मः भगः॥ ३२ ॥ पूर्जिकः काय-তে ঘোর সর্বোপড়ার সংযুত। । অনাবৃষ্টিঃ সমাখ্যাতা ৰাষে স্-वष्मदत क्षिर्य ॥ २०॥ উদ্যত্তা বৰ্ষণে মেহো জল নৈবোপষ-ष्ठ्ि। यहार्यः मर्विक्षप्रत्यं मर्व-মেব বরাননে ॥ ২১॥ কোডাবাঃ भानि मूलाम्ह कनू माया खरेशव চ। সুলভ জাযতে সুস্থ জগদৈ मर्बंशातिनि ॥ २२ ॥ जनित्र अव-লা লোকা ধান্যৌষধি প্ৰপীডন । জাষতে মানুষে কষ্ট॰ বিরো-विनि न म॰म्यः ॥२०॥ म**र्दाः श**-জাঃ প্ৰপীডান্তে ব্যাধিঃ শোক-শ্চ জাযতে। শিরো বক্ষো ২কি-রোগাশ্চ পাপাদ্ধি বিরুতে জনাঃ ।। ২৪।। উপক্রত জগৎ সর্ব জ-ক্ষরৈ মূ বিকৈঃ খগৈঃ। পীডিতা-শ্চ প্ৰজাঃ সৰ্বাঃ দেশভঙ্গঃ খরে প্রিষে।। ২৫।। সুভিক্ষ কেম মা-রোগ্য॰ শস্য॰ ভবতি শোভন॰। বহুক্ষীরা স্তথা গাঝে নন্দন• ন-ন্দনে প্রিষে ৷৷ ২৬ ৷৷ অল্পডোষা खथा मिघा वर्षे छि थ् ७ म ७ तन । নশ্যস্তি সৰ্বশস্যানি বিজ্ঞযে নাত্ৰ

সংশ্বঃ।। ২৭।৷ ক্তিয়াশ্চ তথা दिवनाः नूजान्छ नहे मर्खकाः । পীডিভান্তে বরারোহে জবে সর্বে न मःगयः ॥ २৮॥ मद्तागक छथ। দেবি দাহ জ্ব সমন্বিত। অভি-ভূত জগৎ সর্ব নমাথে সুরবন্দি-তৈ ৷৷ ২৯ ৷৷ তুষধান্য ক্ষষো দেবি সর্বশস্য মহার্যতা। ব্যবহারাশ্চ मगाछि पूर्त्रा पूर्त्रा थाः अकाः॥ ७०॥ शीषात्य गर्वभगानि (म-ल (मर्ल श्रुं हिन्त्रिर्छ। (इयलस्य প্ৰজাঃ সৰ্বাঃ কীষত্তে নাত্ৰ সংশ यः ॥ ७३ ॥ ७ऋदेतः भार्थि देव-ৈচব অভিভূত মিদ জগৎ। व्यर्थ। ভবতি সামান্যো বিলয়ে जु **जर• म**रू९ ॥ ७२ ॥ विषमऋ• জগৎ সৰ্বণ বিরোধে ভয় সংপ্লবণ ৷ বিকারী সর্বতো ২পাষো মম বা-कां व नानाथा।। ७०॥ कि वर्ष-ि शक्कत्ना (मत्म मः हिम्म थः शादा विश्वयायः॥ ०८॥ मूर्जिकः জাৰতে সৰা মেদিনী দুষ্যতি প্ৰি-ষে। প্লবে প্লবন্তি তোষানি মান-বা দুঃখিতা ভূবি ।। ৩৫ ।। সুবর্ণ ক-প্য ধান্যানি জগৎ সর্ব সুশোত-ন । বান্ধণা বণিজ স্বটাঃ সুভি

क्ष ७७ हर थिए ॥ ७७ ॥ जू-ভিক্ষণ কেম মারোগ্যণ তৃপ্তা গো ব্রাহ্মণাঃ প্রিষে। সুস্থিতাঃ শো-ভনে বর্ষে প্রজাঃ সর্বাঃ সুলোচ-त्म ॥ ७१ ॥ विषमञ् क श मर्बः व्यानन नमूनाश्रठः। जनानाः জাষতে ভদ্রে ক্রোধে ক্রোধঃ প-রম্পর• ৷৷ ৩৮ ৷৷ সর্বত্র জাষতে ক্ষেম সৰ্বশাস্য মহাৰ্যতা। বিস্বা-ৰসৌ বরারোহে কার্পাসস্য মহা-ৰ্যতা।। ৩৯॥ পাৰ্থি বৈ নৃপিনে-टेनाम्ह नमरेखः थ्खमखरन । প্ৰপীড্যন্তে জনাঃ সৰ্বা ভযভী-তাঃ পরাভবে॥ ৪•॥ তৃণ ধান্যা-নি পীড্যন্তে ত্রীমে বর্ষতি বাসবঃ । প্লবঙ্গে পীডিতাঃ সর্বাঃ প্রজাশ্চ मुत्रविभित्व ॥ ४३ ॥ काषत्छ म-ৰশস্যানি সুভিক্ষ নিরুপদ্রব । সৌমাদৃষ্টি ভবেডাজা কালিকে **ह ७७॰ वरम**९ ॥ ८२ ॥ मूजिक॰ ক্ষেম মারোগ্যে সুখঞ্চ নিরুপদ্রবং । मोमामृष्टि र्जरवजाका मोत्या সৌখ্য• প্রকীর্ত্তিত• ॥ ৪৩॥ তোষ-পূর্ণো ভবেমেযো বর্ষতে চ দিনে मित्न। निक्र शक्य वा क ता का नः नर्बनाधातर्व थिय ॥ ८८॥ वान-वा वर्षछ पावि पार्म ठाथ ७-

মণ্ডলে। অহিচ্ছত্তে কান্যসজে বিরোধি ক্ষিনাশক্তৎ ৷৷ ৪৫ ৷৷ অ-ভিভৃত• জগৎসর্ব• ক্লেশৈ র্বহুবি-বৈঃ প্রিযে। মারুতৈঃ ফলদাইছ-শ্চ পরিবারিণি শোর্ভনে ॥ ৪৬॥ নিষ্পত্তিঃ সৰ্বশস্যানা সুভিক্ষণ ভবতি প্রিযে। প্রমাথিনি জ্লো-দাারী জলদো মোদতে প্রজা ॥ ৪৭॥ নিষ্পত্তিঃ সর্বশস্যানা॰ সৰ্বশস্য মহাৰ্যতা। ঘৃত তৈল-সম॰ যাতি আনন্দে নন্দতি প্র-জা ৷৷ ৪৮ ৷৷ কোডকাঃ শালি मुकाम्ह शीष्ट्रास्य वत्रवर्गिनि । मदो यथानि थानग्रानि त्राकरम्॥ निश्रुताः প্রজাः ॥ ४२॥ मृर्ভिकः জাযতে যোর পান্যৌষধি প্রপী-ডন । অনলে চ সমাধ্যাত নাত্র कार्या विठातना ॥ ७० ॥ तनन-**७**इः मुपूर्जिकः मगामा क्षेया-ग्रहः। शिक्रत्म ठाऋभद्यांकि मू-র্ভিক্ষণ নর্মদাতটে ॥ ৫১ ॥ ৫গা মহিষ্যো বিনশ্যন্তি যে চান্যে নট নৰ্ত্তকাঃ। বাসবো বৰ্ষতে দে-বি শদ্যঞ্চ নহি জাযতে।। তিল সৰ্যপ মাষাদি কাৰ্পাসানা মহা-ৰ্যতা। গো মহিষ্যঃ সুবৰ্ণানি কা-मा जामानारमयजः॥ जद मर्बः

দেবি বিক্রীষ কর্ত্তব্যো ধান্য স-क्षयः। তেন ধান্যেন লোকে। **२य॰ निख**ित्रयां जिल्ला निक्ता था-র্থিবা মোষকা দীনাঃ কালযুক্তে প্রপীডিতাঃ। ৫২। তোষপূর্ণাঃ স্মৃতা মেম্বা বহুশস্যা চ মেদিনী।। निष्ठुताः পार्थिता एमति निकार्थ চ বরাননে। ৫৩। অক্সতোষা ঘ-ना देग्ठव की हिकाः अवलाः गृजाः भ विक्रकाः भार्थिका प्रवि द्वीरज মধ্যম প্রোক্ত ব্যবহারো ন ব-ৰ্ত্ততে।। ভবেদৈ মধ্যমা বৃষ্টি দু -ৰ্মতৌ সমুপস্থিতে। ৫৫। দুৰ্ভিক্ষণ জাযতে লোকাঃ সর্বে জবিণ ব-র্জিতাঃ।। প্রাণিনাণ জাষতে ২হ-र्खा मून्मू एको वत्रवर्गिन। एक। य-হিষী গো হিরণ্যাদি তামু কাণ্স্যা-দ্যশেষতঃ।। তৎ সর্বণ দেবি বি-क्वीय कर्खरा। थानामक्षयः। त्र-ক্তে সংবৎসরে দেবি ক্ররবৃদ্ধি র্ন-त्राधिभः॥ यानवाः कृत्रटाका क मः शास्त्र ऋषितः ভবেदे । ৫१ । **मूर्जिकः मत्रवः रहातः शान्तोय**ि প্রপীডন•া৷ পাপরোগো ভবেদে-বি রক্তাখ্যে ২মরবন্দিনি । ৫৮। রোগো মরণ দুর্ভিক্ষণ বিরোধো

वहमञ्जून ।। **क्लार्थ जू** विषय সর্ব॰ সমাধ্যাত॰ হরপ্রিষে। ৫৯ । यिपिनी निज्ञ प्रिति गर्ब ভূত চরাচর ।৷ দেশভঙ্গদ্য দু র্ভিক্ষণ ক্ষয়ে সংকীয়তে প্রজা। **मोतारकु मामरव रमरम मिक्स** काकरव छथा।। मूर्जिक काय-তে ষোরণ ক্ষযে সণ্বৎসরে প্রি-(य। कोमूनी नर्स्मामा। क समू-না নৰ্মদাত্ট ।। বিশ্ব্যাখা দৈ-স্ধবঞ্চাপি বিনশ্যতি ন সংশযঃ। সি॰হল॰ মধ্যদেশঞ্চ কালঞ্জরণ তথৈব চ।। ক্ষমে ক্ষমন্তি সর্বাণি नानाथा वतवर्गिन। ७०। ३७ জ্যোতিস্তত্ত্ব ॥

যঞ্চিহামনঃ পুণ গজঃ।। ধান্যবিশেষঃ। ইতি সেদিনী রাজনির্মন্টশ্চা। যফিসংখ্যকবৎসরঃ।। তৎসংখ্যবযোযুতে ত্রি।।
যঞ্চঃ ত্রি ষগ্লাং পুরনঃ। ইতি
মেদিনী।।

ষষ্ঠকঃ ত্রি ষষ্ঠা। ষষ্ঠাশকাৎ কণ্ প্রত্যায়েন নিষ্পায়ঃ ॥

ষঠালুকালক॰ ক্লী দিত্রাহানস্ত-রভুক্তণ। যথা। দ্যন্তরে ত্রান্ত-রে ভুক্ত মাহুঃ ষঠালুকালকণ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। ষষ্ঠিকা স্ত্রী ষষ্ঠী। ষথা। চামু-ণ্ডেতাত্র ষষ্ঠিকেত্যুহ্নণ। ইতি দুর্গোৎসবীষবলিদানপ্রকরণে তিখ্যাদিতত্ত্বণ।

वधी जी काजायनी। इंडि स-দিনী।। ধোডশনাতৃকান্তৰ্গত-মাতৃকাবিশেষঃ। সা প্রক্রতেঃ ষষ্ঠীকলা ক্ষন্সভার্য্যা চ। তদ্যাঃ खब्लामि यंथा। अधानाः गंध-ৰূপা যা দেবসেনা চ নারদ। মাতৃকাসু পূজ্যতমা সাচ ষষ্ঠী প্রকীর্তিতা।। শিশনাণ প্রতি-বিশেষু প্রতিপালনকারিণী । তপম্বিনী বিকুভক্তা কার্ত্তিকে-यमा कामिनी ॥ यश्रीव्याकारी প্রহ্নতে স্তেন ষষ্ঠী প্রকীর্ত্তিতা। পুত্ৰ পৌত্ৰপ্ৰদাত্ৰী চ ধাত্ৰী ত্ৰি-জগতা॰ সতী।। সুন্দরী যুবতী রম্যা সম্ভত• ভর্ত্তু রন্তিকে । স্থানে শিশুনা॰ পরমা বৃদ্ধৰূপা **চ यात्रिनी।। शृ**का वाष्ट्रामा-**দে**ষু ষদ্যা বিশ্বেষু সন্তত । পূজা চ সূতিকাগারে পরা ষষ্ঠ-দিনে শিশোঃ।। একবি॰শতিমে চৈব পূজা ৰল্যাণ হেতুকী। শশুন্নিয়মিতা চৈষা নিত্যা কা-ম্যাহুজিঃ পরা ।। মাতৃৰূপা দ্যা-

ৰূপা শশ্বদ্ৰকণৰূপিণী। জলে স্থলে চান্তরীকে শিশূনা স্বপ্ন-গোচরে॥ ইতি বন্ধবৈবর্ত্তে প্র-क्रिवर ७ २ व्यक्षायः ॥ 🛊 ॥ অপি চ। গ্রীনারাষণ উবাচ। ষষ্ঠাণ্শা প্রক্তে র্যাচসাচ প্রকীর্ত্তিতা। তস্যাঃ পূজাবিধৌ ব্ৰহ্মন হিতিহাস মিমণ শৃণ্।৷ রা-জা প্রিয়ত্রত শ্চাসীৎ স্বায়স্তুবম-নোঃ সূতঃ। যোগীন্দ্রো **ন বছে**-ভার্যাণ তপস্যাসু র**তঃ সদা।। ব**-ক্ষাক্তব। চ ষত্নেন ক্রতদারো ব-ভূব সং। সুচির ফতদারশ্চ ন লেভে তনয় ততঃ।। পুত্রেফি-ষজ্ঞ তঞ্চাপি কারযামাস কশ্য-পঃ। মানিন্যৈ তস্য কান্তাবৈ मूनि र्यक्डहरू माने॥ ज्ङ्गा ह-ৰুঞ্চ তদ্যাশ্চ সদ্যোগৰ্ত্তে। ৰভূব र। দধার তঞ্চ সা দেবী দৈবং षामग व भारत ।। ७७: मूनाव সা বন্ধনার কনকপ্রভ । সর্বাব্যবসম্পন্ন মৃত মুক্তান লো-**চন॰।। भागानक यत्ये। ताङ्गा गृ**. शैषा वालक॰ मूटन । এত श्रिम-खदा তত विमानक मन्न है।। **प्रपत्न एक एक्टी क्ष कमनीया॰ य-**নোছরাণ। দৃষ্ট্বা তাণ পুরতো রা-

জা তুষ্টাব পরমাদর ।। পপ্রচ্ছ রাজা তা॰ দৃষ্ঠা গ্রীমসূর্য্যসমপ্র-ভা ৷ তেজুসা স্থলিতা কাস্তা শান্তা॰ কন্দস্য নারদ ৷৷ প্রিষ-ত্ৰত উবাচ। কা স্ব॰ সুশোভনে কস্য কান্ডে কান্ডাসি সুব্রতে। ক্স্য ক্র্যা ব্রারোহা ধন্যা মা-न्या ह रयाविजाः॥ स्वरत्रत्नाः বাচ। বন্ধণো মানদী কন্যা प्तवत्मनाइ भीश्रती। मृख्ने माण यनमा थाणा मत्मो ऋमाय जू-মিপ।। মাতৃকাসু চ বিখ্যাতা ক্ষনভাষ্যা চ সুত্ৰতা। বিশ্বে ষ-ষ্ঠীতি বিখ্যাতা ষষ্ঠাণ্শা প্রক্তে र्यञः ॥ ইত্যেব मूक्ता मा प्राची गृशेष। वालकः मूटन। मशाङ्का-নেন তপসা জীবযামাস লীল-या।। गृशीषा वालक प्राची ग-গন॰ গন্ত মুদ্যতা। পুন স্তকীৰ তা॰ রাজা শুদ্ধকণ্ঠীষ্ঠভালুকঃ॥ নৃপস্তোত্তেণ সা দেবী পরিতৃফী বভূব হ। উবাচ ত॰ নৃপ॰ বন্ধন (तरमाकः कर्मनिर्मिकः ॥ रमवः সেনোবাচ। ত্রিষু লোকেষু রাজা ত্ব স্বাষ্ট্রব্যনোঃ সূতঃ।। মর্ম পূ-জাঞ্চ সৰ্বত্ৰ কার্যিত্বা স্বৰণ সন্ধ ॥ जमा मामग्रामि भूखार अवार्थः

অমনোহর । ইত্যেব মুক্তা সা (परी ७ टेप्स ७ वा न्व॰ परि ॥ রাজা চকার স্বীকার তৎপূজা-र्थक्ष मूखछः। জগाम (मरी यर्ग ঞ্চ দত্বা তক্ষৈ শুভ বরণ। আ-জগাম মহারাজঃ স্বগৃহ হৃষ্ট্যা-नमः। (परीः जाः शृक्षरामाम बाः कार्त्वा धनः मरमे॥ त्राका ह প্রতিমানেষু শুক্লষষ্ঠ্যাণ মহোৎ-• नव• । यञ्जा एनवाान्त यदन কার্যামাস সর্বতঃ ৷৷ বালানা সূতিকাগারে ষণ্ঠাহে ষত্নপূর্বকণ ৷ তৎপূজা কার্যামাস চৈক-বি শতিবাসরে ৷৷ বালানা শু-ভকার্য্যে চ শুভান্মপ্রাশনে তথা । সর্বত্র বর্জধামাস স্বধ মেব চ-कात्रह्॥ शानः शृकाविशानः স্তোত্রণ মত্তো নিশাময়। যৎ শ্রুত ধর্মবক্ত্রেণ কৌপুমোক্ত ঞ্ সুত্রত।। শালগ্রামে ঘটে বাথ वर्षेमूल १थ वा मूरन । जिल्हो পুंखिनका॰ क्रेडा शृक्षरयहा वि-চক্ষণঃ।। ষষ্ঠা॰শা॰ প্রকৃতেঃ শু-ন্ধাণ সূপ্রতিষ্ঠাঞ্চ সূপ্রভাণ। সূপু-ত্ৰদাক শুভদা দ্যাৰূপা জ-গৎপ্ৰসূণ। শ্বেতচম্পক বৰ্ণাভাণ রত্নত্বণ ভূষিতাণ৷ পবিত্রৰূপাণ

পরমাণ দেবসেনা মহণ ভজে ॥ ইতি ধ্যাত্ব। স্বশিরসি পুষ্পণ দত্ব। বিচক্ষণঃ। পুনর্ধ্যান্তা চ মূলেন পূজ্ঞেৎ সূত্ৰতা• সতী• ৷৷ পা-मार्घाठमनीटेंबन्ठ गन्न धूल अ-**मीभटेकः। टेनटवटेमा** विविटेध-শ্চাপি ফলেন শোভনেন চ।। मृत्लत्नो॰ शुँ षष्ठीत्मदेवा स्नाट्हि বিধিপূর্বক ৷ অফ্টাক্ষর মহাম-ন্ত্রণ ষথাশক্তি জপেন্নরঃ ৷৷ ততঃ স্তব্য চ প্রণমেন্ডক্তিযুক্তঃ সমা-হিতঃ। স্তোত্রঞ্চ সামবেদোক্ত॰ বরপুত্র ফলপ্রদ•া৷ অফীক্ষর• মহামন্ত্রণ লক্ষ্যা যো জপেন্যুনে । স পুল্রু লভতে নূন মিত্যাহ কম-লোভবঃ ৷াঞা৷ স্থোত্র° শৃণু মৃনি-**শ্ৰেষ্ঠ সৰ্বকাম শুভাবহ•।** আজ্ঞা-প্রদক্ষ সর্বেষা গৃত বেদেষু না-রদ।। প্রিষত্রত উবাচ। নমো দে-देवा महारमदेवा मिटेका माटेखा নমো নমঃ। শুভাবৈ দেবসেনা-देव वर्देश प्रदेवा न्या नमः ॥ . বরদাবৈ পুত্রদাবৈ ধনদাবৈ ন-त्या नमः। मूथनाटेय त्याक्रनाटेय ষষ্ঠীদেব্যৈ নমে। নমঃ।। শক্তি ষ-ষ্ঠা॰শৰপাবৈ দিদ্ধাবৈ চ নমো नमः। भाषादेष मिक्कदशिविना

यश्रीरितरेवा नरमा नमः॥ मातारेय मात्रनाटेय ह शाताटेय मर्बकातिटेगा । वालाधिक्षेाजृदमदेवा ह यथी-एक्टेवा नरमा नमः॥ कलागिना-देय कन्गादेश कनमादेश ह कर्म-ণা । প্রত্যক্ষাধৈ চ ভক্তানা ব-ष्ठीटमटेवा नटमा नमः॥ शृङ्गाटेस ক্ষনকান্তাবৈ সৰ্বেষা সৰ্বকৰ্মসু । एतवत्रकनकातिरेना यश्रीरमरेवा नरम। नमः॥ शुक्तमञ्च खलभारेय বন্দিতাবৈ নৃণা সদা। হি॰সা ক্রোধ বঙ্জিতাবৈ ষষ্ঠীদেবৈয় ন-মোনমঃ॥ ধন দেছি প্রিযাণ দেহি পুত্র দেহি সুরেশ্বরি। ধর্মা **एति यर्गा एति यष्ठीएति व**ा মো নমঃ॥ দেহি ভূমি॰ প্রজা• দেহি বিদ্যাণ দেহি সুপুজি তে । कन्यानश्र क्या प्राह्म यष्ठीपारेवा नत्या नयः॥ ইতি দেবীঞ্চ সংস্তৃয লেভে পুত্রণ প্রিযব্রতঃ। যশ-বিনঞ্চ রাজেন্দ্রণ ষষ্ঠীদেবী প্রসা-দতঃ।। যন্তীস্তোত্ত মিদ্ বিশ্ব यः শৃণোতি চ বৎসর । অপুত্রো লভতে পুত্ৰণ ৰৱণ সূচিরজীবিনণ ॥ বর্ষ মেকঞ্চ ষা ভক্ত্যা সংস্ত-ত্যেদ॰ শৃণোভি চ। সর্বপাপ বি-নিৰ্দ্মক্তা মহাবন্ধ্যা প্ৰসূষতে ॥

বীরণ পুত্রঞ্চ গুণিনণ বিদ্যাৰম্ভণ যশস্বিনং। শুচিং চিরাযুম্মন্ত মে-ব ষষ্ঠীদেবী প্রসাদতঃ ৷৷ কাক-বন্ধ্যা চ যা নারী মৃতাপত্যা চ যা ভবেৎ। বর্ষণ শ্রুত্বা লভেৎ পুত্রণ ষষ্ঠীদেবী প্রসাদতঃ॥ রোগযুক্তে চ বালে চ পিতা মাতা শৃণোতি চেৎ। মাসঞ্চ মুচ্যতে বাল **एती श्रमामञ्डा। ইতি बक्करेवव**-র্ত্তে প্রকৃতিখণ্ডে ৪০ অধ্যাষঃ।।ৠ। তিথিবিশেষঃ। স তু শুক্ল ক্লঞ্প-ক্ষভেদেন দ্বিবিধঃ। তত্ৰ চন্দ্ৰস্য वृष्कान्कृत यष्ठेकला कियाकशः ভক্লপকীযঃ। তস্য হ্রাসান্কূল यर्थकला क्रियां क्रभः क्रस्थभक्षीयः ।#। তৎক্ত্যাদি যথা। অথ যপ্তী সা সপ্তমীযুতা গ্রাহা যুক্সাৎ। রা-জমাৰ্ভ্ৰণ্ডে। জ্যৈচে মাসি সিতে পক্ষে যন্ত্রী চারণ্য সংক্তিতা। ব্যজ-নৈককরা স্তদ্যা মটস্তি বিপিনে-ন্ত্রিয়ঃ ৷ তা॰ বিশ্ব্যবাসিনী• কন্দ

মারাধযন্তি চ। কন্দ মূল কলাহারা লভন্তে সন্ততি শুভাগা কন্দ সূরণাদি। মূল তদিতর । ভবিষ্যো। যেষ মার্গশিরে মাসি ষঠা ভরত সত্তম। পুণ্যা পাপছ-রা ধন্যা শিবা শাস্তা শুহপ্রিয়া

॥ (मरीश्रुतार्थ टेठक मिक्क्ण । ষষ্ঠা। কলস্য কর্তব্য। পূজা স র্বোপচারিকা। ইহৈব সুথ সৌ ভাগ্য মন্তে বিষ্ণুপুর বক্তেৎ।। ইय य्ये ऋक्ष्मवधी शक्ष्मीयूटें उ वालाया। क्रकार्येभी ऋन्विधी শিবরাত্রিচতুর্দশী। এতাঃ পূর্ব-যুতাঃ কার্য্যা স্তিথ্যন্তে পারণ ভ (त्र ॥ इंडि जन्नरेववर्छव्यन। । বিষ্ণুধর্মোত্তরে। অফনীঞ্চ তথা यष्ठी॰ नवमीक ठजूर्मभी॰। भिरता-ভ্যঙ্গ° ন স্বৰ্ধীত পৰ্বসন্ধৌ তথৈব **हा। इंडि डिया** मिडबु ।। 🟶 ॥ সাচ কার্ত্তিকেয়াভিষেকতিথিঃ 1 यथा। खयः ऋत्मा महात्मवः সর্বপাপ প্রণাশনঃ। তস্য ষষ্ঠী॰ তিথি প্রাদাদভিষেকে পিতামহঃ ॥ অস্যা॰ ফলাশনো যস্ত যজে-নিখত মানসং। অপুত্রোপি ল-ভেৎ পুত্রান্ অধনোপি লভেৎ ধনণা ষণ্য মিচ্ছেত মনসাতণ ত॰ লভতি মানবঃ। ষ শ্চৈতৎ পঠতি স্তোত্রণ কার্ত্তিকেষস্য মা-নবং ৷৷ তৃদ্য গেহে সমারাণা ক্ষেমারোগ্য॰ ভবেদ্ধুব॰। 'ইতি বারাহে স্কন্দোৎপত্তি নামাধ্যা-यः। ঞা তত্ৰ জাতফল । বিদ্বান্

वित्र के कार्यः मूकीर्खः श्रम्य-वाष्ट्र वंशकीर्गगावः। मठाश्रिक-रक्षा धन भूख युक्तः यष्ठी श्रम् एठ। मनुष्क कित्रायः॥ देवि रकाष्ठी-श्रमीभः॥ धा । ठव यावाकत्रन रमार्या यथा। भश्रमा मीलिठा-र्थः मार्थ यक्षाः वग्नियुट्ठ। छ-रवः। मश्रमा मर्थमाणः मा-मर्थमा मञ्जभी छनः॥ यक्षार्य-मी हामनीयू न गट्छि विनिम्ण्-कि। देवि रङ्गाविस्त्रवः॥

यम जू त सार्ण। ইতি कविकद्य-फ्रमः॥ मूर्कनग्रामिः। जू मस्डि। त देविकिः। स्वाभः गयनः। ইতি দুর্গাদাসः॥

ষস্জ সর্পরে। ইতি কবিকরজ্ঞানঃ
। দিন্তালোপথঃ। কিপি সংযোগদিলোপে সক্ সজ্জতি। বচোপি পর্ন্যাক্ষরণ নচ পদেযু
সংসজ্জতে। ইতি শাসন্তলে
গণরুতানিত্যদ্বাৎ। ইতি দুর্গাদারঃ।।

ষস্ত ই লুর স্বপ্নে। ইতি কবিকল্পক্রমা। মূর্দ্ধন্যাদিঃ দস্ত্যসোপধঃ। ই সংস্তাতে। নমধ্যপাঠেপি নস্যোপধত্বাভাবাদেব
লোপাভাবে ইদনুবন্ধা বেদে-

ষাডব

ষ্চারণভেদার্থঃ। লু সংস্তি।
র বৈদিকঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ষহ য কি শক্তো। ইতি কবিকল্পক্রমঃ।। শক্তি রিহ দৈবাদিকস্য শক্ষাতো কপণতেন ক্ষমা
ইত্যর্থঃ। য সহ্যতি দুঃখণ লোকঃ সহত ইত্যর্থঃ। কি সাহ্যতি
। সএবায়ণ নাগঃ সহতি কলভেত্যঃ পরিভ্রষণ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ষহ জ ও শক্তো। ইতি কবি-কল্পক্রমঃ।। ইহাপি শক্তিঃ ক্ষমা । জ সাহঃ সহঃ। ও অন্যায়ণ সহতে নাসো। ইতি হলাযুধঃ ।ইতি দুর্গাদাসঃ।।

वश्मानुः पूर कमावान्॥ यखः॥ भयूतः। देखि मः किश्वमादााणाः मिवृजिः॥

ষাট্ ব্য সংখাধন । ইতি কে-চিৎ।। *

ষাতবঃ পুণ গানণ। রসঃ। ইতি
নেদিনী। রাগস্য জাতিবিশেযঃ। স চ ষট্সরমিলিতরাগরাগিণ্ডো । ষথা । ঔডবঃ পঞ্চভিঃ প্রোক্তঃ স্বরৈঃ ষড্ভিস্ত
যাডবঃ। সম্পূর্ণঃ সপ্রভি জ্রেষ্য ॥
এবং রাগ স্ত্রিধা মতঃ। ইতি

ষাস্ত্র

मङ्गीजनर्भनः ॥

ষাড্গুণ্য ক্লী রাজ্ঞাণ রাজ্যরক্ষণে উপায়াঃ ষট্। ষথা। সক্ষানাসনণ সন্ধিং ক্লমা অবস্থানণ
১। যাত্রাসন্ধানণ যুদ্ধার্থযানণ
২। বিগৃহ্ছাসনণ বৈরণ ক্লমার্থসনণ শত্রো র্ভষ্ম প্রদর্শনার্থণ
যানণ প্রদর্শ্য সন্থানে অবস্থানণ ৪। দ্বৈধীভাবঃ উভয়ত্র সদ্বীকরণণ ৫। অন্যেষাণ সণপ্রায়ঃ
দুর্গাদে শ্রহারাজস্য বা আপ্রযঃ ৬। ইতি মহাভারতে রাজধর্মঃ।।

ষাণ্মাতুরঃ পু॰ কার্ত্তিকেষঃ। ইত্য-মরঃ।।

যাত্বণত্বিকঃ ত্রি যত্বণত্ববিধায়কশাস্ত্রব্যাখ্যান ।। তত্রভবঃ ।
যথা। যত্বণত্বযোর্বিধায়ক শাত্রণ যাত্বণত্বণ তস্য ব্যাখ্যান স্তত্র ভবো বা যাত্বণত্বিকঃ। ইতি সিজান্তকোমুদী ।।

याध छ न य मिरको। ইতি কবি-कन्नफ्रमः॥ छ मिर्याष्ट्रमिछ। न माद्रािछ। य माधािछ। मिक्कि निष्मिखिः। ইতি দুর্गাদাসः॥ याखु क माমযোগে। ইতি কবি-

কল্পদ্রমঃ।। ক সাস্ত্র্যতি শো-कार्जः मयानुः। नियाञ्जविष्ठि। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ यार्छः वि यर्छः। यर्छभकाष স্বার্থে ক্ষ প্রত্যবেন নিষ্পন্নঃ।। षि न ११ **७३ वस्त्र**। ইতি কবি-कन्नफ्रमः॥ मूर्कनग्रापिः। ११ ७ ্ সিনাতি সিনীতে। ন সিনোতি मिनूरछ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ ষিচ প শ ঔ এ করণে। ইতি कविकन्नफ्रमः॥ श्रेश कि शिक्ष-তি সিঞ্চতে। ঔ সেক্তা। সিষিচ্ त्रविन मधुवशः। ইতি ভারবিः । ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ यि**ট অनामद्रा ই**তি কবিকল্প-क्रमः॥ मृर्क्षनग्रां निः। मिष्ठे थनः लाकः। इछि मूर्गामामः॥ विद्राः पू॰ कायूकः। लाष्टा ইতি · ভाষা। তৎপর্য্যায:। বিদ্বাঃ ২ ় নাগরঃ ৩ ভবিলঃ ৪ ছিদুরঃ ৫ , বিটঃ ৬ ব্যলীকঃ ৭ ষট্প্ৰাক্তঃ ৮ कामरकिलः २ विमृषकः ३० । ইতি ভূরিপ্রযোগঃ ॥ পীঠকে निः ১১ शीठेममंः ১२। ইতি **बि**∙॥ কাওশেষঃ ॥ পল্লবিকঃ ১৩। ইতি হেমচস্রঃ।। ষিধ উ শিবে।। শাস্ত্রে। ইতি

কবিকল্পদ্রমঃ। সূর্দ্ধন্যাদিঃ। উ অসেধীৎ অসৈৎসীৎ। শিবং মঙ্গলং। তদাকর্মকঃ। সিদ্ধো বর্ণসমায়ায ইতি কাতন্ত্রস্যাদ্য-সূত্রং। শাস্ত্র মনুশাসনং। সেধ-তি শিষ্যং গুরুঃ। ইতি দুর্গা-দাসঃ।।

ষিধ গত্যা । ইতি কবিকল্প দ্রুনঃ
। সেধতি। নিষ্ঠাষা দিধিতঃ।
ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ষিধ উ গত্যা । ইতি কবিকল্প-দ্রুন্মঃ ।। সেধতি । উ সেধিত্বা সিদ্ধা । ক্ত্বা বেটত্বাদ্যেম ডীম্বী-তি ইমো নিষেধে সিদ্ধঃ । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

ষিধ উষ্প সিদ্ধো। ইতি দুর্গাদাসঃ। উ সেধিত্বা সিদ্ধা। য
সিধ্যতি। ঔ অসৈৎসীৎ। অস্মাৎ পুষাদিত্বান্নিত্য ও ইত্যন্যে। সিদ্ধি নিশ্পত্তিঃ। সিধ্যতি
যটো নিষ্পন্ধঃ স্যাৎ ইত্যর্থঃ।
ইতি দুর্গাদাসঃ।।

বিশ্ব উ হিংসনে।। দীপ্তৌ। ইতি
কবিকল্পজনঃ।। উ সিম্ভিত্ব।
সিদ্ধা। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
বিল শ উপ্তে। ইতি কবিকল্পজনঃ।। উপ্ত উদ্ধৃতশস্য শেষা-

ষূ

পহরণ। শ সিলতি ধান্যণদীনঃ । मिनिछ।। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ বিধ য'উ তম্বততো। ইতি কবি-কন্নক্রমঃ ॥ তন্ত্ততি স্তন্তভি র্গ্রনণ য সীব্য**তি বস্ত্রণ সৌ** চিকঃ। উ সেবিদা সূমে। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ 📜 🐃 यू এ म मन्ना द्वार भी छ मह्म ইতি কবিকল্পজনগো সূর্জন্যা-দিঃ। ন এ সুনোভি সুমুতে । मक्षा मक्षानः। द्वार हैं स्थान মঙ্গলমানং বা 🕽 💖 চাৰুঞ অভিষ**ে ইতি প্রাক্ত**। অভি-ষবঃ পীড়ন মহন কেতি ত্রি-লোচনাদযঃ। স্নানক্ষেতি দুর্গঃ। সন্ধান ৰঙ্গলনান বেভি ৰাজু-थिनी**भः। ইতি पूर्शामामः॥** যু ঞ গতৌ। ইতি ক**বিক**ন্ধ-जग्भः॥ अ मुयाव मूयूरवं ॥ हेि मूर्वामागः ॥ ** ষু গতৌ।। ঐশ্বর্যাপ্রস্রববোশ্চ। रेि कविकन्नक्रमः॥ नवि । ইতি দুর্গাদাসঃ। 🔭 💮 यू न अश्वर्याथनतरमाः । इंडि কবিকন্ধক্রমঃ।।ল সৌতি।ইতি **जूर्गानां मः** ॥ ষুঃ পু॰ গর্ভবিষোচন । ইছ্যে-

काकतरकायः ॥

युष्ठे क छोट्छा ॥ जनामरत ॥

देशि किरिक प्रकार ॥ श्रम्भ यती

पेष या छः । क मू ए येशि । म छा।

पित्रय मिलि जीमः । छोट्छा म
बी जावः । देशि मूर्गामामः ॥

युष्ठ मीमन हि॰ भर्याः । देशि किरि
क्षाप्तमः ॥ मूर्जना मिः। श्रम्भ
मयती ॥ मूर्जना मूर्जना हिंशि किरि
व्याप्तमः ॥

व्याप्तमः ॥

व्याप्तमः ॥

विकार याः । देशि किरि-

ৰুর শ তৈশ্যবোঃ। ইতি কবি-ক্ষাজ্যমঃ। মূর্দ্ধন্যাদিঃ। শ গ্রুরছি সোরিতা সুযোর। ভা দীপ্তিঃ। ঐশ্য মৈশ্বর্যাং। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ষ্হ ৯ ব তৃপি।। শক্তো। ইতি
কবিকরজনঃ।। শক্তিঃকনা।
৯ অসূহৎ। য সুস্তি দুঃখণ
মুনিঃ সহত ইতার্থঃ। সুষোহ।
ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ষু ও ল সূতো। ইতি কবিকল্প
ক্রমঃ । মূর্দ্ধন্যাদিঃ । ও ল সূতে

। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

য য ও ও সতৌ। ইতি কবিকল্প-

ষুষ ও ও সুতৌ। ইতি কবিকলক্রমঃ।। ষ ও সুষতে। ও সূনঃ।
সূতি গর্ভবিমোচন । সূতে পুত্রা
নারী। অন্যত্রাপি ধর্মো। হর্থ

প্রসূষতে। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

মূ শ কেপে। ইতি কবিকলজেনঃ

।। মূর্জন্যাদিঃ। শ সুবৃতি। ইতি
দুর্গাদাসঃ ।।

যুঃ স্ত্রী গর্ভবিষোচন । ইতি কশ্চিদেকাক্ষরকোক ।।

বৃদ ও নিরাসে। ইতি কবিকর ক্রমঃ ।। বপ্তস্বরী। ও সৃদতে। নিরাসোনিংক্ষেপঃ। ইতি দুর্গা-দাসঃ ॥

ষূদ কণনে। ইতি প্রাঞ্চঃ কণন নবদারণ হিংসোপলকণ মিতি রমানাথেন ফ্যাখ্যাত । ইতি দুর্গাদাসঃ ম

ষুদ ক আশ্রুতি হত্যোঃ।। নিরাদে। ইতি কবিকর্মদ্রমঃ ।।
রঙ্গীকারঃ। ক সৃদযতি ধন• বিপ্রায় দাতু• দাতা।
রমানাথস্ত আসুবণ ইতি দস্তাসকার• পঠিদ্বা সুদষ্ঠি মদিরা
ভাণ্ডাৎ করতি ইত্যর্থ ইত্যাহ।
ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ষ্র ও য ঈ স্তব্যে।। হিংসে।
ইতি কবিকল্প ক্রমাণ ও য সূর্য্যতে। ঈ সূর্গঃ। কৈশ্চিদয়ণ ন
মন্যতে। স্তব্যো জডীজাবঃ।
ইতি দুর্গাদাসঃ।

युक्तं नामद्रा ३ छि कि विकश्यक्रभः

श द्रिक्ष्युक्तः यश्चेश्वती। मृक्ति

मृष्टे लाकः। ই छि मूर्गामामः॥

युक्तं जित्वं। ই छि कि विकश्रक्षमः॥

मृक्तं छि मूर्यापामः॥

यूक्तं छि मूर्यामामः॥

यूव्य श्वाद्य। ই छि कि विकश्रक्षमः॥

श्वाद्य। ই छि कि विकश्रक्षमः॥

श श्वाद्य। ই छि कि विकश्रक्षमः

श श्वाद्य। ই छि कि विकश्रक्षमः।।

ষেক ঋষ্ট সর্গণে। ইতি কবিকর্ম দেখা। মূর্দ্ধন্যাদিং। অস্য
বোপদেশ বিধ্যে বর্জনেপীহ
পাঠঃ কন্য চিদনুরোধাৎ। ঋ
অসিম্বেকৎ। ৪ বেকতে। ইতি
দুর্গাদাসং।।

रिका भ ठान गर्छाः। ইতি কবিকল্পজনঃ।। मूर्कनग्रापिः। भ
जित्रवन्द। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
स्वर भ छ छ म्वरन। ইতি কবিকল্পজনঃ।। भ जित्रविद् । এ
मেবতি मেবতে। ও দেবতে।
দেবন মারাধন মুপভোগ আভাষণাং। বিষণু সেবতে সুখ
দেবতে ভার্থ দেবতে সাধুঃ।
তান্যস্থলাৎ পরস্থৈপদ মমন্যমানাঃ নীচং সমৃদ্ধ মপি সেবতি
নীচ এব। স্বাধীনে বিভবেপ্য-

হো নরপতি॰ সেবস্থি কি॰ মানিন ইত্যাদৌ গণক্কতানিত্যন্ত্ব
মাহুঃ। ইতি দুর্গাদশসঃ।
বৈ ক্ষযে। ইতি কবিকলজন্মঃ।।
মূর্দ্ধন্যাদিঃ। সাঘতি। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

ষোষ নাশে। ইতি কবিকল দেশঃ । মূর্জন্যাদিঃ। নাশ ইহ নফীকরণং। য স্যতি যমো জ্ঞু-ন্। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।
সোলের পং সালেত্রসক্রেরসং ।

ষোডন্ পু॰ ষড্দন্তযুক্তবৃষঃ। ইতিহেমচন্দ্ৰঃ।।

বোডশ ত্রি সংখ্যাবিশেষঃ।

যডধিকা দশ। বোলো ইতি
ভাষা। তলাচকৌ ইন্দুকলা
মাতৃকাশকৌ। ইতি কবিকললতা।। নিত্যবহুবচনান্তোষণ।।
যোডশঃ ত্রি যোডশানাং পূর্ণঃ
। বোডশন্ শকাৎ ডট্ প্রত্যযেন নিপায়ঃ। ইতি সিদ্ধান্ত
কৌমুদী।।

ষেত্ৰপকলাঃ স্ত্ৰী চন্ত্ৰমণ্ডলস্য-ষত্ৰিকদশভাগাঃ। তাসাং না-ষানি যথা। তত শুক্ৰুস্য অমৃ-তাদি ষোত্তশকলাঃ পূৰ্বৰ প্ৰা-ৰপ্ৰতিষ্ঠাং ক্লম্বা পূজ্ঞাৰে । অং অমৃতামৈ নমঃ ১। আং মান- <u>ৰোডশ</u>

मारिय २। हे॰ श्वारिय ७। इ॰ जूरका ४। छे॰ श्रेका ६। छे॰ त्ररेका ४। स॰ वृर्टका १। स॰ भगिरेना ৮। ৯॰ हिस्स्कारिय ३॰ कारेखा ४०। ध॰ एका। एकारेय ४०। छे॰ व्यक्तमारिय ४४। ख॰ श्वारिय ४६। चः श्वाम्वारिय ४०। नमः मर्वत् ॥ भक्करम्हरू धारकाक यावाक शक्तां मिक्टिः श्रु-करयर। ইতি ভक्षमातः॥

याज्यमान की आकारने या-ডশপ্রকারদেষজব্য । তৎক্রম यादः माण्युमारिकाः। जूमा-मनः जनः बञ्जः अमीत्मा १मः ততঃ পর । তামূল চ্ত্র প-ন্ধাশ্চ মাল্যা ফল মডঃ পর ।। শ্ব্যা চ পাদুকা গাবং কাঞ্চন॰ ব্লক্তত তথা। দান মেতৎ ধো-ডশক প্ৰেত মুদ্দিশ্য দীষতে।। তৎ যোডশ যোডশকৈ রেকো দানসাগরো ভবতি ॥ 🛊 ॥ তত্ত্ব ভূমেঃ পূজাষাণ দানবাকো চ थियम**र**छि विस्मिषंगः। जूरम र्व्मवण विक्रुः। विकिवर्षमञ्जा-चिक्क् बचर्गवामः कनः। अठि-এर् उद्धापः अनिक्रीक्रमः।

ভত্তৰ বসমিধানে ভাৰ্দিশ্য व्यक्षिक्षा १। १। । ज्याननक छेखा-माहिद्धांका (क्वड)। द्वाकाश्चाना-নুত্তৰস্প্ৰাপ্তিং কল তত্ত্ िविटयमानुलटलक्षां ९ ः वस्यवग्राचा-কারেখেন: ছীর্মেন প্রতিগ্রহঃ। অব্যন্যত্রাপি। আমেষ করতল মাহায় জলস্য বৰুৰো দেবতা তৃপ্তি-श्वाश्विः कवा। ७।। वसमा वृश्-স্পতি দেঁবতা চক্রসালোক্য প্রা-প্তিঃ ফল । প্রতিতাহে দশান্ততা-হ্ পরিধানে ॥৪॥ দীপস্য অগ্নি र्ट्सवण উত্তমচকুः প্রাপ্তিः ফল॰ য়া ে। অমৃদ্য প্রজাপতি র্দেবতা অকষ সুখপ্রান্তিঃ ফলণা প্রতি-थार मुकिजर्य ॥ ७॥ जामू-লেখ্য বসস্পতি র্দেবত।। মেধা-বিশ্ব সুভগন্ব প্রাক্তন্ব দর্শনীযন্ত্র -धाक्षिः कलः॥ १॥ इखमा উछा-'নাঙ্গিরসো দেবতা সর্বব্যাধি বি--নিৰ্মুক্তম শ্ৰীমন্ত বহপুত্ৰম প্ৰা-खिः कमः। প্রতিগ্রহে मध्यात-্ৰংগ্ৰান্ত গন্ধৰ্য গন্ধৰো দেবতা खनाशास्थ्रवानः कवाः ।। वा -লান্য বনম্পতি র্দেবতা অভ্যন্ত नूषिष्ठरमः कवः ॥ अ॥ कव-ন্য বনস্পতি র্জেবতা। সুদাযুক্ত-

ত্ব ফল গা ১১ গা শ্বসাৰাঃ উন্তা-নাঙ্গিরসোদেবতা অত্যন্তসুথিত্ব-ভবনংক্ষণ প্রতিগ্রহে আরো-इंग ा ३२ ता भामूकायूगलमा छे ত্তান।কির্মো দেরতা স্বর্গলোক সুখগমন ফল। প্রতিক্রহে আ-রৌহণ ।।১৩।। ধেনো রুডো দে-क्छा। भूषात्नाक्थाशिः कनः। छत (धनू॰ आजूथी माजूमभीश-মানীষ। ওঁ ষা লক্ষীঃ সর্বভূতা-না॰ सा ह দেবেশ্বকঞ্জি। ধেনু-ৰপেণ সা দেবী মম শান্তি প্ৰয-চ্ছতু।। ওম দেবস্থা বা চ ৰুজাণী শকরদ্য চ ফা প্রিয়া। ধেনুরূপেণ मा सबी मम माखि॰ প্রযচ্ছতু॥ अप्र विरक्षा इंकिन या नकी या लची धनमभा है। या लचीः नर्व-**ज्ञानाः मा (४**न् ईत्रमाञ्च रम ॥ खब् हरूर्भ्यमा या मधीः या हा-চৈৰ বিভাবসোঃ। চন্দ্ৰাৰ্ক শক্ৰ শক্তি যা ধেনুৰূপাস্ত সা গ্ৰিষে।। ওম্বধাস্থ পিতৃ সংঘানা পাহা ৰজ্ঞজাণ ৰজঃ সৰ্বপাপহরা स्वनृ ज्ञाक्षि अगक् मा। अभ् गर्दामवनयी॰ तमवी॰ गर्दावम-'**ন্বীভথা। সর্বলো**ক নিমিতায नर्बरलाक गिरिह्यांगा अवस्था

মি মহাভাগা মক্ষযাষ সুখাষ চ
। ইত্যুক্তার্য্য উৎস্জেৎ। প্র
তিগ্রহে পুচ্ছধারণ ।। ১৪।। হিরণ্যস্যামির্দ্দেবতা দীর্ঘাষ্ণু প্রাপ্রিঃ ফল ।। ১৫।। রজতস্য চদ্রুমা দেবতা উত্তমক্রপপ্রাপ্তিঃ
ফল ।। ১৬।। ইতি শুক্ষিতত্ত্ব
।। ৠ ।। গ্যাপদ্ধত্যুক্ত ষোডশদান যথা। স্বর্ণ রৌপ্য তথা
তামু কা স্যা গাবে। গজা হ্যাঃ
। গৃহ ভূমি বৃষো বস্ত্রণ শ্যা
ক্রের মুপানহৌ।। দাস্যমণ
পিত্যজের দান ষোডশক
মত । ইতি বাষুপুরাণে গ্যা
মাহাত্যা ।।

ষোডশভুজা স্ত্রী ষোডশহন্তযুক্তা দুর্গা। যথা। যদা তু ষোডশভুজা মহামাযা প্রপৃক্ষযেৎ। দুর্গাতন্ত্রেণ মস্ত্রেণ বিশেযণতত্র বৈ শৃণু ।। কন্যাযা কে
ফপক্ষস্য একাদশ্যা মুপোষিতঃ
। দাদশ্যা মেকভক্তর নক্তণ
কর্যাৎ পরেহনি ।। চতুর্দশ্যা
মহামাযা বোধ্যিত্বা বিধানতঃ
। গীতবাদিত্র নির্ঘোষে নানা
নৈবেদ্য বেদনৈঃ ।। অ্যাচিত
বুধঃ ক্র্যাৎ উপবাস পরে

২হনি। এব মেব ব্রতং স্ব্যাৎ यावरिष नवभी छरवर ॥ रका-ষ্ঠাযান্ত সমভ্যচ্চ্য মূলেন প্রতি-পূজ্বেৎ। উত্তরেণার্চন ক্রমা व्यवगार उविमर्क्स्य ॥ ३७ কালিকাপুরাণে ৫৯ অধ্যায়ঃ।। ষোডশমাতৃকাঃ স্ত্রী ষোডশস•-थाकरमवीविटमयः। यथा। त्री-ৰ্য্যাদি যোডশমাতৃকাভ্যো নমঃ । ইতি দুর্গোৎসবপদ্ধতিঃ।। তা সা॰ নামানি যথা। গৌরী পদ্মা শচী মেধা সাবিত্রী বিজয়া জ-या। (प्रताना यथा याहा मा-তরো লোকমাতরঃ ॥ শান্তিঃ পুষ্টি ধৃতি স্তুষ্টি রাল্মদেবত্যা সহ। আদৌ বিনাষকঃ পূজ্যো অন্তেচ স্লদেবতা ৷৷ ইতি শ্ৰাদ্ধতত্ত্ব গা

ষোডশর্ষিক্জ্রত্বঃ পু॰ ষোডশপুরোহিতসাধ্যযাগবিশেষঃ। স
তু জ্যোতিফোমযাগঃ। দাদশাহসাধ্যসত্রষাগশ্চ। যথা।
জ্যোতিফোমে দাদশশত গো
দক্ষিণা বিভাগঃ ষোডশর্ষিজাণ
তাদক্ষতীভূতে সত্রাত্মকে দাদশাহসাধ্যে শতেনার্দ্ধিনো দীক্ষযন্তীত্যাদি দর্শনেন নির্ণীয়তে।

তত্র বিজাগণ মনু রপ্যাহ। সর্বে-ষা মৰ্দ্ধিনো মুখ্যা স্তদৰ্ক্ষেনাঞ্চি-নো ২পরে। তৃতীষিন স্তৃতীযাণ मा म्डजूर्श टेम्डक्शांनिनः ॥ দক্ষিণা গোশতবিভাগায় শ্রৌ-তকাত্যাষনোপি। অথ দাদশ कामन प्यारमाजाः वर्षे वर्षे वि-তীযেভ্য শতসু শতসু স্তৃতী-ধেতা স্তিসু স্তিসু ইতরেভ্যঃ। ইত্যত্র ষোডশর্বিজাণ চতুর শ্চ-তুরঃ ক্রন্ধা চত্বারো বর্গাঃ। ইতি মলমাসতত্ত্ব ৷৷ ঞ্চ ৷৷ এষা ৽ ঋত্বি-জा॰ मामानि यथा। बक्ता > बा-ন্ধণাচ্ছণ্দী ২ আগ্নীধুঃ ৩ পোতা ৪। এতে সাৰ্ববেদীষাঃ॥ হোতা ৫ মৈত্রাবরুণঃ ৬ অচ্ছাবাক্ ৭ আবস্তোতা ৮। এতে ঋষেদি-নঃ॥ অধর্যুঃ ৯ প্রতিপ্রস্থাতা ১॰ নেফী ১১ উম্বেতা ১২। এতে যাজুষাঃ॥ উন্গাতা ১৩ প্রস্তো-তা ১৪ প্রতিহর্তা ১৫ সুবন্ধণ্যঃ ১৬। এতে সামগাঃ। ইতি ম-হাভারতে মোক্ষধর্ম্মে ১০৫ অ-भगारम नीलक्छितिका ॥

ধ্যাষে নীলক ঠটীকা।। ষোডশাণশুঃ পুঁণ শুক্রঃ। ইতি শব্দমালা।। ষোডশকিরণযু-ক্তে ত্রি।। বোডশাঙ্কঃ পু॰ বোডশপ্রকারসুগন্ধি জব্যমিশ্রিতধূপঃ। যথা।
গুগুলু॰ সরল॰ দারু পত্র॰ মলযসম্ভব॰। হীবের মপ্তরু॰ সন্ত
গুড়॰ সর্জ্ররু॰ ঘন॰।। হরীতকী॰ নখী॰ লাক্ষা॰ জটামাণসীঞ্চ
শৈলজ॰। বোডশাঙ্কণ বিদু ধূপ৽ দৈবে পৈত্রো চ কর্মাণি।।
ইতি তন্ত্রসারঃ।। বোডশাব্যধযুক্তে ত্রি।।

যোডশাজ্মিঃ পুং কর্ম টাঃ। ইতি হেষচন্দ্রঃ॥ ধোডশচরণযুক্তেত্রি ষোডশার॰ ক্লী যোডশদলপদ্ম। ষথা। আধারে লিঙ্গ নাভৌ হ-**पर मत्रमिर्फ ठान्**मृत्न नना-টে ছে পত্রে ষোডশারে দিদশ দশদলে দাদশাৰ্ক্ষে চতুক্ষে। বা-जात्छ वामिनात्छ ७ क क ठ সহিতে কণ্ঠদেশে স্বর†ণা॰ হক্ষৌ কোদণ্ড মধ্যে সকলদলগত ব-ৰ্ণৰূপ নমামি॥ ইতি তন্ত্ৰ ।। 🗱।। জলাশযোৎসগীযবেদিকোপ-तिकर्खवाठकः। यथा। मथना-পুরাণে। রজসা মণ্ডল সর্য্যাৎ পঞ্চবর্ণেন তত্ত্ববিৎ। ষোডশার॰ ভবেচ্চক্রণ পদাগর্ত্তণ চতুর্দ্মখণ।। চতুরসুম্ব পরিতো বৃত্ত॰ মধ্যে

যোতশী

গুণোত্তর । বেদ্যা শ্চোপরি তৎ ক্রন্বা গ্রহাল্লোকপতী স্তথা ।। বিন্যসেক্সন্ততঃ সর্বান্ প্রতি-দিক্ষু বিচক্ষণঃ । ইতি জলাশ-যোৎসর্গতন্ত্ব ।।

ষোডশার্কিঃ পুশ শুক্রগ্রহঃ। ইতি ভূরিপ্রযোগঃ।। ষোডশশিখা-যুক্তে ত্রি।।

ষোডশাবর্ত্তঃ পু• শখঃ। ইতি হেমচক্রঃ।। ষোডশাবর্ত্তনযু ক্রেতি॥

যোডশিকামুণ ক্লী পলপরিমাণ । ইতি বৈদ্যকপরিভাষা।।

ষোডশী পু॰ যজ্ঞপাত্রবিশেষঃ।
যথা। অতিরাত্তে যোডশিন॰
গৃহাতি নাতিরাত্তে ষোডশিন॰ গৃহাতীতি। ষোডশী সসোমকপাত্রবিশেষঃ। ইতি মলমাসতত্ত্বং।

खां जी जा मान्यश्विमाछर्ग् जित्मा वित्या । यथा ।
काली जाता मश्विमा का जा ।
काली जाता मश्विमा का का खा ।
ज्वान श्वी का जा ।
जिल्ला श्वी का भा का का ।
जिल्ला का ।
जिल्ला का मन मश्विमाः निक्वविमाः अकीर्ज्ञिकाः ।। #।। ज्व

পারিভাষিকী॰ শোড্যী মাহ क्वानार्वरव। हस्त्राख॰ वाक्रवाख ঞ্চ শক্রাদি সহিত পৃথক্। বা-মাক্ষি বিন্দুনাদাঢ্য বিশ্বমাতৃক-वाञ्चक ।। विमारिन स्वा**क्रस्** দেবি সাক্ষাৎ জাগ্ৰৎস্বৰূপিণী । ত্রিকূটাঃ সকলা ভেদাঃ পঞ্চ-कृषा जविष्ठ हि॥ देवकवी व-मुक्छ। मा। यहक्छ। मानती ভবেৎ। अमार्गशंशो ह<u>म्लास्ट॰ इ</u>-কারঃ বারুণান্ত শকারঃ শক্তা-দী রেফঃ। বামাক্ষি ঈকারঃ। विमारिक शृर्वाक चामन विमा-मि ।। **विमानि मिख्न मि** বশক্তিমধী সদা। তদা ভেদাস্ত সকলাঃ ষট্কূটা পরমেশ্বরি।। रिक्कवी नवकृषी महा९ मञ्जकृषी **ह भारती। जंगार्थः। भिवमक्कि**-মধী পূৰ্বোক্তা বীজন্বধবতী। বে-मानिः थनवः। मिष्ठा जाति ভূষিতা॥**#॥ অথ ম**হাষোড**गी** । আদ্য বীজ্বষণ ভদ্রে বিপরীত-क्रिंग हि। विविधा श्रवस्थानि ততো ২ন্যানি সমুদ্ধরেৎ।। অ-ন্তর্মুখী বরারোহে সমারী ত্রিপু-রেশ্বরী। এভিস্ত পঞ্চসংখ্যাকৈ বীজৈঃ সংপ্টিতা যজেৎ ॥

ষোডশাক্ষরী। ত্রিকূটাঃ সকলা ভদ্রে যোডশার্গা ভবন্তি হি ॥ বৈক্ষব্যেকোণবিংশার্ণা শৈবী স-श्वेषभाकती। अमार्थः। जामा বীজদ্বৰ মাষা রমাত্মক । বিপ-রীত ক্রমঃ আদৌ রমা পশ্চামা-ষা। অন্তর্মধ্যে স্থিত কামবীজ मूर्थ जाति यमाः क्यायाः। এভিঃ পঞ্স शादिक वी टेकः वर् কুটা পপ্তকৃটা নবকৃটা বা সং পুটিতা সংপুটবৎ ক্রতা তেনা-নুলোম বিলোমতঃ সংপুটিতা মি-ত্যর্থঃ। যোগিনীতন্ত্রে। শ্রীবীজ মায়া স্মর যোনিশক্তি স্তারঞ্চ মা-যা কমলাথ বিদ্যা। শক্ত্যাদি বী-জৈশ্চ বিলোমতোক্ত্যা শ্রীষো-ডশীষঞ্চ শিবপ্রদিষ্টা।। তথা চ রুজজামলে। প্রী শাষা মদনো-বাণী পরা তার শিবপ্রিয়া। হরি-প্রিষা ত্রিকূটা সা পরা বাণী মনো-खदः ।। भाषा लच्ची र्मश्विमा ञी বীজ পোডশী পরা 🚓 অথ বী-कावनी रवाजनी। ऋजकायता। শ্ৰীবীজ মাযে সংলিখ্য তথৈব চ ঙ্গমারিকাণ শ্রীবীজ মাষে কামঞ্চ বাজাষা কমলা তথা ৷৷ পরা॰ কা-

মঞ্চ বাধীজং মাষা শ্রীবীজ মেব **छ। वीकावनी याजनीय॰ नर्ब**-তন্ত্রেষু গোপিতা॥ রাজ্য দেয় শিরো দেয় ন দেয়া ষোডশাক্ষ-রী।।ঞ্চা তন্ত্রান্তরে। আদ্যা স্বণ্ড-লিনী শক্তিঃ শক্তি রাদ্যা ততঃ পরা। নিবেশযেত্তষো র্মধ্যে দেবি গোবিন্দবল্লভা• ৷৷ ততন্ত মন্মথ• वीकः धीवीकः छमनखतः। श-লেখা রমযো ৰ্বক্তে বেদবক্ত্রণ বি-নিঃক্ষিপেৎ।। ততো লোপাণ ন্য-म्प्राप्ति जिकृषे। यथ वा शरा॰। আদ্যানি পঞ্চ বীজানি পশ্চাদ্বি-নাসা সুন্দরি॥ ষোডশীয়ণ সুগো-প্যা হি স্নেহাদ্দেবি প্রকাশিতা। অস্যা মাহাত্ম্য মতুল জিহ্না-কোটি শতৈ রপি॥ বক্তু•ন শক্য-তে দেবি কি॰ পুনঃ পঞ্চভি শুঁ খৈঃ । অপি প্রিষতম দেয় সুত দার ধনাদিক া৷ রাজ্য দেয শিরো দেষ ন দেযা যোডশাক্ষরী। তন্ত্রান্তরে। সিন্দুর রজসা বাপি **अक्टूरमन विद्याभिएछ ।** विशिष्ठा मर्भरयकृत्यो न ह कर्त अकाग-ষেৎ।। ততঃ স্বাত্ম বিশুদ্ধার্থণ ল-ক্ষ মেক জপেদ্গুরুঃ। 🕸। বীজ-(साजनी मार्। निक्कामत्न।

কানো মাধা রমা বালা ত্রিকূটা ञ्जी ভগाङ्ग्रा। कानी कामकना कृष्ठि गर्ना दि अगदः अदि ॥ औ মহাষোডশীযঞ্চ বা খ্যাতা ভূবন-बर्य। क्वारनन मृज्रूश विष्रा नर्वाञ्चादेव नंगकृष्ठां ॥ मञ्चलकः মহাবিদ্যা স্তন্ত্রাদৌ কথিতাঃ প্রি-যে। সারাৎসারতরা ভূতা যা যা विमाः म्रािशिजाः ॥ वहना कि মিহোক্তেন তাসা সারা তু ষো-ডশী। প্ৰকাশিতা মহাদেৰি যা পৃষ্টা তে পুনঃ পুনঃ॥।।। শাক্ত-কামরাজন্ত শ্রীক্রমে। মাষাবীজণ তথা ঝিন্টী কামণ শক্ত্ৰণ বিষৎ क्या । जाज्यामा मृगाह्य লাঞ্ছিত পরমেশ্বরী।। এতদাগ্ত-বকৃটঞ্চ পূৰ্ববৎ কামরাজক। ত থৈব শক্তিবীজম্ব সুন্দর্য্যেষা প্র-কীৰ্ত্তিতা।। অত্যাপি পূৰ্ববদীজ मः रयागः। याया नेकातः। विकी একারঃ। পুনঃ শাক্তমাহ। এত-ন্তগ॰ ততো মাষা বন্ধা শক্তো হরে। খগিনা। বামনেত্রেণ সংস্থ ক্তো নাদবিন্দু বিভূষিতঃ॥ এত-षाश्चव मूक्तिके शूर्वव कामन ক্তিকণ। ভগ একারঃ। অত্তাপি পূ ৰ্ববদীজ সংযোগঃ। অত্ৰ বিশেষঃ

৷ বন্ধবীজণ যদা দদ্যাৎ ত্রিকুটেষু वतानता अथमा मूनती (मवी षिতীযা ত্রন্ধানুদরী।। শক্তিকুটে মহেশানি অনন্তসুন্দরী মতা। এ-ষা তু সুন্দরী বিদ্যা মতভেদেন দ-শিতা। ত্রিকূটান্তে হণসবীজণ বি-ন্দুসর্গবিভূষিতণ এষা শ্রীপ্রাণ সণ-युका मात्रिका मृश्थ माहिनी ॥ ইতি তন্ত্রসারঃ।।ঞ্চা। ঊনবি॰শতি-পিওদানক্রিয়া যথা। প্রেতশিন লোক্তরীত্যা দাদশগিতান্যো-**पनी** शिक्षाः मा मा । इंठि ठी-র্থবাত্রাপ্রধোগতত্ত্ব ৷৷ ভদ্বিধান ষথা। অমাবস্যান্ত কন্যাকে তীর্থ প্রাপ্তৌ তথা নৃপ। রুত্বা ঞাদ্ধ বিধানেন দদ্যাৎযোডশ পিণ্ডক• u कायू भूता नीय खe প্रयार ना ষথা। উনবি॰শতি দাস্যমান পি-ওস্থানানি যথাদক্ষিণ ভাগ চত্-উয়েন কুতানি তত্ত্ব দক্ষিণাপ্তান্ त्रभान् वाखीर्य। वन्नष्कतन মৃতা যে চ গতি র্যেষাণ ন বিদ্যতে । আবাহিষিষ্যে তান্ সর্বান্দর্ভ-পৃষ্ঠে তিলোদকৈঃ।। याতा यह-न्रत्न रा ह गिर्धियां न विमार्ख । আবাহযিয়ে তান্ সর্বান্ দর্ভ-পূঠে তিলোদিকৈ:।। বন্ধুবর্গজলে

ষে চ গভি ৰ্ষেষা ন বিদ্যতে। व्यावाश्यव्या जान् नदीन् मज-পृष्ठि जिल्लामरेकः ॥ ইত্যোত স্তিলোদকৈ রাবাহ্ন। আত্রন্ধ স্ত-ৰপৰ্য্যন্ত॰ দেবৰি পিতৃ মানবাঃ। তৃপ্যন্ত পিতর: সর্বে মাতৃ মাতা-মহাদযঃ।। অতীত সলকোমিনা॰ ্সপ্তদ্বীপনিবাসিনা । আত্রন্ধ जूद नाल्लाका मिन यञ्ज जिल्ला-मक•॥ ইভ্যেতাভ্যা॰ তিলোদ काञ्जनीन प्रमार। ততো मृना-দিতঃ পিতৃতীর্থেন পিণ্ডান্ দ-দ্যাৎ চতত্তত্ত্বমাণ অস্মৎসূলে মৃতা যে চ গতি র্যেষাণ ন বিদ্যা-তে। তেষা মুদ্ধরণার্থাষ ইন॰ शिख• नमाग्र**र• ॥ ३॥ गा**जाग-र्ज्ञल (य চ গতি र्विया॰ न वि-माट**ा छिया मू**क्षत्रवार्थाय देग शिख• ममामार• ॥ २॥ वसूवर्ग-জলে ষে চ গতি র্যেষাণ ন বিদ্যতে ৷ তেষা মুদ্ধরণার্খায ইমণ পিণ্ডণ मनागर्॰॥०॥ অজাতদন্তা स्व কেচিৎ যে চ গর্ভে প্রপীডিতাঃ। তেया मुक्तत्रगार्थाय हैम॰ लिख॰ ननागरुशा शां अभिनकार त क्टियाधिनका ख्या शरत। वि-দ্যক্টোর হতা ষেক্ত জেভাঃ পিও•

ममाग्र ॥ ७॥ मावमार मृजा যে চ সি॰হ ব্যায় হতাশ্চ যে। দ॰-ফ্ৰিভিঃ শৃঙ্গিভি ৰাপি তেভ্যঃ পি-ख॰ ननागारः॥ ७॥ উवस्र नमृठा বেচ বিষশস্ত্র হতাশ্চ যে। আ-ত্মাপমাতিনো যে চ তেভ্যঃ পিণ্ড॰ मना गारू ॥ १॥ जता वर्षान-ৰনে কুধবা তৃষ্যা হতাঃ। ভূত প্রেত পিশাচাশ্চ তেভ্যঃ পিওং ननागर्।। वत्न ज्वा ॥ ৮॥ রৌরবে চান্ধতানিত্রে কালসূত্রে চ ষে স্থিতাঃ। তেষা মুক্ষরণার্থায इंग शिख मनाग्रह ॥ २॥ ज-নেক্যাতনা সংস্থাঃ প্রেতলোকে চ ষে গতাঃ। তেষা মুদ্ধরণার্থাষ इयः शिखः मनाग्रहः ॥ २०॥ ज-নেক ৰাভনা সংস্থা যে নীতা য-मिक्हिंदे । एवा मुक्कत्र नार्थाय रेयः शिक्षः जनायाहः ॥ ३५ ॥ न-রকেষু সমস্তেষু যাতনাসু চ যে হিতাঃ। তেষা মুদ্ধরণার্থায ইমণ र्शिखः पंताबाहः ॥ ३२ ॥ शखः-যোনিগতা যে চ পক্ষি কীট স-त्रीमृशाः। जय वा वृक्ररयानिङ्ग **रिख्याः शिक्षः मनाग्राहः ॥ ५० ॥** জাত্যন্তর সহস্রেষু ভ্রুমন্তঃ স্বেন কর্মণা। সানুষ্য দুর্লভ থেষা

তেভ্যঃ পিণ্ড॰ দদাম্যহ॰ ॥ ১৪॥ দিব্যম্ভরীক্ষ ভূমিষ্ঠাঃ পিতরো বান্ধবাদযঃ। মৃতা অসংস্কৃতা যে চ তেভাঃ পিঞ দদামাহ ।।।।।। ষে কেচিৎ প্ৰেতৰূপেণ বৰ্তম্ভে পি তরো মম।তে সর্বের্জৃপ্তি মাধা-ম্ব পিওদানেন সৰ্বদা ৷৷ ১৬ ৷৷ যে বাহ্নবা বান্ধৰা বা যে ২ন্যজন্ম-নি বান্ধবাঃ। তেষা॰ পিড্রো **মবা** দত্তো १करा मूलिकेका ।। ১৭।। পিতৃবংশে মৃতা যে চ মাতৃবংশে চবে নৃতাঃ। গুরু ধাণ্ডর বন্ধুনা॰ যে চান্যে বান্ধবা মৃতাঃ।। যে पि कत्न नुश्रिविधाः भूख मात বিবজ্জিতাঃ। ক্রিযালোপগতা যে চ জাত্যন্ধাঃ পঙ্গৰ স্তথা ॥ বিৰূপা আমগৰ্ত্তাশ্চ জ্ঞাতাজ্ঞা-তাঃ সলে মম। তেষা পিডেঃ মযা দত্তো ২ক্ষয্য মুপতিষ্ঠতা ।।। ১৮ ৷৷ আব্ৰ**ন্ধ**ণো ষে পিতৃৰণ্শ-জাতা মাতৃ স্তথা বশ্যভৰা মদী-যাঃ। সলদ্বে যে মম দাসভূতা ভূত্যা স্তথৈবাশ্রিত সেককাশ্র ॥ মিত্রাণি সখ্যঃ পশরশ্ব বৃক্ষা দৃষ্টা হুদ্ফাশ্চ কৃতোপকারাঃ। জ-সান্তরে যে মম দাসভূতা স্তেভ্যঃ স্বধা পিণ্ড মহ॰ দদানি ॥১৯॥ অ-

ত্রোনবি॰শতিপিত্তে যোডশ পিও-ষ পারিভাষিক পঞ্চামুবৎ। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ৷৷ ঞাএতেষা • মন্ত্রা-ণাণ জীলিকোহেন জীষোডশীম্বণ ভবতি।। 🛊।। অথ মাতৃষোডশী। गर्जामवगरम टेठव विषयम जृमिव-श्रिनि। ७मा निष्ठु मगोर्थाय मोजृ-পিণ্ড॰ দদাম্যহ॰ ॥১॥ মাসি মাসি ক্বত কন্ট বেদন। প্রসবেষ চা ত-मानिक्रमणयां माञ्भिख मना-ম্যহং॥২॥ শৈথিল্যে প্রসবে চৈব ়মাতু রত্যন্তদুষ্করণ। তস্যা নিষ্কুম-नार्थाय माञ्भिख मनामार ॥ ७ ।। পদ্যা॰ জনষতে মাতু দু : খৈঞ-व সুদুস্তর । তস্যা নিষ্কুমণার্থাষ माजृशिख॰ नमामाइ॰।। शाखा-মিত্যত্র দন্ত্যামিতি চ পাঠঃ॥ ৪॥ অগ্নিনা শোষতে দেহ॰ ত্রিরাত্রা-নশনেষু চ। তস্যা নিষ্কুমণার্থায चाकृत्रिखः ननागाइः॥ ।। जि-বেচ্চ কটুজব্যাণি ক্লেশানি বিবি-ধানি চ। তদ্যা নিদ্ধুমণার্থায় মা-তৃপিশু प्रमागाइ ॥ ७॥ पूर्व ७ ভক্তব্যস্য ত্যাগে বিন্দতি ৰৎ क्ल । जमा निष्कु में नार्थीय माजृ-शिखः नमाग्रहः ॥ १ ॥ तार्खो মূত্র পুরীষাভ্যাণ ভিদ্যতে মাতৃক-

र्ग हे । जना निष्क्रम नार्शीय मा-ज्लिखः बलामारः ॥ ৮॥ भूजः वादि नवाहुक नाजृतुः भ गर-निन्। छम्। निद्यम्भाषीय मा-कृशिखः प्रमासाइः ॥ २॥ यपा পুত্রো ন লভতে তদা মাতৃশ্চ শোচন । তস্যা নিজ্মণার্থায माजृशिख॰ मनागाइ॰ ॥ ३० ॥ कृथमा विश्रल भूख प्रपाछि নির্ভর স্তন। তস্যা নিষ্কুমণা-श्रीय माजृशिख मनागाइ ॥ ১১ ।। দিবা রাত্রৌ বদা মাতুঃ শো-বণক পুনঃ পুনঃ। তস্যা নিছ-यगर्थाय याज्ञिखः मनायादः ॥ ১২ ৷৷ পূৰ্বে ভুদশনে মাসি মাতু त्रठाखनूकत्र । তमा निक्रमना-थाय याजृशिख मनागाइ ॥ ১৩ । গাত্রভঙ্গে ভবেমাতু 🛫 নৈব প্ৰয়চ্ছতি। তস্যা নিদ্ধুমণা-ৰ্থাৰ মাতৃপিত্ত দদাম্যহং ৷৷ ১৪ য় অন্নাহারবতী মাতা যাবৎপু-শ্ৰো ২স্তি বালকঃ। তস্যা নিছ্-মণাৰ্থায় মাতৃপিঞ দদাম্যহ।।। ३७॥ यमकादत महारकादत श्री মাতৃশ্চ শোচন । তস্যা নিছ্ম यगार्थाय माञ्भिख मनामाइ।।। ১৬॥ ইতি গৰাবা প্ৰসিদ্ধ ॥

যোঢান্যা

রোডশোপচারঃ পু• বোডশ-প্রকারপুজাজব্যং। যথা। আ-সন স্থাগত পাদ্য মর্ঘ মাচম-नीयकः। मधुलकां हमन ज्ञान বসনাভরণানি চ।। সুগন্ধিসুম-ता श्रुभ मीभ देनद्वमा वन्मन । প্রযোজ্যেদর্চনাযা উপচারা স্ত যোডশ্।। ইতি তন্ত্রসারঃ।। (बाठा वा विध्यकात्र । यथा। म-প্রাসন্ধ উপোদ্যাতো হেতৃতাব-मत्र खथा । निर्वाहरेकककार्याट्य ষোঢ়া সঙ্গতি রিষ্যতে ॥ ইত্য-न्मिट्टो जागमी गीविका॥ म॰-शाया शाह् अकारत । इंछि मृ-ত্তেণ ষষ্ শব্দাৎ ধাচ্ প্রত্যযেন নিপাতনামিপাম। ইতি মুগ্ধ-वाधवाकत्रकः ॥

বোঢান্যাসঃ পু• বিধিনা শরীরে मञ्जविनामः। यथा। व्यथ स्था-কেবলা মাতৃকা ক্ষা মাতৃ-কা ভারসংপুটা। মাতৃকাপু-টিত তার ন্যাসেৎ সাধকসত্ত-মঃ ॥ ১ 🕨 🕮 বীজপুটিতা • তান্ত মাতৃকাপুটিতম্ব তৎ।২। কা-মেনপুটিতা দেবী তৎপুটি কাষ মেবচ ৷৷ ৩ ৷৷ শব্জ্যা চ

পুটিতাণ দেবীণ শক্তিঞ্চ তৎপু-हाः नारमः । १। कीः बन्नुक भू-न न्यु । स स ५ २ २ क शूर्वव ।। ৫ ৷৷ মূলেন পুটিতা দেবী তৎ-পুট॰ মন্ত্ৰ মেব চ। ৬। অন্লোম विलायन नास्त्रा मक्क यथावि-ধি।। মূলেনা**উশক স্থ্যা**ৎ ব্যাপক তদনন্তর । যথা। প্র-ণবপুটিভা॰ মাতৃকা•। এব• মা-তৃকাপুটিত তার ৷ এব জী-বীজপুটিতা[•] তা•। তৎপুটি-ত শ্ৰীবীজণ এব কাষেন পু-টিতা॰ মাতৃকা॰। মাতৃকাপুটি-ত কামণ। এব শক্ত্যা পুটি-তা॰ মাতৃকা॰। মাতৃকাপুটি-তা॰ শক্তি॰ ন্যাসেৎ ৷ তথা की॰ षमुक स स र र र क शूर्व-वद् । তद्श्रुविञाः मार्जुकाः नेत দেৎ। মাতৃকাপুটিতঞ্চ তৎ। মন্ত্রপুটিতা॰ মাতৃকা॰। তৎপু-টিত মন্ত্রণা পুন রনুলোম বি-লোমেন কেবল মাতৃকান্থানে ন্যস্য মূলেনাফশতেন ব্যাপক• স্ব্যাৎ। অ্য ন্যাস স্তারাযা অপি কার্যাঃ।। ইতি গুপ্তেন দুৰ্গায়া অঙ্গষোটা প্ৰকীৰ্ত্তিতা। তারাষাঃ কালিকাষাশ্চ উন্মৃ-

খ্যাশ্চ তথাপরে ৷৷ এতস্মিন্ न्गामक्टर्या ह मई॰ भाभ॰ अव-শ্যতি। ইভিতন্ত্রসারঃ।। ফক ম: প্রতীঘাতে। ইতি কবি-কল্পদ্রমঃ।। ম তিষ্টক্ষিষ্তি। ইতি দুর্গাদাসঃ।। ফীগ মএ সংবৃতৌ। ইতি কবি-কল্পদ্রসং।। ম তিফাগিষিতি। দন্ত্যবৰ্গ দ্বিতীযোপধ ইতি কে-हि९। इंछि मूर्गामामः ॥ ষ্টন মি শব্দে। ইতি কবিকল্প-ক্রমঃ।। মি স্তনযতি স্তানযতি অতিষ্টন । ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ ষ্টভ ই ও স্তম্যে। ইতি কবিকল্প~ দ্রুমঃ।। ই স্তম্ভ্যুতে। ও স্তম্ভতে । তিষ্টম্ভবিষতি। ইকারস্য পুন-ৰুক্তিঃ পূৰ্বত্ৰ তৎসয়ন্ধ নিষেধা-বৈব ঙিতস্ত সর্বে। এক এবেৎ পাঠবলাৎ বাধ্য ইতি বৎ। স্ত-েন্ডো জডীভাবঃ জডীকরণঞ্চ। স্তম্ভো স্থূণা জডীভাবৌ ইত্য-মরোক্তেই। শীতেনাবস্তব্ধঃ জ-ডীক্বত ইত্যৰ্থঃ। ইতি ক্ৰমদীশ্ব-রোক্তেশ্চ। স্তম্ভ ইহ ক্রিষানি-রোধঃ। ইতি ভীমঃ। দোষবৃদ্ধি রিতি গোবিন্দভটঃ। স্তস্তোরু-দ্বীকরণঞ্চ। স্তম্ভতে কবাটেন

উম বৈক্লব্যে। ইতি কবিকল্প ডেমঃ ।। বৈক্লব্য প্ৰিছলীভাবঃ । স্তমতি ৷ অতিষ্টমৎ । ইতি দুৰ্মা-দাসঃ ।।

নিটিয় ন ও আস্কদি। ইতি কবি-কল্প দ্রুমাণ আস্কৎ আস্কন্দনণ । অভিযোগ ইতি ভট্মলঃ। ন ও স্তিনুতে নদীণ পাস্থঃ। তি-নিটিয়ে। ইতি দুর্গাদাসঃ।। নিটিপ ঋ ও শ্চুতি। ইতি কবি-

কল্পদ্রমা । ঋ অতিষ্টেপৎ। ও স্তেপতে তিষ্টেপে। শ্চ্যুতি ক রণে। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

ফিন য ক্লেদে। ইতি কবিকল্প-

ক্রমঃ॥ য স্তিমাতি তিকেম। ক্রেদঃ আর্জভাবঃ। ইতি দুর্গা-দাসঃ॥

ফীম ষ ক্লেদে। ইতি কবিকল্প- ভি ক্রমঃ।। য ফীমাতি তিফীম। বি ক্রেদ আর্দ্রভাবঃ। ইতি দুর্গা- ফূপ

मानः॥
स्रे क्व खटो। ইতি কবিকরक्रियः॥ मूर्कनग्रामिः। क्व न
स्रोठि खरीठि छटि। ইতি
मूर्गामानः॥

কুট ও প্রসাদে। ইতি কবিকর ক্রমঃ । মূর্জন্যাদি স্তমধ্যঃ । প্রসাদঃ প্রসমীভাবঃ । ও স্তো-চতে জনং তোক্ট্চ্যতে । ষদ্যা-ধো মূর্জন্যণ ইতি কেচিৎ । স্নোচতে সোমুচ্যতে । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

ফুড উঙ স্তম্ভে। ইতি কবিকল্প
দ্রমান উ স্থাভিদ্বা স্থকা।

ড স্তোভতে তুফোভিষিবতি।

স্তম্ভো কৃডীভাবং তৎকরণঞ্চ
। স্তম্ভো কৃণা জডীভাবাবিত্যমরোক্তেং। শীতেনাবস্তকো জডীক্ত ইত্যর্থং। ইতি ক্রমদীশ্বরোক্তেশ্চ। শাস্ত্রেণ স্তোভতে
ভূষো লঘুপ্রক্রতিকো নরঃ।
ইতি হলাবুধং। স্তোভতে বৃধং
শীতো বাষুং। ইতি চতুভূজঃ।

স্তম্ভ ইহ ক্রিষানিরোধং। ইতি
ভীমং। দোষবৃদ্ধি রিতি গোবিন্দভটং। ইতি দুর্গাদাসং॥

ফুপ ক উফ্রাষ্থে। ইতি কবি-

कन्नफ्रमः॥ यश्चेत्रती। উচ্ছাবো-तानीकत्रनः। क खूश्याचि धानाः क्षयकः। जुकूशियाचि । इंजि पूर्गानामः॥

ফূপ য ইর উচ্ছাবে। ইতি কবি কল্প দ্রমান যথ স্বরী। য জ্পা-তিন ইর অস্তৃপৎ অস্থূপীৎ। পুষাদিদ্বান্নিতাণ ও ইতানো। অতুফূপৎ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ ফ্রি উশ বধে। ইতি কবিকল্প-ডেমঃ॥ মূর্দ্ধন্যাদিঃ তমধ্যঃ। উ অস্তর্গৎ অস্তৃক্ষৎ। শ স্তৃহতী স্তৃহন্তী। তিউই্থিষ্ঠি । ইতি দুর্গাদাসঃ॥

ফূক্ষ গমনে। ইতি কবিকল্পদ্রনাঃ

। সপ্তমন্ত্ররযুক্তঃ তমধ্যঃ। স্তৃকতি। তরীফ্ট্ক্যতে। ইতি
দুর্গাদাসঃ।

।

क्रूंश के न यर्थ। ইতি करिकन्न ज्ञान प्रश्निमानिः ज्ञान । अक्षेत्रस्ती। के अस्ट्री अस्ट्री अस्ट्री। जिस्ट्रे क्रूण्या स्ट्रिस्तानामः॥ रिकेश अ ७ न्त्रांति। ইতি करि-कन्न ज्ञान ॥ अ अजिरकेश । ७ रस्तर्भात जिरकेरिया न्त्रांति क्रान्ता । इंजि नूर्गानामः॥ ক্যুমঃ পুণ চন্দ্রঃ।। দীপ্তিঃ। ইতি কেচিৎ।।

কৈয় সংহতো ॥ ধনো । ইতি
কবিকল্পজনঃ ॥ অন্তন্তাদ্যযুক্ত
দন্ত্যবর্গাদ্যমধ্যঃ ষ্যোগাৎ টঃ
। তেন তফ্টো তফ্টাসতি ।
তাফ্টাষ্টে নাকঃ একত্র সমূহায়
তে শন্দাষ্টে বা ইত্যর্থঃ। দন্ত্যবিধী ফ্টো মক্ক চিবাং বর্জনাম
দন্ত্যঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥

ফিগ ম এ সংবৃতী। ইতিকৃবিকল্পদ্রনা। মূর্দ্ধন্যাদি স্তমধ্যঃ
যথোগাৎ টঃ। ম তিফগিষিষতি। এ অস্তগীৎ। দস্ত্যবর্গদিতীযমধ্যঃ। ইতি কেচিৎ।
তিষ্ঠগিষিষতি অতিষ্ঠগৎ। ইতি
দুর্গাদাসঃ।

ঠল জ স্থিতো। ইতি কবিকল্প-দ্রুমঃ ।। জ স্থালঃ স্থলঃ। স্থল-তি লোক স্তিষ্ঠতীত্যর্থঃ । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

ষ্ঠা ঞি স্থানে। ইতি কবিকল্প-দ্রুমঃ।। ঞি স্থিতো হস্তি। স্থা-নুগ গতিনিবৃত্তিঃ। তিন্ঠতি সাধু ধর্মো। পূৰ্ভত স্তিন্ঠমান ইতি বীরচরিতে প্রকাশার্থে আত্ম- নেপদবিধানাৎ শানঃ। অথ বা তাচ্ছীল্যে শতুঃ শানঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥

ষ্ঠিব উ নিরাসে। ইতি কবিকলক্রমং ॥ উ ঠেবিদ্বা গ্রুড়া। অস্যা
নেম ডী শ্বী ইত্যাদিনা ইমো
নিষেধে নিপ্তাযাণ গ্রুত ইতি
ভেদঃ। নিরাস ইহ ফুৎকার
ইতি ভউমলঃ। মুখেন শ্বেমা।
দে র্বমন মিতি কেচিৎ। ইতি
দুর্গাদাসঃ ॥

ষ্ঠিব, য নিরাসে। ইতি কবিকল্প-ক্রমঃ। য ষ্ঠীব্যতি। ইতি দুর্গা-দাসঃ।।

ষ্ঠীব নিরাসে। ইতি কবিকল্প
ক্রেমঃ ।। স্ঠীবতি। য॰ হুন্থিন॰
মত্বা ষ্ঠিবুক্লমাচমো ২পীতি দীর্ষিণি বিদধামঃ সএবাষণ স্ঠীবিষ্যতি ইত্যাদি সাধনাষ দীর্ঘী
পঠ্যতে। তেন হুন্থিনোগ্রহণেনাম্মিন্ গৃহীতে ভাদ্যাদি ষ্ণঃ
ম্ন ইত্যাদিনা মুর্দ্ধন্যষস্য দন্ত্যসোন স্যাৎ এবং স্থিবজাদ্যোঃ
খেরিত্যাদিনা খে প্রকারস্য তকারে তিন্ঠীব টিন্ঠীব ইত্যপি
স্যাৎ। ষত্ত্ব সত্যপ্যাম্মিনটি
স্থীবন মিতি নিপাতনং তদস্য

সর্বসন্মতত্বাভাবাৎ। নিরাস ইহ ফুৎকার ইতি ভটসঙ্গঃ। মুখেন শ্লেমাদে র্বমন মিতি কেচিৎ। স্তীবত্যমং লোকঃ। স্ঠীবামি শুকেক্ষুলতাস্থিকরং। ইতি দুর্গাদাসঃ।

रुत य ৯ छ भि निवारम। ইতি
কল্পজ্ঞ । मूर्कनगामि मंख्य
कविनकात्रयुक्यः। य सम्ग्राठि।
৯ অसम्ब। छ समिन्न। सूख्रा।
भि समय्ि सामय्ि। ইতি
मूर्गामामः॥

কা ল শোধনে। ইতি কবিকল্প
ক্রমঃ ।। মূর্দ্ধন্যাদি রয়ণ । দস্ত্যাদি রয় মিতি কশ্চিৎ! ল
মাতি গঙ্গায়াণ ধীরঃ । অনুপসর্গস্য ঞৌ জ্বল হ্রলেত্যাদিনা
হুষো বা স্পর্যতি স্নাপ্যতি ।

সোপসর্গস্য তু প্রস্নাপ্যতি ।
ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

কিহ য উ ৯ ঞি প্রীতৌ। ইতি
কবিকল্পদ্রমা। উ স্নেহিষ্যতি
স্নেক্ষ্যতি। য স্নিহ্নতি বন্ধুঃ। ৯
অন্নিহৎ। ঞি স্নিশ্বঃ স্নীঢো
২স্তি। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
কিহ ক স্নেহনে। ইতি কবি-

কল্পজনঃ৷৷ সেহন প্রশ্বীভাবঃ

। ক সেহযতি বর্ত্তিকা তৈলেন।
ইতি দুর্গাদাসঃ ।।
ফু ঞল স্ততৌ। ইতি কবিকল্প
ফ্রনঃ ।। ঞল স্তৌতি স্তবীতি
স্ততে। ইতি দুর্গাদাসঃ ।।
ফুচ ও সেচনে। ইতি কবিকল্প
ফ্রনঃ ।। স্নোচতে সুফুচে। ইতি
দুর্গাদাসঃ ।।
ফুন য ভক্ষে। ইতি কবিকল্প
ফুন য ভক্ষে। ইতি কবিকল্প

। দন্তা নকারযুক্তঃ। য সুমাতি
সুফোম। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
ফুহ য উ৯ উদ্যারে। ইতি ||
কবিকল্পদ্রনঃ।। দন্তানকারযুক্তঃ। উদ্যারো বান্তিঃ। য
স্থতারং লোকঃ। উ স্নোহিযাতি স্নোকাতি। ৯ অসুহৎ।
ইতি দুর্গাদাসঃ।।

কৈ বেষ্টে। ইতি কবিকল্পজনঃ

। প্রক্নত্যা দন্ত্যবর্গশেষোপধঃ

। সাযতি বৃক্ষণ লতা। অনুপদর্গায় এলা জ্বলেত্যাদিনা

হুসোবা। স্বপ্যতি স্নাপ্যতি।

সোপদর্গদ্য তু প্রস্নাপ্যতি।

ইতিদর্গদোদঃ।

।

মি ও স্মিতে। ইতি কবিকল্প-দ্রুমঃ। স্মিত মীষদ্ধাস্য ও স্মাষ্ঠ্যতে বধুঃ। বিস্মাপ্যতে । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

যক ও সর্পণে। ইতি কবিকল্প
দ্রুন্থা। বকারযুক্তাদিঃ কোপধঃ। ও যক্তে যিয়কিষতে যাযক্তাতে। দন্ত্যবিধাবস্য বর্জ্জনাম দন্ত্যঃ। চন্দ্রোদযন্ত ইমণ্
পঞ্চমম্বরিণ মন্বা যুক্কতে যুযুকিষতে যোযুক্যতে ইত্যাহ।
ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

শ্বদ ক্ স্থাদে ।। ছেদে। ইতি কবি-কল্পদ্রমঃ ।। স্থাদো রসোপাদা-নং। ক স্থাদ্যতি ক্ষীরং লোকঃ । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।

यम ७ श्रीठ निरशः। ইতি
কবিকল্প দাং। প্রীতিঃ প্রীতীকরণং। লিট্ রসোপাদানং। ৩
অপাং হি তুপ্তায় ন বারিধারা
যাদুঃ সুগন্ধিঃ স্বদতে তুষারা।
ইতি শ্রীহর্ষঃ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
যানু ঔ ঞিও আলিকে। ইতি
কবিকল্প দাং।। বকারযুক্তাদিঃ
। আলঙ্গ আলঙ্গনাং। ও স্বজ্ঞা।
। ঞি স্বক্তোন্তি। ও স্বজতে
যুবতীং যুবা। পরিষ্কৃতি পাক্ষালী মধ্যমং পাণ্ডুনন্দন মিতি
গণক্কতানিতাত্বাৎ। ইতি দুর্গাদাসঃ।।

व्रभः छ घ नू कि भारत। देखि कविकब्रक्षकाः । वकात्रयुक्त मू-र्कनगिनः। ঔ অञ्चान्तीः। घ লু স্বপিতি। ঞি সুপ্তোম্ভি। শ कः नगनः। ইতি দুর্গাদাসः॥ হুৰ্ত্ত ক গভ্যা ।।। তকে। ইতি कविकब्रक्कमा ।। वका त्रयुक्क मूर्क्न-नामिः। ज्राह्म। मृः स्थन जीवन॰ । क श्रव्यं छ जत्ना शक्छ छ मुः-খেন জীবতি বেত্যর্থঃ। অসিয়-र्खं ६। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ বিদ ঞি আ ৬৯ মোহ সেহ মোকেষু। ইতি কবিকল্পদ্রসংগ। 'ঞি স্বিন্নো ২স্তি। আ স্বেদিত॰ স্থিম° তেন। ঙ স্বেদতে তিলঃ তৈল॰ মুঞ্চি ইতার্থঃ। অস্বিদৎ। স্নেহঃ স্লিগ্ধীভাবঃ। रेि पूर्गामामः ॥ বিদ ৯ ঔ য আ ঞি স্বিদি।ইতি কবিকল্পক্রমাঃ ১ অস্বিদৎ। ঔ স্বেত্রা য স্বিদ্যতি। আ স্বেদিত বিশ্বণ তেন। ঞি বি-মো ২ন্ডি। সিদীতি নোহ স্নেহ रभारकशिक्तिशालकः। शाक-প্রকারণে ইতি প্রাক্ষঃ। ন চ স্বিদ্যতি তদ্যাঙ্গ মিতি লহাযুধঃ 1 ইতি দর্গাদাসঃ ॥

স 'দন্ত্যসকারঃ। সতু ব্যঞ্জন षािं निर्वास विकास ञ्चान पर्छः। देखि व्याकतन ॥ তৎ স্বৰূপণ যথা ৷ সকারণ শৃণু চাৰ্ৰন্ধি শক্তিবীজ্ঞ পরাৎপরণ। কোটি বিদ্যুলতাকারণ সণ্ডলী ত্রেষ সংযুক্ত ৷ পঞ্চদেবময়ণ দেবি পঞ্জাণাত্মক সদা। রজঃ সত্ব তমোযুক্তণ ত্রিবিন্দু সহিতণ সদা ॥ ইতি কামধেনুতন্ত্রণ।।।। অস্য লেখনপ্রকারো যথা। সঞ্চিতা বামতো দক্ষগতা চ গোক্ততি স্তুধঃ। পুনৰাৰ্দ্বগতা তাসু বঙ্কি চন্দ্র দিবাকরাঃ।। সাত্রা ভবানী বিজ্ঞেষা ধ্যান মদ্য প্রচক্ষ্যতে। ইতি ধর্ণোদ্ধারতন্ত্রণ ॥ ৠ॥ অস্য थानानि। **खङ्का**यताः खङ्कावर्गाः দ্বিভূজাণ রক্তলোচনাণ। শ্বেত-**চদ্দন লিপ্তাঙ্গী**॰ मूकाशादाण-শোভিতা॰ গন্ধৰ্বগীযমানাঞ্চ স-দানন্দময়ী পরা ।। অফসিদ্ধি-প্রদাণ নিত্যাণ ভক্তানন্দ বিব-র্দ্ধিনী । এব খ্যাত্বা সকারম্ভ তন্মন্ত্ৰণ দশধা জপেৎ।। ত্ৰিশক্তি সহিত বর্ণ আত্মাদি তত্ত্ব সংযু-ত । প্রণম্য সতত দেবি হৃদি ভাবয সুন্দরি ৷৷ ইতি বর্ণোদ্ধার

তন্ত্রণ। য়।। তৎপর্যায়ঃ। সো
হংসঃ সুষশা বিষ্ণু ভূ ধীশ শচ্স্রসংজ্ঞকঃ। জগদ্বীজং শক্তিনামা
সোহং বেশবতী ভূগুঃ।। প্রক্ষতি রীশরঃ শুদ্ধঃ প্রভা শ্বেতা
সলোজ্জ্বলঃ। দক্ষপাদো ২মৃতং
ব্রান্ধী পরমাত্মা পরো হক্ষরঃ।।
সুরূপা চ গুণেশো গৌঃ কলকঠো বৃকোদরী। প্রাণাদ্যাশ্চ
পুরা দেবী লক্ষীঃ সোমো ছিরণ্যপূঃ।। দুর্গান্তারিণি সম্মোহাজ্জীবো মূর্ত্তি র্মনোহরঃ।
ইতি ভন্ত্রণ।।

সং^ন ব্য শোভনার্থঃ। সমার্থঃ।।
সঙ্গতার্থঃ। প্রক্রম্বার্থঃ। ইতি
মেদিনী ।। উপসর্মবিশেষঃ ।
অস্যার্থাঃ যথা। সম্ প্রকর্ষাক্রেষ নৈরন্তর্য্য উচিত্যাভিম্খ্যেষ্। ইতি মুগ্ধবোধটীকাষাণ
দুর্গাদাসঃ।।

সঃ পু॰ ঈশ্বরং। সর্পাঃ। ইতি
শব্দরত্বাবলী। পক্ষী। ইত্যেকাক্ষরকোষং। বিক্ষুঃ। যথা।
সংস্যাদিকৌ হরে সর্পে। ইতি
ভরতৈকার্থসংগ্রহং।। পূর্বোক্তপরামর্শকঃ। সে ইতি ভাষা। তদশব্দস্য প্রথমৈকবচননিষ্পারঃ

। यथा। সো श्रेशके तिमा श्रिक्त में में में में स्था । स्थ

সংজ্ঞঃ ত্রি লগ্নজানুকঃ। যথা। প্রাজ্ঞঃ প্রগতজানুঃ স্যাৎ প্র-জ্ঞো ংত্রৈব চ দৃশ্যতে। সংজ্ঞঃ সংহতজানুশ্চ ভবেৎ সংজ্ঞো-পি তত্র হি।। ইতি সাহসাঙ্কঃ। ইত্যমরটীকাষাণ ভরতঃ।।

সংজ্ঞাপন ক্লী মারণ । ইত্যমরঃ
। বিজ্ঞাপনক।।
সংজ্ঞপ্তিঃ স্ত্রী মারণ । ইতি হেমচক্রঃ।। বিজ্ঞাপনক।।
সংজ্ঞা স্ত্রী চেতনা। বৃদ্ধিঃ।। নাম
। আখ্যা।। হস্তাদ্যৈরর্থসূচনা।
হস্ত জ্ঞালোচনাদিভিঃ প্রধোজ-

নস্জ্ঞাপনা। ইত্যমর ভরতে। ।। গাষত্রী।। সূর্য্যপত্নী। ইতি মেদিনী।।

সম্জাসূতঃ পু• শনিঃ। ইতি কেচিৎ।।

সংজ্ঞৃ ত্রি সংহতজানুকঃ। ইত্য-নমরঃ॥

সংস্থারঃ পু• অগ্নিজতাপঃ। ইত্য-মরঃ।।

সংযঃ পু॰ কন্ধালঃ। ইতি শব্দ-চন্দ্ৰিকা।

সংযতঃ ত্রি বন্ধঃ। ইত্যমরঃ।।
ক্রতসংযমঃ। যথা ব্রহ্মপুরাণং।
যো যঃ কশ্চিত্তীর্থযাত্রান্ত গছেৎ সুসংযতঃ সচ পূর্বং গৃহে
স্বে। ক্রতোপবাসঃ শুচি রপ্রমন্তঃ সংপৃত্তযেন্ডক্তিনম্যে গণেশং॥ ইতি প্রাযশ্চিত্ততত্ত্বং॥
সংযৎ পুং স্ত্রী যুদ্ধং। ইত্যমর
ভরতৌ।

সংষদ্ধরঃ পু॰ বাগ্বতঃ।। জন্তুসমূহঃ
। ইতি সংক্ষিপ্তসারোণাদিবৃত্তিঃ
সংষদ্ধরঃ পু॰ নৃপঃ। ইত্যুণাদিকোষঃ।। •

সংযন্তা ত্রি সংযমনকর্তা। নি-যন্তা। সংপূর্বযমধাতো স্তৃন্প্র-ত্যযেন নিষ্পন্ধঃ ॥ म॰यमः भू॰ बाजामात्र भूर्विमिन-কর্ত্তব্যাচারঃ। তৎপর্য্যষঃ। বি-यागः २ विषयः ७ यागः ८ यगः ৫ সংযামঃ ৬। ইত্যমরঃ॥ সংয-यनः १ निषयः ৮। ইতি ধরণিঃ ।। তদ্বিধান যথা। অথ দশমী-नियमाः। मृतिमत्छात्य। का॰-স্যু মাণসং মসূরঞ্চ চ্ণকং কোর-দূষক । শাক মধু পরানঞ্চ ত্য-জেদুপবসন্ দ্রিয়ণ।। অত্যোপব-সন্নিতি তদ্দিনে ভোজনাসম্ভ-বাৎ সামীপ্যাৎ পূর্বাপর দিন-যো গ্রহণ । স্মৃতিঃ। শাক মাষ মসূরঞ্ পুনর্ভোজন মৈথু নে। দ্যুত মত্যযুপানঞ্চ দশ-गा। देवस्व छाट्डि ॥ का ना মাণ্**সণ সু**রাণ ক্ষৌদ্রণ লোভণ বিতথভাষণ । ব্যাযামঞ্চ ব্য-বাষঞ্চ দিবাস্বপ্নণ তথাঞ্জনণ ॥ তিলপিষ্ট মসূরঞ্ব দশম্যা ব-र्ष्क्रायं भूगान्। मन्या स्वर-ভক্তঞ্চ স্বৰ্ধীত নিযতেন্দ্ৰিয়ঃ ৷৷ আচম্য দন্তকাপ্তঞ্চ থাদেত তদ-নন্তর । পূর্ব হরিদিনালোকাঃ সেবধ্ব চৈকভোজন ৷৷ অব-नीপृष्ठेगयनाः ख्रियाः मञ्जविव-র্জিতাঃ। সেবধু দেবদেবেশৃ•

পুরাণ পুরুষোত্তম ।। সক্লডো জন সংযুক্তা দাদশ্যাঞ্চ ভবিষ্য-থ। ইত্যেকাদশীতব্ৰ-ঃ। 🚓 ।। শ্ৰা-क्षश्र्विमिनकर्खवानियस्या विश्वा। দেবলঃ। শ্বঃ কর্ত্তাশ্মীতি নিশ্চিত্য দাতা বিপ্রামিমন্তবেশ্য নিরা মিষ সক্ত ভুক্তা স**ৰ্বসুগুজ**নে গৃহে॥ অসম্ভবে পরেদ্য सी वाक्रवाञ्छानिभञ्जरमः। वद्गार-পুরাণ । বস্ত্রশোচাদি কর্ত্তব্য শ্বঃ কৰ্জাশ্মীতি জানতা৷ স্থা-নোপলেপনঞ্চৈব ক্লন্বা বিপ্রা-निमन्तरयः ॥ प छकाष्ठभ विमृ জেৎ বন্ধচারী শুচি র্ভবেৎ। বি-স্জেৎ আদ্ধীষত্ৰান্ধণেভ্যো দ-मा९ ॥ यार्क ८७ वश्वान । निय-अयम् शृर्वमूः शूर्वाकान् षि-জসভ্যান্। অপ্রাপ্তো তদিনে বাপি হিদ্বা ধোষিৎপ্রসঙ্গিন ।। যমঃ। প্রার্থয়েত প্রদোষান্তে ভূ-ক্তান শ্যিতান্ দ্বিজান্। সর্বা-याम विनिम् रिङः काम र्वहाध বিবর্জি তৈঃ৷৷ ভবিতব্যণ ভবন্ডিশ্চ থো ভূতে আদ্ধকর্মণি। দক্ষিণ জানু চালভ্য স্ব॰ ম্যাত্র নিমন্ত্রি-তঃ৷৷ এবং নিমন্ত্র্য নিষ্মান্ত্রা-ব্যেৎ পৈতৃকান্ বুধঃ। তন্নিযম

गार्। जिंद्यां भटेनः लोहशदेतः সতত বন্দচারিভিঃ ভবিভব্য जनस्त्रिष्ठ मका ह आकर्वर्यनि ।। ইতি আন্ধতত্ত্ব ।।।।। তীর্থবাত্তা-পূर्विमिनकर्छवानियम मारा ब-ন্ধাৰণা যোষা কন্চিতীৰ্থমা-ক্রান্ত গচ্ছেৎ সুসংষতঃ স চ পূর্বণ গৃহে স্বে। ক্রভোপবাসঃ শুচি র-প্রমতঃ সংপূজ্যেন্ডক্তিনম্যে গ-পেশ ।। দেবান পিতৃন বান্ধাণ देम्घन माधून शीमान् श्रीगयन् वि-ভশক্ত্যা প্রযন্ত্রাৎ। প্রত্যাগত महाि भूत खरेथव एतवान् शिकृ-পৰ্বত স্তদ্য তীৰ্থান্মদুক্তণ ফলণ তৎ স্যামাজ সন্দেহ এব। সুসণ यठः পূर्विमित्न क्रुटिक ज्ङामि নিষম স্তদুত্তরদিনে রুতোপবা-म इंग्राहि। উপবাসদিনে মুখন মপি। প্রযাগে তীর্থমাত্রামাণ পিতৃ মাতৃবিষোগতঃ। কচানা॰ ৰপনণ কাৰ্য্যণ বৃথা ন বিকচো ভ-বেৎ।। ইতি বিষ্ণুপুরাণাৎ। ইতি थायिक उठक्।। श्रा थायिक उ পূৰ্বাহরত্যে যথা। শগ্র লিখিতৌ । বাপ্য কেশ নখান্ পূর্ব যৃত। প্রাশ্য বহিনিশি। প্রত্যেক • নিষ-

সংযাব

ত॰ কাল মান্সনো ব্রত মাদিশেশ ।। ইতি প্রাযশ্চিত্ততত্ত্ব॰ ।।
সংস্কর্কঃ ব্রি নিষম্ভা। ষথা।
সএব ধাতা সর্বস্য তন্নিবোগকরা ব্রণ। স্বস্সত্বস্থমনে ত্যক্তঃ
সোম্মৎ সংস্কমকো হরিঃ ॥ ইতি
বঙ্গিরাবে নারসিংহপ্রাদুর্তাবাধ্যায়ঃ ॥ সংস্ক্রমী চ ॥

সংষমন ক্লী বন্ধন। ব্ৰত্ত । ইতি মেদিনী।। চতুঃশালা । ইতি সঞ্জবনশব্দটীকায়া ভ রক্তঃ।।

मःयमनी खी यमशूती। इंछि त्मिनी।।

সংযমিতঃ ত্রি জাতসংযমঃ। সং যমশকাৎ ইতো ংস্যজাতে ই-ত্যনেন ইতপ্রত্যযেন নিম্পন্ধঃ।। সংযমী পুং মুনিঃ। ইতি ধরণিঃ ।। নিগৃহীতেজিযে ত্রিঃ। যথা। যা নিশা সর্বভূতানাং তস্যাং জাগর্তি সংযমী। যস্যাংজাগ্র-তি ভূতানি সা নিশা পশ্যতো মুনেঃ।। ইতি শ্রীভগবদ্দীতা-যাং ২ অধ্যামঃ।।

মণ্যাত্রা স্ত্রী দ্বীপাস্তরগমন । সংপূর্বো ষাভি দ্বীপাস্তরগমন-বৃত্তি স্তত স্ত্রাসুসিতি তঃ স্ত্রি- ষামাপ্ সংযাত্রা। দ্বীপান্তরগ-মন সমাগ্বাত্রা সংযাত্রা বা। ইতি সাংযাত্রিকশর্মটীকাষাণ ভরতঃ।

সংখান॰ ক্লী সম্যাগনণ। সং-পূৰ্ব যাধাতো রনট্প্রত্যথেন নিষ্ণায়ণ।

সংযামঃ পু॰ সংযমঃ। ইত্যমরঃ॥ সংধাবঃ পু॰ ঘৃতক্ষীরাদিপক্ষ भाश्यः। यथा। मःयावस्र घृठ কীর গুড় গোধুম পাকজঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিক।।। পিউকবি-শেষঃ। পেরাকী ইতি ভাষা। যথা। পর্মট্যঃ সাজ্য সনিতা নির্মিতা ঘৃতভক্জিতাঃ। সটি-তা শ্চালিতাঃ শুদ্ধাঃ শর্করাভি ৰিমৰ্দিতাঃ ৷৷ তস্তুৰ্ণে প্ৰক্ষিপে-(मला॰ लरक मित्रिकानि ह। ना-লিকের সকপুর বারবীজা-ন্যনেকশঃ ৷ যৃতাক্ত সমিতা পুষ্ট রোটিকা রচিতা ততঃ। जमा • ७९ भूतभाउमा नर्गा-गूजा॰ मृणा॰ সूधीः॥ সর্পিষ প্রচুরে তাম্ব সুপচেমিপুণো জ-नः । **अकात्रदेखः अका**रतायः म॰ या व देखि की खिंखः। यर्थ-কোপি সমো জ্বেষঃ সংযাবো-

সংযোগ

পি শুণৈ র্জ নৈঃ॥ ইতি ভাব-প্রকাশঃ॥

সংযুক ত্রি গুণবান্। যথা। স যন্ধী গুণবান্ সংযুক্ মিত্রযুঙ্ মিত্রবৎসলঃ। ইতি ত্রিকাও-শেষঃ।। সংযুক্তশ্চ।।

সংযুক্তঃ ত্রি সংযোগা শ্রয়ঃ ।
যথা। সর্য্যাদলাভে সংযুক্তাণ
নালাভে ২পি প্রবেশিনী ।
ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ।।

সংযুগঃ পু॰ যুদ্ধণ। ইত্যমরঃ।।
সংযোগশ্চঃ।।

সংযুতঃ ত্রি সংযুক্তঃ। ধথা।
চতুর্থী সংযুতা কার্য্যা পঞ্চমী
পর্যান ত্। দৈবে কর্মণি পৈত্রে চ শুক্লপক্ষে তথা ২ সিতে।।
ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বং।।

मः रिवानः पुः यानानः ॥ नाय
सर्छ छन्नमार्थः । म ह मद्यस
वित्नवः । ज्ञाश्ववख्रष्ठयमा

श्वाश्वः। म ह जिविरद्या स्था ।

क्रक्यंजनाः । स्था नर्बर्छनः

क्रिनः रिवानः ॥ ३॥ উভक्व्यं
क्रिनः । स्था यानामान्याः

। २॥ मः रिवानक्रमानः ।

। स्था क्रमान छक्र मः रिवानक्रमा

छक्र मुख मः रिवानः ॥ ७॥ क्र्यं
छक्र मुख मः रिवानः ॥ ७॥ क्र्यं-

कनामः रयारगानि विविधः। ध-ভিযাতঃ ৷ তত্মাৎ শব্দো জায়-ত।।।। (नामनः। जनार म-.(ज। न जांगरा ।। श्वा था-মাণা। অপ্রাপ্তযোদ্ধ যা প্রা-প্তিঃ সৈব সংযোগ ঈরিতঃ। কী-র্ত্তিত স্ত্রিবিধস্ত্ত্বেষ আদ্যোন্যতর-কর্মজঃ॥ ভথোভযো: কর্মজ-ন্যো ভবেৎ সংযোগজো ২পরঃ । जामियः त्नान देननामि मः-যোগঃ পরিকীর্ত্তিতঃ॥ মেষধোঃ সনিপাতো বঃ স দিতীয় উদাহ্ন-তঃ। কপাল ভরুসংযোগাৎ সং-যোগ স্তরু স্মত্যোঃ।। দিতীয়ঃ স্যাৎ কর্মজোপি দ্বিধৈব পরি-কীৰ্ত্তিতঃ। অভিষাতো নোদন-**म्ह मक्दर्ड् दिशामियः ॥ मका-**হেতু ৰ্দিতীয়ঃ স্যাদিভাগো ২পি ত্রিধা ভবেৎ। ইতি ভাষাপরি-एक्तः॥ शा उत्रादं शृहिः मण-माः भ्वाः यथा। छन्या श्री-क् मणनगांख (णवः मःरगांग हे-ষ্যতে। উপরিষ্টাৎ প্রবেশস্ত তত্মাৎ তা॰ পরিরজ্জিষেৎ ॥ ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব ৷৷ সম্বন্ধনা-ब । ইতি म रागम्थ क्षन्य नामा र्थमर्गना १॥

मःरयागशृथक्षः क्री नागरित-(नियः। यथा। এकमा कर्माता নিত্যন্থ কাম্যন্বাত্ত্যাণ দৈৰূপ্যাণ শীকারে নিত্যানিত্য সংযোগ বিরোধঃন মৈব সংযোগপৃথ-क्षनग्रायाद। म ह नग्रय म्हजू-र्थाशास्य উक्तः। यथा। शानि-রে পশু বশ্বাতি খাদির বীর্যা कामगा मृश अबीं इं डि क्यर-তে। অত্র সংশধঃ। কিং কাম্য-স্যৈব খাদিরতা নিত্যে ২পি म्यान्ठ ति । ७व कलार्थए নানিত্যত্ত্বা নিত্যপ্রযোগাঙ্গতা ন যুক্তা। যতু নিত্যেপি খাদি-রম্বশ্রবণ তৎ কাম্যাস্যের প শুবন্ধনাষ যুপাশ্রষজ্ঞাপনার্থণ অতো ন নিত্যে খাদিরতা ইতি প্রাপ্তে রাদ্ধান্তাষ চতুর্থাখ্যাষ সূত্র•। একস্য তূভষদ্বে সংযো গপৃথক্ষ মিতি। অত্র সংযোগঃ मक्क्षमाजः भृथक्षः एजमः । একস্য খাদিরস্য ক্রত্বর্থত্ব পুরু-ষাৰ্থন্বৰূপোভষাত্মকন্বে বাক্য-ৰষেন চ ক্ৰতুশেষত্ব ফলশেষ-ত্ব লক্ষণসংযোগভেদাবগমান্ন নিত্যানিত্যসংযোগবিরোধঃ নচাশ্রমজ্ঞানার্থণ নিত্যবাক্যণ

সমিধানাদেবা শ্রমলাভাৎ ।
অত উভযার্থা খাদিরতেতি ।
এবং দগ্না জুহোতি দগ্নেন্দ্রিযকামন্য ইত্যাদাবুভযার্থ তৈব ।
দধিবুদ্য দ্বেধাশ্রবণাৎ । ইতি
প্রাযশ্চিত্ততত্ত্বং ।।

मःरबागविक्रकः क्री शतम्भत्रमः ষোগেন রোগজনকখাদ্যদ্রব্যুণ १ यथा। भाकास शन शिगाक ञ्चल वनाभिरेषः। कत्रीत पि মাধৈশ্চ প্রায়ঃ ক্ষীরণ বিরুধ্যতে ।। প্রাণহারী তু হারীতো হরি-**जा नवरेनः भृ**णः। ऋरता रेखरन ২নলৈ ভূঠি বিষ মাযূর মামি ষ ।। বরাহবস্যা ভৃষ্টা বলাকা তু হরতাসুন্। সংযুক্তা সৈব वाक्रगा जन्मादेयक विक्रधाटण।। অবি• ঙ্গসুস্তশাকেন মৎস্যতৈ-লৈঃ কণা॰ ত্যক্তেৎ। মাণ্টস রিকু বিকারা শ্চ কাঞ্জিকৈ স্তি-লশস্কুলী।। কপোতঃ সার্যপে ভূকৌ ঘৃত কাণস্যে দশাহগণ। বিষ গৃতসম ক্ষৌত্র মধুনা গগণামু ह।। মূলক भाषসূপেন মধুনা চ ন ভক্ষযেৎ। একত্র স-র্বমাণ্সানি বিরুদ্ধন্তে পরস্পারণ ।। त्राजाञ्च वीमर्भ मत्कामत्रागाः

विरक्षाणिकामाम छगमतानाः
। मृष्ट्रा मनामान गनजहानाः
भाष्ट्रामगमामविषमा टेन्द्र ॥
किनाम मर्छ जहनी गमानाः
गाथाजिमात बत भीनमानाः।
मछानमायमा छर्थव मृर्छा।
बिक्रका समः श्रवमिक रहण्।।
विक्रका हात्रकान् द्रागान् विन्विक्रक विरत्रहनः। वसनः मन्यनः वाणि পূर्वमा हिल्समनः
॥ हे जिम्रशाविक्रकः। हे जि

সংযোগিতঃ ত্রি জাতসংযোগঃ। সংযোগশবাদিতপ্রত্যযেন নি-প্রায়ঃ। ইতি সংযোজিতশব্দ টী-কাযাণ ভরতঃ।।

मः (यागी जि मः (यागिविभिष्धः। यथा। অতো वृक्तः किनिमः (या-गी न मृत्व। इंकि निका उनकः। जागिनी ॥

मः (योजनः क्वी तेमथूनः। ইতি होतावनी।। मः (योगनः।।

সংযোজিতঃ ত্রি পদার্থঃ পদার্থা-স্তরেণ সংযুক্তীরুতঃ। তৎপর্যা-যঃ। উপাহিতঃ ২। ইত্যমরঃ।। সংযোগিতঃ ৩। ইতি ভরতঃ।। সংরস্তঃ পুং ক্রোধঃ। ইতি শব্দ- রত্নাবলী।। আটোপঃ। ইতি ত্রি-কাপ্তশেষঃ।। উৎসাহঃ। যথা। কার্যারম্ভেষু সংরম্ভঃ স্থেষ উৎ-সাহ ইষ্যতে। ইতি সাহিত্যদ-র্পণে ওপরিচ্ছেদঃ।।

সংরাবঃ পু• শব্দঃ। ইত্যমরঃ॥
সংরাবী ত্রি প্রশস্তশব্দবিশিষ্টঃ
। সংরাবশব্দাদস্তার্থে ইন্প্রত্যযেন নিষ্ণায়ঃ॥

সংকটঃ ত্রি প্রেটিঃ। অঙ্কুরিতঃ । ইতি মেদিনী।।

সংরোধঃ পু॰ রোধনং।। ক্ষেপঃ। ইতি মেদিনী।।

সংলক্ষঃ ত্রি সংযুক্তঃ। সংপূর্ব লগ ধাতোঃ ক্ত প্রত্যযেন নিষ্পান্ধঃ।। সংলযঃ পুং নিজা। ইতি হেম-চক্রঃ।। প্রলয়শ্চ।।

সংলাপঃ পুণ পরস্পরভাষণ ।
ইত্যমরঃ ॥ অন্যোন্য প্রীতিভাষণ সংলাপঃ । উক্তিপ্রত্যুক্রিভাবেন বিরোধরহিত মন্যোন্য ভাষণ সংলাপঃ । ইতি
পরে ২পি । রহসি ভাষণ সংলাপঃ । ইতি কৌমুদী । মিথো
২ন্যোন্য রহস্যপি । ইতি বক্যাতি । স্মস্তাল্লপন সংলাপঃ
প্রিষাদিকথা ঘ্ঞা যস্ত্যালাপঃ

স তু কেনাপি ক্রিয়তে। ইদম্ব পরম্পরভাষণ মেবেতি ভেদঃ। ইতি ভরতঃ।। উক্তি প্রত্যুক্তি-মন্বাক্য সংলাপ ইতি কীর্ত্ত্য-ত। रेजुङ्कुणनीणमभिः॥ न'वरमद्रः भू वरमद्रः। ইত্য-मद्राः । मन्द्रमञ्जि भण्दा चल शाहरवदाः। यम अ सिवारम নামীতি সরঃ সন্য তঃ। সংক্রতি ভাবান্ ইতি বদে। ৰূপণ বা। ইতি ভরতঃ।। পঞ্চবিধ্বৎস द्राज्यंश्यययप्तरः। यथा। শকাব্দাৎ পঞ্চভিঃ শেষাৎ স-यामग्रानिषु यथमद्वाः। मः श-जीमान्पृबान्ठ তথোमापृबंका मणः॥ मःवरमतानिकनः वि-खूधर्मा खदा। य॰व ९ मदा ७थ। मान छिलमा ह महाकल । शतिशृद्धं छथा मानः यवानाक षिटकालमाः ॥ हेमाशृद्धं २म **रखानाः शानामामानू शृर्वत्क ।** উদাসংবৎসরে দানং রক্তত্য্য महाकल ।। জ্যোতির্বিদন্তি-कामधा । প্রভবাদেশ্চ সম্ভব॰ । छेठू उप भगनगिन वर्षाना মপি সম্ভব• ॥ ইতি মলমাস-তত্ত্ব• 11

সংবদ্ব্য বৎসরঃ। ইত্যমরঃ।। অধুনা বিক্রমাদিত্যরাজবৎস-রঃ সংবৎ ইতি খ্যাতঃ ।। म'त्राम की जात्वाहन ।। व-भीकत्रनः। ইতি मिनि ॥ मः-नामः। ইতি হেনচন্দ্রः॥ जारतम्या जी मन्दर्मनः। दर्भ-ं किया। यथा। यनि मट्डीयटेश . बिमीकत्रन अन्दनन । जन्त्राही वित विभीकन्नत्व छात्व २ न हे। ज-तहना टिंछ कि कि । क्रत्र খনটি বশক্তিযাসাধনে মণি ম-्यानावित्र। क्रवियः मध्यतन् যত ভদিতি রঘঃ। সংচলন মি-তি পাঠান্তর । ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ ॥ সংবননং ক্লী সংবদনং। ইত্য-সর টীকাষা॰ রামাশ্রমঃ॥ সংবর ক্লী জলং ৷৷ বৌদ্ধত্রত-বিশেষঃ। ইতি কেচিৎ।। সং-পূৰ্ব বৃ ধাতো রপ্ প্রত্যযেন নি-পার্মণ। রভদে মকার মধ্যপাঠঃ

সংবরঃ পু• দৈত্যবিশেষঃ। মৎ-স্যবিশেষঃ। ছরিণবিশেষঃ। ইতি কেচিৎ।। রভসকোষে

। ভত্র সম্বধাতো রর প্রত্যথেন

নিষ্পন্ন॰ ॥

সংবর্ত্তি

সম্বর ইতি পাঠঃ ॥

गरवर्डः शृ श्राम्यः। इठामदः॥

ग्रामिति स्वः। कर्यकान्यः।

हेठि मिनी।। मिषः। हेठि

गम त्रावानी।। मिषः। हेठि

गम त्रावानी।। मिषः। हेठि

गम त्रावानी।। मिषः। हिन्

गूरठ गाक वर्ष कृ इकु जिंदः स्वः।

सिरठ क्रमार। जावर्छः निष्कः

गरवर्छः श्रुष्क द्वान म्यू मः॥

जावर्छ। निर्जाला मिषः मः वः

र्जा त्र्रावः। श्रुष्ठाः मूक्तः

जावर्छ। निर्जाला स्वः मः वः

र्जा त्र्रावः। श्रुष्ठाः। मः शृद्धाः।

हेठि क्ष्राविख्यः॥ मन्यु व्याः।

हेठि क्ष्राविख्यः॥ मन्यु व्याः।

खाउरम निष्णा व्याः। मन्यु व्याः।

थाः। मका समस्या। श्राप्राः।।

भिक्त भ्रं विषय । इंडि भिक्त क्षेत्र विषय । विषय मा नि इन ।। विषय । विषय । इंडि इस-हिन्दुः ॥

সংবর্ত্তকী পু॰ বলদেবঃ। ইভি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

সংবর্ত্তিঃ স্ত্রী সংবর্ত্তিকা। ইত্যনরটীকাষাণ ভরতঃ !!

সংবর্ত্তিক। স্ত্রী পদ্মস্য কেশরস-নীপস্থদলং। ইত্যমরঃ। পদ্মা-দীনাং জাটিকাকারে নবপত্রে সংবলি

ইতান্য। সমাক্বর্ত্তে বর্দ্ধতে ইতি সংবর্ত্তিকা গকঃ সংবর্ত্ত বিতি বেইষতীতি বা নামীতি ইপ্রত্য-ষে সংবর্ত্তি রিপি। সংবর্ত্তি নিবপ-ক্রিকেভি বোপালিতঃ। পাচ্ছো-গাদীতি ইপি সংবর্ত্তি চ অতঃ স্থার্থে কে সংবর্ত্তিকা। সামা-ন্যন্তনপজেপি সংবর্ত্তিকেভি হস্তচন্দ্রঃ।। দলমাত্রে চ সংবর্ত্তি-কেতি মধুঃ।। দলমাত্রে চ সংবর্ত্তি-বৃদ্ধশশতান্যম্ভোজ সংবর্ত্তিকে-তি মুরারিঃ। ইতি ভরতঃ।। সংবর্দ্ধকঃ ত্রি সংবর্দ্ধনকারী। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

সংবৰ্ধন কী সম্যগ্ৰ্দিঃ। স দীপন । সংপূৰ্ববৃধধাতো রনট্ প্ৰত্যমেন নিষ্পন্ন ।।

भः विकाश वि मगाग्विकिविभिः कः । यथा । व्यथ প্রভাবোপः নতৈঃ সমারং কলক্রেনাথে র-বকীর্যা পুলেগঃ । উবাচ বামী দশনপ্রভাভিঃ সংবর্দ্ধিভোরঃ-স্থলভার হারঃ ।। ইতি রঘৌ ৫ স্বর্গঃ ।।

সংবলিতঃ ত্রি মিশ্রিতঃ। একত্রী-ক্রতঃ। যথা। প্রক্রতগ্রন্থস্বর-সংবলিতসৈয়ব পাঠস্য ধর্ত্ব মুচি- বিজ্ঞানীয়ণ যুক্তণ।
ক্রিক্টানীনা ।।
ক্রিক্টানানঃ প্রত্যেকণ
প্রথমণ হৈতু ক্রচানো। ততঃ স্ব বলিতঃ সর্বো বিভবাদিঃ সচেত্র তসাণ। ইতি সাহিত্যদর্পণে ৩
পরিচ্ছেদঃ।।

সংবদধঃ পুণ গ্রামঃ। ইত্যমরঃ।।
সংবহঃ পুণ সপ্তবাষুস্তর্গতপ্রশস্তবাষুঃ। স তু উদ্বহবায়ো রুপরিষ্ঠঃ। ইতি সিদ্ধান্তশিরোমণিঃ।।

সংবাটিকা স্ত্রী শৃঙ্গাটকঃ। ইতি জটাধরঃ।।

সংবাদঃ পু॰ সন্দেশবাক্যণ। সমাচার ইতি ষাব্ৎ। তৎপর্য্যাষঃ। বাচিকণ ২ সন্দেশঃ ৩।
ইতি জটাধরঃ॥ সন্দেশবাক্
। ইত্যমরঃ॥ বাচিকণ তদ্ভবেদ্যত্ত দূতত্বেনাভিসণ্শনণ। ইতি
শব্দরত্বাবলী।

সংবাসঃ পু॰ গৃহণা ইতি শব্দরত্নাবলী॥ পুরবাসিনা বিহারার্থ পুরমধ্যে বহির্বা অনাবৃতস্থান । তৎপর্য্যায়ঃ। সন্নিবেশঃ
২ সন্নিকর্ষণ ৩। ইতি জ্ঞাধরঃ।।

मःवारुः पू॰ अञ्चविमर्क्षंकः। ইতি জটাধরः॥

সংবাহকঃ পু॰ অঙ্গমর্দকারকঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। অঙ্গমর্দকঃ ২। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। অঙ্গমর্দঃ ৩। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

সংবাহন की अञ्चयर्मन ॥ छ। द्रापित्रस्य । ইতি यिपिनी ॥

সংবিত্তিঃ স্ত্রী প্রতিপত্তিঃ। জনস্যাবিবাদঃ। ইতি মেদিনী।।
চেতনা। বৃদ্ধিঃ।ইতি শব্দরত্নাবলী হেমচন্দ্রশ্চা।

সংবিৎ > জ্রী অঙ্গীকারঃ।। জ্ঞানগ সংবিদ্ > 11 সম্ভাষা।। ক্রিষাকার। য় বুদ্ধণ ইত্যমরঃ।। আচার য় সঙ্কেতঃ।। নাম।। তোষণা। ইতি মেদিনী।। সমাধিঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।

সংবিদিতঃ ত্রি অঙ্গীরুতঃ। ইত্য মরঃ।।

সণবিষা স্ত্রী অতিবিষা। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

সংবীক্ষণ স্ত্রী অম্বেষণণ অপ-শতবস্তুন স্তাৎপর্য্যেণাম্বেষণ । ইত্যমরঃ ।। সম্যক্তাৎপর্য্যেণ বিবিধপ্রকারে রীক্ষণ সংবীক্ষ-ণ অনট্। ইতি ভরতঃ ।। সংবীত ত্রি রুদ্ধ । আবৃত । ইত্যমরঃ ।।

সংৰ্তঃ পু• আৰ্তঃ। সংপূৰ্ব বৃঞ্জ ধাতোঃ ক্ত প্ৰত্যবেন নি-ম্পান্নঃ।।

সংবৃত্তঃ পু• বরুণঃ। ইতি শব্দ-মালা।।

সংবৃত্তিঃ স্ত্রী সম্যক্**প্রকারেণ**বর্ত্তন• । আবরণ• । ইতি স•পূর্বক বৃত ধাতোঃ ক্তি প্রত্যবেন নিষ্পন্ন। ।।

সংবেগঃ পু॰ ভ্যাদিজনিতত্বরা । ইত্যমরঃ।। সম্যাগ্রেগশ্চ।।

সংবেদঃ পু॰ অনুভবঃ। তৎপ-র্যাষঃ। বেদনা ২। ইত্যমরঃ।। দ্বে অনুভবে। বিদ ল মতৌ যঞ সংবেদঃ। ঞীষিশ্রস্থীতি অনে বেদনা। ন নেত্যুক্তেঃ ক্লী বেদ-নণা তত্র বিশেষেণাপি সামান্যণ বাধ্যতে ন কচিৎ ক্লভীতি অনট্ । ইত্বিভরতঃ।।

সংবেশঃ পু॰ নিজা। ইত্যমরঃ।। স্ত্রীরতবন্ধঃ। ইতি মেদিনী।। পীঠঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

সংবেশন ক্লী রতিক্রিয়া। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

সংব্যানং ক্লী উত্তরীয়বস্ত্র• ।

हेळामतः ॥ वञ्जः । हेळि त्यः मिनी ॥

मन्मखुकः भू॰ ममया (मण्यामाः मिनवर्ती। ইত্যমরः।। ममया (मण्यामा मण्याना एक मण्याना मण्याना मण्याना (क मण्याना मण्याना मण्याना (क मण्याना स्वाण्याना हिन्द्र । ইতি ভরতঃ।। नातायनी (मनावित्याना । ইতি महा ভারত।।।

শব্দে গৃহীত্বা শব্দে। নিত্যো ন বেতিসন্দিগ্ধে। বিপ্রতিপত্তিস্ত শব্দো খনিত্যো ন বেতিশব্দা-ত্মিকা ন সংশ্যকারণ শব্দব্যা-खिळानामीना॰ निन्ध्यमाळज-্নকত্বস্বাভাব্যাৎ। কিন্তুত্র শ ব্দেন কোটিদ্বযজ্ঞান জন্যতে সংশ্বস্তু মানস এবেতি। এবং छ्वात्न श्वामागु मण्मगाविष्य म॰ मरः। এব॰ ব্যাপ্যস॰ শ্যা-मिश वाशिकमः गयं हेजामिकः বোধ্য । किञ्ज मा भरक शिर्मा জ্ঞান ধন্মীন্দ্রিযসন্নিক্ষো বা কারণ মিতি। ইতি তট্টীকাসি-का उपूका वनी ॥

मः गयानः जि मः गययुकः। मः পূৰ্ৰ শীঙ ধাতোঃ শানপ্ৰত্য-(स्व निष्टाष्ट्रः ॥

यः भंबाशवर्गानयः जि मः भव-विषयः ॥ सःश्रममुकः। ७९-थर्गायः। **माण्यस्कः २। हे**छा-(मे) । मान्यसाध्याः जान्यविकः किकः। नुभ्य याणमः यानमः निर्णाधिकः जि एकीक्ववरछ। यत सामारते य कथा। यापन मार्ग्य अश्वाराः क প्रजारमन याश्रम् सानम् समा न कर्ष-তि मधानाशकार्यस्य सन्यक्ति

পুরুষাদাবপ্যেতৎশব্দদ্বয প্রবৃ-- জিঃ স্যাৎ। ইতি ভরতঃ।। সংশ্যালুঃ ত্রি সংশ্যিতা। ইতি (रूमह्यः ॥ সংশ্যিতা ত্রি সংশ্যকর্তা। ইঙি (इयहः ॥ मः मत्राः क्री त्रात्रसः। ইতি नक्रमाना ॥ मः निष् वि मगक् मन्भा पिष् ॥ ब्छिविययकपञ्जवान्। यथा। म॰-**শिত** बं बं गग्य क्मिणा पिं छ মিতার্থঃ।। সংশিতো ত্রাহ্মণঃ।

मिका खरको यूनी ॥ मः एकिः खी मग्रक्ताधनः॥ भत्रीत्रमार्क्कनः। यथा। मन्त्रा-कार्निक मण्यक्तिः मण्यमाथन वि-শোধনে। ইতি রত্নমালা।। সংশুক্ত জি জাতপাদিনা সং-

ত্রতবিষয়কষত্মবানিত্যর্থঃ। ইতি

द्रशातिकासा मः शृर्व एव धा-তোঃ ক্ত প্রত্যবেন নিপুন্ন।। मदः ॥ तः मः भविषयः संवा- मः मः भाषानः क्षी मः एकिः। देखि अञ्चला ॥

निष्णंबः।। यथा। (य त्वाभाः क्षाना॰ मुकारङ निर्गठानुत्ना- ষাণাণা সংশোধিতাশ্যানাণস-দ্যঃ সিদ্ধি ভবৈত্তেষা ।। ইতি মধুমতী ॥

म॰म्ह की अहकः। हेनुगानि कायः ॥

সংশ্যানঃ ত্রি শীতেন নম্বুচিতঃ। रेि गुक्षत्वाधवग्रकत्व ॥

সংশ্ৰযঃ পুণ আশ্ৰযঃ। যথা। স্ততা সুরৈঃ পূর্ব মভীউসংশ্রমা-ত্তথা সুরেন্দ্রেণ দিনেষু সেবিতা । করোতু সা নঃ শুভহেতু রী-শ্বরী শুভানি ভদ্রাণ্যভিহম্ব চা-

সংশ্রবঃ পুণ অঙ্গীকারঃ। ইত্য-यतः ॥

(स९॥ ইতি তিথা দিত্ব।।।

সংশ্ৰুতঃ ত্ৰি অঙ্গীক্তঃ। ইভ্য यतः ॥

त्र·भिष्ठः जि वाभिष्ठः। मिनि তঃ। সংপূৰ্ব দ্লিষধাতোঃ ক্ত প্ৰ ত্যযেন নিষ্পন্ধঃ।। নিংশ্লেষঃ পু• আলিঙ্গন•। ইত্য-

शनः॥ ইতি মার্কণ্ডেমপুরাণে দেবীনাহাত্যো ৫ অধ্যাযঃ।। সংশ্ৰেতঃ ত্ৰি আশ্ৰিতঃ। ৰথা। ন প্রাচী মগ্রতঃ শস্তো র্নোদী-চী॰ শক্তিসংশ্রিতা•। ন প্রভীচী• যতঃ পৃষ্ঠ মতো দক্ষ সমাঞ

मतः॥ (मननः॥ मःभ्र क्री भाषा। स्था। मःमः তু সহকে জ্ঞেয়ণ সংশ্বৎ তত্ত্বৈব তে সমে। ইত্যুণাদিকোষঃ ॥ সংসক্তঃ ত্রি সংলগ্নঃ। অব্যব-रिवः। रेकामतः॥ সংসক্তিঃ স্ত্রী সংসক্ততা। সং-

পূৰ্ব সন্জধাতো ভাবে ক্তি প্ৰ-ত্যুযেন নিষ্পান।।।

म॰म९ रे. न न रेखी मजा देजामदः॥ সংসরণ ক্লী প্রাণিজন্ম। অস-याधटमनागमनः॥ चन्छान्यः। ইত্যমরঃ।। রণারম্ভঃ। ইতি মে-. দিনী।। গমন । ইতি শব্দুরক্সা-वनी ॥

म॰मर्गः पू॰ मशक्तः। महनम-वायानिः। ইতি नगायमाञ्ज॰ ॥ 🛊 ॥ भाभिष्ठे। छाका विमञ्जर्भ-व्यायन्त्रिकः यथा। रखयातिमा পতিকা ইত্যুপক্রমা উক্তং। অ-ত্রাজ্ঞানতো বৎসরেণ পাতি-ত্য•। সংবৎসরেণ পততি পতি-তেন সহাচরন্। যাজনাধ্যাপ-नात्त्वीनात्त्रकभग्राज्ञनाभना ५ ।। ইতি হারীতবচনাৎ। জ্ঞা-নতো বৎসরার্ছেনেতি। তদ-

সংসুষ্টু স্তন্দোষাভাব এব। বা-ন্ধবোপি পৃথগুদ্বা তৎপাপ না-श्रुवाद क्रिंडि हेडि प्रविवत-हनां था। 🛊 ॥ व छमा जुर् পঞ্চামণ ক্লক্ষাৰ্দ্ধণ তস্য নিৰ্দিশেৎ । শুকানভোজিনঃ পাদ মিত্যাহ ভগবান্ মনুঃ।। তস্যাবিজ্ঞাত চণ্ডালসহিতৈকবেশ্বস্থসঙ্করীকর-ণৰপমূলপাপকৰ্ত্ত্ ৰিভীয়স স-র্গিণঃ। তথা চাপস্তয়ঃ। অন্ত্য-জাতি রবিজ্ঞাতো নিবসেদ্বস্য বেশানি। স বৈ জ্ঞান্ব। তু কালে-म ऋर्याञ्चमा वित्भाधन ।। চা-ম্প্রায়ণ পরাকো বা দ্বিজাতীনাণ বিশোধন । প্রাক্তাপত্যস্ত শূদ্রা-ना॰ তथा म॰ मर्गमृष्टन ॥ रेव छेख ভুক্তণ পঞ্চান্ধণ ক্লচ্ছণ তেষাণ বি-निर्मित्मर। एउसा मिनि ह रेस जू-ক্ত• তেষা মৰ্দ্ধ• বিধীষতে॥ তেষা यि ह देव जूं कि॰ क्रष्ट्रशामा वि-ধীযতে। অত্র তৃতীয়সংস্গিণ এব প্রাযশ্চিত্তদর্শনাৎ চতুর্থসংসর্গে েদোষো নাস্তি। প্রাযশ্চিত্তবি-বেকোপ্যেব । ইতি প্রাযশ্চিত্ত-তত্ত্ব ৷৷ 🟶 ৷৷ অথ সণসর্গনিৰূপ-**৭** । তক্র মহাপাত্রকিসণসর্গস্য পাপহেতুত্ব মাহ মনুঃ। বন্ধহত্যা

সুরাপান স্তেষ গুর্বঙ্গনাগমঃ। মহান্তি পাতকান্যাহঃ সংসর্গ-শ্চাপি তৈঃ সহ।। প্রাযশ্চিত্ত মপি মনুনা দ্বিতি । এষা পাপক্তা মুক্তা চতুর্ণা মপি নিষ্কৃতিঃ। প-তিতৈঃ সংপ্রযুক্তানা মিমাঃ শৃ-ণুত নিষ্কৃতীঃ।। যো যেন পতিতে-টনষা॰ সংসর্গ॰ যাতি মানবঃ । স তস্যৈব ব্ৰতণ স্বৰ্য্যাৎ তৎ সণস-র্গবিশুদ্ধবে ।। প্রাযচিত্তীযতাণ প্রাপ্য দৈবাৎ গাপক্ততেন বা। ন সংসর্গ বজেৎ সদ্ভিঃ প্রায-শ্চিত্তে ২ক্কতে ছিব্দঃ॥ পাপিন্ঠ-সংসগী পাতকী ভবতি ইতি ক-ब्राक्थि जिंकुः। यक्त यन পাপাত্মনা সহ সংস্জেৎ। স ত-দৈয়বপ্রাযশ্চিত্ত স্বর্যাৎ।। গো-তমোপ্যাহ। ত্রন্ধহ সুরাপ গু-ক্লতন্ত্রণ পিতৃমাতৃষোনিসম্বন্ধাগ স্তেনাভক্যভক্ষক নান্তিক নিন্দ-ক নিন্দিতকর্মাত্যাগি পতিতা-ত্যাগি অপতিতত্যাগিনঃ পতি-তাঃ পাতক্স প্রযোজকাশ্চ তৈ-শ্চাক সমাচরন্। নিষিদ্ধ পতি-ত সংসর্গাৎ পততীতিশ্রুতিঃ ক-ষ্ক্যা।। 🟶 ।। কে তে সংসর্গপ্রকারা ইত্যত্রাহ বৃহস্পতিঃ। একশ্য্যা-

সন• পদ্ধি ভাও গৰাম মিশ্ৰণ•। যাজনাধ্যাপন খোনি স্তথা চ मर्टाजन ॥ नवश म**र**द्र প্রোক্তো ন কর্ত্তব্যো ২ধনৈঃ সহ । ছাগলেয়ং। আলাপাৎ গাত্র-সংস্পর্শাৎ নিশ্বাসাৎ সহভো-জনা९। महमयाामनाधाया ६ পাপ॰ সংক্রমতে নৃণা॰।। মমঃ। দুক্ত হি মনুষ্যাণা মন মাশ্রিত্য তিন্ঠতি। যো যস্যান মিহাশ্বাতি স তস্যাশাতি কিল্বিষণ ৷৷ দেবলঃ ৷ পতি তেন সহোবিত্বা জানন্ স-স্বৎসর নরঃ। মিপ্রিত স্তেন সো কান্তে স্বযঞ্চ পতিতো ভবেৎ ॥ যাজন থোনিসম্বন্ধ সাধ্যায় স-হভোজন । ক্রন্থা সদ্যঃ পতস্ত্যে-তে পতিতেন ন সংশ্যঃ ৷৷ ব্যাসঃ । ব্রহা মদ্যপঃ স্তেনে। গুরুতল্প-গ এব চৰ মহাপাতকিন স্ত্রেতে यम्ह टेकः मह मःवटमवः॥ मः-বৎসরম্ভ পতিতৈঃ সংসর্গণ স্বরু-তে তু যঃ। যান শয্যাসনৈ নিত্য জানন্স পতিতো ভবেৎ ॥ 🟶 ॥ ননু দ্বিতীয় তৃতীয় সংস্থিণি প্র-মাণ নাস্তি অতএব বৃদ্ধশাতা-তগঃ। অশুচি সংস্পৃশেদাস্ত এক এব স দুষ্যতি। তৎস্পৃষ্ট্য-

ন্যো ন দুষ্যেত সৰ্বঅব্যেশ্বয় বিধিঃ ৷৷ তথা সংহতানাম্ত পা-ত্রাণাণ যদ্যেক মুপহন্যতে । তস্য তৎশোধনং প্রোক্তংন তু তৎ স্পৃষ্টিনা মপি।। উচ্যতে। **ষশ্চ যেন পাপাত্মনেতি যো** ষেন সংগিবেদিতি সংসগী ষেন সংসৰ্গ মিতি বিষ্ণু ৰ্যাস জাবা-লবচনৈঃ সামান্যেন পাপিষ্ঠ-সংসগী পাপী ভবতি ইতি প্রতি-পাদনাৎ সংসর্গ পাপিষ্ঠস্যাপি সংসগী পাপযুক্তো ভবজীতি এভি রেব প্রতিগাদিত থাঞ্চা গ-তিতোৎপন্নানা শুদ্ধি মিচ্ছতাণ পতিতানা॰ প্রাযশ্চিত্তসা তৃতী-বো ভাগ স্তৎপ্রাযশ্চিত্ত জ্ঞে-য°। স্ত্রী চ পতিতোৎপন্ন। তৃতী-যভাগস্য তৃতীযভাগণ সর্য্যাৎ । ইতি প্রাযশ্চিত্তবিবেকঃ।।

সংসর্গাভাবঃ পু॰ সম্বন্ধরহিতর॰।
ন্যায়মতে অভাবপদার্থবিশেষঃ
। স তু ভেদভিন্নাভাবঃ। স চ
ক্রিবিধঃ। প্রাগভাবঃ ১ ধংসঃ ২
অভ্যন্তাভাবঃ ৩ । যথা। অভাবস্ত দিধা সংসর্গান্যোন্যাভাবভেদতঃ। প্রাগভাব স্তথা
ধংসোপ্যত্যস্তাভাব এব চ ।।

এব॰ তৈবিধ্য সাপন্নঃ সংস্থাভাব ইষতে। ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ।। # 11 ভেদত্ব॰ তাদাত্ম্যসম্বন্ধাবছিন্ন প্রতিযোগিতাকাভাবত্ব॰। বিনাশ্যভাবত্ব॰
প্রাণভাবত্ব॰ ১ জন্যাভাবত্ব॰
ধণসত্ব॰ ২ নিত্যসংস্থাভাবত্ব
মত্যস্তাভাবত্ব॰ ৩। ইতি সিদ্ধান্তম্বভাবলী।।

সংসগী ত্রি সংসগবিশিক্টঃ। যথা

1 বিভাগানস্করং মৈত্র্যাৎ পিতৃ
ভূতি পিতৃব্য ভূতিপুত্রাণাং ষথাযথং একত্রাবস্থানং সংসর্গঃ
তদযুক্তঃ সংসগী । এবস্তৃত্স্য
সংসর্গিণো মৃতস্য ধনং ভজ্জাতস্যাপত্যস্য তদপত্যাভাবে
সংসগী স্বযং গৃহীয়াৎ। ইতি
দায়তত্ত্বং ॥

সংসর্গঃ পু॰ সম্যক্প্রকারেণ গ-মন ।। সর্পাদিগমনবদামন । সংপূর্ব সৃপধাতো র্যঞ্জ্রত্যযে-ন নিম্পনঃ।।

সংস্থা তি সংস্থিতি কিং।
সম্মানন্দীলঃ। সংপূৰ্বক স্থশকাদিন প্ৰত্যাঘেন সংপূৰ্বক
স্পধাতো ৰ্থিন প্ৰত্যাঘেন চ নিশকাঃ।

म॰मात्रः भू॰ मिथ्राख्वानकनावा-সনা। ইতি নৈযাযিকাঃ। যথা া সংসারশ্চ মিথ্যাধীপ্রভবা বা-मना। ইতি প্রামাণ্যবাদগাদা-भत्रीिक्षनी।। यामृरकोशनिव-দ্বশারীরপরিগ্রহঃ। ইতি কলা-পট্নকাষা গোপীনাখঃ ৷৷ সং-**मद्रग**ा इंडि मक्तद्रद्रावनी ॥ **७९१ गायः ।** मृःथालाकः २ ভবঃ ৩ কফকারকঃ ৪। ইতি ত্তিক।ওশেষঃ ।। সংসরস্তাত সংসারঃ সংপূর্বাৎ সৃগতাবিত্য-न्मा ९ राज्या 🟶 ॥ जीन ह। অস্মাদিজাযতে বিশ্ব মত্রৈব প্র-विनीयत्व। अभागी भागमा व-দ্ধঃ করোতি বিবিধান্তনূঃ।। ন চাপ্যয় সংসরতি ন চ সংসার-ষেৎ প্রভুঃ। নাষণ পৃথী ন স-লিল' ন তেজঃ প্রনো ন তৎ ।। ন প্রাথোন মনে। ব্যক্ত॰ ন भकः स्थमं अव ह। न कथ तम গন্ধাশ্চ নাহ কর্ত্তা ন বাগপি।। न পাণि পাদৌ নো পাযু र्न हा প-স্থে দিজোত্তমাঃ ৷ ন কর্ত্তা ন চ ভোক্তা বা ন চ প্রক্বতি পূরুষৌ ॥ ন মাধা নৈব চ প্রাণ শ্রেড-ন্য পর্মার্থতঃ। অহ কর্ত্ত।

সংসারী

मूथी पृश्यी क्रमः. शृत्नि य মতিঃ।। সা চাহদারকভূপি-माञ्चनगरत्राभारक करेनः। वन-ন্তি বেদবিদ্বাণসং সাক্ষিণ প্র-ক্তেঃ পর[•]।। ভোক্তার মক্ষর॰ শুদ্ধ সৰ্বত্ৰ সমবস্থিত। তম্মা-দজ্ঞানমূলো ২য° সংসারং স-ৰ্বদেহিনা ।। ইতি কৌৰ্ম্মে ঈশ্ব-রগীতাসু ২ অধ্যাষঃ॥ কিঞ্চ। পিতৃ মাতৃ সুহুভূ৷তৃ কলত্রাদি ক্তেন চ। হুষ্টো ২সক্কত্তথা रिनग मक्षाशृशीनरना गण्डः ॥ এবং সংসারচক্তে হিম্মন্ ভূমতা তাত শঙ্কটে। জ্ঞান মেতন্মধা-প্রাপ্ত মোক্ষসংপ্রাপ্তিকারকং ।। ইতি মার্কণ্ডেযপুরাণে পিতা-পুত্রসংবাদনামাধ্যাষঃ॥

সংসারগুরুঃ পু॰ কামদেবঃ। ইছি
ত্রিকাণ্ডশেষঃ। জগদ্গুরুশ্চ।।
সংসারমার্গঃ পু॰ যোনিঃ। ইতি
ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

সংসারমোক্ষণ ত্রি ভবতারক।
যথা। এব মেতন্মহাশাস্ত্রণ দেবি
সংসারমোক্ষণ। মম ভক্তব্যবস্থাবৈ প্রযুক্তণ পরমণ মযা।।
ইতি বারাহে সুতস্বামিমাছাত্মানামাধ্যায়ঃ।। # 11 ভবমোচ-

ति क्री। जनुभाषा यथा। विन-क्रवाह। मःमात्रार्वव मधानाः न-রাণা মন্যচেতসাং৷ তরণে যো ভবেৎ পোত স্তমে ব্যাখ্যাতু गर्रि।। প্রহ্লাদ উবাচ। যে শ-ষচক্রাজকর তু শাঙ্গিণ থগে-ন্দ্রকেতৃণ বরদণ শ্রিষঃ পতি•। স-মাশ্রষম্ভে ভবভীতিনাশনং সং-সারগর্ত্তে ন পতস্তি তে পুনঃ।। বৈঙ্গপ্ত খণ্ডপরশুণ ভববন্ধ স-নুচ্ছিদ । প্রণিপতা মহাত্মান । मःभारत न भूनर्जरव ।। धा-ষেৎ দামোদর যস্ত ভক্তিন-মে। ২ৰ্চ্চযেত বা। ন স সংসার-গর্ত্তে ংস্মিন্ মজ্জতে দানবেশ্ব-র ৷৷ যে মানবা বিগতরাগ প-রাবরজ্ঞা নারাযণ স্রগুরু স-তত॰ স্মরম্ভি। তে ধৌতপাণ্ড-রপটা ইব রাজহুণ্দাঃ সংসার-সাগরজলস্য তরস্তি পারু ॥ ইতি বামনে ৯০ অধ্যাযঃ॥

সংসারী পুং সংসারবিশিষ্টপ্রাণী
। ইতি হলাযুধঃ ।। শরীরী ।
যথা। সংসারিণা মিতি সংসারিত্বং শরীরিত্বং শরীরিত্বঞ্চ ভোগাবচ্ছেদকত্বং ন তু চেষ্টাবত্ত্বং ।
অত ঈশ্বরপরিগৃহীত রামক্ত্বাং

দিশরীরব্যদাসঃ। নিখ্যাজ্ঞান জন্যবাসনাবা অদ্ফস্য বা ন সংসারপদেন বিবক্ষাসম্ভবঃ। ইতি বৌদ্ধাধিকারস্য গাদাধ-রীটিপ্লনী।

সংসিদ্ধিঃ স্ত্রী প্রকৃতিঃ। স্বভাবঃ
। ইত্যদরঃ ।। সম্যক্সিদ্ধিঃ ।।
মদোগ্রা। ইতি মেদিনী ।।

সংসৃতিঃ স্ত্রী সংসারঃ। ইতি শব্দরত্মাবলী। প্রবাহঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

म॰मृकः वि म॰मर्गः॥ वममा-**मिना ज॰ एकः। इ** छि (यमिनी-কর হেমচন্দ্রো॥ বিভাগানন্তর॰ মৈত্র্যাৎ পিতৃ ভ্রাতৃ পিতৃব্য ভ্ৰাতৃপুজাণা যথাযথ একত্ৰা-বস্থান• স•সর্গ স্তদ্যুক্তঃ। অথ সংসৃষ্টধনবিভাগঃ। একপিতৃ জাতযো রপি সোদর বিমাতৃজ-যো মৃতদেষষট্পুরুষপিওদাতৃ-ত্বেন সোদরস্যৈর ধনাধিকারো ন তু পিত্রাদিত্রযমাত্র পিণ্ডদাতু র্বিমাতৃজস্য। ক্ষচিত্তু সংসৃষ্টত্ত্বে-न विमाञ्क्रमाभामः मृक्टमानः রেণ সহ তুল্যাধিকারিতা সো-দরস্য সংসৃষ্টত্বে সএব গৃহীযা-ম সংসৃষ্ট্যপি বিমাতৃজ ইতি।

তথা চ যাজ্ঞবক্ষ্যঃ। সংসৃষ্টি-নস্তু সংসৃষ্টী সোদরস্য তু সো-मतः। मम्माकाश**रतमः जा**-তস্য চ মৃতস্য চয়। , অন্যোদ-र्याञ्च मः मृखी नात्नामर्या। धनः হরেৎ। অসংসৃষ্ট্যপি চাদদ্যাৎ भ॰भृरको नानामाञ्जः ॥ 🛊 ॥ সংসৃষ্টিন মাহ বৃহস্পতিঃ। বিভ-ক্তো যঃ পুনঃ পিত্রা ভ্রাত্রা চৈ-কত্র সংস্থিতঃ। পিতৃব্যেণাথ বা প্রীত্যা স তু সংসৃষ্ট উচ্যতে ॥ তেন বিভাগানস্তর• দৈত্র্যাৎ পি-তৃ ভাতৃ পিতৃবা ভাতৃপুত্রাণা• যথাযথ একত্রাবস্থান সংসর্গঃ **छम्युकः** मःमगी। এवसृष्ठमा সংস্থিপো মৃত্স্য ধন তজ্জা-তস্যাপত্যস্য তদপত্যাভাবে স मर्गी अयः गृङ्गीयाद। এवः मा দরস্য তু সোদরঃ ।। ��।। তত শ্চ সংস্ফিনস্ত সংস্ফীত্যেত্ত্ব-চন তুল্যৰূপ সম্বন্ধি সংসৰ্গক্ত বিশেষ প্রতিপত্ত্যর্থণ তেন সো-দরাণা সাপত্মানা ভাতৃপুত্রা-ণা পিতৃব্যাণা তুল্যানা সন্তা-বে সংসগী গৃহীষাৎ বাক্যাদ-বিশেষঞ্ৰতেঃ। পূৰ্বচনে সৰ্বে-ষা মেব প্ৰক্নতত্বাৎ সৰ্বেষু চাক্ষে-

পাৰ ভবাই। অতো ন ভ্ৰাতৃমাত্ৰ বিৰৰ নিৰ' বচন মিতি জীমূত-বাহনঃ ৷৷ সোদরে স্বল স্ফিনি স'সৃষ্টিন্যসোদরে চ সতি কতর স্ত বৎ গৃহীযাৎ। এবং সোদরা-मानत्राः म॰मृकेरयाः मङारव কতর ইত্যত্র প্রথমত আহ অ-त्मानर्गास्त्रु ि। व्यत्मानर्गाः शू-नः मः मृकी मन् भृङ्गीयाय नाः ন্যোদর্য্যমাত্রঃ কিন্তু অসংসৃষ্ট্য-णि शृईवहनन् स्मामत्रभान्य-कार आश्वः मामत्रक गृहीयार ৷ তেন একত্ৰ বিষয়ে পূৰ্ৰবচনো-ক্ত সংসৃষ্টত্ব সোদরত্বযো রেকশ স্তল্যদাদুভযো বিভঙ্গা গ্ৰহণ:। তদুভয় সত্বে চ অসোদর্য্যস্যাসণ-সৃষ্টিনো ২তুল্যৰূপত্বান্ধেতি। দ্বি-তীয়ে আহ সংসৃষ্টো নান্যমাতৃ-জ ইতি। সোদরে সংসৃষ্টিনি সতি অন্যমাতৃজ্ঞঃ সংসৃষ্ট্যপি ন গৃহ্লী-যাৎ। অর্থাতত্র সংসৃষ্টী সোদর এব গৃহ্লীযাৎ। সংসৃষ্টদ্বাবিশে-ষেপি সোদরত্বেন তস্য বলবন্ত্বাৎ । দাযভাগকারাস্ত অন্যোদর্য্য-স্তু সংসৃষ্টী সন্ সত্যপি সোদরে ২স'সৃষ্টিনি ধন' হরেৎ নান্যো-দর্যঃ সংস্ফাপি গৃহীযাদিতি পু-

ৰ্বাৰ্দ্ধন্যাৰ্থঃ। তত্ৰ কিং সোদর স্ত-मत्नी॰ न शृङ्गीयातम्दवङारशकाः য। মুত্তরার্দ্ধেনোক্তণ অসংসৃষ্ট্য-পি চাদদ্যাৎ সোদর ইতান্ধ-জ্যতে ন সংস্কৌ ২ন্যমাতৃজ কেবলঃ। কিম্ব উভাভ্যা মেব বি-ভক্য এহীতব্য নিত্যাহঃ। মি: তাক্ষরাদয়োপ্যেব । যাভ্তবক্ষ্য मौ भक् निकाया॰ मृनभानि महा-मटशाथायाञ्च। व्यत्नापर्याञ्च मण्मुकी नात्नामत्या धनः इ-রেং। অসংসৃষ্টাপি সোদর এব গৃহীয়াৎ ন তু সংসৃষ্টঃ সাপজ্যো ভাতা। मःमृष्ठे ইতি গর্ৱদংসৃষ্টঃ সোদর ইতি কেচিৎ। নান্যো-দর্য্যো ধনণ হরেৎ ইতি পাঠে অ-त्यापर्याः मन् धनः न गृ**ङ्गीया** । ইতি ব্যাখ্যা অসংসৃষ্ট সোদর-माधिकातार्थ निषः वहन मट्डा न পুনরুক্তি রিত্যাহ্য। রত্নাকর প্রভৃতযম্ভ কল্পতরৌ নান্যোদর্য্য-ধন॰ হরেদিতি পাঠো দৃশ্যতে স মূলভূত যাজ্ঞবন্ধ্য মিতাক্ষরা পা-রিজাত হলাযুধগ্রন্থেয়ু নান্যো-দর্য্যো ধন॰ হরেদিতি পাঠদর্শ-নাৎ তদনুসারব্যাখ্যাদর্শনাক্ত লিপিকরপ্রমাদ ইত্যাহঃ। ইতি

मायञ्च ।।

गः मृक्षेत्रः क्री मः मृक्षेमा ভादः ।

यथा। তেন একত্র বিষয়ে পূর্ব

वচনোক্ত সংস্কৃত্তর সোদরত্ব

যোরেকশ স্তুল্যবাদ্ভযোরিভক্তা গ্রহণং। ইতি দায়তবং।।

সংস্কৃতী পুং সংস্কৃত্তর্বিশক্তঃ।

যথা বাজ্ঞবক্ষ্যঃ। সংস্কৃতিন স্তুল্য সোদরা আন্যাদর্যা তুলোদরঃ।

দদ্যাচ্চাশহরেদংশং জাতসা চ

মৃত্সা চ।। অন্যোদর্যাস্ত সংস্কৃত্তী নান্যোদর্যো ধনং হরেৎ।

অসংস্ক্রাপি চাদদ্যাৎ সংস্কৃত্তী নান্যমাতৃজ্ঞ।। ইতি দায়ত্ব।।

তব্বং।।

সক্ষারঃ পু॰ প্রতিষত্নঃ ।। অনুভবঃ ।। মানসকর্মা। ইতি নেদিনী ।। ন্যায়মতে গুণবিশেষঃ ।
স চ ত্রিবিধঃ । বেগাখ্যসক্ষারঃ
১ অয়ণ মূর্ত্তপদার্থস্থায়ী । কচিদ্বেমজন্যঃ ক্ষচিৎ কর্মজন্যক্ষ ।
স্থিবীগুণঃ কেচিমতে পৃথিব্যাদি চতুঃপদার্থগুণঃ । অষণ
অতীন্দ্রিয়ঃ স্পদনকারণক ।
ভাবনাখ্যসক্ষারঃ ৩ অষণ আজ্বানা অতীন্দ্রিয়গুণঃ । উপে-

কানাত্মক নিশ্চযজন্যঃ। অয॰ সারণ প্রভ্যভিজ্ঞযোঃ কারণঞ্চ । । অস্য প্রমাণ । সংকারতেদো বেগো ২থ স্থিতিস্থাপক ভাবনে। मृर्खमात्व जू त्रगः मा कर्मा-জো বেগজঃ কচিৎ ৷৷ স্থিতিস্থাপ-কসংক্ষারঃ কিতৌ কেচিচ্চতুর্পি । অতীব্দিষঃ স বিজ্ঞেষঃ কচিৎ न्भारमि कार्राः। ভाবमाथाञ्ज সংস্কারো জীববৃত্তি রতীন্দ্রিयः। উপেক্ষানাত্মক স্তদ্য নিশ্চযঃ কা-রণ ভবেৎ ॥ স্মরণে প্রত্যভিজ্ঞা-যা মপ্যাসে হেতু রুচ্যাতে। ইতি ভाষাপরিচ্ছেদः ॥ 🕸 ॥ শুদ্ধিः ॥ जम्रेविटगय कनकक्षा यथा। ষদ্যমিস্থাপনান্তর কর্মকালে বৃ-ফ্ট্যাদিশম্যা সংস্কৃতাগ্নি রন্যত্রা-নীযতে তদা পুন ভূ সংস্কারঃ ক-खँवाः। ममूश উপলিপা উল্লিখ্য উদ্বৃত্য অভ্যুক্ষযেৎ এষ সংস্কা-রো খনুগতো খগো ভূষঃ। ইতি গৃহান্তরাৎ। ইতি সংস্কারতত্ত্বণ ॥ 🛊 ॥ मगविधमः कात्रा यथा। वि-বাহঃ ১ গর্ভাগান ২ পুণসর্ন ৩ সীমন্তোন্নয়ন ৪ জাতকর্ম ৫ না-মকরণ ৬ অন্নপ্রাশন ৭ চুড়াক-রণ ৮ উপন্যন > সমাবর্তন

সংস্থার

১০। যথা হারীতঃ। গর্ত্তাধানবদু-পেতো ব্ৰহ্মগৰ্ভ সন্দৰ্ধাতি পু্স বনাৎ পুণ্দীকরোতি ফলস্থাপ নাৎ মাতা পিতৃজ্ঞ পাপ্মান ম পোহতি রেতো রক্ত গর্ভোপঘা-তঃ পঞ্চগুণো জাতকর্ম্মণা প্রথম মণোহতি নামকরণেন দিতীয়ণ প্রাশনেন তৃতীয় চূডাকরণেন চতুর্থ॰ স্বাপনেন পঞ্চম• এতৈ র-ফাভিঃ সংস্কারে র্গর্ভোপযাতাৎ পূতে। ভবতীতি। স্নান **মত্র সমা** বৰ্ত্তনৰূপ নিতি কল্পতরুঃ। ইতি সংকারতত্ত্ব° । । 🛊 । । বাজ্ঞবন্ধ্যঃ 1 গৰ্ভাধান মৃতৌ পুংসঃ সবন म्मना भूता। यर्ष श्केरम वा সীমন্তঃ প্রদবে জাতকর্ম চ ।। অ श्ताकानत्म नाम हजूर्थ मानि निकुगः। यर्ष्वमञ्चामनः मानि চূডा कार्या। यशाक्रमणा **अवत्य** নঃ শমং যাতি বীজগর্ভ সমুপ্তবং 1 ইতি মলমাসতত্ত্ব° II 🕷 II में ऋ-তানাস্ধিকার মাহ যাজ্ঞবন্ধ্যঃ। অসংফৃতান্ত সংস্কার্য্যা ভাতৃভিঃ পূৰ্বসংফ্তৈঃ। ভগিন্যশ্চ নিজা-मःभाष्यक्षाः भञ्ज जूतीयकः। ज সংস্কৃতা ভ্রাতরঃ ভগিন্যশ্চ পূর্ব সংস্কৃতৈ ৰূপনীতেঃ। অন্যথা

মন্ত্রপাঠানধিকারাপত্তেঃ ইত্যু-कारुखः॥ अयाः विवत्रवः छ-ত্তৎ শব্দে দ্রক্টব্যে ।। গরুড-পুরাণোক্ত সংস্কারা স্তব্রৈব ১৩ १ २८। २६ व्यथात्ययु जरवेताः ॥ 🕬।। जय जीर्नटम् गृहोिम म'कात्रकल । अथ (ठक्कीर्न-मःकात्रविधिः भूत्गा मङ्गिम्तं । দেবতাদিষু কর্ত্তব্যো মহাভো-गक्रा मृलामके छन পুণ্য জীর্ণসংস্কারতো ভবেৎ। তন্মাদনার্থ জীর্ণেষ্ট্র কার্ষ্য সং-कत्रवः गूरन।। क्रकीयः शत्रकी-ষ॰ কা যথাবিভবৰিস্তরৈঃ। স্ব-তো বা পরতো বাদ্য যন্ত সংস্কৃ-क्रां मुतान्।। में याविष्ठेख मृर्यो भी जारदकान मूंथी ভবেৎ। লোকেষু তেষু দেবা-ना॰ वित्रज्ञत्कर्य श्रक्षीः।। यथा रगारमधरेख्य शक्षतिमिनमाः ममाः। दम्रा मिति संसीया জীর্ণদ'কারকারকঃ । অনাথা वा मनाया वा शृक्षनीयाः गर्मा मूताः। ইতি দেবীপুরাণে পূজা-विधिनामाधारिः॥ সংস্কারজঃ ত্রি সংস্কারেণ জাতঃ।

मिंग्कारमें मिंगूईक कनशास्त्री फ

প্রত্যধন নিষ্পন্নঃ।।
সংস্কারবজ্জিতঃ পু॰ উপনম্বনসংস্কারহীনঃ। তৎপর্য্যায়ঃ।
ভ্রাত্যঃ২। ইতি হেনচন্দ্রঃ।।

দশস कात्रशित जि ॥

সংস্কারহীনঃ পু॰ ব্রাত্যঃ। ইত্য-मद्रशा मःकाद्रशैनवकान मार াষমঃ। পতিতা যস্য সাবিত্রী দ-শ্বর্ষাণি পঞ্চ। ব্রাহ্মণস্য বি-শেষেণ তথা রাজন্য বৈশ্যযোগ ।। প্রাযশ্চিত্ত ভবেদেষা প্রো-বাচ বদতা বরঃ৷ তথা মার্ক-एषसः। विश्रमा , साफ्नाष्ट्रसं ९ রাজ্যে দাবিংশতেঃ পরং। বৈ-भागाकोधिकामका नाविजी-পতন ভবেৎ।। বিষ্ণুধর্মোত্তরে । ষোডশাব। হি বিপ্রস্য রাজ-ন্যস্য দ্বিবিংশতিঃ। বিংশতিঃ সচতুর্থী চ বৈশ্যস্য পরিকী-র্ত্তিতা।। সাবিত্রী নাতিরিচ্যেত অত উদ্ধৃ নিবৰ্ত্ততে। ইতি মল-মাসতত্ত্ব° ॥

সংস্কৃত ক্রী লক্ষণোপেত:। ইতি
মেদিনী।। পাণিন্যাদিক্বতব্যাকরণসূত্ত্বেণ উপেত উপগতো
লক্ষণোপেত: সাধুশব্দঃ। ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ।। সতুদে-

ববাণী। যথা। গীর্বাণবাণীবদনং মুঙ্গন্দসংকীর্ত্রনঞ্চেত্যভ্যং
হি লোকে। সুদ্র্র্লভং তচ্চ ন
মুগ্ধবোধান্ধ লভ্যতে হতঃ পঠনীয় মেত্র ।। ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণ প্রশংসাম্বোকঃ ।।

সংস্কৃতঃ ত্রি ক্রত্রিমঃ। ইত্যমরঃ

। করণেন নিবৃত্তিঃ ক্রত্রিমোঘ
টাদিঃ। ইতি ভরতঃ।। পকঃ ।।
স্বতোগুণাভরাধানং। ইত্যমর
টীকাষা স্বামী।। শস্তঃ।। ভূ
বিতঃ। ইতি নেদিনী।। শোধিতঃ। ইতি জটাধরঃ।।

সংস্কৃষা জ্রী শবদাহাদিক্রিয়া। ইতি ত্রিকাণ্ডলেয়ঃ।। সংস্কারশ্চ সংস্তরঃ পুং শ্যা। যজ্ঞঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। পল্লবাদির্নিচতশ্যা। । ইতি শব্দরত্বাবলী।।

সংস্তবঃ পু॰ পরিচযঃ। ইত্য-মরঃ। সম্যক্স্ততিশ্চ।। সংস্তবানঃ ত্রি সদক্তা। ইত্য-ণাদিকোষঃ।। বাগ্মী।। উদ্যা-

णागिरकावना वाजात जनगा-जा। इर्यः। ইতি সংক্ষিপ্তमा-

রোণাদিবৃত্তিঃ।।

সংস্তাবঃ পু• ক্রতুষু দ্বিজন্মনা॰ স্তৃতিভূমিঃ। ইত্যমরঃ॥ যজ্যেষ্ স্তৃতিকারিণা॰ বান্ধণানা৽ অব• স্থানভূমিঃ সংস্তাব উচ্যতে ।
ক্রতুষু যজ্ঞবিষ্যেষু দ্বিজ্ঞানাং
যা স্ত্রতিভূমিঃ স্থানং স সংস্থাব
ইত্যন্বয়ঃ। সমেত্য স্তুষ্তে ছালোগৈ রক্র ইতি সংস্থাবঃ যঞ্
। ইতি ভরতঃ।।

সংস্ততঃ ত্রি সম্যক্প্রকারেণ স্ততিপ্রাপ্তঃ। সম্যক্স্তববিষ্থীভূতঃ। যথা। ভূষশ্চ শতবার্ষিক্যা
মনাবৃষ্ট্যা মনস্তদি। মুনিভিঃ
সংস্ততা ভূমৌ সম্ভবিষ্যাম্যযোনিজা॥ ইতি দেবীমাহাত্মা•॥
সংস্ত্যাযঃ পু॰ সংঘাতঃ॥ সন্ধিবেশঃ। ইত্যমরঃ॥ সংস্থান•॥
বিস্তৃতিঃ। ইতি মেদিনী॥ গৃহ•
। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥

নিজরাস্ট্রকঃ। ইতি মেদিনী।।
নিজরাস্ট্রকঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।
সংস্থা ত্রি অবস্থিতঃ। ইতি মে
দিনী।। মৃতঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।।

সংস্থা দ্রী ন্যাষ্যপথস্থিতিঃ। ইত্যমরঃ।। সম্ভিষ্ঠতে ২নখা সম্যানক্ষান বা সংস্থা। ইতি
ভরতঃ।৷ অদ্যাঃ পর্য্যায়া মর্য্যাদাশব্দে জফীব্যাঃ।৷ স্থিতিঃ।৷
সাদৃশ্যাং।৷ নাশঃ। ইতি মেদি-

मी॥ वावङ्गा। वाङ्किः॥ क-जूरजनः ॥ **ममाश्विः । ই**তি (इमहन्द्रः ॥ अलगहजूक्य । যথা। নৈমিত্তিকঃ প্রাক্ততিকো নিত্য আত্যন্তিকো লয়ঃ। সণ্-স্থেতি কবিভিঃ প্রোক্ত শচতুর্ধা-স্য স্বভাবতঃ।। ইতি পুরাণ ।। সংস্থান ক্লী সন্মিবেশঃ।। চতু-ষ্পথঃ। ইত্যমরঃ।। আফুতিঃ।। मृजुः। ३७ त्मिमी।। हिङ्गः। ইত্যজয়পালঃ।। সম্যক্স্থিতিশ্চ সংস্থাপন ক্লী সম্যক্সিতিপ্রা-পণ । স্থিরীকরণ । যথা। পরি-ত্রাণায সাধূনা বিনাশায চ দু-ষ্ঠাণ। ধর্মসংস্থাপনার্থায় সং-ভবামি যুগে যুগে ৷৷ ইতি ভগ-বদ্গীতাষা ৩ অধ্যায়ঃ।। সা-ধুরক্ষণেন দুষ্টবধেন চ ধর্মা স্থি-রীকর্তুণ। ইতি ভট্টীকাষাণ শ্রী-धत्रश्रामी ॥

সংস্থিতঃ ত্রি মৃতঃ। ইত্যমরঃ।।
সমাক্সিতিবিশিক্টশ্চ ।।
সংস্থিতিঃ স্ত্রী সংস্থানং॥ মৃত্যুঃ॥
গৃহং। ইতি কেটিৎ।।
সংস্পর্শঃ পুং সম্যক্স্পর্শঃ। স
তু ত্বগিন্দ্রিযগ্র্যাহ্নগুণবিশেষঃ।
যথা ছাগলেষঃ। আলাপাৎ

গাত্রসম্পর্গাৎ নিশ্বাসাৎ সহ ভোজনাৎ। সহশয্যাসনাধ্যা-যাৎ পাপ সংক্রমতে নৃণা ।। ইতিপ্রাযশ্চিত্তবিবেকঃ।। मञ्चामा जी जनीनामगन्न जवा । ইত্যময়ঃ।। সংস্ফালঃ পু॰ মেষঃ। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ ৷৷ সংস্ফুটঃ ত্রি বিকসিতঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ সংক্ষেটঃ পুং যুদ্ধ। ইত্যমর-টীকাষা॰ ভব্নতঃ ॥ সংস্ফোটঃ পু॰ যুদ্ধ॰। ইতামরঃ।। সংস্মরণ ক্লী সংস্মৃতিঃ ৷ সংস্কা-রজন্যজ্ঞানং। যথা যোগিযা-জ্ঞবন্ধ্যঃ। ধ্যাযেনারাযণ নি-ত্য সানাদিষু চ কর্মদু। তদি-रका तिकि मखन नायानका भू नः भूनः॥ गायवी देयक्वी एक य। विरक्षाः म॰ऋत्रवाय देव । ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব গা সংস্থৃতিঃ স্ত্রী সংস্মরণণা সংপূর্ব স্বধাতোঃ ক্তি প্রত্যযেন নিষ্পন্না সংহতঃ ত্রি দৃঢ়সন্ধিঃ। ইভামরঃ া। মিলি তঃ।। দৃঢ়ঃ। ইভি মেদি-नीकत (इ महत्क्ती ॥ समाक्थ-কারেণ হতশ্চ।।

াংহতজানুং ত্রি লগজানুকঃ ! र्था। श्रद्धः श्रगठकानुः मार প্রজ্ঞো ২ত্রৈব চ দৃশ্যতে। স॰ জুঃ সংহতজানুশ্চ ভবেৎ সং-জ্ঞোপিতত্ৰ হি॥ উৰ্দ্বজ্ঞু ৰাৰ্দ্বজা-न्ः गामृष्टु एका रश्रेष्टु कान्कः । ইভি ভরতধৃতসাহসালঃ।। সংহতজানুকঃ ত্রি লগজানুকঃ। **७९१४गायः। म**'ब्ब्रुः२। ইত্য-শরঃ। সংহতজানুঃ ৩ সংজ্ঞঃ ৪ াইতি তট্টী কাষাণ ভরতঃ ॥ সংহতলঃ পু॰ মিলিতপাণিদ্বয়। ইত্যমরং॥ দ্বো বাম দক্ষিণো अठलो मः रहि मिलिए मः-হতল উচ্যতে। প্রতলদ্ব গি-निष्ठ मः रुजनः मानिष्ठार्थः। সংহত লাভি সংহতলঃ হন-জनामिछि छः। निर्विमर्गेशार्क ছৌ বাম দক্ষিণো পাণী সংহতৌ মিলিতৌ চেৎ তদা সংহতল প্র-তলাবুচ্যেতে। অস্মিন্নর্থে প্র-**ज्याय क्र**णाटि मःश्कल ह বর্ত্তমানদ্বাৎ নানার্থঃ। ইতি ভরতঃ ৷৷ मण्रिकः जी ममूरः। ইতামরः॥ সংহনন ক্লী শ্রীর ৷ ইত্যমরঃ

ধ সম্যক্ষাতন ।।

স হরাখ্যঃ পু পাবকনামাগিঃ। ইতি মৎস্যপুরাণ ॥ म र्यः पूर श्रेटमामः॥ न्यक्ता॥ वागुः। ইতি विश्व (यमित्ना)॥ मः हरनः की मग्रक्थकाद्रशः হতিঃ। সংপূৰ্ব হুধাতো ভাবে ২নট্ প্রত্যবেন নিষ্পন্ন ।। সংহারঃ পু॰ নরকবিশেষঃ। ই-ত্যমরঃ॥ প্রলযঃ। ইতি হেম-एकः॥ मः एकः । इति करो • ধরঃ।। সংহরণঞ্চা। मःशत्रयूषा की विमर्कनमूषा। যথা রাঘবভটধৃত । অধোমুথে বামহন্তে উৰ্জাস্য দক্ষহন্তক । किश्वाक्ती तक्ती जिः मःगृश পরিবর্ত্তযেৎ।। প্রোক্তা সংহা-त्रमूट्य मर्भात जू श्रमगाट । অর্পণে আত্মনীতিশেষঃ। ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব।। ভৈরদ্বিশেষঃ । যথা। অসিতাকো রুকু শ্রুঙঃ ক্রোধ উন্মত্ত এব চ। কপালী ভীষণদৈচৰ সংহারা শ্চাফটভ-রবাং ॥ ইভি ভন্ত্রণ ॥ ন'হিতঃ ত্রি মিলিতঃ। সংপূর্ব ধা ধাতোঃ ক্ত প্রত্যবেন নিষ্পন্নঃ।। নংহিতপুষ্পিকা স্ত্রী মিশ্রেষা। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

गःहिना खी महामिश्रनीन्धर्याः শাস্ত্রণ তৎপর্ব্যাবঃ। স্মৃতিঃ ২ ধৰ্মদ'হিতা ৩ শ্ৰুতিজীবিকা ৪ । ইতি শব্দরত্নাবলী। সংহিতা ৰিশেষা ৰথা। এবং পুরাণ সং-খ্যান চতুর্লক মুদাহত। অ-ফীদশ পুরাণানা মেব মেব বি-मू प्राः॥ अवत्कालसूत्रानाना-মন্টাদশ প্রকীর্ত্তিতাঃ। ইতি-হাসো ভারতঞ্চ বাল্মীক কাব্য মেব চা৷ পঞ্চক পঞ্চরাত্রাপাণ রুঞ্চনাহাত্ম মুত্তম। বাশিষ্ঠ। নারদীয়ক কাপিল পৌতমী-यकः॥ अतः जन एक मात्रीयः श-স্থরাত্রঞ্ব পঞ্চক । পঞ্চম্য সং-হিতানাঞ্চ ক্লফভক্তিসমন্বিতাঃ । বন্ধণশ্চ শিবস্যাপি প্রহাদ-স্য তথৈব চ। গৌতমস্য স্বমা-রুদ্য দংহিতাঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ। ইতি ব্রদ্ধবৈবর্ত্তে শ্রীক্লফজন্মখ-ত্তে ১৩২ অধ্যাবঃ।। 🗱।। অপি **চ। ই**দম্ভ পঞ্চলশমণ পুরাণণ কৌৰ্ম মুক্তমণ। চতুৰ্ধা সংস্থিত পুণ্য॰ সংহিতানা[,] প্রভেদতঃ ॥ ব্ৰাহ্মী ভাগবতী শৈবী বৈফবী চ প্রকীর্ত্তিতা। চতসুঃ সংহিতাঃ পুণা ধর্ম কামার্থ মোক্ষদাঃ ॥

সংক্ষিপ্ত

ইযন্ত সংহিতা ত্রান্ধী চতুর্বেদেঃ সমন্বিতা। ভবস্তি বট্সহসুণি স্নোকানা মত্র সংখ্যবা॥ ইতি কৌর্মো ২ অধ্যায়ঃ ॥

সংহৃতিঃ স্ত্রী বহুভিঃ ক্লতাহ্বানং। ইত্যমরঃ।।

সংহাতঃ ত্রি ক্বতসংহারঃ। যথা।
ত্বহুণ বিভূত্যা বহুভি রিহ কাপৈ
বাদা হিতা। তৎ সংহাতং মবৈকৈব ভিষ্ঠাম্যাজৌ হিরো ভব।।
ইতি মার্কণ্ডেযপুরাণীষ দেবীমাহান্মাণ।।

সংহাতিঃ ন্ত্রী সংহারঃ। যথা।
বিস্ফৌ সৃষ্টিৰূপা ত্ব স্থিতিৰূপা চ পালনে। তথা সংহাতিৰূপান্তে জগতো ২স্য জগন্মযে
।। ইতি মার্কণ্ডেষপুরাণে দেখীমাহাত্ম্য ।।

मःक्रयः श्रू॰ नामः। यथा। ति-श्रदः मःक्रयः याखि कल्यानस्था-श्रमण्डा नम्मत्व ह ज्ञलः श्रू॰-मा॰ माहाज्या॰ मम मृन्वा॰।। हेकि मार्कत्थ्यश्रतात्व मिनीमा-हाज्या॰॥ क्षलयः। हेकि मक्स-तज्ञावनी॥

সংক্ষিপ্তঃ ত্রি ক্তসংক্ষেপঃ। সংক্ষেপবিশিষ্টঃ। যথা। স্যা সক্ষোভ

হাত্যান্যভন্তাণি সংক্ষিকৈঃ প্রতিসংক্ষ্টেঃ। সম্পূর্ণ মৃচ্যতে
বর্টোর্নাম লিঙ্গানুশাসনং॥ ইত্যমরঃ॥ সংক্ষিপ্তিঃ অর্মেনের
বহার্থ প্রতিপাদকত্যা হতিহিতৈঃ। ইতি তট্তীকাষাং ভরতঃ॥
সংক্ষেপঃ পুং স্তোকেন ভ্যসো
হতিধানং। ইত্যমরটীকাষাং ভনরতঃ॥
বুষক ইতি বল্প ইতি চ
খ্যাতঃ॥

गःक्षु वि नक्ष्ण निर्मिष्ठः १ हे क्ष्ण अशावर्थ मर्ग नाष्ट्र। जा-क्षण । यथा। मृद्धा नमस्य मः-क्षु वे दिल्लाका ममतात्रयः। म-क्षण थिल मिना । स्थान ममुख्य क-मायू थाः।। हे जि मार्क एख यपूता-११ (मरीमा हायाः।।

সংক্ষেপণ ক্লী বিস্তীর্ণানাং সং-ক্ষেপঃ। প্রপঞ্চকরণবৈপরীত্যং । ইতি ভরতঃ॥ তৎপর্য্যায়ঃ। সমসনং ২। ইত্যমরঃ॥ সংহা-রঃ ৩ সমাহারঃ ৪ সংগ্রহঃ ৫ সমাসঃ ৬। ইতি জটাধরঃ॥

সংক্ষোভঃ পু॰ চাঞ্চল্য॰। সঞ্চ লন॰। যথা। সংক্ষোভ মক্ষরযু-যা মপি চিত্ততম্বোঃ। ইতি শ্রী-ভাগবত॰।। সকরু

সকঃ পুণ) পূর্বোক্তপরামর্শকঃ।
সকা স্ত্রী \ সেইতিভাষা। তদ্শব্দস্য টেঃ পূর্বণ অকি পরত্র
আপ্প্রত্যযে চ ক্রতে প্রথনৈকবচন নিষ্পায়ণপদদ্বয়ণ।।

সকটঃ পু॰ শাংখাটবৃক্ষঃ। ইতি ভূরিপ্রযোগঃ।।

সকটার ক্লী অশুদ্ধার ইতি সকর্মকঃ কেচিৎ।। কর্মার

मक्किकः पू॰ रेनवालः। ইতি

শক্চন্দ্রিকা।। করঞ্জবিশেষः।

নাটাকরঞ্জ ইতি ভাষা। ইতি
রন্নালা।। কন্টকযুক্তে তি ।

যথা। শীতলোফ সমাযুক্ত সকন্টকদলান্বিত। হর পাপ মপামার্গ ভাষামাণঃ পুনঃ পুনঃ।।
ইতি তিথ্যাদিতব্ব॰।।

সকরঃ ত্রি হস্তযুক্তঃ ।। রাজস্ব-বিশিষ্টঃ ।। শুগুষুক্তঃ ।। কিরণ-বিশিষ্টঃ ।। করেণ সহ বর্ত্ততে যোহসৌ। ইতি বহুত্রীহি সমা-স নিষ্পন্নঃ ।।

সকরুণঃ ত্রি করুণাযুক্তঃ। সদ-যঃ। যথা। ভবানি স্থ দাসে মযি বিতর দৃষ্টি॰ সকরুণা মিতি স্তোতৃণ কাঞ্চন্ কথযতি ভবা-নি স্ব মিতি ষঃ। তদৈব স্থ সকাশ

ठरेन्य िमशिन निक्तमायूकाशिम-वी॰ मूक्षम बक्षान्य क्रू हे मूक्र हे नीतािकिञ्शमा॰ ।। ইञानण-वहती ॥

সকর্ণঃ ত্রি শ্রবণশীলঃ। তৎ-পর্য্যায়ঃ। শ্রুতিতৎপরঃ ২। ইতি জটাধরঃ।। কর্ণযুক্তশ্চ।।

কর্মকঃ পু॰ কর্মযুক্তধাতুঃ।
কর্মান্ববিক্রিযার্থকঃ। যথা। ক্রচিৎ সকর্মকাদ্ধাতো র্ভাবেপি
ক্রিযাব্যাপ্তি রস্তি। যথা। কা॰
দিশ॰ গস্তব্য॰। ইতি মুগ্ধবোধটীকাযাণ দুর্গাদাসঃ।।

সকল তি সমুদাষঃ। তৎপর্যাযঃ। সম ২ সর্ব ৩ বিশ্ব ৪
অশেষ ৫ কৎম ৬ সমস্ত ৭
নিখিল ৮ অখিল ৯ নিঃশেষ
১০ সমগ্র ১১ পূর্ণ ১২ অখন্ত
১৩ অমূলক ১৪। ইত্যমরঃ।।
অনস্ত ১৫। ইতি শব্দরত্বাবলী
সকামঃ ত্রি কামনাবিশিষ্টঃ।
যথা। অকামো বা সকামো বা
মত্র কাপি বহির্জলে। ইহ চামৃত্র দুংখানি মাঘ্মাষী ন পশ্যতি।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ।।
সকাশঃ পুং সমীপঃ। যথা।
দেবি দৈত্যেশ্বরঃ শুন্ত ক্রৈলো-

मञ्रला ক্যে পরমেশ্বরঃ। দূতোহং প্রে-ষিত স্তেন স্বৎসকাশ মিহা गठः॥ इठि मार्क एषम्पूर्ता **(म**वीयाश्राप्रा) ।। कामयुक्क जि **সঙ্গরুওঃ পু॰ সান্ধরুওবৃক্ষঃ।** ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। সঙ্গলঃ পু• শঙ্গলমৎস্যঃ৷ ইতি मक्तत्र भावनी ॥ **সঙ্গল্যঃ** ত্রি সগোত্রঃ। যথা। জারো লক্ষ্ণ সগোত্রাস্ত স্বজন জ্ঞাতি বান্ধবাঃ। সঙ্গল্য বন্ধ দাযাদ স্বসমানোদকা অপি 11 ইতি জটাধরঃ॥ 🟶॥ স্বাবধূ্য-र्ष्वु जनारियावि नगमभू क्रयं ने ৰ্য্যন্ত পুৰুষত্ৰষ্ণ। তেষা দশন-

পুরুষপর্যান্ত সন্ততিঃ। স্বাবধ্য-धरुनारुमाविध मनमभूक्रयश-ৰ্য্যন্তসন্ততিশ্চ।। ঋ॥ তেষা ম-लोह॰ यथा। वृङ्क्लिङ। मना-হেন সপিণ্ডাস্ত শুদ্ধ্যন্তি প্রেত সূতকে। ত্রিরাত্রেণ সঙ্গল্যাস্ত স্বাস্থা শুদ্ধান্তি গোত্রজাঃ ॥ ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব ।। 🗱 ।। দাযাধি-कार्तिमञ्जाञ्च शक्ष्मभूक्षार-थयः। यथा तीक्षायनः। अति-তামহঃ পিডামহঃ পিতা স্বয়ু সোদর্য্যভাবরঃ স্বর্ণাষাঃ পুলঃ

পোত্ৰঃ প্ৰপোত্তো বা এতানবি-ভক্তদাযাদান্ সপিণ্ডান্ আচ-কতে। বিভক্তদাযাদান্ সঙ্গ-लान् चारक्र मध्यक्रक्ष् তদাামী ছর্থো ভবতীতি। ইতি দাযতত্ত্ব শুদ্ধিতত্ত্বঞ্চ ৷৷ # 11 ভস্য কন্যাদানাধিকারি-ত্ব॰ যথা। বিষ্ণুঃ। পিতা পিতা-মহো ভ্ৰাতা সঙ্গল্যো যাতাম-হো মাতা চেতি কন্যাপ্রদঃ পূ-র্বনাশে প্রকৃতিস্থঃ পরঃ পরঃ ।। নারদশ্চ। পিতা দদ্যাৎ স্বয়ং কন্যাণ ভ্ৰাতা বানুমতঃ পিতুঃ। মাতামহো মাতুলশ্চ সঙ্গল্যো বান্ধব স্তথা।। মাতা স্বভাবে मर्दिषा॰ श्रक्तरको यिन वर्त्तरक । তস্যা মপ্রকৃতিস্থাযাণ কন্যাণ দ-मूरः अजाठयः॥ ইত্যুদাহতত্ত্বः॥ সঙ্গলী স্ত্রী মৎস্যবিশেষঃ। অস্যা গুণাদি স্তালব্যশকারাদি শঙ্গ-লশব্দে দ্রস্টব্যঃ ॥

সর্হ ব্য সহ। একবারণ ইত্যমরঃ । বিষ্ঠা। ইতি তট্টীকা ।।
সর্হৎপ্রজঃ পুণ কাকঃ। ইত্যমরঃ ।। জাতৈকমাত্রাপত্যে ত্রি ।।
সর্হৎফলা স্ত্রী কদলী । ইতি
রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

महाकार्जः भू॰ (थमतः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ৷৷ একমাত্রগর্ভি ণ্যা॰ স্ত্রী ॥ সরুদ্বীরঃ পু॰ একবীরবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ সক্তঃ ত্রি অবিরতঃ। ইতি হেম-চন্দ্রঃ।৷ আসক্তশ্চ ৷৷ সক্তিঃ ত্রী সঙ্গঃ সন্জ্ধাতোঃ ক্তিঃ প্রত্যথেন নিষ্পন্না ॥ সক্ত্রু পু॰ ভৃষ্টযবাদিচূর্ণঃ। ছাতু रेि जाया। यथा। ज्यो यवाः পুনর্ধানা ধানাচূর্ণয় সক্তবঃ। रेिंछ (रूगठानः।। जामा छनानिः তালব্যাদিশক্তুশব্দে দ্রফব্যঃ ৷৷ পু॰ বিষভেদঃ। ইতি ट्रमहन्तः।। श्वार्थ क मकुन्ह ক্তুকলা স্ত্রী শমীবৃক্ষঃ। ইত্য-यतः ॥ कुक्नी खी भगीवृकः। इंडि শব্দরত্বাবলী।। ক্থি ক্লী উরুঃ। ইত্যমরঃ।। শকটাব্যব্বিশেষঃ। ইত্যুণাদি क्षिश्वः ॥ गं पू॰ मिश्राम्यूकः। ममानः था।यट करेनः नामीि ডिः মনীয়াদিত্বাৎ খ্যাতে ৰ্য লোপঃ मगानमा मजावन्छ माथृखा

মিতি সে র্ডা। ইত্যমরটীকাযাণ ভরতঃ॥ তৎপর্যায়ঃ। আক্র-ন্দঃ ২ মিত্র॰ ৩ সুস্বৎ ৪। ইতি জটাধরঃ।। ব্যস্যঃ ৫ সব্ধাঃ ৬ স্নিক্ষঃ ৭ সহচরঃ ৮। ইতি হেনচন্দ্রঃ।। সহায়ঃ। ইতি মে-দিনী ৷৷ তৎপত্নীগমনে দোষো যথা। গুরুতল্পত্রত সর্য্যাৎ ব্লে-তঃ সিক্ত্বা স্বযোনিষু । স্থ্যঃ পুত্র ন্য চ স্ত্রীযু সমারী মন্ত্যজাসু চ।। ইতি প্রাযশ্চিত্ততত্ত্ব ।। मिश्ठा खी मथा। यथा। मी-মাণ্সে বহুসেবিতাসি সুহৃদ স্ত-ৰ্কাঃ সমস্তাঃ স্থ মে বেদান্তাঃ প-त्रमाञ्चादाव छत्रदवा घृष॰ मटमा-পাসিতাঃ। জাতা ব্যাকরণানি বালদখিতা যুম্মাভি রভ্যর্থযে প্রাপ্তোষণ সমষো মনৃক্তবিবৃ-তৌ সাহায্য মালঘ্যতা ।। ইতি মনুটীকাযাণ স্বল্পুকভটঃ ॥ मधिष्ठ क्री मथां। मिथाना-ভাবে স্ব প্রত্যধেন নিষ্পন্ন॰।। मथी खी महतती। তৎপর্যায়ঃ । আলিঃ ২ ব্যস্যা ৩। ইত্যমরঃ ॥ স্থ্রীচী ৪। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ সখ্য ক্লী মিত্রতা। তৎপর্ব্যাষঃ ৷ সৌহদ ২ সৌহার্দ ৩ সাপ্ত

अमीनः १ रेगवः ৮ জर्জाः २ जञ्ञ ७ ° २०। ইতি হেমচপ্রः ॥ সগ মএ সংবৃতৌ। ইতি কবি-कब्रफ्रमः॥ म निमगियरिक। এ অসগীৎ। ইতি দুর্গাদাসঃ॥ সগন্ধঃ পু• জ্ঞাতিঃ৷ ইতি ত্রি-काखरमयः॥ गन्नयूटक वि॥ मगतः भू व्यर्राह्यमः। ইতি হেমচন্দ্রঃ ৷৷ সূর্য্যবংশীযরাজ-বিশেষঃ। স তু অযোধ্যাধিপতি বাহুরাজপুত্রঃ। তস্যোৎপ-ख्यामि यथा। मूर्याव**ः स्थ**न त्रांखा वाष्ट्र नाम महानजृष् । **छमा ताष्मा** श**छ मर्ब** देश्हरेय खानक्रक्रदेवः ॥ कारमाकाः भ-হ্লবালৈচব পারদা যবনাঃ শকাঃ । এতে পঞ্গণা ব্ৰহ্মন্ হৈহ্যা-র্থে পরাক্রমন্।। হতরাজ্যঃ স বৈ বিপ্ৰ তদা বাহু ৰ্বন॰ যযে । পত্নী তু যাদবী তস্য গুৰ্বিণা-সীৎ পতিব্ৰতা ৷৷ তৎসপত্নী পূৰ্ব মেব তস্যা গৰ্ভজিঘা স্যা া ভোজনেন সহ প্রাদাৎ গর• थर्मानत्वक्या।। यान्त्राञ्च **७**-পোষোগাৎ গর্ভো নৈব মমার হ। ন মমার চ সা রাজ্ঞী দেবা-ना मनुकम्भया।। পতि॰ मानुयः

(य) माश्री मिरवटव ७ वटन मना । স রাজা বিপিনে তত্মিন্ প্রা-ণাণ স্তত্যাজ যোগবান্।। সা তু ভর্ত্তু শ্চিতি ক্লন্তা বনে তা মধ্য-রোহত। ঔর্ব স্তাণ ভার্গব স্তাত কারুণ্যাৎ সমবার্যৎ ॥ তস্যা-শ্রমে চ সা গর্ভ সুষ্রে জ্বল-নপ্ৰভ । ব্যজাযত মহাবাহ ৰ্গ-রেণৈব সহ দ্বিজ্যা সগরো না-ম তেনাভূৎ বালকোতিমনোহ-রঃ। ঔর্বস্ত জাতকর্মাদি তস্য ক্তবা মহাত্মনঃ।। অধ্যাপ্য বেদা-নখিলান্ শস্ত্রাণি প্রত্যপাদয় । আগেষম্ভ মহাঘোর মমরৈ রপি দুঃসহ ।। স তেনাস্ত্রবলেনাজৌ वटनन ह मुक्षिजः। देश्र्याः স্তালজ্ঞাণ্শ্চ জম্নে রুত্তঃ পশূ-নিব।। জনষামাস লোকে ংস্মিন কীর্ত্তি• কীর্ত্তিমতাম্বরঃ। ততঃ শ্-কান্ স্থবনান্ কাম্বোজান্ পা-রদাণ স্তথা।। পত্নবাণশ্চাপি নিঃ-শেষান্ কর্তু॰ ব্যবসিতে। নৃপঃ। তে হন্যমানা বীরেণ সগরেণ মহৌজসা।। বশিষ্ঠ শরণ জগ্মঃ সূর্য্যবংশপুরোহিত । বশিষ্ঠঃ শরণাপন্নান্ সমযে স্থাপ্য তানৃ-ষিঃ II সগর• বার্যামাস তেভ্যো

দন্বভিষ্ণ তদা। সগর স্তাণ প্র **जिक्ना** सिमाग म्मरादनः ॥ ধর্মণ জ্বান তেষাঞ্চ বেশানন্যাণ শ্চকার হ। অর্দ্ধ° শি**রঃ শকানা**ন্ত মুওযানাস ভূপতিঃ ৷৷ যবনানাণ শিরঃ সর্ব॰ কাম্বোজানা মপি দ্বি-জ। পারদান্ মুক্তকেশা স্ত প-इतान् भार्मधातिनः ॥ निकाधाय ব্যট্কারান্ স্বানেক চকার হ । কোলিদর্পা মাহিষকা দার্বা-(*ठानाः मटकत्रनाः॥ थमा ख-ষারা শ্চীনাশ্চ মডাঃ কিন্ধিন্ধকা ন্তথা ৷৷ কোন্তলান্চ তথা বন্ধাঃ শাষাঃ কোন্ধণকা স্তথা। সর্বে তে ক্ষত্রিয়া স্তাত ধর্ম্মা স্তেষাণ নিরা-ক্রতাঃ।। পুরোহিতস্য বাক্যেন ক্লতা বিক্নতবেশিনঃ। বশে ক্লত্য স রাজন্যান্ স্বরাজ্য মন্বশাসত ৷৷ ইতি পাঘে স্বৰ্গখণ্ডে ১৫ অধ্যা-যঃ॥ ৠ। অপিচা রোহিতাক্ত বৃকো জাতো বৃকাদাহ রজাযত । সগর স্তদ্য পুলো ২ভূৎ রাজা পরমধার্মিকঃ ৷৷ দ্বে ভার্য্যে সগ-রস্যাপি প্রভা ভানুমতী তথা। তাভ্যা মারাধিতঃ পূর্ব মৌর্বো श्रीः भूजकागाया।। छई स्वर्षे ত্তযোঃ প্রাদাৎ যথেষ্ট বর মৃত্ত-

मः । এका यस्किमहमानि मुठ

(मकः ठथा পরা।। গৃङ्गां ठ वः
मकः छं। अञा गृङ्गां ष्ट इः ख्रथा
। একः ভানুনতী পুত্র মগৃङ्गान
ममञ्जनः।। ততঃ यस्किमहमानि

मुमुद्र याम् वी প্রভা। খনস্তঃ

পৃথিবীং দশ্ধা বিফুনা যে হশ্ব
মার্গণে।। অসমঞ্জনস্ত তনযো

অংশুমান্ নাম বিশ্রুতঃ। তস্য

পুত্রো দিলীপস্ত দিলীপাত্র ভগীরথঃ।। যেন ভাগীরথী গাল্লগঃ ক্রয়াবতারিতা। ভগীরথস্য তন্যো নাভাগ ইতি

বিশ্রুতঃ।। ইতি মাৎস্যে ১২

অধ্যায়ঃ।।

সগর্ভঃ পু॰ সহোদরঃ। ইতি
শব্দরত্বাবলী।। অভ্যন্তরিতস্শ্বপ্রভাদিযুক্তস্পাদি। যথা।
দর্ভান্ সগর্ভানাদায় নব সপ্ত
চপঞ্চ বা। সাগ্রান সমূলানক্রিয়ান্ দ্বিজো দক্ষিণপাণিনা
।। অয়ারন্ধেন সব্যেন তর্পথেৎ
যড্বিনায়কান্। ইতি কাশীখণ্ডে সদাচারো নাম ৩৫ অধ্যায়ঃ।।

সগর্ভা স্ত্রী গর্ৱবতী। যথা। কেচিদাহন মাশ্রিত্য কেচিৎ পাতাল মাবিশন্। সগৰ্ত্তা চন্দ্ৰ-সেনস্য ভাৰ্য্যা দান্ত্যাশ্ৰমণ যধী । ইতি পাল্পে সৃষ্টিখণ্ডে ১ অ-ধ্যাষঃ ।। সহোদরা । ইতি সগর্ত্ত শব্দদর্শনাৎ ।।

সগর্ভাঃ পু॰ সহোদরঃ। ইত্য-মরঃ॥

সগোত্রণ ক্লী জলণা যথা।
জলণ গোত্রণ সগোত্রঞ্চ ভূল্যগোত্রে নিগদ্যতে। ইতি শব্দরত্মাবলী ।।

সগোত্রঃ পু॰ জ্ঞাতিঃ। সমান॰ গোত্র মস্য। যথা। সগোত্র বান্ধব জ্ঞাতি ধন্ধু স্ব স্বজনাঃ সমাঃ। ইত্যমরঃ।।

পি জা সহভোজন। ইত্য মরঃ । সমানা সহ বা জিঞ্চিঃ সঞ্জিঃ। অদঃ ক্তিঃ জ্রপ্কোদো ইতি জ্বে জিঞ্চিঃ মিপাতনাৎ সঞ্জি রাদেশঃ। সঞ্জি রপি ছন্দ সীতি পরে। ইত্যমর্টীকাষাণ ভরতঃ ।।

স্ব ন হিংসে। ইতি কবিকর জুমঃ।। ন সমোতি। অসীস্বত্ । ইতি দুর্গাদাসঃ।।

সন্ধটঃ ত্রি সন্বাধঃ। ইত্যমরঃ॥ দ্বে অল্লাবকাশে বর্গাদৌ। স মাক্ কটতি আবৃণোতি সন্ধটি অল্। সমাগন্যান্য বাধতে থতা সমাধা যঞ্। বাচালিকত। চ। সম্বাধা বৃহদিপি তদ্বভূব বর্জা ইতি মাঘা। ইতি ভরতঃ।। দুংখে ক্লী। যথা। সর্বাবাধা স্ ঘোরাসু বেদনাভার্দিতো হপি বা। সম্বর্দার মতক্রান্থ । ইতি দেবীমাহাদ্যাস্য টীকাষাণ না-গোজীভটিঃ।।

সন্ধটা স্ত্রী দেবীবিশেষঃ। সাচ
বারাণসাাণ প্রসিদ্ধা।। যোগিনীবিশেষঃ। যথা। মঙ্গলা পিঙ্গলা ধন্যা ভ্রামরী ভদ্রিকা
তথা। উল্কা সিদ্ধিং সন্ধটা চ
বোগিন্যোর্ফো প্রকীর্ত্তিতাঃ ।।
ইতি জ্যোতিষণ।।

সক্ষটাক্ষঃ পুত্ ধববৃক্ষঃ।। কটা-ক্ষসহিতে ত্রি। ইতিবিশ্ব হেম-চক্রে)।।

সক্ষথন ক্লী সম্যগুষ্ণ । যথা
। উপবাসফল নশ্যেৎ দিবাস্বপ্লাক্ষ মৈথু নাৎ। গ্ৰীণা সংপ্ৰেক্ষণাৎ স্পৰ্শান্তাভিঃ সক্ষধনাদপি।। ইত্যেকাদশীতত্ত্ব ।।

সঙ্কথা স্ত্রী পরস্পরভাষণ । যথা । উल्लाशः काञ्चवागरनारनाः ক্তিঃ সংলাপ সঙ্কথে। ইতি হে-মচন্দ্রঃ।। সমাক্কথনঞ্চ ।। महतः पुर मन्नार्क्जना किश्वशृ लाकिः। उद्भर्यायः। व्यवकः রঃ ২। ইত্যমরঃ।। সন্ধারঃ ৩। ইতি শব্দরত্বাবলী।। অগ্নিচটৎ-कातः। ইতি মেদিনী হারাব-लो ॥ मिश्रिटष् । यथा । ভেদাখ্যানায় ন ছন্দ্রো নৈক-শেষোন সন্ধরঃ। ইত্যনরঃ॥ পরস্পরাত্যন্তাভাব সমানাধি-कत्रनरमा देत्रकाधिकत्रनाः। यथा । মূর্ত্তত্ব মনসি বর্ত্ততে ভূতত্ব নাস্তি আকাশে ভূতত্ব বৰ্ত্ততে মূর্ত্তত্ব' নাস্তি। পৃথিব্যাণ ভূতত্ব' ্রতে মূর্ত্বঞ্চাস্তীতি জাতি সান্ধ ব্যি । তথাচোক্ত । ব্যক্তে রভেদ স্তল্যত্ব সঙ্গরো ২থান-বস্থিতিঃ। ৰূপহানি রুসম্বন্ধো জাতিবাধক সংগ্রহঃ ॥ ইতি गिकासमुकावनी ॥ # ॥ वर्न-সঙ্গরজাতিঃ। যথা। যাজ্ঞবন্ধ্য উবাচ**। বক্ষ্যে সঙ্করজাত্যাদি** গৃহস্থাদিবিধি পর । বিপ্রা-গূদ্ধাবসিক্তো হি ক্ষত্রিযাযাণ

বিশঃ স্ত্রিযা ।। জাতো ২ মণ্ঠস্ত শূদ্রাযাণ নিষাদঃ পার্যতোপি ষা। মাহিষ্যোগ্রৌ প্রজাষেতে विष् भूजाक्रनरमा न् भाष ॥ বৈশ্যা॰ শূজাক রাজন্যা॰ মা-হিষ্যোগ্রো সুতো স্মৃতো। শৃ-काया॰ कतरना देवनगा विषान् এৰ বিধিঃ স্মৃতঃ ৷৷ ব্ৰাহ্মণ্যাণ ক্ষত্রিষাৎ সূতো বৈশ্যাবৈদে-হক স্তথা। শূদ্রাজ্জাতস্ত চা-ণ্ডালঃ সর্বধর্মবহিষ্কৃতঃ।। ক্ষত্রি-যা মাগধ বৈশ্যাৎ শূড়াৎ ক্ষ-জার মেব চ। শূজাদাযোগব॰ देवगा जनकामान देव मूछ ॥ মাহিযোণ করণাম্ব রথকারঃ প্রজাবতে। অসংস্তৃতাশ্চ বি-জ্ঞেষাঃ প্রাতিলোমানুলোম-জাঃ॥ জাত্যুৎকর্ষাদ্দিজো জে-ষঃ সপ্তমে পঞ্মে ২পি বা। ব্য-ত্যষে কৰ্মণাণ সাম্যে পূৰ্বকো-ত্তর্গবর•।। ইতি গারুডে ৯৬ অধ্যায়ঃ ৷৷

मकती खी नवमृषिछकना। ইতি मिनी॥

সঙ্করীকরণ ক্লী নববিধপাপাস্ত-গতপাপবিশেষঃ। যথা বিষ্ণুঃ। অথ পুরুষস্য কাম ক্রোধ লো- ভাখ্য রিপুত্রয় ভবতি। পরি-এহপ্রসঙ্গেন বিশেষালাৃহাঞ্র-মিণঃ ৷ তেনায মাক্রান্তো ২তি-পাতক মহাপাতকানুপাতকো-পপাতকেষু বৰ্ত্ততে। জাতিভূ_°-শকরেষু সঙ্করীকরণেম্বপাত্রীক-त्रत्वम् मलावरत्रम् अकीर्वत्वम् ॥ ভদ্মথা। খরাশ্বোফু মৃগেভানা मङ्गाविकवध खथा। महत्रोकतः ণ জ্বেষ মীনাহি মহিষদ্য চ।। তস্য প্রাযশ্চিত্ত যথা। সঙ্করা-পাত্র ক্ত্যাসু মাসণ শোধন মৈ-न्मतः। मिननीकत्रनीरययू उश्वः স্যাদ্যাবক স্ত্র্যহঃ॥ তথা বিষ্ণুঃ । আম্যারগ্যানা পশুনা হি সা मः की गीं क्रत्रनः। मक्षत्री क्रतनः क्र-ত্বা মাস মশ্বাতি যাবক'। ক্ল-চ্ছাতিরুচ্ছ মথ বা প্রাযশ্চিত্তন্ত कातराय ।। ইতি প্রাযশ্চিত विदिकः ॥

সন্ধর্ষণ ক্লী আকর্ষণণা সম্যক্-প্রকারেণ কর্ষণণা সংপূর্ব ক্লষ ধাতো রনট্ প্রত্যাযেন নিষ্পন্নণ সন্ধর্ষণঃ পুণ বলদেবঃ। ইত্যা-মরঃ।।

সকলঃ পু॰ সকলন•। যোগঃ। সংপূৰ্ব কল ধাতো ভাবে অল্ প্রত্যেনে নিপানঃ ।।

সঙ্গলন ক্রী একত্রীকরণ ।

যোজন ৷ ঠিকদেওয়া ইতি
ভাষা ৷ ইতি লীলাবতী ৷।

সঙ্গলিতঃ ত্রি লেখাদিনা সংবৃতং

৷ তৎপর্য্যায়ঃ ৷ সংগৃঢ়ঃ ২ ৷

ইত্যমর ভরতৌ ৷৷ যোজিতালং

৷ ঠিকদেওয়া আঁক ইতি ভাষা ৷

যথা ৷ অথ সঙ্কলিত ব্যবকলিত্যোঃ করণসূত্র ৷ ইতি লীলাবৃতী ৷৷ পুঞ্জীক্রভধান্যাদি ৷

ইতি কেচিৎ ৷৷

পু॰ কর্ম্মণো মানস॰। সম্বন্ধ ইত্যমরঃ ৷৷ সঙ্কল্প উক্তো হারী-তেন। যথা। মনসা সম্বল্প তি বাচা অভিলপতি কর্মাণা চো-পপাদযতি ইতি ভবিষাপুরাণ वहरनन ह। मक्रदन्नन विना द्रा-জন্ ষৎকিঞ্চিৎ সরুতে নরঃ। ফলঞ্চাল্পক॰ তস্য ধর্মাস্যার্দ্ধ-ক্ষযোভবেৎ।। ইতি ব্রহ্মপুরা-ণেনাপি আশাস্য চ শুভ কা-ৰ্য্য মুদ্দিশ্য চ মনোগতং। ইত্যা-গস্ত্যপূজনে উক্তণা মনোগত• শুভ ফল আশাস্য মন্যা সঙ্ক-ষ্ম্য উদ্দিশ্য বাচা অভিলগ্য কা-ৰ্য্য• কৰ্ম্মণা উপপাদ্য•। ভবিষ্যে

। শুক্তি শঙ্খাশ্য হস্তৈশ্চ কাণ্দ্য ৰূপ্যাদিভি স্তথা। সকল্পো নৈ-ব কর্ত্তব্যা মৃন্মযেন কদাচন ॥ গৃহীত্বৌডুষর পাত্র বারিপূর্ণ গুণান্বিতং। দর্ভত্রয়ং সাগ্রমূলং यन पूष्प जिनामिकः॥ कनाः শ্यातामकूल मक्दल পূর্বদিজু थः। नाधात्रण চোত্রাস্য ঐ শান্যাণ নিক্ষিপেজ্জলণ।। অত্ৰ কেবল হস্ত নিষেধন্ত পাত্রান্তর সন্তাববিষয়ঃ। শঙ্খাদি সাহচ-র্যাৎ একহস্তপরো বা। গৃহী-ক্ষেত্ৰর পাত্র বারিপূর্ণ মুদ-ज्यः। উপবাসম্ভ গৃহীযাদ্যদা वार्त्यावं भात्ररम् ॥ देखि वता ह-পুরাণদর্শনাৎ। ইতি তিথ্যা-দিতত্ত্ব ৷৷ 🟶 ৷৷ সঙ্কল শচ ভাবে মবৈতৎকর্ত্তব্য মেব নিষেধে তু মবৈতন্মকর্ত্ব্য মিতি জ্ঞানবি-শেষঃ৷ ব্রতাদীনা পদ্মসম্ভ-वदः यथा। मक्क्यमूनः कारमा বৈ যজ্ঞাঃ সঙ্কল্প স্ম্ভবাঃ। ব্ৰতা নিষম ধৰ্মাশ্চ সৰ্বে সঙ্কল্পজাঃ সৃতাঃ॥ ইত্যেকাদশীতত্ত্ব॰॥ সঙ্গলজন্মা পু॰ কামদেবঃ৷ ইতি र्नायूधः॥ मक्ब्रज्यः पू॰ कामरमयः। ইতি

ত্রিকাওশেষঃ।। मकब्रायानिः शूः कामरावः। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ ৷৷ সঙ্কসূকঃ ত্রি অস্থিরঃ। ইত্য-यसः॥ मूर्वनः। इजुगिमित्काः यः।। गन्भः। ইতি मिक्षास्टरकी-मूमा मूगानिवृज्धिः॥ म॰कीर्वः॥ অপবাদশীলঃ। ইতি সংক্ষিপ্ত-স্পরোণাদিবৃত্তিঃ ।। मकातः पुर मगार्क्जना किश्वध्-न्यापिः। ইতি শব্দরত্নাবলী।। व्यक्तिहरू कातः। ইতি यामिनी मकाती खी नवमृषिठकन्या। ইতি মেদিনী॥ मक्षामः जि ममृगः॥ অন্তিকः। ইতি বিশ্বঃ॥ मिकनः पु॰ पर्ताक।। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ সন্ধীর্ণ ত্রি জনাদিভি নিরবকা-শঃ। ইতি ভরতঃ।। নানাজাতি সংমিলিতং। ইতি ভানুদীক্ষি-**ठः ॥ ७९** शर्यायः । मक्तुन १ আকীর্ণ ৩,1 ইত্যমর: 11 নিচি-ত । ইতি का नार्थ व्ययतः ॥ ব্যাপ্ত ৫ সমাকীর্ণ ৬। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ সঙ্কটঃ। ইত্য-জযঃ।। পরস্পরবিজাতীয়ঃ।

ষ্থা। বিশেষ্যনিষ্ণ সংকীর্ণ নানার্থে রব্যবৈ রপি। ইত্য-মরস্লোকটীকাষা ভরতঃ।। অ-শুদ্ধঃ। ইতিনানার্থে অমরঃ।। সন্ধীর্ণঃ পু॰ অম্বর্গকরণাদি চা-গুলপর্যান্ত মিশ্রজাতিঃ। ই-ত্যমরঃ।। মিশ্রিতরাগঃ। ইতি সংগীতশাস্ত্রণ।।

সঙ্গীর্ত্তন॰ ক্লীন্ত্রী সম্যক্প্রকা-द्भिन (मवर्गानारमाकात्रन⁹॥ श्व-नामिकथनः। यथा। क्रयःवर्गः দ্বিষা ক্লফ্ডণ সাঙ্গোপাসাত্রপার্য-**দ**। यटेड्डः मङ्गीर्जनश्रारेय र्यक-স্তি হি সুমেধসঃ॥ ইতি শ্রীমন্তা-গবতে ১১ ক্ষন্ধে ৫ অধ্যায়ঃ 🕕 কক্ষতা ব্যাবর্ত্তয়তি। দ্বিষা কা-खा १क्षण हेस्पनीलमनिवृत् ब्कुल । यदा विषा क्रक क्रका-বতার অনেন কলৌ ক্লফাবতা-রস্য প্রাধান্য দর্শযতি। অ-कामि रुपयाणीन। छेलाकानि কৌস্তভাদীনি। অস্ত্রাণি সুদ-र्मनामीन। शाह्यमाः मूनमा-मयः। ७९ मश्ठिः। यरेखः तर्फः-देनः। मक्षीर्खनः नारमाकात्रावः স্তুতিশ্চ তৎ প্রধানেঃ। সুমেধ সো বিবেকিনঃ। ইতি তট্টীকা-

या॰ औधत्रयाभी ॥ 🟶 ॥ ज्या-হাত্ম্য বথা। সকীর্ত্তনধনি শ্ৰুত্বা যে চ নৃত্যন্তি মানবাঃ। তেষা পাদরজঃম্পর্ণাৎ সদ্যঃ পূতা বসুদ্ধরা॥ ইতি বৃহন্ধার-मीयशूताणः॥ অशि **ह।** नामम-ক্ষীর্ত্তন যত্র ক্ষফ্যা পরমাত্মনঃ । স্থান তত্ত্ব পবিত্র স্যামৃতা-নাণতত্তু মুক্তিদে।। ইতি পদা-পুরাণ ।।।।। প্রথম সম্বীর্তনারস্ত প্রমাণ যথা। পৃষ্করতীর্থে নার-দে প্রতি বন্ধবাক্যা। গ্রীক্রফরস সঙ্গীত॰ বীণাধ্বনি সমন্বিত॰ । क्रक वर्षाधूनाटेवय भृतृष्ठ गुन ষঃ সুরাঃ।। গোপীনা বস্তুহরণ পর• রাসমহোৎসব• ৷ তাভিঃ मार्कः जनकीषाः श्दतं कृषकी-र्खन । क्रका क्रिक्रमहीर्खन जूर्न পুনাতি শ্রুতিমাত্রতঃ। শ্রোতা-রঞ্চ প্রবক্তারণ পুরুষেঃ সপ্তভিঃ সহ।। যত্রৈব প্রভবেদ্বৎস ত মাস গুণকীর্ত্তন । তত্র সর্বাণি তীর্থানি পুণ্যানি মঙ্গলানি চ।। তৎকীর্ত্তনধনি শ্রুত্বা সর্বাণি পাতকানি চ। দূরাদেব পলায-ভে বৈনতেষ নিবোরগাঃ॥ ত-দিন গ্ৰফল ধন্য যশস্য সৰ্ব্য-

ঙ্গল গ শ্ৰীকৃষ্ণকীৰ্ত্ত**ন ধৰ্ত্ত** তত্ৰ देव नायू द्या बायः ॥ क्रस्कनःकी-ৰ্ত্তনস্থানে বে চ নৃত্যস্তি বৈফ-বাঃ৷ তেষা• পাদরজঃ স্পর্শাৎ সদ্যঃ পূতা বসন্ধরা।। উৎকী-র্ত্তনাও ভবেদ্যত্র ক্লফ্স্য পরমা-ত্মনঃ। স্থানং তচ্চ ভবেত্তী। র্থ মৃতানা তত্ত মুক্তিদ ।। নাত্র পাপানি ভিষ্ঠন্তি পুণ্যানি সুস্থিরাণি চ। তপস্বিনাঞ্চ ব্র-তিনাণ ব্ৰতানাণ তপসাণ স্থলণ ॥ বর্ত্তত্তে পাপিনা॰ দেহে পা-পানি ত্রিবিধানি চ। মহাপা-পোপপাপাতিপাপান্যেব স্মৃ-তানি চ।। क्रक्षमः कीर्जनाष्णां-नाजगद्धश्राम्दश्। मृहादस्र পাতকৈ স্তৈশ্চ পাপিন স্ত্রিবি-ধা জনাঃ।। ইভি নারদপঞ্জা-ত্রে জ্ঞানামৃতসারে প্রথমৈক-রাত্রে মহোৎ দবারস্তো নাম ১০ ञ्याग्यः ॥ গীর্ত্তিতঃ ত্রি সম্যগুচ্চরিতঃ॥ म॰ खठः। यथा। जङ्गानाम्य বা জ্ঞানাদুত্তমশ্লোকনাম যৎ। নংকীৰ্ত্তিত মহ**ং পু**ংসো দহেদে-

ধা যথানলঃ।। ইতি শ্রীভাগ-

তে ৬ ক্ষন্ধে ২ অধ্যায়ঃ॥

ত॰ क्री मः काठ्युकः । অপ্রফুলং। তৎপর্য্যায়ঃ। নি-দ্রাণং ২ মীলিতং ৩ মুদ্রিতং ৪। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। সূপ্তং ৫ মিলি-তং ৬ নতং ৭ নিঙ্গণ্ডিতং ৮ । সনিদ্রং ৯ অলসং ১০। ইতি রাজনির্যন্টঃ।।

मक्षून॰ क्री यूक्ष॰। ইত্যজ्यः॥ পরস্পরপরাহতবাক্যে তৎপ-র্যাবঃ। ক্লিষ্ট ২। ইতামরঃ॥ ष পূर्वाপরবিরুদ্ধে বাক্যে । यथा। यावज्जीव मश् भोनी ब ন্দচারী পিতা মম ইত্যাদিঃ। মা-তাচ মম বন্ধ্যা স্যাৎ স্মরাভো **१नुश्रा ७वान्। अन क वसू** সংহত্যোঃ সংপূর্বঃ ইজুওদ্বাৎ-কঃ। ক্লিশাতেঃ ক্রঃ ক্লিফ । পরস্পর॰ পরাহত॰ বিরুদ্ধ• পর-ম্পরপরাহত । তত্র সরস্বতীক-ঠাভরণে তু ক্লিফলকণ যথা। দূরে यमार्थ म॰বিত্তিঃ ক্লিফি॰ নেষ্ট হি তৎ সতা ৷ যথা বিজিতাত্মভবদেয়ি গুরুপাদহ-তো জনঃ। হিমাপহামিত্রধরৈ ৰ্ব্যাপ্ত॰ ব্যোমাভিনন্দতি ইভি। অস্যার্থঃ ৷ বিনা গরুতেন জিত ইন্দ্র স্তদ্যাত্মভবে৷ ২জ্জন স্ত-

স্থাঃ তস্য পাদৈ রশ্মিভি হঁতে।
স্থাঃ তস্য পাদৈ রশ্মিভি হঁতে।
জনো লোকঃ ব্যোম আকাশ
মভিনন্দতি কীদৃশং হিমাপছে।
২গ্নি স্তদ্যামিত্রণ জলণ তদ্ধান
রয়ন্তি যে তৈ শ্লেষ্যৈ ব্যাপ্তণ ।
ইতিভরতঃ ।।

সম্বলণ ত্রি জনাদিভির্নিরবকা-**म**ा जदमर्यायः। महीर्गः २ षाकीर्भ ७। ইত্যमतः॥ किन ল ৪ গহন ৫। ইতি কেচিৎ।। সন্ধীৰ্য্যতে স্ম জনাদিভি নির-ন্তরণ ব্যাপ্যতে স্ম সঙ্কীর্ণ ক্ল শ বিক্ষেপে ক্রঃ। সংস্কলতি সম্কু ल॰ ञ्रल क तन्नू **म॰**श्राः म॰ পূর্বঃ ইজুঙত্বাৎ কঃ। সংস্বল দস্ত্যাদি। শকি ধাতো রুলে শ-স্কুল তালব্যাদীতি স্বামী। আ-কীর্ণ সঙ্কীর্ণবৎ। ইতিভরতঃ॥ সক্ষেতঃ পু॰ স্বাভিপ্রাযব্যঞ্জক-চেষ্টাবিশেষঃ।। সঙ্কিত্যতে উ-চ্যতে হত্র। তৎপর্যাষঃ। প্র-জ্ঞপ্তিঃ ২ পরিভাষা ৩ শৈলী ৪ সম্বঃ ৫ আকারঃ ৬ ৷ ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ উদাহরণ যথা । সঙ্কেত প্রিযশঙ্কষা নিজপতি॰ প্রাবোচদধ্রশ্রমণ। ইতি রসসণ-

গ্রহঃ। ন্যায়মতে যথা। সঙ্কে-তো লৃক্ষণা চার্থে পদবৃত্তিঃ। বৃত্ত্যা পদপ্রতিপাদ্যো ২র্থ এব পদার্থ ইত্যভিধীয়তে। ইদ॰ পদ মিমমর্থ• বোধযত্বিতি অস্মা-চ্ছদাদ্য মর্থে। বোদ্ধব্য ইতি বেচ্ছা সক্ষেত্ৰৰপা বৃত্তিঃ। তত্ৰা-ধুনিকদক্ষেতঃ পরিভাষা। ত্যা অর্থবোধকণ পদণ পারিভাষিকণ । যথা শাস্ত্রকারাদিসঙ্কেতিত ननीवृक्तााि विषयः। विश्वतमाः তঃ শক্তিঃ৷ ত্যা অৰ্থবোধকণ পদ বাচক। যথা গোত্বাদি विभिक्टरवाधक भवामिशमः **তদোধ্যো ২র্থো গবাদি ব**াচ্যঃ স এব মুখ্যার্থ ইত্যুচ্যতে। ইন্তি শক্তিবাদে গাদাধরীটীকা ৷৷

সক্ষেতনিকেতন ক্লী প্রিষ্ঠেন লনার্থাবধারিতগৃহং। যথা। স ক্ষেতনিকেতনে প্রিষ্ঠ মনবলো-ক্য সমাঙ্গলহৃদ্যা বিপ্রলক্ষা। সক্ষেতকেলিগৃহ মেত্য নিরীক্ষ্য শূন্য মেণীদৃশো নিভৃত নিঃশ্ব-সিতাধরাষাঃ। অর্দ্ধাক্ষর বচ-ন মর্দ্ধবিকাশি নেত্রণ তামূল ম-র্দ্ধকবলীক্ষত মেব তক্ষ্ণো। স-ক্ষেতস্থল প্রতি ভর্ত্ব রনাগমন- কারণ চিন্ত যতি যা সোৎ কঠি তা। ইতি রসমঞ্জরী ॥
সঙ্কোচ ক্রী কলুম । ইত্যমরঃ ॥
সঙ্কোচ পু মৎস্যভেদঃ ॥ বন্ধঃ
। ইতি মেদিনী ॥ বহুবিষযক বাক্যার্থাদে রন্ধবিষয়্থাপন ।
যথা। সামান্যশব্দার্থস্য বিশেষানি গ্রন্ধান । ইতি শ্রাদ্ধান ।
ইতি ক্রিকল্প দ্রন্ধান প্রমুদিতে রাজ্ঞিতমঃ সঙ্কোচাতি ক্রিতৌ
। ইতি ক্রিকল্প দ্রুমিকারাণ দুগাদাসঃ ॥

সকোচনী স্ত্রী লজ্জাল্লতা। ইতিরত্নমালা।।

সংকাচপিশুন ক্লী সন্ধুন । ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।

मकुष्तनः पु॰ हेस्सः। हेर्छामतः।।। त्रापतन क्री॥

সঙ্কুমঃ পু॰ ক্লী দুর্গসঞ্চরঃ।
সাঁকো ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ॥
সঙ্গুমতি অনেন সংক্রম্যতে
অসৌ বা সঙ্কুমঃ ঘঞ্। দুর্গণ
সেডাদি সঞ্চরত্যনেন দুর্গসঞ্চরঃ করণে অল্। সঞ্চরো নির্গণ
মোহযুপথঃ। ইতি রত্নকোষঃ।
ইতি ভরতঃ।।

महुमः भू॰ क्रमण। ममाश्राणिमक्षात्रवस्थ। ই जि धत्रिनिः ॥ तविमहुमकाला यथा। करिः मरमुजारा मः मकाला त्रिमहुमः। ই जि जिथा पिछत्व॰ ॥
महुमण क्री गमनः॥ मूर्यामातामा खत्र व्यात्माः। यथा। कालरको मृगाः कावालाः। मृर्ण रापर्कतात्व जू त्रिमहुमण जर्द्यः। थाए पिनहयः भूगाः जङ्गा
मकत्र कर्करो ॥ प्रतीभूताल।
त्रिमहुमण भूणा न सायाः
यस मानवः। मस्रक्रम जर्दः
मक्षी प्रतिक्रणा भक्षक्रम जर्दः
मक्षी प्रतिक्रणा भक्षक्रम जर्दः
मिन्न क्रिंग पिछन्।
रे जिथा पिछन्।।

সন্ধান্তঃ ত্রি সন্ধান্তিবিশিষ্টঃ।

যথা। অসন্ধান্তমাসো হধিমাসঃ স্ফুটঃ স্যাৎ দিসন্ধান্ত
মাসঃ ক্ষাখ্যঃ কদাচিৎ। ইতি
মলমাসতত্ত্বং। প্রাপ্তঃ। গতঃ
। ক্রমাগতধনাদি। যথা। ন্ত্রীসংক্রান্তধনস্য ন্ত্রীধনস্বাভাবাৎ
অধিকার বিশেষস্যাত্র বচনাদপ্রাপ্ত্যাকাজ্জ্যা কল্পনে সাদ্শ্যাৎ ন্ত্রীসংক্রান্ত ধনমাত্রস্য
পূর্বস্বামি দাষাদ্বপো হধিকারী কল্পনীয় এতদর্থণ পত্নীপদ-

স্য দ্রীলক্ষকত্ব নিতি ভাবঃ । ইতি দাঘভাগটীকাযা শ্রীকৃষ্ণ তর্কালকারঃ ।।

সণ্কাস্থিঃ স্ত্রী রাশ্যন্তরসংযো-गान्कृलवाभातः। यथा। ना-ডীনক্ত্র দিবদে রবি ভৌম শনৈশ্চরাঃ। সংক্রান্তি॰ যস্য ষ্পর্বস্তি তস্য ক্লেশ্যেভিজাযতে ॥ ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ॥ त्रित সংক্রান্তি র্যথা। ভবিষ্য মাৎস্য জ্যোতিষেষু। মৃগ কর্ক্লট স॰ ক্রান্তী দ্বে তূদগদক্ষিণায়নে। বি সুবতী তুলা মেষে গোলমধ্যে তথাপরাঃ।। মৃগো মকরঃ। গোলো রাশিচক্রণ। ধনু র্মিথুন कनाामू भीत्न ह यक्ष्मीलयः। বৃষ বৃশ্চিক সিংহেষু সম্ভে বিষ্ণু গদী স্মৃতা।। দেবীপুরাণ । যাবদিংশকলা ভূক্তা স্তৎ পুণ্যুণ চোত্তরাযণে। নিরণশে ভাস্করে मृट्छे मिनास्त्रः मिक्कायटन ॥ अ-र्क्तत्राटक षमःशृट्नं मिवा शूना म-নাগত। অর্দ্ধরাত্তে ব্যতীতে তু বিজ্ঞেষণ চাপরে ২হনি ৷৷ সণপূ-र्भ हार्षत्रात्व ह छेन्दर श्ख्रार्य शिवा। मानार्कः जाऋदि भूग यण्टर्भ नर्वतीमत्त ॥ मण्णूटर्भ जू-

ভষে জেষ্ক মতিরেকে পরে ২হনি । যডশীতিমুখে ২তীতে বৃত্তে চ वियुवषया। ভवियाजायत्न भूगा মতীতে চোত্তরাযণে। আদৌ পুণ্য বিজ্ঞানীয়াৎ যদ্যভিষ্য তি-থি ভবেৎ ।। বি॰শকলা বি॰শতি-তমीকলা সংক্রান্তিক্ষণাদূর্দ্ধি যা-বদ্ভবতি তাবৎ পুণ্য। নিরণশে **২**৽শশূন্যে সংক্রান্তিকালে হি ভাস্করো হংশরহিতো ভবতি ত-স্মিন্ দৃষ্টে দিবেতি যাবং। দিন-ঞ্চ দিনকর করসংস্কৃতা স্ত্রিংশনা-ডিকা ইতি জ্যোতির্বিদঃ। তদন্ত তৎসমাপ্তি যাবৎ তাবৎ পুণ্য । তথা চ বৃহদ্দিষ্ঠঃ। ত্রি॰শৎক-ক্ষটিকে নাড্যো মকরে বিংশতিঃ याञाः। नाषी मखः। উৎপলা-षि**शन॰ यर्छे**। विशनाखू शन॰ नरयः। भना स्यक्ता नरयः ডী॰ তৎষষ্ট্যা ভু রবে দ্দিন॰ ॥ ইতি সিদ্ধান্তসন্দর্ভাৎ। ততশ্চ **(मवीপুরাণ वृश्विमिश्रेरमा রেক**-বাক্যত্যা কলা নাড্যোঃ পর্য্যা-যতা।। **#া**। রাত্রিস°ক্রমণে ছাহ অর্দ্ধরাত্রে দ্বিতি। অসম্পূর্ণে ক-लान्ग्रनार्कतार्व। कलान्ग्रनार्कः त्रा र्वे जू यिन मः क्रमनः ভবে ।

তদহঃ পুণ্য মিচ্ছস্তি গাৰ্গ্য গাল ব গোতমাঃ ৷৷ ইতি ক্লত্যচিস্ত্যা-মণি বর্ষক্রত্য ধৃত পর্গবচনাৎ। কালকৌমুদ্যাঞ্চ গালৰেত্যত্ৰ হা-রীত ইতি পাঠঃ। ততশ্চ কলা-ন্যুনাৰ্দ্ধরাত্রাভ্যন্তরে দাদশবেব সংক্রান্তিষু অনাগতং নাগতং সংক্রমণেন যত্র দিবা **তদে**ব পু-ণ্য॰ পুণ্যজনক। ততু পূৰ্বদিন॰ তদৈৰ সংক্ৰান্তে রনাগতত্বসম্ভ-বাৎ। তেন সংক্ৰমণকালাদৰ্বা-গেব দিবাপরার্দ্ধে স্নানাদিকণ কর্ত্রবা মিতার্থঃ। অর্দ্ধরাত্রে ব্য-তীতে কলাধিকার্দ্ধরাত্তে ব্যতী-তে। সংপূর্ণে অর্দ্ধরাত্রে রাত্রিম-थाकन एयाः। कला नामा किता एव দ্বিতি বচনানম্ভর ভুজবলভী-মে। অন্ধরাত্রে কলাধিক্যে যদা সংক্রমতে রবিঃ। তদোত্তরদি-ন॰ আহু• স্নান দান জপাদিষু॥ অন্ধরাত্রে তু সংপূর্ণে যদা সংক্র-মতে রবিঃ। প্রাহু দিনদ্বয় পুণ্য ত্যক্তা মকর কর্মটো।। ইতি বচনাভ্যা॰ তথা প্রতীতেঃ। কা-লবিবেকে কালকৌমুদ্যাঞ্চ শা-**তাতপ জাবালী।** পূর্ণে চেদর্দ্ধ-রাত্তে তু রবিস'ক্রমণ' ভবেৎ ।

প্ৰাহ দিনদ্বৰ পুণ্য ভাক্তা ম-गार कामगाधवीत्य ভবিষ্যোত্ত-রীষণা মিপুনাৎ কর্কিসংক্রান্তি र्यित गामि अभिनः। श्रामार्य वा निनीत्थ वा अर्यग्रामश्नि शूर्व-তঃ ।। কার্দ্মকম্ব পরিত্যজ্য ঝরণ সংক্রমতে রবিঃ। প্রভাতে বার্দ্ধ-রাত্রে বা স্নানণ সর্ব্যাৎ পরে **২হনি।। ততশ্চ রাক্রিমধ্যদ্ত্ত-**ष याञ्चका र्वत्राव मः काञा वृष्ट्य **২স্ত**মষেপি বা ইত্যানেন উদযো-পক্রম মস্তমযান্তঞ্চ মানার্দ্ধ° পু-गु॰। এবঞ্ছো ভয়দিনে পুণ্যকা-লে পূর্বদিনাকরণ এব পরদিনে। यः कांधा मना कर्खवाः পूर्वाद्य চাপরাত্নিক । নহি প্রতীক্ষতে মৃত্যুঃ ক্লন্ত মস্য ন বা ক্লন্ত ।। ইতি লিজপুরাণাৎ মোক্ষধর্মাস্ট ॥ তত্রাপি দক্ষিণাষণে পূর্বদিনার্দ্ধ-মাত্র মিতি বিশেষঃ। উত্তরায়ণে পরদিনার্দ্ধ মাত্র মিতি বিশেষঃ। <u> শানার্দ্ধ মিতি ভাস্করে ভাস্করো-</u> পলক্ষিতে কালে দিবেতি যাবৎ তিমন্ সংক্রমণে হপি মানার্দ্ণ পুণ্য ৷ এতচ্চ বিষুব ষডশীতি বি-ययः। व्ययनकालस्याः शूर्वः मूकः

ত্বাৎ বিকুপদ্যাক্ষোভষতঃ ষোড শকলানা পঞ্দশ নাডিকানা या প्राप्तमा भाषाजभाषिकत्त-ন বক্ষ্যমাণস্বাৎ। তেন দিবা मःक्रमः विवायनामित्वन भूगा কালে বিশেষঃ। রাত্রি সংক্রমণে ত অৰ্দ্ধরাত্রীষ মকর কর্কট সণ্-ক্রমণ ব্যতিরিক্তে সর্বেষাণ তুল্য-তেতি। অপূর্ণে শর্বরীদলে কলা-न्गनार्कतारवं रेणवाणि यानार्क মিত্যনুষজ্যতে। দিবাপুণ্য মিতি ৰৎ প্ৰাপ্তক্তণ অত্ৰ তদেব মানাৰ্দ্ধ-দ্বেন বিশেষিত মিত্যপুনরুক্তিঃ ! **এ**व मूमसास्रमत्य समानार्कः ৰ্বেতি তত্ৰাহ সংপূৰ্ণে তুভযো রি-তি উভযোঃ পূৰ্বাপরদিনযো শ্মা-नार्कः भूगाः एवन পূर्विनिनगासः **गर्यश्रांड॰ श**र्नामनग डेमर मा-রভ্য মানার্দ্ধণ পুণ্য মিত্যর্থঃ। অ-তিরেকে অর্দ্ধরাত্রাৎ পরতঃ সণ্-क्रमण भरत श्रहिन माना कि भूग মিত্যনুষজ্যতে। মানার্দ্ধন্ত প্রহ-त्रवरः। अर्कतावामध खित्रन् म-খাত্রস্যোপরি ক্রিষা। উর্দ্ধুণ সণ-क्रमण ভार्मा क्रमशब् अङ्ब्रह्मर ॥ পूर्वाक्तताव मःकारखो एव मि-

নার্দ্ধে তু পুণ্যদে। ইতি সম্বৎসর-প্রদীপ গঙ্গাবাক্যাবলীধৃত বশি-ষ্ঠ সৌরধর্শ্ববচনৈকবাক্যত্বাৎ ৷ व्यक्तत्राजामध्येभ्ठव मिनाक्तरमा-পরি ক্রিষা। উর্দ্ধুণ সংক্রমণে ভা-ता क्रम्याथ প্রহর্षय•॥ ইতি ভোজরাজ ক্রত্যচিন্তামণি ধৃতৈ-कवाकाषाकः। व्यथः शूर्वः छर्त्नुः পরতঃ। ক্রিয়া স্নানাদিকা। এব-ঞ্গর্গবচনস্থ ভদহ রিতি যাম-ছষপর•। অন্যথা মূলভূত শ্রুত্য-ন্তর কল্পনাপত্তেঃ। এবঞ্চ ষড-শীতিমুখে ২তীতে ইত্যাদি দি-বাসংক্রমণবিষষ ৷ তেন দিবা ষডশী তি সংক্রমণে ভূতে ভবিষ্য-यानार्कः भूगाः এवः वियुवषयः পি। দিবোত্তরাষণেপি ভবিষ্য-দিংশতি দুখানা পুণাত্ব। অ-ত্রোত্তরাষণস্য পৃথগভিধানাৎ व्ययन देखि পদ দক্ষিণায়নপর॰ शावनीवर्फनग्राया । তেন দিবা দক্ষিণাষনে ভবিষ্যতি ভূত **बि॰मम्स्थाना॰ शूगाञ्च॰ ।** এবঞ্চ **বডশীত্যাদিশ্ব**প্যবকা**শ মলভ**-মান অৰ্থাক্ ষোডশ বিজ্ঞেষা নাডাঃ পশ্চাচ্চ ষোডশ। কালঃ

পরিকীর্ত্তিতঃ ৷৷ ইতি শাতাতগী-ষ-। অতীতানাগতো ভোগো না-ড্যঃ পঞ্চনশ স্মৃতাঃ। ইতি দে-वीशूतानीयक वहन पिवा विक्-**अमी**विषय•। **অত**এव জानानि वृश्विणिरधी। भूगायाः विख्न-म्राक्ष आक् शन्हामिश साजन। অর্দ্ধরাত্রে বিশেষ মাহ আদাবি-ভ্যাদি। অধ্বরাত্র সংক্রান্তাবাদৌ প্রদিন এব মানার্জণ পুণ্য । यमा-ভিন্না সংক্ৰান্তিকালে পূৰ্ৰদিনে চ একৈব তিথি র্ভবেৎ তেন মধ্য রাত্রে সংক্রমণে যদুভযদিনমানা-দ্ধিণ পুণ্য মুক্তণ ভদ্তিমতিথিবিষ-যে। অতীতে পুন রর্দ্ধরাত্তে পূ-র্বেণাক্লা তিথ্যভেদেপি পরদিন-দৈয়ব পূৰ্বাৰ্দ্ধণ পুণ্য মিতি তাৎপ-ব্যার্থঃ। এবঞ্চ রাত্রিসংক্রান্তে দিন এব পুণ্যন্বাভিধানাৎ। রাহ-দর্শন সংক্রান্তি বিবাহাত্যয বৃ किया जान मानामिक अर्यू नि শি কাম্যত্রতেষু চ ৷৷ ইতি দেব-লেন দিনসংক্রমণস্য রাত্রিপ্রবি-🔁 भूगुकाला॰ मिं में का स्त्रि नि মিত্তেন স্নান দানাদি বিধীষতে **१७॥ 🛊 ॥ यखु मन्मा मन्माकिनी**-बाक्की रवाजा टेंच्य मरहामत्री।

রাক্সী মিশ্রিতা প্রোক্তা সংক্রা खिः मश्रधा नृषा। यन्ता **अट्य**यू विख्छिया मृतमो मन्माकिनी जथा। कित्थ शास्त्री॰ विकानीयानूत्व যোরা প্রকীর্ত্তিতা।। চরে মহোদ-রী জেষা কুরৈ খ কৈশ্চ রাক্ষসী ৷ মিশ্রিতা চৈব বিজ্ঞেষা মিশ্রিত-কৈন্তু সংক্ৰমে।। ইত্যেতে দ্বাদশ-স্বেব সংক্রান্তিযু প্রবাদি নক্ষত্র যোগাম্মনাদিৰূপত্যা সপ্তধা-ভিন্নাসু। ত্রি চতুঃ পঞ্চ সপ্তাফ ছেতা তত পূণ্য পারমার্থিক।। ইতি দেবীপুরাণ এব ত্রি চতুরাদি षिकाना॰ পूग्रयमुक्त जिल्लाना রাত্যো স্তত্তৎকালোপদেশাৎ অবকাশ মলভ্যান সন্ধ্যাদ্ধ সংক্রান্তিবিষয় মিতি সময়প্রকা-শং ৷৷ ঞ্চবাদিগণস্ত দীপিকা-যাণ। উগ্ৰঃ পূৰ্ব মধান্তকাঃ ধ্ৰুব-গণ স্ত্ৰীণাত্তরাণি স্বভূ ৰাতাদিত্য হরিত্রষণ চরগণঃ পুষ্যাশ্বি হস্তা नयुः। চিত্রা মিত্র মৃগাস্ত্যভ मृদ्गन खीकाहि इंद्यास युक् भि-শ্রো ২গ্নিঃ সবিশাখভঃ শুভফ লাঃ সর্বে স্বন্ধত্যে গণাঃ।। অন্তকো ভরণী। স্বভূরোহিণী। বাতা-

দিত্য হরিত্রৰ স্বাতী পুনর্বসুঃ শ্র-ৰণা ধনিষ্ঠা শতভিষা। মিত্ৰ মৃ-গাস্ত্যভ• অনুরাধা মৃগশিরো রে-বতাঃ। অহি রুজেন্দ্রযুক্ অশ্লেষা আত্রা জ্যেষ্ঠা মূলা। অগ্নিঃ ফ্র-ত্তিক। কন্মতব্ৰস্ত । ক্ৰনেণ যথা-সংখ্যেন এতা স্বটিকা স্তৎপুণ্য তস্য সংক্রমণস্য পুণাহেত্ত্বাৎ পুৰাণ পারমার্থিক মুখাণ। জ্ টেঃ সহসূভাগো ষঃ স কালে। ব্ৰ-বিসংক্রমঃ। ইত্যুক্ত সূত্রসংক্রম-कालीनानुष्ठानकना पूर्व मम-পুণ্য হেতব ইত্যাহ। জুটিস্ত ল-স্থকর চতুর্ভাগ স্তুটি রিত্যভিধীয়-তে। ত্ৰটিদ্বয° লবঃ প্ৰোক্তো নি-মেযস্ত লবদ্বৰ ॥ ইতি স্মৃত্যুক্তা। এতদেব মতং যুক্তং। ভাতএব দে-বলেন। যা যাঃ সন্নিহিতা নাড্য ন্তান্তাঃ পুণ্যতমাঃ স্মৃতা ইত্যুক্ত• । এবঞ্চো ঘটিকাঃ পুণ্যতমাঃ यानाकामिक अप्रायाव मिछि তক্ষামন্দেত্যাদি ন সন্ধ্যাসংক্রা-ন্তি বিষয়ক মিভি। সন্ধ্যাসক্রা-ন্তি বিষয়ত্বে পারমার্থিক মিতানু-পপত্তেঃ। পুণ্য মিত্যনেনৈব সি-ক্ষেঃ। পারমার্থিক মিত্যত্র কল্প-তরু ব্যাখ্যানানবলোকনাৎ র-

বিসংক্রম ইতি পাঠকল্পনং কলন মেব। সময়প্রকাশক্কতাণি তথা পঠিতত্বাৎ। জীমূভবাহনোপি কালবিবেকে। অহ্নি সংক্রমণে **भूगा महः इत्या अकोविक ।** রাত্রৌ সংক্রমণে ভানো দিনার্দ্ধণ সান দানযোঃ।। ইতি বৃহদ্বশিষ্ঠা-দিবচনপর্যালোচনযা দিবাস-कारको पिनमावः भूगः भूगठ-রাস্ত বিশেষবিহিতা নাড্যঃ ই-ত্যাহ। অতএব তদ্ধৃত জাবালি বৃহস্পতিশাভাতপ্রচন মগি নঙ্গ-চ্ছতে। কথা। বৰ্ত্তমানে তুলা মে-ষে নাড্য স্তূভৰতো দশ। কাল-মাধবীষেপি। অহ্লীত্যভিধায় প্রা-শস্তাতারতম্য মুক্তণ। এবঞ্চ দি-বাসংক্রান্ডৌ ক্লৎম্নণ দিনণ পুণ্য• ষড়শীতিমুখেতীতে ইতি বচন পুণাতরপর ।। 🟶 ।। ননু দেবী-পুরাণে দিবা রাত্যোঃ সংক্রমণে বিশিষ্য কালাভিধানাৎ সন্ধ্যা-সংক্রান্তেঃ কঃ কাল ইতি চেৎ। জিংশমুহূর্ত্তণ কথিত মহোরাত্রস্ত বন্মধা। ইতি বিফুপুরাণেন সন্ধ্য-र्याः পृथगनू भागाना ६ मिवाता वि সম্বিদ্ধান্মূর্ত্তার্কেন তথো রস্ত-র্ভাবঃ। তথা চ দক্ষঃ। অহেগরাত্র-

স্য ষঃ সন্ধিঃ সূর্য্য নক্ষত্র বড্রিডঃ । সাতু সন্ধ্যা সমাখ্যাতা মুনিভি खब्निं जिः॥ सागिमाळवकाः **৷হ্নাস বৃদ্ধী চ সতত**ণ দিন রাত্র্যো ৰ্যথাক্ৰমণ। সন্ধ্যা মুহূৰ্ত্ত ৰাখ্যাতা স্থাসে বৃদ্ধৌ সমা স্মৃতা।। বরাহঃ ৷ অদ্ধান্তমযাৎ সন্ধ্যা ব্যক্তীভূতা ন তারকা যাবৎ। তেজঃপরিহা-নি রুষা ভানো রক্ষোদয় যাবৎ ৷৷ অতএৰ কেনাপি মুনিনা নানা-দেশীষসংগ্রহকারেণ চ সন্ধ্যাসং-ক্রান্তিত্বেন বিশেষো নাভিহিতঃ ।। 🕸 ।। 🕸 ।। তদय॰ म॰ रक्तशः । দিনসংক্রমণে ক্রৎক্ষণদিন• পুণ্য•1 ষডশীতিমুখে ২তীতে ইত্যাদ্যু-ক্ত॰ পুণ্যতর । মন্দা মন্দাকিনী-ত্যাদিৰূপেণ ত্ৰি চতুরাদি ঘটি-কাঃ পুণাভমাঃ। দিমবৃত্তোত্তরা-যণাদি বিহিত বিংশতিদশুদীনাং রাত্রি প্রবিষ্টভাগস্যাপি পুণ্যস্থণা রাত্রিসংক্রমণে তু কলান্যুন প্র-থমার্দ্ধরাত্রগতে তদ্দিবসীযশে-यगायवयः भूगाः। कलावयाचा-ক মধ্যরাত্তগতে ভদ্দিবসীয়ভি-থে রভেদে তদ্দিবসীয় শেষযা-মদ্বৰণ পুণ্য়ণ ৷ ভেদে তু তদিব-नीय (भवशामवयः প्रतिविजी-

यानायामदयक भूगाः। উভक मित्न भूगकात्निश शृर्वमिनाक-রণ এব পরদিনে ভিদিহিত কা-र्याः। তিथिভেদাভেদযো र्फकि পাষনে ভদ্দিবসীষ শেষধামন্বয়ণ উত্তরাষণে তু পরদিবসীযাদ্য-ষামন্বৰ পুণ্য মিতি। মধ্যরাত্রীৰ কলোত্তর শেষার্জরাত্রসংক্রমণ-यार्<u>ख जू शत्रिमामायायवय</u>॰ পুণ্য মিতি। সন্ধ্যাসংক্রমণে তু দিনদত্তে দিনস্য রাত্তিদত্তে রাত্তে र्वादरङ्खि ॥ शाक्षा अभागूतात । শুক্লপক্ষ্য্যা সপ্তম্যা ফলা সংক্র-মতে রবিঃ। মহাজ্যা তদা প্রো-ক্তা সপ্তমী ভাস্করপ্রিযা।। স্নান• দান তপো হোমঃ পিতৃ দেবাভি-পূজনা সৰ্বা কোটিগুণ প্ৰো-ক্ত॰ তপনেন মহৌজসা।। ভার্ত্ত মাসপক্ষ তিথীনাঞ্চ নিমিতানা-ষ্ণ সৰ্বশঃ। ইত্যনেন প্ৰাপ্ততিথ্য-ল্লেখে তদিশেষণদ্বেন মহাজ্যা ইত্যুল্লেখ্য । সংজ্ঞাবিধে রেতদে-व প্রযোজন যন্তবা নির্দেশ ই-ত্যুক্তদ্বাৎ। এবঞ্চ সংক্রান্তি বি-শেষস্য নিমিত্তত্বেন প্রাপ্তে বি-वृतामुरल्लाथानि ॥ 🛊 ॥ कारम । একান্ততো মধা প্রোক্তাঃ কালাঃ

मःकां छिमः छकाः। टेमटच्यू वि-দ্যতে থনিষ্ট । মত শ্চাক্ষবসংজ্ঞি তাঃ ৷৷ অশ্রন্ধবাগি বন্ধত্ত সপা-ৱেভ্যোপি মানবৈঃ। অকালে-পি হি তৎ সর্বণ সভ্য মক্ষযভাণ बद्धि । । भाष्ट्रा । व्यर्ग কোটিগুণিত লক বিকৃপদীযু চ । বডশীতিসহসুম্ব বডশীত্য। মু-দাহ্বত ।। শত মিন্দুক্ষষে পুণ্য मर्भु इ मिनक्यर । विवृद्धे भठ-সাহসু মা কা মা বৈশ্বনন্ত ক ॥ था का या देवयू आवाही कार्छि-की माघी देवनाथी शूर्विमात्। एन-বীপুরাণে। রবিসংক্রমণে পুণ্যে ন श्रायामाञ्च गानवः। मश्रजगत्र-২সৌ রোগী নির্দ্ধন শ্চোপজাষ-তে।। #।। দীপিকাষা । নাডীন-ক্ষত্র দিবসে রবি ভৌম শনৈশ্চ-রা: ৷ সংক্রান্তি• যস্য ঙ্গর্বন্ডি ভস্য ক্লেশে। ংভিজাৰতে।। গোমূত্র नर्य रिभः न्नान॰ नरबी यथि जलन চ। বিশুদ্ধ কাঞ্চন দদ্যামাডী-क्लार्याथभाख्य ॥ नाजीनक-ত্রাণি চাদ্য দশ বোডশ অফাদশ ত্রযোবি॰শতি পঞ্চবি॰শতবঃ। র-ज्ञयालायाः। जातावलामिन्यूत्रत्थः न्यूवीर्यामियाक्तः স'ক্ৰম্মাণ

উক্তঃ। গ্ৰহাশ্চ সৰ্বে সবিতুর্ব-লেন মহীসুতাদ্যাঃ ক্রমশঃ প্রশ্-खाः।। भा मन्द्रमत्यमीत्म। धू-স্তুরবীজ সলিলেঃ স্নাযাৎ সংক্রা-স্তি শাস্তবে। তথা সৰৌ বধীভি-**म्ह विख्**यञ्चा॰ म्ह म॰ जरण था य-দাহ্নি মেষসংক্রান্তি স্তলাসংক্র-यन निना। छम। श्रका विवर्षास्त्र **१न शाना ममृक्षिजिः ।। अकार्क** শনিৰারেণ মহাস'ক্রমণ যদা। তদা ভবেৎ প্রজানাশো দুর্ভি-कानि ज्यः गर्या 🛊 ॥ यह-ত্রি॰শম্বত নিগমৌ ॥ সংক্রাস্ত্যা॰ शक्षमभाक बामभागः आक्षवाम-রে। বস্ত্র॰ ন পীড়যেত্তত্ত্ব নচ ক্ষা-রেণ বোজযে ।। সংক্রাস্ত্যাঞ্চ खर्याम्भाः शक्यारख नवभीमित्न । সপ্তম্যা রবিবারে চ স্নান মাম-লকৈ স্ত্যজেৎ।। শাতাতপঃ। র-विवादत्रर्कमःकाख्याः यश्र्याः देव সপ্তমীতিথো। আরোগ্যকামস্ত নরো নিম্বপত্রণ ন ভক্ষঘেৎ।।#॥ ক্লত্যচিন্ত্যামণৌ গুণিসৰ্বস্বে চ। চেত্রে মাসি চ সম্পূজ্যো ঘন্টাক-র্ণোষ্টাত্মকঃ। আরোগ্যাষ সুহী-মূল সংক্রান্ত্যা তত্র কার্যেৎ ॥ शुक्रामुखः। यन्त्राकर्ण महावीत्र

नर्वगाधिविनायन। विष्कारिक ভবে প্রাপ্তে রক্ষ রক্ষ মহাবল।। শিবপুরাণে। ঘণ্টাকর্ণো গণঃ 🕮-गान् भिवगाा**ौ**ववन्नञः। #। क्र-তাচিন্তামণৌ। यमूतः निश्चभक्क যো ২ত্তি মেষণতে রবৌ ৷ অপি রোষান্বিত স্তদ্য তক্ষকঃ কি॰ ক-রিষাতি ৷৷ সম্বৎসরপ্রদীপে তৃত্ত-तार्षक्त। त्मबदङ् ह विरक्षी छना নাস্ত্যকে বিষজ ভষ ॥ #॥ স্মৃতিঃ। মেষাদৌ শক্তরো দেযা वातिशूनी ह गर्गती। वातिमान মন্ত্রঃ। এষ ধর্মাঘটো দত্তো বন্ধা বিষ্ণু শিবাত্মকঃ। অস্য প্রদানাৎ मक्ला यम मञ्ज बदनां त्रशाः ।। देव-শাখে যো ঘট পূর্ণ সভোজ্য देव विक्रमाद्याः ममोठाज्रुकु। द्वाः জেন্দ্র স ফাতি পরমাণ গতিং ।৷ পূর্ণ জলেনেভিশেষঃ। মহার্ণবে । या मनाठि हि स्यामि भक्-নযুঘটান্বিতান্। পিতৃনুদ্দিশ্য বি-প্ৰেভ্যঃ সৰ্বপাপৈঃ প্ৰমৃচ্যতে ॥ বিপ্রেভ্যঃ পাদুকে ছত্রণ পিতৃভ্যো বিষুবে শুভ । পিতৃভ্যঃ পিতৄন্-**फि**ना इंडार्थः। खब विश्वता পুণ্যবিশেষজনকত্বেন বিবক্ষিত-ষাৎ মেষাদাবিতি বিষুবসংক্রা-

স্তি পুণ্যকালপর•। অন্যথা কা-লম্বৰ কল্পনাপত্তেঃ ৷৷ 🗢 ৷৷ কৰ্মো-शर्दाना न्यामः। मःकास्याः **शक्**रया त्रस्छ बामगाः आक्त्या-मदा। भाषः मन्नाः न महीं ক্লতে চ পিতৃহা ভবেৎ ॥ 🛊 ॥ দেবীপুরাণে। অতীভানাগতো ভোগো নাড্যঃ পঞ্চলশ স্মৃতাঃ ৷ সামিধ্যম্ভ ভবেক্তত্র গ্রহাণাণ সং-ক্রমে রবেঃ।। পুণ্য পাপ বিভাগে-ন ফল দেবী প্রযক্ততি ভোগঃ পুণ্যপাপজননযোগ্যকালঃ। পু-ग नान वित्वहरन विश्वामिकः । ৰ মাৰ্য্যাঃ ক্ৰিষমাণ হি শংসম্ভ্যা-गमत्विनिञ्धिः। म धर्मा यः विशर्द-ন্তিত মধর্মা প্রচক্ষতে।। আগম-বেদিভিঃ ক্রিয়মাণ মিতি সম্বন্ধঃ ৷ ভান্সিকাস্ত:। বিহিতক্রিষ্যা সা ধ্যো ধর্মঃ পুংসো গুণো মতঃ । প্রতিষিদ্ধক্রিযাসাধ্যঃ সংগুণে ২ধর্ম উচ্যতে।। অত্রৈকস্মিনেব-कारल भूग भाभ कलमान मर्भ-नां मध्कमं भूगकां व न्नानामिवदेखनामिल्याभः। এव মেব গুরুচরণাঃ। একাদশী প্র-করণোক্ত সংক্রাস্থ্যপরাসস্য ত্র-তত্বেন ভাবৰূপস্বাস্তাব্যটিতশ্বা-

ছোভষণাপি তত্ত্ৰ পূজ্যে বিধে-বৃ জি রিত্যনেন পুণ্যকালযুক্তা-হোরাত্র কর্ত্তব্যতা অফম্যুপ-বাসবং৷ একাদশীতত্ত্বে এভ ष्ट्रश বিষ্ফ । এবঞ্ রাত্রিপ্রা गर्कमः कात्छो निवादमयार्कमा-ত্রস্য তৎপুণ্যকালত্বাজাতি মু-वृद्धीरकः नायः मस्त्रााभानमः कार्या (भव । 🟶 । बन्न भूतात्। নিত্যু॰ দ্বয়ে র্যন্যে নিত্যু৽ বিষুবতো ৰ্দ্ধে। চন্দ্ৰাৰ্ক্ষো ৰ্ত্তহ্নযো ব্যতীপাতেষু পৰ্বসু ॥ অহোরাত্রোষিতঃ স্নানণ শ্রাদ্ধণ দান তথা জপ। यः করোতি প্রসন্নাত্মা তস্য স্যাদক্ষয়ঞ্চ তৎ ।। অহোরাত্রোবিতঃ পূর্বদিনে ক্তোপবাসঃ। এতৎপর মেব। অর্দ্ধরাত্রে ব্যতীতে তু স'ক্রা-ন্তি ৰ্যদহ ভবেৎ। পূৰ্বে ব্ৰতা-**मिक॰ अर्या। शत्रमुः न्नान** দানখোঃ।। ইতি ভীষপরাক্ত-শীষণ। স্নান দানষো রিত্যত্র मक्षमीनिर्फ्रमा९ भन्निमियमीय স্নান দানাদি নিমিত্তক পূর্বদি-নে উপবাস সংযমৰূপণ ব্ৰস্তা-**मिक्॰ क्यां मि**ठार्थः। ইতি ভি-थाफिछद् ॥ ।। अथ त्रवि-

गःकां जिश्रागनः। नवार्ये भक्तरीः নেন শকাব্দাক্ষেন পুরিতাঃ৷ ভূ-मयुवारक ॥ ३। ३६। ७३। ७३। २८॥ जन्ना जनूननारमञ्ज रहेग লকাক নিশ্ৰিতাঃ। দণ্ডাৎ খাগী हरयम् ५ ७०। ৫१ शनाकिषा **७७: भूनः॥ मञ्जार**िको राजाः मा खला मधामिकाः भरत। य-যসংক্রমণে ভানোঃ সিদ্ধান্ত স্ফু-টসন্মতাঃ।। ভুজো যডিয় রামা-শী ২। ৫৬। ৩৩ কালো জাতি र्गकावनी। ७। २२। ३৮। ताम-শ্চন্দ্রো ২গিযুগাঞ্চ ৩। ১। ২৩ তর্কোন্ধ দৃক্ নবাশুগৌ।। ৬। २२। ७२।। बावक मृक् त्वम वागा २। २२। ৫৪ व्यक्ति वीग শরৌ সুরাঃ। ৪। ৫৫। ৩৩। य-क्षांग विष्ते मृत्नाम् ७। ८৮। ১० এক टेमलजूरवो मंत्राः॥ ১। ১৭। ৫॥ ছৌ ষড্মী তথা কালা ২।৩৬। ৬ অন্ধীরামাঃ শরা-বনী৷ ৪৷ ৩ ৷ ১৫ ৷ পঞ্চায়ীযু তথা ৰুজা ৫ ৷ ৫৩ ৷ ১১ ৷ মেষ मःक्रम वात्रजः॥ जटेक र्याजा वृषादमञ्ज वाज्ञामग्राः मः कदम त्रदं । ইতি জ্যোতিস্তব্ৰণ ॥

निकां जिठका की मताना छ-ভাশুভজ্ঞানাৰ্থ নক্ষত্ৰাহ্বিত ম-ताकात्रहळा रथा। मृषि সপ্ত মুখে ত্রীণি সদযে পঞ্চ বি ন্যসেৎ। ত্রিভব হস্ত পাদেযু মহাবিষুব ভক্তমাৎ।। মন্তকে ভূপতেঃ নৌখ্য বদনে পটুতা স্বভে। স্থাবে চ ধনাধ্যকো श्र्यशाश्चिष्कित्व करत्र ।। चा-मकरत महम्मूः श मूथ शारम ह मिक्टिश । जुमन वामनादम ह কথিত বিষুবৎফল ॥ ইতি भश्विष् वहळा । ***।। यह** मृ कि বদনে পঞ্চ ছারি হৃদযে তথা । ত্রিত্য॰ কর পাদেষ প্রোবি- ॥ যুবভক্তমাৎ।। মান মূর্দ্ধি মুখে टेठव॰ श्रमत्य मूथमखबः। त्माः পদো ৰ্দফৰো ভোগ স্ত্ৰাসশ্চ বামযোঃ স্বত্তে !৷ ইতি জল-वियुवहक्कला ॥ 🛊 ॥ भीर्य পঞ্চ মুখে ত্রীণি হস্তযোশ্চ ত্রয়ণ वयः। इति शक्ष भनो नाएं। श्वरम ह भामरया त्रमाः ॥ উত্ত-রায়ণ ভাজ্জেয়ে স্বন্দত্র স্থি-তেঃ कन । भीर्ष १ थेना छ। बमरन मूथानि मरक करत्र श्टब्यो क्रमत्य ह मिथा। नाट्डी खड़ा

वागकरत्न २र्थनात्मा छत्त्र ७४॰ वामनराम প্রবাসঃ॥ ইত্যুক্তরা-यगठककन ।। ।। गीरमं कीनि मूर्थ जीनि इतरम् शक रखरमाः। व्यक्ती भाषवर्ष श्भारकी प्रकि-ণাষন ভক্তমাৎ।। শীর্ষে মান• मूर्थ विका। सक्रय विख्नक्षमः । প্রবাসঃ স্যাৎ করে বামে ভি-कालाज्य प्रक्रिता। निक्तन বামপাদে চ কিঞ্চিল্লাভশ্চ দক্ষি-(व ।। ইতি দক্ষিণাখনচক্রফল॰ ।। 🗱 🛚 संस्क मं क्यान वि ফুপদ্যা॰ মুখে চ তৎ। চদ্বারি मिक्ति वारशे बीनि बीनि भम-ष्ठि ।। চত্বারি বামবাহে । इस-**मट्य शक्ष निर्मिट्य । ज्याका** ৰ্ঘণ ৰ্ঘণ যোজ্যণ মূৰ্দ্ধি ৰৌ চৈ-কক গুদে ॥ রোগো ভোগ স্তথা যান॰ বন্ধন• লাভ এব চ। ঐথর্য্য রাজপূজা চ অপমৃত্যু রিতি ক্রমাৎ।। ইতি বিষ্ণুপদী-ठळकम ।। 🗱 ।। भूटथ टेठक करत्र त्वनाः भानमूर्या इमः चयः । क्लांट वान खया त्नाः कत्त मत्राज्दत्रि ह।। वषः वयः छथा নেত্রে মস্তবে ত্রিতয় তথা । দ্বব্ৰুব তথা গুছে বুড় শীত্যা•

সন্থামঃ পু॰ দুর্গসঞ্চরঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।

সন্ধেদঃ পুণ আৰ্জীভাবঃ। সংগৃ-ৰ্ৰক ক্লিদধাতো ৰ্যঞ্ প্ৰত্যবেন নিষ্পন্ধঃ।।

मधाः क्री यूकः। ইতামরः॥ मधारवि॥

সখ্যতা স্ত্রী সখ্যত্ব• । সংখ্যব-ভা। সখ্যশব্দাৎ ভাবে ত প্র-ভাবেন নিম্পন্না ॥

निर्शा खी वृक्तिः। ইতি রাজনির্গণিঃ। বিচারণা। ইত্যমরঃ
।। একত্বাদিঃ। ইতি মেদিনী।।
সংখ্যাবে ত্রি। ষথা। বিপণো
বিক্রমঃ স্থ্যাঃ সংখ্যাবে হ্লাদশ ত্রিষু। বিংশত্যাদ্যাঃ সদৈকত্বে সর্বাঃ সংখ্যায স্থ্যাবেয়ঃ
।। স্থ্যার্থে বি বহুত্বে স্ত স্তাসু

চানবভেঃ খ্রিষঃ। পদ্ধেঃ শত-महमुपि कगामभ खर्गाखतः ॥ তিপর্যান্ত: অফাদশযাবৎ একা-**मिकाः मःथा। मकाः मः** स्थारय जत्य दर्बस्ड। विषु लिक्ष्यू তেন সংখ্যা সংখ্যেয়খোঃ সামা-नाविकद्रांगन वृक्तिः। यथा अ কাশাটী এক: পটঃ একণ স্বপ্ত॰ । हि भटका व्यवधातर्ग मन्दर्गम এব ন তু সংখ্যাষা মিত্যর্থঃ। ভেন ঘটা দশ ইতি সাধুর্ন ঘ-টানা॰ দশেতি। কিন্তু দ্যেকযো ৰ্ষিবচনৈকৰচনে ইতি সূত্ৰে ছো-करवा त्रिष्ठि निर्फ्रिगार मन्था মাত্রেপি সম্ভব ইতি ভাষ্য । ষ্টানা পঞ্চ ইত্যপি স্যাদিতি সুভূতিং। বার্ত্তাঙ্গ রেষা গুণসপ্ত युक्ता हेि देवताकः। आउम-**ব্দেন দশশব্দস্যা**ব্যধীভাবঃ । দশশব্দস্য ত্রিলিক্সথাৎ নপুণস-কত্ব পক্ষে ক্লীবাদ্বেতি পক্ষে অঃ তেন আদশ• আদশেতি পাঠঃ । वि॰म। अकीमम भन्ना वि॰म-খ্যাষা সংখ্যেষে চ নিত্য মেক বচনান্তা ভবন্তি যথা বিশ্পতি-

র্গাবঃ গবা॰ বি॰শতিঃ ।। সংখ্যা। ইহ সংখ্যা সংখ্যান্তর অন্যথা পূৰ্বেণ বিরোধঃ স্যাৎ সংখ্যা অ-র্থো অভিধেষো যস্য স সংখ্যার্থঃ ভত্র সংখ্যার্থে বিশ্পত্যাদৌ সং-थाया॰ म॰ ८थाटम ह मामानाधि-করণ্যাৎ দ্বিচন বছবচনে ভব-তঃ যথা ছে বিশ্শতী গাবঃ গবাণ বা তিসেূা বিশ্বতযো গাবঃ গৰাণ বা এবং দ্বে শতে দশ শতানীত্যা-िष्। व्यथ प्रजिक्षायः यम। वि॰मः छानीना मनावृ**छि दिलक वि**॰ শতি রেক মেব শত মিত্যেব॰ স্যাৎ তদা পূৰ্বেণ একবচনান্ত-তৈব ষধোক্তণ বিশ্বতি গাবঃ গৰাণ বিণশতি রিতি৷ মদা বিণ-শ্যত্যাদে রাবৃত্তি বিংশতিদ্বয়ং শতদ্বয় মিত্যেব• স্যাৎ তদা অ-নেন দ্বিচন বহুবচনান্ডতা স্যাৎ যথোক্ত• দ্বে বি•শতী তি-সূে। বি॰শতযঃ। অতএব পরে পরিভাষত্তে। বি॰শত্যাদে রনা-বৃত্তে। বহুত্বেপ্যেকবচন ইতি। একশেষাৎ দ্বে বিশ্বতী তিসে বি॰শত্যঃ ইত্যন্যেপি। স্বমতেপি वामयः मःथामका वास्रा है-ত্যক্তেঃ টের্লোপ ইতি সূত্রে বি॰-

শতে স্তে স্তৃতাবিতি ডিবর্জনে-নৈব একবচনাস্ততাজ্ঞাপকাৎ ৰুদ্বৰানি ইত্যনেন চাবৃত্তী দিত্ব-বহুত্ব সম্ভবাচ্চায় মর্থে। ২বগম্যঃ । তাসু সংখ্যাসু বিংশতাদ্যা ন-বত্যস্তাঃ স্ত্রীলিঙ্গাঃ ভিমলিঙ্গে-নাপি সামানাধিকরণ্যে স্ত্রিয় এব যথা বিংশত্যা পুরুক্ষে: বিংশতিঃ পলানীতি বিংশতিঃ শ্রুতি রফ্টা-বি॰শতি যাবৎ এব॰ ত্রি॰শৎ শ্রু-তি রক্টাত্রিংশৎ যাবৎ এবং চ-वातिःगमारमे॥ शक्किमंगम्या তা যারভ্য পরাদ্ধান্ত দশগুণো-ত্তরণ দশগুণাধিকণ ক্রুয়াৎ শত-সহসাদি ভবতি। ক্রমাদিতি প-**(मानामामय पर्यः এक॰ मन-**গুণিত পদ্ধি রুচ্যতে। দশপঞ্জ-ষঃ শত । দশশতানি সহসু । এবং দশগুণিত সহসু মযুত। এব॰ লক্ষ নিযুতাদি জ্ঞেয় । তথা চ। ব্রহ্মাণ্ডপুরাণ্ণ। এক॰ দশ শতঞ্চৈব সহসু মযুত তথা । লক্ষণ নিযুত্ত্বৈব কোটি রর্বুদ মেব চ ।। বৃন্দঃ খর্বে। নি ধর্ব শ্চ শধ্ পদ্মে চ সাগরঃ। অন্ত্য॰ मधा॰ भन्नार्क्तक मन्यवृक्ता यथा-ক্রমণ।। ইতি। শতং তালব্য শ-

কারণ সহস্তু ছিদস্ভাসকারণা रेिक खन्नकः।। ಈ।। नगरमरक অস্যা গণনব্যবহারে কারণত্ব । একত্ব নিত্যবস্তুনি নিত্য । অ-ন্যত্র অনিত্য । দ্বিত্বাদি পরা-ৰ্দ্বগৰ্যান্ত অপেকাবুদ্ধে জ্জায তে। এব অপেকাবুদ্ধিনাশে তেষা নাশ:। পর্যাপ্তিসহদ্ধেন - অনেকাশ্রবে তিগ্ঠন্তি। বথা 1 গণনব্যবহারে তু হেতুঃ সংখ্যা বিধীষতে। নিতোষু নিতা মে-কন্থ মনিভ্যে খনিত্য মিব্যতে ॥ বিদ্বাদয়ঃ পরাদ্ধান্তা অপেকা-ৰুদ্ধিজা মতাঃ। অনেকাশ্ৰয প র্যাপ্তা এতে তু পরিকীর্ত্তিতাঃ।। অপেক্ষাবৃদ্ধিনাশাচ্চ তেযা না-শো নিৰূপিতঃ। অনেকৈকত্ব-বুদ্ধি যা সাপেকাবুদ্ধি রুচ্যতে।। ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ ॥ 🐞 ॥ অপি চ। শ্রীমৈত্রেষ উবাচ। প-त्राक्षिमः थाः जगवन् ममाहकः यः ষা তু সং। দ্বিগুনীক্লত্যা জ্বেয়ং প্রাক্তঃ প্রতিসম্বরঃ।৷ শ্রীপরা-শর উবাচ। স্থানাৎ স্থান॰ দশ-खन (अकन्यामानाट विक। ७-তো ২ন্টাদশমে ভাগে পরার্দ্ধ ৰভিধীষতে ॥ পরার্দ্ধদিতয় যতু

প্রাক্তঃ প্রলয়ে বিজ। তদা-ব্যক্তে ২খিলং ব্যক্তং সহেতো লফমেতি বৈ।। ইতি বিফুপুরা-ণে ৬ অংশে ৩ অধ্যামঃ।। সম্যাতং ত্রি ক্তসম্বাং। তৎ-পর্যামঃ। গণিতং ২। ইত্য-মরঃ।।

সম্যান কী সম্যা। সংগ্রিখা। ধাতো রুনট্ প্রভ্যযেন নিষ্পন্ন সম্যাবান্ পু পণ্ডিভঃ। ইভ্য-মরঃ।। সম্যামুক্তে ত্রি। ইভি নেমিনী।।

সংখ্যেষ জি সখ্যাযোগ্য । তৎ-পর্যায়ঃ। গণেষ ২ গণনীয় ৩ । ইতি জটাধরঃ।। গণ্য ৪ । ইতি হেমচম্মঃ।।

मकः पु॰ स्वानः। তৎপর্যায়ः।
स्वानः । स्वा। त्राशं मको जू
गृज्ञुण। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।
मक्तारा यथा। म स्म ममाधि
व्ह्र्णवामिश्व सरमामा मक्रार क्रियामिश्व सरमामा महिष्य क्रियामिश्व सरमामा स्वान्धिक क्रियामिश्व सरमामा स्वि विक् भूतात्व ८ व्यापाः।।
व्याक्रा व्याक्षामा मात्रमःयान

গঃ কথ• ত মৃদ্ধুরেতসঃ। দৃষ্টৃ। তবোশ্চ শৃঙ্গার মুনিঃ কামী বভূব হ।। জিতেন্দ্রিষ্ ২সতা॰ मना (मारः मा मिर्ग छ-ৰেৎ। ইতি ত্ৰশ্ববৈবৰ্ত্তে শ্ৰীক্লফ-জন্মৰণ্ডে ২৩ অখ্যাষঃ ৷৷ অপি চ। অসতা সঙ্গদোষেণ কো ন যাতি পরাভব ৷ ত্রিদলৈ র্ব-দিতে। বহি ভাষানা সহিতে। यथा।। इंछि हानकाः।। किश्व। যত্ৰ যত্ৰ স্থিতো জীব স্তমোৰো-মেন লজ্জতে। উপহাসায় কি॰ न স্যাদসৎসকো सनीविशा ॥ ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ॥ সঙ্গণিকা স্ত্ৰী অপ্ৰতিৰূপকথা। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

সঙ্গত° ক্লী সৌহাৰ্দ্দ°। ইতি হেমচম্দ্ৰ:।।

সঙ্গত তি যুক্তিযুক্তবাক্য । ইতি ভরত: ।। তৎপর্যাব: । হুদ্যঙ্গম ২ । ইত্যমর: ।।

সঙ্গতিঃ স্ত্রী সঙ্গন । জ্ঞান ।
ইতি মেদিনী । ন্যাখনতে ।
আনস্তর্যাভিধান প্রযোজকজিজ্ঞাসাজনকজ্ঞানবিষ্ধা হর্থা সাচ বোঢ়া। প্রসঙ্গঃ ১।
সঙ্গতিছে সতি উপোদ্যাতাদি-

जिन्नः। यथा সামান্য लक्कशासाः প্রসঙ্গসঙ্গতিঃ ৷৷ উপোদ্যাতঃ निर्मित्छोलनामकष् । यथा भन्नामर्भश्यवर्खकख्वात्न ह উপোদ্যাভসঙ্গতিঃ।। হেভূভা ৩। যথা। প্রত্যক্ষপ্রমাণে ছে-তৃতাসঙ্গতিঃ।। অবসরঃ ৪। ष्यनञ्जतकवाष्ट्रा यथा। উ-প্রমানে অবসরসঙ্গতিঃ ৷৷ নি-ৰাহক ৫৷ কারণভানিৰাহক कार्याप्तः। यथा। अनुमातन का-ৰ্য্যভাসন্ধৃতিঃ ।। এককাৰ্য্যন্ত্ৰণ ७। এककार्या कातिष्। यथा হেম্বাভাসে এককার্য্যকারিম্ব সক্তিঃ।। ইতি অনুমিতিএন্থে कगनीगठकानकातः॥

महारा भू॰ की महा। हैछामहा। नमामित्मनकः। हैछि
भू॰नभू॰मकनिक्रम॰श्रहीकाया॰
छत्रछः।। खीश्॰तमा मिंथूनीछातः। मिं जितिशः। श्रथमः ३।
मधामः २। উত্তमः ०। यथा।
जितिशः छ० ममाधाणः श्रथमः
मधात्माजमः। जतम कान छायाछि निक्कंत्न छ भत्रश्रियाः।।
कंष्रीकात्वकः। श्रामाः श्रथमः
माहमः स्रृष्ठः। ३। श्रीत्रवः १।

শ্বনাল্যানা গুগ ভূষণ বাসসা । প্রলোভন গালপানে শ্বধ্যন
সাহদ স্ত ।। ২ ।। সহাসন
বিবিক্তেষু পরস্পার সমাশ্রমঃ। কেশাকেশিগ্রহ দৈচর সম্যক্
সংগ্রহণ স্ত ।। ৩ ৷৷ ইতি মিতাক্ষরাধৃতব্যাসবচন ।।
সঙ্গর ক্লী শ্মীবৃক্ষফল । ইতি মেদিনী ।।

সঙ্গরঃ পুণ যুদ্ধণা আপৎ ।। অঙ্গীকারঃ।। সম্বিৎ। ইত্যমরঃ ।। ক্রিযাকারঃ।। বিষণ। ইতি মেদিনী।।

সঙ্গবঃ পু• প্রাতঃকালাৎপর•

मृड्डं वर । यथा । প্রাতঃকালো মৃত্রা প্রীন্ সঙ্গব স্তাবদেব তৃ। মধ্যা র স্রিমৃত্র্ স্যাদপরা র স্তঃ পর ।। সাধা র
স্রিমৃত্র স্যাচ্ছাদ্ধ তত্র ন কারক্ষে। ইতি তিথ্যাদিত বৃ ।।
সঙ্গী ত্রি সঙ্গবিশিকা । যথা ।
আমৃত্যুতো নৈব মনোরথানামস্তো হস্তি বিজ্ঞাত মিদ ম্যাদ্য । মনোরথাসক্তিপরস্য চিন্ত ন জাযতে বৈ পরমার্থ সঙ্গি
।। ইতি বিকুপুরাণে ৪ জালে ২
অধ্যাধঃ ।।

সঙ্গীত ক্লী প্রেক্ষণার্থনুত্যগীত-वानाः। यथा। भीठवानान्ठाः ত্রফ নাট্য তোর্য্যত্রিকঞ্চ তৎ। সঙ্গীত প্ৰেক্ণাৰ্থে হস্মিন্ শা-স্ত্রোক্তে নাট্যধর্মিক।।। ইতি হেমচন্দ্রঃ ৷৷ নৃত্যগীতবাদাস্য শাস্ত্রণা তত্ত্ব সোমেশ্বর ভরত হন্মৎ কলনাথ মতভেদাজ-তুর্বিধণা অধুনা হনুমগতে প্র-চলিত । তস্য অধ্যামাঃ সপ্ত। স্বরাধ্যাধঃ ১ রাগাধ্যামঃ ২ তা-लाशायः ७ न्छां। शायः ८ छा-বাধ্যাৰঃ ৫কোকাধ্যায়ঃ ৬ হন্তা-ধ্যায়শ্চ ৭৷ ইতি সঞ্চীতশাত্ৰ-**॥ 🛊 ॥ সঙ্গীতা**বসানে তায়ূলদা-ন প্রমাণ যথা। তা বাসুদেবে। প্যনুরক্তচিত্তঃ সংনৃত্য গীতা-जिन्देश क्रमादेतः। नदरस्यभूदन। পরিতোষিতেন তামূলযোগে-ন বরাপ্সরোভিঃ ।। তদাগতা-তি নৃবিরাহ্নতাস্ত ক্রফেপ্সযা मानमया खरेथव। क्लानि ग-ন্ধোত্তমবন্তি বীরা শ্ছালিক্য গা-श्वर्व मथाश्रु अध्या कृत्य क्र्या ह ত্রিদিবাদ্দেব অনুগ্রহার্থণ ভূবি मानूयांगा । व्हिज्क व्रमा इति তেজনৈব প্রবোজ্যামাস স

(त) शिर्धि । इंगिका भाषार्व मूनात्रवृक्षि (खटेनव जामून मथ श्रमुकः ॥ देखि इतिवःरम् छान्-मजी इत्रम् जनकी जायाः ১৪৮ ज्यापः॥

সঙ্গীতিঃ স্ত্রী আলাপঃ। ইতি হলাযুধঃ॥ সঙ্গীতঞ্চ॥ সঙ্গীণ ত্রি অঙ্গীরুতে। ইত্য-মরঃ॥

मङ्खः प्रव्याप्त वृक्षर जिन्द । इंडि रम्प्रकार । मह्माप्त नाथा वि मङ्ग्र वि लिथा किना मन्द्र । इंडि जत्र ।। तिथा किना प्र श्रीकृष्ठ थाना । किनी किनी किनी किनी । इंडि नी किनी किथे ।। इंडि महिना ।

সংসাপন॰ ক্লী সম্যক্পকারেণ গোপন॰। সংপূর্বক গুপধাতে। রনট্প্রভ্যাযেন নিম্পন্ন॰।।

শঙ্গুং পু॰ সমান্ধতিঃ। ইত্যা মরঃ।। সংক্ষেপেণ গৃহুস্তে নানা-স্থানে বিপ্রকীর্ণা অর্থা বৃধ্যন্তে ২নেন সংগ্রহঃ। সংপূর্বাৎ গ্র-হঞাদানে হল্। বিস্তরেণোপ-দিন্টান। মর্থানাং সূত্র ভাষ্যমোঃ । নিবন্ধো যঃ সমাসেন সংগ্রহং তং বিদু রুধাঃ।। ইতি। ইতস্তত

সঙ্গুহণী স্ত্রী গ্রহণীরোগঃা **७मा निमानामि अश्गीमास्य ज**-ষ্টব্য॰ ।। অথ সামান্যগ্রহণী-রোগস্য চিকিৎসা মাহ। গ্রহণী माखिङ রোগ মজীণ্বদুপা-**हरत्र । मञ्चरिन मीमनीरियम्ड** মন্দাতীসার ভেষজ্যৈ। দোষণ সাম নিরামঞ্চ বিদ্যাদত্তাতি-সারবৎ৷ অতিসারোক্ত বিধি-না তস্যামঞ্চ বিপাচযেত্র। পে-. यानि भर्रे लघुम् शक्षानानि-ভি যুত । দীপনানি চ তক্ৰঞ্চ গ্ৰহণ্যা ধাজ্যেন্তিবক্।। ক-পিখ বিল্ব চাঙ্গেরী তক্র দাডিফ সাধিতা। যকাগৃঃ পাচষত্যাম• मक्ष मधर्वयञानि ॥ मन्दर्छ-

यि चनीकरत्राति ॥ 🕬 🖰 विश्वा नगर। जाडीयन नरदेवना পত্র ষণ্ড্নাগকেসরৈঃ। কপূরি চন্দন তিত্ব স্বক্ ক্ষীরী ভগরাম-रैनः ॥ जानीम निश्ननी शया कृतकीत्रक विखरिनः। अशी वि ডক্ত মরিটেঃ সমভাগ্রে বিচূর্ণি তৈঃ ৷৷ সাবস্ভ্যেতানি সৰ্বাণি ममाा छन्नाक जाव छी । गर्ब हुर्न नमाना॰मा अप्तया खलुमक्ता ।। कर्षमाख मिन थारनमधूना-क्षाविष्ठः जनः। नाभरयम् अ इगीः काम॰ क्य॰ श्राम मद्राहक॰ ॥ জाতीकवामिहूर्ण ॥ 🟶 ॥ हि-**जर॰ शिधनी** गृन॰ कारते न्वन शक्षकः। त्यायः श्रिकुक्त्याम्। क ठवा॰ टेठक व हुर्नरष ।। विकि का याजूनुक्रमा द्रोम दी माछि মস্য বা। ক্রতা বিপাচ্যত্যামণ প্রদীপয়তি চানলং।। ক্ষারৌ স্ব-क्किका यवकारती। লবণ প-**ঞ্চক** মিভি। দৈন্ধব° রুচক° চৈব বিড॰ সামৃদ্রিক॰ গড় মিভি ৷ व्याय एथी थिश्रनी यतिहानि । चक्रयामाळ यवानिका। माज् लूक वीजभूतक। ठिककानिव-**िका ॥ # ॥ श्रीकलणनामुक**

কোনাগর চুর্বেন মিঞ্জিভঃ সগুডঃ । এহনী গদ মত্যুগ্রণ তক্ত ভূজা শীলিতো জয়তি৷৷ ঞীফলশলাদুঃ বিশ্বস্যামণ ফলং। গুডস্যাত্র ভা-गव्यः। विवक्षः॥ 🕬। हजू-স্পান সুধাকাও ভ্রিফল লবণ-ত্রয় । বার্তাকোঃ সভবঞ্চার্ক-मूलावित्व छथा श्नलाथ।। प्रका দ্ৰবৈণ বাৰ্ত্তাকো গুটিকা ভোজ-নোত্তর । ভুক্তাভুক্ত পচত্যা-শু নাশফেদ্গ্রহণীগদ ।। কাস শ্বাসং তথার্শ পেন বিসূচীঞ্জনা-ययः ॥ वार्डाक्रश्रिका ॥ 🕸 ॥ मुखकािंविया विव को छेक॰ मृष्य वृर्वि ७ । यथुना क मगानी ७ ॰ গ্ৰহণী সৰ্বজাস্তাজেৎ ৷৷ কৌট-क रेख गवः। मू खामि हुर्भ ।। 🟶 ।। त्यरा वा यमि वा ब्रक्तः मूशरका গ্রহণীগদঃ। গুডেনাধিক সজ্জে-ন ভক্চিতেনাশু নশ্যতি॥ সৰ্জ্ঞঃ त्राल देखि क्लांटक। मर्ब्ब तमहूर्ण ।। 🟶 ।। विद्याय भक्त यव वालक যোচসিদ্ধ নাজ পৰঃ পিবতি যো দিবসত্রষেণ। সো ২তিপ্রবৃদ্ধ চিরজ্ঞ গ্রহণীবিকার সাম স শোণিত মসাধ্য মপি দিংণোতি ।। মোচো ফোচরসং। ক্ষিণোভি

र्खि॥ अञ्जय दामनकीत्रमग **खक्रमा मदार्कज्ना॰ खडमा**। চূর্ণীক্ততৈ অস্থিত জীর চব্য ব্যো-रवे क्रका र्व्याक्रमाटेमः॥ वि फत्र मिक्नु खिकना यवानी नाठी-গ্রিধান্যেশ্চ পল প্রমার্টেশঃ। দত্তা बिवृष्ठ्र्व भनानि ठाकीवरकी ठ रेजनमा भरमस्थाय ।। ७॰ जकरयमककल श्रमानः स्टथके চেফ ব্রিসুগন্ধি যক্ত । অনেন সর্বাগ্রহণীবিকার্নাঃ মশ্বাস কাস স্বরভেদ শোখাঃ ৷৷ শাম্যন্তি চা-य कित्र मखताका ईंग्रा भुःखु मा ह वृक्तिरङ्टुः। जीवाञ्च बक्ता-यय नागनः मा ए कनाम्बरका নাম গুড়ঃ প্রসিদ্ধঃ।। তৈলে ম নাক্ ত্রিবৃৎ ভৃষ্টা ত্রি সুগদ্ধিপল मिक्त निःशव मद्विव পল । खट कन्यावन्दरक्य कन्याव-क खड़ा। 🛊 ॥ निश्चनी निश्चनी মূল চব্যক গজ়পিপ্ললী। হা-नोकश विषक्रानि यवानी मतिः ठानि ह।। बिकना हाक्र्रियामा ह निनी कीत्रक खबा। देमक्रवः রৌমক চাপি সামুত্র রুচক বিডে ।। আর্ধধশ্চ ত্বক্ পশ্রু मृत्यना हानम्भिका। एकी।

শক্ৰ যবা শৈচৰ প্ৰত্যেক কৰ্ম-मिछ।। मृषीकाषाः भवानाज চদারি কথিতানি হি। ত্রিবৃতাষাঃ भनानारकी एउमार्कजुना ज्या ॥ जिनटेन भनानारकी हामन-ক্যা রসস্য তৃ। প্রস্তুত্ত মিদ সর্বণ শনৈ মৃ দিমিনা পচেৎ য়া উজুম্বরণ ठायनक॰ वामत्र॰ वा यथायन॰ १ ভাবনাত্র মিদ॰ খাদেক্তক্ষযেদ্বা यथानन ।। निथिनान् अश्गी-ধ্রাগান্ প্রমেহাণ শৈচকবি শ-তি°। উরোষাত° প্রতিশ্যায়° **मिर्वनाः रङ्गिमःक्यः॥ ज्ञान-**পি হরেৎ সর্বান্ পর্য্যাৎ কাস্তি• যতি॰ স্বরু। গিচু পাঠাম্বযান্ধ-ন্তি রক্তপিত্তঞ্চিদ্গ্রহণ।। ধাতু-कीरना वयकीनः खीयू कीनः क-ষী চযঃ। ভেজ্যো হিতশ্চ বন্ধ্যা-रेय यहाकला। गत्का खडः ॥ य-राकना। कथुष्डः ॥ 🛊 ॥ अया-ভানাণ সুপন্ধানাণ শ্বিত্রাণাণ লি-সচন্বচা । দর্গিঃ প্রস্থে পলশত। তামুপাত্তে শনৈঃ পচেৎ।। পি-धनी शिधनीयन हिज्रक शक-পিপ্ললী। ধান্যকানি বিভঙ্গানি मागद्र॰ यदिहानि ह ॥ ना ठाजरभाग ठ कनिकाजानि

मन्

रेमस्व । अरेककमा भवा रेहक बिवृष्टाके भनानि ह ॥ रेटनमा **ठ भनानारकी श्रुडा** ९ भभागतन ব ত। আমলক্যা রুসস্যাত্র প্রস্থ ত্রষ মুদীরিত ।। তাবৎপাক। প্রদরীত মৃদুনা বহিনা ভিষক্। यावष्त्रवर्षे अत्मनः गाष् **उ**रेनः ন নবতারবেৎ।। ঔডুম্বর চাম-লক বাদর বা যথাফল। তা-বন্মাত্র মিদ পাদে জক্ষবেদা যথা-च्यानरेनव विधारनन নল° ৷৷ श्रयुक्तक मित्न मित्न। निरुष्ठि গ্রহণীরোগান্ সন্ঠান্যশো ভগ-मतान्।। चत्र मानार् सर्फाग গুলোদর বিসূচিকাঃ। কামলাণ भाषुद्वागक **अत्महाः टेम्हक**विः-শতি ৷৷ বাত শোনিত বীস্প দক্ষ পক্ষ হলীমকান্। বাত পিত্ত ककान् नवीन् पूकीन् एकान् नगांচदा ।। बाधिकीशं वयः-ষ্দীণা স্ত্রীযু ক্ষীণাশ্চ যে নরাঃ। তেভ্যো হিতো গুডো ২য় স্যাৎ विष्ाराना गणि शृक्षनः ॥ वृर्या ৰল্যো বৃ•হণশ্চ ব্যসঃ স্থাপনঃ পরঃ। সমাওকল্যাণগুডঃ।।।।।। ष्यञ्जीमाद्राधिकाद्रशिष्ठः विद्यः ভৈল্পাত্র হিত । ইতি গ্রহণী-

রোর্गাধিকারঃ । ইতি ভাব-প্রকাশঃ ॥

मञ्जाम ७ १ ० ० क यू एक। ই ि कि कि का प्रमा श्री स्थान १ ७ मः श्री मयर । १ १ मः श्री मः वि । श्रिक्ट वा ख्या मानिएको छि क द्वा । ख्या मर्बत । कि ख्या माञ्च त्मा मिल्या भः का हि भारत्म भार्य । १ १ वि ख्या माञ्च । दिश्व ख्या माञ्च त्मा मिल्या भः का हि भारत्म भार्य । १ १ वि मुर्गा मानः ।।

मन् । भूकि काक माम् किः ।
काक अरु गर्या मिछि वाद ।
म ग्रे श्वा र विष्या । जर्मि वाद ।
म ग्रे विषय किया । जर्मि वाद ।
म किया वा । मूर्य के स्वा र म् किया ।
विमारमा मूर्य के स्वा र में किया ।
विमारमा मूर्य के स्वा र में अरु हें जिया ।
मूर्य के स्वा र में अरु हें जिया ।
हिंदि विमार्ग किया । मंग्रू के अरु

র্থঞ্জ সংগ্রাহঃ। ইত্যমরভরতো সঙ্গুহী পুং স্বটজবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥

সজ্বঃ পুণ সমূহঃ। ইত্যমরঃ॥
সজাতীয়ানাণ বিজাতীয়ানাঞ্চ
জন্তুনাণ বৃন্দে সজ্ব নাথোঁ স্যাণ
তাণ। যথা ভিক্ষু সজ্বঃ বণিক্সার্থঃ। সণহন্যতে পরিচ্ছিদ্যতে
হনেনেতি সজ্বঃ। সণপূর্বাৎ হন
ধাতো নামীতি ডঃ নিপাতনাৎ
হস্য ঘঃ। ইতি ভরতঃ॥

সজ্মচারী পু॰ .মৎস্যঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। বহুভিঃ সহগামি-নি ত্রি।।

সঙ্গজীবী পুশ ব্রাতীনঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

সজ্ঞটিঃ পুণ অন্যোন্যবিমর্দণ।
যথা। নৈবান্যত্র মদান্ধ সিন্ধুর
যটা সজ্ঞট যণ্টারণৎকার ত্রস্ত
সমস্ত বৈরিবনিতা লব্ধস্তুতি ভূপতিঃ। ইতি বাল্মীকির্ক্তগজাইকস্তোত্রণা গঠনণা যথা।
মৃদাহরণ সজ্ঞট প্রতিষ্ঠাহ্বান
মেব চ। স্পনণ পূজনকৈব বিসজ্জন মতঃপরণা ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বণা চক্রবিশেষশ্চ।।
সঙ্গেটনণ ক্লী স্ত্রী মেলনণা।

গঠন ।। ঘটনা। ইতি কেচিৎ।। সঙ্ঘটা স্ত্রী লভা। ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা।।

সঙ্গতলঃ পু॰ মিলিতপ্রতলদ্বয়• জোডহাত ইতি ভাষা। ইত্য-মরঃ ।৷

সঙ্ঘপুষ্পী স্ত্রী ধাতকী। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।৷

मध्यर्यः भू॰ मध्यर्यनः॥ म्यक्ति॥
मण्मर्यः। ইতি শব্দরত্মাবলী ॥
मध्यार्षिक। স্ত্রী य्याः॥ मर्छेनी
॥ জলকত্তক। ইতি মেদিনী॥
द्यानः। ইতি বিশ্বः॥

সঞ্জাতঃ পু॰ সমূহঃ। নরক-ভেদঃ। ইত্যমরঃ।। হনন॰। ইতি মেদিনী।। কফঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। নাটকে গতি-বিশেষঃ। ইতি কেচিৎ।। সজ্যাতপল্রিক। স্ত্রী শতপুষ্পা।

ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।
সঙ্গুষিত / ত্রি সম্যাগ্রোষণাশ্রসঙ্গুষ্ট প্রায় সংপূর্বযুষধাতোঃ
ক্র প্রত্যযে ক্রতে বা রুষাম হৃষ
স্থর সংযুষাস্বন ইত্যনেন বিকল্পেন ইমা নিষ্পালে । ইতি
মুগ্ধবোধব্যাকরণ ।।
সচিঃ স্ত্রী শচী। ইত্যমরটীকা-

नहीन

বা॰ রামাশ্রমঃ।।

সচিল্লকঃ ত্রি ক্লিমচক্ষুঃ। ইতি

শব্দরত্বাবলী ॥

मितः पू॰ मञ्जी। महायः ॥

ইভাসরং।। क्रयःशकुत्रकः। ইতি

রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

সচিবাময়ঃ পু॰ বিসর্পঃ। ইতি

রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷

मही जी मही। रेखानी। मह-

তে ব্যক্তণ বক্তি শচী শচঙ বা-

চি তালব্যাদিঃ নামীতি ইঃপা-

চ্ছোণাদীতি পকে ঈপি শচী।

কৌশিকী চশচীকোশাতকীতি

वर्गातमानामा॰ जानवारमम्

পঠাতে। সচী দন্তা দিশ্চ তত্র

সচতে আপ্যায়য়তি ইন্দ্ৰ মিতি

ষচঙ সেচনে পূৰ্বতঃ ইঃ ঈপ্চ।

ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ ॥ সচিঃ

শচীতি ভরতদ্বিরূপকোষশ্চ ৷৷

महीनमनः भूः महीमूङः। मह

क्रयञ्जः॥ देवजनारमवः। यथा।

भारक मूनि द्याम यूरमनूगरण

পুণ্যে তিথো ফাল্গুনপৌর্ণমাস্যাণ

। ত্রৈলোক্যভাগ্যোদয পুণ্যকী-

र्छि र्फर्वः महीनन्त्रम वाविता-

সীৎ।। ইতি চৈতন্যচন্দ্রোদয

नार्षेक ॥

সজাতী

मटहरीः श्रू॰ जागुः। ইতি भक्तमा-

ना। टिकेश मश्वर्खभारम जि॥

সচ্চারা স্ত্রী হরিদ্রা। ইভি শব্দ-

ठिखका ॥

সচিৎ ক্লী এক। ইতি মুগ্ধ-

रवाधवाकत्रवः ॥

मिक्रमानमः क्री निञ्छानम्-

थयक्षणः। ज्ञा बका यथा।

অহ দেবো ন চান্যোশ্ম ত্রকৈ-

বান্মিন শোকভাক্। সচ্চিদা

নন্দৰপো ২হ° নিত্যমুক্তমভা-

ববান্।। ইত্যাত্মিকভত্ত্ব।। সা-

কারদেববিশেষণে ত্রি। বথা।

মৃঙ্গন্দ সচ্চিদামন্দ প্রণিপত্য

প্রণীযতে। ইত্যাদি মুগ্ধবোধ-

नगकत्रन ॥

সজয়ালঃ ত্রি পঙ্কিলঃ। ইত্য-

यदः ॥

সজাতিঃ পু• সমানজাতি স্ত্রী

भूरमाः भू**टः। यथा।** मदर्ग-

ভাঃ সবর্ণাসু জাযত্তে হি সজা-

তথঃ। অনিন্দ্যেষু বিবাহেষু

পুলাঃ সন্তানবৰ্দ্ধনাঃ ॥ ইতি

মিতাক্ষরাযাণ আচারাধ্যায়ঃ॥

সমানজাতৌ ত্রি ॥

সজাতীয়ঃ ত্রি সমানধর্মাক্রান্তঃ

। यथा। मङ्गाठीरियः ज्ञा गृथः

তিরশ্চা॰ পু॰ নপু॰সক॰। ইত্য-মুরঃ।।

সজূঃ ব্য সহার্থঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী ভরতশ্চ॥

সজুই ত্রি প্রীতিযুক্তা। সেবাযুক্তা। ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণ

। জুয়ী প্রীতিসেবনযোঃ ।
জোযণ জুট্ সহ জুয়া বর্ত্ততে

যা সা সজুই। ইতি তট্টীকাষা
দুর্গাদাসঃ ।। তাপসঃ । ইতি
সংফিপ্তসারব্যাকরণ ।।

সজ্জঃ ত্রি সম্বদ্ধঃ। ইত্যমরঃ।।
সন্ত্রঃ। ইতি বিশ্বনেদিন্যে)।।
নিভ্তঃ। ইতি শব্দরত্রাবলী।।
সজ্জাযুক্তশ্চ।।

সজ্জন ক্রীরক্ষণার্থ সৈন্যস্থানণ । চৌকীতিখ্যাত । তৎপর্যায়ঃ । উপরক্ষণ ২। ইত্যমরঃ ॥ যউঃ। ইতিমেদিনী॥ সজ্জা চ॥

যটা। ইতিমেদিনী ॥ সজ্জা চ॥
সজ্জনঃ পু॰ সৎসলোন্তবাঃ।
তৎপর্যাযাঃ। মহাদলঃ ২ দ্বলীনঃ ৩ আর্যাঃ ৪ সভাঃ ৫
সাধাঃ ৬। ইত্যমরঃ॥ সলজঃ ৭
সয়ঃ ৮ সাধুজঃ ৯। ইতি শব্দরত্মাবলী ॥ মেদিনীকরমতে
বাচ্যলিকো ২য় । তল্লক্ষণ
যথা। দাস্ত উবাচ। নিজাচার

গ্রাহিণো যে সর্বস্তো বেদসন্মত । পাপাভিলাস রহিতাঃ স
জ্জনা স্তে প্রকীর্ত্তিতাঃ ।। ইতি
পাঘে ক্রিষাযোগসারে ১৬ অধ্যায়ঃ ।। তৎসঙ্গপ্রশংসা ষ্ণা
। নলিনী দলগত জলবত্তরলং
তদ্বজ্জীবন মতিশ্বচপলং ক্ষণ
মপি সজ্জন সঙ্গতি রেকা ভবতি ভ্রাণ্রভরণে নৌকা ।।
ইতি শ্রীশঙ্করাচার্য্যক্রতমোহমুদ্রারঃ ।।

সজ্জনা ত্রী নাষকস্যারোহণাথি গজ সজ্জীকরণ । তৎপর্যাযং। কল্পনা ২। ইত্যমরং ।।
সজ্জা স্ত্রী বেশং। সাজ ইতি
ভাষা। সমাহং। সাঁজওষা
ইতি ভাষা। ষস্জধাতো ভাবে
আৎ প্রত্যম্ব নিষ্পামা। ইতি
ব্যাকরণ ।।

সজ্জিতঃ ত্রি ভূষিতঃ। রুতসজ্জঃ

11 বর্মিতঃ। সমদ্ধঃ । ষস্জ

ধাতোঃ ক্ত প্রত্যায়েন নিষ্পামঃ।।

সঞ্চঃ পু॰ পুস্তকলেখনার্থসত্রচষঃ। সাঁচ্ ইতি ভাষা। যথা।

শ্রীতাডীপত্রজে সঞ্চে সনে পত্র

সুসঞ্জিতে। বিচিত্রক॰ বিপার্শ্বে

চ চর্মণা সংপুটীরুতে।। রক্তেন

অথক্নকেন মূর্জন্যাবর্জিতেন চ
। দৃঢসূত্র সুবস্কেন এবংবিধক্রতেন চা। যস্ত দাদশ সাহসীং
সংহিতা মুপলেখ্যেৎ। দদাতি
চাভিযুক্তার স বাতি পরমাং গতিং॥ ইতি দেবীপুরাণে বিদ্যাদানমাহাত্ম্যফলনামাধ্যায়ঃ।।
দক্ষৎ পুং প্রতারকঃ। ইতি
সিদ্ধান্তকৌমুদী।।

সঞ্যঃ পুণ সমূহঃ। ইত্যমরঃ।।
সংগ্রহঃ। যথা। শক্তেনাপি হি
শুজেণ ন কার্য্যো ধনসঞ্চয়ঃ।
শুজো হি ধন মাসাদ্য ব্রাহ্মণানেব বাধতে।। ইত্যাক্লিকাচারতত্ত্ত্বণ।।

সঞ্চন ক্লী সঞ্চয়। যথা স ষর্ত্তঃ। চতুর্থে ২হনি কর্ত্তব্য মন্থিসঞ্চম দিজৈঃ। ততঃ স-গুষনাদূর্জ্ন মঙ্গস্পর্শো বিধীয়-তে ।। ইতি শুদ্ধিতত্ত্বং।।

मक्षी वि मक्षयविभिक्षेः। मः-গ্রহকর্তা। मक्ष्यभकामस्त्रादर्थ ইন্প্রত্যযেন নিষ্ণান্ধঃ। यथा। मक्षयी নাব্দীদ্বি। ইতি মহা-ভারতং।।

সঞ্চরঃ পু॰ সেতুঃ। ইতি ত্রিকা-ভেশেষঃ।। সঞ্জো নির্গমো ২মুপথঃ। ইতি ভরতধৃতরত্বমালা।। দেহঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।
সঞ্চলন ক্রী স্ত্রী কম্পন ।। সং
পূর্ব চলধাতো রনট্ প্রত্যবেন
নিম্পারণ।।

সঞ্চানঃ পুণ শ্যেনপক্ষী। শিক্রে ইতিভাষা। ইতি কেচিৎ।। সঞ্চাষ্যঃ পুণ যজ্ঞবিশেষঃ। ইতি মুশ্ধবোধব্যাকরণণ।।

সঞ্চারঃ পুণ দুর্গদঞ্চরঃ। ইত্যমরটীকা।। গমনণা যথা। সগ্লারো রতিমন্দিরাবধি ইত্যাদি
কাব্যপ্রকাশঃ।। গ্রহাদেরাশ্যন্তরসংক্রম্ণঞ্চ।।

সঞ্চারজীবী ত্রি শরণাপন্নঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

সঞ্চারিক। স্ত্রী। ইতামরঃ
। যুগলং॥ সউনী।। ঘুাণং।
ইতিমেদিনী।।

সঞ্চারী পুণ ধূপঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। বাযুঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা ।। ভাববিশেষঃ। যথা।
স্থাষি সান্ধিক সঞ্চারিপ্রভেদেঃ
স্যাদ্রতিঃ পুনঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। অন্যচ্চ। সঞ্চারিণঃ
প্রধানানি দেবাদি বিষমা রতিঃ
। উদুদ্ধমাত্রস্থানী চ ভাব ইত্য-

मिछ।

ভিধীষতে৷৷ অপিচ৷ নানা-ভিন্য সম্বন্ধান্ ভাব্যন্তি রসান্ যতঃ। তস্মান্তাবা অমী প্রোক্তাঃ স্থাযি সঞ্চারি সাত্ত্বিকাঃ ৷৷ বাৎ-मलातममकातिरना यथा। मक्न-तिरा श्रीके महा इर्व भवान-যো মতাঃ। বীররসসঞ্চারিণস্ত। ধৃতি মতি গৰ্ব স্মৃতি তৰ্ক রোমা-ঞাঃ। ইতি সাহিত্যদর্পণে ৩ পরিচ্ছেদঃ ॥

সঞ্চারিণী স্ত্রী হণসপদী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

मकानी खी ७९४१। यथा। म-ঞ্চালী প্রোচ্যতে গুঞ্জা সা তি-সো ৰূপক ভবেৎ। ইতি যুক্তি-কল্পতরুঃ 11

সঞ্চিত্র। স্ত্রী মূষীকর্ণী। ইতি भक्तज्ञावनी ॥

मरक्ष्य जि मक्ष्यनीयः। मरकः তব্যং। সংপূৰ্বক চিঞ ধাতোঃ কৰ্মণি য প্ৰত্যযেন নিষ্পন্ন ॥

সঞ্জঃ পু॰ ব্রহ্মা। শিবঃ। ইতি त्मिनी ॥

সঞ্জবন॰ ক্লী অন্যোন্যাভিমুখ-गृहठजूकेष । ज । भर्यापः। ह-তুঃশাল ২। ইত্যমরঃ॥ সংয-মন ৩ চতুঃশালী ৪। ইতি সটা স্ত্রী জটা।। কেশরঃ। ইতি

ভরতঃ৷৷ সঞ্জীবন ৫ শালা ৬ निलयः १ ठजुः भानकः ৮ । ইতি শব্দরত্বাবলী।। সঞ্চা স্ত্রী ছাগী। ইতি ত্রিকাণ্ড-(अवः ॥

मक्षीवन॰ क्री मक्षवन•। ইতি শব্দরত্বাবলী।। সম্যক্প্রকারেণ व्यानभातनक ॥

मञ्ख्य की मध्छ । रेठि मक চন্দ্ৰিক।।।

পঞ্জঃ ত্রি সংজঃ। ইত্যমর-টীকাষাণ ভরতঃ।।

সঞ্জ্ঞপন ক্লী সংজ্ঞপন। ইত্য-यतः ॥

সঞ্জপ্তিঃ স্ত্রী সংজ্ঞপ্তিঃ। ইতি ट्यह्यः ॥

সঞ্জা স্ত্রী সংজ্ঞা। ইতি মে-**पिनी** ॥

সঞ্জুঃ ত্রি সংজুঃ। ইত্যমরঃ॥ সঞ্জারঃ পু• সংজ্ञরঃ। ইত্য-यहः ॥

मिं की जिं। यथा। जिं। জটি জঁটী জুটো জুটকম্ব সটণ मिता कि निता कृषिकः रखः শিখাযা॰ ব্ৰতিনা মপি ॥ ইতি শব্দরত্বাবলী।।

त्यविक्रिया अस्ति। १६ अस्य अक्षायकी ॥

गोषः श्रृष् जिन्दः। इति भवा त्रष्ट्रावनी ॥

সটিঃ স্ত্রী শসী। ইতিশব্দরত্না-বলী গ

সটিকা স্ত্রী গম্বপত্রা। স্টী। ইতিরাজনির্ঘন্টঃ।।

সদী ত্রী গদ্ধত্রব্যবিশেষঃ। বন-আদা ইতি অমুহরিদ্রা ইতি চ ভাষা। আবেহলদী ইভি কো-करन श्रीका। ७९ भर्यायः । শটী ২ গন্ধশটী ৩ সুগন্ধা ৪ সটিঃ ৫ শটিঃ ৬ গন্ধমূলা ৭ গ-স্বামূলী ৮ পলাশঃ ১ কৰুরঃ ১০ ষড্গ্ৰন্থিকা ১১ কৰ্বুরঃ ১২ গ स्कालिः ১७ भन्नमृत्रकः ১৪। ইতি শব্দরত্বাবলী।। ১৫ ষড্গ্ৰন্থা ১৬ অম্লনিশা ১৭ वधः १४ भन्नाती १२ मंहिका २• शनां भिका २५ ममू जा २२ তৃণী ২৩ দূৰ্বা ২৪ গন্ধা ২৫ পৃ-थूनमानिको २७ मोगा २१ হিমোন্ডবা ২৮ গন্ধবধূঃ ২৯। অস্যা গুণাঃ। সূতিক্তম্বং। অ-**ञ्जत्रपद्धः। लघ्**षः। উक्षद्धः। রুচিপ্রদত্ব•। জর কফাসু কণ্ডূ সঞ্জীন

खनाम वक्तामयनानिष्। क्र-माप्रका देखि ताक्तिर्यक्षः ॥ मह्ना खी शिक्ताक्तिर्यक्षः॥ देखि मश्किश्वमाद्मानानिवृद्धिः॥ मठे क श्वठार्थ। देखि कविकन्न-प्रमः॥ मखानिः। क माठेयिख । श्वठार्थ गडामश्कृष्ठ मश्कृर्ख्यू । देखि मूर्गानामः॥

দঠী ক্রী শঠী। ইতি রাজ-নির্ঘক্টঃ॥

সণসূত্রণ ক্লী শণসূত্রণ। ইত্যমর-টীকাষাণরাযমুসটঃ ।।

मण्डः भू॰ यखः। ইত্যমরদীকা॥ সন্তিশঃ পু॰ সন্দেশঃ। সাঁডাশি ইতি ভাষা। যথা। গাষসংফ্ল-ষরাচ্ছাগ দেবামানি চ যানি-বৈ। ভুক্তানি বৈ রসস্কৃত্য তে-ষা মন্ত্রাণি পাপিনা ।। নিপা-তিতানাণ ভূপৃষ্ঠে উদ্ধৃতাকি নি-রীক্ষতাণ। সভিশৈ রপক্ষয়ন্তে নরৈ র্যাম্যে শুখাততঃ।। ইতি गार्क एक भूतात्व ३८ ज्यासः ॥ সঙীন° क्री খগগতিক্রিয়া খগানা পক্ষিণা• ইত্যমরঃ 🛚 । গতৌ স্থানান্তর সঞ্চারে এতাঃ ক্রিষাঃ ব্যাপারাঃ। কা স্তা ই-ত্যাহ প্রথমভীন প্রভীন উ ভ্রমনাষ ক্রম বন্ধঃ। উর্দ্ধৃণ ডীনণ উদ্ভীনণ বিষদ্ধাননা। দাংগতণ ডীনণ সঞ্জীনণ বৃক্ষাদৌ পভন মিতি।। পৃথক্ পৃথক্ পক্ষিগতি ক্রিয়াসু প্রডীনণ তির্য্যগ্যমনণ উদ্ভীনণ উর্দ্ধৃগমনণ সংজীনণ স-স্বতগ্যমন মিত্যন্যে। ও জী ও ষ গতৌ ডীঙ চ নভোগতৌ ভাবে ক্রঃ সুক্রাদ্যোদিতি নম্বণ। ইতি ভরতঃ।।

সৎ দ্রি সত্যা সাধুঃ। বিদ্যা মানা প্রশস্তা অভার্হিত। ইত্যমরঃ। ধীরঃ। ইতি মে-দিনী।

সৎ ক্লী ব্ৰহ্মা যথা। ভগবদ্যীতা। ওস্তৎ সদিতি নিৰ্দেদশ্যোবহ্দণ দ্ৰিবিধঃ স্মৃতঃ। ব্ৰাদ্যা বহ্দ বেদাশ্চ যজ্ঞাশ্চ বিহিতাঃ পুরা।। ওস্তৎ সদিতি
ব্রিবিধো বহ্দণো জগদীশ্বর্দ্যা
নির্দেশো হভিধানণ বহ্দবিদ্তি
শ্চিন্তিতং। তত্র ভাবদোমিতি
ব্রহ্মত্যাদি শ্রুণতিপ্রসিদ্ধে রো
মিতি ব্রহ্মণো নাম। পাতঞ্জলি
রপ্যাহ অস্যৈব বাচকঃ প্রণবঃ।
অস্য বহ্দাং। ওম্কারো ভগ
বান্ বিষ্ণু রিত্যাদি তু বাচ্য বা-

ठकरवा त्रदालना उपाठ १ জগৎকারণত্বেন প্ৰসিদ্ধত্বাদ-বিদুষা পরোক্ষাক্ষ তচ্চকো-१ शि बकारणा माम। এव॰ शत-মাৰ্থ সন্ধ সাধুত্ব প্ৰশস্তত্বাদিভিঃ সচ্চনোপি। অত স্তেন ত্রিবিধ निर्फिर्गन। यहा यमाय जिदि-धा निर्फिण एउन পরমান্সনা वाकागारमा निर्मिजाः ॥ 🗱 ॥ বৈদিকে কৰ্মণি তেষাণ প্ৰথমতো নির্ফেশো যথা। তস্মাদোমিত্যু-দাহত্য বজ্ঞ দান তপঃ ক্রিষা। প্রবর্ত্তম্ভে বিধানোক্তাঃ সতত• ব্ৰহ্মবাদিনা[•]।। যসাদেব• ব্ৰহ্ম-(वा निर्फिण उत्भारमाभिज्यमा-হুত্য উচ্চার্য্য ক্কুতা বেদবাদিনা যজাদ্যাঃ শাস্ত্রোক্তাঃ ক্রিষাঃ সতত মঙ্গবৈকল্যোপি প্রবর্ত্তন্তে প্রকর্ষেণ বর্ত্তপ্তে সগুণা ভবন্তী-তি ভগবান্ শক্ষরাচার্য্য চরণাঃ। তদিত্যনভিসন্ধায় যজ্ঞ দান ত-পঃ ক্রিয়া। দান জ্রিয়াশ্চ বিবি-ধাঃ ক্রিষস্তে মোক্ষ কাঙ্ক্ষিভিঃ ॥ ভদিভি বৃন্ধণো হভিধান মুদা-ছত্য ইতানুষঙ্গ। অমভিসন্ধা-ষ কর্ম্মণঃ ফল মিতি শেষঃ। ত च्यां एक का जिमकान विना मू-

সতানকঃ পু॰ গৌতমমুনিপুত্রঃ

মুক্ণা কর্ম কর্ত্তব্য মিত্যপি বো-ধ্যণ। সদ্ভাবে সাধুভাবে চ সদি-ত্যেতৎ প্রযুজ্যতে। প্রশস্তে কৰ্ম্মণি তথা সচ্ছকঃ পাৰ্থ যুজ্য-তে।। ষতো বিদ্যমানজন্মনি উৎক্রম্ট চরিতে চ সদিত্যেতৎ প্রযুজ্যতে অতো যজ্ঞাদৌ ক র্মাণি প্রথমতঃ সচ্চকঃ প্রযুজ্য-**७।** ३७७कामभीठदः॥ 🛊॥ অন্যৎ সন্শব্দে দ্রুষ্টব্য ।। मध्यनीनः भू॰ मध्यताख्यः। यथा। मध्यनीनाम भाषाय ঋজবে দম্ভবিৰ্জ্জিতে। मम्मा স্তোত্ৰ মিদ পুণ্য সৰ্বকাম কল-প্রদেশ ইতি বিশ্বসারতন্ত্রে বটু-কভৈরবস্তোত্র।। সতত॰ ক্লী নিরস্তরক্রিয়া।। ত-দ্বতি ত্রি। ইত্যমরঃ।। তৎপর্যা। ষা অনবরতশব্দে নিত্যশব্দে চ দ্ৰষ্টৰ্যাঃ॥ অপি চ। সততে স্ব-নবরতানারতাঞ্জান্ত সন্তত । প্রসক্তাসক্ত নিত্যাজসানদ্ধা-বিরতানিশ ।। ইতি জটাধরঃ।। সতত্ব॰ ক্লী 'স্বভাবঃ। ইতি হেম-हसः ॥ সতর্কঃ ত্রি তর্কেণ সহবর্ত্তমানঃ। সাবধানঃ। ইতি লোকপ্রসিদ্ধঃ

। সচ জনকরাজপুরোহিতঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী ৷৷ <u> শতিঃ ত্রী দানং।। অবসানং।</u> ইতি সাতিশব্দটীকাষা ভরতঃ॥ मठी खी पूर्गा॥ माश्री। ইতি মেদিনী।। সৌরাস্ট্র্যুত্তিকা। ইতি হেমচন্দ্রঃ।৷ দানং।৷ অব-সান । ইতি নানার্থ সাতিশব্দ-টীকাষাণ ভরতঃ।। 🟶 ।। স্থানবি-শেষে সভ্যফৌত্তরশতনামানি यथ। रात्रावाठ। मर्दगा मर्देजु-তেষু অফব্যা সর্বতো ভূবি। স প্তলোকেষু যৎকিঞ্চিত্রহিত ন মষা বিনা।। তথাপি ষেষু স্থানে-ৰু জন্টব্যাঃ সিদ্ধিমীপ্সভিঃ। স্ম ৰ্ত্তব্যা ভূতিকানৈ ৰ্বা তা বক্ষ্যা-মি প্রায়তঃ।। বারাণস্যাণ বি-भानाकी रेनियर निक्रधातिशी । প্রযাগে ললিতাদেবী কামুকা गन्नगाम्दन।। मानटम क्रमूमा-নাম বিশ্বকাষা তথেশ্বরে। গো-মস্তে গোমতী নাম মন্দরে কা-মচারিণী।। মদোৎকটা চৈত্র-রথে জযন্তী হস্তিনাপুরে। কা-ন্যঙ্গজে তথা গৌরী রম্ভা মল-যপৰ্বতে।। একামুকে কীৰ্ত্তি-

मञी विশ्वा॰ विष्यं भटत विष्टुः । পুষ্ণরে পুরুষ্টেতি কেদারে মার্গদাযিনী।। নন্দা হিমবতঃ পৃষ্ঠে গোকর্ণে ভদ্রকর্ণিকা। স্থা-নেশ্বরে ভবানী তু বিল্বকে বিল্ব-গত্রিকা।। **শ্রীশৈলে** মাধ**বী নাম** ভত্রা ভদ্রেশ্বরে তথা। জ্বা ব-রাহদৈলে তুকনলা কমলালফে n রুদ্রকোট্যান্ত রুদ্রাণী কালী **ব** कालक्षदा ७था। मशालाइ जू কপিলা সাকোটে কমলেশ্বরী॥ অত্র কপিলাম্বরা ইতি চ পাঠঃ ৷৷ गानवारम महास्त्री निर्वालस्त्र জনপ্রিয়া। মাষাপূর্যা। স্মারী তুসস্তানে ললিতা তথা।। উৎ-थलाकी महमुात्क हित्रशात्क **य** ट्राब्शना। श्रासा महना नाम विभवा शूक्रसाखरम।। विभागा-या गरयात्राकी लाहेला भूखुवर्कः त्। नातायनी मूलात्यं ज् बिक्-ए क्र**ज**मुन्नती ॥ विश्रुरन विश्रे ना नाम कन्यानी मनगाठतन । कोरियी कार्षिञीरर्थम् मूगमा भाषद्व वत्न ॥ त्गामा अत्य जिः সন্ধা। তু গঙ্গাদারে রতিপ্রিযা। শিवक्र ७ भिवासमा समिनी cr- | বিকাতটে ৷৷ রুক্মিণী দারবত্যাম্ব

त्राधा वृन्मावत्न वत्न। तमवकी মথুরাষাম্ব পাভালে পর্মেশ্বরী।। চিত্ৰকূটে তথা সীতা বিস্ধ্যে বি-क्याधिकांनिनी। मशाबादत कती-রা ভূ হরিশ্চন্দ্রে ভু চন্দ্রিকা।। র-মণা রামতীর্থে তু যমুনাযা • মৃগা-वठी। कत्रवीदत महालग्नी कमा-দেবী বিনাষকে।। অরোগা বৈদ্য-नारथ जू गर्गकारल गररभन्नी। ज-ভবে ত্যুক্তীর্থে তু অমৃতা বিশ্ব-কন্দরে।। উষ্ণতীর্থেত্যত্র অশ্বতী-र्थिक न गार्ठः ॥ मा ७ दना मा ७ दी নাম স্বাহা মাহেশ্বরে পুরে। ছগ-লাণ্ডে প্রচণ্ডা তু চণ্ডিকামরকণ্ট-**ब्ला।** भारमश्रद वज्ञादमञ् थ-ভাষে পুষ্ণরাবতী। দেবমাতা লব্ধ-স্বত্যা॰ পারা পারাতটে মতা ॥ **ম**-হালষে মহাভাগা প্ৰোক্যাণ পি-बलाधती। जिंश्का क्रवलीट তু কার্ত্তিকেযে ভূ শঙ্করী।। উৎ-পলাবর্ত্তকে লোলা সুভদ্রা শো-**१मङ्करम । मश्रामिद्धवरन नन्दी** রনঙ্গা ভরতাশ্রমে।। জালদ্ধরে বিশ্বমুখী তারা কিছিন্ধপর্বতে ৷ प्रिवनाक्रवतन शुक्ति (र्माश का भी-त्रमक्ष्ण।। जीमात्मवी हिमार्जी চতৃষ্টি বস্ত্রেশ্বরে তথা। কপাল

মোচনে শুদ্ধি স্মাষা কাষাবরো-र्दि ।। अद्याकादन अनि नीम ধৃতিঃ পিখারকে তথা । কালা তু रुख जानामा मटाहारम निकासि नी।। स्वन्।या प्रम्यान तम्बा। वर्कनी ज्या। अवही का खतनदो अभवीत्भ जल्मामका ॥ अभवा **८६मकृटि जू ममूछा मछायामिनी** १ 🛊 । अभूरण तमनीका छू निधि देवं अवनामदया भाषा दिन्द मत्म भाईजी भिवनमिर्धो। राप्त লোকে তথেজ্ঞানী বন্ধান্যেয় স-রস্বতী।। সূর্যাবিষে প্রভা নাম भाजूना॰ देवकेवी ठथा। व्यक्षमणी भठी बाह्य द्रामामू ह जिल्लाखना 1৷ চিত্তে বন্ধকলা নাম শক্তিঃ সৰ্বশরীরিণাণ । 🟶 ৷ এতদক্ষেশতঃ প্রোক্তণ নামাঊশত মুত্তমণ।। অ-ফৌত্তরঞ্চ তীর্থানাণ শত মেত मूनाश्चलः। यः भरिष्कृत्यावाभि সৰ্বপাপৈঃ প্ৰমুচ্যতে।। এষু তী-ৰ্থেষু ষঃ ক্লবা স্নানণ পশ্যতি মা-নবঃ। সর্বপাপবিনিশ্মৃক্তঃ কল্প॰ শিবপুরে বদেৎ॥ মস্ত মৎপর-মংকাল করোত্যেতেযু মানবং। স ভিত্বা ব্ৰহ্মসদন পদমভ্যেতি শান্ধর ।৷ নামাইশতক মস্ত

প্রাবযেচ্ছিবসন্নিধৌ। তৃতীযায়া मथाकेमा वरुपूर्ला ज्वननः া গোদানে আদ্ধকালে বা অ-इनाइनि वा भूनः। प्रवार्कन-विरधो विषान् शर्यम् बन्नाधिश-क्छि।। এব रम् श्री मा ठल ममा-राजान गाजना। अ কালে চ দক্ষ প্রাচেতসো ভবৎ ৷৷ পाईकी हाखरामती मिरामशक्त ধারিণী। মেনাগর্ত্ত সমুৎপন্ন। ভুক্তি মুক্তি ফলপ্রদা।। অরুদ্ধতী ব্দপস্ত্যেতত্তদাপ্তা যোগ মুক্তমণ। পুৰুরবাশ্চ রাজর্ষি লোকেযু জ-ষতা মগাৎ।। যযাতিঃ পুত্রলা-ভম্ব ধনলাভম্ব ভার্গবঃ৷ তথা-ন্যে দেব দৈত্যাশ্চ বাহ্মণাঃ ক্ষ-ল্রিষা স্তথা।। বৈশ্যাঃ শূদ্রাশ্চ বহবঃ সিদ্ধি মীযু ৰ্যথেপ্সিতাণ। যত্রৈতল্লিখিত তিন্তেৎ পূজ্যতে দেবসন্নিধৌ।। ন তত্র শৌক-দৌর্গত্যু॰ কদাচিদ্পি জায়তে 1 ইতি মৎস্যপুরাণে ১৩ অধ্যাষঃ ॥ 🛊 ॥ माविजी। यथा। यम-উবাচ। সাবিত্রীবরদানেন স্বণ সাবিত্রীকলা সতী। প্রাপ্তা পুরা ভূভূতাচ তপসা তৎসমা শুভে ৷৷ যথা শ্ৰীঃ শ্ৰীগতেঃ ক্ৰোডে

ভবানীব ভবোরসি। সৌভাগ্যা সুপ্রিয়া ত্বঞ্চ ভব সত্যবতি প্রিয়ে ।। ইতি ব্রদ্ধবৈবর্তে প্রকৃতিখণ্ডে २८ अक्षायः ॥ 🕸 ॥ विकामाना । यथा। ज्यानमात्नन निजुः श्र-যুক্তা দক্ষ্যা কন্যা ভবপূৰ্বপত্নী े नजी नजी खागिव मुखेटमहा ়তা॰ জন্মনে শৈলবযূ• প্রপেদে ।। ইতি সমারসম্ভবে ১ সর্গঃ ।। সতীনঃ পু• ব॰শঃ। ইভিশব্দ-माना॥ मठीलकः। ইত্যমর-টীকাযাণ ভরতঃ।। সতীনকঃ পু॰ সতীলকঃ। ইত্য-মরটীকা ॥ সতীর্থঃ পু॰ পরস্প*রৈকগুরু*ন্দি || ষ্যঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।। मठीर्थाः भू॰ शत्रम्भदेतकश्चरू-শিষ্যঃ। ইত্যমরঃ॥ একে। ২-ভিমো গুরু র্যেষাণ তে খন্যোন্যণ সতীর্থ্যাঃ। সমানে তীর্থে গুরৌ বসম্ভি সতীর্থ্যাঃ। ঢ বেকাদিতি यः। জ্যোতির্জনপদেত্যাদিনা সঃ। তীর্থ মৃষিযুষ্ট জলে গুরৌ ইতি বক্ষাতে। ইতি ভরতঃ।। অপিচ। স্যাৎ সতীর্থঃ সতী-র্থ্যোপি তথৈকগুরু রিত্যপি। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

সতীলঃ পু॰ ব॰শং। ইতি হারাবলী।। বাষুং। ইত্যমরটীকাষা
রাষমুস্টং।। কলাষং। ষথা।
কলাষ স্থিপুটং প্রোক্তঃ সতীলো বর্তুলো মতঃ। ইতি ভরতব্তব্যাড়িং।।

मठीनकः भू॰ कनायः। यथा। কলাযম্ভ সতীলকঃ হরেণু খণ্ডি-কৌ চাস্মিন্। ইত্যমরঃ।। চত্বা-রি কলাযে। মটর ইতি খ্যাতে। কলাযশকো বিশেষে সামান্যে চ অতএব মাষকলাষ ইত্যাদি প্রযোগঃ। কড়্যতে ভুজ্যতে কলাযঃ। কড ভক্ষণে নামীতি वायः गगीयानिषा ९ ७ मा वः । তিলেন তিলবৎ ক্লফ্বৰ্ণ চিক্লে-ন সহ বৰ্ত্ততে সতীলঃ নিপাত-नामिकात्रमा मीर्यः श्वार्थ रक मठीलकः मखाकिः। शियरा ভক্ষণার্থণ হরতি মনো বা হরে-শুঃ নান্নীতি এণুঃ। খণ্ডাতে বি-मार्गाए थिकः भृदिन रेकः। কলাৰ স্ত্ৰিপুটঃ প্ৰোক্তঃ সতী-ला वर्जुला मजः। रुत्रगः कः ণ্টকা জ্রেযেতি তু ব্যাডিঃ। ইতি ভরতঃ ॥ खी कनायितिमयः। সতীল।

তেওড়া ইভি ভাষা। যথা। সভীলা নিঙিকা ভিন্টীতি শব্দ-চন্দ্ৰকা।

সতুষ ক্লী তৃষযুক্তশস্য ।। ধান্য ।

1 যথা। শস্য ক্লেত্তগত প্ৰাহঃ
সতুষ ধান্য সুচ্যতে। আন
বিতৃষ মিজ্যুক্ত বিন্ন মন মুদা
ক্লত ।। ইতি প্ৰাক্ষতব ।।

সভূট্ ত্রি ভৃষ্ণাযুক্তঃ। তৎ-পর্য্যায়ঃ। ভূষিতঃ ২ ভর্ষিতঃ ৩। ইতি ত্রিকাপ্তশেষঃ ।।

সতের: পু॰ তুষ:। ইতি সংকি-গুসারোণাদিবৃত্তি:।।

সৎ ক্লী জন্ম। এতদ্বিবরণ সঞ্জীনশব্দাৎ পরণ সৎশব্দে অক্টব্যং।।

ग्रूकममः भू किलिकममः । यथा। किलिवृकः म्रूकमस्मा खक्रज्ः भिश्वभालकः । ইতি भक्तक्रिका॥

সৎকর্তা পু বিষ্ণু । যথা। সৎ-কর্ত্তা সংক্রতঃ সাধু রিতি তস্য সহসুনামস্তোত্ত ।।

সৎকর্ম ক্লী বেদবিহিতক্রিষা।
বথা। বিষ্ণুপুরাণে। সৎকর্মযোগ্যোন জনো নৈবাপঃ শৌচকারণ স্বিদ্মিন্দিতে তল্ম

নমো দেবাষ ভাষতে। ইতি প্রাষশ্চিত্ততত্ত্বং।।

সৎকাঞ্চনারঃ পুণ রক্তকাঞ্চনঃ।
যথা । কোবিদারে চমরিকঃ
সন্দালো যুগপত্রকঃ। সৎকাঞ্চনারঃ কামালু র্হবাহ্ন শক্তরঃ
। ইতি শক্তচন্দ্রকা।।

সংকাণ্ডঃ পু॰ চিন্নঃ। ইতি শব্দ-চন্দ্ৰিকা।।

সংকারঃ পু
প্জা। ষথা।
এবজ্তাঃ সভাসদঃ সভাষা
থথা সীদন্তি উপবিশন্তি তথা
দান মান সংকারে রাজ্ঞা কর্তব্যাঃ। ইতি ব্যবহারতত্ত্ব ।।
শবদাহাদিক্রিষা। ইতি লোকপ্রসিদ্ধিঃ।।

সৎক্তঃ ত্রি পুজিতঃ। ক্রতসৎ-কারঃ। যথা। তত্ত্বে কঞ্চিৎ স কালঞ্চ মুনিনা তেন সৎক্রতঃ। ইতি দেবীমাহাদ্য্যণ।।

मिंद्रिका श्री मिंद्रिकातः। मद-क्रिया भकार्थ मर्गनारः॥

সংক্রিয়া জ্রী শবদাহাদিক্রিয়া। তৎপর্য্যায়ঃ। সংস্ক্রিয়া ২ । ইতি ক্রিকাণ্ডশেষঃ।। সংস্কারঃ
৩। ইতি শব্দরজাবলী।। সম্মান্যা। মধ্যা মনুঃ। মটে ২পব-

জ্বিতে জ্ঞাতিমধ্যক্ষো যবস । গবা । প্রদদ্যাৎ প্রথম গো ভিঃ সৎক্ষতস্য হি সৎক্রিয়া ॥ ইতি প্রাযশ্চিত্ততত্ত্ব ।।

সত্তমঃ ত্রি অতিশোভনঃ। ইত্য-মরঃ॥ পূজ্যতমঃ॥ সাধীমান্॥ উত্তমঃ। ইতি মেদিনী॥

সত্তা ত্রী জাতিবিশেষঃ। ইতি
ভাষাপরিচ্ছেদঃ। বিদ্যমানতা
। ষথা। যদ্যপি পাপস্য কার্য্যানন্ধিতত্বেন তৎসত্তাষা মপ্রামাণ্য প্রতিভাতি। ইতি প্রাযশিচত্ততত্ত্বং।। সাধুতা। সতো
ভাব ইত্যর্থে সচ্ছকাৎ ত প্রত্যযেন নিশ্বমা।।

मलः क्री यखः॥ महाहानः॥

वाष्ट्राह्मनः॥ व्यवगः॥ देकलः

वः। ইতি মেদিনী॥ श्रमः॥

गृरः॥ দানः॥ मद्यावदः।

रेलात्नार्थद्कायः॥ यागवि
त्मयः। यथा। देनियद्यश्निय
यक्तद्व अवयः लोनकाहयः।

मलः वर्गाय त्वाकाय मरमुम
य मामल॥ क्विमागल माख्वाय

क्वानीना हीर्यम् त्विल क्यायाः

मक्षना रदः॥ ইতি क्रीलागव-

७ ३ ऋस्ति ३ ञ्यासः ॥ ●॥ षानभाष्माश्रमः यथा। ज्या-ভিফৌনে দাদশ গোশত দ-কিণা বিভাগঃ ষোডশৰ্দ্বিজাণ তৰিহুতীভূতে সম্ৰাত্মকে দাদ-नार मार्या भरवना किरना मी-क्षरे छो। पि पर्यतम निर्गिष-তেয় ভচ্চ সাবন মানেন কর্ত্ত-वाः। यथा। मळागुणामाना-थ সাবনেন লोकांक वर्जा-षावशादकश्च। देखि मनमान-তত্ত্ব া 🗱 🛭 সদক্ষিণ সততা-ষদান । তিমন্দকস্পর্শনাদি निट्यर्था यथा। नालरशब्दन বিদিন্বীরহীনা তথা স্ত্রি-যে। দেবতা পিতৃ সচ্ছান্ত্ৰ ৰজ্ঞ मलामिनिमरेकः ॥ क्रषा जु ग्णामनामाण श्वरकाठाकाव-लाकनाए। इंडि मार्क्ट खय-**পুরাণে সদাচারাধ্যাযঃ॥ সত্রু** সদক্ষিণ সভতামদান ৷ ইতি ভট্টীকা ৷৷

সম্র^{*} ব্য সহ। ইতি শব্দরত্না ৰঙ্গী জটাধরশ্চ।

मल्याना जी समामिनानगृहः। जद्यश्रीयः। প্रक्रियः २। इजि द्याहसः॥ मळा क मह। हेलामतः।।

मळाजिए श्रृं ताजितिस्यः। मलू

श्रीक्षकमाश्रम्तः। भत्त ज्ञारे

नभत्त भिश्रजतात्वा वज्र ।

हेलि किष्मुतात्व २१ ज्यायः॥

मळाजिक की राञ्चनित्वादः॥

मेला कि। हेलि

प्रात्वा। ज्ञान स्व ज्ञाराः

श्रीका मळाजिक।। हेलि

भक्षा किलाजिक।। हेलि

भक्षा किलाजिक।। हेलि

ला भू॰ गृहशालः। इन्यानः॥
दि गृहरः। मलः मामानः विमार्ज रमा मली हेन्। मरमरल मार्ज रमा मली हेन्। मरमरल मलः विक्तातः। मल माष्ट्रामरन यस्ज ममामारन ह देक्वर्व। हेन्नि विश्वः। गृहमा शिक्त गृहः शिक्तः। हेन्नि जत्रज्ञः॥ निकाः श्रवृज्ञानमानः। यथा विष्णुः। नार्मोहः त्राख्नाः त्राक्रकर्मानि न जिनाः जर्ज न मलिनाः मरल न काक्षाः श्रक्मिनि त्राक्षाः खाकातिनाः विताहरगाः शृर्वम्मृहः বোঃ। ইতি। সন্তিণা নিত্য প্রবৃতামদানানা সন্তে ২মদা-নে। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব ॥

সত্ত্বণ ক্লী প্রক্ততে গুণবিশেষঃ। অত্ত সত্ত্ব প্রকাশকজান সুখ-হেতুঃ। সতো ভাবঃ সত্বং। ত্ব তৌ ভাবে ইতি ত্ব নিপাতনা-ভলোপ ইতি কেচিৎ। সত্ত্ব• দিতকার মিতি বহবঃ। ইত্যমর ভরতৌ ॥ 🛊 ॥ মহাভারতমতে 'সুখজনকগুণঃ। তস্য ধর্মাঃ ৬। প্রসাদঃ ১ হর্ষঃ ২ প্রীতিঃ ৩ অ-मत्महः ४ ४ छिः ७ सृष्टिः ७। 'ইতি মোক্ষধর্মঃ।। দ্রব্যং।। অ-সুঃ॥ ব্যবসাষঃ। ইত্যমরঃ॥ পিশাচাদিঃ॥ বল•॥ স্বভাবঃ॥ আত্মা।। চিত্ত॰। ইতি মেদিনী া। রসঃ॥ আযুঃ॥ ইতি ধরণিঃ া। ছবেরঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ ধনণা আত্মতা। ইতি শব্দ-त्रज्ञावनी ॥

সত্ত্বঃ পু॰ ক্লী জম্বঃ। ইত্যমরঃ॥
সত্ত্বতা স্ত্রী সম্বদ্য ভাবঃ। সম্ব শব্দাৎ ভাবে ত প্রত্যমানস্তর• আপ্ প্রত্যমেন নিম্পন্ন।॥

সত্ত্বসম্পন্নঃ ত্রি সত্ত্পপ্রাপ্তঃ। স-ত্ত্বশকাৎ সংপূর্বপদ্বাতোঃ ক্ত প্রত্যয় নিষ্পন্নঃ ॥

সৰুসং জি সৰুবৃত্তিশালী।
সৰুপ্ৰধানঃ। যথা। উৰ্দৃণ
গচ্ছন্তি সৰুস্থা মধ্যে তিন্ঠন্তি
রাজসাঃ। জবন্য গুণবৃত্তস্থা
অধোগচ্ছন্তি তামসাঃ।। ইতি
ভগবদগীতাষাণ ১৪ অধ্যাষে ১৮
শ্লোকঃ।।

সৎপত্ৰ ক্লী পদ্মস্য নবদল। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।

স্থপথঃ পু॰ প্রশ্তপথঃ। তৎ-পর্য্যায়ঃ। অতিপন্থাঃ২ সুপন্থাঃ ৩ অর্চিতাধা ৪। ইত্যমরঃ ॥ मूलथः ६। ইতি শব্দরত্বাবলী।। সৎপশুঃ পু॰ বজ্ঞীষপশুঃ। ইতি কেচিৎ।। শোভন পশুশ্চ।। গৎপুতাঃ পু**ণ উত্তৰসন্তানঃ** ম বেদাদিবিহিতপিত্রাদিকার্য্যক-र्छा। यथा। भूगात्मा नत्रका-দ্যস্মাত্রাযতে পিতর সূতঃ ৷ মুখসন্দর্শনেনাপি তদুৎপত্তে যতেত সঃ ৷৷ ইতি বৃ*হস্পত্যুম্ভ*ক্ত নরক নিস্তারায ঋণমস্মিন্ সম-ম্যতি অমৃতত্বঞ্ বিন্দতি। শিতা পুত্ৰদ্য জাতদ্য পশেচ্চ জীব-তো মুখণ। ইতি বশিষ্ঠোক্ত ঋ-ণাপন্যনায় চ যৎপশ্যেদিতি

নিষম বিধান ভদত্তত পুত্ৰকা-र्या भूखभद्रः। मर्भूखस्र मूर्थम-र्भनः विनाशि नत्रकनिञ्चात्रकः । তথা চ বিষ্ণুপুরাণ । সৎপুক্তেণ তু জাতেন বেণোপি ত্রিদিব• যযৌ। পুমামো নরকাজাতঃ স তেন সুমহাত্মনা।। ব্রদ্ধপুরাণে পি। সমুৎপন্মেন ভো বিপ্রাঃ সৎপুত্রেণ মহাত্মনা। ত্রাতঃ म भूक्षवाायुः भूबादमा नद-কাত্তদা।। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব ॥ **म**९ श्रूक्यः प्र श्रुकामानप्रक्यः। ইতি সংকিপ্তসার সমাসপাদঃ॥ সৎপ্রতিগ্রহঃ পু॰ সাধুজনদত্ত-দ্ৰব্যগ্ৰহণ । সন্ত্যঃ সাধুভ্যঃ প্রতিগ্রহঃ দানগ্রহণ ৷ যথা ৷ সপ্ত বিত্তাগমাধর্ম্ম্যা দাযো লা-**डः क्रा**या ज्यः । প্रयोगः क-ৰ্মযোগশ্চ সৎপ্ৰতিগ্ৰহ এব চ।। ইতি মানবে ১০ অধ্যায়ঃ॥ मध्यिष्ठिभकः भूः जूनावाङिः।

প্রতিযোগী। ন্যায়মতে। সা-

খ্যাভাব ব্যাপ্যবৎ পক্ষঃ। যথা

। इतना विक्रमान् धूमानिज्ञाति

বহ্নাভাব ব্যাপ্যবন্ধুদাদিঃ ।

ইতি সৎপ্রতিপক্ষগ্রন্থঃ ॥ তল

कन यथा। भाषाविद्धाश्राभ्या-

পন সমর্থ সমান বলোপছিত্যা প্রতিরুদ্ধ কার্য্য লিঙ্গত্ব তত্ত্বণ বলঞ্চ ব্যাপ্তি পক্ষধর্মতে বিরো-ধি বোধকান্যগমকতৌপযিক-ৰূপ সম্পত্তি মন্ত্র্যা জ্ঞাযমানে-ম প্রতিরুদ্ধ কার্য্যত্ব বা তত্ত্ব । ইতি গঙ্গেশোপাধ্যামক্তিচি-স্তামণিঃ ৷৷

श्वरकतः पू॰ माजित्रवृक्तः। ইতি
भक्तिका।। শোভনফলবबुक्तम्ह।।

সতা॰ ক্লী ক্তবুগণ।। শপথঃ।। ষথাৰ্থঃ। তদ্বতি ত্ৰি। ইতি মে^{. :} पिनी॥ निकाखः। ইতি শব-त्रप्रावनी ॥ 🛊 ॥ वशार्थमाशः ৰ্য্যাৰঃ। তথ্য ২ ঋত ও সম্য-क् ८। इंडामदः॥ অবিভথ ৫ ভূত ৬। ইতি জটাধরঃ।। তল্প-कन कथा। कथार्थ कथन कछ नर्वताक मूचथान । ७९मछा ্মিতি বিজ্ঞেষ মসত্য• তদ্বিপৰ্য্য-ৰ•া৷ ইভি পাদ্মে ক্রিয়াযোগ-नादा ३७ व्यथायः ॥ 🖷 ॥ ७-দাকারা ব্থা.৷ সত্যঞ্জ সমতা टेंहर ममटेम्हर नमः भयः। ज-মাৎসর্য্য ক্ষমা চৈব হ্রী স্তিতি-কানস্যতা।। ত্যাগো ধ্যান

মথাৰ্য্যত্ব॰ ধৃতিশ্চ সতত॰ দ্বা। অহিংসা চৈৰ রাজেন্দ্র সত্যাকা-রা স্রযোদশ ৷৷ ইতি মহাভারতে রাজধর্মঃ।। 🟶 ।। তস্যাপালনে **(मार्या यथा।** कृषामार्थकार्थक সত্যু॰ হস্তি ন পালযেৎ। স রু-**७ भः कालमृ** (ख वरमाम्बर छ पूर्-গং ৷৷ সপ্তজন্মসু কাকশ্চ সপ্ত-জমসু পেচকঃ। ততঃ শূদ্রো ম-হাব্যাধী জন্মসপ্ত ততঃ শুচিঃ॥ ইতি বন্ধবৈবৰ্ত্তে প্ৰক্ষতিখণ্ডে ৪৮ অধ্যায়ঃ!! 🐯 ।। অপি চ। সত্যেন লোক• জয়তি সভ্যস্ত পরম• তপঃ । ৰথাভূত প্ৰসাদন্ত সত্য মাহ র্মণীষিণঃ।। ইতি কৌর্মো উপ-রিভাগে ১৪ অধ্যাম্যা 🛊 🛭 তস্য প্রসংশা যথা। সত্য মাধাস্যতি হরিঃ সত্য • নিষ্কপট • বদ। বদ তৎ স্বভ্ৰষণ ত্যক্তা সত্যুণ ক্ৰহি मूम मि।। বর कृপ শতাদ্বাপী ৰর বাপীশতাৎক্রতৃঃ। বর ক্র তুশতাৎ পুত্রঃ সত্য পুত্রশতাৎ কিল ৷৷ নহি সত্যাৎ পরো ধর্মো নানৃতাৎ পাতক পর । নহি माजूः भाता वस् न शक् मंखना । পর: ।। ইতি বন্ধবৈবর্ত্তে জন্ম-খণ্ডে ৯৫ অখ্যায়ঃ।।#।। অগি চ ।

ভন্মাৎ সত্যু পরু বন্ধ সত্য মেব পর॰ তপঃ। সত্য মেব পরে। য-ক্তঃ সত্য মেব পরং শ্রুতং ৷৷ সত্যং বেদেযু জাগর্ত্তি সত্যঞ্চ পরমণ-পদ । কীর্ত্তি র্যশশ্চ পুণ্যঞ্চ পি ত্দেবর্ষি পূজনে।। আদ্যো বিধি-শ্চ বিদ্যা চ সর্বণ সত্যে প্রতিষ্ঠি-ত ৷ সত্য যত্ত স্তথা বেদা মন্ত্ৰা দেবাঃ সরস্বতী।। ব্রত্তর্য্যা তথা সত্য ওকারঃ সত্য মেব চ। স ত্যেন বাষু রভ্যেতি সত্যেন তপ-তে রবিঃ॥ সত্যেনাগ্নি র্দহেমিত্য॰ স্বৰ্গ॰ সভ্যেন গচ্ছতি। সত্যেন চাপঃ কিপতি পর্জন্যো ধরণী-তলে ॥ পরেণ সর্বদেবানা॰ স ৰ্বতীৰ্থাবগাহন । সত্যস্য বচ-নালোকে সৰ্ব মাপ্পোত্যসংশ্যং ॥ অশ্বমেধ সহসুঞ্চ সত্যঞ্চ তুল্যা ধৃত । অশ্বমেধ সহসু। क्रि সত্য-মেব বিশিষ্যতে।। সত্যেন দে-বাঃ প্রীযন্তে পিতর ঋষয় স্তথা। মনুষ্যাঃ সিদ্ধ গন্ধৰাঃ সত্যাৎ সিদ্ধি মিতো গতাঃ ৷৷ অগাধে বিপুলে শুদ্ধে সত্যতীর্থে শুচি খুদে। স্নাতব্যং মনসা যুক্তৈঃ রান তৎপরম স্তা আত্মা-র্থ বা পরার্থে বা পুত্রার্থে বাপি

মানবাঃ। অনৃত যে ন ভাষস্তে তে বুধাঃ স্বৰ্গগাসিনঃ। তস্মাৎ সত্যক্তত॰ পঞ্চ তদনন্তফল॰ ভ-বেৎ। ইতি বহ্নিপুরাণে দানাব-স্থানিৰ্ণয়না খ্যাষঃ ॥ 🗱 ॥ অপি চ। তডাগ শতদানেন যৎপুণ্য॰ লভতে নরঃ। ততোধিকঞ্চ লভ-তে বাপী দানেন নিশ্চিত।। দ-শवाशी अमारनन यदकल लज-তে নরঃ। ততোধিকঞ্চ লভতে পুণ্য কন্যাপ্রদানতঃ ॥ দশকন্যা প্রদানেন যৎফল পভতে নরঃ। ততো ২ধিকঞ্চলভতে যজৈকেন নরাধিপঃ।৷ শতযন্তেন লভতে যৎ পুণ্য পুণ্যক্ষজনঃ। ততো **২ধিকঞ্চ লভতে পুক্রা**ন্যদর্শনেন চা৷ দৰ্শনে শত পুত্ৰাণা• যৎ পুণ্য• লভতে নরঃ। তৎপুণ্য লভতে নূন॰ পুণ্যবান্ সত্যপালনাৎ ॥ ন হি সত্যাৎ পরো ধর্মো নান্-ভাৎ পাতক নরঃ। ন হি গঙ্গা-সমণ তীর্থণ ন দেবঃ কেশবাৎ প-तः॥ ইতি बन्नरिवर्खभूतान ॥ 🛊 ।। অন্যক্ত। সত্য মূল জগৎ সৰ্ব॰ সৰ্ব॰ সত্যে প্ৰতিষ্ঠিত•। সি-দ্ধি॰ লভন্তে সত্যেন ঋষধে৷ বে-দপারগাঃ ৷৷ সত্যেন দীষতে

কন্যা সত্য জন্মন্তি আন্দৰ্শাঃ। সত্যু বদন্তি রাজানঃ সত্যেন বসুধা ধৃতা।। সত্যেন গম্যতে স্বৰ্গ॰ মোক্ষ• সত্যেন প্ৰাপ্যতে। সূর্য্য স্তপতি সত্যেন সোমঃ সত্যেন রাজতে ৷৷ যমঃ সত্যেন হরতি সত্যেনেন্দ্রে। বিরাজতে । বরুণশ্চ ব্সবেরশ্চ তৌ চ সত্যে প্রতিষ্ঠিতৌ।। তৎ সত্যং নম ন-শ্যেত যদ্যহ॰ নাগনে পুনঃ। ইতি বারাহে মথুরামাহাম্ম্যে অ-স্বকতীর্থ প্রভাব বর্ণন নামাধ্যা-यः ॥ 🛊 ॥ जनाका । मठाः म-স্তোষ আস্তিক্য তথা চেন্দ্রিয নিগ্ৰহঃ। দেবতাভ্যৰ্কন পূজা ব্রাহ্মণানা বিশেষতঃ।। সত্য ভূতহিত বাক্য মস্তেম স্বাগত পরণা নিষ্মাঃ পঞ্চ সত্যাদ্যাঃ বাহ্মভান্তর দিধা ॥ ইতি शाकृत्फ ४२ ज्यागिः ॥ 🕸 ॥ অপিচা যে হথা ধর্মেণতে স-ক্যা যে ২ধর্মেণ গতঞ্জিযঃ। স-ত্যশোচ মনঃ শৌচ পৌচ মি-ক্ৰিয় নিগ্ৰহঃ।। সৰ্বভূতদয়া শৌ-**চ॰ জলশৌচঞ্চ পঞ্ছম॰। यम्रा म**-তাঞ্চ শৌচঞ্চ তদ্য স্বর্গো ন দুর্ল্ল-ভঃ ৷৷ সত্যু হি বচন ষ্ম্য সো

২শ্বনেধাদ্বিশিষ্যতে । ইতি গা--ৰুডে ১১৩ অধ্যায়ঃ।। 🏶 ।। অপি-চ। ন সা সভা যত্র ন সন্তি বৃদ্ধা वृक्षा न य ए न वमिछ धर्या । मात्मी धर्मा यब ना मठा मि নো তৎ সত্যং যচ্ছলেনানুবিদ্ধং 11 बाक्रातािश मन्याां गामि-ত্যৈশ্চৈব ভেজসাণ। শিরোপি স-ৰ্বগাত্ৰাণাণ ব্ৰতানাণ সত্য মুত্তমণ ॥ ইতি গারুডে ১১৫ অধ্যাবঃ ॥ 🗱 ॥ जन्म। यथा। यः मर्बछः সর্ববিৎ ষদ্য জ্ঞান্যয়ণ তপঃ স্-र्वमा वनी मर्वत्मानानः यः शृथि-ব্যাণ তিষ্ঠন্ পৃথিক্যা অন্তরঃ সো ২কাময়ত বহুস্যাওম ঈক্ষত ত-ত্তেজা ২সূজৎ সত্য জ্ঞান ন-নন্ত বন্ধ ইত্যাদ্যাঃ। ইতি শ্রী-ভাগবতদশনকন্ধীয় ৮৭ অধ্যা-ষীষতৃতীষশ্লোকটীকাষাণ শ্রীধর-यामी ॥ 🟶 ॥ जिलिहा जर মাত্মা পর বন্ধ সত্য জ্ঞান নন-স্তক । বিজ্ঞান মানন্দো বন্ধ সত্তত্ত্বমসি কেবল'৷৷ নিত্য'শু-দ্ধ॰ বৃদ্ধিযুক্ত॰ সত্য মানন্দ মদ্বয়• । যো সাবাদিত্য পুরুষঃ সোসা-বহ মখণ্ডতঃ ৷৷ ইতি ধ্যায়ন্ বি-ষুচ্যেত বন্ধাে ভববন্ধনাৎ ।

ইতি গাৰুডে ৪৯ অধ্যাযঃ ॥ সত্য ব্য প্ৰশ্নঃ॥ স্বীকারঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

সত্যঃ পু॰ শ্রীরামঃ। যথা। কৌ-শল্যানন্দনঃ শ্রীশঃ সত্যোদশ-মুখান্তকঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ বিষ্ণুঃ। যথা। ঔত্তমেপ্যন্তরে বিষ্ণুঃ সত্যৈঃ সহ স্বধোত্তমৈঃ । সত্যায়া মভবৎ সত্যঃ সত্য-অপো জনার্দ্দনঃ।। ইতি কৌর্দ্দো 8৮ अथायिः सक्षा **अनाका** সভ্যব্ৰত সভ্যপর ত্রিসভ্য স-ন্ত্যস্য যোনি[•] নিহিতঞ্চ **সত্যে।** নভ্যস্য সভ্য মৃত্সভ্যনেত্র° সত্যাত্মক তথা শরণ প্রপন্নাঃ ৷৷ ইতি শ্রীভাগবতে ১০ ক্ষন্ধে ১ অধ্যাবঃ ॥ 🟶 ॥ প্রতিশ্রুত। সত্য° ক্বত মিতি হৃষ্টাঃ প্রথম• সত্যত্বেন স্তবস্তি সত্যত্ৰত মি-তি। সত্যু• ব্ৰত• সক্ষরে। যস্য । সত্য॰ পর॰ শ্রেষ্ঠ॰ প্রাপ্তিসা-ধন যশ্মন্ত। ত্রিসভ্য জ্র-ম্বিকালেমু সৃষ্টেঃ পূর্বণ প্রল-যানন্তর স্থিতিসমধে চ সত্যু অব্যভিচারেণ বর্ত্তমান । ত-দেবাহুঃ। সত্ত্যস্য খোনি মিতি। সচ্চব্দেন পৃথিব্যপ্ তেজাণস।

তাশব্দেন বায়াকাশৌ। এব॰ সচ্চ ত্যশ্চ সত্ত্যণ ভৃতপঞ্চক । ত॰ সত্য মিত্যাচক্ষতে ইতি শ্রুতেঃ । তৃদ্য যোনি॰ কারণ অনেন স্ফেঃ পূৰ্ব বৰ্তমানতোক্তা। তথা সত্ত্যে তন্মিমেব নিহিত• অন্তর্যামিত্যা স্থিত অনেন স্থি-তি সমযে চ সত্যন্ত মুক্ত•। তথা সত্তাস্য সত্য° তস্যৈব সত্তাস্য সত্যু পার্নার্থিক নাশেপি অ-বশিষ্যমাণ ৰূপণ অনেন প্ৰল-যেপ্যৰধিত্বেন সত্যত্ব দৰ্শিত এব॰ ত্রিসত্যন্থ মুপপাদিত•। তথা ঋত সত্য নেত্র॰। ঋতঞ্চ সূন্তা বাণী সভাঞ্চ সমদর্শন । তথা ভগবতা ব্যাখ্যাস্যমানত্বাৎ স্ব-ত্যঞ্জ সমদর্শন মিতি ঋতঞ্চ সূন্-ভাবাণী কবিভিঃ পরিকীর্ত্তিতা।। ইতি তথে৷ র্নেত্রণ নয়নসাধনণ নেতার প্রবর্ত্তক মিতি যাবৎ ৷ এব॰ সর্বপ্রকারেণ সত্যাত্মক॰ ত্বাণ ব্যণ শ্রণ প্রপন্না ইত্যর্থঃ ৷ ইতি শ্রীধরস্বামী ॥ 🗱 ॥ 🛛 श्रायं ৰৃক্ষ। ইতি রাজনির্ঘলীঃ।। না-न्नीमूथ आफार प्रदेश यथा। देखि-প্রান্ধে ত্রতুর্দক্ষঃ সত্যো নান্দী-মুখে বসুঃ। নৈমিত্তিকে কাল

<u> শত্যত</u>

कारमे कारमा ह धूदि लाहरने । इंडि खाम्नडवः । क्षा उर्णा-लाकामृर्म्भ्रलाकः। इंडि विश्वः ।। जमा विवद्गनः मङ्गालाकम-रम्भस्याः ॥

সভ্যক কী সভ্যকারঃ। ইভি
কেচিৎ।। সভ্যা । ভদ্যুক্তে ত্রি
সভ্যকারঃ পুং অবশ্যা মথৈতৎক্রেভব্য মিভি সভ্যাকরণ । ভৎ
পর্যাক্ষা । সভ্যাপন ২ সভ্যাক্রভিঃ ৩। ইভ্যমরঃ।। সভ্যাপনা ৪। ইভি বোপালিতঃ।।
সভ্যকারক্তঃ ত্রি অবশ্যা মনৈ
ভৎক্রেভব্য মিভি সভ্যা ক্রমা
কন্দেবং। বাবনা ইভি ভাষা।

্ইতি মিতাকরা ॥

মত্যতপাঃ পু॰ মুনিবিশেষঃ।

স তু পুরা ব্যাধ আসীৎ তত

স্তপঃ রুত্বা দুর্বাসসো বরেণ বেদাদি সর্বশাস্ত্রজ্ঞো ভূত্বা এতমানা বভূব। যথা। ত মন্থিশেয•ব্যাধন্ত ক্ষুধাদুর্বলতা॰ গত•।
উবাচ বেদাঃ সাঙ্গা স্তে সরহস্য
পদক্রমাঃ। ব্রন্ধবিদ্যা পুরাণানি
প্রত্যক্ষাণি ভবন্ত তে।। এব॰
প্রাদাদ্বর তস্য দুর্বাসা নাম চাকরোৎ। ভবান্ সত্যতপা নাম

সত্যনা

ঋষি রাদ্যো ভবিষ্যসি।। ইতি বারাহে সত্যত্তপ উপাখ্যান নামাধ্যায়ঃ।।

সত্যধৃতিঃ পু॰ ঋষিবিশেষঃ।

যথা। সর্বতন্ত দাযাদ মহল্যা

সংপ্রসূযতে। শতানন্দং ঋষিশ্রেষ্ঠং তস্যাপি সুমহাতপাঃ॥
তস্য সত্যধৃতি নাম মুনি বেদস্য পার্গঃ। ইতি মাৎস্যে ৪৮
অধ্যায়ঃ।

সত্যনারায়ণঃ পু॰ দেবতাবি-শেষঃ। সত্যপীর ইতি ভাষা। তস্য ব্ৰতক্থা ফ্থা। একদা মুনযঃ সর্বে সর্বলোকহিতে র-তাঃ। সুরম্যে নৈমিষারণ্যে গো-ষ্ঠী ঞ্চকু র্মনোরমাণ।। তত্রান্তরে মহাতেজা ব্যাসশিযো মহায-শাঃ। সুতঃ শিষ্যগণৈ যুক্তঃ স-মাষাতো হৃদ্নি সারন্।। তমা-যান্ত সমালোক্য সূত শাস্ত্রা-র্থপারগ । নেমুঃ সর্বে সমুখায সৌনকাদ্যা স্তপোধনাঃ।। সো-পি তান্ সহসা ভক্ত্যা মুনীন্ **পরমবৈষ্**বান্। ননাম দণ্ড-वर्ष्ट्रायो गर्दधर्याविषा द्रद्रशा व-त्रामतन महावृक्षि रेख फंटल मू-নিপু**ক্ষ**ৰিঃ। উবাস স সভা-

মধ্যে সর্বৈঃ শিষ্যগটেগ বৃতিঃ।। ভত্তোপবিষ্ট ভ সূত শৌনকো मूनिमखमः। तकाक्षिनि त्रिमा या-চ মুবাচ বিনযাম্বিভঃ॥ শৌনক উবাচ। মহর্যে সূত সর্বজ্ঞ কলি-কালে সমাগতে। কেনোপাযেন ভগবন্ হরিভক্তি ভক্কেগৃণা ।। কলৌ সর্বে ভবিষ্যম্ভি পাপকর্ম পরাষণাঃ। বেদবিদ্যা বিহীনা-শ্চ তেষা প্রেষঃ কথ ভবেৎ ॥ কলাব্য়গভপ্রাণা লোকাঃ স্বন্ধা-युष छथ। निर्धनाम्छ अविषाछि নানাপীড়া প্রপীডিতাঃ ৷ প্রযা-স্বাধ্য সুক্ত শাস্ত্রেষু আ্বতে দ্বিজ। তত্মাৎ কেপি করিষ্য-স্তি কলৌ ন সুক্রত জনাঃ॥ সু-ক্লতেষু বিনফেযু প্রবৃত্তে পাপক-ৰ্মণি। স্বৰণাঃ প্ৰলম্ণ সৰ্বে গ-भिया छि जुता नया है।। ऋत्र अटेम त-ল্পবিত্তৈ রল্পকালৈশ্চ সত্তম। যথা ভবেমহাপুণ্য তথা কথ্য সূত নঃ য় ষস্যোগদেশতঃ পুণ্যু পাপ বা ষরুতে জনঃ। স তদ্তাগী ভবে-ন্মৰ্ত্ত্য ইভি শান্ত্ৰেষু নিশ্চিত ।। - शूरगाथरमंगी ममयः देक छदेव मह ়বিবজ্জিতঃ। পাপায়ন বিরোধী চ চদারঃ কেশবোপমাঃ॥ জ্ঞান॰

সংশ্রীপ্য সংসারে যঃ পরেভ্যো न राष्ट्रि। खानवाशी इति खटेग প্রসন্ন ইব নেক্ষতে॥ জ্ঞানরত্নৈ-**म्ह तरेज्ञम्ह भत्रमर्खायक्रमतः ।** স জ্বেষঃ সুক্ষতি নূ নি॰ নরকপধ-রো হরিঃ৷৷ ত্রতেন তপদা কিয়া প্রাপ্যতে বাঞ্চিত ফল । সর্বণ তৎ শ্ৰোতু মিচ্ছামি কথষস্ব মহা-मटा। इत्यव मूनिभामृ व त्वम বেদাঙ্গপারগঃ। স্বদৃতে নছি ব-ক্তান্যো যত স্তু॰ ব্যাসশাসিতঃ ॥ সূত উবাচ। ধন্যোসি দ্বং মুনি-শ্রেষ্ঠ দ্ব মেব বৈষ্ণবাত্রণীঃ ৷ স্বতঃ ममञ्ज लाकामा हिङ वाङ्गि সর্বদা ৷৷ শৃণু শৌনক বক্ষ্যানি ষৎস্বয়া শ্রোতু মিষ্যতে। নার-प्तिरेनव भूकः मन् जगवान् कम-**लाপ**जिः॥ সুরর্ষবে य**रे**थवारु छ९ **मृ**गूद्र मगाहिजः। 🖚। একদা না-त्रापा रयागी भन्नान् शहकाण्क्या ॥ পर्याप्टेन् विविधान् त्लाकान् य-র্তালোক মুপাগমৎ। তত্র দৃষ্টা জনাঃ সর্বে নানা দুঃখ সমন্বিতাঃ ৷ নানা বোনি সমুৎপন্নাঃ ক্লি-শ্যস্তে পাপকর্ম্মভিঃ। কেনোপা-ষেন চৈতেষাণ দুঃখনাশো ভ বেৎ क्षवः॥ ইতি मश्चित्र मनमा

বিক্লোক গত স্তদা। তত্ত্ব না-রাষণ দেব শক্তবর্গ চত্তু জগা শৠ চক্রধর দেব বনমালা বি-ज्यकः। मृक्षा छः स्मवरमस्य भः खाजूः नमूशठकत्य।। माद्रम উবাচ। নম স্তে বাল্মনোতীত ৰূপা বানন্তশক্তবে। আদি ম-भाखशैनाय निर्श्वाय खनाय-নে।। সর্বেষা মাদিভূতাৰ ভক্তা-না মার্ত্তিনাশিনে শ্রুত্বা স্তোত্ত ততো বিষ্ণু নারদ প্রত্যভাষত ॥ | শ্ৰীভগবানুবাচ। কিমৰ্থ মাগতো-সি স্থ কিন্তে মনসি বর্ত্তে। ক-থ্যস্ব মহাভাগ তৎ সর্বণ কথ্যা-মি তে।। নারদ উবাচ। মর্ত্য-লোকে জনাঃ সৰ্বে নামাশোক সমন্বিতাঃ। নানা যোনি সমু**ৎ**-পদাঃ পচ্যান্তে পাপকর্মণা ।। তৎ কথ শমবেশাথ লঘূপাযেন ত-দ্বদ। শ্রোতু নিচ্ছানি তৎ সর্বণ রুপান্তি যদি তে মযি ॥ 🕮 ভগ-বানুবাচ। সাধু পৃষ্ট ছয়া বৎস-लाकान् अरुका गुगा। यू कृषा মুচ্যতে মোহাৎ তৎ শৃণুষ্ব বদা-মি তে ৷৷ ত্ৰত মন্তি মহাপুণ্য স্বৰ্গে চ ভূবি দুর্লক্ত। তব ক্ষেহাম্মযা বিপ্রপ্রকাশীক্রিষতে ২ধুনা ৷৷ঞা

সত্যনারাবগরৈয়তদ্ভত সমাধি-খানতঃ। হয়। যদ্য: সুখ ফুকু। পরত্র মোক্ষ মালভেৎ।। তৎ 🚁 "ত্বা ভগবদ্বাক্যণ নারদঃ পুন রব্র-चौ९। कि॰ कल॰ कि॰ विधान**क** ক্লভ• কেনেভি বা ব্ৰভ• ৷৷ তৎ-সর্বণ বিস্তরাদ্বহি কদা কার্য্যণ হি তদ্বত । গ্রীভগবান্বাচ। দুঃখ **र्लाकांक्रि न्यमः धन शमा विव-**র্দ্ধনণ। সৌভাগ্য সন্ততিকরণ गर्वे विकथ्थमः ॥ यित्रन् क-স্মিন্ দিনে মর্ত্যো ভক্তি একা সমন্বিতঃ। সত্যনারাষণ দেবং যজেতুফো নিশানুখে॥ বান্ধবৈ ৰ্ত্ৰান্ধণৈ শৈচৰ সহিতো ধৰ্ম্মতৎ-পরঃ। নৈবেদ্য॰ ভক্তিতো দদ্যাৎ मशामः ভका मूखमः॥ त्रसाकनः যৃত ক্ষীর গোধ্যস্য চ চূর্ক। অভাবে শালিচূর্ণয়া শর্করায়া শ্ভড• তথা।। সপাদ সৰ্বভক্ষ্যাবি একীক্বত্য নিবেদযেৎ। বিপ্রায দক্ষিণা দদ্যাৎ কথা প্রেত্বা জ-নৈঃ সহ।। তত*চ বন্ধুভিঃ সার্দ্ধ• বিপ্ৰেভ্যঃ প্ৰতিপাদযন্ ৷ প্ৰসাদ• ভক্ষণেৎ ভক্ত্যা নৃত্য গীতাদিক চরেৎ ৷৷ ততঃ স্তত্ত্বা গৃহ• গছেৎ ষ ত্যনারাষণ স্মরন্। এবং হতে

সভ্যনা*

यनुष्राानाः वाक्षामिकि छदि গ্রুবেণা বিশেষতঃ কলিষুগে না ন্যোপাষো হস্তি ভূতলে। কথা ষস্য প্রবক্ষ্যামি ক্লতক্লত্যো ভবেৎ विजः॥ 🛊 ॥ कन्छि कानी भूत्र গ্রামে আসীদিপ্রশ্চ নির্দ্ধনঃ। কু ধা তৃক্ষাসলো ভূষা সতভং ভূম-তে মহীণা৷ দুঃখিত বান্ধণ দূ-कु। जगवान् जाना निधायः। त्का-ব্ৰাহ্মণৰূপঃ সন্পথ্ৰছ দিজ মা-দরাৎ।। কিমর্থ ভুসসে বিপ্র-মহী॰ রূৎস্নাঞ্চ দুঃখিতঃ। তৎ-সৰ্বণ শ্ৰোতু মিচ্ছামি কথ্যতাণ यि द्वाहरू ॥ विश्व छेवाह । ত্রান্ধণোতিদরিজো ২হণ ভিন্দা র্থ ভূমতে মহী। উপাষ যদি জানাসি ক্লপ্যা কথ্য প্রভো ।। বৃদ্ধ উবাচ। সত্যনারায়ণো দে-वा दक्षिकार्थकन श्राप्तः। जमा-ৰু দিজশাৰ্দ্যল জৰুষ বত মুত্তমণ া যৎ ক্বন্ত। সৰ্বদৃঃখেভ্যো মুক্তো ত্বতি মানবঃ। বিধানঞ্বত-নাসা বিপ্রাযাভাষ্য স্বত্নতঃ ম ত্যনারাযণো বৃদ্ধ স্তব্রৈবাস্তর-ীয়ত। ততঃ প্রাতঃ করিষ্যামি তি মনসি চিন্তিত ॥ ইতি **স শ্ব্য বিশ্রো ২সৌ রাত্রো নি**-

ডা॰ ন চাৰভৎ। ততঃ প্ৰতি সমুখাৰ সভ্যনারাষণত্রত ।। 🏕 রিষ্যে ২হঞ্ সঙ্কা ভিকার্থ মগ-मिष्कः। जिल्लास्य पित्न विश्वः প্রচুর প্রাপ্তবান্ধন গ তেনেব বন্ধুভিঃ দাৰ্দ্ধণ সভ্যস্য ব্ৰভ মাচ-द्ति । मर्बमूः थ विनिर्म्मूकः मर्बः সম্পৎসমশ্বিতঃ॥ বভূব স বিজ শ্ৰেষ্ঠো ব্ৰত্যাস্য প্ৰভাবতঃ 1 ততঃ প্রভৃতি কালঞ্ মাসি মাসি ব্রতং ক্রতং ৷৷ সূত উবাচ ৷ এবং নারাযণসোদ ভ্ত ক্যা দি-জোত্তমঃ। সর্বপাপ বিনিমু জ্বেন দুর্লভি মোক মাপুষাৎ ৷৷ বতক তদ্যথা বিপ্রঃ পৃথিব্যা সঞ্জিষ্য-তি। তদৈতৎ সৰ্বদুঃখণ হি নরা-় পাঞ্চ বিনশ্যতি ।। এবং নারায-**(**नर्ताक॰ नात्रमाय महाज्ञात । ম্যাপি কথিত বিপ্ৰ কিমন্যৎ কথ্যামি তে।। ইতি প্রীক্ষমপু-রাণে রেবাখণ্ডে সত্যনারাষণ विश्रमः वादमा नाम ३ व्यक्षायः ॥ 🗱।। শৌনক উবাচ। তত্মাদিপ্র ত্রত কেন পৃথিব্যাণ চরিত মুনে । তৎ দৰ্ব॰ শ্ৰোতু মিচ্ছাৰি শ্ৰদ্ধা-স্মাক প্ৰজায়তে।। সত উবাচ । मृन्ध यून सः नर्द उचारात्वन क्रेड जूरि। এकमा म विजयता ষথাবিতৰ বিস্তব্রে ॥ বন্ধুভিঃ শ্বজনেঃ সাৰ্শ্ধণ ব্ৰতণ কৰে সমু-भाउता अजित्यिक काल जू कार्ष्टकजूः नर्गाणिः ॥ विश्व কাষ্ঠঞ্জ সংস্থাপ্য বিপ্রসা মন্দিরং ষ্টো। ভৃক্ষা পীডিতাত্মা স विश्वः मृक्षा उथाविशः॥ श्रानिशः তা দিজপ্রেষ্ঠ কিমিদ ক্রিয়তে খ্যা। কতে কি॰ ফল মাপ্নোতি বিস্তর্গদদ মে প্রভোগ বিপ্র উ বাঁচ ৷ সভানারায়ণস্যেদ• ব্রত• नर्दिकाष्ट्रथमः। पृथ्यं मार्गामि শ্মন সৰ্বত্ৰ বিজ্ঞগপ্ৰদ ।৷ ধনা-मि मञ्जिकित मर्दिया भौत्रि-**७**थन । यमा श्रमानात्म मर्बः र्यन शानाापिकः मह्य ॥ ७७ ख **দ উভ•** জ্ঞাত্বা কাষ্ট্ৰকৰ্ত্তাতি-হর্ষিতঃ। পপৌ জল প্রসাদক উ্জু তমগর যথে।। সত্যনা क्रीयंग एपर हिस्स्यन् स्त्रियान-भंग को छै॰ विक्वीय नगरत था-भारक होना यक्षन ॥ (कटेनव नेडोटेंपवना खंड यहा कंदरीया-रं। रैंछि मंक्षिका येनेमा कार्छ॰ र्राष्ट्री जू मर्ख्यके ।। जुनी में नेनदिन ক্ষমে ধনিনা যত্র সংস্থিতিঃ।

উদ্দিনে কাষ্ঠমূল্যঞ্চ দিগুণ প্রা-खवानरमो ॥ ७७: अमन्नरामयः मुशक्क पत्नी कल । मर्क ताक यु-छ पूक्ष भाधूममा ह हुर्वक ॥ প্ৰত্যেকন্ত সপাদক গৃহীত্বা গৃহ-মাষ্থো। ভতে। বস্ধুন্ সমাহৃষ চকার বিধিনা ব্রত্ত ৷৷ তদ্ভুতস্য প্রসাদেন ধন পুত্রান্বিতো ২ভবৎ । ইহ লোকে সুখ ভুক্তা চান্তে मठाभूतः रायो।। इंडि श्रीकन পুরাণে রেবাখণ্ডে সভ্যনারাযণ কথা বিপ্র কান্ঠকেতুসণবাদে৷ ২ विधायः॥ 🛊॥ मृञ উवाह। পू-न तमा अवकामि मृग्ध मूनि-मखमाः। जानीमूकामूरशा नाम নৃপতি ৰ্লিনাম্বরঃ।। জিতেন্দ্রি-ষঃ সত্যবাদী ষযৌ দেবালয়ণ প্র-**তি। मिटन मिटन धन॰ मन्न। विका-**म् मट्डायरय मूरीः ॥ ভार्या তদ্য প্রমুগ্ধা চ সরোজবদনা স-তী। সন্মিতাস্যা শরদিন্দুণ সক-টাক্ষণ চ বিভূতী।। কাঞ্চীঞ্চ বি-ভূতী শ্যামা মালতীমাল্যভূষিতা । ভর্জশীলা ব্রতং সত্যং সিম্ব-তীরে ২করোম্মনে ।। এতস্মিন্ন-ন্তরে তত্র সাধুঃ কোপি সমাগতঃ । वार्षिकार्थः वरुषटेन त्रज्ञादेगः

পরিপূরিতঃ। নাবং সংস্থাপ্য ত-ত্তীরে জগাম তত্তট প্রতি ॥ मृक्षे। তত बठः मगाक् भथक् विनयात्रिजः। नाधू ऋवाह। कि-निम॰ मक्राय त्राक्षन् छक्तियूक्क-ন চেতসা।। প্রকাশ সরু তৎ-সৰ্ব শ্ৰোতৃ মিচ্ছামি সম্পুতি। রাজোবাচ। পূজন জিযতে সা-ধো বিষ্ণো রতুলতেজসঃ। ব্রত-क यक्तिः मार्कः भूखानि वाश्व-ৰে মধা ৷৷ প্ৰত্যুৱাচ ততো নম্বা রাজান মধুর বচঃ। সত্য কথ-ৰ মে রাজন্ ত্রত মেতৎ করে ম্যহ ।। ম্মাপি সম্ভতি মান্তি সত্য মেতৎ সূত্রত । ততা নিবৃত্য বাণিজ্যাৎ সানন্দ গৃহ-মাগতঃ।। ভাৰ্য্যাধৈ কথিত সৰ্ব॰ ব্ৰতঞ্চ সন্ততিপ্ৰদ । তদা ব্ৰত করিষ্যামি যদা মে সম্ভতি র্ভবেৎ ।। ষৎকিঞ্চিদ্দিবসে তস্য ভার্য্য। **बी**नावजी मजी। गर्डयूकानम-চিত্তা ভবদ্ধর্মপরাষণা।। পূর্ণে গৰ্ৱে ততো জাতা বালিকা চাতি-নিশ্মল।। দিনে দিনে বৰ্দ্ধমান। শুক্লপক্ষে যথা শশী।। ততে। ব-ণিক্সুতাযাশ্চ জাতকর্মাদিকঞ্চ রন্। নায়া কলাবতী চেতি ভন্না-

মকরণ ক্লতে।। ততো লীলাবতী প্রাছ স্বামিন মধুর বচঃ। ন ক-রোবি কিমর্থয়া পুরা যচ্চ প্রতি-শ্রুত ।। বিবাহসমধে ২প্যস্যাঃ করিব্যামি ব্রত• প্রিষে। ইতি ভার্য্যা॰ সমাস্বাস্য জগাম নগর॰ প্রতি ৷৷ ততঃ কলাবতী কন্যা ব-ৰ্দ্ধিতা পিতৃবেশ্মনি। দৃষ্ট্বা কন্যাণ ততঃ সাধু র্নগরে বন্ধুভিঃ সহ।। মন্ত্রবিদ্বা ক্রতং দূতং প্রেরবিদ্বা म धर्मावि९। विवाहार्थक कन्याया বর শেষ্ঠ বিচার্যন্ ৷৷ তেনা-জ্ঞপ্তশ্চ দূতো ২সৌ কাঞ্চনণ ন-গর॰ ষযৌ। তন্মাদেক॰ বণিক্-পুত্রু সমাদাযাগতো হি সঃ ॥ *দ্*ख्रे। ७॰ সুन्दतः वाल॰ विवर्भू-ল্র॰ গুণাম্বিত॰। জ্ঞাতিভি র্বন্ধুভিঃ সার্দ্ধণ পরিতুফেন চেতসা॥ দ-ত্তবান সাধু রাহূ্য কন্যাণ বিধি-বিধানভঃ। ততো ভাগ্যবশাত্তে-ন বিশৃত এত মৃত্যা। বিবাহ সমযে ২প্যস্যা স্তেন রুফৌ ২ভ-বদ্বিভূঃ। ততঃ কালেন কিযতা নিজধর্মবিশারদঃ । বাণিজ্যা-র্থ• গতঃ শীঘু৽ যামাত্রা সহিতো বণিক্। রত্নসারপুরে রম্যে গড়া-निस्निमेगिणः॥ वानिकाः म्रकः

তে সাধু ৰ্যামাত্ৰা শ্ৰীমতা সহ । পুরী নির্মায নগরে চন্দ্রকেতে। নৃ পদ্য চ।। এত সিমেব কালে তু সভ্যনারায়ণঃ প্রভুঃ। ভুফপ্রতি জ্ঞ মালোক্য শাপণ তক্ষৈ প্রদত্ত-বান্।। অদ্য প্রভৃতি কালঞ্চ মহা--দুঃখ তবিষ্যতি। তন্মিমেৰ দিনে রাজ্ঞোধন মাদায তক্ষরঃ ৷৷ তে-নৈব বৰ্জনা ষাতঃ পৃষ্ঠদেশং বি-लाकरन्। छৎপশ्চाकावकाम् দূতান্ দৃষ্টা ভীতেন চেতসা ।। ধন সংস্থাপ্য তত্ত্বৈব গতঃ শীষু মলফিতঃ। ততো দূতাঃ সমাষা-**छा यळार अ**ञ्जलना विवक् ॥ मृ-ষ্ট্ৰা নৃপধন তত্ৰ বদ্ধা দূতা বণিক্ সূতো। হর্ষযুক্তা ধাবমানা উচু न् शमभीशबः॥ चऋतो को म-यानीटी विलाकाङाभय अ-ভো৷ তে নৃপাজ্ঞা সমাদাষ দৃঢ় বদ্ধা তু তাবুভৌ॥ স্থাপিতো षो यहामूटर्ग काजाशादत श्विठा-द्रयन्। मृञ উবাচ। মাयया म-छारा विज्ञान व्यव्यक्ष व्या विष्टा তত স্তবো ধনি সচ গৃহীত চ-দ্রকেতুনা।। তচ্ছাপাচ্চ তযো র্গেহে ভার্য্যা চ দুখিতাভবৎ । চৌরেণাপহত সর্বণ গৃহে ফচ

হ্হিত ধন ।। আধি ধ্যাধি সমায়ু-ক্তা কুৎপিপাসাতিপীডিতা। অ-মচিন্তাপরা ভূমা ভূমতে চ গৃহে गृह्य। ७७: कनावंठी कना। বভ্রাম প্রতিবাসরে। একস্মিন্ দিবসে রাত্তৌ ক্ষুধার্তা দিজসন্দি-রে ৷৷ গদ্বাপশ্যদ্ভুত তত্র সত্য-নারাষণস্য সা। উপবিশ্য কথা জ্জা বর প্রার্থ বর্তী মূদা ।। প্র-সাদ ভক্ত কৃত্ব। যথৌ রাত্রৌ গৃহ॰ প্ৰতি। ততো লীলাবতী ক্ন্যাণ ভৎস্থামাস তাণ ভূশণ ॥ পুত্রি রাত্রে স্থিত। সত্র কিস্তে মনসি বৰ্ত্তে। দিজালযে বত মাত দৃষ্টি বাঞ্ছিতসিদ্ধিদ ।। তৎ শ্ৰদ্ধা কন্যকাবাক্যুণ ব্ৰত্ত কর্ত্তু সমুদ্যতা। সমুতা হাত্রণি-গ্ভার্য্যা সভ্যনারাযণস্ট চা ব্ৰত চক্ৰে চ বৈ সাধী বন্ধুভিঃ স্বজনৈঃ সহ। ভর্ত্ত জামাতরৌ ক্ষিপ্র নাগচ্ছেতা॰ ননাশ্রম॰।। ইতি দেষ বর যাচে সত্যদেব পুনঃপুনঃ। অপরাবম্ব ভর্তু শেঁ জামাতৃঃ कम्र गर्मि ॥ बर्जन তস্যা স্তব্টো ২সৌ সত্যনারায-ণঃ প্রভূঃ। দর্শবামাস স্বপ্ন হি इन्नरक्षु नृत्याख्य । विमाती

মোচয প্রাত র্বণিজৌ নৃপসক্তম। দেয় ধনঞ্চ তৎসর্ব বিধিনা দ্বি-গুণীক্তে ।। নো চেৎ স্বাণ নাশ-যিষ্যামি সরাজ্য ধন পুত্রকং। এ-ব মাভাষ্য রাজান ধ্যানগম্যো হভবৎ প্রভুং॥ ততঃ প্রভা**তস**-মযে রাজা চ স্বজ্ঞ নেঃ সহ। উ-পবিশ্য সভামধ্যে প্রাহ দূতজন প্রতি। বন্ধৌ মহাজনৌ শীযু মোচযধ্ব বিবিক্সুতৌ। ইতি রা-ভেল বচঃ প্রুত্বা মোচ্যিত্বা মহা-জনो।। भगभीय नृशमाख 'প্রোচুশ্চ বিনযায়িতাঃ। আনী-তৌ দ্বৌ বণিক্পুক্রৌ মুক্জৌ নি-গড বন্ধনাথা৷ ততো মহাজনৌ নত্ব। চন্দ্রকেতু নৃপোত্তম । স্মৃত্ব। **চ পূ**र्ववृज्ञा**न्छ॰ विश्वशास्त्र विश्व**-লো।। রাজা বণিক্সুতৌ বী-ক্ষ্য প্রোবাচ সাদর কেঃ। দৈ-বাৎ প্রাপ্ত মহৎকটণ ইদানীণ नाञ्चि ए छय ।। इमानी त्यव मू-ক্ত স্তুণ ক্রকর্মাদিক ধর। ততে। নৃপবরঃ শ্রীমান্ স্বর্ণ রত্ন বিভূষণৈঃ ।। অলঙ্ভ্য বণিক্পুত্রো বচসা-প্রীণযভূশ। পুরা নীতঞ্ব যদুব্য षि গুণীক্ষত্য দক্তবান্।। প্রোবাচ তৌ ততো রাজা গচ্ছ সাধো নি-

জাশ্রমণ। রাজান প্রণিপত্যাহ গন্তব্য॰ ত্বৎপ্রসাদতঃ।। যাত্রা॰ ক্তবা ততঃ সাধু শাঙ্গলাচার পূ-ৰিকাণ। আফলেভ্যোধন দন্ধা महर्र्या नगतः यर्यो ॥ कियमृद्र गटा मार्था मठामातायनः अजूः । জিজ্ঞাসা॰ ক্লভবান্ সাধে। কি মস্তি তরণো তব।। ততো মহা-জনে৷ মত্তো হেল্যা চ প্রহ্ম্য চ । কথ পৃচ্চিসি ভো দণ্ডিন্ মুডা। কি॰ লব্ধু মিছসি ৷৷ লভা পত্ৰা-**मिकरिक्ष्य वर्ज्जर्ज ज्ज्ञर्ली मम 1** নিষ্ঠুরঞ্চ ৰচঃ শ্রুত্বা সত্যু ভবতু-তে বচং।। এব মৃক্তা গতঃ শীঘু॰ দণ্ডী তস্য সনীপতঃ। কিষদূরে ততো গদ্বা স্থিতঃ সিন্ধুসমীপতঃ ॥ গতে দণ্ডিনি সাধুশ্চ ক্লভনি-ভ্যক্রিষ স্তদা। উথিতা[,] তর্নী मृक्षे विषय शत्य यदा।। **ल**ा পত্রাদিক দৃষ্ট্বা মূচ্ছিতো ন্যপ-**उ**ष्ट्रि । लक्षेत्र रखा दिवर्भूख স্তত শ্চিস্তাপরো ২ভবৎ ৷৷ শ্ব-শুর দুহিতুঃ কান্ডো বচনঞ্চেদ মত্রবীৎ। জামাজোবাচ। কিম-র্থ॰ সূত্রতে শোক॰ শাপাদেতচ্চ দণ্ডিনঃ। শক্যতে তেন সর্ব° হি কর্ত্তু॰ হর্ত্তু॰ ন সংশযঃ॥ তত স্তচ্ছ-

त्रनः वादमा वाञ्चिलादर्ग ভविष्यः তি। জাৰাতুশ্চ বচঃ শ্ৰুদ্বা তৎ-সকাশ গত স্তদা৷৷ দৃষ্ট্বাচ দ ন্তিন জ্বক্ত্যা নত্বা প্রোবাচ সা-দর । ক্ষমস্ব চাপরাধ । মে যদুক্ত। छव मिरिशो।। स्या मूत्राञ्चना प्ति गुरक्षा २ इ॰ छव गायसा । ষদুক্ত ভন্নচো নাথ দুষ্ট নে ক্ষয় মর্হসি।। বতঃ পর্ক্তাঃ সর্বে ক मानातः हि नाधवः। भूनः भून-ম্ভতো নম্বা রুরোদ শোকবিহ্ব-**णः ॥ ত** মুবাচ ততো দণ্ডী বিল-পন্ত বিলোক্য চ। মারোদীঃ শৃণু মে বাক্য মমপূজা পরাত্মখঃ ।। या यवछाय पूर्व्एक लक्षः पूःथः সুহ শুহঃ। তৎ শ্ৰুত্বা ভগবদ্বাক্য• खिष्टि॰ कर्जु॰ ममूमाण्डः॥ माधु-क्रवाह। ज्ञायारमाहिजाः मर्द जनामा जिमित्वोकमः। न का-**নন্তি গুণ ৰূপণ ত**বাশ্চৰ্য্য মিদণ প্রভো ৷৷ মূঢ়ো ২হ ড্বা কথ জানে মোহিত স্তব মাষকা। প্র-**সীদ পূজ**যিষ্যামি **ব**থাবিভবিস্ত-রৈঃ।। পুশ্র বিত্তঞ্ মচিত পা-হি মা॰ শরণাগত•। শ্রুত্বা ভক্তি-যুত্ত বাক্য পরিতৃষ্টো জনার্দ-

বান্তরধীযত। ততোসৌ নাব মারুহু দৃষ্টা রত্নাদিপুরিতা ।। क्रथमा मठारावमा यथकनः वा-क्षिष्ठ॰ मम । हेव्युक्तृ। सकरेनः मार्कः शृङ्गाः कृषा यथाविधि ॥ হর্ষেণ মহতা সাধুঃ প্রবাণ চাক-द्धा< षिकः। नावः मः<
। नावः मः বেগেন স্বদেশ মগমত্তদা ৷৷ হতো জামাতর প্রাহ পশ্য বৎস পুরী यम। पूरुक थ्यत्रयामाम निष्कः বিত্তস্য রক্ষকং।৷ ততো ২সৌ নগর গন্ধা সাধুভার্য্যাণ বিলো-ক্য চ। উবাচ বাঞ্চিত বাক্য नषा वक्ताक्षिण उपा।। निकटि নগরস্যৈব জামাত্রা সহিতো ব-ণিক্৷ আগতৌ বন্ধুবৈর্গেশ্চ ধনৈ ৰ্বন্থবিধৈ স্তথা।। শ্ৰুত্বা দূত মুখা-দ্বাক্য মহাহর্ষসূতা সতী। সত্য-পূজা• ততঃ ক্লম্বা প্রোবাচ তন্-জা প্রতি।। ব্রজানি শীয় মাগচ্ছ সাধুসন্দর্শনাষ চ। ইতি মাতৃবচঃ শ্ৰেষা বত ক্ষমা সমাপ্য চ।। প্ৰ-**সাদ॰ সংপ**রিত্যজ্য গতা সা চ পতি•প্রতি। তেন রুফ্টঃ সত্যদে-বো ভর্তার• তরণী স্তথা॥ স•হৃত্য চ ধনৈঃ সার্দ্ধণ জলে তত্মিন্ সম-প্ৰথ৷ ততঃ কলাবতীকন্যানা

लाका बिका शिका भिक्त মহতা তত্ত্ব রুদন্তী চাপতভূবি। मृक्षे। তথাविधाः कन्। न मृक्षे। তৎপতি তরী ৷৷ ভীতেন মহ-তा नाशुः कियान्धर्या मिष् यह्द । বিচিন্ত্যমানা স্তে সর্কে বভূবু স্তরিবাহকাঃ।। ততো লীলাব-তী সাধী দৃষ্টৃ। তদ্বিহ্বলা সতী। বিললাপাতিদুংখেন ভর্তার ঞেদ মত্রবীৎ।। ইদানী নৌক্ষাস।-क्ष ममृत्भा। श्जूमलिक्क । न জানে কেন দৈবেন হেল্যা বা পহারিত ৷৷ সত্যদেবস্য মাহা-ত্ম্যুণ কিণ জ্ঞাতুণ ন হি শক্যতে । ইত্যুক্ত্বা বিললাপাথ তত্ৰস্থাস্ব-জনৈঃ সহ।। ততো লীলাবতী-কন্যা॰ ক্রোডে হ্বন্থা রুরোদ চ। ততঃ কলাবতীকন্যা নক্টে স্বামি-নি দুঃখিত।।। গৃহীয়া পাদুকা॰ তস্য অনুগন্ত মনো দধে। কন্যা-ষা শ্চরিত দৃষ্টা সভার্য্যঃ সুজ্জ-নো বণিক্।। অতিশোকেন সন্ত-প্ত শ্চিন্তৰামাস ধৰ্মবিৎ। হুতো হি সত্যদেবেন জামাতা সত্য-মাযযা।। সত্যপূজা করিষ্যামি যথাবিভববিস্তিরৈঃ। ইতি সর্বা-ন্ সমাহৃষ কথিতঞ্চ মনোর্থণ।৷

मचा ह मखबद्धामा मजातमय भू-नः भूनः। ७७ खरुः मजारम्दर्भ गगनाष्ट्रिक अजि। जगाम य-**চন ५७५॰ देनदिना भवमना ह।** আগজা স্বামিন ডফু মতো ২-मृत्मा १७व९ श्रजुः॥ गृरः ११-ন্ধা প্ৰসাদঞ্চ ভুক্ত্বা চাৰাতি সা পুনঃ। লক্কভর্তৃসুখা সাধো ভ-বিষ্যতিন সংশ্বঃ ৷৷ ততশ্চ প্রা-ণদ বাক্য শ্ৰেম্বা গগণ মণ্ডলাৎ । ক্ষিপ্রণ তদা গৃহণ গদ্বা প্রসাদ• প্রতিভুজ্য চা৷ অপশাৎ পুন রাগত্য পতি নাব জনৈঃ সহ । ७७: कमावठी वृक्षी জगाम পি তর॰ প্রতি।। এহি তাত গৃহ• ষাহি বিলয়ণ স্কুষে কথণ। তৎ শ্ৰুত্বা কন্যকা বাক্য সন্তুষ্টো ২ভূদ্বণিক্সুতঃ ।। পূজন॰ সত্য-**एत्वमा क्रमा विधिविधानणः ।** थटेन वंसूगटेनः मार्कः क्रगाम নিজমন্দির•া৷ পৌর্ণমাস্যাঞ্চ স•-ক্রাস্ত্যাণ পূজাণ ক্রন্থা যথাবিধি ৷ रेर लात्क मूथ ज़ुकुा ठारख সত্যপুর যযৌ।। ইতি এক্ত পুরাণে রেবাখণ্ডে শ্রীসত্যনারা-ষণকথাষা ৰণিক্ সাধু মোক্ষ-वर्गता नाम ७ ज्यशायः ॥ 🟶 ॥

সূত উবাচ। অথ চান্যৎ প্রব ক্ষ্যামি শৃণুধ্ব মুনিসত্তমাঃ। আ-সীদ্বংশধজো রাজা প্রজাপালন তৎপরঃ ।। প্রসাদ॰ সত্যদেবস ত্যক্ত্বা দুঃখ মবাপ সঃ। একদা স বন গন্ধা হন্ধা চ বিবিধান্ মৃগান ৷৷ আগত্য বটমূলে চ দৃষ্টা স ত্যস্য পূজন । গোপাঃ দৰ্বতি সম্বন্ধী ভক্তিযুক্তাঃ স্বান্ধবাঃ। রাজা দৃষ্ট্যা তু দর্পেণ নাগতে ন ননাম সং। ততো গোপগণাঃ मर्दि अनामः नृशनिविधी। मः স্থাপ্য পুন রাগত্য ভুক্তাঃ সর্বে ষ্থেন্সিত । ততঃ প্রসাদ । সণ্ড্য -জ্য রাজ। দুঃখ মবাপ সং॥ তস্য পুত্রশত নফ ধন ধান্যাদিকঞ্চ ষৎ। সভ্যদেবেন তৎ সর্ব না-শিত মম নিশ্চিত ৷৷ অত স্ত-ত্রৈব গচ্ছামি ষত্র দেবস্য পূজ-না মনসৈতি বিনিশ্চিত্য যথে গোপাল সন্নিধিণা ভতো ২সৌ সত্যদেবস্য পূজা॰ গোপগণৈঃ সহ। ভজ্জি শ্রদ্ধান্বিতো ভূত্বা **हकात** विधिवज्ञृभः। मञाराव-প্রসাদেন ধন পুল্রাবিতাে ২ভ-वर । इंड लाक मूथ जुका চাত্তে বিষ্ণুপূর ययो।। य ইদ॰

স্বরুতে সত্যব্রত পর্মদুর্লভ । শৃণোতি চ কথা পুণ্যা ভুক্তি मुक्कि कलक्षमाः॥ धन धानगामि-কে তদ্য ভবেৎ সত্য প্রসাদতঃ ৷ দরিজো লভতে বিত্তণ বন্ধো মৃ-চ্যেত বন্ধনাৎ।। ভীতো ভযাৎ প্রামুচ্যেত সত্য মেতলসংশ্যঃ 1 ঈঙ্গিতঞ্চ ফলণ ভুক্ত্বা চান্তে সত্য-পুর ব্রজেৎ গাইতি বঃ কথিত বিপ্রাঃ সত্যনারাষণত্রত ৷ যুৎ **ক্ৰত্বা সৰ্বদুঃখেভ্যো সু**ক্তো ভবতি মানৰঃ।। বিশেষতঃ কলিযুগে মত্য পূজা কথা ফল । সত্য-নারাষণ কেচিৎ সত্যদেব তথা পরে।। নানা ৰূপধরে। ভূত্বা স-ৰ্বেষা মীপ্সিভপ্ৰদঃ। ভবিষ্যতি কলৌ সভ্যত্ৰতৰূপী সনাভনঃ॥ ষ ইদ॰ পঠতে নিত্যু শূণোতি মুনিসত্তমাঃ। তস্য নশ্যন্তি পা-পানি সত্যদেব প্রসাদতঃ ৷৷ ইতি শ্রীক্ষনপুরাণে রেবাখণ্ডে সত্য-নারায়ণ কথা নাম ৪ অধ্যায়ঃ ।। 🟶 ।। ইতি শ্রীসত্যনারাযণত্রত-কথা সমাপ্তা। ক্ষচিৎপুস্তকে **অधायनाय नाखि। क्रिक छ-**বিষ্যপুরাণে ইতি ক্লত্বা এতৎকথা লিখিতা ৷৷ঞ্চা৷ অথ সত্যনারায়ণ-

পূজাপদ্ধতিঃ। আদৌ স্বস্তিবা-চন পূর্বক॰ সঙ্গল স্বাণ । অ-**(माठाामि अम्किटिशी द्रांद्र्वी** অমুকগোত্র শ্রীঅমুকদেবশর্মা অমুককামঃ গণেশাদি দেবত। পূজা পূৰ্বক শ্ৰীসত্যনারাযণ পূ-জন কথা শ্রবণ মহ॰ করিষ্যে। ভতঃ সূক্তণ পঠেৎ। তত আসন শুদ্যাদিক কৃষা গণেশাদি দে-বতা নবগ্ৰহ দিকপালান্ পূজ-ষেৎ। লক্ষী সরস্বতী আদি-পুরুষ অনাদিপুরুষ শ্রীরাম ল ন্ধণ পূজাণ ক্রত্বা যব ভিলেঃ স **छानातायव मावाह्रयः। ध्वव** ব্যাহ্নতীঃ সমুচ্চার্য্য ভগবন্সভ্য-नातायन देशभक्त इंशमक्त देर তিষ্ঠ ইহতিষ্ঠ মম পূজাণ পৃহাণ ইত্যাদিনা আবছ পুলা গৃহী-चा शाराय । शाराय मजा ध ণাতীত গুণত্রষ সমন্বিত। বো-কনাথ ত্রিলোকেশ পীতাম্বর-**४त्र॰ इति॰ ॥ इन्हीत्रत्रनलम्याम॰** শুখ চক্র গদাধর । নারাবণ চতুৰাহণ শ্ৰীবৎসপদভূষিত। ।। গোবিন্দ গোঙ্গলানন্দ জগতঃ পিতর গুরু। ইতি ধ্যাত্ম এতৎ পাদ্যু সত্যনাৱায্ণাৰ নমঃ ৷

অৰ্থ মন্ত্ৰস্ত ৷ ব্যক্তাব্যক্ত স্বৰা^ৰ পাষ হৃষীকপত্তে নমঃ। মধা নিবেদিতো ভক্ত্যা অর্ঘো ২য় প্রতিগৃহতা ।৷ এয়ো ২র্বঃ শ্রী-मठानातायगाय नमः। भूष्णा-क्षिनि॰ गृशैषा। नम एउ विश्व-ৰূপায় শঙ্খ চক্ৰধরাষ চ। পদ্ম-नाजाय (मवाय श्रमीक्शाज्य নমঃ ৷৷ নমো ২নন্ত স্বৰূপায় ত্রিগুণাত্ম বিভাসিনে। নৈবেদ্য गृशिषा। प्रतीयः वञ्ज भाविन তুভ্য মেব সমর্গিত । গৃহাণ সুমু-খো ভূষা প্রসীদ পুরুষোত্তম।। ততো অঞ্চলিং বদ্ধা পঠেছা অচ্যুত পুশুরীকাক নৃদিংহণ रिष्णामृष्यः। स्यीरकमः कगः হ্নাথ বাগীশ বরদাষক ৷৷ গুণ-ত্রয়ণ গুণাতীত গোবিন্দণ গরু-**७४कः। जनार्मनः जनानमः** জানকীবলভ জ্যা প্রথমামি সদা সভ্যনারাষ্ণ মতঃ পর্ । দুর্গমে বিষমে খোরে শত্রুভিঃ পদিপীডিতে।। বিবিধাপৎসূ मूरकेषु **ज्ञाताइं** शि यक्तर । নামান্যেতানি সঙ্কীৰ্ত্ত্য ঈপ্সিত क्न मान्यार ॥ मजानातायन দেব বন্দেহ কামদ শুভা ৷

देश नत्या नयः।। छट्छा पश्चि-शामका । जिल्लावधादश क्यां । इंडि मजानादायन পূজাপদ্ধতিঃ ৷৷

म्बार्भुद्धः क्री विकृतनाकः। वर्था। ইপাতঞ্চ ফল• জুক্তা চান্তে স ত্যপুর বসেৎ। ইতিবঃ কথি-ত বিপ্রাঃ সত্যনারাযণত্রত।।। ইতি ক্ষন্দপুরাণীষ সত্যনারায-ণব্ৰতক্থা ৷৷

সত্যফলঃ পু্ বিল্ববৃক্ষঃ। त्राकनिर्घकः ॥

সত্যভাষা স্ত্রী ক্লফপত্নীভেদঃ। रें ि गमत्रज्ञावनी ॥ मा ह <u>बिहरभगारियशियाङर्ग</u>ायम् बीविटमयः। यथा। जटको यः रियाः खाः मर्व। क्रिकागामा। य-হাত্মনঃ। রুক্মিণী সত্যভাষা চ কালিন্দী চ শুচিম্মিতা ৷৷ মি-ত্রবিন্দা জামবতী নাগ্যজিতী मूलक्षा। मूगीला नाम उन्नही यहिया भारतियाः सृष्ठाः ॥ ইতি পাদ্মে উত্তরখণ্ডে ৬১ व्यशायः ॥

সত্যভারতঃ পু• বেদব্যাসঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ॥

बीलका ह छछ विश्व रवन छ । मञाबूग की हजूर्व्भाना अक মযুগণ। যথা। ক্তে॰ সত্যযুগণ व्यकाभागी वानत मिक्करमो । কলি ঝর্মরকঃ কর্মায়গণ পাপস্ত পাতক ।। ইতি ত্রিকাওশেষঃ ।। 🛊 ।। তস্য কৃত নাম কারণ• ষথা। তদুপাধিক্তঃ কালো ব্ৰন্ধণো জন্ম মৃত্যুক্ত। শত সম্বৎসরে ব্রহ্মা লয়ণ প্রাপ্নোতি হি দ্ববি।। লফান্তে দ্বনাভিম-ধ্যাদুখিতঃ সৃজতি প্রভুঃ। ততঃ ক্তযুগান্তেহণ কালণ সদ্ধর্ম-পালক ।। কুতকুত্যাঃ প্রজা যত্ৰ ভন্নান্না মাণ ক্বত। বিদুঃ । ইতি কল্কিপুরাণে ১৯ অধ্যায়ঃ ॥ 🛊 ॥ ७ इन्मा यथा। धर्म मह-তুষ্পাদভবৎ ক্বতে পূর্ণে জগন্ত্র-यः। (परा यर्थाञ्चरंनमा "ठ-রক্তি ভূবি সর্বভঃ ৷৷ সর্বশস্যা বসুমতী হাউপুফজনাবৃতা । শাঠ্য চৌৰ্ধ্যানৃতৈ হীনা আধি-ব্যাধি বিৰক্ষিতা।। বিপ্ৰাবেদ-विषः मूमक्षणयूञा नायाञ्च हः র্য্যাব্রতৈঃ পূজা হোমপরাঃ প্র-তিব্রতধরা যাগোদ্যতাঃ ক্ষত্রি-ষাঃ। বৈশ্যা বস্তুষু ধর্মতো विनिमरेयः श्रीविक्लूज्ञानदाः

সত্যরতঃ পু॰ সত্যরতরাজপুত্রঃ
। যথা। ত্রিধন্বনঃ সুতো জাত
স্রয্যারূণ ইতি স্মৃতঃ। তস্য সত্যরতো নাম তন্মাৎ সত্যরতঃ
ন্মৃতঃ। তস্য পুল্রো হরিশ্চন্দো
হরিশ্চন্দ্রাচ্চ রোহিতঃ। ইতি
মাৎস্যে ১২ অধ্যাবঃ।।

সত্তলোকঃ পু॰ সপ্তলোকান্তগ্তলোকবিশেষঃ। যথা। ষড্গুণেন তপোলোকাৎ সত্তলোকো বিরাজতে। অপুনর্মারকা
যত্র ব্রন্ধলোকো হি স স্মৃতঃ।।
ইতি বিষ্ণুপুরাণে ২ অংশে ৭
অধ্যায়ঃ।। জনলোকাপেক্ষবৈষ ষড্গুণেন দাদশকোট্যচ্ছাবেণ তপোলোকানন্তরং স-

ত্যলোকঃ। ন তু তপোলোকাৎ ষজ্ঞণেনেতি মস্তব্য । তথা-সত্যফ্টচত্বারি॰শৎকোট্যুচ্ছাব্দ-ব্বেন ব্রহ্মাণ্ডে ত্য্যাব্কাশাভা-वा९। সূर्यााख भानत्या द्रस्टः কোট্যঃ স্যুঃ পঞ্চবিংশতি রিতি শুকোক্তেঃ। সত্যলোক এব কক্ষাভেদেন ব্রহ্মধিষ্ট্যাৎ পর देवक्रिक्टेट्याकामि (छवरः। এवश्र ভূতলাদূর্দ্ধৃ॰ পঞ্চদশলক্ষোত্তরা স্ত্রবোবি শতিঃ কোট্যো ভবস্তি । मठात्नाकामृक्ष्यः शक्षममन-কোনকোটি দ্বাদণ্ডকটাহ ইতি জ্ঞেয় । অপুন মারকাঃ পুনশ্ম-ত্যুশুন্যাঃ। ইতিতট্টীকা।। मठाविताः भू॰ सिविः। ইতামরः॥ সত্যবাদিনি ত্রি ৷৷

বন্ধপুত্রো ভৃগু নাম ঋচীক স্তৎ-সুতো ২ভবং। স ভার্যার্থী চরন্ ज्यो कानामकः गठः भूता ॥ ममर्भ ठात्रगागठः कट्या रंभ-ममू खद॰। अभिक्मा मूछ॰ गाधि॰ তপত্र नुপসত্य ।। অর্শাস্সা তস্যাথ পুত্ৰকাষস্য ভূভ্তঃ। স ভার্যাস্য সূতা জঞ্জে দেবকন্যা-मया खरेनः॥ साठीरका जृधभूख স্তা॰ ভাষ্যার্থ॰ সমষাচত। গাধি॰ নৃপতিশাৰ্দূল স চোবাচ নৃপো यूनि ।। একতঃ भगागकर्गाना य-শ্বানা চন্দ্রবর্চসা । সহসু মেক या प्रमाखिया शूखी अमीयरा।। **अठीक উবাচ।** मामागाश्वमश्-সুত্ত তব রাজণ্ডথাবিধণ। ঞ্চিৎকাল প্রতীক্ষম্ব মাবক্তদহ भानत्य ॥ शक्राक्रलामृथिञ्च म-ত্ত সম্যক্ প্রচেতসা। আদাযাশ্ব-সহসূত্র মুনি গাধি মথাভ্যমাৎ ।। তানশ্বান্ গাধি রাদাষ পুত্রী॰ সত্যবতী স্বকা । ঋচীকাষ দ-দৌ লক্ষীণ কেশবাষেব সাগরঃ॥ **अठीटका शाधिरुनशा॰ लक्षा छा**-ৰ্য্যা মনিন্দিতা । মুদিতঃ স তধা द्धारम यथाकाम[॰] चकाञ्चरम ॥ ক্লতদার সুত শ্রেষা ত্রফু পুত্র

স্বক ভৃগুঃ। অথাজগাম মতি-मान् सूषा॰ पृष्ट्री ननन ह।। प-ম্পতী ত সমাসীন ভৃগু দেব-नगर्किन । भूकिषदा नमानीन॰ তহতু ভৌ কুডাঞ্লী।। ততো जुक्षः भूषाः यीवाः नृञ्जीठ रेम ग-बरी । दत्र वृगीत्र मामग्रामि वा-**ঞ্তি বরবর্ণিনি ।।** তাদেয় দুক-র॰ বাপি ষত্র তে বর্ত্ততে স্পৃহ।। ততঃ সভাবতীপুত্র তপ আয়ায পারগ ।। মাতৃশ্চ বীর মতুল **পুত্রণ বর ম**বাচত। স চৈব মস্ত্রি-जुरेकुव जूषा धाननत छन।। বিশ্ব মাবর্ত্য মনসা যত্নাৎ শ্বাসং সসৰ্জ্জ সং। ত্যা নিঃশ্বাস বাতা-जू निमृত देव हक़ दय ।। ভरिमा-তৎ দ্বিত্যণ দত্বা ভৃগু স্তা মিদ ম-ব্রবীৎ। চরুদ্বয়ণ গৃহাণ দ্বং সুষে সত্যবতি স্বয়ণ।। সাত্ৰা ঋতৌ ঋ-তৌ মাতা তদা ত্বঞ্চ করিষ্যথঃ। আলিস্যাশ্বখনৃক্ষণ তে মাতা পুণ-সবনাষ বৈ।৷ চরু মারক্তক ° চেম ° সা ভোক্ষ্যতি সূত স্ততঃ। স্বঞ্চো-ডুম্বরবৃক্ষন্ত সমালিক্যা সিতং চরুণ ।। ভক্ষবৈতেন পুত্র স্তে ভবিষ্য-তি সনাতনঃ। এব মুক্ত্বা ভৃগু-ষাতো যথেছে সাপি সংমুদ ।।

অবাপ মাত্রা সহিতা ভর্ত্রা পিত্রা **ठ छ दिनी। जय ज्ञानित्न २**-শ্বথ মালিস্যারক্তক চরুণা৷ অ-দ্যাৎ সত্যবতী তস্যা মাতা কল্পুণ সিত॰ চরু॰। 😻। পরিবর্তন ত॰ জ্ঞাত্বা দিব্যজ্ঞানো তৃত্ব শুনিঃ।। অথাগতা সুষা তাৰ বচনঞেদ-भववी । विश्वयं खुया ज्या বৃক্ষালিঙ্গনকর্মণি ৷৷ তথা চরু প্রাশনে চ তত্ত্রেদ ন্তে ভবিষ্যতি। বান্ধণঃ ক্ষতিযাচার স্তব পুলো ভবিষ্যতি ৷৷ ক্ষত্রিষো ব্রাক্ষণাচা-রো মাতু স্তে ভবিতা সুতঃ। ত্যুক্তা ভৃগুণা সাধী তদা সত্যব তী ভৃগুণ।। পুনঃ প্রসাদযামাস পৌত্রো মে ২স্ত্রিতি তাদৃশঃ। এব মস্ত্বিতি প্রোক্ত্বা স তত্তৈবা ন্তৰ্দধে ভৃগুঃ।। অথ কালে সুত मीख॰ জমদগ্নিঞ্চ গাধিজা। সু ষুবে জননী তস্যা বিশ্বামিত্রণ তপোধনং ৷৷ জ্বদন্মি স্ততো বে-দান্ চতুরঃ প্রাপ মা চির• । প্রাদ্রাসদ্ধনুর্বেদঃ স্বয়ণ তামিন্ মহাত্মনি।। বিশ্বামিত্রোপি সক-লান্ বেদানপি তথাচিরাৎ । ধনুৰ্বেদ তথা ক্ৰৎন্ন বিপ্ৰ শ্চা-ভূত্তপোধনঃ ৷৷ জাত্বল্যমান স্তে-

জন্বী জনদগ্নি মহাতপাঃ। বে-দৈ স্তপোভিঃ দ মুনীনত্যক্রাম-চ্চ সূর্য্যবং ।। ইতি শ্রীকালিকা-পুরাণে জামদগ্ন্যোপাখ্যানে৮৪ অধ্যায়ঃ।।

সভাবতীসূতঃ পু• ব্যাসঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

সত্যবাক্[®] পু॰ ঋষিঃ। ইতি শব্দ-রত্নাবলী।। কাকঃ। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ।। সত্যবাদিনি ত্রি।। সত্যবাদী^{ন্} ত্রি ষথার্থবক্তা। তৎ পর্যাযঃ। সত্যোদ্যঃ ২। ইতি শব্দমালা।।

সত্যবান্ঁ পু॰ রাজবিশেষঃ। সতু সাবিত্রীপতিঃ। ইতি মেদিনী॥ সত্যযতি ত্রি।।

সত্যবৃত্তঃ ত্রি সত্যবাদী। ইতি কেচিৎ।।

সত্যবতঃ ত্রি ত্রেতামুগে সূর্য্যবংশীযপঞ্চবিংশরাজঃ। যথা।
ত্রিধন্ধনঃ সুতো জাত স্ত্রয়ারুণ
ইতি স্মৃতঃ। তস্য সত্যবতো
নাম তস্মাৎ সত্যরতঃ স্মৃতঃ।।
ইতি মাৎস্যে ২২ অধ্যায়ঃ।।
স চ ত্রিশঙ্কুরাজঃ। যথা। ত্রিধন্নন স্ত্রয়ারুণঃ ত্রয়ারুণাৎ সং
ত্যবতঃ। যোহসৌ ত্রিশঙ্কুসং-

জ্ঞা মবাপ চাঞালতা মুপগতশ্চ
। দাদশবার্ষিক্যা মনাবৃষ্ট্যাণ
বিশ্বামিত্রস্য কলত্রাপত্যপোষগার্থণ চাঞাল পরিগ্রহ পরিহরগার্থক জাত্রবীতীরে ন্যগ্রোধে
মৃগমাণস মনুদিন ববন্ধ। পরিতুষ্টেন চ বিশ্বামিত্রেণ সশরীরঃ
স্বর্গণ আরোপিতঃ। ত্রিশঙ্কো
হরিশ্চন্দ্রঃ। ইতি বিক্মুপুরাণে
৪ অণশে ৩ অধ্যাবঃ।।
সত্যসক্ষাশঃ ত্রি সত্যসন্ধিভঃ।

ইতি কেচিৎ।। সত্যসঙ্গরঃ পু॰ স্বেরঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ।। অন্যাযরহিত-যুদ্ধঞ্চ।।

সত্যসন্ধঃ পু॰ রামানুজভরতঃ।।
জনমেজষঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী
।। শ্রীরামচন্দ্রঃ। যথা। রাজেন্দ্র॰
সত্যসন্ধ॰ দশর্থতনয়॰ শ্যামল॰ শান্তমূর্ত্তি॰। বন্দে লোকাভিরাম॰ রযুঙ্গলভিলক॰ রাঘব॰
রাবণারি॰।। ইতি মহানাটকে
১ অঙ্কঃ।। সত্যপ্রতিজ্ঞে ত্রি।।
সত্যসন্ধা স্ত্রী জৌপদী। ইতি
শব্দরত্বাবলী।।

সত্যা স্ত্রী সীতা। সাচ রাম-পত্নী॥ সত্যবতী। সাতু ব্যাস- মাতা। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥ দুর্গা। ইতি ত্রন্ধবৈবর্ত্তে প্রকৃতি-খণ্ড•॥

সত্যাক্তিঃ দ্রী অবশ্যং মধৈ তৎক্তেব্য মিতি সত্যকরণং।
তৎপর্যায়ঃ। সত্যক্ষারঃ ২
সত্যাপনং ৩। ইত্যমরঃ।।
সত্যাহিঃ পুং অগস্ত্যমুনিঃ।
ইতি শব্দরত্বাবলী।।
সত্যান্তং ক্লী বাণিজ্যং। ইত্যমরঃ।। কিঞ্চিৎসত্যং কিঞ্চিদস্তাং সত্যসহিত মন্তং বা ষত্র।
ইতি ভরতঃ।।

সত্যাপন• ক্লী সত্যাক্তিঃ । ইত্যমরঃ ।।

সত্যাপনা স্ত্রী সত্যাক্ততিঃ। ইত্যমরটীকাষা বোপালিতঃ।।
সত্যোদ্যঃ ত্রি সত্যবাদী। ইতি
শব্দমালা।।

সত্র ত্ ও ক সহস্কে । সন্ততৌ
। ইতি কবিকল্পদ্রনঃ । দন্ত্যবর্গাদ্যমধ্যঃ । সন্ততি নির্বাহ
ক্রিমেতি ভউমলঃ । ও সত্রমতে
। সত্রাপযতে প্রতিজ্ঞাণ সাধুঃ ।
সন্ততি বিস্তারণ মিতি গোবিন্দভউঃ । ইতি দুর্গাদাসঃ ।।
সত্রণ ক্রী যজ্ঞবিশেষঃ । যথা ।

मामा

देनिविष श्निषिरकात अवशः भागितकामयः। मजः वर्गाय लाकाय मश्मुमय यामछ।। कलि यागछ याख्वाय क्लाज्ञान न्दिकाद दयः। जामीना मी-र्यमाजन कथायाः मक्कना श्दाः ।। ইতি শ্রীভাপবতে ১ ক্লাকে। ১ অধ্যায়ঃ।।

সত্রাজিৎ পুণ রাজবিশেষঃ। সত্র শ্রীক্লক্ষসুরঃ। সত্যভামাপিতা । পরে শশিধজরাজশ্চ বভূব। ইতিকক্ষিপুরাণে ২৭ অধ্যাষঃ।। সত্রিজাতকণ ক্রী মাণসব্যঞ্জন-বিশেষঃ। যথা। মাণসংবছ্ছতে ভূষ্টণ সিজ্বা চোফাষুনা মুহুঃ। জীরকাদ্যৈঃ সমাষুক্তণ পরিশু-হুণ ভদুচ্যতে।। তদেব ঘৃত ত-ক্রাঢ্যণ প্রদিশ্ধণ সত্রিজ্ঞাতকণ। ইতি শক্ষচন্দ্রিকা।।

সত্ব° ক্লী গুণবিশেষঃ। ইত্যমরঃ ।৷ অস্য বিবরণণ দ্বিতকার সত্ত্ব-শব্দে ডফব্য° ।৷

সম্বরণ ক্লী শীযুণ। সহ স্বরষা বর্ত্ততে সম্বরণ।। তদ্বতি ক্রি ! ইত্যমরভ্ররতৌ।।

সৎসারঃ পু• বৃক্ষবিশেষঃ। চিত্র-করঃ।। কবিঃ। ইতি কেচিৎ ।। উত্তমসারষুক্তে তি।।
সথুৎকার॰ কী অমূকত । ইউি
হেমচন্দ্রঃ।। থুৎকারেণ সহ বর্ত্তমানক।।
সদেশকঃ পুণ কর্কটিঃ। ইতি রাজ
নির্ঘনীঃ।। দেশযুক্তে তি ।।
সদেশবদনঃ পুণ কঙ্কপক্ষী। ইতি
রাজনির্ঘনীঃ।।

সদঞ্জন ক্লী জসুমাঞ্জন । ষথা । রীতিপুষ্প পুষ্পাকেতু পৌষ্পা-ক জসুমাঞ্জন । সদঞ্জনক চা-কুষ্য মাক্ষিক গাতুমাক্ষিক ।। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

मनन की गृरः। ইত্যমরः।।

कुनः। ইতি মেদিনী।।

मनः खी की मछ।। ইত্যমরঃ।।

मनः खी की मछ।। ইত্যমরঃ।।

मनाः प्रः विधिननीं। ইত্যমরঃ।।

मनाः प्रः নৃনাতিরিক্ততা বিপর্ণ বিধান পরিহর্তু বিধি বেদো
ক্রমজ্জিফাকলাপ দ্রমূ শীলং যেষা তে সদস্যাঃ। সদনি

সাধবঃ কারকা ইতি বিকার
সংঘত্যাদিনা যঃ। ইতি ভরতঃ
।। তস্য নামান্তর প্রশাবকা।

দ্বিতীয় স্তন্ত্রধারকঃ। তৃতীয়ঃ
প্রশ্বক ক্রয়াত্তঃ কর্ম্ম সমান্ত

ति । क्यं नियुक्तः जातार्गः ।

गत ज्या प्रत्य हा गर्मा विद्या । यस हा गाक्य हा हा लि ।

यस श्री । व्यस्त व्यक्ति । व्यक्त । व्यक्ति । व्यक

সদাগতিঃ পু॰ বাষুঃ। ইত্যমরঃ
। সৃষ্যঃ। নিৰ্বাণঃ। সদীশ্বরঃ
। ইতি সেদিনী।।

পুরাণ 11

मानातः प्रशास्ता मानतः।

जन्नकानि यथा। मत्रवनि मृभवाता प्रित्तरमा यमछतः।

जरम्पतिर्मिजः प्रभः जन्नातःर्जः श्रेष्ठकातः। जन्मिन् प्रप्रभः
य जानातः भातन्भर्याक्रमाशिकः
। वर्गानाः माखतानानाः ममानातः म উन्नातः। देवि मनः
। क्षाः जनाकः। देवे देवानः।

ममानादत्रम् ताष्ट्रस्य विष्णयान्

শৃণু সংপ্রতি। যানবশ্যং নৃপঃ क्रांखायलः मंकलान् मृन् ॥ माथदः कीनरमायान्छ मह्दनः সাধুবাচকং। তেষা মাচরণ যজু সদাচারঃ স উচ্যতে ৷৷ আগ-মেষু পুরাণেযু সংহিতাসু যথো-**मि**जान्। **म**मुक्तिके मनाठाता॰-खान् गृद्रीयाकाृश्यव ।। अयीन् यद्भवादिक दर्भवान् रहारेय-স্তু পূজ্যেৎ। প্রাক্ষৈঃ পিতৃন্ বজেদমৈ ভূ তানি বলিভি স্তথা ।। দৈৱত প্রসাধনত সানত দম্ভধা-वन मञ्जनः। मर्बः गुरुष्ठवः अः ৰ্য্যাৎ নিষেকাদ্য বিধিণ তথা ।। ষট্কর্মসু নিষ্প্রীভ রাজা বিপ্রা-ন্ সমস্তভঃ। ভবৈব ক্তিযাদী-नि स्व स्व कर्यानि स्वाक्रिय ।। যঃ **স্বধর্মা**ণ পরিত্যজ্য পরধর্মাণ সমাচরেৎ। ত॰ শতেন নৃপো मखाः भून खित्रिविरगेकरम् ॥ नाम्बर्माद्रम् क्रालाम् वित्नरेगा-তান্সমাচরেৎ। অবশ্যুণ পার্থি-বো রাজন্ বিশেষাণ্স্ত শৃণৃষ্ব নে ।। শরৎকালে মহাফীম্যাণ দুর্গা-যাঃ পরিপূজন । নীরাজন দ-শयां अर्यादेष वलवृक्षत्य ॥ পৌষে মাসি তৃতীয়ায়াণ সর্য্যাৎ

भूगाजित्यहनः। भूकविषा धि-य॰ (मरी॰ ञीशक्षमा।॰ नृश क्रत्रि९ ॥ धीयछा धन शनामा वृक्तरय न्-পসত্তমঃ। জৈতি দশহরাবার विक्या विकि नमाहत्व ॥ व्यव হরিন্থে দ্বাদশ্যাণ শক্তপূজাণ সমা-চরেৎ। বিশেষ্যৈতা স্তু নৃপতিঃ ष्ट्रयाप मर्बः वस्वादेयः॥ এভिः ক্রতৈ বঁলং রাজ্যং কোষ শ্চাপি বিবৰ্দ্ধতে। অক্তেবেষু যজেষু मूर्ভिक भवन ७था।। **काय** ७ ४ न्श खन्मारम्य यद्धः ममाहरत् । শরৎকালে মহাঊন্যাণ দুর্গাযাঃ পুজনে বিধিং।। পুরা প্রোক্তস্ত বিধিনা তেন কাৰ্য্যন্ত পূজ**ন**ে ৷ ইতি কালিকাপুরাণে ৮৬ অধ্যা-यः ॥ 🐲 ॥ जिल्हा मनाहाद्व বিশেন্যা ২য° কথিত স্তব পার্থিব । नित्यद्यु वित्ययाः ख मृत् (यन श्चिरयगुरु ॥ जमभूका ७११ दिखु॰ बिवा मिश भूतकतः। खः দত্বা চ তথা দান ন ভুঞ্জীযামূ-शः किष्।। श्वरम्भिरश्वस নিত্য মেব পুরোহিতৈঃ। অভূ-ত্বা চারিহোত্রন্ত ভূঞ্জনরক মাপু যাৎ ৷৷ নারক্ষিতে গৃহে রাজা র-ত্বৰ্দ্ধি পরিবজ্জিতে। স্বপেত্তথা

জিয়া সাৰ্দ্ধণ ন কদাচন সন্ধিশেৎ ॥ जुकामः औरमनः नामाख्या-शाबाकनः नृशः। वृक्षिकव कता-प्राचित्र वाज्य मृखिकाः॥ नि-ষাটকাষ বৃত্তাশ্চ বৃদ্ধিবৃদ্ধিকরা ন তাঃ। বুদ্ধিবৃদ্ধিহরামিতা॰ তাজেদ্রাজা চ ভোজনে॥ ভো-जरमनवर वृक्तिवृक्तिरहजू नृ-পোত्रनः। न পर्याय विशेनस **धारतारहमामन नृभः॥ न यान** न गङ्गानश्व माद्रारहिषीका जा-ষ্ণ । নৈকন্ত বিচরেডাজা ক-माहिमित्रि निब्र्ज्जरन ॥ यमरङ्ख् न जूकीयां कनां विनिश्व ज्ञांकः নে। কদাপি নোপদেবেত ছফ্ট-मा भाष्मदेमपूरन॥ अमान्नान গৰাজাদ্ধ তিলৈ স্তৰ্পণ মেব চ়। ন জীবৎপিতৃকো ভূপঃ স্ব্যাৎ হ্নপাৰ মাপুষাৎ।। ন ক্ষেত্ৰজা-দী° স্তন্যান্ রাজা রাজ্যে ২ভি-ষেচযেৎ। পিতৃণা প্রাদ্ধষেমি-ত্য মৌরসে তনষে সতি ৷৷ ঔরসঃ ক্ষেত্রজন্চৈব দত্তঃ ক্বত্রিম এব চ। গূঢ়োৎপক্ষো ২পবিদ্ধশ্চ ভাগা-र्श खनश हरम।। कानीनक म-হোচশ্চ ক্ৰীড়ঃ পৌনৰ্ভৰ স্তথা । खरु मुख्य प्रायाम विषय

পুত্ৰপাণ্ডলাঃ ৷৷ অভাবে পূৰ্ৰ পূর্বেষা পরান্ সমভিষেচ্যেৎ। পৌনর্ভব• স্বয়• দত্ত॰ দাস• রা-**ब्का न र्याक्र्यः ॥ म्बामा** শ্চাপি তন্যা নিজগোত্তেণ সণ্-স্থিতাঃ। আষান্তি পুত্রতাণ সম্য-গন্যবীজ সমুদ্ভবাঃ।। পিতৃ র্গো-ত্রেণ যঃ পুত্রঃ সংস্কৃতঃ পৃথিবী-পতে। আচুডান্ত ন পুত্রঃ সঃ পুত্ৰতা কাতি চান্যতঃ ৷৷ চূডা-দ্যা যদি সংস্কারা নিজ্ঞগোত্তেণ বৈ হ্নতাঃ। দত্তাদ্যা স্তন্যা স্তে-म्। त्रनाथा नाम উচ্যতে ॥ উদ্ধৃষ **११**क्यावर्याक्खानगर मूछ। न्१ । গৃহীদ্বা পঞ্বধীয় পুত্রেষ্টি। প্রথম॰ চরেৎ ॥ পৌনর্ভবয় ত-নয় জাতমাত্র সমান্যেৎ। কুত্বা পৌনভব স্তোম জাত-মাত্ৰস্য তস্য বৈ ॥ সৰ্বা॰স্ত স र्य्याद मःकात्रान् काठकर्यापि-कामद्रः। क्रूटं भूनर्जवस्थारम त्रुष्टः भौमर्जव खर्था ॥ अत्का-ক্ষিষ্ট পিতৃঃ স্বৰ্য্যাম আদ্ধ পা-र्बगामिक । क्वींामग विन्ञा ষ্ঠোঃ সা দাসীতি নিগদ্যতে ॥ ভদ্যা॰ যে৷ জাষতে পুজো দাসঃ भूबाह्य मण्डाः। न द्रारक्ष। द्रा-

জ্যভাক্ স স্যাদ্বিপুলানপি ঞা-দ্ধরুৎ।। অধমঃ সর্বপুত্রেভ্য ন্ত॰ তস্মাৎ পরিবর্জ্জিযেৎ। পুরাণ ধর্মশাস্ত্রাণি সংহিতাঞ্চ মুনীরি-তা ।। नाशाभरम्भः भृटेज र्विः হিতান্যৎ যদৃচ্ছ্যা। যস্য রাজ্যে সদা শূজাঃ পুরাণ সংহিতা তথা ।। পঠेंछि माग्यश्चीनात्मा ताजा রাফ্টেন সাম্বযঃ। মোহাদা কা-মতঃ শুদ্রঃ পুরাণ সংহিতা স্মৃ-তি॰।। পঠন্দরক মাপ্নোতি পিতৃ-ভিঃ সহ পাপক্ত। শূডোক্তা বিহিত যচ্চ যশ্চ মন্ত্ৰ উদাহতঃ॥ छापूरः विश्ववननाका। इः गृतिः मरेपद शि न याज्यक्रा भृ-**ज॰ वावशत्रमा मर्नात्म।। निरम** জ্য তত্ত্ব ত ভূপ তামিশ্রে তেন **পচ্যতে। হীনাযুশ্চ ভবেল্লো**কো রাজা চাপি সহারষঃ।। কান ব্যঙ্গ মন্ধপুত্রণ বানভিজ্ঞ মঞ্জি তে क्षियः। न इयः गाधिः गणि नुनान्याः इतारणा हुन **नमा धन॰ त्रा**का न गृङ्गीयां क माठन। न विकानाः उथा महा क्षनानि विश्वानाशि॥ नाता **ছেৎ কামুকোনাত্ত** গজ রাজা क्षाप्ता लाइक क्रांत्रक छ

পরত্রেহ্ বিষীদভি॥ অনাযুষ্য° ন স্বর্যাত্ত্ কর্ম ভূপঃ কদাচন। সতত আযুষো বৃদ্ধা যতেত স करेन बंदेनः ॥ न कृतवादा नास्रे-ম্যা॰ ন ষষ্ঠ্যা॰ নৃপস্ত্রমঃ। অঞ্জ-নাভ্যঞ্জনে স্ব্যাতামূলস্যাপি ভোজনং॥ অতিসূক্ষংতথা পূৰ্ণ গ্ৰহণ চন্দ্ৰ সূৰ্য্যযোগ। নালোক-ষেৎ স্বয়ণ রাজা রক্তণ সূর্য্যণ ত-থৈৰ চা৷ উৎপাত জাৰতে বতু দিব্য ভৌমঞ্চ নাভস•। নেক্ষেত যত্নামৃপতি দৃষ্ট্যা নাদ্যাৎ ত্র্য-रु शूनः॥ সर्वना मक्न त्रू शातरय मर्पृर्वया। व्यवजाक्छा-দিত গাত্র ন বিপ্রেভ্যঃ প্রদর্শ যে ।। ন তোষে স্বং মুখং পশ্যে-भागाना भानि भईमू। नादता হেত খর চোফু ন বামী মপি ভাৰিণী ।। এবং নম্যুতো রাজা छ्त्रकः विवर्कसन्। आश्रानः विञ्ज तकन् महा वीर्याः विवर्क यं । वीकक्षयकतः निजाः छ-**का॰ ভোজ্যঞ্চ পানক•। ব**ৰ্জ্জ যেৎ কার শাকাদ্যান তায়ু বহু-তিক্তকণা কাণ্স্যরাজত রঙ্গসূত্ .छायः शातनगावर्कनः । या कि श्रुवाक कानिकासकः।

যেৎ ৷৷ তামায়ঃ স্বৰ্গীসানা পা-**बङ्ग्या हर्मा त्या । एक वृक्षिक-**র॰ তোষ• তদুপাসীত যত্নতঃ ॥ সৰ্বমূলেষু ক্তোষু সদাচাৱেম্ব-নুষ্ঠিতঃ। ভুক্ত্বেহ বিবিধান্ ভো-गारेनसः सानः बर्षः शरत।। শ্রীমার্কণ্ডেষ উবাচ। এব মৌর্বস্ত সগর শশাস মুনিপুঙ্গবঃ। শা-স্ত্ৰাণি চৈব সৰ্বাণি সদাচারান্ স গুহুকান্।। বহুশঃ কথ্যাসাস সগরায মহাত্মনে। তন্নাস্তি ষৎ भूदतीर्द्धन कथिछ नगताय न।। রাজনীতিঃ সতা॰ নীতি র্যক্ষান্য-চ্ছান্ত্রসম্ভব । সংহিতাসু পুরা-ণেযু ফচাগমচযে স্থিত ।। সর্ব• च्याव मगदता म्थाति ईमा थी-মতঃ। তেষাম্ভ কথিত কিঞ্চিদুদ্ধৃ-ত্য দ্বিজসত্ত্যাঃ ৷৷ বিফুধৰ্মো-ত্তরে পূর্ব॰ মযা রহিদ ভারতে। রাজনীতি সদাচার বেদ বেদা-ঙ্গ সঙ্গত ।। রহস্য পতত বিক্ষো वीकक्ष विक्रमखनाः। यकान्मि-ত মন্যত্ৰ গদিত বা সসংশ্ৰহণা সংশ্বচ্ছেদনং তেমু যুমভ্যং ক্ विक किर। अनुक मन्मरक क्रकत वीक्रक्यकाति विवेद्धः । १ जारम्य मञ्ज विकास

না' ফল' লভেৎ। ইতি শ্ৰীকা-লিকাপুরাণে ৮৯ অধ্যাযে রাজ-নীতি সদাচারাদিক সমাপ্ত• ा। 🛊 ॥ जनाका अवयक्षेत्रः। मः দাচারো নিগদিত স্তব যো ২ক্মা-ভিরাদরাৎ। লক্ষণ তস্য বক্ষা-मखष्ड् १व निभावत ॥ गृहरस्न जना कार्या मानात्रशतिशाचन । ্ন হাচারবিহীনস্য ভত্ত মত্র পর-ত্র চ।। যজ্ঞ দান তপাণসীহ পুরু-ষস্য ন ভূতবে। ভবস্তি যঃ সমু-अञ्चा महाहातः अवर्खाः ।। पू त्राहात्रा हि शूक्ररवा त्वर नामूब ্নন্দতি। কার্ব্যো যত্নঃ সদাচারে অাচারো হস্তালকণ ৷৷ তস্য স্বৰূপণ বক্ষ্যামঃ সদাচার্স্য রা-कार मृशुदेशकमना खुक यनि **এ** (थारबा हि वाञ्चित ॥ शर्मा २ मा মূল ধন মৃদ্য শাখা পুষ্পঞ্চ কামঃ कल भगा (मोकः। जामा मना-চারতরুঃ সুকেশিন্ সংসেবিতো বেন স'পুগ্যভোক্তা ৷৷ ব্রাক্ষ্যে त्रृष्ट्रिं अथरम विवृत्धामनुत्रादत-क्तिरवर्त्र भर्यीन्। প্রাভাতিক॰ **मक्ल भिव वोकाः यमुक्तवान् एम**ी 'বপতি স্ত্রিনেক্তঃ।। সুকেশি রুবাচ ৷ কি তদুক্ত সুপ্রভাত শব্দরেণ

মহাত্মনা। প্রভাতে যৎ পঠন মর্ত্যো মূচ্যতে পাপবন্ধনাৎ ॥ ঋষষ উচুঃ। শ্রাষতা॰ রাক্ষসশ্রেষ্ঠ সুপ্রভাত হরোদিত। শ্রুষা স্মৃ-দ্বা পঠিদ্বাচ সর্বপালেঃ প্রমুচ্য-তে।। বন্ধা মুরারি স্ত্রিপুরান্তকা-রী ভানুঃ শশী ভূমিমুতো বুধশ্চ । শুরুর সশুক্রঃ সহভানুজেন স্ব-ৰ্বন্ত সৰ্বে ৰম সুপ্ৰভাত ।। ' ভৃগু ৰশিষ্ঠ: ক্ৰছু রিষরাশ্চ মনুঃ পূল-खाः भूनशः मरगाज्यः। देतरजा यत्रीष्ठि भग्नावरमा तिख्भ कर्वश्व সর্বে ষম সুপ্রভাত ।। সনৎঙ্গ-যারঃ সনকঃ সনন্দনঃ সনাতনো প্যাসুরি পিঙ্গলৌ চ। সপ্তস্বরাঃ সপ্তরসাতলাশ্চ জর্বন্ত সর্বে মৰ मूथजाउः॥ পृथी मगन्ना मत्रमा ন্তথাপঃ সম্পর্শ বাষু জুলিতঞ্চ তেজঃ৷ নভঃ সশব্দ মহতা স হৈব সৰ্বস্ত সৰ্বে মম সুপ্ৰভাত।।। मर्खीर्गराः मराष्ट्रमाठनाम्ह म-तामि कथा जूवनानि मश्च नर्वन्न সর্বে মম সুপ্রভাত।।। ইখা প্র-ভাতে পর্মণ পবিত্রণ ষঃ সংস্ম-त्रवा मृग्राफ ज्का। मृःस्र নাশো নন্ স্প্রভাতে ভবেচ্চ

সত্যুণ ভগবৎপ্রসাদাৎ ৷৷ ততঃ ममूर्थाय विविख्य एक धर्मा ७-थार्थक विश्वाय भवागः। उथाय পশ্চাদ্ধরি রিত্যদীর্য্য গচ্ছেত্ত-দোৎসর্গবিধি[•] हि কর্ত্তু ।। न দে-ব গো ভান্ধণ বহ্নি মার্গেন রাজ मार्ग न ठजूनात्व ह। नर्गाम्ब-থোৎসর্গ মপীহ গোপ্তে প্রচ্ছা-मा नीर्यः मूथ नानिक्षः ॥ ठडन ल्गिठार्थ मूलाइद्राम्म अदम खम পাণিতলে চ সপ্ত। তথোভয়োঃ পঞ্চতু স্তথৈকা লিঙ্গে তথৈকা मृष मारदाका। नाखकंनाजा-ক্ষস মূষিকস্থলামচাবশিফা সদ-नामि ভগা। वणीक मृटेकव हि শৌচনাষ আছা সদাচারবিদা-नद्रव ।। छेन जू थः का ला शद्री ভুবিস্থঃ সমাচমেদন্তি রফেণি-লাভিঃ। আচমা চ ত্রিঃ পরিমৃজ্য চ দ্বি স্ততঃ স্পৃশেচ্চাত্মশিরঃ ক-রেণ।। সন্ধ্যাণ স নির্বর্ত্ত্য ততঃ ক্র-মেণ কেশাত্মত সংশোধ্য চ দস্ত-ধাবন । ক্লন্তা তথা দৰ্পণ দৰ্শনঞ্চ क्ष भिद्रःस्थान मथाङ्गिककः ॥ সংপূজ্য তোষেন পিতৃন্ সদেবান্ হোমঞ্চ ক্রত্বালভন শুভানা । क्रुष्। वहि निर्गमनः श्रमञ्डः पूर्वाः

मिथ मर्लि त्रर्थामञ्च ।। स्नू नवर्माः वृषछः मूवर्गः मृत्राा-ময়॰ স্বস্তিক মক্ষতানি। লাজা মধু ত্রাহ্মণ কন্যকাশ্চ শ্বেতানি পুষ্পাণ্যথ শোভনানি ৷৷ হুতাশ-न॰ ठन्मन भकंतिय मश्रथतृकःश मगानएउट । उठेख भर्याभिक-জাতি ধর্মণ দেশানুশিক্ত জল-सर्भ मेथा।। यदगाबधर्मः न हि সম্ভাজেত তেনাপি সিদ্ধি সমৃ-পাচরেত। নাসৎপ্রলাপণ ন চ স-ত্যহীন ন নিষ্ঠুর নাগম শাস্ত্রহী नः।। दोकाः वरमः नाशुक्ररनन (यन नित्मा) ज्यारेष्य ह धर्म-ভেদী। সঙ্গণ ন চাসৎসু জনেযু সর্য্যাৎ সদ্ধ্যাসু ভক্ষ্য সুরত। षिवा **छ ॥ भर्बा** भू रयानीयू भन्ना-বলাসু রজস্বলাস্বেব জলেষু ধীরঃ । বৃথাটন বৃথাদান বৃথা চ প-च्यात्रवः। न कर्खवाः गृहरस्म वृ-थामात्रপत्रि अरु ॥ वृथा हेना मि-ত্যহানি বৃ থাদানাদ্ধনক্ষঃ। বৃ-থাপশুদ্ধঃ প্রাপ্নোতি ঘাতনান্ধ-রক মহৎ।। সন্তত্যাহানি রশা-ঘ্যা বর্ণসঙ্করতো ভষ•। ভেতব্য-क ভবেলোকে বৃথা দারপরি-গ্রহাৎ।। পরস্বে পরদারে চ ন

नमाठा

कार्या वृष्ति अखटेमः। भत्रयः नत কাষৈৰ পরদারাশ্চ মৃত্যুৰে!! নে কেৎ পরস্থিষ নগা ন সম্ভাবেক **७**ऋतान्। उमका मर्भनः न्यार्भः। मखायाधः विवक्कंटराष्ट्र ॥ टेनकामः নে তথা ছেষ• সুন্দর্য্যা পরজাষ ষা। তথৈৰ স্যান মাতৃশ্চ ত থৈব দুহিতুজুপি॥ ন ভাষ্যা বীক্ষাতে नशी शुक्रस्थ कना हन। न ह ना ৰীত বৈ নগ্নো ন শাষীত কদাচন ।। দিখাসসোপি ন তথা পরিভূম-শমিষ্যতে। ভিন্নাসন ভাজনা-मीन् मृत्रञः পतिवर्द्धारा न-ন্দাসু নাভ্যঙ্গ সুপাচরেত ক্ষৌরঞ্চ विकाम् ज्याम् गामः । शृनाम् যোবিৎ পরিবর্জনীয়া ভদ্রাসূ স ৰাণি সমালভেত ৷৷ নাভ্যঙ্গ মৰ্কে ন চ ভূমিপুত্রে কৌরঞ্চ শুক্রে র-বিজ্জে চ মাণসং। বুধেষু যোৰিম সমাচরেত শেষেযু সর্বাণি সদৈব वर्षा ।। हिलामू रख अवत्वस् তৈল ক্ষোর বিশাখাস্বভিজিৎ সু बर्का॰। मूल मृत्ग ভाजभनाम् **শা॰স॰ বো**রিশ্বযা ক্লত্তিকবোত্ত-त्राम्।। मरेलव वर्काः भवत्न शूपक्-শির স্তথা প্রতীচ্যা বজনীচরে-न। जूकील देनदिश ह मिक्न भा-

মুখোন চ প্রতীচী সভিভোজনী-यः ॥ त्मरालयः देछञ्छकः हः कुष्णथ[्] विमाधिकश्णि । धक्रः श्रमिन । अधाम वायः गयत ह धीयान् विकान् मृशान् शान्ह निगाहद्वम्।। यानगन्तन्थः व-मनानि यञ्जटा नारेना श्राटनाव हि शतरप्छ। आराक्ट्रितःसान-ত্যা চ নিত্যু নিষ্কাৰণ চৈব বি-ন। নিশাসু।। এহোপরাগে স্বজ-নাভিঘাতে মুক্জা চ জন্মৰ্কগতে শশাকে। নাভ্যন্নিত কাষ মু-পম্পূশেষ্ট স্নাতোন কেশান্ বি-ধুনীত চাপি।। গাত্রাণি চৈবাস্ব-রপাণিনা চ স্নাতো ২বমূজ্যাজ-জনী চরেশ। বসেচ দেশেষ্ সু-রাজকেষু সুসংহিতস্বীযজনেষু নিত্য-11 অক্রোধনা ন্যাযপরা অমৎসরাঃ রুষীবলা ছৌষধিজা-**७**यण्डा न ७ व्यू (मरण्यू वरण्ड वृक्षिमान् यन्मिम्रां मधक्रिहियु-শক্তঃ ৷৷ জনোপি নিত্যোৎস্ব वक्रदेवद्रः मनाक्रिगीयूम्छ निमाछ-রেজ। ঋষষউচুঃ। ষন্ন ভোজ্য॰ महावाटहा मना धर्माव्हिटेल ने देवः। यत्काकाक ममूक्तिके कथिया। মহে বৰ ।। তাজ্য মন পৰ্য্যাৰিত।

স্নেহাক্ত চিরসংভৃত। অন্নেহ। ত্রীহ্যঃ শ্লন্ধা বিকারাঃ পায়সা স্তথা ৷৷ শশকঃ শল্লকো গোধা তথা খন্দ্ৰী চ কচ্ছপঃ। তদ্বদিল-কাদীনি ভোজ্যানি মনু রববীৎ ।। মণি বস্ত্র প্রবালানাণ তদমুক্তা-क्लमा ह। देनल माक्रमयानाक তৃণ গুলৌষধস্য চ।। শাক ধা-ন্যাজিনানাঞ্চ সংহতানাঞ্চ বাস-मा । वक्कलाना मत्नयाना मयूना শুদ্ধি রিষ্যতে ॥ সম্বেহানা ম-থোক্ষেন তিলকক্ষেন চাবিকং। কার্পাদিকানা বস্ত্রাণা শুদ্ধিঃ স্যাৎ সহ ভত্মনা।। নাগদন্তা-স্থি শৃঙ্গাণা তক্ষণাচ্ছন্ধি রিষ্য-তে। পুনঃপাকেন ভাণ্ডানা মৃন্ম-ষানাঞ্জন্ধজনা। শুদ্ধ ভৈক্যা কাৰুহন্তঃ পণ্য যোষিন্মুখ তথা ৷ রথ্যাগত মবিজ্ঞাত দাসবর্গেণ ষৎ ক্বতে।। বাক্যপূতে চিরানী-ত মনেকান্তরিত লঘ্। চেফিত বাল বৃদ্ধানা বালস্য তু মুখ শুচি।। স্লেচ্ছানা মপি গোশালা **खनक्षरमूठा ख्रियः। वाधि**शुरवा দ্বিজেন্দ্রাণাণ পাঠে বাগমুবিন্দবঃ ॥ ভূমি ৰিশুধ্যতে খাত দাহ গো-क्य (महरेनः। लिलामूरस्थनाष

সেকাৎ বেশ্ম সম্মাৰ্জ্জনাজ্জলাৎ ।। কেশকীটাবপন্নে ২ন্নে গোঘুা-তে মক্ষিকাম্বিতে। মৃদারি ভস্ম ক্ষারাণি প্রক্ষেপ্তব্যানি শুদ্ধযে ॥ উত্নরাণা ফায়েন ক্ষারেণ ত্রপু সীসযোঃ। কা॰স্যানা॰ ভস্মনা শুদ্ধি স্তোষাচ্ছদ্ধি র্দ্রবস্য চ ॥ व्यत्यशाकमा मृत्वारेय गंकाश-হরণেন চ। অন্যেষা মপি তদ্দু-ব্যে শুদ্ধি र्गमावशायणः।। माणूः প্রসবনে বৎসঃ শঙ্গনিঃ ফলপা-তনে। গর্দভো ভারহারিছে শ্বা मृग এহণে শুচিঃ।। রথা কর্দম তোযানি গাবঃ পথি তৃণানি চ। মারুতেনৈব শুদ্ধান্তি পক্ষেক-চিতানি চা। শৃত• জোণাঢকস্যা-ন্ন মমেধ্যাভিপ্পৃত ভবেৎ। অগ্ৰ মৃদ্ধৃত্য সন্ত্যজ্য শেষস্য প্রো-ক্ষণ স্মৃতে।। উপবাস ত্রিরাত্র বা দ্যিতান্নস্য ভোজনে। অ-জ্ঞাতে জ্ঞাতপূৰ্বেচ নৈব শুদ্ধি र्विधीयटा। উनक्যान्छ जू नशा-শ্চ সুতিকান্ত্যাবশাষিনঃ। স্পৃ-ফু। স্নাযীত শৌচার্থণ তথৈব মৃ-তহারিণঃ ৷৷ সম্বেহ মস্থি সংস্পৃশ্য मवामाः स्नान माहरत्र । जान-ভ্যৈব তুনিঃম্বেহণগা মালভ্যাৰ্ক

সদাচা

मीका है।। न लब्बरयं नद्र क्रयः वर्जान पूर्वण ठथा। गृशामू व्हिके বিমূত্র পাদাস্তাণসি ক্ষিপেছহিঃ ।। পঞ্পিঞাননুদ্ধৃতা ন স্বাযাৎ পরবারিণি। স্বাষীত দেবখাতেষু সরো হুদ সরিৎসু চা। নোদ্যা-नामि विकालम् श्राख खिर्छ ९ कमाठन। नाल (शब्द्धनिविधिके বীরহীনা তথা দ্রিষণা দেবতা পিতৃ সচ্ছাত্র যজ্ঞ সত্রাদি নিন্দ-কৈঃ। ক্সত্বাত্ স্পৰ্শনালাপণ শু-দ্ধ্যতে ধর্কাবলোকনাৎ ॥ অভো-জ্যাঃ সৃতিকা ষণ্ট মার্জ্জারাখু শ্ব সকুটাঃ। পতিতাপবিদ্ধ নগাশ্চ চাণ্ডালা শ্চাধমাশ্চ যে ॥ #॥ সু-কেশি ৰুবাচ। ভৰচ্ছিঃ কীৰ্ত্তিতা-ভোজ্যা য এতে সৃতিকাদযঃ। অমীষাণ শ্রোতু মিচ্ছামি তত্ত্তো **लक्ष्मानि ह ।। श्रम्य छेतुः। बाक्ष**-ণী বান্ধণশৈচৰ যাৰচ্ছেষত্ব মাগ-ভৌ। তাবুভৌ সৃতিকেত্যক্তৌ ত্তযো রন্ধ বিগর্হিত।। ন জুছো-ত্যুচিতে কালে ন স্নাতিচ দদা-**छि ह।** शिक्षार्कनाक्षीनः म ষন্টঃ পরিগীযতে ।। দম্ভার্থণ জপ-তে যশ্চ তপ্যতে যজতে তথা । ন পরতার্থ মুদ্যুক্তো মার্জ্জারঃ

পরিকীর্দ্তিতঃ ৷৷ বিভবে সতি নৈ-বাত্তি ন দদাতি জুহোতি চ। ত-মাহ রাখু তসাম তুক্তা কছে। শুদ্ধাতি।। সভাগতানা॰ যঃ স-ভ্যঃ পক্ষপাত সমাশ্রবেৎ। ত-মাহঃ সক্ট দেবা স্থাপান বিগর্হিত ।। স্বধর্মা যঃ সমুৎসৃ-জ্য পরধর্মণ সমাচরেৎ। অনা-পদি স বিদ্বন্তিঃ পতিতঃ পরিকী-ৰ্ত্তাতে।। বেদত্যাগী পিতৃত্যাগী শুরু বহ্নাহ্বক স্তথা। গোত্রাহ্মণ স্ত্রীবধরুদপবিদ্ধঃ স উচ্যতে ॥ যেষাণ ঙ্গলে ন বেদোস্তি ন শাস্ত্রণ নৈব চ ৰত । তে নগাঃ কীর্ত্তি-তাঃ সন্তি স্তেষা মন্ন° বিগৰ্হিত° ॥ আশার্ত্তানা মদাতা চ তিষেধকঃ। শরণাগতণ য ভ্যজভি म हा खाला बदमा न त्रः ॥ क्षा (या বান্ধবৈ: পরিত্যক্তঃ সাধুভি র্রান্ধ-লৈরপি। স্ভাশী ষশ্চ তস্যান্ন• ভুক্তা চান্দ্রাযণ চরেৎ।। যে। নিত্যকর্মণো হানি পর্যামেমি-ত্তিকস্য চ। ভূজ্বান্ন তস্য শু-ধ্যেত ত্রিরাত্রোপোষিতো নরঃ ৷৷ নিত্যস্য কর্মণো হানিঃ কেবল মৃত জন্মসূ। ন তু নৈমিত্তিকো-**ष्ट्रिनः** कर्न्डदग्रा हि कथक्षन ॥

জাতে পুত্রে পিতুঃ স্নান• সচেল-স্য বিধীষতে। মৃতে চ সর্ববন্ধুনা মিত্যাহ ভগবান্ ভৃগুঃ।। প্রেতা-ষ সলিল দেয বহিদশ্বা তু গো-ত্রজৈঃ। প্রথমেক্সি চতুর্থে বা স-প্তমে বাস্থিসঞ্চয•।। উদ্ধৃ সঞ্চয-নাত্তেষা মঙ্গম্পর্শো বিধীয়তে । সোদকৈস্ত ক্রিয়া কার্ব্যা অশু-टेक छ मिश्डेटेकः । विट्यादकः ন শস্ত্ৰায়ু ৰব্লি পাত মৃতেষু চ । তথা গৃহীত সম্যাদে দেশান্তর মৃতে তথা ৷ সদ্যঃশৌচ ভাৰ-দ্বিদন্তচাপুক্তে চতুর্বিধণ। গ-डमुारव তদেবোক্ত॰ পূর্ণকালে ন বৈ চরেৎ।। ব্রাহ্মণান। মহোরাত্রণ ফল্রিষাণা দিনত্র । ব্ডাত্রণ চৈব বৈশ্যস্য শূজাণাণ দানশা-क्रिकः॥ नग बानग गामाकः मा-मम॰थामिटेनम्ह देखः। न्नान्न। कः শ্বক্রিবাঃ স্বর্যুঃ সর্বে বর্ণা যথাক্র-মং ৷৷ প্রেত মুদ্দিশ্য কর্ত্তব্য মে-কোদ্দিষ্ট বিধানতঃ। সপিণ্ডী-করণ কার্য্য প্রেত্তস্য বৎসরা-ন্তরৈঃ।৷ ততঃ পিতৃত্ব মাপন্নে দ-र्भ लोगीनिजिः शुरुः। श्री नन खमा कर्खवा॰ यथाव्यविनिमर्भ-ন ।। পিতুরর্থ সমুদ্দিশ্য ভূমি

क्रिंगिकिक यथा अर्यातम् নাস্য সুপ্রীতা পিতরো যান্তি রা-क्रम ।। यास्यमिखेखमः किक्षिः सः कामा प्रविष्ठः गृह्र। তত্তদ্ঞ্বन বতে দেয়• তদেবাক্ষয় মিচ্ছতা।। অধ্যেতব্যা ত্রষী নিত্যু ভাব্যঞ্চ বিদুষা সদা। ধৰ্মতো ধন মা<mark>হা</mark>-ৰ্যা॰ যম্ভব্যঞ্চাপি শক্তিতঃ॥ আ-চারু সর্বতো মান্বাজুগুপ্সামেতি ব্লাক্ষস। তৎ কর্ত্তব্য মশক্ষেন যন্ন গোপ্য মহাজনে।। এব মাচুর-তো লোকে পুৰুষদ্য গৃহে সতঃ। ধর্মার্থ কাম সংপ্রাপ্তিঃ পরত্তৈহ চ শোভনা ৷৷ এয তুদ্দেশতঃ প্রো-ক্তো গৃহস্থাশ্ৰম উত্তমঃ।ঞ্চা বান-প্রস্থাশ্রনণ ধর্ম্মণ তে বক্ষ্যামো ২ব-ধাৰ্য্যতা ।। অপত্য সন্ততি দৃষ্ট্ৰ। প্রাভ্রে দেহ্দ্য চাষ্তি । বান- ' প্রস্থাপ্রমণ গচ্ছেদাত্মনঃ শুদ্ধিকা-রণণা তত্রারণ্যোপভোগেন ত-পোভি শ্চাত্মকর্ষণ । ভূমৌ শয্যা ব্ৰন্মচৰ্ষ্য॰ পিতৃদেবাতিথিক্ৰিয়া।। হোম স্ত্রিসবন স্নানণ জটা বন্ধল-धातनः। वनारसङ् निरविषः वान अञ्चिषि खुगः॥ #॥ সर्वमञ्र-পরিত্যাগো বন্ধচর্য্য মমানিতা। জিতেন্দ্রিয়ত্ব নাবাসে নৈকন্মিন

সদানী

বসতে চিরণ ৷৷ অনারস্ত স্তথাহা-রেভিকা বিপ্রে হ্নিন্দিতে। আ-ত্মজ্ঞান বিবেকশ্চ তথাছাত্মা-वरवाधनः॥ ठजुर्थ ठाञ्चरम धर्मा হস্মাভি স্তে প্রকীর্তিতাঃ। 🛊। বৰ্ণধৰ্মাণি চান্যানি নিশাম্য নিশাচর। গার্হস্য বন্ধচর্যাঞ্চ বানপ্রস্থ ত্রযাশ্রমাঃ। ক্ষল্রিয়স্যা-পি গদিতা য আচারো দ্বিজ্স্য হি॥ বৈখানসত্বং গার্হস্য মাশ্রম-षिতय विশঃ। গ। হ'স্থা মুত্তম • ত্বেক॰ শত্রস্য ক্ষণদাচর ৷৷ স্বানি বর্ণাশ্রমৌক্তানি ধর্মাণী হ ন হা ॥ প্ৰেৰ্থ যো হাপ্ৰতি তস্যাসৌ পরিঙ্গপ্যতি ভাস্করঃ ৷৷ স্থপিতঃ क्लनाभाग पिरुद्रागिविवृक्तरम । ব্যাশ্য পততে তদ্য নরস্য ক্ষণদা-* চর।। তস্মাৎ স্বধর্ম্মণ ন হি সণ ত্য-জেত ন হাপযেচ্চাপি তথাত্মব-শং ৷ যঃ সংত্যক্তেক্সাপি নিজ্ঞ হি ধর্ম্মণ তম্মৈ প্রহ্নপ্যেত দিবা-করশ্চ।। পুলস্ত্য উবাচ। ইত্যেব মুক্তো মুনিভিঃ সুকেশিঃ প্রণম্য-छान् बक्त श्रेषीग्रहर्षीन्। जगाम ॥ চোৎপত্য পুরু স্বকীয় মৃহর্মুছ || র্ধশ্ম মবেক্ষমাণঃ ৷৷ ইতি শ্রীবাম-नर्तार्व ३८ ज्यायः॥ 🟶॥ ञ-

नाद शास्त्र वर्षथए २२।००।
०১ অधार्ययू विकृभूतार ०
ज्ञार्थ्य प्रक्रियूतार ०
व्यार्थ्य प्रक्रियूतार व्यार्थ्य प्रक्रिय्य व्यार्थ्य प्रक्रिय व्यार्थ्य व्यार्थ्य प्रक्रिय व्यार्थ्य व्यार्थ व्यार्थ्य व्यार्थ व्याय्य व्यार्थ व्याय्य व्याय्य व्याय्य व्यार्थ व्याय्य व्

সদাচারবান্ ত্রি সদাচারবিশি-ঊঃ। সদাচারী। সদাচারশব্দা-দস্তার্থে বতু প্রত্যয় নিষ্পায়ঃ।। সদাতনঃ পুণ বিষ্ণুঃ। ইতি ত্রি-কাপ্তশেষঃ।। নিত্যে ত্রি। ইত্য-মরঃ।।

मनाटाया खी बनायनी। ইতি
শক্চ क्रिका॥ क्रव्याया। ইতি
मनानीता শক্দ र्भनाव।।
मनानानः पू॰ खेतावजः॥ ग
त्नाया मज्ञ्ञी। ইতি मिननी॥ निज्ञानात्न क्री॥
मनाननः पू॰ भिवः। यथा।

मनाभिवः मनाकर्छ। मनाक्छी मनागिष्ठः। मनानमः मनावर्छ। मनामक्रविवर्ष्णिङः॥ ইि श्री-भिवष्ठाभाव शार्वजीश्वतमः वादम भिवमञ्जूनाभारस्राजः॥ मज्जा-द्वानयुष्क जि। यथा। मभानत्म मनानमः मनानत्म। जिवग्रि । मग्रानत्म नितानत्म। नितान-रम। जविग्रिजि॥ ইिज श्रुतात्।

, ভগবতীবাক্যং ॥ मनानर्जः पू॰ थ्रञ्जनभकी। इंडि मक्फिका॥ मर्बमान्डा-কারকে ত্রি ॥ महानीतवहा खी कत्रवायानही। । ইতি শব্দরত্বাবলী ।। महानीत्रा खी कत्राचानही। इंडामदः॥ भीदीविवाहम्मरय শঙ্করকরগলিতসম্পূদানতোষ প্রভবত্বাৎ করস্য তোষণ বিদ্য-তে অত্রেতি করতোষা অর্শ আ-দিস্বাদঃ। শ্রাবণে এতদক্রণ স-ৰ্বা নদ্যো রজস্বলা ইমন্ত ন রজ-স্বলা। অতএব সদা সর্বদা নীর-मना। देखि मनानीद्गा। खशा ह मृिः। ज्यामि कर्करे प्रवी बार्॰ गना तज्यना। गर्बा तकः বহা নদ্যঃ করতোষামুবাহিনী ।। ইতি ভরতঃ ।। मनाभूष्मः भू नातित्कनवृक्तः। इंडि मक्याना ॥ मर्बराक्रम् य-যুক্তে ত্রি ॥ मनाभूष्णी जी त्रकार्कवृक्तः। रेिं त्रज्ञमाना ॥ সদাপ্রসূনঃ পু॰ রোহিতকঃ।। व्यक्ः।। जन्मः। <u>दे</u>ि त्राकः निर्यकः ॥

महाक्लः पू॰ ऋत्रकनः॥ नाङ्गि क्लः॥ উजुषतः। ইতি मिनि-नी ।। विद्यः। ইতি क्रिवेशः ॥ मनाकना जी जिमिक्षभूणाः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ৷ে বার্ত্তাঙ্গ-বিশেষঃ। সলাবাগুন ইতি भनीवाश्वन देखि मँदवावाश्वन ইতি চ ভাষা। অস্যা ওণাঃ। मनाकना जित्नायत्री द्रक्रिक थमामनी। क्ख् कष्ट्रती टेठव বার্ত্তাকী গুণবত্তরা ৷ ইতি রা-জবল্লভঃ ৷৷ সদাভদ্রা স্ত্রী গম্ভারীবৃক্ষঃ। ইতি त्रव्याना ॥ ममारयागी^न श्रु॰ विक्कुः। **ই**তি ত্রিকাগুশেষঃ।। হরিশ্বনে ম-धूमा भवर्जनक न जा गी। यथा। मनामृनिः मनारयाशी मधुमा॰-ममा वर्জनाए। निताधि नींक्र-গোজন্বী বিষ্ণুভক্তশ্চ জাযতে ॥ ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব॰ ॥ ममृक् जि जूना । ইতামরः ॥ সদৃশঃ ত্রি সমঃ। ইত্যমরঃ।। উচিতঃ। ইতি মেদিনী।। ममृमण्यासनः क्री निम्लेनः। ইতি ত্রিকাওশেষঃ ॥ **ममृकः** वि मृमः। ইতামরः॥

नगःशा

गरामाः जि निकितः। २०१४तः ॥ प्रभाविजः। यथा। मर्पाम मरवरनो निकरि दम्मरवनाचि তৌ ক্রমাৎ। ইতি ধরণিং।। मखुणः वि मजाः। ইতি হেম-ठखः ॥ मर्प की गृर•। ইতামর:॥ জল॰ || महाः माथा खी कशिकष्टः। । इंडि यिनिनी ॥ नाराः वा जरकार। जरभवाायः ा मनि २। इंडामतः॥ (घ তৎক্ষণে তৎকালে। সমানে ২-क्रि महाः कठ क कर रेडा मिना নিপাতঃ। সদ্যঃ পততি মাণ্সে-न इंতि मुश्रानि मूत्रानि । षय मस्त्रामि। देखि छत्र ।। সদ্যঃকৃত ক্লী নাম। ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ।। তৎক্ষণক্লতে ত্রি।। ত্রি তৎক্ষণাৎ-সদ্যঃপ্রাণকরঃ

महाः था। १ इतः वि তৎক্ষণাৎ-ववायुका नीनकजवाति। यथा । শুষ্ক মাণ্স দ্রেয়ো বৃদ্ধা বা लर्क खङ्गन मिर्रा अञ्चार देव-

ইতি চাণক্য়ণ ৷৷

বলকারকজব্যাদিঃ। যথা। স

দ্যোষা সং নবামঞ্চ বালান্ত্রী

ক্ষীরভোজন•। ঘৃত মুক্ষোদক-

देश्व महाः थानकतानि यह ॥

महाःट्यी

थून निर्जा मगःथानर्त्रानि विह ॥ देखि ठावका॰ ॥ नमाः श्विकः जी नमाः त्मीहः। यथा। प्रभाखतमृत्व जात्न म-माः एकि र्या गृत्य। देवि गाक्टफ ७०१ व्यथायः ॥ ইতি শব্দচন্দ্রিকা॥ महाः भोतः की उरक्रमाष्ट्रिकः। यथा। निम्निनः कात्रवा दैवना দাসী দাসাশ্চ ভূত্যকাঃ। অগ্নি-মান্ শ্রোত্তিষো রাজা সদ্যঃশৌ-চাঃ প্রকীর্ত্তিতাঃ॥ ইতি গারুডে ७०१ व्यथायः ॥ का विनाक । कात्रवः भिन्नित्ना देवला नामी मात्रा खरेश्व ह। माजारता नि-यभी टैठव बन्नविष्काजातियो ॥ সত্রিণো ব্রতিন স্তাব্ৎ সদ্যঃ-শৌচা উদাহতাঃ। রাজা চৈবা-ভিষিক্তশ্চ প্রাতঃ সত্রিণএব চা यख्ड विवाहकाटन ह प्रवियारग তবৈথব চ। সদ্যঃশৌচ॰ সমাখ্যা-ত দুর্ভিক্ষেবাপ্যুপদ্রবে।। ডি-ষাহ্ব হতানাঞ্চ বিদ্যুতা পার্থি-दि किटिकः। महाःस्नोहः मभा-খ্যাত সজাতিমরণে তথা।। অট্মৌ মৰুপ্ৰগতনে বীরাধস্যা-

भानाभटक। बाक्स गटर्प ह म॰ना-স্তে সদাঃশোচ• বিধীষতে ॥ ইভি কৌর্ম্মে উপব্লিভাগে২২ অধ্যায়ঃ ।। 🟶 ।। ज्यश्रद्धः। ज्यः नामाः-শৌচ । ভত্র বিষ্ণু । নাশৌচ রাজ্ঞা॰ রাজকর্মণি নু ব্রতিনাণ ৰতে ন সত্ৰিণা° সত্ৰে ন কা**ৰ**াণ স্বকর্মণি ন রাজাজ্ঞাকারিণাণ छिष्टिया न एष्ट्या छिष्ठ। विवाद-याः পূर्वमष्ठरयाः ইতি। সত্রি-ণা• নিত্য প্রবৃত্তামদানানা• সত্তে অন্নানে ৷ করেবঃ সূপকারাদ্যাঃ । आित भूताता मूनकारतन यद-কর্ম ধরণীয় নরেষিহ। তদন্যো নৈব শক্ষোতি তন্মাজ্বঃ স সূ-পর্ব্যা ক্র্মপুরাণে হ কারবঃ निश्चित्ना देवना नामा नामा छ-থৈৰ চ। দাতারো নিষমী চৈদ वक्वविषुक्षहातिर्गि॥ मिलिर्ग ब তিন স্তাবৎ নদ্যঃশোচা উদাস্থ **ठाः। जामिश्रुतात्। मिन्निन न्छि**-ত্রকারাদ্যাঃ কর্ম ষৎ সাধযন্ত্যুত । তৎকর্ম নান্যে জানাতি ত স্মাৎ শুদ্ধঃ স্বকর্মাণি।। দাসা দা-স্যশ্চ ষৎকৰ্ম সৰ্বস্ত্যপি চ লীল-যা। তদন্যোন ক্ষমঃ কর্ত্তুণ তেন তে শুচয়ঃ স্মৃতাঃ॥ চিত্ৰকরাদ্যৰা-

भाः निविनः। जामा नकाटकने-निर्दिककाम्याः। भाजाजभः। मृ-लाकर्भकद्राः भूषा माना माना স্তব্ধৈব চ। স্নানে শরীর সংস্কারে गृश्कर्मगामृ विजाः ॥ प्रृष्ठिः । म-माः न्यृत्मा गर्जनातमा ज्कमाम স্ত্র্যহাচ্ছ্রচিঃ। বৈদ্যা অপি চিকিৎ-সাযা মেব। তথা চ স্মৃতিঃ। চি-কিৎসকে৷ যৎ স্বৰুতে ভদন্যেন ন শক্যতে। তন্মাৎ চিকিৎসকঃ স্পর্শে শুদ্ধো ভবতি নিত্যশঃ া দাতার আবশ্যক প্রত্যহ॰ গো **जृ**यि श्रिकामिमात्न श्रेकुः। তেষা তদান এব। প্রত্যহ দান-ঞ। দাতব্য প্রত্যহ পাত্রে ইতি ষাজ্ঞবন্ধ্যাৎ। কাদাচিৎক দান-কারিণাম্ব দানে প্রক্রান্তে অশৌ-চ• নাস্তি তাবৎ যাবত্তৎ কর্ম স্ব-ৰ্বস্তি ইতি। হারলতাপ্যেব । পূৰ্ৰ সঙ্কল্পিত জব্যদানেপি নাশৌ-চণা তথা চ মিতাক্ষরাযাণ। পূর্ব স-ঙ্গলিত জব্য দীয়মান ন দুয়াতি । ইতি। चामिপুরাণে। निवृত्छ ক্লচ্ছ হোমাদৌ ব্ৰাহ্মণাদিযু ভো-জনে। গৃহীত নিষমস্যাপি ন স্যা-দন্যস্য ক্স্যচিৎ।। নিমন্ত্রিতেষু বিপ্রেয়ু প্রারন্ধে প্রান্ধকর্মণি ১

ममाध्या

निमजनाचि विधना ताथावाहि-রতন্য চা। বেহে পিতৃর্ তিঠৎ সু नाटमोरु विमाटक करिय। आ जाशकामि इटक जमारश्र रहाम योग स्ट्रियू नगारश्चम् नम्पूर्गार्थ মবশ্যু ময় বান্ধণা ভোজ্বিত ব্যা ইতি গৃহীতনিযমো য স্তদ্যা-শৌচে ২ন্যঙ্গলজাতানা মপি ভূঞ্জানানা দোষাভাবঃ৷ কস্য চিদ্দাতৃ ভোক্তো রিত্যর্থঃ। এব॰ প্রারন্ধশান্ধেপি ক্ষচিদিত্যনেন দাতৃ ভোক্ত্রো রশৌচাভাবঃ। ত-থা চ বিষ্ণুঃ। ত্রত ষজ্ঞ বিবাহেষু শ্রান্ধে হোমে ২র্চনে জপে। আ-त्रत्क मूठक न मामनात्रत्क जू সূতক ইতি। পরাশরঃ। দীকি-তেমভিধিক্তেযু ত্রত তীর্থ পরে-ষুচা তপো দান প্রসক্তেযু না-**(मोर्ट मृ**ठमूठ्टक ॥ यक्षमानाः ना॰ मायवागात्र मोक्नीटवटकी ক্লতাষা• দীক্ষিতত্ব• ভবতি তেন मीक्नीरयक्राखत्रकाल यक्रमान मा यदकर्म ज्वारमोहः नास्ति। অভিবিক্তেযু ক্ষত্রিষ নৃপতিষু। তী-র্থণ গঙ্গাদি। শুরু রিতি কশ্চিৎ।। कालगाववीरम कृर्मभूतान । का-ন্যোপবাদে প্রক্রান্তে অন্তরা মৃ-

ত সূত্ৰে। ভত্ত কাম্য বত স-ষ্যাৎ দানাৰ্চন বিবৰ্জিত ।। তত্ত্ব मानार्कनः चरः वर्द्धारा**९ जना** ৰারা তুকারফেৎ। তথা চ মৎ-স্যপুরাণ । পর্ত্তিণী সূতিকা নক্তণ अभाती वृतकश्रमा। यमा श्रमा তদান্যেন কারবেৎ ক্রিয়তে সদা ।। উপবাসাচরণে গর্ত্তাদি পী-ডাসম্ভাবনাযা• নক্ত• ভোজন• ষ্ব্যাৎ। উপবাদেশ্বশক্তন্য ত-দেব ফল মিচ্ছতঃ।। অনভ্যাদে-ন রোগাণা কি মিষ্ট ব্রত মুচ্য-তা । ইতি নারদপ্রশানস্তর । উপবাসেম্বশক্তানা নক্ত ভো-জন মিষ্যতে। ইতি মৎস্যপুরাণ এবেশ্বরপ্রতিবচনাৎ। স্বয় মশুদ্ধা श्वकवाता शृकािं क॰ कात्र त्य ६ । कारिक यूर्यवात्रामि त्रमा शुक्रा-শুদ্ধিকালে স্বয়ণ ক্রিয়তে। স্মৃতি পরিভাষাযা মপ্যেব ৷ বিষ্ণুঃ ৷ বহুকালিক সংৰুদ্ধো গৃহীতশ্চ পু-রা যদি। সূতকে মৃতকে চৈব ব্র-ত • ठरेन्दर मूया छ।। এত ६ का भा ত্রতপর । নিত্যানাস্ত্রারন্ধানা ম-নারন্ধানা মবিশেষেণ কর্ত্তব্যতা। নাশৌচ মিত্যনুবৃত্তৌ বন্ধপুরাণ १ देनष्ठिकमाथ वानामा जिकार्थ॰

প্রস্থিতস্য চ। নৈষ্ঠিকস্য বন্ধ-চারি বিশেষস্য। অন্যন্য চতুর্থা-শ্রমিণঃ ৷ অশৌচিভিক্ষাগ্রহণে দোষাভাবঃ। ইতি হারলতাপ্র-ज्**ठ**यः ॥ कोर्त्यः। महाःस्नीहः সমাখ্যাত দুর্ভিকে চাপ্যুপপ্লবে । ডিয়াহবহতানাঞ্চ বিদ্যুতা পা-र्थि देव बिरिकः ॥ अमाःरमोरु সমাখ্যাত শাপাদিমরণে তথা। উপপ্লবে রাজবিপ্লবে। ঔপ-সর্গিকাত্যস্তমরকপীডনে চ স-দ্যঃশৌচ মৃক্তং। তথা চ পরা-উপসৰ্গমৃতে চৈব স-माः स्नोहः विशीयत्व । অতএব আপদ্যপি চ কফাষা সদ্যংশী-চ॰ বিধীষতে। ইতি ষাজ্ঞবন্ধ্যব-চনে ২নিরুদ্ধভট শূলপাণি প্র-ভৃতিভি রৌপদর্গিকাত্যস্তমরক পীডাযাণ সদ্যঃশৌচণ বিধীষতে ইত্যক্ত•। উপসর্গশ্চ ত্রিবিধোৎ-। পাতঃ। তথা চ গর্গদংহিতা বার্হ-স্পত্যযোঃ। অতিলোভাদসত্যা-দা নাস্তিক্যাদ্বাপ্যধর্মতঃ। ন-রাপচারামিষত মুপদর্গঃ প্রবর্ত্ত-তে।। অতে। ২পচারামিযত ম-পবর্জন্তি দেবতাঃ। তাঃ সৃজ-ন্তান্ত্রাণস্তাবদিব্য নাভদ ভূ-

মিজান্।। তএব ত্রিবিধা লো-কে উৎপাতা দেবনির্দ্মিতাঃ। বি-চরন্তি বিনাশাষ কপৈঃ সম্ভাব-**ৰন্তি চা। যদ্যপ্যপদৰ্গঃ স্মৃতে।** রোগ ভেদোপপ্লবধো রপীতি বিশ্বকোষাদূপসর্গস্যোভষবাচ-কত্ব তথাপ্যত্র মুনি প্রযুক্তত্বে-নান্তরঙ্গদাৎ ত্রিবিধোৎপাতাম্ব-কোপদর্গো গৃহতে ন তুরোগ-বিশেষাত্মক ইতি। এতেনোপসৃ-জন্তীতি ব্যুৎপত্ত্যা দেহাভ্যস্তর এব ষাবদ্বৰ্ত্ততে তাবৎকাল মরণ এব সদ্যঃশৌচ• বহিৰ্ভাবে ত্ৰণ প-রম্পরষা মরণে সতি স্বজাত্যক্তা-শৌচ মেবেতি ত্র্যাহ মিতি দর্শন স্মৃতিসারপ্রদীপা ইতি বাচম্প-তিমিশ্রোক্ত হেষণ। দিজৈ র্রা-ऋदेवः। भाषामीठामि भंदम-নাভিচারমৃতস্য গ্রহণ । কূর্মপুরাণাভ্যাণ ষদ্ধান্ধণহতস্যা-শৌচাভাব উক্তঃ স বুদ্ধিপূৰ্ৰক-হননে বোদ্ধব্যঃ। প্রমাদহতে ত্বশৌচাদ্যস্ত্যেব অন্যথা মরীচি वहनः निर्दिषयः मा। । यथ।। বিষ শস্ত্র শ্বাপদাহি তির্য্যগ্ ব্রা-ন্ধণহাতিনা । চতুর্দশ্যা জিয়া কাৰ্য্যা অন্যেষাম্ভ বিগৰ্হিত। ।।

गामाजा

বিষাদি সাহচাৰ্য্যাৎ আদাক্কতযাতো ২স্যান্তীতি প্ৰতীষতে।
যক্ষাত্ৰ বে চ বৈ ত্ৰান্ধনৈ হতা
ইতি ত্ৰন্ধপুরাণীয়ণ সাধকদ্বেনোগন্যন্ত্ৰণ প্ৰান্ধবিবেকে তকিন্তাণ মহাপাতকিনো যে চ
পতিতা স্তে উদাহ্যতাঃ। ইত্যুত্ৰেরার্ক্জন পাতিত্য মতিধায়
তেষাণ গ্রান্ধ নিষেধাৎ। জাবালঃ। দুর্ভিন্ধে রাফুসম্পাতে
শস্ত্র গো ত্রন্ধয়াতিতে। পতিতে ২নশনপ্রেতে বিদেশস্থে
শিশোন চাা নাশোচ মিত্যর্থঃ
। ইতি শুদ্ধিতত্ত্বণ।।

সদ্যক্ষঃ ত্রি নূতন । ইতি হেম-চন্দ্রঃ।।

সদ্যোজাতঃ পু॰ বৎসঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। শিবঃ। যথা।
ভকৈ নানাবিধৈ র্যুক্ত॰ ব্রাহ্মণার নিবেদ্বেৎ। প্রীয়তা॰ দেবদেবে। হত্ত সদ্যোজাতঃ পিনাকধৃক্।। ইতি মাৎস্যোশিবচ্চুদ্দশীবতে ৭৯ অধ্যায়ঃ।।
সদ্যোজাভাষ নমঃ। ইতি শিবরাত্রিবতে শিবসান্মন্তঃ।
ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বকা। তৎক্ষণতাৎপ্রমে ত্রি।।

সধর্মা

সদ্যোভাবী^ন পু॰ তর্ণকঃ। স-" দ্যোজাতবৎসঃ। ইভি শব্দ-চন্দ্রিকা।।

সক্রঃ ত্রি গমনকর্ত্ত। সদধা-তোরু প্রত্যবেন নিম্পানঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী।

সদ্বনথঃ পুণ গ্রামঃ। সৎশব্দপূর্বক বসধাতো রথচ্ প্রত্যথেন নিষ্পান্ধঃ। ইতি কেচিৎ।।
কিন্তু সংপূর্ব বসধাতো রথ প্রত্যথে সম্বস্থ ইতি নিদ্ধান্তকৌমুদ্যাণ নিষ্পাদিতং।।

সদৃত্ত ক্লী সাধুসভাব:। সচ্চরিত্রণ। ইতি জটাধর:॥ তদ্মুক্তে
ত্রি। যথা। নাসমঞ্জসশীলৈস্ত
সহাসীত কদাচন। সদৃত্যানিকর্ষো হিক্ষণার্জ মপি শস্তে॥
ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বণ।।

সদৃত্তিভাক্ ত্রি সদৃত্তিবিশিষ্টঃ।
যথা সারাবল্যাণ। পথ্যাশিনাণ শীলবভাণ নরাণাণ সদৃত্তিভাজাণ বিজিতেভিযোণাণ। এবঘিধানা মিদ মাযুরত্র চিন্ত্যণ
সদা বৃদ্ধানুনিপ্রবাদঃ।। ইতি
নল্মাস্তব্বং।।

সধর্মা ত্রি সদৃশঃ যথা। তুল্যঃ
সমানঃ সদৃকঃ স্কুপঃ সদৃশঃ

मभः। माधात्रन मधर्मात्नी मवनंः मिष्णः ममृक्।। ইতি ह्मচক্রঃ।। ममानधर्म्यकुक्ष्णः।।
मधर्माठातिनी जी जार्या। यथा
। मधर्माठातिनी जी जार्या। यथा।
। मधर्माठातिनी श्री कार्या। यथा।
मधर्मानी जी जार्या। यथा।
मधर्मानी जी जार्या। यथा।
मधर्मानी वधृषी माष्ठितन्छ।थ
मधर्मानी वधृषी माष्ठितन्छ।थ
मधर्मानी। श्री महहती शानि
गृहीजी गृहिनी गृहा।। ইতি
ह्महक्तः।।

সংশ্বী ত্রি সমানধর্মাচারী।

যথা। পশুনাণ সমজো হন্যে
যাণ সমাজো হথ সধর্মিনাণ।

ইত্যমরঃ।

স্থিঃ পু॰ অগ্নিঃ। ইতি ত্রিকাঞ্চল্ শেষঃ।। স্থিঃ পু॰ বৃষভঃ। ইতি সিদ্ধা-স্তকৌমুদ্যা মুণাদিবৃত্তিঃ।। স্থীটী স্ত্রী স্থী। ইতি হেম-চন্দ্রঃ।।

স্থ্যঙ্ ত্রি সহচরঃ। ইত্যম: ।।
সনঃ পু: ত্রী হস্তিকর্ণাক্ষালঃ।
যথা। কর্ণাক্ষালে সনঃ সনী।
ইতিশব্দরত্বাবলী।।

मनः पु॰ घण्डां शां हिन्युकः। ইতি
শক্ত ন্দ্ৰিক। ।।

मनकः भू॰ विक्षूभातियम् छनः। ইতি শব্দরত্নাবলী।। সতু ব্রহ্মণ শ্চতুম্পুত্রান্তর্গতপুত্রবিশেষঃ । यथा। मृख्रा शाशीयती॰ मृष्टि॰ নাজান॰ বহ্বমন্যত। ভগব-দ্যানপূতেন মনসান্যাণ স্ততো श्रृष्डि ।। सनक्ष सनन्त्रः म-নাতন মথাত্মভূঃ। সনৎস্কমা-त्रक भूनीन निक्षिशानृ कृत्तं जनः ॥ তান্ বভাষে স্বভঃ পুত্রান্প্র-जाः मृज्य भूखकाः। उत्तकः त्याकथर्याटना वांमूटमवन्त्राय-ণাঃ।। ইতি শ্রীভাগবতে ৩ ক্ষন্ধে ১২ অধ্যাयः॥ তमा वामञ्चानः জনলোকঃ। ইতি কাশীখঞ।।

সনৎ পু॰ একা। ইতি ত্রিকাঙ **শেষ শব্দরত্মাবল্যো ॥** मन् वा गर्नमा। रेजामत्रिकी-या त्रामाध्यमः॥ मन १ जमातः श्रु उमाः श्रु । **७९** शर्यायः। देवशाबः २। हे-ভ্যমরঃ৷৷ বৈধাতকিঃ ৩৷ ইতি ভরতঃ ৷ ধাতৃপুত্রঃ ৪ বেধায়ঃ ৫। ইতি শব্দরত্বাবলী।। তমা-মব্যুৎপত্তি র্যথা। সনৎ বন্ধা **७**मा क्रमातः मन ६ क्रमातः । म-ন্নিত্য ঙ্গমার স্তেন সনৎঙ্গমারো বাপীতি স্বামিমতং। ইতি ভরতঃ ॥ जन्नामकात्रनः यथा। यदश्य-পন্ন স্তথৈবাহু সমার ইতি বিদ্ধি মাণ্য তত্মাৎসনৎস্ক্মারেভিনা-মৈতন্মে প্রতিষ্ঠিত ।। ইতি মহা-ভারতে হরিব শঃ।।ৠ।। স চ ধর্ম-স্যৌরসেন অহিংসাযাণ জাতঃ ি পশ্চাৎ বন্ধণো দত্তপুল্রঃ। অ-ষ সাধ্যগণঃ। যথা। 🕮 নারদ উবাচ। কোষণ সনৎঙ্গমারেতি ষস্যোক্তণ ব্ৰহ্মণা স্বয়ণ। ত্ৰাপি তেন গদিভ বদ মা মনুপূৰ্বতঃ॥ পুলস্ত্য উবাচ। ধর্মাস্য ভার্য্যা-হিংসাখ্যা তদ্যাণ পুত্ৰ চতুষ্টয়ণ 🏻 । সম্পাপ্ত॰ মুনিসাদূল যোগ-

শাস্ত্রবিচারক**া৷ জ্যে**গুঃ সনৎ-সমারো ২ভূৎ দ্বিতীয়শ্চ সনা-তনঃ ৷ তৃতীয়ং সনকো নাম চতু-র্থশ্চ সনন্দনঃ।। সাংখ্যবেতার यगतः किंगलः वाजू मामूतिः। দৃফুা গঞ্চশিখ শ্রেষ্ঠ যোগযুক্ত তপোনিধিণা জ্ঞানষোগণন তে ममू क्यां या 'त्यां शिक्त क्या या । জ্ঞান মাদ্য মহাযোগ কপিলা-দি ন্ চাবদৎ ৷৷ সনৎস্মার শ্চা-ভ্যেত্য ব্রহ্মাণ কমলোদ্ভব ৷ অ-পৃচ্ছদেযাগবিজ্ঞান ত মুবাচ প্র-জাপতিঃ।। কথ্যিষ্যামি তে সা॰-খ্য॰ যদি পুত্রেতি মে বচঃ। শৃণো-সি সরুষে তচ্চ জ্ঞান সাংখ্য শ্রুতো ভব ৷৷ পিতামহবচঃ শ্রুত্বা সাধ্যঃ প্রাহ তপোধন। সত্য• হি তব পুক্রোহণ দেব ষোগং বদস্ব-মাণ।। ত মুবাচ মহাধোগী স্বন্ধা-তা পিতরৌ যদি। দাস্যেতে চ ততঃ সূনু দাবাদো মেসি পুত্রক।। সনৎস্মারঃ প্রোবাচ দাযাদপ-রিকল্পনা। যেষা হি ভবতা প্রোক্তা তান্ মে ব্যাখ্যাতু মর্হসি ॥ তদুক্ত॰ সাধ্যমুখ্যেন বাক্য॰ শ্ৰুত্বা পিতামহঃ। প্ৰাহ প্ৰহ্ম্য जगवान् मृगू वय्तमा नात्रम ॥

ইতি বামনে ৫৭। ৫৮ অধ্যায়ে ।। म ह शक्षश्यनत्यकः हु जानि-সংস্থার বেদ, সন্ধ্যা বিহীনশ্চ। यथा। उष्ट्रिका मुक्षरमा ताजा রত্নত্বিতা। গৃহীয়া ক नाका॰ त्रया। नात्रनाय मटनी মুদা ॥ গৃহীত্বা চ সভার্যাণ ত॰ পুত্র ধাতা মুদান্বিতঃ। প্রথযৌ বন্ধলোকঞ্চ দেবেক্তৈ মুনিভিঃ॥ সহ।। তত্রাজগাম নগ্নন্চ প্রস্থ লন্ ব্রহ্মতেজসা। সনৎস্কমারো ভগবান্ সাক্ষাচ্চ বালকো ষ্থা ॥ मृत्युः পূर्वकः वयम। यटेशवः পঞ্হাযনঃ। অচুডো ২নুপবী-তশ্চ বেদ সন্ধ্যাবিহীনকঃ ॥ ক্লকেতি মন্ত্রণ জপতি যস্য না-রায়ণো গুরুঃ। অনস্তকাল ক-ল্পঞ্জ ভ্রাতৃভিশ্চ ত্রিভিঃ সহ ॥ বৈক্ষবানা মগ্রণীশো জ্ঞানিনা-ঞ্ গুরো গুরুঃ। আরাদৃষ্টা না-রদ স্ত' ভ্রাতরঞ্চ সতা' বর' ৷৷ সহসা শিরসা ভূমৌ দণ্ডবৎ প্র-ণনাম তে। উবাচ নারদং বালঃ প্রহস্য পরমার্থকে ।। ইতি ব্রহ্ম-বৈবর্ত্তে শ্রীক্লফজন্মখণ্ডে ১২৯ অধ্যায়ঃ ॥ ৠ॥ জিনমতে দ্বা-দশসাৰ্বভৌমান্তৰ্গতসাৰ্বভৌম-

जिनः। ३७ि (२ म हस्यः ॥ সনন্দঃ পু॰ বন্ধনঃ পুত্ৰচতৃষ্ট-ষান্তৰ্গতপুত্ৰবিশেষঃ। সতু জ-নলোকবাসী। ইতি কাশীখণ্ড॰ ।। সএব দিব্যমনুষ্যঃ। অস্য ত-র্পণ নিবীতিনা প্রত্যজ্মুখেন প্রা-জাপত্যতীর্থেন সামগেন কর্ত্ত-ব্যং। তদিতরেণ উদগ্মখেন ক-র্ত্তব্যং। যথা দক্ষঃ। প্রাদেশমা-ত্র মৃদ্ধৃত্য সলিল॰ প্রাধ্ব খঃ সু-রান্। উদগ্মনুষ্যাণ স্তৃপ্যেত পি-जून् मिक्नाठ खर्था ।। चटेवास्त **७**र्थाप्तिवान् मनुष्यान् अभन-ধ্যতঃ। পিতৃ স্ত সশমূলাগ্রে विधिः कोटमा यथाक्रमः ॥ क्र-তোপবীতী দেবেভ্যো নিবীতী চ ভবেত্ততঃ। মনুষ্যাণ স্তর্পবে-**ए**क्जा अविপूळान्यी॰ खथा ॥ সনকশ্চ সনন্দশ্চ তৃতীয়শ্চ স-নাতনঃ। কপিল শ্চাসুরি শেচব বোঢ়ুঃ পঞ্চশিখ স্তথা ৷৷ সর্বে তে তৃপ্তি মাযান্ত মন্দত্তেনামূনা मना। ञ्रातनाञ्जलिषयः। यथा। **একৈক মঞ্জলি॰ দেব। দ্বৌ দ্বৌ** जू मनकामयः। अर्रेखि शिठत ন্ত্ৰীণন্ত্ৰীন্ ব্ৰিষ স্কেবৈক মঞ্জলিণ ৷৷ পরিশিউপ্রকাশধৃত সামবে-

দীয় ষট্ত্রিংশদ্বান্ধণং। মনুষ্যাণ লা মেষা দিক্ ষা প্রতীচীতি। তথা চ জ্যোতিকৌমে ক্রমতে। প্রাচীং দেবা অভজন্ত দক্ষিণাং পিতরং প্রতীচীং মনুষ্যাং উদীচী মসুরাং অপরেষা মুদীচীং মন্ যাং। বিষ্ণুপুরাণে। প্রাজাপ-ত্যেন তীর্থেন মনুষ্যাং ন্তর্পথেৎ পৃথক্। ইত্যাক্লিকাচারতত্ত্বং।। সনপর্ণী জ্রী অসনপর্ণী। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

সনসূত্রণ ক্লী পবিত্রকণা দ্বে শণ-সূত্র জালে। শণস্য সূত্র॰ শণসূ-ত্র॰ শণতি দদাতি সূত্র॰ শণঃ। শণ अग्रमात्न व्यन् भग क्षानवाामि मूर्कनावास्तः। ইতি वहबः। मत्ना प्रखामापि प्रखानाखः । ইতি কেচিৎ। তন্মতে ষনদুঞ্ দানে ইত্যস্য ৰূপণ। সংগ্ৰাদ স্তাসাদি মূর্ র্দ্ধন্যণান্ত ইতাপরে। সণ কিণ মণি কাকণ কোণ কাণা ইতি মূর্দ্ধন্যণাস্তে বিদ্যাভরণঃ। কার্পাস মৃপরীত স্যাৎ বিপ্র-স্যোৰ্দ্ববৃত তিবৃৎ। সনসূত্র মম রাজে বৈশ্যস্যাবিকসৌ ত্তিক ।। ইতি মনুবচনাৎ পবি-ত্রক মপি ভদুচ্যতে। ইভ্যমর-

টীকাষা॰ ভরতঃ ॥ সনা ব্য নিত্য । ইত্যমরঃ ॥ সনাতনঃ পু• বিষ্ণুঃ। শিবঃ।৷ ব্ৰহ্মা।। পিতৃণামতিথিঃ। ইতি ट्यहन्तः॥ निवायन्याः। जना প্রমাণ সনন্দশব্দে ডফ্টব্যং। म ह बच्चनः भूखः। यथा। मनदः সমারো ধর্মান্চ সনকশ্চ সনা-তনঃ। সনন্দ শ্চাপি সূর্য্যশ্চ যে ২ন্যে বা ব্রহ্মণঃ সূতাঃ।। বিচ-ক্ষণা ন ষদ্বজুণ কে বা খন্যে **ज्रुष्मयः॥ ३७ि बन्मदैवदर्ल्ड** প্রকৃতিখণ্ডে ৩১ অধ্যায়ঃ ৷৷ সতু জনলোকবাসী। ইতি কাশী-খণ্ডণ ৷ বব্লিপুরাণমতে তু ত-পোলোকস্ ইতি ভেদঃ ৷৷ বৈ-ফবরাজঃ। ইতি মৎস্যপুরাণা। সনাতনঃ ত্রি নিভ্যা ইত্যমরঃ ।। সুনিশ্চলঃ। ইতি বিশ্বঃ।। সনাতনতমঃ পু॰ বিকুঃ। ইতি তস্য সহসুনামস্তে ত্রি॰।। मनाष्ट्री खी पूर्गा। नश्वीः॥ সরস্বতী। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ তস্যা ব্যুৎপত্তি র্যথা। সর্ব-কালে সনা প্রোক্তা বিদ্যমানে তনীতি চ। সৰ্বত্ৰ সৰ্বকালেষু विष्णगाना मनाउनी !!

সম্ভত

বন্ধবৈবর্ত্তে প্রক্ষতিখণ্ডে ৫৪ অধ্যায়ঃ ।। অপি চ। নির্গুণস্য চ
নিত্যস্য বাচকশ্চ সনাতনঃ ।
সদা নিত্যা নির্গুণা যা কীর্ত্তিতা
সা সনাতনী ।। ইতি ব্রন্ধবৈব
র্ত্তে জ্রীক্ষজন্মখণ্ডে ২৭ অধ্যাযঃ ।। অনাচ্চ। স্থিতিং করোতি
ভূতানাং সৈব কালে সনাতনী
। ইতি দেবীসাহান্যাং ।।

সনাৎ ব্য নিত্য । ইত্যমরটীকাষা রামাশ্রমঃ । বিষ্ণুঃ ।
ইতি তম্য সহসুনামস্তোত্র ।।
সনাথা স্ত্রী জীবস্তত্কা। ইতি
জটাধ্রঃ ।।

সনাভিঃ পু॰ সপিঙঃ। জ্ঞাতিঃ। ইত্যমর মেদিনীকরৌ।।

সনাভিঃ ত্রি তুলাঃ। ইন্তি মে-দিনী।। স্নেহ্যুক্তঃ। ইন্তি শব্দ-রত্নাবলী।।

সনামকঃ পু॰ শোভাঞ্জনঃ। ইতিশলচন্দ্ৰিকা।। সমাননাম-যুক্তে ত্ৰি।।

निः पृ॰ পृका।। मानः। ইতি
निकाछ को मुमा मूगा मिनृ खिः।।
, निः पू॰ खी অধ্যেষণা। ইত্যমরঃ।। গুর্বাদেঃ সৎকারপূর্বক॰
क চিদুর্থে নিযোজনং। তচ্চ হে

खदा जमाक कर्म नर्विगिति-क्षण । मायल नीयल भूमा-निक यव मिनः यन मूळ मान्न नामील हैः शाष्ट्रांगामील ने-शि मनी ह । जस्मयगानियमस्य-यथा । हेलि जन्न ।। हैलि मक्स माना ॥

সনিতঃ ত্রি প্রতিপন্নঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

সনিগ্রীব॰ ক্লী সনিষ্ঠেব॰। ইত্য-মরটীকাষাং ভরতঃ।।

সনিষ্ঠেব॰ ক্লী অষূক্ষত । ইত্যমরঃ।। নিষ্ঠেবো মুখবারিবিন্দৃঃ
তেন সহ বর্ততে ইতি সনিষ্ঠেব॰
নি পূর্ব স্ঠিবে র্যঞ্জ গুণঃ সনিষ্ঠীব
মিতি ক্ষচিৎ পাঠে। লিপিকরপ্রমাদাদিতি মুস্টঃ। ইত্যমরটীকাষা ভরতঃ।।

সনী স্ত্রী সনিঃ। ইত্যমটীরকাষাণ ভরতঃ॥ হস্তিকর্ণাস্ফালঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

সনীডঃ ত্রি নিকটঃ। ইত্যমরঃ।। নীডযুক্তশ্চ।।

সন্তঃ পু॰ স•হতলঃ। ইতি শব্দ-চন্দ্ৰিকা।। সৎশব্দস্য প্ৰথমা বহুবচনান্তৰূপঞ্চ।।

সন্তত की সতত।। তদ্ভি বি।

সন্তাপি

ইত্যমরঃ ।।
সম্ভতাভ্যাসঃ পুণ নিরন্তরাভ্যাসঃ । যথা। স্বাধ্যায়ঃ সম্ভতাভ্যাসঃ । ইতি ভূরিপ্রযোগঃ ।।
সম্ভতিঃ স্ত্রী গোত্রণ ইত্যমরঃ
।। পণক্তিঃ ।। বিস্তারঃ ।। গরম্প-

।। পংক্তিঃ।। বিস্তারঃ।। গরম্প-রাভবঃ।। পু্ল্রঃ।। কন্যা। ইতি বিশ্বঃ।।

সম্ভপ্তঃ ত্রি অধ্বগমনাদিনা শ্রান্তঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। সন্তাপিতঃ
২ ধূপিতঃ ৩ ধূপাযিতঃ ৪ দূনঃ
৫। ইত্যমরঃ॥ তপ্তঃ ৬। ইতি
শব্দরত্মবলী॥ অগ্নিজতাপযুক্তঃ
। যথা। আদিক্ষদাদীপ্তরুশানুকল্প সিংহাসনং তদ্য সপাদপীঠং। সম্ভপ্ত চামীকর বল্পবজুং বিভাগ বিন্যস্ত মহার্যরত্মণা।
ইভি ভটিকাব্যে ৩ সর্গঃ ॥

সন্তমসং ক্লী বিশ্বক্তমং। ব্যাপকান্ধকারং। ইত্যমরং।। মোহং। যথা। মমাপি কিং নো
দযদে দযাধন ছদ ভ্রিমগ্নং যদিবেখামে মনং। নিমজ্জযন্ সন্তমসে পরাশ্যং বিধিস্ত বাচ্যং ক্ল
তবাগসং কথা।। ইতি নৈষধে
১ সুগাঁঃ।।

সন্তর্পণ ক্লী জাকা দাডিম খ-

ज्जू ती कमली मर्कता लाजा हुन मधाजा मः भिलिछः । ইতি ता-जिन्धिंगः । जृक्षिका तत्क वि । यथा। भूगा भशावकाम मृश्जू-यैः मञ्जर्भाग नाकममाः वत्त-गः। ज्ञज्ञाल लाकश्चित्य म ताजा यथा धरत विश्व ति अभिणः ।। ইতি ভটিকাব্যে ১ সর্গঃ।।

সন্তানঃ পু॰ কল্পবৃক্ষঃ।। ব॰শঃ। ইত্যমরঃ।। বিস্তারঃ।। অপত্য• । ইতিমেদিনী।।

সন্তানিক। স্ত্রী ক্ষীরসরঃ। মক টজালকঃ।। ছুরকাফলং।।
ফেণঃ। ইতি হারাবলী।৷ আদ্যস্য গুণাঃ। সন্তানিকা গুরুঃ
শীতা বৃষ্যা পিত্তাসু বাতজিৎ।
ইতি রাজনির্ঘণটঃ।।

সম্ভাপঃ পু॰ অগ্নিজতাপঃ। তৎ পর্য্যায়ঃ। সংজ্ব ঃ ২। ইত্যমরঃ । তাপঃ ৩ প্রোষঃ ৪ উষ্ণা ৫। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। সম্যক্তা-পনঞ্চ।।

সন্তাপনঃ পুণ কামদেবস্য পঞ্চ-বাণান্তর্গতবাণবিশেষঃ । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।। সম্যক্তাপ-কারকে ত্রি ।। সন্তাপিতঃ ত্রি অধাদিনা শ্রান্তঃ

। ইত্যমরভরতৌ।। অস্য পর্য্যা-যঃ সন্তপ্তশব্দে দ্রম্বব্যঃ ॥ ञ्जी मानः॥ অবসানः। ইত্যমরে সাতিশব্দদীকাষাণনী-লকপ্ঠঃ ৷৷ সতিশ্চ সাতিশ্চ সতি সাতী। সনোতে ব্লাশিষি তিগ-ন্তুস্য এতো নিপাত্যো। পক্ষে সনুতাৎইতি বাক্যে তিকি ক্লতে হবত্রতে রিতি ইম্ নিষেধে বন তনেত্যত্র তিকি বর্জ্জনাৎনলো-পাভাবে সন্তিঃ। ইতি মুগ্ধ-त्वाक्षीकायाः मूर्गानामः॥ म-স্তিশব্দে। নির্বিদর্গশ্চেৎ অসল ভাবে ইত্যস্মাৎ অন্তি প্রত্যধেন निष्णमः। यथा। मिख त्रमा ज নপদা বহুষাঃ পরিতঃ স্কান্। ইতি মহাভারতে বিরাটপর্ব।। সম্ভক্টঃ ত্রি সন্তোষযুক্তঃ। যথা। गट्टश्व ममताः मर्स्व गृशीषार्काः य गालवः। महरो। दह मन्माकः मर्प्यमानी॰ সুপূজিতাঃ।। ইতি ছন্দোগবৃষোৎসর্গতত্ত্ব।। मरस्रायः पूर मस्रिक्षा ७९-পर्यागयः। धृष्ठिः २ साम्राः ७। ইতি হেমচন্দ্রঃ ॥ সন্দংশঃ 🦖 কন্ধমুখঃ। সাঁডাসী

ইতি ভাষা। ইতি হেমচঞ্ৰঃ॥

मनः भिका जी मृह्ती। माँजानी ইতি চিম্টা ইতি চ ভাষা।। লৌহষম্ভবিশেষঃ। কাভারি ইভি ভাষা। ইতি মেদিনী॥ मन्पर्जः भू॰ त्रहमा। ইতি হলा-ৰুধঃ। প্ৰবন্ধঃ। ইতি ত্ৰিকাও-শেষঃ॥ গ্রন্থন যথা। সন্দ-র্ত্তো রসনা গুমুঃ শ্রন্থন॰ গ্রন্থন॰ मगाः। ३७ (२ यह सः।। ७ मा लक्ष्म यथा। गृहार्थमा अका-শশ্চ সারোক্তিঃ শ্রেষ্ঠতা তথা । नानार्थवद्यः (वमाषः मन्मर्जः কথ্যতে বুধৈঃ।। ইতি ৰূপ স-নাতনগোস্বামিক্কত শ্রীভাগব-**छी**य यहेमलर्जमा श्रथममलर्ज-কারিকা।।

সম্যানকানক।।
সন্দানঃ পু॰ গজস্যাষ্ঠীবতোরধোভাগঃ।ইতি ত্রিকাওশেষঃ।।
সন্দানিকা স্ত্রী অরিথদিরঃ ।

ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ সন্দানিতঃ ত্রি বন্ধঃ। ইত্যমরঃ॥ ' मनानिनी जी लागृह । ला-यानि ইতি ভাষা। ইতি হেম-ठिखः ॥ সন্দাবঃ পু• পলায়ন•। ইত্য মর: ॥ मनारः पुः मूथ ठात्वार्धमारः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ শন্ধিঃ ত্রি সন্দেহযুক্তঃ। যথা 1ন তাবৎ সন্দিগ্ধ সাধ্য ধর্মত্ব পক্ষত্ব মিতি পক্ষতামূলণ ৷৷ সন্দিগ্ধমতিঃ ত্রি সন্দেহবিষ্য তবুদ্ধিযুক্তঃ ৷ সন্দিগ্ধা মতি ৰ্যস্য ইতি বহুত্ৰীহিসমাসনিষ্ণন্নঃ ॥ निषक्षार्थः पुर नत्मश्विषशी-ভূতার্থঃ।। তদিশিষ্টে ত্রি।। দন্দিতঃ ত্রি বদ্ধঃ। ইত্যমরঃ।। मिक्छ॰ क्ली वार्खा। ই**ভি শব্দ**-রত্নাবলী॥ কথিতে ত্রি॥ मिक्कोर्थः भू मत्मभारतः। ইতি কেচিৎ ৷৷ সন্দিহানঃ ত্রি সন্দিশ্বঃ৷ যথা৷ সন্দিহানঃ সাংশ্যিকঃ সংশ্যা-পন্নমানসং। ইতি জটাধরং॥ मनी जी थेजै। यथा। नियमा थणिकां मनी। देखि विकाध-

শেষঃ ॥ मनी गाः पुः मयूत्र निथा वृकः। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।। मत्ममाः पुर मर्वामः। ইতি मक-রত্নাবলী গ্রহ্মনামখ্যাতমিফা-মবিশেষশ্চ 11 मत्मिमवाक् खी मःवामः। ७९-পর্যাষ:। বাচিক ২। ইত্য-শরঃ 11 मत्मिणहर्तः भू॰ पृष्ठः। ३७७-यदः ॥ সন্দেশহারকঃ পু দূতঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ ॥ गत्मरुः श्रुः । धक्रधर्म्मिकविक्रक्ष-ভাবাভাবপ্রকারক জ্ঞান । रेि मिक्का खमुकावनी॥ ७९-পর্যাযঃ। বিচিকিৎসা ২ সণ-শ্যঃ ৩ দ্বাপরঃ ৪। ইত্যমরঃ ॥ সন্দোহঃ পু॰ সমূহঃ। ইত্যমরঃ॥ मक्कावः पूर भणायनः। ইত্য-यद्गः ॥ সন্ধা স্ত্রী স্থিতিঃ।। প্রতিজ্ঞা। रैि प्रिमिनी॥ मन्नान । रेि **गक्तज्ञावनी।। मन्ना। यथ।।** সন্ধা দিজনৈত্রী পিতৃপ্রসূঃ। ইতি ভরতধতবাচস্পতিঃ ।। मक्षान॰ क्री यम्। मञ्जीकत्रन ।

रें छिनयनानमः। छ ९ १ यं। यः । অভিষবঃ ২। ইত্যমরঃ ॥ স স্বানী ৩ সন্ধিকা ৪। ইতি শব্দ-त्रज्ञावली।। मन्नीयट**७ मन्नान**॰ वंशाकृत कलामीन् वहकालं সন্ধাষ ষৎ ক্রিযতে। ইতি ভর-**७:।। मञ्चर्यनः। ইতি মেদিনী** ।। काञ्जिकः। इंडि इलायूधः ॥ मिता। व्यवमः भः। भीतासुः । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। ধনুষি বাণযোজন । বথা। তদাশু-ক্তসন্ধান প্রতিসংহর শাষক । আর্ত্তত্রাণায় বঃ শস্ত্রণ ন প্রছ-র্ভু ননাগসি॥ ইত্যভিজ্ঞান শ-अखनायां° > ज्रहः ॥ ज्राह्म यन् । ইতি লোকপ্রসিদ্ধ ।।

সন্ধানিতঃ ত্রি সন্ধানবিশিষ্টঃ। সহ্যটিতঃ। সন্ধানশব্দাদিত প্রত্যযেন নিষ্পন্ধঃ।।

मञ्जानिनी স্ত্রী গোগৃহ। ইতি কেচিৎ।।

नक्षानी ত্রী নক্ষান । ইতি শব্দ-রত্নাবলী।। স্প্যশালা। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

সন্ধিঃ পু॰ রাজাদীনা॰ ষদ্ধৃণা-স্তর্গতগুণবিশেষঃ। স তু স্বর্ণাদি দানেন বন্ধৃডিঃ প্রীত্যুৎপাদ-

नां भिजीकत्रनः ॥ जःरवांगः । তৎপর্য্যায়ঃ। শ্লেষঃ ২। ইত্যমর-ভরতৌ ॥ সুরুষা ॥ ভগণ।। সঙ্গ-উন॰ ॥ ৰূপকাণা•সুখাদ্যঙ্গ•॥ সা-বকাশঃ। ইতি মেদিনী।। ভেদঃ । ইতি विश्वः॥ व्याकत्रनमण्ड वर्न-ष्यमा (यलनः। তमा लक्ष्णां कि र्यथा। अर्क्षमार्खाकात्रनकारलना-ব্যবহিতযো র্বর্ণষো র্ক্ততরোচ্চা-রণ সন্ধিঃ। অতএব শ্লোকার্দ্ধযো ৰ্মস্তাৰ্দ্ধযোৰী ন সন্ধিঃ। তত্ৰ অৰ্দ্ধ-মাত্রোচ্চারণ কালব্যবধানস্যো-চিতত্বাদিতি প্রাঞ্চঃ। স্বমতে তু मक्षाशायमृত्वविश्विकार्याः मिक् রিতি সন্ধিলকণ । তেন পিপকা-मि **শ**काना॰ সংযোগান্তলুপি লু-পি ন সন্ধ্যাদ্যবিধী ইতি নিষে-ধেপি সন্ধিগ্ৰহণাৎ সন্ধিলুপ্যেব ন সন্ধি ব্লিতি নিষমাৎ ঝপ ঝসো রিত্যনেন চপজবৌ পিপক্ পিপ-গ্ ইতি। ভিন্নপদে তু সন্ধি ৰিভা-ষষেতি বোধ্যণ। তথা চ। সন্ধি রেকপদে নিত্যো নিত্যো ধাতৃ-পদর্গবোঃ। দূত্রেষ্ চ ভবেমিত্যঃ टेमवानाळ विভाषया ॥ প্রাঞ্চঃ। একপদে ইতি স্বভাবা-(मक्नरम् न्यारम्त्रि। यथा मानः

সন্ধিজী

ভবেৎ নদ্যে ইত্যাদি। म भारम मूत्रादिः श्वीरक्षः बार कः गरीमः ইত্যाদि। ४।जूभ-সর্গয়ো স্তু অধীতে উপেত্য ই ত্যাদি। অন্যক্র অত্ত অন্তঃ অ-बासः देश हेन्यूः हेटहन्युः हेटा। मि। धाजूशनर्गरयाः नमानना निजाषात्मक्षणा अहर वर्तन (वर्षे-मिक्की ज्याः भूनक्रभानानः অনিত্য সমাদে কদাচিদেক-পদেপি সন্ধি বিভাষ্যতে ইতি জ্ঞাপনার্থণ। তেন উচ্চারিত রুচির ঋচাণ চাননানাণ চতুর্ণা ইত্যাদি সিদ্ধিঃ। ইতি মুগ্ধবো-थवारकत्रविकायाः मूर्गामामः ॥ गर्वाक्त्रमिक म्हामळ्ट्यन ভবতি। গাত্রসন্ধিঃ সপ্তমাদৈ র্ভবতি। ইতি সুখবোধঃ॥ যুগ-मिक्क र्यूगमाय तिहमिक र्यापी-শব্দে চ प्रकेबाः ॥

मिक्षका खी यमामक्षान । ইতি শব্দরত্বাবলী।

मिक्षरहोतः भुः होत्रविरम्बः। मिक्षानरहात देखि ভाषा। यथा । मिक्षरहोत्रस्त हात्रकः। देखि भक्षभाना॥

সন্ধিজীবকঃ ত্রি সস্ত্যা বিভবা-

সন্ধিপু

ষেষী। তৎপর্যায়ঃ। পার্যকঃ
২। ইতি ত্রিকাপ্তশেষঃ।।
সন্ধিতঃ ত্রি সন্ধিযুক্তঃ। মিলিতঃ। যথা। অস্মদরাদিব্যবপুঃ
সন্ধিতঃ সন্ধিমানসৌ। আর্যাত্বাদার্যারাজাথাঃ খ্যাতো ভূবি
ভবিষ্যতি।। ইতি রাজতরঙ্গি-

ণ্যা• ২ তরঙ্গঃ।।

मित्रनी खी व्यर्जनां का छा रंगीः
। इंज्यबः ।। या अज्ये व्यन्
रंजन बाका छा निष्णां निष्ठियं पुन्
ना मा मित्रनी। गर्द्धन मित्राने
मित्रा मित्रा ब्यमाः मित्रने
नी हेन्। इंजि ज्वजः ।। बन्
कानमुक्षा रंगीः। इंजि प्रानिनी
भक्तक्षावनी ह।।

সন্ধিপূজা স্ত্রী শারদীষমহাপূ-জান্তর্গততৃতীয়া পূজা। যথা কালিকাপুরাণবচনান্তরণ। অ-ফ্রনী নবনী সন্ধ্রো তৃতীয়া খলু কথ্যতে। তত্র পূজ্যা ত্বহণ পুত্র যোগিনীগণসংযুতা।। জ্যোতি-যো অফ্রম্যাণ সন্ধিযোগে সকল পরিজনৈঃ পূজ্যেৎ সত্বভাবৈঃ । সপ্তমীপূজাবৎ মহাফ্রম্যাদি-ক্রত্য মপি ষ্টিদণ্ডাত্মিকাষা মে-ব ন তু পরদিবসীষ্ খণ্ডতিথো

किञ्च পূर्दांक मन्नान् द्राधामः পূজা। এবঞ্চ পূর্ণাফীন্যাণ মহা-ফমীপূজা তৎ পরদিনে অফমী নবম্যোঃ সন্ধিপূজা তৎ পরদি-নে মহানবমীপূজা প্রাগুক্ত ন-ন্দিকেশ্বরপুরাণাদ্যক্তোদযগা-মি তিথ্যনূরোধাৎ। তৎ পরদি-न मनगा॰ विमर्जन॰ शृकान्-রোধেনাধিকদিনলাভাৎ। অ-ন্যৎ দুর্গাশব্দে দ্রফীব্যং ॥ সন্ধিবন্ধঃ পু॰ ভূমিচম্পকঃ। ইতি শক্চন্দ্ৰিকা ॥

সন্ধিবন্ধন ক্লী শিরা। ইতি किष्टि ॥

সন্ধিমতিঃ পু॰ কাশ্মীরদেশীয-জ্যেন্দ্ররাজমন্ত্রী। স চ পরে রাজ। বভূব। যথা। সুতো মহী-মহেন্দ্রস্য জয়েন্দ্র স্তস্য ভূপতেঃ । স্বা মাজানুভূজো রাজা বু-ভোজাথ প্রথ্প্রথঃ।। ভূদজুতোদস্তভবভক্তিবিভূষি-তঃ। রাজ্ঞঃ সন্ধিমতি নামমন্ত্রী মতিমতাম্বরঃ।। অম্মদ্রাদিক্য-वश्रः मिक्का मिक्कानामा । আর্য্যন্তাদার্য্যরাজাখ্যঃ খ্যাতো ভূবি ভবিষ্যতি।। ইতি রাজ-

্তরঙ্গিণা॰২ তরঙ্গঃ ॥ भागाविव थेखेिवशवित्रि मिक्कि मिक्कित्रक्षुका जी मूकका हैि কেচিৎ 11 मित्रा की मूक्का। निर्मा। यिता। ইতি यिकिनी।। निक्षादिन। जी कानवित्नयः। म जू व्यरहात्राजामित्मलनकाल-ৰূপঃ। যথা ব্যাসঃ। উপাত্তে मिक्कारवलायाः निमाया निवम-স্যাচ। তামেব সন্ধ্যাণ তন্মাজু প্রবদন্তি মনীষিণঃ ৷ ইত্যা ব্লি-কতত্ত্ব•া৷

मिक्षराद्रकः पूरः मिक्षरहोतः। ষথা। বন্দিচৌরো মাচলঃ স্যাৎ সম্ভিলঃ সন্ধিহারকঃ। ইতি হা-রাবলী ।দ

मक्ता जी कानवित्मयः। म जू **मिताता** जिमस्किम **७ म्यक् भः**। তৎপর্য্যায়ঃ। পিতৃপ্রসূঃ ২ । इंडागतः॥ मन्ना ७ विकंदिमबी ৪। ইতি ভরতধৃত বাচস্পতিঃ ।। माय॰ ৫ দিনান্ত॰ ७ निमापि १ দিবসাত্যয় ৮। ইতি রাজ-निर्घनिः॥ मायाङ्गः २ विकालः ১০ বন্ধভূতিঃ ১১' সাযঃ ১২ । ইতি শব্দরত্নাবলী।। সাচ কা-লস্য ভাষ্যা। ষ্থা। কালস্য

তিলো ভার্যাশ্চ সন্ধ্যা রাজি দি नानि हा चाकि विना निवाली ह সংখ্যা কর্ত্ত ন শকাতে।। ইতি ত্রন্ধবৈবর্তে প্রকৃতিখণ্ডে ১ অধ্যা-यः ॥ 🐞 ॥ ज्ञात्व ज्ञामगुर्खम् ७ छज् ক্ষাত্মককালঃ। ৰখা। ত্ৰিযামাণ त्रजनी॰ প্রাহ্ স্তাজ্বাদ্যম্ভ চতুষ यः। नाषीनाः छमूट्यासा मि ৰসাদ্যন্ত সংজ্ঞিতে।। ইতি প্ৰায **শ্চিত্ততত্ত্ব ।। তৎসার্থক্য গর্থা**। সমুদ্রে হিমবৎপার্শ্বে নদ্যা মস্যা-क मूर्गटा ताजावर्नि मस्नागाः কদ্য গুপ্তঃ পরিগ্রহঃ॥ ইতি জি थापिङङ्भा 🗱 ॥ विमन्नाकानीः নোপাসনা।৷ তৎকালোপাস্যা ্ৰতা। **ষথা। অথ সন্ধ্যো**-লাসনং ৷ তত্ত্র ছন্দোগপরিশিষ্টং ৷ অত উৰ্দ্ধুণ প্ৰবক্ষ্যানি সন্ধ্যোপা-সনিক বিধিণ অনর্হঃ কর্ম্মণাণ বিপ্রঃ সন্ধ্যাহীনো ষতঃ স্মৃতঃ ॥ অতঃ প্রাতঃস্থানানন্তরণ ৷৷ তথা ৷ এতৎ সন্ধ্যাত্রয় প্রোক্ত তান্ধ-ণ্য• যদধিষ্ঠিত । যস্য নাস্ত্যাদর **স্তত্ৰ ন স** ব্ৰাহ্মণ উচ্যতে ॥ শাতা-তপঃ। অত্রান্ধণাস্ত ষট্প্রোক্তা ঋষিণা তত্ত্ববাদিনা। আদ্যোরা জভূত ভেষাণ দিতীয়ঃ ক্রয় বি

क्यो।। जृजेटका वहवाजाः ना-कंड्रिया जामराज्यः। शक्यस् ভূত স্তেষা প্রামস্য নগরস্য চ।। অনাগতাম্ভ বং পূৰাণ সাদিত্যা-হৈশ্ব পশ্চিমাণ। নোপাসীত দ্বি-জঃ সন্ধ্যাণ স্বটো হত্তান্ধণঃ স্মৃ-তঃ।। রাজভূতো াজসেবকঃ। আমাদে ভূতো ভরণীযঃ। গ্রাম লকণ মাহ সাকণ্ডেঘপুরাণ । তথা শুজজনপ্রাযাঃ সুসমৃদ্ধর-ষীবলাঃ। ক্ষেত্রোপষোগ ভূম-ধ্যে বসন্তি র্প্রামসণজ্ঞিকা ৷৷ অত্র সন্ধ্যাত্রষস্য নিভ্যন্নাভিধানাৎ সৰ্বকাল মুপস্থান সন্ধ্যায়াঃ পা-ৰ্ধিবেষ্যতে। অন্যত্ৰ সূতকাশৌ-চ বিভুমাত্র ভীতিতঃ ৷৷ ইতি বিফুপুরাণীষে সন্ধ্যাষা ইত্যেক-বচনান্তপাঠো ধর্মকোযোক্তো যুক্তঃ। এব সেব নব্যবদ্ধিমানঃ। সৰ্বকাল প্ৰাতৰ্মধ্যাহ্ন সাষ কপ কালত্তযে। অন্যথা তদুপাদান• বার্থণ স্যাৎ। বিভূম শ্চিত্তবিকে-পঃ। তেন ক্ষতাদাবপি সন্ধ্যা মা-চরস্তি। অতএব যাজ্ঞবন্ধ্যঃ। সৰ্বাবস্থোপি যো বিপ্ৰঃ সন্ধ্যো-পাস্নতৎপরঃ। ব্রাহ্মণ্যাচ্চ ন হীষেত অহ্যজন্মগতোপি সন্॥

गन्।

সৰ্বাবক্ষোপি নিত্য• সেবকাদি-কর্মরতোপি। ষ্থোচিতশৌচে প্যশক্তোপি ইতি রত্নাকরঃ। জ-স্বাদ্যবস্থাপদ্বোপীতিমুক্ত ।। 🛊 ।। সন্ধ্যাত্র ষসাধারণলকণ মাহ যো-গি ষাজ্ঞবক্ষ্যঃ। ত্রষাণাক্ষেব বে **দানা॰ बकाদीना॰ সমামমঃ**। সন্ধিঃ সৰ্বসুরাণাঞ্চ তেন সন্ধ্যা প্রকীর্তিতা ॥ 🟶 ॥ সন্ধ্যাদ্য " कानञ्ज অহোরাত্র সম্বন্ধি মুহূ র্ত্তাত্মকঃ। তথা চ দক্ষঃ। অহো-রাত্রস্য যঃ সন্ধিঃ সূর্য্য নক্ষত্র ব-জ্জিতঃ। সাচসদ্ধ্যা সমাখ্যাতা मुनिভि खब्रवानिভिः॥ সূর্য্য न-ক্ষত্র বজ্জিতঃ । অর্দ্ধান্তমিতা-क्तिं निष्ठ मृद्यामधन প্रकृष्ठिः জে। নক্ষত্র বিজ্জিতঃ। তথা চ वतारः। অक्राउपयाद मन्ना ব্যক্তীভূতা ন তারকা যাবৎ । তেজঃপরিহানি রুষা ভানো র-**क्षानय॰ याव॰।। ञ्रव ञाना छ-**তা উক্তা। পরিমাণ মাহ দক্ষঃ। রাত্র্যস্তকালে নাড্যৌ ছে সন্ধ্যা-দিঃ কাল উচ্যতে। দর্শনাড়বি রেখাষা স্তদন্তো মুনিভিঃ স্মৃতঃ।। নাডী দঙঃ ৷৷ যোগীযাজ্ঞবন্ধ্যঃ । হ্রাস বৃঙ্গী চ সতত॰ দিন রাত্র্যো

र्वभाजमः। मन्त्रा मृश्कं नाभाजा द्रारम बृत्की ममा चृष्ठा ॥ 🖜 ॥ অত্তোপাৰনাৰা অগি সন্ধ্যাত্ব মাহ ব্যাসঃ। উপাত্তে সন্ধিবেলা-ৰা নিশাৰা দিবসন্য চ ৷ ভামেব मक्ता जनाजू अवनिष्ठ मनीविनः য় উপাত্তে ব্ৰহ্মামাণ প্ৰাণাধা-मानि क्वियरयं वि सावया। 🗰 🛚 11 তৎকালে উপাস্যা অপি দেবতা সন্ধ্যা। তথা চ ষাজ্ঞবন্ধ্যঃ। স-ন্ধৌ সন্ধ্যা মুপাসীত নাস্তগে ताकारक त्रवो ॥ # ॥ উপাস-নোপক্রম মাহ সম্বর্তঃ। প্রাতঃ সন্ধ্যাণ সনক্ত্রা মুপাসীত যথা-বিধি ৷ সাদিত্যাণ পশ্চিমাণ স্-ন্ধ্যা° অর্দ্ধান্তমিতভাক্ষরা°।। স-নক্ষত্রা মিত্যনেন তদ্যুক্তকালে উপক্রম্য প্রাতঃসন্ধ্যা মূপাদীত। এব মেবার্দ্ধাস্তমিতভাক্ষরারন্ধাণ পশ্চিমা• সাদিত্যা মিত্যনেন ত-দ্যুক্তকালে উপক্রম্য উপাসীতে-**छार्थः ॥ 🗱 ॥ यशाङ्ग मन्नागा** व्यक्षेममूङ्खं॰ काल माह सृष्टिः। পূর্বাপরে তথা সদ্ধ্যে সনকত্তে প্রকীর্ত্তিতে। সমসূর্য্যেপি মধ্যাহ্লে मूर्ड्ड मश्रुट्याभिति॥ मा॰शायन গৃহ্ণ ৷ অরণ্যে সমিৎপাণিঃ সন্ধ্যা

মুপান্তে নিত্য• বাগ্বত উত্তরাপ-রাভিমুখে৷ খন্বঊমদিশ মানকত্র দর্শনাৎ। অতিক্রাক্তাবাং মহা-वाह्नीः गाविजीः सरायनामि জ্পু এবং প্রাতঃ প্রাধার্থ স্তিৡন্ ু আমুগুল দুর্শুনাদিতি। ভিত্তরা-পরাভিমুখে। বাষুকোণাভিমুখঃ। কোণ বিবৃণোতি অম্ব্রুমদিশ মিতি। উভয দিগস্টমভাগ মিতি ্বাবৎ। ব্যাসঃ। গাযতী নাম शृंबीद्भ माविजी मशारम मित्न। সরস্বতী চ সাযাহ্নে সৈব সন্ধ্যা ত্তিষু স্তা। প্রভিগ্রহাম দোষাচ্চ ্**পাভকাদুপপা**তকাৎ। গায়্ত্রী - প্রোচ্যতে তস্মাৎ গায়ন্ত ভাষ-েতে যতঃ ।। সবিভূদ্যোতনাৎ সৈব ়শাবিত্রী পরিকীর্ত্তিতা। জগতঃ প্রসবিত্রীত্বাৎ বাগুপত্বাৎ সরস্ব-ভী।। তৈত্তিরীয ব্রাহ্মণণ। উদ্য-স্ত মস্ত থাক্ত আদিত্য মভিধ্যা-যন্ সৰ্বন্ আক্ষণো বিদ্বান্ সক-় **ল॰ ভদ্র মশুতে। অসাবাদিভ্যো** ব্ৰহ্মা ইভি ব্ৰেহ্মাৰ সন্ বৃহ্মাৰ েভ্যেতি য এব• বেদেত্যয মর্থঃ। বক্ষ্যমাণপ্রকারেণ প্রাণাযামাদি-ক॰ সৰ্বন্ যথোক্ত নামৰূপো-পেত সন্ধ্যাশক্ষ্য বাচ্য মাদি-

ত্য বন্ধেতি খ্যাযন্ ঐহিক নামু-ত্রিকঞ্চ সকলভন্ত সশ্বতে। য এব মুক্ত ধ্যানেন শুদ্ধান্তঃকরণো ব্ৰহ্ম সাক্ষাৎ স্বৰুতে স পূৰ্ব মপি ৰক্ষৈব সন্ প্ৰজ্ঞাবান্ চিরজীবি-ত্ব প্রাপ্তে। যথোক্ত জ্ঞানেনা-জ্ঞানোপশ্যে ব্ৰক্ষৈব প্ৰাপ্নোতি। ইতি পরাশরভাষ্যে মাধবাচার্য্যঃ ।। অতএব ব্যাসঃ। ন ভিন্না॰ প্র-তিপদ্যেত গাযত্রী বন্ধণা সহ। সোহ মশ্মীত্যুপাদীত বিধিনা যেন কেনচিৎ ৷৷ 🕸 ৷৷ গাযতীস্থ ভর্গপদ প্রতিপাদ্য ঈশ্বরঃ। অহ• জীবৰূপোন্মি ভবানি ইতি। অ-জহৎস্বার্থলক্ষণযা জীবেশ্বরযো রহ্মার প্রতিফলিতত্বোপাধি র-্ হিতেন চিদ্রুপেণেক্য়ণ। ষ্টা-কাশ গৃহাকাশযো রূপাধি রিত্য-বগমাৎ। **ঐক্য মিব ভাব**যন্ উ-পাসীত। যাজ্ঞবন্ধ্যোপি। যা স-ন্ধ্যা সা তুগাৰতী দিধা ভূমা প্ৰ-ভিষ্ঠিতা। সন্ধ্যা উপাসিতা ষেন বিষ্ণু জ্ঞেন উপাসিতঃ ৷৷ 🏶 ৷৷ উ-পাসনাষাঃ ফল মাহ সএব। গ-বাণ সর্পিঃ শরীরস্থণ ন করোত্যঙ্গ-পোষণ । নিঃসৃত বিশ্বিসংযুক্ত পুন স্তাসাণ তদোষধৰী৷ এবং স

हि भतीत्रयः मर्लिवं भत्रास्य-॥ तः। विना **का**शामनादम्य न क-রোতি হিত নৃষু ৷৷ প্রশব ব্যাহা विकाक गामका। **बिक्टरम**्ह। উপাস্য পরম বন্ধ আত্মা যত্র প্রতিষ্ঠিতঃ।। ত্রিভষেন প্রগ্রবাদি ত্রিতবেন ব্রদ্মপ্রতিপাদকেনো-চ্চারিতেম তদর্থাবগমেন উপা-मा थमापनीय । उनाइ मधद। বাচ্যঃ স ঈশ্বরঃ প্রোক্তেশ বাচকঃ প্রণবঃ স্মৃতঃ। বাচকেপি চ বি-खाटा वाठा वव धनीपि ॥ जू ज्रवः य खरा **পृर्वः य**ग मित वर्षस्य। का**राज स्कानस्टर**म তস্মাৎ ব্যাহাত্যঃ স্মৃতাঃ॥ জ্ঞান-দেহেন তত্ত্বজ্ঞানস্য চিজ্রমণশ্বর-স্য দেহেন শরীর ৰপেণ ব্যহ্নতা উক্তাঃ। তেন তম্বাচ্যোপীশ্বরঃ। क्ष्री भू द्राव । अशान भू द्रज्ञः का-ला बन्न विक् गरम्बनः। **म**खः রঙ্গ ন্তম ন্তিমুঃ ক্রমান্ত্যাহতমঃ স্তাঃ।। এভক্রপেণাপি ভাবনী-याः। ইত্যাঙ্কিকাচারতত্ত্ব ॥ 🛊 ॥ অপিচ। দিনান্ত সন্ধ্যাণ সূর্ব্যেণ পূর্ব। মৃকৈ যুতা॰ বুখঃ। উপতি-छि॰ स्थानगाय नगागाच्या ना-र्थित ॥ "जर्बकान मूशञ्चानः म-

শ্বাৰাঃ পাৰ্পিবেষাতে ৷' প্ৰন্যত্ত সূতকাশৌচ বিভ্রমাত্র ভীভিতঃ ११ नृत्यां शांकु मित्रा वस्त छाकः সুর্ব্যেণ বঃ স্বপন্। অন্যত্তাভুর-ভাবাচ্চ প্রায়ন্চিতীয়তে নরঃ ॥ **ज्या**मन्मिट्ड मृर्का ममूथाय म-হীপতে। উপতিঠেমর: সন্ধ্যাণ ममूर्याक पिमा खड़ा ।। উপতि-ষ্ঠিন্তি বৈ সন্ধ্যাণ কেন পূৰ্বাণ ন প-শ্চিমাণ। বজন্তিতে দুরাত্মান স্তা-মিসু॰ নরক॰ নৃপ॥ ইতি বিষ্ণুপু क्रांटन ७ जन्टम ३३ जशायः ॥।।। দীক্ষিতবিশেষস্য সন্ধ্যা বিশেষা मधा। जृति क्रवाहः। एतरए पर কথ• সন্ধ্যা• দীক্ষিতঃ সরুতে বদ । কেন মঙ্গ্ৰেণ বা ভক্ত স্তব কৰ্মা-পরাষণঃ।। বারাহ উবাচ। সৃণু মাধবি তত্ত্বেন সন্ধ্যা মন্ত্ৰ মনুত্ত**ম**° । यथा वनिष्ठि देव मूर्याः मन्नाः । পূৰ্ব চিকা তথা ৷৷ জলাঞ্চলি गृशीक्षा ह सम छन्छा। बावव्रिष्ठः । गूर्ख शान गाञ्चाय हैन मख मू-**मार्**द्रिष् ॥ मञ्जः। **अस्तास्त्र मा**-मि[•] वाक्क सबस मामिछा• मर्दि (म**रा** বন্ধ ৰুদ্ৰেন্দ্ৰা স্তাৰ্ঞ ক্ৰকো মথা-সীৎ ধ্যান যোগ স্থিতা তে সন্ধ্যা সংজ্ঞা বাসুদেব নমস্তি ব্য দেব

শাদি ব্যক্তৰূপণ ক্ৰত্না চাত্মনি দেব সংস্থা তথাপি সংসারার্থণ কর্ম তৎ কারণ মেব সন্ধ্যা সংস্থা বা-मूरम्य नत्या नयः। ज्यानत्त्व जू मद्राप नकाा॰ वर्गाख् मीकिउः। क्षि वादारक ठलूबनिकानामा-शायः ॥ । गद्या अगना स्था १ भूगव छेतु । कथ नूरव निक শাভি ত্রাহ্মণো দশ্ধকিবিধঃ। অ-मधिका हि म जहि समुक्तः व-क्रिया भूता।। मृठ छवाछ। माय॰ প্রাতশ্চ বঃ সন্ধ্যা ৰূপান্তে হস্কর্ম यानमः। জপন্হি পাবনী । দে-বী-গাযত্রী- বেদমাতর-॥ তপ-সা ভাবিতো দেব্যা ত্রাহ্মণঃ পৃত किबियः। न नीरमं अिंग्ड्रा-ता खिल शृथी[•] समागता[•]।। (व চান্যে দাৰুণাঃ কেচিৎ গ্ৰহাঃ সূ-র্ব্যাদযো দিবি। তে চাস্য সৌম্য-তা যান্তি শিবাঃ শিবতরা স্তথা া৷ ষত্ৰ তত্ৰ গভ• টেচন• দাৰুণাঃ পিশিতাশনাঃ। যোরৰপা মহা-কাৰাঃ প্ৰভবস্তি ন রাক্ষসাঃ ।। ইতিবক্লিপুরাণে আশ্বমেধিকনা-শাধ্যাখঃ॥ 🛊॥ অপি চ। নিত্য• নিত্য• ত্রিসন্ধ্যাঞ্চ করিষ্যসি দিনে फिटन। यथाटङ्ग ठानि नायाटङ्ग

প্রাত রেব শুচিঃ সদা ।। সন্ধ্যা-হীনো ২শুচি ৰ্নিত্য মনৰ্হঃ সৰ্ব-কৰ্মসু। যদহা সরুতে কর্ম ন তস্যক্ষভাগ্তবে ৷৷ নোপত্তি-ঠতি যঃ পূৰ্বাণ নোপাত্তে যম্ভ প-किया। य नुष्ठवस्थि कार्याः म-र्राष्ट्र विकर्माणः।। यात्रकीत-নগৰ্য্যন্ত যন্ত্ৰি সন্ত্ৰ্যাণ করে।তি চ। স চ সূৰ্য্যমমে বিপ্ৰ স্তেজনা তপ-সা সদা।। তৎপাদপ্র রজসা সদ্যঃ পৃত। বসুদ্ধর।। জীবমুক্তঃ न एक की नक्ता शृंखा हि सा দ্বিজঃ।। তীর্থানি চ পবিত্রাণি তদ্য সম্পর্শমাত্রতং। ততঃ পা-পানি যান্ড্যেব বৈনতেযাদিবো-রগাং॥ ন গৃহন্তি সুরা ভেষা॰ পিতরঃ পিশু তর্পণ । স্বেচ্ছ্যা চ দ্বিজাতিশ্চ ত্রিসন্ধ্যরহিতস্য চ ।। বिकृषक्ष विशेतण्ठ विमन्तातः হিতো দিজঃ। একাদশী বিহী-विषशीत्ना यत्थात्रगः ইতি ব্ৰহ্মবৈবৰ্ত্তে প্ৰক্লতিখণ্ডে ২১ অধ্যায়ঃ।। অন্যৎ কৌর্ম্বে ১৭ অধ্যাযে গারুডে ২১৫। ২২০ অ-शायरवा र्ज्ययाः ॥ 🗱 ॥ जनन মরণাশৌচে তন্নিষেধাে ষণা । সন্ধ্যা॰ পঞ্চ মহাযজ্ঞ নৈত্তিক৽

স্তিকর্ম চ। তন্মধ্যে হাপষে তেষা॰ দশাহান্তে পুনঃ ক্রিযা।। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব• ॥ 🛊 ॥ সাম• मक्तानित्यथ काला यथा। क-র্মোপদেশিন্যাণ ব্যাসঃ। সং-ক্ৰান্ত্যাণ পক্ষবোরক্তে ৰাদশ্যাণ প্রান্ধবাসরে। সাৰু সন্ধ্যা । পৰীত হতে চ পিতৃহ। তবেৎ॥ रेि जिथामिजदः॥ 🛮 ॥ ७९-कात्न गरनानि नित्यत्वा स्था। স্বপ্ন মধ্যয়ন স্থান মুদ্র্ত্ত ভো-জন॰ গতিঃ। উভষোঃ সন্ধাষোঃ र्निजा॰ मधारङ्ग देवत वर्ष्क्ररंष ॥ ইতি कोर्म्म ५६ ञधायः॥ मक्ता द्वी नतीवित्यवः॥ यूग-সন্ধিঃ। ইতিমেদিনী ॥ চিস্তা॥ मः अवः॥ मीमा। मन्नानः॥ সসুমবিশেষঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ मक्ता॰भः श्रू॰ यूगमिकः। यथा। চহার্য্যা হঃ সহসাৰি বর্ষাণান্ত ক্তত যুগণ। তস্য় তাবচ্ছতী সন্ম্যা সন্ধ্যা শশ্চ তথাবিধঃ ॥ ॥ ইওরেষু সসন্ধ্যেষু সসন্ধ্যাণশেষু চ ত্রিষ। একাপাষেন বর্ত্তম্ভে 🏽 সহসাৰি শতানি চা৷ ইতি মা রিতি ৷ চত্বারি বর্ষসহস্যুণি ক্ত্

७यूग॰ काल॰ यशामरया वमस्डि ত্যা তাবদ্বৰ্ষশতানি সন্ধ্যা স্-ন্ধ্যাণশশ্চ ভবতি যুগদ্য পূৰ্ৰা স্-ক্ল্যা উত্তরশ্চ সন্ধ্যাণশঃ। তদুক্তণ विक्षूत्रात्। ७९ अमारेनः म-তৈঃ সন্ধ্যা পূৰাণ হত্তাভিধীৰতে। नक्षा भक्ष छकू ला। यूभमा-নন্তরো হি বং।। সন্ধ্যা সন্ধ্যা --শবো রম্ভ র্যঃ কালো মুনিসন্তম । यूगाशः म जू विख्वयः क्रज खिणि मि ज्खिकः॥ वर्ष मण्या **टिय॰ मिरामात्मन उटेमारामञ्ड** त्र श्रक्रञ्चार । मिटेवा वर्ष मह-সৈস্ত হত ত্রেতাদি সংজ্ঞিত । চতুৰ্বুগ• দাদশভি স্তদ্বিভাগ• নি-বোধ মে।। ইতি বিষ্ণুপুরাণবচ-নাচ্চ। ইতরেম্বিতি অন্যেষু ত্রে-তা দ্বাপর কলিযুগেষু সন্ধ্যা স-স্ধ্যাত্শ সহিতেষু একহান্যা সহ-সুাণি শতানি চ ভবস্তি। তেনে-**ए॰ मन्नामाराज। बीपि वर्ष मह्मा**-ণি ত্রেভাষগণ ভদ্য ত্রীণিবর্ষশতা-नि मन्त्रा मन्त्रा भन्त। এव एक বর্ষসহস্তে ভাপরঃ তদ্য ছে বর্ষ-শতে সন্ধ্যা সন্ধ্যা গ্ৰ্মশ্চ । এব॰ वर्षमह्रमु॰ किनः । उत्माकवर्ष-শত॰ সন্ধ্যা সন্ধ্যা॰শশ্চ। ইতি

बब्बुक्छिएः ॥ বন্ধ্যাচলঃ পু• পর্বতবিশেষঃ। यथा। आज्ञाश्रताश्रामाय का-পোভস্য বচঃ স্মরন্। জগ্মতু ৰ্দ্দিশা কাঠা যত্ৰ সন্ধ্যাচলঃ श्रिजः॥ काष्ठानाम नमी छव বশিষ্ঠেনাব্তারিতা। তস্যা স্তী-त्त महारेगल जिश्वक्रामा नठा छन।। मन्ता विश्वेः क्रञ्कान् তত্ৰ যন্মাদিধেঃ সূতঃ। অতঃ সন্ধ্যাচল নাম ভদ্য গাম্ভি দেবতাঃ।৷ ইতি কালিকাপুরা-ৰে ৫০ অধ্যায়ঃ ।। ঞ্চ।। অপি-**চ।** क्लाञ्काथायश्टिमलाटेन-শান্যা॰ পৰ্বতোত্তমঃ। তুকঃ সন্ধ্যাচলো নাম বশিষ্ঠো ষত্ৰ শপ্তবান্।। নিমে নীমা তুরাজ-(संः भाशाष्ट्रकमूजः भूता। व-শিষ্ঠো হুশরীরোভূত্তছাপাচ্চ-নিমি স্তথা ৷৷ ততো ৰক্ষোপদে-শেন নিৰ্জ্জনে কামৰূপকে। সন্ধ্যাচলে তপস্তেপে তস্য বিষ্ণু রভূতদা৷৷ প্রতাক স্তদা দেব-मा वत्रमानामशामृनिः। अमृ-তান্যবতাধ্যথে সঞ্জ ক্লমা গিরে স্তটে ॥ তত্ৰ সাদ্বা চ পীদা চ শরীর প্রাপ পুরিত। তন্মাদ-

म्छ क्षांख् मन्ता नाम ननीवता া নিঃস্তা তত্ত্ব চাপ্পত্য চিরাষু-্রগদে\ভবেৎ।, ইতি চ কালি-काश्रुवारण ५० व्यक्षायः ॥ मबाानाणि भू॰ निवः। ইতি मस-त्रप्रावणी जिका खरणरयो।। সন্ধ্যাপুশী স্ত্রী জাতী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ यश्वारकः श्रू রাক্ষসः। ইতি ত্রিকাওশেষः॥ मक्ताविनः भू निवानयन्छिम्-**्कार्श्वप्रिमिनिर्मि**ण्युवः। यथा। स्म निवायज्ञाना एम् का राज्य क्याक्नरमा वृषाः। ইতি श्राता-वनी ॥ **সন্ধ্যাভূ॰ ক্লী** সুবর্ণ গৈরিক। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। मक्षाताग॰ क्री मिन्तृतः। ইতি त्राजनिर्यकः ॥ সন্ধ্যারামঃ পু• এন্ধা। ইতি শব্দ-त्रवावनी ॥ मनः পू॰ शिशानवृकः। ইত্য-ममकः पू॰ धर्दः। ইতি ममक ज শব্দটীকাষাণ ভরতঃ।। সন্নকক্রঃ পু॰ পিযালবৃক্ষঃ। ইত্য-মরং ৷৷ সন্মকঃ খর্বো ফ্রঃ স্কম্বো

ংগ্যতি সন্নকক্ত রিতি স্বামী।
সন্নকো জন্চেতি ছৈ নামনী
ইতি সোমনন্দী। ইতি ভরতঃ।।
সন্নতঃ স্ত্রী প্রণতিঃ।। ধনিঃ।
ইতি মেদিনী।। নমুতা। ধথা
হরিবংশাে ধত্র হুীঃ প্রীঃ ন্থিতা
তত্র যত্র প্রীস্তত্ত্ব সন্নতিঃ। সন্ন
তি হুী স্তথা শ্রীশ্চ নিত্যুণ ক্রক্তে
মহাত্মনি।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বং।।

সন্নদ্ধঃ ' ত্রি বর্ষিতঃ। ক্রতসন্নাহঃ

। ব্যাচঃ। ব্যহবিন্যাসমুক্তঃ।

ইতি মেদিনী ।। আততামী ।

বধোদ্যতঃ। ইত্যমর্টীকাষাণ
রাষমুঙ্গটঃ।। মন্ত্রাদিসংযুক্তঃ।

ইতি শব্দরত্বাবলী ।।

जन्न कर पुर जम्हः ॥ पृष्ठे द्वाविः वनः । देखा मत्राद्या ॥ जन्न । देखा मत्राद्या ॥ जन्न । जार्षाः । वर्षा २ कक्ष हैः ७ क्ष गतः ४ कविः । वर्षा २ कक्ष हैः ७ क्ष गतः ४ कविः । वर्षा २ क्ष हैः ७ क्ष गतः ४ कविः । वर्षा २ क्ष हैः ७ क्ष गतः ४ कविः । वर्षा २ क्ष हैः ७ क्ष गतः १ मासी ५ छेत क्ष हैः १ वे वि द्य प्रकार । वर्षा । ताक वाक खूनवाकः मन्म निकः । देखि द्य निकः । वर्षा । ताक वाक खूनवाकः मन्म ताकिः । देखि द्य निकः ।

मिकर्यः श्रु खी मामिशा छ८ পর্য্যায়ঃ। পার্ম্য ২ মমীপ ৩ সবিধ ৪ সমীপাভ্যাস ৫ সবে-শঃ ৬ অস্তিকঃ ৭ সদেশ• ৮ অ-ভাগ্রণ ৯ সনীডণ ১০ সন্নিধানণ ১১ উপা**ন্ত**° ১২ নিকট° ১৩ উ-পকণ্ঠ॰ ১৪ महिरुग्छे॰ ১৫ সম-ৰ্যাদ ১৬ অভ্যৰ্ণ ১৭ আসনঃ ১৮ সন্নিধিঃ ১৯। ইতি হেমচন্দ্রঃ ।। न्यायमण्ड विययस्था यमश्रक्षः । সচ জ্ঞানস্য কারণ । সভু षिविधः। तोकिकमन्निकर्यः ज-लोकिकमिकर्यका॥ लोकि-কসন্নিকর্মন্চ ষড্বিধঃ। ইঞ্রিষ-मः रयागः > इञ्जियमः युक्तमयः বাষঃ ২ ইন্দ্রিষসংযুক্তসমবেত-সমবাষঃ ৩ শ্রোত্রাদিসমবাষঃ ৪ শ্রোত্রাদিসমবৈতসমবাবঃ ৫ **७मामिविद्यायण्या ७। यदनी-**কিকসন্মিকর্যস্ত ত্রিবিধঃ ৷ সামা-ন্যলক্ষণা ১ জ্ঞানলক্ষণা ২ যো-গজঃ ৩। यथा। नरुष य प्-বিধে হেতু রিন্দ্রিষণ করণণ মতণ । विषयिध्यमश्रक्ता वााशादः मानि यज्विधः ॥ जवाश्रहः সংযোগাৎ সংযুক্তসমবাযতঃ । জব্যেষু সমবেতানাং তথা তৎ-

সমবাষতঃ ৷৷ তত্ৰাপি সমবে-তানা॰, শব্দস্য সমবাষতঃ । **७५** छोना भरत्व अभवास्य **जिल्लाहः ।। वित्ययग्**ष्या उपन ভাবানা গ্রহো ভবেৎ। বদি স্যাদুপলভ্যেতেত্যেব যত্র প্র সজ্যতে।। প্রত্যক্ষণ সমবাষস্য বিশেষণত্যা ভবেৎ। অলৌ किकः मिकर्य जितिशः भित-कीर्विजः॥ मामानानकना छा-নলক্ষণা যোগজ স্তথা। আস-ত্তি রাশ্রযাণাম্ভ সামান্যজ্ঞান মিষ্যতে।। তদিন্তিয়ক তদ্ধর্ম-় বোধসামগ্র্যপেক্ষ্যতে । বিষয়ী . ষস্য তস্যৈব ব্যাপারো জ্ঞান-লক্ষণঃ ৷৷ যোগজো দ্বিবিধঃ প্রোক্তো যুক্ত যুঞ্জান ভেদতঃ। যুক্তদ্য সৰ্বদা ভান চিস্তাদহ-ক্রতো ২পরঃ।। ইতি ভাষাপ-तिरष्ड्मः ॥

সমিকর্ষণ ক্রী সমিধানণ তৎ পর্য্যায়ঃ। সমিধিঃ ২। ইতি স-ক্বীর্ণবর্গে অমরঃ।। সমিধণ ৩। ইতি ভরতঃ।।

সিমিক্টিঃ ত্রি সমিকর্যবিশিষ্টঃ। নিকটঃ। ইতি বিশিষ্যনিম্বর্তের্গ অমরঃ॥ অস্যুপর্য্যায়ঃ সমীপ

শব্দে দ্রফব্যঃ ॥ সন্মিধ ক্লী সন্মিধান । ইতি ভরতধৃতবোপালিতঃ।। निक्षान की निक्षे। देखि र्वित्रह्यः॥ व्याव्यवः। यथा। আরম্ভঃ সংশ্যানা মবিন্য ভব-ন পত্তন সাহসানা দোষাণা সন্নিধান কপট শতন্য ক্ষেত্ৰ মপ্রত্যধানা । দুস্ত্যাজ্য যম-হজ্ঞি সুর নর বৃষ্টেঞ্চ সর্বমাযা-করণ্ড॰ স্ত্রীৰূপণ কেন লোকে বিষ মমৃতময় ধর্মনাশায় সৃষ্ট ॥ ইতি শান্তিশতকণ ॥ সন্নিধিঃ স্ত্রী সন্নিকর্যঃ। ইত্য-मद्रः ॥ ইिस्यरगाठद्रः। ইতি त्यिमिनी ॥ সমিপতিতঃ ত্রি একত্রীক্ততঃ। বিশ্রিতঃ। সং নি পূর্বক পতধা-

তোঃ ক্ত প্রত্যবেন নিষ্পন্নঃ ।।

সন্ধিপাতঃ পুণ তালভেদঃ। যথা
। এক এব শুরু র্যত্ত সন্ধিপাতঃ স
উচ্যতে। ইতি সন্ধীতদামোদরঃ
।। বিকারোৎপাদক মিলিতদোযত্ত্রয়ণ । অস্য ত্রযোদশ নাম
লক্ষণানি যথা। শীষ্ণা স্তান্ত্রিক শৈচব মসাধ্য শিচতবিভূমঃ।
কন্টসাধ্যঃ কণ্ঠস্ক্তঃ কর্ণিকো

জিন্তুগ স্তথা।৷ কন্টাৎ কন্ট তমো জ্ঞেযো রুগ্গাহো হস্তি মানবং। অন্তকো ভগনেত্রশ্চ রক্তমিবী নিপাতকঃ ॥ শীতাক্ষ প্রলা-পশ্চ অভিন্যাসো ২তিমারকঃ। জ্ঞাতব্যাঃ সর্বদা বৈদ্যৈঃ সমি-পাতা স্তযোদশ ॥ #॥ माखवी-যে। শীঘুগ স্তান্ত্ৰিক শ্চিত্তবিভূমঃ क्षेत्रखकः। कर्निका जिख्या-শৈচব কগ্রাহ শ্চান্তক স্তথা।। ভূ-গ্রনেত্রো বিলাপশ্চ প্রলাপঃ শী-তলাঙ্গকঃ। অভিন্যাস শ্চেতি বি-দ্যাৎ সন্নিপাতা স্ত্রযোদশ !! # !! ममात्राः स्नियाना भूनं मृतः का-সোহতিবেদনা। শোথশ্চ লক্ষ-ণান্যেবং শীঘুগে সান্নিপাতিকে মা১ম অভিতন্ত্রা দ্বরঃ শ্বাসঃ কাস স্তাপোতিসারকঃ। স্থলকণ্ঠঃ সি-তা শ্যামা জিহ্বা কণ্ঠে চ কূজতি য় শ্রুতি রক্সা চেতি বিদ্যাৎ তা-ন্ত্ৰিকে সান্নিপাতিকে। ২। মদো মোহো ভূম স্তাপো হাস্য শীত প্রলাপনং ৷৷ নিত্যং বৈকল্পিতা পীড়া বিকটাক্ষ নিরীক্ষণণ। লক ণৈঃ সন্নিপাতোষ[•]জ্ঞাতব্য শ্চিত্ত বিভূমঃ ॥ ৩॥ কণ্ঠগ্রহো স্বরো মূর্চ্ছা দাহঃ কম্প বিলাপন । 🎚

শোহ স্তাপঃ শিরোর্ত্তিশ্চ বাতা-र्त्तः প্रमयः गठः॥ क्षेत्रस्यः म-ন্নিপাত কউক্সধ্য বিনির্দিশেৎ । ৪। জ্বঃ কর্ণান্ত শোপশ্চ শ্বাসঃ कःभः अनाभनः॥ (समः कर्छ-গ্ৰহ স্তাপ স্তুণ্মোহো ভষ মেব চ । কর্ণিকে সন্মিপাতে চ লক্ষণানি ভব ন্তিহি ॥ ৫॥ সঙ্কটা কঠিন। জিহ্বা কাসঃ শ্বাসোতিবিহ্বলঃ ৷ মূকো বধিরতা তাপো বলহানি-শ্চ লক্ষণ ।। জিন্তুগঃ সন্নিপাতো **২**ষ॰ কফ্টাৎ কস্টতরঃ পরঃ। ৬। মোহ স্তাপঃ প্রলাপশ্চ ব্যথা ক-ঠে ভূমঃ শ্রমঃ।। বেদনা চ তৃষা জাডা॰ শ্বাসশ্চ লক্ষণৈ রিমেঃ। কফাৎ কন্টতরো জ্রেষঃ কগ্রা-रः नामिनाछिकः॥ १॥ मारश মোহঃ শিরঃকম্পো হিক্কা শ্বাসা-ক্মৰ্দ্দন । সন্তাপ শ্চান্তকো জ্ঞে-যঃ সন্ধিপাতো ২তিমারকঃ ॥৮॥ শ্বসন লোচনে ভুগে স্মৃতি স্থূলা জ্বো হধিকঃ। মোহঃ প্রলাপন॰ কম্পো ভুমো নিদ্রা চ লক্ষণৈঃ।। জ্ঞাতব্যো ভুগনেক্রো ২য়ণ সন্ধি-পাতঃ ক্ষণকরঃ ৷ ৯ ৷ রক্ত নি-ষ্ঠীবন॰ মূৰ্ক্স স্বরো মোহ স্তৃষা जुमः ॥ वास्ति रिकािजनात्रभः

मण्डानात्मा समि वाथा। मखन भागत ब्रक्क एन एक्यू लकरेन ब्रि মৈঃ।। জ্ঞাতব্যস্ক্রমাপাতোষ• রক্তগ্রীবী নিপাতকঃ । 🞾 । 🕮 লাপ তাপ কর্ণার্ভিঃ প্রজ্ঞানাশো ২তিতাপবান্।। জ্ঞেষঃ প্রলাপক শ্চিটেছঃ সন্মিপাতোতিমারকঃ। ১১। শরীর হিষবৎ শীত মতি-मात्रक कम्भनः।। कर्ननारमा इ-স্ততাপো হিক্কা শ্বাসঃ ক্রমোত্তরণ । সর্বাঙ্গশীতলো হস্তি শীতাকঃ সমিপাতকঃ ॥ ১২ ॥ ত্রিদোষঞ্চ मूथ ७ इ॰ निजा देवला करी-বাক্। নিশ্চেতন মতিশ্বাসো ম-ন্দাগ্নি বলহীনতা ।। মৃত্যুত্ল্য মভিন্যাস সন্নিপাতঞ্চ লক্ষধেৎ । ১৩। ইতি চক্তুপাণিদত্তঃ॥ 🛊 ॥ ब मृक्षे यमा मखदः म छमा म-মিপাতঃ। সমিপাত বিধি রনি-মিত্ত' তদ্বিখাতায়। ইতি কলা-পৰ্যাকরণে ৪ বৃত্তৌ ২ প্রকরণ ।। সমূহঃ। যথা। ধূমজ্যোতিঃ স-লিল মৰুতা সন্মিপাতঃ কু মেঘঃ मत्मार्थाः क शर् कत्रतेः आ-ণিভিঃ প্রাপণীযাঃ। ইত্যৌৎসু-क्रामगितिगवयन् अञ्चक उ॰ यं या-চে কামার্তা হি প্রকৃতি কুপণা

শ্চেতনাচেতনেষু।। ইতি মেঘ-দূতঃ।। সম্যকপ্রকারেণ পতন• মরণঞ্চা।

সন্মিপাতজ্বরঃ পু• ত্রিদোষজজ্বরঃ । স তু অউপ্রকারত্বরান্তর্গতত্ত্ব-রবিশেষঃ। অফত্ব বিবৃণোতি। ৰাতিকঃ পৈত্তিকঃ স্নৈয়িক শ্চে-তি ত্রষঃ। দ্বন্দুজাশ্চ ত্রযঃ। বা-তগৈত্তিকঃ বাতল্পৈত্মিকঃ গিত্ত-লৈষিকশ্চেতি।। সংঘাতনঃ স-দিপাতিক একঃ। দ্যুল্বণৈকো-बरेंगः यहें मूर शैन मध्या मिटेक क ष्ट्रे। मरेम्टेम्हरका विकाता एउ সন্নিপাতা স্ত্রযোদশ ॥ ইতি চর-কেণ ত্রযোদশ সমিপাতা উক্তাঃ । তে যথা। বাতোল্বণঃ ১ পিত্তো-ন্ত্ৰণঃ ২ কফোল্বণঃ ৩। বাত পিতোৰণঃ ৪ বাতশ্লেমোৰণঃ ৫ পিত্তশ্লেষোল্বণঃ ৬ এবং ষট্। অধিকবাতো মধ্যপিত্তে। হীন-কফঃ ১ অধিকবাতো মধ্যক-ফো হীনপিত্তঃ ২ অধিকপিত্তো মধ্যবাতো হীনকফঃ ৩ অধিক-পিত্তো মধ্যমকফো হীনবাতঃ ৪ অধিকককো মধ্যবাতো হীনপি-ত্তঃ ৫ অধিককফো মধ্যপিত্তো • হীনবাতশ্চেতি ৬ ষট্। ত্ৰ্যন্ত্ৰণ

এकः ३। अव॰ खरगाम्म ॥ च्ख তু ত্রিদোষজম্বেন সাম্যাৎ সামি-পাতিক এক এব গণিতঃ ৷৷ আগ-ম্বজোপি এক এব। অত্র আগন্তু-জশব্দেন অভিঘাতাদযো হেত-व् উচ্যতে। अबिहिष्याध्यः का-र्याकात्रनरमा त्ररज्ञानानाता । ইতি স্বরাধিকারে ভাবপ্রকাশঃ ॥ 🛊 ॥ ज्य मिन्नाञ्चताधिकात মাহ। তত্র সন্মিপাতস্বরস্য বিপ্র-ক্ষ সন্ধিক্ষ কারণ কথন পূর্বি-का मल्या थि मार। विद्यायक-নকৈ ৰ্বাত পিত্ত শ্লেকামগেহগাঃ। বহি নির্দ্য কোণ্ডাগ্নি রদগা জু-त्रकातिवः ॥ 🗱 ॥ शृह्यक्तश्र माइ । প্রাগ্রপাণি ত্রিদোষাণা স্যু স্ত্রি-(मायब्दत नृगा॰। ●। সিয়পাত खुत्रमा मामानानि लक्ष्मानाह । কণে দাহঃ কণে শীত মস্থি সন্ধি শিরোরুজা। সাস্যাবে কলুষে রক্তে নিভূগে চাপি লোচনে।। मयतो मुझरको करनो कर्छः मृरेक রিবাৰুতঃ। তন্ত্রা মোহঃ প্রলা-পশ্চ কাস শ্বাসো হরুচি ভূ মিঃ।। পরিদগ্ধ। খরস্পর্শা জিহ্বা সুস্তা-কভা পরা। ষ্ঠীবন রক্তপিত্তস্য কফেনোমিঞিতস্য চা৷ শির

त्मा लाठमः ज्या निर्धानात्मा शिव राथा। स्वतं मूळ भूतीयांना॰ চিরাদর্শন মন্ত্রণার। রুগর্ণ নাতি গাত্রাণা॰ প্রতিত কণ্ঠকূজন । কোঠানা॰ শ্যাব রক্তানা৽ মঞ্জ नामाक मर्भमः॥ मूककः (मुण्ड-मा॰ भारका छक्तव मूनतमा ह। চিরাৎ পাকশ্চ দোযাণা সমি-পাতস্থরাক্তিঃ।। লোচনে সা-मुद्रि माञ्चेनी। कन्द्र १ श्रेट्छ। নিভূমে নিৰ্গতে স্টিলে চ। কণ্ঠঃ **गृ**देक दिव धानगादेख दिवावृज्य । জिञ्चा गतिमका गतिमका छ।-যতে। অথ বা পরিদক্ষেব রুক্ষা षृगात्छ। সুস্তাঞ্চা निशिवगा-ক্রতা। পরা অতিশ্বিতা। ষ্ঠীবন भिजामि कंकन युक्तमा तकमा পিত্তস্য চ ষ্ঠীবনশী শিরসো লো-ঠন মিত স্ততঃ শিরশ্চালন । ফ্র-শত্ব নাতিগাত্রাণা গাত্রাণা ম-তিশ্যিত কার্শ্য ন ব্যাধিপ্রভ-বাৎ। প্রতত নিরম্ভর ৷ কোঠঃ ৰরটীদফ্ট সংস্থানঃ কোঠ ইত্যভি-शीरिता नागिः किंगिना वर्षः । মূকত্ব মৰ্চনত্ব মন্নবচনত্ব বা। সোতসাং কর্ণনাসাদীনাং॥ 🛊 ॥ नन् वाजामयः शतन्भत विक्रक्ष छ

ণা স্তেষাণ সম্ভূবৈককার্য্যারম্ভক-ত্ব॰ নোপপদ্যতে পরস্পরোপষা-তাৎ দহন সলিলযো রিব। তৎ কৃথ বাত পিত্ত ক্ষম মিলিছা বিকারোৎপাদকাঃ। অত্র সমা-थान गूकः मृज्यत्वन।। विकृष्क রপি ন ছেতে গুণৈ র্মস্তি পরস্প-রং। দোষাঃ সহজ সাত্ম্যত্বাদিষং যোর মহীনিব।। গদাধরস্ত হেছ-স্তর মুক্তবান্। দৈবাদ্দোষ স্বভা-বাদা দোষাণা সান্নিপাতিকে ৷ বিরুদ্ধেশ্চ শুণেঃ কশ্চিমোপষা-তঃ পরস্পর মিতি।।#।। ননু ভিন্ন-চয় প্রকোপ কালানাণ বাত পি-ত্ত কফানা॰ যুগপদুখানাভাবাৎ কথ সভূষ সন্মিপাতত্বরারস্তকত্ব মুপপদ্যতে। উচ্যতে। ত্রিদে।ষ-জনক নিদান ৰলেন যুগপদেষাণ প্রকোপাদিতি সিদ্ধান্তঃ ॥ 🟶 ॥ অথ সামান্যসন্মিপাতজ্বস্য ত্র-যোদশ বিশেষানাহ। একোল্বণ ব্ৰষ স্থে স্যু স্থা স্থাৰণ শচ তথেতি ষট্। ত্র্যন্ত্রপশ্চ ভবেদেকে। বি-জ্ঞেষঃ স তু সপ্তমঃ।। প্রবৃদ্ধ ম-ধাহীনৈস্ত বাত পিত্ত কফৈশ্চ ষট্। সন্ধিপাতজ্বসৈয়ব সুয় রি শেষা প্রযোদশ ॥ তত্র প্রবৃদ্ধ-

বাতো মধ্যপিত্তো হীনকফঃ ১ মধ্যবাতঃ প্রবৃদ্ধপিত্তো হীনক-কঃ ২ হীনবাতঃ প্রবৃদ্ধপিতো মধ্যককঃ ও প্রবৃদ্ধবাতো হীন-পিত্তো মধ্যকফঃ ৪ মধ্যবাতো হীনপিত্তঃ প্রবৃদ্ধকফঃ ৫ হীন-বাতো মধ্যপিত্তঃ প্রবৃদ্ধকফশ্চে-তি ষট্ ৬। তেষা॰ নামানি ক্ৰমা-मार । विकातकः काञ्चकाती কম্পনো **বব্দ স**ণ্জকঃ। শীয়ুকা-রী তথা ভল্লঃ সপ্তনঃ ,কূটপাক-লঃ৷৷ সম্মোহকঃ পাকলশ্চ যাম্যঃ ক্ৰকচ ইত্যপি। তদ্বৎ কৰ্ম টকঃ প্রোক্ত স্ততো বৈদারিকাভিধঃ 11 তন্ত্রান্তরে বিক্ষারক ইত্যত্র বি-ষ্দুরক ইতি পাঠঃ। বব্রুস্থানে বিভু রিতি পাঠঃ। স্বত্রাপি বিদ্ধ ইত্যপি পাঠঃ। ভল্লু রিত্যত্র ফল্প রিতি পাঠঃ। যাম্য ইতাত্র সং-গ্ৰাম ইতি পাঠঃ। কৰ্ক্ষটক ইত্যত্ৰ কর্কোটক ইতি পাঠঃ ॥ 🟶 ॥ তত্র বাতোল্বণস্য লক্ষণ মাছ্৷ স্বাসঃ কালো ভুমো মৃচ্ছা প্রকাপো মোহ বেপণুঃ। পার্শ্বস্য বেদনা জৃম্ভা ক্যাযত্ব মুখস্য চ ৷৷ বা-তোল্বণম্য লিঙ্গানি সন্মিপাত্স্য লক্ষযেৎ। এষ বিষ্ফারকো নামা

मित्रिपांजः मूनाक्रमः ॥ ३॥ 🛊॥ অথ পিভোত্ত। লক্ষণ মাহ। অতীয়ারো ভূমো মূর্চ্ছা মুখপাক স্তবৈথব চ ৷ গাত্রে চ বিন্দবে। রক্তা দাহোতীব প্রজাষতে।। পিত্তো-ব্ৰণস্য লিঙ্গানি সমিপাতস্য ল-ক্ষযেৎ। ভিষগ্ডিঃ সন্নিপাতে। ২ব মাশুকারী প্রকীর্ত্তিভঃ ॥ २ ॥ 🛊 ॥ **जय करको बनगा लक्कन भार**। জড়তা গদাদাবাণী ব্লাত্রো নিজা ভবত্যপি। প্রস্তব্ধে নযনে চৈব मूथ माधुर्या (भव छ॥ करका खन-স্য লিঙ্গানি সন্নিপাতস্য **লক্ষ**যেৎ । মুনিভিঃ সন্নিপাড়ে। ২ম মুক্তঃ কম্পন সংজ্ঞকঃ ৷৷ ৩ ৷৷ 🛊 ৷৷ অথ বাত গিভোত্মণম্য লক্ষণ মাহ ৷ বাত পিত্তাধিকো ষস্য সন্নিপা-তঃ প্রজপ্যতি। তস্য স্বরোমদ স্তৃক্তা মুখশোষ প্রমীলকাঃ।। আগ্নানারুচি ভক্রাশ্চ কাস শ্বাস ভূম প্রমাঃ। মুনিভি বঞ্জ নামায়ণ সমিপাত উদাহতঃ ॥ ৪॥ 🛊 ॥ অথ বাতলেমোল্বণ্স্য লক্ষণ মা-হ। বাতশ্লেমাখিকো যস্য সন্নি-পাতঃ প্রস্থপ্যতি। তস্য শীতত্ব-রে। মূর্চ্ছা ক্ষুত্রকা পার্শ্বনিগ্রহঃ।। শूल मिलामानमा हिका श्वाम-

শ্চ জাৰতে। অসাধ্যঃ বন্ধিপা-ভো ২ন শীযুকারীতি কথ্যতে॥ ন হি জীবভাহোরাত্র মনেনা-विकेबिश्रहः। 🕻 । 🗱 । ज्यर्थ পিত্ত শ্লেমোল্বণস্য লক্ষণ নাহ ৷ পিত্ত প্লেমাধিকো যদ্য সন্মিপা-তঃ প্রত্নপ্যতি। অন্তর্দ্ধাহো বহিঃ শীত তদ্য তৃষ্ণ প্রবন্ধতে ॥ ज्मारक मक्किन भार्श्व मूतः भीर्ष গলগ্ৰহাঃ। স্ঠীবতি শ্লেম পিত্তঞ্চ क्रष्टा १ कर्भ में पृयत्न ॥ विष्ट দঃ শাস হিক্কাশ্চ বৰ্দ্ধন্তে সপ্ৰ-गीलकाः। अविञ्जि ज्लूनागायः সন্মিপাত উদাহ্বতঃ ॥ ৬॥ 🛊 ॥ অথ বাত পিত্ত শ্লেমোল্বণস্য ল क्रन बाह्। मईएकाट्याब्यटन यमा সমিপাতঃ প্রস্প্যতি। ত্রষাণা य-পি দোষাণা তস্ম ৰূপাণি লক্ষ-যে ।। ব্যাধিভ্যো দারুণ শৈচব বজু শস্ত্রাগ্নি সমিভঃ। কেবলো-চ্ছাদ পরম স্তকান্স স্তকলোচনঃ ॥ ত্রিরাত্রোপরমে ভস্য জভো-र्रति कीविष्ः। छमवस्य ७॰ मृक्षे। मृत्या वतार्त्रट कनः॥ ४-ৰ্ষিতো রাক্ষ্টেস ন্যূ ন মবেলাযাণ চরস্ভি ষে। অম্বয়া ক্রবতে কেচিৎ य्किना जक्तताकटेनः ॥ शिना-

रेठ र्श्वरिक रेम्ध्य छथारेना र्यख-**क २७** । अवारमवार्कनारीन॰ धर्षिण क्वारितरिष्ठः ॥ नक्क শীড়া মপরে গরকর্মেন্ডি চাপরে । সন্মিপাত মিম॰ প্রাহ ভিষজঃ कृष्टेशाकनः ॥ १॥ 🕬 ॥ अथ थः বৃদ্ধ মধ্যহীন বাতাদি জনিত স মিপাত ভ্রাণাণ লকণান্যাই। প্ৰবৃদ্ধ মধ্যহীনৈস্ত বাত পিত ক কৈশ্চ যঃ। তেন রোগা স্তএবো-का यथारमाय वनाव्यकाः ॥ वा লাপাষাস সম্মোহ কম্প মৃচ্ছা-রতি ভূমাঃ। একপকাভিয়াভক ভব্ৰাপ্যেভিছিশেষতঃ।। এষ স-মোহকো নামা সন্নিপাতঃ সুদা-ৰুণঃ। ব্লোগা স্কএবোক্তা উক্তা এব তে রোগাঃ ব্যখা বেপথু নি-कामान विकेषान्य। वाञ्जाः। দাহ তৃকোঞ্চা স্বেদাদযঃ পিক্ত-काः। शोत्रवात्रिमार्ग्गा का-সিক। মুখপ্রসেকাদযঃ ককজাঃ। ভত্তাপি প্রলাপাদ্যঃ পক্ষায়াতা-😎 विरमधास्त्रविष्ठ ॥ 🛊 ॥ नन् বাতঃ প্রবৃদ্ধঃ সন্ স্বরণ করিষ্যতি পিত্তম্ব মধ্য সম মিতি বাবৎ তৎ ৰূপ• স্বর• করিব্যতি। সভ আহ **৷ বাত্ৰ স্তশ্মলা দোৰা নাশ্যস্ত্য-**

भमा खनू । भनाः मूथाव विरक्ष-या बनारबाभन्नवाय एन्छि ॥ 🕏 চ্যতে। অত্ত পিক্ত মধ্য মপি অ-প্ৰকৃত মেৰ ৰভো ২প্ৰকৃতযো বাঁত প্লেমণো রগেক্যা মধ্য তেন মধ্য মধ্যঙ্গপিত মিতার্থঃ ।। 🖚 ।। नन् स्यः कीवः म कथः শ্বর করিষ্যতি হীনশক্তিকদ্বাৎ া উচাভে। দোষাঃ দীণা অপি वाशीन् अर्वेखाय। यठ वाह। वाङ करंबज्ञटारुषः मनवाक्षः বিস্ভুক্তা। পিত্তক্ষেমা বহ্নি মূৰ্য্য প্ৰভাক্ষয় ৷৷ শিথিলাঃ नक्षरमा मूर्ज्य (दोक्गः मार्ट्य ককক্ষ ইভি। ইত্যাশক। সিদ্ধা-ন্ত শ্চাপরত্রাপি। ৮। 🛊 ॥ মধ্য প্রবৃদ্ধ হীনৈস্ত বাত পিত্ত কফৈ-শ্চ ষঃ৷ তেন রোগা স্তএবোজা यथीटनायवना अयाः ॥ त्याङ् अ बाभ मृष्टीः मूर्ग र्मनगञ्जरः नि-রোগ্রহঃ। কাসঃ শ্বাসো ভূষ স্তন্ত্রা সংজ্ঞানাশো হদিগ্রহঃ ॥ থেভ্যো রক্ত বিসৃঞ্জতি তন্ত্রা मा ९ उन्तिनबर्गा उवार्शाए বিশেষাঃ স্যু শৃত্যু রর্বাক্ ত্রিবা-সরাৎ।৷ ভিষয়িঃ সমিশাভোষ क्षिण्ड नाक्नाज्यिः। २। 🐠।

शैन अर्देक गरेशास वाक शिख करेकम्ह यः। एवन রোগ। ख-এবোক্তা यथारिनायवला अवाः ॥ शनयः मञ्चल हाना मुक्ट क्षी-হান্ত ফুপ্ফুসাঃ। পচ্যক্তে ২তার্থ मृक्षाधः পূষ শোণিত নিৰ্গম: ॥ শীৰ্ণভশ্চ মৃত্যুক্ত তক্ৰাপ্যেত-দ্বিশেষতঃ। ভিষপ্তিঃ সমিপাতো ২য় বাম্যনামা প্রকীর্তিভঃ ॥ ১০ ৷৷ 🟶 ৷৷ অথ প্রাবৃদ্ধবাত মধ্য-পিত্ত হীনকফস্য সন্নিপাতস্য ল-कन गार। अवृक्ष मधा शैरिनञ्ज বাত পিত্ত ককৈশ্চ যঃ। তেন द्यांगा खब्दांख्न यथात्नायव-लाञ्चाः॥ अलाशायाम मः त्रा-হ কম্প মুৰ্চ্ছ। রতি ভূমাঃ। ম-ন্যাস্তম্ভেন মৃত্যুশ্চ তত্রাপ্যেত-দিশেষতঃ ৷৷ উক্তঃ ক্রকচনামা ২যং সন্নিপাতো ভিষশ্বরৈঃ । ১১ । 🟶 । मधाशीन श्रावृद्धिः 🛪 वाठ পিত্ত ককৈশ্চ ষঃ। তেন য়োগা खरेंथरवाका यथारमायवनाञाः ষাঃ।। অন্তর্জাহো বিশেষো ২ত্র নচবক্তু॰ স শক্যতে। রক্ত মা-नक्रक्तित नक्षार्ठ मूर्थमञ्जन ।। यद्भनाकर्षिजः क्षाया शपः যান প্রসিচ্যতে। ইষুণেবাহত॰

পাৰ্শ্বণ তুদ্যতে খন্যতে হৃদি।। अभीलक शाम रिका वर्कास्ड जू पिन° प्रिन°। जिस्रा पक्षा थत-न्मामी गमः मृदेक त्रिवाव्छः॥ বিসর্গ নাভিজানাতি কুজেচা-পি কপোতবৎ। অতীবল্লৈম্বদা পূর্ণঃ শুদ্ধবক্ট্রোষ্ঠ তালুকঃ॥ তন্দ্রা নিজাতিযোগার্ত্তো হতবাণি হঠ-দ্যুতিং। ন চাতিলভতে গ্লানিং বিপরীতানি চেচ্ছতি॥ আযম্যতে চ ৰহুশো রক্ত॰ গ্রীবতি চাল্পশঃ। এষ কর্ম্ন টকো নামা সমিপাতঃ সু-लोकनः ॥ > २॥ क्षः ॥ श्रीन सथा थाः বৃদ্ধৈস্ত বাত পিত্ত কফৈশ্চ যঃ। তেন রোগা স্তএবোক্তা যথাদো-यदलाञ्चयाः॥ अन्नः भृलः कृषी-তোদো মধ্যোদাহোরুজা ভূমঃ৷ ভূশ' ক্লমঃ শিরো বব্দু মন্যা হৃদয वागुकः।। अभीवकः श्वाम शिका কাস জাড্য বিসংজ্ঞতাঃ। প্রথ-মোৎপন্ন মেতম্ভ সাধ্যন্তি কলা-চন ৷৷ এতস্মিন্ সন্নিবৃত্তে তু কর্ণ-মূলে স্দারুণা। পিডকা জাযতে জন্তো য্যা ক্লেছ্ণ জীবতি॥ স বৈদারিক সংজ্ঞে। ২য়ণ সন্মিপাতঃ সুদারূণঃ। ত্রিরাত্রোপরমে তস্য वार्थ भोषधकन्ननः ॥ ५०॥ 🖝 ॥

অথ তন্ত্ৰান্তরে। বাতোত্বণাদীনা সন্মিপাতস্বরবিশেষাণাণ ত্রষোদ गाना॰ भीठाकामीन ब्रायामग ব্দমান্তরাণি লক্ষণান্তরাণি চাহ ৷ শীতাক স্ত্রিমলোন্ডব স্বরগণে তন্দ্রী প্রলাপী ততো রক্ত তাচ তত্ত্ৰ গণিতঃ সমুমনেত্ৰ স্তথা ৷সাভিন্যাসক জিব্বকশ্চ কথিতঃ প্রাক্সন্ধিগোথান্তকো রুগ্নাহঃ मरु हिन्द विज्ञुभ देश (को कर्ग कर्छ-এহৌ।। তন্দ্রী তন্দ্রিকঃ। প্রলাপী প্রদাপকঃ। রক্তন্তীবধিতা রক্তন্তী-বী। সমুগনেত্রো ভূগনেত্রঃ। অ-ভিন্যাসকঃ অভিন্যাসঃ ৷ কর্ণ क्रेथरो कर्ग्यशः कर्गकः। क-र्श्वेश क्रिक्टिकः ॥ 🕸 ॥ व्यथ তেষা প্রত্যেক লক্ষণানি। হিম শিশির শরীরঃ সন্নিপাতজ্বরী যঃ শ্বসন কসন হিক্কা মোহ কম্প क्षनारेनः । ক্লম বহুকফতান্ত-র্দাহ বম্যঙ্গপীডা স্বরবিক্কতিভি রার্ভঃ শীতগাত্রঃ স উক্তঃ ॥ ১ ॥ তম্রাতীৰ তত স্তৃষাতিসরণ শ্বা-সোধিকঃ কাসরুক্ সম্ভপ্তাতি छन् गील अयथूना मार्कक कखुः কফঃ। সুশ্যামা রসনা ক্লমঃ ध्ववनरमा स्मान्मक नार खया यब

ন্যাৎ স হি ভক্তিকে নিগদিতে৷ रमचित्रपारणा चुत्रः ॥ २॥ यज ত্বরে নিখিলদোষ নিতান্তদোষ काटा द्वारा रहनाः मर्माथि-ভাশ্চা কম্প ব্যথা পতন দাহ বিদভ্ততাঃ স্যু মানা প্রলাপক ইতি প্ৰথিতঃ পৃথিব্যা ।। ৩।। निश्चीरवा ऋधितमा त्रकः ममृभ॰ ক্লফ ভনৌ মঙল লেছিত্য ন যনে ভূষা ৰুচি বনি শ্বানাতিসা-রভুমাঃ। আন্ত্রানঞ্ বিসংজ্ঞত। চ তপন হিক্কাঙ্গপীড। ভূশ রক্ত-ষ্ঠীবিনি সমিপাত জনিতে লিকণ ब्दत्र कायरा ॥ ।। जुनः नयन রক্ততা শ্বসন কাস তন্ত্রা ভূমাঃ প্রলাপ মদ বেপখু প্রবৰহানি নো-हा ख्या। ज्याना निथिन माय-জে ভবতি ষত্র লিঙ্গু জ্বরে পুরা-তন চিকিৎসকৈঃ স ইহ ভুগনে-ত্রো মতঃ ৷৷ ৫ ৷৷ দোষা স্তীব্রতরা ভবন্তি বুলিনঃ সর্বেপি ষত্র জ্বরে মোহোজীব বিচেইতা বিকলতা শ্বালো ভূশ মূকতা। দাহ শ্চি-क्षण माननक पर्दना मटका वलमा ব্দয়ঃ সোভিন্যাস ইতি প্রকী-র্ত্তিত ইহ প্রাজ্তৈ ভিষ্ণিঃ পুরা ॥ ७॥ बिरमायकनिए च्रांत

ভবতি যত্ৰ জিহ্বা ভূশ বৃতা ক ঠিনকণ্টকৈ স্থাদনু সুকতা সূত্তা । প্রতিক্ষতি বলকতী শ্বসন কাস সম্ভপ্তয়ং পুরাতন ভিষণ্ডরা স্ত भिर्श्विष्यकः इक्ट्राशि। वा-থাতিশ্যিতা ভৰেছ্ৰপু সংযুতা সন্ধিষু প্রভূত কফতা মুখে বিগ তনিজভা কাসকক্। সমস্ত মিতি কীৰ্ত্তিত ভবতি লম্ব ষত্ৰ মুরে जित्नायकनित्क वृत्धः म हि नि গদ্যতে সন্ধিগঃ॥ ৮॥ यश्विन् लक्ष्व भ्या प्रमुख्य मकटेल एका देव রুদীতে স্বরে ২জসুণু মূর্দ্ধবিধূন-नः मकमनः महाश्रेशीषाधिका। হিক্কা শ্বাস সদাহ মোহসহিতা দেহেভিসম্ভপ্ততা বৈকল্যঞ্চ বৃথা-বচাণস মুনিভিঃ সঙ্কীৰ্ত্তিতঃ সো खकः ॥ २॥ मारश १ धरका छ বতি যত্ৰ ভূষা চ তীবা শ্বাস প্ৰ লাপ বিরুচি ভূম মোহ গীডাঃ। मना रन्वाथन कर्शका अमा-শ্চ রুগ্গাহ্দণত্ত উদিত ব্রিভবো ছরে। ২য়ণ।। ১০।। গাষ্তি নৃত্য-তি হসতি প্রলপতি বিক্বত নিরী-ক্তে মুছেৎ। দাহ ব্যথা ভয়া-র্ত্তো দোষত্রয চিত্তবিভূমো স্বর-वान् ॥ ५५ ॥ निः त्नव त्नाव ज-

निष्ठ खत्रत्भयक्या मार वर्ग-मूल विषय श्वरण् र्राश ह। कर्छ-এহো বৃধিরতা শ্বসন প্রলাপ প্র-ষেদ মোহ দহনানি চ কর্ণকা-খ্যে॥ ১২॥ কণ্ঠঃ শূক শতাব-क़क्रवनिकामः धनारमा २क्र-চি দাঁহো দেহ ৰুজা তৃষাপি চ **र**न्खसः निर्तार्षि स्था। या-হো বেপথুনা সহেতি সকল लिकः जिरमायद्यदत य<u>क मा</u>र **স হি কণ্ঠঙ্গন্জ উদিতঃ প্রাজ্ঞে** न्हिकि भावूरियः ॥ ५० ॥ 🛊 ॥ **সন্ধিগ স্তেষু সাধ্যঃ স্যাত্তন্ত্রিক** শ্চিত্তবিভূমঃ। কর্ণকো জিহ্বকঃ কণ্ঠসক্তঃ পঞ্চাপি কন্টকাঃ॥ রু-ন্দাহঃ স্তৃতিকষ্টেন সংসাধ্য স্তেষু ভাষিত:। রক্তন্তীবী ভুগনেত্রঃ শীতগাত্রঃ প্রলাপকঃ ৷৷ অভি-ন্যাসো ২ন্তক শৈচতে ষডসাধ্যাঃ প্ৰকীৰ্ত্তিতাঃ। 🛊। অথ তন্ত্ৰান্ত-রে। বাভোত্বণাদীনা সন্নিপা-তত্ত্বরবিশেষাণা ত্রষোদশানাণ अखीशाकामीनि ब्रायमण नामा-স্তরাণি লক্ষণাস্তরাণি চাহ। স্ব-ম্ভীপাক: প্রোণুনাব: **প্রলাপী** হন্তদাহো দওপাতো ২ন্তকল্চ । এनीमार काथ रात्रिष्ठमण्डवा

ভেদা এতে সন্নিপাতস্থরস্য ৷৷ অজ্বোষ ভূতহাসৌ ষদ্ৰাণী-ড শ্চ সংন্যাসঃ। সংশোষী চ বি-শেষা স্তব্যৈবোক্তা স্ত্রযোদশ চ া৷ 🛊 ৷৷ অথৈষা • লক্ষণানি ৷ যো-পাবিবর ঝর্দ্ধহশোণাসিভনীল-लाहिष्ठः मार्खि। विमूर्वन् यस-ক মভিতঃ সম্ভীপাকেন পীডিতণ विमा ९॥ উৎক্ষিপা यः समझ॰ ক্ষিপত্যধন্তামিতান্ত মুচ্চুসিতি। ত প্রোণু নাবজুষ বিচিত্র কষ্ট विकानीयाए॥ (अन जुमात्रशी-ডা কম্পো দবথু বঁমী ৰ্যথা কঠে । গাত্ৰঞ্চ গুৰ্বতীদ প্ৰলাপিজুফ-मा काषण नित्रः॥ वास्रकारः শৈত্যু॰ বহিশ্চ ষস্যা বিশেষতঃ শ্বাসঃ। অঙ্গমিৰ দগ্ধকন্প সোস্ত-দাহার্দিতঃ কথিতঃ॥ নক্ত॰ দিবা ন নিজা মুপৈতি গৃহাতি মুঢধী-ৰ্মভসঃ। উত্থাম দণ্ডপাতে ভূমা-তুরঃ সর্বতো ভুমতি।। নভসো গৃহ্লাতি আকাশাৎ কিঞ্চিদ্গ্রহী-ভু॰ করে। প্রসারয়তি ইত্যর্থঃ।। সংপূর্যাতে, শরীরণ গ্রন্থিভি রভিত স্তর্থোদর মরুত। স্বাসাত্রস্য শতত বিচেতনস্যান্তকার্ত্তস্য ৷৷ পরিধাবতীৰ গাত্তে রুক্পাত্তে

ভুজগ পত্র হরিণগণঃ। বেশথু यञः मनारदेमानी नार्वतार्वमा ।। রুক্পাত্তে পীডাভাজনে । গাত্রস্য বিশেষণ মে তৎ ॥ যস্যা-তিপীত মঙ্গ নয়নে সুতরা মল ততো ২গ্যধিক। দাহোতিশী-**७०। दर्शि तमा म श**ातिप्रका **ट्छियः ॥ इगलक मत्रीतगन्नः** कक्षक्रजावाभिक्षक गणत्रकुः । অজ্যোষ সনিপাতাদাতামূাকঃ भूगान् खर्जा ॥ मकामीनिधिश-ष्ट्ि न शांत्रियशान् समीत्रिय-আমঃ। হ্নতি প্রলপতি প্রুষণ সজ্ঞেযো ভূতহাসার্তঃ ॥ যেন মুহুত্ব রবেগাদ্যজ্বেণেবাবপীডা-তে গাত্র । রক্ত পীতঞ্চ বমেৎ ষন্ত্রাপীডঃ স বিজ্ঞেষঃ।। অতি সরতি বমতি কৃজতি গাত্রাণ্যভি-ত শ্চির নরঃ কিপতি। সন্যাস সন্মিপাতে প্রলপতি ভুগাফিম-গুলো ভবতি।। মেচকবপু রতি-মেচকলোচনৰ্গলো ২বলো ম-লোৎসৰ্গাৎ। সংশোষিণি সিত-পিডকা মণ্ডলযুক্তো ত্বরে ভব-তি।। নারায়ণ এব ভিষপ্তেয়জ **प्याटिक् जाङ्गरीनीतः। रेनक्र**का হেতু রেকো নিত্য মৃত্যুঞ্বো

(श्रायः ॥ कथा माश्रामिशा-তৰ্বস্যলকণ মাহ। সন্নিপাত-ब्दमार् कर्नम्ल मुनाकनः। শোথঃ সংজাযতে তেন কশ্চি-क्ति अगूठाटा । मूनाइनः यात-কত্বাৎ যত স্তেন শোথেন কশ্চি দেব প্রমূচ্যতে। কোপি জীবিত॰ ত্যজতি ইত্যৰ্থ: ৷৷ স্মিপাতত্ব-রান্ কফানসাধ্যানপরে জঞ্চ। मार्य विवरक नरके श्रामे नर्द সম্পূর্ণলক্ষণঃ ৷৷ সন্মিপাতজ্বো ২সাধ্যঃ কফসাধ্য স্ততোন্যথা । দোষে পিত্ত ককে। বিবদ্ধে व्यथरकः। সর্বসম্পূর্ণলক্ষণঃ সর্বাণি मार भी**ठामीनि म**ण्यूनीनि अन्। নানি প্রোঢানীতি ষাবৎ লক্ষণা-নি ষ্স্য সং৷ ততো ছুন্যথা দোষে পকে অমৌ দীপ্তে স্বল্লকণকঃ ক্ষসাধ্য ইত্যৰ্থঃ ৷৷ ঞা৷ অথ সামান্যসন্মিশাতত্ত্বস্যু চিকিৎ-সা। সন্মিপাতাৰ্ণবে মগ্ন যো ২ভাদ্ধরতি মানবং। ক স্তেন ন হতো ধৰ্মঃ কাঞ্চ পূজা[•] ন সো-হতি॥ মৃত্যুনা সহ যোদ্ধব্য স মিপাত চিকিৎসতা। ষশ্চ তত্ত্ ভবেজ্জেভা স জেতামৰসন্ধূলে ।। क्षियनिश्रह स्यवारमे अर्था-

गार्थो जिरमायरक । नितरङ শ্লেমণি ছস্য শ্রোতঃসৃদ্যাটি-তেষু চ।। লাঘব॰ জাষতে সদ্য স্তৃকা চৈবোপশাম্যতি। #1 ভে-ডোপ্যাহ। সন্নিপাতত্বরে পূর্ব॰ ব্দ্যাদাম ক্ফাপহ । পশ্চাৎ भ्यानि मन्कीरन नमस्य शिख-माक्रणाविणि।। ♦।। नन् ण्याख-রে প্রথম• পিত্তস্য প্রতিক্রিয়া প্রোক্তা। যথা। শমষেৎ পিত্ত स्यवादनो चटत्रयू नगवायियू। पू-র্মিবারতর॰ তদ্ধি স্বরার্ত্তেযু বিশে-ষতঃ।। ইতি। অন্যত্রাপি। সম-ৰাষে ত্ৰিদোষাণা পূৰ্ব পিত্ত মু-পাচরে৭। স্বরে চৈবাতিসারে চ সৰ্বক্রান্যক্র মারুত মিতি।। তথা-ন্যত্ৰ প্ৰথমণ বাষোঃ প্ৰতিক্ৰিষা প্রোক্তা। যথা। বাতস্যানুজ্যেৎ পিক্ত পিত্তস্যানুজ্যেৎ কফ ইতি।। #।। তত্ৰ ব্যবস্থা মাহ ভ-জ্রান্তরে। স্থরে ত্রিদোষজে সামে শমষেৎ প্রথমণ কফণ। জীর্য্যত্যা-মে জ্বেৎ পিত্ত নিরামে দ্বনিল জবেৎ।। ইতি। প্রথম মিতি স্থান ত্রযেপি সম্বধ্যতে। অন্যে ত্বিতি नमान्धरा वयाना वा जरस् পূर्ब॰ ७॰ यः मा। घवलवखत देखि ।

छथा है। जन्मर्रा स्वा अत्रीयान् माम्भक्रमाः म देव ভदिर। ८५ ৰদোষা বিয়োধেন সন্নিপাতে ভ-देवन इ देखि॥ मः मर्ट्स देशायुव मण्मर्रा भन्नीयान् वनवसुनः ॥ তাংশাংশং যত্ত্ৰ ছোষাণাং বিবে জু॰ নৈব শঙ্গুষাৎ। জ্ৰিষা॰ সা-খারণীণ ভত্ত বিদধীভ চিকিৎসকঃ ।। लञ्चनः वानुकार्यसा नगाः নিষ্ঠীবন তথা। অবলেছোঞ্জন-रिश्व थाक् थरबाकाः जिलाय-জে।। ত্বর ইতি শেষঃ ।। 🛊 ।। नन् कियायाञ्च खनामाए किया ननाः श्राक्तर्थः। शृर्वमाः শান্তবেগাৰা ন ক্ৰিৰা সকরো श्रिष्ठः ॥ इष्टि वहत्मम क्रिया-সন্ধরুস্য নিষিদ্ধত্বাৎ কথ সত্র नमा निष्ठीवनावलहाञ्चनानि षू-भनविधीयटङ ইত্যामकाया मार । ক্রিয়াভি স্থল্যব্বপাভিঃ ক্রিয়া-্সান্ধ্য মিষ্যতে। ভিন্নৰপতবৈ-· তাল্ত নহি সর্বন্তি দূষণ· II # II **७** वञ्चन मा विश्व मार्। बिद्राब॰ পঞ্রাত্রণ বা দশরাত্র মথা পিবা ৷ লব্দন সন্ধিপাতেমূ স্ব্যাদারো-াগ্য দর্শনাৎ।। লব্দনে ত্রিরাত্রা-দি বিকল উত্থণ বা হাদ্যপেক্ষয়।

দোষাণা শীষু মধ্য মন্দশজ্ঞিক-শ্বাৎ ব্যাধি স্বভাবাচ্চ। আরো-ना मर्मनाथ देखि दादमस्तागण मर्गन॰ माखावना लज्यन॰ ज-ষ্যাৎ। এতেন ত্রিরাত্তাদ্যবংশর-নিষ্তত্ব সূচিত ৷ অভএব সূঞ্ৰ-তঃ প্রাষ্ঠ। সপ্তমে দিবলে প্রাপ্তে मनदम बामरनिन वा। भून र्यात्र-ভরো ভূমা প্রশন্ধ যান্তি হন্তি বা ।। বোরতর ইতি বোরঃ স্বভা-বাদেৰ তথা ধোরতরো ভূম্বেতি ।। 🖝।। इतन अणयन त्याः कात्रव मार। निख क्यामिल वृक्षा मन-मियम पामभाइ मश्राहा ६। इश्रि विमुक्तांथ वा जिलायका थाजू মদাকাৎ ৷৷ ত্রিদোষজো শ্বর ইতি শেষঃ।। ধাতু মলপাকাৎ ধাতৃপাকাজন্তি মলপাকাদিমুঞ্চ-তীতার্থঃ। ধাতুমলগাকে প্রাক্ত-नकरैर्भवरङ्गः। তত্র यদि জীবন मद्यक्षक कन्मां छि छन। यनभाः কো ধন্যথা ধাতুপাকঃ। স চ রসাদি শুক্রান্ত ধাতুনাণ পাকো বোদ্ধব্যঃ ৷৷ ৩ ৷৷ তত্ৰ ধাতুপাকস্য लक्ष्णे मार्। निजानात्मा सि স্তম্ভো বিউদ্ভো গৌরবারুচী । অরতি বলহানিশ্চ ধাতুনা পা-

कनकन ।। विकेश छेन्द्रमा । গৌরব গাত্রাণা ।। অন্যক্ত। স-वाधामात्ना ऋषि नाज्यिकत्म गा-ত্রেষু বা পাকরুজাবুতেষু। পীডা বরার্ত্তাঙ্গুলিভিশ্চ গচ্ছেৎ স ধাতুপাকী কণিতো ভিষগ্ডি: ।। जनत्रकः। मार्ज् कर्षु स्ता १४-স্তাৎ পীড়াতে ব্যথমা মদি। ধা-ভোঃ পাক বিজানীযাদন্যথা তু यलमा ह ॥ 🗰 ॥ यलभौकलक १ মাহ। দোষ প্রকৃতি বৈক্নত্য ল-यूणा चत्र (महत्याः । ই क्रियाना-क देवम्बाः भवानाः शाक्षकः ।। দোষ প্রকৃতি বৈক্বত্য॰ দোষ। ৰাতাদৰ স্তেষা প্ৰকৃতি ৰ্বেপথু मारः भोत्रवामि कत्रवः छमा देव-ক্বজ্য॰ বৈপরীত্যা । বৈমল্য ম-লরাহিত্য । মলানা দোষণা ।। পটুতা ৰক্লেশ্চ যত্ৰ ক্ৰমাৎ তৃষ্ণা-দি প্রশমো স্বরস্য মৃদুতা ত॰ দো-ষপাক বদেৎ ।। হৃদ্ধাভ্যো রতি-বেদনাতিসরণ তীত্রো স্বর স্তৃ-মদ শ্বাসাধিক্য মরোচকো রভি রিতি স্যাদ্ধাতু পাকারুতিঃ।।।।। আমস্যাধিক্যেন সপ্তমদিবসা-**मार्वधाङ्किटम भन्नमार्वधि मार् ।**

श्रुतीज्ञः नश्रुमी विश्वना चार्य-मयरगुकाननी छथा। 'अवा खि-माय वर्गामा मानाय ह वराय ह ।। नवदश्यकामनी ठाशयनिवनः সংবিহাৰ বোদ্ধব্যা ভেনাগমন **पिरम नीका प्रभमी बापणी ह** অত্র রাত্রি রিত্যধ্যাহ্রিষতে।। স-নিপাতৰ্রী পূর্বণ সম্যগ্ লব্সন মাচরেৎ। শৃত শীত পিবেদক্ত সমধে ভেষজণ ভজেৎ ৷৷ সন্মিপা-তেন তৃষ্যন্ত পাৰ্শ্বরুক্ তাঁলু শো-বিত ৷ যঃ পাৰবে**ত্ৰল শীত** সমৃত্যু র্মরবিগ্রহঃ॥ শীত অক-থিত। শৃত তুশীত বিহিত মেব ইতি লঙ্ঘন•॥ 🛊 ॥ व्यथ योनुकी-বেদঃ৷ বাত শ্লেম ক্তে বেদাৎ কারবেজক নির্মিতাৎ ৷ সিধাঃ বেদো নিষিজো ২ত্র বিনা কেবল ৰাভজান্।। খৰ্পরভৃষ্ট পটস্থিত কাঞ্জিকসংসিক্ত বালুকবেদঃ। শমবতি বাত ককামৰ মস্তকশৃ-नात्रजनानीन् ॥ त्नाजना मा-र्जव क्षा नीषा भावक मानव । হত্বা বাত কফ স্তন্ত্ত স্বেদো স্বর-মপোহতি।। ইতি বালুকাম্বেদঃ তমরিচ° সর্যপাঃ স্বন্ঠ মেব চ ৷

বস্তমূত্রেণ সংশিষ্ট• নস্য• তন্ত্রা-নিবারণা৷ শ্বেতমরিচ শিগুরী कः। रेमञ्जवाहिनमाः॥ मधुक সারসিদ্ধুত্থ বচোষণ কণাঃ সমাঃ । अञ्च शिकुं खिना नमा नमा । मञ्डाथरवाधनः ॥ मधुकमा-तापिनगः।। याजूनुकार्ष्क्रतमः काकः जिलदगन्निछः। जनाम সিদ্ধ বিহিত নস্য তীক্ষ প্র-र्याक्र्रिष् ॥ एवन প্राक्रिगट স্বেমা প্রভিন্নত প্রসিব্যতে । শিরো হৃদয কণ্ঠাস্য পার্শ্বরু-ক্চোপশান্যতি।। মোহান্যেন मूक्षः वाश्यिज् यामृभः भकः। কল্পতরু নামধেয়ো রুসো ন তা-দৃক্ পর॰ কিঞ্চিৎ ।। ইতি নস্য॰ ।। # ।। यथ निष्ठीवनः। किस्रा তালু গল ক্লোম মরুৎ পিত্তেন চোচ্ছিতঃ। তদা স চারবেচ্ছো-ষ জিহ্বাযাঃ খরতা তথা ॥ স্ফুটনঞ্চ তদা জিহ্বা॰ লেপযে-न्यथ् পिरुया। जाक्या माजा পा-তেন জিহ্বা স্যাৎ সরসা মৃদুং।। चार्जकमा ,त्ररमार्थिः रेमस्रवः কটুকত্রয় । আকণ্ঠান্ধারষেদা-স্যে নিষ্ঠীবেচ্চ পুনঃ পুনঃ।। তে-. নাস্য হৃদ্য ক্লোম মন্যা পার্শ্ব শি-

রো গলাৎ। নীলোপ্যাক্কষ্যতে क्षिया लाचव॰ हाना कावटि ॥ পর্বভেদো ছরে৷ মূর্চ্ছা নিজা শ্বাস গলাম্যাঃ। মুখাকি গৌর-বং জাড্য মুৎক্লেশ শেচাপশান্য-তি ৷৷ সক্লৎ দি স্ত্ৰি শ্চতুঃ স্বৰ্যা-कृष्णे साव वनावनः। এতদ্ধि পরম প্রাহ ভেষজ সমিপাতি-ना ।। इंडि क्वन श्रहः ॥ 🛊 ॥ व्यथावरलहः। कर्केल (भोक्रत भृत्री खाय समन्ह कात्रवी। अ-ক্ষচূৰ্ণীক্তও চৈতৎ মধুনা সহ লে-হষেৎ।। এষাবলেহিকা হস্তি সা-নিপাত সুদারুণ। হিকাণ শ্বাস্ব-क कामक कर्रताशक नामरम ।। এতদেশাজ্য॰ কফোডেকে চূর্ণ-মাডকজৈ রলৈঃ। তন্ত্রান্তরে চ উক্ত॰। অফাঙ্ব॰ মধুনা লিছাদা-র্জক্স্য রসেন বা। সংযোহ দা-ৰুণ হন্যাত্ত্ৰা কাস সমন্বিত ॥ ইতি। সর্বেষু সন্নিপাতেষু ন কৌ-দ্র মবচারযেৎ। শীতোপচারি ক্ষোদ্র স্যাচ্ছীতঞ্চাত্র বিরুদ্ধ্যতে ।। অষমভিপ্রায়ঃ। সন্নিপাতত্ত্ব-রেষু ক্লেম্মনিগ্রহার্থণ সর্বদা স্বে-দো হিত উক্তঃ। অত্রাগ্নিসম্ব-क्षाटमहरमाक्छ। जिर्छटम्य ॥

উক্ষেন মধুনা বিরোধঃ। উক্তঞ্চ সূঞ্রতেন। উক্তে বিরুষ্তে मर्बः विषाययण्या मधु। উकार्छ मूरिक क्रकक छतिरुखि यथा विवः ইতি।। শীতোপচারিকৌড নি-তি। শীতেনোপচারো ২স্যান্তী-তি শীতোপচারি। শীতকাত্র স মিপাতে বিৰুদ্ধ্যতে। অৰ মক त्नरः थारयत्मा**र्ज्जज्ज्जागर** রত্বাৎ সাধ মুপযুজ্যতে। যত-উক্ত॰ চরকে। উদ্ধৃজনুগদমী य। मा माय भवत्वहिका। व्यक्षा-রোগহরী যা সা ভোজনাৎ প্রা-ক্ প্রযুজ্যতে।। পৌষ্করণ পুষ্কর-मृन॰ তদলাভে সন্ত দেয় । শৃঙ্গী কৰ্ক টশৃঙ্গী। ব্যোষ শুণ্ঠী পিগ্ন-**ली यति**हानि। याटमा यवामः। কেচিদ্বাস স্থানে ধ্বানী প্রক্ষি-शिष्ठ । कात्रवी मगरेत्रना देखि लारक। असे द्वारतिहरू।।। निव यायलकः शिकुः। जाक्या मः হ মেলযেৎ। বিশ্বভেজদণযুক্তণ মধুনা সহ লেহথে ।। তেনাশু শান্যতি শ্বাসঃ কাসে৷ মূ স্থারুচি স্তথা। ইত্যবলেহঃ।। 🟶।। অথা-ঞ্জন । শিরীষবীজ গোমূত্র রুক্ষা মরিচ সৈন্ধবৈঃ। অঞ্জন স্যাৎ

প্রবোধাষ সরসোন সিলা বটেঃ ।। नित्रीयरीकानाञ्चन ।। 🐞 💵 অযোরজঃ শ্বেতলোধ্ মঞ্জন• ম-রিচ• তথা। গোপিত্তেন সমাযুক্ত• তক্রানাশন মুত্তমণা গোপিত্তণ গোরোচন। লৌহচূর্ণাদ্যঞ্জন।। 🗱।। অञ्चन मगागात्रक मधु मिक्कू **लित्नाबदेवः। अत्याह्याहि छ**-বতি ভাষিত ভিষজা বরৈঃ ৷৷ ইত্যঞ্জন॰॥ৠ। অথ ক্বাথঃ। সূত॰ বিষক্ষ মরিচণ তুত্থকণ নবসাদরণ। চূৰ্ণিত স্বরদৈ শ্বর্দ্য ধৃর্ত্তপজ্র র-সোনযোঃ॥ সন্নিপাতকতে মো-হে মূর্দ্ধি লিম্পেৎ পদোপরি। অ-স্থিব্যথাস্বনেনৈব লেপ॰ স্বর্যাৎ পদোপরি।। পদ॰ পীছ ইতি লো-কে।। বিশ্ব শ্যোনাক গস্তারী পা-টলা গণিকারিকাঃ। পাচন বাত कक इन अक्षमृत भिष्ण भर्ष ॥ भानशर्भी शृक्षिशर्भी वृश्जी कर्के-কারিকা। গোক্ষুরো বাত পিত্তমণ কনীষঃ পঞ্চমূলক॰ 🏨 উভয়ণ দশ-मूल ७९ निश्नेनी हूर्न न शुक्र म-নিপাতম্বরু হন্তি হৃৎ কণ্ঠ গ্রহ-নাশন•া৷ তন্ত্ৰা বাত কফাতক শ্বাস পার্শ্বার্ত্তি কাসনুৎ। মহাস্তি

यानि मृलानि कार्श्वशर्जानि यानि চ ৷৷ তেষার বন্ধল গ্রাহণ হস্ত মৃ-লানি ক্লৎনশঃ। অত্র বিশ্বাদীনাণ পঞ্চানা॰ মূলস্য বন্ধল॰ আছে।। मनमूलकाथः।। #।। मनमूली क ষাযন্ত স পৌষ্কর কণান্বিতঃ। স নিপাত স্থবে দেযঃ শ্বাস কাস স মবিতে।। দাদশাঙ্গকাথঃ।। #।। চিরত্বরে বাত ককোত্মণে বা ত্রি-দোষজে বা দশমূলমিশ্রঃ। কিরা-ততিক্তাদিগণঃ প্রযোজ্যঃ শুদ্ধ্য-র্থিনে বা ত্রিবৃতা বিমিশ্রঃ। কি-রাততিক্তাদি র্যথা। কিরাততি-ক্তকো মুস্ত গুড়ুচী বিশ্বভেষজ কিরাতাদিগণো ছেব চাতুর্ভ-ত্ৰক মিত্যপি॥ চতুৰ্দশাঙ্গকাথঃ मपूरालण्। जागी महेकवीकक शटोनः कं पूरताहिनी ॥ अर्छ।-দশাঙ্গ ইত্যেষ সন্নিপাতজ্বাপ-रः। काम समार भाषार्वि याम शिका वभीश्रः ॥ अकोमभात्रः काथः ॥ 🕸 ॥ जृनिष्ठ माकः मणः মূল মহোষধান্দ তিক্তেন্দ্রবীজ ধ-নিকেভ কণা কষাযঃ। তন্ত্ৰা প্ৰ-লাপ কসনারুচি দাহ মোহ শ্বাস ত্রিদোষ জনিতত্ত্বরনাশনঃ স্যাৎ

৷৷ দ্বিতীযোক্তাদশাঙ্গকাথঃ৷৷ এত-বৈষ্যব গুণ উক্তো বঙ্গদৈনন 1 অকাদশাঙ্গ মিত্যেষ মৃত্যুকল্প जुत जस्य । हेि।। 🛊।। जय সদিপাতত্বরে রসাঃ। বিষণ ত্রিক-টুক গন্ধ টকণ মৃতগুল্বক ৷ धुखुतमा চ वीजानि श्क्रिल॰ न-ব্যুত ৷৷ এতানি সমভাগানি मिटेनक विजयाजटेवः। मर्मएयः চ্চণকারা কর্তব্যা বটিকাথ সা।। ভক্ষণীয়া তুপাতব্যো রবি-मृल क्यायकः। मृजमः जीवनी-নান্না সন্নিপাতজ্বান্তক্তং ।। মৃত-मङ्गीवनीविधिका ॥ 🟶 ॥ मिन পাতৰুরে রসপ্রদীপে। শুদ্ধসূত সম॰ গন্ধ সূতা শ মৃততা মুক । ত্রিভি স্তল্যৈ গ্রাণকীরে শ্রন্দেযে-**माज्य स्ता। गर्मरंगमिनराक-**ম্ব নিৰ্গুণ্ডী শিশুজুডুবৈঃ। বিধাষ গোল ত॰ গোল মন্ধুযাগত• পচে ।। ত্রিষামান্বালুকাষল্তে **७७: थाल विह्नं (४९) जरुमा**॰-শং বিষং তত্ৰ ক্ষিপেত্তেনাপি ম-র্দ্দযেৎ।। ত্রিনেত্রাখ্যে রসো হেষ জ্বেয়ে গুঞ্জাদ্বোন্মিতঃ। **११९८कान**कसारयन हागीमृरक्षन বা সহ ৷৷ রসেনানেন ভ্রেন

সলিপাতৰুরো মহান্। সংক্ষণ বজতি ক্ষিপ্ৰণ কৰ্ত্তব্যো নাত্ৰ সণ-শयः॥ जित्ति जात्रमः॥ 🛊॥ म নিপাতস্থরে রসপ্রদীপে। ভক্ষ ষোডশনিক্ষ স্যাদারণ্যোপল স-ম্ভবং। মরিচং নিষ্কমাত্রঞ্চ বিষং निष्कः विवृर्वस्य ॥ तस्य छत्य-শ্বরো নামা সমিপাতজ্বান্তক্ৎ ৷ একগুঞ্জামিতো ভক্ষ্য আর্ডক-मा जत्व। इ.। ज्यायता त्रमः ।। 🟶 ।। সন্মিপাতজ্বরে রসেন্দ্রচি-স্তামবৌ। দ্বো কষৌ সূতকাদ্গ্রা-ছৌ গন্ধকাদ্দৌ তথৈৰ চ। ষত্নত खृख्य॰ मर्मा॰ किन॰ इ॰मशनीत-সৈঃ।। কল্কস্য ৰটিকা ক্লত্বা নিঃ-ক্ষিপেৎ কাচভাজনে। কর্বৈক यम्ड॰ তত্র किञ्चा বক্তু॰ निরোধ-যেৎ।। স্পপিকাষাঃ পরে ভাগে বালুকাভিশ্চ পূর্যেৎ। সার্দ্ধণ যাবদহোরাত্র• ভাবত্তত্র পচে-**जनः।। मीन्याद्या २ नटना ८ एयः** माक्रमीज जमूक्तद्र । जानार्क মমৃত তত্ত্ৰ কিপেত্তাবত্তথোষণ ।। ভক্ষিতো রক্তিকামাত্রো রস স্তৃ গিন্দমারকঃ। সন্মিপাতত্ত্বরং হ-ন্যাদ্বাত মন্দাগ্নিতা মপি ৷৷ শূল मः वहनीः खन्मः क्षरः भाषुगमः

তথা। খাস কাসাদিকান্ সর্বান গদানেষ বিনাশবেৎ ৷৷ অগ্নি-সমারো রসঃ॥ 🛊 ॥ সন্মিপাতজ্ব-ब्रापियू तरमञ्जिष्ठियागरगो। गरम-শ টক্ষ মরিচণ বিষণ ধর্ত্তুরজৈ র্ড-दैवः। मिन मःयर्फिङ रुकः शकः বক্ত্রোরসো ভবেৎ।। আর্ডকস্য দ্রবেবৈষ দাতব্যা রক্তিকা মিতঃ । সন্মিপাতজ্বর হোর নাশবেরা-ত্র সংশ্বঃ। ঈশঃ পারদঃ। টক্কঃ **टेकनः। शक्**रटकु त्रमः॥ 🐞 ॥ সন্মিপাতত্ত্বরে রসেন্ডচিস্তামণৌ । অথ শীতস্থরে রসাঃ। সূতক গন্ধকঞ্চৈব হরিতাল° মনঃশিলা॰ । একনিক দিনিকঞ্চ চতুনি ক॰ তথৈব চয়া পঞ্চনিষ্করসৈঃ কার-বেল্যাঃ কল্ক॰ প্রকল্পবেৎ। তা-মুপত্রাণি তুল্যানি তেন কল্কেন लिপरिष् ॥ मताव मः भूरि जानि ক্তমা তেষা মুপর্যাপি। দদ্যাত্তা॰ পিষ্টিকাণ পশ্চাৎ পুটপাকেন পাচষেৎ ৷৷ ততঃ সংচূর্ণযেদেব त्रमः रक्षीराजन जिक्काः। यदेवक মাত্রধা হস্তি ঘোরণ শীতজুরণ ঞ্র-বং ৷৷ পারা টক্কঃ ১ গন্ধক টক্কঃ ২ হরিতাল টক্ষঃ ৪ মনঃশিলা টক্ষঃ৫ তামুপত্র টক্ষঃ ১২। শীতস্থরারি-

त्रमुः॥ ।। त्रमञ्जीत्रा भाराम॰ शक्षक जूथ नत्रमक विष गम। বিষাদক্ত গুণ বোজ্য পরিচণ বিশ্বভেষজা। অশ্বসদ্ধা তু বি क्या कामभर्म किन्नकः। हजू नीक द्रोम द्रिष्ठकृर्न यरञ्जन यर्फ-रहिष्या जूनमाञ्च परेनः मार्कः ভক্ষিতো রক্তিকামিতঃ। হস্তি শীতত্বর ঘোর নামায় শীত **क्नि**न्ती ॥ मीज्रकमतीत्रमः ॥ 🛊 ॥ ব্রস্প্রদীপে। তালক সুক্তিকা-চূর্ণ তুল্য তত্তোভযোপরি। नरेगा॰गक जूष॰ मा मिर्पर कनाकाषरिकः ॥ छल् मः ७६ मूनदेन वं देना गंकनूरहे नरह । শীত তচ্চূৰ্ব্যদৰ্দ্ধ গুঞ্জামাত্ৰ শিতাযুত ।। প্রভাতে ভক্ষয়েত্তে-ন বাতি শীতত্ত্বক্ষৰ । বান্তি র্ভবতি কস্যাপি কস্যাপি ন ভব-ত্যপি॥ শীতভঞ্জী ॥ 🛊 ॥ রস ক পারদ তুখ তালক গন্ধ ট-কণ। সর্ব মেতৎ সমণ চূর্ণ কা-त्रत्वज्ञीत्रतेन फिनः॥ मर्फरवट्डन श्वका तर्मकामि मनमा ज्। जा-युगा ভाজनगाञ्च वित्म्भाक्षा-क्रामिकः॥ ७९१८६ बानुका यद्य यवा याव "क्यू वेश्वि हि ।

শীতল তদ্ধি গৃহীবান্তানুপাৰো-मता खिषक्।। भी छ ज शीवरमा मा-यनात्वा मदिह मन्यूष्ट । जिन-छः পर्वशरखन नामरमियम्ब-तान्।। भौठजङ्गीतमः ॥ 🕸 ॥ শীতজুরাদি বিষমজ্বরেষু রসেন্ড-চিস্তামণৌ। তালকো দরদোক্তৃত পারদো গন্ধকঃ শিলা। ক্রমান্ডা-गार्क तिङ्ख कात्रद्वज्ञासू मर्फि-ত ৷৷ অনেনাস্য প্রমাণেন তামু-পাত্রী প্রলেপষে । অধামুখী দ্ঢে ভাওে তামিরুধ্যাথ পুরষেৎ ।। চুल्याः बालूक्या यमु मधिः श्र-बालरबष्ठः। भीठः मः हुर्गा मा-**रवामा नागवज्ञीमत्न श्रिकः॥ छ**-ক্ষিতো মরিটেং সার্দ্ধণ সমস্তান্ বিষমশ্বনান্। শীত দাহাদিকান্ হস্তি পথ্য॰ শাল্যৌদন• পযঃ।। শীতভঞ্জীরসঃ ৷৷ 🛊 ৷৷ রসরত্নপ্র-দীপে েরসং গন্ধ বিষটেশ্ব সমণ खक्षक विकनः। यर्नरम् थन्नयस्य जू गांव ९ कब्बन मिछ ।। नत्र-लमा मूर्थ किथा मृता मः दिखे-रममृत्र-। ऋ। शरय भगरव भारव चारशा र क्षु लवन नारम ।। मूर्य ভাও সংনিরুধ্য চতুর্যাম দৃঢা-গ্নিনা। স্বাঙ্গশীত সমুজ্তা ক্রতা

बत्बम् कब्बनी ।। ख्रक्षाबयथ-भारतन नमाकर्मानि स्थाजरम् । বামভাগে স্বর হস্তি তৎক্ষণাৎ कोजूक॰ मह्र ॥ स्थाजरयमाकि-ণে ভাগে আরোগ্যে নিশ্চিত ভ বেৎ ৷ ইত্যৰ্জনারীনাটেশ্বরো রসঃ ৷৷ 🏶 ৷৷ শীতত্বরাদি বিষম-ब्दत्रम् त्रमत्रञ्जश्रिणि। कर्कनः ত্ৰিফলা **দাৰু চন্দন শপৰ্বক** । কটুকা পদ্মকোশীর কিপচেৎ कर्यक॰ जला।। जिस्माय माङ् ভ্ফাদ্ন পান মাত্রেষপুজিত। । দীর্ঘকাল স্থরার্ত্তানা স্বেতৎ नामगृटा**गगः।। कर्यः क**र्यः লাদ্যূশীরাস্তানা সমুদিতানা জলে প্রস্থমিতে বিপচেৎ অর্দ্ধ-(मयः। कर्कनामिशानः ज्या-या॰ मार्ट् ह।। मिन्निभार्ट जू मा-হার্ত্ত॰ यः সিঞ্চেছীতবারিণা । আতুরঃ স কথ• জীবেদ্ভিষথা স ক্থ ভবেৎ ৷৷ এষ সন্নিপাতিনো मारह भौजामुरमक निरस्रा क्र-গাহাদন্যত্র তত্র বাপ্যাদ্যবগা-रनत्माकवार ॥ 😻॥ वराव याह। पूरम्पर्भ (गाक्त क्षा निक गाहात गर्भरषद्। त्नायमास्डि वनाभार्थः जित्नायञ्चतित्। जिव-

क्।। मूरम्भारमा यवामः। आहाद्व মুচিত ময়৽।৷ লাজশকুন্ সমগী-ষাৎ দৈশ্ববেন সমন্বিতান্। তে চেজ্জীর্যাস্ত্যবিমেন স্বরী জীবেত্ত-দাঞ্রবং॥ ইতিকেচিৎ॥ রক্ত-পিত্তে হিতত্বেন তৃফা দাহ স্বরেষু চা লাজানা শক্তবং শীতা ন চ তে ২ত্র হিতা মতাঃ।। পাচনো দীপনঃ সোকো লাজমণ্ডো যতঃ স্মৃতঃ। দশমূলাদি সংসিদ্ধঃ সন্ধি-পাতস্বরে হিতঃ।। সমিপাতস্বরী **যস্তু কম্পতে প্রলপত্যাপ।** কিঞ্চি-দেব ন জানাতি চিকিৎসা তস্য কথ্যতে ৷৷ অভ্যঞ্জমেৎ পুরাণেন সর্গ্রিয়া পূর্ব মেব তং। বলা রাসা গুড়ুচ্যাদ্যৈ ক্তৈলৈশ্চ পরিষেচ-যেৎ।। বৰ্ত্তকো বৰ্ত্তকা লাবো বা-র্ত্তাক স্তিত্তিরিঃ শশঃ। স্পলিঙ্গশ্চ রসেনৈষাণ তপ্ষেত ষ্থানল।।। বর্ত্তকঃ বটের ইতি লোকে। বর্ত্ত-কা বটঈ ইতি লোকে। বার্ত্তাকে। বাতচটক ইতি নির্ঘণ্টঃ। বগেরা ইতি লোকে। স্থলিস্থো গরগরে-ষা ইতি লোকে।। সন্নিপাতে কু-ধার্ত্তণ যো ভোজ্বেৎ পিশিতৌ-দনং৷ স কথং ভিষগাখ্যান্ত লভতে मनुक्राथमः ॥ 🛊 ॥ जय বাতো व्यन

সনিপাত খরস্য চিকিৎসা৷ শব্দ | मृनी क्यांयन मन्। ८ वाट्यांखदा बदा। ज्लाकः वा मूर्थाकः वा मृख्रा (माय वनावनः ॥ शक्षमूंनी মহতী প্রথম প্রাপ্তাষা স্ত্যাগে বচনাভাবাৎ ॥ 🟶 ॥ অথ পি-ভোষণ সমিপাতস্বরস্য চিকিৎ-সা। পৰ্ষকাণি ত্ৰিফলা দেবদাৰু **ठ क** ऐ्यन । ठम्मन श्रेष्यक देठव তথা কটুকরোহিণী।। পৃত্নিপণী শৃত প্ৰেভি ৰুষিত শীতল জল । পিত্তোন্তরে নৃণা মেত**ৎ স**ন্ধি-পাতে চিকিৎসিত ৷৷ পৰ্যকাদি কাথঃ।।ৠ। কিরাততিক্তক॰ মুস্ত॰ গুডুচী বিশ্বভেষজ । পাঠোদীচ্য ম্ণালঞ্চ শৃত পিত্তাধিকে পি-বেৎ ৷৷ কিরাতাদি সপ্তক ৷৷ 🟶 ৷৷ অথ কফোল্বণসন্নিপাতজ্বস্য চি-কিৎসা। বৃহত্যৌ পৌষ্করণ ভা-भी भंगे भृषी मूत्रामछ। ४९-मकमा जू वीकानि भरिगल करूं-রোহিণী।। वृष्ट्यामि र्भनः শস্তः সন্নিপাতে কফোত্তরে। স্বাসা-দিষু চ সৰ্বেযু হিতঃ সোপজবেষ-**शि।। वृङ्**छाां मिकां थः ।। 🐗 ।। ज्य বাত পিত্তোত্বণ সন্মিপাতত্বরস্য চিকিৎসা। বাত পিত্তহর বৃষ্য

क्वीयः शक्युलकः। उद्देशार्थाः মধুনা হস্তি বাত পিত্তো**ন্তর**° স্বর• ।। मेर्पश्यम्म ।। का वान ভঙ্গেয়োজ্বনসমিপাভজ্বচিকিৎ-সা। কিরাততিক্তক মুক্ত গুড়-চী বিশ্বভেষজ । চাতুর্ভদ্রক মি-ত্যাহ্ বাতলেমোল্বণে ছরে ৷৷ চাতুর্ভদ্রককাথঃ।। 🟶।। অথ পি-ত্তলেশ্বোত্বণসমিপাতত্ত্বরিচিকিৎ-मा। नर्भ हैः क हेकल॰ अर्थ मू-শীর চন্দন জল। নাগর মৃ-স্তক শৃঙ্গী পিপ্পল্যেষা শৃত হিত ৷৷ তৃষ্ণ দাহাগ্নিমান্দ্যেষু পিত্ত শ্লেমোহ্মাহ্মণে স্বরে। টাদিকাথঃ ৷৷ 🟶 ৷৷ অথ ৰাতপিত্ত শ্লেমোত্বণদমিপাত স্থরচিকিৎ-সা৷৷ নাগর ধান্যক ভাগী প-দ্মক রক্তচদন। পটোল পিচ্-यर्फम्ठ जिक्ना यथुकः वना ॥ শর্করা কটুকা মুস্তা গজাহ্বা ব্যাধিঘাতকঃ। কিরাততিক্ত ম-মৃতা দশমূলী নিদিগ্ধিকা॥ যো-গরাজো নিহস্ত্যেষ সন্নিপাত-ত্রিকোল্বণ । সন্নিপাত সমুখানণ মৃত্যু মপ্যাগত জবেৎ ৷৷ গজা-হ্বা গজপিপ্পলী। ব্যাধিঘাতকঃ আরুধঃ। নিদিধ্বিকা দৈগুণ্যা-

र्फ गृथक् शिष्ठे । ताग्रवाकः कार्यः ॥ 🗢 ॥ ज्ययं श्रीवृक्तं नथा হীন বাভাদি জনিভ সন্নিপাত-স্বরাণাণ বন্ধাণ তত্ত্বেণ চিকিৎসা गार । श्रवृक्षः कर्यरयत्कायः কীণ সম্বৰ্জযেন্ডিষক্। চিকিত্-**मिय॰ विधालका मायत्वा बृक्ष**-शैनरयाः॥ व्यमायमर्थः। अवृ क्षः (क्षायः कर्यरयः छः रेक्क्गा হেতুভি রৌষধান বিহারেঃ রুশী-ক্তা সমী স্ব্যাৎ। ক্ষীণ দোষ সম্বৰ্জযেৎ। তদ্ব দ্বি হেতুভি রৌব ধান্ন বিহারে বন্ধবিদ্বা সমীদর্ব্যা-দিত্যর্থঃ ৷৷ প্রবৃদ্ধে সমিতে দো-ख मधामः अय (मव हि। ना छि॰ ষাতি সমণ নীতে খনুবন্ধ্যে ২নু-वस्तव ।। ज्यमायमर्थः । वर्षाम् वायू तनूत्रकाः (नवाः । अधान মিতি যাবৎ। পিত্ত শ্লেমাণাবনু-वक्को वारमा ब्रन्हितो भव्नि शिख यन्वन्नाः करकान्वन्नः। वनरञ्ज কফোনুবন্ধ্যো বাত গিত্তে অ-न्रक्तो তত यथान्रक्ता अभयः নীতে ২নুবন্ধঃ স্বযমেব শান্তি• ষাতি। তথা প্রবৃদ্ধে দোষে শনি-তে হ্ৰাস্যিত্বা স্মীক্লতে মধ্যমো **(मार्य) हि निक्ठरयन अयुरमव**

শান্তি• ৰাতি প্রক্ততো ভবতীত্য: र्थः ॥ ॥ जय नीजानामीनाः সমিপাতস্থ্রাথা ত্রেদশানা বিশিষ্টা চিকিৎসা। তত্ত্ব শীতা-স্বস্য চিকিৎসা মাহ। ভাস্বন্মূল। জীরক ব্যাষ ভাগী ব্যাঘী ভঠী পুষর গোজলেন। সিদ্ধ সদ্যঃ শীতগাত্রাতিমোহ শ্বাস শ্লেশো-**ডেক কাসামিহম্ভি।। ভাষমূল**ণ অর্কগূল।। কর্কোটিকা কন্দর্জঃ **अन**र्थ क्रका वठा कर्षकन क्रकः জীরে:। কিরাততিক্তানল কটু-লাবু পথ্যাভি ৰুদ্ৰৰ্তন মত্ৰ শস্ত ৷৷ কর্নোটিকা কন্দরজঃ থথসামূ लत्रकः। त्रम विष मतिष्ठ मरहण-প্ৰিযফল ভদ্মৈক ভূ চতুৰ্বসূভিঃ । ভাগৈ স্মিত মুদ্ধূনন মিদ মমি-**ত**स्त्रित देशेंग्रहत्र ॥ 🛊 ॥ वर তন্ত্রিকস্য চিৎসা। কুডামৃতা নাগর পৌষ্করাণি শৃতানি পী-তানি শিবাযুতানি। ভগী কণা-গস্তিরসোষণানি নস্যেন ভক্রা-विक्रयाचनानि ॥ मति क्र পঞ্পচা বটা রুক্ ক্রমিহর নাগর শर्वती गराकः। ছगनरुजन कः ক্ষিতা নিতাস্ত' নসি নিহিতা ননু-তন্দ্ৰিক জ্বন্তি ।। কচঃ বালকঃ।

পঞ্পচা দারুহরিতা। রুক্ স্ঠ । ক্লমিহরো বিডঙ্গঃ। শর্বরী হরিতা। । गवाकी इखवाइनी। निम नामि-काषाः॥ जुत्रक्र नाना नवरगाउ-মেন্দুঃ মনঃশিলা মাগধিকা মধুনি । निर्याष्ट्रिकानाकिनि निक्ठिक জাক্ ভক্তা সনিজা বিনিবারয खि॥ नवर्गाख्य रेमक्षव । **रे**न्सुः ৰুপূরঃ। নিজা অতিনিজ।।। #।। অথ প্রলাপক্স্য চিকিৎ স। স-তগর বরতিক্তো রেবতাম্ভোদ তি ক্তা নলদ তুরগগন্ধা ভারতী হা-त्रशृताः। यलग्रक प्रमम्बी गधः भूणी मूलकाः अललन मणहन्। পানতো নাতিদুরাৎ ৷৷ বরতি-ক্তো ২ত্ত পর্ণটো নতু মহানিয় खखाखतान्दताशा । ननमः ना মজ্জক। তদলাভাদুশীর প্রাহণ । ভারতী ত্রান্ধী। বরম্ভ ইতি লোকে। হারহুরা তাকা॥ সা-खुरेन तक्षरेन में रेगा खीरेक खि-মিত সেবনৈঃ। সৰ্বতো বিহৃত চিত্ত মস্য প্রকৃতি মানষেৎ il**ক্লা** অথ রক্তষ্ঠীবিন শ্চিকিংসা। রৌ-हिस भन्न स्वामक वामा अर्भ ह गञ्जनका कर्षेकाजिः। सर्कत्रया সম মেষ কৰাষঃ ক্ষতজ্ঞীবিন উদিত উপাयः॥ तौरिषः गृग-দ্ধতৃণবিশেষঃ। ব্লোহিত ইতি লোকে। গন্ধলতা প্রিবস্থ ।। পত্মক চন্দন পৰ্গ ট মুস্তা জাভি বরারুণ চন্দনবারি। ক্লীতক নি-ষ্বুত পরিপক্ষ বারি ভবেদিছ শোণিতহারি॥ ক্লীতক বর্ফী-मधूक । इंश् त्रक्क श्रीविनि॥ यथूक মধূক পৰ্ষক পাথ শ্চন্দন পল্লব দারু সনাথঃ। শ্রীপর্ণীফল শীত ক্ষায়ঃ সশিত ইহ স্যাদ্সু জ্যা-য় ৷৷ পল্লৰ পত্ৰক ৷ পাথঃ বালঃ । সনাথঃ সপ্রধানঃ। শ্রীপণী গ-खाती॥ 🛊 ॥ व्यथः जूत्रानवमा চিকিৎসা। তুরঙ্গদ্ধা লবণোগ্র-গন্ধা মধুক সারোষণ মাগধীভিঃ। वसाबू खंकी लजूनाविठां छि संमा॰ ত্বসমুগ্নদৃশ করোতি ॥ 🟶 ॥ অথাভিন্যাসদ্য চিকিত্সা। শৃ-দী ভাৰ্গ্যভযাজাজী কণা ভূনিয় भर्भ दिः। स्मित्रमाङ्ग वठा अर्थ यान कर्षिन नागरेवः॥ मूख धानगी-ক তিক্তেব্ৰষৰ পাঠা হরেণুভিঃ। रुखि निश्ननानार्गा निश्ननी मृन বিশালারখধারিষ্ট विवदिकः ॥ भंगि वाञ्चिकाकरैनः । त्रक्ती माबी यवानीषय मः यूटेजः

॥ नगारेन दिश्खाः कार्था रिकृ র্জক রসাধিতঃ। অভিন্যাস স্বরণ यात रेडि उसाक उरक्रनार।। প্রমোহ वर्गमूलक সমিপাতা-ज्रायाम्म। श्कि। श्वानक कामक তथा गर्बान्भे जवान्।। भूक्यापि-काथः॥ ।। व्यथं फिन्स्कमा हि-किৎमा। कित्राठिकांत्रकरू किनक्ष कर्फूत क्रका कर्षेट्रिकन्यू-कः। अञ्चष्रः मः भग्रदयप्रमञ्जा **माया** खटा मामत्रि र्यथाकि ॥ जात्रवहर जनत्त्वत्रहा ३७ लाक। क्लिझ जलक्ष रेडि लाक। अञ्चलवः वीजभूत्रानितः मः। किताजां मिकवनः॥ 🛊 ॥ मा-न्द्रभर्गे मानुद्रम्लामस मधुध्रजा। শষুকপুষ্ণী সহিতা সেব্যা বাচা विश्वकरम्। भानुत्रभनी बाकी। गान्त्रमृन विस्मून । आमयः अ-छै। मध्कपूजी मध्यपूजी। मा-न्त्रभनामि त्रवानशः॥ भा कृषा নাগর পুরুরামৃতলতা ত্রান্ধী বচা সূত্ৰতা ভাগী বাসক্ষা সভোষ मूत्रमाङ्गारशी क्रिंसिक्सिक् र १ वि শ্বা বর্মা বিভাবরীযুগ বরা বৎসা-मनी वांत्रिम वााशी निष भटिंगन পুষ্ণর জটা রুগনারুভি বা রুতঃ ।।

পুষর পুষরমূল। তথা চামর निण्हः। मृत्व शुक्रत काश्रीत शब পত্রাণি পৌষরে। সুত্রতা গন্ধপু-नानी काभीदा अभिका। मूत्रमा তুলসী। বিশ্বাদি র্যোগান্তর । বর্ম পর্গ টঃ। বিভাবরীযুগ হরি-জা দারুহরিজা চ। বরা ত্রিফলা। वर्मामनी अष्टु ही। वाा श्री कन्हे-कार्तिका। ऋक् अर्थ ।। क्षा। व्यथ म-দ্ধিগদ্য চিকিৎদা। শটী সুরতর-ত্তমাঃ স্থবিরদারু রামাঃ সমাঃ স নাগর সুধান্বিতাঃ পিব শতাব-রীসংযুতাঃ। মৃদুজ্বলন পাচিতাঃ সহ পুরেণ সন্ধিগ্রহ ব্যথাপহত্তযে বৃথা শিশিরদেবন মা রুণা ।। উত্তমা ত্রিফলা। স্থবিরদারু বি-ধারা ইতি লোকে। সুধাগুড়্চী। পুরো গুগ্গুলুং ৷৷ বচা কবচ কচ্ছুরা मरहताम् छ। जन्न ता मूतास्व धन নাগরাতরুণদারু রামা পুরাঃ। বৃষা তরুণ ভীরুভিঃ সহ ভবস্তি সন্ধিগ্রহ ব্যথোরুজডিম ক্লম ভ্রুমণ পক্ষবাত দ্রুহঃ।৷ কবচঃ পর্য় টকঃ । কচ্ছরা যবাসঃ। ভঙ্গুরা অতি-বিষা। সুরাহ্ব দেবদারু। অতরু-नमाक वृक्षमाक । भूरता अशुन्ः। বষা বহদ্দন্তী এরওবৎ পত্রবিটপা

তদলাভে দন্তী চ গ্রাহা সমান গুণদ্বাৎ। তরুণ এরওঃ। ভীরুঃ শ-তাব্রী।। সুরদার শটী সুধালতা সুবহা শুঠিযুতা শৃতা জলে। স-পুরাঃ শমষন্তি সেবিতাঃ সতত সন্ধিগত সদাগতি ।। সুবহারান্না ॥ मूटेखत्रख थ्वानमा वान माक्र क्छि-মা রাম্বা ভীরু কর্চ্চুর তিক্তা। বা-সা বিশ্বা পঞ্চমূলী যুগাঢ্যা হন্যা-মন্যান্তন্ত সন্ধিগ্ৰহাতীঃ।। প্ৰাৰ্-দা হরীতকী। বাণঃ নীলপুষ্পসহ-চরঃ। তিক্তা কটুকা।। 🟶 ।। অথা-স্তকে বিধিঃ। ইহাপহাষ ব্ৰত মুক্ষ-वाति खताति शृयामि गमाशशति । স্বরচ্ছিদ জীবিতদঞ্চ নিত্য মৃ-ত্যুঞ্জষণ চেতসি চিন্তবস্ব॥ ইছ **अस्टरा उठः मञ्चनामि निय-**ম॰ ।। কপূর প্রকরাবদাতবপুষ॰ সদ্যোগ মুডাজুষ শশস্তুক্ত জ নেষু ভাবুকজুষ ভালক্ষুরচ্চ-क्षूर[े]। म॰পূर्ণाমृত क्रस्तु मस्ट्रिक-র° শুভাক্ষমালাধর পিঙ্গোত্তু-क कठाकनाथ क्रितिश हसार्क মৌলিণ স্তুহি।। ভিষ্ঠি ব্লিভি নি-ণীত সমিপাতে হস্তকাভিধে । ভেষজ॰ জাক্লবীনীর॰ বৈদ্যো গোবিশ এব हि ॥ 🟶॥ অথ क्र-

প্লাহস্য চিকিৎস। । উপীর চন্দ नामीछ जाकामनक नर्भ टिः । **गृजः भीजः जनः मनामा**रुज्ज ত্তরশান্তবে ৷৷ বডঙ্গপান ৷৷ 🛊 🛚 ৷৷ ৰশিতো নিশি পৰ্যাবিতঃ প্ৰা-**उर्थाना। कार्युलकायः।** शीछः শমষত্যচিরাদন্তর্দাহণ স্বরণ পৈ-ত্ত ॥ ধান্যাকতখুলাঃ কণ্ডিত थानाकानि। शनाककाथः॥। পথ্যা॰ তৈল মৃত কৌতৈ ৰ্লিহন্ দাহত্বরাপহা। কাসাস্ক্ পিত্ত वीमर्भ श्रामान् रुख वर्गी यशि॥ তৈল মৃত কোঁজৈ রিত্যত্র ন সমৃ-চ্চষঃ মেহেন কেবলেন মধুনাপি विश्वाद। श्रशावत्वरः ॥ 🛊 ॥ প্রশমষতি দাহ মচিরাৎ দধিযুক্ कक्ष्मभन्नरेव र्लिंभः। रलिंभा हि-মকর মলষজ নিম্বদলৈ স্তক্র পি-ৈষ্টে ৰা।। হিমকরঃ কপুরঃ। তথা চ ঘনসার শচন্দ্রসজ্ঞ ইত্যমরঃ ॥ উত্তান সুপ্তসা গভীর তামু কাণ-मापि পাত्रে निश्टि ह नार्छ। শীতাৰুধারা বহলা পতন্তী নিহ-ন্তি দাহ• ছবিত• ত্বরঞ।। শীতা-ম্বসা তৃ শতশশ্চ বিলোডিতেন গব্যেন চন্দনযুতেন যুতেন । দাহস্বরী সকমলোৎপল মা-

माधाती किथा विरम्ध मिन (कार्क मनबकालाः।। काक्षिकाः र्जभटिनावध्येनः माह्नामनः। অথ গোতক সংস্থিম শীতলীক্ত वानमा ॥ । व्यवसमार । मा-श्वमिष्ठ काम नित्रम वृकः ষান্বিত । শর্করা মধুস বুক্ত পা-अरयमा कंछर्भनः ॥ नाक्छर्भनः লাজশক্তৃভি রূপতর্পণ।৷ বাপ্যঃ ক্মলহাসিন্যো জলজন্ত্ৰগৃহাঃ खाः। नार्या कमनिकारका। দাহ দৈন্য হরা মতাঃ।৷ মুক্তাবলী **ठलन भी** जनाना गूर्गस्र पूष्णा घत ভূষিতানা । নিত্রদিনীনা সুপ-याधवावा यानिक्रनानग्राच रव खि मार•॥ श्रद्धाम• **ठामा वि**ख्या-य जाः खी त्रशनस्य श्रमः। हि-তঞ্চ ভোজবেদমণ বেনাপোতি সুখ মহৎ।। প্রহ্লাদক কামক্তত र्यः।। 🛊।। जय हिख्जुममा हि-किष्मा। करनायरनाजा नवरना-ख्यानि क्रब्र**श्रदीकः क्रामा मला**-নি। পথ্যাক সিদ্ধার্থক হিছু । । গী যুতানি বস্তাযুবিদিঞ্জিতানি ॥ शिकु। श्रुतीय॰ नयत्न विद्यवा প্রচেতনেতি প্রথিতাম্বিতার্থা । চিতভুমাপশৃতি ভূতদোষ শি-

রোকি রোগ ভূম নাশহেত্য 🏗 वलाषू इागमूब ।। मरबाखनक রো রস্তো গুড বিশ্বা কণামিত ৷ নিহিত নসি নুন স্যাৎ চিন্ত-ভূম বিনাশন• ৷৷ ঙ্গম্ভোক্তবভরো-**द्र**खः অগস্তিবৃক্তব্যুদ্ধরসং ॥ মুরা মুদ্ধজ মেবাহ্বা মধুক মল-रमाखरिकः। मक्रज्क मधूमिरिधः পুর পাণিজ পাণ্শুভিঃ॥ লোহ नामक्दिरनाजि पृ १ भिरुकु माभइः। अरुपायरद्राः श्रीपः দৌভাগ্যকর উত্তমঃ।। মুরা এ-कानी। मूर्काका वाला। मक्रंड-कः प्रविषाकः। भूतः श्रीनूः। পাণিজঃ নখঃ। পাণ্শুঃ পর্প ট-कः। लार् अध्रुकः। लामकः-ক উশীরবৎ পীতচ্ছবি তৃণবি-শেষ:। তদলাভে উশীর[•] আ**হু•** ।। मृष्कीकामत्रमाद्ध मध्माभकना মুস্তামলক্যো ২মৃতা পথ্যা রেব-ত রামসেনক রজো রাজীকলৈ: সংযুতাঃ। হন্য শ্চিত্তরুজোথ मर्मू तमला जाका भरताली भरः পথ্যা পর্ণট রাজবৃক্ষ কটুকা শদু-कशूनाः गृषाः ॥ गृष्तीका जाका । মৎস্যাশকলা কটুকা। আরে-বভঃ আর্থধঃ। রামসেনকঃকি-

রাভবিক্তক্যা রক্তঃ পর্গ টকঃা क्राकीचनः शक्तानः॥ जयस्मार्गाः खत मोरा नर्भुत्रनका मध्कशनी । मा ठ खार्था जामी नक्षिष्ठी ला-প্ৰশান তথাপ্যত্ৰ ত্ৰান্দী গ্ৰাহ্ণ। ষত উক্ত॰ গুণগ্ৰন্থে। ব্ৰাশ্বী মতি-প্রদা মেখ্যা ত্বরহন্ত্রী রসাযনীতি ে বাদী বরম্ভী ইতি লোকে। পষঃ বালক । রাজবৃক্ষ আরথধঃ ा अधुकभूकी मध्यभूकी ॥ 🛊 ॥ व्यव कर्वकमा हिकि भा।। अतन পঃ সমস্ত নষ্ত্যক্স মেকঃ সমৃত্রি ক্ত শোথক বক্তাবসেকঃ। বিপ-ৰুঞ্ শস্ত্ৰক্ৰিষা পৃষজিৎসা ত্ৰণন্থ গভঞ্চ ক্ৰভ ভচ্চিকিৎসা।। অয-मर्थः। जन्नः छः कर्नकः এकः श्र-লেপঃ অস্ত নাশ নষতি। তচ্চি-किৎमा जनिकिৎमा ॥ निभा दिनालायय यानियन पानीनूपी मृम्क्रः अत्मभः। প্রভাকর 'ক্মীরযুত প্রভাবাদ্যন্তঃ সমস্তো ২প্যথ কর্ণকন্নঃ।। সলত্বঃ কট্ফ-ল ভণ্ডী কারবী চ শমাণশকৈঃ। मृत्थारेक व्लिभनः काद्यः कर्भम्-ल यूक्ष्यश्र रेगब्रिक कठिनी एकी किएकदिनः मदरिनः भरेकः। উক্তঃ কাঞ্চিক সংগিটেডঃ প্রচেন-

भाः कर्वम्भिन्दं ॥ भिशु द्रांक्कि (याः निष्णे। कर्णमून शतनं भरवं । कर्नमूमाध्यम् लि।ष् एष्टमः ल-পেন শাসাভি ৷ অশিশিরজ-लभित्रम्भिक मूर्तिक क्या कीत সিশ্বৃজ্ঞ ছব্নিডা নস্যবিধি সে विष्ठः नम् कर्वक्रक् नामक्रका-দিতা।। ভাগী জ্বাপেছর ক ণ্টকারী কটুজিকোগ্রা ঘন স্বত্ত-नीजिः। क्लीत्रम्की करूका त-माजिः इन्छः कषायः किल कर्न-কন্নঃ।। ভাগী বভনেটী ইতি লোকে৷ তদলাভে কণ্টকারীমৃ-व शाइ । ज्या भनियात दे লোকে। পৌষর পুষরমূল। উত্তা বচা। সপ্তলী শুডুচী। সলী-त्रगृत्री कर्क हे मृत्री। तेमा तात्रा ॥ मनमूल मध्नानकना ठनना **बिकना मरहोयि किताल्यूङ ।** মরিচ• পরিক্ষথিত মাশু বলাদপ-रिंख कर्नक क्रकः नकना ॥ ठ-गमा गिक्षमी ।। 🐠।। जथ कर्छ-পজাগা চিকিৎসা। ফলত্রিক ত্রা-य भू खकंषि किन्न निःशनन শৰ্বরীভিঃ। কাথঃ ক্রভঃ ক্রন্ততি কণ্ঠপঞ্জ কণ্ঠীরবঃ পঞ্চর মাশু ষৰ্ভ ॥, সি'হাননো বাসকঃ।

শৰ্বরী হরিজা।। কিরাত কটুকা कना घटें करू करू का ती नहीं क निक किनिंगां उसा कं रूक करें-क्लारखाभरेतः। विषायनक शू-कतानल ललीत्रभृत्री वृरेष र्थः হৌষধসথৈ রষ জবতি কণ্ঠ-জন্ত গণঃ।। শটী কর্চ্চরঃ। কলি-দ্রঃ বিভীতকঃ। কিলিম দে-वनाकः। करूकः महिष्ठः। विया অতিবিষা। পুৰুর পুৰুরমূল। বৃষঃ বাসকঃ। বৃষাদিভিঃ কি॰-विभिटेकेः भटहोत्रवन्तरभः भटहो-ষ্ধস্য স্থিভিঃ। তেন এতৈঃ সহিতেন মহৌষধেন ইত্যর্থঃ ॥ 🛊 ॥ जर्थाचन वाजानि अवृ-क्ष यश कीन वाठामि रहजूका-না॰ সম্ভীপাকাদিসমিপাতস্থ-রাণা ত্রযোদশানা চিকিৎ-माजिशीयल्थ। मा ह जूनारहजू-काना॰ विकृतकामीना॰ बरमा-में मानाभिव विशालका । সন্মিপাতস্বরাধিকারঃ। ভাবপ্রকাশঃ ৷৷ সন্ধিপাতনুৎ পু॰ নেপালনিয়ঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। मित्रकः जि मगाक्तक्षनयुकः।

সং নি পূৰ্ব বন্ধ ধাতোঃ কৰ্মণি

ক্ত প্রত্যবেন নিশামঃ ৷৷ निवन्द्रन की नगाष्ट्रिकिंड-वक्षनः॥ मगाग्विवक्षनः। ज॰ নি পূৰ্বক বন্ধধাতো রনট্ প্রভ্য-ষেন নিষ্পন্ন ।। সমিভঃ ত্রি সদৃশঃ। ইতি জটা-श्रद्धः ॥ সন্নিবিষ্টঃ ত্রি উপবিষ্টঃ। যথা। ধ্যেষঃ সদা সবিত্যগুলমধ্যব-ভী নারাযণঃ সরসিজাসনসন্মি-ৰিষ্টঃ। কেযুরবান্কনকঙ্গণ্ড-नवान् कित्रीष्ठें शती श्तिश्यव-পু ধৃ তশখ্চক্রঃ।। ইত্যানিত্য-श्रमयं ।। निकिं। ইতিকেচিৎ।। निषवृद्धिः खी नगा ध्निवर्छन । স• নি পূৰ্ৰ বৃতধাতোঃ ক্তি প্ৰ-ত্যবেন নিষ্পন্ন। ॥ সন্ধিবেশঃ পুণ পত্তনাদিযুদিগা-मिशतिष्ठिम्थान**ः ॥ शृ**र्विन-गामाविष्ट्रमगृरः। ইতি,कलिञ्रः ॥ পুরাদে বহিবিহরণভূমিঃ। ইতি স্বাম্যাদ্যঃ। তৎপর্যায়ঃ । নিকর্ষণ ২। ইত্যমরভরতৌ।। किशः। नगतामिविधः देशत वि-হারচারুভূমিষু। তত্র দ্ব নি-गिष्ठि॰ निम्निय्युत्मा निक्र्यन्।।। ইতি শব্দরত্নাবলী॥

সমিহিত জি নিকট । বখা ।।।

বক্ষপুরাণে । বঠাদো ক্লফ
পক্ষেতৃভূমো সমিহিতা ভবেৎ
। বাবৎ পুণ্য মমাবাস্যাণ দিনানি দশপঞ্চ চ ।। ইতি প্রায়শ্চিভতরণ ।।

সন্ধ্যন্তঃ ত্রি সম্যন্ত্ন্যাসীক্তঃ।
সমর্পিতঃ। যথা। যোগসন্ধান্তকর্মাণ জ্ঞানসংচ্ছিন্নসংশ্যং।
আত্মবন্তং ন কর্মাণি নিবন্ধন্তি
ধনঞ্জয়। ইতিভগবদগীতাযাং
৪ অধ্যায়ঃ।

नन्नामः शृ कि नागिन्मे। ইতি
भक्त जिका ॥ कामाक्यांणः
नामः। यथा। कामाक्यांणः
नामः। यथा। कामानः क्रव्यां
विष्टः। मर्वक्यांक्वाणागः आह् खानः विष्टक्याः॥ ইতি জी-खानः विष्टक्याः॥ ইতি জी-खानः विष्टक्याः॥ ইতি জी-खानः विष्टक्याः॥ इति क्यांचाः॥ खानः । मन्नामः क्यांणः नाम-वाक्यां । क्यांमः क्यांणः नाम खेठाट् ॥ ইতি माष्ट्रमा १२० खायायः । क्यां । प्रविम्ह्याः। ज-माञ्चयायां यथा। मर्वम्ह्याः। ज-णात्मा वक्षां । प्रविम्ह्याः। जि-टात्मा वक्षां मानास्म देनक्यान

বসতি শিচরণ ৷৷ অনারস্ত তথা-शांत्र जिन्ने वित्थ श्रानिमर्छ। আত্মজ্ঞান বিবেকণ্ট তথা হা-श्रावदवारमः।। ठजूटर्भ ठाखान ধৰ্মো হম্মাভি ত্তে প্ৰকীৰ্ত্তিতঃ ৷৷ रें विवास ३८ व्यक्तावः ॥ 🗱॥ छमाञ्चमकानामि स्था। अव॰ व-না শ্ৰমে বিশ্বা ভৃতীয় ভাগ মাযু-यः। हजूर्भ नानूरवा जागः नम्। रमन नरम् कमाया अभीना-ত্মনি সংখ্যাপ্য দিজঃ প্রব্রজিতো ভবেৎ। যোগাজ্যাসরতঃ শাস্তো जनविमार्शितायण्डे । यमा मनि সম্পন্ন বৈত্যা সৰ্বস্তুষ্। তদ। সন্ম্যাস মিচ্ছেত্রু পতিতঃ স্যাদ্বি-পর্যাষে ৷৷ প্রাঞ্জাপত্যামিরুপ্যে-कि गारायी गथ वा पूनः। माछः প্ৰক্ষাখোসৌ বন্ধাশ্ৰম মুগা-শ্রবেৎ ॥ ইতি কৌর্মে উপরি ভাগে ২৭ অখ্যাयः ॥ ●॥ करनी ক্ষল্রিয়-বৈশ্যবোঃ সন্ম্যাস নিষে-(श वर्था। जन्मरमर गवानसः मन्त्रामः भनदेशकृकः। दावदत्र সুতোৎপত্তি॰ কলৌ পঞ্চ বিবৰ্জ্জ-(य९॥ ইতি कलो मम्रामिन-(यथक॰ कालिय देवना विश्यक॰। ইতি মলমাসতত্ত্ব ।। সন্ন্যাস প্র-

मभागी

তিষেধশ্চ কলো কল্ৰ বিশো ভ त्र । ইতি मनगामञ्ज्याञ् জ্ঞায়াণ প্রীরযুনন্দনভটাচার্য্যঃ ॥ # ॥ टेठजुमाटम मह्यामकृत्व-श्रमान स्था। देव्रत्व मिरवाद-সবং স্ব্যাৎ নৃত্য গীত মহোৎ-সবৈঃ। সাধাৎ ত্রিসদ্ধা রাত্রো চ হবিষ্যাশী জিতেন্দ্রিয়ঃ ৷৷ শি-বস্বৰপতা শাতি শিবপ্ৰীতি-क्दः शदः। कल्यिमानिषु या মর্ত্যো দেহ সংপীড্য ভক্তিতঃ ৷৷ অশ্বমেধফল তদ্য জাষতে চ পদে পদে সর্বকর্মপরিত্যা-शी निरवादमवनद्वायनः ॥ ভ रेक ब्लागतन क्रमाजाको न् ত্য সভূহলৈঃ। নানাবিধৈ শ श्वादेषा म् देखा क विविदेश রপি ৷৷ নানাবেশধরৈ মৃ তৈত্যঃ প্রীষত্তে শঙ্করপ্রভুঃ। কি মলভ্য॰ ভগবতি প্রসমে নীললোহিতে ৷৷ তক্ষাৎ সৰ্বপ্ৰৰত্নেন তোষণী-ষো মহেশ্বরঃ। শহ্ববাদ্যণ শহ্ব-তোষণ বৰ্জ্জবৈৎ শিবসন্নিধী।। আমাদ্বহি রিমণ শক্তো রুৎসবণ কারযেমুদা। উপোষ্য হন্বা সং-॥ ক্রাস্ত্যাণ বত মেতৎ সমাপয়েৎ ৷৷ ইতি বৃহদ্ধর্মপুরাণে উত্তরখ-

(७ > व्यगायः॥

मन्त्रामी पू• मन्त्रामा अविभि-सः। ठजूर्वाञ्यमी। जद्यमायः । পারাশরী ২ মক্ষরী ৩ পরি-বাট্ ৪ কৰ্মন্দী ৫ শ্ৰমণঃ ৬ ভি-ক্ষু: १। ইতি জটাধর: ।। তস্য वक्तभानि यथा। **मर्ब॰ गृशानिक॰** ত্যক্ত্বা মুগুতমুগ্রো গৈরিক-কৌপীনাচ্ছাদন দণ্ড কম্ও-লুঞ্চ বিভূৎ ভিকাবৃত্তি নিৰ্জ্জনে তীৰ্থে বা স্থনা কেবল মীশ্বর 1-রাধন করোতি যঃ স সম্যাসী । म जू ठजूर्बियः। ऋगैठदः ১ বহুদকঃ ২ হংসঃ ৩ পরমহংসঃ ৪ । তेमा धर्माः यथा। मनस्य वा कमरम वा लारखु वा काश्रत তথা। সমবুদ্ধি র্যস্য শশ্বৎ স স-मानीि कीर्खिजः॥ मखः क-মণ্ডলু• রক্তবস্ত্রমাত্রঞ্চ ধারষেৎ৷ নিত্য প্রবাসী নৈকত্র স সন্ম্যা-সীতি কীর্ত্তিতঃ॥ শুদ্ধাচারদ্বি-জানঞ্ ভুঙ্কে লোভাদিবজ্জিতঃ । কিন্তু কিঞ্চিম যাচেত স সন্যা-সীতি কীর্ত্তিতঃ। ন ব্যাপারী নাশ্ৰমী চ সৰ্বকৰ্মবিবজ্জিতঃ । शार्यमातायन नम्बद म मम्रा-

बन्नाती मञ्जाषामाण विक्रिं ७:। সর্বণ ব্রহ্মময়ণ পশ্যেৎস সম্যাসী-তি কীৰ্ত্তিতঃ।। সৰ্বত্ৰ সমবৃদ্ধি শ্চ হিংসা মাষা বিবজ্জিতঃ ৷ ক্রোধা-হন্ধার রহিতঃ স সন্ন্যাসীতি কী-র্ত্তিতঃ।। অষাচিতোপস্থিতঞ্চ মি ফামিউঞ্জুক্তবান্। নুযাচেত ভক্ষণাৰ্থী স সম্যাসীতি কীৰ্ত্তিতঃ ।। ন চ পশ্যেৎ মুখ জ্বীণা ন তি-छिख भगील छः। मात्रवी मिल বোষাঞ্চ ন স্প্রাশেদ্যঃ সু ভিক্তৃকঃ ।। অয় সন্যাসিনা ধর্ম ইত্যাহ कमरमाख्यः। ইতি बन्धरिवदर्छ-প্রকৃতিখণ্ডে ৩৩ অধ্যায়ঃ ।। 🟶 💵 অপি চ। সর্বন্যাসো হরৌ ভূপ थर्माः मम्मामिना अवः । द्रोक्के-বাসা দণ্ডী চ বিভর্ত্তি মৃৎকম-खन्।। मर्वज मममभी ह न्यद्र-মারাষণ সদা। করোতি ভু-**মণ**° নিত্য॰ গেহে গেহে ন তিষ্ঠ-তি।। বিদ্যা মন্ত্রঞ্চ কল্মৈচিৎ ন দদাতি চ দৈবত । করোতি না-শ্রমণ ভিক্ষু করোতি নান্যবাস-ना ।। करत्राि नानामकक नि र्ष्यारः मनविर्द्धिकः। न नामू जू ५ रेप वाक जी मूथ न हि ११-শ্যতি॥ ন বাঞ্ছিত ভক্ষ্যবস্তু যা-

চতে গৃহিণ বভী। ইতি সন্মা-সিনাণ ধর্ম নিত্যাহ কমলোন্ডবঃ ।। ইতি बन्नरेवदर्ख श्रीक्षरूक्य-थट७ ৫२ अशायः ॥ 🛊 ॥ अनाक । তপদা কৰিতে। ২তার্থ যস্ত ধ্যানপরো ভবেৎ। সন্ম্যাসীহ্ স বিজ্ঞেয়ে বানপ্রস্থাশ্রমে স্থিতঃ॥ যোগাভ্যাসরতো নিত্য মারুরুকু ব্জিতেন্দ্রিয়:। জ্ঞানায় বর্ত্ততে ভিক্ষু: প্রোচ্যতে পারমেষ্টিক: ॥ যস্তামরতি রেব স্যামিত্যতৃপ্তো মহামুনিঃ। সম্তক্ চ দমসম্পন্ধঃ স যোগী ভিক্ষু রুচ্যতে ॥ ভৈক্ষ্য• শ্রুতঞ্চ মৌনিত্বণ তপো ধ্যানণ বি-শেষতঃ। সম্যক্চ জ্ঞান বৈরা-গ্য॰ ধর্মো ২য॰ ভিক্সকে মতঃ।। জ্ঞানসন্ম্যাসিনঃ কেচিৎ বেদস-म्यानित्ना १ शद्र । कर्यं नम्यानि-নঃ কেচিৎ ত্রিবিধঃ পারমেষ্ঠিকঃ ॥ ৰোগী চ ত্ৰিবিধাে জ্ৰেষাে ভৌতিকো মোক এব চ। তৃতী-ষো ২ন্ত্যাশ্রমী প্রোক্তো ষোগ-সূর্ত্তি সমাশ্রিতঃ॥ প্রথমা ভাবনা পূর্বে মোকে দকরভাবনা। তৃ-তীষে চান্তিমা প্রোক্তা ভাবনা পারমেশ্বরী ॥ যতীনা• যতচি-ত্তানা॰ ন্যাসিনা মূর্দ্ধুরেতসা॰ ।

আনন্দ বন্ধ তৎ সান বন্ধার। বৰ্ত্বতে মুনিঃ।। ষোগিনা মমৃত॰ क्रान (बार्माचा शत सकत । আনন্দ দৈশর শুসামূক্তো না-व र्खट नदः ॥ देखि गाक्रट ४৯ ज्यायः ॥ ।। जनत्रः। छान-সন্যাসিদঃ কেচিছেদসন্মাসিনো २ शद्धाः कर्षामगामिन खुत्ना जिविधाः भतिकीर्क्जाः॥ सः म र्वमङ्गिर्म् एका निषमु काशि नि र्च सः। ध्याहार छ। नमसामी স্বাত্মন্যেৰ ব্যৰস্থিতঃ।। বেদ মে-ৰাভ্যমেমিভ্য নিরাশী নিপারি-এহঃ ৷ প্রোচ্যতে বেদসম্যাসী मुम्कृ विकिष्ठिक्षका। य ख्री-নাত্মসাৎ ক্ৰম্বা বন্ধাৰ্পণপৱে ছি-**जः। (छारः मः कर्णमग्रामी मः** श्यख्यश्रदायगः॥ ज्याना मि টৈতেয়া[•] জানী স্বভ্যধিকো মতঃ । ন তদ্য বিদ্যুতে কর্মান লিছ।-मा दिशिक्षकः॥ निर्मासा निर्ज यः भारका निर्देगः भर्गछाजनः । कीर्गटकोशीनवागाः मामद्या वा शानकक्षत्रः॥ जनात्री मि তাহারো আমানান সমাহরে । অধ্যাত্মরতি রাসীত নিরপেকো नितानियः ॥ जाजादैनव महात्यन

यर्गार्थः विष्ठत्विमिश् यर्गार्थं मि-ত্যত্র সুখার্থ মিভিচ পাঠঃ। না-ভিনন্দেত মরণ নাভিনন্দেত জী-বিত ৷ কাল মেব প্রতীক্ষেত निर्मण ভৃতকো यथा। नारधा-তব্য ন বক্তব্য ন শ্রোতব্য ক্ माठन।। এব॰ জ্ঞाনপরো যোগী ব্ৰহ্মভূযাৰ কল্পতে। একবাসোথ वा विदान् कोशीनाच्छामतनाथ वा।। मुखः मिथी वाथ ভবেৎ ত্রিদণ্ডী নিষ্পরিগ্রহঃ। কাষা-ষ্বাসাঃ সতত ধ্যানযোগপরা-यनः ॥ वामार्छ वृक्षमृतन वा कामः प्रवालप्यिन वा। नमः भः ত্রো তথা মিত্রে তথা মানাপমা-नरमाः ।। टिज्राक्तन वर्जरमिकाः নৈকান্নাদী ভবেৎ ক্বচিৎ। যস্ত মোহেন চানाসাদেকামাদী ভ-বেদ্বদি॥ ন তৃদ্য নিষ্কৃতিঃ কা-চিদ্ধর্মশান্ত্রেষ্ কথ্যতে । রাগ দেষ বিমুক্তাত্ম সমলোফুলখ-काक्षनः॥ आनिहि जानिवृद्ध म योनी मा। भर्वनिष्णृ रः। पृषि-পত॰ ন্যাসেৎ পাদ॰ বস্ত্রপত॰ জ-में भिरवः।। मंज्यभू जा॰ वेरमधा-गी॰ मनःशृंज• नमाहदत्र । रेनक-ত্র নিবসেদৈশে বর্ষাভ্যো খন্যত্র

ভিক্ষুকঃ ৷৷ স্নান শৌচরতো নি-ত্যে কমঙলুকরঃ শুচিঃ। ব্রহ্ম-ষজ্ঞরতো নিত্যু বন্বাসরতো ভবেৎ ৷ মোকশাস্ত্রেষু নিরতো वक्षमृती फिएल्सियः। मसार-ক্ষার নির্ম্মুক্তো নিন্দা পৈশুন্যব-জ্জিতঃ।। আত্মজ্ঞান গুণোপে-তো যতি ৰ্মোক্ষ মবাপুষাৎ। 🗱। অভ্যসেৎ সতত বেদ প্রণবা-খ্যুণ সনাভনণ ৷৷ স্নাদ্বাচম্য বিধা-त्नन श्रुष्ठि (र्फ्तवालया जियु । य-জ্ঞোপবীতী শাস্তাত্মা সশপাণিঃ সমাহিতঃ৷৷ ধৌতকাষাযবসনো ভস্মচ্ছন্নতনূরুহঃ। অধিষজ্ঞণ বন্ধ জপেদাধিদৈবিক সেব চ ॥ ञा-ধ্যাত্মিকঞ্চ সতত বেদাস্তাভিম-তঞ্যৎ। পুত্রেষু বাথ নিবসন্ ব্ৰন্মচারী যতি শ্বুনিঃ॥ বেদমেব।-ভ্যেসেমিত্য॰ স যাতি পরমাণ গতি• ৷ অহি 'সা সত্য মস্তেয়ণ ব্ৰহ্মচৰ্য্যণ তপঃ পর ।। ক্ষমা দয়া চ সস্তো-যো ব্ৰতান্যস্য বিশেষতঃ। বেদা-ख ब्हान निर्छ। वा शक्ष ब्हान् म मारिजः॥ अर्यामस्तरः नाषा ভৈক্ষাক্ষেনৈব তেন হি। হোম-মন্ত্ৰান জপেমিত্যং কালে কালে मगाहि ७३ ।। वाधाय हान्न इ॰ इ-

ৰ্য্যাৎ সাবিত্ৰী সন্ধ্যযো জ্ৰ্জপেৎ ৷ ধ্যায়ীত সতত দেব মেঝান্তে পর্মেশ্বরণ।। একান্নণ বর্জ্জবৈন্ধি-ত্য• কাম• ক্রোধ• পরিগ্রহ•। এ-কবাসা দ্বিবাসা বা শিখী যজে৷-পবীতবান্।৷ কমওলুকরো বি-দাণস্ত্ৰদণ্ডী যাতি তৎপদণ। ইতি কৌর্মে উপরিভাগে ২৭ অধ্যায়ঃ ।। 🟶 ।। ব্যাস উবাচ। এতত্ত্বাশ্রম-নিষ্ঠানা ষভীনা নিযতাত্মনা । **তৈকেণ বৰ্ত্তন• প্ৰোক্ত**° ফল মৃ-লৈ রথাপি বা।। এককাল চ-রেক্তৈক্ষণ ন প্রসজ্যেত বিস্তরে। ভৈক্ষে প্ৰসক্তে। হি যতি ৰ্ৰিষয়ে-স্থপি সজ্জতি।। সপ্তাগার চরে ক্তৈক্ষ মলাতে দ্বে পুনশ্চরেৎ। প্রকাল্য পাত্রে ভূঞীযাদন্তিঃ প্র-कानरमञ्जू ७९॥ अथ वानामूर्याः দাষ পাত্ৰ ভঞ্জীত নিতাশঃ। ভূজা চ সন্ত্যজেৎ পাত্ৰ- যাত্ৰা-गांक गत्नानुभेः ॥ विश्रू मन यूयल वाकारत जुक्कवकारन । বৃত্তে শরাবসংগাতে ভিক্ষাণ নি-ত্য• ষতি শ্চরেৎ।। গোদোহ-মাত্রণ তিপ্তেত কালণ ভিক্ষু রধো-মুখঃ। ভিক্কেত্যুক্তা সক্কন্ত্ৰী ম-श्रीयाचा युठः श्रुठिः ॥ श्रकाला

পাनि পাদৌ চ मगौठमा स्थाविधि । আদিতো দশ্যিত্বান্ধণ ভূঞীত প্রাজ্যুথো ২ন্বরঃ ৷৷ হন্বা প্রাণাহ তীঃ পঞ্চ আসানকৌ সমাহিতঃ ৷ আচম্য দেব বন্ধাণ ধ্যাযীত পরমেশ্বর ।। অব্লাবু দারুপা-वक मृत्रयः देवनवः छथा। हजाति ষতিপাত্রাণি মনু রাহ প্রজাপ-তিঃ ৷৷ প্রদোষে পররাত্তে চ মধ্য-রাত্রে তথৈব চ। সন্ধ্যাস্বত্নি বি-শেষেণ চিন্তবেন্ধিত্য মীশ্বর্রণ।। ক্রত্বা হৃৎপদ্মনিলযে বিশ্বাখ্য বি-শ্বসম্ভবণ আত্মানণ সৰ্বভূতানাণ পর্ত্বাত্তমসঃ স্থিত ৷৷ সর্বস্যা-ধার মব্যক্ত মানস্দ জ্যোতি র ব্যয়ণ প্রধানপুরুষাতীত মাকা-भः पर्नः भवः ॥ छपछः मर्दछ। वाना मोभन्न जनकशिषः। धा-रिष्मापि भटेष्ठ यानन्पापिश्वना-লয় ।৷ মহান্ত পরম বন্ধ পুরুষ সত্য মব্যষ । সিতেতরারুণাকা-র মহেশ বিশ্বৰূপিণ ৷৷ ওঙ্কা-রান্তে ২থ বাত্মান সংস্থাপ্য পর-মাত্মনি। আকাশে দেব মীশানং ধ্যাষীতাকাশ মব্যষ ।। কারণ সর্বভূতানা মানক্ষেকসমাঞ্রয় । পুরাণ-পুরুষ-শস্তু- ধ্যাষশুচ্যেত

বন্ধনাৎ ৷৷ যদ্বা গুহাষা প্রক্রতৌ জগৎ সম্মোহনালযে। विচিন্ত্য পরমণ ব্যোম সর্বভূতৈককারণ।।। জীবনং সৰ্বভূতানাং যত্ৰ লোকঃ প্রলীয়তে। আনন্দ ব্রহ্মণঃ সূদ্ধ ষৎ পশ্যন্তি মুমুক্ষবঃ।। তন্মধ্যে নিহিত ব্ৰহ্ম কেবল জ্ঞানলক্ষ-ণণা অনন্তণ সত্য মীশানণ বিচি-ख्यांनीठ मःगठः ॥ श्र्वाम्श्रयः তমণ জ্ঞানণ যতীনা মেতদীরিতণ । যো ২নুতিষ্ঠেত সতত সোশু-তে যোগমীশ্বরণ।৷ তস্মাৎ ধ্যান-রতো নিত্য মাত্মবিদ্যাপরাষণঃ ৷ জ্ঞান॰ সমভ্যসেদ্ধান্ধ্য়ণ মুচ্যে-মাত্মান॰ সৰ্ক্সাদেব কেবল॰ । **जानन्म मक्कत्रः** ख्वानः ध्यायीज চ পুনঃ পরে ৷৷ ষম্মান্তবন্তি ভূতানি ষদাত্বা নেহ জাষতে। স তন্মা-দীশ্বরো দেবঃ পরস্তাদেয়া হধিতি-ষ্ঠতি।। যদন্তরে তদাগন শাশ্ব-ত শিব মব্যষ । ধমাহ তত্প-রো यञ्ज म দেবঃ म्यान्यद्रश्वतः॥ ব্রতানি যানি ভিক্তৃণা তথৈবো-প্রতানি চ। একৈকাতিক্রমে তেষা॰ প্ৰাৰশ্চিত্ত• বিধীয়তে ॥ উপেত্য চ ব্ৰিষণ কামাৎ প্ৰাষ্-

শ্চিত্ত সমাহিতঃ। প্রাণাযামস-মাযুক্তণ স্বর্যাৎ সান্তপন শুটিঃ ।। তত भारते नियमान् इष्यान् সংৰতমানসঃ। পুন রাশ্রম মাগ-ত্য চরেন্ডিকুরভন্সিতঃ॥ ন নর্ম-युक्त मन्छ हिनछीछ मनीविनः । उपाणि न ए कर्डवाः क्षान्या ह्य मोक्रमः।। अक्त्राद्वा भवाग-**म्ह श्रानायायगण उपा। उ**क्ता-कार्या । खिवाम-ভাধিকঃ কশ্চিৎ নান্তাধর্ম ইতি স্মৃতিঃ।। হি॰সা চৈষা পরা তৃষ্ণা या जाषाखाननानिका। यदम्छ-**मृ**ति• नाम প्राना एउ जू वहि-শ্চরাং ।। স তস্য হরতে প্রাণান্ रया यमा इत्रष्ट थनः। এবः क्रवा न मुक्ताका जिन्नवृहता वकत्रुकः া ভূষো নির্বেদ মাপন্ন শ্চরেচ্চা-**ट्यायग॰ बठ॰ । विधिना भाञ्ज-**দৃষ্টেন সম্বৎসর মিতি শ্রুতি: ॥ जूरमा निर्दिम माशम करत्रिक् রভব্রিতঃ। অকন্মাদপি হিংসান্ত यि जिन्दुः मभावत्त्र ।। अर्था ६ ক্লুতিক্ছুত্ত চাজাৰণ মথা-शिवा। ऋरमििक्षियरमोर्बना।

স্ত্রিय॰ দৃফ্বী যতি র্যদি॥ তেন ধার্ষিত্ব্যা বৈ প্রণাষামাল্ত ষো-ডশ। দিবা স্বপ্নে ত্রিরাত্রণ স্যাৎ व्यागायामन्छ छथा।। अकारम मधूमारम ह मर्याटक उटेश्व ह । अग्रक्तर्भ कु छ आजा-भेड़ाः विकासके । साम निष्ठेगा गण्ड मिन्द्रिक निकाणक च मामहर भेरी चरा है। जेगा हो। नवर्रा छर्दार्थ शि वस्त्र गद्रभः क्यांकिः अविशेषिय सक्य । रग २ छत्राची शत्र बन्न म विटख-(स) मटर्यंतः ॥ अव (मटन मर्।-(क्वः क्विनाः भन्नरभगनः। मियाक्य मरेष्ठ- जनामिजास्तर **गतः ॥ यद्माय यसीयट** एतरः স্বধায়ি জানস জ্ঞিতে। ৰোগাৰুৰে তত্ত্বে মহাদেব স্ততঃ मृष्डः ॥ नीनाः देवनः महादेवन ষ্যতিরিক্ত• প্রপশ্যতি। ত মে-বাত্মান মধেতি যং স বাতি পরণ **शन । मनाटेख द्व स्रमानान** বিভিন্ন পরমেশ্বরাৎ। ন তে পশ্যস্তি ত॰ দেব॰ বৃথা তেষাণ পরিশ্রমঃ ।। এক মেব পর॰ জন্ম विटब्डिंग छन्न भवायं। म त्मवन्त म्हार्टमर्द्या टैनछिब्छाय वशर्छ।।

তম্মাদ্যত্ত্বেন নিষতং যতিঃ সংয-তমানদঃ। জ্ঞানযোগরতঃ শা **ट्या महादात्रश्रदायगः।। এय** वः কিথিতো বিপ্রা মতীনা মাঞ্রমঃ खडः। शिकायरहन अजुना मू-नीनाः शुर्व मीडिकः॥ त शूख निश सानिएका स्वामित्र अन्-लगः। ज्ञानः त्रवर्षा त्याकः विवक्षाक्षमः विवः॥ देखि विक निसमाना (मङ्गू कः विशानः शः শুপতিপরিভাবে মন্তবেদেকছে-তুঃ। ন ভবছি পুন রেকা মৃত্তবো वा दिनामः श्रामित्रक्षमनमा स्व নিত্য মেৰাচরন্তি।। ইতি কৌর্মে উপরিভাগে ষতিধর্মো নাম ২৮ व्यथायः ॥ 🐠 ॥ यूत्रस्वरम् नन्।-সিনা নামানি উপাধ্যশ্চ যথা । আদৌ বেদাস্ভাচার্যেন বন্ধা। षिতীযাচার্যো বিষ্ণুঃ। ভৃতীযা-ठाट्या क्रकः। ठजूर्थानाट्या व-निर्वः । शक्याहार्याः मक्तिः । ষষ্ঠাচার্য্যঃ পরাশরঃ। সপ্তমাচা-র্ব্যো ব্যাস:। অফ্রমাচার্ব্য: শু-कः। नवमाहाद्या शोषः। मण-गाठार्या शाविषः। अकाषणः শক্ষরাচার্যাঃ। সত্যমুগমধ্যে আচাৰ্য্যত্তম্ব বন্ধ বিষ্ণু ৰুজাঃ।

ত্রেভাযুগে আচার্য্যত্রয় বশিষ্ঠ শক্তি পরাশরাঃ। দ্বাপরে আচা-र्याचय॰ वााम छाको। कनियुरम অচাৰ্য্যত্ৰৰ গৌড গোবিন্দ শ-করাচার্যাঃ। শকরাচার্যাস্য চ-হার: শিব্যাঃ স্বৰূপাচাৰ্য্যঃ পদ্মা-্চার্যঃ ভোটকাচার্যঃ পৃথীবরা-कार्य देखि॥का। जल मुगनामानि । यबनाहादामा लियाः छीपः चा-্ৰাসশ্চ। পদ্মাচাৰ্যাস্য শিষ্যত্ব॰ বনঃ অরগ্যশ্চ। ত্রোটকাচার্য্য-স্য শিষ্যত্ত্ৰষণ গিরি পর্বত সাগরা ইতি। পৃথীধরাচার্য্যস্য শিষ্যত্র-ৰ-। সরস্বতী ভারতী পুরী চেতি । ইতি **শ্রীশঙ্ক**রাচার্য্যবিরচিত• সপ্তমসূত্র ।। 🟶 ।। অপি চ। তী-থাশ্ৰম ৰনারণ্য গিরি পর্বত সা-গরাঃ। সরস্বতী ভারতী চ পুরী-তি দশ কীৰ্ত্তিতাঃ ৷ তেষাণ লক্ষ-ণানি যথা। ত্রিবেণী সঙ্গমে তীর্থে তত্ত্বসদ্যদি লক্ষণে। স্নাষাত্তত্ত্বা-র্থভাবেন তীর্থনামা স উচ্যতে ॥ ১॥ আশ্রমগ্রহণে প্রৌঢ আ-শাপাশবিবর্জিতঃ ৷ যাতায়াত विनिम्क এতদা अमलकन ॥ २॥ मूत्रया निर्यादत एएटम वटन-ৰাসণ করোতি যঃ। আশাপাশ

বিনিমুক্তো বননামা স উচ্যতে ॥ ৩॥ অরণ্যে সংস্থিতো নিভ্য শানন্দনন্দনে বনে। ত্যক্ত্ৰা সর্ব-भिनः विश्व भानमनकनः किल ॥ ৪য় বাসো গিরিবরে নিত্যু গী-তাভ্যাসে হি তৎপরঃ। গন্তীরা চলবৃদ্ধিশ্চ গিরিনামাস উচ্যতে য় ৫ ।। বসেৎ পর্বতমূলেষু প্রে-ঢো যো ধ্যান ধারণাৎ। সারাৎ সার বিজানাতি পর্বতঃ পরিকী-র্ত্তিতঃ ॥ ৬ ॥ বদেৎ সাগর গম্ভী-রো বনরত্ন পরিগ্রহঃ। মর্য্যাদা-শ্চ ন নজ্বেত সামরঃ পরিকীর্ত্তি-ভঃ॥৭॥ স্বরজ্ঞানবশো নিত্য यत्रवामी कवीत्रकः। मःनात्रनाग-রে সারাভিজ্ঞো যোহি সরস্বতী ११ ৮॥ विमाञात्त्रव मन्भूर्वः म-ৰ্বভার•পরিভ্যক্তেৎ। দুঃখভার• ন জানাতি ভারতী পরিকীর্ত্তি-তঃ ॥ ৯॥ জ্ঞানতত্ত্বেন সম্পূর্ণঃ পূर्वञ्चलाम ख्रिञ्ः। लाम बन्न-রতো নিত্য॰ পুরীনাষা স উচ্য-তে ॥ ५० ॥ हेि वृश्क्ष्कद्रिव-कत्य विमान्नगयाभिशृष्ट ॥ 🛊 ॥ শ্রীসদাশিব উবাচ। অবধৃতা-শ্রেনো দেবি কলো সন্মাস উচ্য-তে। বিধিনা ষেন কর্ত্তব্যু ছৎ-

मर्बः भृगू माम्भुष्ठः ॥ बन्नाकारम সমুৎপক্ষে বিরতে স্বর্গকর্মাণি ৷ व्यथा श्रविमानि श्रवः সন্মাসা-ध्यम माठदत्र ॥ विश्व वृदक्षी পিতরৌ শিশু ভার্য্যা পতিত্র-তাং। তাজাসমর্থান্ বস্তুংশচ প্রব্রজন্মারকী ভবেৎ।। সম্পাদ্য গৃহকর্মাণি পরিতোষ্যাগমানপি । निर्मात्या निवसाकात्म्ह्रिका-त्या विकिष्ठिखियः॥ आवृष य-জনান্ বন্ধূন্ আমৃস্থান্ প্রতিবা-निनः। श्रीजान्यि यत्रिष्हिक् হাজ্জিগমিবু র্মরঃ।। তেষা মনুজ্ঞা মাদাৰ প্ৰশ্ন প্রদেবতা । আমণ अम्बिनीक्षण नित्रत्थाका गृश-मियार ॥ जूफिर मन्जात्रगाटेन र्यः পরমান শবৃ हिछः। जनावशृष्ठः जनाकः गना मः शार्थत्विमः ॥ गृश्वाद्य भन्न खन्नन् गरेमछिन গত বৰঃ। প্রসাদ করু যে নাথ সন্যাসগ্ৰহণ প্ৰতি।। নিবৃত্তগৃ-স্কর্মাণ বিচার্য্য বিধিবদ্গুরুঃ। শাস্ত বিবেকিন বীক্ষ্য দ্বিতীযা-শ্ৰম ৰাদিলৈৎ il ততঃ শিষ্যঃ ক্ল-তন্নাৰে। ৰতাত্মা বিহিতাহ্নিকঃ। ঋণত্রৰ বিমুক্তার্থণ দেবধীণ শ্চা-र्फर्यं शिष्ट्रन्।। स्तवा बना ह

বিষ্ণ রুজশ্চ স্বগণৈ সহ। **अययः जनकामा "ठावामा ५-**वर्षर खथा।। चा तय शिखदः शृ-জ্যা বক্ষ্যামি শৃণু তানপি। পিতা পিতামহদৈচৰ প্ৰপিতামহ এব চ ।। মাতা পিতামহী দেবি তথৈব প্রপিতামহী। মাতামহাদযো ২-প্যেব॰ মাতামহ্যাদযো ২পি চ।। প্রাচ্যা মৃষীন্ যজেদেবান্ দক্ষি-ণস্যা॰ পিতৃন্ যজেৎ। মাতা-মহান্ প্রতীচ্যান্ত পূজ্বেদ্যাস-কৰ্মণি।। পূৰাদি ক্রমতো দদ্যা-मामनानाः इषः इषः। त्मराः षीन् क्रमण खबावा**म् भूजाः** म गारुत्र ।। नम्क्रीविश्वरङ्गः शिखान् महा। श्रक् शृथक्। **शिख्यमानविविना मचा शिख**॰ যথাক্রমণ॥ ক্রতাঞ্চলিপুটো ভূষা প্রার্থবেৎ পিভূদেবতাঃ। ভূপ্যশ্ব॰ পিতরো দেবা দেবর্বি মাতৃকাগ-नाः॥ अनाजीजनात पृष मन्नी-अक्र का हिता । जान्ग मर्थि । षा जू अनग ह भूनःभूनः। सन वयविनिर्मुक मान्रशाक थक ब्रायर ॥ शिका सारेवार मर्ख्या॰ তৎপিতা প্রপিতামহঃ। আত্ম-न्यात्रार्थनार्थाय त्रद्यामात्राक्रियाः

সুধীঃ।। উত্তরাভিমুখো ভূদা পূ-ৰ্ববৎ কল্পিতাসনে। আবাহ্যাত্ম-**शिजून् (मित ममा) १ शिखः मयः** र्फरन्।। প্রাগগ্রান্ দক্ষিণাগ্রা॰ শ্চ পশ্চিমাগ্রান্ যথাক্রমাৎ। পি-खार्थ माखदाक्षर्जानू मगवान् सः কৰ্মণি ৷৷ সমাপ্য আদ্ধকৰ্মাণি গুরুদর্শিতবর্জন। মুমুক্ষু শিচত্ত-শুদ্ধার্থ মিমণ মন্ত্রণ শতণ জপেৎ ॥ হ্রী॰ ত্রাম্বক• যজামহে সুগন্ধি• পুষ্টিবৰ্দ্ধন । উৰ্বাৰুক মিববন্ধনা-মূত্যো মুক্ষীয় মা মৃতাৎ।। উপা-मनानुमादत्र विमाग्यल शूर्व-ক। সংস্থাপ্য কলসং তত্ত্ৰ গুৰুঃ পূজা॰ সমারভেৎ।। ততস্তু পরম-वक्ष शाषा भाष्ठ ववर्षना। विधा-ষ পূজা॰ ত্রন্ধজ্ঞো ত্রন্ধস্থাপন মা-চেৰে।। প্ৰাণ্ডক সংস্কৃতে বঙ্কৌ সকলোক্তাহতি শুরুঃ। দত্বা শি-ষ্য সমাভূষ সাকল্য ভাবষেত্ৰু छ ।। जातो गास्ठि हिंदा व्यानरहामः अकन्नरष् आर्गा श्लानः ज्यान (कालान वादनी চ বাষবং ৷৷ তত্ৰ হোম ততঃ স্ব-र्याटकहार मधाष्ट्रमुक्टर । शृथिवी मलिल बङ्कि वीयू दाकाण य्यव **छ ॥ शस्त्रा तमन्छ क्लन्ड न्लानं**ड

भारका क्योलगाव । करका गांगि भागान्ह गांगुगत्को छकः-भव-11 त्यांव- वक् नवन- जिला जाव वृक्षीसियानि ह। अलानि त्य शमार्ट्य ह स्वकारिय शम म्हार्ट-्रदार ॥ ड्री॰ ब्लांडि वरू विवासी विशास्त्रा ज्यामः विठ रेडालि । চতুৰি শতি তত্ত্বানি কৰ্মাণি বৈদি-'कानि ह।। एषायो निष्कृत्या हन-र मृठबिक खरबङ्यः। विভावा ্মৃতবৎকাৰণ রহিতণ সর্বকর্মণা।। শারন্ তৎ পরমণ বন্ধা যজ্ঞসূত্রণ ममूद्धादार। थे॰ क्वी॰ इ॰ ইতি मखেन ক্ষমাদুতাৰ্য্য তত্ত্ববিৎ।৷ ষজ্ঞসূত্ৰ• করে ধৃদ্বা পঠিদ্বা ব্যাহ্নতিত্রয় । বহ্নিজাষা সমুচ্চার্য্য ঘৃতাক্ত ম-নলে ক্ষিপেৎ।। হুদ্বৈব মুপবীতঞ্চ कामवीजः ममूक्तव्रन्। ছिषा भि-খা॰ করে রুদ্বা ঘৃতমধ্যে নিযোজ-ষেৎা৷ বন্ধপুত্রি শিখে ত্ব হি বাণী ৰূপা সনাতনী। দীষতে পাবকে স্থান• গচ্ছ দেবি নমে। ২স্ত তে।। কাম মাধা কৃষ্ঠমন্ত্ৰ বহিজাৰা म्मीत्ररवर्ः। निथा माञ्चिछा नि-**তরো দেবা দেবর্ষয় তথা।। সর্বা-**ণাশ্রমকর্মাণি নিবসন্তি শিখো-পরি। ততঃ সম্ভর্গ্য তাঃ সর্বা দে-

निक्रिक्षित्रात्ः न् विकास मा मण्डल AND PLAN ABOUT WILL ALL C. · ८७१ मू ङ मित्राम् अङ्ग्रेशः स्मित्रः । म् एक ।। एक क्याना छ निस मक्कटमं बरममियः। छक्त्रियः राधाख रंगः त्रा'र रं विভावर ॥ मिर्श्वरमा निद्रक्षांद्रः चलादन সুখ চর। ততো ঘটঞ বছিঞ বিসৃজ্য ব্ৰন্ধভত্তৰিৎ ৷৷ আত্মস্ব ৰূপ• ত• মন্ধা প্ৰাক্তমন্তিরসা গু-রু ৷ নম দ্বভা নমে মহ তুভা मक् नत्या सम्भा खरमव जनश মেৰ বিশ্বৰূপ নয়ে। ২স্ত তে। বন্ধন্ত্রোপাসকানা তত্ত্তানা জিতান্মনা । ধিষমদ্রেণ শিখাচ্ছে-माथ महाग्रियार्थ ज्या व मखान विश्वमानाः किः यरेखः আৰু পূজনৈঃ।। স্বেচ্ছাচারপ-রাণান্ত প্রভাবোৰো ন বিদ্যতে। ততো निर्मणुषारण श्रमो निषा-यः विद्वयानमः ॥ विर्मातमा विर्-त्र्धः नाकाबुक्रमरया जूवि । मृत्का विधि नित्वधान्ताः निः र्याग रकम जाजाविक। मूथ मुःथ-

अटमा शिक्षा मुख्य SE I. WARRING मृत्य बारके स्मिनिन्द्रा १० भ-मानमा । एकि सामका निर्दाण-**रका निवालका** के क्यारेक्ककः गाम्बीनानाः जन्न थानिहर्छ त्र ७३॥ तिशकायमधी मीट्यामिः-मक्टकाः निक्रमोत्रानः (स्थाकः स्वयः विमुक्तः माष्ट्रको नित्व मत्या **ভবেজ্য। भीक वस्वाज्यमहः** मत्मा मानाभमानत्याः । শুভাশ্বৰে ভূফো: বদৃচ্ছালাভ-वस्त्रना ।। निदेशक्षरका निर्विकरका निर्कां ७: महाज्यक्षी। यथाम-ত্য মুপাঞ্জিতা মৃষা বিশ্বং প্রতি-ঠতি।। **আত্মাঞ্জিভ ত**ংগ দেহে। कानत्त्रकः मूची छदवछ्। शैक्षिः गार्गाद अर्बेडि य॰ य॰ कर्म शृथक् शृथक्।। **आश्रा माकी विनिर्णि** <u>रक्षा काहेष्व सामन्याग् व्यव</u>् । ধাতুপ্রতিগ্রহণ নিন্দা মন্তণ জী-ডন জ্রিফা।। গ্রেভস্ত্যাগ মসূ-याक भन्तामी भद्रिवक्तरं क्। मे-र्बे नभमृष्धिः माण् कीटके देनदव ख्या नरत्।। **गर्बः बरक्षां छ**ानी-যাত্ পরিত্রাট্ সর্বকর্মসু। বিপ্রা-মং শ্বপচামং বা **ধন্মান্তন্মান্ত স**

माराज्याः तन्त्र साम् छन्। काम मंत्रीकामिकामका। व्यथा-चानाजागगरिनः मना छब्विहा-द्रोभिः।। अवशृष्ठा नरमञ्कालः বেছাচারপরাবণঃ। সন্মাসিনা॰ मृष्ठ॰ कांब॰ मास्ट्यन कमान्या। मःशृका भक्षमून्भारेका विश्वत-ৰান্সু মক্জষেত্। অপ্ৰাপ্তযোগ ষর্ত্যানা সদা কামাভিলাবিণা য় প্রভাবাজ্জাষতে দেবি প্রবৃ-ত্তিঃ কর্মসংঙ্গলে। অত্রাপি তে मानूत्रका धानाकी जनमाध्य া৷ শ্ৰেষ ন্তদেব জানন্ত ন্তবৈৰ **मृ** एनि क्याः । ज्ञाः कर्माविधाः নানি প্রোক্তানি চিত্তগুদ্ধবে ॥ নাম ৰূপে বছবিধণ তদৰ্থণ কল্পি-ভ মধা। বন্ধজ্ঞান বিনাদেবি কৰ্মস'নাসন' বিনা।। সৰ্বন্ ক-**শ্বশত॰ কৰ্ম্ম ন ভবেমুক্তিভাজ** नः। जनावश्व खब्खा जीव-মুক্তো নম্নাক্তিঃ।। সাকামারা[,] रनः मद्या गृहत्र छः अभूक्रास्ट्। ষতে দিশনমাত্রেণ বিমুক্তঃ সর্ব-পাতকাত্।। তীর্থ এত তপো দান **मर्वरखकल॰ लट**७७्। ইত্যবধূ-তাপ্ৰমঃ। ইতি মহানিৰ্বাণতন্ত্ৰে व्यक्टिमान्नामः ॥

সপত্ররতঃ পু• কতমৃগাদিঃ।। অত্যস্তশীডিতে ত্রি। ইতি কে-চিৎ ॥

সপদ্রাকরণ ক্লী অত্যস্তপীডন• । ইতি হলাযুধঃ।।

সপত্রাক্তঃ পু• ক্ষতমৃগাদিঃ।। অত্যন্তপীডিতে ত্রি।। ইতি কে চিৎ।।

সপত্রাক্তিঃ স্ত্রী অত্যন্তপীডন । তৎপর্য্যায়ঃ। নিষ্পত্রাক্তিঃ ২ । ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

সপত্ন: পু॰ শত্রু:। ইত্যমর:॥
সপত্মারি: পু॰ ব॰শবিশেষ:। বে
উডবাঁশ ইতি ভাষা। যথা।
ব্রহ্মষ্টি: সপত্মারি র্বহুসম্ভতি
রাশুপঃ। ইতিশ্বচন্দ্রিকা।।

जन महासा अजीजन । ইতি

मूर्जामा जः ॥ किविक साउप स्कि
न्यामि तकः ॥

সগন্ধী স্ত্রী সমানগতিকা। স তীন ইতি ভাষা। যথা। দেহি ত্রাভাবে সপদ্বীপুদ্রঃ। তস্য পুদ্রদ্ব স্মরণাৎ। যথা মনুঃ। সর্বাসা মেকপদ্বীনা মেকা চেৎ পুদ্রিণী ভবেৎ। সর্বা স্তা স্তেন পুদ্রেণ প্রাহ পুদ্রবতী র্মনুঃ।। একপত্নীনা মিতি একঃ পভি র্যা সা নিতি। অত্র সপত্নীপুল্রস্য পুল্রমান্তিদেশাৎ তৎসত্বেপি জীবাং সাগিজনং মৈথিলৈ ক্র-ক্তে-। তম। পুল্রেবের তু কর্তব্যং সপিজীকরবং দ্রিষাং। পুরুষস্য পুন জুন্যে ভ্রাতৃপুল্রাদ্বো ২পি বে।। ইতি লবুহারীতবচনে এব-কারেণাতিদিক পুল্রনিবেধাৎ । ইতি শুদ্ধিতব্বং।।

সপদি বা ক্রত । তৎক্ষণঃ। ইতামরঃ।

সপর্ব্যা ক্রী পূজা। ইত্যমরঃ।।
সপাদঃ ত্রি পাদেন সহবর্তমানঃ
। স তু চরণযুক্ত শুতুর্থভাগসহিতশ্চ। যথা। সপাদপলমানেন বেলা তুট্যিতি নিশ্চিত ।
ইতি সংক্ষতামুক্তাবলী।।

সপাদপীঠি ত্রি পাদপীঠযুক্তসেংহাসমাদি। যথা। আদিকদাদীপ্তরুশাসুকর শেসংহাসন
ভঙ্গা সপাদপীঠি সম্ভপ্তচামীকর বস্তু বজু বিভাগবিন্যস্তমহার্মর । ইতিভটো ও সর্গঃ।।
সপিওঃ পু সপ্তপ্রায়ঃ। সনাভিঃ
হা ইতামরঃ।। স চ অশৌচ
বিবাহ দাষভেদাৎ ত্রিবিধঃ।

তত্রাশেচসপিওস্থা লকণ যথা । সপ্তপুরুষান্তর্গতকে সভি গো-ত্ৰৈকো সভি ৰাভূৰ ভোক্ৰা-ন্যতর সৰম্বেন পিওলেপান্য **७तवद्यः । एडक्नानाइ ७**र्क् मानित्यान मानिखाः। जानकाः না পিত্রবধি ত্রিপুরুষ সাপিখ্য ।। বিবাহসপিঞ্জান্ত । পিতৃ পিতৃ वसुराक्षा मञ्जयभूक्ष्मावश्यः । মাতামহ মাতৃৰস্কুপেক্ষমা পঞ্চম-পুরুষাৰ্থবশ্চ। যথা। পঞ্মাৎ সপ্তমাদ্ধি মাতৃতঃ পিতৃতঃ ক্র-মাৎ। সবিশ্বতা নিবর্ত্তেত সর্ব-वर्णञ्चर विधिः।। हेजूषारुख शृष्ठ नात्रमव्हनः॥ मायमिर्शः স্ত। ত্রিপুরুকাবধনঃ। তে চ পিতৃ পিতামহ প্রপিভামহাঃ তেষা॰ পুত্র পৌত্র প্রপৌত্র দৌহিত্রাঃ। মাতামহ প্রমাতামহ বৃদ্ধপ্রমা-তামহাঃ ৷ তৎপুত্ৰ গৌত্ৰপ্ৰপৌ-আক্। ইতি দাৰভাগঃ ॥ 🛊 ॥ অথ সপিঞ্চাদি বিচারঃ। মৎস্য-পুরাণ। বেপভাজ শুতুর্থাদ্যাঃ পিত্রাদ্যাঃ পিশুভাগিনঃ। পিশু-দঃ সপ্তম ক্টেৰা সাপিণ্ডা সা-প্তপৌরুষণ।। নম্বেৰণ ভ্রাত্তাদি-ভিঃ সহ পিও তলেপভোক্তৃত্বা-

সম্ভবাৎ কৰা সপিওত্ব মিতি চে-দুচাতে। তেষা মপি পিণ্ডলেপ-বোঃ সম্বন্ধে। হস্তি। তথা চ বৌধাষনঃ। প্রপিতামহঃ পিতা-মহঃ পিতা স্বয়ণ সোদর্য্যভাত-রঃ। সবর্গাষাঃ পুল্রঃ পৌল্রঃ প্র-পৌল্রো বা এতানবিভক্তদাযা-দান্ সপিণ্ডানাচক্ষতে বিভক্ত দাযাদান্ সঙ্গল্যানাচক্ষতে সং-স্বন্ধজেষু তলামী হুর্থো ভবতি ইতি। অস্যার্থঃ। পিত্রাদি পিণ্ড-ত্ৰযেষু সপিওনেন ভোক্তৃত্বাৎ । পুলাদিভি ব্রিভি স্তৎপিওদা-ना । यक्त की वन् यमा शिखना-তা স মৃতঃ সন্ সপিওনেন তৎ-পিণ্ডভোক্তা এবং সতি মধ্যস্থিতঃ পুৰুষঃ পূৰ্বেষাণ জীবন্ পিগুদাতা মৃতঃ সন্ তৎপিওভোক্তা ২পরে-ষা জীবতা পিশুসম্পুদানভূত আসীৎ মৃতৈশ্চ তৈঃ সহ দৌহি-ত্রাদিদেযপিশুভোক্তা। অতো ষেষা মৰু পিগুদাতা যে চাস্য পিওভোক্তার স্তে ২বিভক্তণ পি-শুৰূপ• দাখ• অশ্বন্তীতি অবি-**छक्रनामानाः मिथा हैछि। है**-দঞ্চ সুপি ওত্ত সঙ্গল্যত্ত্ব দায়-जर्गार्थः। ज्यानीनामार्थं नि

ওলেগভুকা বিশি।' লেশভাজ **क्ल्यामा। शिवामा। शिक्ला-**পিনঃ। ইতি প্রাশুক্ত মৎসাপু-बार्गाष वक्त्रामान कृषाभूद्रान म-श्रामिश्व वहनाम्ह। निर्ध स्था পরস্পার ভোক্তৃত্ব তথা লেপে তুল্য ন্যাযাৎ। হারলতাযা কূ-র্মপুরাণ । সপিওতা তু পুরুষে সপ্তমে বিনিবর্ত্ততে। সমানো-मक्जावञ्च जन्म नात्मा त्रत्वमदन ।। भिषा भिषामर टेम्हव छरेथव প্রপিতামহঃ। লেপভাজ শ্চতু-र्थामाः मानिखाः माश्रलोद्भवः ।। লেপভামিভ্য স্তৃদ্ধৃ॰ যাবজ্জন্ম 'नादमा द्रावनन रेगवनमूकना-মো ২স্মাৎ পূৰ্বপুরুষাদয় জা-তঃ ইতি ৰিশেষঃ অষ মন্মৎ-ঙ্গলে জাভ ইতি সামান্যতো বা স্মৰ্য্যতৈ তাবৎ সমানোদকত্ব মিতি হারলতা।। অত্র পরবচ-तिरेनव माणिक्यामिएको भूबंवह-ন পূৰ্ৰাৰ্জণ জীবৎপিতৃকত্বাদিন। অধিকপুৰুষেষু পিণ্ডলেপসম্বন্ধে -পি সপিওডানিবৃত্তিজ্ঞাপনাষ। गर्वटमनीवाहादतानि छथा। यथा শ্ৰান্ধবিৰেকেপি পাৰ্ৰণ শ্ৰান্ধান-ন্তরণ নিত্যশ্রাদ্ধে বিকন্ন উক্তঃ।

मोक्टबर्ग् अस्ति। विद्यालियाः শিত্ৰাৰ কৈচিনিক্সৰি সম্ভনাঃ। मिशिल्या बिर्वेशिका त्यार शु-विकाहता । पाव भूवाकार পিতৃণা প্রার্থ্যে ম পিতৃণা মিতাত্র পুনঃ পিতৃণা অইশ সমকাদীনা महाक्रमगां अम्खानार्थं निवि कलाख्य मुक्क । इतिमर्मागानि ष्यनार्थ भूनईहम मिछि लिधि-छ । **अथ यः थम्** शिखान् मटेवि মৃতঃ পরতশ্চাশ্রাপ্তপিতৃভাবঃ স কথ সপিঙ্কঃ একপিওদাতৃত্ব ভোক্তৃত্বলকণ সমন্ধাভাবাদিতি **८६९ ज्यानागाज्यकि जा**नः বোগ্যতাপ্ৰৰোজকক্ষ সামান্য-<u>শাস্ত্র বিষয়ত্ব । ভঙ্গ্ন অত্যতি-</u> বৃদ্ধপ্রপিভামহাবধিকাধন্তনারাণ ষগ্না পু•সা প্রভ্যেকাপেক্ষরা স-প্তানা,মেকগোত্রাণা স্থাবধি গ-রতনামা• সপ্তামাঞ্চ সাগিও্য৽ পিও দেপয়ো দাতৃত্ব ভোক্তৃত্ব সমন্ধাদিতি। খ্রীণাম্ব ভত্ সাপি-খ্যেন সাপিগ্য:। প্রস্তানা ভত্ সাপিণ্ডা মিতি ৰচনাৎ। নম্বেবং কন্যাৰাঃ কথ- সগিওতেতি চেৎ जानि भूता भव हमा ६ ত্তৈপুরুষণ স্পিশ্তা মথা। স্থিতা ত

क्साना अवश्वकात्रा विश्वका वाद क्या गा जनाः विद्यास्त्र महिन्द्रास्त्र न हना ६। (क्रा. श्रामश्राम्) । इक প্রাপিতামকে মালিখাং নিবর্কতে ইতি প্রতিপাদিক ৷ অভএব ক-नगराः अशिकासम्बद्धाता छ० ग-ন্ততিভিদ্য সহ সাগিওাভাবাৎ कना मृद्ध करमद्य (ख्या मिन-थात्मोहः नास्त्रि विक्र जनात्नाम-ক নিমিত্ত মেবাশোচ মিতি। এব॰ তেय। मशिक्षनम् अद्रवस्याः कन्।-ना मिछि गुलुशानि महाग्रहा-शाशाशाः इत क्षाश्वावः । वाधानाः वशा श्रीशः मानिथाः माश्रदशोक्ष्यः। श्रद्धानाः छर्-मानिषाः सार प्रतः निजामरः ॥ रेकि उद्याकतम्बः छिक्तारर शिक्शक्ति **इरः। इशा** विकृश রাণ। সপ্তমী প্রত্পকাচ মা-ज्भकाक शक्ष्यी। फेबर्ड वि-ष्ट्रा जार्रा: नरारम्न विश्ना न्-भा। मुख्यी भक्ष्यीः हिए। हेि (गरः। एक माशिका किठान সাপ্তপৌৰুষ মিতানুষ্কাতে। তে न छठ् नयान नाशिका जिलाकः । गध्र निथित्वो। मिर्शिका कू

, महब्बार रगाजकः साख्यानोककी। शियदगापवाग्यक क्लोगाटकीट ज्ञानुगः॥ शाबकः भारेकाका তেন নাতামংস্ত্ৰে ক্লাচিৎ वर्षे श्रुक्षवर्गाञ्चः निश्चमवद्वारि ন সপিওতা। তান্ সপ্তপুরুষা-ন্ আ সমস্তাৎকারেণ পিণ্ডাদিক मन्गक्छोि छमान्गः। এछन স্পিওতা একশ্রীরাব্যবাদ্ববেন ভবতি। তথা হি। পিতৃঃ শরীরা-ৰষৰাশ্বযেন পিত্ৰাসহ এবং পিতা মহাদিভি রপি পিতৃদ্বারেণ তচ্ছ-ब्रीबाक्यवात्रयम माळामिछि व्र-পি। এব॰ পত্যা সহ পত্না এক-শরীরারম্ভকতযা সাপিখ্যণ তথা **ह गर्खाशनियमि । এত**ः बाहे-কোষিক শরীর ত্রীণি পিতৃতঃ ত্রীণি মাতৃতঃ অন্থি সামু মজ্জানঃ পিতৃতঃ দ্বপ্নাণ্স রুধিরাণি মাতৃত-শ্চেতি। তত্ত্র তত্ত্বাবমবাম্বম প্রতি-शानना । निर्दाशा शिखायरय जू সাপিত্যে ভ্ৰাতৃ পিতৃবাদি সা-<u> शिक्षाः न साध्य प्रिथित्रवञ्च</u> मश्चानाञ्चरचन अत्यादभाभावि-न। निवननीयः। स्टातः माठा-महादीना यशि सद्धान मशिखरवन

मनाराजीक आर्थाण कारन छ स्त्रि माठामराना मन्तर् विवाद गामर्गिठक रेजामि विटमनवहनः न गांद । रख जू विटमयवहमः बास्ति छब ममाह মিতি মিতাকরা রত্নাকরাদি বত ৰণাত ।। লেপভাজ ইভ্যাদি बाচनिक रार्थ जाशिएका बक्न-बीबारवराव्यक्तभ क्रक्तभाव ब्र-চিভার্থানবকাশাৎ। নিৰ্বাপ্য পিওসহদ্ধেন ভারাদীনা সা-পিশ্যস্য মৎস্যপুরাণ বৌধাষ্কা-ভ্যা॰ পূর্ব মুক্তত্বাৎ। কামধেন হারলতা কল্পতরু পারিজাতকা-রাদিভি স্তবৈধ ব্যাখ্যাতদাক।। রেতঃ শোণিত পরিশামৰাপদাদ-পত্যশরীরস্য ভবতু বা তথা। প-ত্যা বহু পত্না একশরীরারম্ভক-তাৰাঃ প্ৰভান্দবাধিতত্বাৎ কথ-নাপিণ্ড্য প্ৰমাতাৰহাদীনা বি-শেষবচনাভাবাৎ সপিওছেন দ-শাহাদ্যশৌচ প্রসন্থাৎ নাতাম-शामी नाशिक्षाना लाकविकक्षं-স্বাচ্চ। ভবতু বা তথা শরীবহার। नालिखाः छथालि वस्तार यथा ৰপ্তান্তৰ্গতন্ত্ৰণ গোত্ৰতঃ माश्राभी क्यों विकाश शास्त्र-

ক্য নগি প্রাঞ্জ বচনাৎ। কন্যাবা ব্রিপৌরন নাগিতা উচাবাণচ
ভঙ্গ কাশিভোন সাগিতা নিভি
কৈৎ তথেকথতেগি ব্যবস্থাবাং ন
কতি রিভি। অতথ্য সুমন্তবচনা
ভিত্তি বন্ধ নমপুরুষপর্যান্ত মশোচং তথ সন্তবস্থান্ত স্থানি

দ্মণানা বেকপিন্ত অধানা নাদশ-মাৎ ধর্মবিচ্ছিত্তি ভবতি আসপ্ত-নাৎ ঋক্থবিচ্ছিত্তি ভ্ৰতি আতৃ-তীৰাৎ স্বধাবিচ্ছিত্তি ৰ্ভবতি অ-बाथा शिखारमो ह कियामारक्ता-ত্ বন্ধহতুলো। ভবতীতি। অস্যা-ৰ্থঃ একা সনানা পিও স্বধা যেষা তে তথা। মথা একোদিউস্য পি-ণ্ডে তু অনুশব্দে। ন বুজাতে ইত্য-बाम्भरकनान्यकपुरका मर्छ। লক্যতে অনুবৃক্ত বন্তম্ভ যে চাত্ৰ ষা মনু খাংশ্চ ছ মনু ভলৈ ভে স্বধা ইভিত্রা পিও স্বধাশকেন-পিওসম্বন্ধি স্থাশব্দযুক্ত সন্ত্ৰক-त्रवक (तरकक विकितः। उथा চ উৰ্জ বহন্তী রমূত মৃত পৰঃ াধান্ত তৰ্প-ৰত ৰে পিতৃন্ ইত্যনেন পিণান্ मिट क्रिजाकः। एउम्र वक्रिल

श्रधानाः नगरनामुकाना विकार्थः । अञ्चर मन्। क्यादादकारका নাৰ তিরাকাৰ জন্মিরিয়তে ৷ विक्शूद्रायः। बाक्शकमा शिएखन সমস্বাবে জলেন ব।। মাতৃপক্ষা गाश्यरशक्ता लिएसन नवकाः সপিশুঃ ক্লেন সম্ভাঃ স্বানো मका देखि आस्तित्वत्किंग वाः খ্যাত । অসম্বন্ধ ভবেন্ধা তু পি-(खरेनरवाषरकन वा है छि विवादह ২পুক্তে। অত্ত পুত্ৰিকাষা: পাৰ্বণে शिष्टामकदवाः महस्राप कन्याः মাত্ৰেপি তদেবাগ্যভাষাঃ সন্থাৎ কন্যাপিওেদকসৰক্ষোচ্যভে।এ তদনুসারাদ্বপি তস্যাঃ সপিওতা বোদ্ধব্যা তল্মাদেকপিও সধানা মিত্যনেন সমানোদকভাবঃসমা-था। न जूमनम्भूक्रमभर्गासः शिवामि कीयगामिना शिख मध-দ্বেপি সাপিজ্য বিহিত প্রাপ্ত-জযুক্তেঃ প্ৰৰেত্যস্য তদনুপৰ্জ-ছেন বৈষ্ঠ্যাগত্তেঃ। অপুত্র ব-नाधिकात्रखः महिन्छक्रास्टाद न सम्पूक्षभाषा । मृज्ञिक् गा यदश्यमाणिक काषाधिकातः পুরুষত্রমগর্যান্ত মিতি ৷ অত্র স্বধা শব্দো মন্ত্রপরঃ পিতৃত্তক্ষণরোপি

। তথা চ খণবিকুণ্তা একভিঃ यश देव शिष्ट्रशा नम निष्ठि। मनन भूक्तानखद्व नुनादनामकरपूरि न बित्राबः किंब शक्तिगानि। छ-পাহি। উদক্জিবা মধিক্লত্য পা-त्रकतः। मर्द छाज्या जावविष्ठ া আসপ্তমান্দশমান্তা স্থান প্রাম বাসেন যাবৎ সম্বন্ধ মনুন্মরেযু ৰ্বা ইভি। ভাবষম্ভি নিস্পাদযম্ভি। অত্র যাবৎসম্বন্ধ মনুক্ষরেষুরেক-ঙ্গলজাতা বৰ মিতি শ্মরণ ভবতী-ত্যনেনৈব সর্বেষা মুদকদানে প্রা-यमामश्रमामभगारवज्यकः ७९ मनिकर्य छात्रज्यानात्मी ह ভেদে প্যূদককৰ্ম সমানাৰ্থ মিতি । অশৌচ ভেদস্ত সপ্তমপুরুষণ-ৰ্য্যন্ত সপিওত্বাদ্দশাহঃ। তত্ত্ত मनमभूक्रयभर्याखः बारः। তথा ठ विकृ वृहण्याणी। मनाट्न म-পিঙান্ত শুদ্ধান্তি মৃতসূতকে। ত্রি-রাত্রেণ সঙ্গল্যান্ত সাদ্বা শুকান্তি গোৱজাঃ।। তত শ্চতুর্দশপুরুষ পৰ্যান্ত॰ পক্ষিণী। ভত্তক জন্ম-नाम मृष्टि शर्यास्त्रः (यकारः । তথা চ মিতাকরা বিবাদচিন্তাম-ব্যে বৃহত্মনুঃ। সলিওতা তুপু-क्राय मश्राम विनिवार्षण। मना-

नामकावास निवर्णकारण्या मार्। अभूनामम् ए एए एक शद्र शाल मुठाएक। व्यव न्या-त्नामकरम विकित्य। भूईको द्या-ভষঃ পশ্চিণী মসন্দিদ্ধে ইতি। প রত্র হারীতঃ 🔾 শতামহে ত্রিরা-ত্ত্ৰ- স্যাদেকাহ স্থ্ৰসপিওকে ইতি । অত্রৈব গোত্রজানা মহঃ স্মৃত মিতি জাবালবচন ৷ ততঃ পর সৰ্বথা সমানোদকতা নিবৃত্তেঃ 🛭 স্নান মাত্র মিতি। স্নাদ্বা শুদ্ধা-স্তি গোত্ৰজা ইতি বৃহস্পত্যুক্ত-षामिछि। ইতি শুদ্ধিতব্ব ।। मिश्रीकर्तन की भूर्नमञ्चनर ক্ৰিষমাণপাৰ্ধণৈকোদিকেভি-কর্ত্তব্যতাকশ্রাদ্ধ । যত্র প্রেত পিওস্য পিতৃপিওেন সহ মিঞ্জী-कत्रनः। यथा। সপিঞীকরণ প্রোক্তণ পূর্ণে সংবৎসরে পুনঃ া স্ব্যাচ্ছারি পাত্রাণি প্রেতা-দীনা ছিজোত্তমাং॥ প্রেতার্থ পিতৃপাত্তেষু পাত্র মাদেচষেত্ত-তঃ। যে সমানা ইতি দ্বাভ্যাণ গ্রিঞ্জানপ্যেব মেব হি॥ সপিঞ্জী-कत्रवाषा (परभूवं विशीय-ए। त्रिकृताकार्यमाख शुक्क शिष्क निर्मित्यद्या स्व निर्श

ভীক্তাঃ প্রেতা ম তেয়া সাহে भूशक जिल्ला। यम वर्गाद भू-श्रेक शिक शिक्सा त्यात्रि काय-एक II **केलि सम्ब**श्चादन जेनाति-कारण ३२ खादासाः श का। वाना-क। তভঃ কৰ্ণ কৰে শূৰণ সণি-াধীকরণ ভবেছা নুগিজীকর-नामृष्- (थाका नार्वनस्थातः ॥ বৃদ্ধি পুর্বেষু কোগ্যশ্চ গৃহস্পচ ভবেততঃ। সুপিথীকুরণ ঞান্ধ। (मर्गपूर्व : निरंगाक्र प्रज् । शिजू-নেবাশবেক্তক্র পৃথক্ প্রেত বি-निर्मित्न ॥ अद्भानक जिटेन-ৰ্ক্ত স্থাৎ পাৱচত্ট্ৰ। অ-ধ্যার্থ পিতৃপাতের প্রেতপাত্রণ **প্রসেচবেৎ**া। जुन्द नकना চ-তুর: পিখান পিডঞান স্তদা। যে ममना ইতি बाजा मानाब विज জেলিব।। চতুর্থন্য পুনঃ কার্য্য न क्लाहि॰ बेट्डा खर्व॰। छ्डः পিতৃত্ব ৰাপন্নং ন চতুৰ্থ স্তদা পু-मान्॥ अधियाखाहि मधा अ ধোতামূত মুভম:। মপিভীকর-शामुक् करेम क्याम मीयरण ॥ विक्रियम्भा अभाषायः॥॥॥ অপরঞ্ ৷ অথ সপিতীকরণ ৷ ञ्ब शाखिनः। পূर्व नश्ञ्नदा

ষণাসে তিপকে বদর বা বৃদ্ধি
রাপদ্যেত তদহ শুদ্ধার্থদকপা
তাণি সভিল গন্ধ পুশোদকানি
পুর্বিদ্বা কীণি পিতৃণা দেক প্রে
তস্য প্রেডপাত্ত পিতৃপাত্তের।
সঞ্চিত ৷ বে সমানাঃ সমনসঃ
পিতরো বসরাজ্যে তেবা লেবেবু ক
দ্বতা ৷ বে সমানাঃ সমনসো
জীবা জীবেবু মামকাঃ তেবা

মষি কলতা মস্মিন্ লোকে শ **७** नमाः। देखि। এएउरेनव शि ভো ব্যাখ্যাত ইতি। পূর্ণে সম্ব সরে ইতি মুখ্যকর:। তদশক্তো নবমো মাসঃ সমুৎসরাত্তে বি-मर्क्कन॰ नरममामा मिर्छारक । ইতি লৈঠীনসি বচনাৎ। তদশ ক্তৌ বঠে। মাসঃ। তত্ত্বাপ্যশক্তৌ ত্রিপকঃ। তত্রাপ্যশক্তে অশৌ-চাপগমে প্রথম মাসদ্য দাদশভি र्फिटेन बीपनामामिकानि आका नि निर्दर्श बदराप्रनारः मणिकी कत्रविनाः। मुजमा बाममादश नजू बदमानगार अव गानिकार्थ वर दामगार आक क्या जत्या मत्म शङ्कि वा ७६ व्यशासायव क्कें। हि भूषाना वामत्म रहीछि

विकृ वहनाय। यामिकार्यविषिठ गानिकार्या मानि मानि कियगा-न आक्थरगक्न थ्राजागामः নাদি তদ্মুক্ত বাদশাহক্রিয়মাণ-व्याक्त विष्युर्थः ॥ शा यद एकामः শ্রমাসাভ্যন্তরে ২ধিমাসপাত স্তক্র खरवानमम् नित्नय् खरवानममा-সিকানি রুত্বা চতুর্দ্দশে হঙ্কি সং পিওনং কার্য্য মিতি। সম্বৎসরা-ভান্তরে যদ্যধিমাসো ভবতি তদা मानिकार्थः मिनटमकः वर्षात्यः । ইতি বিষ্ণুবাক্যাও। শুদ্রদ্য ত্র-रवामनामिटनव् जरवामनामिका-नि वरवामर्ग १क्कि मिश्रुन প্রান্ধবৃদ্ধিমাত্রণ ন দিনবৃদ্ধি রি-তি মিশ্ৰোক্ত হেষণ। তদ্ধৃত বিষ্ণু मृत्व निनरमक वर्क्तरयनिष्ठि अ ভেঃ। শ্রাদ্ধাধিক্য মাহ সত্যব্রতঃ । मद्यस्मद्रमा मरशा जू यनि मानि-ধিমাসকঃ৷ তদা ত্রঁযোদশে আ-कः कार्याञ्जनधिकः ভবেৎ ॥ 🟶 ॥ তত্রাপ্যশক্তো প্রথমমাসদ্যৈকা-হ এব ছামশ্ৰাসিকসঁহিত সপি-জীকরণকালঃ। মুখাণ আদ্ধি মা-नि मानि जगर्गाश्वावृज् अणि । वामनादश्न वा नर्यादमकादश

चामभाथ वा॥ देखि मत्रीविषठ-ना९। जगर्गात्ली जनत्की सञ् र्यामदयः। ञढाकरम यर्थमानिकः **क्तिन शक्षमगानिक क्रमा अपम** যাণাসিক ক্লম ষষ্ঠমাসিক কা-र्याः जनामुष्टकर्यनायाः । न जू **७९**शृर्दः साभामिकः बुष्क्रमाः পত্তে ন চ পঞ্মমাসিক মপি পূৰ্ব-দিনে মৃততিথ্যভাবাৎ এব মেব বাচস্পতিমিশ্রঃ।।।।। অপকর্ষ মি-মিত্ত মাহ ব্যাযুঃ। আনন্ত্যাৎ ক व्यथन्त्रानाः भू भारिक्षवायुषः क्रयार । অস্থিতেশ্চ শরীরস্য দ্বাদশাহঃ প্রশাসতে ৷৷ এতচ্চ দ্বাদশাহ-भाष भाषारभोठा छ **তৃ** তীयपिन-মাত্রপর মিতি প্রাচীনবৈথিলাঃ অজহৎস্বার্থলকণ্যা স্বজাত্যু-ক্তাশোচান্ততৃতীযদিনমাত্রোপ-লক্ষক বিতি আদ্ধপ্রদীপ আ किष्ठावनी। তদুৰ वनायुक्तः। बामगारुन वा अधार देखि म রীচিবচন দাদশাহশ্রাদ্ধ ফ্রন্থা ত্রযোদশে ২ক্লি বা সর্য্যাৎ ইতি বিষ্ণুবচনাভ্যা নেকবাক্যতথা দা-দশাহ ইত্যস্য দাদশদিন পর-ত্বাৎ । সলংশাণা মিতি সলধ-শাজ্যোতি রাগমাদিদিদ্ধানন্তর-

ভাবিনাশ পরচক্রভযোৎপন্ন ম্লে-क्लानगगमानि निमित्वं द्र-त्नीहाशगत्म बादगितिनानि त्या-ष्णभाकाशक्रकालः ३७ मृ-लभागुभाषायगाशामार। म त्रीिं दिनव धकारश शामभाषदन তি সামান্যত এব একাহ বিধা-নাচ্চ। অতএর একাহাপেক্ষযা প্রাশস্ত্যাভিধান মপি সঙ্গচ্ছতে অতএব প্রথম মাসস্য একাহ এব দ্বাদশশাসিক সহিত সপিণ্ডীকর-नकानः रेंछि आक्षितितकः। ज-ত্র যানি একাহকর্ত্ব্যত্যা ঘা-দশ্যাদিক আন্ধান্যুক্তানি তানি मृट्यनानि चामामानिकनिन्धर कार्याभि। न भागमानिक क्ष ভৎপরদিনে একাদশমাসিকা-নীতি জ্ঞেষণ। এবঞ্চ তেখা মপক-ৰ্ষে ভন্মধ্য ভদন্তকাল কৰ্ত্তব্যত্যা ষাণ্যাসিকত্বয় স্পিঞ্জীকরণাপ-কৰ্ম: সিদ্ধাতীতি সৃধীভি ভাবাণ 11 🛊 11 यम 🧃 वृष्ट्वि द्विष्ठि वृष्ट्वि-त्रागामामान पूर्मवनामि। जा-পদ্যেত আসনা ভবতি তদ্দিনে সপিঙীকরণ। তথাহি। প্রাগাব-र्खनामङ्गः कालः विमार। ইতি গোভিলসূত্রেণ পুংসবনাদিৰপ

বৃদ্ধে বামধ্যাভ্যম্ভরে বিধানাৎ সপিণ্ডীকরণদ্য চাপরাফ্লে বিধা-नाखरमाः काणरमा त्रवाशास वृक्षि शूर्दिपित व्यथकर्यः ॥ ।। मन् मः পিতীকরণস্যাপরাহিকছে কিং প্রমাণ মিতি চেৎ অপরাক্তে তু পৈতৃক মিত্যুৎসর্যবচন। বিঞ यमाशाम खकः श्वा रेशके मिख म-मा हङ्ग । अभी व्यक्षत्र मानान्। ভণুলো ২ত্র বিধীষতে।। ইভি ছন্দোগপরিশিন্ট বচনে বথা বহু ना यन्ताशाख्यू महक देनकान् रताथाय रेशके इकः। विक्र कथर्म সমবাবে ভূষমাং স্যাৎ সংশ্ৰহ षः। ইতি জৈমিনিসূতা । एष म्बालि वहरमवाक लाईनान् রোখাদেকোদিন্টকালবাধ ইভি । এবঞ্চ সম্বৎসর মধিক্রভ্য। স পিণ্ডীকরণ তন্মিন্ কালে রাজে ख ७९ मृन्। अरका कि से विशासन ন কাৰ্য্য তদপি পাৰ্থিব।। ইভি विकृश्तानीय प्याकामिका॰एम তদিভিকর্ত্তব্যতাপর• নতু তৎ-कान्भद्रः। তथा ह भदिनिक्य কাশধৃত। আদ্বয় মুপক্ষয় সৰীত সহপিওতা। তষোঃ পা-र्वनदर शूर्व (मरकाष्मिक मर्थाशद्वः

॥ देखि॥ 🛊॥ अदक श्वक्रिङ्य नि-থিত্যামম্ভকোপাখ্যানবৎ বৃদ্ধি• নিশ্চিত্য ক্বত স্পিভীকরণ ড मानी॰ विषयन बृकाजारविश वृ-क्यात्रखकाचाखतः भूर्गमस्मतः বা প্রাপ্য পিতৃত্বপ্রাপক ইতি ন সপিওনান্তর । অত্র শ্বঃ কর্ত্তা-স্মীতি নিশ্চিত্য দাতা বিপ্রান্নি-ইতিবন্ধিশ্চিত্যেভি मञ्जरम् । উৎকটকোটিক সম্ভাবনোপল-ভবিষ্যমিনিন্তস্য কর্মাণঃ প্রত্যুহার্থাৎ। এবঞ্চ বৃদ্ধিশ্রা-कः रामर्थः क्रजः जद कर्म तहद বিশাত্তদিনে ন ক্রিয়তে ভদা দিনাস্তরে ভৎকর্মণি ক্রিয়মাণে তদৰত্বাৎ পুনৰ্দ্বিশ্ৰান্ধ কুৰ্ত্ত-वा भारत । श्रानमाकिया यव সাঙ্গ তৎ ক্রিষতে পুনঃ। ভদঙ্গ-मााकियायात्र नावृष्टि नं ठ ७९ ক্রিয়া।। ইতি ছন্দোগরিশিষ্টেন ্রিসাঙ্গকরণাভিধানাৎ।।**ঞা।** হেমা-ডিধৃত। পূর্ণে সম্বৎসরে প্রাদ্ধণ ষোডশ পরিকীর্ত্তিত। তেনৈ-ব চ স্পিওত্ব তেনৈবান্দিক মি-ব্যতে।। অত পূর্ণসম্বৎসর ক্রিষ-मान्याकाम्बर्याञ्य निर्वारः । তথাপত্নউদপিওনাদপ্যুভ্য নি-

खतः कार्यः। अत्रक्षः अक्षृत्रम् व क् इत्वर्शित्रर ।। ।। के किन् कारि रेडि अर्गार्थ मुमक्ष्री भावाभि। पव वीभि त्रिष्टुमा (मः ক প্রেতস্যেতি পাঠক্রম দর্শনাৎ गर्दछ इत्यागानाः यङ्ग्दिनिनाकः গৃছানুরোধাৎ সপিতীকরণে প্রে-তকৰ্মকরণ পিতৃকৰ্মপূৰ্বক । जरवाः भार्वणव< भूवं त्यरकाणि क मथाभनः। ইতি পূৰ্বলিখিত वहत्न भायक्य पर्भनाथ। (प्रव-ক্বত্য পিতৃক্বতাষো শ্বধ্যে **প্রে**তক্ক-ভ্যেন ব্যবধানস্যাষুক্তত্বাচ্চ। এ তেন অথ সগিগুীকরণ সম্বৎসর মেকৃ পিণ্ড মুদ্দিশ্য সম্বৎসরাস্তে চমাৰ্যুদকপাত্ৰাণি প্ৰযুনক্তি ত বৈকণ প্রেতস্য ত্রীণি ইতরেভাঃ। रेजायनायन मर्गनाय मर्यभा-থিনা সপিতীকরণে প্রেতাদিত্ব देमिथित्वाकः नित्रसः । এতম্ব-চনস্য তচ্ছাধিমাত্রপরত্বাৎ কিন্তুৰ্য্যদানযাত্তে পাঠক্ৰমাচ্ছা-मक्रममा वजवसाय बक्रमूद्रारव প্রেতার্যাদানানন্তর তত: পি-তামহাদিভ্যঃ ইতি শাব্দক্রমন্যা-वाधायाधालाटवयू गम्न भूलानान्॥

वीराज्ञ পूर्वमयुक्ता व्यापन TAIN LOUDE TO WALL निभा के प्रवासक । सम्बद्धाः अधिनाः तः ग-गोमा देखि एमद्रम् ध्याञ्चिथामा হত্তে তু চতুর্ভাগু কলে কিপেৎ ।। ততঃ পিভাসহাদিজা স্তমট্রে क गृथक् भृथक्। स ममाना **रेलि बाज्या 'ठळालग्र नम**शंदय ॥ चर्षाः छ्टिनव निधिन्। थ्यङ-পাত্ৰাক্য পূৰ্ববৰ্ষা তেজ্ঞা ক্ষাৰ্যাণ निद्दिष्टाद शन्हाक सम् माहरम् ৷৷ এক প্রেড়গাক্ত বামেন অন-ন্তরণ দক্ষিণেন গৃহীত্বা ইতি সম্ব-क्षः। (व সমানা ইভি মন্তৰ্য• পঠন্ প্রেতপাত্রস্থ-উৎসৃফজল जनद्विशावद्यन हेर्ज्या विजना ভাগদেক প্ৰেত বাদাণহন্তে দি-পেৎ দদাৎ। উৎস্কুজন পি-**७८वा विकारम मह्यमा क्रमण्ड** वाक मार् भाषाज्यः। निक्रश ठलूदः शिखान् शिखाः अविनाम **छः । (व ममामा रे**कि बाजा মাদ্যৰ বিভক্তেৎ ত্ৰিধা ॥ এষ এব বিধিঃ পূৰ্ৰ মৰ্ব্যপাত্ৰচতৃষ্টবে

। कर कार्यक्ष क्रिकेट शिका-मरावित्यद्वानं विकान्देखने वि-या रेकि बदेश करनाता शिका गराकृ र वर्षका क्या कर ग्या त्य नमाना है कि काजा। बहाजा। नवा शुर्वाहरू इक्नन थ्या भाव रजन ' एउटेनन विधिना क्ष-ত্যেকেন পূৰ্বৰ চতুৰ্ভাগৰণ প্রেতপাতাৎ সমর্পবেৎ। তেভাঃ পিভাৰহাদিভা স্ত্ৰিভা স্বন্ধিভিত পুষ্প ভিলোদকৰপ মৰ্ছাং নিবে-मा उत्रुष्मा भगरस्य शक्तिभा भ न्हामाहत्यमिन्द्रबन्धः। त्वन त्थल वाक्षणश्रक उपमुक्ता मखदेगावा-र्याक्षममा अपनिकेष्णमा जाग-वयः विजीयसमूर्यम् विश्वाकाल-যু মিশ্রীকর্ত্তর মিতি প্রতীয়তে। वाज्यत मार्वे सार्वे सा मिञ्रीकार है कि आक्षरिदरकः ॥ गण नगज (मन '(जाज्य प्र थारगव देवदं वर्षा मनामाक प्या असुमादेलाः भाव मर्किविषा रुष्टाः भारतम् नमा ९ रेजायमायनवस्त भिन्नभावा रेमरा स मिलारमणि कन्नएक वाशान्द्राद्धन देशवालः न्द्रगाथिना खशान्त्रगः। एव गूकः

। जानमानानान काथानुनगरगा-क्रमा वस्ताना त्यव छवा बुक षा । न नामग रखुर्दिमित्नाः। उत्याः भग्नर्थान् नरमाज्या । अब नाम राजूर्विनितनाः खा-ন্ধসূত্রে गमद्राय मञ्जनमाख-देवव मञ्जान्नयः शिकृपविकामातू-বস্তুতম্ভ পৌরাণিকদ্বাৎ দেবতাভ্য ইত্যস্য পাঠবৎ সাধা-রণস্থৃতিকার শাতাতপোক্তদ্বাক विजारगि मञ्जाम्रस्या मुक्तः। ख-তঞৰ নৈৰ্থিলৈ রপি তথা লিখিত মিতি।। 🐠।। এবঞ্চ পাৰ্বণে প্রা-গুঁক্তবচনেন শেষজ্ৰব্যেণ পিঞ্জ-পিণ্ডীকরণে তমিষমাৎ বদাপি শেষাভাবে পিণ্ডনিবৃত্তি রাষাতি তথাপি। যথোক্তবন্তুসংপ্রাপ্তৌ আছে তদনুকারি ষহ। ব্যানা নিব গোধুমা ত্ৰীহীণা নিব শাল-যং।। ইতি ছন্দোগপরিশিঊবচ-নাৎ মুখ্যাভাবে প্রতিনিধিঃ শা-जार्ष रेणि नगराक म्थामाजाद श्वजानिकार्विष्य खन्या खत्रा वि পিওদানণ শেষজব্যনিষমস্ত তৎ-मख्दव खवा। छत्रजाशाय। ज-नाया जनकाजादा कर्यादेवस्था

স্যাৎ। সহলিওক্রিয়ায়া ইতিম-নৃজ্যে প্রেউপিন্তস্য পিতৃপিন্তে न गर मिन्नीकर्तन गरेंजिंछ निन গ্রীকরণসমাখ্যাসিদ্ধ্যর্থণ সূতরাণ ভত্ত তথাচরণ । প্রতিপত্তিৰা-পক্ষাক এব প্রতিপাদ্যাভাবে ভমিবৃত্তি:। পশুষাগে লোহিত। নিরসাতি সক্ষমরসাতি ইত্যাদা-বুক্তা। অতএব যজ্ঞবান্ত্বৰূপ প্ৰ-তিপত্তিযাগেপি ষজ্ঞে৷ যত্ত্ৰ বস-তি ইতি ৰজ্ঞবাস্ত সমাখ্যানুরো-ধেনাস্ত্তঙ্গশবিনাশেলি জ্লা স্তরপ্রতিনিধি ভঁউনারাষণৈ র্গো-ভিলভাষ্যে উক্তঃ। প্রাক্ স্বি-ষ্টিক্বত আবাপঃ ইতি গোভিল সূত্রস্য ব্যাখ্যানেপি আ উপ্যতে ইত্যাবাপঃ প্রধানহোমঃ স তু স্বি-কিরুদ্ধোমাৎ প্রাক্ন পশ্চাদি-তার্থঃ। এবঞ্চ মুখ্যহোমে দ্বরুতে विष ठक़ निर्का पृरकी वा खबि তদানাঃ পাচ্যঃ মুখ্যে ক্রতে চে मान पूर्की गाांठा॰ छमाद्कारेनव বিষ্টিক্লজোম ইতি শরলা। এতে-ন শেষনাশে পিওনিবৃত্তি রিতি বাচস্পতিমিশ্রোক্ত হেষ ॥ 🛊 ॥ এতেন পিও ইতি।এতেনার্যাদান বিধানেন। পিশুঃ পিশুষি এণপ্র-

कारता राभगानः। छथा ह उप नुवान । अन्य त्करनव विधिनी मर्जगृत्व र रत्नक्षमः। भिक् क्षा ज निख्य महाविका ज भूवर ।। तथा निष्यम् निष्यस्य भन्ता । প্ৰেতাৰ পাৰ্যজ্ঞা ভৱ পিও-ত্রিধা ক্রমা আনুপুর্বদ চ সন্তত্ত ॥ নিদ্ধ্যাত্রিষু পিডেষু এব সং-সজ্জনে বিধিঃ। পিতৃভ্যঃ পিতৃ পিতামহাদিভাঃ পিভান্দদা প-শ্চাৎ প্ৰেভাৰ পাৰ্যতঃ পূৰ্দেশে পিও দদ্যাদিভার্থ। ত প্রেতা-य मखिला । जानुश्रा लिजा-महाक्रिकरमन। मण्डक तम (अठ-शिखमिखरम । छितियानुताम । गत्नामक **िटन येखन अ**र्या ९ পাত্ৰচতুষ্টৰ ী অধ্যাৰ্থ পিতৃ-পাত্তেষু প্রৈতপাত্ত- প্রাসেচযেৎ ॥ যে সমাদা ইতি ছাত্যা মেত-জ্ঞেৰ গশিওন বিভান जुना लाय गारिक कि ন্ত্ৰিবা অপি।। নিভোনাবশ্যকে-न छर्णक भावना राम भावरनन ध-কোদিকী খে একোদিকেন শে-ক অকজাত তুলা ৷ একোদিক भिष्टि अर्कामिके एकर्मशाहि-মাধ নিপি জীকরণকেত্যভবপরণ

। जरुष अभिने स्वतः त्याकानि छे-जिमा जिला देखिनाक्षरका-वहदेनक्वाक्प्रार्थः एवन था-(कर् गर्दा अरुक् क्रिया जिया: कर्त्वाः न पाकुमानिक आफानि । अव जा कर्जन करणा रेणि কর্তরি বন্ধীতি কভূমনিখনঃ। वृश्विकाषाक्षी जीना जिन मनाम दक्षाक्षित्रमः ॥ ।। পিতরি পূর্ব• মূতে তবর্বাভ্যস্তরে পিতাৰহে প্ৰশিতাৰহে চ মৃতে मथा कर्तराः छथा इत्मान-পরিশিষ্টে কাত্যামন: ৷ পিতু: স্পিওতা ক্লয়া স্ব্যান্থাসানু-गायिकः। अमन्द्र्रा न मन्द्रा যো) পূৰে পৌত্ৰ প্ৰপৌত্তকৈঃ।। পিছর তক্ত সংস্কৃষ্যাদিতি কা-जायता रखनीर। गाणिक यणि শুক্তে শুক্ত পাপ্ততাপি বা ॥ পিতামহেন পিতর কাক্র্যাদিতি নিক্ষয়ঃ পিজুঃ সপিওতা ক্রম্বা প্রেতীছ্তুরে রপি পিতামহ প্র পিতামহয়েঃ সভো: প্রতিমাসবি-হিত পাৰণ সিতৃ বৃদ্ধপিতাম-হাতিবৃদ্ধপ্রশিকানহানা কর্ত্রা न ज् ज्याः जिल्लीकत्रगारशका कार्या ॥ अ। नन् मिश्वरननामः

কৃতাভাা পিতাৰহ প্ৰপিতাৰহা ভ্যা॰ সহ পিতৃং কথ॰ সণিও नाथान कात्र उत्पादनर्थ छ । निश्चीकर्त्रव नशकर्यवीयः शिष्ट्-রেব বা সপিশুন মৃৎকর্ষণীয় মি-ত্যত আহ অসংস্কৃতাবিতি। উৎ-क्यां १ क्यां ৰচনেনোক্ত। কথ মসণ্ফূতেন সহ সংস্কার ইত্যত্ত আহ পাপিষ্ঠ মপীতি। পাপিষ্ঠ মক্লতসপিতী-করণ শুদ্ধেন ক্রতসপিণ্ডীকরণে-ন পিভাষহেন গাগক্তা বা অ ক্তুসপিণ্ডীকরণেনাপি শুদ্ধা দ-र्याानिकि भाजनिक्यः। अका বচনবলাদদোষঃ ইতি তাৎ পর্যাণ । অত্ত তু প্রেতীভূত পিতামহেন পिजुः मिर्श्वति निजामहदेगाः কোদিষ্ট মেব। অসপিণ্ডীরুত॰ প্রেত মেকোদিকেন তর্পষেৎ-ইভি প্রাগুক্তজাবালবচনাৎ। এব মন্যত্রাপি বোধ্য । বৃদ্ধপ্র-পিতামহৃদ্য প্রেতম্বে তেন সহ ন কাৰ্য্য মিভি ভাৎপৰ্য্য ।। 🛊 ॥ অৱ মাতৃ: স্পিওনৈ শ্রন্থরার্য্য-श्राध्याः शिष्टो घटेन ब्राष्ट्री-ला। छथा ह भागाः। भिर्दित-**रक्त कर्छराः मिश्वीकत्रगः जि**-

যাঃ। সা গভা হি মুভৈকদ্ব স্থান बेखत्रवन् शिवृत् ।। यथवनाञ् एक समाक्तिश्वकामनिक्याः। भूरेक पर्छन मा कार्या बाक् बच्छा-स्वार्थिकः ॥ अखदग्कीकार्थ অন্তর্মনিতি বিশ্ব্যভাবেন পু্ खु निक्ति रजारू थः। शतकमः (गा-ভিল প্রান্ধসূত্রভাষাক্রতাশি লি-পিত । অতএব প্রব্রজিতে পতি-ভে বা পিভরি মৃতে ন পিভামহা-দিভি শ্বাতুঃ সপিঙীকরণ কিন্ত পিতামখাদিভিরেব। খেন ভর্জা मटेरवामााः मणिखीकत्रनः जियाः । একত্ব॰ সা পতা ৰস্মাচ্চর মন্ত্রা-হতি বতৈঃ।। তিমন্ সতি সূতাঃ পৰ্যঃ পিতামছা সহৈব তু। ইত্য-ত্ৰ তলিন্ সতীতি প্ৰান্ধানহ ততু क्रमणकनः। चाठवत क्रमाद्रेकत তু জীবস্ত্যাণ তগ্যাঃ শশ্ৰেভি মি-भग्नः। ३७ नष्मात्रीरजन भाक জীবনে তদ্যাঃ খণ্ডেত্যক্ত ন তু **'वं शहार । कि किम भूग्यः ॥ का** এব পিতাৰহাদিতি শাতুঃ স্থা जीकबदम श्री नामरगत व काळ षा नन् गांभा व मन् छोष छ यथा देखि बद्धा न शाकाः नहातिः क्रिताशक्षा जाजन

विदय गाणुभाक क्षेत्रजामिक स याच्य विशिष्ट समूद्रमञ्जूष श मिछ ।- रष्ट्रका आकृतिहरू इत्यागानाः प्राकृति का नाची-कि क्या कि । अवस्य कार्गाम- नि-क्षांत्वम् त्यक्षातः सरमञ्ज । त्य नमाना रेजि पाछा। त्यक शृबंबणाग्रहेश । क्या अशिकी-করণ মেৰোজিক জিয়া জালি। रेि राखन्दाम गार्किट्यामि-ক বিক্লতীক্ত প্ৰসাধিকনাতি-দেশাৎ ভাষকীভূতত্তীসগিও-मिनि (वं नवानां देखे मध्यप्र-স্য পাৰ্বশৈক বে চাৰ ছা নিতি महागा क निकार्या मयद्व छङ्गी शक्कार्यमा समातकार्यम् शाठः । उपन्त नाकानशामा नत्नादः वाक वर्गाकक्काः । शक्ता रहम येपामाच ट्रामा महर-ब्रिकार विकास सम्बाधाः নৱৰজন নিভাজ্ঞ চংগ্ৰন্তা जिल्हा अनु हो। सिमास्त्रा है-जापि बार्क्स समान महत्वर्थन-गर विकि द्यार्थकः। मार्कालयः भूरोक्ष । महाजाद जिला वर्षाः प्रसङ्गा भगाकः। जन्मादा ह न्यक्रि कात्रातक श्रवहोष्य ॥

खीना गरगाव स्मरेन्डलस्काकि-के मुहाराजा। मुजार्नि कथानगा-व॰ नुवाः यहिष्टशिष्टिः। जि যো ২ক অসবর্ণোতা অপরিণী-**छ। दिछि आक्रिक्टिकः। अव-**পোঢাৰাঃ পুত্ৰ পৌত্ৰ প্ৰপৌত্ৰা-जार अवस्थिताना । यथा मधः । পিজু: পুত্রেণ কর্ত্তকা পিওদা-নোদককিবা। তদভাবে তুপদ্ধী गाजिएकाद्य महापत्रहा। खीना ৰিভি তু সম্পুদানগর। স্ত্রীকর্ত্ कत्रमा भूवी कि अरमा कत्रार। अर रमवामखक मिछार्यः। देखि आ জবিবেকঃ।। অত্যন্তিৰ ইত্যস্য।-সবর্ণোচা অপরিণীভাগরন্ব্যান थानार जीना महानित्रशानि **७**६ गर्भामा न स्था के धरावशयाः छ। नज् जीमनुमानक्याता। ক্ষতরো ত খ্রীণা মপ্যেব মিতি बाष्ट्रणन महत्सनशिकृवाशामिना श्रुवावा त्यकामभागामिकाकः णामूरभन मदस्करेनव खीवा स्म ७९ कर्डना मिछि। এতব্যাধানে जीमणुनानक आरम मुख्दा क बाः शाठाः। राखनकानात्र गमञ्जक मारकाष्ट्रिक गणिकी করণঞ্চোক্তা এতৎ সপিঞ্চীকরণ

নেকোনিক ব্ৰিষা অপীত্যনেন जिया जान जटेबरवाकना माजूः সপিত্তীকরণ শিতামহা সহো-पिछ[ा] क्रथारकटेन क क्रम क् बिकाया न हिंद मूक्ता। इंडिइन टमागभित्रिमिएकैनाभि वरथारक-हैनवकरम्भ इंडारनन मञ्जापिक-नर्दः मिकिकि वावशासानि छ-থেতি। অমন্ত্ৰক স্ত্ৰীকতৃ ক মন্ত্ৰ-পাঠরহিত•। অসম্রা হি স্ত্রিবোস-তাঃ। ইতি বৌধাষনেন সামান্য-তো হতিধানা**ং । ন তু** বা**ন্ধ** কতৃ ক মন্ত্রপাঠরহিত। তথা চ बज्ञारभूजांगः। ज्यसः स्वयः विधिः প্রোক্তঃ শূদ্রাণাণ মন্ত্রবৃদ্ধিতঃ 🗜 অমন্ত্রস্য তু শুদ্রস্য বিপ্রে মন্ত্রে-পগৃহতে।। অতামন্ত্রস্তি বি-**म्यान्या यावमगञ्जवागञ्जार्थस्य**नः পরিভাষাৰপদ্মান প্রেভশান माखविवयः। न वा मृखक्षृक आक्रमाळविषसः। किंद्र जीकः र्क्षाक मभामा विषयः। याः ক্ত আকে। স্ত্রীভি শ্চাবরবর্ণেশ্চ वाक विद्यान्गामनाथ। मञ्जन-बिशिश्वं विद्यानिविक्तिं छ ।। विधान्गाननाथ विधानार्यनाथ । मञ्जरमञ्जूकः। वङ्गिनाकविव-

किंद्र विष्णगर्ना किंद्र क्या क भक्ता अधिकृत् क आएक भी वकाः शाकाधिकातमस्त्राक्ता छथ। इ इत्लागभदिभिक्के । भाव-क काञ्चनाक्रमाः समः भक्तमः বা প্রচেৎ। পদ্ধী দক্ষ সবর্গেতা-ষাঃ। কোঠা পত্নীতি বচনাৎ। देखाश सार्यस्थ स्वाप्त नामान রা কৈব বিন্দেরন্ যোষিতো **নি** काः। जाताः वर्गकरमरेशव रेकाः-कें। शुक्क ह दिश्र ह ।। क्रा व्यद-त्वाभाशायम्**७**। यमन्कृष्टामी **ानाः शिषा न आक्त मान्दद्र**ः। ষদি মেহেন স্বীত সপিঞ্চীকরণ বিনা ॥ অসম্ভূত প্ৰমীতানা স্থ নুপনীভম্তানাং। লঘ্হারীভঃ। পুদ্রেণের তু কর্ত্তন্ত সমিঞ্চীকর ण खियार। <u>भूक्</u>यमा भून जुटना ज्ञाज्भुजामरवा २ शि रव।। जामि-শন্ত্রাছ্যনাই সূত্র। ভূতি বা ভাতৃপুত্ৰো বা সপিওঃ শিষ্য এব वा। मह शिक्षकियाः क्रमा अर्था। मञ्बद्धाः ॥ ज्ञाका ना हेकि वागवार खाबरमञ्जा अवाव (पन श्रृकंतिकाविशाः क्रोशिकाः ন্তানাং সমুদ্ধা। স্বত্তক স্থি खरषदेनव कुछ् छव भूकरम अधि

कातिनाको भूग छन। मान वा-शाना डढारामार्थ ॥ ।। तस ভরে। প্রতীভূতে বৃদ্ধিকর্ম ন যু-**भारत । रेडि म्**लशानि तिथिछे रम्भान । अमेरके निरुद्धी वना तार स्था कि अंतर । नामि देवतः वाचा रेगावः वावर भूर्वा न वस्मक्रभा देखि (वदीनुदान-বচনেৰ চ প্ৰেতীভূতৰাতা পি-ভূকৰা শিক্ত প্ৰেতীভূত ৰাতা-পিৰ্বন্য নকাৰ্য্যন্য প্ৰেডীভূত-মাতা পিত্ৰাৰাই অন্টাৰাঃ ক-नगक्तक देवनिकक्ष कर्ज् व क-र्भावन्तका छद्भत्रीश्राताय व-पर वा वृक्ति जानदक्क देखातन পূर्विषद्भ मिखन क्षेत्र शिखा-किः अत्रविद्वा प्राप्तान्यः ना गकतः गामिक क्यां । छेतावास न-**जि त्राका एक खीगा।** देखि बहरना देखना निवास निवास मन राषक्रवानिवामाय उरदश्चन नात्क क्रमाः क्रमानशिकातः। धरम शिकु बारवा चेरा छक्र व-नामुद्रक खरमा संतर ने छिए। या न क्षानिकामा। अखाजामम म-शिर्वादमा द्रान्ड्याचा छ। अ छात्रार्थः न (चयक्छ्क्ष मित्र)

वनाया मिल्नाहिकादिकाः भ प्राः गर**स्** सञ्जूष्मसाधिकातिरश ভূাতৃ: সপিওনাহিকারাগডেঃ৷ यथा। नामिक् ए शिक्न आदिका कर्या देवलिक मात्रदास्था । हेकि मा তাতপবচ়নে, গিছুন্ত্ৰ বৃদ্ধি आफानछत्र त्वर भूरखन विवाहः ক্রিয়তে। লু পুরোধ আক্ষান্তর कियरण।। क्या अक शूक्रवनाः शून खुत्ना रेणातनः श्वर भिरा। ন্ত্ৰসা সপিপুৰে সামান্যতো হৰি-কারপ্রতিপ্রাদ্রাৎ অভ্যুদ্ধ বি-नाणि भूक्यमा जिल्ला शाबीय ত। महिश्रिक्किया क्रया अर्गा। मजामग-७७३। हेकि सू मिली कत्रनाथ शृद्ध मञ्जूलकाष्ट्रावार्थः न বভাদযুদ্ধ এব ক্রিপিডীকরণার্থ मिछि।। बाह्य वासिशक्समाः मानि चभुखरमाञ्जानासि। धक देगाव जू माञ्चा मश्चावक्षण त्या-বিতঃ ৷৷ ইতিছুলোগণরিশিকীয়া मिश्वीक्त्राम्ब्रुकुत्रम् स्माधास्य ধাৰক তিজুৰাগৰাভাৱে পু-क्रयमा द्यापाः। ब्रेट्यानि अस्ताः क्षिकेविधादनदेनुत् वासि व्याखाः नि थकाकिक्काकानि काटनाः व माञ्चाः माञ्चामि देशार्थः ।

ব্দপুত্রাঘাশ্যেতি চকারো খনুঞ্জ-সমুচ্চাৰকঃ পভিরহিভাষা ইভি मम्कित्नानि। अभूखायाः मृजा-राष्ट्र পक्ति क्यां। गणिखनाः। ইতিপৈঠীনসিবচনৈক্বাক্যশ্বাৎ । অত্র ছন্দোগপরিশিষ্টে অপু-खायाः " शक्तनं आक्वियानार সপিন্ডীকরণ তাসাং পুত্রাভাবে न विमारछ। ইতি মার্কভেষপুরা-ণাচ্চ বালকপুত্ৰসত্ত্বে সপিঙীক-त्र• चानानानि कर्खना मिछि थन তীষতে। এব পতিঃ সর্যাদিত্য-ত্রাপি পতিসন্ত্রমাত্রণ বিবক্ষিত । তেন উঢ়য়া দুহিত্ৰ। সপিশুন• কা-ৰ্য্য ।। 🛊 ।। অত্ৰ। সৰ্বাসা ষেকপ-ত্মীনা মেকা চেৎ পুল্রিণী ভবেৎ । সৰ্বা স্তা স্তেন পুত্ৰেণ প্ৰাহ পু-खरठी र्यम् ॥ १७ मन्रहत्न मभन्नीभूखना भूखदाि दिनमा ভৎসত্ত্বেপি স্ত্ৰীণাণ সপিশুনণ মৈ-ধিলৈ কক্তণ। তম। প্রাপ্তক্ত ল-ঘুহারীতবচনে পুত্রেশৈবেত্যেব-কারেণাভিদিকপুক্রনিষেধাৎ অতএৰ তদুত্তরার্ধে ভ্রাতৃপুর্যো-शानानः मनक्टिं। चनाथा जुा-তৃপুত্ৰসম্বে। ৰদ্যেকজাঁতা বহুবে। ভ্রাতরশ্চ সহোদরাঃ। একস্যা-

পি সুতে জাতে সৰ্বে তে পুত্ৰিশে मठाः ॥ देखि वृहम्भिष्ठिकद्वन পুলছাভিদেশাৎ ভ্ৰাভৃপুক্ৰস্য পি ভূব্যঞান্ধাধিকারে প্রাপ্তে ভ্রাভৃ-भूत्वाभाषामः राषः मार। भू खदावितन्यक्षय छ । मार्च भू-वास्त्राक्त्रवः भूमायनत्रक्वावश ।।।।। লঘুহারীতঃ। সপিতীকরণা-স্তানি কানি প্রাক্বানি বোডশ। **পৃথঙ্নৈব সূতাः जर्गः পৃথক্জ**-ৰ্যা অপি ৰচিৎ।। প্ৰেত সংকার কৰ্মাণি বানি প্ৰান্ধানি বোডশ । यथाकाण्य कार्यानि नानाथा মুচাতে ততঃ।। পৃথন্দ্রা। অপি বিভক্ষনা অণি পৃথক্ন সর্যাঃ সূতরা নপ্থন্ধনাঃ পৃথক্ ন স্বাঃ किंदुभ्षक् अर्युः। चक विश्न-ষষতি মরীচিঃ। মৃতে পিভরি পু-ত্ৰেণ ক্ৰিবা কাৰ্য্যা বিধানতঃ। ৰহবঃ স্যু ৰ্বদা পুত্ৰাঃ পিতৃ ব্লেকত্ৰ बानिनः ॥ मर्दियाञ्च मछ कृषा क्लारकेटेनव जू यद क्रजः। जरवाः ৭ চাৰিভক্তেন সৰ্বৈ রেব হৃত তবেৎ।। পুত্ৰেণেত্যবিশে বাৎ স ৰ্বেবা নৰিকানে প্ৰাপ্তে জ্যেষ্ঠ স্য সাকাৎ কর্তব্যতা মাহ বহব ইতি । জ্যেষ্ঠেনাপি সর্বেষাণ ভ্রাতৃণাণ

ভবজু ইতি म्ड खान इश्विकत्रन जवा-मः धारम् इ कुछः क्या गर्दे त्रव कुछ त्मर खद्रदेश छानानी जरा। সংসেবে চ জ্বাৎ জবাণ প্রাপ্ত-ব্য নিভি হ্রন্থা কর্ত্তব্য । যদি তেন তম পরিশুধাতে তদা স ঋণী ভ-ৰতি প্ৰভাৰাৰী চ ভবতি। ন তু তেন আছান্তর কর্ত্তব্য মিতি आक्रबिरवरकाकः कुछः। भूथ ६-देनव मूखाः अर्या विठाटनन পृथक् क्रत्रका भर्म खट्यना निषकाता ६ । रक्षाकाम मिकि चरमोठा छिन তীবদিন স্বাদশবাসমূততিথি এ-কাহন্যনৰগ্ৰাসন্তিৰ সৰৎসরে-ৰু। নচ বিধানসামৰ্থাদেব তত্তৎ कानशास्त्र तनर्पक निम निष्ठि বাচ্য । ভত্তৎকালানা ভালশা-शामात्राक्या आयानात्वाधनार्थ-वार ॥ ।।। अजा जानसार अ-नश्कानाः भू माटेकवानुवः कवा । অহিতেশ্চ শরীরুন্য বাদশাহঃ क्षमगढ़ा। इंडि वाषुत्रहताक अभ्याक देखारनन जनागत ক্যোভিঃশান্তাদিক্ষাত্রাটিতিম-वन बारकी शक्ष वानि स्माहत्म गानि-गमनानुत्रात्रादम्य मिश्वीक्रवर्गा-

भक्र व कार्ना हात्रक वा छ क नवस्थानाचि देवीनिकाक्षनितिः अरुः। अरुः सा क्याक्राता मि-**जारम रंगर से मृश्विः सम्मर्गा**ज रेशातमान नामकत्रभाषियु-सार्थ अस्तागकका न बगारना-क इसामूडामार्याभवर्यः कार्या ইতি তাৎপৰ্য্যাণ। অভএব লঘ্ शतीरा जरेश्य कामा यद-कर्म बस्मना । धारमामूर इंडा-रमन कागामगालकर्वमित्रिक्छ।-नाखीकुंग्डन। यसि प्रावनाकवृ-क्षितिम्छनागकरः क्ष्ण सम ইক্টাপুর্ত্তাদি কাষ্য বৎসরাভ্য-ন্তরেশি কর্তক মিত। আদবি-বেকেটেগ্যৰ শংকাপি গোভিল-मृद्धारको मिनिक्स्मिन्देशन्तान्य-র্যঃ প্রান্তক্ত তথাপি সপিতীকর गानकर्य ७९ मूर्वकर्य ग्रामाना विनि उनामिजन उना वानन कर्यः া সণিভীকরণাভা তু কেবা প্রে-তিহাৰ বুৱৈৰে ইভি শাভাভগ-नगरम ट्यानकियानाः गणिनीक-রণাক্তম প্রতীক্ত । জ্বা স্বত্র বৃদ্ধিনিষিত বিনা সপিওনাপক-র্বে ক্রতে পূর্ণসম্পানকাল-প্রা-या व्याज्यभन्नीमान मार विसूध- त्याखतः। इत्क जिल्लीकर्तः भवः गद्दभ्यता भवः। त्यिक-तिरः भविष्ठाका त्यागत्रः श्र-भवात्य। वृक्षिनिविष्ठकेप्रणि-क्षित्रभागक्तर्य इत्किन्छ। क्ष्रभा-त्यागकर्याथ। व्यक्षानानिवि-त्यागकर्याथ। व्यक्षानानिवि-त्यागकर्य इक्षिकानः श्राभा त्थागकर्य इक्षिकानः श्राभा श्र्मिष्ठभत्रकानज्वाज्ञाथ। ज् क्षिक् गद्दभत्रकानज्वाज्ञाथ। ज् क्षिक् गद्दभत्रकानज्वाज्ञाथ। ज् क्षिक्षा। क्ष्रिक्षाणक्रम्यक्रम्थः क्रिया। क्ष्रिक्षाणक्रम्यक्रम्थः क्रिया। क्ष्रिक्षाणक्रम्यक्रम्थः विक्षा। क्ष्रिक्षाणक्रम्यक्रम्थः

স্পীতকঃ পু॰ রাজকোবাতকী। ইতি রাজনির্যক্তঃ॥

সনীতিঃ ন্ত্রী আয়ীবজনসহমিলিতৈককালপামণ। তথপর্ব্যায়ঃ। তুলাপান•২। ইত্যমরঃ
।। সহসীতিঃ ৩। ইতি শক্ষরত্নাবলী।।

দলীতিকা স্ত্রী হস্তিধোষা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

শপ্ত ত্রি সন্ধ্যাবিশেবঃ। সাত ইতি ভাষা। বহুবচনাজ্যেষং। ভত্মচকানি কথা। পাতালং ১ मानः स्वातः अमन्तः । वतः

मानः स्वातः अमन्तः । वतः

माना १३ भर्तः । विकि क

विकत्रना ॥ मश्रमन्याविभिकः। यथा। मश्रमन्याविभिकः। यथा। मश्रमन्याविभिकः। यथा। मश्रमन्याविभिकः। यथा। मश्रम्याविभिकः। यथा। मश्रम्य विनित्थ

व्यत्विका स्विग्रम् मथ क्रिन
कामिकः। न्यारमणिका म

मिकः टिकद्वथगथराम विधाराज्ञ। विकि क्याणिस्द मीभिका।। स्वि क्याणिस्द मीभिका।। स्वि क्याणिस्द मीविका। स्वि क्याणिस्द मीविका। स्वि क्याणिस्द मीविका। स्वि क्याणिस्व वामवार्य काः मश्रम्थ ह ॥ देवि
भगीस्त्रमर्भाः।

দপ্ত: ত্রি সপ্তম:। যথা। সপ্তা-ফীন্ডাবহি: শুকৈ রুডুপতাবে-কাদশ দ্বি ত্রিগে। ইতি জ্যো-ভিন্তব্রণ।।

मक्षकः जि मक्षामाः भूतवः ।
स्था। साहित्क मक्षत्क त्ययः
जूत्व यूग्र रूपो छथा। निः इ
स्टिंगमा वर्ष्णो मृष्टिः छजाववीष्ट्रियः ॥ देखि क्ष्णाण्डिखः ॥
मक्षमःभाविभिक्टः। यथा। यकः
काम् महिजा ह हकाम् भास्ति
द्वर ह। मीनी दिवी ह विस्कर्पा

बक्षिक महारक्ष संबंधा है है है मूक्ष कार्यक्षण मुख्यामा माना । महारक्षण महारक्षण अस्त महारक्ष पार्ट्यक अस्त है ।

मश्रकी खी काकी इंडायतः॥ मश्रामायतः की मश्रामाः गाः मायतीगाः मयाशादः। देखि मूक्षः त्यावयाकत्रगः॥

गश्राह्मः भू वृक्षवित्मयः। इनि हिन् हेडि छाया। छৎ भर्यायः। श्राह्मभू भारत्यः । मनि हिन्द ह वृद्यक् द वह भर्वः । छ मान्यनिश्वकः न महाग्रमः । शक्षित्रं क्षा ख्राः। व शक्षित्रं का ख्राः। ख्राः। हिन्द्रं । ख्रिम्पः। बित्सायप्रपः । मीन्यत्रः। सम्मानिष्यः। द्र्वः व्रक्षाय्य इस्मानिष्यः। हेडि वाक्षविक्षाः। ख्राह्मग्रं भर्यार्थः।

मश्रीक्सः श्रूष्णिकः। देशि विकाश्राम्यः।। उमा मश्रीक्रिः।सार नामानि तथा। काणी कताली व मस्मुक्षां। जेला श्रीशा
देवत मृत्युक्षां। जेला श्रीशा
व स्वीविद्यादमः मदेशत कीलाः
कथिता क जिलाः।। विकामईस्व ज जेशा श्रीशिद्याः श्राम

क्लिमी विश्वासम्बद्धिमा भवतः। रेकामहर्मिका मात्रगूरमती ।। क्यंबिटनस्य छोनाः नागानुः द्रानिक्या। विज्ञाना अक्सका २ त्रका १ क्रमा ८ मूळका ८ रहन-গা ৬ অভিনত্তা ৭ এতাঃ সাত্তি-त्का मानकर्मि । कानाकर्मि जू। शबदाशा ३ मूनर्वा २ छछ-লোহিতা ও লোহিতা ৪ খেতা धृमिनी ७ कहानिका १ ०ठा त्राजगाः। ज्ञत्रवर्षाः। वि-यमूर्जिः > क्रुकिनिमी २ शृतु-वर्षा ७ बरमाजवा । लाहिज ৫ করালা ও কালী ৭ এতা खानमार ॥ 🛊 ॥ এठामा मिर्व-গ্রাভূদেবভাৰ্থা। অমত্য পি-তৃগন্ধৰ মঞ্চ নাম পিশাচকাঃ । त्राक्ताः मञ्जलकाना मीविठा व्यवस्थित्वाः ॥ 🐞 ॥ এठा त्राः वर्ग मिष्डियरको वश्रा अरनमवि-गर्विशा । हिन्नशा छश्चरहमाछ। मृलभारन मिलि क्लि। देवम् का-वर्ग कनका थाला हिन नमा প্রিতা ।।' তরুগদ্বিত্যসক্ষাশা রকা কিবামিক বিতা ৷ ক্লেকা नीवाञ्चकाना देनस् छा। पि-नि मक्ता। मूक्ता शब्दा-

সপ্ততন্তঃ পু॰ বজঃ। ইত্যমরঃ।।
সপ্ততিঃ ন্ত্রী সম্ব্যাবিশেষঃ।
সক্তোর ইতি ভাষা। বধা। নবতি র্বোজনানাঞ্চ সহস্যাগাঞ্চ
সপ্ততিঃ। যাবদ্বটিকদাত্তেণ তাবচ্চলতি ভাক্ষরঃ।। ইত্যাদিত্যক্দমণ।।

गश्चित्रका जि मश्चाट्यः भूतनः
। मश्चित्र भक्षाः भूतनादर्थ स्वर्षे
ध्वार्य निष्णमः। देवि व्याकतनः
मश्चित्र जि जावा ॥ छ० मण्याविष्णिः। यथा। जय देव मश्चमण ध्वार्याणि र्यस्य चवार्याः। देषि मलमामञ्जः।।
वह्यहमास्या २वः।।

मश्रमणः जि मश्रमणानाः शृत्रवः १ वर्षा। छछः मश्रमण्य काठः मछावष्ठाः श्रदाणताः । छट्टा द्रवष्ठद्राः भाषा पृष्टुः शृश्या AND WATER IN SECTION AND ADDRESS OF THE PARTY OF THE PART

সপ্তদীপপতি: পৃং সপ্তদীপানামধিপতি:। বধা। ন মুখ্যাসাকা
ছেশ্যাত: নভার্যা ঋদ্দিসংস্তঃ।
সপ্তদীপপতি জাতঃ সূর্য্যাযুতসমপ্রভঃ।। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বধৃত মৎসাপুরাণ।।

मश्चीं ना जी शृथिवी। वशा।
सामाः वावजुवमामन्मन्याः
ख ७९ मनाः। देव तिवः शृथिवी।
मर्वा मश्चिं ना मश्चिताः मश्चिं मश्चिं ना मश्चिं ना मश्चिं ना स्वा । एकः
वाः नामापिषी नगरम प्रकेशः।।
मश्चिं वा मश्चिं नश्चिं नश्चिं।।
मश्चिं वा मश्चिं नश्चिं नश्चिं।।
प्रकेशः। मश्चिं नश्चिं नश्चिं।।
प्रकेशिका प्रकेशः।।

मश्चर्याः १ भद्रीद्रष्टमश्चमः थः स्थाप्यः। जन्यशः। द्रमाम्, याः मः स्टामः १ विकासः स्थापः स्टाः। सदीद्रदेशं स्थापः विष्क्रयाः मश्चराज्यः।। देखि

BUTTON TOTAL BANK TOTAL 412000 1 MAIN 1 MAIN 448-नाजीहरू । जानावः मध्येन काशिक्तकार्भाषकः। रमन विकासभारत । वृशि छ। बिक्र मानकाः।। इक्तिकारीनि सनानि ना जिल्हिं बाटमन है। मश्रमाञ्चीनाम ख्या कर्तवाः ११-মগান্তুভিহ ম ভারা চতুক্ত বেংধ-म नाडिकिका क्षेत्रावरक। छा-गा॰ नामानाकः बटका उथा टेव कलानि है। कु छक् है र विभा-या ह ३७ देखाया ३१ छत्री २ ७१। । एक्षा मनिनाणी गाक्रथनाणां क्या महा।। द्रा-हिनी 8 साठी अद दबार्श ३৮ १ विशेष माडिका महा। चारिष्ठाञ्चलया नाष्ट्री यायूना-**डी डर्ब्स्ड है। इमेगार हि**वा 38 छथा जुन- ३० ल्यो सर्कश्र २१ ठड्डा देश क्रिकामात्रका नाडी क्रम्माथा ह मचडा ॥ द्वीत करें के अपना ग्रामा **। ४० अजगदमान्या २०। ५**-जूरी कीवमा नाजी मोगानाजी

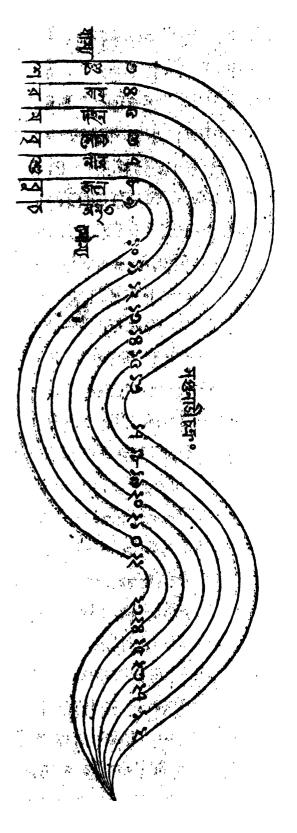
SERVIN

थकीर्विका। "मृन्देगु १ खत्रम-ञ्चनु >२ खंत्राया ५३ छात्रकाः। পূৰ্বভাৱা চ ২৫ খকাখা গৰুমী নীরনাডিকা।। পুরার্কণ ৮ কন্তু-নী পৰা ১১ অভিজ্ঞি শততা-त्रकाः २६। यष्टी नां जीक विरेख्ड या बुधाया जनगाँ किंगा। जातान-र्कः २ गका ३० विकृ २२ र्थमिष्ठां छ॰ ২৩ তথৈৰ চা অমৃতাখ্যা হি সা চান্দ্রী সপ্তমী চন্দ্র নাডিকা।। ম-ধানাডীস্থিতা সৌম্যা 🛖 ড়ী ত-मााव পृष्ठेचः। मोमा गीमागठः জ্ঞেষ নাডিকানা ত্রিক ত্রিক ।। ক্রা বাম্যগতা জ্বেবা সৌম্যা **मियामिनि विका। यशना**की ह মধ্যস্থা গ্ৰহ্ৰপ ফলপ্ৰদাঃ ৷৷ এক-নাডীগভা দ্বাদ্যাঃ গ্রহাঃ কুরাঃ শুভা বদি। ততো নাডীফল বা-চাণ শুভণ বা ষদি বাশুভণ।। এ-হাঃ স্ব্যু শ্বহাবাত গতা শ্চণ্ডা-খ্য নাডিকা । বাৰুমাডীগতা বা-যু॰ দহনা শ্চাভিদাহকাঃ।। সে-ম্যনাডীগতা মধ্যা নীরস্থা মেঘ-বাহকাঃ। জলাষা বৃটিদ শচন্দ্ৰ-শ্চন্দ্রনাডীগতা স্তথা।। একোপি তৎ ফল দত্তে স্বনাডীস স্থিতো এহং। ভূস্তং সর্বনাডীযুদতে ∦

नाजीनमः कर्ने ।। क्षेत्र्वित्रका कू ने म्यूं। एक देवी जिसक गर्छ बर्दवी। नाजीरंक्य नमारंकारण केनंद्रमा-१९ वर्षाग्रहः ॥ यव नाषीदिष्ठ শ্চক্র স্তত্ত স্যুগ খেঁচরা যদি । ক্রাঃ সৌম্যা বিমিঞাশ্চ তদ্দি-न वृष्टि इन्छमा।। এक शक्रममा-**ट्यारगा जायरज यिन (थहरेतः 1** তৎকালে চুমহাবৃষ্টি ধাবদ-म्या भारक मानी ॥ (कवटेनः (मी-টেম্যঃ পাৰ্টেগ ৰ্বা এটেছ ৰিন্ধো.যদা শশী। তদা তু তুচ্ছ পানীষ দু-किन् ७८विषुवः॥ यमा अहमा नाजीय भक्तमा छम् थर्ग ह। দৃষ্টো যুক্তঃ করোত্যন্তো যদি ক্ষীণো ন জাযতে ৷৷ স্ত্রিযৌ সিতা-সিতৌ চৈব সৌরি সৌম্যো ন शुः मरको। शूक्रकाः शूक्ररेव बीकृः क्रीरवो जू वृषकाकृत्नों।। ख्री पू-क्रव नमारवारग वृक्षिस अवना ভবেৎ। পীৰ্ষনাডীগ শচ্জ স্তত্র খেটাঃ শুভাগুডাঃ ॥ **म्हजूः शक्ष भागीयः मिनार**नाक ত্রিসপ্তক ৷ এব জলাখ্য নাডী-স্থেচন্দ্রমিশ্র গ্রহান্বিতে।। দিনা-क्षि पिरमः शक्षिमानि जायट জল । নীরনাডীঙ্গিতে চন্দ্রে

কপ্তদা ভক্তজন্মগণ বথা ।

छबरिश भूर्ववस्थरेहा ॥ सामः पिनार्कक जीनि पिनामि जाय-তে জন। অস্তাদি বিনাডীবৃ यपि मृशः गर्वत्थानद्याः ॥ छत वृष्टिः ক্ৰমাজ্জেষা ধৃত্যৰ্ক বস বাস-त्रान्। स्त्रीमानाष्ठीशठाः मर्द् वृष्टिमा एख मिनजय ।। (भवा ना-**णाः महात्राक मूक्टवृक्टिश्रम। अ**-शा निक्रना क्रमा नाणी ज বেদেয়াগো শুভাধিকঃ।। ক্রুরাধি-क म्यादवारम जनमा कालि नि-व्ह्रनाः। वामानाजीगनाः कृता जनाव्छिअनुहकाः। एउन्दूका জলাশহা শ্চাতিবৃষ্টিঃ শুক্তা গ্ৰ-शः। একৰাজীসমাষ্তে চল্ল-या धर्तनीमूट्या । यमि छ्व छ्टव-क्कीब छना वाजिस्यी मही। तूथ खळा यरिक्क धक्रण ह नम-बिञ्जा। চल्लरबार्य छमा काटन জাযতে বৃষ্টি রুদ্ধমা। জলযো-থগতো স্যাতা ফ্লা চন্দ্ৰ সিতৌ व्यरहो।। क्रूनमृत्की यूट्डी वानि छमा ब्याया १ जन्यिमः। छम्या-ন্তগতে সার্গে বক্রযুক্তে চ সং-क्रिंग। जन नाष्ट्रीगठा रह जू मर्ष्सिथाना धराः। देवि श्र রোদ্ধে সপ্তনাডীচক্রণ।।



সপ্রনাষা স্ত্রী আদিত্যভক্তা। ইতি রাজনির্মন্টঃ।।

मश्रेषटाः प्रमातम्बः। इंडि त्रास्तिर्यकः॥

मखननी जी मुखानाः नमानाः नगहातः। हेचि वाक्त्रवः ॥ विवाहाक्रमखग्रीशतमः यथा। ততো জামাতা প্রাপ্তদীচী গ দা বধুণ সপ্ততি শক্তিঃ সপ্তমণ্ড-विकान मञ्जूष्मानि नरप्र। व शूम्ह प्रक्रियशायः नीषा शम्हा-घामशामः मखनिकाः नरम् জाराजा ह र्युः जाराय। वात्य-न शारान मिक्न भाग माका-भरवि । मञ्जानाः मञ्जाना गृह्याः मयः गांबात्रवाः। প্রজাপতি श्र-বি রেকণাদিরাভূছদেন বিষ্ণু-क्तिया शामाकामत्व विनित्या-गः। अम् এक मित्य विकृ छ। नरज्। एवं छेटकं विकृ जु। नयजू। कीनि बंधाय विकृ स्त्रा न रजू। ह्यादि मारका खवान বিষ্ণু জান্মতু। পদগওভা विक् खी नक्षा वजाबरन्था-याय विक् जु नवजू। बश्च म-প্তভ্যো হোত্রাভ্যো বিষ্ণু স্থা ততঃ স্প্তম্ পদ नश्जू ॥

गणाः वशः शि द्वाभादाः शः कागि श्र वि द्वाभादाः । कागि श्र वि द्वाभादाः । नेवा मेश्वभादाः । नेवा मेश्वभादाः । नेवा मेश्वभादाः । विनित्त्वागः । विनित्त्वागः । विनित्त्वागः । विनित्त्वागः । विनित्त्वागः । विक मेश्वभादाः । विक मेश

স্তঃ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। षनार मश्रक्रमभय प्रकेताः॥ मक्षभगी जी नकानूनजा। देखि त्रक्रमाना त्राकनिर्धकी ॥ সপ্তপাতাল ক্লী সপ্তসংখ্যকা-स्थाजूरनः। यथा। जामिकातः শিতো দেবে৷ কুত্ৰৰূপী জনা-দ্দনঃ। নিঃস্ত্য প্রথম যাতঃ পাতালতল মন্ততঃ।। সপ্তপা-তাল সংস্থা-স্ত নাগ গন্ধৰ রাক্ষ-সান্। দেবানৃষীশচ শেষা भচ জ্যান বরশূলধৃক্।। ইতি কা-লিকাপুরাণে ২৪ অধ্যাযঃ॥ ত-ন্নামানি যথা। অতলং বিতল-দৈৰ নিতলঞ্চ গভস্তিমৎ। ম-হাখ্য পৃতলঞ্চাগ্র্য পাতাল मक्षमः विमुः॥ ইতি ভরতः॥ मक्षपूर्वमृः खी मक्षपूर्वयमृषा। তৎপর্ব্যায়ঃ। সুতবন্ধরা ২। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ সপ্তভদ্রঃ পুণ শিরীষবৃক্ষঃ। ইতি अक्टिका ॥ मक्षमः बि मक्षाना भूतनः। माजूँ रे रेजानि जाया। यथा। ल्यां कं कुर्यामाः थिवा माः शिक्षजागिनः। शिक्षमः সপ্তম স্তেষা সাপিত্য সাপ্ত-

लोक्रयः ॥ इति छन्निछन् ।। मश्रमी जी किथिविद्यासः। हस्य-मा मश्रमकना किया। एक छ-ক্লপকে অমৃতপূর্ত্যবচ্ছিমর্সপ্ত-यकवा किया। इस्थादक जू অমৃত্যুকান্ত্রসপ্তমকলাক্রি-বেতিৰিশেনঃ।। পঞ্জিকাষা ত-मा स्वापः एकशत्क १ व कशत्क ২২ 🕦 🐞 🕕 তত্ত্ব জাতকল । কন্যাপ্ৰজ্বে বৈৰিক্তলেভদিণ-হো বিশালনেত্রঃ প্রথিতপ্রভা-**बः। एमव विका**र्कात्रमित्का य-হাত্ম স্যাৎ সপ্তমীজঃ পিতৃ-বিত্তহর্তা ৷ ইতি কোষ্ঠীপ্র-मीनः।। ।। ज्य मस्मी। मा চ ষষ্ঠীৰুতা আহা ৰুমাৎ। পৈ-ठीनिन वहनाक । यथा। शक्यी मश्रमी देवर मनमी व बदयामनी । প্রতিপদ্ধবনী চৈব কর্ত্তব্যা সাণ-मूथी ७थिः॥ मांभूथा मूकः कारमः। माःभूषाः नाम मायाः इराभिनी मुगादक यहा। जन এব পরদিনে ত্রিসম্কাকালাব্যা-शिष्य यष्ठीयूक्तमक्षमा। यूशवाम गार् खिरिया भूता ॥ यष्ठी मद ग-ত। कर्डवा। मक्षमी नाखमी यूठा । পতকোপাসনাবেহ ষষ্ঠ্যা মাহ

क्रट्यायन ॥ यथा উट्यायटन छथा কর্মান্তরে। তথা। ৰঙ্গা বভা मखनी ह कर्डवा। मर्दमा छिनिः। ষষ্ঠী চ সপ্তমী যত্ৰ তত্ৰ সন্নিহিতে৷ হরিঃ।। ইতি কশপুরাণাৎ। তথা । শুক্লপক্ষস্য সপ্তম্যা সূর্য্যবারো यह। ज्दर। मक्षमी विजया ना-य एक पछ॰ यहाकल॰। ভবিষ্যে । भागिञ्खूनश्रद्धमाः क्र्यापनः मून क्ष्र । भूषा व हक्रक पंषा সপ্তম্যাঞ্চ বিশেষতঃ ম বাৰম্ভ স্ত-**थून। खिचारेबरवरमा भित्रमः था**या । তাবদ্ধসহসাণি সৃষ্যলোকে म হীয়তে।। গো**পথ**ৱান্ধৰণ। ছা-ত্রি॰শৎপলিক॰ প্রস্থ মুক্ত॰ স্বৰ-मथर्बना। क्लालिट्या भनाव लोक्टिक बाटिनः माख्रति कि মাৰক। তোলকত্ৰিত্ব জেব জ্যোতিৰ্ক্তিঃ স্মৃতি সন্মত ।। তেন চতুরত্তিকাধিক মাষপঞ্কাধিক বডধিক শততোলকবিতাঃ প্রস্থ-करमाः कन्नजां क्रमाः (कामाः। এবং দেবতান্তরেপি তত্তলোক মহিতত্ব ফলেন কন্নবিতৃ যুক্ত। অতএব শিবেপ্যেব বক্ষাভে॥ 🚓॥ বরাহপুরাবে। অথাপর মহারা-

জ বত মারোগ্য**স**ণজিত**।** ক**থ**-ৰামি পরু পুণ্যু সর্বপাপ প্রণা-श्वमा। ममूर्णाविजः। शुक्राय-স্কান্ধরণ দেবং বিষ্ণুৰূপণ সনাভনণ া আদিত্য ভাক্ষর রবে ভানো সূর্য্য দিবাকর। প্রভাকরেতি স भूष्का। एतवः मर्स्यस्ता त्रविः॥ यक्वारिककङ्ग्ठाह्दः मक्षमाः मः मूरभाषिजः। अखेमगरिक्षत जुङ्गी-ত এব এব বিধিঃ স্মৃতঃ ৷৷ অনেন ब्दमन्न शूर्न विधिन। यार्करम-**जिति । जिल्ला जिल्ला अनि । जिल्ला जिल्ला अनि । जिल्ला जिल्ला अनि । जिल्ला जिल** মিহ জন্মনি জাষতে ৷৷ পরত্র চ শুভ॰ স্থান• যদাত্বা ন নিবৰ্ততে ৷ সপ্তম্যা॰ সমুপোষিত ইতি আ-**मिकर्मा**नि ख्रः। তেন সপ্তम्যा• সম্পবস্ত মারন্ধবানিত্যর্থঃ৷ ত তশ্চ প্রাতঃ সপ্তম্যা মেবোপ-বাসসক্ষঃ। রবিশ্চ বিফুৰপ-তথা পূজাকালে ধোষঃ। অভি-লাপে তু তত্তিথাবিত্যুক্ত্বা আর-ভোতি ঐহিকারোগ্য ধন ধান্য পারলোকিক শুভস্থান লাভলা-मः मस्थमः स्विमाद्राभावछ মিতি বিশেষঃ। ততঃ প্রভৃতি স-প্রম্যা মুপবাদ পর্বন্। আদিত্য

अक्टब तरक छोटेग। मूर्या मिक्सि প্রভাকর ধন স্তভ্য-অন্মার্ট্রোগী-विद्याह्य।। रेडि बद्धन भूजर्यर १ व्यव वर्षापियू छ्छ ६ कर्षं विदा-ৰাৎ বন্তীসঙ্গেতেত্যস্যান বিবয়া। কালিকাপুরাণে ভক্তণ প্রতিসূর্ব্য-ৰাক্য•। অদৃষ্ঠা মা• ৰ ভূঞীত 🖟 भूाज॰ रेनव मर्नरायः। **७वार्य म** দর্জাধৃতনিশ্মাল্য শরীরে ন তু शांतरकः। जर्का श्रविमां।। অধ বিধানসপ্তমী। ক্নতাচিন্ত্যা-সুমরিচ তোষ ফলফাশ্তে মৃ-नः नक मूर्णायनक विधिवद क्रे টেম্বকভক্ত নরঃ। শীর বাযু শন॰ ঘৃতাশন মিতি প্রোক্তান্য-मृनि क्रमार। कृषा घाष्णमर्थः ষী দিনক্ষতঃ প্রাপ্নোত্যভীষ্ট ক-मः॥ चब চार्काथामी छत्र खाक ননিবৃত্তি রবসীযতে। তপস্তাৎ । তথা চ মৎসাপুরাব। তপো ডিঃ প্রাপ্যতে ২ভীক নাসা शः हि छनमाजः। मूर्जनकः वृशा लाटका बरूटक गिंक गांबरन ॥ ভণসং ক্লেশ স্বভাবত্বং ভৱৈবো ক্তণা উৰে ২তিচপলা পুজি ন ক্ষমণ তাবকণ বপুঃ যোচ্ছ ক্লেশ

चेंडिक्ना डर्मनः देनीयामन्दिन ॥ ষ্ঠিত মুক্ত মুখা। আকগতা দুর-मखि भेडरीक गृरीठकना कशि-मार्विड्रवनार्व । मञ्जूमा नित्रहर ज्ला । करनी कन्य राष्ट्र कना-मार्व मश्कर । किली मूर्वि वर्गा-ख॰ याष्ट्रीयाँ विश्वटंग करेगे ॥ छकाउ॰ মিতৌদন 'ৰক্তিৰ' গুৰ্ফে পিবসন তথা। একউউ में चूतां । প্রমাণ ভোজদ মত ।। আৰ্মপ্রসূতি মা-ত্ৰম্ব কপিলাদুশ্বভাকণ টি সামা मन्त्रुका मार्किक आंधारमा वायू-मानदेव । वृष्ठ यद्ये त्रीव्यादन बायामकः नर्गातंत्रदेशे 'जाकवान् ভৌজবৈস্তজ্ঞা গুড় কীর নিরা-निर्देशः ॥ विश्वीयं मिन्ना एमरा वि-ভবদ্যানুদ্দপতঃ কিউয়া পা-जन कर्गार्ट केंद्रेस बहिरेजन है।। गूका माब छिनाति। निवृष्ट देक्त वि-रक्टरंगर। अविभिन्न क्षा मूक यक् विधान्त्रोत्रकः भिक्षाः धव्य-छमा याचार्मिनामदिरनेव विश्वि-कर्यत्वन मेनिमीटमेजेदकर्खनाष मार दिनिक लिये गुजान । धात्रक তুৰ্ত্ততে শশ্চিৎ সম্পূৰ্ণতৈ দ্ববিমা-সকে । পূৰ্বমানেন ত' ত্যুজ্বা কা-र्याः वामणयागिकः॥ शूर्वगादनन यमित्रुष्ठः स्वागस्याद्यनः। छः यः नवायः। कामनाविकः कामन यारमेरवर कार्यक्षनः सन्यानः केवाः

1. (4) यः रद्धारपरीः अभवताः।.. (नाम्पाशनः कार्डाः निष्णार जग वान् लितः॥ इक्तिविस्वरमा व **চ**नः। **ज्यास्त्रितस्यानिक मा**त्र गावक हें बा। माराजा। मि उठक ई-वाजाशवः। जिल्लाशनः शिविष्ठा। এব সারস্থোগি নিবিদ্ধঃ। গাগাঃ । जन्द्रः गर्छ शरहो शरक वारम वृत्क स्विष्ट्राः छेशायन गूशाः तकः वकानक देनन कान्नत्वर्थ।। **উপাर्नः अञ्चित्रा । उ**लात्रस्य मा-त्रवः। बरुष्य कानाश्विमाखनः त • छल्लाक निश्क बरम शो तवा ९ ।।।।। छहित्य। छाटसमानि नि **७ शर्क नक्ष्याः निवस्यन या।** নামা শিবং কেখনিয়া সম্ভলে চ गरां विकश्रा शुक्रदशक छन। छना। मृत्यानः देसक विद्यादक । देशः प्र कृषीवण्टका साम्बन्धा । ।।। छ-वित्या। मूर्वा अस्थल्या हि एका गायमा मक्षमी अकलामर व नायाः जमां ज्ञानः वहाकनः।। यादा गामि मिटल शब्द मक्षमी

क्लिडिडाइन। यसार नानारी मानाजा मार् द्वाद्यागा जन्मका। अक्र वाष्ट्रवाचा अक्र माध-मा मश्रमी। शक्राकाः यति नाजाः ত সূৰ্য্যগ্ৰহশতৈঃ সম। ॥ কোটি-ভাষ্করা কোর্টি দপ্তমীতুল্যা। সূ য্যগ্ৰহণফল সানজ সমিহিতে বুন্ধি রম্ভরদেতি ন্যাবাৎ। তেন বহণত সূৰ্য্যাহণকালীন গলা-न्नानकनारुवनगरवाशीक्षः क-म मत (छार'। ञात रहमा गृ-ৰ্য্যগ্ৰহাণা প্ৰত্যেকাধিকরণতা मःमर्श्वाम्याय कालानाः न्ना-नाना॰ তৎकवाना मिश वहम-তত্ব' লভ্যতে অতো নাপ্ৰসিদ্ধিঃ । পূর্ণসপ্তম্যাণ পূর্বাপরমো র্যতা-क्रांगिषकारम मेखमी छव भूर्व-দিনে তৎকালে স্নান । চতসো ঘটিকা প্রাত রক্তণোদষ উচাতে। যতীনা॰ দানকালো ২মণ গলা-ম্বঃ সদৃশঃ স্মৃতঃ।। ত্রিবামাণ রজ-नी॰ थार खाकुामाख ठजुरुंगः। नाजीना छमूट्ड मरका मिरमामा ন্তস-জ্ঞিতে ৷৷ ইভি কালমাধ্বী-यम्ञ उत्तर्रिकीयमः পূर्वमा ७९ कानमा भूनिजियमञ्जलिनकर्छ-वा क्यांक्रावन देखतमा छाउता-

) ,

त्ररचनाञ्चिशानार्। चळ्यदाम्टकः ৭ তৎকাল মারভ্যাত্মিকক্ষত্য ম-क्रिहिन्। अबाक्ररनामयकारम म् মূর্তান্যন তিথিলাভ এব স্থানঃ। ব্ৰতোপৰাস সানালে বৃত্তিককা यमा अत्य । अम्रत्य मा जिथि जीश आकामारङगामिनी ॥ ইতি বিফুধর্মোতরাৎ। অত্ত য िका बृहुर्छ॰ खाक्तरबागा काना-মুরোধাৎ ইতি বক্ষাতে। এক दैववर्खवहदम घरिका मधक्रमा भः **রবচনে নাডীনা মাদ্যস্তচতুষ্ট**য মিত্যেকৰাক্যত্বাৎ ॥ 🛊 ॥ বে তু সূর্ব্যোদষাৎ প্রাগণি প্রাতঃস্নান বিধানাৎ তবৈৰ মাঘসপ্ৰস্যাখ্য धनकनविधि नीघवामिकाङ सः किन्छा । अक्रमानाम् अस्या-क्रनानाष्ट्रः देखि देक्षिनिमृद्धः। धकद्वनरप्डरम छनविधामिरकः । অতএব কর্মতরু রত্নাকরযোঃ। य रेट्हिपियान् जागान् ठख সুৰ্য্য গ্ৰহোপমান্। প্ৰাভঃলামী ভবেদিতা हो माम मान का-স্ত্রনৌ ম ইভি বিষ্ণুস্মৃতৌ নিত্য-সান প্রকরণাত্তরায়া-নাৎ প্রকরণান্তরাধিকরণন্যা-ষেন কাম্যন্নানান্তর মিদ মিত্য-

कः नकु अभूकन विधिः। किन्न कामाक्द्रभ अनकाविकानिक-রিভিন শক্ষ্যাস নিমিত্তক শাষসপ্তমীনিমিতক কাম্যনান-त्याः वार्विशानाः देनियितिः क्रवन आयक्तिक्वक महमन्थे।-न । श्रमानमाजिना यव मान ७६ किंगरक शुन्त । जन्मगाकि-বাষাত নাৰ্ভি ৰ চ তৎ ক্ৰিয়া।। रेि काजायनकना । नजान याहरत्रकुक नाष्ट्रवा न महानि-শি। ন ৰাসোভিঃ সহাজসুণ नाविखाएं जनान्द्रशा हेि यन् वहत्नदेनकमाञ्चलानित्य-शाका । अर्थिविद्याल्या सान या-क्रिक्क भूमः भूमः । द्रेष्टि मनूवह-नाक। जर्भ नाजीवश थक-त्रवर्णस्य व्यथानामा अणि कागा-नाः তত्তामा सामा विश्वानाः তন্ত্ৰেণৈৰ সিদ্ধি বিজি শ্ৰোদ্ধচিন্তা-मनिः। निकास विकृष्टी छिक्। म-**राः गूजदाः महत्त्वम्**क्षानः। ७१ ভারতম্যাৎ ক্লভারতম্য ইতি नगरक कनः विकास छन् रेक् ক্ষীর গুড়াদি মাধুর্ব্যভেদবরির্দে-क् मनका । भका खरति कना एक রবৌ আদ্ধ প্রশ্সতে। কন্যা-

গতে গঞ্চমে জু বিশেষেট্ণৰ কা-त्ररवरः॥ ३७ि रहमाणिष्ठाकिन পুরাবেভিবৰ । এতথ্যম প্রাপর্ক কার্ত্তিক মলমাসাক্ষবিবৰ বা দে-न कोनाक्षमें हेनेब्रे खेरा मानू म ता अवारो नृक्षणमानि मानमा गनाजिनसङ्ख्यः ॥ देखि बना भूतारमा**क्ष्यकः। श्रीपट्यर**म् रघः कमाणि नामां नाम । विनुविक्त-वरम आरखः भक्की वी विश्वासकः । इंडि उमार्यांगां निपष्टमां ६ छी-र्थरज्य । जेन क्षेत्रका ज्ञानस्य का चंत्रधन भना वाकावनी आ-किन्द्रांबदशारी कर्न्यवादग्रहा-হ্নাম লোডীক্লভেপি মাধ্যপ্ত-नी जीवानेविकारीय्रामणकरवान पूर नखरेशव खोखाबानाव्रतः जनगुः ক্তণ। তালীসভ্ত কানটৈস্যব বিহি-**७ वाद। जमार्थ। छ्यार्कन का**म-নাক্ষা-ভাগালন্ত্যাগভে রিভাক্ত-॥ अधिकारक शक्तिभागि बार हरू ण्य**क्षणं ।** भारति प्रश्ने । भारति प्रश्ने প্রাণি স্থার্কনভাগি চা শির্মি निशासः सम्बद्धानाञ्चल नागः मया गर्थम् जनम् । जन्म स्त्रायकः त्ना-क्क भाकत्री एउ मध्यी ।। हेणू-कार्या त्रायामिखिरणयः । त्राकः

ছিক্তা। ভিথিত্বভাগা পৌর্থনাল্য-ভ নাসাককদাসাকরীভিগদ 💝 করাকারৰ চান্ত্রমাসীয়ভিষ্ঠিত-त्र'। ভিপিক্তো চ क्रकामि बर्फ **ख्क्रा**पि य्यक्त । विवाहारणे ह क्लोत्रापि भाग क्रटल विनिर्धि-**लिया। हेकि उन्तर्तानाय। मक**् ন্তরাদিছেন তথা যুক্তদ্বাক। বৰ্ণা मर्नाभूतात्। यंत्राध्यक्षत्रात्नो जू द्रश मानू पिंवांकताः । भागमा-ममा मक्षमा। ७७१। मा त्रथम-श्वभौगा अकृत्भमयत्वनामाः जः স্যাণ স্থানণ মহাফল 1 অতএব नात्रिन्टर त्रथा। थावा विज्युक्तः। यथा। यहानकागाः चामगाः छ-त्रगा मिंग देवत हिं। उथाक बजुः তীযাষা শিষ্যানাধ্যাপষেৰুধ: ৷ मायमारमे जू मक्षमा तथा। था। याङ बब्हिट्य था प्राप्तभाग भक **निषानबादना। अंत्रगाः भव्यः** ধজপাত ভরণ্যা। ইতি কল্পভরুঃ শেঅত মহানবম্যাদি সাহ্চর্য্যা-দ্যৌণচান্তত্ব প্রতীয়তে। অতএব छ्यूर्फन मक्खब्रामिशनत्म कालि व त्राम्मारमध्यः। स्था खविषा माष-महरवाः। अश्वृक् शक्तनवनी वा-मनी कार्डिकी छ्या। ज्ञीश

रेठक्यांगगा कथी जातनगा ठ श का तुलारामाना वाका । त्याप रेगानावनी छक्षा वाराहनानि स्त्रकी ज्या मार्गा मुख्यी।। ज्या বন্সাক্ষী ক্লা তথানাচ্চ্য शृश्या। कार्छकी कान्नुसी होंबी देकाही शक्तमी जिला। वयखता-দৰ ভেতা দত্তসাক্ষরকারিকা ্ৰেত্ৰণমাৰ শ্যাফীৰীব্যভিন্নিক্তাঃ खकाः। भूनः श्रून खेशाभरमारम দানাৎ উপক্রন্থোপসংহারখোঃ শ্বরুত্ব কীর্ত্তনাচ্চ। অত্ত কামধ্যে নৌ ভূছীয়া চৈব মাহস্যেতি। ক-রতরৌ ভু ভৃতীবা চৈত্ররাসসো-তি বিখিল ৷ অত্ৰ পাঠৰৈধে ঞ্ৰী প্ৰতিরত্মনালাযাণ। অধ্যুজি শু-क्रनवभी सामगुरक्क नरशे जृजी-ষা চেতি পাঠাকৈত্ৰতৃতীবৈৰ আ-श। औष्टहारशाकः। माष्ट्रमञ्ज ম্যা শ্চারের সৌরা**গরে ২পি**ন **चर्कलटेकः नरमदेत मृत्वाक्य क** क्लारेनः । अकोकविविमा कार्याः महा। नामिकाञ्चेत्व।। नात्व २१ काञ्चाद वर्शन छत्तरे वात्रमञ्ज মী। মাক্ষীভিচ বংগোজা তং शारगवृद्धिमर्भमायः॥ प्रकाम

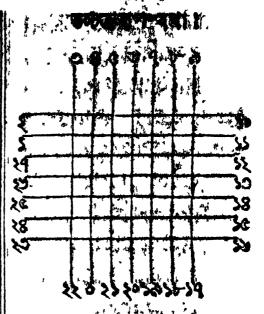
खाता वृद्धि निर्देशस्य । जागु-न्याकाकाकारम भूगा मन्यक्र मुकास विकित्तिकनुतानीत्यव । व्याविकार्यकाः वर्षे प्रानिवि त्नारम कर्मन मिल्ल भटेतः १ देनव वानाय महिल्ला अम्माया-निम्नीएड। अस्यादा छन्नी সর্বত্তানা সম্ভাগ করে। मखन्ताकाज्य कि नेम एछ त विगल्डण ।। जनावनक्छ। जल-मिख्यम् औड मनुःनामधरीयन । मलुकार हि नव संज्ञार भटना श्वलाय त्वरंग वि निश्चित्रयः १ रेलि छिपापिकव । स्था। गरा गी-बर्खित्म्या वर्षाः **बर्**काराष्ट्र १ जगमन् जनमात्रनायदम् छात কারক। কিব্ৰিড ক্লাচৰ ব-र्शारहाम् स्टब्स् । विकासान् वाहन दणीत्रमधी अवसी मिनाजा कन्मा भारती । विकास मर्खनी । **उदद क्लामा भागमानिती** ।। गर्कत्रामखरी। गुना ख्या कंग्ज-मखनी है बेसाबकरों। स्वार जरेभर खळाखरी में गर्नाः गर्न-क्याः त्याकाः भरत्यम् छ-छार विकास सामा स्कापि वका विविधा। (कारकोक्ष्मको मानूका । तकनुष्ट्रकनः में क्या कु एक्षणेख-

मा मानिष्ठामाः जिल्लाकात्वरः। गा जू कमातिसी जान निस्पा जू निगमद्वाके अक्षा करन रेक्टिक्टक्का ह सन्मानुहारन ७० जाइतिहास्त्रिक अधायन राषः वर्षको ॥ । ना न्राः ग्रिकामानिकालिका नशा। अर गुक्त छन्। अस्टिश स्त्रीनाः वृद्धि प्रशासकारः। असामाप जगायी अ तहाना भराध-ज्या अस्तर्भाक् गृहा शव गर्न MINO MARK AND MY ग्रिशके कुर्विषे कुरुतान् ज्विताः रेकि बाह्यर ग्राद्धार जिना-नामानिकारिकार । गथरूकः क्रीक्ष्मा द्रकर्भः नशानकाम। अकार हागांगड-न प्रमाधिक काल्याका महिन्छ। नकान स्रोधिक शामिनाम्बर्ध राक्ष्री (स्वाह्म सम्प्रांति छ । ভাগুৰামার লিখান্ড লভারক अनगरका है कि गर्मकर ।। नश्रदंशभ अवस्थित अवनायान-सम्बद्धाः देशस्थाः सामग्रीम नेपा। मत्रीक्रिक अविष्य स्वित्राक्षण नेबद्धाः के नेबदा के बद्धां क

ाः **मसर्वित्रथय**ः समाग्र्यार्थं गः ৰ্যাগেক্টি। তক্ত সপ্তৰ্থঃ পত্তি विनिक्षणः अजान्जा ॥ नद्री-**कि इबिश-शूनरः शूनखाः करु** विभिन्नाः। विभिन्ने महाज्ञाश "অক্লণে যানসাঃ সূতাঃ। সপ্ত-:বাৰণ ইভোতে উচান্তে বন্ধ-वामिकिः। अञ्जूषि बनসুया ह ক্ষা প্ৰীতিশ্চ সম্বতিঃ ৷৷ অৰুদ্ধ-তি স্তথা লক্ষ্যা তৎপত্ন্যো লো-এভাসাণ ভগসা ক্মাছরঃ। देठञ्जार्याटञ ख्वनजयः ॥ म-স্ব্যাত্তৰ মুপাসীনা গাৰভীজপ-তৎপরাঃ। তন্মিন্লোকে বদ-ন্ড্যেতে ত্ৰান্ধণা ত্ৰন্ধবাদিনঃ 🕕 रेलिशारण वर्गश्रुख ३३ जगायः मञ्जन खी नवनामिका। रेज़-भन्नः।। हर्षक्कारा ७९११। औ-উলা। ইতি মেদিনী।।

মতে ক্রিক্ত ক্রিক্ত ক্রেক্ত । তালুক্তমন্ত ক্রিক্ত ক্রিক্ত ক্রিক্ত ক্রেক্ত । তালুক্তমন্ত ক্রিক্ত ক্রিক্ত ক্রেক্ত । তালুক্তমন্ত ক্রিক্ত ক্রেক্ত ক্রিক্ত ক্রিক্

t ज्वादमा हिन्द्रकारमध्य स्मान অশীভি কুন্তমান অধ্যব্যে চ-রিত্তে তু পঞ্চাতৈক সুসংখ্য কাঞা .बहरा श्यारा म्हजूरमश्चः हजूदर्व - म খবেদকाः। ज्यारथाञ्जकतिराज তু ষট্ বজন্নি স্নোকভাক্।। জন্নী সোমাধ্যাষবতী গীতা সপ্তশতী স্থা। ইতি নাগোজীভটঃ॥ मक्षणनाकः प्र विवाहमा खला **७७** मिनकानार्थ- जिर्गगृक्ष म-श्वद्रिशाविणिकें ठळाविटणवः। य-था। इंखिकामि ठजूःमश्रद्भशः तात्नी भित्रञ्चमन्। अर्टम्हामकः द्मिशेट्हा दिशः मश्रमनाककः॥ मश्र मश्र विविधिष श्रदाधिक। खिर्षा भूर्षु यथ क्रखिकामिक । লেখবেদভিজ্ঞিতা সমন্বিত হৈ-করেখগ খগেন বিধ্যতে।। বৈশ্য-मा ठजूरर्थ २ १८म व्यवनारमी मि-প্রিকা চতুকে চ। অভিজিৎ জ-**एक् था एक विस्कृत । द्यारिनी** वि-का॥ निश्चिक एकः। यमानः न-শী সপ্তশলাকভিনঃ পালে রপা-বৈশ রশ্বা,বিবাহে। রক্তাণভবে-देनव कुरवानमाना श्रमावकृतिः अमन क्षराजि।। ३जि मख्न माक्रतमः। देखि ब्याखिखन्।।



সপ্তলির। শ্রী সাগ্রনী। ইতি রাজনির্বাটা য

मखमिखः १ गुर्वा हिंछ दिय-

गश्चमाग्रहः श्रे महामामिति मग्डः
। स्था। स्था दिना दिना क्रिया क्रया क्रिया क्रय क्रिया क्रय क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया क्रिया

मण्डाभगानि ह मदीनि क्रेकािक न जिलाभिति। व्यथमः भूतः स्वर ज्ञान वर्गने विहक्षनः॥

य॰ शरमा छद्द সর্পিষা পুনঃ। চতুর্পন্ত গুডে देनव प्रशा शक्य (यव हु।। यर्छ॰ गर्कत्रमा छद्द मञ्जमः डीर्थनाः तिगा। सांशरमञ्जयगञ्च बनागः কাঞ্চনণ শুভাগা কেশবং ক্ষীর-गरिश जू च्ञारिश गरहारेत । **छ। कतः श्रेष्ठमर्था जू मधिमर्था** সুরাধিশ।। শর্করীয়া নাসেৎ नंत्री॰ जनमस्या जु भार्वजी॰। সর্বেয়ু সর্বরত্নানি ধান্যানি চ गमञ्जः॥ जुनाभूक्रवेद भाष মক্রাপি পরিকর্মেবে । ততো বাৰুণ হোমান্তে নাপিতো বেদ-शूक्रदेवः ॥ **बिः अमिकिन मा**वृद्य यञ्जानियान्त्रीव्रत्यः। नत्या वः সৰ্বসিশ্বুনা আধারেজঃ সনা-छनाः॥ जजुना था शास्त्र अभ्र नमूट्या निर्मानमः। की-রোদকাজ্য দধি মাধব লাব-ণেক্ষুসারামৃতেন ভুবনত্রয় সংঘান্। আনন্দৰন্তি বসুভি শ্চ যতে৷ ভবন্ত স্তশাম্মমাপ্য-यविशाल मनं विषय ।। यत्राष

ममञ्ज जूरत्मम् जवञ्ज वद जी-থামরাসুর সুবন্দ্যনিপ্রতান । পাপক্ষাদ্ধর বিলোপন ভূষণা-य लाकमा विञ्जू जिल्हा मेमा-शि नचीः।। ইতি मनाजि त-সাম্বর সংযুতান্ শুচি রবিস্ময-বানিহ সাগরান্। অমল কাঞ্চ-न नवत्रव्रययानामा श्रम मूरेशिङ হরে রমরাবৃতঃ।। সকলপাপবি-যাত বিরাজিত পিতৃ পিতামহ নরকলোক পুত্র কলত্রক । সমাঙ্গল মপ্যল বাটিভি নেতু মসৌশিবমন্দিরণা ইতি মৎস্য-**পু**রাণে यहामानानू कीर्छत्न म-গুসাগরপ্রাদানিকো নাম ২৬১ ञ्यायः ॥

সপ্তসৃং জ্রী সপ্তপুত্রপ্রসৃতা। তৎ পর্য্যায়ঃ। স্তবক্ষরা ২। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

সপ্তাণগুপুঙ্গবঃ পুণ শনিএহঃ। ইতি জুটাধরঃ॥

সপ্তার্চিঃ পু প্রায়িঃ। চিত্রকবৃক্ষঃ। ইত্যমরঃ॥ শনিগ্রহঃ।
ইতি হেমচন্দ্রঃ। কুরচক্ষিত্রি
। ইতি মেদিনী।। সপ্তানা মর্চিষাং নামানি সপ্তক্রিস্থানের
ত্রেক্রানি।।

সভতৃ

मक्षाभः भूः मृशाः। वर्ककृषः रेणमतः॥ मक्षाभवारनः भूः मृशाः। स्था। रेणाकमाकी जित्नात्कभः कर्छ। रूषा विभिनुहा। वर्णन खालन रेण्य खिठः मक्षाभवारनः॥ रेण भाषभूतात्म मृशात्खातः॥ मिखः भूः व्यथः। रेणमदः॥ मिकतः भूः मरमातित्मसः। भूँ। रेणि जावा। भवाना कृति भार्यन गळ्वीि भक्ती मनी-वातिः महाविद्यातिश्। त्यानि

শতপদ্য ইত্যমভেদান্তালব্যা-দিঃ। দন্তাদিরপীতি কেচিৎ। শকরশ্চ। ইত্যমরটীকাবাং ভা ।। শকরী স্ত্রী বৎস্যবিশেবঃ। পুটী

अकती भरा। भक्ट भिना भद्रव

ইতি ভাষা। ইতি ভরতঃ ।। তথ পর্যাবঃ। শকরী ১ প্রোষ্ঠী ২। ইত্যমরঃ ।। শকরঃ ৩ শেতকো-ভাঃ ৪। ইতি ত্রিকান্ডদেবঃ ।।

কলবিশিষ্ট প্ৰয়াৰঃ। অমোহ ২। ইতি

नवनः बिंदिनगर्कः॥ नाम-र्यायान्। यथा। नवत्न ह गृहर- शार्थ जिन्मानः श्री क्रान्टि । य-द्या वदन ज्या नामः वर्षः विज्ञा-ख्यावदन ।। श्री श्री श्री श्री द्यान्ति । श्री ज्ञान्यः । निद्यक्ष-हस्यः । मवाधः निष्णां वृद्धः । निद्यक्ष-युद्धः । याष्या वृद्धन ह मह वर्ष्ठभारमा या श्री ज्ञान्यः । वर्ष्ठभारमा या

মাসনিশারঃ ।। শতকারী পু-

ব্রভাসের। ইভাসরঃ।। একসা-क् अद्भा जैकारन दिलाम अर्था ६ বেশাৰ্থমাৰ ব্ৰস্ত অভি ত্ৰহ্মচ-वीषाः चाहत्रक्ष (व एक शत्ना-मा॰ गडकानि छा। छ-পচারাৎ অকাব্যবনার্থ বতন-পি এক। পৰাৰ এক চরস্তীতি वरामिशामि क्यां छि किनश-म्बारिया नेवासेगा ग्राट्य নতক্ষ্যারিক। একত্রক্ষরতাচা-ता रेख्य अक्षास्त्रारं उका-**মেতৃ এত সাচরন্তী**তি তুমর্থে চত্ৰ্যা বিগৃহজীতি পরে। স-বৰতাৰী ভিমগুৰুশিয়া ইতি राजनदेशिक नयनानमः। देखि ভরতঃ 🏗

मञ्जूका जी विमामानगिका।

তৎপর্যাসঃ । প্রতিবন্ধী ২ । ইত্যমরঃ মা সময়। ও সমাধা ৪। ইতি জটাধরঃ ।

সভা জ্রী সহভাতি, অত্ত। মজ লিস ইতি পার্মীকভাষা। প খাবিত ইতি হিন্দীভাষা। নিটি॰ रेडि रेक्द्रकी जाय। পर्यायः। सुरुक्ता २ शतिबद ० গোষ্ঠী ৪ সমিতিঃ ৫ সংসৎ ৬ वाक्षती, १ वाक्षत्र ४ महः २ नगुजः 🛵 रेज्यतः ॥ भर्य ३२। देखि क्रिकेट्टा एकक्शांति यथा। अनु । पश्चिम्-स्मरण नि-चीमिक मिन्ना द्राप्तिम अयः। ताखः श्रीकृद्धाः तिवान् वाषा ন্তা সভা বিশ্বহু। 🗢 । বিশ্বহ সংহতাৰণি সভাপৰ্যাৰ পৰিষ क्य मार्मधा देव विलगा देर-তুক স্বৰ্কী নিৰুক্ষে পৰ্যাত্তকঃ । जम नहां अभिना भूदई महिन्द-मामनान्त्राक्षाः जितिमाः वि-रामगावत्रकः देशकुकः मस्मृष्टिः वावरात्री । अक्षाकृत्रामहानिः रः। गला गर्मा ग्रह्म हा अब छ। দীন্তিঃ প্ৰকালে ক্ৰিছ गावरा उसा गर् माळाड शक् ম্পর্যা বা বর্ত্তে ইভি সভা 🛭 शक्षा कालावनः। इक कील वर्षा वृद्ध विखविक त्रिष्ठिकः । विशिद्धः मार्थः किलिट्सः इलि वृद्धाः त्रविष्ठिकः।। मार्थः हिल ला-वरः। इलि वावश्तवञ्चः ॥ ॥।। मामाकिकः।। मृजः॥ गृरः। इलि रम्माः॥ ॥। मलायाः अका-विश्वमानित्यस्था यथा। देनक कर्त्यः गुलः। विश्वः ममवायक वर्क्यस्था। इलि कोर्स्म जेल-विखारंग ५६ जाशायः॥।

সভাজ ত্ক সেবনে। প্রীতৌ । দর্শনে। ইতিকবিকরজ্ঞানঃ
।। অসমভাজৎ। ইকি দুর্গাদাসঃ।

मणाकन॰ की गमनागमनापि ममदय मूलपाद द्राणिकनाद्रा-गाथ्यस्थागणपिनानदमाद्या-गाथ्यस्थागणपिनानदमाद्या-प्रमाध्यस्य १ । देणम्बः ॥ प्रमाध्यस्य १ मणाज्यस्य म्या-न श्रीक पर्यस्य भणाज्यस्य म्या-एम जमहे। सम्बद्धि मृज्ञ् प्राप्तम् ज्ञाणिकनासादिि म्-ज्ञाण्यस्य भागमद्य मूलप्य मा-ज्ञाला गमनानुकाश्यस्य । ज्ञा-

গতস্য বা স্বাগতারোগ্যাদিপু-চ্ছা আনন্দন মিতি রমানাধঃ। ইতি ভরতঃ ॥ म्बार्गाठः पृ ममाकाधिभििः॥ मृতগৃহসামী। ইভি কেচিৎ।। সভাসৎ / পু॰ সভাষা•সীদতি উ সভাসদ্ । পবিশতি यः । তৎপর্যা-বং। সভান্তারং ২ সভ্যঃ ৩ সামাজিক: ৪। ইত্যমর:।। প-त्रियद्यलः ৫ পर्यद्यलः ७ भातिय-দঃ ৭ পার্ষদঃ ৮ পরিসভাঃ ১। रेि नक्त्रप्रावनी ।। जनक्रा-দি ৰথা। কাত্যাৰনঃ। সভ্যে-নাবশ্যবক্তব্য• ধর্মার্থসহিত• विष्ठः। भृत्वािष्ठि यपि त्या द्राष्ट्रा मााजू मछा समान्यः॥ मछाः मভाষाः माधुः। তথাবিধানা ह ষাজ্ঞবন্ধ্যঃ। শ্রুভাগ্যধন সম্প নাঃ স্লীনাঃ সভ্যবাদিনঃ। রা-জ্ঞা সভাসদঃ কার্যাঃ শত্রো মিত্তে চ যে সমাঃ।। শ্রুতাধ্যযন मन्भवाः धर्मभाज्यखाः। जली-नाः भन्नतामित्मायभूना गाणा পিতৃব শ পরস্পরাকাঃ। এবস্তু-তাঃ সভাসদঃ সভাষা ধথা সী-দন্তি তথা দান মান সৎকারে রাজ্ঞা কর্তব্যাঃ। ইতি ব্যবহার-

७वः ॥।। जनाकः। गमः भट्यो চ মিত্রে চ ধর্মশান্তবিশারদঃ। विश्रम्भः कंनीनक धर्माधिक-त्रत्। ज्या कार्या ख्या-বিধা স্তত্ত বিজমুখ্যাঃ সভাসদঃ । ইভি मध्माभूतरत ३৮२ जः शायः॥ वृहण्णिक्ष मश्च गঞ ভ্ৰমো বা সভাসদো ভবন্তীত্যা-र। लाक विषक्त धर्मकाः मश्र পঞ্চ ত্ৰেপি ৰা যুক্তোপবিষ্টা বিপ্ৰাঃ স্যুঃ সা ৰক্তসদৃশী সভা ॥ किशा नथाष्ट्रिताकः नामा-তাঃ সত্রাহ্মণ পুরোহিতঃ। স-সভ্যঃ প্রেক্ষকো রাজা স্বর্গে তিষ্ঠতি ধর্মতঃ।। ছত্র ভামণা অনিপুক্তাঃ সভাসদন্ত নিযুক্তা ইতি ভেদ: াতত নিযুক্তানা यथावविकार्थकथटनिश यपि ता-ব্দান্যথা করোতি তদাসৌ নি-वात्रगीरवा श्नाथा (मावः। উ-कक्ष काळाचरनना वानारय-নাপি ত যান্ত যে ২নুযান্তি স ভাসদঃ ৷ * ভেপি তন্তাগিন স্ত-न्यारजाश्मीयः म रें नृशः ॥ ইতি মিতাকরা ॥ সভাস্তারঃ পু॰ সভাসদ্। ইত্য-यद्रः ॥

সভিকঃ পু শুভকারকঃ।ইত্য-। সভাদাত नमाखेरदद्गांख সভিকঃ বিকার সংশ্রেতি কিকঃ। সভাদাত সভাগ্হ মিতি কডঃ । দ্যত কার্যতি দ্যুতকারকঃ वन छा ६ वर्ष का। हेल छत ७:।। ७९ वर्गामः। मूट्डामञ्ज निर्वर कृष्टकात्रक नावकाः । সভিকঃ প্রতিজ্ঞ শেচভি। ইতি क्रिक्स अनुसार विकास गडीकः पूर्वा स्वाह्मका है छि मक्रमावनीय। সভোচিত স্পূৰ্ণ ভিতঃ ৷ ইতি धनक्षयः॥ मङारकारमा कि ॥ गडारा मूर्वा नायू ।। मडामार्। ইতাৰরঃ না সভিকঃ ৷ ইতি জটাধর: ৷৷ गভाः वि थणारिकः। ३७ क्रिक्द्रभा ज्ञानक्की है।। गम् वर ममार्थः।। श्रहकार्यः।। मक्षका। त्याजनः। ३७ अय-त्रज्ञावनी ॥ अबुक्रका देखि ट्याण्यकः।। **राष्ट्र**्या समर्गः। इं ि वाकतना अनार्धिकन

वि गर्बः॥ गर्भानः। रेछाः।

नवना नाकुः। इछि त्यनिनी ॥ मदः।। एक महिकाक केलिकारल मगः भू वालिविट मगागा म-क्वावित्नवः। एक ज् द्रानवः वृष क्क है कना। वृन्हिक मकत्र भी-नाः। यथा। कृत्ता २४ भागाः পুৰুষোৎখনা চ ওজো ২ ব মুগ্য বিষয় সমশ্চ। চর স্থির ছ্যা-श्रक नामटश्या (सरामटशा २ भी क्रमनः अपिकाः॥ ইতি জ्या-**छिख्या ।। ।। यानमा अकात**-বিশেষা সভুষদা গীত বাদ্য-ষো স্তালঃ গায়কদ্য হস্ত পাদা-ं कि ठालनक धकता मम्बादनन শততি তদা ভবতি। ইতি স্ कीठमाञ्ज•॥ 🛊 ॥ वर्गमृनान-सनार्थ- व्यक्तां श्रीतिम्खः संस्कृत्त-काविद्यावः। यथा। छाञ्जूनान्ता-विषया क्रिकि विश्वनरम्भूण সমে তদ্ধতে তাজ্বা লক্ষতি• **्रमामारियमालकः विभिन्नः** गाः स्मदा रेखामिनीनावजी।। गमकना जी विवादशांशयूका। ইতি ধনঞ্জনা: সদৃশক্ষারী চ मगरकानः श्रूः मर्गः। रेडिनि काश्वरनवः ॥ याः मः भटक खर्ययाः ।। 🐃 । मनजः 🚳 गमनकर्छ।। मःभूर्वक অন্চধাতোঃ কপ্রত্যমেন নি-

गरक

भाषः। देखिनु काद्यां करा किन्ना गरगन्नकः पुर क्रबिमधूराः। स्था। বৃক্ধুণে ভক্তকরো গিরিং ল্যাৎ সমগদ্ধকঃ।ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা।। সৰগদ্ধিক ক্লী উশীরণ। ইতিরা-. कमिर्वन्धः ॥ ज्वागन्नम् एक वि সৰ্বাঃ জি সকল । পূৰ্ণ। ইত্য-. यद्भः ॥ नमन जी मिर्का रेजमद्रा नकानूनठा ॥ वताह्काछा । ইতি রত্নমালা । বালা। ইতি ब्राक्रनिर्यकः॥ नगिष्ठ औ এकविषयकान्डः-कत्रववृष्टिः। यथा। यता वृक्षिः শ্চ চিত্তক তে ছনীশাঃ শরী-রিণা । একচিত্ত বন: কুড়া क्छात्मन পृथ्वाहत्न॥ अनि ত্ত• প্রপদ্যন্তে ন তে লিম্পন্তি মানবাঃ। সর্বভক্যাণিভক্তঃ **लियालिय• छरियव है।। मय•** हि-ख॰ विव वित छता छता न ह किया। देखि वाद्राट्ट । ध्रक्तर्याः बाह्यकार्वन बाबाकारः॥ नमक की दम। देखि सिमिनी।। मयकः पुः शक्षममूरः। देखाः यतः ॥ पूर्वमण्डिः। ইতি मक्

ब्रक्नावनी ॥

- সমদূ माजा जी कीर्डिः। रेटामतः॥ ममाखा नमका। नमाना देखि ह । रेकि खत्रकः ॥ मम्बा जी नजा। ইতামর:॥ কীর্ভিঃ। ইতি ভট্টীকাষা রাষ-गुत्रिः ॥ **गमक्षम• क्री উচিত•। ই**ত্যমর:॥ कि मंत्रीं ही नः। इंडि बिकास्या प्रभा है। है-ভাজ্যপালঃ ॥ ममर्कः पूर गखीतः। ইতি मय-ब्रचावनी राजावनी ह।। নমতা স্ত্রী সমত্বণ সমস্য ভাবঃ रेठार्थ मन्यां ८ ठ अंठार्यन

निष्णमा ॥ नमिविक्ष हो। नगागिवर । नगाक्थकारत्रगांचित्रिक देवि তৎপুরুষ সমাস নিপার।।। मग्बर की मग्डाम रदी की नागत् थङ। रेडि तासनिर्वन्हेः मगमभी वि नर्वजूरच्यू ज्ला-मर्भनभीनः। यथा। विमा विन-र मण्यस्य जामात्व गवि रस्तिन । एनि टैठव अभादक ह शिख-णाः नवम्बिनः ॥ देखि शिख्य-वक्तीका ॥ मसमृष्टिः जी मर्ववजूनामर्भनः।

वथा। मृत्यं जूत्य ह विदशक्ता मृष्टि वर्षट्छ मन।। छथा भटना छ মিত্রে চ সমদৃষ্টিক সা স্কুতা।। ইতি পাদ্মে ক্রিয়াব্যেপ্রসারে ১৬ व्यशासः।। यममर्गिन कि ।। সমধিকঃ ত্রি অধিকঃ। তৎপ-র্যায়ঃ। অভিব্রিক্তঃই। ইজ-यतः ॥ गयलः भू शीमा समाक्षका রেণ অন্তঃ ইতি তৎপুরুষ সমা-স নিশাসং ।। मगस्टः वा हर्ज्यानिमस्टिगासः। **७९** गर्यायः। शक्तिः २ गर्वेङः ৩ বিশ্বক্ । ইত্যমরঃ॥ সম্ खाद ए। ইতি भक्तकावनी ॥ मगडम्था सी स्रीत्कः। रेखा चद्रः ॥ । १० ०० । १० १० १० । সমস্ভভ্তঃ পু• বৃদ্ধঃ। ইত্যমরঃ॥ সমস্ততুক্ পু• । ছভি ত্রিকাপ্তশেষঃ ধ সমস্তাৎ বা সমস্তভঃ। ইতি শকরত্বাবদী।। गमन् भू निका रेखि किरि ॥ त्कांबयूकक भ

नगविकः जि नश्कूकाः म्या

বিস্পান্ধ ৰক্তত পাস্ত স্পান্ধীক

त्रशमः छथा। कलकत जनाकुकः

রস ভাব সাব্যিত।। ইভি ভি-ধ্যাদিভত্ত ।। সমপদ ক্লী ধ্যিনা পাদ্যো-দ্ভল্যৰপত্যা ধারণ । ইভাবর-মিকাষা ভরতঃ ।।

मनभनः भ्रः त्रिविक्वितित्नसः । चथा। व्यासिर्भात्मे स्रवि द्या-भ्रा कताख्याः भीष्ठत्यर स्वत्मे । यत्थरः काष्ठत्यत्वस्यानिः क्याः मनभनः प्रवः ॥ ইতি त्रविस्रशः त्री प्यत्रमीभिका ह ॥

भगशान की धविना शानत्या खनाकशब्य धात्रवः। देखि रहमह्यः॥

गमिखिताहातः शृ गहिछः। वथा
। यह मानय हेछात छविछ हावावहिछ পূर्ववर्षिण जन्म ममिखिताहात गमस्त्रन यहेगमनिश्रेगान्यात्रथममा वाछित्रकक्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र मिछि
एउमायय वृक्षाणाव हेछि जाम्भाषयत्वास्य वृक्षाणाव हेछि जाम्भाषयत्वास्य वृक्षाणाव हेछि जाम्भाषयत्वास्य वृक्षाणाव हेछि जाम्भाषयत्वास्य क्षेत्रममान्यातभाषयत्वास्य क्षेत्रममान्यातभाषयत्वास्य क्षेत्रममान्यात्वभाषयत्वास्य क्षेत्रममान्यात्वभाषयत्वास्य क्षेत्रममान्यात्वभाष्य माक्षाक्या व्यव्याव्यक्तिमान्यात्वकाक्ष्य माक्ष्यक्राम्यात्व महेन्यस्य
व्यक्षित्रक क्ष्रमुष्काणि वृद्यस्य

কর্মন নিভিজেদারক সুক্রাজাব ইত্যনুখারপদস্য কটপদনত্ব ন-প্রিতাদৃশাস্ববোধে আকাজা ইতি আকাজ্যাগ্রহে মপুরা-নাথঃ ৷৷

ममिख्याक्षा भ् मरक्षिक्षिः
।। महिलः। यथा। निमिखानाः
छे शिखिदिवि ममिख्याक्ष्ण निक्लानाः। के जिथापि खः।।
ममिख्यातः भ् भी नाम्भानः।।
ज्भार्थः। के प्रिमिनी।।
ममज्भिः खी ममानक्षानः। তথপর্যাবः। আজি: ২। ইতি জটাধরং।।

गमम् वा गरिन । सथा। गर्छन्नः गाक गळ गम गर । रेन्या गम्यः ग्रं गमदः ग्रं कालः ॥ मथ्यः ॥ खाना द्रः ॥ जिका खः ॥ मिर्धः ॥ कि वा । रेन्या ॥ स्वा । ज्या । रेन्या ॥ स्व वा । ज्या । रेन्या ॥ व्य गदः । रेन्या । निया । मा व्य गदः । रेन्या । निया । निया । मा व्य गदः । रेन्या । निया । निया । काल श्रमा । वा । स्व प्रांग खेता । ता काल्या विषे गमदः मुक्त गार्म प्र्वेक । काला जिल्यः मुक्त । काला काला काला । भाषिक मुगानिक जिल्हे (यर है। किर्देश का बु॰ भद्रा रुखि गर्दछ-क्षर रेत्रिन स्था।। यहिया यकि-কা কাজে সারুডক মধোরগঃ। কিৰ্বন ভৌতি রাজেন্ত্রণ কা-ल ताजा ह किन्द्रशा है खान्ह मनवः कारम कारण ब्रोद्धाः म-রিব্যতি। ভিরোহিতা চ প্ররুতঃ कारन श्रीहरूबिश्वरह ॥ महिवा-স্থি সুরাঃ সর্বে জিলোকস্থা শরো-চরাঃ। সর্বে কালে লয়ণ বান্তি 'कारना हि मूत्रि छक्त यह ॥ काल मा कानः खिरुकः मुख्रः मुखा यरथ-क्रमा। मण्डली देवे मण्डलुंश्माएः পাতা পরাৎপরঃ।। মহাস্তাৎ ভূলত্যঃ প্লুদ্ধাৎ সুদ্ধত্যঃ ক্লগঃ । भन्नाकुः भन्नभः कालः कालम्ह कालएकप्रकः ।। हेन्छि जन्मरिवर्र्छ -शक्शिक्ष्यक्ष ६० - व्यवतायः ॥ 🛊 ॥ অপি চাং কালঃ করেনতি সংসর্গণ বন্ধুনা বন্ধুভিগ্ৰসকা কালঃ ক রোভি বিচ্ছেদ বিদ্যোধ প্রীতি-भिव र विकासक मुख्यि अकृत्व কালশ্য পরিশালক। কালঃ ক-**द्धांकि अभिन्न कार्नः** जन्द्रद्वर ক্ষেণ ভাষণ লোকণ জরা মৃত্যুক জন্ম হ। সর্ব কর্মা

न्दार्थन कालवंद करताचि ह ॥ সর্ব॰ কালহুড় ভাড় বিশ্বৰ ন বজ বজ। ইতি তমকৈতে এ क्रकन्मचर् २० व्यक्तानः॥ 🖝॥ অথ কালনিক্ষপৰ । আনন্দন मनदेमाक्शित्रिशृत्क्यमातः। मृन् कालगंडि॰ दरने महीय छान পোচরা । নরাণাঞ্চ পিতৃণাঞ্চ मृतागाकाणि उक्तकः। नागाना॰ ताकमानीना ज्यात्रवाक भू ত্ৰক।। কথকামি নিগৃচাৰ্থণ সা-বধানং নিশামক। সর্বন্দাচ্চ পরঃ कृतः नदाशारता यहान् विवाऐ॥ যদ্য লোমসু বিশ্বানি চাসংখ্যানি চতানি **চ। সর্ব্যাচ্চ পর** সূস্থ **शतमान् तिमानन॥ कालात्छा**-ত্মক সৰ্বস্যানুহণ পরমীক্ষিত। शत्रमः मिर्णियांगा मरमहका १ मू-তশ खथा।। शत्रभागृक्ष मः विटब्हरमा नृगा रेमकाञ्चरमा वथा। शत्रमानृष-বেনাণু স্ত্রসরেণু স্তু তে ত্রয়ং ।। ত্র-मत्त्रवृजिदकवाि जुि क्रका मः ণীবিভিঃ। বেধ জুটিশতেনৈৰ ত্ৰি-(वर्धन वर ख्या।। जिलस्म नि प्ययक जिनि*प्*रियम ह कन्द्री का-ষ্ঠা পঞ্চকণেনৈব লঘুশ্চ দশকাষ্ঠ-या।। लघू शक्ष्मरम मख खब अमा-

नः निनीवया बालनाक नटनाका **ह ह्यू कि क्र क्र इक्ट्र वार्ट ।। वर्ग मा**-বৈঃ ক্লভচ্ছিত্ৰ বাবৎ প্ৰচ্ছজন-धू**७** । प्रथम् ह मृश्कः विष-ভাষাকা তিখিঃ।। ভদকভাগঃ প্রহরঃ প্রমাণক নিরূপণ ৷ চত্ত্ र्जिः थरदेत ताबि मञ्जि र्मि মেক চা৷ ভিথিপঞ্চদেশৈর প-क्यानः अकैर्लिङः। शक्रवरयन मानः मा९ ७क्न क्रकाजिरधन हा। **अजू मामबरा**रिनव ७९ वर्हेरकरेन ৰ বৎসরঃ। বসস্ত গ্রীম বর্ষাশ্চ শরদ্ধেমন্ত শীতকা।। বর্ষাঃ পঞ্চ বিধা জেষাঃ কালবিন্ডি নিৰাপি-ভাঃ৷ সম্বৎসরঃপ্রবৎসরশ্চ ই-লাবৎসর এব চা৷ অনুবৎসরো বৎসরো ২ম মিতি কাল বিদো विदृश : ज्या विषिक् गारेमक **ज्ञाम मृन्** हा क्षित्।। देना देन জ্যৈষ্ঠ আষাতঃ প্রাবণো ভাত্র এব চ। আশ্বিনঃ কার্ত্তিকো মার্গঃ পৌষো মাঘস্ত কাল্পনঃ।। চৈত্ৰস্ত চরমো জ্ঞেযো বর্ষশেষো নিৰূপি-তঃ। বসন্ত শৈচত্র বৈশাথৌ মা-সৌ যুগোন কীর্তিতঃ॥ জৈচাঠা-ৰাচদ্বেটনৰ গ্ৰীমন্ত পরিকীর্ত্তি-তঃ। বর্ষা প্রাবণ ভাজেণ চাশ্বিনে

गमग

कार्खिक भन्न ।। भारत स्मिति **ए रहम छः निनित्रा मार्च को**ह-त्न। अवस्र हारत त्व देहर्दशी-खद्र प्रक्रिगायत्म।। माधानियहेक নিষত উত্তরাষণ মীন্সিতা প্রার্থ-वामि गामबहेक मिक्नवायम स्व ठ॥ भाषामाषाज्यशिक मिनवृ किः क्राप्ति। नकः वृक्षः वात-শাক্ত পৌষ পৰ্যাস্ত মেৰ চ।। 🕸।। প্রতিপদঃ পূর্ণিমান্তঃ শুক্লঃপক্ষ প্রকীর্ত্তিতঃ। পূর্ণিমাষার প্রতি-পদঃ অমাবাস্যান্ত এব চ ৷৷ ক্লক্ষ-প্ৰকল্প বিজেষে বেদবিন্তি নিৰ্ পিতঃ। দ্বিতীয়া চ তৃতীয়া চ চতু: थीं शक्ष भी ख्या ।। रही ह मश्रमी চৈব হুফীনী নবনী তথা। দশম্যে कामनी ठानि बामनी ठ जरमा में भी।। ठजूर्मभी अबू याविक्रन ख शननः सृष्ठः। 🐠। अश्विनी छत्रनी চাপি রুত্তিকা রোহিণী তথা।। মৃ-গশিরা স্তথার্ডা চ নক্ষত্তে ছে পু वर्वमूः। भूषारक्षया यदा टेठव भूका চোত্তরকদ্পনী। হস্তা চিত্রা তথা স্বাতী বিশাখা চানুরাধিকা। জ্যে ষ্ঠা মূলা তথা জ্বেষা পূৰ্বাষাচো-. ত্তর। ভথা।। শ্রবণা প্যভিজিকৈব ধনিষ্ঠা চ প্রকীর্ত্তিতা। ততঃ শত-

चिन एक्टबा न्यक्षा जनम खया। करपायतक विरक्षता राज्यी क्री क्रिंग कि कि मिन्ति में के कन्नज निरमास्य ॥ जटन ভাজি গাৰ্মণ চক্ৰভিষ্ঠতিনিতা শং। **মন্তবিশাতি নীমা**ত্র^ন কল-ত্রঞ্গ এতে প্রতিশা অভিজিচ্ছ-ধণাচ্ছাষা ভেনাস্টাবিশ্পতিঃ স্মৃ তা। একদান্ত মধৌ চল্টো রো-हिगा **त्रायमा गॅरा। एतरम मिव**-নিশ দৃষ্ট্বা শ্ৰেবণা চ'চুকোণ সা। ছাৰা দন্ধা চ চক্ৰাৰ যবে তা-তান্তিক ভিষা।। ততঃ শিতর মা নীষ সা প্রচক্রে বিভাগক । বভূব তেন ৰক্ষত্ৰ মন্তিজিয়ানক পুরা ।। তাতৰ ক্ষেত্ৰ, প্ৰঞ্জ মুধ্বাক্তি হ ৰ্ফাংস চ পৰ্বতে। 'সক্ষত্ৰ' কথিত' বৎস তিখ্যাণ ভূমতি নিতাশঃ ॥ 😝 ॥ ষোগফ করণকৈব মন্বজ্রেণ নি-भाषमः। विकासः श्रीष्टि हायुक्तान् সৌভাগ্যঃ শোভন স্তথা৷৷ অতি-গণ্ডঃ সুকর্মা চ ধৃতিঃ শূল স্তবৈব । गटला वृक्षि और टेम्प्रेन गाया-তো হৰ্ষণ স্তৰা।। বজু শ্চাসৃগ্ব্য-তীপাতো বরীবান্ পরিষঃ শিবঃ । শিক্ষঃ সাধ্যঃ শুভঃ শুকো ত্রন্ধে-रा देवकुठि खथा _{।। 🛊 ।।} कीर्छि-

ভন্ত ৰোগগণ্য কুৱাৰ কাৰ্চা বি-छि। यरक्त राज्यकार (कोणर তৈতিল ক্ৰমা। সৱস্য ৰণিজ স্চা-लि विधिष्ठ मुक्ति ख्या। हरू भाकाणि मागक किस्स हेलि कीर्डनाका। यत्राना कालि गाटम-म शिलुभाक विदासिकः। अज्ञ তেবাণ দিমকালি ক্লফে নক্তণ প্ৰ কীর্ভিত ।। বৎ মরেণ নরাণার সু त्रानाक निवासिक । निव एउदा-मुख्दत्रन नक्क निकायत्न ॥ व वखत्रस्र निवसताः चुशाना त्मकः সপ্ততিঃ। মনে। রাষুঃ পরিমিত। শক্রনায়ুত্বঃ প্রকীর্তিত ।। পঞ্চবি - ' শৎসহসুঞ্ তথা পঞ্চশত পর্ । তত্ত্ত সূর্বদান্তি নান্তি শক্রপা-णानुमात्रकः॥ बुगानाः वस्तिपवि ক নরাণাঞ্চ প্রকীর্দ্তিত। কা লেনৈতেন শক্রম্য প্রতনঞ্চ মনো कारनम बन्द्रभा मिनः। এ: छरेनव छ छत्यूक यूकः शाजू किंवानिगः ॥ अवरख्याः निगठनः (वाक्याः তদিবানিশং। তত্ত্র সূর্য্যগতি না-স্থিশক্রপাতানুসার**তঃ** ৷৷ দিৰানি-শঞ্চ জানস্তি বেদলোকনিবাসি নঃ। দওঘৰ লব পল শক্তপা-

टान प्रकार ।। धर विश्वित **म्हिन्स बाजू गांगः अकीर्डिजः।** जरना दानगिक सारिम दावसमा শভাষুষঃ॥ বন্ধাণঃগতনেনৈৰ নি-त्मयः औरत त्रि। । श्रापुः भा-**जानुमादत्रव दैवन्नदर्श्वन मिवानिम** ॥ তত্ৰ সূৰ্য্যগতি মাস্তি চৈব• গো-लाक्ठः गृठः। देवक्रथेवामिनः সর্বে তেন জানস্তাহর্নিশ ।। চ-জ্বস্যাপি গ্রহাণাঞ্চ গতি নাস্তীতি তত্ত্ৰ বৈ। চক্ৰ॰ নৈব ভূমভ্যেব क्रामीना मिছ्या श्टतः ॥ তেজসাদীপ্ত ক্রফস্য পর্মাঅনঃ । নক্ত॰ তেজো বিহীনঞ্চ হরৌ চ মন্দিরণ গতে।। এবণ কালগতি স্ত-ত্র বিফুলোকে ২ন্তি সম্ভত ৷ কা-লম্বৰপো ভগবান্ পরমাত্মা নি-ताक्रिकिः ॥ 🗱।। ठटक मूर्या गणि नी-স্তি পাতালেষ্ চ সপ্তসু। তদা-সিনশ্চ জানস্তি শক্ষেতেন দিবা-निणः॥ पिटन ह मृक्षि नागानाः মণি স্ব'লতি নিত্যশঃ। সন্ধ্যাযা। দীপ্তমগ্রন্চ রাত্রিশ্চ তমসাবৃতা।। কাল তামী প্রমাণেন জানস্তি ত মিৰাসিনঃ। যথা ভূবি তথা তত্ত্ পরিমাণ প্রকীর্ত্তিত।। 🛊 ।। ফুত• ত্রেতা ঘাপরক কলি শ্চেডি চতু-

र्गः। विदेश वीप्रभारते में १० मः। वाद्यानका विकासना वया जन्म देत्र भगिन मिन्नकः।। व्यक्ति अक्री নাপাধিক সহসাপা চত্কৰ:। मिट्रेश ब्रेसं क्रम्भा कामविकि र्मिक्षिष्ठ ।। अके वि न महम् नाशिकः शतिमानकः। वकानाः क मक्षमम न्यान शतिकीर्विछ॰ ॥ অধিক ষট্শতান্যেব সহসূ।-**गा॰ जय॰ ७था।** मिटेवा र्व देशे भा ত্ৰেতেতি ৰৎস কালবিদে৷ বিদুঃ ।। यक्षविक महमुानि निर्म बीमन-ভিঃ সহ। নৃণা বর্ষেশ্চ ত্রেভেতি কালবিদ্ধিঃপ্রকীর্ত্তিতঃ ৷৷ চতুষ্ট্র শতানাঞ্চাপ্যধিক । দ্বিসহসূক।। वर्ष मिवा षाणत्रक कालरेखः नः तिकीर्खिष्ठ ।। **ठ**ष्ट्रंयिकमञ्जानि नदेक त्रके जि दत्र ह। नृथा वर्षे ষাপরঞ্চ কালজ্ঞৈঃ পরিকীর্ত্তিত• ।। অধিক দিশত কৈব দিব্য বর্ষ-সহসূক। এবং মিতং কলিযুগণ वरम थारेकः अकीर्विछ।। बा ত্রি•শক্ত সহসৃঞ্চ চতুর্লক্ষ• নৃমা-ণক । বর্ষঞ্চেতি কলিযুগ চকার कालद्वाविषः॥ लटक जि हज्ञा-রি শক্তিঃ সহ বি শৎসহসুকৈঃ। न्गान बर्रिंश कालरेख बाक त्यव চতুর্গণ।। ইতি তে কথিত বৎস

बंबाड्डास-वाक् वर म श्राहर भूक ।। रेकि उत्तरेषदर्श की इक्का ५८७ तारक्षक्रमञ्जाल काननि-क्षान ३३ वशाताना ।। जनि ह। मार्क एक छेवा हा निरम्दश नाम कालाइका स्मरकारम्य विल-किंद्रः। देव त्रस्ताममञ्ज्ञः कार्श কাঞ্চানা জিশানা কলা।। কলা-তি ভারতীতিন্ত কণাশ্যঃ পরি-কীৰ্ত্তিতঃ ক্লাইগৰ্জাদশভিঃ প্ৰো-ক্তো মৃহূৰ্ত ভৈন্ত জিণ্শতা ৷৷ মা-न्याः मामरशक्राखः शक एउ म-'गशक ह। शकाख्या॰ मानुरसा मा-मः शिज्बा जनक्षिण ॥ यादेम ষাদশভি ৰৰো দেবানা তদহনি-শ। ক্লকপক্ষ গিতৃণান্ত কর্মার্থণ **मिवरमा मण्डा। बद्रोर्थ- एक्नलक**-स्ट तकनी शतिकीर्छिण। प्रापा-নাম্ব দিন প্রোক্ত ষণ্মাসা উত্ত-त्रायणः ॥ द्राखिः स्थाय (प्रवानाः वशामा मक्तिगायनः। हाखाः हाः ভাৰে মাসাভ্যা মৰ্কজাভ্যা মৃতুঃ স্তঃ।। ঋতুভি শ্চাবন প্রোক্ত ত্রিভি স্থমান্ব মত। ঋতুভি ৰ্ৰৎসরঃ কড্ভি স্তাণ্স্চ শৃণু পৃথক্ श्थक् ॥ 🐠 । टिन्जामि यूगटेलः

खबाः। सम्बद्धार्टकं व विकार्धा जीत्या देकाक अहि ख्या ॥ थाव् ए नरका नर्क्टमने कू भन्न थ मापिक कार्षिद्वी । महः ती खो **इ** : स्वरूक्षः मिमिद्राः नाष काञ्चरनीया चिक्रिक सञ्दर क्था-काः रखारमे विश्वाः शृथक्। नृगा॰ गासमः मन्षिः वरिकंश्यः **श्वनिः क्रबटेतः ॥ मार्केदिः भवि-**मार्टेनु सीनः इंडियूगमा ह। मः ন্যা চতুংশভাদীৰ বৰ্ষাণা মন্তরা-লতঃ ৷ সন্ধাশ স্থাবতা প্রোক্ত ন্তদন্তৰ্গত ইন্সিতঃ। ত্ৰেতা হাদ-मिं र्न कि स्नान्दिय वंदमदेक र् ति ।। सक्ष्मका मर्देमुक म স্ক্রা চাস্যাৎশক্তরৰণা শতভ্রমত্ত সন্ধ্যাণ্শ স্তদন্তঃ পরিকীর্ভিতঃ।। ठञ्श्विक महमानि नकान्यस्की श्रमाण्डः। छत्वस्त्रमः कानद्रा-খ্য॰ তেকু সন্ধ্যা শতৰক ।। শতৰ-বৰ সন্ধ্যাংশ ক্ষমভৰ্গত ইয়তে ৷ ৰাত্ৰিশৰু সহস্থাৰি চত্ৰকাৰি देव करनः। महर्भरेत उदस्यानः সন্ধাৈক প্রোচ্যতে শত ।। ৰুৎ-সরাণা মেকশত• সন্ধ্যা**শশ্চ**ত-দন্তরে। এবং ক্রতঞ্চ ত্রেতা চ ছা-

मन्द्रा देखा वक्ष विद्याः । भद्रम् छवा कनिशा मान्द्रम् धा मारुषन् ভবেष्णुगठजुके वः। जि চমারিঃশভা লক্ষৈ র্মানণ চভুর্গ তবেৎ।। সহস্রৈরপি:বিশ্বতা। স स्ता मस्ताभामभ्यूङ्य देवदः नि-न द गद्र मामूर्य मनाबक ।। अव कम गनिषा ज् मान्षीरेय **क्टबूर्गः। टेमरः क्षामगनार्**ज् वष्मद्रांगाः अकीर्जिजः॥ रेमरेव बीमभगारदेमु बंध्यदेत देर्पविकः यूगा । उदक कुर्यूग न्गा मक्ता সন্ধ্যাংশসংযুত্।। দেবানাম্ভ রু-ত ত্তেভা ছাপরাদিক্যকত্বপা। ন क्गवावकाद्या शक्त न व धर्मापि ভিন্নতা।। কিন্তু চাতুর্ধুগণ নারণ **ভবেদ্দেক যুগ• সদা। দৈবৈ**-রেব চ সপ্তত্যা যুগৈ শাস্ত্রপ্তরণ ভবেৎ ॥ रेमरव यूभमहरमु एवं बन्धनः मान-**मर्शिंभः।** ठळुर्कूश সङ्दमु (**म** नृशाः মাণেন ভদ্তৰে থা এক স্মিন্ বা-कामिवरम मनवः मुग्र मञ्जूसमा **এব॰** बाक्सान मात्नन मिर्नेटम्स ত্ৰিভিঃ শতৈঃ ৷৷ সমষ্টিভি ৰ্বৎ-मदः जाम्बारका वर्षा नृगा वर्था । ত্রাইক্যঃ পঞ্চশতা বর্টেরঃ পরা-র্দ্ধঃ পরিকীর্ত্তিতঃ-৷৷ ভদীশ্বরস্য দিবসণ তাবভী রাজি রিমাতে ৷

भटिन बचारणा यदेर्वः कालः महा९ षिणवार्षांकः। भवार्षिष्ठिए २-তীতে বন্ধণঃ প্রলখো ভবেৎ ৷৷ প্রলীনে ত্রন্ধণি পরে জগতা প্রাক্তো লখ:। সমন্তজগদা-ধার মব্যয় যৎ পরাৎপর ॥ তস্য অন্ধস্বৰূপস্য দিবারাউঞ্ছি ত ভবেৎ। তৎপর নাম তীনা পরার্দ্ধ মভিধীবতে ৷৷ ইডি শ্রী-কালিকাপুরাণে ২৪ অধ্যায়ঃ 11 🔹।। কিঞ্চ। অক্ষি পক্ষ পরিজ্ঞে-ধো নিমেষঃ পরিকীর্তিতঃ। ছৌ নিমেষৌ জুটি ৰাম ছে জুটী ভু व्यवः ग्रुष्ठः ॥ विव्यवः क्र श्रेषुः-ক্তঃ কাঠা প্রোক্তা দশকণাঃ । দশকাষ্ঠাঃ কিলানাম তৎসংখ্যা माष्ठ याष्टिका ॥ यष्टिक एव भृशृर्खः गारित जि॰नजा निया-নিশ । চতুর্বি শতিবেলাভি র-रहात्राजः क्षठकरा । मृर्याः मं-यानि विख्छत्या मुर्श्वानाः कवः সদা। পশ্চিমাদর্করাত্রাদি হো-রাণা বিদ্যতে ক্রমঃ ৷৷ ইতি ব-ङ्गिश्रुवार्ष **अन्टलनामान्यादः** ११ 🟶 ११ व्यथतः नृति र्भूतात्व २ अधारि कोर्त्य ७ अधारि চ জফব্য-া

সমযকারঃ পু॰ সঙ্কেতঃ। যথা। প্রজ্ঞান্তিঃ পরিভাষা শৈলী সঙ্কেত সমযকারাশ্চ। ইতি ব্রিকাওশেষঃ ।।

সমধা ব্য নিকটা। মধ্যঃ। আদ্যাস্য পর্যাধা। নিকষা ২ হিরুক্ ৩। ইতামরা। সমধানিকটে মধ্যে মধ্যে চ নিক্বান্তিকে।
হিরুত্তকে বিনার্থে চ। ইতি
রুজাণা হিরুত্তক সামীপ্যে।
ইতামর্মালা। কালবিজ্ঞাপন
। ইতি শক্ষরত্বাবলী।।

সমরঃ পৃং ক্লী যুদ্ধং। ইত্যমরঃ।।
সমরতঃ পৃং শ্বতিবন্ধবিশেষঃ।
তদ্য লক্ষণ বর্ণা। সজত্যাদ্ব
ভা বোধিৎ পদদ্বং।
ভানো ধৃষা রমেৎ কামী বন্ধঃ
সমরতঃ পৃতঃ।। ইতি রতিমঞ্জী।।

সমৰ্কণ্য: ত্রি সমস্য সাধো ভূতি পূর্বো গ্রাদিঃ ।। সমশব্দাৎ ৰূপ্য প্রভাষেন নিজায়ঃ ।। সমর্থ: ত্রি শক্তিষ্ঠঃ ।। সম্বন্ধার্থ: ।। হিভঃ । ইত্যমরঃ ।। সমর্থতা স্ত্রী সামর্থ্য: । শক্তিঃ । সমর্থতা স্ত্রী সামর্থ্য: । শক্তিঃ । সমর্থতা স্ত্রী সামর্থ্য: । শক্তিঃ । তাবেদ নিজায়। ।। সমর্থন ক্লী ইদ মুচিত মিদ মন্ চিত মিতি নিশ্চমঃ। তৎপর্ব্যা-মঃ। সংপ্রধারণা ২। ইত্যমরঃ।। সমর্থনা ৩। ইতি শক্ষরত্বাবলী ।। সামর্থ্যক।। সমর্থনা জ্রী অশক্যে ২ধ্যক্যাবঃ

गगयना जा जनका रशक्यावः
। स्था। जिक्क मिन ल्यास्यानि।
स्थि मुक्क द्यायना।। जगक्रिकः जि स्वाप्ता स्वाप्ता ।।
जगक्रिकः जि स्वाप्ता स्वाप्ता ।।
जगक्रिकः जि स्वाप्ता स्वाप्ता ।।
जगक्रिकः जि स्वाप्ता । स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता ।
जगक्रिकः जी मगक्रिक जाया। मण्पूर्व मा स्वाप्ता दिनो स्वाप्ता । स्वाप्ता दिनो स्वाप्ता ।
स्था। श्राप्ता स्वाप्ता । स्वाप्ता स्वाप्ता । स्वाप्ता स्वाप्ता । स्वाप्ता स्वाप्ता । स्वाप्ता स्वाप्ता स्वाप्ता । स्वाप्ता स्वाप्

সমর্থাদে পুণ সমীপাঃ।। মর্থা। দাসহিতে তি । ইতি মেদিনী ।। সমল ক্লী বিষ্ঠা। ইতি শব্দরত্না-বলী ।। আবিলে তি । ইতি জটাধরঃ ।।

সমবতারঃ .পু• তীর্থ•। সম্ অব পূর্বক ভূ বাতো র্যঞ্জ প্রভাষেন নিশালং !!

সমবন্তী পু॰ যমঃ ৷ ইত্যমরঃ !!

তুল্যবর্ত্তনশীলে জি !!

সমবাকারঃ পু৽ নাটকভেদঃ !

যথা ৷ স্যাল্লাটক৽ প্রকরণ ভণঃ

यथा। गामाहकः श्रकत्रवः छवः श्रह्मनः जिमः। तार्यागः ममः वाकादता विथात्कहामृगा हेलि॥ श्राह्मन्यश्रकाताः मूर्ग र्छाताः यह मः कृञानिकाः। हेलि द्या-हसः॥

गमनायः श्रुः गमूरः। ইত্যमतः
।। मसम्वित्यः। यथा। यही
शीनाः क्शालामी जत्यम् छ।

कर्माताः। তেम् कार्डम् गसमः

गनवायः श्रकीर्डिङः।। ইতি
ভাষাপরিচ্ছেদः।। অবস্বাব্य
विता र्छ। छनिताः किया कि
यावर्डा क्रींडि व्यक्ता निंडा

जवावित्यस्यान्ह सः मसमः म

गमवायः। ইতি मिकासमूकावनी।।

সমবেতঃ ত্রি নিলিতঃ। যথা।
ধর্মক্ষেত্রে সরুক্ষেত্রে সমবেতা
যুষুৎসবঃ। মানুকাঃ পাওবা
দৈচব কিমন্তর্বত সঞ্জয়।। ইতি
ইতি ভগলগীতায়া ১ অধ্যায়ঃ
।৷ সমবাষ্সমুদ্ধেন বৃত্তিঃ। যথা।

যৎ সমবেত কাৰ্য্য ভৰছি জে-যন্ত সমবাধিজনক তথ্য ইভি ভাষাগ্রিছেদঃ ।।

সমশুবানঃ ত্রি সম্ভ্রকারেণ ব্যাপ্তিবিশিষ্টঃ ৷ সংপূর্বক অ-শ ধাতোঃ শান্ত্র প্রত্যবেন নিশারঃ ৷৷

মনষ্টিঃ স্ত্রী সমস্তঃ। নিলিতঃ।

যথা। সমষ্টি রীশঃ সর্বেষাং সাই

ত্ম তাদাত্মাবেদনাৎ। তদভাবাত্তদন্যে তু-জ্ঞাষত্তে ব্যক্তিসংভরষা।। ইতি পঞ্চদশী।।

সমষ্ঠিলঃ পুং ক্পবিশেষঃ।
কোকুলা ইতি হিন্দীভাষা।
তৎপর্যাক্ষা ভঞ্জীরঃ ২ নদ্যামুঃ ৩ আনুগদ্ধকঃ ৪ কোকাগ্রঃ
৫ কণ্টকিকলঃ ৬ উপদংশঃ ৭।
অস্য গুলাঃ। কটুছণ উক্ষত্বণ
ক্রচ্যত্বণ মুখবিশোধনত্বণ। কক
বাত প্রশমনত্বণ দাহকারিত্বণ।
দীপনত্বক। ইতি রাজনির্যন্তা।
সমষ্টিলা জ্রী গঞ্জীরঃ। ইত্যমরঃ
।। ত্বে সন্দা ইতি গাতে শমঠ
ইতিখ্যাত্বে। অনুপদেশজেশাকেইতি কেচিছ। অনুপদেশজেশাকেইতি কেচিছ। গুঠিষা ইতি
খ্যাতে শাকে ইতি দ্র্রানন্দঃ।
গঞ্জীনি গ্রন্থিকানি অস্থানি

चेत्रपि गणीतः यग् । गण ता-गवित्मयः चेत्रपि गणीतः मृत-गवित्मयः तिछात्मः । नमागिर् गाणि नमितिना एः वनीयानि-याः नमा यदः । देखि खत्रछः ।। नमिति छः मणीतः नमिताः नमिति छः मणीतः नमिताः नमिति छः भणीतः नमिताः नमिति । देखि भणनाष्ट्रावनी ।। नमित्र ।।

गमन्थिः जी कबाखः। मरा-थनसः। देख (स्यह्यः॥ जू-नत्रभवनसः॥

मम्खः जि मन्पूर्णः। छद्भर्यायः
। मम्दर मर्कः १० विश्वः ६ जरणः
सः ६ इष्ट्रमः ६ निश्विणः १ जः
श्रितः १ निश्राम्यः २ मम्बः २०
मक्तः २२ पूर्वः ३२ ज्युखः २०
जन्नकः २८। देछि म्यायद्वावकी ॥
जन्नकः ३६ ज्युकः २१ । देछि
क्रिश्वः ॥

সমস্থ তি সমানং। সমভাবেন স্থিতঃ। সমশ্যুক্ত পূর্বক স্থাধা-তোর্ড প্রত্যবেন নিশামঃ।। সমস্থী ত্রী মকা কমুনবোর্মধ্য-দেশঃ। তৎগর্যামঃ। অস্তর্বেদিঃ

२। रेजि स्मान्स्या जनगा जी एक कुना शादमदेन-কেন ৰাজ্যা ত্ৰিভি ৰা প্ৰশা। यथा। भूगूर्वाः कि ठवामाणि ठिजकामन सागदितः। व्यव ना-वायन दयम द्वारामा वायरना रुजः॥ रेजाति क्यांकारमा शा-रा भूतनवरभनाव बिट्णाटक । रेजि ताक्ष्णिः॥ ७९ भर्यायः । সমাসাধা ২। ইত্যেরগা স-ममार्था ७ नवासार्था है। इंडि ভরতঃ ৷৷ সমস্যতে সংকিপ্যতে रनवा नगना। जन्नेहर्क्ल भी ব্ৰজ বজেত্যাদিনা ক্যপ্ ভিমা-ভিপ্রায়ন্য স্লোকাদে স্তদীয-ছেন প্রত্যক্তিজাবদানান্দ ভা-গানা স্কুতেন পর্যুতেন বা ভাগান্তরেশ সমসন সংঘটন नगटमाजिनावयी ॥ विकास गगमार्था जी समग्री है देखा-भविष्या अनुष्या मम्बा जी यमा इंडि मक-त्रज्ञावनी ॥

সমক জি অকোঃ সমীপা সং

भूर्व जिन्नकार ज প্रजारवन

निष्ममः। देखि मूक्ताववाा-

क्रवन ॥

गर्गा जी वर्गद्रः। ইভारद्रः॥ नगि विकलपं जिल्लामा नगा गम खेम देवक्रदा भनामिषामन् আপ্। সমানিত্যবহরচনাস্তাঃ जिया मिछि वामनानयः। ममा॰-সমাণ বিজ্ঞায়তে ইত্যেকছেপি দৃশ্যতে ইতি স্বামী। অতএব मभा रेखि वह्रवहतन कहिष পাঠঃ। সমেতি কচিদেকবচনেন । ইতি তট্টীকাষাণ ভরতঃ।। मगाः महात्री वि ममजाशार्यः। यथा। ममाः गहातिनी माजा भू-ত্রাণা স্যাৎ মৃতে পতৌ। ইতি मायञ्च ॥ সমভাগাই:। यथा। यनि क्र्यां नगाना-

ममाः निकः वि ममजागार्यः १ यथा । यपि अर्याष्ट्र ममानाः-मान् পद्भाः कार्याः ममाः नि-काः । न एउः जीधनः यामाः पट्छ दर्षः अकीर्डिठः ।। ইতি पाषठ्यः ॥

সমাণশী ত্রি তুল্যভাগবিশিষ্টঃ ব সমানভাগী। যথা। জ্যেষ্ঠ বা শ্রেষ্ঠভাগেন সর্বে বা স্যুঃ সমাণ শিনঃ। ইতি দায়তত্ত্ব ।। সমাণশীনা স্ত্রী প্রতিবর্ষপ্রসূত্ত-গবী। ইত্যমরঃ ।। সমাক্ষী পুণ অতিদুরগামিগন্ধঃ

। ज्थार्यास्तर निर्देशि २०१ ইত্যদরং ৷৷ তৃষ্ণাজনকগন্ধযু-ক্তে ভক্ষাপদিজব্যে দ্বয় মেভদি-তি সাঞ্চঃ।। তত্র তি ।। ममाथा जी कीर्डिश देखि मक अञ्चावली ।। मण्डला यथा। म পিঙীকরণ সমাখ্যাসিদ্ধ্যর্থ সূ তরাণ তত্র তথাচরণা ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব গ সমাগতঃ ত্রি সম্যাগামনবিশি स्था जागमना अयः। यथा। टेक ৰ্মধা সহ ৰোদ্ধব্য মন্মিনুণ সমু मार्य। स्थारमायानात्रक ২হ° য এতে ২ত্র সমাগতাঃ।। ইতি ভগবদ্যীতাযা ১ অধ্যায়ঃ য্যাগতিঃ স্ত্রী সনাগ্রন । সম্ আঙ্পূৰ্ব গম ধাজোঃ ক্তি প্ৰ ত্যৰ নিপায়।।। म्बागमः पू॰ ममागागमनः॥म म्भाक्षिः। यथा। मदमाभूताकः। রতিশক্তিঃ স্ত্রিয়ং কাস্তা ভো জ্ঞ্য ভোজনশক্তিতা। मान শক্তিঃ সবিভবা ৰূপ মারোগ্য मण्यमः ॥. आक्षभूष्य मिनः প্রোক্ত ফল বন্ধসমাগমঃ ইতি আদ্ধতৰুণ।। সমায়াতঃ

॥ वधः । रेजि स्मिनि ॥ मनावातः व्याप्ति निर्माणावत् । तथा । शुक्तीवा नवाठात्र লোতু নিছাৰি তৰ্তঃ। ইতি माध्यमा ७७ जनगर ॥ ज॰ नामर । देखि छा। कथानियाः।।। ममाजः भू शासीकाना मध्यः। रेजमझी। मला दिष्टि दिन-त्याः भ **ब्रु**। देखिलात्मकार्थ-एकावः ॥ १९ । हा । १९ । সমাজ্ঞা ক্রী শমজ্ঞা ইতামর-विकाशा खत्र छ। गुगामान की नवीडीमवर्ग । সমাগ্তাহণ দ সেক্তাহ্লিক । বৌদানা নিত্যকৰা ইতি **ध्यमिनी ग्राम्य अस्य क** नमाधाः श्रृ निम्निष्ठिः। विदेशाध-ভঙ্গন ৷ ইতি লোকপ্রদিদ্ধ ৷৷ नमार्थान १ जि जां जां जां वा शहका विज्ञान्य मिलामः॥ मभाशान की बनि बने दिने করণ। চিত্তৈকাঞা তৎ-**शर्यायः। ज्यकामः २-अविधा-**न॰ ७ नमाधिः । इति एम-**ठिखाः। श्रवंशकत्माखितः। ই**ভि লোকপ্রসিদ্ধ-া। পু॰ युक्तः। इंछानद्रः ॥ मगाधिः भु॰ मगर्थनः।। नीवाकः

ा। निषमध्यः रेजानहाः ॥ अमर्थनः जगद्या अध्यक्षमायः मूर्यहेमा ्यप्रनदाः बानः नीबारका यहना-**छादः १ हैकि यानी। शानाानिय्** अ्टनान्य वर्षमूर्वदेका जनामग्रहः। र् रेजिः मूक्किः। निष्या वनी 'का तद । 'अंतक, ममाध्यदा 'मगा-शीयरक शिवन् मरना करेन রিভি বিষয়ে ইভি জরতঃ।। ধ্যা-नः । काराधनविरमसः । ३७ (यमिनी II- व्हेट्सियमिरताथनः । रेकिनमात्रप्रायमी । स्थाः ধি জন্মনং ৰখা নিত্য ভাৰু वृक्षियुक्कः मञ्ज गाममा मदरः। তুরীয় নক্ষর: এক অহ নশ্ম পর॰ পদ• ৸ অহ॰ ক্রেছাবস্থা-নং সন্নাধি নিজি শীৰতে। ইতি गाकुरूपाक्षाम् । । कार्याकुरूपाक অপিকা শ্লাদ্রশ্যান পর্যান্তণ गटना जक्किश्वकाञ्चदाः। जूटक জুপাপুজ্যে পুজা সমাধিঃ সো **২ভিশ্লীবভে**শ ধ্যেষ মেব হি সর্বত্র খ্যাভা ভরষতা গভঃ। প-শ্যক্তি হৈছরহিত সমাধিঃ সো २ जिथी **गरक** ॥ **३ छि भाक्रत** छ २८० ज्यायः॥ ।। ज्याका ত্যোৰ কল্পনাহীন স্বৰূপগ্ৰহ-

१° हिं य<। यनमा गाननिंशी-**ला नगाधिः त्मा १ जिधीयत्य**े॥ ইভি বিকুপুরাণে ৬ অংশে ৭ व्यथायः ॥ 🟶 ॥ व्यथत्यः । हेन॰ গুণসমাহার মনাত্মত্বেন পশ্য-তঃ। অন্তঃশীতলতা ষস্য সমা-ধি রিতি কথ্যতে ॥ ইতি ষোগ-ৰাশিষ্ঠে উপসমপ্ৰকরণ ।। नगांविष्टः वि नगांवियुक्तः। यथा। মনঃ সংক্ষরহিত মিন্দ্রিয়ার্থান-**ठिख्यन्। यमा बन्निन मःनीनः** नगाधिष्टः न कीर्खिजः ॥ ध्राय्यः পরমাত্মান মাত্মস্থ বস্যযোগি-मः। भनखस्रवा॰ यां **छि म**यां थि-স্থঃ স কীর্ত্তিতঃ।। ইতি গারুডে-গীতাসারে ২৪০ অধ্যাযঃ॥ সমান তি স্থা সম্থা এক। रेि (यिनि ॥ मगानः पुः भत्रीत्रश्र्वाय्वित्भयः । সতু নাভিসংস্থিতঃ। ইত্যেশর-**अत्राक्षो।। वर्गलामः। ই**छि दर-महन्तः ॥ म जू अक्षात्नाकार्याः 'বৰ্ণ:। যথা। সাম্যন্ত্ৰেকস্থানত্ব• । इंडि मूक्षरवाधवराकत्वः ॥ সমানকালীনঃ ত্রি তুল্যকালোৎ-পত্তিকং। যথা। গোষু দুছ্মা-নাসু আগতঃ দুগ্ধাস্বাগত ই

माइनकामीन गमनामूक्षकः किमान्। अव शाविषयकाठी-**छ দোহন সমানকালীনাভী**জ গ্ৰনানুকুলক্কতিমানিতি ৰোধঃ । ইতি সারমঞ্রী ।।

मगात्नाषकः श्रुः अत्काष्ट्रकः । স তু জ্ঞাতিবিশেষঃ। তপ্ৰে স मान॰ এक मूलक मना। यथो। জারো নঙ্গ: সগোত্রস্ত বজন জ্ঞাতি বান্ধবাং। সঙ্গল্য বন্ধু मायम य जमारनामका ज्यशि ॥ रेि कि विश्वतः।। म जू ठजूर्ममः পুরুষপর্যান্তঃ। জন্মনানশ্মতি-পর্যান্তশ্চ। তত্র আদ্যাদ্যোক।-चम्पूक्रवाविश ठर्जूर्मभूक्रवश-ৰ্যান্তস্যাশৌচ পক্ষিণী দ্বিতীয-दिगाकारः। यथा। छेनककिया ম্মিকুত্য পারস্কর:। সর্বে জ্ঞাত-र्या भावविश्व। जामश्रमाद्रण-मार्गी नमान्धामवात्नन याव সম্প্ৰ মনুস্বরেযু বা ইতি ভাব-यि निमाप्यक्ति। व्यव याव সম্বন্ধ খানুন্দরেয়ু রেক্ত্রতজাতা-বৰ সিভি-শারণ্-ভবতীভানে-तिन मधेर्वमा मूक्क्लात्न बार्ख

क्रिकार । स्राधिता सम्बद्धार सम्बद्धार सम्बद्धार सम्बद्धार सम्बद्धार सम्बद्धार सम्बद्धार सम्बद्धार सम्बद्धार सम वर्षकान हिन्द जात्रव्यक्तमस्ति व्यवस्ति ग्र शकवर्षमञ्जासम् निक्रि। सदर्गे ह ভেদন্ত নপ্তরশ্রেদকর্মান্ত সলি-खराकमारुभ एकक समयपुर-বপৰ্যাভজভাৰঃ 🕸 ঠেকা চ বিষ্ वृहालानी । जनारक्तः मनिकाञ्च ভবাজিন্তদূতকে: বিসাবেণ गमनां वाची समासि स्माव-काः॥ कल्लाजूर्मभन्त्रवशर्याजः পক্ষিণী ভত্ত জন্মাম সৃতিগ-ৰ্য্যন্ত নেকাৰ্ণা কথাচ বিতাক-রা বিবাদটি ভাষজ্যে কৃহবানুঃ। সপিওতা তু পুরুষে সপ্তমে বি-निवर्त्तरक । नगान्नानकछावञ्च মিৰর্জেভাচভূদশাৎ।। জন্মনা-মন্মতে রেকে তৎপর*ংগোত মৃ-**छाट्छ**। व्यवःगमारवाषकत्व वि-বিধে পূৰ্বত্ৰ ধ্যোতকঃ গ্ৰাকিশী মস-লিভে। শরন হারীভার মাতান-र् बिताबः मारमकार्षुमणिख-কে ইভি 🖟 অত্তৈক গোৱজানা ৰহঃ শৃত মিতি জাগালবচন । ভতঃ পর• সর্বধা মান্সনোদকতা লেন্তেঃ যান মাত্র দিতি সাহা শুধান্তিগোত্রজা ইতি মৃচস্পত্যু **ভন্মাদিতি। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব**ণ।।

मयाणः श्रृं प्रस्यक्रनः रेडि मुक्तदावनगरम्बनः॥

সমাপকঃ জি সমাপনকর্তা।
সমাপকতি ষং সম্পূর্ক আপধাতো র্থক প্রত্যকেন নিম্পন্ন: ।
যথা। আধ্যাতা ভিবাদষ ভেযাঞ্চ প্রধানত্ব বাক্যসমাপকত্বাৎ। ইতি দুর্গাদাস: ।।

जमालन की शतिएक्षः॥ जन्माशिक्षा वयः। देखि स्वित्रीः॥ जमाशानः। देखि विश्वः॥ व्यक्तः। देखि स्वर्तिः।

ভূজা বজতি। ইতি ব্যাকরণ-টীকা।।

ननानिष्ठ॰ जि क्रुं जनगानन ।
यथा। जात्रक मनगाना थाक्
यथक मनगानिष्ठ । जागार्ठ
यनमार जि मनगानिष्ठ । जागार्ठ
नवार । इंडि मनगानिष्ठ । मन्
गारितिनिष्ठ । यथा। नगारि
यक्ति जानीयात्र रेठक नगथाङ्क । उठ उक्त गथाङ्क । उठ जिथाक्रिक्ट ।।

ममाश्वानः पू॰ शिन्धः। ইতি

मन्द्रिश्वाद्मान्धित्वृद्धिः।।

ममाश्विः खी जनमानः। ममर्थनः। ইতি দেনি।। পরিপ্রাপ্তিঃ। ইতি শব্দর্মাবলী।।

ममाश्वार्था खी ममग्रा। ইতি म
माणार्था শব্দ দিকাষা ভরতঃ।।

সমাপ্তঃ জি সমাপনীষং। সমাগিতব্যং। অস্য প্রমাণ সমাপিভশব্দে জফব্যং।।

স্থাৰ্তঃ ত্ৰি সম্যক্**প্ৰকা**রেণ আৰ্তঃ। ব্ৰথা। জয় দ্বং কালি সৰ্বেশে সৰ্বভূত স্থাৰ্তে। রক্ষ মাং নিজভূতেভ্যো ৰলিং ভূক্ষ নমো হস্ত তে।। ইতি দুর্গার্কা-প্রযোগতত্ত্ব ।।

नमारवागः प्रः नःरवागः॥ न-न्यवागः॥ श्राटवाजनः। ३७ त्विमित्री॥

সমালয়ী^ন পু• ভূতৃণ•। ইতি রাজ-নির্যক্টঃ।।

সমালতঃ পু॰ সন্ধুমাদিবিলেপনং । ইতামরং॥

समानखन॰ क्री असुमानिविद्याः श्रमः। छ० श्रमायः। विक्छिः २ क्यायः ७। ইতি ত্রিকাওশে-यः।। সমালভঃ ৪ বিলেপন॰ ৫॥ ইত্যমরः।। সমাঙ্নারণং।। স-মাকস্পর্শনং। যথা। অত উর্দ্ধ মসমালভন মানশরাত্রাদিতি গোভিলসূত্রং।।

সমালী জ্বী সমুমাকর:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।।

সমাবর্ত্তন ক্লী বেদাখ্যবনান-স্তরং গার্হস্থাধিকারপ্রযোজকং কর্মা যথা। অথ সমাবর্ত্তনং। জ্যোভিষে। স্তৌম ভানুজ্যো র্নারে নক্ষত্তে চ ত্রভোদিতে। ভারাচন্দ্র বিশুদ্ধৌ চ সমাবর্ত্তন মিষ্যতো। গোভিলং। অথাপ্ল-বনং। অথ ব্রতানস্তর মাপ্লবনং वानः वर्षाामिलित्नवः। উत्त-त्रञः भूत्रखानाठार्याज्ञनमा भ-রিব্রভ ভবভি । আচার্য্য গৃহা-मूखतमा। भूषमा। वा सानार्थ माग्ठ जान वर्गाए। जा आगत्वक् मर्डिक् उनगाठाया উপবিশতি ভঞাবৃতে উদক উ-मधुराः जाक् जनगर्गुमगर्थस् मर्खिष्। वाक् बाग्य उनि শতীতাম্বদ:। गदि यशि विक्।-ভাভি রন্তি গদ্ধবতীভিঃ শীতো-कांजि ताहारका। चाजियरक्ष । मत्वी यथम्क। जीहराः भाषात्या मूला। शाध्याः मर्यशा खिलाः। चवा ८ को सदयः मञ्ज विश्वता म-ম্ভি ধারিভাঃ ।। ইতি ছন্দোগপ-রিশিক্টোক্তা স্তাভিঃ সহ যা আ-শো বিকাভা বিপন্ধা উফীয়তা ন্তা: সৰৌ ধৰি বিকাভা স্তাতি र्गञ्जरणीजि कमनामि गञ्जजवा-যুক্তাভিঃ শীতোকাভিঃ শীতে৷-দক্ষিশ্রিভাত্তি রিভি ভটভাষ্য ।। স্বৰ মিব তু মন্ত্ৰবৰ্ণো ভবতি। हैव नक विरार्थ। यस त्मव বন্ধচারী আত্মান মভিবিঞ্চেৎ। আচার্যাকতৃ কাভিষেকস্ত পরম-তো যতো মন্ত্ৰবৰ্ণা ভবস্তি। মন্ত্ৰ-

वर्ता अधिराक मञ्जानकः कार् তেনাহ মা মভিষিশামি ইতি তেন যা যভিষিক্তি মিতি চ। তৰিধি নাহ। বে ২প্সন্তরগ্ন প্রবিস্টা ইভ্যপা মঞ্চলি মবসিঞ্চ তি। বে ২পুন্তরগ্নৰ ইতি মন্ত্রে-न काना मना मक्षनि जन्महाती অবসিঞ্চি। ক ভূমৌ সভঃ অব-সিঞ্জি বচৰা**ং ৷ তথ্যস্ত্ৰ**ভি হিতান্ সূজামীতি ষদপা মিতি মন্ত্ৰস্যাভিহিতান্ সূজামি ইতি मञ्जलकष्वराक्र गर्वाचात्ररचन था-প্তাৰা ভূমৌ ভাজতি। ৰদগা ষোর যদপা জুর যদপা মশান্ত মিতি চ। অপা মঞ্চলি মবসিঞ তীতি বর্ত্ততে চকারাৎ। ষো রো-চন স্ত বিহ গৃহামীত্যাত্মান মতি বিঞ্চি। প্রক্রতানা মপা মঞ্জ লি-না যো ৱোচন ইতি মন্ত্ৰেণ বন্ধ-চারী আত্মান মভিবিক্তি। ওম্ ষশসে তেজনে ইতি চ। আত্মা-ন মভিবিঞ্চীতি বৰ্ত্তে। যেন স্ত্রিয় সক্ষপুত মিভি চ। আত্মান মভিবিঞ্ভীতি বৰ্ততে। ভূকী॰ চতুর্থণ। আত্মান মভিষিশভীতি বর্ত্ততে। অভিষেকঃ শির্দি ক-র্ত্তব্যঃ শিব্ধঃ প্রধান বঙ্গানা মিডি

বচনাৎ। উপোখাৰাদিত্য মুগ-তিষ্ঠেত উদান্ ভ্রাজ ভৃষ্টিভি রি-ত্যেতৎ প্ৰভৃতি মন্ত্ৰেণ। আচাৰ্ব্য সমীপাদুখাৰ উদ্যন্নিত্যেতৎ প্ৰ-ভূতি মন্ত্রেণ মা হিণ্সী রিভ্যম্ভ ম-ম্ৰেণাদিত্য যুপতিঠেত উপাশ্বন্ত্ৰে-প চেত্যাত্মনেপদ । মেখলা মৰ-সুঞ্চতে উদুত্তমণ বরুণ ষিতি। অ-বমুঞ্চতে অধস্তাদবভারষ্তি অ-वनत्का व्यवजानत्वं। बाक्तनान् ভোজৰিদ্বা স্বৰণ ভূক্ত্বা কেশ ঋ-শ্রু রোম নথানি বাপষতীতি শি-খাবজ্জ। बान्नगान् ভোজযিয়া স্বয় ভুক্তা নাপিতেন মুখ্বীত। অত্র শিথাবজ্জ মিতি বচনাৎ প্রাক্ সশিখ বপন মিতি দশ্যতি । উক্তঞ্চ। সশিখ বপন কার্য্য যান্নান বন্ধচারিণা ইতি। শ্বাদ্বা অলম্ভ্যাহতে বাসসী প-রিধাষ সূজ মাবন্নীত শ্রীরসি মধি त्रगत्यिण। व्यवकृष्ठा कथनापि-নাত্মান যোজ্যিত্ব। আহতে । नेयक्तोष्ठ॰ नयः শুভূ॰ সদশ॰ यम वातिकः। चारुकः ठविकानीयाद সৰ্বকৰ্মসূপাবন-॥ ইতি বশিষ্ঠো-क नकरण। देयः मृत्रः। नश्विः **७**॰ न शतिशानामि क्**छ**॰। मुक्

এথিত পূলা

(का नवड॰ मा मिणूगगनदरो। আৰম্বীতেত্যনুবৰ্ত্ততে। উপান-হৌ চৰ্মপাদুকে ৰোগ্যছাৎপাদ ধোঃ। গন্ধৰোসীতি মজেণ বৈণ-ৰ• দশু• গৃহ্ণাভি। বৈণব• ব•শঞ্জ ভব• গন্ধৰোসীতি মন্ত্ৰেণ। আচা র্যাণ সপরিষৎক মভ্যেভ্যাচার্য্য शतियम मीकटा। यक मिर हकू-ষঃ প্রিষো বো ভূষাস মিতি। স পরিষৎক শেষ্যাদি সভাসহিত অভ্যেত্যাভিমুখ্যেন গদ্ধা আচা র্য্য॰ পরিষদক্ষেক্ষতে যক্ষ মিভি मरञ्जन। উপোপবিশ্য मूथ्यान् अ गान् मः न्यूगन् ७%। निशाना न क्लीि উंशाहार्या मभीत्य मूथा। न् थागान् मूथ अजनान् वायून् সংস্থান স্নাতকঃ। ওঠাপিধান মিতি মন্ত্র• জপেৎ। অত্তৈন মা-এন স্নাতক বিবাহোক্ত বরা-र्रविधिनार्करा ७ मण्ड গদ্ধপুশাভ্যা•। গোৰুক্ত• রথ মুপক্ষয় পক্ষী কৃবর বাক্রা-ভিদৃষেৎ। বনস্পতি বিত্বলোহি-खूरा रेखि। शक्ती ठळा। कृतः

াশ ৰাজুর•রুপ-রেখেতার্থঃ। বনস্পতীতি মন্ত্রে-ণাভিষ্যেৎ স্থেৎ। আহা তে ক্ষতু কেমানীত্যাতিৡতি। রথ মারুক আস্থাতে জবতু জে-মানীভি ৰনস্পতে ইত্যাদি ম-ন্ত্ৰসাচতুৰ্পানেনাভিষ্ঠভি। উ-পৰিশন্তি প্ৰাথা উ क्षप्रक्रिक मान्छा উপযাতি । তেন রখেন আত্মুখো বা প্রযায প্ৰকৰ্ষেণ গদ্বা উপৰাতি আচাৰ্য্য সমীপ মাগক্তি উপৰাতাযাৰ্য ষিতি কোহনীষাঃ। উপযাতা-बाहार्यः नबीन बागलायार्यः দেব নিতিকোহনীয়া আচাৰ্য্যা আহঃ। রুণাভাবেপি মন্ত্রপাঠা-ठातः। ठक्रकतः। उषुनामावव-যাতাদিবৎ। অসা কর্মাণঃ সমা-বর্ত্তন সংজ্ঞাপি। গুরুণানুমতঃ नाषा नगावटकी स्थाविधि। छे-बरहरू बिट्डा ভाষ্যा॰ সবর্ণা॰ नकगाविणाः ॥ देखि मनूरकः॥ ম্পাক্ট শৌনককারিকাষা। স্ব-बैंडि चर स्टिक्ड मनावर्डन সংজ্ঞক । ইন্ডি সংস্কারতন্ত্র ।। সমারাবঃ পু॰ সমূহঃ। ইত্য-শরটীকাবা• ভরতঃ ॥

मयावृत्तः प् तिमाधायननिवृत्तः। । ७९ भरा यः । जन्म निकार २। रेज्ञानता । नान्यतमार्गमान-खत प भिनानी गृश्स्य जन रेकि गरिशाय आश्वानूमिकः সমাবৃদ্ধ উচাঙে৷ সমাবৰ্ততে वधारनाविष्टुरण हेलि नगाए-পূর্বাৎ কৃতেঃ কন্তরি ক্তে সমা-বৃত্তঃ। ইতি ভরতঃ।। অতঃপর॰ गमावृद्धः वर्गामात्रशतिखर्। ইতি উদাহতত্ত্বশালা তদ্য স र्वात्मोटा मूखमे यथा । जत्मी-চাধিকারে জাপত্তয়ঃ। অনৃভা-বিনাক পরিবাপন নিতি। অনু-ভাবিনা বাণেচ মনুভবতা गरावृद्धानाः गर्नाटमोटा मूखनः । यह शून ब्रान्डवः। न गमा-वृक्षा क्रम् बनाव वीशवानि-छाटक। वीहात्राध्य मर्ग भीन-यानाक यानित्नवामनाज न गावृछा गृहका न बर्गकुः। इः ত্যৈকেবা মত। তৎ কাম্যণ রণ। ইতি ওল্লিভরণ।। ममावृद्धकः पूर ममावृद्धः। ইতি गयतप्रावनी। ममादिनः श्रु अक्ब महादश नः। रथा। अर्थनावनवः रहावः

मिकोमन्द्रश्रीकं गायमं । जन्म नर्थगायनप्र' दलका निकेगायन-प्रा निहानत्वा द्राक्त ग्रमात्व-भः। ইতি ভিशामिल्य देवस-रि॰गाविहाद्रः॥

नमारविष्ठः जि नहाविष्ठः॥ अविष्ठः॥ नमारविश्वश्राश्वः। नमारविश्वश्रामिक अञ्चारमन निश्नमः॥

नमाध्यः प्रग्नमाध्यः। न-मागायातः। नहायः। नमाधः पृर्वक धियात्मा तन् श्रेणारमनः मिन्नानः॥

গমাঞ্জিতঃ ত্রি সম্যক্প্রকারেগাঞ্জিতঃ। বখা। রবেঃ কবেঃ
কি॰ সমরস্য সারঃ ক্লবে ভ্রিণ
কি॰ কিমুদন্তি ভূসাঃ। সদা ভব কাপ্যভযক কেবা॰ ভাগীর বীতীরসমাঞ্জিতানাণ। ইত্যন্তলাপিকা।।

मयामः पूर मरक्रमः॥ मयर्गनः हिंछ स्मान्यः॥ मयारादः॥ हेछि स्मान्यः॥ अक्रमारः॥ हेछि स्मान्यः॥ मयान्यः भागनः स्वाः प्रमानात्रः अक्रमीकद्रमः मयानः। हेछि मर्मिखमादकः। कद्रमः॥ म ह यक्षितः। वस्रः >

वरुदीशि २ कर्मशास्त्र ७ ७९-शूक्रका । विश्वह है ज्यान जी रच्याः नक्षः पथा। जिन्नादेनाः कार्थ खानि मण्या वानीना ह इ य य ग वाः। ইতি मुक्तदाधः ব্যাকরণ ।।। অগি চ। নারা। मगारमा मुकार्थ खरुषा लाभा। विভक्तः। ३७ रेवमाकत्रभाः॥ তস্য সামান্যলকণ ষ্থা। অ ভিধানাশ্রিত লোগাভাববদন্য মধ্যবর্ত্তি বিভক্তিশূন্যনামসমূ দাযত্র সমাসত্র । তত্র কর্মধারষ দিগু তৎপুরুষ বহুত্রীহি দৃশাব্য-খ্ৰীভাবাঃ খট্সমাসা ভবস্তি ৭ তত্ত্ৰ কৰ্মধারষত্বণ সমাসনিষত-'লকণাশুন্যাস'জ্ঞাস্থ্যাবাচ-কণূৰ্বপদকাম্যমধ্যবর্ত্তিবিভক্তি-न्ना ज्लाधिकत्रभगमम्मावदः । কথা নীলোৎপল সিত্যাদিঃ।। ३॥ ७० विश्वष्यः। नमानाभीन-অকশাশূনাসধাপদবর্তিবিভক্তি-শৃষ্যাস জ্ঞাহস খ্যাবাচকপূর্প-मक खूणारिकतन नामममूमायप् াস চ ভবিতাৰ্থে বিষধীভূতে ত কিতার্থে ইভিবেষে উত্তরপদে বা শনাহারে বাভিধেষে ভবভি। উ-ন্তরগদ পারিভাষিক যৎপদ

मिछि गयामा इबेडि विश्वर्गन ছৎপদ। তেন চ পঞ্চগাবোধ-नानीत्छाबानम् अत्वादगान म जू नकगरामि धर्मामि रेछि। उद्य-ভার্থে বিষৰীভূতে यथा পঞ্চগর্গ-ন্ধপ্যঃ পক্তান্ধণ্যঃ পাক্ষমাপিত্যিঃ देवना विक विकासि । किकार्य र जित्र र वेशा शक्यशालः अन-सः। नमानना मन्कृत्ला २४% नः-স্কারে প্রবোজ্যতাসম্বন্ধেন পঞ্ क्षानमात्रवी ब्रार्थिखरेविन ত্যাৎ তথা চ প্ৰক্পাল প্ৰবো-का मन्याक्ष अविधित्र उपनः। ভদ্ধিতাৰ্থস্য দ্বাদেনাভিধানাৎ न रुक्तिरुक्षराधाः। नमाहादत **২ভিবেষে বর্জা পঞ্চগর**ু চতুস্প-শ বিপাত্ত ত্রিভূবন চতুর্গ নি-ज्याप्तरः। উउद्येशिक स्था। शक्ष-गवधनः देखामिः ॥ २॥ ७९५-ক্ৰম্ম সমাসাধীন লাক্ষণিক-বিশেবণপদক মধ্যবর্তি বিভক্তি-भूना नामममूलाचंचरी यथा। ता-জপুরুষ। कर्कीखिङः। भूकः त्काखमः। इंछानि॥ ७॥ नमा-সপ্রযুক্তলকণানিষতোত্তরপদক-मनामच वहवीहिष्। मनामा-ধীনলাক্ষণিকবিশেষ্যবাচৰপদক

यश्यक्षिति छक्तिम्नाना यगपूर्णा-यप वा। मर्श्विकांकिन्वप्रवा-(गास्त्रगमकष् व क्वडीर्ष्यः। वर्खीरिक विविधः। नवानाधि क्रत्रभा बाधिकत्रभक्ते। चथा। हि-क्षः। गृहशानाक देणकः। जा-क्रवानद्वा युक्तः। रेजानि ॥॥॥ স্বয়কীভূতপ্রত্যেকপদার্থাহিতা-র্থকসোত্তরবিভক্তিকমধ্যবর্ত্তিবি-**ज्ञिभूनानावनग्नायपः प्रमुपः** া ৰথা ৷ থব থদির পজাসা শিছ্দ্ধি । ইতি। দ্বিবিধে। দৃশুঃ। ইতরেতর (यागः नगरात्रणः। यदा नगरा त्रमानक्कार्थः अक्षामः ठटक्टरत তরষোগঃ দ্বিচন বহুচনে ২পি **उद्धेव । यथा । स्मरमञ्ज मञ्जामर**को ব ধব খদির পলাসাঃ। ইতি। যত্র সংহতিপ্ৰাধান্য তত্ত্ব সমাহর স্ত-ত্রৈকবচন নপু-সক্লিসভা চ। यथा। बाग्रह्मानः रुखायः। दे जानि॥ **१॥ ममामध्यक् बक गान्**नगावयवशूर्यभाकमश्रवर्खिति छक्तिभूना **७६ भूक्रयानानायग**र् मायषः व्यवायीकावषः। यथा। **উপঙ্গন্ত অষ্ট निर्माकिक ज**े ধিন্তি ইত্যাদি ৷৷ ৬ ৷৷ ইতি সমা-जवानः॥ । जनग्रकः। योगिः

(क्यू नवानः नक्षिः राष्ट्रन-गा मरावाकामा खु । पि निका-र्थरक । वाष्मार्थमा शीरहजुः म नमान छात्रथकः।। यामृभ महा-चारकाखितः च छनानिः वार्थमा षामृभाषीयिक्त विषयञामानि বোৰে হেজু স্তাদৃশ জন্ধাক্য ভ-थ।विशार्थ मनामः। विভक्ष । দ চায় ষভ্ৰিধঃ কৰ্মধার্যাদি **थेटिं मठः। वटम्होश्रामम**रखा-ना रखनारमो मखश मण्डः॥ পূर्व ৰধ্যান্ত্য সৰ্বান্যপদপ্ৰাধান্যতঃ পুনঃ। প্রাচ্যৈঃ পঞ্চবিধঃ প্রোক্তঃ সমামো বা ভটাদিভিঃ॥ তেম্ কর্মধারয়ণ লক্ষ্যতি। ক্ৰমিক• यद्यामयूग प्यकार्य श्नार्थात्रा-ধক। ভাদাজ্যেন ভ্বেদেষ স-मानः कर्मधात्रयः। क्रिकि यदा-मन्तर ज्या दाकमा नाटमा १८४ ধর্মিণি ভাদাজ্যোনাপরনায়ো হর্থ দ্যাম্ববোধ প্রতি সমর্থ তা-मृत्रनायषयः कर्षधात्रयः। यथा मीलार्थना। ३॥ विश्वः न--ক্ষতি। সংখ্যাশব্দুত্ত নাম ভ-मनकार्थरवाथकः। व्यरक्रमरेनव ষৎস্বার্থে স দ্বিশু স্ত্রিবিধাে মতঃ॥ मः भाविष्ट्रमण्ड यदशरहाखद्र-

ত্ববিশিক্ট বন্ধান স্বাৰ্থমৰ্থিক তা माटबान छम्बन्धार्यकाच्यरवा-य अछि नमर्थ छमारमाखद्रछा-भन्न **जनारियक जननकार्या**कि মস্যার্থে বিশুক্ষচ্যতে। তত্ত্র ত क्विणार्थविश्वः वक्षेष्ठि। छक्तिः তার্থারিতবার্থ স্তদ্ধিতার্থবিশু ৰ্মতঃ। তদ্ধিতাৰ্থে লাকণিক স্বা-স্ত্যানাম স্বসর্বগঃ ৷৷ যো দিভঃ সোত্তর তদ্ধিতার্থান্বিত স্বার্থকঃ। উত্তরপদদ্ভিও লক্ষয়তি। স্বাস্ত-নিবিষ্ট শকাভ্যা• শকান্তর সমা-সগঃ। যো शिक्षः শাব্দিকৈ রুক্তঃ স উত্তরপদদ্ভিঃ ৷৷ বে৷ দিগুঃ স্বঘটক নামভ্যা॰ সহ সাকাজ্জ নামান্তরেণ সমাসস্যান্তর্গতঃ স উত্তরপদদ্ভিঃ। यथा পঞ্চাব-यमः॥ সমাহারদ্বিশু लक्ष्यि । স্বার্থান্থিত সমাহার **লক্**কঃ স্বাস্থ্য শব্দকঃ ৷ উক্তাভ্যা মিতরঃ कि॰ वा नमाशतिष्ध विश्वः ॥ বোপত্থাপ্যার্থন্য সমাহারলক্ষ-কো যদীযান্ত্যশব্দঃ স দ্বিষ্ণঃ স-माहाक्षक्षः। यथा शक्षश्रुली-छानि॥२॥ ७९ भूक्ष वन् वन् वि । यहीत्यम भूवत्थन युज यत्वाध-নক্ষঃ যঃ সমাস স্তস্য তত্ত্ৰ স

कर्श्वन केग्रंटिश मार्थगट्टन जुबर्वन विलिकेना वनवेनाहि-गतार्थ अछि यह मनामः चैक-भरवागाः म जर्मर्थमा जर्मर्स्य जेर-**পু**क्रवः। न जू ब्रमाटमाख्त्रः यमाग ষদর্থগভ সুবর্থাবচ্ছিমস্য যৎ বা-र्थमा (बार्यक छानुखन्न छमारेमव छमर्थरमा छ० नुक्रमः। भूरकारमा २क्षिश्रिनीज्ञामाववगारश्वः। वि-ভজতে। দ্বিতীয়াদি সুবর্থস্য ভে-नारनव ह वज्विधः। कियात्रवी कि शिवादन दर्शः आद्याल दर्शाक-তঃ ৷৷ ৩ ৷৷ অব্যধীভাব• লক্ষ্যতি ৷ উত্তরার্থান্বিত সার্থাব্যষপুর্বস্ত **रा अदर । ममानः मा श्वारी फादः खी प्र विक विदर्जिङः ॥** যঃ সমাসঃ ছোভরপদোপস্থাপ্যে न राम्टर्सनाञ्चित्रमा रामर्थमा त्वाध-কাৰ্যযপূৰ্বভা**সকংস ভৰিশিক্ট**স্য তদর্থস্য বোধনে অব্যবীভাবঃ। বথা নিৰ্মক্ষিক উপজ্ঞ বিভ্যাদি । अभारमण विना अस्त्राण यष्ठी न (वाशिका। श्वादर्भ यमर्थमा यहा मावायीजाव रेवाराः।। वामारमः **म॰ विना कारमान रही शार्थ** य **সমাসার্থস্যাম্বরবোধ-প্র**ত্যসমর্থা मज्य वावायीजावः व्ययमाटेनव

यठी सार्थ नमाना खन्नार्थना य-यदायदन रमयश्री न जू मूखा-शि ॥ **६॥ वहडीहिः वक्**षि। वर्जीहः सगर्जार्थ महित्यन বোধকঃ ৷ নিৰুচ্যা লক্ষণ্যা স্বাণ-भक्डाशक मक्तान्।। वा॰मजा নিক্তলক্ষণয়া জ্ঞাপকেন শব্দে-न रुविकः समर्खना सामृभार्यना সম্বন্ধিত্ব প্রকারেণাম্ববেশং প্র-তি সমর্থঃ সমাসঃ স্বগর্ভ তাদৃ-गार्थमञ्जलिदगद्या वस्वीहिः। অলৈাক প্ৰথমান্ত সৎ সুৰস্তৈ রিতরেঃ সহ। যদা ভেদ সুবস্তেন সাকাজ্ফ নাম বিগ্রহঃ।। অস্য वरुबीटर बं छेक स्मकः नाम अध-মান্ত সৎ সূবত্তৈ রিতরনামভিঃ সহ ভেদার্থক সুবস্ত বচ্ছদেন माकाष्क विश्व कथारा व হুত্ৰীহিং বিভক্ততে। তদতদ্ভণ-मिख्छात्ने (बी एउटमी छमानि-मः। विश्रह्मा वित्मारमा **य छ**-দিশেষ্যক বোধরুৎ।। ভত্ত বি-এহ বাক্যস্য বিশেষ্য বিশ্বা প্র-ত্যায়ো য়ে ২ৰ্ম ভাৰিশেষ্যক वाधकृष दहजीहि छत्या जानि-মঃ তদ গুণসন্থিত নঃ৷ তস্য স্থা-র্থগুণীভূতন্য সম্যাগ্রিশেষ্যবি-

थया विकास समिति बुर्ध-পত্ত্যা স্বার্থান্ত্রমঃ সংজ্ঞাত্বাৎ ত ন্তিম শ্চাতদ্ত্রণসম্বিজ্ঞান শ্চরম रेठाशान्तभगात् ॥ थाना म-তেন তদ্গুণসম্বিজ্ঞান বহুত্ৰীহি मनाथा निर्देखि। यः वार्थ वर्षे-कार्थमा क्वार्थाम्बविनि द्वायत्न । অনুকূলো বহুত্রীহিঃ স তয়ে। রুখ वानियः ॥ त्या वल्बीहः स्रार्थ-माम्यिनि वार्थयरेकमालार्थः माव्यरवाधरन मनर्थः म जरमा उन्धनाजन्धनया ज्ञानिमः। ल-यकर्ग मानय शत्र औव भगा है-ত্যাদি॥ পুন বিভঙ্গতে। স্বাস্ত र्निविके षिख्यामि नामि विश्व-হাৎ পুনঃ। বহুত্ৰীহি ৰহুবিধো षिनम जिननामिकः॥ वि जि চতুরাদিভি রেব স্বঘটক নামভি বিগ্ৰহ্ৰশাৎ দ্বিপদ ত্ৰিপদ চত্-न्नामित्का वह्जीहि (बीधाः ॥ ध्या चन्तुः लक्ष्यि । यस्त्रमर्थकः यमायवृह्हा यात्रक अकात्रक । বোধে সমর্থঃ স द्यमुः সমাস ्छावमर्थकः॥ सम्यम्दर्भागङ्गान-कमा क्रिक यामृभ नामरङाममा निक्ष खपर्थकात्रकाष्यरवाधः প্রতি তত্ত্বেন সমর্থ স্তাদৃশ না-

মনিবহ এব ভাবদৰ্থকো দুস্স-সাসঃ।। ৰন্দু বিভক্তে। ছৌ ভেদাবস্য শাস্ত্রোক্তৌ সমাহা-রেভরেভরो।একান্য বচনাকা-ক্ষা হানোপাদানতশ্চ তৌ ॥ **जगा बम्मुमा (को छिएत) मग**ा-হার ইতরেতরশ্চ শান্ত্রসিজৌ। ভৱৈক্বচনান্য সুবাকাজ্গাবি-হীন: সমাহারঃ। তথাবিধ সু--वाकाष्क ("उठदावज्ञा स्था। পাণিপাদ হস্ত্যশ্ব ধবথদিয়ে । रेजामि॥ ७॥ উপপদস্মাস मक्यि । यमुख्तराम । नामान् ত্তর খদৰোধক। ধাতুর জ্জ মু-পপদ সমাসঃ স তদন্তকঃ।। श-তুরুদ্ভ্যাণ নিম্পন্নণ যস্যোত্তরপ-प॰ गकान्खतः म यापृगार्थमा বোধণ প্রত্যসমর্থণ তাদৃশার্থে তাদৃশার্থকাস্ত্যপদকঃ সমাসঃ উপপদ সংজ্ঞকঃ। সম্ভকারঃ ক্ষীরপাষীত্যাদি॥ বিভক্ততে। কারকৈকোপপদকঃ ষড্বিধো-ষ মিতি ভূমঃ! কর্মাকর্ত্তাদ্যুপ-**शन एकता ५ वह विध खुरमा ॥ १ ॥** ইতি শব্দশক্তিপ্রকাশিকা ॥ नगानकः वि मः वूकः। यथा। ত্রিপঞ্চারে পীঠে শব শিব হুদি

(अद्भवना॰ यहाकाटनटनाटेक र्मनत्रमनाद्या नित्रजाः। नर्भा-সক্তো নক্ত॰ স্বয় মপি রতানন্দ-নিরতো জনো যো ধ্যাবেদ্বাম-वि क्निनि म मार्थ प्यत्रहतः ॥ ইতি কপূ রাখ্যভোত্ত।। जवामक्षन की जवामकः। त्य-लनः। मरकागः। ममाख् পूर्वक मन्जधारा दनहे अठारवन নিষ্পন্ন ৷৷ সমাসন তি নিকটা সমাঙ্ পূৰ্ব সদ্ধাতোঃ ক্ষপ্ৰত্যযেন নিষ্পন্ন ৷৷ नमानवान् पू॰ जूबवृकः। ইতি শব্দচন্দ্রিকা ॥ बि॥ সমাসাদিতঃ ত্রি আহতঃ ৷৷ প্রা-खः। ममाष्ट्रम् कास्रमान ভোঃ ক্তপ্রত্যবেন নিম্পন্নঃ ॥ সৰাসাদ্য তি প্ৰাপ্য । ইত্য-नतः॥ प्रनुषात्रमूनारकः था-श्वान सत्रादाधक किया।। সমাসার্থা জ্রী সমস্যা। স্লোক-স্য পাদেনৈকেন দ্বাভ্যাণ ত্ৰিভি ৰা পুরণ । ইত্যমরভরতে। ।। नगार्य की नगारायः। नगा-ঙ্ পূৰ্বক ছঞ ধাতো রনট্ প্র-

ত্যখেন নিশার ।।

मनाशातः १ सम्बन्धः। ३०ा-बदः॥ बहूनाः जिन्नानाः वाकः वाशिदान वृक्ता वा अक्रमूकी बिज्यनयः द्वामीकद्रगः। ইতি ভরতঃ ৷৷ শংকেপঃ ৷ যথা ৷ সৃ-মাসস্ত সমাহারঃ সংক্ষেপঃ সং-এহোপি ह। ইভি হেমচন্দ্রঃ।। मयाशात्रवन्त्रु मयाशात्रविश्व मः यामत्या विवद्यनः ममामनत्य দ্রকব্য-॥

नगाहिकः वि नगाविषः॥ উक निकाखः॥ जाहिकः॥ निर्वि-বাদীকুতঃ। প্রতিজ্ঞাতঃ। ইভি (यिनिनी।। निष्णवः। ইতি ধর-<u> गै।। শুচৌ পু•। ইতি শব্দরত্না-</u> বলী ৷৷

मगास्ठः वि मगाक्यकादत्र वार्त्रीकृष्टः। मः धरीष्टः। একত্রীকৃতঃ। সংক্ষেপেণপ্রতি-পাদিতঃ। সমাঙ্পূর্বক ক্ষধাতেঃ ক্ত প্রত্যযেন নিপানঃ ।।

সমান্তিঃ স্ত্রী সংগ্রহঃ। ইত্য-এককতৃ কাণা মনেক কতৃ কাণা বা একাভিপ্ৰামাণা বাক্যানা সমাহরণ সমান্তঃ

পদ্যতে অন্যা স্মান্ডিঃ ৷ স্-পূৰাৎ আওপূৰাৎ কঞ হরণে ইতাসাৎ কিঃ। ইভি ভরতঃ॥ मगब्यः पू॰ ह्यू छ॰।। व्याक्षानः। रेषि गयतप्रावनी।। शश्राकः मृाजः।। जनतः। इंजि यमिनी ।। 🗱 ।। छम्। निविक्तवः यथा । मृाङ ममास्त्र देश्व ब्राङ्ग রাফুামিবারষেৎ। রাজ্যান্তক-त्रनात्वरा को स्नास्त्री भृषि-বীক্ষিতা ৷৷ প্রকাশ মেতৎ **७कर्याः यरम्बदन ममास्रत्यो ।** ভষো ৰ্নিত্যণ প্ৰতীঘাতে নৃপতি र्यष्रवान् ভবেৎ।। ज्ञथानिভि ৰ্বৎক্ৰিষতে তল্পোকে দ্যুত মুচ্য-তে। প্রাণিভিঃ ক্রিয়তে যস্তু স विटब्बदः मभास्त्रयः ॥ मृाकः म-মাহ্বৰ কৈৰ ষঃ জৰ্ব্যাৎ কারষেত ब। তাन् गर्बान् याज्यकाका भूजा॰ क दिक्क निम्नः ॥ देखि শানবে ৯ অধ্যায়ঃ॥

गमास्रा जी गाजिसावृकः। ইতি শব্দচন্দ্ৰিকা॥ সমাখ্যা ह॥ निक की लिल। त्रजा देखि ভাষা। ইতি শব্দরত্বাবলী।। निष् जी युक्त । ইতামর: ॥ । ममाहिष्ट मारकर्म अणि । मिष् जी विमिक्ती भागिष्

कार्वादिः। ७९ भवायः। देवा नः २ अषः ७ हेग्नः ८ अषः ६। रेणस्त्रः॥ त्रभिद्यनः ७। ७० चिम् मृत्य किनिक्षः। ইতি म चत्रप्रावेनी ॥ ●॥ ट्रामीयम-विज्ञकन वर्गान्तात्न। आरम শমাত্রাঃ সশিখাঃ সবস্কাশ্চ প नानिनीः। निवधः कन्नत्यः था-कः मर्कर्यम् गर्दम्।।। कः।। लः **क्रशाक्र वर्था।** इटकामन्त्रि-निकः। नाजुकीमधिका नगना मिष् कृत्रा कि हिन्। न नि-र्युक्किको टेठर न मकी है। न शाः টিভা ৷৷ প্রাদেশালাধিকা নোনা न ज्था मग्राष्ट्रिमाथिका। न म পত্ৰা ন নিৰ্বীৰ্য্যা হোমেষু চ বি-জানতা।। ইতি সংস্কারতত্ত্বং ।। ৩ ।। তস্য নিষিদ্ধলকণ যথ। । विनीर्ग विषमा हुया वकाः স্থৃলা বিধারতাঃ। রুমিদক্তাশ্চ দীৰ্ঘাশ্চ সমিধো নৈৰ কার্যেৎ ॥ । प्रव मार्या स्था। वि नीर्गायुःकरः अर्यादिम्ला भूख-नामिनी। दुवा नामस्छ भन्नी॰ रका रक्षिमाणिनी॥ क्षिणकी त्त्रागकती विद्ययकत्नी विशा পশুন্ যারষতে দীর্ঘা সুলা চার্ম-

विनामिनी।। इंडि छड ॥ ।। मरवाहानाः ममिद्शाचया। व्यर्कः शनामः यमित्र खुंशाबादमा २० शिक्षमः। उष्मातः भनी मृताः जनाम निष्यक्षमा । ইতি ল-কাতত্ত্বে যাজ্ঞৰক্ষ্যবন্তন ।। সমিতা স্ত্রী গোদুমচূর্ণ। মবদা रेि जाया। रेि ट्रमण्यः॥ তमा नकन यथा ि त्माधूमा ধবলা ধৌতাঃ ক্রটিতাঃ শোষি-ত। স্ততঃ। প্রেক্সিপ্তাঃ সা বিনি-শিষ্টা শ্চালিতাঃ সমিতা শৃতা ।। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। সমিতিঃ স্ত্রী সভা।। বৃদ্ধা। नकः। ইত্যমর মেদিনীকরে।।

गानावः जा नजा। नृकाः।।

गनः। ইতামর মেদিনীকরে।।

गानाः। ইতি হেনচন্দ্রঃ।।

সমিথঃ পু॰ অগ্নিঃ। ইতাপাদিকোষঃ।। যুদ্ধা। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদ্যা মুণাদিকৃতিঃ।। আহকিঃ। ইতি সংক্রিপ্রদারোণাদিকৃত্রিঃ।।

সমিদ জী সমিধা। ইতামরঃ।।

সমিদ্ স্ত্রী সমিথ। ইত্যমর: ।। সমিধঃ পু• অক্সিঃ। ইতি ত্রিকাও শেষঃ ।।

সমিদ্ধান ক্ষী সমিৎ। ইতি শ-সমন্ত্ৰাবলী।। সমিরঃ পুণ বাযুং। ইতি হেমচন্দ্রঃ मनीकर की इंग्ला विकास ।।
निक्रण कि अमित्र का स्थान
निक्रण कि अस्ति का सिक्रण ।।

স্মীচকঃ পুশ্ন ক্রেপ্ত ক্রিপ্ত ক্রিপ্ত

गरीकी जी क्षी। स्कृति। स्कृति। क्षिकाः अरम्बः।।

সমীচীন ক্লী ষঞ্চাৰণ তেওঁ পৰ্যানিক দিনতা হ'ল মাক্ ও ন্ধানিক দিনতা হ'ল মাক্ ও মুখ্যানিক প্ৰাক্তি ভিন্য মুখ্যানিক প্ৰাক্তি ভিন্য

नगीमः प् काष्मकृत्। देखि क्किन्ता

मनीनः जि नश्निवस्यक्षीः मना भकाष्ट्र बीत क्षकारमन निकासः मनीनिका, जी श्रिक्सिक्ष्णा रमीनिका, जी श्रिक्सिक्ष्णा मनीशः जि निकारः। वेक्स्प्रद्रः॥ मनीशका जी त्वारः। वेक्स्प्रद्रः॥ मनीशका जी त्वारः। वेक्स्प्रद्रः॥ मनीशका जी त्वारः। वेक्स्प्रद्रः॥ मनीशका जी त्वारः। वेक्स्प्रद्रः॥ भक्षकारमन निष्णमानाः ्मात्रभारः। नामभाषायः शिकायाः ृष्टाक्षम् निकासः।

समितः प्रमूर विषय है। हे जिस्से ।। गभीवृक्षः। देखि द्वाक् किक्के ।। गनीस १२ प्रभावा प्रमा सात्वकः। देखस्य । प्रमानिकः। देखि ।। प्रमानः। प्रमानिकः। देखि ।। प्रमानः। प्रमानिकः। देखि ।।

সনীক্ষণ দ্বী নিসাপ্তাশাক্ত কৈছি তিকাওলেকা। সম্যক্তাকারেক দর্শনা হৈছিল সম্যক্তাকারেক দর্শনা হৈছিল কৈছিল। ব্যক্তাকার হাতে রন্ট প্রত্যাদেন কিলাই ।। ক্ষিতাকার হাত কেদিনী ।। নিজ্ঞালক । ইতি নেদিনী ।। নীমাণসাশাক্ত । ব্যক্তা দ্বিতি লাক্তালক । ব্যক্তা দ্বিতি লাক্তালক । ব্যক্তালক । ব্যক্তাল

সমূখ: ত্রি বাগী। কাবদুক: [- ইতি হেনটন্ম:]!:

ব্রুচিতঃ ত্রি দানাগুচিতঃ। উপযুক্তঃ। যথা। ক্লোন তে কিয়া
কলনি বয় দুইচ্চ ক্লড়িইবোন
বাক্তা নাগীলোচ হলি লগি নতে
বেতি পরমণ। তথাণি ক্ডভি
ক্ ধরমতি ক্লোনাক অনিতে তা
কেতৰ ক্রেবাংনাকলু পশুলোবং সম্চিতঃ । ইভিতক্সারগৃত
শ্যামাক্তাক্রাক্রা

मन्ककः भूण ज्यारात्रः विका-स्तः॥ यथा। ज्ञाटमी बट्यार्वर् साक्ष्णपारात्रः जन्नक्षः । विकि स्यानकात्रात्रकी ॥

সমুদ্দেদঃ পুশ বিনাশঃ। স্থাপু-ব্ৰোৎ পূৰ্বছিদ্দাতোৰ্মজ্ঞান্ত্য-বেন নিষ্ণানঃ।।

क्रम्ब्ह्यः 'पू॰ विद्धायः॥ 'उद्देश ' रमयः। हेणि मिनिनीः॥

আনুক্ষি . পু॰ সমৃদ্ধান জানুৎ-পূৰ্ব জিবাতো বিএ প্ৰত্যাথন কিলাম: ।

পাৰ্কিতঃ ত্ৰি উচ্চঃ। সাৰুৎ: পূৰ্ব ভাগাচনা ভাগাচন নিপালঃ।

ममूक्तिछः जि **छाङ**ः। **२**छा-स्तराः

मम्बद्धाः भू क्ष्मिंशमानः। म भूषभूद्वाक्षित्रशास्त्रा द्वाद्धाः स्वेत्र निष्णाकः।।

সন্হত্তেনশঃ শু• সরস্পদী। তিতি শব্দরত্বাধনী ম উটিচঃ শব্দেশ্য

শস্থঃ ক্রি সম্ভব: ১১ শস্থিত: ১ শস্থ শৃৰ সামতে ও প্রত্য-তথ্য নিশ্মির।

अपूर्णान• क्री भाष्ट्राकाराधा।वाग- ग्री

शिमा मिर्नकः दिश्यमिन । उद्यान प्रति मन्द्रिक्तम् विवा । उपान प्रति मन्द्रिक्तम् । इस्ति । उत्यान स्रीमाना क्र उत्यान महिना स्रोमाना क्र उत्यान माञ्जा प्रमः । देखि विवासिक्य ।।

সমূখিত: পূ
ত সমাপ্তবিজ্ঞ শ্বেণান্যপানে

শৈক্ষিত প্ত প্ৰকাশ প্ৰসাধান তেওঁ ।
ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব শক্ষোপানপূজানপ্তান

পানুহ পর্নঃ 'ত্রি দানু ভূলঃ বধা।
পুউক্তা চাধা বিদ্যা পারহন্তগতি ধনাৰ কাৰিক্যা না ভন্তন ।।
ইতি চাপক্যা না

সমূৎপিঞ্জঃ ত্রি অত্যন্তব্যাস্তা: 1 বৈধা । উথিপিঞ্চল সমূৎপিঞ্জ পিঞ্চলা ভূলিমাঞ্চলে । ইতি ধ্যেট্ডো: ম

मम् शिक्षः पूर् । कृष्याक्रणं टेम्पाः िहेकामतः ॥

मण्डेन्यः कि जगास्य पिकाः। विकारिक स्थारिक स्थापकार्याः सर्वतीयः। जगानिकार्यास्य-कः। इस्तारत स्थापकार्यः

नर्भमार ग मम्बद्धाः वि : जेब्डाः क्यारत-क्रम्हरूक्त विश्व हेन्छ मद्रश्रा जगुरुष्य जिल्लामूर्यम् । तस्य । नामत्रीचान्युतामसूत्रा र्वतरिः ্ প্রবাদ্ধর কা শারীর কোরত भगागाः नग्रुकावविक्या ॥ ইতি হোৱী ৰাষ্ণপূচ ম जाबृत्तरः , क्री जामः। यथा। जाग-्र्राः । अन् क्लाह्यः मञ्हारम् विखः म्बर्धिय छ छ। विका छि नार्क ভূতীয়ভবনে বোশক দক্তিভ दक्षा देकप्रक्रिकाणिकम्।। नशासीकवासर्गकक्रम्भाकी । म। जू जन्ममन्त्रा विश्वकाको इन লক্ষত্ৰৰ প্ৰা ৷ তেওপৰ্য্যাৰঃ ৷ সা-मुनाविकः २ विश्वविक्यकः কর্বা হতো লেশসংলাকাভিক• ব্যোডপতং । সকুন বং নজীলশ-্ত বিনাগ স্তা অধ্যেকিশ ा। बाह्यक जानूनावितस निव ভূতার্থ সংগ্রামঃ ইছি জ্যোতি 5.55 At 27 1 2 0 0 1 40 6 न्यू प्रकः श्रिक्षा मत्रू विद्यालयः ॥ नुसाम ममूलामः। व्यक्तियः तिनीतः कित्रयः। दिक्तिभय-मायक्राध

गमूनश्यमः प्राम्यम् अस्य े रेजिबिकास्थाम् ॥ मम्बर्गातकः पुरः जालवः। हेि बिकाख्रत्भवः ॥ बाबुक्तीयः अप्ः मञ्जूरः वा क्ष्यान नैकामकः ॥ गृहेनामिना । विद्यानगः।। जन्द्रभः। हेडि ्ष्मितियो ॥ 🐬 मनुमिन्दः कि भागाम्याकारतम् कः থিতঃ। সংপূৰ্ব বদ**ধাতোঃ ক্ত** अठारम्य मिन्नवः ॥ छहन् छा-क्षः ।। मन्द्र्वः । मन्द्रं छे९-भूर्व देनवाटणाः छ अस्तरमन निम्यप्रः श मब्साः भू मन्त्रकः। हेि ्ट्रमहन्तः ११ मूकामस्किन्छ ।। -माम्बरहरूः "भू" ज्ञान्त्र्युक्टिकः । क्रेडा-্লরং।ে সাঁপুড়া ইতি লাছত। সমুদাচ্ছতীতি হন্দ্ৰনগৰ্মমা-্লেরিতি ডে সমুকাঃ তক্তাবা-्राप्त्र वः। जन्मूदिकः क्रदेशाः ज॰-किरके। खराक मण्यक भूरे-িশ ৰেবে ইজুডৰাথক চতঃ अवादर्ग कः । देखि खत्रकातः इ-्यसिव्हिष्ट । मन्त्रामा न्यू । छर्जुग्राक्तिः । उद-लिखिश जान र जिथलूब नामशः

रक्षक्रकाका स्व निजानका ।

गम्ली ए॰ कि जिलेक के छ ।

म्थान ।।

गम्ली शं कि विकास सम्बद्धाः

निजान ।।

गम्ली शं कि विकास सम्बद्धाः

निजान ।। कि विकास सम्बद्धाः ।।

गम्ला कि विकास सम्बद्धाः ।।

क्रिज्य सः ।। वाञ्चार्थ जिम्मीनार्थः क्रिज्य सः कृषादम स्वाम्माद्धाननः क्रिज्य सः ममूज्य स्व जिल्लानाः ममू-क्रिज्य स्व ममूज्य स्व क्रिज्य मान-क्रिज्य क्रिक्य स्व । हिक्जि क्रिज्य । क्रिज्य स्व । हिक्जि क्रिज्य ।

निष्ठ वि नग्द्रविशी क्रिश नोष्ठ १ देखि स्मिनी ११ मग्राक श्रकाद्भ उद्घुष्ठ १ उप्याशिक १ अथा । ज्ञान्य मग्रा निव्यम् श्रा मिश्रास्ट्रका ग्राभिक विश्वम् र्जिना । नग्रमुका स्मन नम् द्राप्ट्रक श्रिमाः संस्कृष्ठ । स्मन नम् अ श्रीमृद्ध्य विश्व विश्व ।

गर्याः श्रुः समाम्बद्धानाः प्रश प्रमाचना हिल्ली । केटलामम्बद वागः वर्षे भावि विश्वित ाचल । नमस्मानसाथ नम्समाहि ्यां जानू कर र एकेन के जिल्ला ना-कीलिक्सरम्बादम् । इति न लागधाः वागाः टेठक नम्दान न ममूजारेजि गृष्ठः। देखि वायू-नुताक। यूजा नर्गाषा उसा गर वर्त्वत्व इंकि वा नम्बाः। नगा-ওদাত্যে রো হরি রত ইভি। মৃ-দ**ারাভিদদাতীতি তে**৷ মুজানি तक्षामीनि देखः मर वर्षटक रेखि ৰ।। ইতি ভরতঃ।। তৎপর্যায়ঃ া অবিঃ ২ অকুপারঃ ৩ পারা-বারঃ ৪ শরিৎপতিঃ েউদয়ান্ - ৬ উদ্ধিঃ প্রিক্র ৮ সর্বীন্ , ৯ লাগর ১০ অর্গবঃ ১১ রত্না-कर्तः ३२ क्विनिधः ३० योगः-া পতিঃ ১৪ অপাপতিঃ ১৫। ইত্য-া মরঃ। শৃত্যুক্ত ১৬ সদীকান্তঃ ः १९ छद्रीयः ४५ बीश वान् १२ छ-लिखः २० मस्तिः २० ६कोगी-व्याष्ट्रीतः २३ । भक्त्रामसः २७ । ইভিজটাধরঃ॥ সরিতাস্পতিঃ े २8**ःकंग** विस्**रेश नी त्रनिविध्य**े नीत्रिशः २१ अष्ट्रिशः २५ शरिषाः

निधिः २२ विद्याधिः ७० वाम-मान्यिक ७३ नमीन ७२ ईम् জনকঃ ৩৩ ডিনিকোবঃ ৩৪ বা রাণনিধিঃ ৩৫ বাল্লিনিধিঃ ৩৬ বার্দ্ধিঃ ৩৭ বারিধিঃ ৩৮ ভোষ-নিধিঃ ৩৯ কীলালধিঃ ৪৯ ধর-**नीপূর: 85 क्लैत्रांकि: 8**२ ध्रतनि क्षतः ६७ ताकः ६८ क्रक्लः ६८ পেরু: ৪৬ মিডক্রে: ৪৭ বাহিনী-পতি ৪৮ गर्नाधदः ४२ मात्रमः ६० তিনিঃ ৫১ প্রাণভাষান্ ৫২ উ-ৰ্মিমালী ৫৩ মহাশ্যঃ ৫৪ অস্তো-নিধিঃ ৫৫ অক্টোধিঃ ৫৩ তরিষঃ ६१ कृलकराः ६४ छात्रियः ६२ । ইতি শব্দরত্বাবলী।। বারিরাশিঃ ৬০ শৈলশিবির ৬১ পরাঙ্গবঃ ৬২ তরন্তঃ ৬৩ মহীপ্রাচীর• ৬৪ । ইতি ব্ৰিকাণ্ডশেষঃ।। পৰোধিঃ ৬৫ সরিমাথঃ ৬৬ অস্টোরাশিঃ ৬৭ ধুনীনাথঃ ৬৮ নিত্যঃ ৬১ কন্ধিঃ ৭০ অপা॰নাথঃ ৭১। অস্য জলগুণাঃ বিসুত্বং। লবণ রক্তা-मस्थानष्। উक्षष्। **(मायक्रमकष्) वित्ययाक्राशि** পিত্তকারকত্বঞ্চ। ইতি রাজনি-র্যকঃ। অপিচ। সামুদ্র মুদক। কার সর্বদোষপ্রকোপণ। ইতি

ताजवन्तर । मूर्जायूरक विश्वा न ह नमूटजी उत्तरना मिहाकि छिः । यथा। क्षि कात्मा खरवाः त्का-ধো লোভ শ্চাধরদক্ষ্দাৎ। আ-गाषाक् नियत्वा त्यपुाद निर्श-তিঃ পাষে। রঘাশ্রয়ঃ।। ইতি শ্রী-ভাগবতে ৩ ক্ষন্ধে ১২ অধ্যাষঃ ।। कन्नरভদে श्रीकृरकोत्ररमन वित्र-জাগর্ত্তভাতঃ। যথা। গ্রীক্ষো বিরজাণ দৃষ্টা সরিজপাণ প্রিয়াণ সতী । উচ্চে রুরোদ বিরজাতী-**८त्र नीत्रमटना**श्टत् ॥ जनामूथाय চাগচ্ছ বিধাষ তনু নৃতন । আ-জগাম হরে রগ্রণ সাক্ষাদ্রাধেব সুন্দরী।। তাঞ্চ ৰূপবতী দৃষ্ট্র প্রেমোতেকা॰ জগৎপতিঃ। চ-কারালিঙ্গন তূর্ণ চুচুষ চ মুছ-मूं हः ॥ नाना अका त मृङ्गातः वि-পরীতাদিক প্রভুঃ। রহসি প্রেয-সী॰ প্রাপ্য চকার চ পুনঃ পুনঃ॥ বিরজা সা রজোযুক্তা ধৃদ্বা বীর্য্য मरमायकः। मरमा वज्य उदैवव ধন্যা গর্ভবতী সতী ৷৷ তত্তো তত্ত্র সুখাসীনা সার্দ্ধণ পুলৈশ্চ সপ্ত-जिः। একদা হরিণা সার্দ্ধণ বৃন্দা-त्रा मूनिर्कत्।। विकशात भूनः माधी भृषादामक्यानमा। क

তন্মিন্নস্তরে তত্র মাতুঃ ক্রোড॰ জগান হ।। কনিগ্ৰপুত্ৰ স্তস্যাশ্চ ভ্ৰাতৃভিঃ পীডিতো ভিষা। ভীত• স্বতনয় দৃষ্ট্বা ভত্যাজ তা ক্লপা-নিধিঃ।৷ ক্রোডে চকার বাল সা क्रत्का ताथागृरु यत्यो। अत्या-था वालः मा माधी न **ममर्गा**खि-कে প্রিয়ণ।। বিললাপ ভূশণ তত্র শৃঙ্গারাতৃপ্তমানসা। শশাপ স্ব-সূত্ত কোপাৎ লবণোদো ভবি-ষ্যতি ।। কদাপি তে জল কেন न था निया छि की विनः। भगाय সৰ্বান্ বালা শ্চ ষান্ত মৃতা মহী-তल।। शक्र्यक मही गृण जमू-षी १९ गरना इतः। श्रिष्ठि दैनेकळ যুমাক ভবিষাতি পৃথক পৃথক।। দীপে দ্বীপে ছিভি ক্লয় ভিচৰ जूबिनः जुडाः। दीनवादि नही ভিশ্চ সহ ক্রীডর নির্জনে॥ ক-नित्की याज्याभाक नदलीता ্বভূৰ হ। কনিষ্ঠঃ কথৰামাস মা-ञ्गारक वानकान्। जाजगू मू : थिठाः मर्स माज्यानक बा-गकाश खण्या विवतन गर्द थ-क भू ध्रमी हन। अनग माजू म्हत्रन ७ कि नेत्राच्यक्ताताः । সপ্তদীপে সমুজাশ্য সপ্ত তথু বি-

ভাগশঃ ।। কনিষ্ঠাভূদ্ধপর্য্যন্ত॰ ॰ मूरन। लवरनकृ मूता मिर्न पिष पूथा जलार्गाः॥ कर्णाक कवा श्या नामार्थक ভবিষাতি। ব্যাপ্তাঃ সমুদ্রাঃ স देखन मखबीमा॰ नमुस्रता॰ ॥ रेि उन्तरिवर्र्छ क्षेक्रकन्मश-ওে ও অধ্যবিঃ।। ঞ ।। তস্য হাস বৃদ্ধিকারণ যথা। অপাণ চৈব সমুদ্রেকাৎ সমুদ্র ইতি সংজ্ঞিতঃ । উদযতীন্দো পূর্বে তু সমুদ্রঃ পূर्याटक मना।। श्रकीयमात्व व-एटन कीषण्ड २ खिमाजन देव । वाश्रामात्वा स्मिष ताषादेनवा-खिनूबाटा। **७८७**। देव कीय-मानगा याचायाय क्लान्क्यः। जिमी माटक स्विम स्वामान छेथ।-चोटना रथा धरणता अवा उठ नगूटजानि वर्षाट्ड भन्दिनीगरेश। चन्। नाम जिल्ला का कि छा। त्या दुर्गां है। डिप्रशास्त्रभट्य-शिरमार गकरमा अङ्ग सक्करमाः। करता वृक्षिक जित्यः लाम वृक्षि करयो यथा।। यत्नाखन्नानि शका-ए तक्लामा भड़ामि है। ज्ञा-वृक्षिः करवा मृख्य मंगुजागां थ-बेम् ॥ शिक्ष भाषतमा ५०० व्यक्षायः

॥ चना ६ विक्यूतार १ च र 8 व्यशास्य जकेवाः ॥ कः॥ नः मृत्य वर्गनीयानि यथा। व्यक्ती দ্বীপাত্তি রক্নোর্ম্ম পোত যাদো कनक्षवाः। विकृष्यनागम भन् खामृष्कि दोवानभूतवः॥ देखि कविक्रमण्डायाः ३ खवरक ७ ष्ट्रमुम् ॥ 🐠 ॥ कत्नी विकानाः ममूजयाजामि निरस्दश यथा । वृश्वात्रनीयः। সমুजयाजा श्री কার কনওলুবিধারণ । দিজানা यमवर्गाम् कन्याम्यय ख्या ॥ দেবরেণ সুতোৎপত্তি মধূপকে शास्त्रा इंश्वा नाः नामनः उथा लाटक दानअशासन खगा। म छात्रा देखन कनामः श्रनमानः नरमा है। सामकामा अक्रहरी। नगरना बरमहरूने ११ सहस्था। स ग्रमक ६काटमध्य छन्। जन-रेगान् सर्वान् कतामुरम वक्का।-नाव मेरिकिश ॥ देखि छेवाइ-ख्यः।। इस वचनः वया। কুড়খানবিভাগা ক্তে এবং কণ্য-शनमानाः । वयपृश् शतमः वर्षा षम्ठार्थः शदसनिधिः॥ मथा-मारन कर्मद मा कि तनाथारता स्रामिका शिक्सामानि व-

निछि भो द्ववाद शासूनसनाः॥ তে সুনির্বিশ্বনসঃ পরিমানমুখ-थियः। जामन् मूर्लोक्स्य न-**एक रिमर्द्यमाण्डियनीयम् ॥ बि**-**ट्याका विद्यमिविधिः छट्यमे**द्रा দুরন্তবীর্য্যো ২বিতথাভিসন্ধিঃ ৷ ক্লন্বা বপুঃ কাচ্ছপ মন্ত্ৰত ম-হৎ প্রবিশ্য তোষ গিরি মুজ্জ হার।। ত মুখিত বীক্ষ্য সলা-চল পুনঃ সমুদ্যতা নিশ্মথিতু मूतामूताः। मधात शृष्टिन म ल-ক্ষােজনপ্রস্তারিণা দ্বীপইবাপ-(त। प्रशन्॥ भूताभूति द्वा জবীৰ্য্য বেপিত পরিভূমন্ত গি-ति मह शृष्ठेणः। विज्ञुलकावर्खन भाषिकक्र्रा त्रात्म २ क्रक्ष्यूमन मक्षरम्बः।। निर्वायामानामूमस्य त्रक्षिक स्राचन राजाहरी-स्र मधकः। मञ्जाहनीयमध्य রাহি কছপাৎ তিনি বিগঞাহ **जिमिक्ति माञ्जा १ ।। एक् अदिश** मिनि मिन्। शर्यात्वा विनर्शमू थन-র্পদস্ক নপ্রভি। ভীতাঃ প্রজা मू ज्यु द्रव त्रभवा । अत्रक्त्राणाः भद्रवः महानिवः॥ छद्दीका वा-সূৰণ ভাসাণ ত্ৰপৰা ভ্ৰপীতি-छः। गर्रावयूक्तानव देन गार

मठी थिया।। प्रदेश वर्छ छ वादनाष्ट्र अकाना भेगा दिवा मः। भीरतामयश्रत्नास्का का কভাদুদবিভ-॥ আসা প্রাধ श्रीत्रणमा वित्य गडन हि (म) 'अलावाम् हि आरजा इत्या सकीम भित्रभावन । आर्विन आनि-नः भाष्ठि नाथवः कन्डक्रेदः। वकरेवदत्रम् जृत्वम् त्माहित्वम् श्रमायका ॥ भू•मः क्रभवर्रा छ-**ডে সৰ্বাত্মা প্ৰীষতে হরিঃ। প্ৰী**-তে হরৌ ভগবতি প্রীষেহণ সচ-রাচর: ৷৷ তমাদিদ গর ভুঞ্ প্রজানা স্বস্তি রস্তু যে। এব মা-ৰম্ভ্ৰা ভগবান্ ভবানী বিশ্বভাব-नः॥ তिष्यः जिश्रु मादिराज् थ-ভাবজ্ঞাম্বমোদত। ততঃ করত-**बीक्र**ं याशि हालाहल विष॰ ।। অভক্ষমহাদেবः क्रशया ভূ-তভাবনঃ। তদ্যাপি দর্শধামাস चरीर्याः जलकः स्वयः ।। सक्तकात গলে নীল তচ্চকার বিভূষণ । পীতে গরে বৃষাক্ষেণ প্রীতা স্তে ২মর দানকাঃ ৷৷ মমস্থ স্তরসা সিশ্বু হবিৰ্দ্ধানী ততো ২ভবৎ । তो मित्रहाजी मृयस्य कगृष्ट र्ज-क्रवामिनः॥ यख्या प्रविधानग

र्भिशाम इक्टिन नुशा ७७ উरिका खवा नाम सूर्या २ ज्रुक्टा **चेत्रा। उनिमाननिः न्यू**राक्टक त्रक् विश्वतिकता । ७० केत सङ्ग्री देशिक्त विभिन्न । ।। मरें कर्जुक एक्टार्फ रंत्रम् श्चित्रदेश मही । भेजादनाहर खुरकी निगगका ज्ञान्य उरु ॥ অভূমু প্রভৃতবো হক্টো চ করিণ্য স্ত্তবন্ধ। কেস্ক্তাধ্য সভূত্র-जु॰ शम्बद्धात्र॰ यट्डाम्ट्यः ॥ তत्रि-न् गर्गो न्यूहाक्टल वरका श्राह-রণে হরিঃ। ততা ২ভবৎ পারি-জाতः সুরলোকবিভূষণ ।। পূর্য-ত্যথিনো ষোহত্যৈ শশুভূবি যথা ভবান্। ভতশ্চাপ্সরসো জাতা निकक्षेत्रः সুবাসসः ॥ রমণ্যः मः ৰ্গিণা• বস্তু গতি লীলাবলোকনৈঃ । ততশ্চাবিরভূৎ সাক্ষাৎ শ্রীরমা ভগবৎপরা।। রঞ্জযন্তী দূিশঃ কান্ত্যা বিদ্যুৎ সৌদাৰ্মনী ৰথা। তদ্যাণ চক্ৰুঃ স্পৃহাণ সৰ্বে সসুরা-**मूत गानवाः ॥ कालीमार्या व-**ষো বৰ্ণ মহিমাক্ষিপ্তচেতসঃ। ত-স্যাঃ শ্রিষ ব্রিজগতো জনকো क्ननेगा वरकानिवान मक्दबार পরমণ বিভূতে:। 🕮: স্বাঃ প্রজাই

मक्करणन मित्रीकर्णम यत हिर्छ श्यञ गाविशामि/बिट्डाकान् ॥ साया में बाबी क्रिकी क्रिक क्रिक MENDE OF THE PROPERTY. IT THE THEORY OF IT WEST मर्व मध्यम् मार्च स्थारिक अर्ग का विकित् क्षित्र के किन्द्र में किन्द्र भी क्रयः भवात्राक्षकः ॥ जीक भीवत CF मिश्वः समूजीत्वा र ऋत्यम् नः। गायम अस्तर मुगी महाज्यन-कृषिकः ॥ शीकवामा भद्रशास्यः मू गृष्टी मानास्थानः। विश्वास्त्रिष्ठ क्ष्मा जन्मा निः इतिक सः ॥ चम्ठार्श्कनमः विक्रमारक्वि-ण्ड**ः म देव जगदणः मानग**हित्या র॰শা॰শসম্ভবঃ।। ধক্ষভরি রিতি थाठ जामूर्वमम्गीकम्बाक् । ত্যালোক্যাসুৱাঃ সূৰ্যে কলসং ठाम्ठाज्व ।। निश्वकः गर्वतस् नि कलमः छत्रमा इत्रन्। नीयमा-ति १ मूरित खिमान् कलरम सम्छ **जिल्ला । विमन्नानमा (प्रताः** হরি॰ শর্প সাম্মুগ । এত শিক্ষত त्र विक्ः मर्दाभाषवितीश्रवः ॥ स्यायिकानः यमिर्विन्गाः मधात्र न-রমাজুত। ততো গৃহীদাম্ত-ভাজন হরি ৰভাষ ঈষৎিম-

ममुख

তশোভষা গিরা। বদাজালেতঃ क ह नाथनान् वा क्षणः भवा तम निष्ठदक्ष नुषा विभागाः ।। सम्मविष् शुनक गढी कलस्पराः क्रमथ-्य छिदाः जारमागरकारामान त्यम् त्यम् ह शहिष्। लेकान् वृङ्गिष्कमात्मा वक्षमभूभनक्रदेतः ा मृत्रसान् भावता माने जता मृ-जुरुता म्या ॥ स्वितिक अ-जिल्लाः वर्जान् देर्परमःमि। প্ৰবিষ্টঃ সোম মপিৰচ্চজাৰ্কা-ज्याक मूहिणः।। हत्कन कृत्रशाः রেণ জহার পিবতঃ শিরঃ। হরি खना कक्का ज्या भावित्वा २পত ।। भित्र खुमत्रका नीज मद्या अरू गठीकुलका यस ला ৰণি চন্দ্ৰাকাৰভিধাৰতি বৈর্ধীঃ म भौज्ञारय २ मृरक स्मरेत र्ज গৰান লোকভাৰদঃ। গশাত। মসুরেজ্রাণা বৰাগ জগৃত্ছ হ-রিঃ ॥ ইতিশ্রীভাগবতে ৮ ক্ষন্ধে १। छ। ३ व्यशायाः॥ शाटम-উত্তরখণ্ডে ৬৯ অধ্যাযেগ্যেবং॥ ममूजककः पुः ममूज्रक्तः। ইতি ত্ৰিকাওলেৰঃ গ ममूजकां छी मही। दे हिन्

नामूयः ॥ शृका। ইতি রাজ-

निर्यक्रैः ॥

मन्त्रभा खी नित्ती। ইতি ছেন চক্তঃ। माना श्रम्य गामिनी मत्ती। यथा। यहाँ इष्ट आवणा ति नवा महाना प्रक्रपाल जान्। ति नवा महान प्रक्रपाल जान्। स्थान न स्ट्रींड वर्षातिया जान् प्रक्राभा देशि शामिक हिंद्द इस्माधा गति कि ।।

ममूजगृह॰ क्षी जनस्यगृह॰। ইতি . जिकाश्राभयः॥

সমুজচুলুকঃ পু: তামজ্ঞানুনিঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

ममूखनिका जी नमी। ₹िक द्रमहस्तकः॥

ममूजनवनील क्षी व्यवज् ॥ ह्याः । ইতি মেদিনী॥

मन्जरुका॰ की श्रिक्तिका॰। अवध-वित्नियः। यथा। मन्जनाम श्र-थम॰ शम्हाद कन मुमाहदत्रद्रः। मन्जरुका मिछा। मिनाम वाहा॰ जिवधदेतः॥ कन्न॰ मन्जमा कर्न्ने स्काति वालाशह॰ ज्ञृष्ठ निद्याधः काति। जिल्लाम मानानन माम-हाति ककामम ज्ञास्ति विद्याधः कान्ति॥ इति त्रांक्रनिर्मन्तेः॥ मन्जरुकाः श्रू॰ समामश्राह जवा॰

়। তৎপর্য্যাবঃ। ফেনঃ২ জন্ধি-ক্ষাঃ ৩ অর্ণবজ্মলঃ ৪। ইতি तप्रमाना । हिंचीतः ७। देवा-्बद्धाः नम्बन्धः ७ जनश्राः ान रक्षक इस एक जिकार-र नवडा या अरमपी के किने न चूटक में किया मानिए हो है ने 8 नार्क ३६१ चेत्र ७भाग नि-" बिन्द्रमा । विन्द्र विश्वनि दिने विद्रार्थ क्ष क्षेत्र मानकि कंग्रेजाना-निषक है देखि द्वाकनिक्केः ११ विका अंगू अस्किम के कृरया। े त्वथनः में के विकास में । कंदिरा কিব পিত্তমা কর্ণস্ক্ কফ কল ষুঃ । ইতি ভাবপ্রকাশঃ ॥ मम्जरम्बा श्री भृषिती। देखि ত্তিকাপ্তলেযঃ।।

সমুজৰাতা ত্ৰী সমুজগমনণ।
বৰ্ণা সমুজবাতা খীকার কমওলুবিধারণণা ইত্যুদ্ধাহতত্ত্বণ।।
সমুজবানণ জ্ৰী পোতৃণা বাহাজ
ইতি ভাষা। যথা। পুন স্তত্ত্বৈব
গমনে ব্ৰিশ্ভাবে মতি গ্ৰা।
সমুজবানে রক্মানি মহামৌল্যানি সাধুভিঃ। রক্মপারীক্ষকৈঃ
সার্দ্ধ মান্যিয়ে বহুনি চা। এবং

নিশ্চিত্য মনসা মহাসার্থ পুরঃসরঃ ।। সবুদ্ধাধিতি লোকেঃ
সারদং স্চ্যানির্গতঃ । ইত্যুপক্রেমা। শুকেন সহ ক্রিনিগুল ক্রমা। শুকেন সহ ক্রিনিগুল ক্রমা। শুকেন সহ ক্রিনিগুল ক্রিনিগুলিকার হৈ মালো বিতাম। ইতিবারাহে ক্রেক্ণক্রেমান্ট্রিকার্টি সাক্রিনির্গতিঃ সার্জ্ঞানির ক্রিনির্গতিঃ সার্জ্ঞানির ক্রেম্ন

्रभूताकः।। सम्जन्नकाः की भृष्टी । देखिश्लाः ्यूकः ॥

 *न*बुन

ভেদি অকার মবিদাহি চা ঞে-মূল বাতনুষ্ঠিক নকক নাভি-नीवनः ॥ देखि जारधसन्मः स गन्जवद्भिः भू अविष्यानमः। े हे कि र ना सुरु में कि कि कि मगूजविकयः। जूरम्हाइयानिका। रेक्टिस्मध्याः॥ विकास मग्रम् अम् अमि गङ्गा। इति ता-किन्द्रिक । ममूजा खी निमानिमी। इंडि व्राक्षनिर्चन्छः ॥ नम्बाङ की जारीकनः। शिष्ट শঙ্গতিক।। সমুজ্ঞীরকী। সমুজান্তা জ্ঞী দুরালভা ইভ্য-मतः॥ कार्णामी॥ श्वा। इडि विनिगा स्वामः। देखि द्राज-निर्मकाः॥ 🚈 💮 💮

সমূজাররা দ্রী পৃথিবী। **হাউ** ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।।

ममूजाङ्गः प्रश्नेष्ठाः । स्वज् सम्रागितिमिनम्थमाः । इंडि समिनी ॥

मगुजियः । जि ममुजनस्यीः मगु-मगुजीयः । जनकापियं नीय প্रका-याकाः निकारमे ॥

त्रमुखन की जासीजानः। ७९-गर्वगमः। एकः २ (सम्बर्धः)। ইত্যমর: ॥

সমূদণ কি জার্মণ ইত্যাস্থ ।। সমূদতঃ কি সমূদদণ ।। ভাষতে দঃ। ইতিধ্যশিং ।।

ममूत्रिकः जी छेष्ट्रासः। छे९रमशः । ইতি क्रहोश्वतः।।

ममूबकः वि পश्चिमनाः। श-र्तिष्ठः। इत्यामनः।। अष्टः। इ ष्ठाक्षरः।। ममूख्यः। इति स्म विनी।। উक्ष्यकः। इति द्या-हसः॥

শমুপজোষ ব্য আনশং। ইত্য শর্মীকাষা রামাশ্রমং।। ভাল ব্যশকারাদি চ।।

দমুপেষিবান্ ত্রি গমনকর্তা।
গমনবিশিক্তঃ। সমুপপূর্ব ই ধা
তোঃ ক্বসু প্রত্যবেন নিশান্ধঃ।।
সমুলসং ত্রি সমাগুলাসমুক্তং।
সমুৎপূর্ব লসধাতোঃ শভ্ প্রত্যা
বেন নিশান্ধং।।

ममूजियन वि शापापिना ज्यान थननकर्छ। यथा। ज्यान मः बाठ लिकाः क्तारेशः ममूजिय-न् पर्शक्तः कत्रधान्। पृष्ठः कथिकारदेव विविदेश तरमाठ निःरश्चिकक्षमाप्। ইकिक्सा-जगद्धत् > मर्भः॥ मन्तः जि भूकिकः। जूनेः। म-द्वारक्षिकः। जन्मश्रृकः। ইতি द्विषिनी । प्रिक्तिः। विद्याहिकः । ইতি ধরণিः।। শোষিকः । ইতি জ্বটাধরঃ।। মুডেনসহিক্তশ্চ সমূরঃ পুং স্গভেদঃ। ইতি হেম-চয়েঃ।।

ममूकः प्• मृगवित्नवः। ₹जा-मदः॥

সমূল তি মূলেনসহর র্থান ।
মূলসহিত । যথা। অধর্মে নৈধতে রাজ স্ততো ভদ্রাণি পশ্যতি
। ভতঃ সপত্মান জমতি সমূল দ্ব বিনশ্যতি।। ইতি মহাভারতে শান্তিপর্ধনি রাজধর্মে যুধিনির গ্রাতি ভীমবাক্য ।।

ममूहः भू जातकः। छ० भर्गाः यः। निवरः २ वृद्धः ० मरमाहः ४ विम्तः ६ व्रजः ७ द्याः १ ७ विम्तः ६ व्रजः ७ द्याः १ विम्तः ४ मण्यः ४० मण

গটনাং ২৯ কাড় ৩০ নভনা ৩১ চনাং ৩৯ ৷ ইতি:ক্লটোবরঃ ৷৷ বিজয়ং ৩০ উইকারঃ এ৪ স মূক্তবঃ ৩০ আক্রিছ ৩৬ প্রাক্তরঃ ৩৭ সংঘঃ ৬৮ প্রচন্ধ ৩১ জাতং ৪০ ৷ ইতি শক্ষরত্বাধালী ৷৷

ममूरनी खी मचाक्रमी। इंडि

ममृबः पू॰ स्वाधिः छ० शर्याः यः । शतिहासाः २ छेशहायाः यः । देशम्बः ॥ ममाशृहस्मारगावि । निर्विमर्गरण्डमाने खर्यार्थः । स्था। श्राक्षमक् ध्रवनः समान्य मन्या शतिममृकः । देशि रंगाः जिनमृत् । देशि रंगाः जिनमृत् ।।

नमृकः क्रि नमृक्षिष्कः। ७९-পर्यायः। অधिकक्षिः २। इछा-मतः॥ अधिनन्थित्यांनी ७। इंडि भक्तत्रावनी ॥

সমৃদ্ধিঃ প্রী সমাধৃদ্ধিঃ। অভি শ্বসম্পত্তিং। তৎস্ব্যাধাং। এধা২। ইত্যমরঃ।। বিহাও। ইতি জটাধ্রঃ।।

সমেতঃ ত্রি সমাক্পাপ্তঃ সংযুক্তঃ যথা নাদসমেক ক্রত
সক্তে বাইবতে মৃদুবেণু । বহু
মনুতে তনুতে তনুসক্ত পবন

हिन्छ मिन रह्ना ११ इंडि. अ-जगरमका ११

मरमिकः कि ममाधर्षिकः। मान्य পूर्व এव वार्त्याः क ट्रेकार्यन निष्णमः॥

সমোদক কী মথিতার্কার্দ্রি।
স্কল্পন্তকোল ইতি কেমচন্দ্রঃ। তৎপর্যাবঃ। উদবিৎ ২। ইত্যমর:।।

সম্পঃ পু• পতন•। ইতি ভূরি• প্রযোগঃ।।

সম্পত্তিঃ স্ত্রী বিভবোৎকর্মঃ ।
তৎপর্ব্যায়ঃ বিভবোৎকর্মঃ ও
সম্পদ্ধ। ইত্যমন্ত্রঃ । ঋদ্ধিঃ ৫
। ইতি জটাধরঃ ৷৷ ভূতিঃ ৬ ৷৷
ইতি মেদিনী ৷৷

मन्पर्दे जी मन्पर्खिः। ইতামরः ॥ গুণোৎকর্ষः॥ হারভেদः। ইতি মেদিনী॥

मन्त्रमः क्री ममः भप्तम् गः १ ईंडिः भजनाना ॥

সম্পদ্মঃ পু॰ রাজা। সংগূর্ব-পদধাতো কৌণাদিক বরচ্ প্র-ভাষেন নিস্পন্ধঃ। ইভি সিদ্ধান্ত-কৌমুদী ॥

সম্পন্ন তি সাধিতঃ। সম্পত্তি-যুক্তঃ। ইতি মেদিনী।। अल्पान क्षाण काण । ज्या।

उत्तर्भावः क्षाण । इत्राप्तः ।

अल्पानकः क्षा पृष्ठः। इत्राप्तः ।

अल्पानकः क्षा पृष्ठः। इत्राप्तः ।

अल्पानकः क्षा पृष्ठः। इत्रिः।

अल्पानं क्षा काण ।। अल्पानं विभागः।

अल्पानं पृष्ठाः विद्या क्षात्मः

अत्राप्ति दा। जण्पानं विभागः।

अल्पानं क्षाण्यः।।

अल्पानं वि अल्पानं विभागः।

अल्पानं वि अल्पानं वि ।

अल्पनं वि ।

अल्पनं वि ।

अल्पनं वि ।

अल्पनं

সম্পর্কীয়ঃ ত্রি সম্পর্কগুরুঃ। স বন্ধীয়ঃ। সম্পর্কশব্দাৎনীয় প্র-ভাষেন নিম্পন্ধঃ ম

সশা জী বিদ্যুৎ। বথা। রাবাদ্ধা তমনো বিসারি বিরহভালাতিবৃক্টেং শ্বরাবিষ্টা ভূতগণাৎ প্রথাতিবিষমান্ত্রটাববৃং সংপ্রথাৎ। প্রভাবন মদেন প্রকিলতনুং সম্পাতি সশ্বাতভং সম্মাভান্ত্রক স্থা
বিজ্ঞান মাজী ভূত্বভাতক ।
ইত্যুক্টির।

मण्याकः शुः व्याप्तपत्कः। हे-श्रामदः॥ जैग्रक्षाचन्तः॥ मण्याकः वि श्रश्चकः॥ वृद्धः। हेल्ट्याविते॥ व्यवः॥ व्या-हेर्। क्रियवित्री॥ व्यवः॥ व्या-हेर्। क्रियवित्री॥ व्यक्तः। हेल्टि व्यक्त-माला ॥

সম্পাতঃ পৃ• পতন•। ইতি ভূরি-প্রবোগঃ।। পশিশা গতিরিশে-বং। ইতি জটাবরং।।

সম্পাতিঃ পুণ গরুতপুত্রঃ। স চ জটাযুবো ভাতা। যথা। স-ম্পাতি নাম নারা তু চরজীবী বিহলমঃ। ভাতা জটাযুবঃ শ্রীমান বিখ্যাত্বলপৌরুষঃ।। ইতি কামান্দে কিছিল্যাকাণ্ডে

সম্পাতিকঃ পু• গরুতজ্যে পুত্রঃ । ইতি শব্দশালা ।।

সম্পাদকঃ পূ• নিপাদকঃ। স-স্পন্নকর্তা। সংপূর্ব পদগাতো র্পক প্রত্যধেষ নিস্পন্নঃ।।

जन्मापन की विश्वापन। गः भूदं का स्थानवारण जन है थणः रथव विश्वापन।

সম্পাদিতঃ ত্রি নিশাদিতঃ। সং-পূর্ব ঞান্তপদধাতোঃ ক্ত প্রত্য- त्यम निकासः॥

गण्गीजनः जी महाक्याकात्वन गण्याजनः। जाश्यक्तिज्याजन्यः स निव्यक्तिस्मानः॥ गण्योजिः जी महाकशानः। मः भूवं शांशाजाः कि क्षांजात्यम

निष्यम् ॥

मण्डिः शः स्त्रात्रकः । अक

प्राचीत्राक्रमधायको । वथा ।

नकामः मण्डि करणा निष्ठाः

सः मण्डिः विना । ইकि। करः

नाः माकृकाः कृषा माकृका कातः

नाः माकृकाः माकृकाः ।। ইकि

क क्षमावः ॥ जित्रस्विरम्पः ।

क्षम्भाः भयागाक करणानः

कः। कर्गानका भयागाक करणानः

कः। कर्गानका भयागाक करणानः

कः। कर्गानका माक्षमाः विक्

ज्ञानका माक्षमाः । देकि

ज्ञानका नाः भूको कि यः ॥ देकि

ज्ञानका नाः भूको ।

मण्डिकः १ वाधातिति । माध्याके विश्वासः। हे छ छ-त्रणः। छ १ शर्मासः। मस्प्रांकः २। हे छ स्वतः। सम्प्राः ७ म-ण्डिः ३। हे छ (इस्त छ ।। मण्डिः विस्त सम्बन्धः । स्विश्वः।। नामभ वथा। भ्रीत्स्य विक बट्ट द्वान वराश्र व्या क्रिक अट्ट क्या क्या क्रिश्न व्या-गामाक्र नार्मन॥ रेडि किथा-मिटक स

वल्नां प् ताममाकाविवित्नवः

। व क् मश्चद निश्चिक ताम ता
शिवतः। यथा। श्रेष्ठवः मक्षिः

श्वाकः चरतः यक्षिक्ष याष्ठवः
। वन्नुर्वा मश्रीकः श्वाका तामकाकि खिथा मछ।। ইकि मनीकत्रकाकतः।। व्यक्ति । मन्नुर्वव्यक्ताः य स य म न थ नि। मन्
पूर्वतानाः मश्रीकः चरत वंथा।

नाव वमश्चाकरः। ইकि मनीकसारवानतः।।

यण्या जी अकामनीवित्नसः ।

मा जू गृंवाक्रत्वामयगानिनी म
ठी स्टिमखाश्चिका । यथा । जा
मित्जामस्त्रत्वसः आजुर्ज्य
याविका । देनकामनी हि संगूर्वा

विकासा गतिकीर्विका । देखि

विधामिक्य । ॥

সম্পূত্ৰ , ব্ৰি বিশ্বিতঃ। তথা পৰ্যামঃ। করমঃ ২ কবসঃ ৩ মিঞাঃ ৪ খচিতঃ ৫। ইতি হেম-চন্দ্ৰঃ। मन्त्रिया अभिन्यामा छर-भवागः। अवस्य र रेमानी ७ अथूना ३ मा अकं ८। रेका-भवः॥

সম্পূতিঃ পুণ অতীতক্ষীফার্থ-ডেদং। ইতি হেসচন্দ্রঃ। সম্পূতিপত্তিঃ ত্রী উত্তর্গবিশেষঃ। ইবা। মিথাা সম্প্রতিপত্তিশ্চ প্রভাবস্থান্দর কথা। প্রাপ্তন্যা-যা কোন্তরাঃ প্রোক্তা শুড়ারঃ শাস্তবেদিভিঃ। প্রভাবিদ্যাত। প্রভাবী যদি তং প্রতিপদ্যতে। সা তু সংপ্রতিপত্তিঃ স্যাচ্ছাস্ত্র-বৈদ্ধি রুদাক্তা।। অভিযুক্ত্য-তে অভিযোগঃ। প্রতিপদ্যতে অসীকরোতি। তং সাধ্যার্থণ।

ইতি ব্যবহারতত্ত্ব ।। সম্পুতিরোধক ক্লী প্রতিবন্ধক । সংপ্রতি পূর্ব ক্লধধাতোঁ এক প্রত্যাবেন নিম্পন্ন ।।

সম্পূতীতিঃ স্ত্রী সম্ক্থাতিঃ।।
ব্যক্জানং। সংপ্রতি পূর্ব ইন
থাতোঃ ক্তি প্রত্যেন নিপানা।।
সম্পূদাতা কি প্রত্যানকর্তা।
ব্যা । ত্র্যাণা মুদকং কার্যাং
ক্রিমু পিঞ্জ প্রস্ক গ্রহণ চতুর্বঃ
সংপ্রদা হৈষাং প্রধানা নোপ

शमारक।। देखि शक्षिकत्य का-कारिसकारणा

क्यूमान की नगर्थकात्त्रन मान ।। विक्रियाका अर्थ का-व्रक्तित्वदेश मक निष्माम् व े ब्लादियां कृष्टि छार ह। इ ন্ধায় স্পৃহি শপ্ৰাধীকাপ্ৰতিঞ बाजान्य वार्यामानाः विषयः । ভত্ত চতুৰী বিভক্তিঃ স্যাৎ । मुना मन्धनानं अक्रये नान বো লভতে সং। তথা চোক্ত॰ । मः अमानः छत्तव मा। शृजाः न् अहकामाया। मीयमादमन मः-ৰোগাৎ সামিদ লভতে বদি।। ইতি মুদ্ধবোধব্যাকরণটীকাষাণ मूर्गामानाः। अभि ह। गलानि-ভিমে ধাৰ্মেপ চতুৰ্যা বিগ্ৰহত্ব-या। यः यार्था रवाधनीय छ० স-প্রদানত সীরিত।। গত্যাদি-जित्म रकाजूशकाशा वामृभार्थ বিগ্ৰহন্থ চতুৰ্থ্যা ষং স্বাৰ্থো বো-ধবিতু• শক্যতে স তদ্ধাতৃপস্থা-था जाम्म कियायाः मध्यमान-ष মৃচ্যতে। ত্রামাণার দান ধ-नमा रेजाती प्रपाटनः यद्यन-नक खार्मा २४३ छनिविस्के ह यद्य बाक्यादमः अिंदियागिषः

নিৰূপিতত্ব বা চতুৰ্ঘা বোধাতে रे**ि छा**नव छव**्राभानव**॰ ব্ৰাহ্মণাদি প্ৰতিযোগিক বন্ধন-वृक्तियष् ७०० वर साभ हेटला-व তत প্রতাৰাৎ ধাৰ্থভাবচ্ছে-मकी जूज यहां या कनाय छरा य-मारम मानकर्याषाः । मटिवर পশুকামন্যা ৰাগকক্লদশাযাণ চৈত্ৰঃ স্বান্ধনে পশু দদাতীত্য-পি প্রযোগাপত্তিঃ তাদৃশ্যাগস্য চৈত্ৰীৰ বৎ পশুনিষ্ঠ স্বত্ত্ব ভজ্জনক ভ্যাগম্বাদিভি বাচ্য यष्ध गजनक किया भर्या दमम्मा **जागदेमाकरमरम** यष्ध रमिश षिठीयामार्थमा। यदमन शक्तमन-क्यारग शस्त्रिमा खब्धभममा জনকত্ম বিরহাদেত্যাক্যস্যাপ্র-মাণদাং। আমাৰ গত ইত্যাদৌ বিগ্ৰহস্বচতুৰ্থ্যা ধাৰ্মে ৰোধ্য ম-পি কৰ্মছ॰ ন গত্যাদিভিমে। বৃ-कार मिठक रेजात्मी शनामि-जित्म हजूर्या ताधनीत्याणि म ষৰ্জবিত্ মিত্যাদি তুৰণো ন বি-গ্রহম্বতি ন তত্ত্র প্রসঙ্গ। সং-প্রদানশব্দস্ত স্বাশ্রস্থগোচরত্যা-गक्रनायद्मा প্রতিবোগিন্যের শক্ত ইতি স্বত্মপ্রতিযোগিত্ব স্-

थमान निजाहित्का स श्रातागः । न ह लोनना अवस्कृत्व अन्। পাজাবং। নপ্ত বিত্তাগনা ধর্মান मार्या लाजः कर्या जयः। अ-বোগঃ কর্মবোগল্ড সংপ্রতিগ্রহ **এব চা। ইত্যাদি মহাদিবচনৈ** स्मा वदर्ज्याथिनिमानानि-তি বাচাং। ত্রাক্ষণাৰ ভ্যক্তাবাং গবি গৌ রিষ বান্ধব্যা ন ভু भरमञ्जामि नार्बजनीनश्रजीएड রেব তত্র প্রমাণদ্বাৎ প্রদান স্থা-মাকারণ মিভি বচনাচ্চ অতএর বিদেশক পাত্র মুদ্দিশ্য ত্যক্ত-ধনে স্বীকার মন্তরেণের পাত্রস্য মরণহলে পিতৃদাযম্বেন ভদ্ধন পুত্রাদিভি বিভজ্য গৃহতে অন্য-**ণা তৈ** রিব উদাসীনৈ রপি তদ্ধ-नमात्रवा ऋगारम त्रिरवांभामारनः ষথেন্টনিষোগে চ প্রত্যবাষো ন मा। नायवः नानामित यदिन-क्ष पंखवस्त्रनि यीकाद्रा नार्थ रें ि राम निका हा के खन कन मिलामि सृरकः अिकगृशील जवा-मानमा कनविर्मय श्री दिजू द्यन जामृभकनमम्भछार्थ त्यव প্রতিগ্রহস্যোপযোগাৎ বাজনা-ধ্যাপন প্রতিগ্রহৈ র্ছিজো ধন-

मेल्युमी

मर्करमिन्। मिल्ना मृजा ह अञ्जिर्गाणि चर्र क्रुं (वाषनाक । वष्ट्रं मक्या-भावदेगावाळ्नभाषांषां । भा-সাৰ ভক্তা দদাভি ভৃতকাৰ বে-ভন- দদাতীত্যাদাবলি সম্ভন-क्छाग अछिशामयन् ममाछि মুখ্য এব পুণাজনকত্ত ন তাদৃশ मान मटेरथबार । यद् कीकात क्रनामा अवमा कनक खारिंगी मानः भनमा भाज मूमिमा धनः ভ্যাগন্ত ৰ দান' কিন্তুৎসৰ্গমাত্ৰণ প্রতিগ্রহজনাসত্ব প্রতি হেতু ভূত বৈধত্যাগগৈয়ৰ তথাদ্বাৎ উপেক। তু সম্বধ-সমাত্রজনক ন্ত্যাগো ন তু তত্ত্ৰ স্বত্তনকস্যা-ন্তৰ্ভাব ইতি বৈধিলৈ ক্লক্ত তন যুক্ত লাষবেন স্বন্ধজনক জ্যা-গলৈয়ৰ দদাভাৰ্থত্বাৎ। ভিলান-শৈ প্রতিষ্চ্নতি তুরগ মন্মেবি-कीनीत्छ रेजात्मे जनास्त्रज्ञ হণপূৰ্বক দান ষেব প্ৰতিদান । मूना अहमभूर्वक मान स्मर वि ক্ৰম ইভি তত্ৰাপি মুখ্য মেব সং প্রদানস্থ চতুর্য্যা বোধ্যতে। তি लापिकक न मृजाः नम भूतानारम द्भव माट्य छथाषामरममा ।

व्यम्कीर्थः पखरमाय ह बीकादः প্রতিত্তাই ইতি পরেন প্রতিদন্তস্য বিফ্রীতস্য বা তিল তুরগাঁদেঃ किलादा न लाचावरः। देनवार নোচতে মোদক ইতাত্ৰ চতুৰ্থা ধাৰ্থাইত নাধেৰত ধাতুনা চ **७काष्ट्रकात्रदर्वे क्**रिशेषाचारण তিড়া তু প্রকাশত ইত্যাদাবিব বিষ্বস্থলকণ কতৃষি তথা চ নৈ-ত্রনিষ্ঠাৰাঃ ভক্কত্বপ্রকীরকৈছা-या विवयणीयाम् (यामकः हेणा-कातक खंब स्वीवः। छत्रद्य गा॰ शात्रक्रक इंडाख ध्रा गृशविह-তিঃ দিতীয়য়া তদাৰিত কৰ্তৃত্ব চতুর্থ্যা চ ভাষাবিষ্টগৃহায়িত স-মন্ত্রিম নুপকাপ্ততে তেন গোক-ভূকাৰা **ওয়-সম্মি**গৃহাবস্থিতে द्रनुक्वराभावसन् ইजाकातक ন্তক বোধা। শাতৃত্বনিচা ব্যা-गात्रवाषमामिछि कालाभाः । गानिनी वास वादन ऋखमार्ग है जि मुकानुमादस्य देवेकाच मण्ड धा-त्रगटक रेकामिनिय खत्रद गा॰ ধারবতে ইত্যাদাবপি ঋণগ্রহণ ৰারশ দত্তবহু চতুর্বার্থ: তথা চ अक्रमेखा गा भागापन गृहाि ইত্যানার উত্ত বাক্যার্থ: পশ্চাৎ

मण्युमाः

भाशासनामीक्षण गृही**७क** ज-वा मृत-मिछाहः। भूखान द्वाराछि **भूखात्वक्छ हेछाटमे देखनिक ११९ १। इर्थः छमितिस्य ह**े देनदव मृत्र्यमा मश्चमा एवं खिन पूजः मो देवतः निवाशयिक हेर**ा**वः छव বোধঃ । শুরুবে গাণ প্রতিশূৰো **তি আশৃংগতি ইন্সাদৌ দেবছৈ** নাভ্যুপগমঃ শ্ৰেভে রর্থ স্তত্ত र्गा विभियारक्न ज्लाकरम्हण ह দানে গুরো রুন্দিশ্যত্বেনাম্বর স্তে न श्वरमणाक मानकर्याद्वन गा-মভাূপগচ্ছতীতোব ভত্ত বোধঃ। रहात्व अञ्जिश्वाजीकात्ने हर्याः न्कृतनाभादनकन (थारमार न गृगात्क दर्श खरमकरमान ह रक्षं रहाजारमः द्रयमः रङ्गः रहाः ज्निष्ठेर्यानुक्वरात्रातवाम् रे ত্যাকারক ন্তন্ত ৰোধঃ। চৈত্রায क्रुणाञीनात्मा भावर्थ उरक्र দ্বেৰ স্তত্ত্ব বিষয়িত্বলক্ষণ সংপ্ৰ-দানস্ব চতুৰ্গা ৰোগ্যতে তেন टेठळविषवदका धक्ठिदवयनान् रे-ভ্যাকারক ভাত্ত বোধঃ ৷ পুত্রে কোপো ন যুজ্যতে ইত্যত্ৰ ক্লৰ-खना काशनगरनादर्भ भूख रे-**छान्याब्रद्या न जू शाब्र्द्य। भोग्य**

ৰততে ইত্যাদাবণি ধা**ৰ্ধক্লতো**: সুপা পটস্য বিষষিত্ব ৰোধ্যতে তত্ৰ উদ্দেশ্যম মেৰ চতুৰ্থ্যৰ্থ: কথ बनाथा भटिष्ट्या उन्नमियानमः **শাষা॰ পটাষ ষততে ইত্যাদিকঃ** প্রযোগ ইত্যপি বদন্তি। মিত্রায জ্ঞ্জি ইত্যত্র দ্বিকীচরণ ডোহ স্তেন মিত্রস্য দ্বিফ মাচরতীত্যর্থঃ । শিষ্যাৰ ঈৰ্যাতি ইত্যত্ৰ অনি-ষ্টানুপেকণ মীৰ্যা তথা চ শিষ্যা-নিষ্ট নোপেক্ষত ইত্যৰ্থঃ। পু-শ্রাষাসূষ্তি ইত্যত্রাসূষা গুণবেষ ন্তেন পুত্ৰদ্য গুণ দ্বেফি ইত্যা-কারক স্কত্র বোধঃ। মিত্রণ ক্রন্সভিত শিষা নীৰ্যাভি পুত্ৰ মসৃষতীতাপি প্রবোগাৎ জহাদিকর্মণঃ সংপ্র-मानचः देवकन्निक मिनुमीयटः । कानन्द्रकमा त्याशांत र्जशांत ৰাত্বাচাদ্বে তৎকৰ্মণঃ স**ং**প্ৰদা-নম্ব জোহাদিমাক্রস্য তথাছে তু ৰূৰ্মন্ব মেৰেভি পুনঃ কৌৰারাঃ। मानगरियाञ्च क्य फरहाः क-র্মণঃ কর্মতৈব ন তু সংপ্রদানতা অতএব: শিষ্যস্যাভিয়ক্তান্ধা নি-बना जिट्याटा जाटने क्रात्यारन कर्मान यर्छाय श्रमान । ইতি শ-ৰশক্তিপ্ৰকাশিকা।।

मन्त्रामः भू 'खद्रभद्रन्भद्रामक मन्भरमा । भिक्भन्य नार-कीर्र्शभागामा ३७ उत्रहः॥ छर्ग्यायः। आज्ञायः २। इठा-বরঃ ৷ গুরুপরস্পরাগতসদুপ-क्रिकेवाकिममूदः। स्था। म॰ अमायान्द्राद्यन श्रीवाशका-नूमाद्रछः। श्रीजागवज्जावार्थः मीशिक्य क्षंत्रनात्त्र॥ देवि **ब्री**धद्रयामी ॥ जत्ह्रमा यथा । শ্রীমন্নার্যাবণো ত্রন্ধা নারদো वात्र अव ह। श्रीनमश्चः शम्मनाः **(छा न्हिंद्र मीध्य छथा ।। अ**-কোভো জযতীর্থশ্চ জ্ঞানসিন্ধু र्यश्विविः। विष्णानिधिक द्रा-**ट्या अवश्यम्**नि खथा ।। श्रूकरबाखरबा बन्नरका वान-**डीर्थ**मूनि खथा। श्रीमालकी ११-जिः धीमाचा भरवख्य भूति स्था ॥ मध्यमार विशेना त मखा एड নিষ্ফলা মতাঃ। অতঃ কলো ভ বিষ্যন্তি চত্বারঃ সংপ্রদাবিনঃ।। **बीगांधि कृष मनका दिक्काः** ক্ষিতিপাৰনাঃ। ইতি শ্ৰীপদ্ম-পুরাণোক । 🐞 ॥ ভন্তোক-देवकव मध्यमाया यथा। 🕮 निव छेवाह। देवशानः मानदबमादमी

बिद्राचारमञ्ज छथा। रगाञ्चल-टना महरनाति छथा नृकारनी छeac श शाकतातः शकनः मार यकः विविद्यस्य । द्रामानकी रविगाली निवार्कक न्टरयति॥ তত্যে ভাগরতো দেবি দশ ডে-माः अकीर्खिजाः। मिथी मूजी-करी टेठर विकि मधी करम् है। **এकमञ्जी मरहमानि दीव्ररेम**व स्ट-থৈব চ। সপ্ত পাওপতাঃ প্রোক্তা দশধা বৈৰুৱা মতাঃ ৷৷ এতেয়া বাসন দেবি শৃণু ৰত্নেন শান্তবি। **(वदबिंधे नर्ब॰ न•वा। ना व जि**-केलि न देवकवः॥ देवशाननाति मीकारेमा ज्विषः श्राखरेतकतः । श्रीदाधावज्ञ अति मृन्यदन्न বিকৃতদ্রৈকপারগঃ৷ অনন্যচেতাঃ শান্তাদা বিকৃচিন্তাপরাষণঃ ॥ वीत्राशावक्रकी प्रवि शाक्रलमः मृन् थिरक। मानाज्यनमन्यामा नाना मूगिक्षिज्वितः।। गवा जन প্ৰীণবিতা কেলিক্কৰবাগধৃক্। भन्नीत मर्थ- शाना-मह छिम्रदिनन-काजक ।। अस्तर्भिभद्रा (म-विवेषि देवस्वस्थित्यः। गन्नर्वाः চারনিরতো শতাবেউনভৎপরঃ

॥ मध्यमार्या स्नाक्टनमः नर्व-निविक्ता जूवि। क्लाक्नाधाः प्रतिमि मृन् स्त्रान माध्यकः ॥ বিগতাশঃ প্রমন্ত্রী বিন্তুভক্তি-भद्रायनः ॥ क्षिमीमक्रमण्या वनकीणाविदनाष्ट्रः भोगन्न ज्विज्ञनः जीशादेनकनदायनः ।। বিক্সাৰ্শ্যতন্ত্ৰঃ প্ৰোক্তো वृन्मावनी भिरव । शाक्षतात्वा म-र्मानि छरेषव बीव्रदेवस्वदः ॥ পূৰ্ব মেৰ মহেশানি কীৰ্ত্তিভঃ পর-মেশ্বরি। রা শক্তি রিভি বিখ্যাতা म निवः পরিকীর্ভিভঃ॥ তদানন্দী শास्त्रिकी श्रमनाया विচात्रश्क् । गर्वक ममक्रणक द्रामानकी थ-कीर्खिङः॥ स्विकामः मरस्मानि यथावनवधात्रव। भाग मञ्जूना-শক্তো বিষ্ণুভক্তো জিতেন্দ্রি रः ॥ यभाषि नियदेश ब्र्डा ज्ङाठातः পরাষণঃ ৷ বোপযোগ ফলা আ-शै পরকার্যাপরাষ্থঃ।। হবিদ্যা-শী মহেশানি শিবভক্তি স্বৰূপ-शृक्। निषाद्धीशः मः श्रमायः मृश् यर्ज्जन माध्यकः॥ निजार्कनकः মাসক্তঃ স্কৃতিত্রকপরাষণঃ। বা-হুপুজাদিনিরতো নান্যভক্তঃ প্র-সন্ধী: ৷৷ আৰ্য্যপকান্বিতঃ বক্

मार्डिक्टबन्नी निवादमी छगनान् रितः ॥ जन छागनकः प्राप्ति कः भारत मृश्माः थ्रेणः। तिक्किटकः किन्भूरणा विक्रिणाचा श्रमम-वीः॥ न्यार्जगर्नाद्विणा प्राप्ति छमन्द्रागत्र छ्रुश्वरः। जार्ग्यः भक्ताहिणा प्राप्ति छ्या स्वर्ताः विक्ष्णा रेणन्द्विषी छम्य मः मार्थ भूनः भानभ्यायवः। दक्ताः वाः विक्ष्ण्युद्धः श्रीरक्षा छाः गव्छः भिद्य। देखि मक्तिम्बर-मण्डि ३ थ्रिक्ष ४ भ्रोतः॥

সম্পূধারণা স্ত্রী উচিতানুচিত-নিশ্চয়ঃ তৎপর্য্যায়ঃ। সম্ব র্থনং২। ইত্যমরঃ।।

সম্পূণদ ক্লী ভূমণ । পর্যাটন । । ইতি কেচিৎ।।

সম্পুষোগঃ পৃ নিধুবন । রত ।। অন্বিতিঃ। সন্তন্ধঃ।। কার্মাণ । বশীকরণাদিকর্মা। ইতি মেদি-নীকর হেম্চন্দ্রো।। অর্থিতে ত্রি । ইত্যজ্ঞবঃ।।

मन्भूरवाशी^न भू॰ कनारकनिः॥ काम्कः॥ मन्धरवाककः। ইতি स्विती॥

मन्युमात्रनः की वाक्रवनमा मः

खावित्नका स्था। रेप्ना न क्षमात्रवनाः यव सार्त्व अयुक्ता-ৰান্দোৰ ইক্স সংপ্ৰসারণসং-क्रमाध। देखि निकासको ं मूकी ॥ সম্পূহারঃ পু॰ বুল্ক॰। ইভামরঃ য় গমম॰। ইভি মেদিনী ॥ হনন । ইতি ধরণী।। সম্পাপ্তঃ ত্রি সমাক্প্রকারেণ-क्षाश्वः। कथा। जन्मभूताकः। সংপ্রাপ্তে মকরাদিতো পুণো श्रृगाथा ना। कर्खरा। नि-यमः कन्छिषु छकाशी नरत्राखरेनः া৷ ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব গা मन्याक्षिः की मगक्ञालकः। यथा। जाजातभनमध्यात्श्री পরবৈদ্ম সত্রচিন্ডবেৎ। ইতি মণ কিপ্তদারব্যাকরণ ॥ गटेन्शुवः श्र् निरंशागः। विविः। · ইভি হেমচ**ন্তঃ** ৷৷ সন্ফালঃ পু· মেষঃ। ইভি হেম , जिलाः ॥ मक्षः वि विक्रिजः। अध्कः। रेकामहरू स

नर्गता इं विकविषया

११ मखानिः १ ७ श्रेवर्मस्याः

পরঃ। সম্বতি। সিসম্বিষ্তি।

े हेि मूर्गामानंः ॥ পৰ ক সহস্বে। ইতি কবিকর-क्रमंश्री क्षेत्रवर्गत्नत्वांभवः। ক সমবতি ধর্ন লোকঃ সংব্যা-তীভাৰ্বঃ। ভালকাদি রুষ মিতি बाजूअमीनाः । वृक्षनामि तिजा-त्भारक। इंडि पूर्शामामः॥ मदः क्री क्रमः। देखिकिशिवतः॥ वात्रवयकर्वनः । देखि महाक्रकः भेकामनार ॥ াসম্বর্ণ ব্য বিক্রমাদিত্যরাজাকঃ ৷ সংপূৰ্ক ব্যথাতোঃ কিপ্ প্ৰত্য-বেন বকারলোপে ভুকাগনেন · নিষ্পান্ন• ৷ কিন্তু অসম্প্রকোযে व्यवायवर्गं मदम्भरको २ खि ॥ ত্রি সমন্ধযুক্তঃ। যথা স্মন্তঃ। মাতৃ পিতৃ সমন্ধা আ সপ্তৰাদবিবাছাঃ কন্যা ভবন্তি ৷ ইজুৰাহতৰণা ৰম্বনবিশিষ্টঃ া সংপূৰ্ব বন্ধবাতোঃ ক্ত প্ৰত্য-যেন নিম্পন্নঃ।। महस्रः भूः ममृद्धिः॥ न्यायः। रेडाक्या । मन्मर्गः। यथा। এक-अमार्ट्य जनत्रभमार्थ मःमर्गः मः-नर्ग बर्गानमां जानके न ह थ-

खिँद योगान् रवागायात्राद्य वि-

্ষৰ বিষয়িভাবাদিঃ। ইতি প্ৰথ-

यवार्शेष्टियामीयगामाभद्री ॥ म न्गर्कः। म र विविधः। विषाकः वानिकः २ श्रीविकः ७ । छवितवन स्या। जनस्या (सर् रायाः यः सर्काणियु अर्दछः । **७॰ वा॰ बरीमि (बरमाङ॰ बन्न**ना ক্ষিত পুরা।। পিতা তাতস্ত कनत्काः कमनाकदि वर्त्तरः । जया बाज है जननी गर्डशाना। প্রসূরিভি।। পিতামহঃ পিতৃ পিতা তৎপিতা প্রপিতামহ: । অত উৰ্দ্নণ জাত্যক সগোত্ৰাঃ পরিকীর্ভিতাঃ ৷ মাতামহঃ পিতা মাজুঃ শ্ৰীমাভামহ এব চ। মাতা-মহমা জনক স্তৎপিতা বৃদ্ধপূৰ্ব कः ॥ शिष्ठामही शिजू माजा उर-श्रकः अभिजामशी। याजामशी মাত্ৰাতা মাতৃত্ব্যা চ পুজিতা।। প্রমাতারহীতি বিখ্যাতা প্রমাতা-মহকাৰিনী ে বৃদ্ধপ্ৰমাভামহী क्छिया छरशिकूर कारिनी छथा।। পিত্ভাতা পিত্ৰা: স্যামাত্ভা ত। जू माजूनः। शिजूः यमा शिजू जिनी गांकू जिनी ह भागूती। मूम्क छन्दः भूट्या नावाम का-शक्ष स्था। धमजाक् वीधान रेक य भू नि जत्मा ह बर्ख ए ॥ जना

मा पूरिण कता कनी जिभितकी-ৰ্ত্তিতাঃ। পুত্ৰগদ্ধী বধু র্জেয়া জা-ৰাভা দুহিতুঃ পতিঃ ॥ পতিঃ প্রিय-শ্চ ভর্তা চ সামী কান্তে চবর্ততে। পত্নীজ্ঞাতা শ্যালকশ্চ পত্নীভগি-नी ह भागिका॥ ८५वद्रः वामि-নো ভাতা ননন্দা স্বামিনঃ স্বসা। শ্বশুরং স্থানিন স্থাতঃ শ্বশ্রণ্ট স্থা-मिनः थ्रमृः॥ जादग जावा दिः বা কান্তা ন্ত্ৰী চ পদ্মাঞ্চ বৰ্ততে। পত্নীমাতা তথা শ্বশ্ৰ স্তৎপিতা শশুরঃ স্মৃতঃ।। সগর্ত্তঃ সোদরো ভূাতা সগর্ৱা ভগিনী স্মৃতা। ভ গিনীপুত্রো ভাগিনেয়ে ভ্রাতৃ-পুত্রশ্চ ভ্রাতৃজঃ॥ শ্যালস্ত ভগি-নীকান্ডো ভগিনীপতি রেব চ। শ্যালীপতিস্ত ভূাতা চ শ্বন্তরৈ-কন্বহেতুনা।। শৃশুরম্ভ পিতা **ख्डिरा जनामाजुः म्रामा मूरम** । অমদাতা ভষত্রাতা পত্নীতাত স্ত-থৈব চা। বিদ্যাদাতা জন্মদাতা পক্ষৈতে পিতরো নৃগা । অন্নদা-

নী।। মাতা চ অৎসপদ্মী চ কন্যা পুত্ৰপ্ৰিষা তথা। মাতৃ শ্মা-ভাপিতৃ শ্মাতা শ্বন্ধঃ পিক্ৰোঃ স্ব-সা সুখা।। পিতৃব্যাণী মাতৃলানী

নাতরণ্ড চতুর্বুশ ১৫০জন্ম শুরু भूटा हे द्वारोध संबन्धिनी ११ कर नुसारा भार देव जन्माः भार क्षांकाण कीर्विकाः। कन्माश्रक म्ह सोहिब, खर श्वामगुम्ह वा-श्वाः ॥ ভाগিবেयम् छ। गान्छ পুরুষা বান্ধবাঃ স্থভাঃ। ভূাতৃ পুতাশ্চ পুতাদ্যা তেপুন स्वीएयः পৃতা:।। শুরুপুত্র স্থপা ভ্রাতা (शांचाः शत्रमयास्त्रयः। श्रक्रकना চ ভগিনী পোষ্যা মাতৃসমা মুনে ।। পুত্রসাচ শুরু ভ্রাতা পোষাঃ मूनिश्ववाञ्ववः। भूखमा यखनः ভাৰা বন্ধু বৈবাহিকঃ স্বতঃ ।। কন্যাধাশ্চ শ্বশুরে তৎসম্বন্ধঃ পরিকীর্ত্তিতঃ। শুরুশ্চ কন্যকা-याक श्रूक्या वाक्षवाः चृषाः ॥ পুরুষা বান্ধবাঃ স্মৃতা ইত্যত্র ভ্রা-তা সুন্ধিধান্ধৰ ইত্যপি কচিৎ পাঠঃ।। শুরু: শ্বশুরভ্রাভূণা• শু-क्रजूना क शृष्टिलः। वसूर्व। यन সাৰ্দ্ধক ভন্মিত্ৰণ পরিকীর্ত্তিভ ।। निज गूथथान (काय मूं:श्रामा तिश्र क्रिकारण। वाष्ट्राया मूर्थरमा रेषदा ६ निःमक्षी मूच्छापः ॥ म-বন্ধ ত্রিবিধঃ পু•সা৽ বিপ্রেক্ত জ গভীতলে। বিদ্যাজো বোনিজ

रिकार शिविष्टक दोने दिन्।।। कार बीजिल अवस्थान न नवसः भूग्राक्षकः। विक्रमाना विकेकारी। माण्यूनारे म मन्त्रवंश । निवास्त्रीका নিত্রপ্রিভা পিছুকুজ্সমে দ্বাণঃ हरूष नाम नश्च मिछार कम-লোন্ডব: ॥ জার শ্চোপপতি রন্ধ দু কা সংভোগকর্জরি৷ উপপন্ন্যাণ नवनी ह व्यवनी हिखरातिनी ॥ यायिज्नाम्ह बात्रम्ह नश्मी श्-रियोगमा। मस्या (मम्स्ट्राप्त ह मर्वतम् विगर्शिष्टः ॥ व्यदिमि-কে। নিন্দিতন্ত বিশ্বামিত্তেণ নি-र्बिजः। मूखाकास मरस्किक प्र-শভেদে চ সঞ্জেৎ।। অকীর্ত্তি-জনকঃ পু•সা• যোষিতাক বিশে-বতঃ। তেজীবসাং ন দোবাৰ বি-माम्। द्रा पूर्ण श्रु ।। रेखि बक বৈৰৰ্ডে জন্মখণ্ডে সম্মূজাতিনি-र्गरा नाम > व्यक्तावंः ॥ 🛊 ॥ क्षभूतात्। अटकामकानाः नतः ৰে সুত্ৰু চৈতদেৰ ছি**৷ পক্ষিণী** • र्वाभिनयस्य वादारवर्ष् छरेशव ह ॥ तामिनमस्त्र माङ्चनीय छा-शित्मद्रवृ॥ ज्ञिष्ठ। ज्ञत्रक्तिः (न) विकान् गरिका परिका नगाः-

खालखाः ॥ ॥ १ म्यानिकानः ।

तः गर्यकाः । श्राह्मां कार्यकाः विकासः । श्राह्मां कार्यकाः । विकासः जिल्लानः ।

वाचा वया । जिल्लानं जिल्लानः विकासः विकासः ।

वाचारणे दिन वक्ताः गयकः गथाः गथाः ।

वाचारणे दिन वक्ताः गयकः गथाः गथाः ।

वाचारणे दिन वृद्धां गाणित्यमः ।

वाचारणे विकासः । विकासः ।।

मधकः कि मुख्यः। हिणः। हेकाः क्रयः॥

সম্বনী ত্রি সম্বন্ধবিশিষ্টঃ। তৎ-পর্যায়ঃ। গুণবান্ধ সংযুক্ ৩। ইভি ত্রিকাওশেষঃ।

मश्र की, मश्याः ইতি जिकाश्रत्मका दोष्ठ कि विकास काश्रत्मका दोष्ठ कि दिन्दी। क्रमं कि कि मश्र मर्थ मश्र्म मश्रि मश्र मश्रामि।
मश्रा मश्रि मश्र मश्रामि।
मश्रा विकास मश्र मश्रामि।
मश्रा विकास मश्र नीत्र दोष्ठ जिल्लामा महामा विकास भूका विकास मश्रामा विकास भूका विकास मश्रामा विकास भूका विकास मश्रामा विकास मिला विकास मिला विकास मिला विकास मिला विकास मिला विकास मिला व

विकार दिखि खन्न हो। महतः पूर (मर्जूर) वेषाः (मर्ज) भगावि महत्राः । देखि एवर-हसः॥ (मेळाविरणवाः॥ हतिन-विरणवाः॥ वर्षाविरणवाः॥ रेणविरणवाः॥ किनविरणवाः॥ देखि (मिनी॥ म जू कावार्यन् । देखि (स्महसः॥

সম্বরণ ক্লী আবরণ । সংপূর্ব বৃ থাতো রনট্ প্রত্যমেন নিকামণ । ইন্দ্রিমস যমঃ। ইতি সম্বরা-রিশকটিকামাণ ভরতঃ ।।

गवतातिः प्रश्निमा देखाः
मदः॥ मवतमा देणाविद्यममा
जितः॥ क्रीत्य मवतः नीत दोखाउणिद्याराः। विद्याद्यपुरः
मि देखामा मह्मामा इतिभा ह
॥ देखि मखाद्यो त्रिमा देखियः
त्राः मवत खमाति ति वा।
जम्कः मवत खमाति ति वा।
जम्कः मार्रिण्य बज्राति ति वा।
जम्कः मार्रिण्य बज्राति ति वा।
क्रम्भाविष्ठा । जमयः मवताति
तिर्णामा विद्यापिकः।
देखि जत्राः॥
देखि जत्राः॥
देखि जत्राः॥
देखि जत्राः॥
देखि जत्राः॥
देखि जत्राः॥

সম্বরী স্ত্রী শভাবরী। ইভি শব্দ-চন্দ্রিকা॥ মুম্বিকপর্ণী। ইত্য- मतः ॥ रेक्नूत्रकानी रेजि था। जाना या॰ थूलक्षी रेजि था। जाना निजि कि कि । यः कना। वः क्रांजि भवती शूर्वतमन् केश जानवा मामिः मछा नामिरम्हिल यानी। रेजि छत्रजः ॥

मध्म की जन। ইতি শব্দরত্না वनी॥

ষয়লঃ পু•ক্ষী পাথেষ•। তাল-ব্যাদি দ্স্যাদিশ্চ । ইত্যমর-ভ্রতৌ !!

সমার্কত ত্রি বারম্বমরুক্টক্ষেত্র । ইত্যানর ।। তালব্যশাদি চ ।। সমাধঃ পুং সক্ষা । ভগং। ইতি মেদিনী ।। ভষং।। নরকবর্ম । ইতিশব্দরত্বাবলী ।।

সমাধন ক্লী মদনসা ছারণ।।
শ্লাগ্র•।। ছারপালঃ। 'ইতি
মেদিনী ॥

সমুদ্ধঃ পু॰ বুদ্ধাবভারং। ইতি ত্রিকাওশেষং॥ সমাগবোধা-গ্রেবে ত্রি॥

समृद्धिः खी मरमाधनः। वथा। नार्थ ममृद्धाः कार्थ थी। देखि मृक्षरवाश्वाकत्रवः॥

मत्सोधः पू॰ त्वाधनःश त्क्ष्यः। इंडि त्यमिनी॥ नाणः। इंडा- क्षभोनः ॥

मरमाधनः की खनाजवागिकमा कार्याखरत निर्माकनार्थमाछि म्थाविशानः। स्था रह विरक्षा। हेकि वाकित्रगः। रह वृक्त रह लट्ठ रह कल हेकामावट्डिंक्टन कृषहातः। हेकि मूर्गामामः॥ ज्याकाः। हेकि मूर्गामामः॥ हेकि रहमहस्यः॥ ममूकिः ७॥ हेकि मूक्तराधः॥

मसनी खी करेंगी। हैठामहा।

दि পরপুর দেশ मह পরনারী।

रवाक बखा। करेंगे हैठि था।

छावा। करेंगे हिन खि खी

भूत्रव देव पछा। करेंगे ने नका। पिः

व क कणान जन क निक्र भर।

कि मुखनी जन क निक्र भर।

पिका मंग्रे महा पिका मिश्रा में अभी

छान गामिश्रा मिश्रा में अनि कारण म
खनी प्रख्या मिश्रा मिश्रा हैठि

छत्र छ।।

সন্তবঃ পু• হেজু: ।। উৎপত্তি: ।।

নেলকঃ ।। আধেৰস্য আধারানতিরিক্তত্ব• । ইতি মেদিনী ।।

সক্তেগ্ৰা অপাষঃ । ইত্যজ্বঃ

থা বৰ্ত্তমানকৰীয়াইন্ডেদঃ। ইতি
হেষ্চন্দ্ৰঃ ।।

मस्याः श्रुष् किष्यः। हेि भन हिल्ला।। मस्यनीय कि॥ मस्रातः श्रुष् मस्रुष्टिः। ममृदः। हेि यिषिनी।। मर्वश्रुष्टः। हेि विकालस्याः।।

मखादनः क्री जनकात्रविद्यायः।
स्था। मखादनः यत्रीतः मातिः
ज्यादानामा मिक्स्य। यति स्यस्था जरवस्का कथिजाः म्यू र्खः
था उत्र ॥ देखि हस्याद्यायः॥
म प्रावनः क्रियायू स्थागाजाशः
च नायः । देखि मुख्यायदानिकाः

महादना श्री उरकेंदिका विक मन्मवः। मन्मृर्वकार जूक श्रीक विष्ठरमा विज्ञान अभि विश्व श्रीका मि मृद्ध नामश्री विश्व सा। स्था। अवः का छाः रम छेर क छात्रुभः महान्या मि विश्व महादिरम्पः। देखि श्रीका । देखि महादिरम्पः। देखि श्रीका मि विश्व महापि वात्राव महान्य महादना माद्यामि वात्रहाव महादना माद्यामिक सम्माश्री किना साद्यामिक सम्माश्री किना साद्यामिक सम्माश्रीका होना स्थित होना स्थान स्थान स्थिति होना स्थित होना स्थिति होना स्थिति होना स्थान स् ন চতুষ্টৰ বৈতিহাৰ্থাপতিসভবাভাব প্ৰমাণ্যাৎ ইতি সুজেথোপন্যস্য শব্দ ঐতিহানবান্তরভাবাদনুমানে হথাপতিসভবাভাবানা মনর্থাভরত্তাবাচ্চাপ্রতিষেধ ইতি সুজেৰ ভগবদক্ষপাদপাদৈ নিরাক্তেণ নিকিত্যেতি উৎকটকোটিক সভাবনোপলক্ষণ মিতি ভিথ্যাদিতত্ত্বে সার্ভভটাচার্য্য লিখনত্ত্ব
সন্তব্য সক্ষমনীষণ। ইতি নানাপ্রত্যে গ্রাহ গ্রাহ

मडाविजः बि मडावनाविणिकः।
मडाविजः बि मडावनाविणिकः।
मडावन्यानामः।। वहमञः। प्रथा
। व्यक्तैर्श्विः हाणि ज्ञानि कथशिवािं छ १ वावाः। मडाविङमा हाकि छ १ वावाः। मडाविङमा हिं छ १ वावाः। मडाविङमा वहमञ्मा
। हिं छ छीकावाः श्रीवङमा वहमञ्मा
। हे छ छीकावाः श्रीवङमा वावाः।
मडावनः क्री कथनः। व्यावाः।
भनः। वथा। इट्ड मडाववाः।
प्रव ख जावाः स्मर्गिन ज् ।
हालद्र वर्ष भाषाय कटलो भञः।
छ कर्मवा।। हेज्यवाह्यकः।।

সভাষা জী সভাষণ সংগ্ৰহক ভাষধাতো ভিঁদাদিয়াও ও ওত. ভাস্থতাৰ নিশায়।। সভিষ্ণ তি স্বাক্ভেদবিশিক্টঃ। ধ্থা। সভিষ্ণ কা সাবদেবায়ে। নিরেতি বদনাদক। কাস ইত্যু-চাতে লোকে ভালবাভো ন কীর্ভিতঃ।। ইতি প্রাচীনকা রিকা।।

সজু: পু• সন্তবতি যঃ। সংপূর্ব
ভূগাতো ডু প্রত্যবেন নিম্পান্নঃ
া ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণ ।।

সন্তৃত্য ত্রি উৎপন্নঃ। যথা।
ইত্যেতৎ কথিত ভূপ সন্তৃতা
সাম্বা পুরা। দেবী দেবশরী
রেভ্যো জগভ্রমহিতৈবিণী ॥
ইতি দেবীমাহাত্মা ॥

সম্ভূতবিজ্ঞষঃ পু•্ শ্রুতকেবলি-স•জ্ঞকবৌদ্ধবিশেষঃ। ইতি হে-মচন্দ্রঃ।।

সন্ত্ৰসম্খান ক্লী মিলিছৈকমত্যা বণিজা কৰ্মকরণ। ততু
বিবাদপদ্বিশেষঃ। ষথা। সন্ত্ৰ্
ষসম্খান নাম বিবাদপদ মিদানী মভিদধাতি। সমবাবেন
বৃণুজা লাভাৰ্থ কৰ্ম দৰ্বতা।
লাভালাভৌ ষ্থাজব্য ম্থা বা

म विका कुछ्छे।। महर्व वर विक कर्म विलिखाः अर्था देखाव बंगा मन्थितिशिक्षः मैयनारं खिन (र বণিক্ নট নৰ্ভক প্ৰভূতবো লা-ভলিকবো ভূষা প্রাতিষিক কর্ম পৰ্যতে ভেষা- শাভালাভাবুগচ-यां भारती वंशास्त्र । (यन यांव-দ্ধান- পণ্যগ্ৰহণাদাৰ্থ- দত্ত- উদ্ नुगाद्वशाद्यारको। वद्याः अश-নগুণভাবপৰ্যালোচনযাস্য ভা-গছৰ মনৈয়কো ভাগ ইত্যেব ক্ৰ-পৰা সম্বিদা সমুখেন যথা সংপ্ৰ-তিপত্তো তথা বেদিতব্যো। কিঞ্চ প্রতিবিশ্ব মনাদিষ্ট প্রমাদাৎ य क नानिज्या न जनना विश्ववाक त्रिकांकनमाञ्चलाक्।। (उदाः সন্ত্ৰ প্ৰচরতা মধ্যে পথা মিদ মিখা ন ব্যবহর্তব্য নিতি প্রতি-विकं गाठत्रण वद्यानिक अनामि-के मनमूकां क्या क्यार्यन ज्था প্ৰদাদাৎ প্ৰজ্ঞাহীনত্বা বা বেন यज्ञाणिकः मं छ्वन्यगः विविद्या मगार ।- वः भून खिवा मधा চৌর রাজাদি জনিতাৎ ব্যস-নাৎপণ্য পালষ্তি স তন্মাদ্ৰকি-ভাৎ পৰ্যাৎ দৰ্শন মণ্শণ লভতে। অৰ্ঘ প্ৰকেপণান্তি-শ ভাগ শুৰু

.न्एग १८३६। । व्यानिकः ताज বোগাণ বিজীক রাজগানি তৎ ॥ इंड यकः भगरमायगुना ह-তার্য জন্য প্রকেপণাৎ রাজনি-क्रशनात्करका क्रमी मृत्रााषि भ-তিতৰ ৰণশ ওক্তাৰ্য গৃহীয়াৎ। **४९ भून कांत्रिक मसाज न वि क्रिय शिक्र शिक्रा श्राव्या श्राव्या** যক্ত রাজবোগ্য শাণিক্যাদ্যপ্র-তিৰিন্ধ মপি তত্তাৰ্জে অনিবেদ্য লাভলোভেন বিক্রীতঞ্চেত্রাজ गानियुवामाननित्रत्भकः ७६म-र्व॰ পণ্য॰ द्वाकाপरदामिछार्थः। निशायमन् **शतीमानः एकश**ाना-में भागा सुकेखन नक नवाक्क्यविक्यो। यः भून र्विक् एकव्यनार्थः श्रीमानः নিহুতে শুক্ত হণ্ডানাৰাপদ রতি ষ্শ্চান্যোদ মস্য বেভােব॰ তি বিক্ৰীণীতে বা তে সৰ্বে পণ্যা-केशक मधनीयाः। जिक्त है। তরিকঃ স্লজ শুস্ত গৃহন্দা-शाः भवान् मभ । बाष्मनशािकः दिन्याना स्वटप्रवानिमञ्जरन ॥ **'कर' हि बिविध' युगक' कन** क्षा एव खनक मर्वश्राक्रभण-

বিশ্শাভাগি শুক্ত নৃপো হক্ষে দিত্যক্তণ জলজন্ত মানবে ২তি-হিত•া পণ যানগ্ডরেদাপা• পু-ৰূষো হৰ্দ্ধগণভৱেণ পাদ গণ্ডদ্য যোৰিক পাদাৰ্জ বিক্তক: পুমা-न्। ভাওপূর্ণানি বানানি ভার্য্য॰ দাপ্যানি সারতঃ। রিক্তভাতানি यथ विकिष् भूमा नका शतिक्ताः ।। ইতি। শুক্কৰ্যেপ্যষ মপরে। বিশেষণা ন'ভিন্নকার্যাপণ মস্তিঃ **७६**॰ न नित्रवृत्वी न नित्नी न मृत्छ। न'रेङकामस्क न श्ठाव-শেষে ন শ্রোত্রিষে প্রবজিতেন যজে।। ইতি। তীৰ্য্যতে খনে-নেতি তরো নাবাদি স্বজ্জন্য শুষ্কেধিক্লত শুরিকঃ স'যদা স্থ-লোভব শুদ্ধ গৃহাতি তদা দ-मननान् मखनीयः। दित्मा दिना প্রতিবেশ ইতি স্ববেশাভিমুখণ স্ববেশাপার্শ্বরু চোচ্যতে **खराः क्षां छित्रमाः। बान्नगाम्** ভে প্রাভিবেশ্যাশ্চ ত্রাহ্মণপ্রাতি-বেশ্যা স্তেষা প্রতাত বৃত্ত সম্পদ্মা-ना धाकामियू विख्रं मछानिम-ম্বৰে এতদেব দশপণাত্মক দখন **र्विन्डवा॰।। #।। हिमाछ**त्रम्ङ ৰণিত্ৰিক্প প্ৰত্যাহ ৷ দেশান্ত:

রগতে প্রেতে ত্রব্যান্যান বাস্ক-वाः। क्वांकरमा वा रख्यू खरी-भाषा देख विना नृभः।। यहा यसू-बकारिनाः मरधा सः खिन्हरसमाः স্তুর• গতো মৃত স্থদা তদীৰ ম•শ• मायामः भूलामागञ्चर्गः वादा-वाः माज्यकीमाः माज्जामाः জ্ঞাতয়ে ২পত্যবৰ্গব্যতিরিক্তাঃ সপিণ্ডা বা আগতাঃ সম্থ্যব্যব--ছারিৰো যে দেশান্তরাদাগতা रख वा शृङ्गीयू देख विना मायामा-ভাবে রাজা গৃহীয়াৎ ৷ বা শব্দে-न ह मारामीना देवक्रिक र्या কারণ দশ্যতি। পৌর্বাপর্য্য নি-यमञ्ज भन्नी मूहिणत हेणामि अ जिशामिक अवाकाशि विख्यमः। শিষ্য সত্ৰন্ধচারি ত্রান্ধণ নিবেধো বণিক্ প্রাপ্তিশ্চ বচনপ্রষোজন ৷ বৰিজা যপি মধ্যে ষঃ পিওদা-नर्वनानानि मयर्थः म गृङ्गीवार । नामर्थाविरमस्य भूनः नर्स वि कः मःमृखित्ना विख्का गृङ्गीवृ ভেষা মভাবে দশবর্ষ দাযাদ্যা गमनः अञीकानागराज्यू सम् व ब्राका गृङ्गीयाथ छिममः नाद्र-प्तन व्यक्त मूकः। **अक्ना हि** नार भर्तन राशामाना जरार्थ-

बार। जेटना वा श्राण गांचा-ে দেশক দেহৎ সর্ব এব তে।। ত-म्बाद वृष्ट्य वर कान्नरमन ্পবৎসন্থাৎ। অস্বামিক মদা-ষাদ দশরমন্তিত ভতঃ।। রাজা ভদাত্মসাৎ কর্ব্যাৎ এবং ধর্মো न शैयला। देखा किशा जिन য়া তাজেৰু নিৰ্লাভ মশকো ्रतान कात्रत्य। किरशा वश्र-কঃ ত নিৰ্লাভ নিৰ্গতলাভ লাভ ৰাচ্ছিদ্য ভ্যজেশুঃ বহিদ্ধু-र्याः। यक्त मञ्च्यकाक्रिशाः मरश **जां अजारक शामिक कर्जू** मनगर्वा श्रावत्नाम ऋ कर्म ভাওভারবাহন তদাবব্যষ প-त्रीक्मणानिक कान्नरक्र । ইতি মিতাকরা য়

সম্ভূতঃ ত্রি সমাক্পুক্টঃ ।। সমাগ্-ভূতঃ । সমাক্প্রকারেণ ধৃতঃ । সংপূর্ব ভূধাতোঃ ক্ত প্রভাবেন নিপামঃ ।।

गङ्जिः जी नयक्रणायनः॥ न-यक्छतनः॥ नयान्यात्रात्रनः । नःপূर्व ख्वालाः कि প্রত্যবেন निकामा॥

मरखमः प्र् मिस् नरमाः मक्रमः । ইতামরः॥ फूটनः॥ मिननः . । रेकि खिरिनी ध

मत्सामः भूः जामः॥, मूत्रकः॥
कित्रभामनः। ইकि समिनी ॥
स्वरः। ইकि भमत्रप्रावणी ॥
त्किलनामतः। ইकि किरोधनः
॥ मृनात्रज्यः। ইकि किरोधनः
लगरः॥ कमा नेकवः यथा। मभन ग्यमंनामीनि नित्यत्त्रकः
विनामित्नी। यत्रानृत्रकावत्नाः
स्नाः मत्सामः मनुमान्नकः॥
ইकि माहिलामर्गत्व ७ शतित्किषः॥ः

সম্ভোগী পু॰ কেলিনাগর:। ইভি
ভূরিপ্রবেগে:।। সম্ভোগবিশিকে জি !৷

मधुमः प्रश्वामिकनिष्यता।
जर्भगायः। मध्यभः २। हेळ छीमद्रः॥ जार्यग्रः ७। हेळ छीका।। প্রবেগঃ ৪ ছরা ৫ ছরিঃ ৬
। हेळ वाठण्यकः॥ ভয়॰॥
जामद्रः। हेळ र्यामिनी॥ महाछुमः॥ मृत्यः। हेळ ज्यमभामः॥
मण्डिः श्री जाँछमायः॥ जन्छा। हेळ र्यामिनी॥ जाजछानः। हेळाक्रमभामः॥
नण्यमः प्रश्वाक्यभामः॥
नण्यमः प्रश्वाक्यभामः॥
नण्यमः प्रश्वाक्यभामः॥
ह्यानः। हेळाक्यभामः॥
ह्यानः। हेळाक्यभामः॥
ह्यानः। हेळाक्यभामः॥
ह्यानः।

সম্বৰ্দঃ পুণ বুদ্ধা ইতি কেচিৎ।।
সন্মাত্রঃ পুণ সতীতনমঃ। ভৎপর্যায়ঃ। ভত্তমাতুরঃ২। ইতি
হেমচক্রঃ।।

मन्त्रामः १ मरमावित्मसः। प्रथा
। वस्कृष्ण मोजिति नीम महर्षि
त्रस्रकृत्व द्यापणाकः काम मन् वाम। ज्व ठाष्ट्रकृत्व मरमाः मन्त्रामा नामा रिवर्ण्याजि-धमात्वा कीनाविश्वि तामीर। हेि विक्श्रतात्व ८ ज्यापा २ स्राप्ताः।। ममाक्थकात्त्रव मन् ख्वा। मःशृर्व ममधात्वा र्यक्ष প্रভাবেন निष्णद्यः।।

শন্মানঃ পু॰ স্মাদরঃ। ষথা।
জন্মর্কযুক্তা যদি জন্মমানে যস্য
শ্রুব॰ জন্মতিথি ভবেচ্চ। ভবস্থি তত্বৎসর মেব যাবনৈরুজ্য
সন্মান সুখানি তস্য।। ইতি
তিথ্যাদিতস্ত্ব•।।

मणानिकः वि मगामृकः। त्रीत्रविकः। मथा। ष्रदेना द्रिश मूदेत र्म्मवी ज्यदेश त्रायूदेश खथा। म-श्रानिका नमात्मादेकः मार्जेश-म॰ यूक्यूंकः॥ देकि त्रिवीमा-हाक्याः॥

সন্মাৰ্ক্তকঃ পু॰ সন্মাৰ্কনী। ইতি

भ्यत्रप्रावणी।। नगाध्माव्यम्न कर्छद्रिखि।।

मन्त्राव्यम् क्री मण्णाध्माय्यम् वधाः।

मन्त्राव्यम् मण्डिः मण्णाध्माय्यम्।।

मन्त्राव्यम् मण्डिः मण्णाध्माय्यम्।।

मन्त्राव्यम् विश्व विश्व व्यापाः।।

मन्त्राव्यम् विश्व ।

स्विष्ठ विश्व विष्ठ विश्व विश्व विश्व विष्य विश्व विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व व

সন্মিতঃ ত্রি সমানপরিনাণমস্য । সদৃশঃ। ইতিজ্ঞ টাধরঃ।। সন্মিশ্রঃ ত্রি সংবুক্তঃ। মিশ্রিতঃ । যথা। সন্মিশ্রা ষা চতুর্দশ্যা অমাবাস্যা ভবেৎ ক্ষচিৎ। খ-র্বিতাণ তাণ বিদুং কেচিদুপেধ মিভি চা পরে।। ইতি তিথ্যাদি-ভব্বং।।

ममूथः वि অভिমूथः। সুমুখ
ইভিভাষা। তৎপর্যায়ঃ। ভগ্নপৃষ্ঠঃ ২। ইভি ত্রিকাগুণেষঃ।।
সন্মুখী পুং দর্পণ। ইভি কেচিৎ।।
সন্মুখীনঃ ত্রি অভিমুখণ। ইভি
হেষ্চজ্রঃ।।

मण्डः वि मशक्रास्त्रकः ।

नृषः। यथा। मान्रा कमनीखण्ड निःमाद्र मात्रमार्गणः। यः
कद्राणि म मण्डण कन्त्रपूर्ण
मिर्छा। ইणि एक्षिण्यः ॥

मण्डकः भू ज्नामिः। ইणि
रम्मकः ॥

मण्डनः की मर्गलाशिः।
रण्यगायः। অভিব্যাপ্তিः।
ইण्यतः॥ উচ্ছायः॥ मारः।
ইणि मिनी॥

मण्डलाह्यः भू मर्थामिः।

ইতি হেমচন্দ্র: ॥
সন্মৃষ্ট: ত্রি সংশোধিত:। ইত্যমর:॥ ছে মক্ষিকাদ্যপন্যনেন
শোধিতে ব্যঞ্জনাদৌ । ইতি

मत्मामः भू श्रीिलः। हर्यः। इंजिमस्त्रद्भावनी।। ममाक् वा ममूमयः। ईंजि कि-हिल्।।

ভরতঃ ॥

সনাক্ ত্রি সভাবচন্ণ। অর্থেন-সহসবক্তি সকচ্চতে। ইত্য-মরভরতে ।। মনোজঃ ।। স-কতঃ। ইতি মেদিনী ।। প্রথম-কর্মাদিঃ। যথা। সম্যক্ সংসা-ধনণ কর্মকর্ত্রতা মধিকারিশা। निकारम्य महा शार्थ कामाः का मान्निका ह ॥ मन्नक् क्षेत्रमः कन्नानिमा । ইতি প্ৰাথশিতভ-ভত্তা।

मगाएँ पू॰ (बम ब्राक्ट मृद्य म-इस्के॰ ।। (बा मखन म्हिन्द्र ।) इन्हिन्द्र ।। बाक्ट माखिन्द्र । इन्हिन्द्र ।। बाक्ट माखिन्द्र । इन्हिन्द्र ।। बाक्ट मालिन्द्र । जन्द्र वागः क्रिक्ट । (बा मखन महन्द्र । जन्द्र बाद्धाः न्याम् वाद्धवाः माखि ज्ञान न्याम् वाद्धवाः ।। जन्द्र बाद्धवाः न्याम् वाद्धवाः माखि ज्ञान वापाद्ववः ।। वित्र व्यापाद्ववः ।। वित्र वित्र व्यापाद्ववः ।। वित्र व्यापाद्ववः ।। वित्र व्यापाद्ववः ।। वित्र वित

यः म जन्ना है हजूति किमाना खूटम में जेनानः माणि । वन्ह किक्ट मिन्नानाना जूटमः गजीनाक्कना भाखि माणि । देर भन्ना है मारक्षम देखा न-माज्यक्रमानान्यातः । देखि जन्ना ।

সবোনিঃ পু॰ ইন্দ্রহা ইভি কেচিৎ।। বোন্যাপ্তাহ কর্তমানে স
মানোৎপদ্মিস্থানকে চাত্রি।।
সর॰ ক্রী সরোবরঃ। ইভি শব্দ

त्रप्रावनी ॥ कल-१ इंडि क्रिंग-यतः ॥

तः क्री मद्रावतः। इठामतः॥

खना विषत्न ज्ञान नपाकतः

नक्रया प्रकेवाः॥ जमा कनछनाः। नात्र नम् ज्यापः वः

नाः साम् क्याप्तः। इछि ता
क्वन्छः॥ नीतः। यथा। मद्रा

नीद्र ज्ञान ह। इछि क्रजः।

इठामत्रिकायाः छत्रः।।

मद्रःकाकः पूर रूपः। ইতি শব-, तप्तावनी ॥ मद्रःकाकी जी रूपी। ইতি শব-

রত্নাবলী।। সরক॰ ক্লী সরোবরঃ।ইতি শব্দ-রত্নাবলী।। আকাশণ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদ্যামুশাদিবৃত্তিঃ।। मत्रकः पूर् क्री भी धूर्गांकरार भी धूणानः॥ इक्नीय॥ व्यक्ति। अगर्भाकिः। देखि सिमिनी। यन क्शितियमन । इकायतिका-থা ভরভঃ গ সরকঃ ত্রি মতিশীলঃ। ইতি শ सब्बाबनी त সরবা জী মধুমকিকা। ইভ্যা यद्भः ॥ मद्रकः भू ह्यूकारा भकी। के जिल्ला के निर्वेश में कि विकास मद्रजः क्ली नवनीषः। रेट्रकः .বীন-। ইতি হারাবলী 🛚 সরকাঃ স্ত্রী ঋতুমতী স্ত্রী। তৎ-शर्यायः। मनिष्ठी २। ই**कि** जि কাপ্তলেষঃ 11 मद्रिः भू क्रकनामः। शिद्रशिष् देखि कँ। कमान देखि ह छ। या। ইত্যমরঃ11 তৎপদ্দেশ্পৌাদ यथा। बह्याः श्रम महत्रमा श्रद्धाश्यः। मृत्र् क्षिया श्र्वाश्चि जीटन स्मार्थः। स्मार्थः। स्मार्थः।

र्निवरया र्वश्वमर्भन । नामिका-

যাঞ্চ সৌগদ্ধাং বক্তে নিন্দান

ष्ठाकनः॥ कर्ष्व देवय जिल्ला-

, ২রাপ্তি জু জন্মে বিভবো ভবেৎ

গ্রেমলাভো বার্চ্মূলে করবো ধ मन्द्रसः ॥ उनम्राह्म ह मिन यार समि त्मीशासिवर्कमः। शृष्ट्रं मिछा॰ महीना**७३ शार्श्वरवा र्वस्** मर्मन ॥ किवरम बळनारज च्हरू मृज्यानमाधमः॥' ज्ञत्य-চার্থককো নিতা ওলে রোগ **७४॰ ७८४९ ॥ छर्दाक वा**र्ना-वाश्चि आंनुक्राज्य २र्थमःकषः। वाव प्रविभट्याः शासा ख्रीमनः निषक जल्द ॥ वज्ञाः श्रदा-रूप टेक्वं भंजरन ऋत्रहेश है। ব্যজাসাচ্চ কলা চৈব তছদেব अकायरक ।। चन्ना ध्राहिन । রাত্রো সরটদা প্রপাত্রণ নি-ধনাৰ্থাৰ ভবভি কাৰি পীড়া বি-পর্যাষী।। পতনাৰন্তর চৈবা-ফল সুৎক্ষত রোহণে ২নাৎ ক न ज्य ॥ चादाश्वाभिक् वर्कु व्यवावर्कु ह शानन । **ज्राविक्रिकनः छमा छ**९कनः জাৰতে জ্ৰবং ৷৷ স্পৃষ্টমাত্ৰেণ যঃ मलाः मरहनः कल माबिरमः । भक्तवाधाननक क्वानकाव-त्वाक्न ॥ वज्ञीकण भूवर्गा वळवंद्यंव दक्षरबदा भूकरवद

श्रद्भारेमा सम्दर्भ ग्र्यूक (कार अकशवाः अक्रमुक अका-गृकः मुनवदः । ल्याकृकः क्या-वक्ष निःकिन्यावाद्यक्षकः।। भूजदमाम्बशुभारेमा स्नीक-शांगा॰ **उथा क्यां १ वृ**ज्ञा रयन यदम्य मनिष्डिः श्रीपटेतः चरेजः॥ छिरेन व्याञ्चि ে হোম ৰন্ডোত্তরসহসূক । गृहरभाधिक।। मृज्यक्षरमञ्जञ्जाः ष्ठियद्धः। इंडि विमाक्दः। ইতি জ্যোতিস্তৰ্ণ। त्रतिष् पूर् वायुः ॥ स्यवः। हेजुः शामिरकायः ॥ नधूमिकका । ইछि निकाखरकोमूमग्रम्यामिवृखिः॥ ক্ৰকলাসঃ। ইত্যদ্দটীক।।। मत्रिक्टः भू॰ चायूः॥ त्यसः। रेजुा-शामिटकासः ॥ मत्रदूः भू॰ क्रकलामः। रेजुानानि-(क शि मत्रव॰ क्री लाहमनः। ইতি ह्य-**ठिख**ा। शमनक ॥ লরণা ত্রী প্রসারণী। গন্ধভা-नालि रेठि जाया। रेठायदः॥ ত্ৰিবৃতা। তেউডী ইভি ভাৰা। रैं ि गक्यामा।। भयमकर्खत्रि बि ॥

প্রী' শঙ্কি।। পদাঃ। ইতি मत्रवी प्रथमिती। अमात्रवी। ह-ত্যমর্জীকাষাণ শুরভঃ ।। मत्रकः प्र वृद्धः॥ मन्निवः॥ जूनन-ভেদ:। ইতি মেদিনী।। কামুকঃ ॥ भकी। रेडि भक्तत्रवादली ॥ সরণাণ जि गमागा गखवागा म-त्रभ नकाष्ट्रका প্रভाষেন नि-क्राध्रः ।। मत्रभूः भू॰ (यसः॥ वायूः॥ कनः । ইভি শব্দরত্নাবলী।। বসস্তঃ।। षप्तिः। रेजुानामित्कायः ॥ সরৎ পু॰ সূত্র॰। ইভি শব্দ-यांना ॥ मরত্নিঃ পু॰ স্ত্রী রত্নিঃ। ইতি কেচিৎ 11 সরদান্ পু॰ গৌতমমুনিঃ। গো-তমমুনিপুক্রঃ ইতি পুরাণা। **जानवाभामिक ॥** সরপত্রিকা স্ত্রী পদ্মপত্রণ ইতি সরমা ত্রী রাক্ষসীভেদঃ। সাচ ॥ अस्त्री॥ प्रवन श्रमी। रेजि मिनिनी। कमान-পত্নীবিশেষঃ। তদপত্যানি প্র্ন-त्रविषः। यथा। शालाजुल कि-কোর'ন্চ চৈত্যাপতা॰ ভবৈপ্ব চ।

অপতা॰ সরম্যাশ্য গ্রেটর ভ্রাদ্যঃ । ইতি বহিপ্রারে কাশাপীয়বংশনামাধ্যাক । সমস্থ পু॰ কাযুং। ইতি বিকাপ্ত শেষং।।

मन्त्रं जी मनीविष्णकः। रेजूः मद्रवृध्रीनातिरकायः। जमा जन खनाः। अत्रय् अतिनः चाम् वन भूषि शक्ष्मकः। ই**छि রাজ** निर्दन्हेः ॥ उमा उৎপত्ति र्यथा । अदः विवास विधिवः मोवार्ग মানসাচলে। অরুদ্ধতী বশিষ্ঠ-ख त्यान यान उसा महा। ठव ষৎ পতিত ভোষ মানসাচল কন্দরে। তত্তোষণ সপ্তধা ভূছা মানসাচল কলরাও।। হেমা-**ट्यः कम्मरत जार**नी जतगाभ श् . থক্ পৃথক্। বভোব সঙ্গত भर्यााक्षाना वख्य मनित्यो ॥ তেনাভূৎ সরষু নারা নদী পু-গতমা শুভা। ইতি কালিকা **পুরাণে ২৩ অধ্যাयः ॥**

मत्रमः १ क्वितिस्यः। ७६शर्वासः। शैठकः २ शृ्डिकार्षः
६ हें इस्तान्यः। धूमतृक्वः ६।
हें जिनसङ्गानमे। शैष्टमाङ्गः
६ इस्ताङ्गः ६ स्टनाङ्गः ७। हे

, तपुर्वामा ॥ शीष्टः १:विद्यामा तः সংজ্ঞা ৮ সিধান সামিচগতকঃ ॐ गीवर्कः >> भूत्रजिनातः १२ । पात्राः खनाः। करूपः। তিক্তমণ উক্তমণ কল বাত षश्रामात स्नामा अध्ि दन मानिष्। कार्वकिकांज्यः। रेि क्रांकनिर्यकेश जनाक। मत्रनः भीछवृक्यः मार छ्या স্রভিদারকং। সরলো মধুক ন্তিক্তঃ কটুপাকরসো লঘুং।। विश्वाकः कर्व कथाकि त्राग त्रत्का हतः ष्मृष्ठः। ककानिव « विम वृक कामनाकि खंगाशह ।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ বুদ্ধঃ। অ-शिः। ইতি बद्रशी ॥

मत्रमः वि जेमातः॥ **घ**ववाः। रेठि मिमी॥

मत्रनाजवः प्रमानविष्याः ।

हित्रियाः शिक्षाः । ज्याः । ज्याः ।

वृक्ष्णः ॥ श्रीत्वर्यः । । रेका
वृक्ष्णः ॥ श्रीत्वर्यः । । श्रीत्वरः ।।

रेकि किं। वृतः ।। श्रीत्वरः ।

स्वाः ॥ ववांमाः ।। श्रीत्वरः ।

स्वाः ॥ ववांमाः ।

३७। ३७ भयत्र इविमान खवाः औरविकेमरमः प्रकेशाः॥ मत्रन। सी बिश्रो । रेकामनः।। नमीरलमः। देकि जुनिश्वरमागः॥ मत्रवाषः भू खेरवेकः। हेि त्राक्रनिर्यक्षेशः।। मत्रवाः क्री मक्ताः। देखायतः विकाश जानसमाहिक ॥ मत्रम॰ क्री भद्धावतः। ইতি শব্দ-त्रक्रावनी।। त्रमयूट्क जि। यथा। ক্বিতা কোমলবনিতা আয়াতা मूथमारिका। वलामानीयमाना मा मतमा बिन्नमा खदवया। है-ज्रास्टिः ॥ मत्रमृष्णुङ - क्री, विककृष्कः। তেকাঁটাসিজ্ ইতি ভাষা। ৰথা । ত্রিকন্টঃ পত্রগুপ্তশ্চ পেবণঃ সরসম্পুত । ইতি শব্দ ক্রিকা।। সরসা স্ত্রী শেডত্রিবৃতা। ইত্য-यत्रिकाषाः त्रायमूक्षकः ॥ मत्रमिकः क्री **१५**०। ইতি রাজ-निर्घकिः॥ नत्रनी जी সরোবরঃ। ইত্যা-यद्गः ॥ मतमीकः पूर् मात्रमणकी। देखि শব্দরত্বাবলী।। मत्रमीऋर॰ क्ली भर्जं । रेज्यमद्रः ॥.

गत्रक्ली खी बाबीश खीत्रक्रना। भा असी । निर्मा निर्मा मन नूशद्भी। देखियामिनी॥ क्या-**जिम्ने॥ बामी। रेजियाफ**-নিৰ্ঘণ্টঃ।। দোৰলতা। ইতি শ-क्ठिका॥ यूषांगक्तिवित्नवः। ইতি ত্রিকাণ্ডলৈবঃ।। দুর্গা। বথা । ब्रह्माः ब्रह्मनीमद्मार्भाराः সপ্ত কীর্ত্তিতাঃ। অতিপ্রাপণ দানে বা তেন দৈবী সরস্বতী।। रेि (म्वीभूतात ८० व्यशायः॥ बारमवजा। ज्थार्यग्रायः। बाकी ২ ভারতী ৩ ভাষা ৪ গীঃ ৫ বাক্ ৬ বাণী १। ইতামরঃ॥ ইরা ৮ मात्रमा २ शित्र। ३० शित्रा॰टमवी ১১ গীর্দ্দেবী ১২ ঈশ্বেরী ১৩ বা-চা ১৪ বচসামীশা ১৯ বাজেবী ১৬ বৰ্ণমাতৃকা ১৭। ইতি শব্দ-রত্নাবলী ॥ গৌঃ ১৮ খ্রীঃ ১৯। ইতি জটাধরঃ॥ বাক্যেশ্বরী ২০ **चलान्द्रा**श्वती २३ नायःमः क्यादम्बङा २२। ইতি कविकन्न-न्छ। ॥ **७** ॥ ७ म ॥ ७ ९ १ छ। দি যথা। সে)তি ক্রবাচন আবি-ईভূব কন্যৈক। ধর্মদ্য বামপা-र्चछः। मुक्ति मृ विंगजी माकाष षिठीया कमनानया।। आविर्द-

ভূব তৎপশ্চামুখতঃ পরসাত্ম नः। अका रहती छक्तवना दीना-পুভক্ষারিণী ॥ কোটিগুর্ণেপু (आखाम) नद्रश्**नकत्ना**ह्या TARRIVER FOR THE PARTY ज्रिण । जीका जुड़ा राज गुर्गातक कृति। (विशेषक निया भाजामाः सिम्याः खनगी • नदा ॥ बागाधिश्रेष्ट्राम्बी मा क-वीना निकंतिका। एकमञ् সৰ্পাচ শান্তৰ্ণা,সর্বতী।। গোবিন্দ পুরতঃ স্থিয়া জগৌ প্র-थमणः मूचरा जनाम छन की छि-क वीनवा मा ननई हा। क्रुडानि रानि क्यांनि क्रंब्रे क्रब्र रहा যুগে। তানি সর্বাণি হরিণা তু-कीर ऋश्होक्षितः॥ मत्रवजुरे-वाह। ब्राममञ्जल यशाकः ब्राटमा-লাস সমৃৎসুক। রত্বসিংহাসন-স্থপ রত্নভূষণভূষিত ।৷ রাসে-শ্বর রাসকর বর রাসেশ্বরীশ্ব-तः। त्रामाधिक्षेष्ट्रस्यकः वरम् त्रा-मर्वित्नापिनः ॥ त्रामायामभित्र-শ্রান্ত রাদে রাজবিহারিশ । রাসোৎসকানা গোপীনা কা **उन्माउन्माहत्।। धन्या ७**-विश्वजुन अश्यक्ता नदी।

উবাস সা বকামা চু রত্নবিশ্বা-সনে বল্লে।। ইতি বাণীক্তত স্তো-ज शक्कामन संगठिर। रेकि मान् आरि निकादान मचादान स्या राजाराक्ष्मी आयोगां ह गाविडी मुनी क्रिकी नद्वपठी ॥ প্রাশামিक भी के दिन के का ग রমান্তন্তনা প্রাথানিক প্রিপত্না ना बाधा निविक्तिला। जैवर्गा-विशेष्ट्राची गर्दमन्त्रकातिनी। পরমানন্দৰপা চ সা सन्दीः श-রিকীর্ত্তিতাম বিদ্যাধিষ্ঠাতী যা (प्रकी श्रतंत्रममा मूर्वाञा । (वप-শান্ত ৰোগৰাভা সা সাবিত্ৰী প্ৰ-कीर्दिण।। वृक्षाविश्राती वा (मवी नर्गिक यक्षिमी। नर्दछाना-षिका नदी मा मूर्गा पूर्वमानिनी 11 रागाविकां की वा सबी माज खानथान गाना । इसक्टके खिता ষাচসাচ দেবী সরন্ধতী।। প-क्शामि स्म॰ स्मरी मृजशक्ति बीयकी। ७७: जृष्टिकरमेटन व-र्श कन्या हु मा । देखि बन देवदार्ख भरमग्याय ८० व्यक्तायः

॥ 🛊 ॥ जन्गाः श्कामि वंशा। 🗐 नातायन उर्वा है। जात्मे नत्रवंडी शृका टोइएकम विनिर्दिको। १९ श्रामा महित्या । निवासि - थियः है ज्यानिकृति। समोदारी रे-Gestant gentalen be-कारम कामूकी कामके निना क চ বিজ্ঞাৰ ভক্তাৰ-পৰ্বভঃ সৰ্বমা-তর । ভা ব্রাচ হিতা সত্য গ तिनाममूर्थावस् ॥ श्रीकृष्णेवातः। **ज्ञ भारायक गांधी बन-म॰ ७**॰ ठजूर्ज् ज । स्वाम म्मान गर्न **७ वर् कश्यः वद् मन् ॥ े का मछः** কানিত্রীকাক তামাক কানপুরক । काष्टिकचर्ग नावना नीनाना कृठ मीचन ॥ कार्ड काउफ गा॰ हाडा यनि द्वालू निट्राङ्गि। ঘতো বলৰতী রাখা ন তে ভত্ত अविशिष्टि॥ स्वा रुपार रलवान् বাৰি ততো ২ন্যা রকিজু করঃ। कथ॰ भन्नाम् माधर्गाठ यप्ति वय भनीश्रद्धः । गर्दनः गर्दनाञ्चारः রাধা॰ বাধিজু মক্ষমঃ। তেজসা यदम्या मा ह बरभव ह खरवन DII आनाविश्वाबी सनी मा आ-পাণ্ড্যাব্ৰুঞ্ কঃ ক্ষমঃ। 219-তোপি প্রিষঃ মুর্ত্ত কেষা বাস্তিচ

কশ্চন ৷৷ 🔏 ভব্তে গচ্ছ বৈঙ্গ**্ঠ** তব ভক্ত ভবিষাতি। পতিণ ত মী-अतः क्रमा त्यापय मृहितः मूथः॥ গোড নোহ কাৰ কোশ স্থান शिगा विवर्जिंगा (चर्कमा हर-मया जाची बटलव ह खटनन है।। তৰা দাৰ্জণ তব প্ৰীত্যা শশ্বৎকা-ল' প্রধাস্যতি ৷ পৌরব' মছরা-जुना॰ कंत्रियां जिल्ला बर्याः ॥ প্রতিবিশেষু তে পূজাণ মছতীণ তে अमाबिकाः। याषमा शुक्रभक्षमाण विकारित है जुम्बती ।। यानवा यनद्याः (प्रवाः यूनीक्षान्तः यूयूकवः ৷ সম্ভশ্চ যোগিনঃ সিদ্ধা নাগ गन्नर्व ताकमाः ॥ 'यष्टत्रव क्रि-যান্তি কৰে কৰে লযাবধি। ভ-ক্রিযুক্তাশ্চ দম্বা চৈবোপচারাণি ষোডশ। কাম্বশাথোক্ত বিধিনা খ্যানেন স্তবনেন চ।। জিতেন্দ্রি-ষাঃ সংযতাশ্চ ঘটে চ পুস্তকেপি চ ৷ রুদ্বা সুবর্ণগুটিকাণ গন্ধচন্দন চৰ্চিতা ।৷ কৰচ তে এহীয়ান্তি कर्छ वा मिक्टब जूटक्। शठिया-স্তি চ ৰিদ্বা সঃ পূজাকালে চ পূ-जिल्छ ॥ रेज्रुक् भूक्यामान णा (मरी॰ **गर्द**शृक्षिके । खर्श्कन ठक् वंत्र विकृ मरह-

भेताः।। अन्छ काशि श्येकं कृ मौद्धाः ममकाप्रयः। मर्द (प्रवा-क ममरवा नृशाक मानवाहमः॥ ৰভূব পূজিতা নিত্যা সৰ্বলোকৈঃ সরস্বতী। নারদ উবাচ। পূজা-विधान खनन थान क्वर मी ক্ষিত ৷ পুজেশিকুক্ত নৈবেদ্য: भूनाक जनाना निका। वन वन-বিদা শ্ৰেষ্ঠ শ্ৰোতৃ কৌতৃহল মম। বৰ্দ্ধতে সাম্পূত শশ্বৎ কি-मिषः अञ्चित्रसद्धः ।। भीनादायव উবাচ। শৃণু নারদ বক্ষ্যামি কাষ-শাখোক্ত পদ্ধতি ৷ জগমাতুঃ সরস্বত্যাঃ পূজাবিধি সমস্বিতা ।। गोषमा एकंशक्याः विमादछ मिरनिन ह। शूर्वक्रि मःयमः कृषा ভত্তাহ্নি সংষ্ঠঃ শুচিঃ॥ সাত্বা নিত্যক্ৰিৰাং ক্লম্বা ঘটং সংস্থাপ্য **७कि**णः। मृश्रुका (मनवर्ककः रैनरक्यामिछ दत्रव ह।। गरनमञ् मिरनमक विद्भः विक्ः मिरः मि ৰা । সংপূজ্য সংস্কৃতা গেহী ততো হভীক প্রশৃজবেৎ॥ ধ্যা-निन वंकामार्यने धाषावाक् ষটে বুধঃ। খ্যাত্বা পুনঃ বোড-लाभनादत्र भूक्र राष्ट्री । भू (जाभयुक्क टेनटवनाः यन्यद्यदन

নিৰপিত ৷ ৰক্যামি সাংগ্ৰত কিঞ্চিৎ ষথাধীত: ৰখাগ্ৰণ 🗓 ন-वनीख मिन कीत नाजक छिन-मिष्ठुक । हेकू मिक्कूत्रम एक-तर् शक्छण मध्या त्रस्कि भ-क्त्रा ख्रांशानाजााक्छ मकछ । चित्र अक्षामाना गृथ्क छङ्ग-त्यामकः ॥ पृष्ठ देशक्षत् मःकादेव र्विकामक वाक्षरेना वर भाश्-ষচুৰ্বানা পিউক ছতস ক্তুত।। পিউক ইভিকস্যাপি প্রকর্ডা-ফলস্চ। পরমান্ত্রফ সমৃত शिक्षांत्रक मूर्याणमः ॥ नातित्क-লে ভানুদক কেশর মূল দ্বার্ডক । পরুরভাফল চারু শ্রীকল ব-मन्न कन्। कान्द्रमास्व श-क्षेत्र छक्र नूम क्ष्र । नूगिक्ष **एक गूलाक मूलिक एक एक न**ि।। नवीनश्करज्ञकः नथकः जुलद्रः मूरमा भागाक शक्त भूगानि शक्त-शतक ज्या यम्खेक अर्ठो খ্যান প্রসাশ্য প্রতিসুন্ধর । ত-নিবোধ মহাভাগ ভবভঞ্জনকার-**१९१। महत्रकी श्वज्ञादर्गाः मन्त्रि**छाः मूबत्नाङ्द्राः । कांग्रिटस्र अञा-मूर्य भूये श्रीमुक्तिविशा ।। वहिः ভন্ধা-ভ্কাধানা সন্মিতা মুম-

' त्वार्ताः। त्रज्ञगादक्क निर्मान ৰৱভূষণ ভূষিতাঃ সুপৃঞ্জিতাণ म्त्रगटेनर्जन विक् निवाहिष्टिः ॥ बल्म अल्ला ह बन्ता। छ। मूनीख यन्यासटेवर् अव शाषा ह यू-जन गर्क नवा विष्ठकेशः ॥ मन्छ्य क्वरः भृषा अभरमम् धवम् पूर्वि । स्वयाः स्वयः सिकंटक्की रख्याः निका किया भूटन ॥ विमात्रदस **छ वर्षाट्य मर्ट्या॰ शक्त्रीमरन**ा मर्साथयूटका मूलक देविका-कोकत शत्।। (वदा वहनाश-লেশে। ৰা ভেষা সমূল এব ৮। गतवजी र्रजूर्याल्डा विक्रिका वा छ धर हा। नकी मामापिक टेन्हर मट्या ६व-क्वशालनभ भूका ना-वायन एकमः वासीकान सन्भानि विशा अनुस्ति जान्निकीहन न् गारकेरक ह ज्यन्तर । ज्या में देने **क्ट्यगर्विश्वादीका परमे अक्** भाष्ट्रयः भूमा । ज्ञादक हः महमो जुरको बन्ना रमद्रिका अस्य। जा-ভীকাষ জরৎকাক্ষ দলে ক্ষীরো-मगित्रो। विकाशस्त्र परमा प्यद्रो अयान्जाय शीमट ॥ িশিবঃ কণাদমুনযে গোতমায় দ-্

'भि मूना । नृसंभ्य बाळवदान्य ज्या क्जाननाय ह।। त्यवः गा-भिनदम देवन खन्नमाञ्चाय थीमटक। म्हा भाकरायनाय मूख्य वनि-मन्मिता हजूर्वकारमदेवर यक्तः मित्का जरवम् ना । यमि मा। সিৰ্মান্তাপি বৃহস্পতিসমো ভ विष्याका करा मृन् विष्यक्ष य फ्ख॰ विधिनाः भूता । विश्वदश्र**र्थः** विश्वकवः जृत्रदिशक्षयाप्रदा। जृ-**७ क्रवाह। बन्धन् बन्धविनाः ८५%** बक्तकानिवात्रमः। गर्दकः गर्दः क्रमक मर्दिण मर्दश्रिक्छ।। मर्रः चलाक कका जहि विश्वज्ञयः প্রভো। অ্যাত্যাম মন্ত্রাণাণ সমূহ সংস্ত পর ।। ব্রেন্টোচ। **मृ**न् तरम श्रवकामिः कवहः गर्बः কামদ । শ্রুতিসার প্রুতিসূথ প্রাকৃত্তি প্রক্রিক প্রক্রিক প্রকর্ इत्यन भारमारक यह वृमाव-ध्न बद्दनः। त्रारमश्रद्धनः विख्नून। রাকে চ রাসমগুলে ৷৷ অতীবগো-शनीवशः कञ्चवृक्तशदः वदः। ज-শ্রেজাভুত মস্তাগাং সমৃত্রুক স-मिक्ठिं।। यस्या शतमासुकान् तू-জিমাংশ্চ বৃহস্পতিঃ ৷ ভগবান শুক্র' সর্বদৈত্যের পূজি-

का। शहनाकाकावाको करी-ट्या रामिटका वृतिश गायपूटवा यम् देम्बद मञ्जू मर्वशृक्षिकः ॥ क्नाणा भारतः क्यः भानिनः भाक्ष्रीयमः। अवशक्तात्र संस्था मकः काजायमः चयः॥ पृत्रा व्य-সবিভাগক পুরাণান্যখিলানি চ। চকার শীলানাত্ত্বেণ ক্রকাদেপা-ষ্মঃ অৰু ।। শাভাতপশ্চ সহ-র্ত্তো বশিষ্ঠক পরাশরঃ। যদৃত্বা शर्रनाम्श्रकः योक्यवका म्हकान भः॥ सवाग्रमा जतवाज काखी-का स्निम ख्या टेक भीषत्वा বাজলিশ্চ শ্বদ্ধা সর্বপৃঞ্জিতঃ।। क्षक्रमामा विद्धाल भवि द्वव अक्रांगिण्डिः। चरः इन्मन्छ तृष्टी म्हा द्वारमभूतः श्रज्ः॥ नर्वज-चश्रविकान गर्बार्थनाश्रतम् ह । कविष्णम् । नर्वाम् विमिरवाशः थकीर्षकः॥ बिँ हीँ नवरका बाहा नित्रा त्म भाजू मर्बलः। श्री बाइन्द्रकारेव बाहा जान त्व नर्वताककृ ।। श्रु नवस्का चाट्न-তি লোক পাতৃ নিরস্তর: 1, 'ওঁ শ্ৰী ভাৰতো বাহা নেত্ৰ-युषाः मताबङ् । 🕫 द्वीँ वावावि रेना बाहा नामा त्य गर्व:छावछ्

ाद्वी विद्याधिकाञ्चारका बाहा कार्क मनावज् ॥ ७ औं ही ব্ৰাক্ষ্যে বাহেতি দস্তগণক্তি সদ।-ৰত্। औ বিভাকাকরে। বঞ্জো मन कर्भ नवाबज्ञा क ही औ शाकृत्व कीमा॰ ऋतः म औं নদাৰজু। এওঁ বাগৰিপ্তাত্তেবৈয चारा गर्ब॰ जमावकू॥ ७ गर्ब-क्षेक्षिता काहा आजाः म ওঁ সৰ্বজ্ঞিকাবাসি-मायक् । देना चाराविभिना तक्कु ॥ उँ थें ही 🎒 की मतशरें वृश क्रमदेना चाचा । गरूक मञ्जा-्का श्रम किसा मां महावर्ष् ।। के ही कि का करता गरता देनचं-शार गर्वसम्भू । भाँ भाँ कवि-किसाअविकित्य कारा मा॰ वा-कर्म रहकू।। नमविकारेय यारा क बाबदबा नवः नमानक्। ७ शना शनकातिरेमा कार। ना मूखदा श्वकृष वे मर्नेनीजवानित्ये या-देशलादना मनावजू। उँ द्वीँ म-र्क्नुबिडादि यारा कार्यु नमा-बर् । भें ही श्रुष्ठकवीमिरेना লাহাৰো বা॰ সদাবতু। ওঁ গ্ৰন্থ বীজ্যৰণাথৈ ছাহা মাণ সৰ্বতো **২বজু।। ইতি তে ক্থিত বিপ্ৰ**

मर्वनत्वोषविश्रद्रः। देवः विश्व क्य नाम क्वर खन्नक्शिक ॥ পুরা ঞত ধর্মবক্তাৎ পর্বতে গ্র-क्रवामत्त्र। তৰ সেহা ब्रहा था। ए॰ প্রবক্তব্য ন ক্সাচিৎ ॥ শুরু ম-ज्यक्ता विधिव**९ वक्षानका**त हन्म-रेनः। প्रवाग मख्यम् कृत्यो क्वरः शाहरवद मूथीः॥ शक्षमक्करभ-रैनव निष्मं इकवछ छटवंद । यनि স্যাৎ সিদ্ধকবচো বৃহস্পতিসযো **७**त्तर ॥ यहावाची क्वीसक ত্ৰৈলোক্যবিজ্বী ভবেৎ। শক্নো-তি সৰ্ব জেতুক কবচস্য প্ৰসাদ-**७: १। रेमक कात्रभारथाक * कव**े চ কথিত মুনে। স্কোল পুজা विधानक ध्यानक बल्दन छथा।। ইতি ত্ৰদ্ধবৈৰৰ্জে প্ৰক্লভিখণে স त्रश्ठीकवृष्ठः॥ श्री श्रीनातात्रव উবাচ। **সালেবতামাঃ স্ত**হন•: व्ययकाः नर्वकाषमः। महामृनि ৰ্যাক্তৰক্ষো বেন ভূকাৰ তা॰ পু-ता। धक्रणांशक म मूनि र्क वि.मा बजूब है। जना जगान म्यार्खा तिकानक भूगाक ॥ न প্রাপ তপদা मूर्गः लागार्क म्कित्भाष्टतः। ज्काव भूषाः (भारकनं ऋरतान ह महत्र्हः ॥

ग्री क गाठेवामान विष दिलान नीभनः। छेवाठ सन् वारमवी॰ ভক্তা চ স্থৃতিহেতবে ॥ ত নিজা का रीननार्था श्रास्त्रानः इ-কার সং। বুনিং সাদা চ ভূটাব **७किन्याश्चरक्षत्रः।। याख्यका** উবাচ। ক্রপাণ সরু জগমাত র্মা-বেব হততেজ্স । শুরুশাপাৎ नकेन्यृष्टिः विमाशीनयः मूचिष्टः ।। ब्हान पहि गृष्ठि पहि वि म्रा॰ विम्राविदेनवर्टन श्रविश्वंः কবিতা॰ দেহি শক্তিণ শিঘাপ্র-বোধিকাণ। এছকভূ দ্ব শক্তিঞ সৎশিষ্য পুপ্রতিষ্ঠিত। প্রতিভা সৎসভাষাক বিচারক্ষতা ও छा ।। ज्ञा गर्व रेपवामाय मृत्री खूठ पूनः भूनः। स्थासूत ভন্মনি চ করোভি দেবতা পুনঃ।। ত্ৰন্ম বৰণা পরমা জ্যোতীৰণা मनाष्ट्रनी। मर्वविष्णाधित्पवी या তবৈগ বাইণা নয়ো নমঃ।৷ স্বয়া विना क्रग्रं गर्बः मञ्जूतीवगृष्टः भद्र । क्लामाश्विदमवी या छटेमा मद्रखटें जात्या नयः ॥ यया বিনা জগৎ সর্ব মৃক মৃমত্তবৎ-मनाः वागविष्ठाज्देनवी के ज्देमा निष्ण नत्या नयः ॥ श्विष्ठक्त

वरमम् वर्षारखाव निर्मा। वर्गाविष्यती या जिया ठामद्राटिय नत्य। नमः॥ विमर्ग विक माजान् বদ্ধিষ্ঠান মেব চ। তদ্ধিষ্ঠাতৃদে-্বী ৰা ভলৈয় বাইণ্য নমে। নমঃ॥ यस विभाव मंभावाम् मंभां कर्जुः न नकाटा। कानगःशा अ क्रिशा का कटेमा क्रिटेश नत्या नयः ।। व्याक्षा अक्षा वा स्वकी व्या-**थाविश्वेष्ट्राव्या । जुमनिकास**ः क्षा या छटेमा ध्वटेव प्रनत्या नवः ম স্মৃতিশক্তি জ্ঞানশক্তি বুদ্ধি-শক্তি স্বকৃপিণী। প্রতিভা করনা-্ৰশক্তি ৰ্যা চ তদ্যৈ নশে নমঃ॥ সন্থস্মারো ত্রন্ধাণ জ্ঞান প-প্রক্ত যত্র বৈ। কভূব জডবৎ সো-शि मिकाल कर्जू मकमः॥ छमा-জগাম ভগবানাত্মা শ্রীকৃষ্ণ ঈশ্ব-ন্নঃ। উবাচ সতত স্তৌহি বাণী মিছি প্ৰজাপতে।। স চ তুষ্টাৰ न्ना॰ बन्ना ठाळवा शतमान्रनः। চকার ছৎপ্রসাদেন তদা সিদ্ধা-स यूनमः॥ यमाभागसः भञ्जन कान त्यकः वज्ञाता। वज्र मृकः वर माणि मिकाख कर्जू नक्यः ৷৷ তদা খা সচ তুঠাৰ সংৰক্তঃ কশ্যপাক্তবা। তত শ্চকার সিদ্ধা-

ख्रानिर्मनः जुमल्लनः ॥ वानः পুরাণসূত্রক পপ্রচ্ছ বান্মিক यमा। योनीज्ञान न नवात पा स्यव अभवविकाः।। छन्। हकात निकालः चयद्भग्यूनीयद्भाः। मः প্রাণ নির্মাল জ্ঞান ভুনাদ্বধণস नीभक्।। भूताभ्यूकः अन्ता म न्यामः कृष्णक त्वा छनः। घाः मि-त्मः व ह मत्या ह भडवर्षक श्रूकत्त्र ম তদা ছত্তো বরু প্রাপ্য স কবী-জ্ঞা বভূব 🔻। তদা বেদবিভা-গঞ্চ পুরাণঞ্চ করে সঃ।। ভদা মহেন্দ্ৰঃ পঞ্জছ তত্ত্বজ্ঞান পিৰা-পিব॰। কন দা কেব সংচিন্তা खरेंच कान मर्गा विज् ॥ शक्ष क् भवनाञ्चक यटहळ्क वृहत्ना-कि। मिदाः वर्षमञ्जूक म चाः मत्यो ह शुक्रद्र ॥ जना परखा बद्धः थाना पिदोः वर्षमह्मुकः।

भवः॥ अशानिकाक त निया देव विशेषः भूनीश्रदेवः। त्व ह पाः भिन्नः हिन्छा अवर्खत्स मृद्वश्र-विशेष प्रभानत्यः। देवत्वादेखक मृदेवकानि बन्न विकृत्वितानिनिः गूदेवकानि बन्न विकृत्वितानिनिः ॥ स्विन्दिः महम्नागः शक्ष्वस्त भ्रत्यू था। सः (सार्वः कियरः त्छिनि वा स्मिकाटमान मानवः ॥ ইত্যকৃ বাজবদান ভক্তিনহা-श्वक्रातः। धानमात्र निजाशास्त्र। क्रद्राप्त छ मूक्ष्यूक्रभा छेना रकेछ। **डि:सबना मा एडमाम्डोन्स ह ७ । मूनरीतिः ७ त्रज्ञ** देवमध्य क्यामस्। बाखवदा क्रुं वानील्डाब के मन्यक न छर। मूनवीत्सा नरावाची वृ न्भिक्तिरम् अत्वर्धाः महामूर्थन्त मृत्यां वर्ष (वकः वना क्राप्ट । में शिखक (यशवी मूक्बिक ভবেদুৰা। ইভিত্তপ্ৰিকৰ্ত্তে প্ৰঃ ক্তথিওে সময়তাশাখান ৪ আ शायः।। का जिलिता न्यक्नेत थिनीतमा नकंगा न्यूज्यक्रमी **भून्य धूनाम वातिष्ठिः। मनाया** तः लिपमीक भूजस्यतः निर्पष्ठः ৷ যাথে মানি নিতে সংক্ৰ গঞ্মী ना खिनः थिनः। छनाः भूनीह धः कर्मा का जानसार छा ९ नवः ॥ সারস্বত ,ইত্যুপাদানাৎ শ্রিষঃ সরস্বত্যাঃ। তথা চ ব্যাজিঃ। मधी मदस्यो ही जिंदर्ग मण्य-षिভৃতি শোভাস্। উপকরণ কে শরচনা विधामू हे नी तिष्ठि अधि

ला । जन काल मा मार्ग-**पिछारकी नानार्थ अस**नानि श्र-निकार्यएक गावहात्रमः विभन्नी-**ভার্থ্যাহক বাক্রদেবসংখ** তু ज्ञानिकार्थएवन के वार्विक्र गर्वमा नानार्थाना वावशात्रस क्षत्र कान्यामाविधि। छक्रन नक-লমিন্দা ৰিভূতী শুভূকাভিঃ স্ব-চভরনমিতাদী সমিসমা সিতা-ख्या निज्ञकत्रकभटनामाहन्यनी **भूखक्लीः मकल विख्वनिद्धाः** পাতৃ বান্দেবতা নং ৷৷ नातःमाकःशारमः। भागामिः **ভिः পূ**क्षिषा **उपका**रेना नरमा निष्णः मदयरेषा नरमा नमः । विष विषा उपात्र विषाशित ভ্য এব চ বাহা॥ ইতি বন্ধপু-त्रानीत्वन जिः भृकत्यवः। सवनाः मृत्कः। वक्कीवशः त्यावशः मत्रयः তৈয় ন দাপয়েৎ। সরস্বতীং সং-**शृ**कत । यथा म (मर्ता जगवान् ज-ন্ধা লোকপিতামহঃ। ত্বা॰ পরি তাজা শন্তিষ্ঠেত্তথা ভ্ৰ বরপ্রদা ।। राजाः नाजानि गर्दानि नृजा शीञामिककष्य । नः विश्रीन प या प्रिवि ७था प्र गन्न मिह्नयः॥ नची त्र्यंश थड़ा शुक्ति त्रोडी

ভুক্তিঃ প্ৰভা ৰূজি৷ এতাভিঃপাহি তন্তি রক্টাভি শা॰ গরস্তি।। विक मध्यार्त्रागीतः आर्यस् भ रेकि विशामिकवुना को विश লরস্বতীনপ্রাদি। অভিনেম্পাস্ত ·ऋटका मः वाषामिनि छेष्ट्रेन । अन्न-वका मगार्लायः यारेनम्बर्गः क्ल-श्रा भाषा यथा। यह यह वा-শাদিনি: বছিৰলভেভি দশাকরঃ र्ग छथा मिरुक्ता। जूरामधरी मः **भूटि।य-यहामात्रयञ्जनः॥॥॥** व्यमा रहूः। त्वादरम् त्रमनार्ग कर्निक महा बरेन्द्रः क्यूत्रकरक শরু পত্রান্তর্গত পঞ্চরর্গ ব শলা वर्गानिवर्भः क्रमार । जामान्य अ सू वास वानविष्का किनीपू-রেগাৰ্ত বস্ত্রণ কলিত মত্র পূজৰ-र्जू जा॰ दर्नाश्चिका॰ स्मर्राज्ये ।। গৌতদীষে ৷ কৰিকাৰা প্ৰেত कीकः विधिन। विनित्यं एकः। ভঙঃ ঘোডশ কে শরেষু বিলি-শ্বেং বোডশ স্বরান্।। তথাই मनास्था ह वर्गाकैकः मथाविधिन कानि बाडाः शक्ष शक्ष वर्गाः जा र्माज्दकानिजाः ॥ वानि वासाः नाहि राजा न क नीटन अविना-শেং। চত্রসু চতুর্বার দিকু

ये के विविक् है। का। जागा गुजार्थायां में विधाय दिन्न गिक्रमाना के निक्रमानी नीटन । त्रम् यादा है निक्रमानी नीटन । विकारिय नमा। जे सिनाटेय नमः। अं खालाटिय नमा। जे सिनाटेय नमः। विकारिय नमा। जे सिनाटेय नमः। विकारिय नमा। जे सिनाटेय नमः।

मया। ७ ब्रेंका मया। ७ वि-स्मायदेश मनः । यद्या छन्भति खं भवाणनाय संगः। अभवापि नरमास्त्रन भूकरहर। छया ह मात्रमाष्टिनंदक । আধারশক্তি শারভ্য পীঠশক্তান্ত নর্চবেৎ। त्यदा अला अला विमा भी पृष्टि मृष्टि बुक्तवात विस्ताचती ह ग-**ल्लाका जातीमा।** मन मक्रयः । বৰ্ণাজেনাসন সদ্যাৎ মূৰ্ত্তি मृत्वम कंबर्रिश्वा । । एक क्ष यामि नामः। छल्पान नित्रिन क क्ष स्वरम नमः। माराभू हि-তন্দেৎ ওঁ বৃহস্পত্যে ঋষষে ন-मः। यूर्थ विताष् क्रमत्म नयः। হাদি বাগী খবৈঁয় দেবভাবে নমঃ ॥ 🐗 ॥ अब मखनग्रनः। भित्रनि व मनः। खन्ता र्मः नमः व न मः। ठक्ता मं नमः वा

सका नामिक्टवा वी नमः पि नगः। दमरमः जि॰ नगः। निरम বাং নমঃ । ওকে হাং নমঃ । ৩১ ততো সাতৃকারাঃ করাসন্যাসে क्षेत्रा शास्त्रका ज्या ह निवस्त क निदेश ध्वरण मृष्नामा वनसास् खरहिमान्। नामा वर्गान् यक जानि प्राकृत्काकानि कन्नरवर शा 🐠 ॥ ७८७ व्यानः। छक्रन न-কল মিশ্বে বিভূতী শুভূকান্তিঃ ক্ষচভরনমিতাকী প্রাদিসমা বি-ভাজে ৷ নিজকরক্ষতাদ্য**দে** थनी भूखक्षीः मकत विख्वनि देका शाकू वादभदका नः॥ अतः थात्रा मानदेनः मःभूका अध्य পন কৰ্ব্যাৎ। ততঃ পীঠ পূজা কৃষ। কেশরেৰু মধ্যে দিক্ চ.বে-यानि शीर्रमब्द्धः नाश्या भूम-र्गाषावाह्नामि श्रमभूमाक्षि দান পৰ্যান্ত: কৰ্ম বিশ্বাস আবরণ পূজা নৰ্যাৎ। অগ্নিকোনে অ कः थः शः यः ७ । आः स्क्राय नयः १ वार देन भे देख है है है है अर वार धः ने भित्रम सार्। वायुरका-বে উ ট ঠ ড ড ঢ ল উ লিখালে वयहे। जेगात्न वः छः धः मः धः न क क क्वाय ह । गरश ७ न

ক ব জ ম ও নেত্রতাৰ বৌ-वहे। क्षिक् अ य द ल ल व म य न र व क क वार क **ज्याः बद्धाः क्है। ज्वः शरवर्** 'शूर्वा पियू ७ " (याभारिय संबः। ७" नजारेय नमः। ७ विमनारेय नमः । ७ कानाटेय नमः। ७ वृदेशा समः। ७ त्रमृत्वा समः। ७ त्य-**यारेय नमः। ७ अङ्गारेय नमः।** দলাগ্রেষু। বাদ্যাদ্যা মাতরঃ थ्कााः थनवानि नत्मान्तिकाः । क्षि विकामीन् वक्षामी कर् करम् । ততा भूगामि विमर्कः নাস্ত কর্ম সমাপত্থেৎ।।।। অস্য পুরশ্চরণ দশলক্ষপঃ। তথা চ া দশলকং জগেয়ন্ত্ৰণ দশাংশং জ্ব-হ্ৰাততঃ। পুঞ্জীকৈঃ পৰোভ্য-জৈ ভিলৈ স্ত্রিমধুরান্বিতৈ রিভি । 🐞 ।। यञ्जाखन् ।। सन्यादङ्ख-গবতি বদশব্দযুগ ততঃ। বালে-কি বক্সিজাৰান্ত বাগুৱাদ্য সমু-करत्र ॥ चना भृजाद्यस्याभः। थाङःहजाि श्रीवेनागाङ कर्य विश्वायः किमारत्रयु भरधा ह भूरवी-क तथानि भीठभकीः भीठम-न्क नारमः। उठः शृद्वीक अ-याषिनामः रूपा क्राक्रनगटनी

क्षार । जनका । के जन्छ। णा नवश सम् खर्जनीच्या वा-रा। अभविक मधानाच्या वयह । यह कर प्रवामिकाका है । दा-পেৰি কনিষ্ঠান্তা। বৌষট্। বাহা कब्रुवन भृष्ठाच्छा॰ करे। अव॰ स भराषिक्। ७था ह निवद्धा मदनाइ ৰড্ডিঃ গদেঃ সৰ্ব্যাৎ জাতিফু क्षः वण्यकः ॥क्षा व्यवः स्थानः । खुषु। यक् विलाश बानावम्बाः नीजा-खबरखाळ्याः वासा म क्थनः न्याणकनमः विमाक रखामूरेकः। विद्धानाः कमनामः নাং কচনভাং বাজেবভাং সন্মি তা বন্দে বাহিতবপ্রদাণ ত্রিনষ-मां मोजागा गुल्लक्ती ॥ **७**वर शाषा मानदेनः नःश्रृका मधासामाः क्यारा ७०: पृ र्दाक करमा भूकरम् । कि सुम-मदा विटलकः। जना भूद्रभग्द्रव मकेनकक्षाः। छ्या हा स्विकाः भी क्रान्यक रम्बक मनगरीः । मन्त्रान्तः खूर्गाम्टकः हिटेन वाकाशिवश्रेटेकः।। जाद्या नाना भारता तिन्तुः भक्ति छ। दः मत्रवधी । ८७८७। नःमाङ्का मङः ८७१-क वकामनाकतः ॥ ।। जनाः

भूजा अरगायः । आज्यक्रजानि প্ৰোক শীঠমনত বিনাস প্ र्दाक प्रमाणिकातः वर्षाः । **एटा वस्ताका। ए मना दय-**तरका ही नहमा समस्या । के मक है। नम क क्रमाः। खे नमः यः नमः कर्नसाः। दः नमः सः नत्या नामिक्ट्याः हेकाः नत्याः बृत्य। नः नद्या निद्धः। यः नत्या धरका करा कहा जनगारमे। के षान्शाकाः समः। थे छक्ती-च्याः वाहा देखाहि। अव शहरा-षियू। एथा । निवदका मजदर्गान् नाटमध्यकी वाद्धरनाक्यमा। रेखादि॥ ।। एका शानः। नानीः पूर्वनितात्तरताकृतम्यीः ৰপুর ক্লপ্রভা চক্রাকাকিত मखेकाः निक्रविदेशः मःविज्ञी यामद्राद्ध। दीना मक्कन मुधाछा क्यम विमान जूमस्नी मिट्या ক্লাভক্তে বিভ্যিততন্ হংসাধি-बहा अटक । अवः शाका मान देनः मःभूका मध क्षांभनः वर्षा ६ ৷ ভ্ৰতঃ শীঠপুজাং বিধাষ কেশ-दिव् मर्था ह शृद्धां के शीर्वमकीः भीक्रियम्क यटक्र । ७७: भूम क्षांचा जावाहनाति शक्शुणा-

अनि मान भराखः क्या ममाभा **जावत्र गृजाः अधारि । तिया** मक्तित ७ ज्ञान्कृष्टीय वाद्यारेग नमः। वादमः। उ शाहकारेन বাজুটেয়া নমঃ ৷ ভভঃ কেশরেয়ু अग्निटकाटन औ॰ शहराय नमः। रेन स एक थे॰ निद्राम चाहा। वा-यत्वा थे॰ निषादेय वयहै। ज्ञेनात्न थे॰ कवकाष **हैं।** मरशा थे॰ टनक बाय वोवह। निकृः थैः अञ्चाव ফট। ততঃ পূৰাদিপত্তেৰু ওঁ প্ৰ-खादेय नमः **अव**॰ **द्ययादेय व्यन्देखा** শক্তৈ স্ভৈ বাগীশ্বর্যে মত্যে यदेखा। ७७: भवार्ययु वानाा-माः भूजरार । छना ह मिरदा प्तरा प्रक्रिश्टः शृक्षा मञ्जूषा বাজ্বী শুজা। প্ৰাক্তভা ৰাজ্ববী পূজ্যা বামতঃ সর্বদা ওভা 🛈 रेकु। পूर्वपम्मानि अळामाः शृक्तराथ भूगः। क्षेत्रा मिशा শ্ৰুতিঃ শক্তিঃ শৃতি ৰাগীশ্বরী মতিঃ ৷ বস্তি শেচতি সমাখ্যাতা ৰান্ধাদ্যা ভদনভর । তৰ্হি রি-सामीन् वकामीः भ भृक्रायः । ততো ধপাদি বিসৰ্জনান্ত কৰ্ম मगांशरष । जमा श्रामहत्रन দাদশলক্ষজপঃ। তথা চ। জ-

পেৎ স্বাদ্ধলকাণি তৎসহসূ मिठाबुरेकः। नागठम्भकपूरमः ৰ্বা জহুৰাৎ সাধকোত্তনঃ ॥ 🛊 ॥ मखाखतं भावनायाः। वाष्ट्रभ-তে २ मृत्छ ज्रुयः श्रुव श्रु द्रिछि की-र्खरबंद। वांगारमा मन् ताथा-তো রুদ্রসংখাকরে৷ ২পর: ৷ खमा भूकां मिक भू ईवद । कता-क्नामस थे॰ वक्षांजा॰ नमः । বাচম্পতে তৰ্জনীজ্যা॰ স্বাহা। चम्ट मधामाखाः वरहे। ध्रुव ष्यनामिकाजाः है। क्षुः कनि-श्रीजाः करे। এवः समयामियू । छथा চ निरुद्धाः। अर्यामकानि विधिवंद वांशारेमाः भक्षां भः देशः। शानु । जानीना कमटन করৈ র্জপবটী পদাধ্য পৃত্তক विञ्जाना ठक्रटनम् वक्षमूकि। मू-**ट्यम् त्रम**थेखा। जामागीनिः তলোচনা সচভরাক্রান্তা ভব-দ্ভূতবে ভূবাদাগধিদেবতা মূনি-गरेन द्वारमबामानामिन ॥ अवन शाक्षा भूर्ववर भूजामिकः अर्यार १ जना भूत्रकत् (यकाम्भनकः-क्यः। ७४। ह। क्रम्लकः ज-পেৰান্ত্ৰ দশাংশং জহ্যাদ্ঘৃতৈঃ ॥ 🗰 ॥ अञ्चाखद्रः भौत्रमायाः ।

তোষস্থ শৰন বিকোঃ সকেবল **ठ**जून् भः। अधीरनन्यू युका वङ्गि विन्तूमणायूगान् ज्थः। उकामि ত্রীণি বীজানি সন্তিঃ সারস্বতা র্থিনাণ্য তোষণ বকারঃ বিকোঃ भरन भाकातः क्विटलम् चकात्र 'রহিতেন ককারেণ সহিতঃ তেন বাগিতি সিদ্ধণ বাগ্ধব বিত্যৰ্থ: । কেচিত্ত্ লকিতলকণাভযাদের বদন্তি আকারযুক্তো বকার: কে মস্তকে বলতে কেবলো খনুস্বারঃ ভদ্যুক্তেন ককারেণ সহ বর্ততে তেন কা মিতি। তন্ন। নিৰ্চল ক্ষণাষাঃ শক্তিতুলাম্বাৎ। বাক্ বাগ্ডৰ মিতি পৰ্য্যাৰঃ। বস্তুতম্ভ धै॰ रू॰ खा॰। चानभवत्र मृष्कृष्ठा विन्तृनांम विভृषिङ । विन्तृनाम नगांयुकः विद्वितीकः नगुक्तत्वर ।। यक्षेत्रतमनायूकः विष्ठीयः वी-क मुक्दत्र । हस्तिक ममूक्छा वक्रनः रवाज्यविकः॥ व्याप-**শস্বরাক্ত॰ বিন্দৃনাদবিভূষিত**॰। ইতি বিশ্বসার্বচনাৎ বাস্তব-ৰীজ মেবৰ জ্বাস্থ্ৰাদিক পূर्वत् । कतात्र नगात्रेख विक्र**रि**क खिछि बें रिक विरश्यः। छथा ह निरस्ता जनानि कन्नरश्त्राष्ट्री

विकटक कांछि मृथ्येषः। शा-मस। मूक्जिश्राविषाकाः नित्रिम मैनिकनामङ्गा वार्षिः देव ৰ্য্যাখ্যা বৰ্ণাক্ষমালা মণিম্যক-লস পুস্তকঞোদহন্তী। আপী-নোতুক বকোরুহ ভর বিল্স্স-शादनंना महीना वाहा मेहिए हि-রাষ ত্রিভূবন নমিতা পুঙরীকে नियक्षा । এব शाषा भू ईव ९ भू-कां िक क्षेत्रां । जा भूतक-রণ ত্রিলকজপঃ। তথা চা ত্রি-লক প্রজগেমন্ত জুইয়াতদশা শতঃ। পায়নৈ রাজ্য সংসিকৈঃ मन्कृत्व रवादाहरन।। का। जय পারিজাতসরস্বতীনজাঃ। মন্ত্র-দেশপ্ৰকাশিকাৰা। ীৰ চ প্ৰণব सर्ज्ञथा मन्भूष्टिण स्कात मकात् ঔকান্ধ বিন্দুৰ্ভঃ সরস্বতী ডেন্ডা মতিক। অসাপুজা। প্রাতঃক্ত্যা-मि शीर्रमञ्ज विमामा संगापि-न्यान क्या । नित्रनि कश्चक त्व नमः। मृत्य वृष्कृश् इन्स्टम नमः । হাদিঃপারিজাতসরস্বত্যৈ দেব-তাবৈ নৰঃ ৷ ততো মাতৃকোক कताकनगरनी कर्याए। मूर्कि का नथा निक कर्न नामाभूटेंबर জিহ্না বিঙ্গ পায়ুষু একাদশাকর

न्यामः। ততে। द्वाः व्यक्तिष्ठाः नम देणामिना क्याक्रन्यारमे क्र व्याद्याः व्यन्यद्य म्ह क्रिनामूर्डिमः दिणावाद्यः मन्यदः अमारा देण्यका बाध्यः वीक्र मान्यद्यः। जाद्यद्य व्याद्यः

क्रुण मञ्जविद्या नत्रवरेण म पट्याय॰ क्र**जार्ट्स यन्** त्रीतिकः । **अभक्षमाद्धाः जामान्य अन्त म** ক্তিৰধাস স্বাধাক ভূষো ভবতি চ नत्रवि । नगर् । नगर् । नग् त्रव মীশ সংখ্য বৰ্ণঃ সংগ্ৰোক্তো ভজ-মানঃ পারিজাতঃ।। দকিণা মূর্ত্তি শ্ববিঃ প্রোক্তো গাঘত্রীক্তৃশ সন্ধি-ত•। পারিজাতেশরী বাণী দেবতা পরিকীর্তিতা ৷৷ তৃতীয়ক দিতীয খবীজ শক্তী চভারকণা, ফীল ক পরমেশানি সহাসারস্বতপ্রদ ।। यज्मी र्यत्रम' जिम वी टक्ना का-नि विनारमधा एटला आन्। হ'সাৰতা হয় হলিউ হায়েশু জ ন্দাবদাতা ৰাণী সন্দলিততরমুখী भोनिवरक्नूरत्या। विका वी वाग्जनस्रोकनुका मीखर्खा শুভ্ৰাব্ৰহা ভবদভিমতপ্ৰাপ্তবে **जात्रजी मार्थ।। जमा भृकापिक**॰ **त्रृद्दि। देक काम ना क**री देव । श्रूप्त-

শ্চরণত্ত ছাদশলক্ষজপঃ। সিত-शरेषां नीगम्यदेक वी जूरुवाद ৰাদশসহসু মিভি। ইভি তন্ত্ৰ-मातः॥ ।। ।। ।। निर्वित्मवमा **श**र्यायः । क्षकममूख्या २ त्राक्-প্রদাত বন্ধসূতা ৪ ভারতী ৫ বেদাগ্রণীঃ ৬ পয়েফিজাভা ৭ याबीफ जिमाला २ अधिला ३० १ ठळान छगाः। यापूषः। शृ<u>ञ्</u>षः। সর্বরুজাপহস্ব। রুচ্যত্ব। দীপন-ष्या পথ্যত্ব। ধদহকান্তিকরত্ব। वयूषक। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।।।। স। তু দেশভেদে সপ্তনান্নী যথ। । পুৰুরে পিতামহযজ্ঞে আহ্তা সু-প্রভা ১ নৈমিষারণ্যে সত্রধাজি-তি খবিতি রাহ্তা কাঞ্নাকী २ गयरमर्ग भयताक्रयरख्य जा-

विमाना ७ উত্তরকোশनाशा खेमानकम्निस्ट ममादूना मनादमा ४ श्रुष्णविश स्रुष्ण मनादमा ४ श्रुष्णविश स्रुष्ण अश्रदी ६ गमावाद मम-श्रुष्ण अश्रदी ६ गमावाद मम-श्रुष्ण अश्रदी ६ गमावाद मम-श्रुष्ण अश्रदी ६ गमावाद म्यूर श्रुष्ण अश्रदी ६ गमावाद म्यूर अश्रदाम्य विष्ट स्रुप्ण मूर्य-एक मसाम्या विष्टामा १। उत् मस्य प्रदेश स्रुप्ण विष्टामा १। उत् मस्य प्रदेश स्रुप्ण विष्टामा १। उत् वर्ष ७६ विर्ष मस्यादस्य मामा

খাতে। ইতি মহাভারতে শল্য-পত্নীত্ব্য কারণক বথা। নারাবণ উবাচ। সরস্বতী সা বৈদ্বতে স্বয় নারায়ণান্তিকে ৷ গঙ্গাশাপেন কল্যা কল্ছান্তারতে সরিৎ।। পুণ্যদা পুণাজননী পুণাভীর্থ স্ব-किंगी। भूगविक निरंपक्य ह व्हिजिः भूगावजाः मूरन ॥ जशः ষিনা• তপোৰূপা তপদ্যাকরৰ-পিণী। ক্লতপাপেশ্বা দাহাৰ স্বল-मित्रक्रिंभी।। खारन मद्रवृती তোবে मध रेव स्थानरेव जुवि। তেষা হিতিশ্চ বৈঙ্গঠে সুচিরণ হরিসাসদি॥ ভারতে রুতপাপী চ त्रात्रा ज्वावनीनम्। मूहार् সর্বপাপেভ্যো বিক্লুলোকে বদে-চিন।। চাত্র্মান্যা পৌর্বন-मा अक्षाया मिनकृत्य। वा-**जीनार**ण ह अहरव श्रामिन् श्र-श्रिष्टिसिशि ह ॥ ज्यानूत्रदक्त वः ন্নাভিহেলবা শ্ৰদ্ধদাপি বা। সা-नगाः मञ्चल ग्नः देवन्तर्भ म इ-त्र त्रिशा न्रवच्छी मन् एक मान (गक्ष त्या क्लां । महामूर्धाः कः वीक्रफ म खरमाक म्याबाता নিত্য• সরম্বতীতোমে যং স্নাতি. म् अत्यवनाः। न गेर्डवामः सक्राट পুন রেব স মানর: ৷৷ ইত্যেবং ক-থিত কিঞ্ছি ভারতী গুণকীর্ত্তন• া সুধদ পুণাদ সার কি ভূষঃ ८आंजू निक्ति॥ ●11 नात्रम छै-वाह। कथः मद्रश्रेष्ठी (मदी भन्ना-শাংপন ভারতে ৷ কল্যা কল্ছে-देनव वजूव भूगामा मतिए॥ ना-त्रायन खेवाछ। मृभू नात्रम वक्यामि কথা মেতা॰ পুদ্বাতদী॰। বস্যাঃ व्यवनगार्खन नर्बनादेनः अमूहा-তে ।। লন্ধী সরবঁতী গলা তিল্রো ভার্যা হরে রপি। প্রেয়া নমা छ। छिठेछि नडछः रहिनमित्रो ॥ ठकात टेमकना शका विद्या र्भूथिनदीक्यः। मिष्ठा ह मका-मा ह जरूकोक भूनः भूनः ॥ विज् करिंग का कु नित्रीका ह क्य मूरा। क्य ठकात्र छ नकी दूर्नव मद्रक्षिशः वाश्या-নাস তা পদ্ধা সম্বাপা চ সন্মি-छ। क्राशक्रिका हमा बानी न ह भाषा वज्यक्षा क्रांत गना-ভর্জার রক্তাসন রক্তলোচনা। কম্পিতা কোপবেগেন শশ্বৎ প্রস্কুরিতাধরা।। সরস্বত্যবাচ। नर्वव नमठावृक्तिः नस्तर्पुः का-

मधारमण विकामणी। मनाभ বাণী ভা॰ সন্মা• মহম্বলবভী সভী । वृक्षमा मित्रक्रमा ভविषामि न में भगः। अर्जु मिलाक ली के ক্টাকোপপ্রস্কৃরিতাধরা। উবাচ गना ७। रनवी नवाक त्रकरना-हेना॥ गटकावाहा च मूर्म् मन হোগ্রাঞ্চ পদ্মে কিংমে করিবাতি ि वाग्मूका वागिषश्राकी (मवीय॰ कनर्थिया॥ ইত্যেব मुङ्गा मा रमवी बारेगा माश्र ममाविधि। সরিৎস্বৰূপা ভবতু সা ষা ছাঞ্চ শশাপ হ ৷৷ অধোনত্য সা প্রধা-जू मिल रखिव शामिनः। कली ভেষাক পাগ ছ লভিষ্যসি ন সংশ্বঃ।। ইত্যেব বচন জন্ম তা শশাস সরস্বতী। बागामि बही॰ गानिनान॰ विजि ষ্ঠি।। এতশিমন্তরে তত্ত্র ভগ-বানাজগাম হ। চতুতুজ শচতু-किंक भार्य देवक ठेळू देव ।। সরস্বতী করে ধৃত্বা বাস্যামাস वक्नि। दाधशागाम मईछः म-ৰজ্ঞান-পুরাতন-॥ প্রীনারাষণ উবাচ। লব্দি দ্ব কলবা গচ্ছ ধর্ম-४**क गृह• ७८७। ज**रवानिगखना (सार्ती लेना करा। अधिरानि शि

छटे विवदमास्य वृक्षप्रका जियावि। सम्भगाग्रदेगाव भ ঋচুছ্ৰম্য কামিনী।। ভূদ্ধাপশ্চা-क्र बद्भ शत्री छविद्यामि स मण्यसः। देवलाक्ष्मावनी नामाजूनमीछि চ ভারছে।। কলবা চ সরিদ্ভূদা শীয়ু গচ্ছ বরাননে। ভারতে ভারতীশাপাৎ নামা পদাবতী खद्या शक्त यामानि गन्हास् मः **এশন বিশ্বপাবনী। ভারত ভা** ব্ৰতীশাপাৎ পাপদাহায় পাণি-নাং ৷ ভগীরথদ্য তপদা তেন नीका मृष्कतार। नामा जाभी-वशी भृषा ভবিষ্যमि महीखरन ॥ নদশ্লস্য সমুজস্য জ্বাষা ভব ম भाखका। यह कनाःभना छटेमार नाख्यां मृत्यश्रि ॥ ॥ ग শাশাগে ন কল্যা ভারত গচ্ছ ভারতি। কলহ্স্য ফল ভুঙ্ক সপত্নীভ্যা• সহাচ্যুতে ॥ স্বয়ঞ্চ ্ৰক্ষদদন ৰক্ষণ কামিনী ভব। ্গঙ্গাৰ মাতৃ শিবস্থান নত্ত পদ্মৈব তিইছু।। শাস্তা চ ক্রোধরহিতা মন্তক্তা সন্ত্ৰাপিণী। মহাসাধী महाजागा मुनीवा धर्माठातिथी ॥ यमण्य कल्या गर्दा धर्म्यक्षेण्ट श-তিব্ৰতাঃ। শাস্ত্ৰপাং নশীলাক

थिवित्यम् साविष्ः ॥ कित्रा ভাষ্যা ব্রিশালাশ্চ ত্রবো ভূত্যা-क वास्तवाः। अव व विमक्ता-क न हरू के महत्वधानाः ॥ शक् গঙ্গে শিৱস্থানং জন্মস্থানং সর-प्यठी। चन छित्रेष्ट् मागार म्-नीनो कमनान्य ॥ इज्रङ्ग জগভা- নাথে বিব্ৰহাৰত নারদ । चन्रेटक क्रक्नू (प्राः भगावि-লা পরস্থার ।। ভাষ্চ সর্বাঃ স-नात्नाम ज्याराष्ट्र स्वीयतः। কম্পিতাঃ সাঞ্চনেত্রাশ্চ শোকে-ন চ ভবেন চ।। বরস্তুদোচ। विकादः एक ए या माथ मूखाया क्रमार्गाश्वनः। मध्यामिन। गति-ত্যক্তা সভো জীবন্তি কা ব্রিখঃ ৷৷ দেহত্যাগ করিব্যানি বোগেন ভারতে প্রবং। অত্যচ্ছিতো নি-পতন প্রাপ্ত সহতি নিশ্চিত।। গকোবাচ। অহ্ কেনাপরাধেন प्रा छान्छ। जगरशरक। (पर्-ভ্যান্ত করিবলমি নির্দোষায়া বধ অভ ৷৷ নিৰ্দোষা কামিনী ভাগি করোতিৰো জনো ভবে। স বাতি नत्रकः कवः किः एठ गर्दिश्रतगा बा॥ यहानकी क्रवाह। नाथ नवः স্বৰূপ স্তু কোপঃ কথ মহে। তব।

প্রসাদ সরু ভার্যে ছে সদীপ্রস্য ক্ষা বরণ।। ভারত ভারতীশা-পাৎ যাস্যামি কলয় বিভো ক-তিকাৰা স্থিতি স্তত্ৰ কদা দক্ষ্যা-মিতে পদং॥ দাসাক্তি পাপিনঃ পাপে ৰহু জানাৰগাহনাৰ ৷ কেন তেন বিমূক্তাহ ৰাগমিষ্যা-वि ष्र शर ।। कलवा क्लमीक्शा ধর্মধজসূতা মতী। ভুদ্ধা কদ। कियानि ष्थानाष्ठ्य महारा। বৃক্ষৰপা ভবিষ্যামি স্বাধিপ্তাভূ-দেবতা। মামুদ্ধরিষ্যাদি কদা ত মে জহি রূপানিখে।। গঙ্গা সরস্ব-তী শাপাৎ যদি যাস্যতি ভারত । সা কেন মুক্তা পাপাচ্চ কদা ত্বা বা লভিষ্যভি॥ গঙ্গাশাপেন সা বাণী যদি যাস্যতি ভারত 4 কদা শাপাৰিনিমুচ্য লভিষ্যতি পদ তৰ ৷৷ ভা ৰাণী বন্ধসদন शका॰ वा निवयन्त्रितः शक्षः वः দসি হে নাপছৎ ক্ষয়ৰ চ ছেক **इशा इंज्याब्य क्यना काखगान** ध्वा ननाम ह। यदकरेन (वर्कन॰ रूषा करताम ह पूनः भूनः ॥ छ-বাচ পদ্মনাভ স্তা: পদ্মা: কৃষা স वकति। अवकामा अमनारमा ভক্তানুগ্রহকাতরং ৷৷ জ্রীনারাষণ

षवाका माहतिकामि উবাচ। **অবাক্যঞ্জ সুরেশ্বরি ৷ শমতা** চ कतियामि मृन् छ ९ कम स्वय ह য় ভারতী যাতু কলবা সরিজ্ঞ-পা চ ভারত। অর্দাণ্শা এদ-मनन अय॰ **ভिষ্ঠ** मह्गृद्ह ।। जगीद्रायन नीजा मा गना चा-স্যতিভারত। পূত কর্ত্ণ জি-जूरनः चरः छिष्ठेक् मन्गृत्रः ॥ **ভ**ढेबर हस्रायोदनम्ह सोनि॰ প্রাক্সাতি দুর্ল ড॰ ৷ ততঃ স্বভা-বতঃ পৃতাপ্যতিপৃতা ভবিষ্যতি ॥ कला॰मा॰रमन घ॰ शक् छा-রত কমলে ভব। পদ্মাবতী স-ितिफाপा जूनमी वृक्काभिनी N करनः शक्ष महरम् ह गरक बर्स চ মোক্ষণ। যুমাক সরিতাকৈ व बम्गृङ्क्षागिषयाछि॥ ইछि बक्तरेक्टर्ड अङ्गाजिक्ट क शायः॥

সরস্থান্ পু॰ সমুদ্রঃ। ইত্যমরঃ।। নদঃ।। রসিকে ত্রি। ইতি মে-দিনী।।

সরা দ্রী নির্বরঃ। ইভি ভরত-দ্বিকাদকাবঃ॥ প্রসারিণী। ইভি রাজনির্বন্টঃ॥ সরাবঃ পুং শ্রাবঃ। ইভিভরত- विकाशिक विकास

मितः भूग्जी निर्मितः। हेकिएस्य-हस्यः॥

मद्रिका श्री हिन्नुगती। ইভি শব-চক্রিকা।। গমনবর্ত্তী চ।।

मिति की मिति। इंडामद्रः ॥
मूजः इंडि मक्साना॥ पूर्गा।
येथाः किना काद्रश्वभद्राः मद्रशाक मद्रियाः। मन्माकाममाकाना लाटक किनी विछाबाटा। इंडि किनीभूदार्थ १६
क्रिशासः॥

সরিৎপজিঃ পু• সমুজঃ। ইত্য-মরঃ।।

সরিমান্ পুশ সমুজঃ। ইভি কে-চিম্বা

সরিৎস্তঃ পু• ভীম্বঃ। গঙ্গা-পুত্রদ্বাৎ।।

সরিতাশাধঃ পুশ সমুজঃ। অস্য প্রমাণ সরিতাম্বরাশব্দে জঠব্য সরিতাশ্পতিঃ পুশ সমুজঃ। ইতি শব্দরতাবলী।।

সরিতাষরা স্ত্রী গলা। ষশা। দং দেবি দং দেবি সরিতাশ্বের। উভবোঃ সক্ষমে সাদ্বা মুঞ্চামি, দুরিতানি, বৈ ।। ইতিপ্রাবশিক্ষতত্ত্বে গলাসাগ

ANTHADA

अजिबदा जी भका ए देखि हमः ' कक्षः ॥

নরিমাপন পুশ সাজুজ্ঞ। ইভি রাজ-নির্মনীয় এয়া

मित्रभा त्र् गमनगा वाष्ट्र । देजूः गमित्रभाराः

সরিল^ ক্লী :সজিল-। ইত্যমর-টীকাৰাঃ ভরতঃ ধ

সরিষপঃ পু• সর্যপঃ। ইতি ত্রি-কাওলেবঃ।

সরী স্ত্রী, নির্ব্ধরঃ। ইতি ভরত-দ্বিৰূপকোষঃ।৷

मतीमृशः श्रूष्ट मर्गः। ইত্যমরः॥ मकः श्रूष्ट क्रुकः। बक्तमृक्तिः। ইত্য-

मत्रजिकामात्रमूसती ॥

সরুঃ ত্রি সূক্ষঃ। ইতি ভূরিপ্র-যোগঃ।।

সৰ্পঃ জি সঙ্শঃ। স্থানৰ্পঃ ্। ইতি জটাৰুরুই।।

সৰপতা দ্ৰী সমন্ধপদ্ধ তুল্য-তা। সন্ধপশক্ষাহ ও প্ৰত্যবে-নাধা নিষ্পদ্ধা।

महताजन की भषा। ইতি হেম हक्का। महतादत्रजाट जि॥ महताजम की भषा। ইতি হেম-

535:11

मह्याकिमी औं कमनाकवः ॥ मर्गः क्ष् यक्तवः॥ निर्ह्याकः॥ भग्नः। इंडि.सिम्मी । भग्नमः मृहः। ইछि तुज्ञमालाः॥ गरताकी १ बका। इंडिअक রত্নাবলী ত্রিকাওখেবৌ।। मह्तारमबः भूः माद्रमणकी। ইতি শব্দরত্বাবলী ।। गरताथः जिल्लाकाः। स्त्राद्यमगर वर्खमानः। देखि बस्बी हि समा ুস নিক্ষায়র II: मद्राक्रहें की शबन देखि रह म PER: 11 महाकर् की भारा देखित्र याना ॥ महत्राक्रशमनक भू जन्मा है जि (र्गठकाः।। मद्रावदः श्रु जनागविदणयः। **७९१४। १५। क्या क्या** २)को সার: ৩- তড়াগঃ ৪- তড়াকঃ ৫ ভটাকঃ ও সর্ম সর্মী ৮ সরঃ ৯ সরু ১ সরক ১১। ইতি अस्तरकावनी । एकक्नाहि शू ছরিণীশব্দে অফবাং॥ তস্য জ-वाश्चनाः मद्रश्रमस्य प्रस्तेनाः ।। गर्कः पूर् वायुः।। यनः।। श्रकाः পতিঃ। ইতি **স**ংক্ষিপ্তসারোণা मिवृज्धिः ॥

निक्यः॥ व्यथायः॥ मृक्षिः। रेकामतः॥ त्यारः॥ फेल्नारः । इंडि (बिहिनी ॥ धैनुविकः। रेि (रमहस्यः॥ 🐠। मर्गविवत्र-ণ মথা। অব্যাক্ত গুণকোভাৎ মহত স্ত্ৰিকৃতে। ২হন্। ভূত সূ-**चित्रमधानाः मखदः म**र्ग छे চাতে।। ইতি শ্রীভাগবত ।। ন-वशामरर्गा यथा। मर्स्मा नविध স্তম্য প্রাক্তভো বৈক্তভক্ত নঃ। कान, जबा छोन तमा जिनि धः প্রতিসংক্রমঃ॥ আদ্যন্ত মহতঃ मदर्श रावयमा माम्यूनः। वि-**डी**क खुरमा वज पना खान किरपानयः॥ ज्ञमर्ग ख्ञीयञ्च তমাতো তব্য শক্তিমান্। চতুর্থ **केंन्सियः मर्शा यस स्नाम-कि**न यात्राकः ।। देवकान्निका स्मर्वः मर्गः शक्षामा समायः मनः। यक्षे-ख्र- छममः मर्शा यसुदृष्टिक्रछः প্রভাগ।। বড়িমে প্রাক্তাঃ স र्भा देवक्र छानिशिय गृशा बदका-ভাজে। ভগবতো লীলেयः रः त्रित्यथमः॥ मश्चत्या मृथामर्गञ्ज बर्ज्वश्र खबुवाकः यः। वनन्त्र-ভোষ্ধ नठा प्रक्नाता बीक

(या ज्यारी। उरमाजन उनः-व्याया चारुःच्यामा वित्मविषः १ ভিন্নশ্চা মন্টমং সর্গঃ সোন্টাবি-निविद्या यठः॥ अविद्या जूति े छत्रणा शुंग्छ। सम्प्रादिनिनः । গৌ রজো শহিবঃ ক্লকঃ শুকরো गवटका क्रकः॥ विनकाः ननव (म्हरम जित्र क्रुं म्ह मख्म। খরো ২খো খশতরো গৌরঃ শরত শ্চমরী তথা।। এতে চৈ-क्षाकाः कतः मृत् शक्रमथान् नम्ता या मृगाला वृत्का -वार्या माजातः भन नव्यको।। সিন্থ্য কপি গজ্ঞ কুর্মো গোধা क गकतामयः। क्य गृशु पक শেসন ভাস ভলক বহিণা ।। হিণ্স সাম্নস চক্ৰাহ্ম কাকোলু-কাদৰঃ খগাঃ। অৰ্থাক্সোতন্ত नवमः कख दाकवित्याः स्वाः ॥ त्रकाधिकाः कर्मेणता मृःस्थ ह े मूचमानिनः। दिक्छ। खर এ रैक्ट दमवनर्गक मलग्।। देव-কারিকস্ত বং প্রোক্তঃ কৌমার खुख्याच्यकः। तिवमर्ग कार्यः বিবৈ বিবৃধাঃ পিতরো ২পুরাঃ ग मन्नबान्मत्रमः निका राक त কাসি চারগাঃ ভূত প্রেড পি-

भागिक विष्णाशाः किष्णाणाः मर्गा ।। परेनट्ड विष्णाशाः कर्मा एड विश्वम्क क्रुटाः। अवः भतः अवकाषि वश्नः मञ्जूदानि ।।। এवः तकः सूष्टः मुक्ता क्षापि-शास्त्र वृह्यः। मृक्कारमाश्च-मःक्ष व्यक्तिस्यासानमाश्चना।। हैकि । शिकाभवर्ड ७ क्रुट्स ५० व्यक्तासः।।

সগবন্ধঃ পুং মহাকাব্যং। ইতি कृति अरवा भाग । उक्ककन वया। সর্গবন্ধো মহাকাব্য মূচ্যতে ত-ना मकन । जानी नंगक्रिया यञ्जिमित्मत्मा वाशि उम्रूथः ॥ ইতিহাস কথোদ্ভূত মিতরম্বা जनाथायः। ठजूर्वभै यनायतः • छ्यूदब्रीमाख नायक ।। नगता-निव रेमकार्कु ठट्यारकी मय वर्ग दैनः। উन्दर्भन मिनकीषा म-শুপান রভোৎসবৈ:।। বিপ্রল-रिखः विवादिश्क क्यारतामय व-ৰ্শ নৈঃ। মন্ত্ৰ দৃত প্ৰয়াগাজি না-चकाञ्चारिय त्रिनि । धनक्छ সসংশিশু রণভাব নিরন্তরণ। नरेंग तनिविखीरेनः अवात्-टैखः সুসঞ্চিভিঃ।। সর্বত্ত ভিন-বৃত্তাতৈ রূপেত লোকরঞ্জন।

কাব্য ক্লান্তৱস্থাৰি জামতে गमगङ्ख्या देखि मधीया मर्क अर्फान। देखि कतिकश क्रमः ॥ मिनक्कविष्ठः। नक्क ि धन ब्लाकः व देखि मूर्गा-मामः गा मर्खाः भू भागवृष्यः रेष्टानतः भा मर्कतमः। देवि खतकः॥ শীতশালঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী মক্তক: পু॰ নীতশাল:। ইত্য मद्भा भानः। ইতি क्री-ध्यः ॥ সজ্জান্তা ব্ৰী রাখা। ইতি ব্লব্জ মালা া जब्बनः क्षी रेमनागनगरकामः। रेि गक्त बेजावनी ॥ विमर्कन ।। मृष्टिः। इकि मृजधाष्ट्रभाग नार्या ः गर्द्धनियामकः पूर जानः। ইতি ন্নাজনির্দান্তঃ।। नक्तर्गानः भू क्यकः। रेखि जि का अटम्बः ॥ जब्दंत्रमः श्रू॰ भावान्कनिर्वाजः। 'ধুনাইভি ভারা। তৎসর্ব্যায়ঃ। সক্ষেপঃ ২ জারালঃ ৩ সর্বরসঃ ৪ বহুৰূপঃ ৫ ৷ ইত্যুসর: ১ সাল: .

त्रज्ञाः ॥ भावकः ৮ भानमिर्वाः मः व मक्ताः > श्नकः >> भा-ननातः ३२ । देखि तप्रमाना ॥ বিৰূপঃ ১৩। ইতি শব্দরত্বাবলী ा मानरवर्धः ३८ चप्रिव्रमञ्डः ३८ मर्ब्जगिनः ३७। देखि रूपराखाः ।। व्राक्रनिर्वलीक शर्याव ७-ণৌ রালশব্দে ডাইবাৌ 11 শক্তিঃ ত্রী দক্ষিকাকারঃ। ইতি त्रष्ट्रमाना ॥ मिक्किं खी मिक्किंकाकातः। रेणि किंगियतः ॥ সজ্জিকাকারঃ পু• সৰ্জ্জিকায়া नमाः कादः। देखि खद्रछः॥ ়সাচিকার ইতি সাজিনাটি ইতি চ ভাষা। তৎপৰ্যায়ঃ। কাপো-ভঃ ২ সুখবর্জকঃ ৩ সৌবর্জন ৪ রুচক ৫। ইন্ড্যমন্নঃ।। काकातः ७ मिक्किका १ कादः ৮। ইতি তট्टीका॥ अक्टका २ विकिंका 🎾। देखि मझबङ्गा-वनी ॥ भूतवर्क्तकः ३३ । ३७ किंदोधनः॥ मिकि कानः ३२ म-क्किकः ३७ मक्की ४८ मूट्या-क्किकः ३६ म्वर्किकः ३३ म्-बर्की अ मूचवर्काः ३৮। व्यागी श्वताः। अर्हेषः। सहेषः। छ-

ককা কক বাতোদরার্ভিনা-**भिष्का रेडि द्राक्र**निर्वेदेश অপি চ.৷ পাক্যক্ষারো স্বক্ষা রো যাবশুকো ববাগ্রজঃ। স জ্জিকোপি স্তঃ কারঃ কা পোতঃ সুখবর্চক:।। কবিতঃ **শ**ক্তি কাভেদো বিশেষজ্ঞৈঃ সূ वर्किका। यवकारता लकुः त्रिकाः मू मृरका रक्कि मिनः।। निर्डि শূল বাতান শ্লেম শ্বাস গলা-यदाम्। পाञ्चरनी अश्वी धन्मा-नार धीर समामयान्।। তস্মাদ্বিশেষাদ্গুল্ম কারগুণা भूजरू**६।** यूर्वार्कका मन्द्रि कारकाक्षका श्वनरा करेनः।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। मिकिकातः प् मिकिकाकातः। ইভি রাজনির্কটঃ ॥ मक्की जी मक्कि काकादः। ইতি क्राक्रमिर्घकः॥ সক্তঃ পু• বণিক্। ইভি মেদি न्गुभामिटकाटयो ॥ नक्रूं खी विमार। रेखि मिनिनी ॥ जिनातः॥ श्रदः। देखि नजक्राक्षी।। मर्काः 'श्' वर्ष्क्र तमः। ইতি त्रक्रमाना।। चर्जनीय जि ॥

मर्गाः भूर' माभरकमतः। हि त्रज्ञमाना ॥ अधनः । **रे**णिन्नृश-शावन कर्मनाव ॥ पार्यमहात्री सिक्कावितिस्थयः। भूताक्षयः कविक्ञामीश्रा नगद्रशास्त्रन **जग्र (देश रागाम) जन**िका-রিষণক্রতা কেশালাত্বণ ধর্মনাশ-क हकाद्र । वर्षाः । मगद्रः यो প্ৰতিজ্ঞান্ত গুৱেদৰাক্য নিশ্যা **छ। बर्भः ज्याम स्ट्याः दे**व द्व-শান্যক্ষ চকার হ।। অর্ক্ত শ-কানা শিরসো মুগুযিদা ব্যস-ৰবনানা শিবঃ সর্ব • কাৰোজানা তথৈব চা। গা-तरान् मूक्टकमा । ४ शहरान् न्ध्र अस्यातिनः। निःश्वाधाय वय-ট্কারাঃ করে জেন,মহাত্মনা।। শকা ষ্বন কাছোজাঃ পার্দাঃ शङ्कवा खक्शः। क्वालिनश्रं मा-हिषका मार्वा (**अप्टानाः** मटकतः লাঃ।। সর্বে তে:কজিয়া স্তাত ধর্ম স্তেবাণ নিরাক্তভঃ। বশিষ্ঠ-ৰচনাজাজন লগত্রেণ মহাত্মনা ।। रेखि अराष्ट्राज्ञास्य रतिकारा ३६वशायः॥।॥ हिन्तुक्वितिः **ભित्रः। माभ ইতি ভাষা। ७**९-**श्यायः। भृतात्रः** २ जूक्यः ०

जुजनः । जिल्लामः जुजनमः ज व्यागीवियः १ विषंशबः ४ ठळी २ व्यानः ४० महीमृषद् ४४ कछनी ५२ गुरुशार ३७ हक्क अवाः ३८ का कामन्द्र ५० सनी ५५ मनीकन्द्र २१ मीर्थशृष्टेः ५६ मन्मम्बः ५५ वि-लिन्सः २ • छत्रशः २३ शत्रशः २२ 'ভোগী ২৩' জিহাগঃ ২৪ পরনা-मनः २०। देखायतः ॥ विनम्यः २७ इसीनमः २१ चित्रमनः २४ ভেক্তুক্ ২৯ শ্বসনোৎসুকঃ ৩০ कनावतः ७३ कनदतः ७२ कनावा-न् ७७ कनदान् ७८ कनीकद्रः ७६ কণকরঃ ৩৬ সমকোকঃ ৩৭ খ্যা-णः ७৮ मन्स्री ७३ विवासाः 8-(गाकर्नः ४) खेन्नसः ४२ गृहश्-मः ४७ विनवानी ४८ मर्विज् ४८ र्तिः १७१ रेजि भनत्रशावनी ॥ थानाकी ४१ विकित्तः ४६ जन क्रथः ४२ विष्कृति ६- विष्कृतः ६५ ভুজঃ ৫২। ইতি জনাধ্যু ।। অ-त्गादगिक बादगढ़ी बंधा। ज প্রিবেণাস্য তান্ দৃষ্ট্াকেশাঃ শী র্যান্ত বেধসদা হীনাঃ স্থানিরসো **ज्यः मगत्तारम् छठः निद्रः** ॥ नर्भेनारख रखदन् नर्भ। शैमदान-रगः गृणाः। देखि वङ्गितारम

मर्गक्षन नामाशायः है। मे र्गाना मूच्यविषि विषा। मुमंब क्रवाह। शक्षेत्री मिष्ठाः द्राजन नागानाः निनर्वाक्ति। शक्त्राः কিল নাগানা ভৰতীত্যুৎসবো महान्।। वामूकि उक्क टिन्हव कालीरमा मणिख्यकः। अत्राव-তো ধৃতরাকুঃ কর্কেটিক ধনঞ্চ-বৌ।। এতে প্রয়ন্ত্রাভ্রম প্রা-विनाः शावजीविनाः । शक्याः भागवंडीर नागान् कीरतं रव मद्राहै।। एवतः ज्ञेल अवस्थि **जडरः शांगांकिनः। गर्शः नां-**ना यता नाजा परमाना पिरानिः न ।। निर्वामयिक नगरेन नेवान কীরেণ নিঞিতৈঃ। যে সাগৰন্তি दि नागान् छ्का। धका मनकि তাং।। 🐠।। শতানীক উবাচ । মাত্রা শস্তাঃ কথে নাগাঃ কারণ मन्त्रपञ्च देव । कथ् वानमक्त्रन कमा वा मध्यनाम्बन्।। मुम्ह রুবাচ। উচ্চৈঃশ্রবা অশ্বরত্ন শ্বেভো জাতো ংনৃতো ভবং। ত

চাত্রৰীৎ কক্র নাগানা জ্বনী বসা।। অধ্যয় নিদ থেতা সংগণে হস্ত সম্ভব । ক্রমান সচ পশ্যদে বালান্স বৈ থেতা

मूळा हो । विनरणावीछ। गर्ब-त्यरणा स्यवर्त्वा नामा क्रतका म **लाहिन्छ। कथः क्रुं भगारम सम्** বিনভোৱাচ তা॰ স্বসাং ।। क्रवाठ। भरभाक् स्वक्रमस्कर्षे क्रक-वानगमञ्ज्ञ । वित्मवा क्य दिव-নতে ন পশ্যসি থণ জরু।। বিন-তোবাচ। অহ-দাসী ভবিত্রী তে क्रक्क क्रिक्स अमिर्का न हिम्स ৰ্শনতো কদ্ৰু ৰ্মন দাসী ভবিৰাসি ३। अर॰ ८० २ विनमः ऋषा १८७ ক্রোধসমন্বিভে। বিনতাক্ষ্মা চ नगरन कक किंदा महिखनः।। আহ্য পুতান প্রোবাচ বালা खूषा र्याज्यत । छित्रेश विभाव **ब्लि**रग विनजा अयग् किमी ॥ গ্ৰোচু স্তাণ জিয়াবু দিন্তে নাগা माकाः विशृष्ट जू। यथर्ष (मक्रमाः তো হতো ন করিখ্যাম তে বচঃ থা তান্ শশাপ রুষা কক্রঃ পাব-কোবঃ প্রধক্ষাতি। গতে বহুতি-(थ क्रांटन भाष्ट्रता क्रनत्मक्रयः ।। नर्भमळ॰ म कर्छ। देव छूवि अ-देसाः जूमूकदः। ७ जिमन् जत्व ज किया । एः भारत्का यः अभकान्ति ।। এবং শঞ্জা রুবান্দক্তঃ প্রোক্ত बारेमव किशन। মাত্রা শপ্তা

खथा नागाः कर्दवाः नामगणा ॥ बामूकि॰ मूर्श्विङ खादा खन्ना ध्यावाह माखुरम्। मा ७८ हो वा-সুক্তেমভার্য- শৃগু মন্ত্রন- পর- ॥ পারাশ্রপ্তে জাতো জরৎকারু দ্লিতি विकः। ভবিবাতি মহাতে-े का इनिन्कादन उरशामिधिः॥ जित्तीक स्वत्रकांक्र का प्रधः कितामा पिक इकि विक्रान्त । स्तो चार्ड पैक इकि विक्रान्त ।। म जर मज क्षेत्र क्षेत्र के मार्गाना । स्राप्त महरू । खरम॰ मर्थ। ग्रामारखाकारि ।। मूनि बाणि त्रशानि १ १४म् छमा द॰ ত্রিমাণ ভগিনীণ রাজ ্ত্রাণাণ জ-अविमामाणि। कात्रः के पाधत्रयन् ॥ त्रकारताः आम्मोतम्बिष्टाः प्रशं वद-मनाटनो धार्थाटक श्रद्धना , शार्वना किशिदियमिना कि.। ७९ क न्या श्र-नगटकन करीटकः ध्यम वा गटका নঃ।। পিতামহ্নটং শ্রুছা বাসু স্তা किः शिवुगका ह। उथाकद्राल्याम्। থা চোক্তে ৰত্নক পরমান্থিতঃ শ্বিদ্ধা छक्षा शत्रधाः मर्द अश्रवीक्तर क्लरवाहनाः। भूनकां विवा_{वसी} ত্মান মেনিরে ভূজগোন্তমা:।।_{। ত}ে তক্ষ মন্ত্ৰণ মহাবাহো তব পিত্ৰা_{ইয়ঃ}, প্ৰবৰ্ষিত ৷ ঋষিগ্রিঃ মহিতে-

(मर नर्गात्कर मुक्ता (था-क्र दिक्ना पूर्व क्रमभूखना शी-মতঃ বিশাণ তল্য ভবিজা দা-গানা ভবকারক া তলাৎ কা-লান্তরাজাজন্ সাজে বর্ষশতে গতে। তৎ সক্ত ভবিতা যোগ नागानाः क्यकात्रकः॥ यागानाः शर्म मतिका मन्मभूका विरंवास-नाः। काष्टितःचा महाद्राक नि গতিষাস্তাহৰিশে ।। আপ্লবে তু নিৰ্বশানা ছোৱে ক্লোডাগিসাগ রে। আন্তাক স্তত্র ভবিতা ভে-चा॰ स्मी वैद्धिनागदा। खुषा म-ठावि बाजान मृषिक खननखतः । निवर्छिष्माि छाषा ११ नागा-না মোহন পর্বা প্রমাণ্ডক ভবিতা বন্ধা শ্ৰোবাচ লোহি **जन्॥ जन्मामिक महाका**एश श-क्यी निवक नवा ।। नागामा मा-নন্দকরী দক্তা বৈ জন্মণা প্রা। রন্ধা তু ভোজন পূর্বণ রান্ধণ नाम कामछः।।ःविमुखाःनाभाः প্রীযন্তা বে কেচিৎ পৃথিবীতলে ৷বে চ হেলি সরীচিত্রা বে হস্তরী क्क निवि शिष्ठाः॥ य मनीयू व-रानागा (य मन्यक्षिणामिनः । ৰে চ বাপী ভডাগেৰু ভেষু সৰ্বেষু

বৈ নমঃ। নাগান্ বিপ্রাণক সংপূজা বিস্জাত ষ্ণার্থতঃ। ততঃ

ৎ সহভাত্যে র্মরাধিপট। প্রাধ্যা মধুর মন্দ্রীয়াৎ
দ্বিতীয়া ভূজা কাষ্তঃ। এবং নি-

॥ मृट्ठा नागभूतः याछि शृक्षामा-त्ना रक्षद्वागटेनः। विमानवत्र নাৰতো রমতে কালমীপিত ম ইহ চাগত্য রাজাসৌ অবুতানা বরো ভবেৎ। সর্বরত্মসমূহঃ স্যাৎ বাহনাত্যশ্চ জাৰতে॥ প-क्ष्यमग्रामी बाजा बागदा बा পরে ভবেৎ। আবি ব্যাধি বি-নিশৃক্তঃ পত্নী পুক্ত সহাষ্কান্।। তন্মাৎ পূজ্যাশ্রমাণাঞ্চ ঘৃত পা-यम श्रह्माताः। 🛊। भठानीक উ-বাচ। দশস্তি ষ নর বিপ্র নাগাঃ ক্রোধসমন্বিতাঃ। ভবেৎ কি ভ-मा पर्यमा विख्वां थववीहि म श मुमञ्ज क्रवाह। मन्छ्री छङ्गा ह क्रिका ह तका शीका ह मिकना। नभारमन जू वक्जामि वशा देव বৰ্তঃ শৃতাঃ।। শুক্লা কু বাৰ্দী। रखरा तका जू कविया मृष्ठा। বৈশ্যা তু পীতিকা জ্ঞেষা ক্লফা मृजा जूक्यारा ।। ।। पाठः नदः

क्षरकाति मन्द्रीनाः विरामकनः। ক্ষুণাৰ বিক নান্তি দিতা নেব कुक्दरा प्रक्रिन ति माना मा विक मर्गमा छिडेछ। मर्ख् **क्**रिमाव गर्भमा विष• शक्क्षि य-खद्याः मखकाकमनी गाठि करका माजीबू ठिश्रेकि। माजी-জো গচ্চতে দংকুে বিৰণ তত্ৰ প্ৰ-वर्त्तरकश जब नर्दः कथियामि ব্ৰাৰদন্পূৰ্ণাঃ অউভিঃ কার-হৈ। সংশা দশতে নাত্র সংশবঃ ॥ ।। जाकारका मगठ পूर्व॰ ৰিতীৰ পূৰ্ববৈদ্নিণ তৃতীৰ হশতে ভীত শতুর্ণ মদদর্পিতঃ ।। शक्षमञ्जूवाविकः बर्श्वत्कर्णः वि-বোৰণঃ। সপ্তম পুত্ৰব্ৰকাৰ্থ अकेन कामराजिकिण।। यस म-র্পো দশিদ্বা ভূ উদর পরিবর্ত্ত-त्वर। वन्त्रभाक्षि मंखु। जा-काउ॰ ७ विनिर्मालन्य ॥ समा मदर्गन मखेमा शखीतः मृगारा ज्ञाः दिवद्रमर्कः विकानीयाष व्यानात्रका वट्टा यथा ॥ अकम-की शरह बना जनाक न है कु शिक्षा किएक विकासीकार बर्धारात अलागिकि॥ यमा म পেণ কউসা রেখা দন্তসা জাম-

(७। मनवर्ष-विकामीवाद क्या-भना वटा क्या ।। एवं हे मन्छ्रा अर क क्या कर्षांति है यह कि छ । मूपारिके विकासीयां स्टबा-ৰাচ প্ৰজাশতিঃ ধা ৰে দংকু বস্যাদৃশ্যেতে কচিডাধির সংস্-टन । विस्थानन विकानीयामण-ন্ত নাত্রসংশবঃ । অপতারকণা-र्थाय जानीयामात जन्मयः। यख् কাকপদাকার অভিনিত্ত বিছি-ডিত।। 'মহানাগ'ইতি প্রোক্তঃ कालक्के विनिर्विद्या के ग बिविश मरोकारण्ड गर्मण भर्नु-माशकः। मृद्धः मक्षाः कू भीउक मरके किन कर्मन है। वस मर्गा দশিব। জুপিবতে তু বিচক্ষণঃ। मक्ष् ज् भीक विटेकके कमाशमा ৰচো কথা। বিষভাগৌ তু সৰ্পদ্য विजाग खब म'क्रास्था छमत्र मन्दरम्ब अकृष्ट छ विभिन्न-শেখা ছর্দ্দিত বিষয়েশন নি विना गर्ना छटवय। जमाश-ন্চাগি বিজেষ শচ্তুৰ্ম ক্ৰাভি গী-ভিতহা জীকাডকো ভবেৎ কি-किर मान्तरो विष्यागनः। णा-র্তালেখা কথা ভরণী হুতিকাসু किल्यकः।। दिलाश जियु शृकी गू

্ মূলা হাতি শতাত্মকে। সর্পদন্তা ন জীবন্তি বিষশ্পীতঞ্চ ধৈ স্বথা ॥ भूगाभादा भाषात्म छ ७६-বৃক্তে ভাষের চণান জীবন্তি নরা-দ্টা নক্ষৰে ভিশিস্পুত্যা হ-াতো দৃশ্ব স্ততঃ ওক্ষরান্তরঃ প-্রিকীর্তিভঃ ইতি ভবিষ্যপুরাণে শতসাহসূত্রি সংহিতায়া পঞ্ मीकरत्रा। 🖝 ॥ कमान छेवाह । **ज्ञानं अवक्रा**ति कानम्बर् मा वक्षा । मृब् भीवम व्यक्त वामृत्ना ভरू नद्रशा जिला-**छ**द्या शिक्षण्य हक्जीक न श-শ্যতি। ফ্লাঞ্চ দশ্বসন্থাশ পক্ क्षमुकत्वाभनः ॥ देववर्गः टेठव म-छाना॰ भगारमा खबिछ वर्गछः। गर्ददस्य देनथिका भूतीतमा ह (छमन-।। छमञ्जूक कृष्टि और छक्षृष्कि द्वायाम्यः। प्रश्टल द्व-भटक टेक्टर अभटक हे मूरु ध्रूकः ॥ শত্তেণ ছিদ্যমানহ্য क्रशिद्र म श्र-বৰ্ত্তে। দঙ্গেন তাজ্যমানস্য দ-ওরাজী ন জাষতে দেশে কাক-शरम मूनील यमक्का प्रकार ঘন॰ উচ্ছন ক্ষরাঙ্গ সেক ব रुन कृष्ट्रीनितार्था छत्यः। हिका याग गलशहम्ह मुमहान्

यो पृष्टुठो मृणाटक मन्द्रान-धार-मिं नाजिनिम्म स्ट कानम्से विष्टा परम्यगापरमाथः थ-रिनाठ दिनिक मधनान्या मूमी-न अस्तरमा भावस्थाः नुवि ह क्रिक गाम्यात्रक करबर्ग प्र-জোঠাভ্যা-বিৰোগো ভূমতি চ হদয• সমিরোধশ্চ তীত্তো দিব্যা-ना त्यव मन्भव्या विभूजमत्या विकि ७ कावमये।। मटेख र्फ স্তান্ স্পৃশতি বহুশো দৃষ্টি রাষা-निश्ना चुरना म कुः नुविक क्रि-রু কেকর চকুরেক। প্রত্যাদি-**ফঃ শ্বসিভি সভক্ত সানুনাস্ক** ভাবেৎ বদ্ধৰুতে সকল গদিত-কালদক্ত ত মাহং॥ বেশতে বে-দনা তীব্ৰা রক্তনেত্রক কাৰতে। जीवाङ्कण नानाङ्कि कामप-के विनिर्कित्यः॥ वर्गत्व निन লে বাপি আত্মন্তাষা ন পশ্যতি । সন্দরন্দি তথা দীপ তেজো-

• नियाकत्र ।। तिश्रात्र द्व-मनाञ्च त्रक्रत्नज्ञ कामण्डः म याञ्चि नियमः क्षव्य कामण्डेः विनिर्मित्मेष्य ॥ व्यव्यक्षाकः नय-गाक क्रकशत्क ठजूर्मनीः। नाग-शक्षमीष्रकामाः क्षीविच्या ह सः भवः॥ कार्कात्स्रवा मद्या छत्रभी कृष्टिकाम् वित्मवर्धः। विनाधाः क्रिम् भूषाम् मृता प्राठि भणाप्तः क्रिशः निर्माणाः व क्रीयक्षित्रिकः शीक्षः देव स्वया । भूगाभादः भागादन ह स्ववृद्धः स्टब्स ह।।

ঞ্জিল•ৰুতে। অফ্টোন্তর• মর্গাশত• প্রারিনা সমুদাহত ৷৷ তেবা মধ্যে জু মর্মানিদশ ছে চাপি কী ৰ্ভিতে। শধ্যে ৰেত্ৰে ব্ৰুবো শ্বধ্যে बिख्डा॰ वृष्णश्चरत् ॥ कटक क **एक इ**पि यथा छानूक ठिवूक **भटत** । अत्रुक्तानम मटर्मम् नरहः भ-(जन्य) रुष्टा। य कीविष्ठ नद्रा **्लारक** कालमचे विनिर्मित्नथः १७। अन् इंडिज्य वन मान्यः - দম্ভি প্রোক্ত্যান জীবন্তি হত্যা शक्ता अयार यमि अविकि विदा ভন্য সংখ্যাপ্তকালঃ ৷৷ ভৰতি চ समिन्नुष्ठ উত্তমস্যাধমো বা यपि ভবতি চ দৃত উত্তমে। বাধমস্য। श्वादमी मर्फना नाम यनि वम्छि क हिष्कि छम्। १ भना ६ वर्गा छ॰ दर्भ (क्रमा अनि जदकि मनः था-क्षकाकमा मुख्या प्रचा या मध ৰজে ভ্ৰতি চ মুগৰা পাশহন্ত

ভণা বা বক্ত বন্ত্ৰণ ক্লফ অথ শিরবিগত একবন্ত্রশ্চ দুভঃ 1 देखनाकाकम्ह छब्द यनि एति-তগতি মুক্তকেশশ্চ বাতি য়ং স্ব-ব্যাৎ ৰোমপঞ্জ কর চরণবুগৈঃ थाश्वकावना मृद्धः।। ।।। नारगा-দৰ প্ৰবন্ধামি ইশানেন তু ভা-রিত। বেদাগাতু পুরা সৃষ্টা এ रा नाशाःखुदनक्षमः ॥ जनखः ভাক্ষর নিদ্যাৎ লোক বিদ্যাত্ত্ বাৰুকিং। তককং ভূমিপুত্ৰয় कटकं छिक तूब विमूर्श थवा वृश्-স্পৃতি বিদ্যামহাপ্রম্ম ভার্যব **৷ সলিকঃ শম্বাগালন্চ হাবেভৌ** जू मरियम्बद्धाः शृक्षभामः मञ्च गांत्वा विशेषः अनिरकामा ह। म्बिकारम यदनी मिटकी मिनता-ত্ৰী তদৈৰ চা। তত্তক লোৰে। চ नशास्त्र उत्तरमञ्जनमानू छ । প্রাণঃ প্রাগক্তমে ভালে দিবাস-माविर्शाख्या अश्म जूक्ष ज রাজন্ পশি সৃত্যু ওজতাধঃ। **অধোগদা ভবেৎ সর্গো** নির্বিযো নাত্র সংশবঃ।। 🐠।। শতানীক উ-বাচ ৷ নাগদৰ্কঃ পিতা বস্য ভ্ৰাতা বা দুহিতাপি বা। মাতা পুলো ২৭ বা ভার্য্যা কি॰ কর্ত্তব্যু॰ বদস্ব-

देत्।। স্বোক্ষাম তথ্য বিপ্লেক্স দা-मः ब्रष्ट बृत्शाचिकः। ब्राह् स्य वि जनार्म् व रवन छटेष करवामारः॥ मुगब कवाह। छेरशासा शक्मी वाजन् मागामाः श्रुकिवर्षिमी । ভট্ডক মেক রাজেল বিধান শূণু ভারত।। মাসি ভাতপদে বা তু শুক্লপক্ষে মহীপতে। সাতু পু-ণ্য মহাপ্রোক্তা গ্রাহ্যাপি চ ম शैপতে।। क्विया बामन मदर्क পঞ্চন্যা ভরতর্বভ। চতুর্থ্যা মে কভক্তৰ তস্যা নক্ত প্ৰকীৰ্তি-ত ।। ভূরি চন্দ্রৰণ নাগ মথ বা कंगदि । क्या माझमय मानि व्यथ वा मृथवः नृश ॥ शक्षमाः मक्टरमञ्जा नागः शक्कनः मृ প। করবীরেঃ শহপত্রে জাতি-भूरेणभ्य मुंबर ॥ छशा गन्न था-ध्रिनिक भूकाः भन्ना मूखमः। वामन रकाक्टर भन्छ। युक পাৰস মোদুকৈং ৷৷ অৰম্ভ বা-্ সুকি শ**ন্ধ পদ্ধ কৰল মে**ব চ.ি ड्या करकारिक नाग नाग मा-শ্বতর নৃপ্যা ধৃতরান্ত্র শক্ষণা-न कालिय उक्क उथा। भिन ্লঞ্চ তথা নাগ্ৰ শাসি শাসি চ কীর্ত্তিত ৷৷ সংবর্তান্তে পার্বণ

गागराजान्त्र (ভাজন । ইভি-शामितिक नागः रेगितित्कन क्रान्डः न्ग ॥ जभाष्क्रमी अनाज्या राहकमा महीभरछ। এर পाরণ-क वानि विशिः ध्यारका वृदेध न् १। ७व भिवा क्र टेम्प्य भिज মোকাৰ ভারত। শুভাগিকেব॰ বৈধী চ পঞ্মী ভন্নতর্বভা৷ সূবর্ণ ভারনিশার নাগ দদা তথা চ গাং। ব্যাপ্তব্য সক্ষশার্দ্ধুল পিতৃ-রানৃণ্য মাপুষাৎ ৷৷ তব পিত্রা ক্লত স্ত্রেব॰ পঞ্জ্যোপাসন॰ নৃপ। উৎসৃজ্য নাগতা বীর তব পূর্ব-পিতামহঃ।। পুষ্পেতর সদো গদ্বা छथा भूष्णमतमा नृषाः मूनामीतः मरमा गद्या छथा छत्र मरमा गरुः॥ ভূপসদ স্ততো গদ্ধা কঞ্চজস্য :স-দে। গতঃ। অন্যেপি যে করিব্যস্তি रेम वं मन्ख्य ॥ मखेका মোকতে তেষা শুভ স্থান নবা-প্যাতি। য শ্চেদ শৃণ্যানিত্য मतः अक्षाममन्त्रिः ॥ नत्न छम् ন নাগেভ্যো ভষণ ভবতি পত্ৰ-**हि**ष्.। देखि खिवराश्रवात् भक्ष-गीकरत्र।। ।। भठानीक उर्वाह । সৰ্পাণা কতিৰপাৰি কে বৰ্ণাঃ কিঞ্চ লক্ষণ ৷ কা জাতিয়া জবে-

त्वरा दिन त्याचि प्रत्म वा ॥ । ज् व्यवकानि अनुवत्व ॥ वाथ-मुगर क्रवाछ। 'अब ए विद्या'न बानः कनाशना वर्षाचनः। वया-भीतागाज्यात्म भृतृ भूवं हिना **চলে।। र**णित्रिरहांख मानीन॰ কশ্যপন্ত হিমাচলে। প্রথম্য শি-র্শা ভক্তা গৌতমো বাক্য মত্র বীৎ৷ সৰ্পাণা কতিৰূপাণি কি किइ किश्र लक्न । क्रमः छथा वर्गान् आहि मर्बः श জাপতে।। কথ-বা জাষতে সর্পঃ कथः मूरकषियः अत्ना। विषरव গাঃ কতি প্রোক্তাঃ কত্যেব বিষ नाष्ठिकाः ॥ मःखुः क्छि विशाः প্রোক্তাঃ কি•প্রমাণ• বিষাগমে। कना जू गृङ्गीरा गर्ड कथ वह थमूरा ।। कीमृभी खी भूमा॰ टैन्ठव कीषृत्रक नशुः मकः। किः नाम मनन रेठत ७७९ कथ्य मू-ৰত।। তস্য তত্বচন প্ৰান্থা কশ্য-পঃ প্রত্যভাষত। শৃণু গৌতমুত-**ट्विन नर्शाणा निरु लक्क् ११क्शा** मा मार्गाट ७था दिला छे अभागा छि ভূজসমাঃ। ততো নাগো নাগি नी ह रेमधून मध्यभाष ॥ हजू রো বার্ষিকান্ মাসান নাগী গর্ত্ত মধারবৎ। ততঃ কার্ত্তিকমাসে

·केमिक विदेखन विभए वि বি-শতী। ভা মেৰ ভক্ষেৎ সাতৃ जाटेगक वृगवा छाटज्या मूव-ৰ্ণাৰ্ক বৰ্ণনিভাৎ পুমান্ সজাধ-**७ २७का९। छात्नव था**न्छ ষণী অহোরাত্রাণি বিংশতি ॥

ব সন্ধিভাৎ। তত্মাদৃৎপাদ্যতে जी देव व्यक्षाम्भगत्य ॥ मि-রীষপুষ্পবর্ণাভাদগুকাৎ স্যান্ন-পু সক। ততো ভিমন্তি চাণ্ডানি ষ্ণাদেন তু গৌতম॥ তত স্তে প্রীতি সংবন্ধাৎ ক্ষেহণ বয়ন্তি বা লকাঃ। ততো ২সৌ সপ্তরাত্ত্রেণ ক্ৰেকা ভবতি বন্ধতঃ।। 🛊 ।। আযুঃ প্ৰমাণ সৰ্পাণা শত বিংশোত-র॰ শ্বৃত॰। মৃত্যু শ্চাকবিধো জ্ঞে-यः भृश्याज स्थाजन्य।। समृताष ख्याः विजानाम्मनाटेकव व-- রাহাভৃশ্চিকাত্তথা।। এতেবা यि भूटां औरविष्टभाखतः **मञ**ा मखारह जू छछः भूर्व म॰-कुंगि विद्राप्त ।। विवन्गाग-मनः छा विरक्षभक भूनःभूनः। এব' জাঘা তু তত্ত্বেন বিষকৰ্ম

ममाद्रराष्ट्रशा ककिन्मजिद्राराज विक मध्याम् कावटक । नाथीः भार्यम्याव**डी वालमर्गन्न** जिहा-তে।। পঞ্চবিশ্বতিক্লাক্তৰ সদ্য थानरदा **७८**वश बन्नामान्सः তমাত্ৰস্ত **কশ্বন বৈ প্ৰমূ**ঞ্তি ।। **शामानाकाशि विटब्ह्या एक मटल** ৰে চ বিশ্শতী। মোলোম মদৃশাঃ পাদাঃ .প্রবিশন্তি ক্রমন্তি চ ॥ मधीना॰ जामा विरक्षय॰ एव मरछ বি॰শভী তথা। পা॰সুল্য শচাপি विरक्षमा **(ष् गट**ण विश्मणि स्था ॥ जकानजाना त्य मर्गा निर्दिया ন্তে প্রকীর্ত্তিতাঃ। পঞ্চসপ্ততি ৰৰ্যাণি আৰু ভেষা**ং প্ৰকীৰ্ভিত** ।। त्रक शैठ एक मजा जानीना गन्तदिशिनः। अरङ ज्वजायूटकाः জেবা **অল্লাহারাশ্য ভীরবং** ॥ এক্থান্য ভবেৰজু-ৰে জিৰে চ একীর্ভিতে। প্রথমা ক্রম দৈবজা विकीया दिक्टेमदका ११ क्कीया क्रजटेमवङा। ठङ्शी यमरेमवङ्गा। शैना अमानकः मा.जू नामरनकः ন্যাঞ্জিতা।। নাস্যা॰ মন্ত্রাঃ প্র যোক্তব্যা নৌষধ নৈব ভেষজ । देवताः भद्राः मूर्या याछि मृजू ন্তদ্যা বিলেখনাৎ।। চিকিৎসা

न तूरेश कार्या छम्छ छमा औ विछ-। मकत्री-यामिकी विम्यार्थ क्वानीक विमानिकी कानद्रा-बी जंदन्थ बीनि हजूदा यममृ-मकत्रीभञ्जकः सिमार ভিকা ॥ क्त्रानी काकशामिका। एकात्रा-क्रिः कामत्रावी रागा कृभाक्र-তিঃ সৃতা।। মকরী বাতুলা জ্ঞে-বা করালী পৈত্তিকী স্মৃতা। ক-কাত্মিকা কালরাত্রী সমদূতী সা মিপাতিকী।। শুক্লা ভূ সকরী জেবা করালী রক্তসমিভা। কা-লক্নাত্রী ভবেৎ পীতা রুক্ষা চ ষ্ ममृष्टिका ॥ देखि खिवग्रभूतारन-**११** भीकरत्र ॥ 🛊 ॥ कभाग खेवा-ठ। गविया म॰कुत्या र्मात्था यममृ-**छै। जू रहस्डरवर । न हिकिर** मा ৰুবৈঃ কাৰ্য্যা ত গতাৰু বিনির্দি-ल्या अर्त्नार्क मिरानात्वी **এरेकक॰ जूक्षरज जरिः। अक**-স্য চ সমানক বিতীয় বোড**ণ उरी ।। नारभामरम समूमारकी** रुखा विस्ता विनात्रिजः। काल-मर्छ विकानी साथ कथा भाग व-**हा क्या १। क्यांट्य भटट विन्**र र्वामाध्यमिलाक्छ । ज्यादः সুবতে দংস্ট্রা বিষণ সর্গদ্য দারু:

बा। बोनामरा जू मन्त्रूर्व पाः **८र मध्कमुट्ड** विषणा सावय मण् ক্ৰাময়েদ্বাহণ সঞ্চিত বা প্ৰসা-त्रत्यः।। अञ्चन क्षमाद्वः विषः গচ্ছতি মন্তকে। রেধতে বিষ-বেগস্ত শতশো ২থ সহসূপঃ ॥ বৰ্দ্ধতে রক্ত মাসাদ্য ততে৷ বাতে শিখী মধা। তৈলবিন্দু व्यक्ति প্ৰাণ্য ৰথা ৰেগেন ৰন্ধতে ম শিখণ্ডী আশ্রয়ণ প্রাপ্য মারুতেন সমীরিতঃ। তত স্তালাশত প্রা-প্য ছচাস্থান বিচেটিত।। ছচা-यू विश्वनः विमारक्शनिरञ्जू ठजू-র্ভণ । পিত্তে তু ত্রিগুণ নাতি শ্বেষে ৰৈ ৰোডশ ভবেৎ.৷৷ ৰা-रयो जि॰ नम् ७ वटक ब मरक विके গুণ তথা। প্রাণে চৈকার্যবী ভূতে সৰ্বস্থোতাদিরোধৰেৎ ॥ তেন রুখারামেন যাতি সাধ্য স माधाला । ততো १ स्मी मिस्ट जब निशामाक्। बनकिंठः ॥ নিস্কান্তে তু ততো 🚉 ব ভূতে 🖣 क्ष मागरक। ठानि_{गार} ठानि गस्ट् जि यमा यमा यथानय ।। श्री ব্যাপ তথা তেজো বাষু রাকাশ মের চ। ইতোষা মেব সংঘাতঃ শরীর মভিধীষতে॥ পৃথিবী পৃ

থিবীণ ৰাতি আগ স্তোষেষু জীয়-তে। তেজো গচ্ছতি চাদিতা। ৰাৰুতো যাকুত ব্ৰজেৎ ।। জা-কাশবৈশ্ব আকাশে সহ ভেটেনৰ গছতি। স্থান তে প্রপদান্তে **श्राप्यत्रं विरमाजिजाः।।** न जी-বেদাগতঃ কশ্চিদিহ জন্মনি সূত্র-ত। রিবার্মণ ন উপেক্ষেত স্বরিত। ভ চিকিৎসমেৎ।। 🗰।। এক মস্তি विष क्वास्क विजीयकाशशाना-एक। यथा छवा विषय्भव स्रावतन्त्र ভবৈৰ চ।। প্ৰথমে নিষ্বেগে তু त्रामर्थः श्रकाषट्यः। विजीत्य বিষবেশে তু স্বেদো গাত্রেষু জা-ষতে।। ভৃতীবে বিষবেগে তু কম্মো গাত্তেৰু জাৰতে। চতুৰ্থে क्सिद्यदश कू त्यांबा छत्र निदर्श ४-क्र । त्रक्र वियत्वरण जू शिका-शास्त्रम् स्नायरक। यस्त्रे ज् वियदन इक्संबर्खा अ

श्रदम वियदम्य जू श्राह्मात्का वि-श्रम्हाद्धः। मुख्याज्यम् द्धर्ष देवनद्धरमन जाविकाः॥ ॥ प हंस्रादम विदयं श्राह्मात्म विभागात्व प्रमृष् । स्मानि जिमिन्नामस्य मञ्द्रक मूर्ण्यः॥ এजानि यमा हिन्नामि जमा प्रह्माञ्च विस्। जन

স্যাগদ° প্ৰবৃষ্যামি ষেন সম্প मारक मूथे।। अर्कमूल मेशामार्भ প্রিবন্ধু তগর•তথা। এতদালো-ডা দাতব্য ততঃ সম্পদাতে দু-খ ।। তত স্তন্মিন্ ক্তে বিপ্ৰা न निवर्एक ए दियः। व्यवसानः ততো ভিত্বা রক্তস্থান প্রধাবতি ॥ ॥ वित्व ह त्रक मध्यात्व **छमा बन्नानि स्म मृन्। मञ्**छ ब्रूथ्ट देव भी छन वह बनाट ।। এতানি যদ্য কাপাৰি তদ্য রক্ত বিষণ গ্ৰন্তণ। ভক্ৰাগদণ প্ৰবক্ষ্যা-মি যেন সম্পদ্যতে সুখণ্যা উ শীরং চন্দন সন্ত মুৎপল ত गद्गः ७था । यहाकानमा मृलानि निसूतात स्गना ह।। हिन्द्र य-तिहर्देश्य शूर्वत्यद्य क् माश्रास्थ । কৃহতী বৃশ্চিকালী চ ইম্ৰবাৰুণি मृलकः॥ मर्भणका घृङः टेघव वि তীবে পরিকীর্তিত । সিন্দুবার छथा हिन् ज्ञीत कांत्रतक्रः भ नगाः भानक अर्बोक अक्षनः লেপন তথা। এতে নৈবোপচা-রেণ ততঃ সম্পদ্যতে সুর্থণ 🛚 🐞 🗈 রক্তহান ততে। গদ। পিত্তহান প্রধাবতি। পিত্তস্থানগতে বিপ্র वित्य क्रानित्म मृनू॥ উत्तिष्ठी-

তে নিগততে দহতে মুহুতে তথা । গাত্ৰভঃ পীতভা স্যাহৈ দিশঃ **भगा** भी जिकाः ॥ भवना क ভবেমূৰ্জা ন চাত্মান বিজান-(छ । . विविक्तिया॰ उमा भ्रया। यथा मण्यामारक मूच ।। भिन्नमः मधूकः टेठव मधूथख घृठः ठथा १ মধুসার মলাবৃঞ্জাতি শর্কর वान्का ।। इस्वाक्रिम्बक ग-বা মূত্রেণ পেষ্যেত। নৃস্য ত-স্ প্রযুঞ্জীত পান মালেপ মা-र्ष्क्रनः ॥ এতেনৈবোপচারেণ **७०: मण्यमारक मूथः। शिखञ्चा**-ন মতিক্রম্য শ্লেমস্থানঞ্চ গচ্ছতি ॥ 🗱॥ স্লেম্ছানে ততঃ প্রাপ্তে लमा क्लानि स मृन्। भावानि তস্য রুদ্ধান্তে নিশ্বাসশ্চ ন জা-ষতে।। লালা চ সুবতে তস্য ক-ঠে যুরযুরাযতে। এতানি ষস্য ৰূপাণি তদ্য শ্লেমগত বিষ ।। তস্যাগদ প্রবক্যামি যেন স-**ज्या**नार**ः मूथ**ः। जिकरूकक का-भाषकी लाधु **मध्मात्रक**ा। व-ভেষা লপ্তভাগানি গ্ৰবা মূত্ৰেণ (अयरष् । नगाः भानक वर्षीः ত অঞ্চন লেপন তথা ৷৷ এতে-নৈবোপচারেণ ভতঃ সম্পদ্যতে

সুখ। শ্লেমহান মতিক্রম্য বামু স্থানক গছেতি।।।।। তক্তৰপাৰি वकाामि वायुकामगटक बिरव । আশ্বাহতে চ জঠর যন্ত্রবাণ্ণ্ড ন পশাতি ৷৷ উদৃশং ক্ষতে ৰূপং मृक्षिजग्रन्त कायर्ज । . अज्ञान ষস্য ৰূপাণি ভস্য বাষ্ণত বিবং ।। ভদ্যাগদ প্রবক্যামি যেন স ম্পদ্যতে সুখণা শোণমূল পি-যালঞ্চ রক্তা চ গজপিপ্ললী ।। ভাগী বচা পিপ্ললি দেবদারু মধূ-কসার সহ সিন্দুবার । হিঙ্গুঞ্ भिकृ। ७७काक वर्गाप्रमाक **उन्हांक्षन** त्वनानीन्।। এरहा **२ भनः भवं** वियागि इनग्राथा अय-खूवा प्रविवद्यं मृक्तः॥ खक्षन-रेक्ट नमाक किथा प्रमादियाः দ্বিতে। বাষুস্থান ততো মুজ্বা मब्द्रशन-প্रধাবতি।। 🛊 ।। বিষে ৰজ্জগতে বিপ্ৰ তস্য ৰূপাণি মে শৃণু। দৃষ্টিশ্চ হীষতে তস্য ভূশ মঙ্গানি মুঞ্চি॥ এতানি যস্য ৰূপাণি তদ্য মজ্জগত বিষা। छमागमः श्रवकामि सम मृन्यं-मार्ट मूथ ।। घृड मधू मकं त्राक **डेमी**तः हमनः छथा। এहमाः লোভ্য দাতব্য পান তদ্য চ সু

.बड ॥ डडः अनगरङ मृःयः डडः मन्महारक मूथ । 'जंथ क्षिन् ক্লতে ফোগে বিষণ্ডস্য নিকর্ত্ততে ।। का। मञ्जूषान ७८७। गया नर्य-न्दान॰ প্রধাবভি। . বিষে ভু সর্ম मः वास्त्र मृनू कमः यथा जत्र া নিশ্চেষ্টঃ পততে ভূমৌ কর্ণা-ভ্যা॰ বধিরো ভবেৎ। করিণা **সিচ্যমানস্য ব্লোমহর্ষো ন জায-**তে ৷৷ দভেন হন্যমানস্য দণ্ডরা-জী ন জায়তে। শক্ত্ৰেণ ছিদ্যনা-নস্য রুধির ন প্রবর্ততে ম কে-लियू नूठामात्मयू देनव क्रम श्र-रबम्दन । यमा करने ह शास्त्री, **ह इन् शास्त्रों ह मन्नयः ॥ निथि-**লানি ভৰন্তীহ স গতাসু রিতি শ্ৰুতিঃ। এতানি ষ্ম্য ৰূপাণি বিপরীতানি গোতম৷৷ মৃতস্থ তং বিজামীষাৎ কশ্যপস্য বচো ষ-থা। বৈদ্যা শুস্য ন পশান্তি যে পশ্যস্তি স্পিকিতাঃ।। রিচক-बाख भनाखि मरक्रोयधि नमन्नि-তাঃ। তদ্যাগদ প্রবক্ষ্যামি স্বয় রুদ্রেণ ভাষিত ।। মযুরপিত্ত गार्कात्रशिख॰ नङ्गवाशिखक॰ । यৎসা याहिष शिखक धानाली মূল মেব চ।। সন্ধুমণ ভাগবিণ

वर्षण कात्मत्री 5 प्रठ॰ छ्या । উৎপল্যা চ কিঞ্চক পদাসা ক मूलमा है।। अञ्चिति संस्कानानि शामृत्वगज् लागत्यः। अता **२ भारत। यमा राज्य मध्येन मिया**ज न देव। कामाहिमानि प्रस्केनि ক্ষিপ্রণ ভবতি নির্বিষঃ॥ কিপ্র মে-व श्रमाण्याः मृजमङ्गीयस्भिषशः। जञ्जनरेक्ट नमाक किथा नमाक বিচক্ষণঃ া ইজি ভবিষ্যপুরাণে ত্ৰন্ধগৰ্ষণি পঞ্চমী ধাতুগত বিষ-ক্রিয়া। #।। গৌতম উবাচ। কীদৃশ এতদাখ্যাহি সৰ্ব দেউস্য লকণ । কুশাপ উবাচ। অভঃ-পর প্রবক্যামি নাগানা ৰূপ मर्गमसेना ह ख्या विक्र-१ मयामाष्ट्रिकशूक्त ॥ जश मर्लिंग मर्चेमा चैंक्। मृक्तिः अकारतः। नर्गा मसेना ह ज्या ज्यामृकिः প্রজাষতে॥ নপু-সকেন দক্ষস্য चन्नभर्मः अजायल्। ऋया मर्थे-गा वा गामा। मृक्ति विक्ववद्वाख-म।। अभारत्रशानि प्रसेमा प्रक्रिश **এव काराज। ७.ईगा वाथ ए**-ঊন্য তথা স্বেদশ্চ জাষতে॥ ক্লো-**ৰাঞ্চঃ সূতিকাষাশ্চ বেপণু শ্চাপি** জাযতে। পদগী প্রভবেদ্রাত্তৌ

तुक्कः वनकः दहनः त्नानिन् मधः नीक्रत्न। निष्ठ्निः ताक्रित्न चन्नः ज्वषास्त्रत्व ज्ञथा। क्षा त्क्रवाः मनीस्त्र प्रवातः नक्ष्या त्नान्न नानः त्ना वाक्षः कित्या देनगः मृ-स्रोत्तर प्रजूषिकः॥ वाक्षतः मधु-तः प्रमाधः जिक्कः प्रमास्त्रधाद-त्व। देवत्मा कर्षक्वः प्रमाधः मृ-त्व। देवत्मा कर्षक्वः प्रमाधः मृ-

नवायुक्त भाव वनाक वामृत्यू श अञ्चलकाराम मुक्ती छ यणि मानवाः। । अविहमन क् ক্ষ্যা কম্পো গাৱেষ্ জাৰতে।। मूर्का (नार खशा मादि मछान -ৰভিজাৰতে। জাৰতে বেদনা তস্য উর্জুকৈক নিরীক্ষতে।। তস্য স্বর্যাৎ প্রতীকার বেন সম্পদ্য-তে সুধ। অর্কমূল মপামার্গ প্রি यम् मध वाक्रिशे। এठ६मर्शिः म মাযুক্ত পান ত্যা প্রদাপবেৎ। এতে নৈবোগচাৱেণ সুখী ভবতি मानवः।।।।। देवत्गानाशि हि मर्छ সাশৃণু ৰাণাণি যানি ত্যু রেমপ্র কোপো লালা চ নবোদ্বছতি বে मना॥ मूर्छा ह श्रवना यमा व्या ত্মান নাভিনন্দতি। তস্য জ ৰ্য্যাৎ প্ৰতীকাৰু বেন সম্পদ্যতে मूथः॥ अस्यकाः मरगाम्बाः गृह धृयः मध्युल्। नितीयार्क भनाम ঞ্ শ্বেতা চ গিরিকর্ণিকা ।৷ গো মুত্তেণ সমাধৃক্তণ পানণ নস্যঞ্চ माभरवदा अव देवत्यान मर्काना

माममञ्जा कामरकार पना मामानिविधः ।।।। मृत्य अर्गार अजीकात जनके जन्मका । नामि कि वर्षमा जुन् उत्पन (गी-निग्राप्त ग्रामान । अस्य अस्ति 🖟 भीक्य कार्यका। अनामि हुन्-कूनामर्था नुसारकेमा नक्न १ हमानेम धनकानि सन मन्न मार्ड न्त्रे ।। सम्रक स्माध्करित क्लोजन्सम्भागः क्लात्रः। मध्मशू-**কসারক শ্বেতা চ গিরিকর্ণিকা** ॥ এতারি বমজাগানি পেষ্যেৎ শী-**তবারিণা। পান কেপাঞ্জন** নসা मूची खबिक मानवः॥ अ॥ शूर्वा-ক্লে চরতে বিশ্রো মধ্যাক্লে ক্ষত্রিষ म्हरत्र । ज्यनदारङ्ग हरत्रदेवनाः **मृकः मक्षाहरता ७८१** । था-হার শচাত্র পুশাণি ত্রাহ্মণানাণ विमू ब्याः। मृषिकाः क्वियानाकः ष्याद्याद्या विक्रमख्य ॥ देवभा यक्क खक्राम्ह मूजाः नर्वामिन ম্বৰা।। অপ্ৰভো দশতে বিপ্ৰঃ म्बिरमा मिक्टिन जू। वामनार्यः মদা বৈশয়ঃ পশ্চাছৈ শৃদ্ৰ আ परम्य ।। भवकारम जू मधारश থীত্যমানা মহাবিষাঃ। অবেলা ৰা° দশন্তে বৈ নৈথুনাৰ্ত্তা ভূজ-কৰাঃ।। 🛊।। পুষ্পগন্ধাঃ স্মৃতা বি-थाः कवित्रा कलनावशः। देव-

मान्त म्खाका देव भूकोः नृक्ता गक्तिनः ॥ १॥ वाजः दक्षाः क्षतः काकि स्थानमन्श्रीलः ॥ समी क्

व्यातात्मम् शरित्वम् एकिसम्ब त्मम् ह। दमस्य बाक्षभाः मनी का মধারে চতুম্পথে !! ক্ষত্রিখো বস-তে নিজ্যণ ভোরণেষ্-পুরেষু চ ৷ शामानाययगानाम् भनातम् छटियू **ह** ॥ (गार्छन् अथि वृत्कम् বিপ্র বৈশ্যা বসন্তি চ। অবিবিক্তে-बू इशात्मबू निर्वादिष् वत्नबू ह ॥ শ্ন্যাগারে শ্রুশানে চশুজা বিপ্র বসম্ভি চ। শ্বেতাশ্চ কপিলা শৈচ-व रव नर्भा खुननथा ।। मान्रि কা সনম্বিনো বিপ্ৰ ব্ৰাহ্মণা স্তে व्देशः सृष्ठाः। व्रक्तवर्ग मुन्दर्गाञ थवान मिनमिजाः॥ मूर्याथ जा खथा विश्र कविवा (स जूकक्याः । नाना विष्ठिव द्राकी जि द्रुक्ती বৰ্ণ সমিভাঃ।। বাণপুষ্প সুবৰ্ণভা বৈশ্যা স্তেচ ভুজকনাঃ।কাকো-দরনিভাঃ কেটিৎ ষেচ অঞ্চন সমিভাঃ।। কাকবর্ণা ধূমুবর্ণা স্তে শুদ্রাঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ 🖦 যস্য স र्भिन मर्केमा मःभ मङ्ग्ल मखद्रः ॥ बानम्क विकानीमा क्याशमा

मा वटला स्थानिका प्राप्ति देशाल एक शृदर्व वायशादम् क् वायाकिः। **छक्रका मिक्स भार्या करबाहिः** পৃষ্ঠত ख्या ॥ उरलम खुनक भ-प्या महागत्या निमक्किछ। दि-মজ্জণ ভিষ্ঠতে চৈব শধ্যপালো **गूरुर्गुरुः।। সর্বেবা॰ সক্রতে ৰূপ॰** क्लिकः भन्नरभोखमः। अनस्रमा দিশা পূৰ্বা বাসুকেন্ত হতাশনঃ ।। मिक्ना एककरमाका कर्साः हेमा जू रेनश्रंजी। भन्तिमा शक्य-नाजमा गराभयमा वागुका ॥ উত্তরা শম্পালস্য বৈশানী কে-রলস্য তু। অনন্তস্য ভবেৎ পদ্ম• वामूरकः माखर्थाष्थनः॥ वं-ন্তিক ভক্কস্যোক্ত কর্কোটস্য ত্রিরেথক । পল্মস্য ভূ ভবেৎ গ-অ॰শূল মশ্বরস্য তু ॥ শ৺জাতে ভবেচ্ছল সনিকস্যার্জচন্দ্রক । ष्मनसः त्रविद्या विश्वः क्रविद्यो শথ বাসুকী।। মহাপদ্ম ন্তক্তক-क रेतरमा विश्व श्रकीर्षिकः।

भव्य करकां हेरको मृत्यो मना एक यो मनीविजिः॥ जनस न्ननिदकी শুক্লৌ বৰ্ণতো বন্ধসম্ভবৌ। বাসু কিঃ শথপালক রক্তৌ ক্ষিসমূ-स्ति॥ उक्कम् भरामम र व्यास्त्र शिक्ष वसूत्रकृत । श्रम क रक्षाहरू विकागत्म हरको पक् बजुरा जारम राम त्या एक ताकाम मय भावकना बंदगी मूर-भाषा शृष्टात्मकान् मिषिकतान् বিদুং ৷ পূৰ্ণদক্ত পভাকা চ কা-क्षनः मन्य ख्या। मत्रामा मानि-কা কৰু জীবঞ্চীবেতি সুত্ৰত।। এ ভেষা• দর্শন• শ্রেষ্ঠ• কন্যা চ প্রা-তিসূতিকা। চতুঃৰক্টিঃ সনাখ্যাতা ভোগিনো यख शव गाः ॥ अमृगा স্তেষু ষড্বিণ্শা অক্টত্রিণ্শা মহী-ধরাঃ। বিশাস্ত সলিতাঃ প্রো-ক্তাঃ **সপ্তমণ্ডলিন স্তথা**।। রাজী-বাস্ত দশ প্রোক্তা দকাঃ যোডশ शक है। इन्मूटला मून्मूलि टेन्हर टेठ ७७: (अर्थ राह्यः।। नागश्र-ষ্প সুৰ্ণাখ্যা নিৰিষা যে চপন্নগাঃ । এব সেবন্ত সর্পাণাণ শত দিন-বতি স্ত ৷৷ বরাহকর্ণ গজপি-প্রলিক গান্ধারিকা পিপ্লল দেব-াদারু : মধুকসার সহ সিমুবার

হিঙ্গুঞ্চ পিফুা গুডিকা চ কার্যা ॥ 🛊 ॥ मूमस्र क्रवात । रेजू क्रवान পুরা কীর গৌতমদ্য প্রজাপতিঃ। मकन गर्मागाना क्ष वर्ग वि देश ख्या । छन्माथ मन्त्रुक्तराना गान् मेंगा कला ममविकः। वि-ट्यायलक्ष अक्षेत्रा भवना भारत-न है। बादिन मानि शक्यानि छ क्रणांक नेदायिक। बीतरमाज्य-**छा लि**या रेगायदयन विद्याब-भारा। शृक्रदमिविववीत मि मृ-बाकरेकः करेगः। गन्नाभूरणान-शदित्रक बाक्षणानाक छर्ग देवः ॥ त्य प्रमार शृक्षपञ्जीह नाग्धन् छः ক্তিপুর:সরা:। ন তেষা সর্প-তো বীর ভষ• ভবতি কর্হিচিৎ।। रेि ভिविरमा भश्मीकरम् ॥ #॥ সুমম্ভ রুবাচ। তথা ভাত্রপদে মা-দি পঞ্ম্যা শ্ৰহ্মধান্বিতঃ। তথা-निथा नरता नागान् क्रकवर्गानि वर्व देकः ॥ शृक्रत्यकान्न शूरेणान সর্পি: পাষস গুয়ুলৈ:। তস্য তু-ক্টি সমাযান্তি পদ্নগা স্তক্ষকাদয়ঃ া৷ আসপ্তমাৎ সলাভস্য ন ভষ माभरा ভरदर । जन्मार मर्ब-अयरक्रन नागान् देव शृक्रदवषूशः ।। ইতি ভবিষ্যে পঞ্মীকল্পে।।।।।

,সুমন্ত রুবাচ। তথা চাশ্বযুজে याति शंक्ष्याः अक्रनम्न। क्र्या जगयभागान् हेट्याना मह शृ-জবেৎ ৷৷ যুতোদকাভ্যা• প্ৰসা লাপৰিয়া বিশাস্পতে। গোৰু-टेनः भरता बिदेश के देखाक वि विदेश खेशा। सन्त्रगा विधितमा-गान् ७६ जंका नमविष्ः। श् जरम् अक्रमार्भुत छमा स्मरा-मरया मृथ।। नागाः श्रीण खर ন্তীহ শান্তি মাধোতি মানবং। সুশান্তি লোক মাসাদ্য মোদতে শাশ্বতীঃ সমাঃ।। ইত্যেতৎ ক थि**ङ विश्व शक्ष्मीकन्न मूखम**ा পন্নগান্দুচ্যতে মন্ত্ৰ• সৰ্ব দৰ্প নি-रिष्यकः॥ अय् अक्र अत्न नः करे স্বাহা। ইভি ভবিষ্যপুরাণে শত· সাহস্যা• স•হিতাষা• পঞ্মীকল্পে ।।।।।। अनाका। मृठ উवाह। প্রাণেশ্বর• গারুডঞ্চ শিবোক্ত• **अवनागारः।** ज्ञानानगातने अव-ক্যামি নদ্যা॰ দফো ন জীবভি॥ বিবরে তরোঃ। দ॰শে রেখাত্রয॰ यमा आऋष•म न कीविधा यर्छा।-क्ष कर्करि यास मृलासिया मधा-मियू। कका त्यानि गत्न मस्बी

गध कर्त्नामज्ञामिष्। मखी गख-थरता जिक् लंशािनः कालम् ठकः। वर्ष्ट्र बार्शे ह जीवाशः शृर्छ ह निह कीविछ ॥ शुक् मिनशिष्ठ তৃতি কৰিবাস ভতোপরে। শে-मार अरार अधिकिन अस्मिता **शतिवर्ड देनः॥ नागरकाशकरमा** ब्ब्रंट्स द्राद्धो वान विवर्डटेनः। ल्यार्कः क्रिश म्हल उक्टक। **भि में नेत्रिणः ॥ करकारिंग छ्ला** खकः भरमा महाभस्म जार्गदः । अधः भटेन कटता त्राष्ट्रः इति--क न्हार्या अराः।। त्रात्वी निया সুরগুরো র্ভোগে স্যাদমরান্তকঃ া পঙ্গোঃ কালো দিবা রাছঃ স্থলি-কেন সহ স্থিতঃ।। যামার্দ্ধ সন্ধি म•दः म (दला॰ कालवजीक्षरत्र । वान वि य वि दि वा जि यूग छू রেক ভাগতঃ।। দিবা ষড্বেদ নেত্রাদ্রি পঞ্চ ত্রি বসু স্বা॰শকৈঃ! भामाङ्ग्रं भामभ्रं छतः जा-नूनि नित्रक ॥ नाजि त्रि छ-नकति कर्छ नामाभूरहेकरन । কর্ণবোশ্চ জ্রুবোঃ শুদ্ধে মস্তকে প্রতিপৎ ক্রমাৎ ৷৷ তিপ্তেচন্দ্রশ্চ कीरवन पूर्मा मिक्काशस्क । কাষদ্য বামভাগে তু স্ত্রিষা বা

प्रशब्द कर्वाच्या व्यवस्य प्रश्वा त्यारमा निवर्र्ड ह भर्ममा । जाक्रमः नदमः रीजः रंगांचाः শ্ফাটিকাৰল II: ভাভৰ্য 'কিব ণাপদ বীজ ভদা চত্ৰিক। विन् शक्यत्रवृत्र नामा मूख्य वि-তীৰক াাৰ্ডাৰ্ড ভৃতীৰ স্যাৎ नविनर्गः ठेजूर्विधः। ध्रम अक अस्म স্বাহা। বিদ্যা ত্রৈলোক্য রক্ষার্থ॰ গরুডেন ধৃতা পুরা। বধেন্সুনা চ नागानाः कृत्य १थ श्रावः ना . সেৎ ৷৷ গলে করু ন্যাসেৎ পশ্চাৎ समि टेव्य विद्रम्थलः। जन्म या শুহুযোঃ পাদযুগে হা ন্যাস ঈরি ছঃ। গৃহেপি লিখিতা ষত্ৰ তন্না-গাঃ সংত্যজন্তি চ। সহসুমন্ত্র क्रश्च मृजः कर्त् ४० छथा।। तः म्गृष्ट् मर्कत्रा ज्ञु किञ्चा नागा স্তাজন্তি চ। সপ্তলক্ষ্যা জ্পা-रेष मिक्षिः थाश्वा नूतानूरेतः ॥ ७म् मूवर्गदारथ चक्रु विश्व क পিণি স্বাহা। এব ঞাফদলে পদ্মে प्रत्म वर्षमुभः निरम्भः ।। नारेम्छः বারিধারাভিঃ ঙ্গাতো দক্টো বিষ ভাজে । ওন্পকি স্বাহা। অ-মুঠাদি কৰিষ্ঠান্ত করে নাস্যা-ब (महरक।। रक वृत्कु रू मि मि-

'रम' छ लोगरना भंतराज' वि.मा। মাজামতি চ' উচ্ছাৰা ৰটোপি বিষণমগাঃ ॥ শক্ত লক্ষ্ণ অংশক্তা-महार्थं म मृद्धा मानस्विद्यरा " ७" ह्यें हीं जिक्कारेय नमः॥ कर्ल कथा विष॰ विषा। मखेकमा বিষ হরেছ। অ আ ন্যাসেত্রু গা मार्ट्य है ने खरण रथ कानूनि ॥ छ छ व के किंग्डिट ए मार्डी क्तिगरमध् मूधीः। कापि छ वकु দেশে চ অঙ্গে অঃ হংস সংযু खाः॥ इ॰रमा विवामि उ रुद्रिय জ্ঞো ধ্যাতো ২থ পূজিতঃ। গ-রুডো ২হ মিতি ধ্যাত্বা **স্ব্যা**দ্বি क्रवां कियां ॥ इ मञ्ज गाव विनाच्छ॰ विवामिहत्र भौतिछ॰। नामा इ॰म॰ वामकरत्र नामा मूथ निरत्राथक्षर ॥ भरता श्रत्र म-र्केकमा पद्मां भाषिभठः विषः । স বাযুনা সমাক্তব্য দক্তানা গর-न श्दाः॥ छत्नो नातमस्रुदेक वाजीनकश्रीम मध्यद्वर ॥ 🛊 ॥ ণীত প্রতাদিরামূল তঙুলান্তি विवागरः॥ भूनवंवा कलिनीनाः मून हळाज मीमृनः। मून छङ्ग बृश्टाम्स करका है। देशविकार्निक য় অদ্ভি ঘৃ কি ঘৃতোপেত লেপো

२ व विषयक्षानः । विक मृक्तिः न ব্ৰজ্যে উক্ত পিৰজিংবা মৃত ।। नकाबब तिहीरमा मून गृक्ष-क्रस्था। मर्वान्यमञ् भ्हानि পানাম বিষম্ভবেৎ ।। ছীঁ গো-मनापि विषक्ष 🖟 क्लमा है विमः र्गास्य भारत नगानि क्रस्टवर ।। नास्त्र स्थातने वरमध्यस्याः क्र र्यात्रम कवाविना । जथु। म প্ত।ফীসাহসু গরুত্মানিব সর্বগঃ॥ কবিঃ স্যাৎ শ্রুতিধারী সাংৰশ্য-জ্ঞী শ্চাযু রাপ্স্য । । বিষহ্ন । স্যাৎ কথা তদম্নি বা সম্মতো अन्य ।। देखि भाक्र ए आ ए । यद शांक्रफ नवाक्ष ३२ व्यशायः ।। 🛊 ।। 🍲 ।। অপর্ক। অগি রু-वाठ। नागामत्या २थ जातामि म्भञ्ञानानि वर्ष छ। मृङकः म-केटारकेंछि मञ्जनकः। गूठारङ ॥ শেষ বাসুকি ভক্ষাখ্যাঃ কর্কোটো रका बरायूकः। भश्रेशालम्ह ञ्चलिक ইত্যফৌ নাগবর্ষ্যকাঃ।। मनाक नक बिश्वन मञ्जूका वि-णाः क्रमार । विरक्षी न्रशे वि भी भूटजो को को नार्गम् की-र्खिटो। छमययाः गंकमणः छ ভ্যো জাতা হৃদধ্যকাং। কণি

मथनि ब्राकीन बाठ लिख-क काष्रकाः।। राखन्ना मादिन्या **एड गर्गा मर्वोक्तनाः गृजाः। ज** भान नानन एंड यखिकानूनश-विषः॥ शानना यसभा मीर्या म-খলৈ ৰিবিধৈঃ স্থিতাঃ। রাজীলা শ্চিত্রিতাঃ শ্লিখা স্তির্যাগৃৰ্দ্ধক রা-জিভিঃ।। ব্যস্তরা নিশ্র টিক্লাশ্চ ভূ বর্ষ।গ্রেষ বাষবঃ। চতুর্বিধা ত্তে ষড্বি॰শভেদাঃ ষোডশ গো-नगः॥ बद्यानन ह ताकीना ব্যস্তরা একবি শতিঃ। বে १ নুক্ত-কালে জাষন্তে সর্পা তে ব্যন্তরাঃ শৃতাঃ ॥ আবাঢাদি ত্রিমাসেঃ मालार्डा गाम ठजूकरम। जन কানা • শতে দ্বে চ চদ্বারি • শৎ প্র-সৃষতে। সর্পা এসন্তি সূতো তান্ विना औ पूर नर्न्यकान्॥ छ-শীলতেকি সপ্তাহাৎ হুষ্টো মা-माख्रतबहिः। बामगाहार य-वाधः गामखाः मृः मृर्यामर्भः नाए।। दाखिःभक्ति विःभठा। শ্চভুসু ত্তেষু দ खुिकाः। করালী मकती कालताजी ह सममृष्ठिकाः ॥ এতা ভাঃ সবিবা দণ্ডু। বাম দ কিণপাৰ্শ্বগাঃ। ষমাসামুঞ্তে क्विं कीत्र विषे ममा द्वे ॥

নাগাঃ স্থ্যাদি বারেশাঃ সপ্ত উ ক্তা দিবা নিশি। তেবাং ষট্ প্র-

श्रामकः नर्वनिषय ॥ শশ্বেন-বা মহাজেন সহ তস্যো-मरमा २थ वा। द्वरमा दी नाफि-का मख मखत्र अलिटकानमः ॥ मू-केः नकालः नर्वत नर्वतः । वि-निर्मिटण्ट। क्रिका छत्रनी या-**ी गूल॰ পূৰ্বাভ্ৰমাশ্বিনী॥ বিশা**-খার্জা মহাজেষা চিত্রা প্রবণ রো-হিণী। হস্তা মন্দ সজৌ বারৌ প-*****মী চাষ্টমী তিথিঃ।। ষষ্ঠী রিক্তা भिवा निन्मा शक्ष्मी ह हजूर्मनी। সন্ধ্যা চতুষ্টম দুষ্ট দগ্ধ যোগা-क्त ताक्यः।। এक वि वश्रवा पर-ना मरो विकक्ष थिछ । ज्ञन न মবগুপ্ত স্যাদ্দ শ্ৰেব চতুৰিধ য় ত্ৰেষা ছেক ক্ষতা দংশা বেদনা क्रियता नृगाः। नकः देवकाञ्चि কুৰ্মাভা দ শাশ্চ যম চোদিতাঃ ्॥ माही शिशीलकाम्भागी कर्छः শোষ রুজাম্বিতঃ। সতোদো গ্র-श्रिका म॰भः मित्या नास निर्दि यः।। प्रकानस्य मृनागृरह वन्ती-কোদ্যান কোটরে। রখ্যা স-क्या भागात ह भागात निकृ সঙ্গমে।। দ্বীপে চতুস্পথে সৌধে।

পৃষ্টে ২জে পৰ্বতাগ্ৰতঃ। বিল-षादत जीर्वकृत्य जीर्वदवयनि ज-ডাকে।। শিগ্ৰ শ্লেমাতকাকেষু জমৃত্যরণের চ। বটে চ জীণ-প্রাকারে খাস্য হৃৎ কৃষ্ণ জতুণি ।। ভালে। শথে श्रल मृक्ति विदूरक नाञिभाषरयाः। पःरभा १ ७७ः শুভো ভূতঃ পুষ্পহস্তঃ সুবাক্ मूथीः। लिक्रवर्ग ममानक खेक्क-বস্ত্রো ২মলঃ শুচিঃ। অপদারা-গতঃ শস্ত্ৰী প্ৰমাদী ভূগতেক্দ৭ঃ ।। विवर्गवामाः भागामिहत्ला ग-দাদবর্ভাক্। শুষকাষ্ঠাপ্রিতঃ থিম স্তিলাক্তককরাণ্ডকঃ ৷৷ আ-র্দ্রবাসাঃ রুফ রক্ত পুষ্পো হেম-नित्ताब्रदः। अठमकी नथः इती श्वमण्यृक् शामरमधकः॥ (कम नुषी ज्नरक्षिी मुकी मृजा खरेब कलः। ইफानगावाश्यरकृषा यक्ति দূতন্য চাত্মনঃ।। আভ্যা॰ ছা-পুণ নপুণসকান্। দূতঃ স্পৃশতি यकााजः जिमन् मः मूमारदार া। দূত...ু... ু. ু.... শ্বলা শুভা। জীবগার্শ্বে শুভো मृट्ण मूट्यो श्नाब नमागणः ॥ জীবো গতাগতে দুষ্টঃ শুভো

म्छ निरवमस्न। मूछमा वीक् थ मूकी ना भूकीयकोक निक्रिका । विভक्ति खेगा वाकारिस दिंग नि र्दिय कालजा। जारेमाः यरेद्रकः कारेमा कर वर्रेग छिंब निशि विंशा ॥ अ त्राङ्का वमुमान् वर्गी हैिछ ক্ষেপ্যশ্চ মাতৃকাঃ। বাভাগীস্ত जनाबादना वेटर्गबू ह हज्खेष ।। নপুংসকাঃ পঞ্মাঃ স্যঃ স্বরাঃ শ का यूर्यानसः। मूरकी मृजना वाक् পাদৌ ৰাতাগ্ৰী মধ্যমৌ হরিঃ।। প্রশস্তা বারুণা বর্ণা অতিদুষ্টা ন-পু॰সকাঃ। প্রস্থানে মঙ্গলণ বাক্যণ গৰ্জ্জিত মৈষ হস্তিনোঃ।। প্ৰদ-ক্ষিণ ফলে বৃক্ষে চাসস্য চ রুত্ত জিত। শুভা গীতাদিশব্দাঃ সূত্র রীদৃশ স্যাদসিদ্ধষে।। অনর্থ গী-তাথাক্রন্দো দক্ষিণে বিরুত ক্ষুত । (वना) वित्था नृशःकना। (गो र्मे भूत्रक थएको ॥ कीताका मः ধিশৠামুচ্চপ্রতেরীফল সুরাঃ । তথুলা হেম রূপ্যঞ্ সিদ্ধংযভি मूथा व्यभी।। मकार्थः मानलः का-क्र यंनिनाषत ভातज् । श्रमञ् টক্ষে। গোনাষ্ গৃথ্যেলুক কপ-দিকাঃ।। তৈল কপাল কাপাসা নিষেধে। ভশ্ম নফাষে। বিষবেগা-

শ্চ সপ্তস্যু ধাতোদাম্ভরাপ্তি-**डः॥ वियमः त्ना नना**ष्टे॰ योडा-তো নৈত্ৰণ ততো মুখণা আস্যা-চ্চরণনাভীছো ধাতৃন্ প্রাপ্নোতি हिक्रमाथ।। हेजादारम नक्ना-नि ॥ 🛊 ॥ चार्चा इन्ता । मस्या-तोषदेश मंखे **हिकि**ष्मा॰ श्रवमा-• মিতে। ওম্ নমো ভগবতে নীল-क्श्रीटयिक ॥ জপনাদ্বিষ্থানিঃ मारिनेयथ कीवत्रकाः। माकाः শক্ত দ্রসণ পেষণ দ্বিবিধণ বিষ মুচ্য-তে।। জঙ্গন সর্প মূষাদি শুঙ্গাদি স্থাবরণ বিষণ। শাস্ত স্বরান্বিতো ব্রহ্মা লোহিত তারকঃ শিবঃ।। বিষতে নাম মন্ত্রোষণ তার্ক্ষঃ শব্দ নয়ঃ স্তঃ। স্থল মহামতে হাদ্যা-ষ। গৰুড বিলাস শিরসে। গৰুড শিখাষৈ। গৰুড বিষভঞ্জন ৩ প্র-ভেদন ৩ বিত্রাসয় ৩ বিমর্দ্দয় ৩ কবচাষ। অপ্রতিহত শাসন• ব॰ ट्रँ क हे व्यञ्जाय। উগ্রৰপধারক সৰ্বভয়ন্বর ভীষ্য ৩ সর্বণদৃহ ৩ ভঙ্মী সৰু সৰু স্বাহা নেত্ৰাষ। मश्चवर्गाञ्च यूगार्के मिलन यत কেশরাৎ। বর্ণ রত্ন ৰহিশ্চাভূৎ কৰিক মাতৃকাযুক্ত। ক্লন্বা श-**पिष्ट उन्नधी बागर्ख ज्या ग**-

त्त्र ।। अनुशेष्ति नार्देनवंगीन् বিষভেদোদিতাঃ কলাঃ৷ পাত্ৰণ বজু চতুষোণ পার্থিব শক্ত দৈ-वछ ।। वृद्धार्क माभा भवाक শুক্ল বরুণ দৈবত। তার্সু স্বস্থি-क युक्तक टेंख्यक विद्विटेंपवंड ॥ वृद्धविष्पृवृष्ठः वाय् रेपवष्ठः क्रुकः मानिन । अनुश्रीमान्नी मरश পর্য্যান্তেষু স্ববেশ্বসু।। সবর্ণনা গ-वाहनदिक्षित्रयू नारम् क्रमार । বিষতে চতুরো বর্ণান্ স্ব মঙল সমন্বিষঃ। অৰূপে বর্তমাত্তে আকাশে শিবদৈবতে ৷৷ কনি-ঠামধ্য পৰ্বাত্তে ন্যদেত্তস্যাদ্য ম-कातः। नागाना मानिवर्गाः च-ম্ওল গতাম্য সেৎ ৷৷ ভূতাদি ব र्गान् विनामा अङ्गृष्ठीमाञ्च शर्वम् १ **ज्या**वामि श्रामार्गानमूनीयू नाः मिबूधः॥ न्यर्भनात्मव जात्कान **श्टल श्नाकियवय•। मल्लामियू** তান্ বর্ণান্ বিষতে করবো জি-তাन्।। (अश्वेषात्रज्ञानि (पर् नां ि शानियू शर्वम् । मुका মতঃ সর্বণাড মানাতে স্তহিনপ্র ভণা সন্ধুনারুণ নাক্তাদাকেশা-স্তাৎ সিতেভর•। ত্রহ্মাণ্ডব্যাপি-ন তাৰ্মণ চক্ৰাখ্য নাগভূষণ ।।

नीलाओं नाम माश्वानः। यहाँगकः श्वाद्यव्यः। अवः ठार्काश्वादमा वा-काश्वयः माश्वाद्यशा विदयाः श्व-श्वि ठार्काक्त माश्वः श्विष्ट्रश्वे विषाणशा। ठार्का श्वः ममूलामा ठ० प्रकाश्वितालनारः॥ अर्या-

৷ আকাশাদেশ ভূবীজঃ পঞ্চাসা **विश्वि र्यान्ः ॥ जः** खखरवि वीः ষাতো ভাষ্যা স্তম্ভবেদ্বিব । ব্য-তান্ত ভূষণা বীব্দো মন্ত্রো হয় माधूमाविजः॥ मःक्षवः क्षाव य **শनः भका**म्यः ज॰श्द्रक्षियः। मर्छ মুখাপযেদৈষ স্বজপ্তান্তো ভিষে কতঃ।। স্বজপ্ত শহ্ব ভের্ব্যাদি নি-স্বৰ অবণেন বা। সংদদাত্যেব সংযুক্তো ভূতেজো ব্যত্যযাৎ স্থি-ভঃ।। ভূ বাযু ব্যত্যযাম্বন্তো বিষণ मःकामराजारमो। वास्टरहा नि करवंभारमा वीकाशीम् कलाम्-ভিঃ॥ এতৎ কর্ম নধেমন্ত্রী গরু-ডাফুতি বিগ্রহঃ। তার্ক্য বারণগে-হন্ন স্তৰ্জনামাশবেদ্বিষণা৷ জানু पक्षीन्यू मूजिङ स्वा श्रीवीक ला-ষ্ট্তিত। স্নান পানাৎ সর্ববিষ জরা রোগাপমৃত্যুদ্ধিৎ।। পক্ষি পক্ষি মহাপক্ষি মহাপক্ষি বিবি

স্বাহা। পক্ষি পক্ষি নহাপক্ষি ম हाशिक कीकी बाहा।। बाद्व 🛉 তৌ পক্ষিরাড্ যন্ত্রৌ বিষয়াবভি-মন্ত্রণাৎ। পক্ষিরাজাষ বিদ্মহে পক্ষি দেবাষ ধীমহি তল্পো গৰু-**फः** श्रदामगा< ॥ वहित्ये भार्ष ए शृद्धी मञ्जीको ह मिछि त्नी। नकत्ना नामनी कि नी-नक्षीमा मीतिजः॥ वक्षः कर्र শিখা শ্বেত ন্যমেৎ স্ত:ম্ভ সুস্ণ-च्कृः छो। इत इत झायाय नमः क्निर्मित ह नित्रम नीव क्रेश्य বৈশিখাণা কালকুটবিষ ভক্ষ ৰাষ স্বাহাথৰ বৰ্ম চ। কণ্ঠিনে ब क्रिवाम ल्हिंब প্रভाक শব্ৰিভিঃ পূৰ্বাদ্যৈ রাননৈ যুক্ত শ্বেত পীতারুণাসিতৈঃ।। অভ य वत्रम काश वामूकिक मध-দ্ভুজে:। যজ্ঞোপবীত পার্মন্ত গৌরী রুদ্রো ২স্য দেবতা।। পাদ জানু গুহা নাভি হৃৎ ক ঠানন মুর্কদু। মন্ত্রাণান্সাস্য ক तर्या त्रक्षामान्नीष् ह ॥ ७-ब्ह्नामि जम्डाम् मर्वमङ्करमा न्यारम् । ध्यारेष्यः मः हरत् कि थ॰ वक्षरा मृज मूजरा॥ कनि-ষ্ঠা জ্যেষ্ঠয়া বন্ধা ভিন্মোন্যাঃ প্র-

সৃতি জবঃ৷ বিষনাশো বামহন্ত मनात्रिन् मिक्ष कद्रशा नत्या **७**गवर् नीलक्श्रेषिः। ज्य-লকণ্ঠচিঃ সৰ্বজ্ঞ কণ্ঠচিঃ কিপ ७म् वाहा॥ नत्मा नीलक्कीय देनक नर्ववियाशहाय। नम एख क्रजमनाव देखि मुगार्क्कना विषः বিনশ্যতি !৷ নসন্দেহঃ কর্ণজা-প্যা উপনেত্রা বিধানতঃ। যজে फ्र जिवादनन नील श्रीवः मट श्रवः तः। विषवाधि विना**नः गा**९ ক্রত্বা রুজ বিধানতঃ।। ইত্যাগ্রে-रय महाश्रुवारव ॥ #॥ #॥ या-ত্রাকালে ত্যা শুভাশুভস্চক-ष यथा। भानाम महींकत्र ता-জিলাদ্যা জাতৈয়ব সর্বে ভষদা जुजनाः। विलाका नर्शः यपि নিৰ্বিকল্পা নিবৃত্ত বিপ্ৰস্য শুভ বিচিন্ত্য ৷৷ পাষাণ **সণ্ডন্তিত** কণ্টকেষু দন্বা পদ বান্তি বিন-ঊবিসাঃ। সর্পেচ্ছ্যা পঞ্চন খা-ভিধেষঃ প্রযাণকালে সভু বাম-ভাগে॥ मृकैः खटेंजः मिकिङ्ग-দুমতাতা ভিষ্ঠেৎ পথোর্দ্ধে यमि त्राकानाजः। ইতি দর্পः। ইতি বসম্ভরাজশাঙ্গনে ১৫ বর্গঃ ৷৷ मर्भक्षाणिका खी वृंकवित्मयः

। जदभवायः। जीका २ विष ু দ'ক্ট্রা ৩ বিষাপহা ৪। ইতি রত্ন-याना।। महा ६ मर्भक्कानी ७ वियनामिनी १। इंडि मक-চন্দ্ৰকা॥ मर्गककानी खी मर्गककानिका। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। मर्गगन्ना जी वृक्ववित्मयः। यथा । ছত্রাকী সর্পগন্ধা চ রসনা চ পলক্ষা। ইতি জটাধরঃ॥ সর্গঘাতিনী স্ত্রী সর্পকন্ধালীভে **एः। यथा। मर्शमहा मर्शना**या नर्शाकी नर्भघाठिनी । त्रव्यामा ॥ সর্পতৃণঃ পু॰ নঙ্গলঃ। ইভি হেম- ∥ ठङः ॥ मर्भाष्युः । भू मञ्जीवृक्तः। इंडि শব্দচন্দ্ৰিকা ৷৷ मर्गम खी वृन्धिकानी। इंडि त्रव्रमाना ।? সর্পদ স্ট্রিকা স্ত্রী অজশৃদী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ मर्भम्खा खी रेमःश्ली। देखि রাজনির্বন্টঃ ৷৷ मर्गमधी जी भारकी। देखि রাজনির্ঘন্টঃ ।৷

नर्गमञ्जी जी नागमञ्जी। देखि

त्राकृतिर्दन्हेः॥ मुर्गमनी औ वन्नाक्त्वं हिकी। . रेजिज्ञाकनिर्यन्धः ॥ मर्गनामाञ्जी मर्गककानीरजनः। रेजि द्वनगणा ॥ मर्भभूषी खी नागम्खी। देखि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ সর্গকণজঃ পু• সর্পকণজাতমণিঃ । ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ সপ্ভুক্ পু॰ ময়ুরঃ। ইতি হেম-চন্দ্রং।। সপভক্ষকে ত্রি।। नर्शमाना जी नर्शकानीरजनः। ইতি কাচিৎ রত্নমালা।। সর্প-নামা ইতি সাধুপাঠঃ॥ সর্পরাজঃ প্রু বাসুকিঃ। ইত্য-- यद्गः ॥ नर्गनठा औ नागवन्नी। ইতি त्राक्रनिर्घकः॥ नर्भनव की नर्भनामक रखः वित्नवः। यथा। कनत्रक्यः স্বগিতর• শ্রেছা তক্ষক ভক্ষিত•। यथा जूराव मः कुषः मर्गान्मत्व नर विदेखः ॥ नर्भनत्व नि कारभी महसानान् मरहाद्रशान । मृत्युंख अयं मःविश्र उक्कवः भद्रभः बद्धो ॥ अभभागः सक्करः তত্র স্নাক্তা পারীক্ষিতো দিজান

। উवाठ ७ककः कन्मान्नमृहञ् তোরগাধমঃ ৷৷ ভ গোপাষ্তি রাজেন্দ্র শক্তঃ শরণ মাগত।। তেন সংস্তম্ভিতঃ সর্প স্তম্মারা-গৌ পতত্যসৈ।। পারীক্ষিত ইতি শ্রুষা প্রাহ র্ষিজ উদারধীঃ । मर्ह्य स्टब्स्ट विथा नामी কি মিতি পাত্যতে ৷৷ তচ্ছত্বা জু श्रृ विथाः मर्ख्यं छक्क के भर्थ । তক্ষকাশু পত্ৰেছ সহেন্দ্ৰে। মরুত্বতা।। ইতি ব্রন্ধোদিতাকে পৈঃ স্থানাদিন্দ্রঃ প্রচালিতঃ। বভূব সংভ্ৰান্তমতিঃ সৰিমানঃ সভক্ষকঃ ৷৷ ত॰ পতন্ত কিমা-त्नन **मर् ७कक मध्रत्रा**थः। वि लाकानितमः आह ताजानः ত বৃহস্পতিঃ।। নৈষ ঘষা মনু स्यास वर मर्श्व मर्गद्राष्ट्र। ज् নেন পীত মমৃত মথ বা অজরা-मद्रः ॥ জीविष्ठः मद्रगः जस्त्रा র্গতিঃ স্বেনৈব কর্মণা। রাজ॰ স্ততোন্যো নাস্তাস্য প্রদাতা সু-**च** मूः चर्याः ॥ मर्ग को त्राति वे इाष्ट्र क्वुड्वाथाति वृत्र। পঞ্জ মিচ্ছতে জন্ত ভূঙি আর-ৰ কৰ্ম তথা তত্মাৎ সত্ৰ মিদ• রাজন্ সংস্থীবেতাভিচারিক ।

मर्भा जनागरमा मक्षा जरेन पृ-ষ্ট হি ভুজাতে॥ ইত্যুক্তঃ স তথেত্যार महर्स्व मीनशन् वहः । मर्भ मजामूशत्रकः शृक्षयामाम ৰাক্পতি•।। ইতি শ্ৰীভাগৰতে ১২ কন্ধে ৬ অধ্যায়ঃ।। সপদত্রী পুণ জনমেজ্যর জঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী।। मर्थमहा खी मर्थकहालीरजनः। ইতি রত্নমালা ৷৷ সর্পহা পু• নদলঃ। ইতি হেম-हिन्द्रः ॥ সর্পাখ্যঃ পু• মহিষকন্দভেদঃ। ইতিরাজনির্ঘণ্টং ৷৷ নাগকেশরঃ । ইতি রত্নমালা।। সর্গনামকেত্রি मर्गाकी जी मर्गकहालीरजमः। रेंकि त्रज्ञमाना ॥ रिम॰रनी । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ मर्भावनी खी नामनी। रेडि রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ সর্পারাতিঃ পু: গরুডঃ। ইতি ट्याञ्चः ॥ সর্পারিঃ পু॰ নঙ্গলঃ। ইতি রাজ-নির্ঘক্তঃ।। গরুডশ্চ।। সর্পাবাসং ক্লী চন্দনং। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ সর্গস্থানঞ্চ ॥ 🤅 পুণ মধুর:। ইতি স্পাশনঃ

হলাযুধঃ।। গরুড=চ।।
সর্পাক্ষণ ক্লী কুদ্রাক্ষণ। ইতি রাজনির্যকী সী গ্রুমান্দলী। ইতি

मर्लाकी खी गन्ननामनी। ইতি

ताजनिर्वकः ॥ तृक्वित्नयः ।

मत्रही ইতি গণ্ডিনী ইতি চ

हिन्दीভाষা। তৎপর্যায়ঃ। গণ্ডালী ২ নাডীকলাপকঃ ৩ ।

অস্য গুণাঃ। কটুছু । তিক্তছু ।

प्रेक्ष । क्रिमनानिष्य । वृन्हि
কোন্দুক সর্পাণা विষনানিष्य ।

বেণরোপণত্বক । ইতি ভাবপ্রকাশঃ ॥

मर्लिः की वृठ । इठामतः ॥
मर्लिनी खी मर्ल्डा व्या । मार्लिनी खी मर्ल्डा व्या । स्रामी
तानी मर्लि खे । उर्व । स्रामी
तानी मर्लि खे । उर्व नस्त्र प्रान्ति । क्यु क्रिंग । उर्व नस्त्र प्रान्ति । क्यु क्रिंग । उर्व भर्मा । उर्व । क्यु क्रिंग । उर्व क्रिंग । प्रकृति । विषय । प्रवा । प्रवा । प्रवा । विषय । प्रवा । प्र

দ্পী^ন ত্রি গমনকর্ত্ত। সূপধাতো র্মিণ্ প্রত্যবেন নিম্পন্নঃ ।। मर्थीरिं की श्रीथ्यहम्मन्। ইভি রত্নমালা॥

मर्लिकः क्री श्रीथक्ष्ठम्मनः। ইতি क्रिकारः॥

সর্ব সর্পণে। ইভিকবিকরজ্ঞনঃ
। দন্ত্যাদিঃ। ওঠবর্গশেষোপথঃ। সর্বতি সিসর্ববিষতি। ইতি
দুর্গাদাসঃ।।

সর্বঃ পু॰ শিবঃ। ইত্যমরঃ॥ বিক্রুঃ
। যথা। অসতশ্চ সতলৈচব সর্বস্য প্রভবাব্যযাঃ। সর্বস্য সর্বদা
ভরানাৎ সর্ব মেত॰ প্রচক্ষতে ॥
ইতি বিক্পুরাণ•॥ বিক্সহস্বনাসস্ভোত্রক।।

गर्बः जि मण्णृनं । इंडामतः ॥

जमा भर्षायाः मकलमस्य ज
केताः ॥ श्रायाः गर्वाम्वर्षायाः

तज्ञमस्य स्मानः गर्वाम्वर्षाययः

नजः । गर्वजीर्थ मयी गन्ना गर्व
स्वयस्य इतिः ॥ ইতি वहिः

भूताः स्वायतीय मःवास २

ज्यायः ॥

সর্বংসহা স্ত্রী পৃথিবী। ইত্যমরং॥
সর্বকঃ ত্রি সকলঃ। সর্বশব্দস্যটেঃ পূর্ব মকি তন্মাৎ স্বার্থে কে
চ নিষ্পায়ঃ। ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণং ৷৷

नर्दकर्छ। पुः जन्ना। ইতি मक त्रक्रावनी ॥ সৰ্বক্ষ্মীণঃ ত্ৰি সক্ললকৰ্ম্মকৰ্তা ্ষথা। সংগ্ৰামে সৰ্বকন্মীণো বা ছূ যদ্যৌপজানুকৌ। ইতি ভটৌ ৫ वर्गः ॥ मर्वतक वा मर्वज। मर्वभकार অকচ্ প্রত্যাধেন নিষ্পন্নঃ। ইতি निकाञ्चकोगूनी ॥ मर्दाकभी भू निष्ठः। ইতি भक त्रवावनी ॥ नर्बग॰ क्री कल॰। देखिरमिनी।। সর্বগঃ পু॰ শিবঃ॥ এফা। ইতি स्मिनी॥ आज्ञा। इंडि गकः মালা।। সৰ্বত্ৰগামিনি ত্ৰি।। गर्बगन्न॰ क्री ठञ्जाङकानि। यथा । চতুৰ্জাতক ক**কোল লবঙ্গা**গু-ৰু সিহ্ল ক॰। সৰ্বগন্ধ মিদ॰ চা এ॰ মুনিভিঃ পরিকীর্ত্তিত ।। ইতি गयहिका॥ जनाक। हाजु র্জাতক কপূর ক্রোলাগুরু স্-क्रूमः। व्यवेकमञ्जिदेश्य मर्वगः ऋ विनिर्मित्म ।। ইতি ভাব-প্রকাশঃ ৷৷ मर्वेगा खी थियत्रृव्कः। देखि नक्रिका ॥ সৰ্বগ্ৰন্থিঃ পু॰ পিপ্পলীমূল । ইতি

সৰ্বতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ गर्वग्राञ्चर की श्रिनीगृनः। ইতি হেমচন্দ্রঃ ॥ गर्बम्योनः वि नक्लम्यनिर्मिजः । ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী ॥ नर्दकनीनः वि नर्दकननशकी। ইতি সিদ্ধান্তকৌসুদী ॥ সর্বজিৎ পু• কালচক্রস্য এক-वि॰ गवर्षः । इंछि क्विष्या म কলজ্যকর্ত্তরি ত্রি॥ সৰ্বজ্ঞঃ পু• শিবঃ॥ বুদ্ধঃ। ইত্য-মরং।। সকলজ্ঞাতরি ত্রি।। मर्बद्धा जी मूर्गा। यथा। উৎ-পত্তি স্থিতি নাশেষু রজাদি ত্রি-গুণা মতা। সৰ্বজ্ঞা সৰ্ববেতৃত্বা-চ্ছান্তিয়াচ্ছান্তি রুচ্যতে॥ ইতি त्मवीभूतात् ८६ व्यक्षायः ॥ সৰ্ৰতঃ ব্য চতুৰ্দ্দিগভিব্যাপ্তিঃ। তৎপর্যায়ঃ। সমস্ততঃ২ পরি-তঃ ৩ বিশ্বক্ ৪। ইত্যমরঃ ॥ সৰ্বতংশুভা ত্ৰী প্ৰিষদুবৃদ্ধঃ। रेचि শব্দচন্দ্রিকা।। সৰ্বতন্ত্ৰঃ পু॰ সকলতন্ত্ৰাধ্যেতা। ইতি কেচিৎ।। সকলশাস্ত্রঞ্ব।। সৰ্বতাপনঃ পু॰ কামদেবঃ। ইতি কেচিৎ।। সৰ্বতাপকে ত্ৰি।। সৰ্বতিক্তা স্ত্ৰী কাকমাচী। ইতি

সৰ্বতো

त्राक्रनिर्यकैः ॥ সৰ্ভাভজঃ পু ক্লী ঈশ্বগৃহ वित्नवः। देखायतः॥ बातानि न्मानिट्छम्छिमाण्यगृहः। छम्। লকণ সুপন্যস্ত সাঞ্জেন যথা विखिक था भूथ ये गामिन গতৌ চান্যৌ তৎপর্যান্ত গতো २१द्रः॥ अनिविकानिकास्य **ठ**जूबातक यम्गृहः ज्कातव मः র্বতোভত্ত চতুরালিন্দ শোভি-ত।। প্রাক্ পশ্চিমানুগতে চ **भ्यावृ**षत्र विख्टो। यदानिः ন্দৌরুচক্যতো নচেৎস্যাদুত্তরা-मूथा। क्रांमर्लाशहीयमान य-वाणिकषयः शृद्र। তषक्रमान মিত্যাহ র্ন চেৎ স্যাদুত্তরামুখণ ।। मिक्कणानूगठालिक वयः यद পশ্চিমা মুখ । পূজনীযোত্তরো-क्षाय नन्गावर्छ वम्खि ७९।। উপর্যাপরি যদোহণ তদিচ্ছন্দক সংজ্ঞক মিতি বচনেষু স্বস্তিকা-দীনাণ ক্লীবন্ধ দর্শনাৎ স্বস্তিকা-দীনা পুণ নপু সকৰ মন্তব্য । এব यामिश्रारक्षी कृतक वर्षमा-भि **१ किया विश्व समूकः।** येखिः কঃ সৰ্বতোভজে রুচকো বর্দ্ধ-

गानकः। नन्त्रावर्डाम्य न्हांनि षात्रानिमापि एउपकाः ॥ देि **छत्र ।। का के वाक्यां खत्र यथा** ভবিষ্যোত্তরে। মেষাদি চন্দ্রে জাতস্য নৃপতেঃ স্যু রনুক্রমাৎ। **ছাদশৈব গৃহান্ বক্ষ্যে তেষা**• লক্ষণ মগ্ৰতঃ ৷৷ সুনন্দঃ সৰ্বতো-**ज्रा ज्रा**या नामीत्र्य उथा । वितामक विनामक विकरश विमन खथा।। त्रनः किन कि-যো বীরো দাদশৈতে প্রকীর্ত্তি-তাঃ। তলকণ যথা। ছৌ রাজ হস্তা বাষামে পরিণাহে তথৈব চ। ইত্যৰ• সৰ্বতোভদ্ৰঃ শুক্ৰ **म्हाम्याधित्मवका ॥ मानवा त-**ক্ষকা শৈচৰ পূজ্যা স্তে চাত্ৰ য-**ত্বতঃ। চতুর্দশা**স্য দারাণি রুফ চিত্রাবৃতানি চ ॥ পীঠপটাবৃ-তো ছেষঃ সর্বানিষ্টবিনাশনঃ॥ व्यव शिषा मशीभानः महीन् **म**जृन् निक्छि । मीर्घ २३ अङ् ২• ইতি সৰ্বতোভজঃ। ইতি युक्तिकंब्रह्मः ॥

সর্বতোভত্ত॰ ক্লী ব্যোৎসর্গ বত-প্রতিষ্ঠাদৌ পূজাধার মণ্ডলবি-শেষঃ। যথা শারদাযাণ। চ-তুরস্রে চতুংকোণ্ডে কর্ণসূত্র সম-

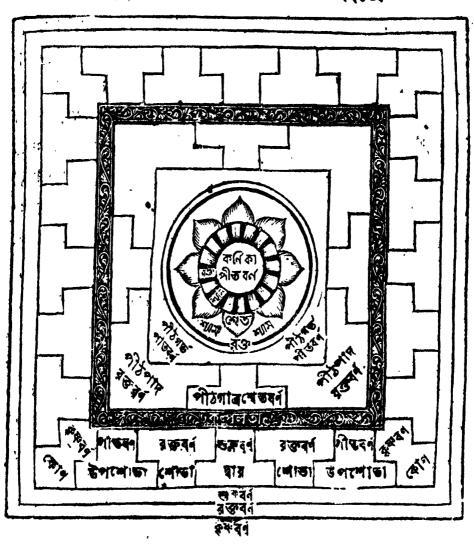
ৰিতে। চতুৰ্পি চ কোণ্ঠেষু কো-**भ**मृत्र हजू स्वयः ॥ स्वयः स्वयः यथा मध्या ज्या ज्या भाज्यकः था। প्रवाभन्नायल एव एव मञ्जी ৰাম্যোত্তরাষতে।। পাত্তবেতেযু मः मृज्य म्या मृज्य मृज्य । পূৰ্বৰ কোণ কোন্তেষু কৰ্ণসূ-ত্রাণি পাত্যেৎ।। তদ্বৎ ভূতেষু बद्दार्यु मृताद मृत्रुठजुरुयः। ততঃ কোন্তেষু মৎস্যাঃ স্যু স্তেষু সূত্রাণি পাত্রে ।। যাবৎ শত-ष्यः मञ्जी यद्शकामस्यानामा । তাবতেনৈব বিধিনা তত্ত্ব সূ ত্রাণি পাতষেৎ।। ষট্ত্রি॰শতা **शरिन र्या**रधा **लिएथ९ श**मा॰ मूलकः ণ । বহিঃপদ্ধ্যা ভবেৎ পীঠ পঙ্কিযুগ্মেন বীথিকা॥ দার-শোভোপশোভাসান্ শিক্টাভ্যা• পরিকল্পধেৎ। শাস্ত্রোক্তবিধি-না মন্ত্ৰী ভতঃ পদ্মণ সমালিখেৎ ৷৷ পদ্মক্ষেত্ৰস্য সংত্যজ্য দাদ-শাংশং বহিঃ সুধীঃ৷ তশ্বধ্যং বি-ভজেৎ বৃত্তৈ স্ত্রিভিঃ সমবিভাগ-ण्डः ॥ जामाः मा। १ कर्निकाञ्चाः ন॰ কেশরাণা॰ দ্বিতীয়ক॰। তৃ-তীয় পদ্মপত্রাণা মুক্তাণশেন मनाधकः॥ वाश्वृखाखदानमा

गात्नम विधिमा मुधीः। निशाय কেশরাগ্রেষু পরিতো ২র্জনিশা-क्द्रान्।। निषिषा मिक्किंग श्वानि তত্ৰ সূত্ৰাণি পতিষেৎ। দলাগ্ৰা-ণাঞ্চ যথান তন্মানাৰ্ভ নালি-(४९॥ जनस्रतान जमधा मृब-माज्यकः मूरीः। वानित्येषाः श रुखन मनाञानिः ममञ्रुष्टः ॥ দলমূলেষু যুগশঃ কেশরাণি প্র-कन्नरयंथ। कड्य माधात्रन त्था-ক্ত॰ পঙ্কজ• তন্ত্ৰবেদিভিঃ।। প मानि बीनि शामार्थः शीर्रका-(भ्यू मार्करष्य। अविभिरेकेः भ-रेम विधान शीठेगाजानि कात-श्वा शकानि वीथि मण्डानि मार्क्करंबद शक्राट्यमण्डः। निष्कृ দারাণি রচষেৎ দি চতুঃ কোঠ-रेक खथा।। भरेन खिंछि त्ररेष-কেন শোভাঃ স্যু দ্বারপার্শ্ববোঃ । উপশোভাঃ স্মূ ব্লেকেন ত্রিভিঃ कारें व्रवस्था अविधिरे পদ্ধৈঃ ষড্ভিঃ কোণানা স্যা-क्रज्येषः। त्रक्षरयः भक्षजि र्वः র্ণৈ শাওলং তম্মনোহরণ।। পীত॰ হরিজাচূর্ণ স্যাৎ সিত তণ্ডুল मः खरः। अमुखतूर्ग मक्रमः क्रमेः **मक्ष** भूलाकुष् ॥ विद्यामिशकुष्

শ্যাম ইত্যুক্ত বর্ণপঞ্চ । অ-बूटनाष्ट्रमध विखाताः नीमाद्र-খাঃ দ্বিতাঃ গুড়াঃ।। কৰিকা॰ शिष्ठरर्गन दक्षेत्रागुक्ररणन हो। শুক্লবৰ্ণানি পক্তাণি তৎসন্ধীন শ্যাৰলেন চথা ব্ৰজ্ঞসা ব্ৰঞ্জেৰ-শ্বদ্ৰী বদাপীতৈব কৰিকা। কে-শরাঃ পীতরক্তাঃ স্যু ররুণানি मलानानि ॥ मन्नयः क्रक्वर्गाः সুয়ঃ সিডেনাপ্যসিতেন বা। র-क्षरंबर नीर्रगर्जीन नामाः मु ররুণপ্রভাঃ।। গাত্রাণি তদ্য শু-ক্লানি বীথীৰু চতসৃষ্পি। আলি-**८**খे९ कब्रमिकिक प्रम भूष्म क वाशिकाः॥ चटेर्ग नानाविदेश नि रेजः नर्बमृष्टियत्नाष्ट्रताः। রাণি শ্বেতবর্ণানি শোভা রক্তাঃ সমীরিতাঃ ৷৷ উপশোভাঃ পীত-বৰ্ণাঃ কোণান্যসিতভানি চ। তি-স্থো রেখা বহিঃ কার্য্যাঃ সিত র ক্তাসিতাঃ ক্রমাৎ।। মণ্ডল॰ সর্ব-তোভদ্র মেতৎ সাধারণ স্মৃত ।। 🛊।। প্রকারান্তর বর্থা। চতু-রসাণ ভূবণ ভিত্বা দিড্যো দাদ-শধা সুধীঃ। পাতষেত্তত্ত্ব সূত্রা-ণি কোষ্ঠানা॰ দৃশ্যতে শত॰।। চতুশ্চদারিশাদাঢ়া পশ্চাৎ ষট্

विः भणाष्ट्रकः । क्लिक्टं श्रे अक्षा-स्वर भीठः भड़्या देनवाव वी-थिका ॥ बात्र माट्य यथा भृई-मूगरणाणा न मृग्य । जविन-रेक्टः भरमः अर्थार यज्ञिः का-गानि जञ्जविर ॥ विमधार भृई-वर भिषः वरः वा मखनः मृजः। इंजि जञ्जमाद्व ३ शतिर्ह्मः॥ कः॥

সৰ্বতোভত্তমণ্ডলস্য ৰূপণ ধথা।



नताना॰ শুভাশুভজানার্থ॰ চক্র বিশেষঃ। বথা। অথাতঃ म॰প্রব-ক্যামি চক্র॰ কৈলোকাদীপন॰। বিখ্যাত॰ সর্বভোভক্র॰ সদ্যঃপ্রত্য-ষ কারক॰।। উর্দ্ধুগা দশ বিন্যস্য তির্যত্রেখা শুথা দশ। একাশী-তি পদ॰ চক্র॰ জাষতে নাত্র স॰শ-ষঃ।। অকারাদি স্বরাঃ কোঠে-বীশাদৌ বিদিশি ক্রমাৎ। প্রদ-

किन कमाज्य खा एका किः भाख विभावतिः ॥ क्रिका निमि वि-खानि शृबा भानि निस्थ छ । मक्ष मक्ष क्रित्य व्यक्ती विश्व छि मश्य मश्य क्रित्य व्यक्ती विश्व छि मश्य मश्य क्रित्य व्यक्ति विश्व छ। म हे भ व छ। इति छ निक्का माः। न म छ कथा वाक्र गाः ग म म ह ना क्ष्या व्यक्त माः मुद्दा छ छ। या व्यक्ति श्राह्म क्ष्य छ।

बूटेंधः। त्रामरमा कामम स्रान्ता মেষান্তা দক্ষমার্গতঃ ।। শেষেযু क्लार्कटकट्यद॰ नन्मानिजिथिशकः ক । বারাণা সপ্তক লেখা ভৌ **যঃ সর্বতোভত্তপ্রকারঃ কথিতো** মধা। ধশ্মিদ্ধক স্থিতঃ থেট ন্ততো বেধত্রষণ ভবেৎ ।। গ্রহ-मृष्टितरमनाज वाम मिक्न मः मृ-খে। ভুক্ত ভোগ্য তথাক্রান্ত বিদ্ধা ক্রুরগ্রহেণ ভা ৷৷ শুভা-च्छट क्रांट्यायू वर्द्धनीयः श्रय-ञ्जठः। विकारम मिक्नमा मृक्षि वीमा ष्**रि**न्छ भीषुरग ॥ म॰मूथी मधा-চারে চ জ্ঞেষা ভৌমাদি পঞ্চকে । मृर्यामूकाः धराः नीषु। स्था চার্কে षिতीयगा। সমা खुতी-ষ্গে জ্ঞেষা মন্দা ভানৌ চতু-र्था । वकाः मुगः शक्ष्यकिर्व ष्ठिवका नगारुरा।। नवस्य দশ্যে ভানৌ জাষতে সহজা गििः। दामरेनकामरन मूर्या मछरङ मीघुठा॰ भूनः॥ त्रवि-श्रिकाः नकिष्णावासः नःशाव কর্মতে। ন তু রাশান্তরস্পর্শাৎ षिठीयामिनिक्य १०।। त्राष्ट्रकृ সদা বকো শীয়ুগো চন্দ্ৰভাষ্ক-

রৌ। গতে রেকস্বভাবদার্টেশা मृष्टि वयः मना।। क्रूता वका मः হাকুরাঃ সৌশ্যা বক্রা মহাশু-ভাঃ। স্যুঃ সহজন্বভাবস্থাঃ मिया कृतान्छ **भीषु गाः॥ घ ७** ছাঃ ষণঠা শৈচৰ ধক ঢা শছ ঝ ঞা স্তথা। এতল্রিক ত্রিক विक्व॰ विदेक्तः क প ভ देनः क्रमा ९ ॥ घ ७ इ। त्रोज्राम त्वरथ घ १ ठी অন্তগে এহে। ধক ঢাঃ পূৰ্বাষা-ঢাযা॰ থ ঝ ঞা ভাত্র উত্তরে ॥ व्रत्वो भरमो थरको टेठव ज्रदशो ণনৌ পরস্পর । একেন হি দ্বয় **एडर एडाएड** शह्दार४॥ अ-वर्गामि अत्रवत्मु एषक्रविधाय घ-रश काक्षर । यूव्यवर्गाष्ट्रांक त्वत्य অনুস্বার বিসর্গধোঃ ৷৷ অকারাদি यूग्रवर्गाञ्चकं व्यथवनन्त्रात्र विम-র্গুয়ো রেকবেধাদুভষবেধ ইত্য र्थः ॥ (कानस्थाकत्य। श्राट्या ज-ন্ত্যাদি পাদগে এহে। অকারা-দি চতুক্ষেষু বেধঃ পূৰ্ণতিখে তথা ॥ এकामि कृत्रदर्धन कल पूर-সা॰ প্ৰজাষতে। উদ্বেগশ্চ ভয়॰ হানি ব্যাধি মৃত্যুঃ ক্রমেণ চ।। ঋকে ভূমো ২করে হানিঃ স্বরে ব্যাধি র্ভধ ভিথে ৷ রাশৌ বিদ্ধে

गरावित्रः शक्षविएका न कीविं ।। একবেধে ভব॰ यूट्स यूत्र्यत्रः ध ধনক্ষয়:। ত্রিবেধে তু ভবেন্তকো मृज्रु (वंशवज्येत्य ॥ मृखिवास উদাহরণ মাহ। ভরণ্যকার বৃষ-**७॰ नमा॰ जजा॰ जूनाक ७**॰ । विभाशाः रुद्रिछः विरशाम्अर व्यादाय मन्द्रिजः ॥ উनार्त्रण-ন্তর মাহ। বং যুগ্ম মৌস্বরং ক-ন্যাণ রেফণ স্বাতী মুকারকণ। অ শ্বিনী রোহিণীস্থে ২ভিজিন্ত भ्वतः भद्रिष्ट्विशः **स्था** मृक्षेकः माः ब्हूतां खथा मोगाः ७७-প্রদাঃ। কুরযুক্তঃ পুনঃ সৌম্যো एक्यः कृतकलक्षमः ।। **जर्क**रवरम মনস্তাপো জব্যহানিশ্চ ভূসুতে । রোশপীডাকরঃ সৌরী রাছ কেতৃ চ বিদ্নদৌ ।। চক্রে মিঞ্ কল॰ পু•সা• রতিলাভশ্চ ভার্গ-বে। वृश्रवाद्य ভবেৎ প্রজ্ঞা জी-**वः मर्बश्चन्ध्रमः ॥ यद्मज्दः** বল পূর্ণ পাদোন মিত্রভে গ্র-হে। অৰ্দ্ধ সমগৃহে প্ৰোক্ত পাদ শত্গৃহে স্থিতে ৷৷ ইদঞ্ সৌম্যক্রাণা বল স্থানবশাৎ गमः। এতদেব ফল विक्ति मो देगाः कृटेत विश्वायायाया ।। श्र-

नत्वधमभात्यागार यरमःथाः জাষতে বলং। তৎসংখ্য বেধ্য-বস্ত্না ফল জ্ঞেষ শুভাশুভ ॥ मृक्तिंशीतन भूनत्वंत्य न मा। কিঞ্চিৎ শুভাশুভ । এহাঃ সৌ-म् । उथा कृता रकाः भीखाक নীচগাঃ॥ স্থানঞ্ বেধ্য মিত্যো-व॰ वल॰ छाषा कल॰ वरमः। व-ক্রগ্রহে ফল দ্বিম ত্রিগুণ স্বো-চ্চস-স্থিতে॥ স্বভাবজ ফল শীঘুে নীচম্খে ২ৰ্দ্ধফলো প্ৰহঃ ৮ তিথিরাশ্যংশনক্ষত্রণ বিদ্ধা জূ-রগ্রহেণ যৎ।। সর্বেষু শুভকা-र्यायु वर्ष्करपख धयञ्जठः। न নন্দতি বিবাহে চ যাত্রাযাণ ন নিবর্ত্ততে ৷৷ রোগান্ন মূচ্যতে রো-গী বেধবেলাক্তোদ্যমঃ। রো-গকালে ভবেদ্বেধঃ ক্রুরখেচর সম্ভবং ৷৷ বক্রগত্যা ভবেমৃত্যুঃ শীঘ্রে জাপ্যরুজান্বিতঃ। বেধ-ञ्चारन রণে ভঙ্গে। দুর্গে খণ্ডিঃ প্রজাষতে ৷৷ কবিপ্রবেশন তত্ত্র যোগাঘাতশ্চ তত্র বৈ। কবি **(**क्होत्रदशका। युवं शूर्वानिकाः श्रीषा॰ वृषद्वानगामित्रगा द्रविः ॥ **দা দিগন্তমিতা জ্ঞেবা শেষা** खिनुः मानिषाः। नेगानकाः

পরাঃ প্রাচ্যা জেষা বাষ্যা কথা-গ্রিগাঃ ॥ ⁄বৈশ্বস্থান্চ বারুণাণ বাষব্যা॰ সৌম্যগা মতাঃ। নক্ষ-वाि खत्रा वर्ग त्रान्य खिथत्या मिनः ॥ ए**छ म**र्द र জ্ঞেষা ষত্ৰ ভানু দ্ৰিমাসিকঃ। नकटा श्रेष कका वर्ष शनिः শোকঃ স্বরে ২ন্তগে ॥ রাশৌ বিদ্ন স্তিথৌ ভীতিঃ পঞ্চাস্তে ম-রণ ভবেৎ। যাত্রা যুক্ত বিবা-मन्त कात्रः श्रामामस्त्रारयाः ।। ন কর্ত্তব্য শুভ চান্যদন্তাশা-ভিমুখণ নরৈঃ। অস্তাশাযাণ স্থি-ত যাস্যা নামঃ প্রথম মক্ষর ।। স আৰ্ত্তঃ সৰ্বকাৰ্য্যেষু জ্ঞেষো रेमवरुटा नक्षः। करतो कार्छ তথা ছন্দ্ে চাতুরঙ্গমহাবলে।। বৰ্জ্যা শ্চাস্ত গতা ষোধা যদীচ্ছে-দ্বিজ্বণরণে। নক্ষত্রে ২ভ্যুদিতে পুষ্টি বর্বে লাভঃ স্বরে সুখ ।। রাশৌ জয স্তিথৌ তেজঃ পদা-প্তিঃ পঞ্চোদষে। প্রশ্নকালে **ভবেদ্দি॰ रह्मग्र॰ कुর**(४०देतः ॥ তদুষ্ট॰ শোভন॰ সৌমৈ শ্বি লৈ শিশ্ৰফল ভবেৎ। গ্ৰহা-বিদ্বান্ত যলগ্ৰ ফল লগ্ন স্বভা-বতঃ৷৷ জ্ঞাতব্য শীক্ষিতে কেন্দ্ৰে

क्षिक क्षत्रामिकः। नीर्ता-मरव जो माविनाभवर्ग नर्थान-বা সৌমাৰুতে শুভ স্যাৎ 1 অতো ২ন্যথান্থে তু তদন্যথান্থ मिख विभिटेख द्रिक वनाटेगः 11 কেন্দ্রোপগা নব্যপঞ্
য়গাশ্চ मोगाः क्यायेवकं मण-ভা জ্ঞাষ ষষ্ঠ সংস্থাঃ ৷ সর্বার্থ সাধনকরাঃ পরিপৃচ্ছতা স্যু রেভি বিশর্যাষগতৈস্ত বিপর্য্য-यः माष् ॥ वधारिनात्था यि কেন্দ্রগঃ স্যাৎ তন্মিত্র মেতস্য চ কেন্দ্ৰগন্ধা ব্যধাষ্ট কেন্দ্ৰগন-পহায পাপা অন্যত্র যাতা যদি তছভ স্যাৎ।। আদ্যো লগ্না-ধিপীঃ কার্য্যে লগ্নে কার্য্যাধিপো यि । विकीरमा नगरमा नरभ कार्या कार्याधित्या यनि ॥ ल-গ্নপঃ কার্য্যপ শ্চাপি লগ্নে ষদি তৃতীষকঃ। চতুর্থ: কার্যাপৌ मााजा॰ यमि नग्ने कार्यार्भी ॥ कार्यामिकि उमा एउसा मिज्रिक-मिक भठा এव मुस्कित्ना-জ্জেষ कन ठइक्रज्केष ॥ পূর্ণনাডীস্থিতো দূতো ষৎপৃচ্ছ-তি শুভাশুভণ। তৎ সর্বণ সিদ্ধি মাপ্নোতি শুন্যে শুন্য সমীরৰে

॥ जातो भूनागठः शृत्कृषः भः क्ता श्र्वा वित्नामानि। जमा म-वार्थनिकिः माष् वात्म वामः न म॰ भवः ॥ श्रामश्रादमकात्म (ह-দ্তো জন্নতি বাঞ্তি। তস্যা-र्थः त्रिक्षि याद्याकि निर्गत्य ना-ন্তি সুন্দর ।। উদ্ধৃবামাগ্রতো দতো জ্ঞেষো বামপথক্তিঃ। शृत्रे मत्क छ्याध्छाप्नकवादशे গতো মতঃ।। যাত্রা দান বিবা-হেষু বস্ত্রালকার ভূষণে ৷ শুভে कर्मान मक्ती ह खोरतम वामगः শুভঃ॥ কলহ দ্যুত যুদ্ধেষু স্নান ভোজন মৈথুনে। ব্যবহারে ভ যে ভঙ্গে দক্ষনাডী প্রশস্যতে ॥ ক্রুরৈ রুভযতো বিদ্ধা যস্যাক্ষর তিথিস্বরাঃ। রাশি র্ষিট্যঞ্চ প-ঞাপি তস্য মৃত্যু ন সংশয়ঃ ।। मखन नगत जात्मा मूर्ग ल-वालय॰ भूतः। क्ट्रित ऋखयरा বেধে বিনশ্যন্তি ন সংশযঃ ৷৷ ক্লত্তিকাযাণ তথা পুষ্যে রেবত্যা-ষ্ণ পুনৰ্বসৌ। বিন্ধে সতি ক্ৰমা-ষেধো বর্ণেয়ু ব্রাহ্মণাদিষু।। তৌ-ল্যু॰ ভাণ্ড॰ রুসো ধান্য• গজা-श्वापि ठजूलामाः। नर्बः यहार्घः তা॰ ৰাতি বাবৎ জুরব্যধে স্থিত:

গ্রহ্মত্তবং। তস্য মৃত্যু ন সপ্রহ্মত্তবং। তস্য মৃত্যু ন সশেহো রোগাদ্বাথ রণাদিনি ।।
সূর্যাভাৎ পঞ্চম ধিন্টা জেবং
বিদ্যুনুধাভিধ । শূলকান্টমক
প্রোক্ত সমিপাত চতুর্দিশ ।।
কেতু রন্টাদশ প্রোক্ত মৃদ্ধা
স্যাদেকবি শতি । দ্বাবি শতি
তম কম্প ত্রেমাবি শক্ষ বজ্
ক ।। নির্বাতক্ষ চতুর্বি শ মুক্তা
অন্টাবুপগ্রহাং। প্রস্থানে বিম্না
দাং প্রোক্তাং সর্বকার্যেষু সর্বদা
।। ইতি সর্বতোভদ্রক । ইতি
জ্যোতিষতত্ত্ব ।। গ্রা।

সৰ্বতোভডচক্ৰস্য ৰূপণ যথা।

	* 4	W	****	•		* *	* *	,	W.			
	۲"	4	* **	ৰ	4	इ	.	৾উ	מל			
উত্তর	5	न	. , a ,	ब् यः	गिथ्मः	कर्वकरे	22	¥	55			
	સા	F	যেৰ	'9	नक्	8	বি° ₹ঃ	व	25			
	२७	ग	भीव	রিক্তা	બૃ લ્	७ षु1	কনসা	প	20	मिक्श		
	२०	"	क्ष:	च:	জয়া	- আ	ভূলা	্ব	23			
	₹8	গ	À	मकब्रः	शन्ः	বৃশিকঃ	9	8	74			
	२७	**************************************	থ	₹	6	য	म	₹1) ७			
	क्र	२२	0	२५	२०	79) ৮	79	1 87			

পশ্চিম

मर्वा छा अर्थः निष्ठवृष्णः। ইछा - बली।। व॰ मः। ইछि मक्ति छि । विद्या विद्या । विद्य

	·	ر با اور دار دارد این این در در	£	*				
দ	4 3	*	्षा	41	7	কা	म	
41	本	সা	ष	प	সা	4	71	
¥	मी	₹.	ৰ)	বা	₹	সা	ं ब	
ंग	₹	41	घर	¥	বা	¥*	a 1	

ইতি সর্বতোভদ্রচিত্রকাব্য । ইতি মাঘে ১৯ সর্গঃ।। অস্যার্থঃ।

नकाद्वि । भूनः कीवृनी का-द्रा वर्ष निम्हत्य ह वटन यदन রতাবপীতি বিশ্বঃ। সকারাঃ স ষত্নাঃ সোৎসাহাঃ নানা নানা-বিধাশ্চ ষে আরাঃ অরীণাণ স মূহাঃ ভিকাদিভ্যো ২ণ্। তেষা॰ কাসা গভিভেদাঃ কাষা বিগ্ৰ-रान्छ (ययाः। नामः ममञ्जीि সাদদাঃ নাশকারক সাষকা ষস্যা॰ সা তথোক্তা। রসেন রা-रगनाहरवा यम्राः मा त्रमाहवा রণরাগিণীত্যর্থঃ। বাহসারাণা॰ वार अर्थाना॰ य नामा द्वारा **घाषा एउषा॰ वाम॰ कलइ॰ म**-माञीजि वाममानि । रेजः मश कलश्यमानानि वापनानि वा-मांनि यमा भा वाह्मात नाम বাদদ বাদন।। ভূর্যবাদ ঘো-

ষেতার্থঃ। অতএব তেষাণ তৃলাতোক্তে রতিশ্যোক্তিঃ। সর্বতো ভূমণাৎ সর্বতোভ্যাখ্য
শিচত্রবন্ধঃ। অতএব দন্ডী। তদিদণ সর্বতোভ্যাণ ভূমণ যদি
সর্বত ইতি। উদ্ধারস্তা। চত্যুকোঠে চত্রস্বাদ্ধে পাক্চত্র্
ইয়ে পাদ চত্র্যুণ বিলিখ্যানস্তান্ধ
রং পাক্চত্রইয় লেখনে প্রথান্ধ
নাস্ চতস্যু প্রথমপাদঃ সর্বতো বাচ্যতো এবং দিতীয়াদিয়্
দিতীয় ইত্যাদি। ইতি তট্টীকাযাণ মল্লিনাথঃ।।

সৰ্বতোভদ্ৰ। স্ত্ৰী গন্তমরী॥ নট-যোষিৎ। ইতি মেদিনী॥ সৰ্বতোমুখ ক্লী জলণ। ইত্যমরঃ ॥ আকাশণ। ইতি মেদিনী॥ मर्बाष्ट्रामूथः पूर भिवः॥ बन्ना॥ मर्बमूःथक्यः पूर याकः। ইতি वाजा। ইতি মেদিনী॥ वाकः नः। ইভि भक्तत्रप्रावनी ॥ वर्गः । रेडि नक्याना ॥ व्यक्तिः। यथा ৷ সৰ্বতঃ পাণি পাদক্তিঃ সৰ্বতো शकि निरद्रा मूथः। विश्वकरिंग মহানিমিঃ প্ৰণীতঃ দৰ্বকৰ্মসু।। रेडि डियामिडस्य हा विश्वनर नयसः॥

मर्वत वा मर्विषक्षिणकारण। रेषि भक्त्रज्ञावनी।।

সৰ্বত্ৰগঃ পু॰ বাৰুঃ॥ সৰ্বত্ৰগাৰি-নি ত্রি। ইতি বক্সমাণ শব্দদর্শ-नाष्।।

সৰ্বত্ৰগামী পু• বাযুঃ ৷ ইভি শব্দ **চ**क्षिका।। **म्हिंग्लिकात्व श** মনকর্ত্তরি ত্রি 11

সর্বথা ব্য প্রতিক্তা।। ভূশ ।। **(रुजुः। देखि भय्तद्रद्वावनी ॥** সৰ্বপ্ৰকার•। ইতিব্যাকর•।। সর্বদ্যনঃ পু• ভরতরাজঃ। সতু

শঙ্গভাপুত্রঃ। ইতি ত্রিকাও শেষঃ ॥

गर्बमर्गी भू वृक्षः। ইতিশ্বরত্না-वनी॥ मकनमर्भनकर्खति जि॥ সর্বদা ব্য সর্বন্মিন্কালে। ইত্য-यतः ॥

ट्यह्यः॥ मक्लशीषानागण्ड नर्राप्तरमूथः पुः जिताः। ইতি জটাবর: ৷৷ সৰ্বজ্ঞ তি সৰ্বস্পুজকঃ। স-ৰ্বানকতি ইত্যৰ্থে দ্বিপ্প্ৰত্যবে-न निष्पन्नः। ইভিব্যাকরণ ॥ नर्वशाती जी कानहक्रमा बादि॰ শ্বর্যঃ। ইতি কেচিৎ।।

সর্বধুরাবহঃ) পু• সকলভারবাহ-मर्वभन्नीयः र् कः। तथलाकलानी-না ভারবাহকগবাদিঃ। ইভ্য-बद्धः ॥

সর্বন্দমঃ পুণ ভরতরাজঃ। স তু শঙ্গন্তলাপুত্রঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ मर्देशा जी द निवाक्शश्री। दें ि কেচিৎ।৷ সৰ্বরক্ষণ পানকর্ত্তবি ত্তি ৷৷

गर्बभूवंश की नजादः। देखि ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥

गर्वथिषः वि मक्षजनवन्न ७:। সংৰ্ষাণ জনানাণ সৰ্বস্য শিবস্য চ প্রিষ ইতি ষঠীতৎপুরুষসমা-সেন নিষ্পায়ঃ ৷৷

সর্বভক্ষা জ্রী ছাগী। ইতি ছেম-চন্দ্রঃ।। সর্বজ্ঞশণকর্ত্তরি তি ।। नर्वभनना जी मूर्ग। देजामतः॥ অস্যা বৃহৎপত্তি ৰ্থা ৷ সকল মোক্ষবচন চা শব্দো দাতৃবাচ-कः। সর্বাম্মোকান্ বা দদাতি मा এব সর্বমঙ্গলা ।। হর্ষে স म्मानि कला। (१ मन्नल॰ भित्रकी র্ত্তিত। তান্দদাতি চ या দেবী मा এব मर्बमक्ला।। ইতি बन्धः বৈরর্ত্তেপ্রকৃতিখণ্ডে ৫৪ অখ্যায়ঃ ।। ज्रिष्ठ। मृद्यक्लम्कन्त मर्भूनाम्वर्गवाहकः। আকা-রো দাতৃবচন স্তম্মাৎ সা সর্ব मक्रमा।। देखि बन्नरेवदर्ख 🗐 কুফজন্মখণ্ডে সৰ্বমঙ্গলাস্তোত্ত २१ व्यथायः ॥ अनाकः। नर्वावि श्रमश्रानि भन्नवानि শুভानि ह । দদাভি চেপ্সিভান্ লোকে ভে-न मा मर्वमक्ता। देखि प्रवीः भूतार्व ४६ जशायः ॥

নৰ্বনয় তি সৰ্বাত্মকঃ।। সৰ্বশ-কাৎ নষট্ প্ৰত্যামেন নিষ্ণালঃ।। নৰ্বমূল্য ক্লী কপৰ্দকং। ইভি ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ।।

নৰ্বসূষকঃ পু• কালঃ। ইতি হেম চন্দ্ৰঃ।।

নৰ্বসং পু• ধুনকঃ। ইত্যমরঃ । বাদ্যভাগু•। তজু বীণাভে• দঃ। ইতি মেদিনী॥ সুরী। প• खिङः। ইতি শব্দরত্বাবলী ।।

गवग्रमः। ইতি হেমচন্দ্রः।।

সর্বরসোভ্যাঃ পু॰ লবগ্রসং।

ইতি হেমচন্দ্রং।।

সর্বরাজঃ পু॰ সমস্তরজনী। ইতি
।।

সৰ্বরী জ্রী শর্বরী। রাজিঃ। ইছি
বক্ষামাণ শক্ষদর্শনাৎ ।।
সর্বরীকরঃ পু চন্দ্রঃ। ইভিধরশীতি কেচিৎ ।।
সর্বর্তুপরিবর্ত্তঃ পু বৎসরঃ। ইভি
জ্ঞানিরঃ ।।

गर्बर्ष्कण की गरुनर्द्काछ-कन । यथा। गर्बर्ड्क्रम्याकी-त्नं गर्बर्ड्कनत्नान्जित्व । स्ति-ह्वावक्रमाकीर्त्व मसानकदना-वृत्व ॥ देखि जित्याभूतात्व नि-वृत्व ॥ देखि जित्याभूतात्व नि-

मर्वत्रक्षनकरिंग क्री करिटिंग सः
। स्था। निर्माः स्रञ्जासनः हेळ्
छूर्नः जामान्यकर्ताः। इञ्चः मचा
निर्मा गीर्व्य भगाठं करिन हिछः॥ रमाभि छस्ति विश्विक्य करहः मर्वत्रक्षनः। सम्रजः मास्या
पूर्वः जम्मर्थः नाजिनस्र छः॥ निछिर्छ क्रग्छाः नार्थ छस्न ह जन्मारिनि । जीजास स्रक्षः

কৰ্ত্তে চ মধুকৈটভবো ভ্ৰাৎ ॥ ষোগনিজোবাচ। দূরীভূত স क्र ভষ• ভষ• কিন্তে মধি স্থিতে। স্থিতাযাণ মধি চ ব্ৰহ্মন্ সুখী ভিষ্ঠ জগৎপতে॥ 🛊 ৷ শ্রীহরিঃ পাতৃ তে বজু॰ মন্তক॰ মধুসূদনঃ। শ্রীকৃষ্ণ শ্চকৃষী পাতু নাসিকাণ রাধিকাপতিঃ।। কর্ণযুগ্মঞ্চ ক-ঠक কপাল পাতু মাধবঃ। ক-পোল পাতৃ গোবিন্দঃ কেশা **ষ্ঠ কেশবঃ স্ব**য়ণ।। श्रयीत्करमा मखन कि गमा গ্রজঃ। রামেশ্বরশ্চ রসনা তা-লুক বামনো বিভুঃ দ বক্ষঃ পাতৃ মুঙ্গন্দ স্তে জঠর পাতৃ দৈত্যহা। জনাৰ্দ্দন: পাতু নাভি• পাতু বিষ্ণু শ্চ তে হনু ।। নিতম্বৰুগা ওঞ্-ঞ্ পাতু তে পুরুষোত্তমঃ। জানু যুগ্ম· জানকীশঃ পাতৃ তে সর্ব मा विजूः ॥ श्ख्यं या नृभिःश्मा পাতু সৰ্বত্ৰ শঙ্কটে। পাদযুগ্মণ বরাহশ্চপাতু তে কনলোম্ভব ।। উদ্ধে নারাষণঃ পার্তু অধস্তাৎ কমলাপতিঃ। পাতুপূৰ্বে চ গো-भानः भाजू रङ्गो मभागाश ।। वनमाली পाजू सामाा देवक्र थेः পাতু নৈৰ্খতে। বাৰুণে বাসুদেব

क পাতু তে জলজাসন।। পাতু তে সম্ভত মজো বাষব্যা• বিষ্টর-শ্রবাঃ। উত্তরে চ সদা পাতু সো **২নস্তো**খনস্তকঃ স্বৰণ। ঐশান্যা মীশ্বরঃ পাত্ সর্বত্ত পাতৃ শত্র জিৎ । कल इत ठाउँ दौरक निषा-याः भाजू माथवः॥ 🛊॥ 🛮 हेट्डाः वः कथिछः बन्धन् कवष्टः शत्रभाम्-जुष्ण । **क्र**रकन क्रथरा मखः स्मृ তেনৈব পুরা মধা।। শুজেন সহ मः आत्म निर्वाक स्वात्रनाकृत्व। গগণস্থিতো যঃ সদ্যঃ প্রাপ্তি মা-ত্রেণ শক্তিতঃ।। কবচস্য প্রসা-**राम धत्र गा॰ পতি**তো মৃতঃ। পূ-ৰ্ব॰ বৰ্ষগত থে চ ক্ৰত্বা যুদ্ধ ভ यावर ।। मृत्य छत्य ह त्यावि-मः क्रे भानू र्गगत दिखः। भानाः ঞ্চ কবচ দ্বা গোলোক সজ গাম হ।। কলান্তরস্য বৃত্তান্ত ক্লপষা কথিত মুনে। আভ্যাণ তব ভষ• নাস্তি কবচস্য প্রভাব-ण्डा। काष्टिमः काष्टिमा नकी यशा मृखी क नई नः। जर्भ रति-ণা সার্দ্ধ॰ কল্পে কল্পে স্থিরা সদা।। हेर्जुञ्जा करहः पदा সास्त्रीतः চকার হ। নিঃশঙ্কো নাভিকম-ल जरहो म कमला खरः ॥ 🛊 ॥

সুবৰ্ণগুটিকাষাম্ভ ক্ৰছেদ কবচ পর । কঠে বা দক্ষিণে বাহে वद्गीया थः मूधीः मना ॥ विया-গি জল শত্ৰুভ্যো ভষ তস্য ন বিদ্যতে। জলে হলে চান্তরী-কে নিজাষা রক্তীশ্বরঃ।। সং-আমে বজুপাতে চ বিপত্তৌ थानमक्टि। कवह मात्रनाटनव मामा निःमङ्ग्जाः बद्धः ॥ বন্ধেদ কবচ কঠে শব্দর স্ত্রি-পুর পুরা। জঘান লীলামা-ত্রেণ দুরস্ত মসুরেশ্বর ।। বঙ্গে-प॰ करा कानी त्रक्तवीक b-थाम ना। मश्तुभीर्या शृरवम॰ বিশ্বণ ধত্তে তিল• যথা ৷৷ আবা৽ नन १ क्या तुम्ह धर्माः नाकी ह कर्माण । कव्हमा अमारमन नर्बे कि किरिना वयः ॥ नामा न-मिलिनाः कर्छ ज्ञाम क्वरः षिकः। আত্মনঃ কবচ কঠে मधात ह इतिः अयः॥ প্রভাবः ক্থিত সৰ্ব ক্বচ্চ্য হরে স্তথা । অনন্তদ্যাচ্যতদ্যৈৰ প্ৰভাব भजून भूतन ॥ ३ छि **उँक**रिव वर्र्ड শ্রীকৃষ্ণজন্মখণ্ডে ১২ অধ্যামঃ।। সৰ্বলা স্ত্ৰী তোমরঃ। ইত্যমরঃ॥ সৰ্বলিন্ধী পুণ পাষ্ডঃ। ইত্যমরঃ।

।। एव रवमविक्रकाठादत्रयु मर्बवर्ग विद्वशातियु तोक क्लनकामियु । পাপ॰ সম্বন্তি দদতি পাষ্ডাঃ मनीवानिषाद माध्य मृर्क्तग्र म-(शा २४॰। मर्दियां॰ वर्गाव्यमां-ণা॰ কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ লিঙ্গ মস্ত্যো-ষা মিতি ইন্। ইতি ভরতঃ ॥ मकलिइशाति बि॥ সৰ্বলী স্ত্ৰী তোমরঃ৷ ইতি শব্দ-त्रष्ट्रावनी ॥ नर्बलारः प्र लोरमयवानः। यथा। अक्ष्याः मर्दलारम নারাচ এষণশ্চ সং। ইতি হেম-ठखः ॥ मकलश्राजुम्ह ॥ সৰ্ববৰ্ণিকা স্ত্ৰী গম্ভাৱীবৃক্ষঃ। ইতি জটাধরঃ ৷৷ সৰ্ববন্ধভা স্ত্ৰী অসতীনারী। ইতি धत्रनीि कि कि ।। मकनि अरिय ত্রি 11 সর্ববিৎ পু॰ পরমেশ্বরঃ। যথা। यः गर्दछः गर्दिक यमा छान-ময় তপঃ। তক্ষাদেতৎ ব্ৰহ্মনা-विकाधिकादत्र मिदत्रामिशः॥ সৰ্ববেদঃ পু॰ সৰ্ববেদাধ্যেতাত্ৰা-ন্ধণঃ। ইতি কেচিৎ।। সৰ্বজ্ঞে ত্রি नर्वत्वनाः भू नर्वयम्बिग्यात्भा

नर्न न लंबन्छ गडन्छ । वित्य है जि नवेंदनगढ विष न गाएं का छार जा मृतिक चन । ইভি ভরতঃ।। नर्वत्वा भू नहेः। ইতি दिन **ठ**खः॥ সকলবেশধারিণি ত্রি॥ সর্বশান্তিরূৎ পুণ ভরতরাজঃ। म ज् ममखनाभूखः। ইভি मय-রত্নাবলী॥ সকলশমকারকে ত্রি সর্বদঙ্গতঃ পু॰ ষষ্টিকাধান্য । रे विभक्त स्थिका ॥ जनवज्ञ **िय:क जि ॥** नर्वन मर्गनदण की अस्त्रक । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥ मर्वममञ्नार्थकः भू **छ**ञ्जन्देमः ন্যসন্নাহঃ। তৎপ্ৰ্য্যায়ঃ। সৰ্বা-ভিসারঃ ২ সরে। খ্রঃ ৩। ইত্য-মর: 11 সর্বসন্নহন অর্থে ২ভি-ধেষ মস্য। সর্বৈ রভিস্থিতে **২ভিমুখ গম্যতে হনেন সর্বা**-ভিদার: করণে যঞ্। সর্বেষাণ ওঘো বৃন্দ মত্র সর্বো খঃ। ইতি ভরতঃ 🛚

मनावार प्रतिप्रा रि काष्याः मनगरनकः ॥ नवेगरः प्र छश्चनः। रेछि तक्क गाना ॥ गकनगरिको छि ॥ गर्दिकिः प्र श्रीकनः। रेछ भक्तिकिः प्र श्रीकनः। रेछ भक्तिका ॥ गकनगारनकः ॥ गर्दकः की गगूनायथनः। यथा । छत्रत्व मक्तिनाः मन्। १ श्री छाका-य निर्वाद्यता । गर्दकः वा छम्किः वा छम्किः वा छमाद्ध्या ॥ रेछि छन्नगतः॥

সর্বস্থী পু॰ বর্ণশঙ্করবিশেয়ঃ। স তু গোপকন্যায়া॰ নাপিতাজ্জাতঃ । ইতি ব্রশ্ধবৈর্ত্তে ব্রশ্বথে ১০ অধ্যায়ঃ।।

সর্বহিত ক্রী মরিচণ ইভিরাজন নির্ঘণীয়া সকলহিতকারকে ত্রি সর্বক্ষারঃ পুণ ক্ষারভেদঃ। সাবান্ ইভি ভাষা। ইভি কেচিৎ।। তৎপর্যায়ঃ। বছকারঃ ২ সমৃত্রকারকঃ ও স্তোমক্ষারঃ ৪ মত্রকারঃ ৫ মলারিঃ ৬ ক্ষারমেলকঃ ৭ অস্য গুণাঃ। অভিকারত্ব। চক্ষ্যাত্বণ। বস্তিশোধনত্ব। উদাবর্ত্ত ক্রমিনাশিত্বণ মল বস্তা বিশোধনত্বক। ইভিরাজনির্ঘণীঃ।

विक की मुक्काव्यवः। स्था।

त्म नवश्राहाः जाशाम मखकः रेक्षव नर्विष्ठ विमालकाः॥ रेजि **ख्यीलाञ्ख नवश्रक्वरः** ॥ त्रवाकम्मत्रत्रमः भूः अवश्वित्मः ষঃ। যথা। রস গন্ধক তুল্যা --ला को खारगी हेन्ननम ह। মৌক্তিক বিক্রমণ শন্ধ মবনীয সমাণ্শতঃ॥ ছেমভত্মার্দ্ধ ভাগ-ঞ্চ সর্বণ খল্লে নিধাপযে । নিযু-অবদ্য যোগেন পি**ষ্টিকা** কার-विश्विक्।। शन्हाद गङ्गभूषे ममार्थ भौठनक ममूक्तद्र । হৈগভস্মসম তীক্ষা তীক্ষা-র্দ্ধো দরদো মতঃ।। একীফ্লত্য সমস্তানি সৃক্ষচুর্ণানি কার্যেৎ । ७७: भूका अन्नरीं जन रवर निवरम छ:छ॥ मर्वाक्रम् ন্দরো ছেষ রোগরাজ নিরুন্ত-নঃ। বাত পিত্ত ছরে ঘোরে সন্ধিপাতে সুদারুলে ৷৷ অর্শস্সু वार्गीदारा स्यार श्राम छग मत्त्र। निरुष्ठि वाष्ठकात्नागान् ষ্ক্রৈত্মিকা॰শ্চ বিশেষতঃ।। পিপ্ল-को मधूम॰यूक• यृ**ठ**यूक मथा• পি ব।। ভক্ষেৎ, পর্ণখণ্ডন

निज्या हार्कटक्य वा ।। अपूर् हिन्दु होर्कट श्रास्ट्र ह विट्य-यकः। त्रयत्र प्राप्त त्रास्ट्राकः नि-स्त्यारमा त्रत्याख्यः।। त्रास्ति-या हिन्दू रेक्नामः नवशाणः वि-या हिन्दू रेक्नामः नवशाणः वि-या हिन्दू रेक्नामः नवशाणः वि-या हिन्दु रेक्नामः । हिन्दु रेक्नामः विन्यु सम्बद्धमः। हिन्दु रेक्नामः त्रवावनी।।

সর্বাদীণঃ ত্রি সর্বাব্যবসম্বন্ধু জঃ। সর্বাব্যবব্যাপ্তঃ। যথা।
বদান স্তন্ত্রকনিভে সর্বাদীণে
তন্ত্রটো। কাণ্ডীরঃ থান্দ্রিকঃ
শান্ধি রক্ষন্ বিপ্রাণ্সন্ত্রবান্
়। ইভি ভটৌ ৪ সর্গঃ।।

সর্বাণী জ্রী দুর্গা। ইত্যমর: ।।

অস্যা বৃহৎপত্তি র্যথা। সর্বাধ্যোক্ষণ প্রাপষতি জন্ম মৃত্যু জরাদিকণ। চরাচরাণশ্চ বিশ্বস্থান্
সর্বাণী তেন কীর্ত্তিতা।। ইতি
বন্ধবৈবর্তে প্রকৃতিখণ্ডে ৫৪ অধ্যায়: ।।

সর্বানুকারিণী স্ত্রী শালপর্ণী। ইতিরাজনির্ঘন্টঃ।।

সর্বানুভূতিঃ স্ত্রী শ্বেভত্তিবৃতা।
ইত্যমরঃ ।। চতুর্বিংশতি ভূতার্হদস্তর্গতার্হন্তেদঃ ।। চতুর্বিংশতি
ভাব্যর্হদন্তর্গতার্হন্তেদশ্চ। ইতি
হেমচন্দ্রঃ ।।

সৰ্বান্নভক্ষকঃ ত্রি সকলান্ধভোজী । তৎপর্য্যাযঃ। উদরপিশাচঃ ২ সৰ্বাদীনঃ ৩। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ।। সৰ্বান্নভোজী ত্ৰি সৰ্বেয়া মন্নভ ক্ষকঃ। ইত্যমরঃ॥ সর্বপ্রকার মভককঃ। ইতি কেচিৎ।। স ৰ্বেষাণ চতুৰ্ণাণ বৰ্ণানা মেবান্নণ ভুঙে সৰ্বামভোজী। ইতি ভ রতঃ ৷৷ সৰ্বাদ্দীনঃ ত্ৰি সৰ্বাদ্মভোজী । ইত্যমরঃ ॥ সৰ্বাভিসন্ধী পু• বৈডালত্ৰতিকঃ৷ ছদ্মতাপসঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ।। সকলাভিসন্ধানবিশিষ্টে ত্রি।। স্ৰাভিসারঃ পু• চতুরঙ্গদৈন্যস-মাহঃ। ইত্যমরঃ॥ অস্য পর্যা-যঃ সৰ্বদন্ধহনশব্দে জফব্যঃ॥ नवार्थनाधिका जी मूर्गा। यथा। मर्वमक्रल मक्रला भिरव मर्वार्थ माधितक। नंत्रत्या बाग्रतक रशी-রি নারাযণি নমোস্ত তে।। ইতি मार्क (अटब मितीमाहा आ ।। म-কলপ্রষোজনসাধকে ত্রি ৷৷ नबार्थानुमाधिनी खी मूर्गा। यथा । धैर्मामीन् हिन्डिठान् यत्राष সৰ্বলোকেষু যক্ষতি। ততে। प्तरी नमार्थाण ना नर्वार्थान्

সাধিনী।। ইতি দেবীপুরাণে৪৫ অशायः ॥ স্ৰাৰ্থসিদ্ধঃ পু• বৃদ্ধঃ। ইত্য-मद्रः ॥ मकनश्राक्षाक्रनिकि-যুক্তে ত্রি ॥ সৰ্বাবসরঃ পু অর্দ্ধরাত্রঃ। ইতি ত্রিকাওশেষঃ ॥ সৰ্বাস্ত্ৰা স্ত্ৰী, ষোডশবিদ্যাদেব্য-ন্তৰ্গতদেবীবিশেষঃ। ইতি হেম-**मर्काङ्गः पु॰ मयल्डामन•1 इं**जि व्याक्त्रवः ॥ मर्दी ३३ कि **मर्वमयक्षी। मर्व**-শব্দাৎণীয় প্রত্যয়েন নিষ্পন্নঃ। ইতি ব্যাকরণ ॥ সর্বেশ্বরঃ পু• শিবঃ। ইতি কে-চিৎ।। সাৰ্বভৌনশ্চ।। नदिशिः पुर ठजूतकरेननामभारः । ইত্যমরং।। গুরুবেগঃ। ইতি (यिनिनी।। । यथा। कर्छ मा॰मी रुद्रिजािं र्वा देनदन्य हन्द्रदेनः। मूता ह-न्मन कर्भू देत्रः मूखः मद्बी विधिः স্মৃতঃ ।। অত্র দ্বিতীয় চন্দনপদ॰ রক্তচন্দনপর•। ইতি রাজ-নিৰ্ঘণ্টঃ.॥

मत्वी विधिगनः पू॰ मूर्तात्मागविधिः ममृहः। यथा। मूत्रा मा नी वहा-श्रु दे भटन य॰ तक नी हय । भागी **ठम्भक गूर्खक मटको सिंशनः ग्रा ७: ।। ইভি শব্দচন্দ্রিকা ।। অ**ন্য-का। रतिजा हलन नाबी मुखक দেবতাডক। धनााक জीतक भिषी शाबीकन मूचीत्रक ।। बि मूगिक्तः मणी गक्तयाजी कपूर्वः के विष्ठा नथी मझवक अर्थ मित्रमांक विषक्षक ।। मत्रम भ-ঘকাঠঞ্বালক ভদ্রমুক্তক। গ্রন্থিকঞ্চ জটামাণ্সী পলাশঃ रेमलङ गगी॥ वर्क्टागकः क पृर्व। यूता भा भी ह अक्रूभ । व्यथायार्था यथुत्रिका विकामा थिति इः स्रमा ॥ हाजूर्व्हाज्यम षा २ (था २ व्हेन्दर्भा रख्ड पूत्रतः । नारमश्रदण कखूदी विकेना পদ্মকেশরণ।। কক্ষোল• ধাতকী পুষ্প জিকটুরেণুক ষবঃ। তি नाः अम्बूक नन्दर जार्गी त्रा রোচনা বকঃ॥ শুগী পুষ্পঞ্চ ন-हनी शिक्लः वः भटना हन। इ-ন্দীবর বহুসূতা বঙ্গল মালতী मनः ॥ रेखवीजः काकनमः जः ষম্ভী গঙ্গপিপ্ললী। শ্বেতাপরা-

জিতাপুঁশা সৰে বিধিগণঃ স্মৃতঃ ।। ইতি পাদ্মোত্তরখণ্ডে ১০৭ অ-ধ্যাবঃ ৷৷ অত্র কতিপয়দ্রব্যাণি অশুদ্ধলিখিতত্বান্নবোধগম্যানি नर्रभः भू भन्यवित्मयः। निव्रया ইতি ভাষা। তৎপর্যায়:। ত-बुजः २ कम्बुकः ७। ইত্যমরः ।। সরিষপঃ ৪। ইতি ভরতঃ।। **ज्यकः ৫। ই**তি রমানা**থঃ** ।: কটুন্সেহঃ ৩। ইতি জটাধরঃ।। শর্ষপঃ १। ইতি শব্দরত্নাবলী।। রাজক্ষবকঃ ৮। ইতি রাজনি-র্ঘ-টিঃ। অস্য গুণাঃ। কফ বা-**७मदः। ठीक्रदः।** উक्षदः। त-ক্তপিত্তকারিম্বণ। কটুম্বণ। ক্রমি अर्छनानिष्यः। निकार्थं न्हानि তদ্গুণঃ। ইতি রাজবল্লভঃ।:#:। অপরঞ্। আসুরী রাজিকা রা-জী রক্তিকা রক্তসর্যপঃ। তীক্ষ-গন্ধা মধুরিকা ক্ষবকঃ ক্ষতকঃ ক্ষবঃ।। আসুরী কটু তিক্তোঞা বাত প্লীহার্তি শূলনুৎ। দাহ পিত্তপ্রদা হস্তি কফ গুলা ক্লমি बगान्।। #।। সर्वां त्राकक्व-কঃ ফুফা তীক্ষফলা রাজিকা। व्राख्डी मा क्रका मर्से भाषा वि-জ্ঞেয়া রাজসর্যপাখ্যা চ।। রা-

জসর্যপক স্তিক্তঃ কটুকো বাত मृवन् । शिख मार्थमा अव कख अर्थ जगानहः ॥ कात्नर मतियभः ॥ 🛊 ॥ मर्यभञ्जनरम গৌরঃ দিদ্ধার্থো ভূতনাশনঃ,। কটুলেহো এহমশ্চ কণ্ডুমো রা-किकाकनः॥ जीक्कककं पुता श्रक्षा त्रक्षाञ्चः अर्थनाणनः। मि-জপ্রযোজনঃ সিদ্ধঃ সাধনঃ সি-তসর্যপঃ।। সিদ্ধার্থঃ কটুকোঞ-শ্চ বাত রক্ত গ্রহাপহঃ। স্বন্দো-ষশমনো রুচ্যো বিষ ভূত ত্রণা-পহঃ।। ইভি সর্যপঃ।। 🗱 ।। তত্তৈ-ল গুণা:। সর্যপতৈল ভিক্ত কটু-ক বাত কফ বিকারস। পিত্তাসু দোষদ ক্রমি স্বষ্ঠম তিলজবচ্চ-ক্ষুণ।। া ৩ৎপত্রশাকগুণাঃ। সর্যপণ পদ্র মত্যুক্তণ রক্তপিত্ত প্র-काशनः। विषाहि कर्वेकः श्वामू শুক্রহাৎ রুচিদাষক•া৷ ইতি রা-किनर्गिः॥ 🛊।। अनाका । मर्गभः কটুক্ষেহ স্তম্ভশ্চ কদম্বকঃ। गोत्रस् मर्यभः आरेखः निकार्थ ইতি কথ্যতে।। সর্যপন্ত রসে পাকে কটু র্ছন্যঃ সভিক্তকঃ। ভী-ক্ষোক্তঃ কক বাতমো রক্তপিত্তা-মিবর্দ্ধনঃ।। রক্ষোহরে। জ্বেৎ

কণ্ডু সষ্ঠ কোঠ ক্ষমি গ্রহান্। বখা রক্ত স্তথা গৌরঃ কিন্তু গৌরো বরো মতঃ।। 🟶।। অথরাই। ফ্র-করাই। রাজী তুরাজিকা তীক্ষ-शक्षा क्षुक्किनिका मूत्री। करः क् ভাভিজনকঃ ক্ষমিকঃ ক্ষশ্সর্যপঃ াা রাজিকা কফ পিত্তমী তীক্ষো-কা রক্তপিত্তরুৎ। কিঞ্চি জকাগ্নি-**मा कख़ क्रष्ठ कार्व क्र**गीन् रुद्रिष ।। অভিতীক্ষা বিশেষেণ ভদ্বৎ হ্রকাপি রাজিকা। 🕸। তত্তৈল-গুণাঃ। দীপন সার্ষপ তৈল। क पूर्णाक त्रमः लघू। (लथनः न्य-শ্ৰীযোক তীক্ষ পিতাসু দূষ-কণা কৰু মেদো হনিলালোমণ শিরঃ কর্ণামযাপহ। কণ্ডু কোঠ क्षिम शिव अर्थ मूर्ये विश्व शृं ।। তত্বৎরাজিকযো স্তৈল॰ ৰিশেষা-मृबद्ग इद्गर। त्राष्ट्रिकरमाः द्वयः ताहै। **आ**तकताहै। **उ**र्याः ॥ 🛊 ॥ ७व्हाकश्चनाः। कर्दैकः সার্যপ॰ শাক॰ বছমূত্র মল॰ গুরু । अञ्चलाक विनाहि मानूक क्क विद्यां यह थ। मकात व-বণ তীক্ষণ স্বাদু শাকেষু নিন্দি-**७** । ठीकाकः मार्यभः नानः বাতলেম বণাপহ•।৷ কণ্ডু ক্রমি-

हतः प्रस्त अर्थमः क्रिकान्नकः ।
इण्डिजावश्रकाणः ॥ ॥ स्वानन्न विवर्णनः । इण्डि रह्महस्तः ॥ वर्षनिथागिन्निमानः । वर्षा । कानाखन्नगर्ण जात्ने मकान् मृंगार्ज नकः। रेज म्हजूर्जि र्ज-विश्वा निथायण्जिम् गर्य-भः॥ इण्डि मक्षहस्तिका ॥

সর্বগতৈল ক্লী সর্বপজাতত্মেহঃ
। যথা। সর্বপতেল তিক্ত কটু
ক বাত কফ বিকারম । পিত্তা
সুদোষদ ক্রমি সন্তম তিলজব
চ্চ কুষা ।। ইতি রাজনির্ব তঃ।।
সর্বপী স্ত্রী খঞ্জনিক।। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

সল ক্লী জল। ইত্যমরটীকা যা ভরতঃ।।

मिनन की कन । इंडामदः॥ তত্ত্ব বিগুত্ততাগনিষেধা यथा। মনুং। ন মৃত্ত পথি দবীত ন ভসনি ন গোত্তকে। ন কাল-কুষ্টে ন জলে ন চিত্তা ন চ পর্বতে॥ ন জীর্ণদেবাষ্ঠনে ন বন্দীকে কদাচন। ন সসম্বেষ্ গর্ত্তের্ব ন গছেষাপি সংস্থিতঃ॥ ন নদীতীর মাসাদ্য ন চ গর্বত মস্তকে। বাষুদ্ধি বিপ্রানাদিত্য

मनः नमा खरेष्व ह।। न कमा **চন ऋरीं**ত विशूजिंगा वित्रर्জन• । रेणाङ्गिकञ्बः॥ जिन । मृब क्षित्र भूतीयानि देव क्र श्रम्कानि বারিণি। তে পাত্যন্তে চ বিণা-ख मूर्गस्त्र **भूगभूत्रि**ख ॥ ইछि বামনপুরাণে কর্মবিপাকো নাম >> ञ्थाकः॥ कः॥ ञ्थनलिल-পরীক্ষা। পিতামহঃ। তোষদ্যা-থ প্রবক্ষ্যামি বিধিণ ধর্ম্মাণ সনা-তন। মণ্ডল পুষ্পা ধূপাভ্যা কা-त्ररयः मृविष्ठकनः॥ मतान् मः পৃজবেদ্ভক্ত্যা বৈণবঞ্চ ধনু স্তথা ৷৷ তত্ত্ৰ প্ৰথমতো বৰুণ পূজ্বেৎ । यथा नातमः। शक्त माटेलाः मू-রভিভি ন্ধু ক্ষীর ষ্তাদিভিঃ। वक्रवाय अन्वीं शृक्षा माटनी न-माहिनः॥ ज्ञा धर्मावाहनानि সকলদেবতাপূজা হোম সমন্ত্রক প্রতিজ্ঞাপল্র শিরোনিবেশান্তণ কর্ম স্ব্যাৎ। কাত্যাধনঃ। শ-রাণ স্তুনাষসাগ্রাণস্ত প্রস্করীত বি-श्वकारय । त्वन् कार्धभयाः देश्वव क्था ह मूम्छ किरम् ॥ भि-তামহঃ। কেপ্তা চ ক্ষত্রিয়ঃ কা-ৰ্যাঃ তদৃত্তি ৰ্ৰান্সণো ২থ বা । অকুরহৃদয়ঃ শান্তঃ সোপবাস

खथा छिटिः ॥ देवृत्र अकिरमञ्जी-मान् माऋष्ठ वािं, वा ज्न॰ । বিষমে ভূঃ প্রদেশে চ বৃক্ষ স্থাণু সমাঙ্গলে। नात्रमः। कृतः धनुः मक्षमञ मधाम वर्षमञ मञ । মন্দ পঞ্চশত প্রোক্ত মেষ জ্ঞে र्या धनूर्विधिः ॥ जात्रुलीनाः म প্তাধিক শত বস্য ধনুষঃ পরি-মাণ তৎ সপ্তশত এব ষট্শতা দিক ।। পিতামহः। মধ্যমেন তু চাপেন প্রক্রিপেত্ব শরত্রয[়]। হ স্তানাঞ্চ শতে সার্দ্ধে লক্ষ্য হয়। বিচক্ষণঃ ৷৷ তেষাঞ্চ প্রেষিতানাম্ভ **শরাণা॰ শাস্ত্র দেশনা** । মধ্যম-স্তু শরো আহঃ পুরুষেণ বলীয়সা ৷৷ শরাণাণ পতনণ আছণ সর্পণণ পরিবর্জবেৎ। সর্পন্ সর্শ রো যাতি দূরাদূরতর যতঃ ॥ প-তন॰ গ্রাহ্ম মিতি শরপতন স্থান্-পর্য্যন্ত॰ গচ্ছেদিত্যর্থঃ। তেন প্র-সরণ পক্ষেপি পতন স্থানক শর-গ্ৰহণ । ততশ্চ প্ৰথমতঃ পুৰুষা-ন্তরেণ তৎস্থানে শর আনেতব্যঃ ।। नात्रमः। नमीयू नाजित्वगा मू **७** जारिश्व मद्गम् ह । दुरम्यू স্থিরতোথেষু স্বর্যাৎ পুংসাং নি মজ্জন। নাতিবেগাসু স্থিতি বি

রোধি বেগশুন্যাসু। বিষ্ণুঃ। शक रेनवाल पृथेथार मध्मा करली-কাদি বৰ্জিতে তদ্য নাভিমাত্ৰ জলে মগ্নসারাগ ছেষিণঃ পুরুষ-স্যান্যস্যোৰ গৃহীত্বা ২ভিমন্ত্ৰি-তান্তঃ প্রবিশেৎ। তৎ সমকাল-क नार्डिकृत मृत्ना धनूषा शूक-ষো ২পরঃ শরমোক্ষণ সর্য্যাদিতি ।তস্য শোধদ্যেতার্থঃ। অন্যথা তস্যেতি ব্যর্থ স্যাৎ ॥ 🛊 ॥ অন্য-পুরুষদ্য স্তম্ভধারণ মাহ স্মৃতিঃ। উদকে প্রাগ্ন স্তিপ্তে দর্মাস্থা। প্রগৃষ্ণ চ। প্রাড্বিবাক কর্তৃ ক জলাভিমন্ত্রণ মাহ পিতামহঃ। তোৰ ছ॰ প্ৰাণিনা॰ প্ৰাণঃ সৃষ্টে রাদ্যম্ভ নির্মিত । শুদেশ্চ কার-ণ প্রোক্তণ অব্যাণাণ দেহিনা স্ত-থা।। অত স্তু॰ দর্শবাত্মান• শু-ভাশুভ পরীক্ষণে। 🟶 ৷ শোধ্য-কর্তৃকাভিমন্ত্রণ মাহ যাজ্ঞবন্ধ্যঃ। সত্যেন মাভিরক্ষম্ব বরুণেত্যভি-শাপ্য কং। নাভিমাত্রোদকস্থস্য গৃহীত্বোৰ জল বিশেৎ ৷৷ মা মা মভিশাপ্য শপথ কার্যিত্বা কং क्ल वित्न निमक्डि । তোর-ণঞ্চ নিমজ্জন সমীপে সমে স্থানে শোধ্যকর্ণ প্রমাণোচ্ছিত কার্য্য ।

यथा नात्रमः। गन्ना जू ठब्हेनस्।-ন তটে তোৰণ মৃচ্ছিত ৷ স্বীত কৰ্ণ মাত্ৰস্ত ভূমিভাগে সমে শুচৌ ॥ 🛊 ॥ नत्रात्क वित्नव मार्जू नीतम वृह्ण्याजी। यत अरकंशव স্থানান্দ্ৰবা জবসমন্বিতঃ। গচ্ছেৎ পরম্যা শক্ত্যা ষত্রাসৌ মধ্যমঃ শরঃ।। মধাম॰ শর মাদায পুরু-(या १ना खशाविधः। अञाग-চ্ছেজুবেগেন বতঃ সংপুৰুষো গ তঃ।। আগতস্ত্র শরগ্রাহী ন প भावि यमा **करन। अस्टब्स्**नगठ• मगाक् जन। शिक्षः विनिर्मित्नः ॥ जनाया न विश्वकः माहिका-क्रमाि पर्मनाथ। श्रानादानाव गमनाम्लिमिन् शृईः निद्वन्यय ॥ 🛊 ॥ জिंदिनो वित्निययिक ना-রদঃ। পঞ্চাশতো ধাবকানা থৌ স্যাতা মধিকৌ জবে। তৌ চ তত্ত্ৰ नियाक्रियो नदानयन कर्मि।। धकात्रमा मर्गनामिष्ठि कर्नामाः **ज्ञिारयग। निर्द्रामाज्य मृत्ना**-छ न कर्लो नािश नािमर्क ॥ -অপ্সু প্রবেশনে যদ্য শুদ্ধ তম-शि निर्फित्म । इंडि वित्मवा-ভিধানাৎ। কাত্যায়নঃ। নিম-জ্যোৎপ্লবতে যস্ত দফলেচৎ প্রা-

पिना नर्यः। भून ख्वा निमाञ्जन ত দ॰শচিক্ল বিচারিতঃ।। জলা-ন্তৰ্গত মৎস্য জলৌকাদিনা দফ্টঃ সমুৎপ্লবতে যদি তদা দয়ে দৃষ্টে পুন निमक्जनीय इंडार्थ ॥ 🛊 ॥ পিতামহঃ। গন্ত শ্চাপি চ কর্তুশ্চ সমং গমন মজ্জনং। গচ্ছেত্তোরণঃ मृलाजुः नतनानः कवी नतः ॥ তিমান্ গতে দিতীফোপি বেগা-मामाय नायकः। शट्हाखात्रगम्-লম্ভ ষতঃ স পুরুষো গতঃ।। আ-গভস্ত শরগ্রাহী ন পশ্যতি যদা कता अञ्चल्या अन्य क তঃ শুদ্ধিণ বিনিৰ্দ্দিশেশ্যা অত্ৰ ম-জ্জন সমকাল গমনাভিধানাৎ. শরমোক সমকাল গমন শূল-পাণুক্ত মযুক্ত । मक्जनः সম-কাল ক্ষিপ্ত মধ্যম শর মাদা-ষেত্যপর মুক্ত মপি প্রমাণশূন্য । ততশ্য ত্রিষু শরেষু মুক্তেষু একো বেগবান্ মধ্যম শরপতন স্থানং গদ্বা ত মাদাষ ভত্রৈব তিণ্ঠতি অ-ন্যস্ত পুরুষো বেগবান্ শরমোক-স্থানে তোর্ণমূলে তিষ্ঠতি এব॰ স্থিতযো স্কৃতীযাষা করতালি-কাষা প্রাড্বিবাক দত্তাযা পো-ধ্যো নিমজ্জতি তৎসমকাল মেব

সলিলা

ভোরণমূলস্থিতোপি ক্রততর ম-ধ্যম শরপতনস্থান গ্রুছতি শর-গ্রাহী চ ভন্মিন্ প্রাপ্তে ক্রভতর তোরণমূল প্রাপ্যান্তর্জলগত• ষদি ন পশ্যতি তদা শুদ্ধো ভব-তীতি বর্ত্ত্বার্থঃ।।।।।। তত্ত্ব প্রয়ো-গঃ। উক্ত লক্ষণ জলাশ্য নিকটে छथा छात्रवः विधाय छेक्टरमरम লক্ষ্য• হৃত্বা তোরণ সমীপে সশর• ধন্ঃ সংপুজ্য জলাশ্যে বরুণ মা-বাহু পূজ্যিত্বা তত্তীৱে ধর্মাদী -**क्ट एक्वान् इवनाख भिख्ना प्रक्रि-**ণা॰ রুত্বা শোধ্যস্য শিরসি প্রতি-জ্ঞাপত্ৰ বদ্ধা প্ৰাড্বিবাকো জ ল মভিমন্ত্রষেৎ।ওঁ তোষ দ্বং প্রা-ণিনা॰ প্রাণঃ সৃষ্টে,রাদ্যন্ত নির্মি<u>·</u> ত । শুদ্ধেশ্চ কারণ প্রোক্ত জ ব্যাগা দেহিনা তথা ৷৷ অত স্তু দর্শবাত্মান শুভাশুভ পরীক্ষণে । ইতি মন্ত্রেণ। শোধ্যস্ত ওঁ সত্যে-ন মাভিরক্ষ বরুণেত্যনেন জল **মভিমন্ত্র্য গৃহীতস্থূণদ্য শোধ্যনা**-ভিমাত্রোদকাবস্থিতম্য ৰলীযসঃ প্রাত্মখন্য পুরুষন্য সমীপ জ-वामर्था शत्कृ । ७७: भरत्रु ত্রিষু মুক্তেষু মধ্যম শরপতনস্থা-নে মধ্যমশর গৃহীত্বা জবিন্যে-

निमञ्चलः भुः শৈবালः। ইতি ত্রিকাওশেষः॥

সলিলজ॰ ক্লী পদ্মণ ইতি রাজনির্থন্টঃ । জলজাতে ত্রি ।।
সলিলাশ্যঃ পু॰ জলাশ্যঃ । তস্য
বৈক্তেয় দোকো ষথা । গর্মউবাচ । নগরাদপসর্পত্তে সমীপ মুপষান্তি চ । নদ্যো হুদাঃ
প্রসুবণাঃ বিরমাশ্চ ভবন্তি তে,
।। বিবর্ণ কলুষণ তপ্তণ কেনবজ্জন্ত সঙ্গুল । ক্লীরণ স্নেহণ সুরাণ
রক্তণ বহন্তে চান্সলোদকাঃ ।।

ষণ্মাসাভ্যম্ভরে তত্ত্র পরচক্র-**७४**॰ ७८४९। জলাশ্যা नमस्ड वा প্রজ্বলম্ভি কথকন।। বিমৃক-স্তি তথা বন্দালা ধূম রজাণ সি চ। অখাতে বা জলোৎগ ত্তিঃ সমন্ত্রা বা জলাশকাঃ।। সংগীতশব। দৃশ্যন্তে জলে মার **७**य॰ बर्ति । तिवा मर्खाज्य॰ সর্গি মধুনা দ্বনেচন ।। জপ্ত **वाग बाक्र ना मला देख क द्यारमा** জলে ভবেৎ। মধাজ্য যুক্ত প রমাম মত্র দেষ ছিজানা ছি-क्षाक्रनार्थः। गावन्ह प्रयाः সিতবন্ত্রযুক্তা স্তথোদসম্ভাঃ স-निनाघ भारेखा ॥ देखि माष-স্যে ২০৮ অধ্যাষঃ॥ লিলেশ্বনঃ পু॰ বাডবা**নলঃ।** ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ্ণ।। नीनः बि नीनसामश्वर्जभानः 1 यथा। <u>जूतज्ञम्यम्</u>यप्र विकि ত্ররত্ননির্মিতে লসম্বিতান ভূষি তে দলীল বিভূমালসং। সূরা ঙ্গণাভ বল্লবী কর প্রপঞ্চ চামর স্ফুরৎ সমীর বীজিত সদাচ্যু-ত ভজামি ত ৷৷ ইতি ছম্দো-मक्षती ॥ ज्ञकी खी खनामशाष्ट्रकः।

তৎপর্যাदः। अজভক্যা ২ সু বহা ৩ সুরভী ৪ রসা ৫ মহে-त्रगा ७ अन्त्रकी १ हामिनी ৮। ইত্যমর: ৷৷ গজভকা ৯ সুরভিঃ भूतजीतमा >> मरहक्रमा >२ मलको ১৩ मिलको ১৪ मिलको ३৫ द्रामिनी ३७। ইভি তট্টीका য়। শল্যতে শ্লাঘ্যতে গজৈঃ শল্প-की। भन कछ झाट्य ह्वापिः ঞে রভাবপকে নামীতি লকট্ া শ্বাবিদ্ধুভেদৌ শলকো শকা ত্রা স বিতর্কধ্যে ব্লিতি তালব্যা-দৌ রভসঃ। সলতি গচ্ছতি সল-গতৌ দস্ত্যাদিঃ ৭কঃ ভৌবাদিঃ निপाठनां ९ लगा विष्। म९-ক্তা লক্যতে স্বাদ্যতে গজৈ রিতি বা সল্লকী দস্তাদি রিভ্য-(ना। मिलकी (हार्टिंग कि। (म-भीशारवरः। महकी मिह्नकी ু হ্লদেতি রুজঃ ইতি স্বামী। ই-ত্যমরটীকাষা-ভরভঃ ৷৷ नव क्री कल। ইতি क्रोधदः॥ পুষ্পরসঃ। ইতি কেচিৎ।। नकः श्रृ॰ यख्नः। ইত্যेषतः॥ मञ्जानः। ইতি মেদিনী॥ সূর্য্যঃ ।। हसः। इंडि क्हिर्।। जवन की यख्यकान । छৎ भर्या-

यः। पूंछा। २ अधियदः ७। रेडायदः॥ मानमक्षानः ४। रेडि क्रियदः॥ मानमानः। रेडि क्रियदः॥ अध्दः॥ मान निर्माणनः। रेडि मिनी॥ श्र-प्रदेश रेडि क्रिट्श।

সৰ্যাঃ জ্রী সম্বয়কা। তথ পর্যায়ঃ। আলিঃ২ ব্যস্যা ৩ স্থীও সহচরী ৫। ইভি জটা ধরুঃ।।

স্ব্যাঃ পু॰ ব্যস্যঃ। ইত্যমরঃ।।
স্মানব্যক্ষে ত্রি।।

मदतः पू॰ मिननः।। भिदः। ইতি विकाखरभयः।।

मवर्गः जि ममृभः। ইতি হেমচন্দ্রং।। সমানবর্ণঃ। তুল্যজ্ঞাতিঃ। বথা মনুঃ। পাণিএছণসংস্কারঃ সবর্ণাসুপদিশ্যতে ।
অসবর্ণাস্বয় জেয়ো বিধি রুদ্ধাহকর্মণি।। ইত্যুদ্ধাহতত্ত্বং।। ৣয়।।
একস্থানোৎপদ্ধবর্ণঃ। যথা।
সবর্ণেনাকদীর্মঃ। ইতি সংক্ষিগুসারব্যাকরণং।।

সবর্ণা স্ত্রী সূর্য্যপত্নী ছাবা। ইতি শব্দরত্নাবলী।

সবহা স্ত্রী ত্রিবৃতা। ইত্যমর-টীকাষা• ভরতঃ ।। गिविकाणः जि विकिणिङः। श्रेक्षः । विकारणन गरुवर्जभानः ॥ मिविज्ञा भू॰ पूर्याः ॥ व्यक्तृकः ॥ रेजावदः ॥ व्यक्ति विश्वा । शीणकवारमा उक्तृतः । शिणकवारमा उक्तृतः । शिणकवारमा उक्तृतः । शिक्ति भविना । ग्रेजिशं ज्ञावान् विकृः मिविजा म वृ कीर्जिङः ॥ मर्वराक श्रमवना । मर्वराक श्रमवना । मर्वराक श्रमवना । प्रविज्ञा । प्रविज्ञा । प्रविज्ञा मिविज्ञी ज्ञामा विज्ञा । । रेजि विज्ञित्रा । । रेजि विज्ञित्रा । । ।

সবিত্দৈবতঃ পু• হস্তনক্ষত্ৰ•।
ইতি হেমচম্রঃ।

সবিতৃলঃ ত্রি সবিতৃসম্বন্ধী। স-বিতৃ শব্দাৎ ল প্রত্যযেন নি-শক্ষঃ।।

সবিত্রণ ক্লী প্রসবকরণণ। সূষতে ২নেনেভি সূধাতোঃ করণে ইত্র প্রত্যব নিষ্পন্নণ। ইতি মুগ্ধন বোধব্যাকরণণ।।

সবিত্রিয়ঃ ত্রি সূর্য্যসম্বনীয়ঃ। ইতি সিধ্ধাস্তকোমুদী ॥

সবিত্রী আ মাতা। ইতি হেম-চন্দ্রঃ। গৌঃ। ইতি কেচিৎ।।

সবিধঃ ত্রি নিকট । ইত্যমরঃ।। সমানপ্রকারশ্চ ।। निवासः जि. विवासायाः छ०-পर्यासः। वीकायमः ३। इ.छि हातावनी ॥

সবেশঃ ত্রি নিকট•। ইত্যমরঃ।। বেশান্বিতঃ। ইতি ধরণী।।

সব্যঃ ত্রি বামঃ। ইত্যমরঃ॥
দক্ষিণঃ॥ প্রতিকূলঃ। ইতি
হেমচন্দ্রঃ॥

সব্যঃ পু॰ বিষ্ণুঃ। ইতি শব্দ-মাল।।।

गवामानी थु॰ जड्जू नः। ইতি द्यहस्यः।।

সব্যেষ্ঠঃ পু• সার্যশিঃ। ইতি হলা-যুধঃ।।

সব্যেষ্ঠা পু॰ সার্থিং। ইত্যমরং॥
সশস্যা স্ত্রী নাগদন্তী। ইতি রত্ন
মালা॥ শস্যযুক্তভূম্যাদো ত্রি॥
সশ্কঃ পু॰ আন্তিকঃ। ইতি
কেচিৎ ॥

সশ্বশ্রু জ্রী শ্বশ্রুক্তন্ত্রী। তৎ পর্যায়ঃ। নরমালিনী ২। ইতি হেনচন্দ্রঃ।

সসদা জী গরিণী। ইতিশব্দরত্নাবলী। প্রাণিমুক্তে তি ।

যথা নন্ত। ন মূত্র পথি স্বীত ন ভক্ষনি ন গোরজে। নসামরেষু গরেষু ন গহেষাপি

সংস্থিতঃ।। সমূদ্ধেষু প্রাণিমৎসু । ইত্যাক্লিকভন্ত।। সসন ক্লী সজার্থপশুহনন । ইত্যমর্টীকা।। তথ্য ৰূপান্তর শ্মন শ্মনঞ্।।

সন্মিতঃ ত্রি ঈষদ্ধাস্যযুক্তঃ! যথা
। সন্মিতানন সরোজ মঙ্গনে
রিঙ্গমাণ মতিলোলসম্ভলং ।
রোচনোলসিতভাল মস্ত মে
কৈশবং মনসি শৈশবং বপুঃ।।
ইত্যনুমিতৌ জগদীশঃ।।

मगा॰ की वृक्षामीना॰ कल॰। यथा
। मु॰मन॰ मीमक॰ मगा॰ मुख॰
मान्ना ह माध्रम॰। ইত্যুম্মবিবেকাৎ। ইত্যমরটীকাষা॰ ভরতঃ
॥ शाना॰। यथा। शानाग्र मगा॰
मीठाक ত্রীহি স্তয়করিশ্চ তৎ।
ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ শন্ত্র॰॥ গুলঃ।
ইতি বিশ্বঃ॥ তদ্য প্রশণনা যথা।
জীর্ণ মন্ধ প্রশণনীষাৎ ভার্য্যাক্ষ
গতযৌবনা॰। রলাৎ প্রত্যাগত॰
শূর॰ সদ্যক্ষ গৃহমাগত॰॥ ইতি
চালক্য॰॥ অন্যৎ শদ্যশক্ষে
দ্রেইবা॰॥

সদ্যকঃ পু॰ মণিভেদগ। অসিঃ। ইতি মেদিনী।। সদ্যকো নালি-কেরান্তঃসদ্যাভমণি খদ্মযোঃ।

ইভি হেষচন্দ্ৰ: ॥ ममामाती प् महामृषकः। ইতি রাজনির্ধন্টঃ।। সস্যনাশকে ত্রি সন্যদণবরঃ পু॰ সালবৃক্ষঃ। ইত্য-यदः ॥ ममामध्रतभः पू॰ चन्कर्ववृक्तः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। সম্বেদা স্ত্রী দূষিতাকন্যা। ইতি শব্দরত্বাবলী।। সহ ব্য সহিত । তৎপর্যাকঃ। সাক ২ সাদ্ধি ৩ সত্র ৪ সম ৫। ইতামরः।। সজুः ৫। ইতি क्रोंधदः॥ भाकनाः॥ विनाः यानः॥ मामृन्याः॥ त्योश्रशमाः ।। ममृक्षिः।। ममृक्षः। ইতি মে मिनी॥ मामर्थाः। ইতি मद ब्रज्ञावनी ।। मरः क्री शाःশवववाः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ৷৷ जरुः शुः खश्रदाष्यामः॥ कत्य ত্রি। ইতি হেমচন্দ্র:।। महः भू की वन । देखि यिनिनी मरः क्ली ज्जाि ।। वनः। ইতি শব্দরত্বাবলী॥ সহকারঃ পুশু অতিসৌরভামুঃ ৷ ইত্যমরঃ ॥

महकाती पुर প্রত্যयः। स्था।

অথ হেতু ৰুপাদান প্ৰত্যযাঃ সহকারিণঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডদেষঃ ।। ন্যায়মতে তদ্ভিমত্বে সতি ভ-জ্জন্য জনকত্ব সহকারিত্ব গা সহচরঃ পু• ন্ত্রী পীতবিক্টী।। নীলবান্টী। ইতিরত্নমালা॥ সহচরঃ পু॰ বিকীয় বয়সাঃ॥ প্রতিবন্ধকঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। অনুচরে ত্রি। ইতি মেদিনী ।। সহচরী স্ত্রী পীতঝিন্টী। ইত্য-मतः॥ পত्नी। देखि (इमहस्रः॥ সখী। ইতি জটাধরঃ।। गर्कः पु॰ मरहामतः। ইভামतः ।। নিসর্গঃ।। সহোখে ত্রি। ইতি (यिनिनो।। জन्ननभाद जुजीय-স্থান । যথা। সুত মদন নবা-ख्य পূर्वमृष्टिः সুরারি র্গল দ-শ্यतात्मी मृष्टिभामखयार्वः । সহজ রিপু চতুর্থেম্বউমে চার্দ্ধ-मृष्टिः शिञ्जिवन मूপान्ताः रेनव मृगा हि द्वादशः॥ देखि ज्या-তিস্তত্ত্বণ ৷৷ সহজনিত্রং ক্লী স্বাভাবিকসুশ্রৎ । यथा। अति र्मिक मुनामीता

ধনন্তর স্তৎপরঃ পরঃ। ক্রমশো

মঙল চিন্তা সামাদিভি রুপ-

क्टेमः॥ जित्रः मजुः। मिखः

সূহাৎ। উভৰ বিলক্ষণ উদাসীনঃ। তে চ ত্ৰম দ্ৰিবিধাঃ। সহজাঃ ক্ৰিমাঃ প্ৰাক্ষতাশ্চেতি।
সহজ মিত্ৰ ভাগিনেম পৈতৃযস্ত্ৰীয় মাতৃষস্ত্ৰীয়াদিঃ। ইতি
মিতাক্ষরায়া মাচারাধ্যামে ১
অধ্যায়ঃ।।

সহজাতঃ ত্রি সহোদরঃ ॥ বম-জঃ। ইতি কেচিৎ ॥

সহজারিঃ পু॰ স্বাভাবিকশত্রঃ।
যথা। সহজারিঃ সাপত্না পিতৃ
ব্য তৎপুল্রাদিঃ। ইতি মিতাক রাষা মাচারাধ্যায়ঃ॥

সহজোদাসীনঃ পু॰ স্বাভাবিকপরতরঃ। যথা। সহজ ক্তত্রিম
মিত্র শত্রুলক্ষণরহিতো সহজক্ষত্রিমোদাসীনৌ। ইভি মিতাকরাযা মাচারাধ্যায়ঃ।

বহুজুক ক্লী মাণসব্যঞ্জনবিশেষঃ
। যথা। ছাগাদে শ্মাণস মূজাদেঃ
কটিত খণ্ডিত পুনঃ। শুজমাণস বিবানেন পচেদেতৎ সহজুক।। সহজুক শুণগ্রন্থে শুফ্মাণসগুণ স্মৃত। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।

ংহদেবঃ পু॰ পাগুববিশেষঃ। ইতি মেদিনী॥ স চ পাণুৱা- জন্য পঞ্চপুত্র: । মাজীগর্ত্তে অশ্বিনীঙ্গমারাভ্যাণ জাতঃ । জরাসন্ধুসূতঃ ৷ স মুধিষ্ঠির সম-কালীনো মগধেষু রাজাসীৎ । ইতি শ্রীভাগৰতণ ৷:

সহদেবা স্ত্রী বলা।। দঞ্চোৎ-পলঃ।। শারিবৌষধিঃ। ইতি মেদিনী।। অর্হমাতা। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

महरावी खी मर्भाकी। ইতি

মেদিনী।। পীতদণ্ডোৎপলা।
ইতিরত্বনালা।। বলাপ্রভেদঃ।
তৎপর্যাক্ষঃ। মহাবলা ২ জ্যোঠবলা ৩ কটন্তরা ৪ কেশারুহা
৫ কেসরিকা ৬ মৃগাদনী ৭ বর্ষপুল্পা ৮ কেশবর্দ্ধিনী ৯ পুরাসিনী ১০ দেববলা ১১ সারিণী
১২ পীতপুল্পী ১৩ দেবার্হা ১৪
গন্ধবল্লরী ১৫ মৃগা ১৬ মৃগরসা ১৭। অস্যা গুণাঃ। হুজোগ
বাতার্শঃ শোফ হারিস্থং। শুক্রবৃদ্ধিকারিস্থং। বল্যস্থং। বিষমশ্বরনাশিস্ক্ষং। ইতি রাজনির্বটঃ।। সহদেবপত্নী চ ।।

সহদেবীগণঃ পু॰ প্রতিষ্ঠাষা॰ দে-বন্ধানার্থমোষধিসমূহঃ। যথা। পঞ্গবৈয়ঃ স্নাপ্যেচ্চ সহদেব্যা- मिछि छङ। मङ्दावनी वला देहव भडमूली भड़ावनी।। अभानी ह धड्डी ह निःशी व्यादी उदेशव ह । या अयशेडि मद्भाग सान त्या-यश मङ्देलः॥ इंडि भान्नटफ इस् खक्षायः॥

ষহধর্মিণী স্ত্রী বেদবিধানেনোচ। । ইত্যমরঃ ।।

সহন ক্লী কান্তিঃ। তৎপর্যায়ঃ
। তিতিকা ২ কমা ৩। ইতি
হেমচন্দ্রঃ।।

ষহনঃ ত্রি সহনশীলঃ। ইত্যানরঃ।। তৎপর্যায়ঃ। সহিষ্ণুঃ ২
ক্ষমিতা ৩ ক্ষমী ৪ তিতিক্ষুঃ ৫
ক্ষম্ভা ৬। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।
সহনর্ত্তনং ক্লী একত্রমধ্যাদিভক্ষ
নং তৎপর্যায়ঃ। সপীতিঃ ২।
ইতি হেমচন্দ্রঃ।। তুল্যপানং ৩।
ইত্যমরঃ।। সহপীতিঃ ৪। ইতি
শক্ষরত্বাবলী।।

সহপাণশুকিলঃ পুণ বয়স্যঃ ৷ ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ৷৷

সহপূৰ্বাক্ল: ক্লী পূৰ্বাক্লসদৃশ । ইতি মুগ্ধবোধব্যাকরণে অব্য-যীভাবসমাসঃ ॥ সহভাবী তি সহাবঃ। ইতি তিকাওশেবঃ।।
সহভোজন কী একত্রভক্ষণ।
তৎপর্যাবঃ। সন্ধিঃ ২। ইত্যমরঃ।।

ক্লী মৃতস্থামিসহিত **স**হমরণ জ্বক্তিতারোহণপূর্বকমরণ । যথা৷ অথ সহানুগমনং৷ অ-ঙ্গিরাঃ। মৃতে ভর্ত্তরি যা নারী সমারোহেজুতাশন । সারুদ্ধ-ভীসমাচারা স্বর্গলোকে মহী-যতে।। ভিসুঃ কোট্যোর্দ্ধকো-**है। ह शांनि त्ला**यानि यानत् । তাবস্তাব্দানি সা স্বর্গে ভর্তার• बान्गळ्छि॥ वाानवाशी यथा वााल वलापूक्तत्र विलाध। তদ্বন্তর্তার মাদাষ তেনৈব সহ মোদতে।। মাতৃক পৈতৃকক্ষৈব ষত্র কন্যা প্রদীয়তে। পুনাতি जिन्नन भाती छ्छातः यान्गक्छः ভি।। তত্র সাভতৃপরমাপরা পর মলালসা। ক্রীডতে পতি-ना मार्कः याविष्टा म्हजूर्मम् ॥ ভর্তৃপরমা ভর্তা পরমো যদ্যাঃ সা তথা। পরা পর্যলালদে ত্যত্র স্থ্যমানাপ্ররোগণৈ রিতি ৰ্যাদেন পঠিত।। ব্ৰহ্মছো বা

কুতছো বা মিত্রছো বাপি যে। नदः। ७॰ देव भूनां ि मा नादी ইত্যাঙ্গিরসভাষিত ।। সাধীন। মেব নারীণা মগ্নি প্রপতনাদৃতে। नारना। धर्मा हि विख्छरम। मृत्छ ভর্তরি কর্হিচিৎ॥ या नाরীভ্যু-পাদানাৎ সহমরণাভারপকো-পি সুচিতঃ। নান্যো ধর্ম ইতি তু সহমরণ স্তত্যর্থ। তথা চ বিষ্ণুঃ। মৃতে ভর্ত্তরি বন্ধচর্য্য তদম্বারো-रंगः वा देखि। बन्नव्याः देमथून वर्ष्क्रन॰ ठाष्ट्रनामि वर्ष्क्रनः । যথা প্রচেতাঃ। তাষুলাভ্যঞ্জন-ঞ্চৈব কা•স্যপাত্তে চ ভোজন• । যতিশ্চ ত্রন্ধচারী চ বিধবা চ বি-वर्ष्क्रत्यः ॥ जज्जक्षन मायूर्वः দোক্ত পারিভাষিক। ষথা। মূ-र्ष्त्रि দক্ত यमा रेजन जरव मर्बा-ঙ্গ সঙ্গত । স্নোত্যেভি স্তর্পষে-ৰাহু অভাঙ্গঃ স উদাহতঃ ॥ তৈলমন্ধ ষদাঙ্গেষু ন চ স্যান্ধাহ তৰ্পণ। সা মাৰ্ফিঃ পৃথগভ্যঙ্গো **म्बकात्मे अकीर्खिङः ॥ स्मृ**ज्ञिः। একাহারঃ সদা কার্য্যো ন দ্বিতী-यः कनाहन। পर्याक्रमासिनी ना-রী বিধব। পাত্তযেৎ পতিং।। গ ন্ধজব্যস্য সম্ভোগো টেনব কার্য্য

ন্তবা পুনঃ। তর্পণ প্রত্যহণ কা-ৰ্য্যণ ভৰ্কু স্তিল স্বশোদকৈঃ।। তৎ পিতু স্তৎপিতু শ্চাপি নান গো-ত্রাদি পূর্বকং। এতত্ত্ তর্পনং পুত্র পৌত্রাদ্যভাববিষ্য নিতি মদন-পারিজাতঃ।। বৈশাখে কার্ত্তিকে মাঘে বিশেষ নিষম ঞ্বেৎ। স্না-न॰ मान॰ छीर्थशाळा॰ विटका नीम-এহ॰ মুহুঃ।। 🖚।। অত্র সাধীত্ব মা-হ। আর্ত্তার্ত্তে মুদিতা হুফে প্রো-ষিতে মলিনা ক্লশা। মৃতে মিুষে-ত যা পত্যো সাধী জ্বেষা পতি-ব্রতা।। ইতি ছন্দোগপরিশিষ্টীয মিতি কল্পতরুঃ। সাধীপ্রসাদেন লোকধারণ মপ্যাহ। মৎস্যপুরা-ণ•। তন্মাৎ সাধ্যঃ স্ত্রিয়ঃ পূজ্যাঃ में ७७॰ मि ववब्द्धितः। রাজ্ঞা প্রসাদেন ধার্য্যতে চ জগ-ত্রষ•।। মহাভারতে। অবমত্য চ ষাঃ পূৰ্ব॰ পতি॰ দুফেন চেতসা। বৰ্ত্তন্তে যাশ্চ সতত ভৰ্তৃণা প্ৰ তিকুলতঃ।। ভর্লনুমরণ কালে যাঃ স্বৃত্তি তথাবিধাঃ। কামাৎ ক্ৰোধাৎ ভ্যান্মোহাৎ সৰ্বাঃ পূ-তা ভবন্তি তাঃ।। অত্র ঐহিক ব্ৰহ্মপতে দাহনিষেধাৎ জন্মা-ন্তরীয় তৎপাপবতএব সহমরণে-

नाकातः॥ बक्तशूताला पन-শান্তর মৃতে পত্যৌ সাধী তৎ-शानुकाश्वयः। निशायात्रिम मः শুদ্ধা প্রবিশেজ্জাতবেদসং !। ঋ-श्विमवामाध्याश्री खी न ভবে-माञ्चयािंकी। बाशास्नीतः नि বৃত্তে তু শ্রাদ্ধণ প্রাপ্নোতি শাস্ত্র-व ।। अध्यनवाना इया नाती त्रविथवा देळानि मञ्जाव। এवश অঙ্গিরো ত্রহ্মপুরাণ বচন পর্য্যা-লোচনষা বান্ধণ্যাদি সকল ভা-ৰ্য্যাণা॰ স্বগত ভৰ্ত্ত্গত ফলবিশে-ষার্থিনীনাণ গর্ত্তবতী বালাপত্যা-দি ব্যতিরিক্তানা সহমরণানুম-त्रगरमा त्रधिकात देखि। विवाम-কন্নতরু রত্নাকরো। তত্র বান্ধ *ন্যাদ্যনুমর*ণাধিকারো স্তদ্যা স্তন্ধিধাৎ। তথা চ মি-তাক্ষরায়া দেববোধক্ত যাজ্ঞ বন্ধ্য দীকাযাঞ্গোতনঃ। পৃথক্ চিতি সমারুছ ন বিপ্রা গন্ত মর্ছ-তি। ইতরাসাম্ভ নারীণাণ স্ত্রীধ-র্মো ২য় পরঃ স্মৃতঃ।। তস্মাদ্রা-ন্ধণ্যাঃ সহ্মরণ মেব ইতরাসাম্ভ উভয় মিতি। কল্পতরু রত্নাকর শুদ্ধি চিন্তামণিষু পাদুকাৰ্য মি-তি দর্শনাৎ পাদুকাদিক মিতাপ-

পাঠঃ কিন্তু পাদুকাদ্ব মিত্যুপ-লক্ষণ ৷ উশনসা বিপ্রেতরাষা **ভব্যবিশেষ মনুপাদায পৃথক্** চি-ত্যারোহণ মাত্রোক্তেঃ। যথো-শনা। পৃথক্ চিতি সমারুহ্ ন বিপ্রা গন্ত মর্হতি। অন্যাসা মেব नातीणा खीधार्मा २ य॰ शतः सृष्टः ।। মদনপারিজাতোপ্যেবং। শি-ষ্টাচারোপি তথা। ক্লত্যতত্ত্বার্ণবে বৃহন্নারদীয় । বালাপত্যাশ্চ গ-ৰ্ত্তিণ্যো হৃদৃষ্টঋতব স্তথা। রজস্ব-ল। রাজসুতে নারে। হন্তি চিতা॰ শুভে ॥ রাজসূতে ইতি সগর মাতৃঃ সম্বোধন । বৃহস্পতিঃ। বালসম্বৰ্ধন তাজ্বা বালাগত্যা ন গছতি। রজ্ফলা সৃতিকাচ त्रक्लाई क गर्डिनी।। जैव मन्र-ত শ্চেদ্বালস্য সম্বৰ্জন স্যাত্তদা তস্যা অপ্যধিকারঃ। ব্যাসঃ। **मिरेनकगगारममञ्चा माश्ची** रहे क्रजनिर्गा। न म्रह् श्रामिन ত্যা যাবদাগমন ভবেৎ ৷৷ ভ-বিষ্যপুরাণে। তৃতীযে হক্লি উদ-ক্যাষা মৃতে ভর্ত্তরি বৈ দিজাঃ। তদ্যানুমরণার্থায় স্থাপষেদেকরা-ত্রকণ।। তস্য ভর্তুঃ। তথা। একাণ চিতা সনাসাদ্য ভর্তার যানু-

পচ্ছতি। তদ্ভৰ্জু ৰ্যঃ ক্ৰিষাকৰ্ত্ত। স তস্যাশ্চ ক্রিযাঞ্চরেৎ।। পিওদান পর্যান্ত । ষশ্চামিদাত। প্রেতস্য পিণ্ডান্ দদ্যাৎ সএব হি । ইতি বাযুপুরাণৈকবাক্যত্বাৎ।। ॥ बक्रभूतात्व। खावरयङ्क्-জাযান্ত সভর্তৃত্বলপা মিনাণ। চি-তা মারোপযন্ প্রাক্তঃ প্রমৃতে ধর্ম মৃত্য ।। ইমাঃ পতিব্ৰতাঃ পুণ্যাঃ স্ত্রিযোষা ষাঃ সুশোভনাঃ। সহ ভর্তৃশরীরেণ সংবিশম্ভ বিভাব-সুং।। এবং শ্রেষা ততো নারী শ্ৰদ্ধা ভক্তি সমন্বিতা। পিতৃমে-**८४न य**दछन इस्कृ। खर्ग नवाञ्च ষাৎ।। প্রসূতে ভর্ত্তরীতিশেষঃ। পিতৃমেধেন যজেন চিতারোহণ ৰূপেণ। পাদুকাদ্ব গ্ৰহণ পূৰ্ব-কানুমরণেপি সহভ ইত্যনূহঃ প্রযোজ্যঃ। দেশান্তর মৃতে পত্যাবিত্যাদিনা শরীরপ্র-তিনিধিত্বেন তদীযদ্ৰব্যবিধানাৎ । প্রতিনিধৌ চ যথাক্রত মন্ত্র পাঠ गारु काळागियनः। শব্দে १विश्व-তিপত্তিঃ ইত্যেতৎ বিবৃত মেকা-नगीठाख्या 🗱 ॥ न ठ जित्रं जन প্রবিষ্টানাণ ভৃগু সূণ্ঞাম দেশা-ভর মৃতানা গর্ৱাণা জাতদ

ন্তানা॰ মরণে ত্রিরাত্তেণ শুদ্ধিঃ। ইতি কাশ্যপবচনাৎ সহমৃতায়া অপ্যাগ্ন প্রবেশেন ত্রিরাত্রাশোচণ তত্রৈব ভস্যাঃ পিওদান মিতি বা-**छा॰। अधिक बन्नभूतात्न भृथक्** চিতি সমারোহণমাত্রে ত্রাহাশৌ-চ বিধানাৎ অন্যত্র ভর্তৃল্যা-শৌচ প্রতীতেঃ। সহমরণে কা-শ্যপোক্ত ত্রিরাত্রাশৌচাঙ্গীকারে ২পি ত্যাশৌচ্ম্য বৃদ্ধ্যা পত্য-**मो**ठकालाविषशिषशे । अस्रर्फ-শাহে স্যাতাঞ্ছে পুনর্মারণজন্ম-নী। তাবৎ স্যাদশুচি বিপ্রো ষা-वख नगामनिर्ममा। इंडि मन्-ক্তাশোচ সম্বরে পরাশোচস্য পূ-ৰ্বাশৌ চ কালাবধি স্থাবিদ্ব প্ৰতী-ভেঃ। ততশ্চ যথা অশৌচ কাল সকোচে তত্মধ্য এব সঙ্কলয্য পি-গুদান তথাশোচকাল বৃদ্ধাবিপ যাবদশোচ ধথাক্রম দশপিণ্ডা দেষা ইতি। অতএব জিকনীযা-স্ত্যেফিবিধ্যনুমরণবিবেকযোর্ব্যা-সঃ। সংস্থিত পতি মালিক্য প্র-বিশেক্ষা হুতাশন ৷ তদ্যাঃ পি-ণ্ডাদিক দেয় ক্রমশঃ পতিপিন্ত-বৎ।। বিষ্ণুঃ। অন্বিতা পিণ্ডদান-স্ত যথা ভর্তুর্দিনে দিনে। তদশ্বা-

রোহিণী ৰন্মাত্তস্মাৎ সা নাত্মহা-তিনী।। অত্যানু: সহার্থঃ। পতি मानिद्याणारनरेनकवाकाषा । স্বাম্যশৌচাভ্যম্ভরে পৃথক্ চিতা মৃতাষা ব্রাহেণ পিওদান স্বাম্য শৌচাপগমে তু আদ্ধং। অবি-তায়াঃ প্রদাতব্যা দশপিণ্ডা স্ত্র্য-হেণ তু। স্বাম্যশৌচ ব্যতীতে তু তস্যা: আদ্ধণ বিধীয়তে ৷৷ ইতি क्षिकनधृष्ठ टेशकीनिम वहनाए । অগ্নিপুরাণস্যেদ নিতি শুলপাণিঃ । ञ्यानुः भन्नामर्थः। ञ्जीरञ जू अर्ज्याटि शामूकाष्वर मूला-माय बनमिश्रिथर्वरम् बाहारमोठ-ব্যবস্থা পিওদান চতুর্থদিনে শ্ৰাদ্ধ পূৰ্বোক্ত বন্ধপুৱাণ বচ-নাৎ। যত্র তু ভর্তুঃ সংগ্রামহত দ্বাদিনা সদ্যঃশোচ তত্ত পৃথক্ চিতামৃতাশৌচস্য পূৰ্বোক্ত ত্ৰন্ধ পুরাণবচনাৎ ত্রিরাত্রত্বেন বহু-কালব্যাপিত্বেনাঘবৃদ্ধিমত্ত্বাত্তে-নৈব পূৰ্ৰাশোচস্য ব্যপগমাৎ তত্ত্রপি ত্যুহেণ পিওদান• । তত্রাপ্যেকচিতারোহণে ভল্র-শৌচব্যপগমাৎ শুদ্ধিঃ। সংস্থি-ত॰ পতি মালিঙ্গ্য ইতি অন্বিতা-পিণ্ডদান মিতি পূর্বোক্তবচনা-

ভ্যাণ অগ্নিপ্ৰবেশে সুমূন্তনা সং माः भौहिवशानाकः। यथा। जृ-থমি জল সংগ্রাম দেশান্তরন্থ সং-ন্যাস্যনশনাশনি মহাধনিকানা• উদকক্রিষা কার্য্যা সদাংশৌচ॰ ভৰতি ইতি। ভৃগু রুচ্চদেশঃ। यहाधनिकः भूगार्थः हिमालया-ৰধিক মহাপথ গমনেন সম্পা-षिठ यद्गशः। **न**टेहरू मागःरमीः চ নিত্যবেদাধ্যাপকৈ রগিছো-তৃভিশ্চ একাহাশৌচিভিশ্চ ক র্ত্তব্য মিতি হারলতাদত্ত বিষয়-ত্বেন নৈতদ্বিয়ফক মিতি বাচ্যং। তন্মাত্র বিষয়কত্বে প্রনাণাভাবাৎ । সামানাম্থপ্রবৃত্তত্যা বচনান্ত-র স্থাদিত্যা চৈত্দ্বিষ্যক মিতি । অন্যথা কাশ্যপোক্ত ত্রিরাত্রা-শৌচ মপি অগ্নি জল সংগ্ৰাম **अ**विकोना•• अमानातनव मत्रन ইতি হারলতা দর্শনাৎ অনুমরণ বিষয়ক ন স্যাৎ তস্মাৎ কাশ্যপ বচন ত্রহ্মপুরাণ সমানবিষ্যক মিতি। সুমন্তবচন সংগ্রাম হত-ভর্ত্ত্ সহগমন বিষয়কমপীতি ।। #।। এবঞ্চ সমাধিন। ত্যক্তদে-হ্সা মুক্তসা ধৃতরাফ্র্সা পর্ণো-টজাগ্নিনা দেহদাহকালে তৎ-

পত্ন্যা গান্ধার্য্যা অগ্নিপ্রবেশ দর্শ नामिमानी॰ कामाामि मृष्ठमा मू क्रमाणि भन्। खरभन्नाः मर মরণ **সক্ষছতে ৷** শ্রীভাগবতে ত मुक्त[ा] मश्यात श्विकि र्फाट् পত্যুঃ পত্নী সহোটজে। বহিঃ স্থিতা পতি সাধী ত্মগ্লি মনুবে-ক্যাতি।। অনুবেক্ষ্য**তি অগ্নিপ্রবে** শনণ করিষ্যতি ইতি যুধিষ্ঠিরাষ नात्रमभा ভবिষ্যৎ कथने ॥ म-যিত॰ যান্যদেশস্থ মৃত শ্ৰুত্বা পতিব্ৰতা। সমারোহতি শীঘাুুুুুো তস্যাঃ সিদ্ধি নিবোধত।। ইতি व्यानवहनाषिना नश्यद्गशानुभद्गश যে। নিরবকাশ নৈমিত্তিক কাম্য-ত্বেন মলমাসাদাবপি কর্ত্তব্যতা। নৈমিত্তিকানি কাম্যানি নিপত खि'यथा यथा। **७था ७८थ**व का-ৰ্য্যাণিন কালস্ত বিধীষতে॥ ইতি দক্ষবচনাৎ ৷৷ ঞ্চ ৷৷ তদষণ প্রযো-গঃ। পুত্রাদিনা স্বগৃহ্যোক্ত বিধি-न। অগ্নৌ দত্তে श्वनिতाया॰ ভর্তৃ চিতাযা সহগন্ত্ৰী সাধী স্নাতা প রিহিত ধৌত বাসোযুগা ঙ্গশহস্তা था शूथी উদগ্रুখी वा रेनव जीर्थः নাচান্তা তিল জল স্পত্রৰ মাদা-য ওম্ তৎ সদিতি ব্ৰাহ্মণৈ ৰুচ্চা-

রিতে নারাষণ সংস্থৃত্য নমো-২দ্যামুকে মাসি অমুকে পক্ষে অ-মুকতিথো অমুকগোত্র। শ্রীমতী व्यम्कीरमवी व्यक्तक्षठी ममाठातः ष পূৰ্বক স্বৰ্গলোক মহীষমানত্ব যানবাধিকরণক লোমসমসণ-খ্যাব্দাবচ্ছিন্ন স্বৰ্গবাস ভৰ্ত্তৃসহি-ত মোদমানত্ব মাতৃ পিতৃ শ্বশুর সলত্রয় পূতত্ব চতুর্দ্দেশস্ত্রাবিচ্ছিন্ন कानाधिकत्रनकाश्रादताभन खूय-মানত্বপতিসহিত ক্রীডমানত্ব ব-ক্ষন্ন ক্ৰতন্ব মিত্ৰন্ন পতিপূতত্বকামা ভর্তৃত্বলচ্চিতারোহণ মহ॰ করি-(या रेठि। अनुमत्रत्थ जू छर्जृब-লচ্চিতারোহণ মিত্যত্র স্থলচ্চিতা প্রবেশেন-ভর্ত্রন্মরণ মিতি সঙ্ক-ब्रा यरकी लाक्याना जामिछा চন্দ্রানিলাগ্যাকাশ ভূমি জল স্থ-দযাবস্থিতা স্তর্যামি পুরুষ যম দিন त्राजि मन्त्रा धर्म। यृष॰ माकित्श ভবত ত্বলচ্চিতারোহণেন ভর্তৃ-শরীরানুগমন মহ° করোমি ইতি । অনুরমণে তু ভর্তৃণরীরানুগ-মন মিতাত্র ভর্তনুমরণ মিত্যুচ্চা-ৰ্য্য জ্বলচ্চিতাগ্নিণ ত্ৰিঃ প্ৰদক্ষিণী-ক্তা ওম্ ইমা নারী রবিধবাঃ স-পত্নী রঞ্জনেন সর্পিষা সংবিশস্ত্র।

श्रनसदा अनमीता मृत्रप्ता आ-त्रार्ड जनस्मिन भट्टा रेजि स (धरमाक यस्त्र। ७म् हेमाः পढ़ि-ত্ৰতাঃ পুণ্যাঃ স্থ্ৰিষো ষা ষাঃ সু-শোভনাঃ। সহভর্ত্ শরীরেণ সংবিশন্ত বিভাবসুং॥ ইতি পৌ-রাণিকে মন্ত্রে চ ত্রান্ধণেন পঠিতে নমো নম ইত্যুচ্চাৰ্য্য স্থলচ্চিতা সমারোহে ।। 🟶 ।। আপস্তয়ঃ। চিভিভূষ্টা তু খা নারী মোহা-দ্বিচলিতা ভবেৎ। প্রাক্তাপত্যে-न শুদ্ধেতু তক্মদিন পাপকর্মণঃ ।। পাশ্চাত্য নিৰ্বামৃতে স্মৃতিঃ। একভিত্যাণ সুসাবটো দম্পতী নিধন গতো। পৃথক্ আদ্ধ ত याः अर्गालामनस भृथक् भृथक् য়। বিদ্যাকরধৃতা শৃতিং। একা-হেন সূতানাৱ বহুৰা নথ বা ছ-বোঃ। তন্ত্ৰেণ শ্ৰেপণ ক্লবা পৃথক্ व्याक्षः श्रवर्त्तरयः ॥ यकु यमा নারী বিশেদগ্নি স্বেচ্ছ্যা পতি-না সহ। অশৌচ মুদক তস্যাঃ সহভর্ত্তেতি নিশ্চিত ।৷ তিথাস্ত-র মৃতাযাম্ভ পৃথক্ আদ্ধান বি-मारा । ३७ ठव्जू क ७७।ठ।-ৰ্য্যধৃত যম বচনান্তিম তিথি মৃতা-যা অপি পজাু দূ ভভিথে আন্ধ

मिछि श्रिमाम छक्षिणिशाः १ छन्न जमा वहनमामूलद्वार मम् लएदिन व्यक्तिनमः निखनतः १ अरकाष्मिछे मृठाश्मीिछ यमव-हन विद्याधार ॥ शैछि छिक्तिछ-द्वः॥ ॥। जनार जन्मदिवदर्छ गमनिख्य १५ जमाद्य । मा-क्रिक्षम्त्रात्व प्रमहित्राधार्य

়ণ ৫ অংশে ৩৮ অ-খ্যাবে কন্ধিপুরাণে ৩৩ অধ্যা-ষেচ ক্রম্বরুণ ।।

সহযাষী ত্রি মিলিতগামী। যথা

1 ন নদীষু নদী জ্বাথ পর্বতেষু

চ পর্বতান্। আবাসে ভোজনে
বাপি ন তাজেৎ সহযাবিন ।।
ইতি কৃর্মপুরাণে উপরিভাগে
১৫ অধ্যায়ঃ ।।

महत्रमा जी मूकाशनी। इंडि भक-त्रजावनी॥

महित वा हितः ममृभः। है जि मूक्षरवाथबा। कत्रशः।। मृर्द्या वृष्य हि भूः। है जि कि हि ॥

সহর্ষঃ পু॰ স্পদ্ধন•।। হর্ষঃ। ইতি ত্রিকাঞ্জশেষঃ।। হর্ষযুক্তে ত্রি।। সহসা ব্য হঠাৎ। তৎপর্য্যায়ঃ। অতর্কিতঃ২। ইত্যমরঃ।। অক-সাৎ ৩। ইতি শব্দরত্বাবলী॥

मरमाकर्पकद्रनित्यत्था यथा । . महमा विषशीष्ठ म किया प्रवि-दिकः भन्नमाभागः भागः। वृगर्छ हि विभृषाकाद्विण खनमूकाः य-य स्मय मण्णामः ॥ देखि ভারবिः া হাস্যযুক্তা স্ত্রী। যথা। প্রিय-তমেন যথা সরুষা স্থিত ন সহ-সা সহসা পরিরভ্য তণা শ্লথযি-তু কণ মক্ষমতা গতা ন সহসা সহসা ক্লতবেপথুঃ।। ইতি মাঘে 🖜 স্বর্গঃ ।।

मरमामृष्टः बि र्घाटमृष्टः॥ म ত্তকপুত্রে পু•। ইতি কেচিৎ।। महमानुः पुः मयृतः॥ यखः॥ ক্ষমাৰুক্তে ত্ৰি। ইত্যুণাদিকোষঃ সহস্যঃ পু॰ পৌষ্যাসঃ। ইত্য यतः १।

मर्मु की मगणजमः था। रेडि হেমচন্দ্রঃ।। হাজার ইতি পার-স্য ভাষা। তদাচকানি যথা। काइवीवकुः > लबनीर्यः २ পদাচ্ছদঃ ৩ রবিকরঃ ৪ অজ্জু ন-বাণঃ ৫ বেদশাখা ৬ ইন্দ্রদ্টিঃ প। ইতি কবিকল্পলতা ॥

मरमुकाका जी स्वचमूर्वा। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ ॥

সহসুকিরণঃ পু• সূর্য্যঃ। ইতি

र्नायूभः ॥ महमुम् खुः शू भाष्ठीनम् नाः। ইত্যমরঃ ॥ गर्मुमः खुन प् तामानमः। रेकि मुक्तज्ञावली ॥ मरमुरमाः पु॰ कार्खवीर्यारक् नः । ইতি জটাধরঃ ॥ সহসুধারঃ পু• বিষ্ণুচক্র•। ইতি কেচিৎ 11

সহসূধারা স্ত্রী দেবতামানার্থ-সহসুচ্ছিদ্রযুক্তপাত্রগলিভজল-शाता। यथा। मह्मुशात्रशा (पवी॰ न्नाभयाभि मृदत्रभती । দুর্গোৎসবপদ্ধতিঃ।।

मरम्नयनः भू॰ रेखः। रेजि रुलायुधः ॥

मस्मुत्नवः भू रेखः। रेष्टि एरम-চন্দ্রঃ। বিফুঃ। ইতি শ্রীভাগ-বতং ৷৷

महमुशल की शबा रेजामहा। मर्मुशार् पूर विकृ:। यथा। महमुनीयां शूक्रयः महमुक्तः म-হসুপাৎ। ইতি পুরুষসূক্ত।। সহসুপাদঃ পু• কারওপকী।। मृर्याः॥ विक्ः। ইতি यानिनी॥ मर्मु जुकः पुः विकृः। यथा। পশ্যস্তাদোৰপ মদভূচকুষা সং

र्मुभारमाक जूकानमाम्जूज । मर्मुमूर्क धार्गाकि नामिक मर्मु (भोनास्त्र ज्ञुल्लाह्मम् ॥ ইতি শ্ৰীভাগবতে ১ স্কন্ধে ৩ অ-शायः॥ कार्खवीयाष्ट्रंनम्ह॥ मर्मुज्जा खी महानचीः। मा ह महिवामूत्रमिक्ती। यथा। त्य তাননা নীলভুজা সুখেতস্তন-मखना। त्रक्रमधा त्रक्रामश নীলজভ্যোক্কতালুকা ৷৷ চিত্রা-নুলেপনা কান্তা সৰ্বসৌভাগ্য मािंसनी। अस्टोमगञ्जा शृक्रा সা সহসুভূজা রণে॥ আযুধা-ন্যত্র রক্ষন্তি দক্ষিণাধংকরক্র-মাৎ। অক্ষমালা চ মুষল বা-नामि क्लिमं भना ।। ठळ बिम्ल॰ शत्रशु॰ मध्य घटके ठ পাশক। শক্তি দণ্ড চর্ম চাপ পানপাত্র॰ কমগুলু।। অলঙ্গৃত-ভুঙ্গা ছেভি রাষ্ট্রেং পরমেশ্বরী । ऋर्वगा खिठकानारमे गहि-यामूत्रमर्किनी॥ ইত্যেষা রাজ-नी मृर्जिः नर्दाप्त्यम्यी मञा। ষা ধ্যাত্বা মানবো নিত্য লভ-তে হিত মাত্মনঃ।। ইতি মার্ক-ভেষপুরাণীয় দেবীমাহাক্সা পা-ठेक्यः ॥

महमुम्कः पूर विष्ः। जमा अ মাণ সহসুভুজশব্দে জফ্টব্য॰।। मरमुम्ली जी जरही। रेडि त्राक्रिमिक्टिः॥ मश्मुत्योलिः भू॰ विख्ः। अमा প্রমাণ• সহসুভূজশব্দে ডাইব্য• সহস্রশাঃ পু॰ সৃর্যাঃ। সহস্-কিরণশব্দ দর্শনাৎ।। मर्मुवननः श्रु विकृश हेि শব্দরত্নাবলী।। मर्मुवारः पुर वानताजः। यथा । বাণঃ পুত্রশত জ্যেষ্ঠো বলে-तामीमराज्ञनः। मरमुवार र्वा-দ্যেন তাওবে তোষযगুড॰ ॥ ইতি শ্রীভাগবতে ১০ স্কন্ধে ৬২ व्यशायः॥ नश्जुवीर्या जी पूर्व। रेजायतः ।। মহাশতাবরী। ইতিরাজনি-र्घकः॥ मर्मुत्वश की ठूक ।। काक्षिक विरमयः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ मर्मुतिधि की हिन्नू। देखि स-मिनी वाजनिर्यटकी॥ मश्रुत्वधी पूर षश्रुत्वछमः। ইछि यिषिनी।। कञ्जूती। ইতি রাজ-নির্ধন্টঃ॥ সহসুবেধকর্ত্তরি ত্রি॥ সহসুশিখরঃ পু॰ বিন্ধ্যপর্বতঃ।

সহা

ইতি কেচিৎ ৷৷
সহসূত্রবাঃ পু• বিষ্ণুঃ অস্য
প্রমাণ সহসূত্রশব্দে জন্টব্য
সহসূত্রগাশ্বঃ পু• ইন্দ্রবাঃ। ইতি
কেচিৎ ৷৷

সহসা স্ত্রী অর্ন্ধা। ইতি ভাব-প্রকাশঃ।।

সহসু**ংশুঃ পু• সূর্য্যঃ। ইত্য**-মরঃ॥

সহস্থাণীকঃ পুং শতানীকরাজ-পুত্ৰঃ। যথা। শতানীকো ২ভ বৎ পূৰ্ৰণ পুৱাকল্পে মহীপতিঃ ৷ ইন্দ্ৰায় সুবহূন্ যজ্ঞান্ শ্ৰদ্ধা-পূতেন চেতস।।। যজ্ঞে যজ্ঞে সহসাণি গজাশ্ব রথ দন্তিনাং। বান্ধণেভ্যোহদদদাজন্শ্যামা-নাঞ্চ শত॰ শত॰।। দ্বিজ স্তুফৌ দদৌ পুক্র কৌষিকো ভূভূতে তথা। পত্ন্যা স্তদ্য স জাতোপি कालां काल वावर्षां ।। तम বেদাঙ্গ তত্ত্বজ্ঞো ধর্ম্ম:জ্ঞা নি-ষতত্রতঃ। কাস্ত্যা চন্দ্রনস স্ত ল্যঃ প্রতাপাৎ সূর্য্যবৎ প্রভুঃ॥ मगरम धर्मा तारक व क्रममा शृथि-বীসমঃ৷ এতদ্গুণবতো জ্ঞাত্বা সুত রাজ্যে। বিজাতযঃ।। সহ-मुशिकनायान ठळू खगा मू

হর্ষিতাঃ। ইতি বহিপুরাণে পাপনাশন বৃষদানাধ্যায়ঃ ॥ गर्माननः पूर विकृः। यमा अ-মাণ সহসুভুজশব্দে জউব্যং ॥ সহসারঃ পু॰ক্লী শিরোবস্থিতা-(शंतू अनश्नुमलक यल । यथा। সহস্থারে হিমনিভে সর্ববর্ণ বি-ভূষিতে। অ ক থাদি ত্রিরেখাত্ম र न क व्य जृषित्य।। जन्मस्य পরবিন্দৃঞ্চ সৃষ্টি স্থিতি লমাত্ম-কং। এবং সমাহিতমনা ধ্যাষে-ষ্যাদো ২য মান্তরঃ॥ ইতি ত-স্ত্রসারোক্তান্তর্মাতৃকান্যাসঃ।। मर्माकः पू॰ रेखः। रेजानतः । विकुः। यथा। महमुनीर्वा পুরুষঃ সহস্থাকঃ সহস্পাৎ । ইতি পুরুষসূক্তণ ৷৷

। ইত্যমরঃ।। নখভেষজ্ঞ।। मत्खादमना।। भृषिती। इंडि (यिनि ॥ शक्कि विकी ॥ अर्थ-कहाली। ইতি শব্দচন্দ্রিকা॥ রানা।। স্বর্ণকীরী।। পীতদ (खार्यना। देवि त्रव्रमाना।। তর্ণীপুষ্প । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ সহাঃ পু॰ অগ্রহাযণমাসঃ। ইত্য মরঃ॥ হেমস্তকালঃ। ইতি মে-मिनी ॥ সহাচরঃ পু পীতবিকী। ইতি শব্দরত্বাবলী।। সহচরশ্চ।। সহাযঃ পু॰ অনুকুলঃ। তৎ-পর্যায:। অনুপ্রবং ২ অনুচরঃ ৩ অভিদরঃ ৪। ইত্যমরঃ ॥ রাজ্ঞা সহাষা যথা। সমৃত্যাশ্চ তথা পুষ্টাঃ সতত প্রতিমানি-তাঃ। রাজ্ঞা সহাযাঃ কর্ত্তব্যাঃ পৃথিবী জেতু মিচ্ছতা।। ইতি মাৎস্যে ১৮৯ অধ্যায়ঃ।। महायका खी महायाना॰ मम्हः। ইত্যমরঃ॥ সাহায্যঞ্॥ महायद्य• क्री महाराजा। महारा স্য ভাবঃ। সহায শব্দান্তাবে ঘ প্রত্যযেন নিষ্পন্ন ।। সহারঃ পু॰ আমুবৃক্ষঃ। ইত্যুগা-**मित्कायः ॥ महाश्रमयः । ই**তি

र्लायुधः ॥ गहात्त्रागाः जि नीक्रक्। हेि ट्यह्यः ॥ সহার্দ্ধঃ ত্রি সপ্রেমঃ। স্নেহ্যুক্তঃ । হার্দেন সহবর্ত্তমানঃ।। নহিতঃ ত্রি সমভিব্যাহ্নতঃ। সং যুক্তঃ। সহশব্দাৎ ইতচ্ প্রত্য-ষেন সহধাতোঃ ক্ত প্রত্যযেন চ নিষ্পন্নঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌ-मूनी ।। मःहिजः। ममाक्हिजः। ইতিমুগ্ধবোধব্যাকরণ ৷৷ হিতে-ন সহবর্তমানশ্চ॥ সহিতা ত্রি সহনশীলঃ। সোচা । সহধাতো স্তৃচ্ প্রত্যেন নি-न्नाः। ইতি সিদ্ধান্তকৌ गूमी ॥ महिता क्री महनकत्रनः। मञ्हा অনেনেতি সহধাতো রিত্র প্র-তাবেন নিষ্পাশ। ইতি ব্যাক-রণণ ॥ महिकुः वि महनमीलः। ७९-পर्यायः। महनः २ कछ। ७ তিতিকুঃ ৪ ক্ষমিতা ৫ ক্ষমী ৬। ইত্যমরঃ ॥ महिक्का जी महित्का जीवः। তৎপর্য্যায়ঃ। তিতিকা২ ক্ষমা ৩ কান্ডিঃ ৩। ইতি জটাধরঃ ॥ সহরিঃ পু সূর্য্যঃ। ইত্যুণাদি-

कारा ।।

महितः जी পृथिती। ইতি निकार्खिः जी পृथिती। ইতি निकार्खिः ।।

महान्यः जि श्रमस्यम्गाः। ইত্যमत्रिकायाः जत्र ।।

महान्यः जी विविक्षिनिजानः
। यथा। विविक्षिना जू समस्य

जात्र यामिन् श्रकायाः। मस्राह्मस्य विद्ध्यः भूतीयग्र यভावजः॥ ইতি প্রায়দ্ভিবিবেকঃ॥

महािकः श्री जनकात्रवित्नवः।
स्था। महािकः महजावत्मह
जामत्व जनत्रक्षनः। पिशस्य मगमत्वमा कीितः প্রতার্থিভিः मह।। ইতি চন্দ্রালোকः।।
महािकः पू॰ मूनीना॰ পর্ণশালা
। यथा। मूनीनाक हिठाक्रिणा॰
পর্ণোটিজ সহোটিজৌ। ইতি
হারাবলী।।

সহোচঃ পু॰ দাদশবিধপুত্রান্ত-গভপুত্রবিশেষঃ। ইতি জটা-ধরঃ। বা গর্ত্তিনী সংক্ষিয়তে জ্ঞাতাজ্ঞাতাপি বা সতী। বো-ঢুঃ স গর্ত্তো ভবতি সহোচ ইতি চোচ্যতে।। ইতি মানবে ৮ অ-ধ্যায়ঃ।। বা গর্ত্তবতী অজ্ঞাত- গর্ত্তা জ্ঞাতগর্ত্তা বা পরিণীবতে স গর্ত্ত স্থ্যাণ জাতঃ পরিণেতৃঃ পুল্রো ভবতি সহোট ইতি ব্যপ-দিশ্যতে। ইতি সল্লুকভটঃ ॥ সহোদরঃ পুণ একমাতৃগর্ত্তজাত-ভূাতা। তৎপর্য্যাবঃ। সহজঃ ২ সোদরঃ ৩ ভ্রাতা ৪ সগর্ত্তঃ ৫ সমানোদর্য্যঃ ৫ সোদর্যঃ ৬ । ইতি জটাধরঃ ॥

সহোরঃ ত্রি সাধুঃ। ইত্যুণাদি-কোষঃ।।

সহোবল॰ ক্লী দৌরাখ্যা•। ইতি কেচিৎ।।

সহাং ক্লী আরোগ্যং। সাম্যং।।
সুমধুরং। ইতি শব্দরক্লাবলী।।
সহাং পুং পর্বতবিশেষঃ। ইতি
মেদিনী।। স তু পুনাখ্যদেশম্য
উত্তরপশ্চিমদিশি বর্ততে।।
সহাং ত্রি সোচব্যঃ। সহনীষঃ
ইতি মেদিনী।।

সক্ষমঃ ত্রি ক্ষমতাবিশিষ্টঃ । ক্ষ-মাবিশিষ্টঃ। ক্ষমেণ ক্ষমষা বা সহ বর্ত্তমানঃ । ইতি বহুত্রীহি সমাস নিষ্পান্ধঃ । ।

সক্ষারঃ ত্রি লবণযুক্তঃ। ক্ষারেণ-সহবর্ত্তমানঃ। ইতি বহুবীহি সমাস নিষ্পায়ঃ।। সা দ্রী গৌরী।। লক্ষীঃ। ইতি
শব্দরত্বাবলী ।। পূর্বোক্তপরামর্শবিষয়ীভূতা।। প্রসিদ্ধা।
ইতি দ্রীলিঙ্গ তদ্শব্দস্য প্রথদৈকবচন নিষ্পন্ধা। ইতি ব্যাকরণং ।।

मां था की यज्मना अर्गजनर्भ-नमाञ्जवित्मयः। ७९ भर्यायः। काशिन २। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ यथा। शक्ष्यः कलिट्ला नाम मि-দ্ধেশঃ কালবিপ্পৃত । প্রোবাচা-সুরষে সাংখ্য তত্ত্বগ্রামবিনির্ণ-য।। ইতি শ্রীভাগবতে ১ ক্ষন্ধে ৩ অধ্যায়ঃ॥ অগি চ সাংখ্যাণ मः थ्याञ्चकषाक क्रिनामि छि ৰুচ্যতে। ইতি মাৎস্যে ৩ অ-**शायः॥ जमा वार्रेश र्वा** १ সমাক্ খ্যাষতে প্রকাশ্যতে ব-खंडेल मनस्य निष्या नगाक्-জ্ঞান ত্স্যা প্রকাশমান মা দ্মতত্ত্বণ সাণখাণ। ইতি শ্রীভ-গবদগীতা টীকাষা শ্রীধরস্বামী 11 # 11 व्यथ मा॰ देश ताथा गर्ड পরিণাম্বাদে পরিপস্থিনি জা-গৰকে কথ কার বিবর্ত্তব্যবাদ আদরণীযো ভবেদেষ হি তেষা মাঘোষঃ। সংক্ষেপেণ হি সাংখ্য-

শাস্ত্রে চতসো বিধাঃ সংমাব্যস্তে ৷ কশ্চিদ্বিক্ততি রেব কশ্চিদ্বিক্ত-ভিঃ প্রক্রভিশ্চ। কশ্চিদনুভব ইতি। তত্র কেবলা প্রক্রতিঃ 🐧 প্রধান পদেন বেদনীয়া মূল প্র ক্তিঃ। নাসাবন্যস্য ক্সাচিহি ক্বতিঃ। প্রকরোতীতি প্রকৃতি নি তি ব্যুৎপত্ত্যা সত্ত্ব রজ স্তমো গু ণানাণ সাম্যাবস্থায়া অভিধানা । তদুক্ত॰। মূলপ্রকৃতি রবিকৃৎি রিতি। মূলঞ্গেসী প্রকৃতিশ্চে মূলপ্রকৃতিঃ। মহদাদেঃ কা কলাপস্যাসে মূল নম্বস্ত প্রং নদ্য মূলান্তর মন্তি অনবস্থাণ **७**१९ । न ठ वीका ह्रुतवनन्तर দোষো ন ভবতি ইতি ্বাচ্যণ প্রমাণাভাবাদিতি ভাবঃ। প্রক্ ত্যশ্চ মহদহন্ধার তন্মাত্রাপি ! তদপ্যক্ত । মহদাদ্যাঃ প্রকৃতি বিক্নতয়ঃ সপ্তেতি। অস্যার্থঃ ' প্রকৃত্যশ্চ তা বিকৃত্য শ্চে ুপ্রকৃতিবিক্রতয়ঃ সপ্ত মহদাদীনি তত্ত্বানি। তত্ত্বান্তঃকরণাদি পদ্ধে নেয়ণ মহত্তত্ত্ব মহন্ধার প্রকৃতিঃ মূলপ্রক্তেন্ত বিক্রতিঃ। এব মহ-কার তত্ত্ব' অভিমানাপরনামধে-য মহতো বিক্ষতিঃ। প্রকৃতিশ্চ

তদেবাহৰার ভব্ব তামসং সৎ পঞ্চন্দাত্রাণা সৃশাভিধান। ত দেব সাত্বিক: সৎ প্রকৃতি রেকাদ-শেखियाना॰ वृक्षीखियाना॰ ठकः শ্রোত ঘাণ রসনা ছগাখ্যানা क्रमिक्षिषाना॰ बाक् नानि नाम পাযুপস্থাখ্যানা মুভযাত্মকদ্য ম-নসশ্চ রজস স্তৃভযত্ত্র ক্রিয়োৎ-পাদন দারেণ কারণ মন্তীতি न देववर्षाः। छम्क भीश्वत कः ক্ষেন। অভিমানো ২হঙ্কার স্তঃ স্মাৎ দ্বিবিধঃ প্রবর্ত্ততে সর্গঃ। এ কাদশকশ্চ গণ স্তমাত্রা পঞ্চক देशव ।। সাधिक स्मकानगर्नेः अः বর্ত্ত বৈক্ষতাদহন্ধারাৎ। ভূ তাদে স্তন্মাত্রঃ স তামস স্তৈজসা-मू अर ।। तुकी सियानि हक्कः ८ मा-ত্র ঘ্রাণ রসনা ছগাখ্যানি। বাক্ পাদ পাণি পাষুপস্থাখ্যানি কর্মে: ব্রিযাণ্যাহঃ ॥ উভযাত্মক মত্র মনঃ সঙ্কল কিকলাতাক মিন্দ্রিয **८५** छ। विवृष्ण छञ्जरकी मून्या মাচার্য্য বাচস্পতিভিঃ। কিমব-ना विक्रवश्र विश्वामीन श्रकः ভূতানি। একাদশেব্রিয়াণি চ। তদুক্ত• যোডশকস্ত বিকার ইতি খোডশ সংখ্যাবচ্ছিন্নো গণবো-

जनका विकान अव न अक्रिंड ति**ज्ञर्थः। यमाशि शृथिवा।मरया** গো ষটাদীনা প্রকৃতি স্থাপি ন তে পৃথিব্যাদিভা স্তত্ত্বান্তর মি-তি ন প্রকৃতিঃ। তত্ত্বাস্তরোগা-দানৰ্ক্ষেহ প্ৰকৃতিত্ব মভিমত । গো यहामीना शृनद्विषया হুত্বয়েঃ সমানত্বেন তত্ত্বান্তরত্বা-ভাবঃ। ভত্ত শব্দ স্পৰ্শ ৰূপ রস গন্ধ তন্মাত্ৰেভ্যঃ পূৰ্ব পূৰ্ব সৃন্ধভূত সহিতেভ্যঃ পঞ্চ মহাভূতানি বি-यमामीनि क्रांतरिक वि वि ठणुः **१११%** शांति कायर । इसिय সৃষ্টিস্ত প্রাণেবোক্তা। উক্তঞ্চ! প্রকতে মহান্ততো ২হলার: ত-স্মাদাণশ্চ বোডশকঃ তত্মাদপি ষোডশকাৎ পঞ্চত্যঃ পঞ্চতা-নীতি। অনুভবাত্মকঃ পুরুষঃ। তদুক্ত । ন প্রকৃতি ন বিকৃতিঃ পুরুষ ইতি। পুরুষস্ত কূটস্থো নিত্যঃ পরিণামো ন কস্যাচিৎ। প্রকৃতি নাপি বিকৃতিঃ কস্য-চিদিত্যর্থঃ। এতত্যঞ্চ বিংশতি-তত্ত্ব সাধকত্বেন প্রমাণ্ত্রয মক্তি यठः। তদপু। कुछ प्रनुयान মাপ্তবচন সৰ্বপ্ৰমাণ সিদ্ধত্বাৎ ত্তিবিধণ প্রমাণ মিষ্টণ প্রমেষ সি-

किः अमानाकीि । रेर कार्याः কারণভাবে চতুর্দ্ধা বিপ্রতিপত্তিঃ প্রদর্গ্রি। অসতঃ সজ্জাষত ইতি দৌগতাঃ সঙ্গিরত্তে। নৈষাযিকা-দ্যঃ সতো ২সজ্জায়তে ইতি। বেদান্তিনঃ সতো বিবর্ত্তঃ কার্য্য-জাত ন বস্তু সদিতি। সাংখ্যাঃ পুনঃ সতঃ সজ্জায়ত ইতি। ত ত্রাসতঃ সজ্জায়ত ইতি ন প্রা-মাণিকঃ গক্ষঃ। অসতো নিক পাখ্যস্য শশ বিষাণ্বৎ কার্ণ-ষানুপপত্তেঃ তুচ্ছ।তুচ্ছযো স্তা-দান্থানুপপত্তেশ্চ। নাপি সভো ২সজ্জাযতে কারক ব্যাপারাৎ প্রাগদতঃ শশ বিষাণকৎ সভা সমস্ক লক্ষণোৎপত্তেঃ। ন হি নী-वः निभुव ध्यमाणि शौठः कर्तुः প ৰ্যাতে। ননু **সন্থানত্বে ষ্টস্য** ধর্মাবি ত চেতদেচারু ৷ অসতি ধৰ্মাণি তদ্ধৰ্মা ইতি ব্যপদেশাৰ পপত্ত্যা ধর্মিবঃ সত্বাপত্তেঃ। ত স্মাৎ কারক ব্যাপারাৎ প্রাগপি কাৰ্য্য । সদেৰ সতশ্চাভিব্যক্তি क्रथनगढ़। यथा शीष्टरान जि **ध्न**ष् रेडनग पाश्तन भीतः ভেষীষ্ প্রসং। অসতঃ কারণে কিমুপি নিদর্শন দৃশ্যতে। কিঞ

কার্যোণ কারণ সম্বন্ধ তজ্জনক व्यवस्त वा अथरम कार्यामा म-দ্বমাযাত সতো রেব সম্বন্ধ ইভি নিষমাৎ। চন্নমে সর্ব কার্য্যজাত। नर्जाब्हारयञ अनम्बद्धावित्न-ষাৎ। তদাখ্যাষি সাংখ্যাচাটেয্যঃ । व्यमदान्नास्त्रि मयमः कात्रदेनः ষর সঙ্গিতিঃ। অসয়দ্ধস্য চোৎ-পত্তি মিচ্ছতো ন ব্যবস্থিতি রিতি । অথৈব মনুষ্ঠেষসম্বন্ধ মপি তদে-ব জনয়তি যত্ৰ যক্তক্ত শক্তিশ্চ কার্য্য দর্শনোক্ষেয়েভি ভত্র সংগ-চ্ছতে। তিলেষু তৈলজনন শক্তি রিত্যত্ত তৈলস্যাস্থে সম্বন্ধী সম্বদ্ধত্ব বিকল্পেন তচ্ছজ্ঞি রি:ত নিৰূপণাধোগাৎ কাৰ্য্য কারণ-ষোরভেদাচ্চ। কার্য্যস্য সত্ত্ব কা-রণাৎ পৃথক্ ন ভবতি পট স্তম্ব-ভ্যোন ভিদ্যতে তদ্ধর্মবান্নযদে-ব'ন তদেব' যথা গৌরখঃ। ত-দ্বর্মশ্য পটঃ তত্মানার্থান্তর তর্হি প্রত্যেক তথ্র প্রাবরণ কার্য্য পর্য্য রিতি চেম। সংস্থা ভেদেনা-বিভূত পটভাবানা প্রাবরণার্থ क्रिगोकात्रिष्ठाशशरजः। यथारि । কূর্মাদ্যাঙ্গানি কূর্মাশরীরে নিবি-শ্মানানি তিয়োভবন্তি নিঃসর-

স্ভি চাবির্ভবন্তি এবং কারণ তন্ত্যা-**प्तः** श्रेषे । विष्या निः मञ्जूष ব্দাবির্ভবন্ত উৎপদ্যন্ত ইত্যুচ্য-ন্তে নিবিশমানা স্তিরোভবস্তো বিনশ্য স্তীত্যুচান্তে ম পুনরস্ভা মুৎপন্নঃ সতা বা বিনাশঃ। य থোক্ত॰ ভগব দ্যীতাষা । নাস **रहा विमार** जारवा नाजारका বিদ্যতে সত ইতি। ভভশ্চ কা र्यानुमानाख्य अधानिकिः । **७**मुक्कः। ज्यमसकात्रभद्यामुशामाः ন॰ গ্ৰহণাৎ সৰ্বসম্ভবাৎ। শক্ত ষ্য শক্য করণাৎ কারণাভাবাচ্চ সৎকাৰ্য্য ৰিভি। নাপি সভো ব্ৰহ্মতত্ত্বস্য বিবৰ্ত্তঃ প্ৰপঞ্চঃ বা-**धानूभनछा ९। अधिक्राना**द्वाभाः साः विकाधरा कनर्याञ हो-**शाप्तिव** माक्याट्ड प्रमाण সংভবাচ্চ। তত্মাৎ সুধ দুঃধ মো হাত্মকস্য তথাবিধ কারণ মব शात्रगीय । छथा ह • अध्याया गः। বিমত ভাবজাত সুখ দুঃখ মো হাত্মক কারক ভদম্বিভদ্বাৎ ষত্ যেনাদ্বীযতে তত্ত**ৎ কারণক**ণ यथा क्रिकामिक मूर्वाश्विक मू বর্ণকারণক তথা চেদ তমাত্ত-থেতি। তত্র জগৎ কারণে যেষণ

স্ধান্তকতা তৎসৰ। যা দৃঃধান্ত কতা তত্তজঃ। যাচ মোহাত্মক-তা তত্ত্বন ইতি ত্রিগুণাত্মক কার-ণ সিদ্ধিঃ। যথা হি প্রত্যেক ভা-वाटेक छगावटला १नुज्यस्त्रा य-থা মৈত্রদারেষ্ সভ্যবতী মৈত্রস্য স্থ মাবিরস্তি ত• প্রতি **সত্বগুণ** প্রাদৃর্ভাবাত্তৎ সপত্নীনা দুংখ তাঃ প্রতি রজোগুণ প্রাদুর্ভাবাৎ তা মলভ্যানস্য চৈত্ৰস্য যোহো ভবতি ত প্রতি তমোগুণ-সন্তা-বাৎ। এব মন্যদিপি ঘটাদিক লভামান সুখ করোতি পরে রপি হ্রিযমাণ দুঃখাকরোতি উ-मानीनरमार्थका विषवरद्यानान-তিষ্ঠতে উপেক্ষা বিষযত্বণ নামো-হঃ মুছ বৈচিত্ত্যে ইত্যস্মাদ্ধাতো (गार्गक निष्णाखः উপেक्नी-যেষু চিত্তবৃত্ত্যনুদ্যাত্তস্মাৎ সর্ব• ভাবজাত সুখ দুঃখ মোহাত্মক ত্রিগুণ প্রধান কারণক মবগম্য-তে। তথা চ শ্বেতরোপনিষদি শ্র-যতে। অজা মেকা॰ লোহিত শুক্ল ক্লফাণ বন্ধীণ প্রজাণ জনযন্তীণ সং ৰূপাণ। অজে। ছেকে। জুষমাণো-নৃশেতে জহাত্যেনাণ ভুক্তভো-গা মজোন্য ইতি। অত্ত লোহিত

শুক্ল কৃষ্ণ শব্দা বৃঞ্জকত্ব প্রকাশ- ॥ কত্বাবরকত্ব সাধর্ম্ম্যাৎ রজঃ সন্থ তমোগুণত্ব প্রতিপাদনপরাঃ নম্বচেতন প্রধান চেতনানধি-ष्ठिण भरमामि कार्या न गाञ्जि যত অতঃ কেনচিৎ চেতনাধি-ষ্ঠাত্ৰা ভবিতব্য । তথা চ সৰ্বাৰ্থ **मर्त्म। পরমেশ্বরঃ স্বীকর্ত্তব্যঃ স্যা**-দিতি চেৎ। তদসঙ্গতী অচেতন-স্য। যথা বৎস বিবৃদ্ধার্থ মচেতন॰ ক্ষীর প্রবর্ত্তে। যথা চজল মচে তন- লোকোপকারায প্রবর্ত্ত । তথা চ প্রকৃতি রচেতনাপি পু ৰুষ বিমোক্ষায় প্ৰবৰ্ৎস্যতি। ত-मुकः। वष्म विवृक्षार्थः कीत्रमा यथा প্রবৃত্তি রেতস্যাঃ পুরুষ বি-মোক নিমিত্ত তথা প্রবৃত্তিঃ প্র-ধানসোতি। যম্ভ পরমেশ্বরঃ করু-ণষা প্রবর্ত্তক ইতি পরমেশ্বরাস্তি**-**ख्वानिना॰ ডिखिमः म প্রাযেণ গতঃ বিকল্পানুপপতেঃ। স কি॰ সৃষ্টেঃ প্রাক্ প্রবর্ততে সৃষ্ট্যন্তর কাল বা। আদ্যে শরীরাদ্যভা বেন দুঃখানুপপত্তৌ জীবানাণ मूःथ अशारंभक्शानू भगितः। वि তীষে পরস্পরাশ্রষ প্রদঙ্গঃ। ক-ৰুণবা সৃষ্টিঃ সৃষ্ট্যা কাৰুণ্য নিতি

তত্মাদচেতনস্যাপি চেতনান-ধিষ্ঠিতস্য প্রধানস্য মহদাদি बाराय भित्रवायः भूक्षार्थ अ-যুক্ত প্রধান পুরুষ সংযোগনি মিত্তঃ। যথা। নিৰ্ব্যাপারস্যা-প্যাম্স্ক সন্নিধানেন লোহিভস্য ব্যাপার:। তথা নির্ব্যাপারস্য পু-क्रमग मिशातिन अधान गा-পারে। যুজ্যতে। প্রকৃতি পুরুষ সম্বন্ধশ্চ পংশ্বন্ধবৎ পরস্পরাপে-কা নিবন্ধনঃ। প্রকৃতি হি ভো-গ্যত্থা ভোক্তার পুরুষ মপেক্ষ-তে ৷ পুরুষোপি ভেদাগ্রহাদুদ্ধি-চ্ছায়া পত্ন্যা তদগত দুঃখত্ৰয় যা-র্ষমাণঃ কৈবল্য মপেক্ষতে। তৎ প্রকৃতি পুরুষ বিবেক নিবন্ধনঃ। ন চ তদন্তরেণ যুক্ত মিতি কৈব-न्यार्थः भूक्षयः अधान मरभक्रा । यथा थलू कोहिब अन्धस्त्री अ-थि সার্থেন গচ্চস্তৌ দেবরুতাদু-পপ্লবাৎ পরিত্যক্তসাথৌ মন্দম-ন্দ মিতস্ততঃ পরিভূমস্তৌ ভ্যা-जलो रेषद्वनार मः स्थान मूल-গচ্ছেতা। তত্র চান্ধেন পঙ্গুঃ স্ক-ন্ধ মারোপিতঃ পঙ্গুদর্শিতেন মা-র্পেণান্ধঃ সমীহিত স্থান প্রা-প্লোতি পঙ্গু রপি কন্ধাধিক ঢঃ তথা

পরস্পারাপেক প্রধান পুরুষ নি-वन्ननः मनः भूक्षमा मर्मनार्थ কৈবল্যার্থতবা প্রধানদ্য পঞ্ ন্ধবৎ উভযো রপি সমন্ধ স্তৎ-ক্তঃ সর্গঃ ইতি। ননু পুরুষার্থ নিবন্ধনা ভবতু প্রক্তেঃ প্রবৃত্তিঃ নিবৃত্তিস্ত কথমুপপদ্যত ইতি চেদুচ্যতে যথা ভৰ্ত্ৰ। দৃষ্টদোষা স্বৈরিণী পুন ভর্ত্তার নাগৈতি যথা ব। ক্তপ্ৰযোজনা নৰ্ত্তকী নর্ত্তনে তথা প্রক্রতি রপি ষথো-ক্তণ রঙ্গদ্য দর্শবিদ্বা নিবর্ত্ততে नर्वकी यथा नृजाद পूक्ष्यमा তথানন্দ প্রকাশ্য নিবর্ত্ততে প্রকৃতি রিভি। তদর্থণ নিরীশ্বর সাংখ্য শাস্ত্র প্রবর্ত্তক কপিলানু-সারিণা মত মুপন্যস্ত । ইতি মাধবার্যাক্ত সর্বদর্শনসংগ্রহে मां थान र्गन ।। 🛊 ॥ ज्यमा ह-দ্বারো অধ্যাযাঃ। তত্র প্রকৃতি পুরুষযো রুভযোঃ সৃষ্টিকর্তৃত্ব । অন্ধ পঙ্গুন্যাষেন স্থাপিত । ভত্তানা সংখ্যানঞ্চ ক্তত। ইতি **८किट ।।** तम्मान प्रतिकार

া॰যাতিকঃ ত্রি সম্যক্প্রকারেণ হননকারকঃ। মারাত্মকঃ। সং-যাতশকাৎ ঞ্চিক প্রত্যবেন নি-

পানঃ।৷ জলনকতাবধিক যো-**७**भनक्व•। यथा। जनामाः কর্ম্ম ততোপি দশমণ সাংবাতিকণ বোডশভ । তৎ কল । দেই অবিণ বন্ধূনা হানিঃ সাংঘাতি-কে তথা। ইতি জ্যোতিস্তত্ত্ব ।। मा पृष्टिक की महाःकल । हे-ত্যমরঃ ৷৷ দৃষ্টিপরিকল্পনান্যায়ঃ । यथा। क्लोहिजान्ड त्रमन्छाना-ভাবে পিতৃ রধিকারবৎ দৌহি-ত্রান্ত পিতৃসন্তানাভাবে পিতা-मश्राधिकातमा मा॰मृखिकना।य সিদ্ধত্বাক্ত। যথা পিত্ৰভাবে মা-তা তথা পিতাহাভাবে পিতা-मशैष्ठि मा॰ मृखिकनगरयन পि-णगश्थिकात्रमा मिक्रघाष्ठ । रें विश्वीक्ष्यं ठर्ना नहां त्र क्रव क-মসংগ্রহঃ।।

সাংযাত্রিকঃ পুং পোতবণিক্।
ইত্যমরঃ॥ দে বহিত্রগামিনি
বণিগ্জনে। সংপূর্বো ষাতি দ্বীপান্তরগমনবৃত্তি স্তত স্ত্রাসুসিতি
ত্রঃ স্ত্রিষা মাপ্ সংযাত্রা দ্বীপাস্তর গমনং তদস্য প্রযোজন মিতি
বিকার সংঘেতি ফিকঃ। সম্যক্
যাত্রা সংযাত্রা ত্যা ব্যবহরতীতি চযেকাদিতি ফিকো বা ।

ইতি ভরতঃ ॥ मा पूरीनः बि यूक्षत्रमकः। तर्भ সাধুঃ। ইত্যমরঃ।। मा'तारिंग की रहेगा मगाक् नदः। इंछि मूक्षरवाधवा। क्रुनं ।। সংপূর্ব রুল ধনে। ভাবে শিনি ণিদ্বাদৃদ্ধৌ সংরাবিণ ইতি স্থিতে **७७: स्वार्थ (यः निर्छ जित्रामा** ह ইতি বৃদ্ধৌ ষধো ৰ্ম্বোপ ইত্য-কার লোপে সা•রাবিণ হউদ্য সমাক্ শব্দো ব্যাপ্ত ইত্যর্থঃ। ইতি তট্টীকাষা দুর্গাদাসঃ।। मा॰वৎসরঃ পু॰ গণকঃ। ইত্য-মরঃ।। সংবত্সরসম্বন্ধিনি ত্রি।। সাণ্বৎসরিকঃ ত্রি সণ্বৎসরে खवः ॥ **म**॰व**९मतः व्याभाजृ**जः ॥ প্রতিবর্ষকর্ত্তব্যশ্রাদ্ধণ। यथा । অথ সাংবৎসরিকশ্রাদ্ধ । তত্র গোভিলঃ। অত উর্দ্ধুণ সং-বৎসরে সংবৎসরে প্রেতাযান দদ্যাৎ যশিষহনি প্রেতঃ স্যাৎ ইতি। অত উর্জ্বণ সপিঞীকর-ণাস্ত আদ্ধনিমিত্তাদাদ্য সংবৎ-সরাদূর্দ্ধ সংবৎসরে সংবৎসরে প্রতিবর্ষ থিকানহনি মৃত স্তব্দি-बर्नि मृठाय ननगर। व्याघुः। প্রতিসংবৎসরক্ষৈব মেকেঞ্জি-

ষ্ট মৃতাহনি। এতেন সপিত্তী-कत्रगाथकर्षा ज्यामाम वस्मद्ध-পি মৃতাহে আদ্ধান্তর কর্তব্য मिणि रेमिशिद्वांकि (हरा। वाक यार रश्याजि धृष्ट रहन । शूर्व সংবৎসরে শ্রাঞ্ধণ বোডশণ পরি-কীৰ্ত্তিত। তেনৈব চ সপিওত্বণ ভেনৈবান্দিক মিষ্যতে ॥ পূর্ণদংবৎসর ক্রিয়মাণ শ্রাদ্ধা-म्बर्शां छव निर्दाह खराशक है ग পিণ্ডীকরণ প্রাহ্বাদপ্যভয়নির্বা-हां न शूर्नमःवयमात्र व्यक्तिकाः ন্তর । এব পঞ্চদশ প্রাদ্ধেপ্য-মেষ । মৎ দ্যপুরাণ । ততঃ প্র-ভৃতি সংক্রান্তাবুপরাগাদি পর্বসু । ত্রিপিণ্ড মাচরেৎ আদ্ধ মেকো-क्षिये मृजार्नि ॥ ७७ः প্রেতত্ব পরীহারাৎ ত্রিপিঞ্ড ত্রৈপুরুষ । নিরুপপদ মৃতাহশব্য মৃতসয়-ন্ধি মাস পক্ষ তিথিবিশেষ পরঃ। উপপদাত্ क्रिछिथिविटमय मा-ত্রপরঃ ৷ যথা মৃতাহে প্রতিমাস क्र्यामिजाएने। मधः। मिन-জীকরণাদৃদ্ধৃ যত্র যত্র প্রদীষতে। তত্ত্ব তত্ত্বৰ সৰ্ব্যাৎ বৰ্জবিদ্বা মৃতাহনি।। অমাবাস্যা ক্ষো ষদ্য প্রেতপক্ষে ২থ বা পুনঃ।

সপিত্তীকরণাদৃদ্ধ্ তস্যোক্তঃ পা-र्वा विधिः॥ वयः मन्युमानानाः वय वर्गा बिखा प्रमा ३ **छार्थः। मृ**ठार शर्युामस जिटेमव-তত্বদ্য প্রতিপ্রদব মাহ। অমাবা-স্যা মিতি। প্রেতপক্ষো ২ত্র পিতৃ-পক্ষঃ অশ্বযুক্ ক্লঞ্পক ইতি যা-বৎ। ন তু ফ্রন্ডপক্ষাত্রণ ফ্রন্ডপক্ সামান্যপরত্বে অমাবাস্যাপদবৈ-যর্থ্যাপত্তেঃ।। 🗱।। পিতৃপক্ষ বিশে ষ্যতি হেমাজি মাধ্বাচার্য্যধৃত্ত নাগরখণ্ডা নভো বা হথ নভ **रमा वा मलमारमा यहां छरवं ।** मक्षमः পिতृशकः मापनाद्विव তু পঞ্চমঃ ৷৷ অত্ৰ শ্ৰাবণ ভাজ-যো রন্যতরস্য মলমাসত্ত্বে আ-ষাঢ্যপেক্ষয়া সপ্তম পক্ষস্য পিতৃ-' পক্ষাৎ। অত্ত মৃতদ্যৈব প্রেড-পক্ষ মৃতত্ব নতু মলমাস ভাজ-ক্ষপক্ষৃতস্য। ততশ্চ ভত্ত মৃ-তদ্য বর্ষান্তরে অশ্বযুক্রঞপকে ২পি তচ্ছাদ্ধকরণে ন পার্বণ। কিন্তেকৌদিষ্ট মিতি। অত পা-ৰ্বণো বিধিঃ পাৰ্বণেতিকৰ্ত্তব্যতা-टेक्टकान्मिके विधि त्रिक्ति नवावर्कः মানপ্ৰভূত্যঃ। তম পূৰ্ব বচনো-ক্ত ত্রৈপুরুষিকস্য মৃতাহে পর্য্যু-

मखमा भार्बरण विधि त्रिजारनन প্রতিপ্রস্বাৎ। তন্মাদত্র সদৈব-তৈকোদ্দিষ্ট• ন যুক্ত• কিন্তু ত্ৰৈ-**পু**रूषिक न जू वार्ष्युक्रविक । ক্ষু সমন্বিত মুক্ত্বা তথাদ্য শ্ৰা-क्रारोष्डमः। প্रভ्यासिक्यः म्न-ষেষু পিখাঃ স্যুঃ ষডিতি স্থিতিঃ ॥ ইতি ছন্দোগপরিশিষ্ট বচনে-न প্রত্যান্দিক ব্যতিরেকেণ ষট্-मः थानिसमार ॥ # ॥ এत ममा-বাদ্যাদি নরণ নিমিত্তেন মাতৃ র-পি প্ৰত্যাব্দিক পাৰ্ৰণ বিধিনৈ-ৰ। অপুত্ৰ। যে মৃতাঃ কেচিৎ স্ত্ৰিৰো বা পুৰুষাশ্চ ৰে। তেষা মপি চ দেয় স্যাদেকোদিষ্ট ন পাৰ্বণ ॥ ইত্যাপস্তম্বকনে অ-পুদ্রা ইতি বিশেষণোপাদানাৎ সপুত্ৰাণাণ পাৰ্ৰণাভ্যনুজ্ঞানাৎ। এতচ্চ নাত্রাদি ত্রিত্য দৈবত• কার্য্যণ। মাত্রে পিতামহৈ প্রপি-তামছৈ চ পূৰ্বৰ বাল্নান্ ভো-জৰিমা ইতামফকাৰাণ তথা দ-ৰ্শনাৎ। অবসান দিন নিমিত্তেন পাৰ্ৰণ বিধিনা ছন্দোৰ্টেগ রপি মা-ত্রাদি ত্রিকাণা প্রাদ্ধণ কর্ত্তব্য । न रशिष्ठाः शृथक्तमान्वमानिन नामृत्छ। ইতি ছন্দোগপরিশিক

.বচনে বিশেষতঃ প্ৰতিপ্ৰদৰাৎ ৷ এব॰ সপিণ্ডীকরণে হপি। এতঞ মৃতাহ পাৰ্বণ মাতা পিত্ৰো রেব। তথা চ হেমাজিধৃত কাত্যায়ন বচন । সপি ভীকরণাদূর্দ্ধু • পিত্রো রেব হি পার্বণ। পিতৃব্য ভ্রাতৃ-माजूना त्मरकामिके मरेमव जू। মাতৃপদ সপত্নীমাতৃপর । স্-পত্নী মাত্রিত্যত্র মাতৃপদস্য রাজ-দস্তাদিত্বাৎ পরনিপাতঃ। ততশ্চ বাক্যে মাতৃ সপত্নীতি ন প্রযো-জ্যা কিন্তু সপত্নীমাত বিত্যাদি-জাভ্যা॰ মৃতাহে পাৰ্বণ কৰ্ত্তব্যং। ঔরস ক্ষেত্রজৌ পুত্রৌ বিধিন। পাৰ্ধনে তু। প্ৰত্যব্দ মিতরে স্ব-ৰ্যু রেকোদ্দিষ্ট সূতা দশ।। ইতি क्तांवान वहनमा। यव यव अमा-তব্য সপিত্তীকরণাৎপর ৷ পার্ব-**ণেন বিধানেন দেষ মগ্নিমতা স** मा।। इंडि मध्माश्रुतान वहनमा চৈকবাক্যত্বাৎ। উশনা চূ। প্রত্য-कः मर्गवक्षाकः माभिः कवीं ठ देव षिकः। अर्देकामिके मना अर्या-মিরমিঃ প্রাদ্ধদঃ সূতঃ।। প্রাপ্তজযুক্ত্যা প্রেতশ্রাদ্ধস্য এ কোদিফীছাভিধানাৎ সাম্বৎস-

রিকশান্ধে যদেকোদিফ পদ-মুক্ত তৎ প্রেতজাদ্ধ ধর্মগ্রাছি-षार्थः। उठम्ह सागाषात्मका-र्माानिवाङः। ন তু रथा প্রেড-শ্রান্ধে পিতৃশব্দ স্থানে প্রেতপ-দোহঃ তথাত্রাপীতিবাচ্যণ সাম্বৎ-সরিকে প্রেত্থাভাবাত্তথাবিধা-নানুপপত্তে:। এবং পুতিসায়ৎ-मृतिक आदम्ब मयमार्थक श्रम । जा-শীঃ প্রার্থন শেষভোজনঞ্চ কর্ত্ত-वा॰ ॥ 🛊 ॥ त्रक्यनाया॰ वित्नयय-তি গোতমঃ। অপুত্রা তুষদা ভা-র্যা সম্পাপ্তে ভর্তু রান্দিকে। র-জস্বলা ভবেৎ সা তু স্বৰ্য্যাৎ তৎ-পঞ্চমে দিনে।। স্বর্যাক্সান্ধ মিতি ষতু আদ্ধচিন্তামণে। 1 একো क्रिके देव वर्षि किन मिका-(मन कर्खवा[•]। একোদ্দিউম্ব क-र्खवाः शादकरेनव मना स्वयः। ज्य-ভাবে পাকপাত্রাণা তদহঃ সমু-পোষণ ৷৷ ইতি লঘুহারীত বচ-নাৎ। পাকপাত্রাভাবঃ পাকসা-মগ্রাভাবোপলক্ষকঃ। তদাপি নামপ্রাদ্ধ কিন্তুপোষণ মেব প্রা-क्षत्रानीय मिछार्थः। त्रय मिछा-ভিধানাৎ অপাটবাদিনাপি না-ন্যদারা কার্যিতব্য । অতএব

উপবাদেনৈক आक्षणनीरमन তদকরণ প্রাযশ্চিত্তেন বা ক্লভ-क्रुञाङ्याः आक्षिवित्र रेजामिव-চনाष्ट्रि टेनकाष्ट्रभाग मनुश्रानः মিতি তন। পিতৃত্প্তে রজাতত্বে-टेनकामभाग जनमूक्षानमा युक्क দ্বাৎ। অন্যথা ষোডশ আদ্ধা-**धिकादिशः क्लाहिखशाद्य। यः** দ্যৈতানি ন দীয়ন্তে প্রেতশ্রা-দ্বানি যোডশ। পিশাচত্ব প্রবেণ তস্য দত্তৈঃ আদ্বশতৈ রপি ॥ ইতি যমবচনেন যোডশ শ্রাদ্ধা-ভাবে প্ৰেতত্ব পরীহারো ন স্যাৎ৷ **ञ्या**पूर्वादमा न आकार्यः किस् তদানীস্তনাকরণ প্রাযশ্চিতার্থঃ । যথা স্বকালাক্তত সংক্ষারে প্রা-যশ্চিত্ত॰ রুত্বা কালান্তরে তৎক-রণ তথাত্রাপি তদিনে উপবা-স॰ কৃত্বা একাদশ্যাণ শ্রাদ্ধণ ক-র্ত্তব্য মিতি। একোদ্দিষ্ট নান্য দারা কার্য্য মিত্যত্রাপি গোত্র-জেতরত্বেন বিশেষণীয় । ন ক-माहि मरगाबाय आदः कार्या মগোত্ৰকৈ:। ইতি প্ৰেতশ্ৰাদ্ধে বন্ধপুরাণাৎ। অত্ত হি নাগে। ত্রজন্য সাক্ষাৎ কর্তৃত্ব নিবিধ্য-তে সগোত্রাষেত্যসম্বন্ধাপত্তে:।

তস্মাদগোত্রজৈ ধারভূতৈঃ স গোতাষ প্রান্ধ ন কার্য্য মিত্যর্থঃ । তথ। চ পর্যাদাসপক্ষে গোত্রজ-ষারা কার্যিতব্য মিতি সুব্যক্ত মেব। প্রসজ্যপক্ষে তু অগো-ত্রজ বিশেষণ স্বরসাৎ গোত্রজ লাভঃ। প্ৰেত্ঞান্ধ ধৰ্ম গ্ৰাহি-ত্বাৎ সায়ৎসরিক মপি তথেতি শ্রাদ্ধবিবেকঃ। কল্পতরু রুত্নাকর-ষোস্ত স্বগোত্রাষেতি পঠিত স্ব-মা শ্লীষ গোত্ত যদ্য দ স্বগোত্তঃ विमामानरभाव इंडार्थः। यटेगाः শ্রাদ্ধ কর্ত্তব্য তস্য স্বগোত্তজে বিদ্যমানে ২ন্যগোত্তজেন সং-ঘাতান্তর্গতেন রাজ্ঞা আদ্ধ ন কার্ষিতব্য মিতি ব্যাখ্যাতঞ্ । এতন্মতে ২পূচ্চ দুহিত্রাদীনা মস-গোত্ৰত্বেপি ন নিষেধঃ। ৰস্তত-স্তু তৎপাঠেপি কর্মধারষাপেক-ষা বহুত্ৰীহে জ্বন্যদ্বাৎ স্ব মাদ্মী-যঞ্চ তৎ গোত্রঞ্চেতি তল্মৈ অন্য গোত্তজ্বারা আদ্ধ ন কার্য্য মিত্যর্থঃ। অতো লঘুহারীতবচ-त्न वयः श्रवः वरशाख्येत्रः। ख-ন্যথা ব্ৰহ্মপুরাণোক্তাগোত্রজ্পদ বৈষর্ধ্যাপতেঃ।। 🛊 ।। এবঞ্চ ভবি-ষ্যপুরাণ প্রভাদখণ্ডবোঃ। মৃতা-

হনি পিতু যন্ত ন স্ব্যাৎ শ্ৰান্ধ মাদরাৎ। মাতু শৈচব বরারোহে বৎসরান্তে মৃতাহনি॥ নাহন্ত-স্য মহাদেবি পূজাণ গৃহ্লামি নো হরিঃ। ম্রীচিঃ। পণ্ডিতা জ্ঞানি-নো মূর্খা স্ত্রিষো ২থ ব্রহ্মচারিশঃ । मृठांश् नमिठिकमा ठाखारम স্বভিজাযতে॥ ইত্যাভ্যা॰ কাল-শাধবীযধৃতাভ্যা• বচনাভ্যা• मायৎमतिक आक्षमा मृठार क র্ত্তব্যদ্বেনাৰশ্যকত্বাৎ ভবিষ্যমৃ-তাহে স্বয়ণ কর্ত্তব্যত্ব সম্ভাবনা রহিতেন মৃতাহাৎ পূর্বকালে ২পি প্রতিনিধীয়তে। প্রক্ষিপ্যাগ্নি॰ স্ব-मারেষু পরিকল্পার্ডিজ তথা। প্র-वरमर कार्यावान् वित्था वृरेषव न চির ফচিৎ। ইতি ছন্দোগ-পরিশিষ্টোক্ত সাষণ প্রাত র্হোম প্রতিনিধিবৎ। এবং সতি প্রতি-নিধ্যকরণ এব একাদশ্যাণ ক্রিষ-তোঞা নচ পাক্সাঙ্গরেন প্রধানতিথিকর্ত্তব্যতানিষম ইতি বাচ্য ৷ ব্রতোপবাস নিযমে খ-টিকৈকা যদা ভবেৎ। সা তিথিঃ সকলা জেষা পিত্রর্থে চাপরাহ্নি-की।। ইভি বচনেন মুহূর্তমাত্র শাভেপি কর্তব্যতোপদেশাৎ ছ-

দানী পাকে তদসম্ভবাৎ। এব মুদীচ্যাঙ্গশেষভোজনে ২পিন তরিষমঃ। ইতি প্রাদ্ধতন্ত্র ।। সাংবাদিকঃ পু নৈষাধিকঃ। ইতি জটাধরঃ।। সংবাদদাতরি ত্রি।।

मांग्यिकः जि मंग्ययुक्तः। छदপর্যাयः। সংশ্যাপর্যানসং হ
। ইত্যমরং ।। সন্দিহানং ৩ ।
ইতি জটাধরং ।। দে সংশ্যাবিযয়ে স্থাপাদৌ। সংশ্যা নাপরং
মাণ্যাবিকং ফিকং সংশ্যা মাপরং
মানসং যত্র স্থাপাদৌ স তথা।
সংশ্যা মাপরং মানসং বস্যা স
তথেতি ষষ্ঠান্ত পদার্থত্বে সংশ্ ঘিতরি পুরুষাদাবপ্যেত্তংশক্ষ ঘ্য প্রবৃত্তিং স্যাদিতি ভরতং ।।
সাংস্থানিকং ত্রি সমানদেশীয়ং।
ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী।। সংস্থান

नाः नाविषः क्षी वृक्षना वृक्षः वानि शा नगाक् नावः। देखि नः किः श्वनाद्वां गातिवृद्धिः ।।

সাক ব্য সহার্থ । ইত্যমরঃ ॥ সাকল্য ক্লী সমুদায়ঃ। সকল-স্যভাবঃ। সকলশকাৎ ফ্য প্র-ত্যযেন নিষ্পন্ন ॥ সাকারঃ ত্রি আকারবিশিষ্টঃ।

যথা। সাকারক নিরাকারণ স
গুণ নির্গুণ প্রভুণ সর্বাধারক সর্বক স্বেচ্ছারূপণ নমাম্যহণ।।
ইতি বন্ধবৈবর্তে গণপতিখণ্ডে ৩২ অধ্যাফঃ।।

मानक्षः प्र वृक्षिति स्थः। म नक्षः अतः ইতি शुक्किति प्राण्यः। ভाষা। তৎপর্যায়ः। অস্থিকলঃ ২ বিকটঃ ৩ বস্ত্রভূষণঃ ৪ সক্ষণ্ডঃ ৫ কর্রকলঃ ৬ সঙ্গক্তঃ १ । অস্যগুণাঃ। ক্ষায়ত্বং । ক্ষি কারিত্বং। দীপনত্বং। সারকত্বং । শ্রেম বাতনাশিত্বং। বস্তর্জ্ঞানকত্বং। লযুত্বকং। ইতি রাজানি

বাকেত ক্লী অযোধ্যানগর । ইতি শব্দরত্নাবলী।।

माक्कः थु॰ यवः। ইछि मिक्काः स्टर्का मृती॥ मक्कृ ममृरह क्री॥ मक्कृ मस्क्रिनि वि॥

मारथयः जि मिथमम्बी। हेि

সাধ্য• ক্লী স্থ্য•। ইতিধনঞ্জয-কোষঃ।।

সাগরঃ পু• সমুদ্রঃ। ইত্যমরঃ॥ সগরেশবভাবিত্ত্বাৎ ত্স্যায

সাগরো

मिछि तक मागदा प्रकाशिः ।
कीदापाणिवभूगभया मागद्र
वाशिष्टाणाणिवभूगभया मागद्र
वाशिष्टा इकि छुछै। । इकि
छ्रत्रः। म जू मश्चिरिशः। यथा।
लवनः कीद्रमः छुण्डाप्पापः
शिमः छुत्रः। मृद्राप्टाप्ट्यम्द्राप्टा
ह वाम् मः मश्चरमा छुद्य ।। हछातः मागद्राः था। इक्राप्टा
वाङ्गभूदाप्टा गन्द्यमामाशासः
।। का। मृगदिर्भयः। इकि नक्षहिक्यका।। मम्भूष्यमःथा। यथा
। विन्तः थर्दा निथ्वं मह माश्च भह मागद्रः। इकि बक्राश्च-

পুরাণ ।। সাগরগামিনী স্ত্রী নদী। ইতি ত্রিকাণ্ডদেষঃ।। সূক্ষেলা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

সাগরনেমিঃ স্ত্রী পৃথিবী। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। সাগরমেখলা স্ত্রী পৃথিবী। ইতি

হেমচন্দ্রঃ ।। সাগরান্বরা জী পৃথিবী। ইতি হেমচন্দ্রঃ ।।

मागतालयः प्र वक्रवः। ইতি
भक्तमाला ॥

সগরেণাবভারিভদ্বাৎ তস্যায- সাগরোখ ক্রী সমুজলবণ । ইতি

রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ সাকল ত্তি সকলেন নিবৃতি। সঙ্গলনাজ্জাত। ইতি নিদ্ধান্ত (क् मूनी।। माकृष्टिः पू॰ मूनिवित्मयः। म जू বৈষাযুপদ্যগোত্রদ্য প্রবরঃ । यथा। देवरायुशन्यत्गाळाय मा স্তিপ্রবরাষ চ। অপুত্রাষ দ-দাম্যেতৎ সলিল' ভীষ্মবর্দ্মণে।। ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব ॥ সাখ্যঃ পু• কপিলমুনিক্ত দর্শন-भाखिवित्मयः। ७९ भर्यायः। काशिनः २। ইতি ट्याउसः॥ তথা চ। সাখ্যা কপিলমুনিনা প্রোক্তণ সংসারবিমুক্তিকারণ হি। ষত্রৈতাঃ সপ্ততি রার্য্যা ভা-ষ্য চাত্ৰ গৌডপাদক্বত ৷৷ এতৎ পবিত্র মগ্র্যাণ মুনি রাসুরবে ২নু-कम्लाशा अमरमा। जामूति त्रि পঞ্শিখায় তেন চ বহুধা ক্বত তন্ত্র•।। শিষ্য পরম্পর্যাগত মী-श्रुत क्रटकन टेंग्डमार्यग्रिकः । मःकिश्च यार्यायिना मगाधिः জাৰ সিদ্ধান্ত ।। সপ্তত্যা কি ল যে ২থা স্তে ২থাঃ ক্লৎন্সস্য ষষ্টিতন্ত্রস্য। আখ্যাষিকা বির-

হিতাঃ পরবাদ বিবর্জিতা শ্চাপি

॥ ইতি সাংখ্যপ্রবচনভাষ্য ॥ সাক্ষঃ পু॰ সক্ষঃ। ইত্যমর-টীকাষাণ ভরতঃ।। সাঙ্গুমিকঃ পু্ সংগ্রামাষ প্র ভবতি। সেনাগতিঃ।। সঙ্গ্রাম ঙ্গশলে ত্রি। ইতি সিদ্ধান্ত-क्रियुमी ॥ সাজ্জেপিকঃ ত্রি সংক্ষিপ্তঃ। ইতি निकाखको मृती।। मःकाशकाः রকঃ। সংক্ষেপশবাৎ ফিক প্র-ত্যয় নিষ্পন্নঃ॥ সাচি ব্য তির্য্যগর্থঃ। তৎপর্যা-ষঃ। তিরঃ ২। ইত্যমরঃ ॥ সাচিব্য॰ ক্লী সচিবস্যভাবঃ। স-চিব শব্দাৎভাবে ষ্ণ্য প্রত্যবেন নিষ্পন্ন•॥ माहिवाहिका जी स्थलपूनर्नवा। ইতি রত্নমালা।। সাচীক্লত ত্রি বক্রীক্লত। ইতি त्रिकाखटकोमूमी ॥ সাঞ্জনঃ পু॰ ক্রকলাসঃ। ইতি भक्ठिका ॥ সাট ৎক প্রকাশনে। ইতিক-বিকরজেমঃ।। দিতীযম্বরযুক্ত-मकात्रामि त्रयः। अमनाहे । रेि मुर्गामामः ॥ সাৎ ক্লী বন্ধ। ইতি কেচিৎ।।

সাতিসা

সাত ক সুখে। ইতিকবিকন্পদ্রমঃ

। দন্ত্যাদিঃ। সাত্যঃ। সৌত্রধাতুর্যং। ইতি দুর্গাদাসঃ।।
সাতং ক্লী সুখং। ইত্যমরটীকাষাং
ভরতঃ।। দক্তং॥ নন্টং। ষনধাতোঃ ষোধাতোশ্চ ক্ত প্রত্যযেন নিষ্পানং।।

সাত্যঃ ত্রি সুখজনকঃ। সাতক্ সুখে ইত্যস্মাৎ ঞৌ শ প্রত্য-যেন নিষ্পান্ধঃ। ইতি মুগ্ধবোধ-টীকাষাণ দুর্গাদাসঃ॥

माठना खी हर्म्मक्या। ইত্যमदः॥
मूलिदिन्यः। म जू म्हल्रल्जिः
। ज्वल्यगायः। मलना २ माती
० विन्मृना ४ विभना ६ ज्यमा ५
वहरक्या १ हर्म्मक्या ५ रक्या २
मीला ३० विश्वाविका ३३ वर्वभू
च्यी ३० विश्वाविका ३३ वर्वभू
च्यी ३२ शन्यया ३०। ज्यमा
छनाः। क्य शिल्डमञ्चः। विमर्श विक्रञ्चः। क्यायञ्चः। विमर्श विष विरक्षा जिन रमाक्यानि प्रमा ইতি রাজনির্ঘন্তঃ॥

সাতবাহনঃ পু॰ শালিবাহনরাজঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।

সাতিঃ দ্রী অবসান•া। দান•া। তীর্বেরনা। ইত্যমরভরতো ।। মাতিদারঃ ত্রি অতিসাররোগ- সাত্ত

যুক্তঃ। তৎপর্যায়ঃ। অতিসারকী ২। ইত্যমরঃ।।
সাতীলকঃ পুণ সতীলকঃ। ইত্যমরটীকাষাণরাযমুদ্দটঃ।।
সাত্যকিঃ পুণ বৃক্তিবংশীযসত্যকপুল্রঃ। স তু শ্রীক্রফস্য সারথিঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। শৈনেষঃ ২
শিনের্নপ্তা ৩ যুযুধানঃ ৪। ইতি
কিবাওশেষঃ।। যোধঃ ৫। ইতি
কটাধরঃ।।
সাত্রেজঃ পণ বেদ্র্যায়ঃ। ইতি

সাত্যবতঃ পু• বেদব্যাসঃ। ইতি: ত্রিকাণ্ডশেষঃ।।

সাত্যবতেষঃ পুণ সত্যবতীসুভঃ।
বেদব্যাসঃ। ইতি হলাযুধঃ।।
সাত্বতঃ পুণ বলদেবঃ। ইতি হেন্
মচন্দ্রঃ।। বিষ্ণুঃ। ইতি ত্রিকাঞ্জন্ধ।। বিষ্ণুঃ। ইতি ত্রিকাঞ্জনিখঃ। যথা
। সত্বং সত্বাশ্রমণ সত্বগুণ সেবেত কেশবং। যো খনন্যত্বেন মন্
নসা সাত্বতঃ সমুদাহতঃ।। বিহাষ কাম্যকর্মাদীন্ ভজেদেকাকিনং হরিং। সত্যং সত্বগুণোপেতো ভক্ত্যা তং সাত্বতং বিদুঃ
।। মুঙ্গন্দপাদসেবাযাং ত্রমামশ্রবণেপি চ। কীর্ত্তনে চ রতো
ভক্তো নামঃ স্যাৎ স্মরণে হরেঃ
।। বন্দনার্চ্চনধ্যে ভক্তি রনিশং

দাস্য সখ্যযোঃ। রতি রাত্মার্প-ণে যস্য দূচনেন্তস্য সাত্ৰতঃ ।। ইতি পাদ্মোত্তরখণ্ডে ১১ অ-थायः ॥ # ॥ यमूवः भीयाः छ-त्राक भूखः। यथा। जत्मास्त भू-রুঙ্গৎসো ২ভূদ•শু স্তুস্য তু রি ক্থভাক্। অথাণশোঃ সান্বতো নাম বিষ্ণুভক্তঃ প্রতাপবান্।। মহাত্মা দাননিরতো ধনুর্বেদ विमा॰ वतः। म नात्रममा वहना-দাসুদেবার্চ্চনাম্বিতঃ ।। শাস্ত্র• व्यवर्त्वगाम ऋष गानामि-ভিঃ শ্রুত । তস্য নান্না তুবি-খ্যাত সাম্বত নাম শোভন ।। প্রবর্ত্তে মহাশাস্ত্রণ স্বস্তাদীনাণ হিতাবহণ। সাত্বত স্তম্য পুত্রো ভূ॰ **मर्बमाञ्जविमात्रमः।। পू**गा-লোকো মহারাজ স্তেন চৈতৎ প্রকীর্ত্তিত। সাম্বতঃ সম্বসম্প য়ঃ কৌশল্যান্ সুযুবে সূতান্।। অন্ধকণ বৈমহণ ভোজণ বিষ্ণু• দেবাবৃধ নৃপ। ইভি কৌর্দ্ম যদ্ব শানুকীর্ত্তনে ২২ অধ্যায়ঃ সাৰতাঃ প্র্ভূমি দেশভেদঃ। यथा। यमवर्छ मभार्शः मुाः मा-দ্বতাঃ দকরাশ্চ তে। ইতি ত্রি-কাওশেষঃ ৷৷

সাম্বতী স্ত্রী নাটকবৃত্তিবিশেষ:। যথা। অভিনেষ প্রকারাঃ স্যু ভাষাঃ ষট্ সংস্কৃতাদিকাঃ। ভা-রতী সাম্বতী কৈশিক্যারভট্টো চ वृद्धसः॥ ইতি হেমচন্দ্রः॥ শিশুপালমাতা। ইতি কেচিৎ।। সান্বিকঃ পু বন্ধা। ব্রিবিধতা-বান্তৰ্গতভাববিশেষঃ। ইতি হেনচন্দ্রঃ।। তস্য লক্ষণ যথা। সন্বোৎকটে মনদি ষে প্রভব-ন্তি ভাবা স্তে সাদ্বিকা ইতি विमू र्मूनिभूकवा दस्त ॥ देखि म-बानमः॥ एक यथा। स्यम স্তভো ২থ রোমাঞ্চ স্বরভঙ্গো ২থ বেপথুঃ। বৈবর্ণ্য মঞ্চ গ্র-লয ইত্যফৌ সাদ্বিকা মতাঃ।। প্রলয়ে মৃচ্ছা। ইতি ভরতঃ ॥ সান্বিকঃ ত্রি সন্বগুণনিস্পাদিতঃ। ইত্যমরঃ ৷৷ সত্ত্বং মনো গুণ আ-শধো বা তেন নিস্পাদিতঃ সা-षिकः स्वामिः। मञ्चनका ए ए ঘেকাদিতি ফিকঃ। ইতি ভরতঃ ॥ 🗱 ॥ माषिक भूतानानि वर्गा। বৈক্ষবং নারদীয়ক্ষ তথা ভাগ-বত শুভা গারুডঞ্ তথা পাদ্ম বারাহ শুভদর্শনে ॥ সান্বিকানি পুরাণানি বিজ্ঞেষা-

माम्गा

নি শুভানি বৈ ॥ #॥ সাদ্বিকস্বাহা যথা। বাশিষ্ঠ ফৈব হারীতং ব্যাসং পারাশরং তথা।
ভারদাজং কাশ্যপক্ষ সাদ্বিকাঃ
নুক্তিদাঃ শুভাঃ॥ ইতি পালোত্তরথণ্ডে ৪৩ অধ্যায়ঃ॥ সাদ্বিকপ্রিয়াহারা যথা। আয়ুঃ সদ্ব বলারোগ্য স্থপ্রীতি বিবর্দ্ধনাঃ
। রস্যাঃ মিদ্ধাঃ স্থিরা হাদ্যা আহারাঃ সাদ্বিকপ্রিয়াঃ।। ইতি
শ্রীভগবদ্দীতাযাং ১৭ অধ্যায়ঃ
।। সাদ্বিকত্লক্ষণং কতৃশব্দে
দ্বিব্যং।।

माषिकी खी मूर्गा। इंछि मकत्रवावनी ॥ भृजावित्मवः। यथा
। भातनी हिंखका भृजा जिविशा
भित्रीयर्छ। माषिकी ताजमी
देहत छाममी दृष्ठि छ भृन्।।
माषिकी जभ यखादेना देनंदवदेनाम्ह नितामिदेयः। माहाचाः
छगवछाम्ह भूतानामियू कीर्छिछ।। भाठ खमा जभः ध्याङः
भर्द्राम्दीयमा ख्या। इंछि
मूर्गा भ्रव्यु ।।

সাদঃ পু॰ বিষাদঃ।। শরণ ।। গতিঃ। যদগাতো র্যঞ্প্রত্যযে-ন নিম্পানঃ।। मानन की मनन। ইত্যমর
हिकाश छत्र छ।।

माननी खी कहूकी। ইতি রাজ
নির্ঘন্তঃ।।

मानिः পু॰ मার্য ইতি হেন
हस्यः।। যোদ্ধা। ইত্যুণাদিকো
यः।। অবসমঃ।। বাষুঃ। ইতি

সংক্ষিপ্ত সারোণাদিবৃত্তিঃ।।

मानिতঃ ত্রি বিষাদিতঃ।। শরণপ্রাণিতঃ।। গমিতঃ। ইতি

ঞান্ত ষদধাতোঃ ক্রপ্রত্যবেন

নিষ্পায়ঃ।।

সাদী পুণ অশ্বাক্তঃ। ইত্যমরঃ
। গজারোহঃ।। রথারোহঃ।
ইতি মেদিনী।।

नामृभाः क्वी ममृभदः। তত्তिक्ष-द्व मिठ ठकाठजृत्याधर्मवदः। यथा हट्यजिक्षद्व मिठ हट्यगठा-द्वामकद्वामिमद्वः मृत्य हट्य मामृ-माः। देठि निक्वास्त्रमुक्कावनी ॥ ॥ १॥ व्यथ मामृगानि। त्वगाः मर्गः > ज्यवत्यानः २। त्वभ-शाममा हामदः > मयुत्रशूष्ट्यः २। धन्मिन्नमा विश्वमः > व्यक्तकादः २। मीमस्त्रमा त्यदः > शस्त्रादः २। नीमस्त्रमा त्यदः > शस्त्रादः २ एक्षः ०। ननाहिमा व्यक्तिहिन्यः > कनकः २। कत्शानमा हन्यः > मूक्रतक्ष्ण २ । व्हरवाः थे हाः ३ धः নুর্যক্তিঃ ২ রেখা ৩ পল্লবঃ ৪ বল্লিঃ **৫। मृत्भाः हत्कात्रहक्कुः > इ**तिनह-ক্ষুঃ ২ মদিরা ৩ খঞ্জনঃ ৪ অঞ্জন• **७ त्रमूम ७ नी ल**शका १ व्याष्ठी মৎস্যঃ ৮। কর্ণসা দোলা ১ পাশঃ ২৷ ন্যায়াঃ বংশঃ ১ কেতকী-পুষ্পকন্টকঃ ২ অধোমুখতূণীরঃ ৩ চঞ্চঃ ৪ তিলপুষ্প ৫ দণ্ডঃ ৬। অধরস্য নবপল্লব ১ বিশ্বফল ১ প্রবালঃ ৩। দন্তানা মুক্তাঞে-निः ১ जन्मश्रूष्ण २ मा**डि**मवीकः ৩ হীরক ৪। স্মিতস্য জ্যোৎস্না ১ পুষ্প ২ পীযূষ ৩। শ্বাসস্য পন্নগন্ধঃ ১ মুক্তাশীতলং ২ । জিহ্বাযা: জবাপুষ্প > চঞ্চলবস্ত ২। বাণ্যাঃ কোকিলশব্যঃ ১ ভু-মরগুঞ্জন ২ সুধা ৩ মধু ৪ বীণা-বাদ্য ৫। মুখস্য চন্দ্রঃ ১ পদ্ম ২ पर्शन ७। कर्रमा मधः ১। हि-वूकमा मर्लग्रुख ३। जामा श्रुष्टः ३। वाट्याः वल्लती ३ मृना-ল°২ তরঙ্কঃ ৩ শাখা ৪ পাশঃ ৫ । रुखमा मृनालामयः ১। अङ्गलाः গল্লব॰ ১ গদ্মদল ২ চম্পকপু-**क्याः ७ नवम्यः ४ मीर्थः ७। नथाः** না রক্ষ ১ তারাঃ ২ পুষ্প ৩

ठखः ८। खनरयाः शषायुक्तः १ ষটঃ ২ হস্তিসম্ভঃ ৩ গিরিঃ ৫ চ-ক্রবাকঃ ৫ বিল্বযুগ্ম ও। মধ্যস্য वत्रवेकमधा• > त्रिंश्नभा• २ वजुः মধ্য ৩ ক্ষীণদ্ৰব্য ৪ ৷ লোম-শ্রেণ্যাঃ রেখা ১ নীলকাস্তমণি-শিখা ২ শৈবাললতা ৩ ধূমলতা ৪ হস্তিশুঙঃ ৫। নাভেঃ আবর্ত্তঃ ১ পদ্ম ২ হুদঃ ৩ বিবর ৪ কুপঃ ৫ ৷ ত্রিবল্যাঃ তরঙ্গঃ ১ সোপান৽ २ नित्यनी ७। जघनमा श्रू निन॰ > शौठः २ कनक ७। निड्यमा স্থল > পৰ্ৰতঃ ২ পৃথিবী ৩ স্থৃ-**(लाभन 8 महम्र ७। ७.३**३ कालीका ७३३ क तिक तः २। জ-জ্বযোঃ স্তম্ভঃ ১। পাদস্য পন্ন ১ নবপল্লব•২। গতেঃ হ॰সগনন•১ হস্তিগমন ২ খঞ্জনগমন ৩॥ পুরুষ স্ত্রিষো রৌচিত্যেন সাদৃশ্য° বৰ্ণনীয়ণ পুৰুষৰূপে কোপি স্বত্ৰ-চিৰিশেষো লিখ্যতে। ক্ষন্ধস্য বৃ-বন্ধনঃ ১ বজু• ২ অশ্বস্কনঃ ৩। वास्ताः वृह९मर्गः ३ हिन्छ 💖 ২ স্তম্ভঃ ৩ অর্গলদ্ভঃ৷ বক্ষ্যঃ শিলা ১ কবাট হ। গতেঃ প্রম खान् पूकाि । यभ मः हत्य *य* न पृथिकाथ जृति शक्त वर्ग नार्थाः

১। প্রতাপদ্য অগ্নিঃ ১ বাডবাগ্নিঃ ২ রবিঃ ৩ রবিকিরণাদিঃ ৪ জবা পন্ম প্রভৃতি রক্তবর্ণপদার্থাঃ ে। পুণাস্য সংস্কারঃ ১ গৌঃ ২ বৃক্ষ বীজ ও অঙ্কুরঃ ৪ শুক্লবর্ণপদা-ৰ্থাঃ৫। সামৰ্থ্যস্য মহদ্বস্তু ১ সি॰হ-বিক্রমাদিঃ ২। নীতেঃ সাধীস্ত্রী ১ প্রদীপদ্বালা ২ লতাদিঃ ৩ ৷ আ-জ্ঞাষাঃ বেদবাক্য > গুৰূপদেশঃ ২ উৎকটেচ্ছাদিঃ ৩। শাসনস্য প্রারন্ধকর্ম > স্থিরবস্তৃনি ২। পা-পস্য कर्षभः ३ कनकः २ खकी-র্ত্তিঃ ৩ ক্লফবর্ণকেশ মসীপ্রভৃতি-বস্তুনি ৪ অন্ধকারঃ ৫। অকীর্ত্তেঃ गानिना• > क्रकवर्गवञ्चनि २ ञ ন্ধকারঃ ৩। কস্তুরিকার্যাঃ মেঘঃ ১ ভুমরঃ ২ নীলকান্তমণিঃ ৩ ক জ্জুল ৪ সুগন্ধি দ্রব্যদাহজন্যধূমঃ ৫ কৃষ্ণবর্ণপুষ্পপ্রভৃতিঃ ৬ স্থলবি শেষে কন্দর্পাষশঃ ৭ কামুকাষশঃ ৮ কামিন্যযশশ্চ ১। কজ্জুলস্য (म्यामीत्नाज्यानि २। कर्श्तमा **हिन्दः ३ हट्य** कित्रनः २ जन्म यृथिः কাদিপুষ্প ৩ হিণ্ডীরপিঞ্চ ৪ বি-রহিগগুপ্রভৃতিঃ ৫। মনোরথস্য ফলপু**ल्या** नियुक्तवृक्तः > कविवृक्ति-রচনা ২। আনন্দস্য সুধাসমুজঃ

১ ব্রহ্মসাক্ষাৎকারাদিঃ ২। কামি-ন্যবলোকনস্য নিত্যসুখসাক্ষাৎ-কারঃ ১ অমৃতরসঃ ২ পূর্ণচন্দ্রাদি-সাক্ষাৎকারঃ ৩ অতিপ্রিষত্তমব-স্তপ্রাপ্তিঃ ৪ ত্রন্দাশাত্রকারঃ ৫ । অমৃতস্য কামিন্যধরাদিঃ ১ সৎ-কাব্য•২ ব্রহ্মসাক্ষাৎকারঃ ৩। বিষদ্য সাধীস্ত্রীবিরহঃ ১ পাপণ ২ মলিনবস্তু ৩ দুংখদবস্তু ৪ গ্রী-ষ্মাগ্নিঃ ৫ শীতকালীন শীতোদ-কণ ৬ ব্যভিচারিণীভার্য্যা १। বি-রহস্য অগ্নিঃ ১ আধিঃ ২ ষাতনা ৩ সমুদ্রঃ ৪ তপ্তবস্ত ৫ দুঃখদ-বস্তৃনি ৬। পুষ্পাণা চন্দ্রাদিঃ ১ কামিনী ২ কপূরণত যশঃ৫। চন্দ্রদ্য প্রমদামুখ > অতিশুভু-वञ्ज ७ यमः भूगामिः ७। मूर्यामा শিবনেত্রাগ্নিঃ ১ জবাপুষ্প ২ ক-সম্ভকালীনপলাশবৃক্ষঃ ৩ কাঞ্চ-নৰৃক্ষঃ ৪ বাডবাগিঃ ৫। পদান্য পাটলপুষ্প > কামিনীমুখাদিঃ ২ त्रक्डवर्ণष्रवा॰ ७। हेन्नीवत्रमा नी-লকান্তমণিঃ ১ কন্তুরী২ কামি-নীনেত্র° ৩। কৈরবর্গ্য চন্দ্রঃ ১ **जन्मानिश्कनवर्गवस्य २।** त्राखः इक्कः ३ ऋरवदः २ हक्कः ७ সূर्व्यः ৪ মান্ধাতৃ ভগীরপপ্রভৃতি প্রদি-

क्षाठळवर्खिनः ८। मिथ्या क्रयः ১ **কালী ২ নীলপদ্মসমূহঃ ৩ ভ্রমর**-শ্রেণিঃ ৪ ইন্দীবরবন ৫ দাতৃব্য-ক্তিঃ ৬ ক্লফবর্ণবস্তু ৭ ৷ শরমেঘ-স্য চন্দ্রপ্রভৃতিশুক্লবর্ণপদার্থাঃ ১। কন্দর্পদ্য চন্দ্রঃ ১ পুরুরবাঃ ২ু অ-श्विनीत्रमात्रः ७ नलः ८। अमील-স্য চম্পকপুষ্প ১ প্রতাগঃ ২ শা-ন্ত্ৰ॰ ৩ ঋষিঃ ৪। বাবোঃ শীৰুগপ-मार्थः ३। जाश्रमा वायुः ३ इतिनः ২ মনঃ ৩। হস্তিনঃ পর্বতঃ ১ মে-ষঃ ২ তমালবৃক্ষঃ ৩ অন্ধকারঃ ৪ ৷ সৌধস্য কৈলাসঃ ১ ঐরাবতঃ ২ উচ্চৈঃশ্রবাঃ ৩ চন্দ্রঃ ৪০ শিবস্য পূৰ্বোক্তানি ৪। শ্ৰীক্লফ্ষ্যা সজল-क्लां ५ जगाल वृकः २ नील म-ণিঃ ৩ ভুমরশ্রেণিঃ ৪ ই**ন্দ্রী**বর• ৫ ৰীলপদ্মণ ৬ আকাশঃ १। শ্রীরা-ममा পূৰ্ৰক্ষিতাঃ १ দূৰ্ৰাদল ৮ বৃক্পল্লব ১। লক্ষ্যাঃ পাৰ্বতী ১ চন্দ্রকান্ডিঃ ২ রতিঃ ৩ সীতা ৪ দ্রৌপদী ৫ পদ্মকান্তিঃ ৬। সর-खगाः हल्यकता > रेकलामका-खिः २ र्श्वकृतर्ने भागि १०। वि**श**-ণেঃ সমুদ্রঃ ১ পণ্ডিতমনঃ ২ না-রায়ণোদর ৩ ব্রহ্মাণ্ড ৪। সমূ जमा भिषापिक्षकवर्धवन्त्र १ विष्

রভূমিঃ ২ মহাভারত ৩৩ অপশা-त्री है। পूत्रमा सर्गः > देकलामः २ यत्नात्रमवृश्वख ७। तथमा भूष्म-কণ্ড বৈষ্ঠঃ২ পুরী ৩ পোতঃ ৪ পृथी (। कामिनीमूथमा हस्यः) शेषा २ मर्शनः ७। कामिनाः ७-ডিৎ ১ তারা ২ স্বর্ণলতা ৩ স্বর্ণব-র্ণাকেতকী ৪। নাযকস্য চন্দ্রঃ ১ কন্দর্গঃ ২ ঐলঃ৩ অশ্বিনীঙ্গমারঃ ৪। সভাষাঃ সূর্য্যমুগুল > সুধর্মা ২ গণ্ডকীপৰ্বতঃ ৩ সুমেরুঃ ৪ গঙ্গা ৫। পণ্ডিত দ্য বৃহস্পৃতিঃ ১ শুক্রঃ ২ ঋষিঃ ৩ সরস্বতী ৪। বিরহিণঃ শ্রীরামঃ ১ শ্রীশিবঃ ২ অজঃ ৩ দুংখিব্যক্তিঃ ৪ উন্মত্ত-ব্যক্তিঃ ৫ চন্দনতরুঃ ৬ শিব-শিরশ্ভশ্রঃ ৭ বাডবাগিযুক্তসমু-দ্রঃ৮ বন্মীকঃ ১ চক্রশেখরপর্ব-তঃ ১০। দাতুঃ কর্ণঃ ১ উষীনরঃ ২ কল্পবৃক্ষঃ ৩ কামধেনুঃ ৪ রোহণঃ ৫ ममूजः ७ त्याः १ दनिः ৮ জৈমিনিঃ ৯ যুধিষ্ঠিরঃ ১০। বস্তু-ঋতোঃ মলযবাযুঃ ১ মদ্য ২ উ-মাদরোগঃ ৩। বিরহিণ প্রতি যমঃ ১ অগ্নিঃ ২ বিষ ৩ সর্পঃ ৪। গ্রীমঋতোঃ অগ্নিঃ ১ বিরহঃ ২ বিরহিণীনিশ্বাসঃ ও সপনিশ্বাসঃ

৪। বর্ষাঋতোঃ রাত্রিঃ সমুদ্রঃ
২ গগন ও নারাষণঃ ৪। শর
দ্তোঃ কাশপুস্পাদিরূপচামরৈ
রাবতগজাঃ ১ চক্রঃ ও। শীত
ঋতোঃ অপশারিব্যক্তিঃ ১ রা
জাশুনারাজা২। শিশিরঋতোঃ
রাজাগমনকালঃ ১। গুণিনঃ স
মুদ্রঃ ১ পর্বতঃ ২ পৃথিবী ও ম
দনঃ ৪ অশ্বিনৌ ৫। সচিবদা
বৃহস্পতিঃ ১। বাকাদা কোকিলশকঃ ১ ভুমরগুঞ্জন ২ বীণাবাদ্য ও। ইতি কবিকল্পলতা
যা ৪ স্তবকে ৪ সমুমণ ।।

माध यन छ मिटको। ইতি কবিकन्न प्रभा। य माधा छ। न माश्रां छ। छ मिया ६ मछ। मिकि
निष्ण जिः। माधा छ घटो। निष्णकः मानि छ। यो मिकि निष्णाकरन छ। यो कि माशा छ। माशाछ माधा छ घटे। क्यां कः नाम छ। कि
पान पर्ण छ। हिल मूर्गाकाम पर्ण छ।

সাধকঃ পু॰ সাধনকর্ত্তা। নিষ্পা-দকঃ। তদ্য লক্ষণ যথা। অ-তঃ পর॰ প্রবক্ষ্যামি সাধকানাম্ব লক্ষণ•। ধর্মাশীলা স্তপোযুক্তাঃ সত্যবাদি জিতেন্দ্রিষাঃ। মাৎ-

সর্য্যেণ পরিত্যক্তাঃ সর্বসম্বহিতে রতাঃ।। কর্মশীলা স্তথোৎসাহা মর্ত্তালোকে ২জুগুপ্সকাঃ। পর-ম্পার সুসম্ভকীনুকূলাঃ সাধকস্য जू।। जेषृटेगः माधनः अर्यााः मू-महारियः मरेहर जू। इंछि प्रती-পুরাণে নন্দামাহাল্যা সামাপ্তা-भागः ॥ 🛊॥ जिन । ठजूर्भ माधरका एकटरा मृदू र्यथाधिमा-ত্রকঃ। অধিমাত্রতমঃ শ্রেষ্ঠো ভ-वारको लब्बनकमः॥ मरमा ९-मारी मूम॰मृट्या वाधिरस् । धकः-দূষকঃ। লোভী পাপমতি শৈচব ৰহ্বাশী বনিতাশ্ৰয়ঃ।। চপলঃ কাতরো রোগী পরাধীনো ২ তি-निश्रृंदः। यन्माठादता यन्मवीदर्गा জ্ঞাতব্যো মৃদুনা নরঃ ॥ দাদ-শাব্দে ভবেৎ সিদ্ধি রেতস্য যত্ন-তঃ পরং। মন্ত্র যোগাধিকারী স জ্ঞাতব্যো গুরুণা ফ্রবং ॥ ১॥ স-मवृक्षिः कमायुक्तः भूग्रकाष्की প্রিয়ম্বদঃ। মধ্যস্থঃ সর্বকার্য্যেষু সামান্যঃ স্যান্ন সংশ্বঃ ॥ এত-জ্জ্ঞাত্বৈব গুরুভি দীৰতে যুক্তি-**তा नयः। २। श्रितवृक्षि र्न**ःय-युक्तः सांधीता वीर्यावानि ॥ मश्रान्या प्रयायुक्तः कनावान्

ৰীৰ্য্যবানপি। শূরো লয়শ্চ শ্র-कावान् अक्रभामां अ शृक्षकः ॥ ষোগাভ্যাসরত শৈচৰ জ্ঞাতব্য-শ্চাধিমাত্রকঃ। এতস্য সিদ্ধিঃ **व** ष्ट्रियं र्ज्याम् ज्ञानस्याग् व्या **এত एक मीयर्क भीरेत र्राटियाः** গদ্য সাধকঃ। ৩। মহাবীৰ্য্যা-ষিতোৎসাহী মনোজ্ঞঃ শৌর্য্য-বানপি।। শাস্ত্রজ্ঞো ২ভ্যাস भीलक निर्मामक निर्माणकाः। ন্বধৌবনসম্পন্নো মিতাহারী किए छित्र ।। निर्ज्य के छि र्मत्का माठा সर्वजनाथायः। व्यक्षिकात्री ऋत्त्रा शीमान् यत्थ-চ্ছাবস্থিতঃ ক্ষমী।। সুশীলো ধ र्भागती ह छश्रदहरूः श्रिययमः । শান্তবিশ্বাসসম্পন্নো দেবতা **७ इन्नृजकः। जनमङ्**वित्रक्रम्ह महावर्गिषिविविद्धिंगः। जनिमा ত্ৰতযোগ্যশ্চ সৰ্বযোগস্য সাধ-কঃ।। ত্রিভিঃ সম্বৎসরেঃ সিদ্ধি রেতস্য স্যান্ন সংশযং। সর্বযো-গাধিকারী চ নাত্রকার্য্যা বিচা-রণা।। ৪।। ইতি শিবসংহিতা।। माधका जी मूर्गा। यथा। माध-ना९ मिक्कि तिजुङा माधका वाथ नेश्रती। स्वामिश्वामानिन

দ্বিষাৎ সিদ্ধীশ্বর্যা প্রকীর্ন্তিত।
।। ইতি দেবীপুরাণে ৪৫ দেবীনিরুক্তাধ্যায়ঃ ।।

माधनः क्री क्रवनकातकवित्नसः। তত্ৰ তৃতীষা স্যাৎ। ইতি ব্যাক-রণা৷ সাধাতে কর্ম নিষ্পাদ্য-তে খনেনেতি সাধনণ৷ ইতি पूर्भामामः॥ यात्रवः॥ मृठमःका-রঃ। অগ্নিদান ।। গতিঃ। গমন• ॥ जवाः। धनः॥ व्यथनाथनः। অর্থস্য ধন ভূম্যাদে দাপন ॥ निर्वर्खनः। निष्णापनः॥ छेन-क्त्रनः। माम्जी। यथा युट्यां श-क्रव श्खाशामिः॥ अन्वका । অনুগমন•। ইত্যমরভরতৌ।। रेमनाः॥ मिष्क्रीयिधः॥ छेला-ৰং।। মেদুঃ। ইতি মেদিনী।। रेगवः।। উ४ः।। मिक्षिः। ইতি धत्रिशः । कात्रकः ॥ श्रमानः । ইতি হেমচন্দ্রঃ।। ব্যাপ্য । যথা। অনুমা স্বনুমান স্যাৎ ব্যাপ্য॰ লিঙ্গঞ্চ সাধন । ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। মোহন॰ ।। **जवः। ३**ठाजयः॥ সाधना। সাধা ইতি ভাষা। যথা। ব্ৰশ্নো-বাচ। শশাপ পাৰ্বতী রুফী ন্ত্রী স্বভাবাচ্চ চাপলাৎ। সর্বেষা॰

नाथरनरेनव कन्न गर्राञ्ज नाधवः ।। ইতি बन्नरेवदर्ख गरनमथर्ख ३२ व्यक्षांयः ॥ ७१३। यथा। তপোভিঃ প্রাপ্যতে ২ভীষ্টণ नामाधाः हि जगमाजः। मृर्जग-ত্ব॰ বৃথা লোকো বহুতে সতি সা-थटन ॥ ইতি তিখ্যাদিতঅধৃত মৎস্যপুরাণ বচন ।। মন্ত্রসি দ্ধিকরণণ যথা মৎস্যুণ মাণ-मक महाक मूजा देमथून त्मव ह । मिरानाटेक्टर वीजाना माध-ন ভবসাধন ৷৷ ইতি মুখ্যা-লাতন্ত্র ।। নিত্যানিতাবস্তবি-বেকেহ্ াসূত্রফলভোগবিরাগশ-यमगामिमम्भागू मूक्ष । ইতি বেদান্তসারঃ ॥ गाधना द्यी मिक्तिः। निष्णामना।

ইতি সাধ্যাত্বৰ্থদৰ্শনাৎ ৷৷ আ-রাধনা। ঞান্তসাধধাতো রন-প্রত্যেষ নিষ্পন্না ॥

সাধন্তঃ ত্রি ভিক্ষুকঃ। ইত্যুণাদি-কোষঃ ৷৷

সাধ্যন্তী স্ত্রী উপাসনাকত্রী। यथा। मिथ यथ्याननाथम् मा-ধযন্তী নিরন্তরণ। অতিশান্তা-সি সন্তাব সেহযো রিষ মৌচি-তী॥ ইতি কাব্যচন্দ্রিকা॥

সাধারণঃ জি সমানঃ। সদৃশঃ। ইত্যমরঃ।। সামান্যং। অনেক-मयटक्षाकबञ्जा देखि ठामदः ॥ যথা। সাধারণ নমাশ্রিত্য যৎ-किक्षिषाइनायूषः। लोयानि-নাপোতিধন ভাতর স্তত্ত ভা शिनः॥ ইতি দাযভাগः॥ न्या-যমতে হেত্বাভাসবিশেষঃ। যথা ৷ অনৈকান্তো বিৰুদ্ধশ্চাপ্যসি-দ্ধঃ প্রতিপক্ষিতঃ। কালাত্যযা-পদিফশ্চ হেম্বাভাসস্ত পঞ্চধা ।। আদ্যঃ সাধারণস্ত স্যাৎ স্যা-नूপम'शती विधारेनकांखिका ভবেৎ॥ यः সপক্ষে বিপক্ষে চ স তু সাধারণো মতঃ। য স্তৃত-যম্মাদ্যাবৃত্তঃ সম্বসাধারণো ম-তঃ॥ তথৈবানুপসংহারী কে-বলাম্বযি পক্ষকঃ। ইতি ভাষা-পরিচ্ছেদঃ 11

माधात्रगरमभः श्रू जाञ्चलानूश-लक्षणमण्यक्षयानः। उदातिश्व-णाः। वृषाषः। मीणनषः। मधू-तुष्। वयुष्य । दैवि त्रीक-বলভঃ ৷৷

माधातनधर्माः पूर ठजूर्वन्कर्छरा-कर्मा यथा। প্রজনীর্থ জ্রিयः

मृकीः मञ्जानार्थक मानवाः । তস্মাৎ সাধারণো ধর্মঃ শ্রুতে পত্ন্যা সহোদিতঃ।। ইতি মান-(द > ञ्यागाः। ञिन । ञ-হিংসা সত্য মস্তেষ্ণ শৌচ মি खिरम स्मा प्रभाकर्त्व দান সর্বেষা ধর্মসাধন ॥ ইতি গাৰুডে ৯৬ অধ্যায়ঃ।। সাধারণন্ত্রী স্ত্রী বেশ্যা। ইতি ट्यह्यः ॥ সাধারণী স্ত্রী স্বঞ্চিকা। ইতি र्विष्ठा সাধারণ্য স্ত্রী সঞ্চিকা। ইতি হেমচন্দ্রঃ ৷৷ সাধারণস্ভাবশ্চ माधिका खी मूम्थिः। रेखि **ट्याटकः।। मार्यनकर्वी।। ज**

धिरकन मह वर्खमाना ह ॥
माधिकः जि माभिकः। ইত্যমরः
॥ यह धनामिकः माभिर्क धृकी
ইতি খ্যাক घरण मत्तः তত্ত্বতি
त्रमानाथः। मखिरक ইতি विमाधिकारा
ইতি নয়নানদাং। দেখাকে এঠিভাৎ ক্তঃ হ্রী ব্রী রীতি পন্
দৈপো ৰূপ মিতি নয়নানদাং।
माधिक ইতি পাঠ ইতি কলিজ
পুরুবোজনো। তত্ত্ব ঞি দ্বঁ ও

গ্রহণে গতে বধে দানে ইত্যশাৎ ঞাস্তাৎ ক্তঃ। সাধে ঞ্যস্তাৎ ক্তে সাধিতঃ। ইতি ভরতঃ। দাষিতো দাপিতোপি স্যাৎ
সাধিতঃ শোধিতোপি চ। ইতি
শব্দরত্বাবলী।।

সাধিষ্ঠঃ ত্রি অভিশ্যবাঢঃ। দৃঢ়-ভষঃ। ইত্যমরঃ॥ ন্যাযাঃ। ইতি হেমচক্রঃ॥ অত্যার্যঃ। ইতি মেদিনী॥

সাধীয়ান্ ত্রি অভিশয়বাচঃ ॥ অভিশয়সাধুঃ। ইত্যমরঃ॥

नाधः पृ॰ উख्यम्टलाख्यः। छ०পর্যাযः। यहाम्रनः २ मनी नः
७ আর্যাঃ ৪ मुख्यः ६ मुद्धानः ७।
ইত্যমরः॥ দ্বলজः १ माधुकः ৮
দ্বলকঃ ৯ দ্বলকঃ ১০। ইতি শस्वत्रावनी॥ मनाः ১১ কৌলেযকঃ ১২। ইতি ভরতঃ॥ জিনঃ
॥ মুনিঃ। ইতি হেমচন্দ্রং॥ ॥।
माधुनकः यथा। यथानस्तांशि
माधुनकः यथा। यथानस्तांशि
माधुनकः ममिटला जिटलिखः।

হরিপাদাশ্রমো লোকে বিপ্রঃ
माधु রনিন্দকः ॥ ১॥ নির্বরঃ
সদয়ঃ শাস্তো দ্যাহদার বিজ্ঞিন
তঃ। নিরপেকো মুনি ব্রতিরাগঃ
সাধু রিহোচ্যতে॥ ২॥ লোভ

মোহ মদ ক্রোধ কামাদি রহিতঃ म्थी। इतकाञ्चिमद्रवः माधुः म हिक्युः नगमर्भनः ॥ ७॥ नगिन-ত্তো মুনিঃ পূতো গোবিন্দচরণা-व्ययः। সर्वज्जनमः कारका विदव-কী সাধু ৰুত্তমং ।। ৪ ৷৷ ক্ষাপ্তিত প্রাণ শরীর বৃদ্ধিং শান্তেন্সিয়ন্ত্রী সূত সম্পদাদিঃ। আসক্তচিত্তঃ अवगानि जिंक र्यात्र नाष्ट्र न **७७° ह** द्रियः ॥ ७॥ क्रकाञ्चरः क्रकक्थानूत्रकः क्राक्षरमञ्ज गु তি পূজনীযঃ। ক্লঞানিশ ধ্যা-नगनांखुनत्ना त्यादिन माध-र्भू निवर्षी कार्यः ॥ ७॥ इंडि পাদ্মোতরখণ্ডে ৯৯ অধ্যাষঃ॥ 🟶 ॥ जनाकः। न अहराजि मन्ना त्न नावगात्नन त्र भाष्ठि। न क् कः शक्रयः ज्ञारातंत्रं मार्याञ्च লক্ষণা৷ ইতি গাৰুডে ১১৩ **অध्यायः ॥ 🕸 ॥** जना स्रजादवा ষধা। ত্যক্তারানুধভোগেছাঃ সর্বসত্ব সুথৈষিণঃ। ভবস্তি পর-দুঃখেন সাধবো নিত্য দুঃখিতাঃ ।। পরদুঃখাত্র। নিত্য॰ স্বসুখানি মহাস্তাপি। নাপেক্ষমে মহাত্মা-নঃ সর্বভূতহিতে রতাঃ।। পরার্থ নুদ্যতাঃ সন্তঃ সন্তঃ কিং কিং ন

वर्वा । তामृगभाष्ट्र वाति कः লদৈ স্তৎ প্রপীষতে।। এক এব সতা॰ মার্গো ষদঙ্গীক্তত পালন । দহস্ত মকরোৎ ক্রোডে পাবক• যদপাণপতিংয় আত্মানণ পীড-विषाणि नाधुः मूथवंटा भद्रः । ङ्गामयन्नाञ्चिष्ठान् वृत्का मूःथक म-হতে স্বয়ণ।। ইতি বক্লিপুরাণে मानावका निर्वसनामाधायः ॥कः॥ তদ্য প্রশংসা ষথা। যৎপূজা-या॰ ভবেৎ পুজো দৃষ্ট্যা ন यम দর্শন । পাপস । স্পর্শনাক্ত কি মহো সাধুসঙ্গমঃ।। সাধুনা হ-দয় ধর্মো বাচো বোনঃ সনাত-নাঃ৷ কর্মক্ষাণি কর্মাণি ষতঃ সাধু হরিঃ স্বষ•॥ ইতি কদ্ধিপুরা-(१ ७० व्यशायः॥ 🗱।। क्लि मुफ স্ত্রীণা সাধুত্ব তৎকারণক যথা । কলিঃ সাধিতি যৎপ্রোক্ত॰ শৃ-দ্রঃ সাধিতি যোষিতঃ। তক্ষাই ভগবান্ সাধু ধন্যা শ্চেতি পুনঃ পুনঃ ৷৷ তৎ সর্ব শ্রোতু মিচ্ছা-মোন চেৎ গুহু गহামুনে। ই-ত্যুক্তো মুনিভি ব্যাসঃ প্রহস্যেদ ৰথাত্ৰবীৎ।। শ্ৰায়তা ভো মুনি-গণা यमुक्तः माधुमाक्षिति। यद-ক্লতে দশভি ৰ্বৈ ক্ৰেতায়া হায-

নেন তৎ ৷৷ দ্বাপরে তচ্চ মাসেন অহোরাত্রেণ তৎকলৌ। তপ-সো বক্ষচর্যাস্য জপাদেশ্চ ফল॰ षिজাং।। প্রাপ্নোতি পুরুষ স্তেন किनः माश्रिक ভाषिकः। शायन् ক্ৰতে যজন্ যজৈ স্ত্ৰেতাযাণ দা-পরে ২ চ্চিযন্।। यमाপ্রোতি তদা-প্লোভি কলৌ সংকীর্ত্ত্য কেশবং। ধর্মোৎকর্ষ মতীবাত্ত প্রাপ্নোতি পুরুষঃ কলৌ ৷৷ স্বল্পাযাদেন ধর্ম-জ্ঞা স্তেন তুষ্টোম্মাহণ কলেঃ।। 🛊 ।। ত্রতচর্য্যাপরে প্রাহ্ম। বেদাঃ পূর্বণ বিজাতিভিঃ। ততন্ত ধর্ম मः श्राटेश्व वंकेवाः विधिवक्रटेनः ॥ বৃথাকথা বৃথাভোজ্য বৃথেজ্যা চ দ্বিজন্মনাণ। পতনায তথা ভাব্যু তৈন্তু সংযমিভিঃ সদা ৷৷ অসম্ক করণে দোষা ভেষা সর্বেষু বস্তুষু। ভক্ষ্য পেষাদিক টেষা· নেচ্ছাপ্রাপ্তিকর· দিজাঃ র্য্যেষু বৈ ষতঃ। জযন্তি তে নি-জান্ লোকান্ ক্লেশেন মহতা দিজাঃ। দিজশুশ্রম**বৈষ পা**-क्षञ्जाधिकात्रवान्। निज॰ ज-যতি বৈ লোক শৃদ্রো ধন্যতরঃ স্ততঃ।। ভক্ষাভকেষু নাস্যান্তি

পেষাপেয়েৰুবা ৰতঃ। নিষমে। मूनिमापू ना खिनारमी माधिकी-রিত ।।।।। সংশ্বস্যাবিরোধেন नदेत लंका धनः मना। প্রতিপা-माक পाত्वियू यखेवाक यथाविधि ॥ ठमार्ज्यन महान् क्रमः शा-লনে চ ৰিজোত্তমাঃ। তথা স-দ্বিনিযোগায় বিজ্ঞেয়ণ গছনণ নৃ-ণা ।। এভি রন্যৈ স্তথা ক্লেশেঃ পুরুষা দ্বিজসত্যাঃ ৷ নিজান্ জযন্তি বৈ লোকান্ প্রাজাপ-छा मिकान् क्रमा थ।। या विष् শুশ্রষণ ভর্তঃ কর্মণা মনদা গিরা। সর্বতী সমবাপ্নোতি তৎসালোক্য ততে। দ্বিজাঃ ॥ নাতি ক্লেশেন মহতা তানেব পুরুষো যথা। তৃতীয় ব্যাহ্নত তেন মধা সাধিতি যোষিতা ।। ইতি বিষ্ণুপুরাণে ৬ অংশে ২ অধ্যায়ঃ ৷৷

সাধুঃ ত্রি বার্জ্বিকঃ। চারুঃ।।
সজ্জনঃ। ইতি মেদিনী।।
সাধুজঃ ত্রি উত্তমঙ্গলোন্ডবঁঃ।
ইতি শব্দরত্বাবলী।।
সাধুধী স্ত্রী শ্বশ্রঃ। ইতি হারাবলী।। সুন্দরবৃদ্ধিঃ।। তদ্ধুক্তে
ত্রি।।

गाध्यूका॰ की इसम्बन्धः हिंछ मस्याना । উद्ध्यक्षम् यक्षः । गाध्यादः पू॰ विनीलायः । हेलि द्याद्यः । मूक्त्रवाद्यक्षः । गाध्यादी पू॰ भाजनव्यम्मील-याद्यादी पू॰ भाजनव्यम्मील-याद्यादे पू॰ भाजनव्यम्मील-याद्यादे पू॰ भाजनव्यम्मील-याद्यादे पू॰ भाजनव्यम्मील-याद्यादे पू॰ भाजनव्यमान-याद्यादे पू॰ भाजनव्याद्या-याद्यादे प्रमुख्याद्यानी ।। मूक्त्रया-देलि भक्त्रकावली ।।

সাধুকৃতিঃ ন্ত্ৰী উত্তমজীবিকা।।
সদিবরণা। সুন্দরবর্ত্তনা। সাধী চাসৌ কৃতি শেচতি কর্মধারষসমাসনিম্পন্না।। সাধোকৃতি
রিতি ষষ্ঠীতৎপুরুষসমাস নিস্পন্না বা।।

नाध्वृकः पू॰ कमग्रुकः। ইতি

भक्तिका।। वक्रववृक्षः। ইতি

दाक्रिका।। শোভনতক্ষ।।

नाध्ठ॰ की भग्दनभृदः।। পवावीषी।। আতপত্র॰। ইত্যজ
ग्रुशनः।।

সাধ্যঃ পুণ গণদেবতাবিশেষঃ।
ইত্যমরঃ।। সতু দাদশসংখ্যকঃ। যথা। সাধ্যা দাদশ বিখ্যতা রুজা শৈচকাদশ স্তাঃ।
ইতি ভরতঃ।। তেষাং নামানি

सथा। मत्ना मछा छथा थाला नत्ना भानम्ह वीद्यावान्। वि-निर्छरम नय देम्हद मन्दमानानाः। याणाः माश्रा बामम भीर्किकाः । देखि बङ्गित्रात्न भन्छम्ना-माश्रायः ॥ ॥ एवः॥ विक्र-छामिमश्रवि मिछित्याभाखर्गरेख-कवि मार्थागः। देखि त्मिनी ॥ छज ज्ञालक्षमः। ज्ञाधाः माश्रः किन माश्रज्ञाणः मृत्नाः २ छिकीत्ना विक्रिजातिभक्तः।

পর॰ ক্লতার্থঃ সূতরা॰ বিনীতঃ।। ইতি কোষ্ঠীপ্রদীপঃ।

माधः जि माधनीयः। ইতি মে
দিনী ।। ঋণাদিষু বিবাদেষু স্থিরপ্রাষেষু নিশ্চিত । উণে বাপ্যধিকে চার্থে প্রোক্তে সাধ্য ন সিদ্ধাতি ।। ইতি মিতাক্ষরাধৃতকাত্যাধনবচন ।। সাধনার্থাভিমতঃ। সতু পক্ষঃ। যথা।
প্রতিজ্ঞাদোষ নির্দ্মক্ত সাধ্য সৎকারণাম্বিত । নিশ্চিত লোক্ষিত্বঞ্চ পক্ষ পক্ষবিদো বিদুঃ
।। সাধ্য সাধনার্হাভিমত পক্ষ বিদ্যা বাদ্য সাধনার্হাভিমত সাধ্য স্থান্য সাধ্য সাধ প্য তিছিশিকধন্মী পক ইতি ভেদঃ তথাপাত্র বাক্প্রত্যায়া-नीपि धर्मविटमय विभिक्तेमा भ-ক্ষতহা ধর্মিণো ২ধমর্ণপদৈ রেব সাধ্যত্বাৎ সাধ্য পক্ষবো রভে-माजियानः। ইতি वावशायाज्यं १। 🛊 १। च नू मिलिविट धरः । स्था। সাধ্যভাবচ্ছেদক বিভি অনুমি-তিবিধেষতাবচ্ছেদক মিতার্থঃ। दें जिक्का खनक न का गरी भी-টীকা श 🐠 ।। মন্ত্রবিশেষঃ । যথা । নামাদ্যকর সারভ্য যাবমন্ত্রা-দিমাক্ষরণ। চতুর্ভি: কোঠে রে-কৈক মিভি কোঁঠ চতুষ্টম।। পুনঃ কোষ্ঠগকোষ্ঠেষু সব্যতো नाम् जामिकः। निकः नाधाः সুসিদ্ধো ধরিঃ ক্রমাজভ্রেষা ম-নীষিভিঃ।। সিদ্ধঃ সিধ্যতি কা-লেন সাধ্যস্ত জপহোষতঃ। সুসিদ্ধো গ্রহণমাত্ত্রেণ অরি মূ-ল নিরুম্ভতি।। ইতি তন্ত্র-मातः ॥

সাধ্যতাবচ্ছদক ক্লী অনুমিতি-বিধেষা শৈভাসমান ধর্মণ যথা সাধ্যতাবচ্ছেদক মিতি অনুমি-তিবিধেযতাবচ্ছেদক মিত্যর্থঃ। তথা চোক্তব্যাপ্তিজ্ঞানাদপ্তাণ- শে দশুর্থকারিকা দশুরবন্ধানিত্যেবানুমিতি র্ন তু দশুমান্
ইত্যাকারা দশুপ্রকারিকাপি তস্য ব্যাপকতাবচ্ছেদকত্বেনাগ্রহাৎ কারণ বাধেন তদসম্ভবাদিতি ভাবঃ। ইতি সিদ্ধান্তলক্ষ-

नाधानिकिलामः श्र वावशात्रमा চতুর্থপাদঃ। স চ নির্ণথপাদঃ। ষर्था। প্রত্যর্থিনো ২ এতো লে-খ্যমিতি ভাষাপাদঃ প্রথমঃ ৷ শ্রু-তার্থস্যোত্তর লেখ্য মিত্যুত্তর-পাদো দিতীয়ঃ। ততো ২থী लिथराथ मना देखि कियानाम স্তৃতীয়ঃ। তৎসিদ্ধৌ সিদ্ধি মা-প্নোতি ইতি সাধ্যসিদ্ধিপাদ শ্চতুর্থঃ। যথা। ভাষোত্তর ক্রি-ষা সাধ্যসিদ্ধিভিঃ ক্রমবৃত্তিভিঃ । আকিপ্ত চত্র•শস্ত চতুস্পাদ-ভিধীযতে।। ইতি মিতাকরা।। সাধ্দ ক্লী ভষণ ইত্যমরঃ॥ সাধী স্ত্রী মেদা। ইতিরাক্র নির্ঘণ্টঃ।। পতিব্রতা। ইত্যমরঃ ।। তল্লকণ মাহ হারীতঃ। আ-র্ত্তার্ত্তে মুদিতা হুফে প্রোবিতে মলিনা ক্লখা। মৃতে মিুখেত যা পত্যো সাধী জেষা পতিব্ৰতা

।। 🐠।। उक्तमा यथा। जनिताः। माधीना त्यव नात्रीण मशिक्षण जनामृत्छ। नात्ना। धर्मा हि विख्करवा मृष्ठ छर्छति कर्शिष ।। ইতি শুদ্ধিতত্ত্ব ।। তৎপ্ৰশংসা ৰথা। সাধীন্ত্ৰী মাতৃত্ল্যা চ সৰ্ব-था शिक्कारिनी। जनाभी देवत-তুল্যা চ শশ্বৎ সন্তাপদাষিকা ।। ইতি বৃদ্ধবৈবর্ত্তে গণপতিখণ্ডে २ व्यथायः ॥ 🛊 ॥ माधीजीनाः পতিঃ প্রেন্না শতপুক্রাধিকঃ । ষ্পা। শৃতপুত্রাধিকঃ প্রেমা স তীনাঞ্পতি নৃপি। নিৰূপিছো **छ**गव**ा (वर्तम्** इतिना श्वयः ॥ ইতি তত্ত্বৈব ৩৪ অধ্যাষঃ ॥ 🕸॥ কামিনী পলজাতাঞ্চ রহস্যে কামিনী॰ সতী॰। ন পৃচ্ছতি স-লে জাত এব মেব শ্রুতো শ্রুত ৷৷ শ্রুতে পুরাণে ধাসাঞ্চ চরিত্র মনিৰপিত । তাসুকো বিশ্ব সেৎ প্রাজ্ঞো অপ্রক্তাঞ্চ দুরাশ-ষাু•।। ভাসা॰ কো বা রিপু র্মিত্র॰ व्यार्थरछी नवः नवः॥ मृक्ता मृ विन भूक्ष भिष्ठि शमर्य मन । বাহ্দে স্বাত্মসতীত্বঞ্চ প্রাপয खी প্রযন্তঃ।। সম্ব প্রধান य-দ্ৰূপণ তৎ শুদ্ধক্ষ স্বভাবতঃ ।

তদুত্তমক বিশ্বেষু সাধীৰূপণ প্ৰ-শংসিত ৷৷ স্থানাভাষাৎ কণা-ভাবাৎ মধ্যবৃত্তে রভাবতঃ। দে-হক্লেশেন রোগেণ সৎসংগণ मुम्बि ॥ वहरगाष्ठीवृट्टिनव ति-পুরাজ ভবেন চ। রজোকপদ্য সাধীত্ব মেতেনৈব প্রজাযতে ॥ ইতি ত্রন্ধবৈবর্ত্তে প্রক্রতিখণ্ডে ১৪ विधासः॥ 🛊॥ वनाक। मृत्व खनात्म यः त्मरहा याकाञ्चारमः তিকোভিতে। পতিলেহ্স্য সা-**श्रीना॰ कना॰ नार्श्य खाउँगी॰** ৷৷ স্তনান্ধে স্তনদানাস্ত মিফান্নে ভোজনাবধি। কান্তে চিত্ত স তীনাঞ্চ স্বপ্নে জ্ঞানে চ সম্ভত ।। নামে তৃফা জলে তৃফা সাধীনা श्वामिना विना। यथा जात्त पू॰-क्लीना॰ माधीनां उथा क्षिरं ।। लाक निमम मत्नामा काल-ন পান ভোজনাৎ। বিপরীত কান্তশোকো বৰ্দ্ধতে ভক্ষণাদ-**रि।। ইতি बन्न दिवदर्ख श्रीकृषः** क्रम्थर७ ३१ जशायः ।! 🛊 ॥ किथा आकारमा श्रंमी मिमः সৰ্ব। যদি নশ্যন্তি বাষবঃ। তথা-পি সাধীশাপস্ত ন নশাতি কদা-চন॥ ইতি তত্ত্বৈব ৪২ জ্খ্যায়ঃ।।

সাননঃ পু• যোডশঞ্জকান্তর্গ-**७.अन्वकरञ्जाः। यथा। अक्षान**ः -भाक्तरेत्र र्वूटका यरमा हर्वथासा ঞ্বঃ। কহন্ধ স'জকে তালে সানন্দো বীরকে রসে।। ইতি मनीजनारमानतः ॥ ७७ क्वत्रक्षः । ইতি রাজনির্ধন্টঃ।। আহ্লাদ-ষুক্তে ত্রি। যথা। রামণনমতি সানশ ধর্মানভিনিবিশ্য সন্। रेि मूक्षरवाधवा। कत्रनः ॥ मानमृतः पु॰ छीर्थवित्मयः। यथा । ধরণাবাচ। দারকাতঃ পর• শ্রেষ্ঠ অন্তি শুহুণ পরণ কচিৎ। ততো মহীবচঃ শ্ৰুত্বা বিষ্ণুঃ কম नलाहनः॥ वाजाह्रकशी छग-বান্প্রত্যুবাচ বসুন্ধরা । বারা হ উবাচ। সানন্দুরেতি বিখ্যা-ত ভূমে গুহু পর মম।। উ ত্তরে তু সমুজন্য মলষ্দ্য চ দ কিশে। তত্ত্ব তিষ্ঠামি বসুধে উ দীচীদিশ মাশ্রিতঃ।। প্রতিমা বৈ মদীযান্তি নাত্যুচ্চা নাভি-नीहका। आयमी जा वमरसा क जाता जामुमरी ज्या । का भौ ती जिम्ही मत्ना क-চিৎ সীসক নির্মিতা । শিলা মধী মিভাপরে মহদাশ্চর্যাক্সপি

भीगा ज्वज्ञानामित्य पृद्धकः थामान मया मृश्। मन्का वज মুচাজে গতাঃ সংসারসাগর ।। ভত্তাশ্চর্যাও প্রবন্ধ্যামি সানসূরে चनविनि। मोदर्ग मृनाटा भन्ने मधारङ्ग जू निवाक्दत्र ॥ यब त्रामः गृह नाम मम शृक् समिति। ज-ত্তাপি শৃণু চাশ্চর্য্য হচ্চাপি পরি-বৰ্ত্ততে ৷৷ এবং তত্ৰ লতা বৃক্ষ মুচ্চ चृत गर्शासम्। नंगूसमरश िर्छ-ন্ত পোপি তত্ত্ব ন পশ্যতি॥ 🛊॥ অন্যচ্চ তে প্রবক্ষ্যামি মহাশ্চ-ৰ্যাণ শৃণুষ মে। মম ভক্তাপি প भास्त्रि ভिष्ठेमानाः स्वरूपमा ॥ वहः মৎসাসহসাণি কোট্যো হার্দ মেব চ। किश्वः शिखन्ठ उन्नर्धा ষেন কেন বিকর্মিণা।। এক স্তত্ত স্থূলনৎস্যো ভূমিচক্রেণ চান্ধি-তঃ। তাবৎ কশ্চিম গৃহাতি ধা-বত্তেন ন ভক্ষিতঃ ৷৷ তত্ত্র রামস-রণ নাম তিমন্কেত্রে পরণ মম। অগাধ ঞাপ্যপারঞ্চ রক্তপদ্ম বি-ভূষিত।। তত্ৰ সামস্ত দৰীত এ-করাত্তোষিতো নরঃ। বুধস্য ভব-ন॰ গত্বা মোদতে নাত্র সংশ্যঃ।। অথ প্রাণান্ প্রসুচ্যেত রম্যে রা-**মসরে তথা। বুধস্য ভবন• তা**জ্জা

সম লোকক গছাতি॥ তার রাম-मदत जुटम महाण्डरी मृशूष त्य। মনজা ভার পেশান্তি মম কর্মাপ-রাষণাংগা সৎসরং ক্রোশ বিস্তা-त्र⁻ यह **धना** निष्ठाक्षण । महनाखः त्रमनीयक जमरेक काशि मन्त्र ৷৷ তত্ত্ৰ মূঢালিপদ্মানি দ্যোত্যস্তি দিশো দশ। একন্ত দৃশ্যতে শ্বেত মেক॰ রুকাময় তথা ৷৷ ভত্র বন্দার নাম শুরু কেত্রে পর यम। উত্তরেণ তু পার্শ্বেন यमः क्किना मुम्बि।। एक म्रु म হাভাগে পৰ্বতে চ সমাঞ্ৰিত ৷ ধারা ৰত্র পতেকৈব স্থূলা মুবল-সন্নিভা।। তত্ৰ সানম স্বীত ব-र्श्वकारणां विष्ण नद्रः। बन्नत्ना-ক সমাসাদ্য মোদতে নাত্র স তত্র ব্রহ্মসরে মম। ব্রহ্মণা সমনু-জ্ঞাতো মম লোকক গচ্ছতি।। <u> ज्वाभ्तर्गः महाज्ञारम द्रामा ब</u> শ্নুরে শৃণু৷ মন্তক্তা ষানি পশ্য-স্তি ঘোর সংসারমোক্ষণ ॥ চত্-र्दि॰मणिकाममा। मा शाता পृथू-लक्ता वशाद्भ পততে ভূমে याव मूर्याः म छिष्ठे छि ॥ भताः

বৃত্তে তু মধ্যাক্লে সা ধারা ন প-

माखन তেম্ভুৰি। এবং তক্ত সহাস্থ্যিত ইতি বারাহে সানন্দ্রমাহাত্যা-नामाशायः॥ সানসিঃ পু: সুবর্ণঃ। ইত্যুণাদি-कि यः। मानिका जी वःभी। ইতি नक-त्रञ्चावनी ॥ সানুঃ পু·ক্লী পর্বতসমভূভাগঃঃ । তৎপর্যাयः। সু: ২ প্রস্থঃ ৩। रेजायद्वः ॥ वनः ॥ वाजा॥: गार्गः॥ व्यवः॥ काविमः। रेंडि (मिनी।। जर्कः।। शहरः

। ইতি জটাধরঃ।। সানুজ ল্লী প্রগৌজরীক। ইতি त्राक्रिनिर्श्कः॥

সানুজঃ পু॰ তুয়ুরুবৃকঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ৷৷ অনুজেন সহ-বৰ্ত্তমানে সানুজাতে চ ত্রি।। সানুমান পু॰ পর্বতঃ। ইতি হেম-**टिक्स**ः ॥

ন্ত্ৰী কশী। ইতি <u> বানেষিকা</u>

मातिशे खी वंभी। देखि मक त्रञ्जावनी ॥

मास्रुपन की बर्जितमधः। यथा । शामूज॰ शामय॰ कीत्र॰ निध

नर्णिः त्ररभाषकः। এकत्राद्धाः পবাসশ্চ কুচ্ছু॰ সান্তপন স্তৃত ॥ इंडि मानत्व ३३ व्यशासः ॥ গোমুত্র মিতি গোমুত্রাদি একী-ক্লত্য একিশামহান ভক্ষকেৎ नानार किकिनमार जनतिन নে চোপবাসঃ। ইত্যেতৎ সা-ন্তপন ক্লছ্ড স্মৃত। यह। जू গোমূত্রাদি ষট্ প্রত্যেক বড্ দিনান্যপভুজ্যেত সপ্তমে দি নে চোপরাসঃ তদা মহাসান্ত পন ভরতি। তথা চ যাজ্ঞব काः। अत्नामकक लाकीतः मधि मृत्रः महाम्युटः। जम्मा ११-রে ২হ্নাপবসেৎ ক্লুন্ত্ সান্তপন अवत्।। পৃথক্ সাম্ভপন জব্যৈঃ ষডহঃ সোপবাসিকঃ। সপ্তা ংহন তু রুচ্ছে। ২য় মহাসান্ত পন শৃত্ত ৷৷ ইতি সন্ধৃকভটঃ ৷৷ भाकर्फ ३०६ व्यथार्यरभावः ॥ সান্তরণ ত্রি বিরলণ। ইতিজটা ধর: ॥ অন্তরেণসহবর্তমানঞ্ ॥ সাস্তৃ ৎ ক সাস্ত্রে। ইতি কবি-क्वाक्रमंः ॥ मखामि उ मधाः বকারোপধঃ। সাস্তৃন• প্রিয-ক্রণ । সাজ্যতি সাজ্যাপয়তি 1 देखि मूर्गामामः 11

সাস্ত্ৰ ক সামবোগে। ইতি কৰি-কর্মজনঃ।। ক স र्खः मरानुः। देखि मूर्गामानः ॥ সাভু ক্লী অভ্যর্থমধুরণ। ততু কৰ্ম মনঃ প্ৰীতি জমক বাক্য া। সাৰ। তচ্চ প্ৰিষ্কাদাৰ্থপ্ৰ-দান সম্বন্ধদিভিঃ ক্রোধোপশ্-্মন । ইতামরভরতৌ ।। দাকি-ना रेंछि त्यमिमी ॥ माञ्जन क्ली मारमाभाषः। ইতি ह्महन्तः॥ श्रिषकद्रणः। देखि नाजु धाञ् निकायाः पूर्भाषामः॥ माखुना जी क्री माखुन ।। थन-यः। यथा। প্রণযः সান্তুনা ন না া ইতি জটাধরঃ॥ **गाञ्ज्वामः बि गाञ्ज्यावाकाः ।** ইভিকেচিৎ ৷৷ जान्नीशनिः श्रु चूर्निवित्नवः १ ষধা। বিশ্বামিত্রঃ সতানদের ः काकनि रिङ्गिलि उपा। मा-ন্দীপনিশ্চ ব্ৰহ্মাণশো বোগিনাণ खानिना धन्द्र।। ইতি बन्दुदि-বর্ত্তে শ্রীক্রকজন্মশণ্ডে ৯৯ অ-भागः॥ ।। जनि ह। विनिठा-थिन विद्धात्मे एवछान्यरा-अप्राथ यह जिल्लामी ॥ जिल्ला

नाम्नीशनि॰ काणा सर्वाज्ञशूद्र-वानिनः। जङ्गार्थः जग्रज् हीं-रतो वलामव अनामर्टनो ।। का-भाः कामग्रः काछः॥ छमा भिः ব্যন্থ ৰভ্যেত্য গুৰুবৃত্তিপরে হি **छो। मर्नराक्ष्यज् बीदारा**ठात्र अधित्य क्रत्न ॥ मत्रङ्गाः धमु-ূৰ্বেদ সসংগ্ৰহ মধীষতা । অ-·হোরাত্রৈ শচতু:য**ন্ট্যা তদ**ন্ত্ত अञृष्टिक ॥ जानीशनि द्रमः छो-का छरेशाः कर्माछिमान्यः। वि-চিন্তা তৌ তদা বেনে প্রাপ্তৌ চন্দ্র দিবাকরৌ।। অন্তগ্রাম ম-শেষণ্ণ প্রোক্তমাত্র মবাগ্য তৌ । উচতু বিষতা॰ যা তে দাতব্যা গুরুদক্ষিণা ৷ সোপ্যতীব্রিষ यात्नाका छत्याः कर्या यश्य-তিঃ। অষাচত মৃত পুত্ৰ প্ৰভা-एक नवनार्गरव ॥ व्यक्तीक्षियः वा ন্যত্ৰাদৃষ্ঠপূৰ্ব । গৃহীতান্ত্ৰো তত त्छो जू नार्मशात्वा नरहामिशः। উবাচ ন মধা পুজো হতঃ সা-ন্দীগনে রিতি ৷৷ দৈত্যঃ পঞ্ জনো নাম শহৰপং স বালক । জগ্रাহ সো ২স্তি সলিলে म-रेगवातिनियूमन॥ इंजाटकरा ৰ্জল গদ্ব। হত্ব। পঞ্জন চত ।

करका कथार जगाविश्रक्त मन् मूखमः॥ जः भाककता मान् भूया गषा समभूतीः रुद्धिः। तम-एतम् तमनान् किषा देवत्यकः समः॥ जः नामः बाजनामःष्ट्रः सथाभूवंभन्नीतिनः। भिर्द्धा श्रान्यान् करका यमक विनाः तदः॥ देकि विक्षुतारं ६ ष्यः-रूप २५ ष्यायः॥

मान्यिक की महास्वा । रेडामदः ॥ पृष्ठे भद्रिक बना ना । यथ ।
स्था । भिडामर प्रोरिका जाद श्री छान्य श्री भाग हो। श्री छान्य श्री छान्य रहा । स्था । भाग श्री छान्य श्री छान्य श्री छान्य श्री छान्य श्री छान्य श्री छान्य । रेडि मा प्रक्रिम ना समिक बाक । रेडि मा सक्य मण्डर ॥

नाखः की वनः। ইতি मिनी।।
नाखः जि घनः। ইতামরः॥
मृत्रः। ইতি मिनी।। मिकः॥
नताखः। ইতি শক্ষত্মাবলী।।
माख्रभूष्णः भूः विভীতকবৃকः।
ইতি শক্চজিক।।।

माख्यिकः जि निविष्यिकः। ७९१वीयः। समूतः २। देखि भक्तद्वावनी॥

मान्निकः प्रः पोष्टिकः। देखि

गंकवा

अयमाना ॥ मञ्जिक्छा ह।। नामित्वन कि निम्दिनायाः **७वः। मिह्नादना मद्या। १७**, निकाखरकोन्मी॥ नानाः बि नन्तानवसीयः। नन्ता শব্বাৎ ষ্য্য প্রত্যবেন নিম্পন্নঃ।। সান্ধ্যক্ষসুমা স্ত্রী ত্রিসন্ধিপুষ্ণ-বৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্বন্টঃ।। मान्न्निकः बि मनार्विभिष्धेः। সন্নাহ শব্দাৎ ঠক্ প্রত্যবেন নি-শন্ধঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌ সুদী।। मामाया की हिंदी रेठामतः॥ मामिधा की निकरे। यथा। অৰ্চ্চকদ্য তপোৰোগাৎ অৰ্চ-নস্যাতিশাষনাৎ। আভিক-भाक विश्वानाः एतः मानिश मृष्ट्ि।। ইভি ভিখ্যাদিভত্ত্ব॰।। সামিপাতিকঃ ত্রি সমিপাতজরো-शः। ইতি ब्राक्षनिर्यकः॥ छिष-বরণ সন্ধিপাতশব্দে অফব্য়ণ ৷৷ **সাদ্যাসিকঃ পু• সদ্যাসী। তৎ-**পর্য্যায়: ৷ ভিক্ষু: ২ যতি: ৩ কর্মন্দী ৪ রক্তবসনঃ ৫ পরি-বাজকং ৬ তাপসঃ ৭ পারাশ-রী ৮ পারিকাজ্ফী ১ মক্ষরী ১০ পারিরক্ষকঃ ১১। ইতি হেমচন্দ্রঃ পু: শত্রুঃ ইত্যমর-সাপত্ন্যঃ

্ট্রীকাকা রুমানাথঃ যা সপত্রী-পুত্রঃ। বথা বৃহস্পতিঃ। পিত্রা-সহ বিভক্তা কে সাগন্ত্যা বা স-हामब्राध जयनाकाण्ड (य ज-ষাণ পিভূভাগহরা স্ত্র তে ॥ ইতি দাযতক্ত্ব।। সপত্নীভাবে ক্লী।। সাপিণ্ডা॰ ক্লী সপিণ্ডতা। সাতু পুণনা সপ্তমপুরুষপর্যান্ত অ न्एकनगाना॰ बिश्रक्रयभर्गास्रक श्राविनी। यथा। त्विश्रेडाङ भ्रा তুর্থাদ্যাঃ পিত্রাদ্যাঃ পিণ্ডভা-গিনঃ। পিওদঃ সপ্তম স্তেষাণ **দাণিণ্ড্য॰ দাপ্তপৌরুষণ।। ই**তি মৎসাপুরাণ।। অপ্রস্তানা তি-পৌরুষ•। ইতি বশিষ্ঠঃ। অপি চ। পিত্রাদি ষড্ভিঃ সাপিণ্ড্য॰ তত্তৎ সন্ততি সপ্তকৈঃ। গোত্রৈ-ক্যে সতি তত্ত্বস্যাৎ ষড্ভিঃ পু-वामिछि खथा। ष्यथानाष कन्गाना विजिः शिवापिजिः मृष्णा रेषि कात्रिका॥ चनाद সপিওশব্দেজকব্য ।। সাপ্তপদীন• ক্লী স্থা•। ইত্য-यतः॥ मञ्जूभनमञ्जूषिनि वि ॥ माक्ला॰ क्री मक्ला मक्ल-স্যভাব ইত্যর্থে ক্য প্রত্যুষ্ निष्णमः ॥

সান্দী স্ত্রী ডাক্ষাবিশেক্ষ। ইতি কেচিৎ।

সাম ৎ ক সাস্তৃনে। ইতি কবি-কল্পদ্রমঃ। সাস্তৃন প্রিষকরণ । অসসামৎদীন দানেন দাতা ইতি দুর্গাদাসঃ।।

माम के मार्खु। ইতি कविकन्न-एक्यः ॥ मख्यानि विंठीययती माखुः श्रियकत्रनः। क मामयि नीनः नाटनन नाठा। ইতি नूर्गा-मामः॥

माम^न क्ली त्वमितित्ममः। ইত্য-মরং৷৷ স্যতি পাপং সাম ষোষ নাশে ভাসুসিতি মন্। ভরুতঃ ৷৷ তল্লকণ মাহ জৈমিনিঃ । গীতেষু সামাখ্যা ইতি। গীয মানেষু মন্ত্রেষু সাম সংজ্ঞেত্য-र्थः। ইতি তিখ্যাদিতত্ত্ব ॥ তন্তু চতুৰ্বেদান্তৰ্গততৃতীযবেদঃ । তদ্য সহসুশাখা তদ্যোপনি-य ছाटमागामिः। विवत्रशञ्च (दम्मारक जरुवा॰॥ #॥ माम-ধনি প্রবণানম্ভর বেদপাঠ নি-ষেধ স্তদ্ধিষ্ঠাত্দেবতা কথনক यथा। मामधनावृश्चक्यी नाथी-যীত কদাচন। বেদগাধীতা বাপান্ত মারণ্যক মধীত্য চ॥ **भारधामा (पव रेमवरका) यकुर्विप-**স্ত মানুষঃ। সামবেদঃ স্মৃতঃ **शि**बा खन्माखना। ७ हि र्सनिः ॥ ইতি মানবে ৪ অধ্যায়ঃ ॥ 🛊॥ मजूवनीकत्रांभायवित्नयः। दे-ত্যমরঃ।। প্রিষ্বাদার্থপ্রদানস-স্বন্ধাদিভিঃ ক্রোধোপশমন সাম । স্যাতি বিরোধ মিতি যো ২স্ত-কৰ্মণীত্যস্মাৎ ত্ৰাসুসিতি মন্। সাস্ত্র সাম এক সাস্ত্রনে ইত্য-স্থাৎ নাম্লীতি অন্বা। সাম দ-ন্ত্যাদি। শমষতি বিরোধ মিতি শাম নান্ত॰ তালব্যাদি ইতি কে-চিৎ। ইতি ভরতঃ।।#।। অপি চ । मन् कवाह। डेशाया॰ खु॰ ममा-চক্ষ সাম পূৰ্বামহাদ্যুতে। লক্ষণ-ঞ্চ তথা তেষা প্রযোগঞ্চ সুরো-ত্তম।। মৎস্য উবাচ। সাম ভেদ উপেক্ষা চ তথা মাষা ইন্দ্রজাল শ্চ পার্থিব॥ প্রযোগাঃ কথিতাঃ সপ্ত তম্মে নিগদতঃ শৃণ্। দ্বিবিধণ ক্থিত সাম তথ্য ঞ্চাত্থ্য মেব চ ।। তত্রাপ্যতথ্য সাধূনা আ-ক্রোশাষৈব জাষতে। তথ্য॰ সাধু-প্রিষটক্ষর সামসাধ্যা নরা মতাঃ ॥ महात्रनीना श्रक्तवा धर्मानिष्ठी

জিতেজিযাঃ। সামসাধ্যা নরা। ন্তথ্য- তেবু সাম প্রবোজবেৎ ম ख्याक जान कर्खवा जन मीना-দি বর্তিনা। তথা সদুপচারাণা क्रजानाकान्यर्गन ॥ अन्देशव তথা যুক্ত্যা ক্ৰডজাখ্যাপন স্ব-কং৷ এবং শাস্ত্রেন কর্ত্তব্যা বশ-গা ধর্মতৎপরাঃ।। সামা বদ্যপি রক্ষাণসি গৃহস্তীতি পরা শুতিঃ ৷ তথাপ্যেতদসাধূনা প্রযুক্ত নোপকারক ৷৷ অতিশান্তিক মিতোব॰ পুরুষণ সামবাদিন• । অসাধবো ২বজানস্তি তস্মাৎ তেযু বিবৰ্জমে**ৎ।। যে শুদ্ধব**ণশা ঋজবঃ প্রতীতা ধর্মে স্থিতাঃ স-ত্যপরা বিনীতা:। তে সামসা-शाः भूक्षाः थिनिकाः माताः ন্নতা বে সতভঞ্রাজন্।। ইতি মাৎস্যে ব্লাজধর্মে সামবিধিঃ ১৯৬ অধ্যায়ঃ।।

সামক ক্লী মূলঋণ । ইতি বি-তাক্ষরা।।

সামকঃ পু॰ তকুশাণঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥

সামগঃ পু॰ সামবেদীবাক্ষণঃ । ইতিজ্ঞটাধরঃ॥ সামগর্ত্তঃ পু॰ বিফুঃ। ইতিশব্দ त्रष्ट्रावनी ॥

সামগী স্ত্রী সামগ্রান্ধণগন্নী । ইতিকেচিৎ।।

সামগ্রী স্ত্রী কারণসমূহ: । যথা।
সামগ্রী চেন্ন কলবিরহো ব্যাপ্তি
রেবেতি তত্ত্বং । ইতি পদাক্ষণুতঃ
থা জব্যং । যথা। একোদ্দিউর
কর্ত্তব্যং পাকেনৈব সদা স্বযং।
অভাবে পাকপাত্রাণাং তদহঃ
সমূপোষণং ।। ইতি লঘুহারীত
বচনাৎ পাকপাত্রাভাবঃ পাকসামগ্রভাবোপল কণং । ইতি
শ্রাদ্ধতত্ত্বং ।।

সামপ্রাণ ক্লী সমুদাযত্বণ সম-প্রসাজাৰ ইত্যার্থে ক্ষ্য প্রত্যায়েন নিশামণা

गामकः पू॰ रखी।। সানোখে बि। ইভি মেদিনী।।

সামঞ্জস্য ক্লী উচিত্য । সমঞ্জস্ শব্দাৎ ক্ষ্য প্রত্যযেন নিম্পন্ন ।। সামনী স্ত্রী পশুবন্ধনরজ্জঃ । ইতি দামশব্দটীকাষা সার্মু-দ্রী।।

শামন্তঃ পু॰ স্ববিষধানন্তররাজা

। সম্ সংলগ্নো ২ন্ত একদেশা

যস্যাঃ শা সমন্তা স্ববিষধানন্তরা ভূমিঃ তদ্যা ঈশ্বরা ইতি কে

<u> শাশাশ্য</u>

সামস্তাঃ। ইতামরটিকাঝা ভ রতঃ ॥

সামন্ঃ পু॰ সামবেদজ্ঞ জান্ধ।।
সামন্ শব্দাৎ ক্য প্রত্যাসেন
নিম্পন্ধঃ।।

সাম্যকঃ ত্তি সমযোচিতঃ। স-মযশকাৎ ক্ষিক প্রত্যবেন নি-প্রায়ঃ।

সামধোনিং পু• বন্ধা। হন্তী।। সামোখবন্তনি ত্রি। ইতি মে দিনী।।

সামর্থ্য ক্লী যোগ্যভা। শক্তিঃ
। ইতি মেদিনী।

সামবাধিকঃ পু॰ মন্ত্রী। ইতি হেমচক্রঃ॥ সমবাধসম্বন্ধিনি ত্রি সামাজিকঃ পু॰ সভ্যঃ। ইত্য-মরঃ॥ সভাসম্বন্ধিনি ত্রি॥ সামান্য॰ ক্লী জাতিঃ। যথা।

জাতি জাতক সামান্য ব্যক্তি
স্থ পৃথগাত্মিকা। ইতি কশ্চিদমর: ।। তদ্দিবিধ থখা। সামান্য ছিবিধ প্রোক্ত পরকাপরমেব চ। অব্যাদি ত্রিকবৃত্তিস্থ সত্তা পরতবোচ্যতে ।। পরভিন্না চ ষা জাতিঃ মৈবাপরতধোচ্যতে। ব্যাপকত্বাৎ পরাপি

স্যাৎ ব্যাপ্যত্বাদগরাগি চ।। अ

সামান্য

ব্যন্থাদিক জাভিন্ত পরাপরতবো-চাতে। ইতি ভাষাপরিচ্ছেদঃ। তল্লকণ ৰথা৷ নিত্যদ্বে সত্যনে-ক সমবেতত্ব•। অনেক সমবেত-দ্ব॰ সংযোগাদীনা মপ্যন্তি অভঃ সত্যন্ত নিতাত্বে সতি সমবেতত্ব গগন পরিমাণাদীনা মপ্যস্তি অ-ত উক্ত॰ অনেকেতি নিত্যদ্বে সতি অনেকবৃত্তিত্ব মত্যন্তাভাবস্যা-প্যস্তি অতো বৃত্তি সামান্য মুপে-ক্ষ্য সমবেতত্ব মুক্ত•। একব্যক্তি-বৃত্তিস্ত ন জাতিঃ। তথাচোক্তে । ব্যক্তে রভেদ স্তল্যত্ব সন্ধরেথি৷-নবস্থিতিঃ। ৰূপহানি রুসম্বন্ধে জাতি বাধক সংগ্রহঃ।। একব্য-ক্তিকদ্বাৎ আকাশদ্ব ন জাতিঃ । जूनावृछिकषा घष्ठेष कनम-षः न काण्डियः। मःकीर्वश्र ভূতদ্ব মূর্ত্তদ্ব ন জাতিঃ। অন-বস্থা ভষাৎ সামান্যস্থ ন জাতিঃ । বিশেষস্য ব্যাবৃত্ত স্বভাবস্য ক-পহানিঃ স্যাদতো বিশেষত্ব ন জাতিঃ। সমবায সম্বন্ধাভাবাৎ সমবাষো ন জাভিঃ ৷ অব্যাদি ত্রিকবৃত্তি রিতি পরত্ব অধিক-**(म**শবৃত্তিত্ব॰ অপরত্ব মল্লদেশবৃ-ত্তিত্ব•। সকলজাত্যপেক্ষয় অ- নামান্য তি অনেকসম্বন্ধ্যেকবস্তু। সাধারণ মধা দেবলঃ
। সামান্য পুত্র কন্যানা মৃতাযা স্ত্রীধন বিদুঃ। অপ্রজামা
হরেন্ডর্জা মাতা ভ্রাতা পিতাপি
বা ৷৷ ইতি দাষতব্ব ৷৷

সামান্যলক্ষণা স্ত্রী অলৌকিকসমিকর্ষবিশেষঃ। স তু আগ্রেষজ্ঞাপক সামান্যজ্ঞানং। যথা।
একঘটদর্শনে সকলঘটজ্ঞানং
ভবতি ঈদৃশ ঘটদাদিজ্ঞানং।
তৎপ্রমাণ যথা। অলৌকিকঃ
সমিকর্ষ স্ত্রিবিধঃ পরিকীর্ভিতঃ।
সামান্যলক্ষণা জ্ঞানলক্ষণা যো

गिक ख्या। जामि ती अवाना-ग्र मामाना खान मिराट । छिन-खियक छक्ष में दोश माम श्री श्री कर्टा। ইতি ভाষা পরিছে ।। मामाना मामन की मामाना दि-कातः। यथा। मरक्ष्य कार्या मामाना मामन शर्म की नकः। मामाना मामन भित्र मूक्ष छिः मूजमामन ।। ইতি পুরবর্ষে

मामाना जी माधातनीनाधिका া অস্যা লকণ্। ধনমাত্রলাভা-র্থ॰ সকলপুরুষাভিলাসা। সা-ত্রিধা। অন্যসম্ভোগদুঃখিতা। वत्काकिगर्दिण। मानवजी। বক্রোক্তিগর্বিতাপি দ্বিবিধা । প্ৰেমগৰিতা সৌন্দৰ্য্যগৰিতা চ । এতা নাযিকা অবস্থাভেদেন প্রত্যেক• অফপ্রকারা ভবস্তি। ষথা। প্রোষিতভতূ কা ১ খণ্ডিতা ২ কলহাস্তরিতা ৩ বিপ্রলন্ধা ৪ উৎক্ষিতা ে বাসকসজ্জা ৬ স্বাধীনপতিকা ৭ অভিসারিকী ৮। ইতি রসমঞ্জরী।। সামি ব্য অর্দ্ধণা নিন্দা। ইত্য-यद्रः ॥

সামিক্তঃ ত্রি অদ্বীক্তঃ৷ সামি

শব্দাৎ ক্তথাতোঃ ক্ত প্রভাবেন নিষ্পানঃ ৷৷

সামিধেনী স্ত্রী অগ্নিসমিদ্ধনঋ-ক্। অগ্নে জালনে যা ঋক্ পঠ্য-তে। তৎপর্যায়ঃ। ধাষ্যা ২ । ইত্যমরঃ।। সমিৎ। ইভি মেন্দিনী।।

সামিপীতঃ ত্রি অর্দ্ধপানক্তঃ।
সামিশকাৎ পাধাতোঃ ক্ত জ্র ভ্যাবেন নিম্পন্নঃ।

সামিতৃক্তঃ ত্রি: অর্দ্ধভূক্তঃ । সামি শব্দাৎ ভূজধাতোঃ ক্ত প্রভ্যন যেন নিম্পানঃ ।।

मामीही खी बन्मना। ইভি हाराः वनी॥

माभीनाः की मभीनाः। टेनकहिंगा यथा। वः क माभीना मामृणा माकना। व्यक्तमिक्ष् । हेः
छि मुक्कः वाश्वाक्रवान् ।। जिल्लिः
कत्रविश्वाश्वाक्रवानः। ज्ञान्तिः।
यथा । माभीनाः स्विष्टिः। हिंछ
कात्रक मुक्कः वाश्वाक्रवाः। हिंछ
सामानः की सम्भावक्रवाः। हिंछ

সামুদ্র ক্লী সমুদ্রলবণ । ইতি হেমচন্দ্রঃ।। করকচ্ ইতি ভাষা । তৎপর্য্যায়ঃ। সামুদ্র যতু লবণ ত্রিস্ট কডকঞ্চ তৎ। गामक

रेि तप्रभागा । जना खनारा गानू ज नवनः भारक नाज्यस्य गिन्दार जनाः भारक नाज्यस्य जिक्षः मृज्यस्य नाजिभित्रज्ञः ॥ रेि ताजवञ्जलः ॥ जनाय मन् जलनमारम जर्केनाः । जनाय मन् जरमार्थः । रेि ताजनिष्ठः ॥ एक्टिइः॥ मन्जजारा जि ॥ रेि सिन्दी॥

मामूजक की ममूजनवन इंडिः রাজনির্ঘন্টঃ।। সমূত্যোক্তন্ত্রী-পু•লক্ষণগ্রহঃ। তদ্বিবরণ• যথা। **बीक्रक উवाह। कीमृनः পুরুষো** ৰন্দ্যো ২বন্দ্যো বা কীদৃশো জ त्र । कना वा की मृगी मः मा। গহিতা বাপি কীদৃশী।। মহেশ **উবাচ। मृ**ग् क्रक श्रवकाभिः সমুজবচন যথা৷ লক্ষণস্ত মনুষ্যাণা একৈকেন বদাম্যহ ।। वानजारम जू नात्रीमा मिक-ণে পুরুষদা চা নির্দিষ্ট লক্ষ-ণ তেষা[•] সমুদ্ৰেণ ষণোদিত• ॥ পূৰ্ব মাষ্ট্ৰ পরীক্ষেত পশ্চা-लक्ष भारत है। चारूशीन नहीं-ণাঞ্চেৎ লক্ষণৈঃ কিং প্রযোজনং ।। 🐠।। व्यथं श्रुक्रवनकनः। श्रकः দীর্ঘণ চতুর্বিণ পঞ্চসূত্রণ ষড়ম-

ভা সপ্তর্ভ ত্রিগম্ভীর ত্রিবি-শাল প্রশস্যতে ॥ বাহু নেত্ৰ-षय- जकी को जू नामा जरेंधर **छ। खनर्या तखत्रदेश्य शक्ती**-ৰ্ষ• প্ৰশস্যতে॥ গ্ৰীৰাথ কণৌ পৃষ্ঠঞ্ছ ছুম্বে জজ্বে সুপূজিতে । চত্বারি যস্য হুস্বানি পূজাণ প্রা-প্লোভি নিত্যশং ৷৷ সূত্ৰাণ্যস্লি পৰ্বাণি দন্ত কেশ নথ ছচঃ। পঞ্চ সূত্রাণি ফেবা ছি তে নরা দীর্ঘ-জীবিনং ৷৷ নাসা নেত্রঞ্চ দস্তা-क ननाउँक भित्र खका। समय-रिक्षव विख्छव मूज्ञठ॰ वर्हे थान-मारा ॥ भानि भामण्या तस्की নেত্রান্তর নথানি চ। তালুকো ২ধর জিহ্বা চ সপ্তরক্ত প্রশ সাতে।। স্বরো বৃদ্ধিশ্চ নাভিশ্চ ত্রিগম্ভীর মুদাহৃতে । উরঃ শিরো ननारेक जिविसीर्ग अनगारा ।। কটি বিশালা বহুপুত্রভাগী বি-শালহন্তো নরপুঙ্গবঃ স্যাৎ। উ রো বিশাল ধন ধান্যভাগী শি-রো বিশাল নরপূজিতঃ স্যাৎ।। ন শ্রী স্তাজতি রক্তাঙ্গণ নার্থঃ ক নকপিঙ্গল । দীর্ঘবাহু ন চৈশ্ব-ষ্যা॰ ন মা॰সোপচিতা॰সক॰।। ক-मािि फखरता मूर्थः कमािि एना-

यगः मूची। कमाहिए जुनित्वी-मूःथी कमाहिश हक्ष्मा मञीा। নেত্রক্ষেহেন সৌভাগ্যণ দন্তন্মে-হেন ভোজন । হস্তলেহেন अश्वर्याः भाषत्वरहन वाहनः १। चक्रमकिरिती श्रु भागावध-नि कामलो। यमा পानिजलो রক্তৌ তদ্য রাজ্যণ বিনির্দিশেৎ ॥ मीर्यनिष्टम मातिष्ठाः युननि-क्ति निर्धनः। क्रमलिक्ति की-ভাগ্য হুস্বলিঙ্গেন ভূপতিঃ ৷৷ ব্লে-থাভি ৰহুভি দুঃখ স্বন্ধাভি ধন-হীনতা। রক্তাভিঃ শ্রিষ মাপো-তি কুষণভিঃ প্রেদ্যতা বজেৎ ।। অঙ্গুষ্ঠোদরমধ্যে তু ষবে। যস্য বিরাজিতঃ। উন্নত ভোজন ত্যা শত জীব্তি মানবং ৷৷ অ-কুশ স্বলিশ ছত্ৰ যস্য পাণি-তলে ভবেৎ। ভগৈয়শ্বর্যণ বিনি-र्ष्मिके अभीजायू र्ज्दवक्षुवः ॥ थनू र्यमा ভবেৎ পাণी शक्रज॰ বাথ তোরণ ৷ তদ্যৈশ্বর্যঞ্জা জ্যঞ্চ অশীত্যায় র্ভবেদ্ধুব গা ক-নিষ্ঠা ভর্জনী যাবদ্রেখা ভবতি বি•শত্যব্দাধিকশত চাক্ষতা। নরো জীবতানামযঃ।। কনিঠা মধ্যমা• যাবজেখা ভবতি চা-

কতা। শতাব্দ বাধ বাশীভি नदत्र। জीदित्र मः मयः ॥ किन-ষ্ঠানামিকাষাঞ্চেৎ রেখা ভবতি চাক্ষতা। ষ্টি॰ পঞ্চাশ্দক। বা नता कीरखामः गवः ॥ ८त्रथ्या ভিদ্যতে রেখা স্বল্পাযুশ্চ ভবেন রঃ। কনিষ্ঠাধঃ স্থিতা রেখাঃ স-খ্যা যাবতিকাঃ স্মৃতাঃ ৷৷ তাবতী পুরুষাণাম্ব নারী ভবতি নিশ্চি ত । করমধ্যগতা রেখা ধ্রুবা উ-कुं अदनस्ति ॥ न्ला वा न्लजु-लाग वा वितः थाएका र्थवान् **७ दि । यदमा भूक् अकीर्त्न** বিদ্যা বিত্ত সমন্বিতঃ ৷৷ পিতা ম-হস্য বা কিঞ্চিন্ধনঞ্চ লভতে দ্রুবণ । यथायाया॰ यति यदा नृगारख ২ত্যস্ত শোভনাঃ।। তদান্যস-ঞ্চিত বিত্ত প্রাপ্নোত্যস্থকে यत्। यमाथ ठळ मञ्जूष्ठे यवः পূৰ্ণন্চ দৃশ্যতে।। তদা পিতাম-श्नीना मर्डिंड १न मा श्रुवा । তর্জন্যা মথ চক্রঞ্চ মিত্রদ্বারা ধ নম্ভবেৎ ॥ তেনৈব বিপরীতম্ব ব্যযো ভবতি নিশ্চিত ৷ মধ্য-মাষা হিতে চক্তে দেবদারা ধন লভেৎ॥ তেনৈব বিপরীতম্ব ব্য-ষো ভবতি নিশ্চিত ৷ অনামি

কাষা ভবেচক্র সর্বদারা ভ বেন্ধন ।। ভেনেব বিপরীতম্ব ব্যয়ে। ভবঙি নিশ্চিত । কনি-श्रामा• ভবেচ্চক্র॰ বাণিজ্যেন ধনণ ভবেৎ।। তেনৈব বিপরীত-ন্ত ব্যয়ে। ভবভি নিশ্চিত। नः नाटि मृगाट यमा ठक्दत्रथा छ-তুঊষ ।। অশীত্যাষুঃ সমাপ্নোতি পঞ্জেখাঃ শত সমাঃ। যস্যো-মত বলাটঞ্ তামুবর্ণ দৃশ্যতে ॥ রেখাহীনশ্চ কক্ষণ্ট স চো-माखा मशै जुरम । यमा कि स्वा ভবেদीर्घा नामाश्र॰ लिहि সৰ্বদা।। যোগী ভবতি নিৰ্বাণঃ **शृशी॰ ভূমতি সর্বদা। দ্সাশ্চ** বিরলা যস্য গণ্ডে কূপোপি জা-যভে ৷৷ পরস্ত্রীরমণে নিত্য প-রবিতেন বিত্রান্। কর্পেঃ किंदिन लि देशः अभागान्निर्ग देखः সদা ৷৷ রমতে চ সদা দাসী निर्धता ७वि७ क्षवः। क्रमणिः ঙ্গেন সূক্ষেণ রক্তবর্ণেন ভূপতিঃ ৷৷ বছন্ত্রীরমণো নিত্য: নারীণা• বলভো ভবেৎ। ষস্য পাদতলে পদ্মণ চক্রণ বাপ্যথ তোরণ ৷৷ অন্ধৃশ সলিশ বাপি স রাজা ভবতি জ্বৰ: ক্রশাতিলোমশা

त्य मुरः त्वकत्राक्षाः क्राटनकाः ॥ कालताः वर्गनिक्षिक्षां क्राटन ति । तिजा न मन्भवः । क्रिना मनि-नाक्राक द्वारेक्टव वृष्ट्रम्थाः ॥ स्रुणालिमीयां मन्क्रा त्य मित्रजा न मन्भवः । हिवूदक भाक्षं मृन्या त्य निर्द्धां सम्योक्ट त्य ॥ त्य

্। নৈৰু সন্দেহং সমুজৰচন॰ यथा। मृठीमूथा अग्रशृक्षाः क्रकः म्खाः भ्रटिनकाः ॥ वक्तनामा ৰজুনাসা স্তে নরা দুক্তমানসাঃ। **प्रशानवन्छ पाछा**द्वा **क**शवरस्त्रा জিতেব্রিষা: ৷৷ পরোপকারিণ ৈচৰ তে ২পূৰা মানবাঃ স্মৃতাঃ। ইতি পুরুষলকণ•া।⊕া৷ অথ স্ত্রী-नक्न । यम्राः भाष्ठत्व त्रथा সাভবেৎ কিতিপান্দনা। ভবে-দখণভাগাচ বা মধ্যাঙ্গুলিসঙ্গ-ভা॥ উন্নতো মাণসলো হঙ্গুপ্তো বর্তুলো ২তুলভোগদঃ ৷ বক্রো হুষশ্চ চিবিটঃ সুথ সৌভাগ্যভ अवः॥ मीर्घात्रुनीिं त्रनिं। ক্লশাভি রতিনির্ধনা। হুস্বাভিঃ माक रुषायुः छगाछि ज्रावर्षिः नी।। চিবিটাভি ভবেদ্দাসী বি-রলাভি দরিজিণী। পরস্পর• স মাৰতা যদাঙ্গুল্যো ভবস্তি হি ॥

হত্বা বহুনপি পভীন্ পরপ্রেক্যা তদা ভবেৎ। সিগ্ধা সমুন্নতা স্তামুণ বৃত্তাঃ পাদনখাঃ শুভাঃ॥ রাজীম্ব সূচক স্ত্রীণা পাদ পৃষ্ঠ সমুনত। সমপাকী শুভা নারী शृथुशाकी मृष्डिंगा ।। जनहो-मञ्जाकी माद मीर्घणाकी ह দুঃখভাক্। রোমহীনে সমে ন্নি-(क करूब ह क्य वर्त्त ।। मा द्रा-জপত্নী ভবতি বিশিরে সুমনো-ছরে। বৃত্ত॰ পিশিত সংলগ্নি॰ জা-नृष्या अनगाता। निर्मा न देखें बेहा बिका मित्र जा बाक विक्रा-থ । বিশিরেঃ করভাকারে ক-क्रिक भेगृरेन धरनः॥ मुन्रेखः রোমরহিতৈ ভবেষু ভূপবল্লভাঃ । চতুর্ভি রঙ্গুলৈঃ শস্তা কটি বি'-শতি সংযুতৈ:।। সমুন্নত নিত-ষাঢ্যা চতুরস্রা মৃগীদৃশা। নিতম বিষো নারীণাণ উষতো মাণসলঃ পৃথুঃ ৷ মহাভোগাষ সংপ্রোক্তঃ छम्ता श्नर्भागिष ह। शसीङ्गः দক্ষিণাবর্ত্তা নাভিঃ স্যাৎ সুখদ-म्भारम ॥ वामावर्छ। ममूछाना ব্যক্তগ্রন্থী ন শোভনা। উদরেণা-ভিতুচ্ছেন বিশিরেণ মৃদৃত্বচা ॥ ষোষিৎ ভবতি ভোগাঢ্যা নিহ্য

गागुज

भिक्षांत्रत्यविनी। अञ्चाकादः मः तिजाया कर्रत्रक मृतक्व ।। कः মাণ্ডাভ ষবাভঞ্দুর জাষ-তে खियाः। निर्लाभक्तस्य य-স্যাঃ সমা নিমন্ত্র বর্জিতা ৷ ঐশ্ব ৰ্যাণ চাপ্যবৈধব্যণ প্ৰিযপ্ৰেমা চ मा ভবেष। घटनी वृट्छी मृट्छी পীনৌ সমৌ শস্তো পষোধরে।।। खूनात्थी विव्रतनी मृत्यो वारमा-बागः न गर्मामा । मिक्तामणः व-ক্ষোজা পুত্ৰিণীয়গ্ৰণী ৰ্মতা ॥ বা-মোমতঙ্গচা সূতে কন্যাণ সৌভা-गामुमती । मृत्व कृत्वो कमकः শাবত্রে তীক্ষো পযোধরো।। সুখ-দৌ বাল্যকালে তু পশ্চাদত্যম্ভ मृःथामे । অভোজমুদলাকার मङ्क्षेष्ट्रिनि मसूथः॥ रखवरः মৃগীকীণাণ বহুভোগাৰ জাৰতে। মৃদু মধ্যোদত রক্ত তল পাণ্যো ররন্ত্রক ।। প্রশন্ত শন্তরেখাঢ্য मन्नद्रत्रथः मूज्थनः। विश्वा वरुः ্রেখেণ বিরেখেণ দরিদ্রিণী।। ভি ক্ষুকী সুশিরাট্যেন নারী করত নেন বৈ। মৎস্যেন সূভগা নারী স্বস্তি:কন চ সুপ্রজা।। পদ্মেন ভূপতেঃ পত্নী জনষেৎ ভূপতি मूछ । চক্রবর্ত্তি স্ত্রিয়াঃ পাণে ন

मार्गावर्ख अमिनः॥ मधाजभव ক্ষঠা রাজ্যাভ্রসূচকাঃ। ক্ল্যী-वनग्र भन्नी माष्ट्रकरवेन यूर्ग-न वा ॥ हामताकून कामटेखः রাজপত্নী ভবেদ্ধুবং। অঙ্গুঠমূ-লামির্গত্য রেখা ষাতি কনিষ্ঠি: কাণা যদি স্যাৎপতিহন্ত্ৰী সা দৃ-রত স্তা• ত্যজেৎ সুধীঃ৷ ত্রিশূলা-मि गमा শক्তि मून्यूछाक्विटात्रथः या।। নিতম্বিনী কীর্ত্তিমতী করেণ পृथिवी जला। भाषेतना वर्ज्नः বিশো রেখাভূষিত মধ্যভূ:।। সীমস্তিনীনা মধরো রাজ্ঞাণ চৈব প্রিয়ো ভবেৎ৷ শ্যামঃ স্থূলো ২ধ-রোষ্ঠঃ স্যাৎ বৈধব্য কলহপ্রদঃ॥ মস্ণো মক্তকাশিন্যা শ্চোত্তরো-ষ্ঠঃ সুভোগদঃ। পীতাঃ শ্যামান্চ मननाः कृता मीर्या विशक्षसः॥ 💖 জ্যাকারাশ্চ বিরলা দুঃখ দৌর্ভা-गाकात्रनः। व्यथ्यामिदिक में देख ৰ্মাতর ভক্ষধেৎ স্ফুট ।৷ পতি-शैना ह विकटिः भन्छ। विव्रदेन र्ज्दर। ममवृखभूषा नामा नघू-চ্ছিদ্রা শুভাবছা।। স্থূলাগ্রা মধ্য-ন্মা চ ন প্রশস্তা সমুন্নতা ৷ ললনা লোচনে শস্তে রক্তান্তে क्षकात्रक् ॥ रगाकीत्रवर्गविभरम

সুমিশ্বে ক্লফপন্ধিনী। উন্নতানী কৰি ন দীৰ্ঘাষ্ট্ৰং বৃত্তাক্ষী সলটা ভবেৎ ।। মেষাক্ষী মাহ্যাক্ষী চ কেকরাক্ষী ন শোভনা। কামগৃ হীলা নিতরাণ গোপিঙ্গাক্ষী সুদুর্মানা।। পারাবতাক্ষী দুংশীলা রক্তাক্ষী ভতৃ ঘাতিনী। কোটারকাক্ষী ত্তাকি গজনেত্রা ন শোভনা।। পুংশ্চলী বাসকাকাক্ষী বাস্কানা

त्रमणी थन थाना ममृक्षिजाक्॥ প্রলয় মলিক যস্যা দেবর হন্তি সাঞ্জক। রোমশেন শিরালেন প্রাণ্ডনা রোগিণী মতা।। স্থূল-बृक्षा ह विथवा नीर्यनीर्या ह वक्ष কী। বিশালেনাপি শির্মা ভ বেদ্দোর্ভাগ্যভাজন ।। কেশা ত্বলিঙ্গলজ্যুষাঃ সিঞ্চাঃ সূন্দাঃ সু कामनाः। किकिनामकि ठावा-শ্চ স্টিলা শ্চাতিশোভনাঃ॥ জ্ঞ-বো রস্তে ললাটে বা মশকো রা-জ্যসূচকः। বামে কপোলে ম-শকঃ শোণো মিফান্নদঃ শুভঃ ॥ **जिनकः नाञ्चनः वाशि ऋपि मो** ভাগ্যকারণণ৷ ষদ্যা দক্ষিণ ব-ক্ষোজে ভবেৎ তিলকলাঞ্ছন।।। কন্যাচতুষ্ট্য সূতে সূতে সা চ

সুতদ্বৰণ তিলক লাঞ্ছন শো-ণ যস্যা বামঙ্গচে ভবেৎ ॥ এক। পুত্ৰ- প্ৰসূষাদৌ অন্তে চ বিধবা ভবেৎ৷ গুহুদ্য দক্ষিণে ভাগে তিলক যদি যোষিতঃ।। তদা ক্ষি-তিপতেঃ পত্নী সূতে চ ক্ষিতিপণ সুত । নাসাতো মশকঃ শোণো মহিষ্যা এব জাযতে॥ ক্লফঃ সএব ভত্ দ্ল্যাঃ পুংশ্চল্যা বা প্রকীর্ত্তি-তঃ। নাভে রধস্তাৎ তিলক ম-শকো লাঞ্চনং শুভং ৷৷ নশফ खिनक॰ विङ्गः खन्नः नति-फक्र । मूलकशि मूः भीला अ-नक्षनिद्यामनिः॥ जनक्षनानि যা সাধী সৰ্বলক্ষণভূ স্ত সা। কৃষ্ণা কপিলকেশী চ মিলিডজ্ঞনটি স্ত-খা।৷ গমন সত্ত্বরকৈব ত্যক্তব্যা मा प्राप्त मा वृदेशः। यमा गमन মাত্রেণ ভূমে কম্পঃ প্রজাযতে।। বহ্বাশিনী প্রলোভাঞ্চ তা না-ती॰ পরিবর্জযেৎ। বিরলা দ-শনা যস্যাঃ ক্ষোষ্ঠী ক্ষণুজি: ব্দিকা।। ভর্তারণ প্রথমণ হস্তি দ্বিতীয়ঞ্চৈব বিন্দতি। অঙ্গুলী বিরলা যস্যাঃ সলোমা গাত্রক-কশা।। ভেকা ভেকস্তনী কৃদ্রা দূরতঃ পরিবর্জযেৎ। ত্রীণি যস্যাঃ

थनशानि नना है जिन्द्र छ भः 11 (मर्वतः शिष्टः। मनार्धे श्रुश्तः रनग जिंदत दार विशेषा ভগঞ্চ হন্যান্তর্তার মহাদোষা প্রয়ঃ স্মৃতাঃ। যস্যা অত্যুৎকটণ নাৰ্য্যা বক্ষণ্ড বিস্তৃত ভবেৎ য় উত্তরোঠে চ লোমানি শী<mark>ঘু</mark>ণ সা ভক্ষযেৎ পতি । চরণানা-মিকা যস্যাঃ ক্ষিতি ৰ স্পৃশতে यित । দ্বিতীয়া বা তৃতীয়া বা मा कन्ना मूथविद्धिंछ। नामा-গ্ৰে দৃশ্যতে ষস্যাঃ তিলক স শকোপি চ।। क्रयमस्य क्रयः জিহ্বা দশাহেন পতি॰ হরেৎ। সৃন্ধকেশা তু যা কন্যা গৌর वर्गा ह या ज्यव्या व्यक्ती जन-ষতে পুত্রান্ প্রাপ্নোতি বিপুল সুখ । ইতি সামুদ্রকে স্ত্রীল-ক্ষণ সমাপ্ত ।।

সামুজিকঃ ত্রি জ্রীপু•সচিত্রবে-ত্তা। ইতি হারাবলী,।। সমুজ-সমন্ধী চ।।

गाন্নী ন্ত্ৰী বৈদিকছদেদাৰিশেষঃ
। ইতি কেচিৎ ।।

সাম্পরাষিক ক্লী যুদ্ধ। ইত্য-মরঃ। পারলৌকিকে ত্রি। যথা । প্রভুং প্রথমকল্পন্য যো ২নুক দেন বর্ত্ততে। ন সাম্পরাধিকণ তদ্য দুর্মতে রিদ্যতে কলং ॥ ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বং॥ সাম্পূতং ব্য যুক্তং॥ ইদানীং। ইত্যমরঃ॥

माय क मयरका इंछि कित्कन्न फ्रिया । अर्थवर्गटमारपार । प्रियोगपार । ।

मायतः की गडनवनः। यथा।
गडामिनवनः छड़ः शृथीकः गः
डिम्मकः। गडायकः महात्रसः
मायतः मयद्रास्त्रसः। ইতি
तास्त्रिक्तिः॥

गायती जी गाया। यथा। भा-यती गायती गाया गायाक छिक्-रक नटि। इंडि भक्त प्रावनी।। गायामिकः प्र टेनयायिकः। यथा। टेनयायिकः गाक्र भागः गायमामिक पारिषः। इंडि किंग्यायकः।।

সাম্বী স্ত্রী রক্তলোধুঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

সাম্য ক্লী সমতা। তুলাদ। যথা। চাগোলান্তান্তিযো গদ।

ভুক্ চ প্রতিগৃহ চ। পতত্য-জ্ঞানতো বিপ্রো জ্ঞানাৎ সা-মান্ত গচ্ছতি।। ইতি প্রায়শ্চি-ততত্ত্ব-॥ সামান্তেকসানত্ব-।। ইতি মুদ্ধবোধব্যাকরণ-॥

সামাজ্য ক্লী সমস্তরাজ্য । স-মাজো ভাব ইত্যথে ফ্য প্রত্য-যেন নিপার ।। দশলকাধিপ-তা । যথা। লকাধিপত্য বা-জ্য স্যাৎ সামাজ্য দশলক-কে। শতলক্ষে মহেশানি মহা-সামাজ্য মুচাতে।। ইতি বরদা-তন্তে ২ পটলঃ।।

সামাণিকর্দম॰ ক্লী জবাদিনা-মকগন্ধত্যব্য । ইতি রাজনি-র্ঘনটঃ।।

সামাণিক ক্লী মহাপারেবত । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।।

नाय॰ वर्ग नायाङ्गः। ইত্যমরः॥ नक्ष्णाः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ দিনাস্তে পু॰দি সাযঃ স্যাৎ সা-याङ्ग সায মর্যয়॰। ইতি শ-কার্ণবঃ॥

সাধঃ পুণ দিনান্তঃ। ইত্যমরঃ।। বাণঃ। ইতিমেদিনী।। সাবেগৎ-সবে বিকালকে। ইতি ত্রিকা-গুশেষঃ।। সাধকঃ পু• বাণঃ । ধ্রাং। ইত্য-মরঃ ।। সাধকপুঝা স্ত্রী শরপুঝা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।।

সাধংকালঃ পু॰ সাধারুঃ॥ সা
যংসদ্ধ্যাসময়ঃ। ষথা। স্মৃতিসাগরধৃতমৎস্যস্ক্ত•। জ্যেষ্ঠা
বাপ্যথ বা ষ্ঠী সাষ্ণকালে ন
চেন্ডবেৎ। সাষ্থ মেব তথাপি
স্যাদিঅশাখাভিমন্ত্ৰ•। ইতি
তিথ্যাদিতত্ব•।।

माय मन्त्रा खी माय कारनाथा-मार्रिक्षा। मार्यकालकर्छ-ব্যোপাদনা।। সাষ্ণসন্ধ্যোপা-मनाकालका। ७९ अमीन म-श्वामत्म प्रकेश।। शिक्ताम-দ্বা। তস্যা উৎপত্তি র্যথা। यार्क एख ए उवाह । ना द्रायणः य-य-मन्त्रा • श्रम्भभाषा अभाविना । ততঃ পুরোডাশময়ণ তচ্ছরীর यजृ १ क्यां १।। यहा मृत्र र्यहा-ষজ্ঞে তন্মিন্ বিশ্বোপকারিণি। নাগিঃ ক্রব্যাদতা যাতীত্যেত-पर्थ· তथा क्रज·।। এব· क्रघा জগন্ধাথ স্তবৈবান্তরধীয়ত। সন্ধ্যাপ্যগচ্ছদেত্রেজে তত্র মে-ধাতিথি শ্মুনিঃ।৷ অথ বিকোঃ

প্রসাদেন কেনাপ্যনুপলক্ষিতা॥ । প্রবিবেশ তদা ৰজ্ঞ। সন্ধ্যা মেধাতিথে মুনেঃ ৷৷ বশিষ্ঠেন পুরা ষা তু বণী ভূতা তু সা সূতা । উপদিষ্ঠ। তপ नेहर्जू वहनाद পরমেষ্টিনঃ।। ত মেৰ ক্রত্বা মন-मि তপশ্চর্য্যোপদেশক । প তিত্বেন তদা সন্ধ্যা ত্রাহ্মণ ত্র-ন্মচারিণ ।। সমিদ্ধে ২গ্নৌ ম-হাষজ্ঞে মুনিভি নোপলকিতা। **छमा विस्काः श्रमातम् मा** वि বেশ বিধেঃ সূতা।। তস্যাঃ পু-রোডাশময় শরীর তৎক্ষণা-ততঃ। দগ্ধ পুরোডাশগন্ধ• वाखात्रयमनिक्ठः ॥ वङ्गि छ-नाः भद्रीतः छल्का मूर्यामा মওলে। শুদ্ধ প্রবেশবামাস वित्या द्ववाख्वया श्रूनः॥ भू-ৰ্য্যো ছিধা বিভজ্যাথ তৎ শ-রীর তদা রখে। স্বকে সংস্থা-পষামাস প্রীত্তে পিতৃদেব-যোঃ।। যদূর্দ্বভাগ তস্যাস্ত শরীরস্য দিজোত্তমাঃ। প্রাতঃ-সন্ধ্যাভ্যৎ সা তু অহোরাত্রা-मि, मधागा ॥ यटक्ष्य जाग छ-স্যা স্ত অহোরাত্রান্ত মধ্যগা। সা সায় মভবৎ সন্ধ্যা পিতৃপ্রী

िथमा ममा ॥ मूर्यामेगाफ व्यथम॰ यहा नामक्टणाम्यः । প্রাতঃসন্ধ্যা তদোদেতি দেবা-नाः श्रीजिकातिनी।। असः गः তে ততঃ সূর্য্যে শোণপদ্মনিভা मना। উদেতি সায-সন্ধা। সা পিতৃণা মোদকারিণী।। ইতি শ্রীকালিকাপুরাণে অরুদ্ধতীজ-मक्ष्रत २२ ज्यासः॥ माय मञ्जादावना जी मत्रवनी। ইতি কবিকর্মলতা।। मार्खनः जि मार्यनानमस्ती। यथा। नक्षां नायखनी क्रयां ६ कामभागिष्ठि शिर्य। अवर्व-মির্যণ যাতি যতো নিত্যাগম-किया।। ইতি वृश्मील उद्ध अ-থমপটলঃ ৷৷

সাধারঃ পু॰ পঞ্ধাবিভক্তদিনপঞ্চমাণশং। দিবসস্যশেষমূহূর্ত্তত্রয়ণ। ফ্থা। প্রাত্তংকালো মূল্
হূর্ত্তাণস্ত্রীন্ সঙ্গব স্তাবদেব তৃ।
মধ্যারঃ স্ত্রিমূহূর্ত্তণ স্যাদপরাক্র স্ততঃ পরণ।। সাফার স্তিমূল্
হূর্ত্তণ স্যাৎ শ্রাদ্ধণ তত্র ন কারফেৎ। রাক্ষসী নাম সা বেলা
গহিতা সর্বক্র্মসূ।। ইতি তিল
খ্যাদিতত্ত্বণ।। তৎপর্যায়ঃ ।

मात्या निवास्तः मारादश वि-कानः मार त्यक है। देखि नक त्रकावनी ॥

সাধিক। ত্রী ক্রমন্থিতিঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

সাধী পু• অশ্বান্নোহঃ। ইতি কেচিৎ।।

नायुका॰ की महरमागः। এक ম্ব া তকুপঞ্চা মুক্তান্তগতম্-क्रिवित्नयः। यथा। जात्नाका मार्थि मात्रीण मान्द्रेणकष् मभूषा 'मीयमान' न गृङ्का छि বিনা মৎদেবন জনাঃ।৷ ইতি শ্রীভাগবছে ৩ স্কন্ধে ২৯ অধ্যা-यः ।। ভক্তানা । নিষ্ঠানতা । কৈ-मूर्णिकनगारमनार्। मारलाकाः ময়া সহ একস্মিন লোকে বাসং 1 मार्किः ममाटेनश्र्याः। नामीः প্যাণ নিকটবর্ত্তিত্ব। সাৰূপ্য• সনানৰপতা । একত্ব সাযুজ্য । উত অপি দীযমান মপি न গৃহস্তি দত স্তৎ কামনা ইত্য-र्यः। ইতি श्रीधत्रश्वामी ॥ এক-ত্ব॰ ভগবৎসাযুজ্য• ব্ৰহ্মসাযু-জ্যঞ্চ। অনধ্যে স্তল্পীলাত্মক দ্বেন তৎসেবনার্থত্বাভাবাৎ গ্ৰহণাৰশ্যকত্ব মেৰেতি ভাবঃ।

रेि क्यममर्जः ॥ मार्य वा मिनारख। मायकारम। ইতি কেচিৎ ॥ मात ত्क फोर्वत्ना। रेंछि क-विकन्न क्रमः॥ द्वरकार्भः। च-ननात्र । ইতি দুর্গাদাস: ॥ मातः क्री कलः॥ धनः॥ नगराः । इंडि स्मिनी।। नवंनीजः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ লৌহ•। ইতি ভাবপ্রকাশঃ।। বিপিন•। ইতি শব্দরত্নাবলী।। 🟶 ॥ সার-বস্তৃনি যথা। সার রসানাম্ভ ঘৃ-ত ঘৃতসার হতক যৎ। হতস্য **সার• স্বর্গঞ্** স্বর্গাৎ সারম্ভ যো-ষিতঃ।। অতো রাজন্ প্রদেষাঃ স্যুঃ স্থ্রিষঃ স্বর্গ মভীপ্সতঃ। তথৈবেহ সুখ তাজিঃ সহ রা-জ্য নৃপোত্তম।। ইতি বহিং-পুরাণে দাসীদানাধ্যাষঃ।। অ-্পি চ। অসারে খলু সংসারে সার মেতজতুঊষ । কাশ্যা• বাসঃ সভা॰ সঙ্গে গন্ধান্তঃ শ অুসেবন ।। ইতি কবিতারত্না-করধৃতপুরাণবচন ।।।

সারঃ পু॰ বলঃ।। স্থিরা॰শঃ।। মজ্জা। ইত্যমরঃ।। বজুকারণ। ইতি রাজনির্ঘণীঃ।। বাযুঃ।

সার্থ

, ইতি জটাধরং ।। রোগং । ইতি ধরণী ।। পাশকং ।। অতিদৃঢ়ং । ইতি শব্দরত্মাবলী ।। দধ্যত্তরং । ইতি শব্দচন্দ্রিকা ।।

সারং ত্রি বরঃ। শ্রেষ্ঠঃ। ইত্য-यद (यिनिक्दो।। यथा। नर्ब-সারো যথা ক্লে বতানা পু-गुक छथा। ইতি बन्नदिवर्र्ख গণ্পতিখণ্ডে ৩ অধ্যাষঃ ॥ 🚓 ॥ অপি চ। শ্রীমার্কণ্ডেষ উবাচ। জগৎ সর্বয় নিঃসার মনিত্যু দুঃখভাজন । উৎপদ্যতে ক-ণাদেতৎ ক্ষণাদেতৎ বিপদ্যতে ৷৷ যথৈবোৎপদ্যতে সারানিঃ-मात्र क्रामक्षमा। भून खिमा बिनीयरस महाक्ष्मय मन्द्रम् ॥ উৎপত্তি প্ৰলযাভ্যাম্ব জগমিঃ-সারতা॰ হরিঃ৷ শম্ভবে দর্শবা-মাস ভাবেন জগতা॰ পতিঃ।। এক শিব শান্ত মনন্ত মচ্যত পরাৎপর জ্ঞানময় বিশেষ। ় অন্তৈত মব্যগ্ৰ মচিস্ত্যৰূপণ সা-রস্তেক নাস্তি সার পদন্য ।। यन्यात्मछङ्बायर७ विश्व मञा॰ যশাল্পীন স্যাৎ তৎ পশ্চাৎ স্থিতঞ্চ আকাশবমেঘজালস্য ধৃত্যা বৃদ্ধিশ্ব বৈ ধ্রিষতে তক্ত

मात्रः॥ व्यक्तीनस्यादेशं र्यम्याः ্পু মিচ্ছন্ ৰোগী বুনক্তাত্মৰ-भ· मरेपव । निवर्ड छ भागा यत्त्र लात्क ठरेच मात्र मात्रः यनाम ठाखि॥ नादता वि-তীষো ধর্মস্ত যো নিত্যপ্রাপ্ত-रि जरवः। रि निवर्छरका নাম তত্রাসারঃ প্রবর্ত্তকঃ ॥ সর্ব॰ ক্ষরতি লোকেন্মিন্ ধর্মে। নৈব চ্যুতো ভবেৎ। স্বধর্মাদেবা ন চলতি স এবাক্ষর উচ্যতে॥ এ-তদ্বঃ কথিত সার নিঃসারঞ্চ यथा জगव। यथा अवः नमनी-শু শন্তু জ্ঞানেন স্বে ২ন্তরে ॥ এতৰৈ দৰ্শযামাস স বিষ্ণু ৰ্জ-গতা॰ পতিঃ। স্বয়ণ জ্ঞাহ ম-नमा शारननाश्चिन महदः॥ সার তত্ত্ব পরম নিছল যমু-ৰ্ত্ত্যা হীন মূৰ্ত্তিমান্ ধর্ম এবং। সারো হন্যো হসৌ সারহীন ভদনাৎ জ্ঞাত্বৈবেশ যাতি নি-छा• महाधीः ॥ देखि श्रीकानिः कार्युतात्व २१ अधाराः ॥ मात्रकः भू॰ জयभावः। ইতি

ातकः पु॰ जयभावः। ইতি वाजनिर्यन्तः॥ विद्याहरकि । ইতি विमाकः॥

मात्रथितः पूर् मूर्थितः। ইতি

সারণ

রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ माद्रगन्नः भू इसमा ३७ नक्ठिका ॥ मात्रवाही वि मात्रश्रह । यथा। नानू एक कि कलि नमु हि मात्रक रेव मात्रजूक्। क्रमनाः ন্যাশু সিধ্যন্তি নেতরাণি রুতা-' নি য়ং ।। ইতি শ্রীভাগৰতে ১ क्रस्त १४ व्यशायः॥ नन् व्यथम হেতু কলি সৰ্বথা কি ন হতবা-ন্ তত্রাহ নানুষেষ্ঠীতি সারকে। · ভुयत रेव मात्रशारी। मात्रगार य रिश्वन् अभवानि भूगानि আশু সংকল্পমাত্রেণ ফলস্তি ই-তরাণি পাণানি আশুন সিধ্য-্ত্তি ষত স্তানি ক্লতান্যেব সিধ্য-িন্তি ন তু সংকলিত মাত্রাণীতি। रेि वीधत्रवामी ॥ मात्रयः क्री मध्। देखि क्रिवेशः॥ সারসঃ পু• চাতকপকী। ইত্য

गात्रपः क्वा यथु। राजकाधितः॥ गात्रमः पूर ठाजकामी। रेजा यदः॥ रतिषः॥ यजकाः। रेजियमिनी॥ जुनः॥ शकि-एजाः। रेजियिकः॥ इक्वः॥ ताजरःगः॥ ठिजम्गः॥ वामा-एजाः॥ जर्ञकः। रेजियका त्रावनी॥ नानावर्गः॥ ययुतः ॥ कामरम्यः॥ धनुः॥ रक्षाः॥ यर्ग । जाजतंग । नम् ॥

गुण । जगन । कृत ।

गृण । किन्न । कृत ।

गृण । किन्न । क्वा ।

गृण । किन्न । किन्न ।

गृण । किन्न । किन्न ।

निः हः । हें ज्ञान किन्न ।

गातक किन्न । हें ज्ञान ।

गातक किन्न । हें ज्ञान ।

गातक किन्न । हें ज्ञान ।

रक्ष । ज्ञान किन्न । हें ज्ञान ।

रक्ष । ज्ञान किन्न । हें ज्ञान ।

रक्ष । ज्ञान । हें ज्ञान ।

रक्ष । ज्ञान । हें ज्ञान ।

रक्ष । ज्ञान । हें ज्ञान ।

रक्ष ।

সারদিকঃ পু॰ ব্যাধঃ। সারদ্রণ হস্তীত্যর্থে সারদ্রশকাৎ ঠক্ প্রত্যেষেন নিষ্পন্ধঃ। ইতি সি-দ্বান্তকৌমুদী॥

সারঙ্গী ত্রী বাদ্যবিশেষঃ। ইতি কেচিৎ।।

সারজ॰ ক্লী নবনীত•। ইতি শ-ব্দচন্দ্রিকা॥

সারণ ক্লী গন্ধভেদঃ। ইতি ধরণী।।

সারণঃ পু• অতীসাররোগঃ।। রাবণমন্ত্রী। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। ভদ্রবলা। ইতি ধরণী।। আমুা- তকঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।। সারণিঃ স্ত্রী ক্ষুদ্রনদী।। প্রসারণী । ইত্যুণাদিকোয়ঃ।।

সারণিকঃ ত্রি পথিকঃ। সরণিশব্দাৎক্ষিকপ্রত্যকেন নিম্পন্নঃ॥
সারণিকত্মঃ পু॰ দস্যুঃ। ইতি
কেচিৎ॥

সারণী স্ত্রী প্রসারণী। স্বন্ধনদী
। ইতি মেদিনী।।

সারঞ্জঃ পু• সর্পাঞ্জঃ ইতি জ-টাধরঃ।।

সারতরঃ পু॰ কদলীবৃক্ষঃ। ইতি ধনঞ্জয়ঃ।।

সারথিঃ পু॰ রঞ্চাদিঘোটকনিষোগকর্তা। তৎপর্য্যায়ঃ। নিষম্ভা
২ প্রাজিতা ও যন্তা ৪ সূতঃ ৫
ক্ষত্তা ৬ সব্যেষ্ঠা ৭ দক্ষিণস্থঃ ৮
রথক্সটুয়ী ৯। ইত্যমরঃ॥ সাদী
১০ সব্যেষ্ঠঃ ১১ নিষামকঃ ১২
চাতুরিকঃ ১৩। ইতি জটাধরঃ
।। প্রবেতা ১৪ রথনাগরঃ ১৫।
ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ সর্থস্যাপত্যা সার্থিঃ বাহ্যাদ্যত ইতি
ক্ষিঃ। সহর্রথেন বর্ত্তে যো
২সৌ সর্থা হশ্বঃ তা প্রেরযতি ঢ যেকাদিতি ক্ষির্বা। সারয়তি অশ্বান ইতি এয়ন্তাৎ

সারমি

সৃগতাবিত্যক্ষাৎ নায়ীতি অপ্রত্যকো বা। ইত্যমরটীকাষাণ
ভরতঃ । তল্লক্ষণ ষথা। নিমিত্ত শঙ্গনজ্ঞানো হয় শিক্ষাবিশারদঃ। হ্যাযুর্বেদতন্বজ্ঞো
ভূরিভাগ বিশেষবিৎ ।। স্বামিভক্তো মহোৎসাহঃ সর্বেষাঞ্চ
প্রিষয়দঃ। শূরশ্চ ক্রতবিদ্যশ্চ
সারথিঃ পরিকীর্ত্তিঃ।। ইতি
মাৎস্যে ১৮৯ অধ্যাষঃ ।। সমুদ্রঃ। ইতি সংক্ষিপ্রসারোণাদিবৃত্তিঃ।।

मात्रमां खी मतश्वी। इंडि मकत्रज्ञावनी।। मूर्गा। यथा। मत्रकानत्वाधनीयर्ष्यन मात्रमाशमव्राद्धशत्क खर्शमः ठांनवग्रामि
मातः ममाठीठि व्रार्थिक ख
कान्ननिकी। इंडि डिश्रामिडदः
।। मात्रमाठित जि।।

সারক্রমঃ পু॰ খদিরঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। সারপাদপঃ পু॰ ধামনিবৃক্ষঃ। ইতিরত্নমালা।। সারভাণ্ড॰ ক্লী অক্তবিমপাত্র॰। মুধা মৃগনাভ্যাদি।।

সার্ন্নীতিঃ পু॰ বেদঃ। ইতি হেম-চন্দ্রঃ।। সারং ষথার্থণ নীষতে জ্ঞাৰতে অনেন সার্মিতিঃ। সারোপপদাৎ মাধাতোঃ র্না মীতি তিঃ।। সারমূষিকা স্ত্রী দেবদালী। ইতি

मात्रम्थका जा प्रतमाना। क्राञ् जाकनिर्वकः॥

সারমেযঃ পু• সর্ব্ধঃ। ইভ্য-মরঃ ॥

भात्रत्यरी खी अक्तूती। हेि अक्तुत्रावनी।।

সারলোহ॰ ক্লী লোহসার:। ই-স্পাত ইতি ভাষা। ইতি ভূরি-প্রযোগঃ।।

সারবঃ ত্রি সর্যুনদীভববস্তু। ইত্যমরঃ ।।

সারবজ্জিতঃ ত্রি স্থিরাণশরহিতঃ
। অসারবস্তা। সারেণ বজ্জিত
ইতি তৃতীয়া তৎপুরুষ সমাসনিশায়ঃ।।

সারসং ক্লী পদ্মণ ইত্যমরং।।
স্ত্রীকট্যাভরণণ। ইতি কেচিৎ।।
সারসং পুণ চম্রং। ইতি মেদিনী
সারসং পুণস্ত্রী স্বনামখ্যাতপক্ষী
। তৎপর্যায়ং। পুন্ধরাহ্রং ২।
ইত্যমরং।। গোনর্দ্দং ৩ নাকুরং
৪ লক্ষণং ৫ লক্ষণং ৬ সরসী
৭ সরোৎসবং ৮। ইতি
রত্নাবলী।। রসিকং ৯ কামী ১০

। जनाः म खनाः। मध्रका ज-अदः। क्यायदः। यहाजिनात পিত্ত গ্রহিণ্যশো নাশিত্বক। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। 🟶 ।। তস্য শঙ্গন यथा। ইस्टोर्थिनिक्तिः म-কলাসু দিব্দু স্যাৎ সারস ছন্দু-বিলোকনেন। শ্রুত্বাস্য পৃষ্ঠে निममः न भट्छः प्रिक्षठाजी-र्छे॰ गृष्ट् এव यन्त्राष्ट्र ॥ वाटमन रंगाविध्यननाञ्कादी भक ख-থাতো নৃপতো ২র্থ লক্ষ্যে। ষঃ সারসাভ্যা॰ যুগপদ্বিরাবঃ ক্রতো ২চিরেণ ক্রমতোপি বামঃ ॥ স বেদিভব্যঃ কথিতীর্থকারী किश्वयगाणाय त्यव वर्गः। ইতি বদন্তরাজশাসনে সার্য-বৰ্গঃ গ

मात्रमः जि मदावदताखवज
लामिः। जङ्जलखनाः।. नम्गाः

रेणलवताकारखा यज मः मुज
जिक्षेणि। ज॰ मदााजज्ञनः इतः

जम्खः मात्रमः स्वृजः।। मात्रमः ।

मिलनः वलाः ज्यामः मधूतः

लघू। दााठनः ज्वतः ककः वजः

स्व यनः मिजः।। ইणि ভाव
क्षकामः।।

সারসন ক্লী কাঞ্চী। জীকট্যা-

সার্থ

ভরণ । অদ্যপর্যাবাঃ কাঞ্চী- ॥
শব্দে অন্টব্যাঃ। কঞ্কদার্ট্যার্থণ মধ্যকায় নিবন্ধ পটিকাদি।
তৎপর্যাবঃ। অধিকাঙ্গণ ২ ।
ইত্যমরঃ।। দ্বে কঞ্কদার্ট্যার্থণ
মধ্যকায়ে নিবন্ধে পটিকাদে।।
সকঞ্কাঃ সমন্ধাহাঃ মধ্যে দার্ট্যার্থণ যন্ধপ্তি তৎসারসমণ অধিকাঙ্গঞ্চোচ্যতে। ইতিভরতঃ।।
সারসী স্ত্রী সারসপত্নী। ইতি
হেমচন্দ্রঃ।।

সার্যতঃ পু॰ বিল্বদঙ্কা। দেশ विश्वासः। भ जू रुखिनाभूतमः উত্তরপশ্চিমভাগে প্রসিদ্ধঃ । ইতি হেমচন্দ্রঃ। যথা। কুর্মা। अञ्दलभानाङ् । मत्था मात्र তা মৎস্যাঃ শুরুসেনাঃ সমাপু রাঃ। পাঞ্চাল শাল মাওব্য সরুক্ষেত্র গজাহ্বযাঃ।। ইভি জ্যোতিস্তন্ত্ৰ ।। সরস্বতীনদী পুত্রসুনিবিশেষঃ। সারস্বতদে-॥ लाक्तवाक्षनः। यथा। मा-্রস্বতাঃ কান্যস্ক্রা গৌড মৈ थिनकारकनाः। शक्ष भोषा ইতি খ্যাতা বিশ্বস্যোত্তরবাসি নঃ।৷ ইতি পুরাণা। কল্পবিশে यः। यथा। **मा**त्रयञ्मा कन्नमा ॥ यत्था त्य मूग स्तामताः। छष्-खात्खाख्यः त्यात्क छ्छागयछ मूठारछ।। ইछि माष्ट्रमा ६० खशायः।। त्याकत्ववित्ययः।। मत्रविमयित्विति मात्रव्यक्तम्-मय्विति ह छि।।

সারস্বতকরঃ পু॰ সরস্বত্যুপাস-नाथकत्रगः। यथा। बत्कावाह। শৃণু একান্ পর ওছে করা সা-রস্বত মম। বস্য বিজ্ঞানমাত্ত্বে-ণ জাড্যাপহরণ ভবেৎ ॥ সর্ব-শাস্ত্ৰ প্ৰকাশন্ত সৰ্বজ্ঞো জাব-তে ২চিরাৎ। অভ্যাসাচ্চ ভবে-ন্মস্য বাচশ্চিত্রা ভবস্তি হি ॥ অবাপু স্ত্রিদশা ব্যাপ্ত॰ বাগীশ-ত্ব॰ বৃহস্পতিঃ। দ্বৈপাযনোপি-ষাণজ্ঞাত্বা বেদব্যাসো ২ভবন্মু-निः॥ मस्याकातः श्रवकामि সাঙ্গাবরণ পুজনৈঃ। অনন্ত বিন্দুনা যুক্তণ বামগণ্ডান্ত ভূষি-ত ।। জপেৎ दामन लक्ष मू-কোপি বাক্পতি ভবেৎ। না-ভৌ শুভারবিন্দ ধ্যাযেদ্দশদ-লং সুধীঃ ৷৷ তন্মধ্যে ভা**বযেন্ম**-দ্রী মণ্ডলানা ত্রষ চিরণ। রত্ন-শিনিংহাসন তত্ত্র বর্ণ জ্যোৎসা-यर भूनः। তদ্যোপরি পুনর্ধা-

বাগীশ্বরী ততঃ ৷ মু 🖯 ক্তাকাম্ভিনিভাণ দেবীণ জ্যোৎ-মাজাল বিকাশিনী ।। মুক্তা হারষুতা শুভা শশিখণ্ড বিম খিতা। বিভূতী দক্ষহস্তাভ্যা। वााशाः वर्गमा मालिकाः॥ अमृ তেন তথা পূর্ণ ঘট দিব্যক্ষ পু-দধতী॰ বামহস্তাভ্যা• खकः । পীনস্তনভরাশ্বিতা ।। মধ্যে কী-**ণা॰ তথা স্বচ্ছা॰ নানারত্ন**বিভূ বিতা । আত্মাভেদেন ধ্যাত্ত্বে व॰ छठः मःशृक्रस्य क्रमार ॥ ज्ञात्मान मीर्ययुक्तन कर्यामक। नि इस्टराः। समगामो ज्या अधाषीरकनात्रकिया भूनः ॥ হ্মবো ৰ্মধ্যে তথা নাভৌ গুহেছ চ **(एशिक छथा।** नारमधीक॰ भू-ন বস্তো ব্যাপক বিন্যদেত্তঃ।। भौठनगमः छत्नो क्यां एएवः তাভাবশুদ্ধবে। মাতৃকাযান্ত যৎ প্রোক্ত• পীঠ মভ্যর্চ্চা ষত্নতঃ ।। वर्गात्जनामनः ममा। मूर्जिः मूलिन कन्नरायः। আবাহ্ পূজ-ষেত্তস্যাণ দেবীণ বাগীশ্বরীণ ততঃ ॥ चटेकः अथगावृद्धिः मा। ६ वि-ভীষা শক্তিভি স্ততঃ। দলাগ্রে-ষু সমভাষ্ঠ্য বন্ধাণ্যাদ্যা যথাবি-

ষি।। লোকপালা বহিঃ পূজ্যা ন্তেষা মন্ত্ৰাণি তদ্বহিঃ। म प्ष्रुकरगन्ने जिल्ला हो मद्रे छ मा।। कविषः नज्र वाश्री न-কৈ দাদশভি প্রবং৷ প্রাতর্জপু সহসুত্ত পিবেদ্ৰান্ধী বচাধিতা ৷৷ ন বিশারতি মেধাবী শ্রুতান্ दिनागगानि । क्छेगात्वान-কে স্থিদ। ধ্যাষেন্মার্তগুনগুলে ॥ জ্যোতিঃপুঞ্জনিভা॰ দেবী৽ প রিবারসময়িতা॰। বরাভযযুতা॰ হস্তে মুজা পুস্তকধারিণী গ জ পন্ সহস্মাণেন ষণাাস বিজি-তেন্দ্রিষঃ। ভীমা সম্প্রাপ্য বাক্ मिक्षि॰ करीना मधनी र्ज्यवर । #॥ অথ যোগ প্রবক্ষ্যামি জা-ডানাশকর পর । রাত্রিশেষে ममूर्थाय छि छ ज्ञा ममाहिङः।। শুদ্ধভাবেন চাত্মান গুরুঞ্ প-রিকন্মষেৎ। তৎপ্রভাপটলব্যা-श्व॰ জগৎসর্ব॰ বিচিন্তবেৎ॥ মৃ-नाधारत श्रिञा॰ प्राची॰ अखनी॰ পরদেবতা । সুপ্তা প্রোখাপ্য-তা॰ শক্তা ক্রমাচ্চক্রাণি ভেদ-ষেৎ।। ততঃ পরশিবে নীত্ব। সৌ-ধীক্ষ প্রাপষেত্ততঃ। উদ্ধৃত্রন্থি• বিনির্ভিদ্য জিহ্মাণ দীপস্বৰূপিণীণ

। বীজৰপ স্বশক্ত্যা তু প্ৰোল্লস-ন্তী পরাত্মিকা ।। শব্দত্রদ্বর शाक निक्तनाः हिस्टस्थ भूनः। তৎ প্রভাগটলব্যাপ্ত শরীর চি-खरबङ्गा निजाः महमुमारमन क्रां भ म प्राप्त मान সংজাৰতে মন্ত্ৰী বাচম্পতি রিবা-পরঃ ৷৷ ছম্দো খলস্কার তর্কাদি नानाशार्थविद्धत्यः। कविषः জ্ঞানশক্ত্যা তু পাণ্ডিত্য মধিকণ ভবেৎ ॥ 🟶 ॥ অথাপর• প্রব-ক্যামি যোগ ভূবি সুদুর্মভ । নাভিচক্রস্থিতা সৌম্যা রক্তা-काता विविख्य द्या क्योगावज নিতয়াঞ্চ রক্তাভরণভূষিতাণ পা-শাঙ্কুশধরাণ দিব্যাণ বরাভষযুতাণ পুনঃ ৷৷ দৃষ্ট্যা চামৃতবর্ষিণ্যা পূ-त्रवञ्जी॰ मत्नात्रथान्। এव॰ ध्याञ्चा জপেলক মনুজো বিহিত ততঃ ॥ হোম॰ সর্য্যাৎ ত্রিমধক্ত॰ র-क्लां ९ भन यूरेज विकः। जनः সম্ভৰ্গবেদ্দেবীণ দুগ্ধযুক্তেন সৰ্পি-या।। भाषरमन विनः नम्या मि शिके मधुक्ष्र्रे उन्हेश वि-धानस्र माकादिस अवत्वा जत्व ॥ मिकार्ट्य जिमभूदतात्मरे र्इन कगवनः नरम् । <u> श्रामादनन</u>

गङ्खीः श्रीश्वार खिष मृक्षिठाः ॥ प्रिवीसप्रविप्ताया नाछि किक्षिर मृपूर्वाछः । प्रिश्छारतन मर्ल्याङः न प्रियः समा कमाहिर ॥ এতত্তে कथिङः
पियाः विर्प्तार्थल्यः कात्रवः
। विक्रूना प्रख मन्मछाः मया जुछाः विर्ष्ठाखमः॥ मिक्सम्बी समा मखी वालिसमालि मृर्कान ।
इन्छः प्रचा जर्लर मालि मोथीः वाह मनर्गनाः॥ ইতি सायखूरमाज्ञाल्या मात्रस्टः १६नः। ইতি তম্বमातः॥

मात्रच्छा छः भू॰ मत्रच्छा छछविद्मुषः। यथा। मन् कवाह।

मधूता छात्रछी क्रिन छर्छन मन्

मूमूमन। छर्षिव জनमोजीगा

मिछ विद्या मूक्तिमनः।। অर्छ
म महाशि मन्भर्छ। छथा वस्

स्तनह। आसूम्ह विभूनः भू॰
मा छरम कथ्य माथव।। महमा

छेवाह। ममाक् शृकः प्रमा ता
कन् मृणू मात्रच्छः युगान् अर्या
का। या यह्नकः भूमान् अर्या
एन। मःभूका विश्वान्छ ममा-

क्राञ्य । ज्यय वानिज्ञवादत्रन গ্রহ তারাবলেন বা। পাষদ ভোজবেদিদান্ ক্র বান্ধণ वाहना। श्वक्रवञ्चानि पद्म ह मः হিরণানি শক্তিত:। গাষত্রীণ शूक्र (यस्ट क्या) । एक यान्यान् (न-भरेनः॥ यथा न (मर्वा छगवान् ব্ৰহ্মা লোকপিতামহঃ। ত্বা॰ প-রিত্যজ্য সন্তিষ্ঠেত্তথা ভব বর: श्रमा। विमाः भाजानि मर्वानि নৃত্য মীতাদিক# य९। ন বিহী-ন ব্যাদেবি তথা মে সম্ভ সি क्षयः॥ नन्नी त्र्यश धता शृक्षि গৌরী ভুক্টিঃ প্রভা মভিঃ৷ এ তাভিঃ পাহি তনুভি রফাভি র্মাণ সরস্বতি।। এবং সম্পূক্য গা-यखी॰ वीशाक्रमालाशातिनी॰। ख-क्षपुर्शाकरेड र्ज्जा मकमखन् পুষ্পক।। মৌনব্রতেন ভুঞ্জীত সাষ প্রাতশ্চ ধর্মবিৎ। পঞ ম্যাণ প্রতিপক্ষ প্রত্তেষৎ শব্দ-वामिनी ।। তথৈৰ তভুলপ্ৰস্থ ষ্তপাত্তেণ সংযুক্ত। ক্ষীরণ দ দ্যাদ্ধিরণ্যঞ্চ গাষল্রী প্রীষতা মিতি॥ সন্ধ্যাধাঞ্চ তথা মৌন মেতৎ স্বন্সমাচরেৎ। না ন্তরা ভোজন স্ব্যাৎ যাবন্মা

मा उत्योगमा। मगोत्थ ज्वेत मूर्वन रखम्भक गाक विशाव শোভনা ।। দেব্যা বিভান• ঘণ্টাঞ্চ দিত নেত্ৰ পটাব্তা 1 **इन्हन॰ वञ्चयूश्रक् प्रशास्त्र निश्र**-तः भूनः ॥ **७**८था भटनको त्र मि ভক্তা। সম্পূজ্যেদ্গুরু। বিত্ত-শাঠোন রহিতো বস্ত্রমাল্যানু-লেপনৈঃ।। অনেন বিধিনা যস্ত ষ্ক্র্যাৎ সারস্বত ব্রত । বিদ্যা-বানর্থযুক্তশ্চ ব্যক্তকঠশ্চ জাষ-তে।। সরস্বত্যাঃ প্রসাদেন ত্রন্ধ-*(लारक भ*शेष्टि। नाती वा স্বৰুতে যা জু সাপি তৎফলভা-গিনী॥ বন্ধলোকে বসেডাজ-ন্ যাবৎ করাযুতত্ত্ব । সার-স্বত ব্ৰত যম্ভ শৃণুযাদথ বা প-क्ष्या विमाधत्रभूत्र मा रि বসেদকাযুতত্রয় । ইতি মৎস্য-পুরাণে ৩২ অধ্যাবঃ ॥

সারস্বতাঃ পুণভূমি সারস্বতদে শজাতমনুষ্যঃ। যথা। কাশ্মীরাস্ত মাধুমতাঃ সারস্বতাস্ত বিকর্ণিকাঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।।
সারস্বতোৎসবঃ পুণ সরস্বত্যাউৎসবঃ। ইতি তিথ্যাদিতত্ত্বং।।

অস্য প্রমাণাদিক সরস্বতীশ-ব্দে জউব্য ।।

সারা স্ত্রী রুফত্রিবৃতা। ইতি শব্দরত্মাবলী॥ দূর্বা। ইতি শ-ব্দচন্দ্রিকা॥

সারালঃ পু• তিলঃ। ইতি শব্দ-চন্দ্রিকা॥

সারিঃ পু• দ্রী পাশকঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী।।

সারিকা স্ত্রী পক্ষিবিশেষঃ। শালিক ইতি ভাষা। ইত্যমরঃ।।
তৎপর্য্যায়ঃ। পীতপাদা ২ গোরাদী ৩ গোকিরাটিকা ৪। ইতি
হেমচন্দ্রঃ।। শারিকা ৫ সারী ৬
শারী ৭ চিত্রলোচনা ৮। ইতি
শব্দরত্বাবলী।। মধুরালাপা ৯
দূতী ১০ বেধাবিনী ১১ পোরালিকা ১২ গোকিরাদী ১৩ গোরিকা ১৪ কলহপ্রিষা ১৫। ইতি
রাজনির্ঘণীঃ।।

সারিণী স্ত্রী সহদেবী। কার্পা-স্থী। দুরালভা। কপিলসি-স্পাণ প্রসারিণী। রক্তপুন-র্ণবা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

সারিবা স্ত্রী লতাবিশেষঃ। অ-নস্তমূল ইতিখ্যাতা। গোরিষা-সাউ ইতি হিন্দীভাষা। সা তু

জযুবৎপত্তা দুগ্ধগণ্ডা বহুতি ভ বতি। তৎপর্যায়ঃ। শারনা ২ গোপীত গোপকন্যা ৪ গোপ-বল্লী ৫ প্রতানিকা ৬ লতা ৭ আস্ফোতা ৮ কান্ঠশারিবা ১ ৷ ইতি রাজনির্বক্টঃ।৷ গোপা ১০ উৎপলসারিবা ১১ অনস্তা ১২ শারিবা ১৩ শ্যামা ১৪। ইতি भयत्रद्वारली ॥ · व्यम्ता श्वनाः । यधूत्रवः। त्रिक्षवः। तृषावः। পিত্তপ্রণাশিষ্ক। ইতি রাজ-निर्विन्धः ॥ 🛊 ॥ क्रक्षमात्रिवा । म। जू रेखक युव ९ भवा मृगसा कनमः कि छ अभिका। कतिया-माউ ইতি হিন্দীভাষা। মালতা ইতি বঙ্গভাষা। পर्यग्रसः। क्रक्षमृजी २ क्रका ७ চন্দনসারিবা৪ ভদ্রা৫ চন্দন-গোপাও চন্দনা ৭ ক্লফবল্লী ৮ ৷ व्यमा श्रुणाः। विकासम्मनष्रः। তিক্তত্বণ। কটুরসত্বঞ্চ। ইতিরা-क्रनिर्यकैः॥ व्यशि ह। मात्रिया षो ज् मध्द्रो शिस्रो ज्जितिकः खत्नी। वर्ष क्षु बत्रश्रंती पा-रमूर्गिक्षनागरनो।। ইতি রাজ-निर्येण्डेश किका जातिवा यूग-न यामू निक्षः एक दें त एक ।

বার্গিছ:

অগ্নিমান্দ্যাক্ষচি শ্বাস কাসাম বিষনাশন । দোষত্রবাপ্র প্র-দর স্বরাতিসার নাশন । ইতি ভাবপ্রকাশঃ।।

সারী জ্রী সারিকাপক্ষিণী। পাশকঃ। ইতি শব্দরত্বাবলী ।।
সপ্তলা। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।।
সারোক্ট্রিকঃ পু॰ বিষভেদঃ ।
সারোক্ট্রিকঃ দেশভেদ স্তত্র ভবঃ
সারোক্ট্রিকঃ চঘেকাদিতি ফিকঃ
দস্তাদিঃ। সুরাক্ট্রশব্দাৎ সৌরাক্ট্রিকঃ ইতি স্বামী। ইত্যমর

সার্থ: পু॰ জন্তসংঘঃ। ইত্যমরঃ
। বণিক্সমূহঃ।। সমূহমাত্র॰।
ইতি মেদিনী।।

ভরতে।।।

সার্থ: ত্রি অর্থেন সহ বর্ত্তমানঃ।
অর্থযুক্তঃ। ইতি হেমচক্তঃ।।
যথা। বনপর্বণি। সার্থঃ প্রবসতো নিত্রণ ভার্য্যা নিত্রণ গৃহে
সতঃ। আতুরস্য ভিষঙ্নিত্রণ
দানণ নিত্রণ মরিষ্যতঃ।। ইতি
শুদ্ধিতত্ত্বণ।।

সার্থকঃ ত্রি অর্থেন সহ বর্ত্তমানঃ
। যথা। শব্দান্তর মপেক্যেব
সার্থকঃ সার্থবাধক্তং। প্রক্রতিঃ প্রত্যেষ শৈচব নিপাত শেচতি

স ত্রিধা।। ইতি শব্দশক্তিপ্র-কাশিকা।। সার্থবাহঃ পু• বণিক্। ইত্য-মরঃ।। সার্জ• ত্রি আর্জ•। ইত্যমরঃ।।

षार्धयुष्क जि। यथा। अनुर्ध-

মাত্রঃ স্থোল্যেন বাহুমাত্রঃ প্রমা-निका मार्जन्त मननामन्त प्रख ইত্যভিধীষতে ॥ ইতি প্রাম্ব-শ্চিত্ততত্ত্বধৃতাঙ্গিরোবচন• ॥ मार्क्षः वा महिन्। देनामद्रः॥ गार्कः वि অर्क्षिन मश्वर्खमानः। व्यक्तयुक्त । यथा। मूनि छित्र শন প্রোক্ত বিপ্রাণা মর্ত্যবা-সিনাণ নিত্য•। অহনি চ তথা তমস্বিন্যা॰ मार्क्षथरत यामास्रः ॥ ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব ।। অপি চ । গতেবে षिত্र मार्क शक्श-क्क पिनष्रस्थ। पिरममाधित्य ভাগে পতত্যেকো ২ধিমাসকঃ ॥ ইতি মলমাসতত্ত্ব ॥ मार्शियः जि मर्शिःमयस्त्री। मर्शिः-

প্রত্যবেন নিষ্পন্নঃ ॥
সাপিন্ধ তি সপিষা সংস্কৃত ।
যথা। সাপিন্ধ দাধিক সপি
দ্ধিভ্যা সংস্কৃত ক্রমাৎ। ইতি

मन्कृठवञ्ज। मर्भिः भकाष क

ट्रमहस्यः॥

সার্প্য: পু॰ অক্লেষানক্ষত্র•। ইতি হেমচন্দ্র:।। সর্পসম্বন্ধিনি ত্রি।। সার্বঃ পু॰ বুদ্ধঃ। জিনঃ। ইতি হেমচন্দ্রঃ।। সর্বসম্বন্ধিনি ত্রি।। সার্বজনিকঃ ত্রি সকলজনসম্বন্ধী । সর্বজনশব্দাৎ ক্ষিকপ্রত্যবেন নিশ্সমঃ।।

সাৰ্বজনীনঃ ত্রি সার্বজনিকঃ। সর্বজনশ্বদাৎ ণীনপ্রত্যবেন নিশামঃ॥

সার্বভৌমঃ পু• উত্তরদিগ্গজঃ।
ইত্যমরঃ। সর্বভূমীশ্বরঃ। তৎপর্যাষঃ। চক্রবর্তী ২ একজন্মা
তন্পাগ্রনীঃ ৪। ইতি শব্দরপ্রাবলী।। বিদূর্থপুক্রঃ। যথা। পরীক্ষি রনপত্যো ২ভুৎ সূর্থো
নাম জাহ্লবঃ। ততো বিদূর্থ
স্তশ্মাৎ সার্বভৌম স্ততো হভবৎ।। ইতি শ্রভাগবতে ৯ ক্ষম্মে
২২ অধ্যায়ঃ।। সকলভূমিসম্বস্থিনি ত্রি।।

সার্যপঃ ত্রি সর্যপ্রসম্বীষশাক-তৈলাদিঃ। যথা। ঘৃতফ সার্য-প• তৈলে যত্তিল পুষ্পবাসি-তং। অদুটা পক্তৈলক স্থানা-ভাঙ্গেষ্ নিত্যশঃ।। ইতি তিথা- **मिण्यः**॥

गार्वलोकिकः जि गर्वकनिविष्ठः
। यथा। जवज्ञः कार्खवीर्या। या
दीनमिक्त महीकद्गरः। जिनाय
ठमा रुषाद्रः म द्रायः मार्वलोकिकः॥ ইতি जिक्तित्य ६ वर्गः
।। मार्वलोकिकः मर्वलाकिकपिठः। ইতি जीका।।

সাৰ্ববেদ্যঃ পু॰ সকলবেদজ্ঞত্তা-দ্বাণঃ। সৰ্ববেদ শব্দাৎ ফ্য প্ৰ-ত্যযেন নিষ্পান্ধঃ।

मानः पू॰ मानम्भाः। हेंछामत्रीकाषा॰ छत्रछः॥ वृक्षमाछ॰
॥ श्राकादः। हेिछ स्मिनी॥
तानः। हेिछ ताजनिर्धकः॥
यनामधाणवृकः। मथुग हेिछ
हिन्मीछाषा। छ्रथ्यागः। मछ्कः २ मञ्क्तिमः ७ कनः ४ कनन्छा छतः ६ वज्ञीवृकः ७ हीद्रप्रभः १ तानकार्यः ৮ भूखकाछत्र तानः कर्यास्म् छि मस्बरः
। অक्रकर्वः २ वखकर्वः ३० क-

১১ ললনঃ ১২ গদ্ধবৃক্ষকঃ
১৩ বংশঃ ১৪ রালনির্যাসঃ ১৫
দিব্যসারঃ ১৬ সুরেন্টকঃ ১৭ শুরঃ
১৮ অগ্নিবল্লভঃ ১৯ বক্ষধূপঃ ২০
সিদ্ধিকঃ ২১। অস্য গুণাঃ । ক-

টু**রণ। তিক্তরণ। উক্তরণ। হিম** ছে । ক্লিক্সছে । অভিসার পিতা-जुमाय अर्थ क्षू वित्कार वाज নাশিত্বক। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। অপি চ। শালস্ত সৰ্জ্জ কাৰ্য্যাশ্ব कर्गकाः भमामम्बद्धः। अश्वकर्गः क्यायः माधुन त्यत कक क्र মীন্। ত্রন্ধ বিডধি বাধির্ব্যু বো नि कर्नुगमान् इत्त्र ।। 🛊 ॥ ज्य मानश्रास्त्राः। मर्काका २ ন্যো ২জকর্ণঃ স্যাচ্ছালো মরি চপত্ৰকঃ॥ অজকৰ্ণঃ কটু স্তিক্তঃ क्षारमारका नारभाइनि। कक शाख् क्षिजिमान् त्यह अर्थे वि यद्यवाम् ॥ इ ि छात्रश्रामः ॥ সালঙ্গং পুং রাগস্যপ্রকারবিশে यः। या तारमा तामाखतामि-ঞিতঃ সন্ রাগান্তরাভাসযুক্তঃ । ইতি সঙ্গীতশাস্ত্রণ।। मालनः शुः मर्क्तत्रमः। রত্বনালা।। भागिनियामः श्रू मर्ब्ह्यमः। ইতি ब्रुवाना ॥ मानग्री जी भानग्री। भान পানি ইভিভাষা। বধা। শাল शर्भी मानभर्भी विद्रा हा खन्छ। क्षरा। देखि भक्तप्रपारली ॥

<u> বালাভূ</u> অভাবে পৃশ্বিপণ্যাশ্চ শাল্প-नैं भिरमाजरम् । ইতি रेवला-শান্ত্ৰ• 11 मानपूष्प की खनभषा। देखि শব্দরত্বাবলী। সালভঞ্জিকা স্ত্রী পুত্রনিকা। ৰথা। পাঞ্চালিকা তুপাঞ্চালী পুত্রিকা শালভঞ্জিকা। ইতি। বেশ্যা। বথা। বেশ্যা তু গনি-ক। কুদ্রা বারত্রী শালভঞ্জিকা। ইতি চ জটাধরঃ ॥ সালরদঃ পু॰ রালঃ। ইতিরাজ-निर्चन्छः ॥ मानवाइनः पू॰ भानिवाइन-রাজঃ। ইতিকেচিৎ।। मालातकः श्रु धूनकः। ইতি ভূরিপ্রংগাগঃ ॥ मानम्त्र क्वी आहीताला देखि কে:চৎ 11 সাল। স্ত্রী গৃহ । ইতামরটীকা-ষা॰ ভরতঃ ॥ সালাকরী স্ত্রী যুক্ষেপরা**জিত**--मात्री। ইতি কেটিৎ।। मानाज्तीयः प् भावितिम् निः। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ তালবা শকা-त्रापिः माध्यार्वः। स्था। मा वाजुतीय गानकि माकिश्वा-

क्क भाषितो। देखि अस्त्रकाः वनी ॥

ষালার॰ ক্লী ত্রব্যরক্ষণার্থভিত্তি-স্কীলকঃ। ডাঙা ইতি ভারা।। ইতি কেচিৎ ॥

यानावृकः भू॰ अक्रुतः॥ मृशानः ॥ छत्रकृः। ইভি কেচিৎ॥ छा-नवामकातानिकायः॥

माण्यः पूर मध्यः। इति भक्ष त्रञ्जावणी।। जालका भकातामिक मालमः पूर मध्रिका। इत्या-मत्रोका।। जालका भकातामिक माखः पूर विक्षूवधाताक वित्यमः। इति द्याहसाः॥ मजू मोज-एक गर्भिकः। इति महाजत-एक गर्भिकः। इति महाजत-एक गर्भिकः। एक गिराम्यः।। ज एक गर्भिकः।। जलक गम्य स्विनि कि।।

সাল্বহা^ন পু• বিক্ষুঃ ইতি হেন-চন্দ্ৰঃ।।

সালিকঃ পুণ পক্ষিবিশেষঃ। সা নিক্ইতি ভাষা। যথা। শব-মন্ত্রঃক দ্রতুড়ো গৃথল ক্রণ্ড সা-লিকঃ। ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

নাবকঃ ত্রি শিশুঃ। ইতি কে-চিৎ।। তালব্যশকারাদিঃ সাধু-পঠিঃ।। সাবধানঃ ত্রি সচেতনঃ। সতর্কঃ
। ধথা। আগচ্ছন্ত মহাভাগা
বিশ্বেদেবা বরপ্রদাং। যে চাত্র
বিহিতাঃ প্রান্ধে সাবধানা ভবন্ত তো৷ ইতি প্রান্ধভন্ত।।
সাবনং ক্রী সবনসম্বন্ধিদিনং।
কথা। সোম্বাগে সবনত্রম্যাহোরাত্রসাধ্যম্বাৎ তৎসম্বন্ধি
দিনং সাবনং। ইতি মাধবাচাব্যঃ। অপি চা ব্রন্ধসিক্ষান্তে।
সাবনং দপ্তাঃ ক্রি রহঃ ক্রন্ধ

चक्षनाः नामा उत्तनः जत्र ।

रेकि मलमामकद्यः ॥

मानः १ व्यक्टक्यां छः ॥ वकः
मानः ॥ वकः १ । रेकि स्मिनी
॥ मिनमिति स्मारः । यथा। किथिदेन दिन मिनमें स्मारं । थः । देकि
कीर्खि छः । जार्ग प्रांतां वन देक दिन मानः स्मारं । यथा ।
कि स्मारं । या मान एकः । मक्
खि स्मारं । प्रांतां विषयः मानः । यथा ।
कि स्मारं । प्रांतां विषयः मानः । यथा ।
कि स्मारं । देकि सम्म प्रांतां ।
कि स्मारं । एकि । वक्ति मिना । प्रांतां ।
कि स्मारं । प्रांतां । प्रांतां । प्रांतां ।
कि स्मारं । प्रांतां । प्रांतां । प्रांतां ।
वि स्मारं । प्रांतां । प्रांतां । प्रांतां ।

कदः॥ नईकंशद्विवदेखंक ना ক্ষত্ৰ ইতি চোচাতে ৷ বিষ্ধ-র্মোত্তরে চ। সন্দিকর্যাদপারভ্য मिक्षं यथानतः। हक्तार्करम বু ধৈ শ্বাস শ্চান্ত ইতাভিধী ষতে। সাবনে চ তথা মাসি बि॰म॰ मृर्याामयाः सृष्टाः ॥ আদিত্য রাশিভোগেন সোরো মাসঃ প্ৰকীৰ্ত্তিতঃ। সৰ্বৰ্ফ প-রিবর্ত্তেশ্চ নাক্ষত্র ইতি চোচ্য-তে।। 🛊 ।। সাবনমাসকর্ত্তব্যক-र्षापि यथा। সৃতকাদি পরি-एक्ट्रा मिन मामांक्रे ख्या । মধ্যমগ্রহভূক্তিশ্চ সাবনে ন প্র कीर्खिङः॥ शिठामरः। वाकि-কে পিতৃক্তোচ মাস শচান্ত্ৰ-ममः चुछः। विवाशासी चुछः मोत्रा रखामि मार्गा मङः ।। অত্ত আদিপদেন সত্র ভৃতি वृक्षि थायन्छिखायूर्मायात्मीह গৰ্ত্তাধান পু•সবন সীমস্তোম-यन नामकत्रवाम्यामन निक् मन् ह्णामि अइन । ज्या ह वि कृथर्पाखितः। अक्षायनक अरु **हात्रकर्या** भारतम् नात्रम् नात्रम् ধ্যবস্থে। সত্তাণুপাস্যান্যথ मावदनन (नीकाक वेद मार्षा-

সাবৰ

वहात्रकर्मा। ইতি मनमामञ्जू ॥ ॥ ।। वर्षवित्मयः। यथा। त्री-द्रिशक्ष मात्मन वमा छद्रिछि छार्गव। माव्यम्म ह मात्मन मिनयहेक প্রপূর্যাতে। त्रोत-मन्द्रभाव मिनयहेकाथिकः मा-वनः मद्दर्भाद्या छ्वछीछ। ইछि मनमामञ्जूः॥

সাবরঃ পু॰ লোধুঃ। ইত্যমর-টীকা শব্দরত্বাবলী চা। পাপ॰।। অপরাধঃ। ইতি বিশ্বঃ।। তাল-ব্যশকারাদি রপ্যয়ণ।।

मावर्गः पृ॰ खर्षभमन्ः। सथा।

हासा म॰ छान् छा स्वा स्ट्रिंग विछीयः कथिए मन्ः। पृर्व छन्।

मवर्गा श्रिं प्रती जावर्ग छन कथाए ।। हे जि प्रती छा गवरुग ।।

मावर्ग श्रिंभ ख्रिक्या मि मदना छी वि
छथा छतः। ख्रिक्या मि मदना छी वि
छथा छतः। ख्रिक्या मा मतहारमह को मिरका गानव छथा ।।

न्छानमः कम्य श्रिक्य हा । हित्रकृ

ती छाः मूम्र छिः वनुः मूक्यम्ह वीयावान्। छिवया प्रमावर्ग म
द्रायान्। छिवया प्रमावर्ग म-

मावर्गका की एप। रेकि भक

त्रज्ञावनी ॥

मावर्गिः श्रुः चक्रमम्रा मह मृश्रभुखः। यथा। विवयजन्त ৰে জামে বিশ্বকর্মসূতে উচ্চে। मण्डा इसि ह बाब्बस स्व প্রাগভিহিতে তব ॥ ভৃতীবা• বডরা মেকে তাসাণ সংজ্ঞাসূতা ख्रुयः। स्ट्यां स्मी आकरत्वः শ্চাষাষাশ্চ সূতান্ শৃগু॥ সাব-र्नि खनडी कन्मा ভार्या महद्रन স্য যা। শনৈশ্চর স্তৃতীযোৎসূ मिश्ति वजवाज्ञाकी॥ अर्थे মে ২ন্তর আয়াতে সাবর্ণি র্জ-বিতা যনু:। নিৰ্মোক বিরজ-काम्याः नावर्षिठनमा नृश ॥ তত্ত্ব দেবাঃ সৃতপসে৷ বিরজা অমৃতপ্রভাঃ। তেষা বিরোচ নসুতো বলি রিব্রেণ ভবিষ্যতি ॥ मरब्याः साठ्यानाय विकाद यः भवज्यः। द्राक्ष दिख्रभएः হিত্বা ততঃ সিদ্ধি মবাপ্যাতি।। **र्या २**८मी ভগবতা বদ্ধः श्री-তেন সূতলে পুনঃ। নিবেশি তো হধিকে স্বৰ্গাদধুনাস্তে স্ব व्राष्ट्रिय ।। शानरवा मीखियाना-নো জোণপুদ্রঃ কুপ স্থপা। स- गातिकी

राभृतः शिष्ठान्त्राकः जगरान् वामत्रायण। हैदमः मक्षयं खब **खिवगुन्धि बरमागङः ॥ ३**मा-नी मामरा ब्राजन (व व वा-धान मखरमा (मव खर्मा नतः স্বত্যা॰ সাৰ্বভৌম ইতি প্ৰভূষ ॥ शानः शूत्रमत्राक्षा वन्यय मा-সাতীশ্বঃ। ইভি শ্রীভাগবতে ৮ ऋस्त्र ५७ व्यथायः॥ शाब-वित्मयः। यथा। वाष्मा माविन গোত্ৰকো রৌৰ চাবন ভাৰ্গব काममशाक्ष्रवर धवताः। रेजूः बार्ञ्ख ॥

माविबः क्ली यद्धांभवीजः। ইতি **भक्तप्रा**वनी ।।

मारिकः पू॰ बाक्षनः। ইভি হেম हिन्द्राः। भक्तद्रशा वम्हा देखि व्यक्तिमा मूर्याः ॥ गर्डेः। देखि

माविकी जी भाषरमभौरमणाय-দ্রাজপদ্নী। সাতু মদ্রদেশীয অশ্বপতিরাজকন্যা ৷৷ ত্রন্ধণ-জী। সাতু সবিতৃঃ পৃশ্বাা প-দ্মাণ জাতা।। উম।। ইতি মে-मिनी।। তशामकात्रन यथ।। ত্রিদশৈ রর্চিতা দেবী বেদ যা-গেৰু পূজিতা। ভাবশুদ্ধ স্বৰ-

পাতু সাবিত্রী জেন সা স্থা। रेकि क्वीभूतार्व ६८ अवगवः॥ विनि ह । नर्रानाकश्चमतमार সবিভা স তু কীৰ্ব্যন্তে। বত স্ত-দেবতা দেবী সাবিত্রীভাচাতে ততঃ।। বেদ প্রস্বনাক্তাপি সা-বিত্রী প্রোচ্যতে বুবৈঃ॥ ইভি ব-द्विश्वात बाक्त श्वमः नामाना-शायः॥ गायबी। ইতি बिकाख-শেষঃ॥ 🗱॥ ত্রহ্মপত্ন্যা উৎপত্তি-নামান্তরাণি যথা। ততঃ সংজ পত স্তদ্য ভিত্বা দেহ মকল্মৰ 1 जीवण गर्क गरुतामर्क भूक्रय-ৰূপব্ ৷৷ শতৰূপা চ সা খ্যাতা गाविबी ह निश्नगंदछ। मद्रचछा-थ गायंबी बकानी ह পরন্তপ। ইতি মাৎস্যে ৩ অধ্যাষঃ।। 🛊 🛭 **७**मा भठनामानि यथा। विकृ क्रवाह। माविजी भूक्रत्र नाम छी-র্থানা॰ প্রবরে শুভে। माा॰ विभावाकी देनियद विश्व-ধারিণী।। প্রযাগে ললিতা দেবী कायूका शक्त्रयामत्त । यानतम् अ-मूला नाम विश्वकाया छ्थायदत्र ॥ भागत्य भागती नाग मनादत कामहार्तिशे। मरमाध्करी देहक-রথে জয়ন্তী হস্তিনাপুরে ।। কা-

मान्द्रस एवा त्रोदी द्राप द्रान বগৰতে। একানুকে কীৰ্ত্তিৰতী विचा वित्ययदंत्रे छ्वा ॥ रतार्टेन्टन जू क्यना क्यनान-(व। ऋजरकांग्रेश ऋजांनी कानी कालक्षद्र शिद्यो ॥ यशानित्य जु किंगा करकारि मूत्ररियती॥ मानवारम महारमवी मिवनित्य জনপ্রিয়া।। নীলোৎপলা মা-ষাপুৰ্য্যা• সন্দন্তী ললিতে তথা। उँ भनाकी महमातक हित्रगा-কী ৰহোৎপলে।। গঙ্গাযা ম-कला नाम विमला भूकृरवाखरम । বিশালাষা মমোঘাক্ষী পাওলা পাঙ্গৰ্বতে।। নারাষণী সুপার্শে ज् बिन्र हो इक्त मुन्दती। विभूत विश्वा नाम कन्यांनी मनगाठतन া কোটরী কোটরীতীর্থে সগন্ধা গন্ধমাদনে। স্বজামুকে ত্রিসন্ধ্যা তু গঙ্গাদ্বারে হরিপ্রিষা।। শিব-চণ্ডে শুভাচণ্ডা নন্দিনী দেবিকা-ভটে। রুক্মিণী দারবত্যান্ত ব্রাধা_ বৃন্দাবনে বনে।। দেবকী মথুরা-यात्र পार्जाटन भद्रसम्बद्धी। भी-তা বিস্কো তথা ব্লৌজী কালিন্দ্যা• বিশ্ব্যবাসিনী 11 সহাদ্রাবেক-বীরা তু হরিশ্চন্দ্রে তু চন্দ্রিকা।

बस्ता क्रांत्रजील पू यस्ताताः मु-गावजी ॥ कत्रतीद्य महानची क्रमादनवी वीनायदक। चादतादन ভুরোগহন্ত্রী মহাকালে মহেশ্বরী য় অভবেত্যকতীর্থে তু অসূতা বিদ্ধাকন্দরে। মাওব্যে মাত্রবীদে-वी महारगीती मरहश्रती ॥ गरन-শে চ প্রচণ্ডা তু চন্ডিকামরকণ্ট-কে। সোমেশ্বরী বরাহে তু প্র ভাষে পুৰুৱাৰতী ৷ দেবী মাতা সরস্বত্যা॰ পারাবারতটে স্থিতা। মহালবে মহাপত্মা প্ৰোক্যা• পিঙ্গলেশ্বরী ৷৷ সিংহিকা ক্রতসৌ রে চ কার্ত্তিকেষে তু শান্ধরী। উৎপলাবর্ত্তকে কালা সুভদ্রা সিশ্বসঙ্গমে।। সাতা সিশ্ববনে লন্ধী স্তরকা ভরতাপ্রমে। জাল-ন্ধরে বিশ্বমুখী তারকা বিন্ধাপর্ধ-**७।। দেবদারুবনে পৃষ্টি মেধা** काशीव्रमश्रल। जीमारमवी हि-মাজৌ তু দেতু ৰ্বক্ৰেথরে তথা 11 क्लानरमाहरन छक्का माठा काषावदत्राष्ट्रवः नटधाकादत् ध নি র্মাম ধৃতিঃ পিণ্ডারকে বনে।। काली जू हञ्जजागाया मस्कारम निकित्यविनी। नद्रनाद्रायरण एत-वी वन्द्या मूर्वनी छथा।। ७वशी ।

<u> भारतक्रा मन्त्रील मानाम-</u> का। मध्यभा एमकृति जू नमूल मठावाषिनी।। अन्यस्वक्रमीका जू विबिक्त अभगनत्व। गायबी विष्णाणायाः गाविकी बक्तमधिः (वो ।। **সূর্যাবিষে প্রভা নাম মাতৃ**-णा रेवकवी म**ा। अक्रक्ष**णी में তীনাম্ব রামাসু চ তিলোত্তমা ॥ ত্ৰজে ত্ৰন্ধকলা নাম শক্তিঃ সৰ্বশ-রীরিণাণ। এতদুদেশতঃ প্রোক্তণ নামাউশত মুক্তম ।। অক্টোত্তর-ষ্ণ তীর্থানা শত মেতদুদাহত । रवा करण गृग्वादाणि गर्वणा-रैनः अमूहारा । अमू छीर्शियु ষৎ ক্লমা সামা পশোনরো হি ষঃ। সর্বপাপ বিনিশ্যক্তঃ কর। बन्नभूदत्र वरमः ॥ नामारान-তক যম্ভ আববেৰুদ্দদনিধৌ। পৌৰ্ণৰাদ্যা ৰমাবাদ্যা বহুপুলো **ख्राविष्ठ ।। रामात्म व्यक्तिमा**-ति ह जरुनार्शन वा भूनः। पि-वार्कन विरधी विद्यान् शतः बद्धाः **धिगक्**छि॥ **३७ि भम्रभूतात् मृ**-किंश्रेट७ ১१ जशायः॥ 🛊॥ जिन চ। নারদ উবাচ। তুলস্পো-খ্যান বিদ শ্ৰুত মীশ সু'ধাপ-मः। छखु मौविज्यभाषानः उत्य

याणाण्यसम्भाग विकास स्वित्यस्य । त्यस्य प्राप्त विकास स्वार्थित । त्यस्य विकास स्वार्थित । त्यस्य विकास स्वार्थित । त्यस्य प्राप्त । विकास विकास स्वार्थित । विकास विकास स्वार्थित । विकास विका

দাবিত্রীব্রত। ক্লী জৈয় ঠক্ক কচতুদিশ্যাণ স্থীকর্ত্বর নিষমবিশেষঃ
। তদ্বিরণ ষধা। পরাশরঃ।
মেষে বা বৃষতে বাপি সাবিত্রীণ
তাণ বিনির্দিশেশ। তাণ চতুর্দশীণা জ্যৈঠ ক্রফ চতুর্দিশ্যাণ সাসাবিত্রী মর্চমন্তি ষাং। বটমূলে
সোপবাসা ন তা বৈধব্য মাপুমুং।। রাজমার্তও ক্রত্য চিন্তামব্যোং। জ্যৈকে মাসি চতুর্দিশ্যাণ
সাবিত্রীব্রত মুক্তমণ। অবৈধব্যায সর্বন্তি জ্রিষঃ শ্রদ্ধা সমন্বিতাঃ
।। ব্রতমাত্রে তু অনম্ভচতুর্দিশীব্রত্যেক্ত মাচরন্তি। দৃষ্টপরিকদ্বনা ন্যাযাণ। তদুক্তণ মৎস্য-

ALCOHOLD IN THE SPICHT BISCAS GOSCO गाम ॥ जिलहा जानाको नकः ट्याक्रमः अवाष्ट्रः। डेशवादावः শক্তানা নক্ত ভোজন মিযা-ए । केल इक्टरहना खता । वालका तर शुकाः कातरगर। कारिक (काश्रवामाप्तिक माना एकरा क्राप्टकरा 5 त्रयः क्रियः ভে। এব শ্মৃতি পরিভাষাষা वक्षमास्त्राणाशासाः। नात्रमः। **मिवाजादग बंदगामगा। यमा ह-**ज्भनी जरदर। उद भूका म रागाधी (परी मछावछ। मर ॥ भिवाजारग मध्ययमाळ मरब्भि অতএব প্রদোবে ব্রত মাচরন্তি। পূৰ্বাহে ভিছিধছেপি পরাহে ত্রি-সন্ধাব্যাপিছে পরাহ এব ত্রিস-श्वावगानिनीिख वहनाव। यहा जू পूर्वाभवत्या न जशाविधा। जना-পি পরাহ এব। রখা। জ্যোতি-त्व। ह्यूक्ना ययावामा समा **७**वि नात्रम । উপোষ্য পূজনी-या मा ठल्फिनााः विधानलः ॥ मा गाविजी। ७० का गावामा-याः गाविजी बच्च विधानः निवा

বোরা তথা প্রেতেতি বচনকৈ তৎপরণ। পরাশরঃ। সাবিত্রী নচ্চবিদ্বা তৃ ফলাহারা পরেহনি। তত শ্চাবিধবা নারী বিত্ততোগান লভেত সা।। ইতি তিখ্যাদিতবেশ। অন্যথ বনপরীয় সাবিত্রীব্রতকথায়াণ জন্টব্যণ।।

माविबीमृब॰ क्ली विष्ठां भवीष्ठ॰। देखि मक्तव्रवावनी ॥

সাশ্যন্দকঃ পু• জ্যেষ্ঠী। ইভি কেচিৎ।।

मामृकः पू॰ कष्रवः। ইভিছারা-ववी ॥

সাঞ্জী: স্থা ইতি ত্রি-কাণ্ডশেষঃ।।

সান্থিতামার্দ্ধণ ক্লী কাণস্যণ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ।!

সান্ধা স্ত্রী গোগলকম্বনঃ। ইভ্য-মরঃ।।

সাহচর্য্য কী সহচরস্যভাবং।
সহগমনণ সহচরশব্দাৎ ক্ষ্য
প্রভ্যাযেন নিষ্পাশণ। সহচারঃ।
সামানাধিকরণ্য একাধিকরণবৃত্তিমণ। যথা। প্রাযশো
কপভেদেন সাহচর্য্যাচ্চ ক্রন্তি

সাহযঃ ত্রি সহনকার্যিতা। ইতি

काकत्रन ॥

गार्म की एषः। रेणमद्राः। म'ह बिनियः। यथा याख्यकाः। मानीिष्णन मारत्या मुख छेखः মলাহসঃ তদর্জ মধ্যমঃ প্রো-क खपर्क मधमः मृजः॥ ইতি প্রাৰশ্চিত্ততত্ত্বণা বলাৎকার-क्रुंकार्याः। देखि स्मिनी।। मुक्ककर्मा। **अ**विम्याङ्गिष्टः ॥ ष्ट्रियः। ইতি হেনচন্দ্রঃ।। পশ্চা-**प्लाय मनात्ला**हा क्रम् । তलु क्रोर्या **अतुमात्रगमनामि । इ**डि मुक्तदाथ जिकायाः मूर्गामामः ॥ ॥ मारम मार नात्रमः। मन्-**यात्रात्रनः एउयः शत्रनाता** ज्यिर्यः **ণ•। পারু**ষ্য:মন্তকৈব সাহস পঞ্ধা স্তশা অত সদ্যএবো-खत्रमाथनः। यथा। मोहमः (खर পারুষ্য গো ২ভিশাপাত্যয়ে **खिया । विवामस्य मन्। धव** काला श्नारकक्रा सृठः ॥ विवामरम् नमा अव्वाखन मा-পয়েৎ। ইতি শূলপাণিঃ। তত্র षानाषरयाणि नाकिःगा **ভ**वस्रि । यथा छनना। मारमा श्ट्या विध्वः ऋषीं जी वाल ऋविद्राप-ষঃ। এতে ২পানভিদয়স্কাঃ সা-

হ্মে সাকিবো মতা ই ইডি
ব্যম্থারতত্ত্ব !!
সাহসঃ পুং অগ্নিবিশেষঃ মধা।
প্রাধশ্চিতে বিধুশ্চিব পাকবত্তে তু সাহসঃ। লক্ষ্যেমে চ
বহ্লিং স্যাৎ কোটিছোমে হতাশনং ৷৷ ইতি তিথ্যাদিতত্ত্ব !৷
সাহসাকঃ পুং বিক্রমাদিত্যরাজঃ
৷ ইতি জটাধরঃ ৷৷

সাহসিকঃ ত্রি মনুষ্যমারকঃ।।
চৌরং।। পারদারিকঃ।। পরুষবাদী॥ অনৃতবাদী। ইতি সাহুসশব্দার্থদর্শনাৎ॥ এতে অসাক্ষিণঃ। যথা নারদঃ। স্তেনাঃ সাহসিকা ধূর্তাঃ কিতবা
বোধকাশ্চ বে। অসাক্ষিণস্ত তে দুকা স্তেষ্ সত্যাণ ন বিদ্যাতে
।। ইতি ব্যবহারতত্ত্বং।।

সাহসু কী সহসুসমূহ:। সহ
সাণা সমূহ ইত্যথে ক প্রত্যক ন নিশাল । সহসুমাত্র । যথা
। হরি স্তে সাহসু কমল বলি
মাধায় পদযো র্যদেকোনে ত্র ক্ষিন্তি মুদহরমেত্রকমল । গাতি তত্যুদ্দক পরিণতি মসৌ
চক্রবপুষা ত্র যাণা রক্ষাবৈ ত্রি
পুরহর জাগতি জগতা ।। ইতি

बरिवर्डकं ॥ जिस्स्तुन खीं छ बर्गुमधिनि छ छि ॥ मार्गुः प् नर्गुमधाकगळा-पिनावनी। रेठावतः॥ मारावकः की माराधाः। महा-यमा छाव रेठार्र्ष कन् श्रठार्य-न विष्णवः॥

माहाबा॰ क्वी महायका। महाब-শব্দাৎ ক্যপ্রত্যযেন নিষ্ণান্ন।। সাহিত্য॰ ক্লীন্ত্ৰী মেলন । সহি-তস্য ভাবঃ। ইত্যর্থে ক্য প্রত্য-ষেন নিষ্পার্য।। পরস্পরসাপে-ক্ষাৰা তুল্যক্সাৰা যুগপদেক-ক্রিষান্ববিত্ব সাহিত্য । ইতি শ্রাদ্ধবিবেকঃ।। তুল্যবদেকক্রি-यात्रिषः। वृक्षिवित्यवित्य-ষ্যত্ব• বা। ইতি শব্দশক্তিপ্ৰকা-শিকা ৷৷ সাহিত্য একক্রিষায়-यिष्। जनवशा धव थनित्र প-লাশাণচ্দ্ধি ইত্যত্র ধব খদির পলাশ প্রতিযোগিক ষৎ সা-হিত্যা তনিক্ষপিতা যদন্বয়ব-বিভাগৰপকল তজ্জনিকা যা ছिपि क्रिया छपन्कृत क्रिया॰ खुः। ইতি সারমঞ্জরী॥ यन् ষ্যক্তস্পোকমযগ্রন্থবিশেষঃ। স তু ভটি রঘু সমারসম্ভব মাঘ जाद्रवि विष्णुक विष्णु स्थापन । भाजिमाञ्च धाज्यशः॥ माञ्च की विषयः। महिल्यः।

माझः क्षीः त्रज्ञबः। महिछत्। देखिः यत्रशिक्षाः

সাহরৎ পৃ• সমন্তিব্যাহারী। সাহশব্দাৎ রুধাতোঃ রিপ্ প্র ত্যবেন নিষ্পানঃ।।

मास्तरः श्रूः स्वामिश्रानिमृत्तिः।
शिख्युक्षः। यथा। स्वामिश्राः
निमृत्ति मंग्रः मास्त्रयम् मयास्वाः। ইতি শক্ররাবলী।।
माक्तरः ত্রি অক্রযুক্তং। অক
রেণ সহ বর্ত্তমানং। ইতি বহুত্রীহিসমাস নিম্পন্নং।।
সাক্ষাৎ ব্য প্রত্যক্ষং।। তুলাং।
ইত্যমরঃ।।

माकी वि वृख्खः। ইতি হেমচক্রঃ। তৎপর্যায়ঃ। প্রত্যক্ষদর্শনঃ ২। ইতি শব্দমালা।।
তদ্য মিথ্যাকথনে অকথনে চ
দোষো যথা। পৃষ্টো হি দাকী
যঃ দাক্যা-জানমপ্যন্যথাবদেৎ
। স পূর্বানাত্মনঃ সপ্ত জলে হন্যাত্তথা পরান্।। যশ্চ কার্য্যার্থ
তত্ত্বজ্ঞো জানমপি ন ভাষতে।
সোপি তেনৈব পাপেন লিপ্যতে
নাত্র সংশ্রহঃ।। ইতি মহাভার-

ए जारि**गर्द॥ ७॥** जनि हा ত্ৰন্দৰ স্থাপ্যহারী চ নিখ্যাসাদ্য-अमाथकः। मिलाखारी क्रुडमम्ह ব্ৰবাহক সুপক্তৎ ৷৷ এতে মহা-গাতকিন স্ত্ৰিষু লোকেষু নিন্দি-তাঃ। কালসূত্রে চ নরকে পভস্তি वक्षनः भन्छ।। इनि वक्षरिवरर्छ গণপতিখণ্ডে ৪৪ অধ্যাষঃ ।৷ 🛊 ॥ অপরঞ্চ মিথ্যাসাক্ষ্য ধাে দদা-তি কামাৎ ক্রোধাত্তথা ভষাৎ। সভাষা• পাক্ষিক• বক্তি স ক্লতন্ন ইতি স্মৃতঃ॥ মিথ্যাসাক্ষ্য• পাক্ষি-ক॰ বা ভারতে বক্তি যো নৃপ। যা-বদিন্দ্ৰসহসুঞ্চ সর্পন্ধণ্ডে বদেন্দ্রবণ ॥ সম্ভত• বেষ্টিতৈঃ সর্পৈ ভীত শ্চ ভক্ষিত স্তথা। ভুঙ্কে চ সর্গবিণ্য-ত্রণ ষমদূতেন তাডিতঃ।। ক্লকলী-সো ভবেত্তত্ত্ব ভারতে সপ্তজন্মসূ । সপ্তজন্মসু মণ্ড্কঃ পিভৃতিঃ স প্তভিঃ সহ।। ততে। ভবেচ্চ বৃক্ষ-শ্চ মহারণ্যে চ শাল্মলিঃ। ততো ভবেমরো মৃক স্ততঃ শুদ্র স্ততঃ श्वितः॥ इंजि बन्नदेवदर्खं श्रह-**তিখণ্ডে ৪৯ অধ্যাयः ॥ 🐲॥ मर्ब-**শরীরেষু শ্রীকৃষ্ণস্য সাক্ষিরপত্ব• বথা। স্থলাৎস্থলতর প্রাপ্ত মতি-मृत्र महर्भनः। श्रिकः मर्बणदीरद्रष्

সাক্ষিকাপ মদৃশ্যক ।। শরীরব স্ত সগুণ মশরীর গুণোৎকর ।। ইতি বন্ধবৈধর্তে শ্রীক্রকজ্ম ধণ্ডে ৭ অধ্যাবঃ।।

সাক্ষ্য ক্রী সাক্ষিকর্ম। ষ্থা।
মনুং। সমক দর্শনাৎ সাক্ষ্যণ
শ্রবণাটেচর সিধ্যতি। এতৎ
প্রমাণমাক্রোপলকণণ। অনুভাবী চষং কন্চিৎ স্বর্ধ্যাৎ সাক্যাণ বিবাদিনাণ। ইতি তদ্বচনান্তরাৎ। অতএঘারত মপি
সাক্ষিণ মাহ। মনুং। ষ্ত্রানিক্রন্ধো বীক্ষ্যেত শৃণুযাদ্বাপি
কিঞ্চন। পৃষ্ট স্তত্রাপি তদ্ব্রা-

নিরুক্ধ স্তত্ত সাক্ষিত্বনানিযুক্তঃ
। পরম্পর্বাপি শ্রবণ মাহ বিকুঃ। উদ্দিত্ত সাক্ষিণি মৃতে
দেশাস্তর গতে হপি বা। তদভিহিত শ্রোতারঃ প্রমাণ নাত্র
সংশবঃ । অস্যোত্তরসংজ্ঞা
মাহ নারদঃ। সাক্ষিণা মপি ষৎ
সাক্ষ্যং স্বপক্ষং পরিভাষতাং।
শ্রবণাৎ শ্রাবণাদ্বাপি স সাক্ষ্যুত্তরসংজ্ঞকঃ।। স্বপক্ষ সম্বন্ধিসাক্ষ্যং পরিভাষতাং সাক্ষিণাং
মঃ স্বয়ং শৃণোতি অর্থিনা শ্রাব্য-

क्ष वा म अवनाष आवनामूख-त्रमाकीछार्थः। अव सार्थिना গুঢ়ত্যা প্ৰভাৰ্থিৰচন প্ৰাবিভঃ স গৃঢ়সাকীত্যাহ সঞ্জ । অ-ৰ্ষিনা বাৰ্ষ সিদ্ধাৰ্থ প্ৰভাৰিক চন ক্ষুট । বং প্রাব্যতে তদা गृटा गृहमाकी न উচাতে ॥ তেনান্যভরবাদ্যভিহিতার্থবিষয়-ক দৃষ্টকারণজ বিজ্ঞাপন সা-ষ্য মিভি স্থিত•া় তত্ত্র নারদঃ। তেষা মপি ন বালঃ স্যামৈকো न खी न पूर्य कृष्। न वास्तरना ন চারাতি জঁবু স্তে কার্য্য মন্যথা ॥ कार्याः ममिन व्यन्यथा छिन्न-करइन। এवक यनि भन्नभशर्मि-ৰুত্বেন বান্ধবাদীনা মপি সত্যবা-দিম্ব নিশ্চীয়তে তদা তে ২পি সাক্ষিণো ভবিতু মর্হস্তীতি। তে-वा॰ नाका विशासक॰ वकामान म-न्दहन मिं এতा मृधियय ।। #।। याख्वकाः। वावताः माकिता জেষাঃ শ্রোতসার্ত ক্রিযারতাঃ । यथाकाि यथावर्ग मर्स म-র্বেষ্ বা স্মৃতাঃ।। ত্রমো ২বরা নিক্লফা বেষা তে ত্যবরাঃ ত্রি-ভ্যো অন্যুনা ভবস্তীত্যর্থঃ। य-থেতি যো ৰজ্জাতীৰ স্তদ্য ত-

ব্জাতীয়: সাকী। স্ত্রীণাণ স্ত্রিযো **২ন্ত্যজানা মন্ত্যজাঃ। মথাবর্ণ** ত্রান্ধণানা॰ ত্রান্ধণাঃ ক্ষত্রিযাদী-ना॰ कवियानयः। অভাবে তু छ्खरूषं विना मई <u>बव</u>ा 🛊 ॥ ত্যৰৱা ইত্যস্যাপবাদ মাহ সএব ৷ উভয়ানুমতঃ সাক্ষী ভবেদেকো **২**পি ধর্মবিৎ। উভধানুমতত্ব• ধ-र्भविञ्च स्थानियञ् ए छ । छ न । इ বিষ্ণুঃ। অভিমত গুণদম্পন্ন স্তৃত ষানুমত স্তেকো ২পি ইতি। জ-তএব শ্রোত্রিষ মপ্যেক নিষেধ-यि वृङ्ग्लिटिः। नव मश्र পঞ বা স্যু শ্চন্থার স্ত্রয় এব বা। 🕏 ভৌতু শ্ৰোত্তিষৌ গ্ৰাছৌ নৈক• পৃচ্ছেৎ কদাচন।। একো মিলিত গুণসম্পন্নঃ প্রধানকরঃ। ভাবে উভধানুমতমাত্রো ২পি वाश खनार नातनः। উভयान्-यटा यः माम्नुत्या विवनमाने ষোঃ। ভবত্যেকো ২পি সাক্ষিত্বে প্রস্টব্যঃ স্যাৎ স সংসদি॥ উভ-যানুমত একো ২লুক্কত্বাদিনা স ৰ্বজন প্ৰসিদ্ধ শ্চেত্তদ। সাক্ষিত্বে সংসদি বহুজন সন্ধিধৌ প্রফীব্যঃ। তথাত্বে স্নেহ বৈরাদিসত্ত্বে ২প্য-কীর্ত্তি ভয়াৎ সত্যাভিধান সম্ভ

বাদিত্যাশযঃ। বিচারস্য তত্ত্বনি-र्वार्यकारः। छमाइ मनुः। काना श्लूकः माकी मार् वसाः **ভচ্চো ২পি ন** ক্রিয়ঃ। স্ত্রীবুদ্ধে রস্থিরত্বাতু দোবৈ শ্চান্যে ২পি ষে বৃতাঃ।। একো হলুৰম্ভ সা-कीमग्रामिष्ठि मह्म् कछिष्ठभाठेः। धारका लुक खुमाकी माानिछ জীমৃতবাহন ধৃত পাঠস্ত ন যুক্তঃ ल्काटम्प्य स्टाभामाकित्। ভবিতু मर्रछीि । একপদ मा ব্যর্থতাপত্তেঃ। ভবতু বা তৎ পাঠঃ তথাপ্যেক ইত্যনুরোধাৎ **७ विरुष्य प्राम्य विश्व विष्य विश्व विश्व विश्व विष्य विष्य विष्** মতিসত্ত্ব ধর্মবিত্ত্ব মন্তরেণ সা-কিত্ব বোধ্য । ইত্যৰ্থতো ন বি-রোধঃ। অতএৰ বিশ্বৰূপ প্রভূ-তীনাণ উভয়ানুমত এক এব সা-ক্ষীতি ব্যাখ্যানে ধর্মবিদিতিনো-कुः। प्लाटेष एउपानि जिः। তথা চ নারদঃ। স্তেনাঃ সাহসিক। ধূর্ত্তাঃ কিতবা যোধকাশ্চ যে । অসাক্ষিণস্ত তে দুষ্টা স্তেষু স-ত্য ন বিদ্যতে ।। কিতবা দ্যুত-করাঃ॥ 🛊॥ অপবাদ মাহ উশ-ना। मारमा श्रमा विधवः ऋषी जी বালঃ স্থবিরাদ্যঃ। এতে ২প্য-

निजन्मकाः मारटम मार्किली মতাঃ।। স্বিরো গ্লানেজিবগ্রাসঃ । जामि भकार किल्वामयः। উ ভবানুমতাভাবে শুচিক্রিবদ্বাদি গুণযুক্ত শৈচকো আছঃ। তথা চ वागः। श्विठिकियम् शर्मारङ। ষো ধন্যত্রাপানভূতবাক্। প্রমাণ মেকো ২পি ভবেৎ সাহসেষু বি-শেষতঃ।। অনুভূতবাক্ স্থানাস্ত-রে সত্যত্বেনেতি। ভবদেবভটো ২প্যেব । কাত্যায়নঃ। অভ্য-ন্তরন্ত নিঃকেপে সাক্ষ্য মেকো ২ণি দাপযে । অর্থিনা প্রহিতঃ সাক্ষী ভবেদেকে৷ ২পি যাচিতে ।। সংস্কৃত ধেন যৎ পণা তত্তে-নৈব বিভাবধেৎ। এক এব প্র মাণ স বিবাদে পরিকীর্ত্তিতঃ।। সংস্কৃত গঠিত। পণ্য সণ্ডলাদি। বিষ্য়া স্তেষ সাহস বানদণ্ডপা-রুষ্য সংগ্রহণেষু সাক্ষিণো ন প রীকা ইতি ৷ স্তেষ পরদারগমনা पि कार्यगाना॰ निङ्गदिनेव कियः মাণদ্বাৎ দৈবাদেব পরণ সাক্ষিণো ভবন্তীতি ন পরীক। ইত্যুক্ত । তেষাণ বাক্যন্ত মিত্রারি ভাবাদি নিৰূপণেনৈবোপপত্ত্যনুপপত্তি-ভ্যা মালোচনীয় ন তু বাক্যমা-

बीमिणि रावशातमाण्का। 🗸 এব কাত্যাষনঃ। ঋণাদিযুপরী-**ক্ষেত সাক্ষিণঃ স্থিরকর্মসু।** সাহ-সাত্যবিকে নৈব পরীক্ষা স্বত্রচিৎ স্তা। ইভি।। 🟶।। শ্রোত্রিষা-मीना मनाका माह नातमः। শ্রোত্রিষা স্তাপসা বৃদ্ধা ষে চ প্র-ব্রজিতা নরাঃ। বচনাতেয়সাকি-ত্ব॰ নাত্ৰ হেতু ৰুদাস্তঃ।। বচনা-দিতি শ্রোত্রিযন্তাদি কপাভিধা-নাৎ ন চ ভত্রান্যো হেতু রিত্যর্থঃ । **७९**। চ सीयरेति किक कर्माक त्रभ-ব্যগ্রত্যা পরকীয়কার্য্যে বিস্ম-রণ সম্ভবাৎ সাক্ষিত্বকাপ লঘুকা-ৰ্য্যনিষোগে তচ্ছাপভ্যেন ব্যব-হার জন্টারো ২পি তাম পৃচ্ছ-ম্ভীতি তৎসাক্ষ্যকরণানর্থক্যাচ্চ ন তে সাক্ষিণঃ কর্ত্তব্যাঃ। কিন্তু-क्राः अयः भाकित्। खरखार्। উভৌ তু শ্রোত্রিষৌ স্যাতা নিডি স্তঃ। বৃদ্ধস্যাসাক্ষিত্ব বৃদ্ধত্ব। प्ति शारनिक्षियदापिकार्थः। । का। यनुः। खीनाः माकाः खियः प्रय् ৰিজানা॰ সদৃশা বিজাঃ। শূডা-শ্চ সন্তঃ শূজাণা মন্ত্যানা মন্ত্য-যোনষঃ।। অন্তর্বেশ্মন্যরণ্যে বা শরীরস্যাত্যযে ২পি চ। স্ত্রিষাপ্য-

मञ्जद कार्याः वात्मन ख्वित्त्र वा।। निरवान वसूना वानि नारमः न जृष्टरकन वा। 🛊। प्रत बाक्रन সামিধ্যে সাক্ষ্য প্ছেদ্ত দিজা-न्।। উদ্ভাষান্ প্রাজ্থান্ বা পূ-बाद्य देव छिंहः छिंहीन्।। जाशील ব্ৰাহ্মণ পৃচ্ছেৎ সত্য জহীতি পার্থিবং। গো বীজ কাঞ্চনৈ বৈ শ্যুণ শূদ্ৰণ সৰ্বৈস্ত পাতকৈঃ।। গো বীজ কাঞ্চনাগহারে ষৎপা-প॰ ভত্তবানৃতাভিধানে স্যাদিতি বৈশ্যা এতৎ সাক্ষ্যান্তাভি-ধানে ভবান্ সৰ্বৈঃ পাতকৈ স-ষধ্যতে ইত্যুক্তা শুদ্রঞ্ব প্চেছৎ । बन्नन्ना (य स्मृष्ठा लाटक (य ह ন্ত্ৰী বালঘাতিনঃ। মিত্ৰজ্ৰহঃ ক্ন-তন্নাশ্চ তেতে স্যূৰ্বদতো মৃষা॥ ইতি মন্ক্রণ দূষণণ। সৎফলক। অশ্বনেধ সহসূঞ্চ সত্যঞ্চ তুল্যা-**४७०। अभरमध महमुक्ति मठा**-মেবাভিরিচ্যতে॥ ইতি মনু নার-(मर्कुः व्यावस्य ।। क्षा वाखः वकाः। न मनाि हि यः সाकाः জানন্নপি নরাধমঃ৷ স কুটসা-किना॰ भारेभ खुला। मटखन टेइव হি।। কাত্যায়নঃ। অবীচি নরকে। वर्षः वरमयुः कृष्टेमाकिनः। या-

জবদ্ধাঃ। সত্যা॰ প্রতিজ্ঞা॰ ব-স্যোচুঃ সা**ক্ষিণঃ স জ**ধী ভবেৎ । चनाथा वाहित्ना रुगा अन्व खगा পরাজষঃ।। বর্ণানা ছি বধো ষত্র তত্র সাক্ষ্যনৃত বদেশ। তৎপা-বনাষ নিৰ্বাপ্য শ্চৰুঃ সারস্বতো षिटिकः॥ 🗱 ॥ भी ७ मः। नानृष्ठ-वहत्न (मार्या जीवनरक्ष्छमधी-नः। न जू शाशीयरमा জीवनः। ইতি ৷ দ্বৈধে বহুনাং বচনং সমেষু छंनिना॰ जथा। छनि दिवस जू वह-ন প্রাহ্ণ যে গুণবন্তরাং ৷৷ তেষা নিতি শেষঃ।।ঞ্ছা যত্ত্ব। সাক্ষিণা॰ লিখিতানাঞ্চ নির্দিষ্টানাঞ্চ বা-দিনাণ তেষা নেকো খন্যথাবা-দী ভেদাৎ দৰ্বে ২প্যসাক্ষিণঃ।। ইতি কাত্যায়ন বচনণ তল্ৰয়াণাণ তুল্যৰূপাণা সাক্ষিণা মধ্যে এ-কস্যাপ্যন্যথা বাদে অপরস্য ত-তুলাসা সৎপ্রতিপক্ষত্যা তৃতী-ষদ্য কিঞ্চিদ্বাদিত্বে তত্ৰ ভেদাৎ পরস্পর বিরুদ্ধার্থাভিধানে ভে*-*माथ माकिएजा न तिर्गरः देखि পর॰।।।।। বৃহস্পতিঃ। সাক্ষিদৈধে কর্মনিষ্ঠানা গ্রহণ মাহ। গুণিদৈ-ধে ক্রিষাবতা মিত্যনেন। তথা। माकिता १थिममू कियान् मदमू **(मारवर् मायरवर्। अमुर्वे॰ मृ**-ययन् वानी छৎ मयः मख गर्छ ।। ইতি। তৎসম বিবাদ সম। मভामनानि विनिष्ठ माकिनूयन মেব গ্রাহণ ন তুত্র্যবরাদি সাকি-ভিঃ প্রতিপাদ্য । অনবস্থা পা-তাৎ। ইত্যাহ নারদঃ। সভাসদা• প্রসিদ্ধ যল্লোকসিদ্ধ মথাপি বা ৷ সাকিণা দুষণ আছ মসাধ্য (माय वर्ळाना ९॥ चिताम्ह मा-कि जिः नारश मृष्य शृर्वमाकि ণা । অনবস্থা ভবেদ্দোষ স্তেষা মপ্যন্যসম্ভবাৎ ৷৷ অসাধ্য সাধ-नानर्। त्रिक्षषात्माय वर्क्कनाए। অনবস্থা বিরহাৎ। তঙ্গাৎপ্রসিদ্ধ দূষণ মেব আ**হ∙।।** शा দূষণ মাহ কাত্যায়নঃ। বালো হক্তানাদস-ত্যাৎ স্ত্রী পাপাভ্যাসাচ্চ কৃটক্লৎ । বিক্রমাৎ বান্ধবঃ স্লেহাৎ বৈর निर्वाजनामित्रः ॥ यः माकी रेनव নির্দিকৌ নাভূতো নৈব দর্শিতঃ । জ্বানিখ্যেতি তথ্য বা দণ্ডাঃ সোহপি নরাধমঃ ৷৷ কাত্যাযনঃ । किया न रेमिवकी (थाका वि-मामात्मयू माकियू। त्वात्था ह म-ि वादमयू न मिवां न ह माकिनः মাসমত্ব সাক্ষিণা যত্র দিবৈয় স্তত্র

বিশোধবেৎ৷ এতৎ সম্প্ৰাম্-চ্ছেদে বোধ্য । ৰাজ্যবন্ধ্যঃ। নি-হুতে লিখিতানেক নেকদেশে বিভাবিতঃ। দাপ্যঃ সর্বান্ন্পেণ্-ৰ্থান্ন গ্ৰাহ্ন স্থুনিবেদিতঃ।। বো निथिजात्मकः সুवर्गामिकः जन-লপতি স একদ্রব্যে সাক্ষ্যাদিভি ৰিভাবিতঃ সন্ সৰান্দদ্যাৎ। কাত্যায়নঃ। যদ্যেকদেশ প্রাপ্তা-পি ক্রিষা বিদ্যেত মানুষী। সা গ্রাহ্যান তু পূর্ণাপি দৈবিকী বদ-তা নৃণা ।। বদতা বিবদতা মি-ত্যবিশেষেণ দর্শবিত। পূর্ণাপি रेपितिकी ममज विषयिक। श्री ন গ্রাহ্য। তেনৈকদেশ প্রতিপা-**मिक्या यानुया। क्रियमा ममल्या-**ধ্য সিদ্ধি রিতি। সাধ্যার্থাণ্শে নি-গদিতে সাক্ষিভিঃ সফলণ ভবেৎ৷ ন্ত্ৰীসঙ্গে সাহসে চৌর্য্যে ষৎসা-ধ্য॰ পরিকল্পিত•।। ইতি কাত্যায-नवहनः ७९विषय अप्तर्भकः। ৠ-ণনিক্ষেপাদ্যপত্নবে ২পি ছোজ্য मि**छि।। #।। यकु ज्यानकार्था**छि-যোগে তু যাবৎ সংশোধষেদ্ধ-नी। সাক্ষিভি স্তাবদেবাসৌ লভ-তে সাধিত ধন।। তদৃণাদ্যনভি-छ পুलामि विषयक । उथारि ।

নানাবিধ পিত্রণাদ্যভিষুক্তেনা জানতা নাহ্ জানামীতি উত্তর वानिना माक्गानि व्यावस्तर প্রতিপাদয়তি তাবদেব পুত্রেণ দাতব্য । এব মেব বিশ্বৰূপ জী মূতবাহন প্রভৃতয়ঃ।।ঞ্লা কাত্যা यनः। অনুমানাধরः সাকী সা ক্ষিভ্যো লিখিত গুরু। অনিরুদ্ধা ত্রিপুরুষী ভূক্তি স্তেভ্যো গরীষ मी।। जनुमानः अञ्जानकतिछः। **তদাर मनुः। वाटेश विভावयित्रि** হৈ ভাৰ মন্তৰ্গত নৃণা। স্বর ব র্ণেঙ্গিতাকারে শ্চক্ষুষা চেষ্টিতেন **छ।। यद्या भकामामिः। वर्द्या २** স্বাভাবিকঃ। ইঙ্গিত স্বেদ বেপুথু রোমাঞ্চাদি। আকারো বিক্লভঃ । চক্ষুষা কাতরেণ। চেফিতেন স্থানত্যাগাদিনা। এষাঞ্চান্যথা-দিন্ধে দুর্নিৰপ্যত্বাদেভ্যঃ সাকী বলবান্ ইতাৰ্থঃ। সুখ নিৰূপ্যত্বে ज्याळवकाः। प्रभाष्मभाखतः ষাতি সৃক্ষণী পরিলেটি চ। ললা ট श्विमाटक ठामा मूथ देववर्ग মেতি চা৷ পরিশুষাৎ স্থলদা ক্যো বিৰুদ্ধ বহু ভাষতে। বাক্ ठकुः शृक्षयां ता उप्योत्की नि ভূজিত্যপি। স্বভাবাদিক্তি গ

ष्ट्याता वाकार कर्याजिः॥ अ-ভিষোগে চ সাক্ষ্যে চ স দুষ্টঃ প-রিকীর্ত্তিভঃ। ন পরোক্তা বাচ প্রতিবচনেন পূজষতি। তথেতি **ठक्कृ**ण्ठ পরকীये वीकरণন নির্ভূ-জতি স্বটিলী করোতি যদা মনো বাক্কায় কর্মাভিঃ স্বভাবাৎ পূ-ৰ্বোক্তা॰ কথাকোগ্যা॰ বিক্নতি॰ गट्छिता ममूखे रेठार्थः। अठ-এব শ্রীরামাষণে। আকার म्हा-**मामाताणि न गरका। श्रमी नि** गृहिजू । ननािक विवृत्गात्ज्ञत ভাব মন্তৰ্গত নৃণা ।। আকারো **(मह्धर्म्मः गूथाव्यमाम देवदर्ग ब**-थः। नात्रमः। मूमीटर्यगानि का-लिन लिथिङ निक्ति माभूयादः। সংজানমাত্মনো লেখ্য মজানং-**ख्खू (न**थरय< 11 मूमीरर्घरनिष्ठ সংস্কারোদ্বোধকলিখনসত্বাদ্য চিরেণাপি সাক্ষ্যু দাত্তু শক্লো-তি ইত্যর্থঃ ॥ 🟶 ॥ निপিজ্ঞ॰ স্ব-হস্তেন লেখযেৎ তদক্ত পর-হস্তেনেত্যাহ ব্যাসঃ। অলিপি-**एका सनी यः माा९ त्नथरम९** স্বমতন্ত্ব সঃ। সাক্ষী বা সাক্ষিণা-तान गर्नगाकि गगीशशा वृर-ম্পতিঃ। মূষিত ঘাতিত বঙ্গ

শীনাধাশ্য সমস্ততঃ৷ অক্ততোৎপি ভবেৎ সাক্ষী গ্ৰাম স্তত্ত্ব ন সংশ যঃ ৷৷ ঞ ৷৷ অক্কতা অপি সাকিণো ভবন্তীত্যাহতু শ্বনু কাত্যাযনৌ। ष्यत्म भून इनिर्फिक्षाः माकिनः সমুদাহতাঃ। আমশ্চ প্রাড়িবা-কশ্চ রাজা চ ব্যবহারিণা ।। কা-র্য্যেম্বভান্তরো ষঃ স্যাদর্থিনা প্র-श्चिम्ह यः। जनाः जनविवादम्यू ভবেষু স্তে ২পি সাক্ষিণঃ ৷৷ স্মৃতিঃ । দত্তাদত্তে ২থ ভূত্যানা॰ স্বামি ना॰ निर्गास मिछ। विकीशानान সম্বন্ধে ক্রীম্বা ধন মনিচ্ছতি।। मृाटा ममास्राय देवव रिवाटम म মুপজ্তে। সাক্ষিণঃ সাধন প্রো-कि न मिवा न ह त्वथाक ॥ প্রক্রান্তে সাহসে বাপি পারুষ্যে मख्राहित्क। यत्नाच्हरवयू का-र्खायु माकित्वा मिवा त्यव ह ।। বৃহস্পতিঃ৷ লেখ্য বা সাক্ষিণো वाशि विवादम यमा मृविजाः । ত্যা কাৰ্য্যণ ন সিধ্যেত বাবত্তন বিশোধবৈৎ ৷৷ তল্লেখ্য সাক্ষি क्रिथानं।। क्षा त्वरात्नाध-न गृह। काजायनः। अह्छ লেখ্য সন্দেহে জীবতো বা মৃত-मा ह। ७९ यर्खक्टेंब ब्रेनाः भरेज खरल्या निर्वयः ॥ ७था । म-मर्त्राटक समृष्टे॰ वक्तवा॰ छत्त-থৈব চ। বিভিন্নেনৈব কার্য্যে ভূ **७६क्ठरा॰ পृথक् পृ**थक् ॥ ना-পৃষ্টে রনিষ্ট্রে র্বা সমণ সত্যা প্রবন্ধতঃ । বক্তর্যণ সান্দিভিঃ সা ष्मः विवासकान गागरेजः ॥ जः न्बित्यन ठिट्छन मृखे॰ সমাधिन। তু ষৎ। প্রত্যক্ষণ তৎ স্মৃতণ কার্য্যণ माकाः माकी जु जन्दरम् ॥ 🗱 ॥ नातंषः। यः भतार्थं २ भर्ति छ श्वाः वाहः भूक्षवाधमः। जाजातर्थ कि॰ न अधाष म भाभी नज़क निर्अष्ध।। ज्या देव दाहि निष-তা বাজুলা বাগিনিঃসূতা। যন্ত্র-তা ভেন্যেছাচ স সৰ্বভেষ-রুমরঃ।। বৌধাযনঃ। পঞ্চ পশ্ব-২নৃতে হস্তি দশ হস্তি গবানৃতে। শত মশ্বানৃতে হস্তি সহসু॰ পুরু-যান্তে॥ হস্তি জাতানজাতা॰ ক হিরণার্থে ২নৃত বদন্ ু সর্বণ ज्यान्त्व रिष्ठ नात्का नाकी गृ-যাবদন্।।#।। বৃহস্পতিঃ। যস্যা-শেষণ প্রতিজ্ঞাতণ সাক্ষিভিঃ প্র-**তি**शानि**णः। म ज्यी मान**नाथा जु माधार्थं न मगान्या था। या-জ্ঞবৃদ্ধ্যঃ। উক্তে ২পি সাকিভিঃ

मिक्या यमात्मा खनवल्याः ।
विश्वना वानाया जावः कृताः मृःः
भूवं माक्तिनः ॥ जनाया भृवं विन्
भूवं माक्तिनः ॥ जनाया भृवं विन
भूती जार्थ अकारत्र । कृति जनाः ।
एय वहनाः । ज्या । यः माक्ताः
खावित्वा श्रत्मात्वा । निङ्गुत्व ज्यमा वृद्धः । म मार्थमा श्रेश्वनः
मधः जाक्तवः । म मार्थमा श्रेश्वनः
मधः जाक्तवः । निष्णाः वावर्यवि
वामिना अयुर्द्धा यः वाविदः
वानिना अयुर्द्धा यः वाविदः
विवावशाः । विश्वनाः । विवावशाः
खरा मुद्धाः । हि वावशाः
खरा मुद्धाः । हि वावशाः

সি॰হঃ পু॰ স্বনামধ্যাতপশুঃ।
তৎপর্যায়ঃ। মৃগেক্সঃ ২ পঞ্চাস্যঃ ৩ হর্যক্ষঃ ৪ কেশরী ৫
হরিঃ ৬। ইত্যমরঃ॥ পারীক্রঃ
৭ শ্বেতপিঙ্গলঃ ৮ কণ্ঠীরবঃ ৯
পঞ্চশিখঃ ১০ শৈলাটঃ ১১ ভীমবিক্রমঃ ১২ সটাঙ্কঃ ১৩ মৃগরাট্
১৪ মৃগরাজঃ ১৫ মরুৎপ্রবঃ ১৬
কেশী ১৭ লগ্নৌকাঃ ১৮ করিদারকঃ ১৯। ইতি শব্দরত্বাবলী
॥ মহাবীরঃ ২০ শ্বেতপিঙ্কঃ ২১
গজমোচনঃ ২২ মৃগারিঃ ২৩।

ইতি জটাধর:।। ইভারিঃ ২৪ নথরাযুধঃ ২৫ মহানাদঃ ২৬ म्गপिणः २१। देखि (इयहन्यः॥ পঞ্চ**मूখः २৮ नशी २**२ मानी ७• क्रवानिः ७३ मृगाधिशः ७२ मृतः ৩৩ বিক্রান্তঃ ৩৪ দ্বিরদান্তকঃ ०१ वहवनः ७७ मीखः ७१ वनी '৩৮ বিক্রমী ৩৯ দীপ্তপিঙ্গলঃ ৪০ । ত্যা শ্বাহা অর্শঃ প্রমেহ জঠরামধ জাডানাশিত্ব। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ অপিচ। সিংহ वााचु वृका शक छत्रकू दीनिन ख्या। वद्म जबूक गार्जाता है-**जामां इ धरान्याः। धरान्या** বাতহরা গুৰুষ্ণ মধুরাশ্চ তে ৷ নিশ্বা বল্যা হিতা নিত্যু নেত্র গুহু বিকারিণা ।। ইতি ভাব-প্রকাশঃ ৷৷ ঞ্জ ৷৷ পদান্তে শ্রেষ্ঠা-र्थवाहकः। इंडि स्मिन्नी ॥ व्यर्ठाप्यकः। ইতি ह्महस्रः॥ রক্তশিশুঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ মেষাদি দাদশরাশ্যন্তর্গত পঞ্চ মরাশিঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। লেয়ঃ ২ । ইতি সংক্ষতামূক্তাবলী।। ত॰ मािशिश्राबीत्मवना मि॰ इः। म ह महा शूर्वक हुनी ममूमाय উতর-

অগ্নিরাশিঃ। পীতবর্ণঃ। কক্ষঃ। এব ধূনুবর্ণ। পিত্রপ্রকৃতিঃ। পূर्विक्यामी। পর্বতচারী। कः बियवर्गः। ब्लूतः। यशायकः। **जन्न जन्म । जन्न जी मन**े । তত্র জাতফল। ক্রোধী। भी-যুগতিঃ। হাস্যবাণিঃ। অতি-वका। हक्षाः। भीठमः। मर-স্যপ্রিষশ্চ। ইতি বৃহজ্জাতকা-मयः॥ 🛊 ॥ य्यानिषा नगनशा-ন্তর্গতপঞ্চমলয়। তত্র জাত সিংহলগ্নে সমুভূতো कलः। ভোগী শতু विमर्फनः। यदेशाम-রো ২য়পুত্রশ্চ সোৎসাহী গজ-বিক্রমঃ।। ইতি কোষ্ঠীপ্রদীপঃ।। সি'হকেলিঃ পু• মঞ্জুঘোষঃ । জিনবিশেষঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-শেষঃ 11 সি'হকেশরঃ পু॰ বঙ্গলঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ সি॰হস্যজটা চ मि[•]रुठनः भू• क्रुडाञ्जनिः। क রদ্বযোজন । ইত্যমরটীকা-যা॰ রামাশ্রমঃ॥ সিংহতুঙঃ পুং সেহওবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।

मि॰ रहात॰ क्री अत्यमहातः। ७९-

পর্যাযঃ। প্রবেশন ২। ইতি

ट्याञ्चः ॥ निश्वभिः पू॰ निश्वभकः॥ नि॰ इनामममृभागकः। यथा। जू-ষার সংঘাতশিলাঃ ক্রাত্রৈঃ ममूलिथन् पर्णकलः कन्नवान् । मृखेः कथकिकावरेय विविदेश त-সোঢ সি॰হধনি রূমনাদ।। ইতি जगातमख्यः ॥ मि॰ इनामः पु॰ याधाना॰ त्राध-সাহজরবঃ। তৎপর্য্যায়ঃ। ক্ষ্-**७**। २ । ३ छा मतः ॥ १ छ यूथ म-শনাৎ তদ্তসায যথা সিংহস্য-নাদ স্তথা পরবল ভঙ্গায় স্বোৎ-সাহ বিবৃদ্ধযে চ যো রাবঃ স। निः इत्गाव नामः निः इनामः । ইতি ভরতঃ।। সি॰হশব্দ ।। সি॰হনাদকঃ পু• বৃক্কারঃ। সি॰ঙ্গা

ইতি ভাষা। ইতি হারাবলী ।।
সিংহনাদিকা স্ত্রী দুরালভা। ইতি
শব্দচন্দ্রকা ।।
সিংহপর্ণী স্ত্রী বাসকঃ। ইতি
জটাধরঃ ।।
সিংহপুচ্ছিকা স্ত্রী চিত্রপর্ণিকা।

রত্নমালা।। সিংহপুচ্ছী ত্রী চিত্রপর্ণিকা।। পৃশ্বিপর্ণী। ইত্যমরঃ॥ মাষপর্ণী

কুদ্ৰচান্সলিয়াইতি ভাষা। ইতি

। ইতি রত্মালা।।

সিংহপুন্সী ন্ত্রী পৃদ্ধিপর্নী। ইতি
রাজনির্ঘন্টঃ।।

সিংহপুনী ন্ত্রী বাসকঃ। ইতি
রাজনির্ঘন্টঃ।।

সিংহ্যানা ন্ত্রী দুর্গা। ইতি হেমচক্রঃ।।

সিংহ্বপা ন্ত্রী দুর্গা। ইতি শক্ত

मि•इत्रथा खी मूर्गा। ইতি শব্দ-त्रज्ञावनी॥

मिःश्ल॰ की त्रत्रः। देखि द्याः हत्यः॥ तीिष्टः॥ प्रहः। देखि त्राक्रनिर्यन्षेः॥

সিংহলঃ পু• ন্ত্রী দেশবিশেষঃ।
শিলোন ইতি খ্যাতঃ। ষথা।
দক্ষিণে ২বস্তি মাহেন্দ্র মল্যা
খ্যামূককাঃ। চিত্রকূট মহারণ্য
কাঞ্চী সি•হল কোৰণাঃ। ইতি
জ্যোতিস্তব্ধ•।।

সি॰হলস্থা স্ত্রী সৈণহলী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। সি॰হলদেশবা-সিনী চ।।

निःश्नाञ्चानः श्रुः ठानवृक्षममृभः वृक्षवित्ययः। यथा। त्थाष्ट्रमनः निःश्नाञ्चान क्षणे निक्षा इते-नि छ। ইতি सक्तमाना ॥

সিংহলীলঃ পুং রতিবন্ধবিশেষঃ । সিংহন।শনে ক্লী।। ।তস্য লক্ষণ যথা। লিক্ষোপ ॥ সিংহা দ্রী নাড়ী। ইতি রাজ-

ति विका नाती क्रां मदा नमः वयः। शमर्य मखश्खा ह निःश्-नीनः श्रकीर्खिकः।। निस्त्राभ-ति विका नाती कार्खाक्रश्रम-वया। शमर्य मखश्खा ह निःश-नीरना श्रमाविष्।। देखि तः क्रिक्षती ।।

निःश्वाहिनी खी पूर्ग। यथा।

निःश्वाहिनी खी पूर्ग। यथा।

निःश्वाहिनी प्रयो । महिसमी ठटठा

प्रवीकना। देव निःश्वाहिनी।।
रेठि प्रवीस्वाछः प्रः ख्याः। रेठि
श्वाहिनी सम्मान ह।। निःश्
जूनाविक्रमविभिष्कं कि।।
निःश्विमा खी मायपनी। रेठि

वाक्रनिर्यकेः।।

সিংহসংহননঃ ত্রি বরাঙ্গৰাপোপেতঃ। ইত্যমরঃ।। প্রত্যেক মবয়বশুদ্ধ্যা সুন্দরঃ। সিংহসংহননঃ স স্যাদেঘা হি সর্বাঙ্গস্থা
ন্দরঃ। ইতি কোষান্তরং।। সিংহস্যেব সংহননং দেকো ২স্য
সিংহসংহননঃ। ৰতিশকো ২মং
যথাকথঞ্চিদম্বঃ। ইতি ভরতঃ
।। সিংহনাশনে ক্লী।।

निर्श्व हो। जि॰श्व की लोहमन। रेडा-मत्रीका॥

সিংহান ক্লী লোহমল। ইত্যমর: ।। তস্য ৰূপান্তরাণি যথা।
শিংমাণ ২ সিংহাণ ৩ সিংঘাণ ৪। ইতি তট্টাকা।। নাসিকামল । সিকনী ইতি ভাষা। তৎ
পর্যায়ঃ। সিংহাণক ২ সিংঘাণ ৩ সিংঘণ ৪। ইতি শব্দরত্নাবলী।। ককঃ ৫ শ্লেমা ৬ খেটঃ
৭। ইতি জটাধর: ।।

দিংহাসন' ক্লী স্থল্মরাজাসন
। ইত্যমরঃ ।। অথ দিংহাসনযুক্তিঃ। রাজ্ঞো বরাসনং নাম
শ্রীদিংহাসন মুচ্যতে । শুভে
মুহূর্ত্তে শুভমাস বর্ষে সুবার বে
লা তিথি চক্র ষোগে। কালে
নিরুৎপাত নিরীতিভাবে দিংহাসনাবস্থবিধিং বদস্তি ।। স্থির
রাশি স্থিতে ভানৌ চল্রে চ স্থির
তোদিতে। আসনারম্ভ নিচ্ছন্তি
গৃহার্ম্ভোপি ষেষু চ ।। এতেন
গৃহারম্ভাপি ষেষু চ ।। এতেন
গৃহারম্ভ দিংহাসনযো রারম্ভঃ ।
তত্ত্র ক্রমঃ। বাণবেদাগ্নি পক্ষাণি
সোপানানি মুগৈঃ ক্রমাৎ ।।
চন্ধারিংশত্তথাত্তিংশৎ বিংশতিঃ

বোডশৈৰ চঁ ৷ 'শিশ্বান্বিতানি एखवानि চরণাनि यूरेगः क्रमार ॥ नवः भरशा गर्का रूपः जिः-হো ভূকো মৃগো হয:। অষ্টো সিংহাসনানীতি নীতিশান্তবিদো विषुः॥ जानिकानि नगाजानाः ভূপতীনা॰ যথাক্রম•। স্থতৈ রফাভি রাযাম পরিণাহ-যোঃ ।। রাজপাত্র মিদ নাম সো-পান পুরুষোশ্নত। তদর্দ্ধনান তন্মধ্যে রাজাসন মুদাহত ।।। অর্দ্ধোন্নত মিদ রম্য প্রোক্ত क्लिमशैजुकाः। पिशकेकािक কোनः माष्ट्रकानीनाः स्थाययः ॥ 🛊 ॥ ज्याकानाः नकनानि । গম্ভারীকাণ্ঠঘটিতঃ পদামালো-পচিত্রিতঃ। পদারাগ বিচিত্রাঙ্গঃ खक्तः काश्नन मयुजः॥ চরণারে পদ্মকোষাৎ পদ্মরাগ বিচিত্রিতাঃ । मिक्रकी शूजिका ताजवान শাঙ্গুলি সন্মিতাঃ ৷৷ রাজাসন চতসুশ্চ এবং দাদশ পুত্রিকাঃ। রবৈত্বশ্চ নবভিঃ কার্য্যণ নির্মাণ ণ॰ চান্তরান্তরা॥ রক্তবন্তাবৃত• ছেত্ত পদ্মসি হাসন মত। অত্যোষিত্বা নরপতিঃ প্রতাপ ম-তিবিন্দতি ৷৷ ১ ৷৷ ভডেন্দ্রকাষ্ঠ

ষ্টিতঃ শধ্মালোপশোভিতঃ। শুদ্ধাফটিকচিত্রাঙ্গঃ শুদ্ধরূপ্যো-পশ্যেভিতঃ ॥ চরণাতো শ-धनाजिः পूतिकाः मश्रविःশ-তিঃ। স্থানে স্থানে বিধাতব্যাঃ শুদ্ধাফটিক সংস্কৃতাঃ।। শুক্ল-পটাবৃত ছেতৎ শম্বসিংহাসন **মত**ণ। ২।। পনসেনোপষ্টিতো গজমালোপশোভিতঃ। देभ त्रि दिव पूर्विशः काश्वरननाति শোভিতঃ।। চরণাগ্রে গজশিরঃ পুচ্ছাদেকৈক পুত্রিকা। মাণিক্য রচিতা রক্তবস্ত্রাদিক বিভূষণ ॥ গজসিংহাসনং নাম সামুাজ্য-क्लम्यक ।। ७॥ भानकात्र्वेन ষ্টিতো হংসমালোপশোভিতঃ। भूष्णद्वारेगः काक्षरनन अक्रवि-দৈশ্চ চিত্রিতঃ ৷৷ চরণাত্রে হংস-ৰূপণ পুত্ৰিক। স্ত্ৰেকবিণশতিঃ। গোমেদকোপঘটিতাপীতবস্ত্রবি-ভূষণ ৷৷ হ সিংহাসন নাম न्दीनिक विनामन ॥ ॥ हमः নেমোপষ্টিতঃ সিংহ্মালোপভূ ষিতঃ। শুদ্ধহীরক চিত্রাঙ্গঃ শুদ্ধ-কাঞ্চন নির্ম্মিতঃ ৷৷ চরণানাং সিং-হলেখঃ পুত্রিকা শৈচকবিংশতিঃ। মুক্তা শুক্তিভি রবৈয়শ্চ নির্মালে-

রেব ভূষণ ।। শুদ্ধগুণ্ডাবৃত ছে-তৎ সিংহসিংহাসনং মত। অ-ত্রোবিদ্বা নরপতিঃ ক্লৎস্নাণ সা-ধ্যতি ক্ষিতি ৷৷৫৷৷ ভূঙ্গমালোপ-সহিত শুদ্ধচম্পক করিত। শু-দ্ধৈ শ্মরকতৈ র্যুক্তণ পাদাত্রে প-ঘকোষিকাঃ।। দাবি শতিঃ পু-ত্রিকাস্ত নীলবস্তাদি ভূষণ**া** ভূ-জসি·হাসন নাম শত্ৰুক্ষ জ্ব-প্রদেণ। ৬।৷ নিম্বকাঠেন ঘটনা মৃগমালোপশোভিত। ইন্দ্রনী-टेन श्रंशनीटेनः काश्र्टननाति চিত্রিত ।। চরণাত্রে মৃগশির শ্চত্বারিংশচ্চ পুত্রিকাঃ। नील-বস্তাদিযুক্তন্ত মৃগসিংহাসনং মত• ।। লক্ষী বিজয় সম্পত্তি নৈ রুজ্য পদ মুক্তমণা। পা। কেশরেণোপ-चिंछ॰ **ट्यमालाश्रमा**ভिত॰ । সমস্তবদ্রৈ ভূবাশ্চ পুত্রিকাঃ প-ঞ্ সপ্ততিঃ।। চরণাত্রে হযশির শ্চিত্রবস্ত্রাদিভূষণ ৷ হ্যসিংহা-मनः नाम लच्ची विकय वर्कनः ॥ ৮ ৷৷ ইত্যে তৎ কথিত সারু মহাসিংহাসনাফকে । 'যথা ভো-र्জन निश्विष्ठ॰ यथा ठारेनाम्ह **१**-**खिटेंडः ॥ এडमाठिकः म**स्रा-म्यः अर्याा शृथिवी शिटः। अ-

চিরাদেব সঙ্গতে ভদা মৃত্যু র-তিক্রম•॥ পরাসনক্ষে যোরা-জা যো রাজা চ নিরাসনঃ। স পরে র্হন্যতে সিংহে রিব মত্ত-গজাধিপঃ।। স্বলগ মিত্রাসন মধ্য সংস্থিতি ন দুষ্যতীতি প্রব-দস্তি তজ্জা:। ইতি বিশেষা-मताराष्ट्रभाः। ইতি युक्तिकन्न-তরু:।। 🛊 ।। চত্রাজীকীডা-याः जयविष्यदः। यथा। जनाः জাজপদ রাজা যদা যাতে যু-ধিষ্ঠির। তদা সিংহাসন তস্য ভণ্যতে নৃপসত্তম ৷৷ রাজা চ नृशिकः इषा क्रवाष मिःशाम-न यहा। विश्वन वाहर्षे भना मनारेथक छन ७ ७ दव ॥ मिज-সিংহাসনং পার্থ যদা রোহতি ভূপতিঃ। তদা সিংহাসনং নাম সৰ্ব নযতি তদ্বল।। যদা সি-হাসন কর্ত্তুণ রাজা ষষ্ঠপদা-শ্রিতঃ। তদা ঘাতেন হন্তব্যো वतनाथि मूत्रकिंगः॥ इंछि छि-**था** मिठञ्ज । # ॥ या भागनन वित्नयः। यथा। छन्एको ह वृष-**ग**माभः मीवनाः नार्यत्याः कि-मिक्ति नवा छल्क इ **मक अन्क स मवादक ॥ १८**छो ह

জাবোঃ সংস্থাপ্য স্বাঙ্গুলীঃ সং-প্রসার্য্য চ। ব্যাত্তবজ্ঞো নিরী। ক্ষেত নাসাগ্রং সুসমাহিতঃ ।। সিংহাসনং ভবেদেতৎ পুজিতং বোগিভিঃ সদা। বন্ধত্রয়স্য স-ন্ধানং স্বরুতে চাসনোত্তমং ।। ইতি হঠপ্রদীপঃ ।।

সিংহাসনঃ পুণ বোডশবন্ধান্ত-গতচতুর্দশবন্ধঃ। তস্য লক্ষণ বথা। স্ব জজ্বাদ্বয বাহূ চ ক্লত্বা বোষা পদদ্বয়ণ। স্তনৌ ধূত্বা র-মেৎ কামী বন্ধঃ সিংহাসনো মতঃ।। ইতি রতিমঞ্জরী।।

সিংহাসনচক্রং ক্লী সপ্তবিংশতিনক্ষক্রান্ধিতনরাকারচক্রক্রয়ং।
যথা। অথাতঃ সংপ্রবক্ষ্যামি
চক্রং সিংহাসনত্রয়ং। সপ্তবিংশতিনক্ষত্রে রেকৈকঞ্চ নবাত্মকং॥ অশ্বিনী মহ্য মূলাদ্যং পঞ্চনাডী বিভেদতঃ। অশ্বিন্যাদ্যুত্তরে ভাগে মহাদ্যং পূর্বতঃ স্থিতং
।। মূলাদ্যং দক্ষিণে ভাগে জ্ঞাতব্যং নৃপতিত্রয়ং। ইতরেষু চ
রাজ্যেষু নৃপনামর্ক্ষতো বদেৎ॥
শুভাশুভ মিদং সর্বং যত্র যস্য
শনিঃ স্থিতঃ। নাডিকা পঞ্চবেধেন একৈকস্যাসনং ভবেৎ।।

আধার মাসন পটি সিংহ সিং शमनः ७था। अटेश् (वंधवणाः জ্জেय भोटेमाः कृटेत्रः ७-ভাশুভণা ঋক্ষ আধারগেরা-জা অভিধিক্তো ৰ আদনে। পরাধীনগত রাজ্যা সরুতে नाज मण्यशा व्यामनत्त्रम ॥-কেণ নীতিষুক্তো ভবেমৃপঃ। अधानभूक्रया (एवः अङ्गाणा-স্তিকরো ভবেৎ।। পটঋকে यमा রাজা উপবিকৌ नृপा-পূৰ্বরাজন্বিতে স্তুল্য শ্চির পালয়তে মহী।। সিংহ-क्षे ज्याका मि रक्षाम त्न विष्ठः। मधाममा अर्था निजा मनात्था मिख्रमखरैनः॥ সিংহাসনগতে ধিক্যো তেজস্বী ভীষণাক্ষতিঃ। চলচ্চিত্তে। ম হাক্রোধী প্রজাপীডাকরো নৃগঃ ।। তৎকালেন্দুগতে ঋন্দে জুর निर्दिध नाष्ट्रिक। खडावद्या শুতে লগে সংস্থাপ্যোন্প আ-मत्न ॥ अमृत्य ह ममारवारण छ পবিষ্টো य जामता। উচ্ছाদ্য শত্রুসংঘাত মেকচ্ছত্রণ করোতি সং ৷৷ ক্রগ্রহণতা নাডী মুপ-विस्छ। य जामत्न। वन्नन जू

মিনাশশ্চ তথা মৃত্যুঃ প্ৰজাৰ-তে ৷ আধার ঋকগঃ সৌরি র-नावृष्टि॰ करब्रांछि छ। मूर्जिकः রৌরব•তত্ত্ব প্রজাগীড়া চ জা-ষতে।। আসনে চ্ यहा সৌরি र्युक्त छ म्थामा छत्य । ज्य वा वाधिशीषाः हः मत्नामुः थः প্রজাষতে ॥ পটককে যদা সৌরিঃ পটরাজ্ঞী বিনশাতি ৷ প্রিবো বা**ধ** সমারো বা মন্তি: वस्नुकरमा श्री वा ॥ जिंग्टर जिंग-হাসনে বাপি ষদা তিঠতি সূর্য্য-**बर्ग जना यृ**ज्य न[्]नत्मदेश यिन भव्कृमस्या नृभः॥ भिम ता-स्तर्क भारह्या यना हराज्यन मन्यू-তাঃ ৷ যুদ্যাসনগতা এতে তৃদ্য রাজ্ঞো ভযকরাঃ।। ক্রুরযুক্তো ২থ বক্রস্ত ক্ররনাডীগতো ২পি वा। जानत्ने ठक्तरशारशन का-मक्तभी मरिनम्हद्रः॥ এवः श्रं छ-कनः प्रमाटनवयञ्जी न मः गरः। করোতি বিপুল রাজ্য যদ্যা-সনগতো গুরু:।। ইতি জ্যোতি-**স্তব্ত**া।

সিংহাসাঃ পু॰ বাসকঃ। ইত্য-মরঃ॥ সিংহতুল্যমুখে জি॥ সিংহিকা স্ত্রী কশ্যপপদ্শী। রাহু-

মাতা। যথা। কশাণসা গৃহিণী তু সি হিকা রাছ বাস্ত তনবাব-१९। शृर्वत्का शति কন্ধরো দৈবতৈ রবরজো নিপা তিভঃ॥ ইতি বাস্ত্রযাগতত্ত্ব।।। সি হিকাস্নু: পু রাছ:। ইতি भक्तत्रप्रोवनी ॥ वाख्युक्रवः। ইভি বাস্তবাগতত্ত্ব• ॥ সিংহী স্থী বার্তাকী। ইত্যমরঃ ।। क्केंकात्री।। वामकः। देखि त्मिनि ॥ वृश्ली ॥ त्राङ्गाला । इंडि विश्वः॥ त्रूकाशनी। इंडि রাজনির্ঘণ্টঃ॥ সিংহপত্নী চ॥ निःशैनठा खी वृङ्ठी। ইতি ভাবপ্রকাশঃ ৷৷ সিক্ সেচনে। ইতি কবিকল্প ক্রমং॥ দম্ভ্যাদিঃ সিকতা। ইতি **দूर्गामानः ॥ स्त्रोत्तर्थाजूतरः ॥** সিকতা স্ত্রী সিকতিলঃ। বালু कायू छ जृभिः। ইতি मिनि ॥ वानूका। देखि द्राक्रनिर्वकैः॥ निक्जाः भू जूमि वान्का। ইতি त्मिनी ॥ সিকতানয় ক্লী বাল্কান্যতটি ा **७९** १ वर्षा व्याप्त । देने क्र वर्ष ইত্যমরঃ 11 সিকতাবান ত্রি বালকাবহলদে

भः। তৎপৰ্যাৰ:। 'मिक्छ। २ সিকতিলঃ ৩ সৈকতঃ ৪। ইত্য-মরভরতৌ ॥ निक्छिनः वि निक्छावान्। है-ত্যমরটীকাষা ভরভঃ।। निकं जी बज्जः। देखि द्याहर्यः॥ দিক্তঃ ত্রি দেকাশ্রয়। ক্রতদে-हनः। यथा। जामाण्ह मिकाः পিতরশ্চ ভৃপ্তা একা ক্রিয়া দ্ব্য-র্থকরী প্রসিদ্ধা। ইতি বাযু-পুরাণে গ্যাপদ্ধতিঃ।। সিক্থ की মধৃচ্ছিষ্ট। মোন हेि जाया। हेि जित्निनी।। नीनी। देखि (र्यष्टकः॥ সিক্থঃ পু• ভক্তপুলাকঃ। গ্রাসঃ । ইভি बिहिनौ।। निक्षक क्री सशृष्ट्छ । इंडा-मदः ॥ क्री नानिकामन । সিজ্ঞাণ সিজ্যাণ সিক্নী ইভি ভাষা। निञ्चानक रेंछि नक्तत्रज्ञावनी ॥ मिञ्चिमी जी नामिका १ देखि रुलायूथः ॥ সিচষঃ পু॰ বক্তা। ইভিছেম-চন্দ্র:।। জীর্ণবস্ত্রণ। ইতি ত্রিকা-ওশেষঃ ॥ সিঞ্ন তি সেচনকর্তা। সিচ

ষাভো: শতৃপ্রতাবেন মিপার:।। সিঞ্চিতা ন্ত্রী পিপ্ললী। ইভি শব্দ চন্দ্রিকা।। দিয়ে। সী ভালস্থাবধনি:। ইভি

নিঞ্জা স্ত্রী অলকারধনিঃ। ইভি কেচিৎ।। তালব্যশকারাদিঃ সাধুপাঠঃ।।

সিত॰ ক্লী রৌপ্যেণ। মূলকণ। ইতি রাজনির্ঘন্টা। চন্দনণ। ইতিরত্নমালা।।

সিতঃ পু॰ শুক্লবর্ণঃ। ইত্যমরঃ॥ শুক্রাচার্যঃ। ইতি শব্দরত্না-বলী॥ শরঃ। ইতি নানার্থধ-নিমঞ্জরী॥

নিতঃ ত্রি শুক্লবর্ণযুক্তঃ। ইত্য-মরঃ॥ সমাপ্তঃ॥ নিব**দ্ধঃ**॥ জ্ঞাতঃ। ইতি বিশ্বঃ॥

সিতৃকণ্টা > স্ত্রী শ্বেতকণ্টকা-সিতকণ্টারিকা > রী। ইতি রাজ নির্বণটঃ ।।

निठककेः भू॰ माज्यस्थकी। देखि भक्तत्रज्ञावनी॥ (बठकके यूटक जि॥

সৈতকরঃ পু• কপুরঃ। ইভি রাজনির্ঘণ্টঃ।। চন্দ্রশ্চ ।।

त्रिञ्कर्गी जी वात्रकः। **१**छि त्राक्रनिर्यकः॥

বিতম্পর: পু• ইক্র: ।। ইক্র-

হন্তী। ইতিকেচিৎ।। খ্রী শেহগুঞ্জা। রাজনির্ধন্টঃ।।

নিতিচিয়ং স্ত্রী বালুকাগড়ং। বেলিধামৎস্য ইতি ভাষা । ইতিহারাবলী॥ নিতাঙ্কঃ সা-ধুপাঠঃ॥

সিতচ্চল্র॰ ক্লী রাজচ্চল্রণ। ইতি ভূরিপ্রযোগঃ॥

সিতচ্চলা স্ত্রী শতপুষ্পা। ইত্য-মরঃ।।

निष्ण्हिन् भू॰ (श्वष्ट्रस्युक्तः) षथा। निशीष षमा किन्नि तकि॰ बः कथा॰ जशासिषस्य न त्राः मूशा प्रशि। ननः निष्ण्हिन् कीर्त्विष्ण्वाः म त्राणि तामीया-रमा॰ मरहाब्द्वनः ॥ देनि निष-यीष প্रथमस्त्राकः ॥

সিতচ্ছদঃ পু॰ ছ॰সঃ। ইতি ছেম-চন্দ্ৰঃ।।

निष्क्षा खी स्थलपूर्वा। ইতি दाक्षनिर्वलैः॥

निजमर्जः पूर्वं (अञ्ज्ञाः। ইতি রাজনির্ঘন্তঃ।।

সিতদীধিতিঃ পু॰ চক্রঃ। সিতা শুক্লা দীধিতিঃ কিরণো যস্য ইতি বহুত্রীহিসমাস নিম্পারঃ।। निवरीनारं पुरः त्ववकातम् । ्याक समाहरकः ॥ रेंडि ब्रांकनिर्देश ॥ निकर्म्या जी त्यकर्मा रेडि त्रुभागा।। निष्कः भू भारतित्याः। देषि त्रव्रवाना॥ श्वन्नवर्गवृक्षकः॥ সিতথাতৃঃ পু॰ কঠিনী। ইভি त्राकिनर्वकः॥ शक्तर्ववाज् गांवश। निष्ठभी जी वर्षभूणिकावृकः। ইতি রত্নমালা।। निजनकः पुः रःगः। ইতি मकः त्रज्ञावनी॥ छङ्गानः। यथा। মাবে মাসি সিতে পকে সপ্তমী কোটিভাকরা। ইতি তিথ্যাদি-তৰু• 1 निष्णारेनिका जी खन्नगारेना-বৃক্ষঃ। শেতপাডরি ইতি হিনী ভাষা। তৎপৰ্য্যাৰ:। সিত-পত্তী২ ফলেব্লহা ৩ পিতামো-যা ৪ সবেরাকী ৫ শ্বেতাহনা ৬ कार्रगारेना १ श्वनगारेनी ४। वानाधनाः। ठिकवः। धन्नवः । উक्ष पः। वाल्यान विभ रिका

ৰুফ শ্ৰম শোফ নাশিত্বঞ্চ। ইতি

দিতপুথা ত্রী খেতশরপুথা।

व्राक्रनिर्घणः ॥

निष्णुभा जी देवेव मुख्य । रें कि कि। भन्नः॥ कालवा नका-রাদি দ্বপি পাঠঃ টা निष्णुभः भूः ष्ठगत्रदृषः। ইष्ठि **শব্দরত্নাবলী।। শেতরোহিতঃ** ॥कामः। ইতি त्राक्रनिर्यकैः॥ **मिठशूना** जी मिनका। ইতি **भक्तकावनी**॥ নিতপুশী ত্রী থেতাপরাজিতা । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। সিতমরিচ ফ্লী শ্বেতমরিচ। তৎ পর্য্যায়ঃ। সিতাখ্য ২ সিতব-· ৩ বালুক· ৪ বহুল · ৫ ধ-বল ৬ চক্রক 1। অস্য গুণাঃ । कर्षेषः। উकषः। विव ভূত **मृक्टि**द्वांग नानिष्। अवृत्राष्। ৰুক্ত্যা রসাধনত্বশ। ইতি রাজ-निर्यणैः॥ সিত্যাবঃ পু• রাজ্যাবঃ। ইতি श्रवावनी ॥ निजदक्षनः पूर भीजवर्गः। देखि (र्मठखः॥ সিতরখিঃ পু• চন্দ্রঃ। সিতঃ শু-ক্লো রশ্মিঃ কিরণো যস্য সং।। निতवर्षाणुः पुः पूनर्वा। ইতি वाकिनिर्विः ॥

সিভাক'

সভশাৰক। জী, শ্ৰেজগরপুথা। रेषि ब्राजनिर्देशः।। সতশিষিকঃ পু॰ গোধ্যঃ। ইতি **ट्याटसः।। भिक्रिमियिका**शि-भार्तः ॥ जैङ्भियः क्री टेनस्रवनवणः। তস্যান্বপান্তরাণি। শিতশিব । मिछिनिव[•]। भीछिनिव[•]। भीछि-সিব । ইত্যমরটীকা ॥ সতশিংশপা স্ত্রী শ্বেতশিংশপা বৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। সত্শূক: পু॰ যব:। ইত্যমর টীকাষা ভরতঃ।। সিভশূরণঃ পু॰ বনশূরণঃ। ই**তি** द्राक्रनिर्घकः॥ দিতদপ্তিঃ পু• অজ্জুনঃ। ইতি কেচিৎ॥ শ্বেতাশ্বন্দ ॥ নতসর্ষপঃ পু॰ গৌর**সর্যপঃ**। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ সতসারঃ ১পু॰ শালিঞ্চশাকঃ। দৈতসারকঃ) ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ নতসি;হী স্ত্রী শ্বেতকণ্টকারী। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ নতসিঝুঃ স্ত্রী গঙ্গা। ইতিশব্দ-রত্নাবলী।। সতা স্ত্রী শর্করা। ইত্যমরঃ॥ অস্যাগুণাঃ। খণ্ডন্ত দিকতা

ৰূপ• সুম্বেত• শৰ্করা সিতা। সি^{ন্} তা সুমধুরা রুচ্যা বাত পিন্তার্সু मारशेषी मूर्छ। इर्फि खुदान् হন্ডি সুশীতা শুক্রকারিণী।। रेि द्राकिनिर्मिन्छः।। मिलका। ইতি শব্দরত্বাবলী।। শ্বেতকণ্ট-कात्री॥ वाष्ठि॥ विनात्री॥ त्थि जर्दा।। एक्तिका।। कर्हे वि-नी।। यहाः। शिका।। जाय-মাণা।। তেজনী। ইতি রাজ-নিৰ্ঘন্টঃ ৷৷ পৰ্বতজাতাপরাজি-তা। ইতি রত্নমালা।। मिতा छः पू ठसः॥ कप् दः। ইতি শুভাৃ শুশকদর্শনাৎ।। मिठा श्वरेजन क्री कर्भू तरेजन। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ সিতাখণ্ডঃ পু॰ মধুজাতশর্করা। **७९** भर्यायः। थलकः २ मिछ-জাত শর্করজা৪ মাধবী ৫ ম ধূশর্করা ৬ মাক্ষীকশর্করা १। **जमा ७ग**ः। অতিমধ্রত্ব । ठक्क्**राष्ट्र•। इर्फि अ**र्छ जैन कक শ্বাস হিক্কা পিত্তাসূদোৰ না-শিত্বঞ্চ। ইতি রাজনির্যন্টঃ॥ সিতাগ্রঃ পু• কণ্টক । ইতি হা-द्रावनी ॥ সিতাক্ষঃ পুং বালুকাগডমৎস্যঃ

গিতাৰ্জ

া ইতি হারানলী ।। সিতালঃ পুং 'খেইরোহ্ডঃ । ইতি রাজনির্বন্টঃ ।।

নিতাজাজী স্ত্রী খেডজীরক: । ইতি রাজনির্যক্ত: ।। নিতাদিং পু• খড়: । ইতি রাজ-নির্যক্ত: ।।

নিতাননঃ পুণ গরুড:। ইতি কেচিৎ।। শুক্লমুখযুক্তে ত্রি।। নিতাপাকঃ পুণ মযুর:। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষ:।।

সিতাজ কী শ্বেতকমল । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ।।

দিতাভঃ পু॰ কপূরঃ। ইতামর দীকাষা রাষমুঙ্গটঃ।। দিতাভা স্ত্রী তক্রাহ্বা। ইতি

ুরাজনির্ঘণ্টঃ ॥

সিতাভূঃ পু॰ কপূরঃ। ইতামরঃ॥ সিতাভূক• ক্লী কপূরি•। ইতি রত্মালা॥

সিতাম্বরঃ পু॰ শ্বেতবন্ত্রপরিহিত বতী। ইতি হলাযুধঃ।। শুক্ল-বন্ত্রপরিধাধিনি ত্রি।।

সিতাভোজ ক্রী শেতপদা । ইত্যমরঃ ॥

সিতার্জ্জকঃ পু• শ্বেততুলসী। শ্বেতাজবলা ইতি হিন্দীভাষা। **নিভাব**

পতা ও ক্রের্কা ৪

कः ৮। जनाखनाः। कर्षे । উঞ্চত্ব•। কৰু বাত নেত্ৰামৰ না-**শিष्। ऋठाष्। সুখপ্র**সবকা-त्रकष्य। देखि ताकनिर्वणः॥ সিতালকঃ পু॰ শ্বেতমন্দারকঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ দিতালতা স্ত্ৰী শ্বেতদূৰ্বা। ইতি রত্বমালা ৷৷ সিতালিকটভী স্ত্রী শ্বেভকিণিংী-वृक्तः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ।। **সিতাবরঃ পু•় শা**কবিশেষঃ । मुम्नी देखि ভाষा। তৎপর্য্যাযঃ । সূচ্যাহ্মঃ ২ সূচীপত্রকঃ ৩ প্রী-বারকঃ ৪ শিখীঃ ৫ বক্রঃ ৬ স্ব-স্তিকঃ ৭ সুনিষগ্লকঃ ৮ ঙ্গরুটঃ ১ সঙ্গটঃ ১০ সূচীদলঃ ১১ থেতা-বরঃ ১২ মেধারুৎ ১৩ গ্রাহকঃ ১৪। অসা গুণাঃ। সংগ্রাহিত্বং। কবাষত্ব। উক্তত্ব। ত্রিদোব-नामिष्। त्यशं कृति अन्षः। मार जुत्र शांतिष्। त्रभायन प्रशः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।। নিজাকা-রিত্বণ। ইতি লোকপ্রসিদ্ধণ।।

তস্য লক্ষণ যথা। চাক্ষেরী স-

দৃশং প**ত্রে শুভূজন ইন্টা**রিভঃ। শাকোজনাবিতে দেলে চতুলা শ্রীতি চোচাতে ।। ইতি ভাবপ্র কাশং।। দিতাবরী ত্রী বাস্টী ৷ ইতি রাজনির্যক্তিঃ।।

নিতানিতঃ পু॰ বলদেবঃ। ইতি
হেনচন্দ্রঃ। শুক্রনহিতশনিঃ।
যথা। নিতানিতৌ চন্দ্রমনোন
কশ্চিৎ বুধঃ শশী দৌম্যানিতৌ
রবীন্দু। রবীন্দু ভৌমা রবিত স্তু
নিত্রা মিত্রারি শেষশ্চ সমঃ প্রদিন্টঃ।। ইতি জ্যোতিস্তব্ধণ ।।
শুক্রনহিতক্রকণ্ট।।

নিতাহ্বনং পু॰ শ্বেভশিগুঃ।। শ্বেত্রাহ্তিঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।।
নিতিঃ ত্রি শুক্লঃ।। ক্রফঃ। ইত্যন্রটীকাষা॰ রমানাথঃ।।
নিতিকঠঃ পু॰ শিতিকঠঃ। শিবঃ
। ইত্যমরটীকাষা॰ নিতিশবাদ্য
দন্ত্যাদিশ্বদর্শনাৎ।।

নিতিমা পু• শুক্লতা।। ক্ষণতা। ইতি নিতিশকাদিমন্ প্রত্য-ষেন নিষ্পন্ন: ।।

সিতিবারঃ পু• সুনিষণ্গকঃ। ইভি
ভাবপ্রকাশঃ।।

जि**लियानाः प्र** वनामवः। देखि

নীলা হরণ ক্ষমণ নাক ।। নিতেতরঃ পুং শান্দণানিঃ ।। ক্লমণ ইভি রাজনির্বন্তঃ ।। শুক্লেতরবর্ণন্ড ।। নিতেতবগতিঃ পং অগিঃ। ইভি

সিতেতরগতিঃ পু• অগ্নিঃ। ইতি হলামুধঃ।।

সিতেক্ষু পু• শ্বেতেক্ষু। ইতি রাজনির্বন্টঃ ।।

দিতোদর: পু• সবের:। ইঙি হেমচন্দ্র:॥ শুক্লসন্দিষ্তে তি॥ শুক্লসন্দৌ ক্লী॥

দিতোন্তব॰ ক্লী শ্বেতচন্দন•। ইভি কেচিৎ।। শর্করাজাতে ত্রি।। দিতোপল• ক্লী কঠিনী। ইভি

ত্রিকাণ্ডশেষঃ।। সিভোপদঃ পু• স্ফটিকঃ। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ।।

সিতোপলা স্ত্রী শর্করা। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥

निष्णः क्री टेमक्करनवणः। ইতি द्राष्ट्रनिर्वेन्छैः ॥

निकः पू॰ मित्रपानिविर्णयः।
इंडामद्रः॥ म जू ज्ञानिमानिश्वत्गार्ट्याला विश्वातम् श्रे ख्रे छिः।
देखि खद्रवः॥ द्यामानिः॥ विऋखानिमश्ववि॰माखिरयागास्तर्भदेखकवि॰मायागः। देखि स्मिनी

।। তত্ৰ জাতকল । জিতেন্সিयः गर्बक्लानिशादना शीरता २कि শুরো মধুরো বিনীতঃ। সভ্যো-পপন্ন: ক্লুতভূরিভোগো ষদ্য প্র-मूलो किन मिक्सरागः॥ ইতি काष्ठीथमीभः॥ वावहातः। रेि गयत्रत्रावनी॥ क्रयः ध्युतः ॥ ७७:। ইতি त्राक्रनिर्घकेः ॥ **নিদ্ধঃ**, ত্রি প্রনি**দ্ধঃ**।। নিতাঃ।। নিষ্ণয়:। ইতি শব্দরত্নাবলী।। मुकः। ইতি হেমচন্দ্রঃ॥ পঞ্চ॰। यथा সুমन्नः। পর্যাসিত পুনঃ সিদ্ধ মভোজ্য মন্যত্ত হিরণ্যো मक न्नाना । देशि वाक्वावर ॥ मञ्जनिक्षिविभिक्तः।. यथा। অথ মন্ত্রসিন্ধে রুপাষাঃ। গৌ-তমীষে। সম্যগনুষ্ঠিতো মন্ত্রো यि गिक्ति न जाया । भून স্তেনৈৰ কৰ্ত্তৰ্যা ততঃ সিদ্ধো ভবেদ্ধুবং॥ পুন রনুষ্ঠিতে। ম खा येनि निक्ति ने कायर । পুন স্তেনৈৰ কৰ্ত্তৰ্যণ ততঃ দি-ছোন সংশ্यः ।। পুনঃ সো श्नृष्ठिएं। यस्त्रा यनि निक्ति न জাযতে। উপায়া স্তত্র কর্ত্ত-ব্যাঃ সপ্ত শঙ্কর ভাষিতাঃ ৷৷ ভাষণ রোধন বল্যা পীডন

लाय लायनः। पर्नाखः खन बाद वर्गाद छछः शिक्ता छत्व-মনুঃ।। ভাূমণ বাষুবীজেন य-থানুক্রমযোগতঃ। ভন্মন্ত্র বন্ত্র আলিখ্য সিহ্ল কপূর সন্ধুনৈঃ॥ উশীর চন্দনাভ্যান্ত মন্ত্রণ সংগ্র-थिङ निर्थ । की ताका मधु তোষানা মধ্যে তল্লিখিত ভ (त्।। शृक्रनाष्क्रशनास्क्रामा ज्ञाभिकः मिक्तिमा जरवर । जु-মিতো যদি ন সিদ্ধঃ স্যাডোধ-ন• তদ্য কার্যে**ৎ।।** সারস্বতেন বীজেন সংপ্টীক্তা সংজপেৎ। এব রুদ্ধে ভবেৎ সিদ্ধোন চে-(एठक्मीम्बर ॥ जनक हमन॰ **कर्छ॰ र**ित्रजा भाषन॰ गिना। এ-তৈস্ত মন্ত্ৰ মালিখ্য ভূৰ্জ্জপত্ৰে সু-শোভনে।। ধার্য্য কণ্ঠে ভবেৎ সিদ্ধঃ পীডন বাস্য কার্যেৎ। অধরোত্তর যোগেন পদানি প-রিজপ্য বৈ॥ খ্যাষেচ্চ দেবতা॰ তম্বৎ অধরোত্তর ৰূপিণী ৷ু বি-मा। गामिञामूरक्षन निथिषाक्रमा চাৰ্জ্যিণা।। তথাভূতেন মস্ত্রেণ **र्हामः कार्याः मिर्टन मिर्टन। शी-**ডিতো লজ্জ্যাবিষ্টঃ निष्णः मा দথ পোষ্যেৎ ৷৷ বালাষা স্ত্ৰিত্য

গিদ্বকা

বীক্ত আদ্যন্তে তস্য বোজ্বেৎ ा लाकीत्र यथूनानिथा विष्णाः भारने विভावस्था। भाषिरजा **२४॰ जरवर मिस्का न छर-अवीं** ভ লোবণং। ছাভ্যান্ত কাযুবী-काञा" मञ्ज वर्गाविषर्श्विन ॥ वया विका शतन भाषा। निश्विष বরভন্মনা। শোবিতোপি ন সি-🐃: गाष प्रशीरवा १ भिकीक्छ: ॥ चारश्रत्यनःज् वीरकन अस्रदेगाः टिक्क सकत् । जामाञ्च सथः **छ**र्जुः क खाजराका इक्यां।। उन्नर् क्रमा टेडिटलन मख मालिथा था-द्रस्थ । क्षेरम्य ज्ञा मञ्जः **নিদ্ধঃ স্যাচ্ছ্ছরোদিত•।। ইত্যে**-**७६ क्षिछ॰ সমাक् क्वितन** छव ভক্তিতঃ। একেনৈৰ ক্লুতাৰ্থঃ স্যা ৰহভিঃ কিমু সুত্ৰতে।। ইতি তন্ত্ৰ मातः॥ ●॥ मिक्किविमिकः। म ह চতুক্ত্রিশবিধঃ। বথা। চতুক্ত্রি॰ निष्धः निष्कः नर्वकरमाशकात কঃ। ভ মুগৈতি স্বয়ণ সিদ্ধা ভক্ত স্ত॰ নৈব বাঞ্তি।। দ্বাত্তি॰শদ্বিধ॰ निक्षः गर्वमाधनकात्रमः। ममुथाद व्यायका॰ नन्म निश्वमञ्ज॰ गृहान ह।। অনিমা লঘিমা প্রাপ্তিঃ প্রাকা मा गरिया ७४।। ঈশিष्क दिन

षक তথা কাষাবসাবিতা।। দূর-**শ্রবণ মেবেভি দারকাষাঃ প্র**ট্র-শন্দ । মনোষাধিত্ব মেবেভি স-ৰ্বজন্মভীন্সিত।। বহিস্তেত্ত क्लरु कित्रकी विष् त्यव वा। ৰাষ্ভত কুৎপিপাসা নিজা-স্তম্ভন মেক্চ।। কাষব্যুহক বা-क्तिकि मृजानयन मीनिज् । मृकीना॰ काद्रगटेक्द প্রাণাকর্ম-**। या है।। अशिनांक अमिकः** लाजामीनाक खडनः। रेखिः ৰাণাশ ভাষনক বৃদ্ধিভাষন দেব চ।। ইতি ত্রদ্ধবৈবর্তে শ্রীক্রক। क्याबटल १४-व्यथायः ॥ तिक्कः पुर निकृवादः॥ भ लः । ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। मिक्क्कारमधनी जी कामाधाराः পক্ষমূৰ্ত্যম্ভৰ্গতপ্ৰথমমূৰ্ত্তিঃ৷ ত-मा बल स्था। ब्रिक् निम् मूज-কৰ্ণা সন্ধুমাপীতবৰ্ণা মণি কমক विठिखा व्यानकर्गा जित्नका । অভ্যবরদহন্তা সাক্ষ্যুত্রপ্রাণ্-ন্তা প্রণতসূরবরেশা সি**ত্ত**কা (यश्री म्।। ज्रम्वक्यलम्यः রক্তপদ্মাসনাখ্যা নবতরুণশ-রীরা মুক্তকেশী সুহারা। শক

शि शृश्वृत्रखनायूथा मता-

का निर्देशियमवेजा निर्माण द्भाषती या ॥ विभूगविख्यमा-बी त्यत्रवङ्गा मूक्नी मनिष क्त्रकंप्रस्था नामि ह्यावन्या । यनगिक पृथंपिका वानिमूखा-লসম্ভী গ্রনচলনশক্তা সংশ্রন তহানভাগা॥ ইতি কালিকা-भूद्रांत्व ७३ व्यथायः ॥ সিদ্ধগঙ্গা ত্রী সন্দাকিনী ৷ ইভি क्रिवेदः ॥ সিম্বজল ক্লী কাঞ্চিকণ। ইতি श्रात्रावणी ॥ शक्कात्रि ह ।! मिक्सानवः पूर्ं निवः। ইতি শব্দরত্বাবলী।। সিদ্ধধাতুঃ পু• পারদঃ। ইভি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ৷৷ निक्षशीर्ठः पूर निक्षश्वानः। यथा। জাভো লক্ষ্বলি ৰ্যত্ত হোষো বা काष्टिमः भाकः। मश्विमाजः • পঃ কোটিঃ সিদ্ধপীঠঃ প্ৰকীৰ্ত্তি-जः॥ **ই**जि जन्नः॥ निक्तभूतः क्री ভृগোলস্যাধো रमगिरिणयः। यथा। लका अभ-(ध) सगरकां है त्रगाः आक् श-न्हिरम রোমকপত্তনক। অধ-স্ততঃ সিদ্ধপুর সুমেরঃ সৌম্যে

তপাদান্তরিভানি ভানি স্থানা-मि वज्रमानविषा वनिक्र।। रेि निकास्निद्धामिशः॥ **पू॰ क**त्रवीतवृक्तः। **গিন্ধ পুসাং** ইভি রাজনির্ধণ্টঃ।। निक्थरगाजनः प्र गोत्रगर्यशः । इंडि द्राक्षमिर्वकः॥ निक्षमञ्जः प्र निक्षिश्राखमञ्जः। ৰথা। ভাত্তি-শবিধ সিদ্ধ সৰ্ব-माधनकात्रनः। मग्रुथाय कार-তা॰ নন্দ সিদ্ধমন্ত্ৰ॰ গৃহাৰ চ ॥ ७म् मर्द्यकाच मर्वविष्वविमा-नित्म मरूमृपनाय चाट्र्र्डाव॰ मखन्छ मर्दियाः कन्नशामशः। माष्ट्रदार ह कथिकः मिक्सानाः সর্বসিদ্ধিদঃ।। অনেন বোগিনঃ निका मूनीखाक मुद्रा खथा। भटनकक्राभरेनव मञ्जीनिक र्छ-বেৎ मछा।। ইভি बन्धरिवदर्ख শ্ৰীকৃষ্ণজন্মখণ্ডে ৭৮ অধ্যায়ঃ ।। निक्रामिकः शू॰ छ्वतार्कान्छ-वथखः। ইতি রাজনির্বক্টঃ।। निक्रांशिनी जी यागिनीवि-শেষঃ। ইত্যপরাজিতান্ডোত্র॰॥ সিহ্মরসঃ পু॰ পারদং॥ রসসি-सः। ইত্যজ্यপাनः॥ २व वारमा वर्षवाननक।। अवृ॰ । त्रिक्षत्रमः बि वाजूश्रज्ञिः। देि

रमिनी ॥ निकविका जी महाविकाबित्नवः । यथा। कानी छात्रा मङ्खिला रबाष्ट्रभी जूबत्नश्रही। देखेजेवी ছিন্নস্তা চ বিদ্যা ধুমাবতী তথা ॥ दगलामूथी मिक्बिए। माछ-की कमलाशिका। अठा क्ल म श्विनाः निक्वविनाः अकी र्खिञाः॥ देखि ठबनातः ॥ निक्रमितन क्री काञ्चिक । इंडि ত্ৰিকাণ্ডশেষঃ॥ সিদ্ধসাধন ক্লী সিদ্ধস্য বস্তুনঃ माधनः। माधाबद्यानिन्छशम-ছেপ্যনুষান । যথা। অতএব ন यक्यानिकिः निक्रमाधन व। ইতি সিদ্ধান্তলক্ষণেজগদীশঃ !৷ निक्रमाधनः श्रु भीत्रमर्गः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ निक्रमाधाः । पूर मञ्जवित्मयः। यथा निक्रिकः । निक्रिनित्कः। यरथा-ক্তেন বিগুণাৎ সিদ্ধসাধ্যকঃ। সিদ্ধসুসিদ্ধো ২ৰ্জজগাৎ সি-काति रंखि वास्तवान्।। रेखि ভন্তসার: ৷৷ निक्रिकः जी भना। ইভি बि-কাওশেষঃ ॥

विक्रमूनिकः भूः मञ्जवित्मुकः।

নিম্বাত্ত

समा श्रेमां मिस्माधान्य करेंगाः ।।

निस्तानः प्रः कार्डित्मः। इंडि ममाद्रावनी ॥

निस्ताविष्यः प्रः वर्षे करें खत्रमः।

रेडि छमार्कि खत्रमं छनामरखा
तः।। निस्ताकरनाभागिर छ ति।।

निस्ता जी सिस्तः। ইडि ताक
निर्वा जी सिस्तः। ইडि ताक
निर्वा गाँ । रमामिनीविरम्यः।

यथा। ममा भिन्नन। धना।

छामती छिका छथा। छ द्यामिनारकी

श्रेकीर्खिणाः॥ ইडि झाफकमी
निका ॥

मिक्कांखः प्र शूर्वशकः नित्रमा
मिक्कांखः प्र शूर्वशकः नित्रमा
मिक्कांखः विश्वांखः । ताकाखः २ ।

देलामतः ॥ नविवध्कां विर्धाः । स्था । वक्कमिकाखः ३

मूर्यामिकाखः २ माममिकाखः ।

य्रम्भिलिकाखः ६ गर्गमिकाखः ।

य्रम्भिलिकाखः १ भूमेखामिकाः । यः

तामत्रमिकाखः १ भूमेखामिकाः । यः

वाधिकत्रभाजाभगमः विरित्रिकाखः । मर्वल
ख्राखः । म ह ह्यूर्विवः । मर्वल-

হিত্যপান্তরভাবাৎ৷ সর্বভন্তা-বিরুদ্ধ স্তন্তে ২ধিরতো ২র্থঃ স ৰ্তন্ত্ৰসিদ্ধান্তঃ॥ ১॥ সমানতন্ত্ৰ-সিদ্ধঃ পরতন্ত্রাসিদ্ধঃ প্রতিতন্ত্র निकाखः॥२॥ स्वनिकादनाः প্রকরণসিদ্ধিং সোধিকরণ সি দ্ধান্তঃ॥৩॥ অপরীক্ষিতাভ্যু-পগমাত্তবিশেষপরীক্ষণ মভ্যু-পগমসিদ্ধান্তঃ 11 ৪ ৷৷ ইতি গোত্ৰসত্ৰ ৷৷ সিন্ধান্তাচার: পু ভান্তিকাচার-वित्नवः। यथा। जाजानः एतः वठा॰ यदा राज्यस्वीक मान-रैनः। नता एकः नता भारुः সিদ্ধান্তাচার উচ্যতে।। ইত্যা-চারভেদতন্ত্র ।। সিক্বান্তী^ন পু॰ দীমাণসকঃ। ইতি ভূরিপ্রবোগঃ ৷৷ निकालना जी तन। रेडि एम-ठकः ११ निकारिका जी ठजूर्वि निज्यूक भामनरमवं अर्थ उर्दा वी विर्म-यः। ইতি হেসচন্দ্রः॥ সিদ্ধারিঃ পু॰ মন্ত্রবিশেষঃ। এতৎ প্রমাণ সিদ্ধসাধ্যশব্দে ডক্টব্য मिकार्थः भू वृक्षार्थिणा। रेि ए्यक्सः॥ माकामिः रः।

रेि प्रिमिशे । (येट मर्क्यः । रेणमद्भा जना गर्गावखनाः । भौत्रनर्यभाष्य फर्फेन्याः ॥ বটীবৃকঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ।। थिनिकार्थः। यथा। निकार्थः সিদ্ধসম্বন্ধ শ্রোভূ শ্রোভা প্রবর্ত্তভে। গ্রন্থাদৌ তেন ব-ক্তব্যঃ সম্বন্ধ্য সপ্রধাঞ্জনঃ ॥ ইতি ব্যাকরণটীকা।। দিদ্ধার্থ। ক্রী চতুর্থজিনমাতা। ইতি হেমচন্দ্রঃ ৷৷ मिकिः जी मूर्गा। यथा। माधना সিদ্ধি রিত্যুক্তা সাধকা বাধ ঈ भत्री। ইভি দেবীপুরাবে ৪৫ ' शावः॥ सिक्षनात्मोयशः। रेजा-मद्रः॥ सागिक्तभरः॥ निष्णः **खिः॥ भा**म्का॥ चर्छाकः ॥ वृक्तिः। ইভি स्मिनी।। स्माकः । ইভি হেমচন্দ্রঃ।। সম্পতিঃ। रेि धत्रनी ॥ वृष्टिः। रेि नय-রত্নাবলী।। 🐠। অফসিছিনা-मनक्यानि यथा। व्यनिमा महि-মা চৈব লম্বিমা প্রাপ্তি রেব চ । প্রাকাম্যঞ্চ তথেশিত্বণ বশিত্বঞ্চ তথাপর•॥ যত্ত কামাবসাষি-ष গুণানেতান পৈশ্বরান্। প্রা-প্নোত্যকৌ নরব্যাস্থ পরনির্বাণ-

সূচকান্॥ সৃন্ধাৎ সৃদ্ধভরো रनीयान् नीयुषाझयिमा खनः। মহিমাশেষ পূজ্যদ্বাৎ প্রাপ্তি नीक्षाणा यमा यह ॥ व्याकामा यमा गालिषा मेनिष किय রো যতঃ। বশিত্বাৎ বশিতা নাম ষোগিনঃ সপ্তমো গুণঃ।। যত্তেছাস্থান মপ্যুক্তণ যত্ত্ৰ কা মাবসাযিতা। ঐথর্য্য কার-বৈ রেভি র্যোগিনঃ প্রোক্ত ম-र्येथा।। ইতি মার্কণ্ডেষে দত্তা-**क्वियानक्**म न्वारम स्थागवञ्च छ-নামাধ্যায়ঃ ॥ 🗱॥ ভাবনাসি দ্ধি র্যথা। তীর্থে কান্তে ২ভীষ্ট-**रिट्र एट्डी मट्ड जटवोयरथ** । वाष्ट्रा ह सामृगी यानाः निक्षि खामाक ठामृगी।। ইতি बंका বৈবর্ত্তে শ্রীক্ষজন্মগণ্ডে ৩১ व्यशायः॥ ॥ ज्ञाना मिकि ৰ্যথা ৷ তন্মাৎ স্বমপি ভূপাল **(मर्शि ना) या क्किंड॰ थन॰। मा** নাৎ জ্ঞান ততঃ প্রাপ্য জ্ঞা-विक्रभूतात नित्व क्रभाशान-नाभाधारायः॥

সিদ্ধিদঃ পু॰ বটুকভৈরবং। ইতি
ত্য্য স্থোত্র•।। সিদ্ধিদাতরি ত্রি

। यथा। नधूमारम जू मः श्रात्थ শুক্লপকে চতুর্দদী প্রোক্তা ম-দনভঞ্জীতি নিদ্ধিদা তু মহোৎ-मद्रा। ইতি তিখ্যाদিতত্ত্ব ।। শুভবোগবিশেষঃ। যথা। শুক্রে नना वृद्ध , ज्जा भरनी तिका म्द्रफ क्या। खदो भूनी हमः-যুক্তা সিদ্ধিযোগঃ প্রকীর্ত্তিতঃ ।। ইতি জ্যোতিঃসাগরঃ।। निष्किरशागिनी खी रशागिनी-**७**नः। यथा। श्रेनवानग्रान्त या-विमाः मृजाटमी न मभीतिलाः १ ष्मगार्यः वित्नत्या यथ त्यावि-कि मगुनामराष्।। जाकिनी সা ভবত্যেব ডাকিনীভিঃ প্র-'জাযতে। পতিহীনা পুত্রহীনা ষথা স্যাৎ সিদ্ধিযোগিনী॥ ইতি **उज्जनातः ॥ क्षा मक्ना शक्-**শৎকন্যাঃ। যথা। সতীজ্যো-তিঃ স্মৃতিঃ স্বাহা হ্যনসূ্যা স্বধা তথা। প্রীতিঃ ক্ষমা চ সংভূতিঃ সন্নতিশ্চ অরুম্বতীশা কীর্ত্তি र्लची ४ वि भिंश भूषिः अका ক্রিযামতিঃ। বৃদ্ধি লক্ষাবপুঃ শান্তি স্তব্দিঃ সিদ্ধি স্তথা রতিঃ ॥ অরুদ্ধতী বদু ধানী লয়। ভানু मॅक्स वर्णे। महन्ना ह मृद्धा ह माध्या विश्वा ह नामणः ॥ जिल-जिल्ह मिछिटेल्ड मन् कानाम-नामूया। मि॰ हिका मृत्रमा कज विन्छा मृत्रज्ञिः भगा॥ ज्ञाक्ष देत्रा ह व्यावा ह मक्क नगाः श्र-कीर्खिणः। भक्षाम्य मिह्नि-यागिनाः नर्बलाकमा माजतः ॥ देखि वङ्गिभूतात्व भन्छम-नामाधायः॥

সিদ্ধিলী স্ত্রী ক্ষুদ্রপিপীলিক। । ইতি কেচিৎ।।

নিজিন্থান ক্লী পুণান্থানবিশেষঃ
। ষথা। অতঃপর প্রক্যামি
নিজিন্থানানি যানি তৃ। ধিন্মি
নারাধিতা দেবী কিপ্রণ ভবতি
নিজিদা।। তৃঙ্গার শতশৃঙ্গঞ্চ
ত্রিকৃটি পর্বত তথা। বিদ্যা
গঙ্গা সরিন্দ্রত রেবাতীর মথাপি
বা।। পযোক্ষী অসুরাখা। তৃ
অথ বা মগুলেশ্বরে। শঙ্করেশ্বর
রামেশে অথ বা অমরেশ্বরে।।
বেত্রবত্যা স্তটে রম্যে হরিশ্চন্ত্রে
তথা প্রিষে। সরস্বতীতটে পুল্লের্ড জপ সর্ব্যাৎনন্দাহে রু
তমানসঃ। ভৈরব শুলভেদ্ঞ্

क्लिण विश्वास्त्रकः।। अर्केट-कः हत्काष्ट्रामः क्लानाकाश-नामकः। अस्त्रादिकः स्त्रास्त्री-माः स्नातम्ब्रानि वर्स्वरूपः।। हेलि मित्रील्वारः स्थाप्टरमानामाशायः॥

मिट्सभूती जी एमबीविटमयः। यथा। निका निष्क यती नि क्विताधार्वशादेश यूं छा । यञ्ज मि क्षिथ्रमा॰ रशनिमिक्षिमा॰ लिश्र-শোভিতা•॥ ইতি মুওমালাত-ন্ত্রে ১১ পটলে মহাবিদ্যান্তোত্র• ।। অপিচ। ক্লফেন বলভডেণ গোপৈঃ ক সজিষা সুভিঃ। স-ক্ষেত্ৰকণ ক্ষতণ তত্ৰ মন্ত্ৰনিশ্চযকা-त्रकः ॥ जना मक्किटकः मा ह সিদ্ধা দেবী প্রতিষ্ঠিতা। দিদ্ধি-প্রদা ভোগদা চ তেন সিদ্ধেশ্ব-ती मृठा॥ मरकठरकभतीरेकव मृकु। निक्ति मवाश्रूया । ইতি বারাহে মথুরাপরিক্রমপ্রাদুর্ভা-व नामाशासः॥

সিক্ষোষঃ পু॰ গুরুক্রমবিশেষঃ।
বথা ভল্লে। অথ তারা গুরুন্
বক্ষ্যে দৃষ্টাদৃষ্ট ফলপ্রদান্।
উর্দ্ধকশো ব্যোমকেশো নীলকতো বৃষধজঃ।। দিব্যোষাঃ

ৰত্নতঃ। ৰশিষ্ঠঃ কুৰ্মনাথ চ नीननारवा गरश्यतः। इति नात्था भानत्वेषान् मृशू वक्षा-মিতদ্ভৰন্। ভারাবতী ভানু-यठी क्याविमा यटहामती ॥ সুখানদঃ পরানদঃ পারিজাতঃ जलम्बतः। विक्राभागः रकत्वी চ কথিত ভারিধীসল ৷৷ ৃত্যা-नमनाथ भकान्ता खत्रवः मई-সিদ্ধিদাঃ। স্ত্রিষোপি গুরুৰপা-শ্চ অয়াস্তাঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ।। ইতি তন্ত্রসারঃ।। অন্যক্ষ। ত্র-कानमः भूर्नम्य कनिख क-লাচলঃ। সমারঃ ক্রোধন শৈচব তথা ह अत्रहीलनः।। याया या-यावणी टेंहव मानदिशान् भृन्-প্রিষে। বশিষ্ঠঃ কুর্ম্মনাথশ্চ মী-ननारका मरहस्रतः ॥ इतिनारका मानदोषानथ वक्गामि मम्ख-बन्। ইতি শক্তিরত্বাকরতন্ত্রণ।। **७**थो। नात्रमः कामारगः मञ्जू ভাৰ্গবঃ সলকৌশিকঃ। এতে 'शक महारमच मिरकोषाः शति-कीर्खिणाः॥ देखि छञ्ज॰॥ নিগ্র ক্লী কিলাসরোগঃ। ইত্য-यदः ॥

निकिता वर्त्त निक्तियान मृत् निका की किलामद्वाकाः। देखि ट्यह्यः ॥ ত্রি কিলাসী। ইভ্য-**গিয়ালঃ** भद्रः ॥ সিশ্বলা স্ত্রী মৎস্যবিস্কৃতি:। ইতি त्यिमिनी ॥ निश्ववान् बि किलामद्रागविभि-कः। ইভি সিশ্বশন্দভার্থে বভুপ্রত্যবেন নিষ্পন্নঃ।। 'সিগ্না জ্রী কিকাসরোগঃ। ইভি ছেমচন্দ্রঃ।। সিধাঃ পু• পুষ্যনক্ত্ত•৷ ইত্য-यदः ॥ निधुः पूर नाधुः॥ वृक्तः। रेजू-नामिटकोयः ॥ সিধুকা স্ত্রী বৃক্ষবিশেষঃ। সেধৃতি রোগহন্ত্র মিতি সিধুকা। সীধ ইতি খ্যাতো বৃক্ষঃ। বিধু গত্যা॰ নামীতি রক্ ততঃ স্বার্থে কঃ मङ्गावित्य द्रिनिगुष्वाद न देद। ইত্যমরভরতে।।। निधुकावन क्री प्राचामान। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ॥ • সিন॰ ক্লী শরীরণ। ইতি সংক্ষি-श्वनादत्रागामिवृक्तिः ॥ সিনঃ 🥞 আসং। ইতি মুগ্ধবো-ধব্যাকরণ ৷৷ কাৰঃ ৷ ইতি

गिर्भूष

किर। श्रुक्त श्रुविनि कि विश जिनी कि श्रुक्त श्रुविनि को। यथा । स्वा जिन्न जिनी स्मिनी। देनि वाणिः। देनि मिनीवानी भक्ष जिकाशा अवलः॥ जिनीवानी जी मृस्केन्यूक नामा-वाजा। देनायतः॥ जा ज्यु-कंनीयूकामावाजा। जिनी स्थ ना वाना ज्ञुक्त नाजाः जिनी वानी नमानिषामीन्। देनि ज् श्रीकाशा अवलः॥ मूर्गा। देनि स्मिनी॥

সিন্দুকঃ পু• সিন্দুবারবৃক্ষঃ। ইত্য-মরঃ ৷৷

मिण्यादः प्र वृक्षविर्ध्याः नि
मिणा देखि ভाষা। देन छूद देखि

ह कहिए। छए पर्यायः। मिण्

कः २ देख्य मूदिमः ७ निर्छखी ८
देखानिका ए। देखानी मिल्रा ५ मिण्र्यादकः १ देखानी

मे प्रीत्वां ने भकानी २० का
मनामिनी २२। देखि दब्रक्तायः

। स्थ्रिप्णाः २२ मिण्र्यादकः
२० दिद्रमाधनकः २८ मिण्र्यादकः
२० दिद्रमाधनकः २८ मिण्र्यादकः
२० दिद्रमाधनकः २८ मिण्र्यादकः
२० दिद्रमाधनकः २८ मिण्र्यादकः
१। स्थ्रिक्षकः २० वर्षमिक्षकः २१ ।

चमा खनाः। कर्ष्रभः। क्रिक्षवः।

क्य वाठ क्य म्रष्ठे कर्ष्रुणि मृव

নাশিত্বণ কাষসিদ্ধিদত্বক হৈতি त्राक्रनिर्वन्छैः॥ अशि ह। मिन्नु-कः पृष्ठिम खिङः कषायः कर्हे-কো লযুঃ। কেশ্যো নেত্ৰহিতো হস্তি শূল শোথাম মারুতান্।। क्रिय क्षेत्रकि स्मय वनामी-लाशि छिष्या। निस्त्वात्रमलः তত্ত্বাতশ্লেমহর লঘু।। ইতি ভাবপ্রকাশঃ॥ ৠ। স্যন্দ বা-রয়তি সিন্দুবারঃ ষণ্ নিপাত-নাজ্জিঃ অত উচ্চ। সিন্দুক সি-न्पूरात्रो पछामामी তर्गक्ठी-ষবস্তাবিভি বহবঃ। কেচিত্রু সি-ন্ধু॰ সমুদ্র মপি বার্যতি শোষ-ষতি তীক্ষরসত্বেন কফম্বত্বাৎ निकृतातः निकृत निकृतातो তবৰ্গ চতুৰ্থবস্তাবিত্যাহঃ। ইতি ভরতঃ 🔢

मिमृत की तक्तवर्ग्व्वित्यसः।

मिमृत के जिल्लामा ज्यूष्यायः

। नागमस्य २। के ज्यूष्यः।।

नागत्त्र १० तकः ४ मीमस्य ४०

६ नागकः ७ नागगर्ड १० त्यावः

५ वीत्रतकः २ गत्वम् कृष्यः २०

मन्तात्रायः २० व्यक्तवः २२

(मोलागाः २० व्यक्तवः २८ मन्नायः) कर्ष्यः।

. শিশ্বূ

পণ্ড । স্ঠাসু ভূম কণ্ডুতি বি-সর্প শ্মনত্বঞ। ইতি রাজনি-र्यन्द्रेशाक्षा व्यक्षिता निक्तर রক্তরেণুঞ্চ নাগগর্ত্তঞ্চ সীসজ্ণ। मीरमार्गेभाजूः मिन्मृतः श्वरेक ख मीमवद्यालः ॥ मःरमागक्रथलाः বেন তস্যাপ্যন্যে গুণাঃ স্মৃতাঃ ৷ সিন্দুর মুক্ত বীসর্প সন্ত কণ্ডু वियाणरः॥ ७ भनकानकननः ত্রণ শোধন রোহণ ॥ #॥ সি-ন্দুরস্য শোধন মাহ। দুন্ধান্ন-যোগত শুদ্য ৰিশুদ্ধি গদিতা वृरेधः। ইতি ভাবপ্রকাশः॥॥॥ मिन्तृत्रनान्यस्या स्था। मिन्तृत्रक বর• রম্য• ভালে শোভা বিবর্দ্ধ-न•। পূরণ ভূষণানাঞ্ **সিন্দুর**॰ প্রতিগৃহতা ।। ইতি বন্ধবৈ বর্ত্তে প্রকৃতিখণ্ডে ২১ অধ্যায়ঃ ।। 🛊।। তদ্য ধারণাৎপত্যু রাযু-र्वृक्ति येथा। इतिजा॰ अक्रूमरेक्ष्त সিন্দুর কজ্জল তথা। কার্পা-সকঞ্ তায়ূল মাঙ্গল্যাভরণ শুভ•।। কেশসংস্কার কবরী কর কর্ণবিভূষণ । ভর্ত্ত্রাযুষ্য মিচ্ছন্তী দূরবেদ পতিবভা।। ইতি কাশীখণ্ডে ৪ অধ্যাষ্ঃ।।

जिक्ककः। जेककः। जगितिताः निम्नृतः पूर वृक्कवित्ययः। देखि स्मिनी ॥ শিব্দুরকারণ ক্লী সীসক। ইতি रश्यव्यः ॥ मिन्दृत्रिककः भूः रखी। रेठि त्यिनि ॥ সিন্দুরতিলকা স্ত্রী[,] সংবানারী। रेंडि मिनी॥ निन्तृत्रभूष्णी जी भूष्णवृक्षविरण-यः। তৎপर्यायः। मिस्तृती २ ৰীরপুষ্পী ৩ তৃণপুষ্পী ৪ কর-চ্ছদা ৫ শোণপুষ্পী ৬। অস্যা-গুণাঃ। ক টুম্বং। ভিক্তম্বং। ক-ষাযত্ব,। শ্লেম বাত শিরোর্ভি र्जूञ्जानिषः। ठखीश्रियष्कः। ইতি রাজনির্ঘন্টঃ ॥

সিন্দুরী জী রোচনী।। রক্তচে-निका ॥ शालकी। देखि स्विति मिक्षः **भूः** मगूजः। ইত্যমরः॥ वम्युः॥ सम्मिवित्मयः॥ नम-বিশেষঃ। ইন্দস্ ইতি খ্যাতঃ। ইতি यिनिनी॥ গজयनः। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ॥ সিমূৰারবৃক্ষঃ। ইতি मकान्यिका॥ स्थूजिक्षनः। ইতি ब्राक्रनिर्यन्छैः ॥ द्रागवित्नयः । স চ মালকৌশরাগপুত্রঃ। ষধা । মাধবঃ শোভনঃ সিন্ধু শারু

সিশ্ববা

মেবাজু সম্ভলাঃ। কলিসঃ সোম সংযুক্তঃ কৌশিকস্য সু-তা ইমে॥ ইতি সঙ্গীতসিদ্ধুঃ॥ नमीविरमयः। उद्यानश्चनाः। শততো বিঁপাশাযুজঃ সিন্ধুন-म्याः मूनीठ॰ लघू याम् **म**र्वाम-यम्। जनः निर्मानः मीलनः পাচमक थानत्व वन वृक्ति म धायूयकः ॥ इंडि त्रांकिनर्षकः॥ भिक्षुः खी नभी। ইতি मिनिनी।। निस्तूकः पू॰ गिस्त्तात्रवृक्कः। ইতি শব্দচন্দ্রিকা 11 मिम्राग्यः श्रु ममूजरकनः। ইতি শব্দরত্বাবলী ॥ সিদ্ধকর লী খেতটকণ । ইতি রাজনিষ্ণীঃ ॥ দিন্ধুথেলঃ পু॰ সিদ্ধুদেশঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী॥ भिक्षूष क्री देमस्तवनवण देखाः মরঃ। সমুজজাতে ত্রি॥ मिन्नुजमं की देमसदनदन्। इंडि त्रामाणा ॥ সিমুজমা পু• চন্দ্ৰ: । ইতি জটা-ধরঃ ॥ সিমুজা স্ত্রী লন্ধীঃ। ইতিজ্ঞা-ध्यः ॥ সিন্ধভা জ্রী কালবরাগভার্য্যা 1

यथा। शानुशी गालजी तामकि রী চ সিন্ধুডা তথা। অশ্ববারী टेज्द्रवी ह मानवमा थिया देगाः ॥ ইতি मङ्गीलमात्मामतः ॥ সিন্ধুনন্দনঃ পু॰ চন্দ্রঃ। ইতি ত্রিকাণ্ডশেষঃ ॥ সিন্ধুনাথঃ পু॰ সমুদ্রঃ। ইতি কেচিৎ 11 সিদ্ধুপুত্রঃ পু• মর্কটেন্দুঃ। ইতি শक्टिका॥ ठखका। সিন্ধুপুষ্ণঃ পু• শঘঃ। ইতি শব্দ-हिन्का ॥ मिक्रुमञ्जः क्री रेमक्रवनवनः। ইতি রত্নমালা।। मिन्नूदः भू॰ रखी। ইভি হেম-চন্দ্ৰঃ 11 मिन्नूत्रदिषीं पू॰ मि॰इः। निन्नूत्र॰ इंखिन॰ एकि दें देंगुर्थ निन्ध-ত্যবেন নিষ্পন্নঃ।। मिक्कू**लरण क्री टेमक्रर**ा रेडि রয়ুমালা 11 निकृवातः पुः रुरगाउमः है है जि ত্রিকাওশেষঃ।। সি বাববৃক্ষঃ। यथा। विमूक्षकः मि द्र'तः भि-क्षूक मूत्रामाणि ह। उत्थलमू-तम ख्रिक्षमूर्तिमः मिख्वातिष्टः ॥ नि अंधीञानिक छानी मूत्रमा ।। অস্য গুণাः। मिक्क्वाद्या विष स्मिया जन अर्थ क्यां शहर। देखि রাজবল্লভঃ।।

সিদ্ধুবারকঃ পু• সিদ্ধুবারবৃক্ষঃ। **ইতি শব্দরত্বাবলী** ॥

সিদ্ধুবারিতঃ পু• সিদ্ধুবারবৃক্ষঃ। ইতি শব্দরত্নাবলী ॥

শিন্ধুবেষণঃ পু• গম্ভারীবৃক্ষঃ 1 ইতি শব্দচন্দ্রিকা।।

मिक्षु भगनः श्रः विकृः। की द्रापः भोषिषा ।।

मिक्र्यक्रमः पू॰ नहीनहम्मूफा-ना॰ পরস্পরমেলকঃ। র্যাধঃ। সম্ভেদঃ২। ইত্যমরঃ ।। मित्क्वा र्नाः मक्रामा या-नकः मराजनः। मिष्यपिष्ठ मि লন্তি অস্মিমিতি সন্তেদঃ যঞ । निक्रुगत्कन नहीं नहः म्यूफ শ্চোচ্যতে তেন নদ্যো নদযো র্নদী সমুদ্রযোশ্চ মেলকঃ সম্ভে मः। ইতি বৈস্ঠাদষः। ইতি ভরতঃ ৷৷

সিন্ধূন্তব॰ ক্লী সৈদ্ধবলবণণা ইতি त्रज्ञगांना ॥

मिकृशन॰ क्री रेमक्षदनदन•। देखि श्वावनी ॥

भिकृतातकः। देखि भव्यत्रद्वातकी | भिक्षः क्री भरतात्रत्वित्भवः। वर्षा । এতন্মিমন্তরে শস্তু: সিপ্র• ত্য-জ্বা তদা সরঃ। গঙ্গাবতার মগ-মৎ হিমবৎপ্রস্থ মুত্তম।। ইতি कानिकाभूतात्व ८३ जशायः ॥ সিপ্রঃ পু•্চন্দ্রঃ। ইতি ত্রিকাণ্ড-(শरुः॥ निषाचननिनः। वर्षः। ইতি মেদিনী ॥

> मिश्रा खी नमीर छनः। देखि स्म-मिनी।। मा जू উज्जयनीतमन-সমীপে বৰ্ততে। তদ্যা উৎপ-ত্তি ৰ্যথা। এবং বিবাছ বিধিবৎ मोवर्षि योनमाहरल। अङ्गन्न-তী॰ বশিষ্ঠস্ত মোদ মাপ ত্যা म ।। তত্ত্ৰ যৎপতিত তোষ মানসাচলকন্দরে। বিবাহাব-ভূতাৰ্ধায় শাস্তার্থ• চ পুরাক্ত• ।। ব্ৰহ্ম বিফু মহাদেব পাণিভিঃ সমুদীরিত । তত্তোয সপ্তধা ভূষা পতিত মানসাচলাৎ ৷৷ হেমাজেঃ কন্দরে সানৌ সর-স্যাঞ্চ পৃথক্ পৃথক্। তত্তোষ॰ পতিত সিঞ্জে দেবভোগ্যে সং রোবরে।। তেন সিপ্রা নদী জাতা বিষ্ণুনা প্রেরিতা ক্ষিতি• । ইতি কালিকাপুরাণে ২৩ व्यथायः ॥

नियः भू नमूनायः। यथा। व्यवि সিবি সিশুবিভ্যঃ কিৎ। সিমঃ সৰ্বঃ। ইতি সিদ্ধান্তকৌমুদী।। निश जी ननी। यथा। ननी-শিশ্বি শিশ্বে সিম্বা সিম্বি রপীষ্য-তে। ইতি দ্বিলপকোষঃ।। দ্বে ছিমিডা ইতি খ্যাতে শুঁটী ইতি খ্যাতে। শাম্যতি বৃদ্ধি রন্ধা শনী শনুভিৰ্য শনে নান্নীতি ইঃ পাচ্ছোণাদীতি ঈপি শমী তাল-ব্যাদিঃ শমেঃ পূৰ্বেণ বে নিপাত नामकात्रमा रेएं भिश्वां ि ठा-লব্যাদিঃ। সিমা দন্ত্যাদি রিতি পুরুষোত্তমাদযঃ সি প্যত্র শিষি রপি 🥾 স্ত্যাদিশ্চ। ইতি ভরতী 🐗 🛴 निधिः खी भिषा। ইতি विंदेर्ग (कांवः॥ নখনামগন্ধজ্ব্য় । ইতি রাজনির্ঘন্টঃ॥ সিম্বিজা স্ত্রী শমীধান্য । ইতি ভাবপ্রকাশঃ ৷৷ তালব্যশকা-ব্লাদি রপি।। সিম্বী স্ত্রী নিষ্পাবী। ইতিরাজ**-**निर्घकैः॥ जिला ह। निशा

শিষীপুস্তশিষি তথা পুস্তক সি

ষিকা। শিষিদ্বয়ঞ্চ মধুর রুসে

शांक हिम धक्र। वना मार-

কর প্রাক্ত মেম্বল বাছিপিত্তিজ্ব। ইতি ভাবপ্রকাশ:।।
সির: পু পিপ্ললীমূল । ইতি
হেমচন্দ্র:।।
সিরা জী নাডী। অমুবাহিনী।
ইতি হেমচন্দ্র:।।

मत्रिकाशा छत्र छ ।।

निवतः प्र श्छी। ই छ ज ।।

स्तः ॥

निवाधिया जी माध्य म्या ।

निवाधियया मृना निक्षि र्यक न छिष्ठे । म भक्ष छ व वृष्ठि च छानामन् मिछ छ द्र ।। ই छ छानामन् मिछ छ द्र ।। ই छ छानाभित एक मः ॥

निव्धः प्र भूशे वृक्षः । ই छ भक्ष ज वृष्ठि ने भक्ष ज विष्ठे ।।

निव्धः प्र भूशे वृक्षः । ই छ भक्ष ज वृष्ठि ने भक्ष ज विष्ठे ।।

निव्धः प्र भक्ष ज व्यापित भक्षः । नि-

नेद्वः भू॰ गञ्जजितिस्यः। निद्वा इिंछ थाणः। छ० भर्यायः।
छूकदः २ भिखकः ७ यातनः ॥
इंछामतः॥ निद्वकः ६ भिगाकः ७ कभिष्ठक्षवः १ देख्नाथाः
৮ यातः २ यातवः २०। ইछि
मक्तत्रप्राववी॥ मज्जकी जवः २२
शिखकः २२ देख्नभर्गी २० वृकयूभः २८ कुशुधूभः २६। ইछि
कृष्टायतः॥

मिक्ककः पूर मिक्कः। ইতি भक রত্নাবলী।। निङ्गकी <u>जी</u> महकी। ইতি শব্দ-त्रज्ञावनी ॥ সিহ্নভূমিকা জ্রী সলকী। ইতি শব্দরত্বাবলী।। সিক্ষ্যঃ পু॰ স্ফটিকঃ। ইতি কে हिष् ॥ সীক ঋঙ সেকে। ইতিকৰি-कन्नफ्रमः॥ ॥ जित्रीक्षा ७ সেকতে। ইতি দুর্গাদাসঃ ॥ সীক কি আমৃশি। ইভি কবি-কল্পক্রমঃ॥ কি সীকষতি সী-কতি। আমৃশি স্পর্শে। প্রমাe oानवारमी मृगाः। ই**ভि मूर्गामामः** ॥ সীকরঃ পু• শীকরঃ। **≷**ত্যমর∙ টীকাষাণ ভরতঃ ॥ সীতা স্ত্রী লাঙ্গলপদ্ধতিঃ। ইত্য ष नात्रन द्रिथाया॰ সিনোতি খনতি ভূমিণ সীতা ষিন্গঞ বন্ধে নামীতি তঃ निर्णाठनाष्मीर्यः। भीठा प्रख्याः সাদিঃ। শেতে ভূবি ইতি শীতা তালব্যশাদিশ্চ। ইতি ভরতঃ ॥ 🛊 ॥ জनकत्राजनिषनी। मा **जू** बीतागणत्री। **उ**९ पर्यग्रयः ।

বৈদেহী ২ নৈথিলী ৩ জানকী & ধরণীসুতা ৫। ইতি হেমচক্র:।। ভূমিদন্তবা ৬। ইতি জটু।ধর: ॥ তস্যা উৎপত্তি ৰ্যথা৷ অথ মে ক্লযতঃ ক্ষেত্রণ লাঙ্গলাদুখিতা ভতঃ। ক্ষেত্র' শোধ্যতা লক্ষা নাম্না সীতেতি বিশ্রুতা।। লাদুখিতা সা তু ব্যবৰ্দ্ধত মমা-মঙ্গা। বীৰ্যা শুক্ষেতি মে কন্যা স্থাপিতেষ মষোনিজা।। ইতি বাল্মীকীষে রামায়ণে ৬৬ সর্গঃ ।৷ অপি চ। অথ লোকে ধরী লন্ধী র্জনকস্য পুরে স্বতঃ। শুভক্ষেত্রে হলোৎুখাতে তারে চোতরকল্প-হে বানিজা পদ্মকরা বা-কিন্দিভা। সীতামুখে স-মুহিপন। বালভাবেন সুন্দরী।। সীতামুখোদ্ভবাৎ সীতা ইত্যাস্যৈ নাম চাকরোৎ। ততো হভূদৌ-রসী তদ্য উর্মিলা নাম কন্যক। ।। ইতি ভটীকাধৃতপদ্মপুরাণ ॥ 🗱 ॥ वर्गभन्न । 🗦 ि यि पिनी । मा ज् ভ जाश्ववर्गका। यथा। দীতা তু বন্ধদদনাৎ কেশবাচ-লাদি গিরিশিখরেভ্যো २४ः अमुवजी गन्नमानन मूर्कमू পতিবান্তরেণ ভদাশ বর্ষ প্রা-

नीव्

'চ্যা' দিশি কারসমূত্র মডিগ্র-বিশতি। ইতি শ্রীভাগবতে **৫** ক্ষন্ধঃ। অপিচ। মার্কণ্ডের উ -বাচ। 'ষত্ৰ দেবসভা জুতা সামৌ তস্য মহাগিরে:। তত্র জাভা -(एवनमी जीकाशा वहनाबित्धः ।। স্নাপষিদ্বা ষথা চন্দ্রণ সীতা-তেতিষ মনোহরৈঃ। চন্দ্রণ পপু र्बन्नवाकार मर्द ए जिमिती কসঃ৷৷ তদা সীতাজল চন্দ্ৰশা-নযোগাচ্চ সামৃত । ভূষা নিপ-তিত তিমান্ বৃহল্লোহিত সংজ্ঞ-কে ৷৷ তদিবৃদ্ধণ তদা ভোষণ ত-न्मिन् मद्रिम निर्माल । श्वर बका विवृक्ष गामु ॥ जनमं नाब्द्रलाख्याम् 🌉 পকোত্তমা। চন্দ্রভাগে 🖫 বিধি শুক্তে স্বৰণ ততঃ ৷৷ ভাৰ্য্যা র্থে সাগর স্তান্ত জ্ঞাহ এক্সস-স্মতে। ইতি কালিকাপুরাণে ২২ व्यक्षांकः॥ विषीः॥ क्रेमा स শস্যাধিদেবতা। ইতি নানার্থস্থ-নিমঞ্জী॥ মদিরা। ইতিরাজ-নিৰ্যক্তঃ। গঙ্গাসোভঃ। যথা । গঙ্গায়ান্ত ভদ্ৰদোমা মহাভদ্ৰাপ পাটলা। তস্যাঃ স্রোতসি সীভা চ বঙ্গু ভঁজা চ কীৰ্ত্তিতা।' ভড়ে

त्म श्लकनमाणि गातिनी प्रम इतिव्रगा। ३७ मक्याला ॥ সীভাগতিঃ পু• শ্রীরামচন্তঃ 1 ইভি শব্দরত্বাবলী।। সীতাযাঃপতিঃ পু• জীরামচন্দ্রঃ मीठीनकः पू॰ मठीनकः। रेछः-भत्रतिकाषाः ताषमूक्रिः ॥ मी कात्रभृक्षी मन्याना धनान् সীৎক্লত• 🤇 রাগজশব্দঃ। যথা। भक्ता श्वनानुत्रारभाषः अनामः मी १ हर नृष्ण । दें वि दिय-क्यः ॥ সীত্য স্কী ধান্য। ইতি হেম-व्यक्तः ॥ সীত্য তি রুফকেত্রাদ। ইত্য-यदः श मिए। क्षी जानगा। देखि जूति-প্রযোগঃ ॥ मीधः पूर् मना । ইতি শব্দর জা न्वली॥ महारजनः। यथा। हे-**क्लाः** शर्क तरेमः निकः नी धुः পর্বরসম্চ সং। আমৈ ত্তৈরেব यः मीषुः म ह भीजत्रमः स्र्वः॥ দীযুঃ পরুরদঃ শ্রেষ্ঠঃ স্বরামি-বল বর্ণক্রৎ। বাতপিত্তকরো

श्राः व्यव्दा दाहत्या व्दार

॥ विवद्यात्कार त्यांकार्यः त्याः कानत्र ककामरान्। उन्नाननः খণ: শীতরসঃ সংলেধন: **শৃতঃ** ॥ ইতি রাজনির্ধণ্টঃ ।। मीशगद्धः भू तत्रवः। **ই**ভि नकः त्रप्रावनी ॥ मीध्रपूष्पः प्र कपशः॥ वज्रवः। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ॥ সীধুপুষ্পী ন্ত্ৰী ধাতকী। ইতি त्रांकिर्निर्धकः॥ দীধুরসঃ পু॰ আমুবৃক্ষঃ। ইতি রাজনির্ঘণ্টঃ ॥ नीवून·**छः भू** वन्नववृक्तः। ইতি व्राक्तिर्घकः॥ সীধু ক্লী অপান। ইভিকে हिद ॥ जीशः पुः छर्गनामार्थकनगावः। কোষা ইতি ভাষা। যথা। বস্তু-তন্ত্র অত্রানুজ্তস্য কেপাসন্ত-मीপामिटनाष्क्रव्यद्र• । **শীপাদি যুক্ত করতর্পণে তত্তৈব** कलं जिलान् गिश्रास्थ। ইजि গোপালন্যাষপঞ্চাননক্তবিচা-त्रनिर्गशः ॥ সীমন্তঃ পু॰ কেশেষুবর্ম। সিঁতি

ইতি ভাষা। ইতি হেমচন্দ্ৰঃ॥

গৰ্ভাধান মৃত্তো পুংসঃ সবনং न्धनाय भूता। यत्वं रक्ट्य বা সীমন্তঃ প্রসবে জাতকর্ম চঃ ইতি বাজ্ঞবন্ধ্যঃ ॥ সীমন্তক क्री मिम्द्रा ইতি व्राक्तिर्घकः ॥ সীমন্তকঃ পূ॰ নরকাবাসঃ। যথা । লক্পকৈব নরকাবাসাঃ সীম-खकानयः। ইতি द्याट्यः ॥ সীমন্তিনী স্ত্রী নারী। ইভ্য-मद्रः ॥ ্র সংস্কারবি-ভেক্তি জটাধরঃ।। তদ্ধি-मीमरक्षाम्यन क्री मंकाद्रवि-ৰ্শদি পুংসবনং ন ক্লভং তদা ভট্নীয়েৰ দিনে প্ৰায়শ্চিত্তাত্মক মহাঁব্যাহ্নতিহোম ফ্রন্থা পুণ্স-বনঞ্চ ক্রম্বা সীমস্তোমধন কা-ৰ্য্য । তথা চ নারদঃ। ষেষাম্ভ ন ক্রতাঃ পিত্রা সংস্কারবিধবঃ ক্রনাৎ। কর্ত্তব্যা ভ্রাতৃতি স্তে-ষা॰ পৈতৃকাদেব তদ্ধনাৎ ।। खितामारेन शिखार्थं वा भाषू-क्षृष्ण वा भूनः। व्यवना कार्याः সংস্কারা ভ্রাতৃভিঃ পূর্বদংস্কৃতৈঃ । ক্রমাৎ ভ্রাতৃণা স কারাণাঞ্চ

পৌৰাপৰ্য্য ক্ৰমাৎ ভ্ৰাতৃক্ৰমস্ত সোদর বিষষএব। বিবাহে তথা **দর্শনাৎ।** ছন্দোগগরিশিষ্ট•। দেবতানা বিপর্যাদে জুহো-তিষু কথ ভবেৎ। সর্ব প্রায শ্চিত্তণ ব্ৰন্থা ক্ৰমেণ জুহুষাৎ পুনঃ ৷৷ সংস্কারা অতিপত্যেরন্ षकालात्क्रथ कथकत। हरेष्ठ मित अबींज य जूशनयनामधः॥ এতদিত্যনেন সর্বং প্রাবশ্চিত্ত ম-नूक्रये॰ छक्र প্রাণেব বিবৃত । উভয়করণে তন্ত্রেণৈব মাতৃকাপূ-कापि। गगनः किरमार्ग जू माज् ভ্যঃ পুজন সক্ত। সক্তদের ভ বেৎ শ্ৰাদ্ধ মাদৌ ন পৃঞ্ ইতি ছন্দোগপরিশিক। গোভিলঃ। অথ সীমার্ভার व्यथरम गर्र्ड ठजूरर्थ मानि कर्छ श्केटम वा। ज्यथं भू॰ भवनान खत्र॰ । সীমন্তঃ কেশরচনাবিশেষঃ। বা শকৈক্যান চতুর্থাদিমাদানা তু-नारिषकनः। किन्नु शृर्व शृर्वकः-नः अभेखः। नमर्थमा (क्रिनार्या-গাৎ ইতি ন্যাষাৎ। ততশ্চ নব-মমাসাদে প্রাযশ্চিত্ত ক্লবৈত্ব ক-ৰ্ভব্য । প্ৰথমগৰ্ৱ ইত্যুপাদানাৎ । ষদি কথঞ্চিদক্ত এত্তিমন সং-

कारत गर्जनात्म भूनर्गर्जार-পত্তো অষণ কালনিয়মো ন কিন্তু গৰ্ভস্পন্দনে সীমন্তোম্বনণ যাবন্ন বালপ্রসবঃ। ইতি শগ্ধ-লিখিতোক্ত কালো গ্রাষ্টঃ ! বৃহ-ডাজমার্তণ্ডে। যা নার্য্যক্রতদীম-ন্তা প্রসূতে চ কথঞ্চন। অঙ্কে নি-शाय ७ वाल भूनः मःकात गर्-তि।।।।। यर्छ गारम श्केरमङ्गीका **अक्रिनक्र**ण' नम्म ভদ্রে তিথৌ চ মৈত্রে মূলে মৃগাঙ্কে কর পিতৃ পবনে পৌষ্ণ বিষণু ত্রিযুগ্ম। शु-য্যাশাদিত্য রৌজে যুবতি হরি यरम वृश्वितक वाशि नर्श हत्ख তারানুক্লে শুভ মপি নিষত• माफ मीय छक्या। मृगा कत दि-তে লগ্নে নবাংশে পুংগ্রহ্স্য চ। কেচিম্বদন্তি সীমন্ত তথা রিক্তে-তরে তিথো ।। গোভিলঃ। প্রাতঃ সশিরস্কাপ্লুভোদগত্রেষু দর্তেষু প-শ্চাদয়েঃ প্রাচ্যুপবিশতি। উক্তা-র্থ মেত্র। পশ্চাৎ পতি রবস্থায यूगमञ्ज (मोजूबद्र॰ मलारू अंथू मा-বগ্গাতি অযমূৰ্জ্জাবতে। বৃক্ষ ইতি। অগ্নেঃ পশ্চাৎ পতিঃ স্থিয়। যুগা-नि क़लानि यिचन मला हूँ अरशू नीलखबरक म यूगमान् छ॰ मञ्-

वस्रा दशा ह छिनात्रायनग्रः इल्लागनितिनिकं। ननापू नीन মিত্যুক্ত এথু স্তবক উচাতে। কপুঞ্চিকাভিতঃ কেশা সুদ্ধি প শ্চাৎ কপুচ্ছল ইতি॥ এতছচন॰ नातायरगायायायन यृज्। जे-ডুম্বর ভব মৌড্মর । অম মূর্জ্জ। ৰতো বৃক্ষ ইতি মন্ত্ৰেণ ভাৰ্য্যাষাঃ कर्छ दङ्गाजि॥ 🟶॥ व्यथ मीमञ्ज মুর্দ্ণ নযতি ভূ রিতি দর্গ্র পিঞ্জ-नीजि রেব প্রথম ভুব ইতি हि তীয় স্ব রিতি তৃতীয়। অথান-ন্তর॰ যত্র সিন্দুর• স্ত্রী দদাতি ত॰ मीमख॰ ननारेंगिर्क्षु नयि जू রিতি মন্ত্রেণ দর্ত্তপিঞ্জলীভি স্তি-সৃতিঃ। একবার করণাদ্বাবস্ত্যু-ম্যনানি তাবতীভি রেব তিস্ভি প্রথমাদিপদানি তু রিত্যর্থঃ। ব্যাহ্যতীনাণ পিঞ্জলীনাঞ্চ পৃথঙ্-निरमागार्थः। शिक्षनी शविबः। তথা চ ছন্দোগপরিশিষ্ট । অ-নন্তৰ্মব্ৰিণ সাগ্ৰণ কৌশ দিদল মেব চ। প্রাদেশমাত্রণ বিজ্ঞে য• পবিত্র• যত্র স্ত্রচিৎ।। এত-দেব हि পिঞ্জল্যা লক্ষণ সমুদা-হ্বত । গোভিলঃ। অথ বীরত-রেণ যেনাদিতে রিত্যেত্যর্চা 1

বীরা স্তরস্তানেন যুদ্ধ মিতি বীক্ক তরঃ শরঃ। তথা চ ছন্দোগপরি-**निर्छ•। शा**विष्ट्रनाका गननी छ-থা বীরতরঃ শরঃ। তিল তণুল সম্পাকঃ ক্লষরঃ সো হভিধীষতে ।। ততশ্চ শরেণ যেনাদিতে রিতি মন্ত্রেণ সীমস্ত মূর্দ্ধুণ নয়তি ইতি পূৰ্সূত্ৰাদনুবৰ্ততৈ ৷৷ ঞা৷ অপ পূ-র্পেন সূত্র চাত্রেণ বাকামহ মিত্যে ত্যক্ষা। চাত্র তকুঃ। তেন সূত্র-পূর্ণেন বাকামহ মিতি মন্ত্রেণ সী-**मञ्ज मूर्जु॰ नग**ञीजित्मयः। बिः শেত্যা শলল্যা যান্তে বাকে সূ-মৃত্য ইতি স্থান ত্রিত্যে শুক্লেন শেক্সাজন্ত কণ্টকেন যান্তে ইতি মন্ত্রেণ সীমন্ত মূর্দ্ধণ নয়তীতিশে-ষঃ। **রুষরঃ স্থালীপাক** উত্তরঘৃত **छ गतिकराष**्। क्रयत উकः। ञ्चानीभाकम्ठब्रः म উপরি দত্ত ষৃত ন্ত বধাঃ প্রদর্শবেৎ। স্থা-লীপাকপদ চরুস্থাল্যা ক্রষরস্য व्यंत्रनार्थः। मनूष्रार्थञ्चा किःश्व-কালন । তত শ্চ যঃ কশ্চিম্মহ।-नमে व्यथिषा ज्ञाथरयः। कि-ম্পশ্যদীত্যুক্ত্বা প্ৰজা মিতি বাচ-ষেৎ। কি॰ পশাসীতি পতি রু-ক্ত্বা প্রজা নিত্যাদি মন্ত্রণ গরিণীণ

मी गार्वि

বাঁচৰেং। ভ সা স্বৰণ ভূঞীভ। छ भारविकिछ॰ क्रुवतः। वीत्रम् ৰ্জীবসূ জ্জীবপত্নীভি ব্ৰাশ্বণ্যো मक्काफि जिंदी शिक्ष में भी जिन् । বীরান্ বিক্রাস্তান্ পুত্রান্ সূত ইতি বীরসৃস্ত্ব ভবেতি বাক্য শেষः প্রতিপদ স্যাৎ। জীব তো দীৰ্ঘাযুসঃ পুত্ৰান্ সূত ইভি কীবসুঃ জীবতঃ পত্নী জীৰপ-ত্নী অবিধবেতার্থঃ। এবং প্র-কারাভি ৰাগ্ডি রনুনবেষুঃ। ক্র-নশ্চ নহাব্যাহাতিভি হ্বা ঔডু ষর ফলস্তবক কঠে বদ্ধা প্রজ্বা নিতি বাচষেদিত্য ক ব্যাহ্নতিভি হোমালি মাপষেৎ ততো ত্রাপ্ मीतन्। देखि मःकार्यः वर्षाः मीगों पूर / आगामीना मवधात्रिः সীমা স্ত্রী \তান্তভাগঃ। সীমানা रेि जाया। जल्मयायः। म ৰ্য্যাদা ২ অবধিঃ ৩ আঘাটঃ ৪ । ইতি জটাধরঃ।। স্থিতিঃ।। ক্ষেত্র• ।। অওকোষঃ। ইতি মেদিনী।। বেলা। ইতি বিশ্বঃ॥ नीमाविवानः प्र धमानीना भी भाविषयककलाइः। यथा। ज-धूना भीयाविवाम निर्वय উচ্চ

नीया विवास स्वाम সামস্তাঃ স্থবিরাদ্যঃ। গোপাঃ সীমাক্তবাণা বে সম্ভৰ্ব চ গোচরাঃ।৷ নধেষু রেতে সীমা-नः ख्लाकात जूष करियः। मजू বন্দীক নিমান্থি চৈত্যালৈয় ৰূপ-লক্ষিতা ।। আমন্বয় সমন্ধিনঃ ক্ষেত্রস্য সীম্নো বিবাদে তথৈক-আমান্তৰ্বৰ্তি ক্ষেত্ৰ মৰ্য্যাদা বি-वाटम ह मामञ्जामसः ख्लाकाता-**मिज्धिः পূर्वकृरेजः मीमानकृरे**। রুপলক্ষিতা চিহ্নিতা সীমাণ नरस्यूः निन्छिनियूः । त्रीया त्कः वानियर्गाना मा ठजूर्विधा कनलम्त्रीया > वायतीया २ ক্ষেত্রদীমা ও গৃহদীমা ৪ চেতি । সাচ ষথা সম্ভব পঞ্চলক্ষণা। **७** जुकु नातरान । श्रक्ति ग९-সিনী চৈব নৈধানী ভষবৰ্জ্জি-তা। রাজশানন নীতা চ সীমা-পঞ্চবিধা স্মৃতেতি।। ধজিনী বৃ-कापि विकिठा। वृक्षामीनाः अ-কাশকত্বেন ধজতুল্যত্বাৎ। মৎ-मिनी मिननवरी मर्माभक्तमा স্বাধার জল লক্ষণদ্বাৎ। নৈধা-নী নিখাত তুষাঙ্গারাদিমতী । তেষা পিৰাতত্বেন নিধান তুল্য-

गीमावि

দ্বাৎ। ভষবৰ্জিতা। অৰ্থি প্ৰত্যৰ্থি গরম্পর সম্প্রতিপত্তি নির্মিতা। রাজশাসননীতা। জ্ঞাত্চিত্না-ভাবে রাজেচ্ছ্যা নির্দ্মিতা। এব-ম্ভূতাষা বোঢা বিবাদ: স'ভবভি । यथार काजायनः। आधिकाः ন্যুনতা চাংশে অস্তি নাস্তিত্ব মে-অভোগভুক্তিঃ সীমা চ यष् ज्वाममा एकवः॥ देखि। তথাহি। মমাত্র পঞ্চনিবর্ত্তনাষা ভূমে রধিকা ভূ রস্তীতি কেনচি-मूटक शक्ष्मिवर्खेरेनव नाविरकः ष्णाधित्का विवामः। शक्षनिवर्खः না মদীষা ভূ রিজ্যক্তেন ততো-ন্যুনৈবেতি ন্যুনতাবা । পঞ্চনি-वर्जना मनांभ हेक्रास्क्रभ वव নান্তীতান্তি নান্তিম্ব,বিবাদঃ স-ম্বৰত। মদীয়া ভূঃ প্ৰাগৰিদ্য-মানভোগৈব ভুজাত ইত্যুক্তেন সম্ভতা চিরন্তন্যের মে ভূক্তি রি-ভ্যভোগভুক্তো বিবাদঃ। ইব॰ মর্য্যাদ্রেয়ঞ্জেভি সীমাবিবাদ ইতি ষট্প্রকার এব বিবাদঃ সম্ভবতি। ষট্প্রকারেপি ভূবিবাদে শ্রুত্য-ৰ্থাভ্যা॰ সীনাষা অপি নিৰ্ণীয়-মানত্বাৎ সীমানির্ণয প্রকরণে তস্যান্তর্ভাবঃ। সমস্তান্তবাঃ সা

मेंखाः। ठळमृष् पिक्स्मखद्रा धार् भाषय एउ ह श्रेडिमीय॰ वाविदः তাঃ। আমো আমেষু সামন্তঃ क्किं क्विमा कीर्खिङ। भृर গৃহস্য নির্দিষ্ট সমস্তাৎ পরির ত্য হি॥ ইতি কাত্যামনবচনাৎ । গ্রামাদি শব্দেন তৎস্থাঃ পু-ৰুষা লক্ষ্যন্তে। প্ৰামঃ পলাষ্ড ইতি যথা। সামস্ত গ্রহণঞ্চ তৎ সণসক্তাদ্যুপলকণার্থ। কাত্যাযনেন। সংসক্তকান্ত সা-মন্তা তৎসংসক্তা ভথোত্তরাঃ। মংসক্ত শৃক্ত সংসক্তাঃ পদ্মাকা-্ব ঃ 👣 প্রতাঃ।। ইতি। স্থবি-রি ক্রেন্ট্রের আদিগ্রহণেন মৌ-कि ए उद्या र्थर्गः। वृकापि नः वर्गेक १ राज्यां किला हा মান ধৈ দৃষ্টি তৎকাৰ্য্য তদ্-छनाबिरेछः। वृक्षा वा यमि वा-বৃদ্ধা স্তেচ বৃদ্ধাः প্রকীর্তিতাঃ।। বে তত্ৰ পূৰ্ব• সামস্তাঃ পশ্চাদে-শান্তর গতাঃ। তমূলত্বাভূতে মৌলা ঋষিভিঃ পরিকীর্ত্তিতাঃ ॥ উপশ্ৰবণ সম্ভোগ কাৰ্য্যাখ্যা-নোপচিহ্নিতাঃ। উদ্ধরম্ভি পুন ৰ্যমাদুদ্ধতা স্তে ততঃ স্মৃতাঃ ॥ ইতি। গোপা গোচারকাঃ 1

সামার্যাণাঃ সীমাস নিহিত কে-बकर्यकाः। मर्स् চ वनशाप्तता वनठातिर्गा व्याधानम एउ ह मन् নোক্তাঃ। ব্যাধান্ শান্তনিকান্ গোপান্ কৈবৰ্তান্ মূল্খাতকা-ন্। ব্যালগ্রাহানুঞ্বৃতীনন্যা•-শ্চ বনগোচরানিতি।। স্থল মু-অঙ্গারো মতে। ভূপ্রদেশঃ। श्टाकृष्टिके। जूया शानाष्ठः। ক্ৰমা ন্যগ্ৰোধাদযঃ। সেতু ৰ্জল-প্রবাহবদ্ধঃ। চৈত্য পাষাণাদি-বন্ধঃ। আদ্য শব্দেন বেণু বালু-কাদীনা গ্রহণ। এতানি চুপ্র-কাশাপ্রকাশভেদেন রাণি। তথা চ মনু वृका छ अर्बी गार्क । कि अकान्। भाषानी ् তाला॰क कींत्रिगटेक्टर भागभान् ॥ अन्यान् त्वपृः क विविधान् শমी वल्ली ख्लानि ह। শরান্ अ-জ্বক গুল্মা শ্চ তথা সীমান ন-শাতি॥ তডাগানুদপানানি বা-প্যঃ প্রসুবণানি চ। সীমা সন্ধিষ্ কাৰ্য্যাণি দেবতায়তনানি চেতি প্রকাশৰপাণি। উপচ্ছমানি চা-नानि नीमालिकानि कात्ररयः। मीयाखारन नृशाः वीका निषाः

লোকে বিপর্যায় ।। অশ্বনো ২-স্থীনি গোবালা স্তবান্ ভঙ্গ ক-शानिकाः। कद्रीय भिर्फकाञ्चाद শর্করা বালুকা স্তথা।। যানি চৈ-ব প্রকারাণি কালাদ্ভূমি ন ভ-कररा ा जानि मिस्र मीमारा व्यकामानि कात्रस्य।। এতৈ र्लि देक नेरवे भीमा॰ त्राका विव-प्रभानत्या दिछि। श्रष्ट्रम लिन्ना-নি এতৈঃ প্ৰকাশাপ্ৰকাশৰূপৈ र्वि देशः मामखानि अनर्भि देवः সীমাণ প্রতি বিবদমানযোঃ সী-यानिर्गयः क्याजाका ॥ ॥ यमा পুনশ্চিক্লানি ন সম্ভি বিদ্যমানা-নি বা লিঙ্গালিঙ্গতয়া সন্দিগ্ধানি তদা নিৰ্ণযোপায মাহ। সামস্তা বা সমগ্রামা শ্চন্থারোফৌ দশা-পিব। রক্তসুগ্বসনাঃ সীমাণ ন-रायुः कि जिधातिनः॥ সামস্তাः পূৰ্বোক্ত লক্ষণাঃ। সমগ্ৰামা শ্চ-দ্বারোফৌ দশাপি বা ইত্যেব• সমসংখ্যাঃ প্রত্যাসমগ্রামীনাঃ। রক্তসুথিণো রক্তাম্বরধরাঃ মূদ্ধা-রোপিত ক্ষিতিখণ্ডাঃ সীমান ন-(ययूः अनर्भरय्युः। मामखारवि বিকলাভিধান• স্ত্যুত্তরোক্ত माका जिथाय्। यथार मनुः।

সাক্তি প্রত্যেষ এব স্যাৎ সীমা-वाम विनिर्वय देखि। छख ह मा-किना निर्निष्य मूथा छन्छ। বে সামস্তানা । তদুক্ত । সাক্য ভাবে তু চত্বারো প্রামাঃ সীমা-खवानिनः। नीनाविनिर्गर म-ৰ্যুঃ প্ৰয়তা রাজসন্নিধাবিতি ।। তদভাবে তৎসংসক্তাদীনাং নি (वंजुष्। यथार काजायनः। यार्थ निष्की अनुरुषेषु नागर छ-कर्डवा উদ্বারো নাত্রসংশযः।। সংসক্ত সক্তদোষে তু তৎসংস-काः अकीर्खिजाः। कर्ववा न প্রদুষ্টাস্ত রাজ্ঞা ধর্মণ বিজানতে-छि॥ मामञ्जामाञाद सोनाम-যো গ্রাহাঃ। তেষা মভাবে সা-यखा योन वृष्काकृञानयः। इ वत्त बर्धे अर्वादाशि कार्या। नाव বিচারণেতি কাত্যাযনেন ক্রম বিধানা । এতে চ সামস্তাদ यः সংখ্যা গুণাতিরেকেণ সংভবস্তি। मामुखाः माध्यः शृर्वः निर्णायाः স্যু র্গুণাম্বি হাঃ। দ্বিঞ্চণা স্কৃত্ররা জ্ঞেষা স্ততো ২ন্যে ত্রিগুণা মতাঃ ।। ইতি স্মরণাৎ।। 😻।। তেচ সা-किनः मामञ्जानयम् देयः देयः म-

-পথেঃ শাপিতাঃ সম্ভঃ সীমাণ ন-বেষুঃ ৷ শিরোভি ত্তে পৃহীছোৰী সুधिरग त्रक्तवाममः। मूक्ररेणः শাপিতাঃ স্থৈঃ স্থৈ ন্যেষু স্তে ममञ्जन मिछि त्राजनाया नरसम् রিতি বহুবচন• দ্বযো নিরাসার্থ• নৈকস্য। একশ্চে দুন্নবেৎ সীমাণ स्मानवामः मनुष्ठायकः। त्रकः भा-न्गात्रत्रधदता ज्यि मानाय मूर्कनिः ॥ ইতি नातरमरेनकमा। जन्छ।-नाषा यञ्जा देनकः मगूमरयष সীমা॰ নরঃ প্রত্যযবানপি। গুরু-षानमा कार्यामा क्रिरेया वश्यू **ख्रिटाटाकमा निरंप्यः। म छे**-ভূষানুমত ধর্মবিদ্যাতিরিক্তবিষষ क्रिविदेशधः॥ ॥ ख्लामि हि-হ্লাব্রুবৈপি সাক্ষি সামস্তাদীনাণ সীমাজ্ঞান উপাষ বিশেষো না-রদেনোক্তঃ। নিয়গাপক্তোৎ-मृके नके हिङ्गाम् जृतिषृ। ७९-প্রদেশানুমানাচ্চ প্রমাণান্ডোগ **দर्শना** षिछि॥ निम्नगाया नम्मा অপহৃতেনাপহরণেনোৎসৃষ্টানি স্বস্থানাৎ প্রচ্যুতানি•নফানি রা লিহ্নানি যাসু মর্য্যাদাভূমিষু তত্র তৎপ্রদেশানুমানাদুৎসৃষ্ট नके विज्ञानाः आवीन अपनाः

নুমানাৎ আমাদারভ্য সহসুদ্র পরিমিত ক্বেত্র মন্য প্রামন্য প-শ্চিমে ভাগ ইত্যেবধিধানাৎ প্র-মাণাদ্বা প্রত্যর্থি সমক মবিপ্রতি-পদাযাঃ স্মার্তকালোপলক্ষিতৈ ভু কৈ ৰ। নিশ্চিনুষুঃ। বৃহম্পতি-না চাত্র বিশেষো দর্শিতঃ। আ-গমঞ্চ প্রমাণ্ঞ ভোগ• কালঞ্চ না-म ह। जुजान नकनदेश्व स्व विष् ন্তেত্ৰ দাকিণ ইতি ৷৷ এতে চ দা-ক্ষি সামস্তাদয়ঃ শপথেঃ শাশি-তাঃ সন্তঃ জলাদি সমক রাজ্ঞা अरुवाः। यथार मनूः। वात्य-যক প্লানাম্ভ সমক সীন্নি সা-किनः। अरुगाः भीमूलिक्युनि **ज्या देन्ह्य विवासित्न विद्धि।।** তে পৃষ্টাঃ সাক্ষ্যাদয়ঃ সমস্তা ঐ কমত্যেন সীমি নির্ণয় পর্যাঃ। তৈ নিণীতা॰ সীমাণতৎপ্রদর্শিত সকল লিক্ষ্কুকা সাক্ষ্যাদি না-মামিতাঞাবিমারণার্থণ পত্তে স-मारताभरवर । উक्तक मनूना । তে পৃকীস্ত যথা ত্রাযুঃ সামস্তাঃ नीमि निर्वयः। निवदीयाख्या नी-মাণ সৰ্বাণ্ডাণ্টেশ্চৰ নামত ইতি ॥ 🗱।। এতেষা ় সাক্ষি সামস্ত প্রভৃতীন্য সীমাচ ক্রমণ্দিনা

দারভা যাবল্রিপক্ণ রাজনৈবি-ক ব্যসন চেনোপপদ্যতে তদা उर्धानमंतार जीगानिर्वशः व्यवक ब्राक्टिंगविक वाजनाविधः কাত্যাধনোক্তঃ সীমাচ ক্রম-त्न कार्य भाषण्यत्मं छरेपव ह १ ত্রিপক্ষ পক্ষ মপ্তাহণ দৈবরাজিক भिया**७ दे**छि॥ यमा प्रयोगा छ-ক্তসাক্ষ্যবচসাণ ত্রিপক্ষাভ্যস্তরে রোগাদি দৃশ্যতে। অথ বা প্র-िवानि निर्मिष्ठां छाधिक मःथा ণ্ডণ সাক্যন্তর বিরুদ্ধবচনতা তদা ভে মৃযাভাষিত্যা দখনীযাঃ ! তদাহ। অন্তে তুপ্থন্দগ্রাবা জ্ঞা মধ্যমসাহসং। অনৃতে মি-খ্যাবদনে নিমিত্তভূতে সতি সর্বে সামস্তাঃ প্রত্যেক মধ্যমসাহসে-न চত্বারি॰শদধিকেন পণপঞ্চশ-তেন দণ্ডনীযাঃ। সামস্ত বিষয়-তা চাস্য সাক্ষ্য মৌলাদীনাং স্ফু-তান্তরে দণ্ডান্তর বিধানাদবগ-ম্যতে। তথা চ মনুঃ। যথোক্তেন নযন্ত ভে পূযন্তে সত্যসাঞ্চিণঃ। বিপরীত নয়স্ত স্ত দাপ্যাঃ স্যু र्षिশত प्रम मिलि ॥ नातरपाणि । অথ চেদন্ত জবুঃ সামস্তাঃ সী-मि निर्वा मर्द शृथक् शृथक्

দীশাৰি

দণ্ডা রাজ্ঞা মধ্যমসাহস মিতি।। সামস্তানা মধ্যমসাহস দও-অভিধাৰ। শেষা শেচদন্ত আযু নিযুক্তা ভূমিকর্মণি। প্রত্যেকম্ব क्षम्या एक वित्नसाः शृदंगार्म মিভিয় তৎসংসক্তাদিষু প্রথমণ मार्म मूक्तवान्। सोलामीना मः शि छत्यव प्रथ याह। योग वृक्षा-भवखुरना मखगठा। श्थक् शृथक्। বিনেষাঃ প্রথমেনৈব সাহসেনা-নৃতে স্থিতা ইতি।। আদিগ্রহণেন গোপ শান্তনিক ব্যাধ বনগোচ রাণা গ্রহণ ।।ৠ। ষদপি শাস্মি-কাদীনা পাগরতত্ত্বালিক প্রদর্শ-নএবোপযোগো ন সাক্ষাৎ সী-মানিৰ্ণযে তথাপি লিঙ্গবৰ্শন এব মৃষাভাষিত্ব সম্ভবাৎ দণ্ডবিধান মুপপদাত এব। অনৃতে তু পৃথ-<u> প্রভাগ ইত্যেতদণ্ডবিধান মজ্ঞা</u>-ন বিষয় । বহুনান্ত গ্ৰহীত্বা ন मर्स् निर्वय यमि। अर्यू र्ভिया-দা লোভাদা দণ্ড্যা স্তৃত্যসাহসং ম ইতি জ্ঞানবিষষে সাক্ষ্যাদীনা কাত্যায়নেন দণ্ডান্তর বিধানাৎ ।।ঞ।। তথা সাক্ষি বচনভেদেপ্যয মেন দণ্ড স্তেনৈবোক্তঃ। কীর্ত্তি**তে** যদ ভেদঃ সাদিগুা ভূত্ৰম্পা-

हम मिछि। अत मख्डामापिनान्-छत्रपत्न माक्गापीन् नः मीमाविष्ठातः अवर्खविष्ठताः।

मा॰ विठात्रयिष्णुञ्जा। जाञ्जा मूकी ख नाय छाननान् यो ना দিভিঃ সহ। সংমিশ্রঃ কারবেৎ नीमा (मष् धर्मावित्मा विष्टुः ।। ইতি নির্ণয় প্রকার স্তেনৈবোক্তঃ ॥ 😻 ॥ यमा भूनः मामस श्रन्छ-খো জ্ঞাতার শিচ্ছানি চ ন সন্তি তদা কথ• নিৰ্ণৰ ইত্যত আহ। অভাবে জ্ঞাত্চিক্লানা রাজা সীয়ঃ প্রবর্ত্তিত। জ্ঞাতৃণা সাম-खामीनाः निकामीनाकः। वृकामी-ना मुजारबं तारेक्व मीमः अवर्खि-তা প্রবর্ত্তবিতা। অন্তর্ভাবিতো २व नार्थः। वामदय मधावर्खिनी॰ বিবাদাম্পদীভূতা ভূব সম প্র-বিভজ্যাস্যেষ্ণ ভূ রস্যেষ্ মিত্যু-**जरमाः ममर्गा जमार्या मीमा**नि-कानि कर्या। यमा छमा। ज्या-বন্যতরস্যোপকারাতিশযো দৃ-শ্যতে ভদা ভগৈয়ৰ আমস্য সক-मा जृः ममर्शनीया । यथार मनुः । नीयाया यविष्णायाः श्वयः द्राः टेक्टर धर्माविष। अमिरमञ्जूमि स्म-

কেষা মুপকারাদিভি স্থিতি রিতি ৷৷৷৷ অসত্যা মপ্যতন্তাবাশকাযা ষস্যাঃ স্মৃতে ন্যাযমূলতা দ্যো-ভষিতু মতিদেশ মাছ। আরা· শাষতন আম নিপানোদ্যান বে-শ্বসূ। এষ এব বিধি জ্ঞেষো বর্ষা-म् अवशामिष्।। जात्रामः भूना ফলোপচষ হেতু ভূ ভাগঃ। আ-ষতন॰ নিবেশন॰ পলাল কূটাল্য-র্থণ বিভক্তো ভূপ্রদেশঃ। আমঃ প্রসিদ্ধঃ। আমগ্রহণঞ্চ নগরা-मुाशलका निशान शानीय-স্থান কুপবাপী প্রভৃতিক। উ দ্যান ক্রীডার্থা ভূমিঃ। বেশ-গৃহ ৷ এতে স্বারামাদি স্বযমেব সা-মস্ত সাক্যাদি লক্ষণোঁ ৰিঞ্জি ৰ্ক্সা-**७वाः। ७था अवर्या**गम् जूटियु क्लथवारश्यू अनरमा भृश्या র্মধ্যে ন জলৌষঃ প্রবহ্ত্যনযো র্বেভ্যেব প্রাকারে বিবাদে আদি গ্রহণাৎ প্রাসাদাদিশ্বপি প্রাচীন এব বিধি তের্জ্বঃ বেদিতব্যঃ। তথা চ কাত্যায়নঃ। ক্ষেত্র কুপ তডা-গানা কেদারারাম্যো রপি ৷ পৃহ প্রাসাদাবসথ নৃপ দেবগৃছে-यू (ठि ।। 🛊 ।। भी यानि ग्य मुकु। ভৎপ্রসঙ্গেন মর্য্যাদাপ্রভেদনা-

क्षो मखगार। मस्मामायाः अख्न দে जू नीमाजिक्स्मर जथा। स्क ত্রন্য হরণে দণ্ডা অধনোত্তম ম-ধ্যমাঃ ৷৷ অনেক ক্ষেত্ৰ ব্যবচ্ছে-দিকা সাধারণী ভূ মর্য্যাদা তস্যাঃ প্রকর্ষেণ ভেদনে সীমাতিক্রমণে সীমা মতিলঙ্ঘা কর্ষণে ক্ষেত্রস্য চ ভशानि अनर्गतिन इत्रत्व यथा-ক্রমেণাধমোত্তম মধ্যম দণ্ডা বে-দিতব্যাঃ। ক্ষেত্রগুহণঞ্চ গৃহারা-मामूर्यलक्ष्मार्थः। रमा भूनः श्रीर ভ্রান্ত্যা ক্ষেত্রাদিক মপহরতি ড-দা দ্বিশতো দমো বেদিতব্যঃ। ষথাহ মনুঃ। গৃহ• তডাগ মারা-ম॰ ক্ষেত্ৰ॰ বা ভীষ্যা হরন্। শ-তানি পঞ্চ দণ্ড্যঃ স্যাদজ্ঞানাদ্দ্রি-শতো দম ইতি ৷৷ অপাহ্যমাণ ক্ষেত্রাদি ভূষস্ত্রপর্য্যালোচনযা कनाि पूछरमाि निषः श्राकः ব্যঃ। অতএবাহ্। বধঃ সর্বস্থ হ-রণ পুরামির্বাসনাক্ষনে। তদঙ্গ-एक्त **रे**जूरका मुख उत्रमा र-म देखि॥ 🟶॥ यः भूनः भन्नत्कत्व সেতু কূপাদিক প্রার্থনষা অর্থ-দানেন বা লকানুজ্ঞো নিৰ্মাতু মিচ্ছতি ত নিষেধতঃ ক্ষেত্রস্বা-মিন এব দণ্ড ইত্যুত আহ। ন

निर्दिशा २ बराधन (मणूः कः পরভূষি॰ ₹রন্ म्यापकाद्रकः। कृशः सम्मात्का रक्षकः॥ श-त्रकीयाः ভূমि मनहत्रमाभयमि সেতু ৰ্জলপ্ৰবাহবন্ধঃক্ষেত্ৰস্বামি ना न প্রতিষেধ্যः স চেদীষৎপী-ডাকরো বহুপকারকশ্চ ভবতি। কুপশ্চালকেত্ৰব্যাপিছেনাম্বা-ধো বহুদকত্বেন বহুপকারকো देनव निवातनीयः। कृপগ্ৰহণঞ वाशी पुष्कतिगामुग्रनकमार्थः। ষদ। পুন রসে) সর্বন্দেত্রবর্ত্তিত্যা वहवादश नमामि ममी भरक्वव-র্ত্তিতথা বা অঙ্গোপকারক স্তদা-সে) নিষেধ্য ইত্যর্থাদুক্ত ভবতি ।।।।। সেতোশ্চ দৈবিধ্য মুক্তণ না-त्राप्तन। रमजूम्ड विविद्या रख्डयः থেষো বন্ধা স্তথৈব চ। তোষপ্র-বর্ত্তনাৎ থেষো বন্ধ্যঃ স্যাত্তমিব-र्खनामिछि॥ यमा प्रनामिर्विछ॰ সেতৃ ভেদনাদিনা নফ স্বয়ণ সং-স্করোতি তদা পূর্বসামিন তদ্ব भान्तर वा म्प्रिकृ व मः ऋ्या। যথাহ নারদঃ। পূর্বপ্রবৃত্ত মৃৎ मन मृश्कृ। यामिन है यः । त्मृंजूः প্রবর্ত্তরেৎ কশ্চিৎ ন স তৎ ফল ভাক ভবেৎ ৷৷ মুতে তু স্বামিনি

পून छद्दरभा वाशि बानत्वा श्रो-जान मामखा उठः क्यां १ (मणू-প্রবর্ত্তন মিতি ॥ 🛊 ॥ भिनः প্রতি উপদিষ্ট भिদानी। সেতোঃ প্রবর্ক্তযিতার প্রতি আ-হ। স্বামিনে যো খনিবেল্যেব ক্ষেত্ৰে সেতু॰ প্ৰবৰ্ত্তবেৎ। উৎ-পন্নে স্বামিনো ভোগ স্তদভাবে মহীপতেঃ।। ক্ষেত্রস্বামিন মন-ভূগগম্য তদভাবে রাজানম্বা বঃ পরক্ষেত্রে সেতৃ প্রবর্ত্তযভ্যসৌ ন ফলভাগ্ভবত্যপি তু তদুৎপ-মে ফলে ক্ষেত্রস্বামিনো ভোগ স্তদভাবে রাজঃ। তস্মাৎ প্রার্থ-ন্যার্থনানৈন বা ক্ষেত্রস্থামিন তদভাবে রাজান স্বাপ্যনুজ্ঞা-প্যৈব পরক্ষেত্রে সেতুঃ প্রবর্ত্ত-नीय इंडि डाइ भर्गार्थः ॥ 🗱 ॥ ক্ষেত্রস্বামিনা সেতু র্ন প্রতিষে-প্রসক্তানুপ্রসক্ত্যা ক্রচিদিধ্যস্তর মাহ। ফালাহত মপি ক্ষেত্রণ ন कर्याम् या न कात्र स्वर्भ म अ-माश्राः क्रकेकनः क्वित गतान कात्ररष्थ।। यः शूनः क्ष्वियामिः নঃ পাৰ্শ্বে ২ছ মিদ ক্ষেত্ৰ ক্লযা-मि रेज्ञिक्का अन्हामू मुक्

ন চান্যেন কর্ষয়তি তচ্চ ক্ষেত্রণ यमाशि कालाइङ भीयक्रालन वि-**मा**तिञ न ममाशीकवाशार्॰ छ-থাপি ভদ্যাক্লফাদ্য ফলং যাবত্ত-ত্রোৎপত্যর্হ• সামস্তাদিকল্পিত• छारमानी कर्यत्का मार्शनीयः । **७फ क्यः शृ**र्वकर्यकामुक्छिमा।-त्मान कांब्रस्थः। देखि भीगावि-বাদপ্রকরণ ৷ ইতি মিতাক্ষরা ।।।।। অপি চ। সীমা: প্রতিসমূৎ-शक्त विवादन आगत्या र्वत्याः । रेकार्षभामि नरम् भौभाः मूथः কাশেৰু সেতৃষু।। সীমাবৃক্ষা॰শ্চ श्रदीं नार्खाशाश्य कि श्रकान्। भाषानीन् भान जानां कि निति न टेन्हर शामशान्।। खंबान् दव **१** • • विविधान् भभी वल्ली ख्लानि চ। শরান্ সজক গুলা। শ্চ তথা সীৰান নশ্যতি।। তডাগান্যুদ-পানানি ৰাপ্যঃ প্ৰসুৰণানি চ। দীমাসন্ধিযু কার্য্যাণি দেবতাখ-তনানি চা৷ উপজ্যানি চান্যা-नि मीमालिकानि कात्रयथ। भी-মাজ্ঞানে নূণা বীক্ষ্য নিত্য লো-কে বিপর্য্যয় ।। অশ্বনে। হন্থীনি গোবালান্ তুৰান্ ভস্ম কপালি-কাঃ৷ করীয় মিউকাঙ্গার নৃ শ

ৰ্করা বালুকা স্তথা।। যানি চৈব॰ প্রকারাণি কালাদ্ভূমি র্ব ভক্ষ-ষেৎ। তানি সন্ধিষু সীমাষা ম-প্রকাশানি কার্যেৎ ।। এতৈ র্লি-टेक नर्राथ भीमा ब्राका विवत-মানযোঃ। পূৰ্ৰভুক্তা চ সতত मूलकन्गागरमन ह।। यहि नः नव खर मार विकास मिलिम्स्त । সান্দি প্রত্যম এব স্থাৎ সীমাবা-न विनिर्गरः॥ आगीयक जला-नाक मनक भीमि माकिनः। अ-केवाः मीमलिकानि ज्या टेन्ड्य বিবাদিনোঃ॥ ভেপৃষ্টা স্ত যথা जरुः गगसाः गीन्न निक्षः। নিব্দীয়াত্তথা সীমাণ স্বাণ স্তাণ শৈচব নামতঃ।। শিরোভি স্তে गृशिषाबीः मुशिषा त्रक्कताममः । সুকুতৈঃ শাপিতাঃ **বৈঃ বৈঃ** র্ন रायू एड ममक्षमा। रायाकिन নযন্ত স্থে পৃষ্টে সত্যসাকিণঃ ৷ विभर्तीण नरंख स माभाः म्रा ৰ্ষিণত দম।। সাক্ষ্যভীবে ভূ চত্বারো গ্রামাঃ সামস্তবাসিনঃ। সীমা বিনির্ণম্ সর্য্যুঃ প্রয়তা রা-জদন্নিধৌ ৷৷ সামস্তানা মভাবে जू योलानाः नीमि नाकिनाः। ইয়ানপ্যনুষ্ঞীত পুরুষান বন-

व्यक्तिन्॥ वाश्वान् भाक्विन-কান্ গোপান্ কৈবৰ্তান্ মূল-খানকান্। ব্যালগ্ৰাহানুঞ্বৃত্তী-নন্যাণ্শ্চ বনচারিশঃ ৷৷ তে পৃ को छ यथा अयुः नीमानिक्षयू লক্ষণ। তত্ত্বা স্থাসৰজাজা थर्षा वागरया बर्याः॥ रक्त क्ष छडागाना मात्राममा गृहः স্য চ। সামন্ত প্রত্যধো জেবः সীমাসেতু বিনিৰ্ণয়ঃ ৷ সামস্তা শ্চেমৃষা ত্ৰায়ঃ সেতৌ বিবদতাণ नृगा । मर्द পृथक् পृथक् मधा রাজ্ঞা মধ্যমসাহসং ৷৷ গৃহং ত ডাগ মারাম ক্ষেত্রণ বা ভীষষা হরন্। শতানি পঞ্দভ্যঃ স্যা-मखानाम्बिगालाममः॥ भीमा-ষা মবিষহ্থায়া স্বয় রাজেব ধ-শ্ববিৎ। প্রদিশেৎ ভূমি মেতে ষা মুপকারাদিতি স্থিতি: !৷ ইতি মানবে ৮ অধ্যাষঃ ॥ नीमिकः पूर वृक्तरजनः॥ वन्त्रीः কং ৷৷ সৃষ্ঠমিজাতিঃ৷ ইতি म॰किश्वमारतानामिवृक्तिः॥ गैभीकः पू॰ वृक्वित्ययः। या-द्रीगानिक कीकन् अ

मोतः श्रू॰ मूर्याः। इंडि क्यांनेते।।
इनः॥ अर्कवृकः। इंडियाः।।
मौतकः श्रू॰ मिखमातः। इंडियां मक्तमाना ॥ मीतमकार्वाः।
१राज्याः।

দীরধজঃ পুণ চন্দ্রবংশীযরাজ-বিশেষঃ। সতু হুস্বরোমরাজ-পুল্রঃ। ষদ্য পুলার্থণ ষজনভূবণ রুষতঃ দীরে দীতা দুহিতা স-মুৎপন্না তদ্য পুলো ভানুমান্। ইতি বিফুপুরাণে ৪ অংশে ৫ অধ্যায়ঃ।। দীরপাণিঃ পুণ বলদেবঃ। ইত্য-

यद्रः ॥

पूर- कृतिश्राशाना ।।

भीनक्षः पूर सदमारक्षः। भिन्निकाः पूर सदमारक्षः। भिन्निकाः क्षिमार्गा क्षाः।

भीनकाः क्षिमार्गा व्या विभारक मधुद्रा छकः। वाक भिक्रह्रा स्प्रा आमवाक्करणभः॥ ইन् नावश्रकाणः॥

भीवनः अम्छानः। मृन

্রয়ানী ইতি সেলায়ী

চ ভাষা। তৎপর্য্যায়ঃ।
সেবন ২ স্যুতিঃ ৩। ইত্যমরঃ
। উতিঃ ৪ ব্যুতিঃ ৫। ইতি

भयत्रष्ट्रावनी ॥ भीवनी खी लियमग्रधःमृतः । लियावाष्ट्रधःगा इंडि इंस्टिखःगा

भीम॰ क्री भीमकः। ইতি হেম-চম্দ্রঃ।।

সীসক ক্লী ধাত্বিশেষঃ। সীসা ইতি ভাষা। তৎপর্য্যাযঃ। না-া গ•২ ষোগেষ্ট• ৩ বপ্র•৪। ইত্যমর:॥ সীস ৫ সীসপত্রক ৬ গণ্ডুপদভব ৭ সিন্দুরকারণ ৮ वर्षः २ वर्गाति १० वंतरनर्छे । 33 मूवर्गक 321 देखि दिय-ठखः॥ वशु ७० शिक्र हे १४ मूवर्गाति २६। जभू २५ जभः २१ । ইতি শব্দরত্বাবলী॥ বধুক॰ ३৮ महावंता ३२ यवटनकेक २०। ইতি জটাধরঃ।। বহুমল॰ २५ हीन १२२ शिष्ठ १२०। इंडि রত্নশালা।। জড ২৪ ভুজ দ ম ২৫ উরগণ২৬ সরঙ্গণ২৭ পরি **शिकेक** २৮ मृमूक्कावम २२ পদ্ম• ৩০ তারশুদ্ধিকর• ৩১ শি রাবৃত্ত ৩২ বধোবদ ৩৩ চী निषरे ७८। जमा छनाः। मी **সম্ভ বঙ্গ** সাম্য স্থারিক বীর্যাবিক পাকতঃ। উকঞ্চ কফ বাভন্ন ম

শোষ শুরু লেখন ৷৷ বর্ণে নীল मृদू निक्षः निर्माणक मूरगीतवः । রৌগ্য সংশোধনে ক্ষিপ্রণ সীসক-ঞ্ তদুত্তম ।। ইতি রাজনির্বন্টঃ ॥ 🛊 ॥ जश मीमरमा। ९ भक्ति नाम গুণাঃ। দৃষ্ঠা ভোগিসূতা রম্যা। বাসুকিন্ত মুমোচ ৰং। বীৰ্য্য॰ জাত স্ততো নাগঃ সৰ্বরোগাপ-হো নৃণাণ।। সীসণ বধুক্ষ বপ্রক্ষ ষোগেষ্ট॰ নাগনামক॰। নাগঃ ভুজন্ন ইত্যাদি। সীদ বন্ধগুণ उछ्य वित्ययात्यर्गामन । ना-গস্তু নাগশততুল্যবল দদাতি ব্যাধি বিনাশ্যতি জীবন মাত-নোতি। বহ্লি প্রদীপষ্তি ক।ম-বল করোতি মৃত্যুঞ্চ নাশ্যতি সম্ভত সেবিতঃ সং।। পাকেন शैतो किल तक नार्गा क्रश्नीन গুল্মাণ্শ্চ তথা নিক্ষীন্। পাণ্ডু প্রমেহানিল সাদ শোথ ভগন্দ-तामीन् करूजः श्रयुरको । 🚜.॥ অথ সীসকস্য শোধন**া** • তস্য मार्डिका पाषा वन्नरमाव नि-দর্শিতাঃ। শোধনঞাপি ভগৈয়ব ভিষগ্টি র্গদিত পুরা॥ 🛊 ॥ অথ मीमकमा मात्रनिविधः। त्रममं शिके शिलालिशां भूनः

রীপক प्रमः। हायि भिष्टिः श्रेषे मी । जिः श्रा स्वर्गनी नाः मैम (भा विस्त्यः नम्भ जाराजा। नः। यथ मीमकम्भ माः निला प्रनः। भला। प्रचण्ण शक्ता १६४०। हर है ए १६४०। लान निकित्नर। घर नाले नियमें याम वामावि विकला नाला नारेमसी थ अथा। मेम कियां ह शितिनः। गोष्ठित जदम्यः । अण्डासाप्टल जिद् नरूका भागनः भिना का । १द॰ मध्र १८ मिना क्षिकिन प्रा निष्टा न.एम ए. १८८ न ह । शामित्रीन १५३ दि अवसा १६७ १ दि ? विद्री। विनय काञ्चिक्व ह ध्राः भरार गरावाजा जदः श्राक्षेत्र्रेट मृतिः। इति जार मीमन्यकः। क्री भीमद পকাশः। मारिन्थाम् ४१।: । रिनि रमहन् । स्दर्द । अभिष्ठ जिल्ला भीरूवः । श्रु अर् उपर भवा भूत वासिक्ष - उकः। मुरी रंग जूनथाक । भिशा विशादिस

मीर्ध क्डर॰ मागल्यानां कून भार भनाभक । जुनतीः नभी नदीन निक्षित नगर भाराम्बिनाः मि रेनि देम प्रामः। F : 1